नयी दुनिया अनुवाद
मसीही
यूनानी शास्त्र

यीशु के
ज़माने का देश
भूमध्य सागर
(महासागर)
फीनीके
गलील
अबिलेने
इतूरैया
त्राखोनीतिस
सीदोन
सोर
हेर्मोन पर्वत
दमिश्क
कैसरिया फिलिप्पी
पतुलिमयिस
खुराजीन
कफरनहूम
बैतसैदा
गमाला
रफाना
काना
मगदन
गलील की झील
हिप्पो(स)
तिबिरियास
सेफोरस
नासरत
दियोन
कनाता
अबिला?
गडारा
नाईन
बैतनिय्याह?
(यरदन के पार)
कैसरिया
सिथोपोलिस
सालिम
पेल्ला

सामरिया
ऐनोन
एबाल पर्वत
सूखार
गरिज्जीम पर्वत
याकूब का कुआँ
सामरिया
गेरासा
पेरिया
यरदन नदी
अंतिपत्रिस
याफा
अरिमतियाह
इफ्राइम
लुद्दा
फिलदिलफिया
यरीहो
इम्माऊस
बैतफगे
यरूशलेम
बैतनिय्याह
उ
0 मी
20
0 कि.मी.
20
बेतलेहेम
हेरोदियम
यहूदिया
यहूदा का वीराना
खारा ताल (मृत सागर)
हेब्रोन
गाज़ा
मसाडा
बेर्शेबा
इदूमिया
अरब
bi7-H
दिकापुलिस के शहर
खास रास्ते
गलील और यरूशलेम के बीच का आम रास्ता
गलील और यरूशलेम के बीच का दूसरा रास्ता पेरिया से

नयी दुनिया अनुवाद
मसीही
यूनानी शास्त्र

“मगर हम परमेश्‍वर के वादे के मुताबिक एक नए आकाश
और नयी पृथ्वी का इंतज़ार कर रहे हैं, जहाँ न्याय का
बसेरा होगा।”—2 पतरस 3:13.

© 2009
WATCH TOWER BIBLE AND TRACT SOCIETY
OF PENNSYLVANIA

नयी दुनिया अनुवाद—मसीही यूनानी शास्त्र

पब्लिशर्स्

WATCHTOWER BIBLE AND TRACT SOCIETY
OF NEW YORK, INC.
Brooklyn, New York, U.S.A.

नयी दुनिया अनुवाद की पूरी बाइबल इन भाषाओं में उपलब्ध है, अँग्रेज़ी (ब्रेल भी), अफ्रीकान्स, अरबी, अल्बेनियन, आर्मीनियन, इंडोनेशियन, इटैलियन, इलोको, ईबो, एफिक, ओसेशियन, किन्यारवान्डा, किरगिज़, किरुंडी, कोरियन, क्रोएशियन, खोसा, ग्रीक, चिचेवा, चीनी (पुरानी), चीनी (सरल), चेक, जर्मन, जापानी, ज़ुलू, जॉर्जियन, टर्किश, टागालोग, डच, डेनिश, त्वी (अकुआपेम), त्वी (असांटे), त्सोंगा, नॉर्वेजियन, पॉर्चुगीस (ब्रेल भी), पोलिश, फिनिश, फ्रेंच, बल्गेरियन, मलगासी, मॉल्टीस, मैसडोनियन, योरुबा, रशियन, रोमेनियन, लिंगाला, शोना, समोअन, सरबियन, सरबियन (रोमन), सिंहाला, सिबेम्बा, सेपेदी, सेबवॉनो, सेसोथो, स्पैनिश (ब्रेल भी), स्रानानटोंगो, स्लोवाक, स्लोवीनियन, स्वाना, स्वाहिली, स्वीडिश और हंगेरियन

(बाइबल की कुछ किताबें इन भाषाओं में उपलब्ध हैं, अज़रबाइजानी, अज़रबाइजानी [सिरलिक], अमेरिकन साइन लैंग्वेज [डी.वी.डी. पर], इटैलियन ब्रेल, इटैलियन साइन लैंग्वेज [डी.वी.डी. पर], उज़बेक, एवे, एस्टोनियन, ऐमहैरिक, ओतेतेला, कज़ाक, कन्नड़, कम्बोडियन, किरबाती, किलूबा, कीकॉन्डे, कोंगो, कोरियन साइन लैंग्वेज [डी.वी.डी. पर], कोलंबियन साइन लैंग्वेज [डी.वी.डी. पर], गुन, ग्वारानी, चिटोंगा, चितूमबूका, चिलूबा, टाटर, टिग्रीन्या, टेटम, टोंगन, टोक पिसिन, तमिल, तुवालुअन, थाइ, नेपाली, पंजाबी, पनगासिनन, पापियामेन्टो [क्यूरसो], फीजियन, ब्राज़िलियन साइन लैंग्वेज [डी.वी.डी. पर], मलयालम, माया, म्यानमार, मैक्सिकन साइन लैंग्वेज [डी.वी.डी. पर], यूक्रेनियन, रशियन साइन लैंग्वेज [डी.वी.डी. पर], लिथुएनियन, लुगांडा, लुवाले, लैटवियन, वारै-वारै, वियतनामी, वेन्डा, सांगो, सिलोज़ी, सॉलोमन द्वीप पिजिन, स्वाती, हिंदी, हिरी मोटु, हिलिगेनन, हीब्रू और हेतीन क्रियोल)

नयी दुनिया अनुवाद के सभी संस्करणों की कुल छपाई
20,83,66,928 कॉपियाँ

2009 में छापी गयी

यह किताब बिक्री के लिए नहीं है। यहोवा के साक्षी दुनिया-भर में बाइबल सिखाने का जो काम कर रहे हैं, उसके तहत यह उपलब्ध करायी जा रही है।

New World Translation of the Christian Greek Scriptures
Hindi (*bi7*-HI)

Made in the United States of America
संयुक्त राज्य अमरीका में निर्मित

दो शब्द

पवित्र शास्त्र, यानी बाइबल परमेश्वर की प्रेरणा से लिखी गयी है। इसे इब्रानी, अरामी और यूनानी भाषाओं में लिखा गया था। लेकिन "सब राष्ट्रों" के लोगों को परमेश्वर के वचन से फायदा पाने के लिए ज़रूरी है कि शास्त्र का अनुवाद बहुत-सी भाषाओं में किया जाए। (मत्ती 24:14) मत्ती से प्रकाशितवाक्य तक कुल सत्ताइस किताबें हैं। परमेश्वर की प्रेरणा से लिखी गयी इन किताबों को "मसीही यूनानी शास्त्र" कहा जाता है, क्योंकि पहली सदी के मसीही लेखकों ने इन्हें यूनानी भाषा में लिखा था।

नयी दुनिया अनुवाद—मसीही यूनानी शास्त्र सबसे पहले अँग्रेज़ी में 1950 में निकाला गया था। यह अनुवाद यूनानी भाषा के एक मशहूर मूल-पाठ पर आधारित है, जिसे वेस्टकॉट और हॉर्ट का यूनानी पाठ कहा जाता है। यह मूल-पाठ, इन सत्ताइस किताबों की यूनानी भाषा में लिखी सबसे प्राचीन हस्तलिपियों से मेल खाता है। इस यूनानी पाठ का अँग्रेज़ी *नयी दुनिया अनुवाद* में पूरी वफादारी के साथ अनुवाद किया गया है। इसका हिंदी भाषा में यह अनुवाद, अँग्रेज़ी संस्करण पर आधारित है। कोशिश यही की गयी है कि जिस तरह अँग्रेज़ी अनुवाद पूरी वफादारी से यूनानी पाठ पेश करता है, वैसे ही हिंदी में भी किया जाए।

नयी दुनिया अनुवाद—मसीही यूनानी शास्त्र के मुख्य पाठ में परमेश्वर का बेजोड़ नाम, यहोवा 237 बार आता है। इस अनुवाद के अतिरिक्त लेख 1 में इसकी वजह बतायी गयी है और कुछ तसवीरें भी दी गयी हैं। परमेश्वर का नाम पवित्र किया जाना सबसे ज़्यादा अहमियत रखता है। साथ ही, लोगों को उद्धार पाने के लिए परमेश्वर को इस नाम से पुकारने की ज़रूरत है। इन्हीं अहम बातों को ध्यान में रखते हुए, इस अनुवाद में यहोवा का नाम उन सभी जगहों पर वापस डाला गया है जहाँ इसे होना चाहिए।—मत्ती 6:9; रोमियों 10:13.

इस अनुवाद को *नयी दुनिया अनुवाद* नाम इसलिए दिया गया है, क्योंकि परमेश्वर ने सभी इंसानों के लिए एक ऐसी नयी दुनिया लाने का वादा किया है, जहाँ न्याय का बसेरा होगा। (2 पतरस 3:13) इस रचना के अनुवादक, पवित्र शास्त्र के रचनाकार यानी परमेश्वर से बेहद प्यार करते हैं। उन्हें यह एहसास है कि परमेश्वर के सामने वे इस बात के लिए खास तौर पर ज़िम्मेदार हैं कि वे उसके विचारों और उसके कहे वचनों को, जहाँ तक मुमकिन हो, लोगों तक सही-सही पहुँचाएं। हमारी यह प्रार्थना है कि इस अनुवाद के पढ़नेवाले उन सभी नेकदिल लोगों के लिए यह अनुवाद बेहद अनमोल साबित हो, जो "सच्चाई का सही ज्ञान हासिल" करने की कोशिश में लगे हैं।—1 तीमुथियुस 2:4.

मसीही यूनानी शास्त्र की

किताबों के नाम और क्रम

किताब	संक्षिप्त नाम	पेज
मत्ती	मत्ती	7
मरकुस	मर	70
लूका	लूका	109
यूहन्ना	यूह	177
प्रेषितों	प्रेषि	226
रोमियों	रोमि	292
1 कुरिंथियों	1 कुरिं	320
2 कुरिंथियों	2 कुरिं	347
गलातियों	गला	365
इफिसियों	इफि	375
फिलिप्पियों	फिलि	384
कुलुस्सियों	कुलु	391
1 थिस्सलुनीकियों	1 थिस्स	398
2 थिस्सलुनीकियों	2 थिस्स	404
1 तीमुथियुस	1 तीमु	407
2 तीमुथियुस	2 तीमु	415
तीतुस	तीतु	420
फिलेमोन	फिले	423
इब्रानियों	इब्रा	425
याकूब	याकू	446
1 पतरस	1 पत	453
2 पतरस	2 पत	461
1 यूहन्ना	1 यूह	466
2 यूहन्ना	2 यूह	473
3 यूहन्ना	3 यूह	474
यहूदा	यहू	475
प्रकाशितवाक्य	प्रका	478

पन्नों के शीर्षक और ब्रैकेट

इस अनुवाद के ज़्यादातर पन्नों के ऊपरी हिस्से में हर पन्ने का शीर्षक दिया गया है। इनकी मदद से यह ढूँढ़ने में आसानी होगी कि किस पन्ने पर बाइबल का कौन-सा किस्सा पाया जाता है।

दोहरे ब्रैकेट [[ ]] के अंदर जो शब्द दिए गए हैं वे मूल पाठ में जोड़े गए शब्द हैं। ये शब्द मूल पाठ में नहीं थे।

मत्ती
के मुताबिक खुशी का संदेश

1 इस किताब में यीशु के जीवन का इतिहास है, जो मसीह* है। वह अब्राहम के वंश से, और उसके वंशज दाविद के वंश से था। पेश है यीशु की वंशावली:

2 अब्राहम से इसहाक पैदा हुआ
इसहाक से याक़ूब;
याक़ूब से यहूदा और उसके भाई पैदा हुए;
3 यहूदा से पेरेस और ज़ेरह पैदा हुए जिनकी माँ तामार थी;
पेरेस से हेसरोन;
हेसरोन से एराम पैदा हुआ;
4 एराम से अम्मीनादाब पैदा हुआ;
अम्मीनादाब से नहशोन;
नहशोन से सलमोन पैदा हुआ।
5 सलमोन से बोअज़ पैदा हुआ, बोअज़ की माँ राहाब थी।
बोअज़ से ओबेद पैदा हुआ; ओबेद की माँ रूत थी।
ओबेद से यिशै पैदा हुआ।
6 यिशै से राजा दाविद पैदा हुआ;
दाविद से सुलैमान पैदा हुआ। सुलैमान उस स्त्री से पैदा हुआ जो पहले उरिय्याह की पत्नी थी;
7 सुलैमान से रहूबियाम पैदा हुआ;
रहूबियाम से अबिय्याह पैदा हुआ;
अबिय्याह से आसा पैदा हुआ;
8 आसा से यहोशापात पैदा हुआ;
यहोशापात से यहोराम पैदा हुआ;
यहोराम से उज़िय्याह पैदा हुआ।
9 उज़िय्याह से योताम पैदा हुआ;
योताम से आहाज़ पैदा हुआ;
आहाज़ से हिज़किय्याह पैदा हुआ।
10 हिज़किय्याह से मनश्शे पैदा हुआ।
मनश्शे से आमोन पैदा हुआ;
आमोन से योशिय्याह पैदा हुआ।
11 योशिय्याह से यकोन्याह और उसके भाई पैदा हुए। उस दौरान, यहूदियों को बंदी बनाकर बैबिलोनिया देश ले जाया गया।
12 बैबिलोनिया देश में यकोन्याह से शालतिएल पैदा हुआ;
शालतिएल से ज़रुब्बाबेल पैदा हुआ;
13 ज़रुब्बाबेल से अबीहूद पैदा हुआ;
अबीहूद से एल्याकीम पैदा हुआ;
एल्याकीम से अज़ोर पैदा हुआ;
14 अज़ोर से सादोक पैदा हुआ;
सादोक से अखीम पैदा हुआ;
अखीम से एलीहूद पैदा हुआ;
15 एलीहूद से एलियाज़र पैदा हुआ;
एलियाज़र से मत्तान पैदा हुआ;
मत्तान से याक़ूब पैदा हुआ;

मत्ती 1:1* बाइबल के यूनानी पाठ में शब्द 'मसीह' (इब्रानी में *मसीहा*), यीशु के लिए एक उपाधि के तौर पर इस्तेमाल हुआ है और इसका मतलब है, 'अभिषिक्त जन' यानी परमेश्वर का अभिषिक्त राजा। यह कोई नाम नहीं है।

16 याक़ूब से यूसुफ पैदा हुआ जो मरि-
यम का पति था। मरियम ने यीशु
को जन्म दिया जो मसीह* कह-
लाता है।

17 अब्राहम से दाविद तक सारी
पीढ़ियाँ मिलाकर चौदह पीढ़ियाँ हुईं।
दाविद से लेकर यहूदियों को बैबिलोनिया
देश ले जाए जाने के वक्त तक
चौदह पीढ़ियाँ हुईं। बैबिलोनिया देश ले
जाए जाने के वक्त से मसीह तक चौदह
पीढ़ियाँ हुईं।

18 मगर, यीशु मसीह का जन्म
इस तरह से हुआ। उसकी माँ मरि-
यम की सगाई यूसुफ से हो चुकी
थी। मगर उनकी शादी से पहले जब
वह कुँवारी ही थी, तब परमेश्वर
की पवित्र शक्ति* की ताकत से मरि-
यम गर्भवती हुई। **19** उसका पति*
यूसुफ एक नेक इंसान था। वह लोगों के
सामने मरियम का तमाशा नहीं बनाना
चाहता था। इसलिए उसने चुपके से मरि-
यम को तलाक# देने का इरादा किया।
20 जब वह इन बातों के बारे में सोच-
विचार करने के बाद सो गया, तो उसे
सपने में अचानक यहोवा* का स्वर्गदूत
दिखायी दिया। स्वर्गदूत ने उससे कहा:
“यूसुफ, दाविद के वंशज, तू मरियम से
शादी* करने से मत डर, क्योंकि जो
उसके गर्भ में है वह परमेश्वर की पवित्र
शक्ति की ताकत से है। **21** मरि-
यम एक बेटे को जन्म देगी। तू उसका
नाम यीशु* रखना, क्योंकि वह अपने
लोगों का उनके पापों से उद्धार करेगा।”
22 यह सबकुछ इसलिए हुआ ताकि
यहोवा का यह वचन पूरा हो, जो उसने
अपने भविष्यवक्ता के ज़रिए कहा था:
23 “देखो, कुँवारी गर्भवती होगी और
एक बेटे को जन्म देगी। वे उसका नाम
इम्मानुएल रखेंगे,” जिसका मतलब है,
“परमेश्वर हमारे साथ है।”

24 तब यूसुफ नींद से जाग उठा और
उसने वैसा ही किया जैसा यहोवा के दूत
ने उसे हिदायत दी थी। वह अपनी पत्नी
को अपने घर ले आया। **25** मगर
जब तक मरियम ने बेटे को जन्म न दिया,
तब तक यूसुफ ने उसके साथ संभोग न
किया। यूसुफ ने उस बच्चे का नाम
यीशु रखा।

2 यीशु का जन्म यहूदिया प्रदेश के
बेतलेहेम में हो चुका था। उन दिनों
हेरोदेस* यहूदिया का राजा था। यीशु के
जन्म के कुछ समय बाद, देखो! पूरब से
ज्योतिषी# राजधानी यरूशलेम में आए।
2 वे यह पूछने लगे: “यहूदियों का जो
राजा पैदा हुआ है, वह कहाँ है? क्योंकि

मत्ती 1:16* यानी, “परमेश्वर का अभिषिक्त जन।” **18*** यूनानी *नफ्मा।* अतिरिक्त लेख 7 देखें। **19*** यहूदियों के रिवाज़ के मुताबिक मंगेतर को पति कहा जाता था। **19#** यहूदियों के रिवाज़ के मुताबिक सगाई तोड़ने के लिए तलाकनामा देना ज़रूरी होता था। **20*** यह उन 237 जगहों में से एक जगह है, जहाँ परमेश्वर का नाम, ‘यहोवा’ इस अनुवाद के मुख्य पाठ में पाया जाता है। अति-रिक्त लेख 2 देखें।

मत्ती 1:20* शाब्दिक, “तू अपनी पत्नी मरियम को अपने घर लाने से मत डर।” **21*** इब्रानी भाषा में “येशुआ,” जिसका मतलब है “यहोवा उद्धार करता है।” **2:1*** यानी, हेरोदेस महान। **1#** या, “मजूसी।”

जब हम पूरब में थे, तो हमने उसका
तारा देखा था। इसलिए हम उसे प्रणाम
करने आए हैं।” **3** यह बात सुनकर
राजा हेरोदेस घबरा गया, और यरूशलेम
के सभी लोगों में खलबली मच गयी।
4 इसलिए हेरोदेस ने सभी प्रधान
याजकों और शास्त्रियों* को इकट्ठा किया
और वह उनसे पूछने लगा कि मसीह का
जन्म कहाँ होना है।# **5** उन्होंने कहा:
“यहूदिया के बेतलेहेम में; क्योंकि भविष्य-
वक्ता के ज़रिए यह लिखवाया गया है,
6 ‘हे यहूदा के इलाके के बेतलेहेम, तू
यहूदा के प्रधानों के बीच किसी भी मायने
में सबसे छोटा शहर नहीं; क्योंकि तुझी
में से इसराएल का सबसे बड़ा प्रधान
निकलेगा जो चरवाहे की तरह मेरी प्रजा
इसराएल की अगुवाई करेगा।’ ”

7 तब हेरोदेस ने चुपके से उन
ज्योतिषियों को बुलवाया। फिर उनसे
अच्छी तरह पूछताछ कर पता लगाया कि
उन्हें यह तारा पहली बार कब नज़र आया
था। **8** फिर उसने यह कहकर उन्हें
बेतलेहेम भेजा: “जाओ और अच्छी तरह
ढूँढ़कर उस बच्चे का पता लगाओ। जब
वह तुम्हें मिल जाए तो आकर मुझे खबर
देना, ताकि मैं भी जाकर उसे प्रणाम कर
सकूँ।” **9** राजा हेरोदेस की यह बात
सुनने के बाद ज्योतिषी वहाँ से निकल
पड़े। तब देखो! वही तारा जो उन्हें उस
वक्त दिखायी दिया था जब वे पूरब में
थे, उनके आगे-आगे चलने लगा और
जाकर उस घर के ऊपर ठहर गया जहाँ
वह बच्चा था। **10** जब उन्होंने तारे
को ठहरते देखा, तो उनकी खुशी का
ठिकाना न रहा। **11** जब वे उस घर
के अंदर गए, तो बच्चे को उसकी माँ
मरियम के साथ देखा। उन्होंने बच्चे के
आगे गिरकर उसे प्रणाम किया। साथ ही,
उन्होंने अपना-अपना खज़ाना खोलकर
उसे सोना, लोबान और गंधरस तोहफे में
दिए। **12** मगर परमेश्वर ने सपने में
उन्हें चेतावनी दी कि हेरोदेस के पास फिर
न जाना। इसलिए वे दूसरे रास्ते से अपने
देश लौट गए।

13 उनके चले जाने के बाद, देखो!
यहोवा का दूत यूसुफ को सपने में दिखायी
दिया और उससे कहने लगा: “उठ, बच्चे
और उसकी माँ को लेकर मिस्र भाग जा।
जब तक मैं तुझसे न कहूँ, तब तक वहीं
रहना; क्योंकि हेरोदेस इस बच्चे को मार
डालने के लिए इसकी तलाश करने-
वाला है।” **14** इसलिए यूसुफ उठा
और बच्चे और उसकी माँ को लेकर रात
ही में मिस्र के लिए चल पड़ा **15** वह
हेरोदेस की मौत तक वहीं रहा। इस तरह,
वह बात पूरी हुई जो यहोवा ने अपने
भविष्यवक्ता के ज़रिए कही थी: “मैंने
अपने बेटे को मिस्र देश से बुलाया।”

16 जब हेरोदेस ने देखा कि
ज्योतिषियों ने उसके साथ चालाकी की
है, तो वह गुस्से से आग-बबूला हो गया।
तब उसने अपने सेवकों को यह हुक्म

मत्ती 2:4* शास्त्री, यीशु के ज़माने में परमेश्वर के कानून का मतलब समझानेवाले और इसके शिक्षक थे। **4#** यानी, पवित्र शास्त्र के मुताबिक कहाँ जन्म होना है।

दियाः ‘जाओ और बेतलेहेम और उसके
आसपास के सभी ज़िलों में जितने लड़के
दो साल और उससे कम उम्र के हैं
उन सबको मार डालो।’ उसने ज्योति-
षियों से पूछताछ करने के बाद कि उन्हें
तारा कब दिखायी दिया था, यह काम
करवाया था। **17** इस घटना से वह
बात पूरी हुई जो यिर्मयाह भविष्यवक्ता से
कहलवायी गयी थीः **18** “रामा में रोने
और बड़े विलाप की आवाज़ सुनायी
दी; यह राहेल है जो अपने बच्चों के
लिए रो रही है और किसी भी तरह का
दिलासा नहीं चाहती, क्योंकि वे अब
नहीं रहे।”

19 हेरोदेस के मरने के बाद, देखो!
मिस्र में यहोवा का स्वर्गदूत यूसुफ को
सपने में दिखायी दिया। **20** स्वर्गदूत
ने यूसुफ से कहाः “उठ, बच्चे और उसकी
माँ को लेकर इसराएल देश के लिए
रवाना हो जा, क्योंकि जो बच्चे की
जान लेना चाहते थे वे मर चुके हैं।”
21 इसलिए यूसुफ उठा और बच्चे और
उसकी माँ को लेकर इसराएल देश में
दाखिल हुआ। **22** मगर यह सुनकर
कि अरखिलाउस अपने पिता हेरोदेस की
जगह राजा बनकर यहूदिया पर राज कर
रहा है, वह वहाँ जाने से डरा। साथ ही,
सपने में परमेश्वर ने उसे चेतावनी दी थी,
इसलिए वह गलील प्रदेश में चला गया।
23 वह आकर नासरत नाम के शहर में
बस गया। इससे ये शब्द पूरे हुए जो
भविष्यवक्ताओं से कहलवाए गए थेः
“वह एक नासरी कहलाएगा।”

3 उन दिनों यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला
यहूदा के वीरान इलाकों में आया।
2 वह यह प्रचार करने लगाः “पश्चा-
ताप करो, क्योंकि स्वर्ग का राज पास आ
गया है।” **3** दरअसल यूहन्ना वही है
जिसके बारे में यशायाह भविष्यवक्ता के
ज़रिए ये वचन कहलवाए गए थेः “सुनो!
वीराने में कोई यह पुकार लगा रहा है,
‘यहोवा का मार्ग तैयार करो, उसकी
सड़कें सीधी करो।’” **4** इस यूहन्ना
के कपड़े, ऊँट के बालों से बने थे। वह
चमड़े का कमरबंध बाँधा करता था और
उसका खाना टिड्डियाँ और जंगली शहद
था। **5** तब यरूशलेम और सारे यहू-
दिया और यरदन नदी के आस-पास के
सारे इलाके से लोग निकलकर उसके पास
आने लगे। **6** वे सबके सामने अपने
पापों को मान लेते थे और यूहन्ना उन्हें
यरदन नदी में बपतिस्मा* देता था।

7 फिर बहुत-से फरीसी* और
सदूकी# भी बपतिस्मे की जगह पर आए।
जब यूहन्ना की नज़र उन पर पड़ी,
तो उसने उनसे कहाः “अरे साँप के
संपोलो, किसने तुम्हें आगाह कर दिया कि
तुम आनेवाले कहर से भाग सकते हो?
8 इसलिए पश्चाताप दिखानेवाले फल
पैदा करो। **9** खुद को यह भरोसा मत
दिलाओ कि ‘हम तो अब्राहम के वंशज

मत्ती 3:6* बपतिस्मे का मतलब किसी को पानी में पूरी तरह डुबकी देना है। यह एक धार्मिक रस्म है। **7*** पहली सदी में पाया जानेवाला, यहूदी धर्म का एक प्रमुख पंथ। **7#** यहूदी धर्म का एक प्रमुख पंथ, जो याजकवर्ग से जुड़ा था। सदूकी न तो मरे हुओं के जी उठने की शिक्षा पर, न ही स्वर्गदूतों के वजूद पर विश्वास करते थे।

हैं।’ क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ कि पर-
मेश्वर इन पत्थरों से अब्राहम के लिए
संतान पैदा कर सकता है। **10** पेड़ों
की जड़ पर कुल्हाड़ा रखा जा चुका है।
हर वह पेड़ जो बढ़िया फल नहीं लाता,
उसे काटा और आग में झोंका जाएगा।
11 मैं तो तुम्हारे पश्चाताप की वजह से
तुम्हें पानी से बपतिस्मा देता हूँ। मगर जो
मेरे बाद आनेवाला है, वह मुझसे कहीं
शक्तिशाली है। मैं उसकी जूतियाँ उतारने
के भी लायक नहीं हूँ। वह तुम लोगों को
पवित्र शक्ति से और आग से बप-
तिस्मा देगा।* **12** उसके हाथ में भूसी
अलग करनेवाला उसाने का बेलचा है
और वह अपने खलिहान को पूरी तरह
साफ करेगा और अपने गेहूँ को तो इकट्ठा
कर गोदाम में रखेगा, मगर भूसी को उस
आग में जला देगा जिसे बुझाया नहीं जा
सकता।”

13 फिर यीशु गलील प्रदेश से यर-
दन नदी के किनारे यूहन्ना के पास आया
ताकि उससे बपतिस्मा ले। **14** मगर
यूहन्ना ने यह कहकर उसे रोकने की
कोशिश की: “मुझे तो खुद तेरे हाथ से
बपतिस्मा लेने की ज़रूरत है, और तू मेरे
पास आया है?” **15** जवाब में यीशु
ने उससे कहा: “इस वक्त ऐसा ही होने
दे। क्योंकि हमारे लिए यह सही है कि
हम इस तरह परमेश्वर की सारी मरज़ी*
पूरी करें।” तब यूहन्ना ने उसे नहीं रोका।
16 बपतिस्मा लेने के बाद यीशु फौरन
पानी में से ऊपर आया। तभी आकाश
खुल गया, और उसने परमेश्वर की पवित्र
शक्ति को एक कबूतर के रूप में उस पर
उतरते देखा। **17** साथ ही, स्वर्ग से
परमेश्वर की आवाज़ आयी: “यह मेरा
प्यारा बेटा है। मैंने इसे मंज़ूर किया है।”

4 तब, परमेश्वर की पवित्र शक्ति के
असर में यीशु वीराने में गया।
वहाँ शैतान* ने उसकी परीक्षा लेने के
लिए उसे फुसलाने की कोशिश की।
2 यीशु ने चालीस दिन और चालीस
रात तक उपवास किया था, फिर
उसे भूख लगी। **3** तब फुसलानेवाला
आया और उससे कहा: “अगर तू स-
चमुच परमेश्वर का बेटा है, तो इन
पत्थरों से बोल कि ये रोटियाँ बन जाएँ।”
4 मगर जवाब में यीशु ने कहा: “यह
लिखा है, ‘इंसान सिर्फ रोटी से ज़िंदा
नहीं रह सकता, बल्कि उसे यहोवा के
मुँह से निकलनेवाले हर वचन से ज़िंदा
रहना है।’ ”

5 इसके बाद, शैतान उसे अपने साथ
पवित्र शहर यरूशलेम ले गया और उसे
मंदिर की चारदीवारी के ऊपर* लाकर
खड़ा किया। **6** उसने यीशु से कहा:
“अगर तू सचमुच परमेश्वर का बेटा है,
तो यहाँ से नीचे छलाँग लगा दे। क्योंकि
शास्त्र में लिखा है, ‘परमेश्वर अपने स्वर्ग-
दूतों को तेरी रक्षा करने का हुक्म देगा।

मत्ती 3:11* यानी, पवित्र शक्ति से तुम्हारा अभिषेक करेगा और आग से तुम्हें नाश करेगा। **15*** या, धार्मिकता।

मत्ती 4:1* शाब्दिक, “इब्लीस।” यूनानी में *“दिया-बोलोस,”* जिसका मतलब है “निंदा करनेवाला।” **5*** शाब्दिक, “परकोटे पर।”

वे तुझे हाथों-हाथ उठा लेंगे, ताकि ऐसा
न हो कि तेरा पैर किसी पत्थर से चोट
खाए।'" **7** यीशु ने शैतान से कहाः
"यह भी लिखा है, 'तू अपने परमेश्वर
यहोवा की परीक्षा न लेना।'"

8 फिर शैतान उसे अपने साथ बहुत
ही ऊँचे पहाड़ पर ले गया। और उसे
दुनिया के तमाम राज्य और उनकी शानो-
शौकत दिखायी।* **9** फिर उसने यीशु
से कहाः "अगर तू बस एक बार मेरे
सामने गिरकर मेरी उपासना करे, तो मैं
यह सबकुछ तुझे दे दूँगा।" **10** तब
यीशु ने उससे कहाः "दूर हो जा शैतान!
क्योंकि यह लिखा है, 'तू सिर्फ अपने पर-
मेश्वर यहोवा की उपासना कर और
उसी की पवित्र सेवा कर।'" **11** तब
शैतान उसे छोड़कर चला गया। और
देखो! स्वर्गदूत आकर यीशु की सेवा
करने लगे।

12 जब यीशु ने सुना कि यूहन्ना को
गिरफ्तार कर लिया गया है, तो वह
वहाँ से गलील चला गया। **13** फिर
नासरत छोड़ने के बाद वह कफर-
नहूम में रहने लगा, जो झील के किनारे
ज़बूलून और नप्ताली के ज़िलों में है।
14 इससे वह वचन पूरा हुआ जो यशा-
याह भविष्यवक्ता से कहलवाया गया थाः
15 "हे ज़बूलून के देश और नप्ताली के
देश, समुद्र के रास्ते पर यरदन के उस
पार, गैर-यहूदियों के गलील! **16** जो
लोग अंधकार में बैठे थे, उन्होंने एक बड़ी
रौशनी देखी। जो मौत के साए के देश
में बैठे थे, उन पर रौशनी चमकी।"
17 उस वक्त से यीशु ने प्रचार करना
और यह कहना शुरू कियाः "पश्चाताप
करो, क्योंकि स्वर्ग का राज पास आ
गया है।"

18 गलील झील* के किनारे चलते-
चलते यीशु ने शमौन को, जो पतरस कह-
लाता है और उसके भाई अन्द्रियास को
झील में जाल डालते देखा। वे दोनों
मछुवारे थे। **19** उसने उनसे कहाः
"मेरे पीछे हो लो। जिस तरह तुम मछ-
लियाँ इकट्ठी करते हो, मैं तुम्हें इंसानों को
इकट्ठा करनेवाले बनाऊँगा।" **20** तब
वे फौरन अपने जाल छोड़कर उसके पीछे
हो लिए। **21** वहाँ से आगे बढ़ने पर
यीशु ने याकूब और यूहन्ना को देखा। ये
दोनों भाई थे और जब्दी नाम के आदमी
के बेटे थे। वे अपने पिता जब्दी के साथ
नाव में अपने जाल ठीक कर रहे थे।
तब यीशु ने उन्हें भी बुलाया। **22** वे
फौरन नाव और अपने पिता को छोड़-
कर उसके पीछे हो लिए।

23 यीशु सारे गलील प्रदेश का दौरा
करता हुआ, उनके सभा-घरों में सिखाता
और राज की खुशखबरी का प्रचार करता
रहा। साथ ही वह लोगों के बीच हर तरह
की बीमारी और हर तरह की दुर्बलता
को दूर करता रहा। **24** यहाँ तक कि
उसकी खबर दूर सारे सीरिया प्रांत तक

मत्ती 4:8* शायद एक दर्शन में।

मत्ती 4:18* बाइबल में इस झील को गन्नेसरत झील, गलील झील और तिबिरियास झील भी कहा गया है।

फैल गयी। लोग हर तरह की तकलीफ
के मारों को उसके पास ले आए, जो
तरह-तरह की बीमारियों और पीड़ाओं से
दुःखी थे। उनमें ऐसे लोग भी थे जिनमें
दुष्ट स्वर्गदूत समाए थे और मिरगी और
लकवे के मारे भी थे। यीशु ने उन सबको
चंगा किया। **25** नतीजा यह हुआ कि
गलील और दिकापुलिस* और यरूशलेम
और यहूदिया से और यरदन के पार से,
भीड़-की-भीड़ उसके पीछे हो ली।

5 जब यीशु ने भीड़ को देखा, तो वह
पहाड़ पर चढ़ गया। फिर जब वह
बैठ गया, तो उसके चेले उसके पास
आए। **2** तब वह उन्हें ये बातें सिखाने
लगाः

3 "सुखी हैं वे जिनमें परमेश्वर से
मार्गदर्शन पाने की भूख है,* क्योंकि स्वर्ग
का राज उन्हीं का है।

4 सुखी हैं वे जो मातम मनाते हैं,
क्योंकि उन्हें दिलासा दिया जाएगा।

5 सुखी हैं वे जो कोमल स्वभाव के
हैं, क्योंकि वे धरती के वारिस होंगे।

6 सुखी हैं वे जो न्याय* होते देखने
की भूख और प्यास से तड़पते हैं, क्योंकि
वे तृप्त किए जाएँगे।

7 सुखी हैं वे जो दयालु हैं, क्योंकि
उन पर दया की जाएगी।

8 सुखी हैं वे जो दिल के साफ हैं,
क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे।

9 सुखी हैं वे जो शांति कायम करते
हैं, क्योंकि वे 'परमेश्वर के बेटे' कह-
लाएँगे।

10 सुखी हैं वे जो सही काम करने
की वजह से ज़ुल्म सहते हैं, क्योंकि स्वर्ग
का राज उन्हीं का है।

11 सुखी हो तुम जब लोग तुम्हें मेरे
चेले होने की वजह से बदनाम करें और
तुम पर ज़ुल्म ढाएँ और झूठ बोल-बोल-
कर तुम्हारे खिलाफ हर तरह की बुरी
बात कहें। **12** तब तुम आनंद मनाना
और खुशी के मारे उछलना। इसलिए कि
स्वर्ग में तुम्हारे लिए बड़ा इनाम है। उन्होंने
तुमसे पहले के भविष्यवक्ताओं पर भी
इसी तरह ज़ुल्म ढाए थे।

13 तुम पृथ्वी के नमक हो। लेकिन
अगर नमक फीका हो जाए, तो क्या फिर
उसे किसी तरह दोबारा नमकीन किया जा
सकता है? नहीं, वह किसी काम का नहीं
रहता। उसे बाहर सड़कों पर फेंक दिया
जाता है और वह लोगों के पैरों तले रौंदा
जाता है।

14 तुम दुनिया की रौशनी हो। जो
शहर पहाड़ पर बसा हो, वह छिप नहीं
सकता। **15** लोग दीपक जलाकर उसे
टोकरी* से ढककर नहीं रखते, बल्कि
दीपदान पर रखते हैं। इससे घर के सब
लोगों को रौशनी मिलती है। **16** उसी
तरह तुम्हारी रौशनी लोगों के सामने
चमके, जिससे वे तुम्हारे भले काम देख-
कर स्वर्ग में रहनेवाले तुम्हारे पिता की
महिमा करें।

17 यह मत सोचो कि मैं मूसा

मत्ती 4:25* या, "दस शहर।" **5:3*** या, "की भीख माँगते हैं।" **6*** या, "परमेश्वर की मरज़ी पूरी करने और उसकी आज्ञाओं को मानने।"

मत्ती 5:15* शाब्दिक, "नापने की टोकरी।"

के कानून या भविष्यवक्ताओं के वचनों
को रद्द करने आया हूँ। मैं उन्हें रद्द
करने नहीं, बल्कि पूरा करने आया हूँ।
18 मैं तुमसे सच कहता हूँ कि आकाश
और पृथ्वी चाहे मिट जाएँ, मगर जब तक
मूसा के कानून में लिखी सारी बातें
पूरी न हो लें, तब तक इसका छोटे-
से-छोटा अक्षर या एक बिंदु भी पूरा
हुए बिना हरगिज़ न मिटेगा। **19** इस-
लिए जो कोई इसमें लिखी छोटी-से-छोटी
आज्ञाओं में से किसी एक को तोड़ता है
और लोगों को भी वैसा ही सिखाता है,
वह स्वर्ग के राज में दाखिल होने के
लायक नहीं होगा।* मगर जो इन्हें मानता
और इन्हें सिखाता भी है, वह स्वर्ग के
राज में दाखिल होने के लायक होगा।#
20 क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ कि अगर
तुम्हारे नेक काम* शास्त्रियों और फरी-
सियों के नेक कामों से बढ़कर न हों, तो
तुम स्वर्ग के राज में हरगिज़ दाखिल
न होगे।

21 तुम सुन चुके हो कि
गुज़रे ज़माने के लोगों से कहा गया
था, 'तू खून न करना; और जो कोई
खून करता है उसे अदालत के सामने
जवाब देना पड़ेगा।' **22** मगर मैं
तुमसे कहता हूँ कि हर वह इंसान जिसके
दिल में अपने भाई के खिलाफ गुस्से की
आग सुलगती रहती है, उसे अदालत के
सामने जवाब देना पड़ेगा। और हर वह
इंसान जो घृणित शब्दों* से अपने भाई
का तिरस्कार करता है, उसे सबसे बड़ी
अदालत# के सामने जवाब देना पड़ेगा।
और हर वह इंसान जो अपने भाई से
कहता है, 'अरे चरित्रहीन मूर्ख!' वह
गेहन्ना△ की आग में डाले जाने की सज़ा
के लायक ठहरेगा।

23 इसलिए, अगर तू मंदिर में वेदी
के पास अपनी भेंट ला रहा हो और वहाँ
तुझे याद आए कि तेरे भाई को तुझसे
कुछ शिकायत है, **24** तो तू अपनी
भेंट वहीं वेदी के सामने छोड़ दे और
जाकर पहले अपने भाई के साथ सुलह
कर और जब तू लौट आए तब अपनी
भेंट चढ़ा।

25 जो तेरे खिलाफ मुकद्दमा दायर
करने जा रहा हो, उसके साथ तू रास्ते
में ही जल्द-से-जल्द सुलह कर ले। कहीं
ऐसा न हो कि वह तुझे न्यायाधीश के
हवाले कर दे और न्यायी तुझे प्यादे के
हवाले कर दे और तुझे कैदखाने में डाल
दिया जाए। **26** मैं तुझसे सच कहता
हूँ, जब तक तू एक-एक पाई* न चुका दे,
तब तक तू वहाँ से किसी भी हाल में न
छूट सकेगा।

27 तुम सुन चुके हो कि कहा गया
था, 'तू शादी के बाहर यौन-संबंध* न

मत्ती 5:19* शाब्दिक, "वह स्वर्ग के राज के संबंध में सबसे 'छोटा' कहलाएगा।" **19#** शाब्दिक, "वह स्वर्ग के राज के संबंध में 'महान' कहलाएगा।" **20*** या, धार्मिकता।

मत्ती 5:22* या, "ऐसे घटिया शब्द जिन्हें ज़बान पर लाना भी नागवार था।" **22#** यानी, यहूदी महासभा। **22△** यरूशलेम के बाहर कूड़ा-कर-कट जलाने की जगह। अतिरिक्त लेख 9 देखें। **26*** शाब्दिक, "आखिरी *क्वाद्रान,"* जो एक दीनार का 1/64वाँ हिस्सा था। **27*** या, "परस्त्रीगमन।"

रखना।’ **28** मगर मैं तुमसे कहता हूँ
कि हर वह आदमी जो किसी स्त्री को
ऐसी नज़र से देखता रहता है जिससे
उसके मन में स्त्री के लिए वासना पैदा हो,
वह अपने दिल में उस स्त्री के साथ
व्यभिचार* कर चुका। **29** अगर तेरी
दायीं आँख तुझसे पाप करवा रही है, तो
उसे नोंचकर निकाल दे और दूर फेंक दे।
तेरे लिए यह ज़्यादा भला है कि तू अपना
एक अंग गँवा दे, बजाय इसके कि तेरा
पूरा शरीर *गेहन्‍ना* में झोंक दिया जाए।
30 और अगर तेरा दायाँ हाथ तुझसे
पाप करवा रहा है, तो उसे काटकर दूर
फेंक दे। तेरे लिए यह ज़्यादा भला है कि
तू अपना एक अंग गँवा दे, बजाय इसके
कि तेरा पूरा शरीर *गेहन्‍ना* में डाला जाए।

31 यह भी कहा गया था, ‘जो कोई
अपनी पत्नी को तलाक देता है, वह उसे
एक तलाकनामा दे।’ **32** लेकिन मैं
तुमसे कहता हूँ कि हर वह आदमी जो
व्यभिचार* के अलावा किसी और वजह
से अपनी पत्नी को तलाक देता है, वह
उसे शादी के बाहर यौन-संबंध रखने के
खतरे में डालता है। और जो कोई ऐसी
तलाकशुदा स्त्री से शादी करता है, वह
शादी के बाहर यौन-संबंध रखने का
गुनहगार है।

33 इसके अलावा, तुमने यह भी
सुना है कि गुज़रे ज़माने के लोगों से कहा
गया था, ‘तू ऐसी कसम न खाना जिसे
तू पूरा न करे, मगर तू यहोवा के सामने
मानी मन्‍नतें पूरी करना।’ **34** लेकिन
मैं कहता हूँः तू कभी कसम न खाना, न
स्वर्ग की क्योंकि वह परमेश्‍वर की राज-
गद्दी है। **35** न ही पृथ्वी की, क्योंकि
यह उसके पाँवों की चौकी है; न यरूश-
लेम की, क्योंकि यह उस महाराजा का
शहर है। **36** न ही तू अपने सिर की
कसम खाना, क्योंकि तू एक बाल तक
को सफेद या काला नहीं कर सकता।
37 बस तुम्हारी ‘हाँ’ का मतलब हाँ हो,
और ‘न’ का मतलब न। इसलिए कि
इससे बढ़कर जो कुछ कहा जाता है वह
शैतान से होता है।

38 तुम सुन चुके हो कि कहा
गया था, ‘आँख के बदले आँख और
दाँत के बदले दाँत।’ **39** लेकिन
मैं तुमसे कहता हूँः जो दुष्ट है उसका
मुकाबला मत करो; इसके बजाय, जो
कोई तेरे दाएँ गाल पर थप्पड़ मारे,
उसकी तरफ दूसरा गाल भी कर दे।
40 और अगर कोई तुझ पर अदालत
में मुकद्दमा कर तेरा कुरता लेना चाहे, तो
उसे अपना ओढ़ना भी दे दे; **41** और
अगर कोई अधिकारी तुझे जबरन सेवा
में एक मील ले जाए, तो तू उसके
साथ दो मील चला जा। **42** जो कोई
तुझसे माँगता है, उसे दे दे और जो तुझसे
बिन ब्याज के उधार लेना चाहे उसे देने
से इनकार मत कर।

43 तुम सुन चुके हो कि कहा
गया था, ‘तुझे अपने पड़ोसी से प्यार
करना है और अपने दुश्‍मन से नफरत।’

मत्ती 5:28* या, शादी के बाहर यौन-संबंध। **32*** यानी, हर किस्म के नाजायज़ यौन-संबंध। अति-रिक्त लेख 4 देखें।

44 लेकिन मैं तुमसे कहता हूँ: अपने
दुश्मनों से प्यार करते रहो और जो
तुम पर ज़ुल्म कर रहे हैं, उनके लिए
प्रार्थना करते रहो। 45 इस तरह तुम
स्वर्ग में रहनेवाले अपने पिता के बेटे होने
का सबूत दो, क्योंकि वह अच्छे और बुरे,
दोनों तरह के लोगों पर अपना सूरज चम-
काता है और नेक और दुष्ट दोनों पर
बारिश बरसाता है। 46 क्योंकि अगर
तुम उन्हीं से प्यार करो जो तुमसे प्यार
करते हैं, तो तुम्हें इसका क्या इनाम
मिलेगा? क्या कर-वसूलनेवाले* भी ऐसा
ही नहीं करते? 47 और अगर तुम
सिर्फ अपने भाइयों को ही नमस्कार करो,
तो कौन-सा अनोखा काम करते हो?
क्या गैर-यहूदी भी ऐसा ही नहीं करते?
48 इसलिए तुम सिद्ध बनो, जैसे स्वर्ग
में रहनेवाला तुम्हारा पिता भी सिद्ध है।

6 खबरदार रहो कि तुम लोगों को
दिखाने के लिए उनके सामने नेकी
के काम न करो; नहीं तो तुम अपने पिता
से जो स्वर्ग में है, कोई फल न पाओगे।
2 इसलिए जब तू दान* करे, तो अपने
आगे-आगे तुरही न बजवा, जैसे कपटी
सभा-घरों और गलियों में बजवाते हैं,
ताकि लोग उनकी बड़ाई करें। मैं तुमसे
सच कहता हूँ, वे अपना पूरा फल पा
चुके। 3 मगर जब तू दान करे, तो
इस तरह करना कि तेरे बाएँ हाथ को भी
न मालूम पड़े कि तेरा दायाँ हाथ क्या
कर रहा है, 4 जिससे तेरा दान गुप्त
रहे। तब तेरा पिता जो गुप्त काम को
देख रहा है, तुझे इसका बदला देगा।

5 जब तुम प्रार्थना करो, तो कपटियों
की तरह मत करो; क्योंकि उन्हें सभा-
घरों और सड़कों के चौराहे पर खड़े होकर
प्रार्थना करना अच्छा लगता है ताकि लोग
उन्हें देखें। मैं तुमसे सच कहता हूँ, वे
अपना पूरा फल पा चुके। 6 लेकिन
जब तू प्रार्थना करे, तो अपने घर के
अंदर के कमरे में जा और दरवाज़ा बंद
करने के बाद अपने पिता से जिसे कोई
देख नहीं सकता,* प्रार्थना कर, तब तेरा
पिता जो तेरा हर काम देख सकता है,#
वह तुझे इसका फल देगा। 7 मगर
प्रार्थना करते वक्त, दुनिया के लोगों की
तरह बार-बार एक ही बात न दोहरा,
क्योंकि वे सोचते हैं कि उनके बहुत
ज़्यादा बोलने से परमेश्वर उनकी सुनेगा।
8 इसलिए, तुम उनके जैसे न बनना,
क्योंकि परमेश्वर जो तुम्हारा पिता है
तुम्हारे माँगने से पहले जानता है कि तुम्हें
किन चीज़ों की ज़रूरत है।

9 इसलिए, तुम इस तरह प्रार्थना
करना:

'हे हमारे पिता तू जो स्वर्ग में है, तेरा
नाम पवित्र किया जाए। 10 तेरा राज
आए। तेरी मरज़ी, जैसे स्वर्ग में पूरी हो
रही है, वैसे ही धरती पर भी पूरी हो।*
11 आज के इस दिन की रोटी हमें दे;
12 जैसे हमने अपने खिलाफ पाप करने-

मत्ती 5:46* कर-वसूलनेवालों को, लोग इज़्ज़त की नज़र से नहीं देखा करते थे। **6:2*** शाब्दिक, "दया के दान।"

मत्ती 6:6* या, "जो गुप्त में है।" **6#** या, "गुप्त में देखता है।" **10*** या, "तेरी मरज़ी स्वर्ग और धरती दोनों में पूरी हो।"

वालों* को माफ किया है, वैसे ही तू भी
हमारे पापों# को माफ कर। **13** जब
हम पर परीक्षा आए तो हमें गिरने न दे,
मगर हमें उस दुष्ट शैतान से बचा।’

14 अगर तुम दूसरों के अपराध
माफ करोगे, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी
तुम्हें माफ करेगा। **15** लेकिन अगर
तुम दूसरों के अपराध माफ नहीं करोगे,
तो तुम्हारा पिता भी तुम्हारे अपराध माफ
नहीं करेगा।

16 जब तुम उपवास करते हो, तो
पाखंडियों की तरह मुँह लटकाए रहना
बंद करो, क्योंकि वे अपना चेहरा गंदा
रहने देते हैं ताकि लोग उन्हें देखकर
जानें कि वे उपवास कर रहे हैं। मैं तुमसे
सच कहता हूँ, वे अपना पूरा फल पा
चुके। **17** लेकिन जब तू उपवास करे,
तो अपने सिर में तेल लगा और मुँह धो,
18 ताकि इंसान नहीं, बल्कि तेरा पिता
जिसे इंसान की आँखें देख नहीं सकतीं,
उसे मालूम हो कि तू उपवास कर रहा
है। तब तेरा पिता जो तेरा हर काम देख
सकता है,* वह तुझे इसका फल देगा।

19 अपने लिए पृथ्वी पर धन जमा
करना बंद करो, जहाँ कीड़ा और ज़ंग
उसे खा जाते हैं और जहाँ चोर सेंध लगा-
कर चुरा लेते हैं। **20** इसके बजाय,
अपने लिए स्वर्ग में धन जमा करो, जहाँ
न तो कीड़ा, न ही ज़ंग उसे खाते हैं और
जहाँ न तो चोर सेंध लगाकर चुराते हैं।
21 क्योंकि जहाँ तेरा धन होगा, वहीं
तेरा दिल भी होगा।

22 आँख, शरीर का दीपक है। इस-
लिए अगर तेरी आँख एक ही चीज़ पर
टिकी है, तो तेरा सारा शरीर रौशन
रहेगा। **23** लेकिन अगर तेरी आँख
बुरी बातों पर लगी है, तो तेरा सारा
शरीर अंधियारा होगा। इसलिए अगर
तेरी आँख ही जिसे शरीर को रौशन
करना था असल में अंधियारी हो गयी है,
तो तू* कितने गहरे अंधकार में है!

24 कोई भी दो मालिकों का दास
बनकर सेवा नहीं कर सकता; क्योंकि या
तो वह एक से नफरत करेगा और दूसरे
से प्यार या वह एक से जुड़ा रहेगा और
दूसरे को तुच्छ समझेगा। तुम परमेश्वर
के दास होने के साथ-साथ धन-दौलत की
गुलामी नहीं कर सकते।

25 इसलिए मैं तुमसे कहता हूँ:
अपनी जान के लिए चिंता करना बंद करो
कि तुम क्या खाओगे या क्या पीओगे, न
ही अपने शरीर के लिए चिंता करो कि
तुम क्या पहनोगे। क्या जीवन, भोजन
से और शरीर कपड़े से बढ़कर नहीं?
26 आकाश में उड़नेवाले पंछियों को
ध्यान से देखो, क्योंकि वे न तो बीज बोते,
न कटाई करते, न ही गोदामों में भरकर
रखते हैं, फिर भी तुम्हारा स्वर्गीय पिता
उन्हें खिलाता है। क्या तुम्हारा मोल उनसे
बढ़कर नहीं? **27** तुममें ऐसा कौन है
जो चिंता कर एक पल के लिए भी
अपनी ज़िंदगी बढ़ा सके?* **28** तुम

मत्ती 6:12* शाब्दिक, “हमारे कर्ज़दारों।” **12#** शाब्दिक, “हमारे कर्ज़।” **18*** या, “जो गुप्त में देखता है।”

मत्ती 6:23* शाब्दिक, “तेरा शरीर।” **27*** या, “अपनी आयु की लंबाई को हाथ-भर भी बढ़ा सके।”

यह चिंता क्यों करते हो कि तुम्हारे पास
पहनने के लिए कपड़े कहाँ से आएँगे?
मैदान में उगनेवाले सोसन के फूलों से
सबक सीखो, वे कैसे बढ़ते हैं; वे न तो
कड़ी मज़दूरी करते हैं, न ही सूत कातते
हैं। **29** मगर मैं तुमसे कहता हूँ कि
राजा सुलैमान भी अपने पूरे वैभव में
इन फूलों की तरह सज-धज न सका।
30 इसलिए, अगर परमेश्वर मैदान में
उगनेवाले घास-फूस को, जो आज है
और कल आग* में झोंक दिया जाएगा,
ऐसे शानदार कपड़े पहनाता है, तो अरे,
कम विश्वास रखनेवालो, क्या वह तुम्हें
न पहनाएगा? **31** इसलिए कभी-भी
चिंता न करना, न ही यह कहना, 'हम
क्या खाएँगे?' या, 'हम क्या पीएँगे?' या,
'हम क्या पहनेंगे?' **32** क्योंकि इन्हीं
सब चीज़ों के पीछे दुनिया के लोग दिन-
रात भाग रहे हैं। मगर तुम्हारा स्वर्गीय
पिता जानता है कि तुम्हें इन सब चीज़ों
की ज़रूरत है।

33 इसलिए, तुम पहले उसके राज
और उसके स्तरों के मुताबिक जो सही*
है उसकी खोज में लगे रहो और ये
बाकी सारी चीज़ें भी तुम्हें दे दी जाएँगी।
34 इसलिए, अगले दिन की चिंता कभी
न करना, क्योंकि अगले दिन की अपनी
ही चिंताएँ होंगी। आज के लिए आज की
मुसीबत काफी है।

मत्ती 6:30* या "तंदूर की आग।" **33*** "इसमें परमेश्वर की मरज़ी पूरी करना और उसकी आज्ञाएँ मानना शामिल है।"

7 दोष लगाना बंद करो ताकि तुम पर
दोष न लगाया जाए। **2** इसलिए
कि जैसे तुम दोष लगाते हो, वैसे ही तुम
पर भी दोष लगाया जाएगा। जिस नाप
से तुम नापते हो, वे भी उसी नाप से
तुम्हारे लिए भी नापेंगे।* **3** तो फिर,
तू क्यों अपने भाई की आँख में पड़े तिनके
को देखता है, मगर अपनी आँख में पड़े
लट्ठे के बारे में नहीं सोचता? **4** या तू
अपने भाई से यह कैसे कह सकता है,
'आ मैं तेरी आँख का तिनका निकाल दूँ,'
जबकि देख! तेरी अपनी ही आँख में एक
लट्ठा पड़ा है? **5** अरे कपटी! पहले
अपनी आँख से लट्ठा निकाल, तब तू
साफ-साफ देख सकेगा कि अपने भाई की
आँख से तिनका कैसे निकालना है।

6 पवित्र चीज़ें कुत्तों को मत दो, न
ही अपने मोती सुअरों के आगे फेंको,
ऐसा न हो कि वे अपने पैरों से उन्हें रौंदें
और पलटकर तुम्हें फाड़ डालें।

7 माँगते रहो और तुम्हें दे दिया
जाएगा; ढूँढ़ते रहो और तुम पाओगे;
खटखटाते रहो और तुम्हारे लिए खोला
जाएगा। **8** क्योंकि हर कोई जो
माँगता है, उसे मिलता है और जो ढूँढ़ता
है, वह पाता है और हर कोई जो खट-
खटाता है, उसके लिए खोला जाएगा।
9 आखिर तुममें ऐसा कौन आदमी है
जिसका बेटा अगर उससे रोटी माँगे, तो
वह उसे एक पत्थर पकड़ा दे? **10** या
अगर वह मछली माँगे, तो उसे एक
साँप पकड़ा दे? क्या वह ऐसा करेगा?

मत्ती 7:2* या, "वे तुम्हारे लिए नापेंगे।"

11 इसलिए जब तुम दुष्ट होते हुए
भी यह जानते हो कि अपने बच्चों को
अच्छे तोहफे कैसे देने हैं, तो तुम्हारा पिता
जो स्वर्ग में है, वह और भी बढ़कर अपने
माँगनेवालों को अच्छी चीज़ें क्यों न देगा!

12 इसलिए जो कुछ तुम चाहते हो
कि लोग तुम्हारे साथ करें, तुम भी उनके
साथ वैसा ही करो। दरअसल, मूसा के
कानून और भविष्यवक्ताओं की शिक्षाओं
का निचोड़ यही है।

13 सँकरे फाटक से अंदर जाओ,
क्योंकि चौड़ा और खुला है वह रास्ता जो
विनाश की तरफ ले जाता है, और उस
पर जानेवाले बहुत हैं। **14** जबकि
सँकरा है वह फाटक और तंग है वह
रास्ता, जो जीवन की तरफ ले जाता है
और उसे पानेवाले थोड़े हैं।

15 झूठे भविष्यवक्ताओं से खबरदार
रहो जो भेड़ों के वेश में तुम्हारे पास आते
हैं, मगर अंदर से भूखे, खूँखार भेड़िए
हैं। **16** उनके फलों* से तुम उन्हें
पहचान लोगे। क्या लोग कभी कँटीली
झाड़ियों से अंगूर या जंगली पौधों से
अंजीर पाते हैं? **17** उसी तरह, हरेक
अच्छा पेड़ बढ़िया फल लाता है, मगर
सड़ा हुआ हर पेड़ खराब फल लाता है।
18 अच्छा पेड़ खराब फल नहीं ला
सकता, न ही सड़ा हुआ पेड़ बढ़िया फल
ला सकता है। **19** हर वह पेड़ जो
बढ़िया फल नहीं लाता, वह काटा और
आग में झोंका जाता है। **20** इसलिए,
तुम झूठे भविष्यवक्ताओं को उनके फलों
से पहचान लोगे।

21 जो मुझे ‘हे प्रभु, हे प्रभु’ कहते
हैं, उनमें से हर कोई स्वर्ग के राज में
दाखिल नहीं होगा, मगर जो मेरे स्वर्गीय
पिता की मरज़ी पूरी कर रहा है, वही
दाखिल होगा। **22** उस दिन बहुत-से
लोग मुझसे कहेंगे, ‘हे प्रभु, हे प्रभु, क्या
हमने तेरे नाम से भविष्यवाणी नहीं की
और तेरे नाम से, लोगों में समाए दुष्ट
स्वर्गदूतों को नहीं निकाला और तेरे नाम
से बहुत-से शक्तिशाली काम नहीं किए?’
23 तब मैं उनसे साफ-साफ कह दूँगा:
मैंने तुम्हें कभी नहीं जाना! अरे दुरा-
चारियो, मेरे सामने से दूर हो जाओ।

24 इसलिए हर कोई जो मेरी
इन बातों को सुनता है और इन पर
चलता है, वह उस समझदार आदमी जैसा
साबित होगा जिसने अपना घर चट्टान पर
बनाया। **25** फिर ज़बरदस्त बरसात
हुई, बाढ़-पर-बाढ़ आयी और आँधियाँ
चलीं और उस घर से टकरायीं, फिर भी
वह नहीं गिरा क्योंकि उसकी नींव चट्टान
पर बनायी गयी थी। **26** लेकिन हर
कोई जो मेरी ये बातें सुनता है मगर इन
पर नहीं चलता, वह उस मूर्ख जैसा साबित
होगा जिसने अपना घर रेत पर बनाया।
27 और ज़बरदस्त बरसात हुई, बाढ़-
पर-बाढ़ आयी और आँधियाँ चलीं और
उस घर से टकरायीं, और वह ढह गया
और उसका सर्वनाश हो गया।”

28 जब यीशु ये बातें कह चुका, तो
उसका ऐसा असर हुआ कि भीड़ उसका

मत्ती 7:16* ज़ाहिर है, इसका मतलब उनके काम हैं।

सिखाने का तरीका देखकर दंग रह गयी।
29 क्योंकि यीशु उन्हें उनके शास्त्रियों
की तरह नहीं, बल्कि ऐसे इंसान की
तरह सिखा रहा था जिसके पास बड़ा
अधिकार हो।

8 जब यीशु उस पहाड़ से नीचे उतर
आया, तो भीड़-की-भीड़ उसके
पीछे हो ली। **2** और देखो! एक
कोढ़ी उसके पास आया और झुककर
उसे प्रणाम करने और यह कहने लगाः
"प्रभु, बस अगर तू चाहे, तो मुझे शुद्ध
कर सकता है।" **3** इस पर, यीशु ने
अपना हाथ बढ़ाकर उसे यह कहते हुए
छूआः "हाँ, मैं चाहता हूँ। शुद्ध हो जा।"
उसी पल उसका कोढ़ दूर हो गया और
वह शुद्ध हो गया। **4** तब यीशु ने
उससे कहाः "देख किसी को मत बताना।
मगर, जाकर खुद को याजक को दिखा
और मूसा ने जो भेंट ठहरायी है वह चढ़ा,
ताकि वे खुद इस बात के गवाह हों।"

5 जब यीशु कफरनहूम में आया, तो
एक सेना-अफसर* उसके पास आकर
उससे बिनती करने **6** और यह कहने
लगाः "साहब, मेरा नौकर लकवे का
मारा घर में पड़ा है और बड़ी पीड़ा में
तड़प रहा है।" **7** यीशु ने उससे कहाः
"जब मैं वहाँ आऊँगा, तो उसे चंगा
करूँगा।" **8** जवाब में उस सेना-
अफसर ने कहाः "प्रभु, मैं इस लायक
नहीं कि तू मेरी छत तले आए, मगर बस
तू अपने मुँह से कह दे और मेरा नौकर
ठीक हो जाएगा। **9** क्योंकि मैं भी
किसी और के अधिकार के अधीन हूँ और
मेरे नीचे भी सिपाही हैं और जब मैं एक
से कहता हूँ, 'जा!' तो वह जाता है और
दूसरे से कहता हूँ 'आ!' तो वह आता
है और अपने दास से कहता हूँ 'यह
कर!' और वह करता है।" **10** यह
सुनकर यीशु ने ताज्जुब किया और अपने
पीछे आनेवालों से कहाः "मैं तुमसे सच
कहता हूँ, मैंने इसराएल में किसी एक में
भी ऐसा ज़बरदस्त विश्वास नहीं पाया।
11 मगर मैं तुमसे कहता हूँ कि पूरब से
और पश्चिम से बहुत-से लोग आएँगे और
स्वर्ग के राज में अब्राहम, इसहाक और
याकूब के साथ खाने की मेज़ से टेक
लगाकर बैठेंगे, **12** जबकि राज के
बेटे बाहर अंधेरे में फेंक दिए जाएँगे। वहाँ
उनका रोना और दाँत पीसना होगा।"
13 तब यीशु ने उस सेना-अफसर से
कहाः "जा। जैसा तू ने विश्वास किया है,
वैसा ही तेरे लिए हो।" और उसी पल
उस अफसर का नौकर चंगा हो गया।

14 और यीशु पतरस के घर आया
और देखा कि पतरस की सास बुखार में
पड़ी है। **15** तब यीशु ने उसका हाथ
छूआ और उसका बुखार उतर गया,
तब वह उठी और उसकी सेवा में लग
गयी। **16** मगर जब शाम हो गयी,
तब लोग उसके पास ऐसे बहुत-से लोगों
को लाने लगे जिनमें दुष्ट स्वर्गदूत*
समाए थे। यीशु ने इन दुष्ट स्वर्गदूतों को

मत्ती 8:5* या, "शतपति," जिसकी कमान के नीचे सौ सैनिक होते थे।

मत्ती 8:16* यूनानी *नफ्मा* / अतिरिक्त लेख 7 देखें।

सिर्फ बोलकर ही निकाल दिया और उन
सभी लोगों को चंगा किया जो तकलीफ
के मारे थे। **17** ताकि वह वचन पूरा
हो सके जो यशायाह भविष्यवक्ता के
ज़रिए कहा गया था: "उसने हमारी बीमा-
रियाँ खुद ले लीं और हमारे रोग उठा ले
गया।"

18 जब यीशु ने अपने चारों तरफ
लोगों की भीड़ देखी, तो उसने चेलों को
हुक्म दिया कि नाव को उस पार ले जाएँ।
19 तब एक शास्त्री ने आकर उससे
कहा: "गुरु, तू जहाँ कहीं जाएगा, मैं
तेरे पीछे चलूँगा।" **20** मगर यीशु ने
उससे कहा: "लोमड़ियों की माँदें और
आकाश के पंछियों के बसेरे होते हैं, मगर
इंसान के बेटे के पास कहीं सिर टिकाने
की भी जगह नहीं है।" **21** तब एक
और चेले ने यीशु से कहा: "प्रभु, मुझे
इजाज़त दे कि मैं चला जाऊँ और पहले
अपने पिता को दफना दूँ।" **22** यीशु
ने उससे कहा: "मेरे पीछे चलता रह और
मुरदों को अपने मुरदे दफन करने दे।"

23 जब यीशु एक नाव पर चढ़
गया, तो चेले भी उसके साथ हो लिए।
24 तब अचानक झील में ऐसी ज़ोरदार
आँधी उठी कि लहरें नाव को ढकने लगीं;
मगर यीशु सो रहा था। **25** और चेले
उसके पास आए और यह कहते हुए
उसे जगाने लगे: "प्रभु, हमें बचा, हम
नाश होनेवाले हैं!" **26** मगर यीशु ने
उनसे कहा: "अरे, कम विश्वास रखने-
वालो, तुम्हारे दिल क्यों काँप रहे हैं?"
फिर उसने उठकर उस आँधी और लहरों
को डाँटा और बड़ा सन्नाटा छा गया।
27 यह देखकर चेले हैरत में पड़ गए
और कहने लगे: "यह कैसा शख्स है
कि आँधी और समुद्र भी इसका हुक्म
मानते हैं?"

28 इसके बाद, यीशु उस पार गद-
रेनियों के इलाके में पहुँचा। वहाँ दो
आदमी थे जिनमें दुष्ट स्वर्गदूत समाए थे।
वे कब्रों के बीच से निकलकर यीशु के
सामने आए। वे इतने खूँखार थे कि कोई
भी उस रास्ते से गुज़रने की हिम्मत नहीं
करता था। **29** और देखो! वे चिल्ला-
कर कहने लगे: "हे परमेश्वर के बेटे,
हमारा तुझसे क्या लेना-देना? क्या तू ठह-
राए हुए वक्त से पहले हमें तड़पाने
आया है?" **30** उनसे काफी दूरी पर
सुअरों का एक बड़ा झुंड चर रहा था।
31 इसलिए दुष्ट स्वर्गदूत यह कहकर
यीशु से बिनती करने लगे: "अगर तू हमें
निकाल रहा है, तो हमें सुअरों के उस
झुंड में भेज दे।" **32** तब यीशु ने
उनसे कहा: "जाओ!" और वे निकलकर
सुअरों में समा गए। तब अचानक सुअरों
का पूरा झुंड बड़ी तेज़ी से टीले की तरफ
दौड़ा और वहाँ से गिरकर झील में डूब
मरा। **33** मगर सूअर चरानेवाले भाग
खड़े हुए और शहर में जाकर सारा
किस्सा कह सुनाया और उन आदमियों के
बारे में भी बताया, जिनमें दुष्ट स्वर्गदूत
समाए थे। **34** तब देखो! सारा शहर
निकलकर यीशु को देखने आया। जब
उन्होंने यीशु को देखा, तो उससे बहुत
बिनती करने लगे कि वह उनके इलाके
से चला जाए।

9 तब यीशु नाव पर चढ़कर पार चला
गया और अपने शहर में आ गया।
2 और देखो! कुछ लोग, लकवे के मारे
हुए एक आदमी को बिस्तर पर लिटा-
कर ला रहे थे। जब यीशु ने उनका
विश्वास देखा, तो लकवे के मारे आदमी
से कहाः “हिम्मत रख बेटे, तेरे पाप
माफ किए गए।” **3** और देखो! कुछ
शास्त्री अपने मन में कहने लगेः “यह
आदमी परमेश्वर की तौहीन कर रहा
है।” **4** यह जानते हुए कि वे क्या
सोच रहे हैं, यीशु ने उनसे कहाः “तुम
क्यों अपने दिलों में बुरी बातें सोच रहे
हो? **5** असल में, क्या कहना ज़्यादा
आसान है, तेरे पाप माफ किए गए
या यह कहना कि उठ और चल-फिर?
6 मगर इसलिए कि तुम जान लो कि
इंसान के बेटे को धरती पर पाप माफ
करने का अधिकार है . . .” फिर यीशु
ने लकवे के मारे हुए से कहाः “खड़ा हो,
अपना बिस्तर उठा और अपने घर जा।”
7 तब वह आदमी उठ बैठा और अपने
घर चला गया। **8** यह देखकर भीड़
पर भय छा गया और उन्होंने परमेश्वर
की बड़ाई की, जिसने एक इंसान को ऐसा
अधिकार दिया था।

9 फिर जब यीशु वहाँ से आगे जा
रहा था, तो उसकी नज़र मत्ती नाम के
एक आदमी पर पड़ी, जो कर-वसूली के
दफ्तर में बैठा था। यीशु ने उससे कहाः
“मेरा चेला बन जा और मेरे पीछे हो ले।”
इस पर मत्ती वहाँ से उठा और यीशु के
पीछे हो लिया। **10** बाद में जब वह
घर में मेज़ से टेक लगाए बैठा था,
तो देखो! बहुत-से कर-वसूलनेवाले और
दूसरे ऐसे पापी आए और वे भी यीशु
और उसके चेलों के साथ खाने बैठे।
11 मगर यह देखकर फरीसी उसके
चेलों से कहने लगेः “तुम्हारा गुरु कर-
वसूलनेवालों और पापियों के साथ क्यों
खाता है?” **12** उनकी बात सुनकर
यीशु ने कहाः “जो सेहतमंद हैं, उन्हें वैद्य
की ज़रूरत नहीं होती, मगर बीमारों को
होती है। **13** इसलिए जाओ और इस
बात का मतलब सीखो, ‘मैं बलिदान
नहीं, बल्कि दया चाहता हूँ।’ क्योंकि
मैं धर्मियों को नहीं, बल्कि पापियों को
बुलाने आया हूँ।”

14 फिर यूहन्ना के चेले यीशु के पास
आए और पूछने लगेः “क्या वजह है कि
हम और फरीसी तो उपवास रखते हैं,
मगर तेरे चेले उपवास नहीं रखते?”
15 इस पर यीशु ने उनसे कहाः “जब
दूल्हा अपने दोस्तों के साथ है, उस दौरान
क्या उसके दोस्त मातम मनाएँगे? नहीं।
मगर वे दिन आएँगे जब दूल्हे को उनसे
जुदा कर दिया जाएगा और तब वे
उपवास करेंगे। **16** कोई भी पुराने
कपड़े पर नए* कपड़े से पैवंद काटकर
नहीं लगाता; क्योंकि नए पैवंद की पूरी
ताकत पुराने कपड़े को खींच लेगी और
चीरा पहले से ज़्यादा बड़ा हो जाएगा।
17 न ही लोग पुरानी मश्कों में नयी
दाख-मदिरा भरते हैं; लेकिन अगर वे
भरें, तो मश्कें फट जाती हैं और मदिरा

मत्ती 9:16* या, “अनसिकुड़े।”

बह जाती है और मश्कें नष्ट हो जाती
हैं। मगर लोग नयी मदिरा नयी मश्कों
में भरते हैं, और दोनों सही-सलामत
रहती हैं।”

18 जब यीशु उन्हें ये बातें बता रहा
था, तब देखो! एक धर्म-अधिकारी जो
उसके पास आया था, उसने झुककर यीशु
को प्रणाम किया और कहा: “अब तक
मेरी बच्ची मर चुकी होगी; फिर भी तू
चल और उस पर अपना हाथ रख, तो
वह फिर से जी उठेगी।”

19 तब यीशु उठा और उसके पीछे
गया और चेले भी उसके साथ हो लिए।
20 तब देखो! एक स्त्री जो बारह साल
से खून बहने की बीमारी से पीड़ित थी,
वह यीशु के पीछे आयी और उसके कपड़े
की झालर छू ली। **21** क्योंकि वह
मन-ही-मन कहती थी: “अगर मैं उसके
कपड़े को ही छू लूँगी, तो अच्छी हो
जाऊँगी।” **22** यीशु ने मुड़कर उसे
देखा और कहा: “बेटी हिम्मत रख; तेरे
विश्वास ने तुझे ठीक किया है।” उसी
घड़ी वह स्त्री अच्छी हो गयी।

23 जब वह उस धर्म-अधिकारी के
घर पहुँचा, तो उसकी नज़र बाँसुरी बजाने-
वालों और शोरगुल करती भीड़ पर पड़ी।
24 यीशु ने उनसे कहा: “यहाँ से चले
जाओ, क्योंकि बच्ची मरी नहीं बल्कि सो
रही है।” इस पर वे उसकी खिल्ली उड़ाते
हुए उस पर हँसने लगे। **25** जब भीड़
को बाहर कर दिया गया, तब यीशु अंदर
गया और बच्ची का हाथ अपने हाथ में
लिया और वह उठ बैठी। **26** इस
बात की चर्चा उस पूरे इलाके में फैल
गयी।

27 जब यीशु वहाँ से आगे जा रहा
था, तो दो अंधे उसके पीछे-पीछे यह
पुकारते हुए आने लगे: “हे दाविद के
वंशज, हम पर दया कर।” **28** जब
यीशु घर के अंदर गया, तो वे अंधे उसके
पास आए। तब यीशु ने उनसे पूछा:
“क्या तुम्हें विश्वास है कि मैं यह कर
सकता हूँ?” उन्होंने जवाब दिया: “हाँ,
प्रभु।” **29** तब उसने उनकी आँखों
को छूकर कहा: “तुम्हारे विश्वास के
मुताबिक तुम्हारे लिए हो।” **30** और
वे अपनी आँखों से देखने लगे। फिर यीशु
ने उन्हें कड़ी हिदायत दी: “देखो, किसी
को पता न चले।” **31** मगर बाहर
जाने के बाद उन्होंने उस पूरे इलाके में
सबको उसके बारे में बता दिया।

32 फिर जब वे बाहर जा रहे थे तो
देखो! लोग एक गूँगे को, जिसमें एक दुष्ट
स्वर्गदूत समाया था, उसके पास लाए।
33 और जब दुष्ट स्वर्गदूत निकाल दिया
गया, तो वह गूँगा बोलने लगा। यह
देखकर भीड़ हैरत में पड़ गयी और
कहने लगी: “इसराएल में ऐसा कभी नहीं
देखा गया।” **34** मगर फरीसी कहने
लगे: “यह तो दुष्ट स्वर्गदूतों के राजा की
मदद से इन्हें निकालता है।”

35 यीशु सब शहरों और गाँवों का
दौरा करने निकला, और वह उनके सभा-
घरों में सिखाता और राज की खुश-
खबरी का प्रचार करता गया। वह हर
तरह की बीमारी और हर तरह की

दुर्बलता को दूर करता रहा।
36 जब उसने भीड़ को देखा तो वह तड़प उठा, क्योंकि वे उन भेड़ों की तरह थे जिनकी खाल खींच ली गयी हो और जिन्हें बिन चरवाहे के यहाँ-वहाँ भटकने के लिए छोड़ दिया गया हो।
37 तब उसने अपने चेलों से कहा: "बेशक, कटाई के लिए फसल बहुत है, मगर मज़दूर थोड़े हैं।
38 इसलिए खेत के मालिक से बिनती करो कि वह कटाई के लिए और मज़दूर भेज दे।"

10 फिर यीशु ने अपने बारह चेलों को पास बुलाया और उन्हें दुष्ट स्वर्गदूतों* पर अधिकार दिया, ताकि वे उन्हें लोगों में से निकालें और हर तरह की बीमारी और हर तरह की दुर्बलता दूर करें।

2 इन बारह प्रेषितों* के नाम ये हैं: पहला, शमौन जो पतरस# कहलाता है, और उसका भाई अन्द्रियास; और याक़ूब और यूहन्ना, जो जब्दी के बेटे थे;
3 फिलिप्पुस और बरतुलमै*; थोमा और कर वसूलनेवाला मत्ती#; हलफई का बेटा याक़ूब, और तद्दी*;
4 जोशीला शमौन और यहूदा इस्करियोती, जिसने बाद में उसे धोखे से पकड़वाया।

5 इन बारहों को यीशु ने ये आदेश देकर भेजा: "गैर-यहूदियों के इलाकों में न जाना, न ही सामरिया के किसी शहर में दाखिल होना।
6 इसके बजाय, इसराएल के घराने की खोयी हुई भेड़ों के पास ही जाना।
7 जहाँ जाओ वहाँ यह कहकर प्रचार करना, 'स्वर्ग का राज पास आ गया है।'
8 बीमारों को चंगा करो, मुरदों को ज़िंदा करो, कोढ़ियों को शुद्ध करो, दुष्ट स्वर्गदूतों को निकालो। तुमने मुफ्त पाया है, मुफ्त दो।
9 अपने कमर-बंध की जेबों में न तो सोने, न चाँदी और न ताँबे के पैसे लेना।
10 न ही सफर के लिए खाने की पोटली या दो-दो कुरते या जूतियाँ या लाठी लेना, क्योंकि काम करनेवाला भोजन पाने का हकदार है।

11 तुम जिस किसी शहर या गाँव में जाओ, तो अच्छी तरह ढूँढ़ो कि वहाँ कौन योग्य है और जब तक उस शहर या गाँव से न निकलो, तब तक उसी के यहाँ ठहरे रहना।
12 जब तुम किसी घर के अंदर जाओ, तो घर के लोगों को नमस्कार करते हुए उन्हें शांति की आशीष दो।
13 और अगर वह घराना योग्य है, तो वह शांति जिसकी तुमने आशीष दी है, उस पर आने दो। लेकिन अगर वह

मत्ती 10:1* यूनानी *नफ्मा*। अतिरिक्त लेख 7 देखें। **2*** या, "भेजे गए।" यूनानी में *"अपोस्टोलोस।"* **2#** "पतरस" को पाँच अलग-अलग नामों से पुकारा गया है: यहाँ "शमौन जो पतरस कहलाता है"; मत्ती 16:16 में "शमौन पतरस"; प्रेषि 15:14 में "सिमियन"; यूह 1:42 में "कैफा"; और सबसे ज़्यादा बार "पतरस" कहा गया है, जैसे मत्ती 14:28 में। **3*** मतलब, "तुलमै का बेटा।" उसे नतनएल भी कहा जाता था। यूह 1:46; 21:2 देखें। **3#** उसे लेवी भी कहा जाता था। लूका 5:27 देखें।

मत्ती 10:3* उसे "याक़ूब का बेटा यहूदा" भी कहा जाता था। लूका 6:16; यूह 14:22; प्रेषि 1:14 देखें।

योग्य न हो, तो तुम्हारी शांति तुम्हारे पास
लौट आने दो। **14** जिस घर या शहर
में कोई तुम्हें अंदर नहीं आने देता या
तुम्हारे वचन नहीं सुनता, तो वहाँ से बाहर
निकलते वक्त अपने पैरों की धूल झाड़
देना।* **15** मैं तुमसे सच कहता हूँ कि
न्याय के दिन उस शहर के हाल से, सदोम
और अमोरा देश का हाल ज़्यादा सहने
लायक होगा।

16 देखो! मैं तुम्हें भेड़ों की तरह
भेड़ियों के बीच भेज रहा हूँ; इसलिए
साँपों की तरह सतर्क मगर फिर भी
कबूतरों की तरह सीधे होने का सबूत दो।
17 लोगों से सावधान रहो; क्योंकि वे
तुम्हें अदालतों* के हवाले कर देंगे और
अपने सभा-घरों में तुम्हें कोड़े लगवाएँगे।
18 मेरी वजह से तुम्हें राज्यपालों और
राजाओं के सामने पेश किया जाएगा,
ताकि उन पर और गैर-यहूदियों पर
गवाही हो। **19** मगर, जब वे तुम्हें
पकड़वाएँगे, तो यह चिंता न करना कि
तुम क्या कहोगे और कैसे कहोगे। जो
तुम्हें बोलना है वह उस वक्त तुम जान
जाओगे। **20** इसलिए कि बोलनेवाले
सिर्फ तुम नहीं, बल्कि तुम्हारे पिता की
पवित्र शक्ति है जो तुम्हारे ज़रिए बोलती
है। **21** भाई, भाई को मरवाने के लिए
सौंप देगा और पिता अपने बच्चों को।
बच्चे अपने माँ-बाप के खिलाफ खड़े होंगे
और उन्हें मरवा डालेंगे। **22** मेरे नाम
की वजह से तुम सब लोगों की नफरत के
शिकार बनोगे। मगर जो अंत तक धीरज
धरेगा, वही उद्धार पाएगा। **23** जब
वे एक शहर में तुम पर ज़ुल्म ढाएँ
तो दूसरे शहर भाग जाना; क्योंकि मैं
तुमसे सच कहता हूँ कि तुम इसराएल के
शहरों का यह दौरा पूरा भी न कर पाओगे
कि इंसान का बेटा आ जाएगा।

24 चेला अपने गुरु से बड़ा नहीं
होता, न ही दास अपने मालिक से।
25 एक चेले का अपने गुरु जैसा और
दास का अपने मालिक जैसा बनना ही
बहुत है। जब लोगों ने घर के मालिक
को ही बालज़बूल* कहा है, तो उसके घर
के लोगों को क्यों न कहेंगे? **26** इस-
लिए, उनसे मत डरो; क्योंकि ऐसा कुछ
नहीं जो ढका गया हो, और खोला न
जाएगा, और जिसे राज़ रखा गया हो
और जाना न जाएगा। **27** जो मैं तुम्हें
अंधेरे में बताता हूँ उसे उजाले में कहो;
और जो मैं तुम्हारे कानों में फुसफुसाकर
कहता हूँ, उसका घर की छतों पर
चढ़कर प्रचार करो। **28** उनसे मत
डरो जो शरीर को घात कर सकते हैं,
मगर जीवन* को नहीं, इसके बजाय
उससे डरो जो जीवन और शरीर
दोनों को *गेहन्ना*# में मिटा सकता है।
29 क्या एक पैसे* में दो चिड़ियाँ नहीं

मत्ती 10:14* पैरों की धूल झाड़ना इस बात की निशानी था कि ऐसा करनेवाले की ज़िम्मेदारी अब खत्म हुई। **17*** या, "निचली यहूदी अदालतें।"

मत्ती 10:25* यह शैतान का एक और नाम है। **28*** या, फिर से ज़िंदा होने की उम्मीद नहीं छीन सकता। **28#** यरूशलेम के बाहर कूड़ा-कर-कट जलाने की जगह। अतिरिक्त लेख 9 देखें। **29*** शाब्दिक, *"असारियन,"* एक दीनार का 1/16वाँ हिस्सा।

बिकतीं? फिर भी उनमें से एक भी तुम्हारे
पिता के जाने बगैर ज़मीन पर नहीं
गिरती। **30** तुम्हारे सिर का एक-एक
बाल तक गिना हुआ है। **31** इसलिए
मत डरोः तुम्हारा मोल बहुत चिड़ियों से
कहीं बढ़कर है।

32 तो फिर, जो कोई लोगों के
सामने यह स्वीकार करता है कि वह मेरी
तरफ है, मैं भी अपने पिता के सामने
जो स्वर्ग में है उसे स्वीकार कर लूँगा।
33 मगर जो कोई लोगों के सामने मुझसे
इनकार करता है, मैं भी अपने पिता के
सामने जो स्वर्ग में है, उससे इनकार कर
दूँगा। **34** यह न सोचो कि मैं धरती
पर शांति लाने आया हूँ; मैं शांति लाने
नहीं बल्कि तलवार चलवाने आया हूँ।
35 क्योंकि मैं बेटे को बाप के, बेटी को
माँ के और बहू को उसकी सास के
खिलाफ करने आया हूँ। **36** वाकई,
एक आदमी के दुश्मन उसके अपने ही
घराने के लोग होंगे। **37** जो मुझसे
ज़्यादा अपने पिता या अपनी माँ से लगाव
रखता है, वह मेरे लायक नहीं; और जो
मुझसे ज़्यादा अपने बेटे या अपनी बेटी
से लगाव रखता है, वह मेरे लायक नहीं
है। **38** जो कोई अपनी यातना की
सूली* नहीं उठाता और मेरे पीछे-पीछे
चलना नहीं चाहता, वह मेरा चेला बनने
के लायक नहीं। **39** जो अपनी जान
बचाता है वह इसे खोएगा और जो मेरी
खातिर अपनी जान गँवाता है वह इसे
पाएगा।

40 जो तुम्हें स्वीकार करता है वह
मुझे भी स्वीकार करता है, और जो मुझे
स्वीकार करता है, वह उसे भी स्वीकार
करता है जिसने मुझे भेजा है। **41** जो
किसी भविष्यवक्ता को इसलिए स्वीकार
करता है कि वह भविष्यवक्ता है, उसे
वही इनाम मिलेगा जो एक भविष्यवक्ता
को मिलता है। जो किसी नेक इंसान को
इसलिए स्वीकार करता है कि वह नेक
है, उसे वही इनाम मिलेगा जो उस इंसान
को मिलता है जो नेक है। **42** जो
कोई इन छोटों में से किसी एक को,
चेला जानकर सिर्फ एक प्याला ठंडा
पानी पीने को देता है, तो मैं तुमसे सच
कहता हूँ कि वह अपना इनाम हरगिज़
न खोएगा।”

11 जब यीशु अपने बारह चेलों को
हिदायतें दे चुका, तो वह वहाँ
से दूसरे शहरों में सिखाने और प्रचार
करने निकल पड़ा।

2 लेकिन जब जेल में यूहन्ना ने
मसीह के कामों की चर्चा सुनी, तो उसने
अपने चेलों को उसके पास भेजा
3 और उससे पूछाः “वह जो आने-
वाला था, क्या तू ही है, या हम किसी
और की भी आस लगाएँ?” **4** जवाब
में यीशु ने उनसे कहाः “जाओ, और जो
तुम देखते और सुनते हो, जाकर उसकी
खबर यूहन्ना को दोः **5** अंधे देख रहे
हैं और लंगड़े चल-फिर रहे हैं, कोढ़ी शुद्ध
किए जा रहे हैं, बहरे सुन रहे हैं और
मरे हुओं को ज़िंदा किया जा रहा है।
गरीबों को खुशखबरी सुनायी जा रही है।

मत्ती 10:38* अतिरिक्त लेख 6 देखें।

6 सुखी है वह जो मेरे बारे में संदेह नहीं
करता।"*

7 जब वे वहाँ से जा रहे थे,
तो यीशु भीड़ से यूहन्ना के बारे में
यह कहने लगाः "तुम बाहर वीराने में
क्या देखने गए थे? हवा से इधर-उधर
हिलते किसी सरकंडे को? **8** फिर तुम
क्या देखने गए थे? क्या रेशमी मुलायम
कपड़े पहने किसी आदमी को? रेशमी
मुलायम कपड़े पहननेवाले तो राजाओं
के महलों में होते हैं। **9** तो आखिर
तुम क्यों गए थे? एक भविष्यवक्ता को
देखने? हाँ। और मैं तुमसे कहता
हूँ, भविष्यवक्ता से भी किसी बड़े
को। **10** यह वही है जिसके बारे में
लिखा है, 'देख! मैं खुद अपना दूत
तेरे आगे भेज रहा हूँ, जो तेरे आगे-
आगे तेरा रास्ता तैयार करेगा!' **11** मैं
तुम लोगों से सच कहता हूँ, जितने
स्त्रियों से जन्मे हैं, उनमें यूहन्ना बप-
तिस्मा देनेवाले से बड़ा कोई भी नहीं
हुआ है। मगर जो स्वर्ग के राज
में बाकियों से छोटा है, वह यूहन्ना
से बड़ा है। **12** मगर यूहन्ना बप-
तिस्मा देनेवाले के दिनों से अब तक,
स्वर्ग का राज वह लक्ष्य है जिस तक
पहुँचने के लिए, लोग ज़ोर लगा रहे
हैं और जो पुरज़ोर कोशिश कर रहे
हैं, वे उसे अपने कब्ज़े में ले रहे हैं।
13 क्योंकि सारे भविष्यवक्ताओं की
और मूसा के कानून की भविष्यवाणियाँ,
यूहन्ना के समय तक भविष्यवाणियाँ थीं।
14 अगर तुम इस बात को मानो, तो
'एलिय्याह जिसका आना तय है,' वह
यही है। **15** कान लगाकर सुनो और
मैं जो कह रहा हूँ उसे समझने की
कोशिश करो।

16 मैं इस पीढ़ी की तुलना किससे
करूँ? यह उन बच्चों जैसी है जो
बाज़ारों में बैठे अपने साथ खेलनेवाले
बच्चों को पुकारते और **17** कहते हैं,
'हमने तुम्हारे लिए बाँसुरी बजायी मगर
तुम न नाचे; हमने विलाप किया,
मगर तुमने शोक में छाती न पीटी।'
18 वैसे ही यूहन्ना, औरों की तरह न
खाता आया न पीता, फिर भी लोग कहते
हैं, 'उसमें दुष्ट स्वर्गदूत समाया है।'
19 जबकि इंसान का बेटा औरों की
तरह खाता-पीता आया, फिर भी लोग
कहते हैं, 'देखो! यह आदमी पेटू और
पियक्कड़ है, और कर-वसूलनेवालों और
पापियों का दोस्त है।' लेकिन बुद्धि अपने
कामों से सही साबित होती है।"

20 इसके बाद, यीशु उन शहरों
को धिक्कारने लगा, जिनमें उसने
अपने ज़्यादातर शक्तिशाली काम किए
थे, क्योंकि उन्होंने पश्चाताप नहीं कियाः
21 "हे खुराजीन, तुझ पर हाय! हे बैत-
सैदा, तुझ पर हाय! क्योंकि जो शक्ति-
शाली काम तुममें हुए थे, अगर वे सोर
और सीदोन* में हुए होते, तो वहाँ के
लोगों ने टाट ओढ़कर और राख में बैठ-
कर कब का पश्चाताप कर लिया होता।
22 इसलिए मैं तुमसे कहता हूँ, न्याय के
दिन तुम्हारे हाल से सोर और सीदोन
का हाल ज़्यादा सहने लायक होगा।

मत्ती 11:6* या, "मुझ से ठोकर न खाए।"

मत्ती 11:21* ये गैर-यहूदी शहर थे।

23 और कफरनहूम तू, क्या तू सोचता
है कि तुझे आकाश तक ऊँचा किया
जाएगा? तू तो नीचे कब्र* में जाएगा;
क्योंकि जो शक्तिशाली काम तुझ में
किए गए थे, अगर वे सदोम देश में हुए
होते, तो वह आज के दिन तक बना
रहता। **24** इसलिए मैं तुम लोगों से
कहता हूँ कि न्याय के दिन तुम्हारे हाल से
सदोम देश का हाल ज़्यादा सहने लायक
होगा।”

25 उस वक्त यीशु ने कहा:
“हे पिता, स्वर्ग और पृथ्वी के मालिक,
मैं सबके सामने तेरी बड़ाई करता हूँ कि
तू ने ये बातें बुद्धिमानों और ज्ञानियों से
तो छिपा रखीं, मगर नन्हे-मुन्नों पर प्रकट
की हैं। **26** हाँ, हे पिता, क्योंकि तुझे
ऐसा ही करना मंज़ूर हुआ। **27** मेरे
पिता ने सबकुछ मेरे हवाले किया है, और
कोई बेटे को पूरी तरह नहीं जानता सिवा
पिता के, न ही पिता को कोई पूरी तरह
जानता है सिवा बेटे के और सिवा उसके
जिस पर बेटा उसे प्रकट करना चाहे।
28 हे लोगो, तुम जो कड़ी मज़दूरी से
थके-माँदे और बोझ से दबे हो, तुम
सब मेरे पास आओ, मैं तुम्हें तरो-ताज़ा
करूँगा। **29** मेरा जूआ अपने ऊपर
लो* और मुझसे सीखो,# क्योंकि मैं
कोमल-स्वभाव का, और दिल से दीन हूँ
और तुम ताज़गी पाओगे। **30** इस-
लिए कि मेरा जूआ आरामदायक और
मेरा बोझ हल्का है।”

मत्ती 11:23* यूनानी में *“हेडिज़।”* अतिरिक्त लेख 8 देखें। **29*** या, “मेरे साथ मेरे जूए के नीचे आओ।” **29#** या, “मेरे चेले बन जाओ।” न्यायि 7:17 देखें।

12 उस वक्त यीशु सब्त* के दिन
अपने चेलों के साथ खेतों से
होकर जा रहा था। उसके चेलों को भूख
लगी और वे अनाज की बालें तोड़कर
खाने लगे। **2** यह देखकर फरीसियों
ने उससे कहा: “देख! तेरे चेले सब्त के
दिन वह काम कर रहे हैं, जिसे करना
कानून के खिलाफ है।” **3** यीशु ने
उनसे कहा: “क्या तुमने नहीं पढ़ा कि
जब दाविद और उसके आदमी भूखे थे,
तब उसने क्या किया? **4** किस तरह
वह परमेश्वर के भवन में गया और
उन्होंने चढ़ावे की वे रोटियाँ खायीं, जिन्हें
खाना उसके और उसके साथियों के लिए
कानून के खिलाफ था, बल्कि वे रोटियाँ
सिर्फ याजकों के लिए थीं? **5** या क्या
तुमने मूसा के कानून में नहीं पढ़ा कि
सब्त के दिनों में, मंदिर में सेवा करनेवाले
याजक सब्त के ठहराए नियम न मानते
हुए भी निर्दोष ठहरते हैं? **6** मगर मैं
तुमसे कहता हूँ, यहाँ वह है जो मंदिर
से भी बढ़कर है। **7** लेकिन, अगर
तुम ने इस बात के मायने समझ लिए
होते कि ‘मैं दया चाहता हूँ, बलिदान
नहीं,’ तो तुम निर्दोषों को दोषी न ठह-
राते। **8** क्योंकि इंसान का बेटा सब्त
के दिन का प्रभु है।”

9 उस जगह से चले जाने के
बाद यीशु उनके सभा-घर में गया।

मत्ती 12:1* यहूदियों के लिए हफ्ते का सातवाँ दिन सब्त हुआ करता था। यह दिन, आराम के लिए और परमेश्वर की बातों पर ध्यान देने के लिए अलग रखा गया था।

10 और देखो! वहाँ एक आदमी था
जिसका एक हाथ सूखा हुआ था। तब
कुछ लोगों ने उससे पूछा, "क्या सब्त के
दिन चंगा करना सही है?" ताकि उन्हें
उस पर इलज़ाम लगाने की कोई वजह
मिल सके। **11** उसने उनसे कहा:
"तुममें ऐसा कौन आदमी होगा जिसके
पास एक भेड़ हो और अगर वह सब्त के
दिन गड्ढे में गिर जाए, तो वह उसे पकड़-
कर बाहर न निकाले? **12** अगर ऐसा
है, तो एक इंसान का मोल एक भेड़
से कितना ज़्यादा है! इसलिए सब्त
के दिन एक भला काम करना सही
है।" **13** तब उसने उस आदमी से
कहा: "अपना हाथ आगे बढ़ा।" जब
उसने हाथ आगे बढ़ाया तो उसका हाथ
दूसरे हाथ की तरह अच्छा हो गया।
14 मगर फरीसी बाहर निकल गए
और यीशु के खिलाफ आपस में सलाह
करने लगे कि उसे कैसे खत्म किया
जा सकता है। **15** जब यीशु को यह
पता चला, तो वह वहाँ से निकलकर
चला गया। बहुत-से लोग भी उसके पीछे
हो लिए और उसने उन सबको चंगा
किया। **16** मगर उसने उन्हें सख्ती से
हुक्म दिया कि उसके बारे में किसी पर
ज़ाहिर न करें; **17** ताकि ये वचन पूरे
हों जो यशायाह भविष्यवक्ता से कहल-
वाए गए थे:

18 "देखो! मेरा सेवक जिसे मैंने चुना
है, मेरा प्यारा, जिसे मैंने दिल* से मंज़ूर
किया है! मैं उस पर अपनी पवित्र शक्ति
डालूँगा और वह राष्ट्रों को साफ-साफ
दिखाएगा कि सच्चा न्याय क्या होता है।
19 वह न तो झगड़ा करेगा, न ही ज़ोर
से चिल्लाएगा, न ही उसकी आवाज़
बड़ी सड़कों में किसी को सुनायी देगी।
20 वह झुके हुए सरकंडे को न कुच-
लेगा और टिमटिमाती बाती को न बुझा-
एगा, जब तक कि वह कामयाबी के साथ
न्याय कायम न कर दे। **21** वाकई,
राष्ट्र उसके नाम पर आशा रखेंगे।"

22 इसके बाद वे उसके पास एक
आदमी को लाए, जिसमें एक दुष्ट स्वर्ग-
दूत समाया था, और वह आदमी
अंधा और गूंगा था। यीशु ने दुष्ट स्वर्ग-
दूत को निकालकर उस आदमी को चंगा
किया जिससे वह गूंगा बोलने और
देखने लगा। **23** इस पर भीड़ आपे
में न रही और कहने लगी: "कहीं यही
तो दाविद का वंशज नहीं?" **24** यह
सुनने पर फरीसियों ने कहा: "यह आदमी,
दुष्ट स्वर्गदूतों के राजा बालज़बूल* की
मदद के बिना दुष्ट स्वर्गदूतों को नहीं
निकालता।" **25** यह जानते हुए कि
वे क्या सोच रहे हैं, यीशु ने उनसे कहा:
"ऐसा हर राज्य जिसमें फूट पड़ जाए,
उजड़ जाता है और ऐसा हर शहर या
घर जिसमें फूट पड़ जाए, टिक नहीं
पाएगा। **26** उसी तरह, अगर शैतान
ही शैतान को निकाले, तो उसमें फूट पड़
गयी है और वह खुद अपने खिलाफ हो
गया है। तो फिर उसका राज्य कैसे
टिका रहेगा? **27** और फिर, अगर

मत्ती 12:18* यूनानी में, *प्सीकी*।

मत्ती 12:24* यह शैतान का एक और नाम है।

मैं बालज़बूल की मदद से दुष्ट स्वर्गदूतों
को निकालता हूँ, तो तुम्हारे बेटे किसकी
मदद से इन्हें निकालते हैं? इस वजह से
वे ही तुम्हारे न्यायी ठहरें। **28** लेकिन
अगर मैं परमेश्वर की पवित्र शक्ति की
मदद से दुष्ट स्वर्गदूतों को निकालता हूँ,
तो परमेश्वर के राज ने वाकई तुम्हें आ
घेरा है। **29** या कोई किसी बलवान
के घर में घुसकर उसके सामान पर कैसे
कब्ज़ा कर सकता है, जब तक कि वह
पहले उस बलवान को पकड़कर बाँध न
दे? और इसके बाद वह उसका घर लूट
सकेगा। **30** जो मेरी तरफ नहीं है,
वह मेरे खिलाफ है और जो मेरे साथ नहीं
बटोरता, वह तित्तर-बित्तर कर देता है।

31 इसलिए, मैं तुमसे कहता हूँ कि
इंसानों का हर तरह का पाप और निंदा
की बातें माफ की जाएँगी, मगर पवित्र
शक्ति के खिलाफ निंदा माफ न की
जाएगी। **32** मिसाल के लिए, अगर
कोई इंसान के बेटे के खिलाफ कोई बात
कहेगा, तो उसे माफ किया जाएगा। मगर
जो कोई पवित्र शक्ति के खिलाफ बोलता
है, उसे इसकी माफी नहीं दी जाएगी।
नहीं, न तो इस व्यवस्था में न ही आने-
वाली दुनिया की व्यवस्था में।

33 अगर तुम बढ़िया पेड़ हो, तो
तुम्हारा फल भी बढ़िया होगा, और अगर
तुम सड़ा हुआ पेड़ हो, तो तुम्हारा फल भी
सड़ा हुआ होगा, क्योंकि एक पेड़ अपने
फल से पहचाना जाता है। **34** अरे,
साँप के संपोलो, जब तुम दुष्ट हो तो
अच्छी बातें कैसे कह सकते हो? क्योंकि
जो दिल में भरा है वही मुँह पर आता
है। **35** अच्छा इंसान अपनी अच्छाई
के खज़ाने से अच्छी चीज़ें निकालता है,
जबकि दुष्ट इंसान अपनी दुष्टता के
खज़ाने से दुष्टता की चीज़ें निकालता है।
36 मैं तुमसे कहता हूँ कि ऐसी हर
नुकसानदेह बात के लिए जो लोग बोलते
हैं, उन्हें न्याय के दिन लेखा देना होगा।
37 तुझे अपनी बातों की वजह से निर्दोष
ठहराया जाएगा या अपनी बातों की वजह
से ही दोषी करार दिया जाएगा।”

38 जवाब में कुछ शास्त्रियों और
फरीसियों ने यीशु से कहा: “हे गुरु,
हम चाहते हैं कि तू हमें एक निशानी*
दिखाए।” **39** यीशु ने जवाब में उनसे
कहा: “एक दुष्ट और विश्वासघाती*
पीढ़ी हमेशा कोई निशानी देखने की ताक
में लगी रहती है। मगर इसे योना भविष्य-
वक्ता की निशानी को छोड़ और कोई
निशानी नहीं दी जाएगी। **40** ठीक
जैसे योना एक बड़ी मछली के पेट में तीन
दिन और तीन रात रहा, वैसे ही इंसान
का बेटा धरती के गर्भ में तीन दिन और
तीन रात रहेगा। **41** नीनवे के लोग
न्याय के वक्त में इस पीढ़ी के साथ उठेंगे
और इसे दोषी ठहराएँगे; क्योंकि नीनवे
के लोगों ने योना का प्रचार सुनकर पश्चा-
ताप किया था, मगर देखो! यहाँ वह
मौजूद है जो योना से भी बड़ा है।
42 दक्षिण की रानी को न्याय के वक्त
में इस पीढ़ी के साथ उठाया जाएगा और

मत्ती 12:38* या, “चमत्कार।” **39*** शाब्दिक,
“व्यभिचारी।”

वह इसे दोषी ठहराएगी; क्योंकि वह
सुलैमान की बुद्धि की बातें सुनने के लिए
पृथ्वी की छोर से आयी थी, मगर देखो!
यहाँ वह मौजूद है जो सुलैमान से भी
बड़ा है।

43 जब एक दुष्ट स्वर्गदूत किसी
आदमी से बाहर निकल आता है, तो
वह आराम की कोई जगह तलाशता
हुआ वीरान जगहों में फिरता है, मगर
नहीं पाता। **44** तब वह कहता है, 'मैं
अपने जिस घर से निकला था, उसमें
फिर लौट जाऊँगा।' वह आकर पाता है
कि वह घर न सिर्फ खाली पड़ा है
बल्कि झाड़ा-बुहारा और सजा-सजाया है।
45 तब वह जाकर अपने से भी ज़्यादा
दुष्ट सात और स्वर्गदूतों को अपने साथ
ले आता है और वे उस आदमी में समाकर
वहीं बस जाते हैं। तब उस आदमी की
हालत, पहले से भी बदतर हो जाती है।
इस दुष्ट पीढ़ी का भी यही हाल होगा।"

46 जब यीशु भीड़ से बात कर
ही रहा था, तो देखो! उसकी माँ और
उसके भाई आकर बाहर खड़े हो गए
और वे उससे बात करना चाहते थे।
47 तब किसी ने यीशु से कहा: "देख!
तेरी माँ और तेरे भाई बाहर खड़े हैं और
तुझसे बात करना चाहते हैं।" **48** तब
यीशु ने उसे जवाब देते हुए कहा: "कौन
है मेरी माँ, और कौन हैं मेरे भाई?"
49 फिर उसने अपना हाथ अपने चेलों
की तरफ बढ़ाकर कहा: "देखो! ये रहे
मेरी माँ और मेरे भाई! **50** क्योंकि जो
कोई स्वर्ग में रहनेवाले मेरे पिता की मरज़ी
पूरी करता है, वही है मेरा भाई, मेरी
बहन और माँ।"

13 उस दिन यीशु घर से निकलने
के बाद झील के किनारे बैठा
हुआ था। **2** तब भारी तादाद में लोग
उसके पास इकट्ठा हो गए, इसलिए वह
एक नाव पर चढ़कर बैठ गया और सारी
भीड़ किनारे पर खड़ी हुई थी। **3** फिर
वह उन्हें मिसालों से बहुत-सी बातें बताने
लगा: "देखो! एक बीज बोनेवाला बीज
बोने निकला। **4** जब वह बो रहा था,
तो कुछ बीज रास्ते के किनारे गिरे और
पंछी आकर उन्हें खा गए। **5** कुछ
बीज ऐसी जगह गिरे जहाँ ज़्यादा मिट्टी
नहीं थी, क्योंकि मिट्टी के नीचे चट्टान
थी। उनके अंकुर फौरन दिखायी देने
लगे, क्योंकि वहाँ मिट्टी गहरी नहीं थी।
6 लेकिन जब सूरज निकला, तो वे
झुलस गए और जड़ न पकड़ने की वजह
से सूख गए। **7** कुछ और बीज काँटों
में गिरे और कंटीले पौधों ने बढ़कर उन्हें
दबा लिया। **8** मगर कुछ और बीज
बढ़िया मिट्टी पर गिरे और उनमें फल
आना शुरू हुआ। किसी में सौ गुना, किसी
में साठ गुना तो किसी में तीस गुना।
9 कान लगाकर सुनो और मैं जो कह
रहा हूँ उसे समझने की कोशिश करो।"

10 फिर चेले यीशु के पास आकर
उससे पूछने लगे: "तू लोगों से मिसालों
में क्यों बात करता है?" **11** जवाब
में उसने कहा: "स्वर्ग के राज के
पवित्र रहस्यों की समझ तुम्हें दी गयी
है, मगर उन लोगों को नहीं दी गयी।

12 क्योंकि जिस किसी के पास है, उसे
और भी ज़्यादा दिया जाएगा और उसके
पास बहुत हो जाएगा। मगर जिस किसी
के पास नहीं है, उससे वह तक ले लिया
जाएगा जो उसके पास है। **13** मैं इस-
लिए उनसे मिसालों में बात करता हूँ,
क्योंकि वे देखते हुए भी नहीं देख रहे
और सुनते हुए भी नहीं सुन रहे, न ही
वे इसके मायने समझ पाते हैं। **14** उन
पर यशायाह की यह भविष्यवाणी पूरी
होती है, जो कहती है, ‘तुम लोग सुनोगे
मगर सुनते हुए भी हरगिज़ इसके मायने
न समझ पाओगे। और देखोगे मगर
देखते हुए भी हरगिज़ न देख पाओगे।
15 क्योंकि इन लोगों का दिल पत्थर*
हो चुका है। वे अपने कानों से सुनते तो
हैं, मगर सुनकर कुछ करते नहीं। उन्होंने
अपनी आँखें मूंद ली हैं; ताकि वे कभी
अपनी आँखों से न देख सकें और न कभी
अपने कानों से सुन पाएँ और न ही
कभी अपने दिलों से इसके मायने समझ
पाएँ, जिससे कि वे पलटकर लौट आएँ
और मैं उन्हें चंगा करूँ।’

16 मगर सुखी हो तुम क्योंकि
तुम्हारी आँखें देखती हैं और तुम्हारे कान
सुनते हैं। **17** मैं तुमसे सच कहता हूँ,
बहुत-से भविष्यवक्ताओं और नेक लोगों
की तमन्ना थी कि वह देखें जो तुम देख
रहे हो, मगर न देख सके और वे बातें सुनें
जिन्हें तुम सुन रहे हो, मगर न सुन सके।

18 इसलिए, अब तुम बीज बोनेवाले
की मिसाल पर ध्यान दो। **19** जो
इंसान राज का वचन सुनता तो है मगर
उसके मायने नहीं समझता, उसके दिल में
जो बोया गया था उसे वह दुष्ट, शैतान
आकर छीन ले जाता है। यह वही बीज
है जो रास्ते के किनारे बोया गया था।
20 जो चट्टानी जगहों पर बोया गया था,
यह वह इंसान है जो वचन को सुनता है
और उसे फौरन खुशी-खुशी स्वीकार कर
लेता है। **21** मगर उसमें जड़ नहीं
होती, इसलिए वह थोड़े वक्त के लिए
रहता है, और जब वचन की वजह से
उसे क्लेश या ज़ुल्म सहना पड़ता है, तो
फौरन वचन पर विश्वास करना छोड़
देता है। **22** जो काँटों के बीच बोया
गया है, यह वह इंसान है जो वचन को
सुनता तो है, मगर इस ज़माने* की
ज़िंदगी की चिंता और भ्रम में डालनेवाली
पैसे की ताकत वचन को दबा देती है और
वह फल नहीं लाता। **23** जो बढ़िया
मिट्टी में बोया गया है, यह वह इंसान है
जो वचन को सुनता है और उसके मायने
समझता है और वाकई फल लाता है।
यह सौ गुना, वह साठ गुना तो कोई और
तीस गुना फल पैदा करता है।”

24 यीशु ने भीड़ के सामने एक
और मिसाल पेश करते हुए कहा: “स्वर्ग
का राज एक ऐसे आदमी की तरह है,
जिसने अपने खेत में बढ़िया बीज बोया।
25 लेकिन जब लोग रात को सो रहे
थे, तो उसका दुश्मन आया और गेहूँ के
बीच जंगली पौधे के बीज बोकर चला
गया। **26** जब पौधे बड़े हुए और
उनमें बालें आयीं, तो जंगली पौधे भी

मत्ती 13:15* शाब्दिक, “मोटा हो गया है।”

मत्ती 13:22* या, “दुनिया की व्यवस्था।”

दिखायी देने लगे। **27** इसलिए घर-
मालिक के दासों ने आकर उससे कहा,
'मालिक, क्या तू ने अपने खेत में बढ़िया
बीज न बोया था? तो फिर उसमें जंगली
पौधे कहाँ से उग आए?' **28** मालिक
ने कहा, 'यह एक दुश्मन का काम है।'
उन्होंने उससे कहा, 'तो क्या तू चाहता है
कि हम जाकर जंगली पौधों को उखाड़
लाएँ?' **29** उसने कहा, 'नहीं; कहीं
ऐसा न हो कि जंगली पौधे उखाड़ते वक्त
तुम उनके साथ गेहूँ भी उखाड़ लो।
30 कटाई के वक्त तक दोनों को साथ-
साथ बढ़ने दो और कटाई के दिनों में मैं
काटनेवालों से कहूँगा, पहले जंगली दाने
के पौधे उखाड़ लो और उन्हें जलाने के
लिए गट्ठरों में बाँध दो, उसके बाद जाकर
तुम गेहूँ को मेरे गोदाम में जमा करो।' "

31 उसने एक और मिसाल उनके
सामने पेश करते हुए कहा: "स्वर्ग का
राज राई के दाने की तरह है, जिसे एक
आदमी ने लेकर अपने खेत में बो दिया।
32 राई का दाना असल में सब बीजों
में सबसे छोटा होता है, मगर जब बढ़ता
है तो साग-सब्ज़ियों में सबसे बड़ा हो
जाता है और एक पेड़ बन जाता है।
यहाँ तक कि आकाश के पंछी आकर
उसकी डालियों पर बसेरा करते हैं।"

33 उसने उन्हें एक और मिसाल
बतायी: "स्वर्ग का राज खमीर की तरह
है, जिसे लेकर एक स्त्री ने करीब दस
किलो* आटे में गूंध दिया, आखिर में
सारा आटा खमीरा हो गया।"

34 यीशु ने भीड़ से ये सारी
बातें मिसालों में कहीं। वाकई, वह बगैर
मिसाल के उनसे बात नहीं करता था,
35 ताकि यह बात पूरी हो जो भविष्य-
वक्ता से कहलवायी गयी थी: "मैं मिसालों
के साथ अपना मुँह खोलूँगा, और जो बातें
दुनिया की शुरूआत से छिपी रही हैं, उन्हें
ज़ाहिर करूँगा।"

36 इसके बाद यीशु भीड़ को विदा
कर घर में गया। उसके चेले उसके पास
आए और कहने लगे: "हमें खेत के
जंगली पौधों की मिसाल का मतलब
समझा।" **37** जवाब में उसने कहा:
"बढ़िया बीज बोनेवाला, इंसान का बेटा
है। **38** खेत, दुनिया है। बढ़िया बीज,
राज के बेटे हैं। मगर जंगली दाने के पौधे,
उस दुष्ट के बेटे हैं **39** और जिस
दुश्मन ने इन्हें बोया है, वह शैतान* है।
कटाई, दुनिया की व्यवस्था का आखिरी
वक्त है और कटाई करनेवाले स्वर्गदूत
हैं। **40** इसलिए, ठीक जैसे जंगली
दाने के पौधों को उखाड़कर आग में जला
दिया जाता है, वैसे ही इस व्यवस्था के
आखिर में होगा। **41** इंसान का बेटा
अपने स्वर्गदूतों को भेजेगा और वे उसके
राज से उन सब लोगों को बटोरकर
निकालेंगे, जो दूसरों के लिए पाप करने
की वजह बनते हैं* और ऐसों को भी
जो दुराचार करते हैं। **42** स्वर्गदूत
उन्हें आग की भट्ठी में झोंक देंगे, जहाँ
उनका रोना और दाँत पीसना होगा।

मत्ती 13:33* या, "तीन बड़े माप।"

मत्ती 13:39* यूनानी में *"दियाबोलोस,"* जिसका मत-
लब है, "निंदा करनेवाला।" **41*** या, "जो चीज़ें
ठोकर खिलाने की वजह बनती हैं।"

43 मगर जो परमेश्‍वर की नज़र में नेक
हैं, वे उस वक्‍त अपने पिता के राज में
सूरज की तरह तेज़ चमकेंगे। कान लगा-
कर सुनो और मैं जो कह रहा हूँ उसे
समझने की कोशिश करो।

44 स्वर्ग का राज ज़मीन में छिपे एक
खज़ाने की तरह है, जिसे पाकर एक
आदमी ने दोबारा वहीं दबा दिया। उसने
खुशी के मारे जाकर अपना सबकुछ बेच
दिया और वह ज़मीन खरीद ली।

45 इसके अलावा, स्वर्ग का राज
एक ऐसे व्यापारी की तरह है, जो बेह-
तरीन किस्म के मोतियों की तलाश में
घूमता है। **46** और जब उसे एक
बेशकीमती मोती मिला, तो उसने जाकर
फौरन अपना सबकुछ बेच दिया और वह
मोती खरीद लिया।

47 साथ ही, स्वर्ग का राज एक बड़े
जाल की तरह है, जिसे समुद्र में डाला
गया और जिसने हर किस्म की मछलियाँ
समेट लीं। **48** जब वह जाल भर गया
तो वे उसे खींचकर किनारे पर लाए और
बैठकर बढ़िया मछलियों को बर्तनों में
इकट्ठा किया, जबकि गंदी मछलियों को
उन्होंने फेंक दिया। **49** इस दुनिया
की व्यवस्था के आखिर में भी ऐसा ही
होगा: स्वर्गदूत जाकर दुष्टों को नेक जनों
से अलग करेंगे। **50** और दुष्टों को
आग की भट्ठी में डाल देंगे, जहाँ उनका
रोना और दाँत पीसना होगा।

51 क्या तुमने इन सब बातों के
मायने समझ लिए हैं?" उन्होंने कहा:
"हाँ।" **52** तब उसने उनसे कहा:
"अगर ऐसा है, तो हर वह उपदेशक जो
लोगों को सिखाता है और जिसने स्वर्ग
के राज की शिक्षा पायी है, वह ऐसे घर-
मालिक की तरह है जो अपने खज़ाने के
भंडार से नयी और पुरानी चीज़ें बाहर
लाता है।"

53 जब यीशु ये मिसालें दे चुका, तो
इसके कुछ वक्‍त बाद वह उस इलाके के
पार चला गया। **54** वह उस इलाके
में आया जहाँ वह पला-बढ़ा था। और
वह उनके सभा-घर में उन्हें सिखाने लगा।
उसकी बातें सुनकर लोग हैरान रह गए
और कहने लगे: "इस आदमी को ऐसी
बुद्धि और ऐसे शक्‍तिशाली काम करने की
काबिलीयत कहाँ से मिली? **55** क्या
यह बढ़ई का बेटा नहीं? क्या इसकी माँ
का नाम मरियम नहीं, और इसके भाई
याकूब, यूसुफ, शमौन और यहूदा नहीं?
56 और इसकी बहनें, क्या वे सब
हमारे बीच नहीं? तो फिर, इस आदमी
को ये सारी बातें कहाँ से आ गयीं?"
57 इसलिए उन्होंने उस पर यकीन नहीं
किया। मगर यीशु ने उनसे कहा: "एक
भविष्यवक्‍ता का अपने इलाके और अपने
घर को छोड़ कहीं और अनादर नहीं
होता।" **58** उनके विश्‍वास की कमी
की वजह से उसने वहाँ ज़्यादा चमत्कार
नहीं किए।

14 उस वक्‍त ज़िला-शासक* हेरो-
देस# ने यीशु के बारे में खबर
सुनी **2** और अपने सेवकों से कहा:

मत्ती 14:1* शाब्दिक, *"तित्रअर्खेस,"* यानी रोमी सम्राट की तरफ से किसी इलाके में राज करनेवाला शासक। **1#** लूका 3:1 फुटनोट देखें।

“यह बपतिस्मा देनेवाला यूहन्ना ही है।
उसे मरे हुओं में से जी उठाया गया है
और इसी वजह से उससे ये शक्ति-
शाली काम हो रहे हैं।” **3** हेरोदेस ने
अपने भाई फिलिप्पुस की पत्नी हेरोदियास
की वजह से, यूहन्ना को गिरफ्तार कर
लिया और उसे ज़ंजीरों में बाँधकर कैद-
खाने में डलवा दिया था। **4** क्योंकि
यूहन्ना हेरोदेस से कहा करता था: “तू ने
जो हेरोदियास को अपनी पत्नी बना लिया
है, यह सही नहीं किया।” **5** हालाँकि
हेरोदेस यूहन्ना को मार डालना चाहता
था, मगर लोगों से डरता था, क्योंकि वे
यूहन्ना को एक भविष्यवक्ता मानते थे।
6 मगर जब हेरोदेस का जन्मदिन मनाया
जा रहा था, तो हेरोदियास की बेटी उसमें
नाची और हेरोदेस को इस कदर खुश
किया **7** कि उसने कसम खाकर यह
वादा किया कि वह उससे जो कुछ माँगेगी
वह उसे दे देगा। **8** तब उसने, अपनी
माँ के सिखाने पर कहा: “तू मुझे यहीं
एक थाल में यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले का
सिर ला दे।” **9** यह सुनकर राजा
दुःखी तो हुआ, फिर भी उसने जो कसमें
खायी थीं और उसके साथ जो लोग बैठे
थे, उनकी वजह से उसने हुक्म दिया कि
लड़की को यूहन्ना का सिर दे दिया
जाए। **10** उसने आदमी भेजा और
कैदखाने में यूहन्ना का सिर कटवा दिया।
11 उसका सिर एक थाल पर रखकर
लाया गया और उस लड़की को दे दिया
गया और वह इसे अपनी माँ के पास
ले गयी। **12** बाद में यूहन्ना के चेले
आकर उसकी लाश ले गए और उसे
दफना दिया और आकर यीशु को खबर
दी। **13** यह सुनकर यीशु वहाँ से
किसी सुनसान जगह में एकांत पाने के
लिए नाव पर निकल पड़ा। मगर जब
लोगों की भीड़ ने सुना, तो वे शहरों से
पैदल ही उसके पीछे गए।

14 जब यीशु नाव से उतरा, तो
उसने बड़ी भीड़ देखी। उन्हें देखकर वह
तड़प उठा और उसने उनके बीमारों को
चंगा किया। **15** मगर जब शाम हुई,
तो चेलों ने उसके पास आकर कहा: “यह
जगह सुनसान है और बहुत देर भी हो
चुकी है। इसलिए भीड़ को विदा कर,
ताकि वे आस-पास के गाँवों में जाकर
अपने खाने के लिए कुछ खरीद लें।”
16 मगर यीशु ने उनसे कहा: “उन्हें जाने
की ज़रूरत नहीं: तुम्हीं उन्हें कुछ खाने
को दो।” **17** चेलों ने उससे कहा:
“हमारे पास यहाँ पाँच रोटियों और दो
मछलियों को छोड़ और कुछ नहीं है।”
18 उसने कहा: “रोटी और मछली मेरे
पास लाओ।” **19** इसके बाद यीशु
ने भीड़ को घास पर आराम से बैठ
जाने का हुक्म दिया और पाँच रोटियाँ
और दो मछलियाँ लीं और आकाश की
तरफ देखकर उसने प्रार्थना में धन्यवाद
दिया और रोटियाँ तोड़ने के बाद उसने
चेलों को बाँट दीं और चेलों ने उन्हें
भीड़ में बाँट दिया। **20** तब उन सब
ने भरपेट खाया और उन्होंने बचे हुए
टुकड़े उठाए जिनसे बारह टोकरियाँ भर
गयीं। **21** खानेवालों में करीब पाँच

हज़ार आदमी थे, और उनके अलावा
स्त्रियाँ और बच्चे भी थे। **22** फिर,
यीशु ने बिना देर किए अपने चेलों को
जबरन भेजा कि वे नाव पर चढ़कर उससे
पहले उस पार चले जाएँ, जबकि वह खुद
भीड़ को विदा कर रहा था।

23 आखिरकार, भीड़ को भेज देने
के बाद, वह खुद प्रार्थना करने के लिए
पहाड़ पर चला गया। हालाँकि बहुत रात
बीत चुकी थी, फिर भी वह वहाँ अकेला
था। **24** अब तक चेलों की नाव,
किनारे से कुछ किलोमीटर* दूर जा चुकी
थी और लहरों के थपेड़े नाव का आगे
बढ़ना मुश्किल कर रहे थे, क्योंकि हवा
का रुख उनके खिलाफ था। **25** मगर
रात के चौथे पहर* यीशु पानी पर चलता
हुआ उनके पास आया। **26** जब चेलों
की नज़र उस पर पड़ी कि वह पानी पर
चल रहा है, तो वे घबराकर कहने लगे:
“हमें ज़रूर कोई वहम हो रहा है!” और
वे डर के मारे ज़ोर से चिल्लाने लगे।
27 मगर यीशु ने फौरन उनसे कहा:
“हिम्मत रखो, मैं ही हूँ। डरो मत।”
28 जवाब में पतरस ने उससे कहा:
“प्रभु, अगर तू ही है, तो मुझे आज्ञा दे
कि मैं पानी पर चलकर तेरे पास आऊँ।”
29 यीशु ने कहा: “आ!” इस पर पतरस
नाव से उतरा और पानी पर चलता हुआ
यीशु की तरफ जाने लगा। **30** मगर
तूफान को देखकर वह डर गया और जब
डूबने लगा, तो चिल्ला उठा: “प्रभु, मुझे
बचा!” **31** यीशु ने फौरन अपना हाथ
बढ़ाकर उसे थाम लिया और उससे कहा:
“अरे, कम विश्वास रखनेवाले, तू ने शक
क्यों किया?” **32** और जब वे दोनों
नाव पर चढ़ गए, तो तूफान थम गया।
33 तब जो नाव में थे, उन्होंने झुककर
उसे प्रणाम किया और कहा: “तू वाकई
परमेश्वर का बेटा है।” **34** वे उस
पार पहुँचकर गन्नेसरत की ज़मीन पर
आ गए।

35 वहाँ के लोगों ने उसे पहचानकर
आस-पास के सारे इलाके में खबर भेजी
और लोग सब बीमारों को उसके पास ले
आए। **36** और वे उससे बिनती करने
लगे कि वह उन्हें अपने कपड़े की झालर
को ही छू लेने दे। जितनों ने उसे छूआ
वे पूरी तरह चंगे हो गए।

15 इसके बाद, यरूशलेम से फरीसी
और शास्त्री, यीशु के पास आए
और कहने लगे: **2** “आखिर क्यों तेरे
चेले हमारे बुज़ुर्गों की ठहरायी हुई पर-
पराओं को तोड़ते हैं? मिसाल के लिए,
खाना खाने से पहले वे अपने हाथ नहीं
धोते।”*

मत्ती 14:24* शाब्दिक, “कई *स्तादिया।*” एक *स्तादि-योन* करीब 185 मीटर के बराबर था। **25*** यूनानियों और रोमियों के मुताबिक रात का आखिरी पहर (यानी सुबह करीब तीन बजे से लेकर सूरज निकलने तक)। निर्ग 14:24 और न्यायि 7:19 के मुताबिक, यहूदियों में रात को तीन पहरों में बाँटा जाता था, मगर बाद में उन्होंने रात को चार पहरों में बाँटने का रोमी तरीका अपना लिया। मर 13:35 के फुटनोट देखें।

मत्ती 15:2* इसका मतलब गंदे हाथों से खाना खाना नहीं, बल्कि रीति के मुताबिक हाथ धोने की यहूदी परंपरा से है।

3 यीशु ने उन्हें जवाब दियाः “तुम भी
क्यों अपनी परंपरा की वजह से परमेश्वर
की आज्ञा तोड़ते हो? **4** मिसाल के
लिए, परमेश्वर ने कहा था, ‘अपने पिता
और अपनी माँ का आदर कर।’ और ‘जो
कोई अपने पिता या अपनी माँ को गाली
दे, वह मार डाला जाए।’ **5** मगर तुम
कहते हो, ‘जो कोई अपने पिता या अपनी
माँ से कह देता है: “मेरे पास ऐसा जो कुछ
है जिससे तुझे कभी फायदा पहुँच सकता
था, वह अब परमेश्वर को समर्पित भेंट
है,” **6** तो उसे अपने माता-पिता का
आदर करने की कोई ज़रूरत नहीं।’ इस
तरह तुमने अपनी परंपरा की वजह से
परमेश्वर के वचन को रद्द कर दिया है।
7 अरे कपटियो, यशायाह ने तुम्हारे बारे
में बिलकुल सही भविष्यवाणी की थी,
जब उसने कहा, **8** ‘ये लोग होंठों से
तो मेरा आदर करते हैं, मगर इनका
दिल मुझसे कोसों दूर रहता है। **9** ये
बेकार ही मेरी उपासना करते रहते हैं,
क्योंकि ये इंसानों की आज्ञाओं को पर-
मेश्वर की शिक्षाएँ बताकर सिखाते हैं।’ ”
10 तब यीशु ने भीड़ को अपने पास
बुलाया और उनसे कहाः “सुनो और
इसके मायने समझोः **11** जो मुँह में
जाता है वह इंसान को दूषित नहीं करता;
लेकिन जो उसके मुँह से बाहर निकलता
है वही उसे दूषित करता है।”

12 इसके बाद चेलों ने उसके
पास आकर कहाः “क्या तू जानता है
कि फरीसियों को तेरी बात चुभ गयी
है?” **13** जवाब में उसने कहाः “हर
वह पौधा जिसे मेरे स्वर्गीय पिता ने
नहीं लगाया, जड़ से उखाड़ा जाएगा।
14 उन्हें रहने दो। वे खुद तो अंधे
हैं, मगर दूसरों को राह दिखाते हैं।
अगर एक अंधा अंधे को राह दिखाए,
तो दोनों किसी गड्ढे में जा गिरेंगे।”
15 यह सुनकर पतरस ने उससे कहाः
“हमें उस मिसाल का मतलब समझा।”
16 इस पर उसने कहाः “क्या तुम भी
अब तक नहीं समझ सके? **17** क्या
तुम नहीं जानते कि मुँह में जानेवाली
हर चीज़ आँतों से होती हुई, मल-कुंड
में निकल जाती है? **18** मगर मुँह
से जो बाहर निकलता है वह दिल से
निकलता है, और ये चीज़ें एक इंसान को
दूषित करती हैं। **19** मिसाल के लिए,
दुष्ट विचार, हत्याएँ, शादी के बाहर यौन-
संबंध, व्यभिचार, चोरियाँ, झूठी गवाही
और निंदा की बातें, ये दिल से ही
निकलती हैं। **20** यही चीज़ें इंसान को
दूषित करती हैं। मगर बिना हाथ धोए
खाना खाना उसे दूषित नहीं करता।”

21 अब यीशु वहाँ से निकलकर सोर
और सीदोन के इलाकों में चला गया।
22 और देखो! वहाँ उस इलाके से एक
स्त्री जो फीनीके की रहनेवाली थी उसके
पास आयी और ज़ोर-ज़ोर से रोती-पुकार-
ती हुई कहने लगीः “हे प्रभु, दाविद के
वंशज, मुझ पर दया कर। मेरी बेटी
को दुष्ट स्वर्गदूत ने बहुत बुरी तरह
काबू में कर रखा है।” **23** मगर यीशु
ने जवाब में उससे एक शब्द भी न
कहा। इसलिए उसके चेले आए और
यीशु से बिनती करने लगेः “इसे भेज

दे; क्योंकि यह हमारे पीछे-पीछे रोती-
पुकारती रहती है।” **24** इस पर उसने
कहाः “मुझे इसराएल के घराने की खोयी
हुई भेड़ों को छोड़ किसी और के पास
नहीं भेजा गया।” **25** जब वह स्त्री
आयी तो उसके सामने झुककर प्रणाम
करती हुई कहने लगीः “हे प्रभु, मेरी
मदद कर!” **26** उसने जवाब दियाः
“बच्चों की रोटी लेकर पिल्लों के आगे
फेंकना सही नहीं है।” **27** तब स्त्री
ने कहाः “सही कहा प्रभु; मगर फिर
भी पिल्ले अपने मालिकों की मेज़ से
गिरनेवाले टुकड़े तो खा ही लेते हैं।”
28 तब यीशु ने उससे कहाः “हे स्त्री,
तेरा विश्वास बहुत बड़ा है। जैसा तू
चाहती है, वैसा ही तेरे लिए हो।” और
उसी घड़ी उसकी बेटी चंगी हो गयी।

29 फिर यीशु उस इलाके को पार
कर गलील झील के पास आया, और
वहाँ पहाड़ पर जाने के बाद, वहीं बैठा
हुआ था। **30** तब भारी तादाद में
लोग उसके पास आए और अपने साथ
लूले-लंगड़े, अंधे, गूँगे और ऐसे ही बहुत-
से लोगों को लाए और उसके पैरों के
सामने डाल दिया, और उसने उन्हें चंगा
किया। **31** जब भीड़ ने देखा कि गूँगे
बोल रहे हैं, लंगड़े चल रहे हैं और
अंधे देख रहे हैं, तो वे दंग रह गए
और उन्होंने इसराएल के परमेश्वर की
बड़ाई की।

32 तब यीशु ने अपने चेलों को पास
बुलाया और कहाः “इस भीड़ को देख-
कर मुझे तरस आता है, क्योंकि इन्हें मेरे
साथ रहते हुए तीन दिन बीत चुके हैं और
इनके पास खाने के लिए कुछ भी नहीं
है। मैं इन्हें भूखा नहीं भेजना चाहता।
कहीं वे रास्ते में ही पस्त न हो जाएँ।”
33 मगर चेलों ने उससे कहाः “यहाँ इस
सुनसान जगह में हम इतनी रोटियाँ कहाँ
से लाएँ कि इतनी बड़ी भीड़ भरपेट
खा सके?” **34** इस पर यीशु ने उनसे
कहाः “तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ हैं?”
उन्होंने कहाः “सात, और कुछ छोटी मछ-
लियाँ भी हैं।” **35** तब उसने भीड़ को
ज़मीन पर आराम से बैठने की हिदायत
दी **36** फिर उसने वे सातों रोटियाँ
और मछलियाँ लीं और प्रार्थना में धन्य-
वाद देने के बाद, वह उन्हें तोड़कर
चेलों को देने लगा, और चेलों ने इन्हें
भीड़ में बाँट दिया। **37** सबने भर-
पेट खाया और उन्होंने बचे हुए टुकड़े
इकट्ठे किए जिनसे सात बड़े-टोकरे भर
गए। **38** खानेवालों में करीब चार
हज़ार आदमी थे, और उनके अलावा
स्त्रियाँ और बच्चे भी थे। **39** आखिर
में भीड़ को विदा करने के बाद, वह नाव
पर चढ़ा और मगदन के इलाके में आया।

16 यहाँ फरीसी और सदूकी यीशु
के पास आए और उसे
परखने के लिए उससे कहा कि वह
उन्हें आकाश से एक निशानी दिखाए।
2 यीशु ने जवाब में उनसे कहाः “[[जब
शाम होती है, तो तुम कहा करते हो,
‘मौसम खुला रहेगा, क्योंकि आसमान का
रंग चटक लाल है।’ **3** फिर सुबह के
वक्त कहते हो, ‘आज मौसम सर्द और

बरसाती होगा, क्योंकि आसमान का रंग
लाल तो है, मगर धुँधला दिखायी देता
है।' तुम आसमान की सूरत देखकर
उसका मतलब समझाना तो जानते हो,
मगर इस समय की निशानियों को देखकर
उनका मतलब नहीं समझा सकते।]]*
4 एक दुष्ट और विश्वासघाती* पीढ़ी
हमेशा किसी हैरतअँगेज़ निशानी की ताक
में लगी रहती है, मगर इसे योना की
निशानी को छोड़ और कोई निशानी नहीं
दी जाएगी।" यह कहने के बाद, वह उन्हें
वहीं छोड़ आगे चला गया।

5 चेले उस पार जाने के वक्त
अपने साथ रोटियाँ लेना भूल गए थे।
6 यीशु ने उनसे कहा: "अपनी आँखें
खुली रखो और फरीसियों और सदूकियों
के खमीर से चौकन्ने रहो।" 7 तब वे
आपस में यह कहकर चर्चा करने लगे:
"हम अपने साथ रोटियाँ नहीं लाए।"
8 यह जानकर यीशु ने कहा: "अरे कम
विश्वास रखनेवालो, तुम क्यों आपस में
चर्चा कर रहे हो कि तुम्हारे पास रोटियाँ
नहीं हैं? 9 क्या तुम अब तक नहीं
समझे या क्या तुम्हें पाँच हज़ार लोगों के
लिए वे पाँच रोटियाँ याद नहीं और यह
भी कि तुमने भरी हुई कितनी टोकरियाँ
उठायी थीं? 10 या क्या तुम्हें चार
हज़ार लोगों के लिए वे सात रोटियाँ याद
नहीं और यह भी कि तुमने भरे हुए कितने
बड़े-टोकरे उठाए थे? 11 तो फिर,
तुम यह क्यों नहीं समझते कि मैंने तुमसे
रोटियों के बारे में नहीं कहा? मगर
यह कहा कि फरीसियों और सदूकियों
के खमीर से चौकन्ने रहो।" 12 तब
उनकी समझ में आ गया कि उसने रोटियों
के खमीर से नहीं, बल्कि फरीसियों और
सदूकियों की शिक्षाओं से उन्हें चौकन्ने
रहने के लिए कहा है।

13 जब यीशु कैसरिया फिलिप्पी के
इलाके में आया, तो अपने चेलों से
पूछने लगा: "लोग क्या कहते हैं, इंसान
का बेटा कौन है?" 14 उन्होंने कहा:
"कुछ कहते हैं, यूहन्ना बपतिस्मा देने-
वाला, दूसरे एलिय्याह और कोई-कोई
कहते हैं यिर्मयाह या भविष्यवक्ताओं में
से एक।" 15 यीशु ने उनसे कहा:
"लेकिन तुम क्या कहते हो, मैं कौन हूँ?"
16 जवाब में शमौन पतरस ने उससे
कहा: "तू जीवित परमेश्वर का बेटा,
मसीह है।" 17 यीशु ने उससे कहा:
"हे शमौन, योना के बेटे, सुखी है तू
क्योंकि यह बात हाड़-माँस के इंसान ने
नहीं, बल्कि मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है,
तुझ पर ज़ाहिर की है। 18 मैं तुझसे
यह कहता हूँ, तू पतरस* है, और इस
चट्टान पर मैं अपनी मंडली# खड़ी करूँगा

मत्ती 16:3* दोहरे ब्रैकेट दिखाते हैं कि इनके अंदर की आयतें कुछ प्राचीन हस्तलिपियों में नहीं पायी जातीं, मगर ये दूसरी हस्तलिपियों में पायी जाती हैं। **4*** शाब्दिक, "व्यभिचारी।"

मत्ती 16:18* यूनानी में इसका मतलब है, "पत्थर, या पत्थर का एक टुकड़ा।" **18#** "मंडली" शब्द इन-इन लोगों के लिए इस्तेमाल होता है: सारी दुनिया के मसीहियों का समुदाय (जैसे, मत्ती 16:18; 1कुरिं 10:32), मसीहियों का वह दल जिसे स्वर्ग के जीवन के लिए चुना गया है (इब्रा 12:23), किसी इलाके के मसीही (प्रेषि 8:1; 1कुरिं 1:2; प्रका 1:11), या मसीहियों का एक दल जो किसी के घर में अपनी धार्मिक सभाएँ चलाते हैं (रोमि 16:5; फिले 2)।

और कब्र* के दरवाज़े उस पर हावी न हो
सकेंगे। **19** मैं तुझे स्वर्ग के राज की
चाबियाँ दूँगा और जो कुछ तू धरती पर
बाँधेगा, वह स्वर्ग में बँधा हुआ होगा और
जो कुछ तू धरती पर खोलेगा, वह स्वर्ग
में खुला हुआ होगा।" **20** इसके बाद
उसने चेलों को कड़ी हिदायत देकर कहा
कि किसी से न कहें कि वह मसीह* है।

21 उस वक्त से यीशु मसीह ने अपने
चेलों पर यह ज़ाहिर करना शुरू कर दिया
कि उसका यरूशलेम जाना और वहाँ
बुज़ुर्गों, प्रधान याजकों और शास्त्रियों के
हाथों कई दुःख सहना और मार डाला
जाना ज़रूरी है, और फिर उसे तीसरे दिन
जी उठाया जाएगा। **22** इस पर पत-
रस उसे अलग ले गया और यह कह-
कर उसे झिड़कने लगाः "प्रभु, खुद पर
दया कर; तेरे साथ ऐसा नहीं होगा।"
23 मगर, उसने पतरस से मुँह फेर लिया
और कहाः "अरे शैतान, मेरे सामने से
दूर हो जा! तू मेरे लिए ठोकर की वजह
है, क्योंकि तेरी सोच परमेश्वर जैसी नहीं,
बल्कि इंसानों जैसी है।"

24 इसके बाद, यीशु ने अपने चेलों
से कहाः "अगर कोई मेरे पीछे आना
चाहता है, तो वह खुद से इनकार करे
और अपनी यातना की सूली* उठाए
और मेरे पीछे चलता रहे। **25** क्योंकि
जो कोई अपनी जान बचाना चाहता है
वह उसे खोएगा, मगर जो कोई मेरी
खातिर अपनी जान गँवाता है वह उसे
पाएगा। **26** क्योंकि अगर एक इंसान
सारा जहान हासिल कर ले, मगर इसकी
कीमत चुकाने के लिए उसे अपनी जान
देनी पड़े, तो इसका क्या फायदा? या एक
इंसान अपनी जान के बदले में क्या देगा?
27 क्योंकि यह तय है कि इंसान का
बेटा अपने पिता से मिले वैभव साथ ही
अपने स्वर्गदूतों के साथ आएगा। तब वह
हर एक को उसके चालचलन के मुता-
बिक बदला देगा। **28** मैं तुमसे सच
कहता हूँ कि यहाँ जो खड़े हैं, उनमें से
कुछ ऐसे हैं जो तब तक मौत का मुँह
हरगिज़ न देखेंगे, जब तक कि पहले वे
इंसान के बेटे को उसके राज में आता
हुआ न देख लें।"

17 छः दिन बाद यीशु ने पतरस,
याकूब और उसके भाई यूहन्ना
को अपने साथ लिया। वह उनको एक
ऊँचे पहाड़ पर ले गया, जहाँ इनके
सिवा कोई और नहीं था। **2** उनके
सामने उसका रूप बदल गया, और उसका
चेहरा सूरज की तरह दमक उठा, और
उसके कपड़े बिजली* की तरह चमकने
लगे। **3** तभी अचानक उन्हें वहाँ मूसा
और एलिय्याह दिखायी दिए, जो यीशु
से बातें कर रहे थे। **4** यह देखकर
पतरस ने यीशु से कहाः "प्रभु, हमारा
यहाँ रहना अच्छा है। अगर तू चाहे तो
मैं यहाँ तीन तंबू खड़े करता हूँ, एक
तेरे लिए, एक मूसा के लिए और एक

मत्ती 16:18* यूनानी में *"हेडिज़।"* अतिरिक्त लेख 8 देखें। **20*** यानी, परमेश्वर का अभिषिक्त जन। **24*** अतिरिक्त लेख 6 देखें।

मत्ती 17:2* शाब्दिक, "रौशनी की तरह सफेद हो गए।"

एलिय्याह के लिए।” **5** वह बोल ही
रहा था कि तभी एक उजला बादल उन
पर छा गया, और देखो! उस बादल
में से यह आवाज़ आयीः “यह मेरा
प्यारा बेटा है। मैंने इसे मंज़ूर किया है,
इसकी सुनो।” **6** यह सुनने पर चेले
औंधे मुँह गिर पड़े और बेहद डर गए।
7 तब यीशु उनके नज़दीक आया और
उन्हें छूकर कहाः “उठो, डरो मत।”
8 जब उन्होंने नज़रें उठाकर देखा, तो
वहाँ यीशु के सिवा किसी और को न
पाया। **9** इसके बाद जब वे पहाड़ से
नीचे उतर रहे थे, तो यीशु ने यह कह-
कर उन्हें हुक्म दियाः “जब तक इंसान के
बेटे को मरे हुओं में से जी न उठाया जाए,
तब तक इस दर्शन के बारे में किसी को
न बताना।”

10 मगर चेलों ने उससे पूछाः
“तो फिर, शास्त्री क्यों कहते हैं कि
पहले एलिय्याह का आना ज़रूरी है?”
11 जवाब में उसने कहाः “एलिय्याह
वाकई आ रहा है और वह सबकुछ बहाल
करेगा। **12** मगर मैं तुमसे कहता हूँ
कि एलिय्याह आ चुका है और उन्होंने
उसे न पहचाना मगर उसके साथ वह सब
किया जो वे करना चाहते थे। इसी तरह,
इंसान के बेटे का भी उनके हाथों दुःख
झेलना तय है।” **13** तब चेले समझ
गए कि वह उनसे यूहन्ना बपतिस्मा देने-
वाले के बारे में कह रहा था।

14 जब वे भीड़ की तरफ आए,
तो एक आदमी यीशु के पास आया
और उसके सामने घुटने टेके और कहाः
15 “प्रभु, मेरे बेटे पर दया कर, क्योंकि
इसे मिरगी आती है और इसकी हालत
बहुत खराब है। यह कभी आग में तो
कभी पानी में गिर जाता है। **16** और
मैं इसे तेरे चेलों के पास लाया, मगर वे
इसे ठीक न कर सके।” **17** जवाब में
यीशु ने कहाः “हे अविश्वासी और टेढ़ी
पीढ़ी, मैं और कब तक तुम्हारे साथ रहूँ?
और कब तक तुम्हारी सहूँ? उसे यहाँ मेरे
पास लाओ।” **18** तब यीशु ने उस
लड़के में समाए दुष्ट स्वर्गदूत को डाँटा
और वह उसमें से निकल गया। उसी पल
वह लड़का ठीक हो गया। **19** इसके
बाद, चेले अकेले में यीशु के पास आए
और उन्होंने कहाः “ऐसा क्यों हुआ कि
हम उसे नहीं निकाल पाए?” **20** यीशु
ने उनसे कहाः “तुम्हारे विश्वास की कमी
की वजह से। क्योंकि मैं तुमसे सच
कहता हूँ, अगर तुम्हारे अंदर राई के
दाने के बराबर भी विश्वास है, तो तुम
इस पहाड़ से कहोगे, ‘यहाँ से हटकर
वहाँ चला जा,’ और वह चला जाएगा,
और तुम्हारे लिए कुछ भी नामुमकिन न
होगा।” **21*** ——

22 जिस दौरान वे गलील में इकट्ठा
थे, तब यीशु ने उनसे कहाः “यह तय है
कि इंसान का बेटा धोखे से पकड़वाया
जाए और लोगों के हवाले किया जाए।
23 वे उसे मार डालेंगे और तीसरे दिन

मत्ती 17:21* यह आयत कुछ बाइबल अनुवादों में पायी जाती है, मगर इसे वेस्टकॉट और हॉर्ट के यूनानी पाठ में शामिल नहीं किया गया है, जो सबसे प्राचीन यूनानी हस्तलिपियों के मुताबिक है।

उसे जी उठाया जाएगा।” यह सुनकर वे
बहुत दुःखी हो गए।

24 उनके कफरनहूम आ जाने के
बाद, पतरस के पास वे लोग आए जो
मंदिर का कर* वसूला करते थे। उन्होंने
पतरस से कहाः “क्या तुम्हारा गुरु मंदिर
का कर नहीं देता?” **25** उसने कहाः
“हाँ, देता है।” मगर जब वह घर के
अंदर गया, तो यीशु ने उसके बोलने से
पहले ही उससे पूछा, “शमौन, तू क्या
सोचता है? दुनिया के राजा चुंगी या कर
किससे लेते हैं? अपने बेटों से या परायों
से?” **26** जब उसने कहाः “परायों
से,” तो यीशु ने उससे कहाः “इसका
मतलब है कि बेटे कर से मुक्त हैं।
27 लेकिन ऐसा न हो कि हमारी वजह
से वे ठोकर खाएँ, इसलिए तू झील के
किनारे जा और मछली पकड़ने के लिए
काँटा डाल, और जो पहली मछली पकड़
में आए उसे लेना और जब तू उसका मुँह
खोलेगा, तो तुझे उसमें चाँदी का एक
सिक्का* मिलेगा। उसे ले जाकर अपने
और मेरे लिए कर-वसूलनेवालों को दे
देना।”

18 उस वक्त चेलों ने यीशु के
पास आकर उससे पूछाः “स्वर्ग
के राज में कौन सबसे बड़ा होगा?”
2 तब यीशु ने एक छोटे बच्चे को अपने
पास बुलाकर उनके बीच खड़ा किया
3 और कहाः “मैं तुमसे सच कहता हूँ,
जब तक कि तुम खुद को बदलकर* वैसे
न बनो जैसे छोटे बच्चे होते हैं, तब तक
तुम किसी भी हाल में स्वर्ग के राज
में दाखिल न हो सकोगे। **4** इसलिए
जो कोई इस छोटे बच्चे की तरह खुद
को नम्र करेगा, वही स्वर्ग के राज में
सबसे बड़ा होगा। **5** जो कोई मेरे नाम
से इस बच्चे-समान किसी को स्वीकार
करता है, वह मुझे भी स्वीकार करता है।
6 मगर जो कोई मुझ पर विश्वास करने-
वाले इन छोटों में से किसी के विश्वास
से गिर जाने* की वजह बनता है, उसके
लिए ज़्यादा अच्छा है कि उसके गले में
चक्की का वह पाट लटकाया जाए जिसे
गधा खींचता है और उसे गहरे समुद्र के
बीच डुबा दिया जाए।

7 इस दुनिया का बहुत बुरा हश्र
होगा, क्योंकि यह विश्वास की राह में
बाधाएँ* डालती है! बेशक, राह में बाधाएँ
ज़रूर आएँगी, मगर हाय उस इंसान पर
जो विश्वास की राह में बाधा बनता है!
8 इसलिए, अगर तेरा हाथ या पैर,
तुझसे पाप करवा रहा है,* तो उसे काट-
कर दूर फेंक दे। तेरे लिए एक हाथ
या पैर के बिना जीवन पाना भला है,
बजाय इसके कि तू दोनों हाथों या दोनों
पैरों समेत हमेशा जलनेवाली आग# से
नाश किया जाए। **9** अगर तेरी आँख

मत्ती 17:24* शाब्दिक, “दो *द्राख्मा* का एक सिक्का,” यानी करीब दो दिन की मज़दूरी। **27*** शाब्दिक, *“स्तातेर।”* चाँदी का वह सिक्का जो चार द्राख्मा यानी चार दिन की मज़दूरी के बराबर था।

मत्ती 18:3* शाब्दिक, “अपने मार्ग से न पलटो।” **6*** या, “ठोकर खिलाने की।” **7*** या, “ठोकर के पत्थर।” **8*** या, “ठोकर खिला रहा है।” **8#** जिसका मलतब है, “हमेशा के लिए नाश।”

तुझसे पाप करवा रही है, तो उसे नोंच-
कर निकाल दे और दूर फेंक दे। तेरे लिए
एक आँख के बिना जीवन पाना भला
है, बजाय इसके कि तू दोनों आँखों
समेत *गेहन्ना** की आग में फेंका जाए।
10 ध्यान रहे कि तुम इन छोटों में से
किसी को भी तुच्छ न समझो; इसलिए
कि मैं तुमसे कहता हूँ कि स्वर्ग में इनके
स्वर्गदूत हमेशा मेरे स्वर्गीय पिता के मुख
के सामने रहते हैं। **11*** ——

12 तुम क्या सोचते हो? अगर किसी
आदमी की सौ भेड़ें हों और उनमें से
एक भटक जाए, तो क्या वह बाकी
निनानवे को पहाड़ों पर छोड़कर उस एक
भटकी हुई भेड़ को ढूँढ़ने न निकलेगा?
13 अगर वह उसे मिल जाती है, तो मैं
तुमसे कहता हूँ कि वह यकीनन उन
निनानवे से बढ़कर, जो भटकी नहीं थीं,
उस एक के लिए ज़्यादा खुशी मनाता है।
14 इसी तरह मेरा पिता जो स्वर्ग में है,
नहीं चाहता कि इन छोटों में से एक भी
नाश हो।

15 अगर तेरा भाई कोई पाप करता
है, तो जा और अकेले में जब सिर्फ तू
और वह हो, उसकी गलती उसे बता दे।
अगर वह तेरी सुने, तो तू ने अपने भाई
को पा लिया है। **16** लेकिन अगर वह
तेरी नहीं सुनता, तो अपने साथ एक या
दो जनों को ले जाकर उससे बात कर,
ताकि हर मामला दो या तीन गवाहों
के मुँह से साबित हो। **17** अगर वह
उनकी नहीं सुनता, तो मंडली को बता।
और अगर वह मंडली की भी नहीं सुनता,
तो उसे एक गैर-यहूदी या कर-वसूलने-
वाला समझकर छोड़ दे।

18 मैं तुमसे सच कहता हूँ, जो कुछ
तुम धरती पर बाँधोगे, वह स्वर्ग में बँधा
हुआ होगा और जो कुछ तुम धरती पर
खोलोगे, वह स्वर्ग में खुला हुआ होगा।
19 मैं फिर तुमसे सच कहता हूँ, अगर
तुममें से दो जन धरती पर किसी ज़रूरी
बात के लिए एक मन होकर बिनती
करें, तो स्वर्ग में मेरे पिता की तरफ से
उनके लिए वैसा हो जाएगा। **20** इस-
लिए कि जहाँ दो या तीन मेरे नाम से
इकट्ठा होते हैं, मैं वहाँ उनके बीच मौजूद
होता हूँ।"

21 इसके बाद, पतरस ने आकर
यीशु से पूछा: "प्रभु, अगर मेरा भाई मेरे
खिलाफ पाप करता रहे, तो मैं कितनी
बार उसे माफ करूँ? सात बार तक?"
22 यीशु ने उससे कहा: "मैं तुझसे कहता
हूँ कि 'सात बार तक' नहीं, बल्कि
सतहत्तर बार तक।

23 इसीलिए स्वर्ग का राज उस राजा
की तरह है, जिसने अपने दासों से माँग
की कि वे अपना-अपना कर्ज़ चुकता
करें। **24** जब उसने हिसाब लेना शुरू
किया, तो उसके सामने एक ऐसे दास को
लाया गया जिस पर छः करोड़ दीनार*

मत्ती 18:9* यरूशलेम के बाहर कूड़ा-करकट जलाने की जगह। अतिरिक्त लेख 9 देखें। **11*** मत्ती 17:21 फुटनोट देखें।

मत्ती 18:24* शाब्दिक, "10,000 तोड़े" या यूनानी में *तालंतौन।* *तालंतौन,* इब्रियों की भार मापने और मुद्रा की सबसे बड़ी इकाई थी। पहली सदी में एक यूनानी तोड़ा या *तालंतौन* 20.4 किलोग्राम सोने या चाँदी के बराबर होता था।

का कर्ज़ था। **25** मगर क्योंकि उसके
पास कर्ज़ चुकाने का कोई ज़रिया न था,
इसलिए उसके मालिक ने हुक्म दिया कि
उस दास के साथ-साथ उसके बीवी-बच्चों
को और जो कुछ उसका है वह सब
बेचकर कर्ज़ की रकम चुकायी जाए।
26 तब वह दास उसके सामने गिड़-
गिड़ाने और यह कहने लगा, ‘मुझे थोड़ी
और मोहलत दे, और मैं तेरी पाई-पाई
चुका दूँगा।’ **27** यह देखकर मालिक
का दिल तड़प उठा और उसने उस
दास को छोड़ दिया और उसका सारा
कर्ज़ माफ कर दिया। **28** लेकिन वही
दास बाहर निकला और अपने एक संगी
दास को ढूँढ़ा, जिसने उससे सौ दीनार*
उधार लिए थे, और वह उसे पकड़कर
उसका गला दबाने लगा और कहने लगा,
‘तू ने जो उधार लिया है वह वापस कर।’
29 तब उसका संगी दास उसके पैर
पड़ने और यह बिनती करने लगा, ‘मुझे
थोड़ी और मोहलत दे, और मैं तेरा उधार
चुका दूँगा।’ **30** मगर, उसने उसकी
एक न सुनी और जाकर उसे तब तक के
लिए जेल में डलवा दिया, जब तक कि
वह अपना उधार न चुका दे। **31** जब
उसके संगी दासों ने यह सब देखा, तो
वे बहुत दुःखी हुए और उन्होंने जाकर
अपने मालिक को सारी बात बता दी।
32 इसके बाद, मालिक ने उस पहले
दास को बुलवा लिया और उससे कहा,
‘दुष्ट दास, जब तू मेरे सामने गिड़गिड़ाया
था, तब मैंने तेरा सारा कर्ज़ माफ कर
दिया था। **33** तो क्या तेरा यह फर्ज़
नहीं था कि तू भी बदले में अपने संगी
दास पर वैसे ही दया करता, जैसे मैंने तुझ
पर दया की थी?’ **34** तब मालिक का
गुस्सा भड़क उठा और उसने उस दास
को तब तक के लिए जेलरों के हवाले कर
दिया, जब तक कि वह उसकी पाई-पाई
न चुका दे। **35** इसी तरह, अगर
तुममें से हरेक अपने भाई को दिल से
माफ न करेगा, तो मेरा स्वर्गीय पिता भी
तुम्हारे साथ इसी तरह पेश आएगा।”

19 जब यीशु ये बातें कह चुका,
तो वह गलील से निकल पड़ा
और यरदन के पार यहूदिया प्रदेश की
सरहदों के पास आया। **2** भीड़-की-
भीड़ उसके पीछे हो ली और उसने वहाँ
लोगों को चंगा किया।

3 तब फरीसी यीशु को बातों में
फँसाने के इरादे से उसके पास आए और
कहने लगे: “क्या मूसा के कानून के
हिसाब से यह सही है कि एक आदमी
अपनी पत्नी को किसी भी वजह से तलाक
दे सकता है?” **4** जवाब में यीशु ने
कहा: “क्या तुमने नहीं पढ़ा कि जिसने
उनकी सृष्टि की थी, उसने शुरूआत से ही
उन्हें नर और नारी बनाया था **5** और
कहा था, ‘इस वजह से पुरुष अपने पिता
और अपनी माँ को छोड़ देगा और अपनी
पत्नी से जुड़ा रहेगा, और वे दोनों एक
तन होंगे’? **6** तो वे अब दो नहीं रहे
बल्कि एक तन हैं। इसलिए जिसे पर-

मत्ती 18:28* एक दीनार एक दिन की मज़दूरी थी। इस हिसाब से 100 दीनार, साल की कुल मज़दूरी का करीब एक-तिहाई हिस्सा था।

मेश्‍वर ने एक बंधन में बाँधा है,* उसे
कोई इंसान अलग न करे।” **7** तब
फरीसियों ने उससे कहा: “तो फिर मूसा
ने तलाकनामा लिखकर पत्नी को तलाक
देने की आज्ञा क्यों दी?” **8** यीशु ने
उनसे कहा: “मूसा ने तुम्हारे दिलों की
कठोरता की वजह से तुम्हें अपनी पत्नियों
को तलाक देने की रिआयत दी, मगर
शुरूआत से ऐसा नहीं था। **9** मैं तुमसे
कहता हूँ कि जो कोई व्यभिचार को छोड़
किसी और वजह से अपनी पत्नी को
तलाक देता है, और किसी दूसरी से शादी
करता है, वह शादी के बाहर यौन-संबंध
रखने का गुनहगार है।”

10 चेलों ने उससे कहा: “अगर एक
पति का अपनी पत्नी के साथ ऐसा रिश्‍ता
है, तो शादी न करना ही अच्छा है।”
11 उसने उनसे कहा: “सभी अपनी
ज़िंदगी में इस बात के लिए जगह नहीं
बनाते, मगर सिर्फ वे ही जिनके पास यह
तोहफा है। **12** क्योंकि कुछ नपुंसक
ऐसे हैं जो अपनी माँ के गर्भ से नपुंसक
पैदा हुए हैं। कुछ ऐसे हैं जिन्हें आदमियों
ने नपुंसक बना दिया है, और कुछ ऐसे
भी हैं जिन्होंने स्वर्ग के राज की खातिर
खुद को नपुंसक बना लिया है। जो राज
की खातिर अविवाहित रह सकता है,
वह रहे।”

13 इसके बाद, लोग छोटे बच्चों को
यीशु के पास लाने लगे ताकि वह उन
पर अपने हाथ रखे और उनके लिए
प्रार्थना करे। मगर चेलों ने उन्हें डाँटा।

मत्ती 19:6* शाब्दिक, “जूए में जोड़ा है।”

14 लेकिन यीशु ने कहा: “बच्चों को मेरे
पास आने दो, उन्हें मत रोको, क्योंकि
स्वर्ग का राज ऐसों ही का है।”
15 और उसने उन पर अपने हाथ रखे
और फिर वहाँ से चला गया।

16 और देखो! एक आदमी उसके
पास आया और कहने लगा: “गुरु, हमेशा
की ज़िंदगी पाने के लिए मैं क्या अच्छा
काम करूँ?” **17** यीशु ने उससे कहा:
“तू मुझसे क्यों पूछता है कि अच्छा काम
क्या है? सिर्फ एक ही है जो अच्छा है।
लेकिन अगर तू ज़िंदगी पाना चाहता है,
तो आज्ञाओं का पालन करता रह।”
18 उस आदमी ने उससे पूछा: “कौन-
सी आज्ञाएँ?” यीशु ने कहा: “यही कि तू
खून न करना, तू शादी के बाहर यौन-
संबंध न रखना, तू चोरी न करना, तू
झूठी गवाही न देना, **19** अपने पिता
और अपनी माँ का आदर करना और
तुझे अपने पड़ोसी से वैसे ही प्यार
करना है जैसे तू खुद से करता है।”
20 उस नौजवान ने यीशु से कहा:
“मैं ये सारी बातें मानता आया हूँ। अब
मुझमें क्या कमी है?” **21** यीशु ने
उससे कहा: “अगर तू सिद्ध होना
चाहता है, तो जा और अपना स-
बकुछ बेचकर कंगालों को दे दे
क्योंकि तुझे स्वर्ग में खज़ाना मिलेगा,
और आकर मेरा चेला बन जा और
मेरे पीछे हो ले।” **22** जब उस नौज-
वान ने यह बात सुनी, तो वह
दुःखी होकर चला गया, क्योंकि उसके
पास बहुत धन-संपत्ति थी। **23** लेकिन

यीशु ने अपने चेलों से कहा: “मैं तुमसे
सच कहता हूँ कि एक दौलतमंद आदमी
का स्वर्ग के राज के अंदर जा पाना बहुत
मुश्किल होगा। **24** मैं तुमसे फिर
कहता हूँ, परमेश्वर के राज में एक
दौलतमंद आदमी के दाखिल होने से, एक
ऊँट का सुई के छेद से निकल जाना
ज़्यादा आसान है।”

25 जब चेलों ने यह सुना, तो
उन्होंने बेहद हैरानी ज़ाहिर की और कहा:
“तो फिर, आखिर किसका उद्धार हो
सकता है?” **26** यीशु ने सीधे उनकी
आँखों में देखकर कहा: “इंसानों के लिए
यह नामुमकिन है मगर परमेश्वर के लिए
सबकुछ मुमकिन है।”

27 तब पतरस ने जवाब में उससे
कहा: “देख! हम तो सब कुछ छोड़कर
तेरे पीछे हो लिए हैं; फिर हमारे लिए
इसमें क्या होगा?” **28** यीशु ने उनसे
कहा: “मैं तुमसे सच कहता हूँ कि जब
सबकुछ नया किया जाएगा और इंसान
का बेटा अपनी महिमा की राजगद्दी पर
बैठेगा, तब तुम भी जो मेरे पीछे हो लिए
हो, बारह राजगद्दियों पर बैठकर इसरा-
एल के बारह गोत्रों का न्याय करोगे।
29 और जिस किसी ने मेरे नाम की
खातिर घरों या भाइयों या बहनों या पिता
या माँ या बच्चों को छोड़ा हो या ज़मीनें
छोड़ी हों, वह इसका कई गुना पाएगा
और हमेशा की ज़िंदगी का वारिस होगा।

30 मगर बहुत-से जो पहले हैं, वे
आखिरी होंगे और जो आखिरी हैं वे
पहले।

20 इसलिए कि स्वर्ग का राज
उस मालिक जैसा है, जिसका
अंगूरों का बाग था। वह तड़के सुबह
बाहर निकला कि अपने बाग में दिहाड़ी
पर काम करनेवाले मज़दूर लगाए।
2 उसने मज़दूरों के साथ दिन की मज़-
दूरी एक दीनार तय की और उन्हें अपने
बाग में काम करने भेज दिया। **3** फिर
वह तीसरे घंटे* के करीब बाहर निकला।
तब उसने बाज़ार के चौक में कुछ और
मज़दूरों को बेकार खड़े देखा। **4** बाग
के मालिक ने उनसे कहा, ‘तुम भी मेरे
बाग में जाओ और जो ठीक है वह मज़-
दूरी मैं तुम्हें दूँगा।’ **5** तब वे बाग में
गए। वह फिर छठे* और नौवें घंटे#
के करीब बाहर निकला और ऐसा ही
किया। **6** आखिर में, वह ग्यारहवें
घंटे* के करीब बाहर निकला और कई
और मज़दूरों को खड़े पाया। तब बाग के
मालिक ने उनसे पूछा, ‘तुम यहाँ दिन-भर
क्यों बेकार खड़े रहे?’ **7** उन्होंने कहा,
‘क्योंकि किसी ने भी हमें मज़दूरी पर नहीं
रखा।’ उसने उनसे कहा, ‘तुम भी मेरे
अंगूरों के बाग में जाओ।’

8 जब शाम हुई, तो बाग के मालिक
ने काम की देख-रेख करनेवाले आदमी

मत्ती 20:3* यानी, सूरज निकलने के वक्त से गिनें, तो “तीसरा घंटा,” या सुबह करीब 9 बजे। **5*** यानी, सूरज निकलने के वक्त से गिनें, तो “छठा घंटा,” या दोपहर करीब 12 बजे। **5#** यानी, सूरज निकलने के वक्त से गिनें, तो “नौवाँ घंटा,” या दो-पहर करीब 3 बजे। **6*** यानी, सूरज निकलने के वक्त से गिनें, तो “ग्यारहवाँ घंटा,” या शाम करीब 5 बजे।

से कहा, 'मज़दूरों को बुला और जो
आखिर में आए थे उनसे शुरूआत करते
हुए सबसे पहले आनेवालों तक, सबको
मज़दूरी दे दे।' **9** जब ग्यारहवें घंटे
में काम पर लगनेवाले आदमी आए, तो
उनमें से हरेक को एक दीनार मिला।
10 जब सबसे पहले आनेवालों की बारी
आयी, तो उन्होंने सोचा कि उन्हें ज़्यादा
मज़दूरी मिलेगी। मगर उन्हें भी दिन की
मज़दूरी के तौर पर एक ही दीनार दिया
गया। **11** एक दीनार मिलने पर वे
यह कहकर उस मालिक पर कुड़कुड़ाने
लगे, **12** 'ये जो आखिर में आए थे,
इन्होंने बस एक ही घंटे काम किया; फिर
भी तू ने उन्हें हमारे बराबर कर दिया,
जिन्होंने सारा दिन मेहनत की और तपती
धूप सही!' **13** मगर मालिक ने उनमें
से एक को जवाब देते हुए कहा, 'देख
भई, मैं तेरे साथ कुछ बुरा नहीं कर रहा।
क्या तू मेरे यहाँ एक दीनार पर काम
करने के लिए राज़ी नहीं हुआ था?
14 इसलिए, जो तेरा है वह ले और
चला जा। मैंने जितना तुझे दिया है, उतना
ही मैं आखिर में आनेवाले इस आदमी को
देना चाहता हूँ। **15** क्या मुझे अधि-
कार नहीं कि अपने धन के साथ जो चाहे
वह करूँ? या यह देखकर कि मैं अच्छा
हूँ, तू अपनी दुष्टता* दिखा रहा है?'
16 इस तरह, जो आखिरी हैं वे पहले
होंगे और जो पहले हैं वे आखिरी।"

17 अब जब यीशु यरूशलेम की
तरफ जा रहा था, तब उसने बारह चेलों
को अलग ले जाकर राह में उनसे कहा:
18 "देखो! हम यरूशलेम जा रहे हैं
और इंसान का बेटा प्रधान याजकों और
शास्त्रियों के हवाले किया जाएगा और वे
उसे मौत की सज़ा सुनाएँगे। **19** वे
उसे दूसरी जातियों के लोगों के हवाले कर
देंगे कि वे उसका मज़ाक उड़ाएँ और उसे
कोड़े लगाएँ और सूली पर चढ़ाएँ, और
तीसरे दिन उसे जी उठाया जाएगा।"

20 इसके बाद, जब्दी की पत्नी
अपने दो बेटों के साथ यीशु के पास आयी
और झुककर उसे प्रणाम किया। वह उससे
कुछ माँगना चाहती थी। **21** यीशु ने
उससे कहा: "तू क्या चाहती है?" वह
बोली: "बस इतना वादा कर दे कि तेरे
राज में मेरे ये दोनों बेटे, एक तेरे दाएँ
और दूसरा तेरे बाएँ बैठे।" **22** यीशु
ने जवाब में उसके बेटों से कहा: "तुम
दोनों नहीं जानते कि तुम क्या माँग रहे
हो। क्या तुम वह प्याला पी सकते हो,
जिसे मैं पीनेवाला हूँ?" उन्होंने कहा:
"हम पी सकते हैं।" **23** यीशु ने उनसे
कहा: "तुम मेरा प्याला ज़रूर पीओगे,
मगर मेरी दायीं या बायीं तरफ बैठने
की इजाज़त देना मेरे अधिकार में नहीं,
लेकिन ये जगह उनके लिए हैं, जिनके
लिए मेरे पिता ने इन्हें तैयार किया है।"

24 जब बाकी दस ने इस बारे
में सुना, तो वे उन दोनों भाइयों पर
नाराज़ होने लगे। **25** मगर यीशु ने
चेलों को अपने पास बुलाकर कहा: "तुम
जानते हो कि दुनिया के अधिकारी उन पर
हुक्म चलाते हैं और उनके बड़े लोग

मत्ती 20:15* शाब्दिक, "तेरी आँख दुष्ट है।"

उन पर अधिकार जताते हैं। 26 मगर
तुम्हारे बीच ऐसा नहीं है; बल्कि तुममें
जो बड़ा बनना चाहता है, उसे तुम्हारा
सेवक होना चाहिए, 27 और जो कोई
तुममें पहला होना चाहता है, उसे तुम्हारा
दास होना चाहिए। 28 जैसे इंसान का
बेटा भी सेवा करवाने नहीं, बल्कि सेवा
करने आया है और इसलिए आया है कि
बहुतों की फिरौती के लिए अपनी जान
बदले में दे।"

29 जब वे यरीहो से निकलकर बाहर
जा रहे थे, तब एक बड़ी भीड़ यीशु के
पीछे हो ली। 30 और देखो! दो अंधे
सड़क के किनारे बैठे थे। जब उन्होंने सुना
कि यीशु वहाँ से गुज़र रहा है तो वे ज़ोर-
ज़ोर से पुकारने लगे: "हे प्रभु, दाविद के
वंशज, हम पर दया कर!" 31 मगर
भीड़ ने उन्हें कड़ाई से कहा कि चुप हो
जाएँ। लेकिन वे और ज़ोर से चिल्लाकर
कहने लगे: "हे प्रभु, दाविद के वंशज, हम
पर दया कर!" 32 इस पर यीशु रुक
गया, और उन्हें बुलाकर कहा: "तुम क्या
चाहते हो, मैं तुम्हारे लिए क्या करूँ?"
33 उन्होंने कहा: "प्रभु, हमारी आँखें
ठीक हो जाएँ।" 34 यह देखकर यीशु
तड़प उठा, और उसने उनकी आँखें छुईं
और वे फौरन देखने लगे और उसके पीछे
हो लिए।

21 जब वे यरूशलेम के करीब आ
गए और जैतून पहाड़ पर
बसे बैतफगे गाँव पहुँचे, तब यीशु ने
दो चेलों को 2 यह कहकर भेजा: "जो
गाँव तुम्हें नज़र आ रहा है, उसमें जाओ।
वहाँ जाते ही तुम्हें एक गधी और उसका
बच्चा बंधा हुआ मिलेगा। उन्हें खोलकर
मेरे पास ले आओ। 3 और अगर
कोई तुमसे कुछ कहे तो कहना, 'प्रभु को
इनकी ज़रूरत है।' तब वह उन्हें फौरन
भेज देगा।"

4 ऐसा दरअसल इसलिए हुआ ताकि
वह वचन पूरा हो सके जो भविष्यवक्ता
से कहलवाया गया था: 5 "सिय्योन
की बेटी से कह, 'देख! तेरा राजा तेरे
पास आ रहा है, वह कोमल स्वभाव का
है और एक गधे पर, हाँ बोझ ढोनेवाली
गधी के बच्चे पर सवार है।'"

6 तब वे चेले निकल पड़े और वैसा
ही किया जैसा यीशु ने उन्हें आदेश
दिया था। 7 वे उस गधी और उसके
बच्चे को ले आए, और उन्होंने इन पर
अपने ओढ़ने डाले और वह उन पर*
बैठ गया। 8 तब भीड़ में से ज़्यादा-
तर ने अपने ओढ़ने रास्ते में बिछाए
जबकि दूसरों ने पेड़ों से डालियाँ काट-
कर रास्ते में बिछाना शुरू कर दिया।
9 भीड़ के जो लोग उसके आगे-आगे
चल रहे थे और जो उसके पीछे-पीछे आ
रहे थे, वे पुकारकर यह कहते रहे:
"हम बिनती करते हैं, दाविद के वंशज
को बचा ले!* धन्य है वह जो यहोवा के
नाम से आता है! स्वर्ग में रहनेवाले, हम
बिनती करते हैं, उसे बचा ले!"

10 जब वह यरूशलेम में दाखिल
हुआ, तो पूरे शहर में तहलका मच गया

मत्ती 21:7* ज़ाहिर है, ओढ़नों पर। **9*** शाब्दिक, *"होसन्ना।"*

और सब कहने लगे: “यह कौन है?”
11 और भीड़ के लोग उन्हें बताते रहे:
“यह वही भविष्यवक्ता है, गलील के
नासरत का यीशु!”

12 फिर यीशु मंदिर के अंदर गया।
मंदिर में जो लोग बिक्री कर रहे थे, और
जो खरीदारी कर रहे थे, उन सबको
उसने खदेड़ दिया और पैसा बदलनेवाले
सौदागरों की मेज़ें और कबूतर बेचने-
वालों की चौकियाँ उलट दीं। **13** और
उसने उनसे कहा: “यह लिखा है, ‘मेरा
घर प्रार्थना का घर कहलाएगा’, मगर
तुम इसे लुटेरों का अड्डा बना रहे हो।”
14 इसके बाद, अंधे और लंगड़े मंदिर
में उसके पास आए, और उसने उन्हें चंगा
किया।

15 जब प्रधान याजकों और
शास्त्रियों ने उसके हैरतअँगेज़ काम देखे
और मंदिर में लड़कों को यह पुकारते
सुना, “दाविद के वंशज को बचा ले, हम
बिनती करते हैं!” तो वे भड़क उठे।
16 उन्होंने उससे कहा: “क्या तू सुन रहा
है, ये क्या कह रहे हैं?” यीशु ने उनसे
कहा: “हाँ, क्या तुमने यह कभी नहीं पढ़ा,
‘नन्हे-मुन्नों और दूध-पीते बच्चों के मुँह
से तू ने स्तुति करवायी है’?” **17** और
वह उन्हें वहीं छोड़कर यरूशलेम शहर से
बाहर बैतनिय्याह चला गया और वहीं
रात बितायी।

18 तड़के सुबह जब वह यरूशलेम
शहर की तरफ लौट रहा था तो उसे भूख
लगी। **19** और रास्ते के किनारे जब
एक अंजीर के पेड़ पर उसकी नज़र पड़ी
तो वह उसके पास गया, मगर पत्तियों
को छोड़ उसमें कुछ न पाया। तब उसने
पेड़ से कहा: “अब से फिर कभी तुझमें
फल न लगे।” और अंजीर का वह पेड़
उसी घड़ी सूख गया। **20** मगर जब
चेलों ने इसे देखा, तो वे ताज्जुब करते
हुए कहने लगे: “यह अंजीर का पेड़
फौरन कैसे सूख गया?” **21** जवाब में
यीशु ने उनसे कहा: “मैं तुमसे सच कहता
हूँ, अगर तुममें बस विश्वास हो और तुम
ज़रा भी शक न करो, तो न सिर्फ
वह करोगे जो मैंने इस अंजीर के पेड़
के साथ किया, बल्कि अगर तुम इस
पहाड़ से कहो, ‘यहाँ से उखड़कर समुद्र
में जा गिर,’ तो ऐसा ही हो जाएगा।
22 और तुम विश्वास के साथ प्रार्थना में
जो कुछ माँगोगे, वह तुम्हें मिल जाएगा।”

23 जिस दौरान वह मंदिर में जाकर
सिखा रहा था, तब प्रधान याजक और
लोगों के बुज़ुर्ग उसके पास आए और
उससे कहा: “तू ये सब किस अधिकार से
करता है? और किसने तुझे यह अधिकार
दिया है?” **24** जवाब में यीशु ने उनसे
कहा: “मैं भी तुमसे एक बात पूछता हूँ।
अगर तुम उसका जवाब दोगे, तो मैं भी
तुम्हें बताऊँगा कि मैं ये सब किस अधि-
कार से करता हूँ: **25** जो बपतिस्मा
यूहन्ना ने दिया, वह किसकी तरफ से
था? स्वर्ग की तरफ से या इंसानों की
तरफ से?” लेकिन वे आपस में सलाह-
मशविरा करने लगे और यह कहने लगे:
“अगर हम कहें, ‘स्वर्ग की तरफ से,’ तो
वह हमसे कहेगा, ‘फिर क्यों तुमने उसका

यकीन नहीं किया?' **26** लेकिन अगर
हम कहें, 'इंसानों की तरफ से था,' तो
हमें भीड़ का डर है, क्योंकि वे सब
यूहन्ना को एक भविष्यवक्ता मानते हैं।"
27 तो उन्होंने यीशु को जवाब दियाः
"हम नहीं जानते।" इस पर उसने कहाः
"न ही मैं तुम्हें यह बतानेवाला हूँ कि मैं
किस अधिकार से यह सब करता हूँ।

28 तुम क्या सोचते हो? किसी
आदमी के दो बेटे थे। उसने पहले
के पास जाकर कहा, 'बेटा जा और
आज अंगूर के बाग में काम कर।'
29 जवाब में इस पहले ने कहा, 'जी
पिताजी, मैं जाऊँगा', मगर वह नहीं
गया। **30** फिर दूसरे के पास जाकर
पिता ने वही बात कही। उसने जवाब
दिया, 'मैं नहीं जाऊँगा।' मगर बाद में
उसे पछतावा महसूस हुआ और वह गया।
31 इन दोनों में से किसने अपने पिता
की मरज़ी पूरी की?" उन्होंने कहाः "दूसरे
ने।" यीशु ने उनसे कहाः "मैं तुम से
सच कहता हूँ कि कर-वसूलनेवाले और
वेश्याएँ तुमसे आगे परमेश्वर के राज में
जा रहे हैं। **32** क्योंकि यूहन्ना सच्चाई
की राह दिखाता हुआ तुम्हारे पास आया,
मगर तुमने उसका यकीन नहीं किया।
लेकिन, कर-वसूलनेवालों और वेश्याओं
ने उसका यकीन किया, और यह देखने
के बावजूद, तुम्हें बाद में भी पछतावा मह-
सूस नहीं हुआ कि उसका यकीन करते।

33 एक और मिसाल सुनोः किसी
मालिक ने अंगूरों का एक बाग लगाया
और उसके चारों तरफ एक बाड़ा बनाया।
उसने उसमें अंगूर रौंदने का हौद खोदा
और एक बुर्ज खड़ा किया। फिर अंगूरों
का बाग बागबानों को ठेके पर देकर
परदेस चला गया। **34** जब अंगूरों
की कटाई का मौसम आया, तो उसने
अपने दासों को बागबानों के पास भेजा
कि वे उसके हिस्से के फल ले आएँ।
35 मगर बागबानों ने उसके दासों
को पकड़ लिया और एक को उन्होंने
पीटा, दूसरे को मार डाला और तीसरे
पर पत्थरवाह किया। **36** दोबारा उस
आदमी ने कुछ और दासों को भेजा, जो
गिनती में पहले से ज़्यादा थे, लेकिन
बागबानों ने इनके साथ भी वैसा ही
सलूक किया। **37** आखिर में उसने
अपने बेटे को यह सोचकर उनके पास
भेजाः 'वे मेरे बेटे की ज़रूर इज़्ज़त
करेंगे।' **38** उसके बेटे को देखकर
बागबानों ने आपस में कहा, 'यह तो
वारिस है। आओ, हम इसे मार डालें
और इसकी विरासत अपनी कर लें!'
39 तब उन्होंने उसे पकड़ लिया और
अंगूरों के बाग के बाहर ले गए और
मार डाला। **40** इसलिए जब बाग का
मालिक आएगा, तो वह उन बागबानों के
साथ क्या करेगा?" **41** उन्होंने कहाः
"क्योंकि वे दुष्ट हैं, इसलिए वह उन्हें बुरी
तरह नाश कर देगा और अंगूर के बाग
का ठेका दूसरे बागबानों को दे देगा, जो
फलों के मौसम में सही वक्त पर उसे फल
दिया करेंगे।"

42 यीशु ने उनसे कहाः "क्या तुमने
शास्त्र में कभी नहीं पढ़ा, 'जिस पत्थर
को राजमिस्त्रियों ने ठुकराया, वही कोने

का मुख्य पत्थर बन गया है।’ क्या तुमने यह भी नहीं पढ़ा, ‘यह यहोवा की तरफ से हुआ है, और हमारी नज़र में लाजवाब है’? **43** इसलिए मैं तुमसे कहता हूँ, परमेश्‍वर का राज तुमसे ले लिया जाएगा और उस जाति को, जो इसके योग्य फल पैदा करती है, दे दिया जाएगा। **44** जो कोई इस पत्थर पर गिरेगा वह टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा। और जिस किसी पर यह पत्थर गिरेगा, उसे यह पीसकर चकनाचूर कर देगा।”

45 जब प्रधान याजकों और फरीसियों ने उसकी मिसालें सुनीं, तो वे जान गए कि वह उन्हीं के बारे में बोल रहा है। **46** हालाँकि वे उसे पकड़ना चाहते थे, मगर वे भीड़ से डरते थे, क्योंकि सभी लोग यीशु को एक भविष्यवक्ता मानते थे।

22 यीशु ने आगे जवाब में फिर से उन्हें मिसालें देकर कहा: **2** “स्वर्ग का राज एक ऐसे राजा की तरह है, जिसने अपने बेटे की शादी की दावत दी। **3** उसने अपने दासों को उन लोगों को बुलाने भेजा, जिन्हें शादी की दावत का न्यौता दिया गया था। मगर वे नहीं आना चाहते थे। **4** राजा ने दोबारा दूसरे दासों को यह कहकर भेजा: ‘जिन्हें न्यौता दिया गया है उनसे जाकर कहो: “देखो! मैं खाना तैयार कर चुका हूँ, मेरे बैल और मोटे-ताज़े जानवर हलाल किए जा चुके हैं और सारी चीज़ें तैयार हैं। शादी की दावत में आ जाओ।”’ **5** मगर उन्होंने ज़रा भी परवाह न की और अपने-अपने रास्ते चल दिए, कोई अपने खेत की तरफ, तो कोई अपने कारोबार के लिए। **6** जबकि बाकियों ने उसके दासों को पकड़ लिया, उनके साथ बुरा सलूक किया और उन्हें मार डाला।

7 तब राजा का गुस्सा भड़क उठा और उसने अपनी सेनाएँ भेजकर उन हत्यारों को नाश कर दिया और उनके शहर को जलाकर राख कर दिया। **8** इसके बाद, उसने अपने दासों से कहा, ‘शादी की दावत तो तैयार है, मगर जिन्हें न्यौता दिया गया था वे इसके लायक नहीं थे। **9** इसलिए शहर से बाहर निकलनेवाली सड़कों पर जाओ और वहाँ जो भी तुम्हें मिले, उसे शादी की दावत के लिए बुला लाओ।’ **10** इस पर वे दास सड़कों पर निकल गए और उन्हें जितने भी मिले, चाहे अच्छे, चाहे बुरे सभी को इकट्ठा किया। और वह भवन जहाँ शादी की रस्में होनी थीं, खाने की मेज़ पर बैठे लोगों से भर गया।

11 जब राजा मेहमानों का मुआयना करने अंदर आया, तो उसकी नज़र एक ऐसे आदमी पर पड़ी जिसने शादी की पोशाक नहीं पहनी थी। **12** तब उसने उससे कहा, ‘अरे भई, तू शादी की पोशाक पहने बिना यहाँ अंदर कैसे आ गया?’ वह कोई जवाब न दे सका। **13** तब राजा ने अपने सेवकों से कहा, ‘इसके हाथ-पैर बाँधकर इसे बाहर अंधेरे में फेंक दो। वहीं इसका रोना और दाँत पीसना होगा।’

14 इसलिए कि न्यौता पानेवाले तो
बहुत हैं, मगर चुने गए थोड़े हैं।”

15 इसके बाद फरीसी चले गए और
उन्होंने आपस में सलाह की कि किस तरह
यीशु को उसी की बातों से फंसाएँ।
16 इसलिए उन्होंने अपने चेलों को हेरो-
दियों के दल के लोगों के साथ, उसके
पास भेजा। उन्होंने यीशु से कहा: “गुरु,
हम जानते हैं कि तू सच्चा है और
सच्चाई से परमेश्वर का मार्ग सिखाता
है और किसी की परवाह नहीं करता,
क्योंकि तू इंसान की सूरत देखकर बात
नहीं करता। **17** इसलिए हमें बता,
तू क्या सोचता है? सम्राट* को कर
देना सही है या नहीं?” **18** मगर
यीशु ने उनकी दुष्टता जानते हुए कहा:
“अरे कपटियो, तुम मेरी परीक्षा क्यों
लेते हो? **19** मुझे कर का सिक्का
दिखाओ।” तब वे उसके पास एक दीनार
लाए। **20** यीशु ने उनसे पूछा: “इस
पर किसकी सूरत और किसके नाम की
छाप है?” **21** उन्होंने कहा: “सम्राट
की।” तब उसने उनसे कहा: “इसलिए जो
सम्राट का है वह सम्राट को चुकाओ, मगर
जो परमेश्वर का है वह परमेश्वर को।”
22 जब उन्होंने यह सुना, तो वे बहुत
ताज्जुब करने लगे और उसे छोड़कर
चले गए।

23 उसी दिन सदूकी, जो कहते हैं
कि मरे हुओं के फिर से जी उठने* की
शिक्षा सच नहीं है, उसके पास आए और
उससे कहा: **24** “गुरु, मूसा ने कहा
था, ‘अगर कोई आदमी बेऔलाद मर
जाए, तो उसका भाई उसकी पत्नी से
शादी करे और अपने मरे हुए भाई के
लिए औलाद पैदा करे।’ **25** हमारे
यहाँ सात भाई थे। पहले ने शादी की
और बेऔलाद मर गया। और अपने
भाई के लिए अपनी पत्नी छोड़ गया।
26 ऐसा ही दूसरे और तीसरे के साथ
हुआ, यहाँ तक कि सातों के साथ यही
हुआ। **27** आखिर में वह स्त्री भी मर
गयी। **28** तो मरे हुओं के जी उठने
के वक्त, वह उन सातों में से किसकी
पत्नी होगी? क्योंकि वे सभी उसके पति
हो चुके थे।”

29 यीशु ने उन्हें जवाब दिया: “तुम
बड़ी गलतफहमी में हो, क्योंकि तुम न
तो शास्त्र को जानते हो, न ही परमेश्वर
की शक्ति को। **30** क्योंकि मरे हुओं
के जी उठने पर उनमें न तो पुरुष शादी
करेंगे न स्त्रियाँ ब्याही जाएँगी, मगर
वे स्वर्गदूतों की तरह होंगे। **31** जहाँ
तक मरे हुओं के जी उठने की बात
है, क्या तुमने वह नहीं पढ़ा जो पर-
मेश्वर ने तुमसे कहा था, **32** ‘मैं अ-
ब्राहम का परमेश्वर और इसहाक का पर-
मेश्वर और याकूब का परमेश्वर हूँ’? वह
मरे हुओं का नहीं, बल्कि जीवितों का
परमेश्वर है।” **33** यह सुनकर भीड़
उसकी शिक्षा से हैरान रह गयी।

34 जब फरीसियों ने सुना कि उसने
सदूकियों का मुँह बंद कर दिया है, तो वे
एक झुंड बनाकर उसके पास आए।
35 उनमें से एक ने, जो मूसा के कानून
का अच्छा जानकार था, यीशु को परखने

मत्ती 22:17* यूनानी में *“कैसर।”* **23*** या, “पुन-
रुत्थान।”

के लिए पूछाः **36** “गुरु, परमेश्‍वर के
कानून में सबसे बड़ी आज्ञा कौन-सी है?”
37 उसने कहाः “‘तुझे अपने परमेश्‍वर
यहोवा से अपने पूरे दिल, अपनी पूरी
जान और अपने पूरे दिमाग से प्यार
करना है।’ **38** यही सबसे बड़ी और
पहली आज्ञा है। **39** और इसी की
तरह यह दूसरी है, ‘तुझे अपने पड़ोसी से
वैसे ही प्यार करना है जैसे तू खुद
से करता है।’ **40** इन्हीं दो आज्ञाओं
पर पूरा कानून और भविष्यवक्‍ताओं की
शिक्षाएँ आधारित हैं।”

41 जिस दौरान फरीसी वहाँ जमा थे,
तब यीशु ने उनसे पूछाः **42** “तुम
मसीह के बारे में क्या सोचते हो?
वह किसका वंशज है?” उन्होंने कहाः
“दाविद का।” **43** उसने उनसे कहाः
“तो फिर, क्यों दाविद पवित्र शक्‍ति से
उभारे जाने पर उसे ‘प्रभु’ पुकारता है
और कहता है, **44** ‘यहोवा ने मेरे प्रभु
से कहाः “मेरी दायीं तरफ बैठ जब तक
कि मैं तेरे दुश्‍मनों को तेरे पैरों तले न
कर दूँ”’? **45** इसलिए अगर दाविद
उसे ‘प्रभु’ कहकर पुकारता है, तो वह
उसका वंशज कैसे हुआ?” **46** और
कोई भी जवाब में उससे एक शब्द तक
न कह सका, न ही उस दिन से फिर किसी
ने उससे कोई और सवाल पूछने की
हिम्मत की।

23 इसके बाद यीशु, भीड़ से और
अपने चेलों से बात करने लगा।
उसने कहाः **2** “शास्त्री और फरीसी
खुद मूसा की गद्दी पर बैठ गए हैं।
3 इसलिए वे जो कुछ तुम्हें बताते हैं वह
सब करो और मानो, मगर उनके जैसे
काम मत करो, क्योंकि जो वे कहते हैं
वह खुद करते नहीं। **4** उनके बनाए
हुए नियम भारी बोझ जैसे हैं, जिन्हें वे
लोगों के कंधों पर लाद देते हैं, मगर उसे
उठाने के लिए खुद ज़रा-सी उँगली तक
नहीं लगाना चाहते। **5** वे सारे काम
लोगों को दिखाने के लिए करते हैं। वे
उन डिब्बियों को, जिनमें शास्त्र की आयतें
लिखी होती हैं और जिन्हें वे तावीज़ों की
तरह पहनते हैं, और भी चौड़ा बनाते हैं।
वे अपने कपड़ों की झालरें और लंबी
करते हैं। **6** उन्हें शाम की दावतों में
सबसे खास जगह लेना और सभा-घरों में
सबसे आगे की जगहों पर बैठना पसंद
है। **7** उन्हें बाज़ारों के चौक में लोगों
से नमस्कार सुनना और गुरु* कहलाना
अच्छा लगता है। **8** मगर तुम गुरु न
कहलाना, क्योंकि तुम्हारा गुरु एक है,
जबकि तुम सब भाई हो। **9** और
धरती पर किसी को अपना ‘पिता’* न
कहना, क्योंकि तुम्हारा पिता एक है, जो
स्वर्ग में है। **10** न ही तुम ‘नेता’ कह-
लाना, क्योंकि तुम्हारा एक ही नेता या
अगुवा है, मसीह। **11** मगर तुम्हारे
बीच जो सबसे बड़ा है, वह तुम्हारा
सेवक बने। **12** जो कोई खुद को

मत्ती 23:7* शाब्दिक, “रब्बी।” आदर और सम्मान की उपाधि, जिसका मतलब था, “मेरे महान; मेरे अति-श्रेष्ठ।” **9*** यीशु ऐसे शब्दों के बारे में कह रहा था जिन्हें एक धार्मिक उपाधि के तौर पर इस्ते-माल किया जाता है। जैसे अँग्रेज़ी में शब्द “फादर।”

ऊँचा करता है, उसे नीचा किया जाएगा
और जो कोई खुद को नीचे रखता है उसे
ऊँचा किया जाएगा।

13 अरे कपटी शास्त्रियो और फरी-
सियो, धिक्कार है तुम पर! क्योंकि तुम
लोगों के सामने स्वर्ग के राज का दर-
वाज़ा बंद कर देते हो। न तो तुम खुद
अंदर जाते हो और न ही उनको जाने देते
हो जो अंदर जाने पर हैं। **14*** ——

15 अरे कपटी शास्त्रियो और फरी-
सियो, धिक्कार है तुम पर! क्योंकि तुम
एक आदमी को अपने पंथ में लाने के
लिए जल और थल में घूमते-फिरते हो,
और जब वह तुम्हारे पंथ में आ जाता है,
तो तुम उसे खुद से दुगुना *गेहन्ना** के
लायक# बना देते हो।

16 अरे अंधो, तुम जो दूसरों को
राह दिखाते हो, धिक्कार है तुम पर,
तुम जो कहते हो 'अगर कोई मंदिर
की कसम खाए तो कोई बात नहीं।
लेकिन अगर वह मंदिर के सोने की
कसम खाए तो अपनी कसम पूरी करना
उसका फर्ज़ है।' **17** अरे मूर्खो और
अंधो! असल में बड़ा क्या है, सोना या
मंदिर जिससे वह सोना पवित्र ठहरता
है? **18** तुम यह भी कहते हो, 'अगर
कोई वेदी की कसम खाए तो कोई बात
नहीं। लेकिन अगर वह उस पर रखी
भेंट की कसम खाए, तो अपनी कसम
पूरी करना उसका फर्ज़ है।' **19** अरे
अंधो! असल में बड़ा क्या है, भेंट या
वेदी जिससे वह भेंट पवित्र ठहरती है?
20 इसलिए जो वेदी की कसम खाता
है, वह उसकी और उस पर रखी सब
चीज़ों की कसम खाता है। **21** जो
मंदिर की कसम खाता है, वह उसकी और
उसमें निवास करनेवाले की कसम खाता
है। **22** जो स्वर्ग की कसम खाता
है, वह परमेश्वर की राजगद्दी की और
उस पर बैठनेवाले की कसम खाता है।

23 अरे कपटी शास्त्रियो और फरी-
सियो, धिक्कार है तुम पर! क्योंकि तुम
पुदीने, सोए और जीरे का दसवाँ अंश तो
देते हो, मगर मूसा के कानून की ज़्यादा
अहमियत रखनेवाली बातों को, यानी
न्याय और दया और विश्वासयोग्य होने
को तुमने दरकिनार कर दिया है। ज़रूरी
था कि तुम इन आज्ञाओं को मानते, साथ
ही उन दूसरी आज्ञाओं को भी न छोड़ते।
24 अरे अंधो, तुम मच्छर को तो छान-
कर निकाल देते हो, मगर ऊँट को निगल
जाते हो!

25 अरे कपटी शास्त्रियो और फरी-
सियो, धिक्कार है तुम पर! क्योंकि तुम
उन प्यालों और थालियों की तरह हो
जिन्हें सिर्फ बाहर से साफ किया जाता है,
मगर अंदर से वे लूट के माल और बे-
लगाम ऐयाशी से भरे हैं। **26** अरे
अंधे फरीसी, पहले प्याले और थाली को
अंदर से साफ कर, तब वह बाहर से भी
साफ हो जाएगा।

27 अरे कपटी शास्त्रियो और फरी-
सियो, धिक्कार है तुम पर! क्योंकि

मत्ती 23:14* मत्ती 17:21 फुटनोट देखें। **15*** यरूशलेम के बाहर कूड़ा-करकट जलाने की जगह। अतिरिक्त लेख 9 देखें। **15#** या, "के बेटे।"

तुम सफेदी पुती कब्रों की तरह हो, जो
बाहर से तो बहुत खूबसूरत दिखायी देती
हैं, मगर अंदर मुरदों की हड्डियों और
हर तरह की गंदगी से भरी होती हैं।
28 उसी तरह तुम भी बाहर से लोगों
को बहुत नेक दिखायी देते हो, मगर अंदर
से कपट और दुराचार से भरे हो।

29 अरे कपटी शास्त्रियो और फरी-
सियो, धिक्कार है तुम पर! क्योंकि तुम
भविष्यवक्ताओं की कब्रें बनवाते हो और
परमेश्वर के भक्तों की स्मारक-कब्रों को
सजाते हो, **30** और तुम कहते हो,
'अगर हम अपने बापदादों के ज़माने में
होते, तो भविष्यवक्ताओं का खून बहाने
में उनके साझेदार न होते।' **31** इससे
तुम खुद अपने खिलाफ गवाही देते हो कि
तुम भविष्यवक्ताओं का खून करनेवालों
की औलाद हो, **32** तो अपने बाप-
दादों के पाप का घड़ा भर दो।

33 अरे, साँपो और ज़हरीले साँप के
संपोलो, तुम *गेहन्ना* की सज़ा से बचकर
कैसे भाग सकोगे? **34** इसलिए, मैं
तुम्हारे पास भविष्यवक्ताओं और बुद्धि-
मानों और लोगों को सिखानेवाले उप-
देशकों को भेज रहा हूँ। उनमें से कुछ
को तुम मार डालोगे और सूली पर
चढ़ाओगे और कुछ को अपने सभा-घरों में
कोड़े लगाओगे और शहर-शहर उन पर
ज़ुल्म ढाओगे। **35** जितने नेक जनों
का खून धरती पर बहाया गया है, यानी
नेक हाबिल से लेकर बिरिक्याह के बेटे
जकर्याह तक, जिसे तुमने मंदिर और वेदी
के बीच मार डाला था, उन सबका खून
तुम्हारे सिर पर पड़े। **36** मैं तुमसे
सच कहता हूँ कि ये सारी बातें इस पीढ़ी
के सिर आ पड़ेंगी।

37 यरूशलेम, यरूशलेम, तू जो
भविष्यवक्ताओं की हत्यारी नगरी है और
जो तेरे पास भेजे जाते हैं उन पर पत्थर-
वाह करती है,—मैंने कितनी बार चाहा
कि जैसे मुर्गी अपने चूज़ों को अपने पंखों
तले इकट्ठा करती है, वैसे ही मैं भी तेरे
बच्चों को इकट्ठा करूँ! मगर तुम लोगों ने
यह नहीं चाहा। **38** देखो! तुम्हारा घर
तुम्हारे हवाले छोड़ा जाता है। **39** मैं
तुमसे कहता हूँ कि अब से तुम मुझे तब
तक हरगिज़ न देखोगे जब तक कि यह
न कहो, 'धन्य है वह जो यहोवा के नाम
से आता है!' "

24 यीशु मंदिर से निकलकर जा
रहा था, मगर चेले उसे मंदिर
की इमारतें दिखाने के लिए उसके
पास आए। **2** जवाब में यीशु ने कहा:
"क्या तुम यह सब नहीं देखते? मैं तुमसे
सच कहता हूँ, यहाँ किसी भी हाल में एक
पत्थर के ऊपर दूसरा पत्थर बाकी न
बचेगा, जो ढाया न जाए।"

3 जब वह जैतून पहाड़ पर बैठा
हुआ था, तब चेले अकेले में उसके पास
आकर पूछने लगे: "हमें बता, ये सब बातें
कब होंगी और तेरी मौजूदगी* की और
दुनिया की व्यवस्था के आखिरी वक्त की
क्या निशानी होगी?"

4 जवाब में यीशु ने उनसे कहा:

मत्ती 24:3* अतिरिक्त लेख 5 देखें।

“खबरदार रहो कि कोई तुम्हें गुम-
राह न करे। 5 इसलिए कि बहुत-से
मेरे नाम से आएँगे और कहेंगे, ‘मैं ही
मसीह हूँ,’ और बहुतों को गुमराह करेंगे।
6 तुम युद्धों का शोरगुल और युद्धों की
खबरें सुनोगे; देखो तुम दहशत न खाना।
क्योंकि इन सबका होना ज़रूरी है, मगर
तभी अंत न होगा।

7 क्योंकि एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र पर
और एक राज्य दूसरे राज्य पर हमला
करेगा। एक-के-बाद-एक कई जगहों पर
अकाल पड़ेंगे और भूकंप होंगे। 8 ये
सारी बातें प्रसव-पीड़ा की तरह मुसीबतों
की सिर्फ शुरूआत होंगी।

9 तब लोग तुम्हें क्लेश दिलाने के
लिए पकड़वाएँगे और तुम्हें मार डालेंगे
और तुम मेरे नाम की वजह से सब
राष्ट्रों की नफरत का शिकार बनोगे।
10 इसके बाद, बहुत-से ठोकर खाएँगे
और एक-दूसरे के साथ विश्वासघात
करेंगे और एक-दूसरे से नफरत करेंगे।
11 और बहुत-से झूठे भविष्यवक्ता उठ
खड़े होंगे और बहुतों को गुमराह करेंगे।
12 और दुराचार के बढ़ जाने से ज़्यादा-
तर लोगों का प्यार ठंडा हो जाएगा।
13 मगर जो अंत तक धीरज धरता
है, वही उद्धार पाएगा। 14 और राज
की इस खुशखबरी का सारे जगत* में
प्रचार किया जाएगा ताकि सब राष्ट्रों पर
गवाही हो; और इसके बाद अंत आ
जाएगा।

मत्ती 24:14* या, “पूरी धरती पर जहाँ-जहाँ लोग बसे हुए हैं।”

15 इसलिए, जब तुम्हें वह उजाड़ने-
वाली घिनौनी चीज़, जिसके बारे में
दानिय्येल भविष्यवक्ता के ज़रिए बताया
गया था, एक पवित्र जगह में खड़ी नज़र
आए (पढ़नेवाला समझ इस्तेमाल करे,)
16 तब जो यहूदिया में हों, वे पहाड़ों
की तरफ भागना शुरू कर दें। 17 जो
आदमी घर की छत पर हो, वह अपने घर
से सामान ले जाने के लिए नीचे न उतरे।
18 और जो आदमी खेत में हो, वह
अपना चोगा लेने के लिए घर वापस
न लौटे। 19 उन दिनों, जो गर्भवती
होंगी और जो बच्चे को दूध पिलाती होंगी,
उनके लिए ये दिन क्या ही भयानक होंगे!
20 प्रार्थना करते रहो कि तुम्हारा भागना
न तो सर्दियों के मौसम में, न ही सब्त
के दिन* हो। 21 इसलिए कि इसके
बाद ऐसा महा-संकट होगा जैसा दुनिया
की शुरूआत से न अब तक हुआ और
न फिर कभी होगा। 22 दरअसल,
अगर वे दिन घटाए न गए होते, तो
कोई* भी नहीं बच पाता; मगर चुने हुओं
की खातिर वे दिन घटाए जाएँगे।

23 उस वक्त अगर कोई तुमसे कहे,
‘देखो! मसीह यहाँ है,’ या ‘वहाँ है!’
तो यकीन न करना। 24 क्योंकि झूठे
मसीह और झूठे भविष्यवक्ता उठ खड़े
होंगे और बड़े-बड़े चमत्कार और अजूबे
दिखाएँगे, ताकि हो सके तो चुने हुओं को
भी गुमराह कर दें। 25 देखो! मैंने
तुम्हें पहले से आगाह कर दिया है।

मत्ती 24:20* प्रेषि 1:12 फुटनोट देखें। **22*** शाब्दिक, “शरीर।”

26 इसलिए अगर लोग तुमसे कहें,
'देखो! वह वीराने में है,' तो बाहर न
जाना; 'देखो! वह अंदर के कमरों में है,'
तो यकीन न करना। **27** इसलिए कि
जैसे बिजली पूरब से निकलकर पश्चिम
तक चमकती दिखायी देती है, वैसे ही
इंसान के बेटे की मौजूदगी भी होगी।
28 जहाँ लाश है, वहीं उकाब जमा होंगे।

29 उन दिनों के संकट के फौरन
बाद, सूरज अंधियारा हो जाएगा, और
चाँद अपनी रौशनी न देगा, और
तारे आकाश से गिरेंगे और आकाश की
शक्तियाँ हिलायी जाएँगी। **30** और
इसके बाद इंसान के बेटे की निशानी
आकाश में दिखायी देगी और इसके बाद
धरती की सारी जातियाँ विलाप करती हुई
छाती पीटेंगी और वे इंसान के बेटे को
शक्ति और बड़ी महिमा के साथ आकाश
के बादलों पर आता देखेंगे। **31** और
वह तुरही की बड़ी आवाज़ के साथ
अपने स्वर्गदूतों को भेजेगा और वे उसके
चुने हुओं को आकाश के इस छोर से
लेकर उस छोर तक, चारों दिशाओं* से
इकट्ठा करेंगे।

32 अब अंजीर के पेड़ की मिसाल
से यह बात सीखो: जैसे ही उसकी नयी
डाली नरम हो जाती है और उस पर
पत्तियाँ आने लगती हैं, तो तुम जान
लेते हो कि गर्मियों का मौसम पास है।
33 उसी तरह, जब तुम ये सब बातें
होती देखो, तो जान लो कि इंसान का
बेटा पास ही दरवाज़े पर है। **34** मैं
तुमसे सच कहता हूँ कि जब तक ये सारी
बातें न हो लें, तब तक यह पीढ़ी हर-
गिज़ न मिटेगी। **35** आकाश और
पृथ्वी मिट जाएँगे, मगर मेरे शब्द किसी
भी हाल में न मिटेंगे।

36 उस दिन और उस वक्त* के
बारे में कोई नहीं जानता, न स्वर्ग के
दूत, न बेटा, लेकिन सिर्फ पिता जानता
है। **37** ठीक जैसे नूह के दिन थे,
इंसान के बेटे की मौजूदगी भी वैसी ही
होगी। **38** इसलिए कि जैसे जलप्रलय
से पहले के दिनों में, जिस दिन तक नूह
जहाज़* के अंदर न गया, उस दिन तक
लोग खा रहे थे और पी रहे थे, पुरुष
शादी कर रहे थे और स्त्रियाँ ब्याही
जा रही थीं। **39** जब तक जलप्रलय
आकर उन सबको बहा न ले गया,
तब तक उन्होंने कोई ध्यान न दिया।
इंसान के बेटे की मौजूदगी भी ऐसी ही
होगी। **40** तब दो आदमी खेत में
होंगे: एक को साथ ले लिया जाएगा
और दूसरा छोड़ दिया जाएगा। **41** दो
स्त्रियाँ हाथ से चक्की पीस रही होंगी: एक
को साथ ले लिया जाएगा और दूसरी
को छोड़ दिया जाएगा। **42** इसलिए,
जागते रहो क्योंकि तुम नहीं जानते कि
तुम्हारा प्रभु किस दिन आ रहा है।

43 लेकिन एक बात जान लो कि
अगर घर के मालिक को पता होता कि

मत्ती 24:31* शाब्दिक, "चारों हवाओं से।"

मत्ती 24:36* शाब्दिक, "घड़ी।" **38*** शाब्दिक, "बक्सा।" यह एक बड़े आयताकार बक्से जैसा जल-पोत था। माना जाता है कि इस जलपोत के कोने चौकोर थे और निचला हिस्सा सपाट था।

चोर किस पहर आनेवाला है, तो वह
जागता रहता और अपने घर में सेंध न
लगने देता। **44** इस वजह से तुम भी
तैयार रहने का सबूत दो, क्योंकि जिस
घड़ी तुमने सोचा भी न होगा, उस घड़ी
इंसान का बेटा आ रहा है।

45 तो असल में वह विश्वासयोग्य
और सूझ-बूझ से काम लेनेवाला दास कौन
है, जिसे उसके मालिक ने अपने घर
के कर्मचारियों के ऊपर ठहराया कि
उन्हें सही वक्त पर उनका खाना दे?
46 सुखी होगा वह दास अगर उसका
मालिक आने पर उसे ऐसा ही करता पाए!
47 मैं तुमसे सच कहता हूँ, वह उसे
अपनी सारी संपत्ति पर अधिकारी ठह-
राएगा।

48 लेकिन अगर कभी वह दुष्ट दास
अपने दिल में कहने लगे, 'मेरा मालिक
देर लगा रहा है,' **49** और अपने
संगी दासों को पीटने लगे और बदनाम
पियक्कड़ों के साथ खाने और पीने लगे,
50 तो उस दास का मालिक एक ऐसे
दिन आएगा जिस दिन उसने उम्मीद भी न
की होगी और उस घड़ी आएगा, जिसकी
उसे खबर तक न होगी। **51** और वह
उसे सख्त-से-सख्त सज़ा देगा और उसका
हिस्सा कपटियों के साथ ठहराएगा। वहीं
उसका रोना और दाँत पीसना होगा।

25 तब स्वर्ग का राज उन दस कुंवा-
रियों जैसा होगा जिन्होंने अपने-
अपने दीपक लिए और दूल्हे से मिलने
के लिए बाहर निकलीं। **2** उनमें से
पाँच मूर्ख थीं, और पाँच समझदार।
3 क्योंकि जो मूर्ख थीं, उन्होंने अपने
दीपक तो लिए मगर अपने साथ कुप्पियों
में तेल न लिया। **4** जबकि समझदार
कुंवारियों ने दीपकों के साथ-साथ अपनी
कुप्पियों में तेल भी लिया। **5** जब
दूल्हा आने में देर कर रहा था, तो वे सब
ऊँघने लगीं और सो गयीं। **6** ठीक
आधी रात को एक पुकार मची, 'देखो,
दूल्हा आ रहा है! उससे मिलने बाहर
चलो।' **7** तब वे सभी कुंवारियाँ उठीं
और अपना-अपना दीपक ठीक करने
लगीं। **8** जो मूर्ख थीं उन्होंने समझ-
दारों से कहा: 'अपने तेल में से थोड़ा हमें
दो, क्योंकि हमारे दीपक बुझनेवाले हैं।'
9 लेकिन समझदारों ने इन शब्दों में
जवाब दिया, 'शायद यह हमारे लिए और
तुम्हारे लिए पूरा न पड़े। इसके बजाय,
तुम तेल बेचनेवालों के पास जाकर अपने
लिए खरीद लाओ।' **10** जिस दौरान
वे खरीदने जा रही थीं, दूल्हा आ गया
और जो कुंवारियाँ तैयार थीं, वे शादी
की दावत के लिए उसके साथ अंदर चली
गयीं। फिर दरवाज़ा बंद कर दिया गया।
11 बाद में बाकी कुंवारियाँ भी आयीं,
और कहने लगीं, 'साहब, साहब, हमारे
लिए दरवाज़ा खोलो!' **12** जवाब में
दूल्हे ने कहा, 'मैं सच कहता हूँ, मैं तुम्हें
नहीं जानता।'

13 इसलिए जागते रहो, क्योंकि तुम
न तो उस दिन को और न ही उस वक्त
को जानते हो।

14 स्वर्ग का राज ठीक ऐसा है,
जैसा एक आदमी जो परदेस जाने-

वाला था। उसने अपने दासों को बुला-
कर उनके हाथों में अपना माल सौंपा
ताकि उसकी देखभाल करें। **15** एक
को उसने करीब पाँच तोड़े* चाँदी दी,
दूसरे को करीब दो तोड़े और तीसरे को
करीब एक तोड़ा चाँदी दी। हरेक को
उसकी काबिलीयत के मुताबिक देकर वह
परदेस चला गया। **16** जिस दास को
पाँच तोड़े चाँदी मिली थी, वह फौरन
गया और उसने उस चाँदी से कारोबार
कर पाँच तोड़े और कमाए। **17** उसी
तरह, जिसे दो तोड़े चाँदी मिली थी,
उसने दो तोड़े और कमाए। **18** मगर
जिसे सिर्फ एक तोड़ा चाँदी मिली थी,
उसने अपने मालिक के चाँदी के सिक्के
ज़मीन में गड्ढा खोदकर छिपा दिए।

19 बहुत दिन बीतने के बाद
उन दासों का मालिक आया और
उनसे हिसाब लिया। **20** जिसे पाँच
तोड़े चाँदी मिली थी, वह अपने साथ
और पाँच तोड़े लेकर आगे आया और
कहा, 'मालिक, तू ने मुझे पाँच तोड़े
सौंपे थे। देख, मैंने पाँच तोड़े और
कमाए हैं।' **21** मालिक ने उससे
कहा, 'शाबाश, अच्छे और विश्वासयोग्य
दास! तू थोड़ी चीज़ों में विश्वासयोग्य
रहा। मैं तुझे बहुत-सी चीज़ों पर अधि-
कारी ठहराऊँगा। अपने मालिक की खुशी
में शामिल हो जा।' **22** इसके बाद,
जिसे दो तोड़े चाँदी मिली थी, वह आगे
आया और कहा, 'मालिक, तू ने मुझे दो
तोड़े चाँदी सौंपी थी। देख, मैंने दो तोड़े
और कमाए हैं।' **23** मालिक ने उससे
कहा, 'शाबाश, अच्छे और विश्वासयोग्य
दास! तू थोड़ी चीज़ों में विश्वासयोग्य
रहा। मैं तुझे बहुत-सी चीज़ों पर अधि-
कारी ठहराऊँगा। अपने मालिक की खुशी
में शामिल हो जा।'

24 आखिर में, वह दास आगे आया
जिसे एक तोड़ा चाँदी मिली थी। उसने
कहा, 'मालिक, मैं जानता था कि तू एक
कठोर इंसान है, तू वहाँ कटाई करता है,
जहाँ तू ने बोया नहीं, और वहाँ से
बटोरता है जहाँ तू ने उसाया नहीं।
25 इसलिए मैं डर गया और मैंने जाकर
तेरे चाँदी के सिक्के ज़मीन में छिपा
दिए। यह ले, जो तेरा है, यह रहा।'
26 जवाब में मालिक ने उससे कहा,
'अरे दुष्ट और आलसी दास, तू जानता
था न कि मैंने वहाँ कटाई की जहाँ बोया
नहीं, और वहाँ से बटोरा जहाँ उसाया
नहीं? **27** तो फिर, तुझे मेरे चाँदी के
सिक्के साहूकारों के पास जमा कर देने
चाहिए थे, ताकि लौटने पर जो मेरा है
वह तो मैं पाता ही, साथ-साथ मैं उन पर
ब्याज़ भी पाता।

28 इसलिए उससे वह चाँदी ले लो
और जिसके पास दस तोड़े हैं, उसे दे
दो। **29** इसलिए कि जिस किसी के
पास है, उसे और ज़्यादा दिया जाएगा
और उसके पास बहुत हो जाएगा। मगर
जिसके पास नहीं है, उससे वह भी
ले लिया जाएगा जो उसके पास है।

मत्ती 25:15* तोड़े। यूनानी में, *तालंतौन* / पाँच तोड़े, करीब सौ किलोग्राम चाँदी के सिक्के थे। मत्ती 18:24 का फुटनोट देखें।

30 इस निकम्मे दास को बाहर अंधेरे में
फेंक दो। वहीं उसका रोना और दाँत
पीसना होगा।'

31 जब इंसान का बेटा अपनी पूरी
महिमा के साथ आएगा और सब स्वर्गदूत
उसके साथ होंगे, तब वह अपनी शानदार
राजगद्दी पर बैठेगा। **32** और सब
राष्ट्रों के लोग उसके सामने इकट्ठे किए
जाएँगे। तब वह लोगों को एक-दूसरे
से अलग करेगा, ठीक जैसे एक चर-
वाहा भेड़ों को बकरियों से अलग करता
है। **33** वह भेड़ों को अपनी दायीं
तरफ मगर बकरियों को बायीं तरफ
करेगा।

34 इसके बाद राजा उन लोगों से जो
उसकी दायीं तरफ हैं कहेगा, 'मेरे पिता
से आशीष पानेवालो, आओ, उस राज
के वारिस बन जाओ जो दुनिया की शुरू-
आत से तुम्हारे लिए तैयार किया गया है।
35 इसलिए कि मैं भूखा था और तुमने
मुझे खाने को दिया। मैं प्यासा था और
तुमने मुझे पानी पिलाया। मैं अजनबी
था और तुमने मेरी मेहमाननवाज़ी की।
36 मैं नंगा था, और तुमने मुझे
कपड़े पहनाए। मैं बीमार पड़ा और तुमने
मेरी देखभाल की। मैं जेल में था और
तुम मुझसे मिलने आए।' **37** तब नेक
जन उसे इन शब्दों में जवाब देंगे, 'प्रभु,
हमने कब तुझे भूखा देखा और खिलाया,
या प्यासा देखा और तुझे पानी पिलाया?
38 हमने कब तुझे एक अजनबी देखा
और तेरी मेहमाननवाज़ी की, या नंगा
देखकर तुझे कपड़े पहनाए? **39** हमने
कब तुझे बीमार या जेल में देखा और
तुझसे मिलने आए?' **40** तब जवाब
में राजा उनसे कहेगा, 'मैं तुमसे सच
कहता हूँ कि जितना भी तुमने मेरे इन
छोटे-से-छोटे भाइयों में से किसी एक के
साथ किया, वह मेरे साथ किया।'

41 इसके बाद राजा उन लोगों
से जो उसकी बायीं तरफ हैं कहेगा,
'हे शाप पानेवालो, मेरे सामने से
दूर हो जाओ और हमेशा की आग
से नाश* हो जाने की वही सज़ा पाने
के लिए चले जाओ, जो शैतान# और
उसके दूतों के लिए ठहरायी गयी है।
42 इसलिए कि मैं भूखा था, मगर तुमने
मुझे खाने को कुछ न दिया। प्यासा था
मगर तुमने मुझे पीने को कुछ न दिया।
43 मैं अजनबी था, मगर तुमने मेरी मेह-
माननवाज़ी न की। नंगा था, मगर तुमने
मुझे कपड़े न पहनाए; मैं बीमार पड़ा और
जेल में था, मगर तुमने मेरी देखभाल न
की।' **44** तब वे भी इन शब्दों में उसे
जवाब देंगे, 'प्रभु, हमने कब तुझे भूखा या
प्यासा या एक अजनबी या नंगा या बीमार
या जेल में देखा और तेरी सेवा नहीं की?'
45 तब राजा इन शब्दों में उन्हें जवाब
देगा, 'मैं तुमसे सच कहता हूँ कि जो कुछ
तुमने मेरे इन छोटे-से-छोटे भाइयों में से
किसी एक के साथ नहीं किया, वह मेरे
साथ भी नहीं किया।' **46** ये बुरे लोग

मत्ती 25:41* यूनानी में *"दियाबोलोस,"* जिसका मत-
लब है "निंदा करनेवाला।" **41#** जिसका मतलब
है, "हमेशा के लिए नाश"

हमेशा के लिए नाश* हो जाएँगे, मगर
नेक जन हमेशा की ज़िंदगी पाएँगे।”

26 जब यीशु ये सारी बातें कह
चुका, तो उसने अपने चेलों से
कहाः **2** “तुम जानते हो कि अब से
दो दिन बाद फसह का त्योहार पड़ता है
और इंसान का बेटा सूली पर चढ़ाए जाने
के लिए पकड़वाया जाएगा।”

3 इस दौरान, प्रधान याजक और
लोगों के बुज़ुर्ग, कैफा नाम के महा-
याजक के आँगन में इकट्ठा हुए।
4 उन्होंने यीशु को छल से पकड़ने और
मार डालने के लिए आपस में मशविरा
किया। **5** मगर वे यह कहते रहेः
“त्योहार के वक्त नहीं, ताकि लोगों में
किसी तरह का हुल्लड़ न मचे।”

6 यीशु बैतनिय्याह में शमौन के घर
में था, जो पहले एक कोढ़ी था।
7 उस दौरान, एक स्त्री संगमरमर की
बोतल में बहुत महँगा खुशबूदार तेल
लेकर यीशु के पास आयी। और जब वह
मेज़ से टेक लगाए बैठा था, तो वह उसके
सिर पर तेल उंडेलने लगी। **8** यह
देखकर चेले भड़क उठे और कहने लगेः
“यह बरबादी क्यों की गयी? **9** इस
तेल को ऊँचे दामों में बेचकर पैसा गरीबों
को दिया जा सकता था।” **10** यह
जानते हुए कि वे आपस में क्या कह रहे
हैं, यीशु ने उनसे कहाः “तुम इस स्त्री को
क्यों सताते हो? इसने तो मेरी खातिर एक
बेहतरीन काम किया है। **11** गरीब तो

मत्ती 25:46* या, “काट डाले जाएँगे।”

हमेशा तुम्हारे साथ होंगे, मगर मैं हमेशा
तुम्हारे साथ नहीं रहूँगा। **12** जब इस
स्त्री ने यह खुशबूदार तेल मेरे शरीर पर
लगाया, तो मेरे दफन की तैयारी के लिए
ऐसा किया। **13** मैं तुमसे सच कहता
हूँ, सारी दुनिया में जहाँ कहीं खुशखबरी
का प्रचार किया जाएगा, वहाँ इस स्त्री के
इस काम को याद कर इसकी चर्चा की
जाएगी।”

14 तब उन बारहों में से एक, जो
यहूदा इस्करियोती कहलाता था, प्रधान
याजकों के पास गया **15** और
उनसे कहाः “अगर मैं उसे तुम्हारे हाथों
पकड़वा दूँ, तो तुम मुझे क्या दोगे?”
उन्होंने उसे चाँदी के तीस सिक्के देने की
बात कही। **16** तब से यहूदा, यीशु
को पकड़वाने के लिए किसी अच्छे मौके
की ताक में लग गया।

17 बिन-खमीर की रोटियों के
त्योहार के पहले दिन,* चेले यीशु
के पास आए और उससे पूछने लगेः
“तू कहाँ चाहता है कि हम तेरे लिए
फसह का खाना खाने की तैयारी करें?”
18 उसने कहाः “शहर में फलाँ-फलाँ
आदमी के पास जाओ और उससे कहो,
गुरु कहता है, ‘मेरे लिए तय किया गया
वक्त पास आ गया है। मैं अपने चेलों के
साथ तेरे घर में फसह का त्योहार मना-
ऊँगा।’ ” **19** जैसा यीशु ने आदेश

मत्ती 26:17* या, “त्योहार से एक दिन पहले।”
यीशु के ज़माने में, आम तौर पर फसह का त्योहार
बिन-खमीर की रोटियों के त्योहार का पहला दिन
माना जाता था।

दिया था, चेलों ने वैसा ही किया और
फसह के लिए सारी चीज़ें तैयार कर लीं।
20 जब शाम हुई, तो वह
अपने बारह चेलों के साथ खाने की
मेज़ से टेक लगाए था। **21** जिस
दौरान वे खा रहे थे, उसने कहा: "मैं
तुमसे सच कहता हूँ, तुममें से एक मुझे
धोखे से पकड़वाएगा।" **22** यह सुन-
कर वे बहुत दुःखी हुए, और एक-एक
कर उससे पूछने लगे: "प्रभु, वह मैं तो
नहीं हूँ न?" **23** जवाब में उसने कहा:
"जो मेरे साथ कटोरे में हाथ डालता है,
वही है जो मुझे पकड़वाएगा। **24** सच
है कि इंसान का बेटा तो जा ही रहा है,
ठीक जैसा उसके बारे में लिखा है, मगर
धिक्कार है उस आदमी पर जिसके हाथों
इंसान का बेटा पकड़वाया जाएगा!
उस आदमी के लिए अच्छा होता अगर
वह पैदा ही न हुआ होता।" **25** तब
यहूदा ने, जो उसे पकड़वानेवाला था,
जवाब में कहा: "रब्बी, वह मैं तो नहीं
हूँ न?" यीशु ने उससे कहा: "तू ने खुद
यह कह दिया है।"

26 जब उनका खाना जारी था, तो
यीशु ने एक रोटी ली और प्रार्थना में
धन्यवाद देने के बाद उसे तोड़ा और चेलों
को देते हुए कहा: "लो, खाओ। यह मेरे
शरीर का प्रतीक है।" **27** फिर उसने
एक प्याला लेकर प्रार्थना में धन्यवाद
दिया और उन्हें यह कहकर दिया: "तुम
सब इसमें से पीओ। **28** क्योंकि यह
'करार के मेरे लहू' का प्रतीक है, जिसे
बहुतों की खातिर उनके पापों की माफी
के लिए बहाया जाना है। **29** मगर मैं
तुमसे कहता हूँ, मैं अब से किसी भी हाल
में यह दाख-मदिरा* उस दिन तक न
पीऊँगा, जिस दिन मैं अपने पिता के
राज में तुम्हारे साथ नयी दाख-मदिरा न
पीऊँ।" **30** आखिर में, वे परमेश्वर
के गुणगान के भजन गाने के बाद जैतून
पहाड़ की तरफ निकल पड़े।

31 इसके बाद यीशु ने उनसे कहा:
"आज की रात मेरे साथ जो होगा
उसकी वजह से, तुम सबका विश्वास डग-
मगा जाएगा। क्योंकि यह लिखा है, 'मैं
चरवाहे को मारूँगा और झुंड की भेड़ें
तित्तर-बित्तर हो जाएँगी।' **32** लेकिन
मेरे जी उठाए जाने के बाद मैं तुमसे
पहले गलील जाऊँगा।" **33** मगर
पतरस ने उसे जवाब दिया: "तेरे साथ
जो होगा उसकी वजह से चाहे बाकी
सबका विश्वास क्यों न डगमगा जाए,
मगर मेरा विश्वास कभी न डगमगाएगा!"
34 यीशु ने उससे कहा: "मैं तुझसे सच
कहता हूँ, इसी रात, मुर्गे के बाँग देने से
पहले, तू तीन बार मुझे जानने से इनकार
करेगा।" **35** पतरस ने उससे कहा:
"चाहे मुझे तेरे साथ मरना भी पड़े, तब
भी मैं तुझे जानने से हरगिज़ इनकार न
करूँगा।" बाकी सभी चेलों ने भी यही
बात कही।

36 तब यीशु अपने चेलों के साथ
गतसमनी नाम की जगह पर आया और
उसने उनसे कहा: "जब तक मैं वहाँ

मत्ती 26:29* शाब्दिक, "अंगूर की बेल की उपज से बनी यह चीज़।"

जाकर प्रार्थना करूँ, तुम यहीं बैठे
रहो।” **37** और उसने पतरस और
जब्दी के दोनों बेटों को अपने साथ लिया।
वह बहुत ही दुःखी और बेहाल होने
लगा। **38** तब उसने उनसे कहा:
“मेरा जी बेहद दुःखी है, यहाँ तक कि
मेरी मरने जैसी हालत है। यहीं ठहरो
और मेरे साथ जागते रहो।” **39** फिर
थोड़ा आगे जाकर, वह अपने मुँह के
बल गिरा और यह कहकर प्रार्थना करने
लगा: “मेरे पिता, अगर हो सके तो
यह प्याला* मेरे सामने से हटा
दे। फिर भी, मेरी मरज़ी नहीं
बल्कि तेरी मरज़ी पूरी हो।”

40 फिर वह अपने चेलों के पास
आया और उन्हें सोता हुआ पाया।
तब यीशु ने पतरस से कहा: “क्या तुम
लोग मेरे साथ थोड़ी देर के लिए भी
जाग न सके? **41** जागते रहो और
लगातार प्रार्थना करते रहो, ताकि तुम
परीक्षा में न पड़ो। दिल तो बेशक तैयार
है, मगर शरीर कमज़ोर है।” **42** फिर
वह दूसरी बार गया और यह कहकर
प्रार्थना करने लगा: “मेरे पिता, अगर यह
प्याला मेरे पीए बिना हट नहीं सकता,
तो तेरी मरज़ी पूरी हो।” **43** वह फिर
चेलों के पास आया और उन्हें सोता
हुआ पाया, क्योंकि उनकी आँखें नींद
से बोझिल थीं। **44** इसलिए वह उन्हें
वहीं छोड़कर एक बार फिर गया और
तीसरी बार वही बात कहकर प्रार्थना की।
45 इसके बाद वह अपने चेलों के पास
आया और उनसे कहा: “तुम ऐसे वक्त
में सो रहे हो और आराम कर रहे हो!
देखो! वह वक्त आ गया है कि इंसान का
बेटा धोखे से पापियों के हाथों में सौंपा
जाए। **46** उठो, आओ चलें। देखो!
मुझे पकड़वानेवाला पास आ गया है।”
47 जब वह बोल ही रहा था, तो देखो!
यहूदा जो उन बारह में से एक था, आया
और उसके साथ तलवारें और सोंटे लिए
हुए लोगों की एक बड़ी भीड़ आयी जिसे
प्रधान याजकों और लोगों के बुज़ुर्गों ने
भेजा था।

48 उसे धोखा देनेवाले यहूदा ने उन्हें
यह कहकर एक निशानी दी थी: “जिसे
मैं चूमूंगा, वही यीशु है। उसे गिरफ्तार
कर लेना।” **49** यहूदा ने सीधे यीशु
के पास जाकर उससे कहा: “नमस्कार,
रब्बी!” और उसे चूमा। **50** मगर
यीशु ने उससे कहा: “तू यहाँ किस इरादे
से आया है?” तब उन्होंने आगे बढ़कर
यीशु को पकड़ लिया और उसे हिरासत
में ले लिया। **51** मगर तभी यीशु के
साथियों में से एक ने हाथ बढ़ाकर अपनी
तलवार निकाली और महायाजक के दास
पर वार कर उसका कान उड़ा दिया।
52 तब यीशु ने उससे कहा: “अपनी
तलवार म्यान में डाल ले, इसलिए कि वे
सभी जो तलवार उठाते हैं, तलवार ही
से नाश होंगे। **53** तू क्या सोचता है
कि मैं अपने पिता से यह बिनती नहीं
कर सकता कि वह इसी पल स्वर्गदूतों

मत्ती 26:39* यह ‘प्याला’ यीशु के लिए परमेश्वर की मरज़ी की निशानी था। जिसके मुताबिक यीशु को परमेश्वर की निंदा करने के झूठे इलज़ाम में मरना था।

की बारह पलटनों* से ज़्यादा मेरे पास
भेज दे? **54** ऐसे में शास्त्र का लिखा
कैसे पूरा होगा कि सबकुछ इसी तरह
होना ज़रूरी है?" **55** उस घड़ी यीशु
ने भीड़ से कहा: "क्या तुम मुझे तलवारें
और सोंटे लेकर गिरफ्तार करने आए
हो, मानो मैं कोई लुटेरा हूँ? मैं हर
दिन मंदिर में बैठकर सिखाया करता
था, फिर भी तुमने मुझे हिरासत में
न लिया। **56** मगर यह सब इसलिए
हुआ है कि भविष्यवक्ताओं के लिखे
शास्त्रवचन पूरे हों।" तब सारे चेले उसे
छोड़कर भाग गए।

57 जिन लोगों ने यीशु को गिरफ्तार
किया वे उसे महायाजक कैफा के पास ले
गए, जहाँ शास्त्री और बुज़ुर्ग इकट्ठा थे।
58 मगर पतरस काफी दूरी पर रहकर
यीशु का पीछा करता रहा और महा-
याजक के आँगन तक आ गया और अंदर
जाने के बाद वह घर के कर्मचारियों के
साथ बैठ गया कि देखे इसका अंजाम क्या
होता है।

59 इस दौरान प्रधान याजक और
पूरी महासभा* यीशु के खिलाफ झूठी
गवाही की खोज में थी ताकि उसे मरवा
डालें। **60** मगर बहुत-से झूठे गवाहों
के आगे आने के बावजूद उन्हें एक
भी झूठी गवाही न मिली। बाद में दो
गवाह आए **61** और उन्होंने कहा:
"इस आदमी ने कहा है, 'मैं परमेश्वर के
इस मंदिर को ढा सकता हूँ और तीन
दिन के अंदर इसे खड़ा कर सकता हूँ।' "
62 इस पर महायाजक ने उठकर यीशु
से कहा: "क्या तेरे पास कोई जवाब नहीं?
ये जो तेरे खिलाफ गवाही दे रहे हैं,
इसके बारे में तुझे क्या कहना है?"
63 मगर यीशु चुप रहा। तब महायाजक
ने उससे कहा: "मैं तुझे जीवित परमेश्वर
की शपथ देता हूँ, हमें बता कि तू पर-
मेश्वर का बेटा मसीह है या नहीं!"
64 यीशु ने उससे कहा: "तू ने खुद यह
कह दिया है। फिर भी मैं तुम लोगों से
कहता हूँ, अब से तुम इंसान के बेटे
को उस शक्तिशाली परमेश्वर की दायीं
तरफ बैठा और आकाश के बादलों पर
आता देखोगे।" **65** तब महायाजक ने
यह कहते हुए अपना चोगा फाड़ डाला:
"इसने परमेश्वर की तौहीन की है! अब
हमें और गवाहों की क्या ज़रूरत है?
देखो! तुम लोगों ने यह तौहीन सुनी है।
66 तुम्हारी क्या राय है?" उन्होंने जवाब
दिया: "यह मौत की सज़ा पाने के लायक
है।" **67** इसके बाद, उन्होंने यीशु के
मुँह पर थूका और उसे घूँसे मारे। दूसरों
ने यह कहते हुए उसके मुँह पर थप्पड़
मारे: **68** "अरे मसीह, भविष्यवाणी
कर। हममें से किसने तुझे मारा?"

69 पतरस बाहर आँगन में बैठा हुआ
था। तब एक नौकरानी उसके पास आकर
कहने लगी: "तू भी इस यीशु गलीली के
साथ था!" **70** मगर उसने उन सबके
सामने यह कहकर इनकार किया: "मैं

मत्ती 26:53* एक 'पलटन', प्राचीन रोमी सेना के सैनिकों की सबसे बड़ी टुकड़ी थी। यहाँ इस शब्द का मतलब है, बड़ी तादाद। **59*** महासभा, यहूदियों की सबसे बड़ी अदालत थी।

नहीं जानता कि तू क्या कह रही है।”
71 जब वह बाहर निकलकर फाटक-घर
की तरफ चला गया, तो एक और लड़की
ने उसे देखकर वहाँ मौजूद लोगों से कहाः
“यह आदमी यीशु नासरी के साथ था।”
72 एक बार फिर वह शपथ खाकर इन-
कार करने लगाः “मैं इस आदमी को नहीं
जानता!” **73** थोड़ी देर के बाद आस-
पास खड़े लोग पतरस के पास आकर
उससे कहने लगेः “बेशक तू भी उनमें से
एक है, क्योंकि तेरी बोली तेरा राज़ खोल
रही है।” **74** तब वह खुद को कोसने
और कसमें खाने लगाः “मैं इस आदमी
को नहीं जानता!” उसी घड़ी एक मुर्गे ने
बाँग दी। **75** तब पतरस को यीशु की
कही यह बात याद आयीः “मुर्गे के बाँग
देने से पहले, तू तीन बार मुझे जानने से
इनकार करेगा।” और वह बाहर जाकर
फूट-फूटकर रोने लगा।

27 जब सुबह हो गयी, तो सभी
प्रधान याजकों और लोगों के
बुज़ुर्गों ने यीशु को मरवा डालने के लिए
आपस में सलाह-मशविरा किया। **2** वे
उसे बाँधने के बाद ले गए और जाकर
पीलातुस* के हवाले कर दिया।

3 जब उसे पकड़वानेवाले यहूदा ने
देखा कि यीशु को मौत की सज़ा दी गयी
है, तो उसका दिल उसे कचोटने लगा।
उसने प्रधान याजकों और बुज़ुर्गों को चाँदी
के वे तीस सिक्के लौटाते हुए **4** यह
कहाः “मैंने एक नेक इंसान के खून
का सौदा कर पाप किया है।” उन्होंने
कहाः “इससे हमें क्या लेना? तू ही
जान!” **5** तब वह चाँदी के सिक्के
मंदिर में फेंककर वहाँ से चला गया
और जाकर खुद को फाँसी लगा ली।
6 लेकिन प्रधान याजकों ने उन सिक्कों
को लेकर कहाः “इन्हें मंदिर के खज़ाने
में डालना सही नहीं है, क्योंकि यह
खून की कीमत है।” **7** और उन्होंने
आपस में मशविरा करने के बाद, उन
सिक्कों से अजनबियों को दफनाने के लिए
कुम्हार की ज़मीन खरीदी। **8** इसलिए
वह ज़मीन आज के दिन तक “खून
की ज़मीन” कहलाती है। **9** इससे वह
वचन पूरा हुआ जो यिर्मयाह* भविष्य-
वक्ता से कहलवाया गया थाः “उन्होंने
चाँदी के तीस सिक्के लिए, यह वही दाम
था जो उस आदमी की कीमत ठहरायी
गयी थी, उसी के लिए जिसकी इसराएल
के कुछ बेटों ने कीमत ठहरायी थी।
10 और उन्होंने ये सिक्के कुम्हार की
ज़मीन के लिए दिए, ठीक जैसे यहोवा ने
मुझे आज्ञा दी थी।”

11 यीशु अब राज्यपाल के सामने
खड़ा था। और राज्यपाल ने उससे

मत्ती 27:2* पीलातुस, उस वक्त यहूदिया इलाके का रोमी राज्यपाल था, जिस दौरान यीशु इस धरती पर सेवा कर रहा था।

मत्ती 27:9* ये वचन असल में जक 11:12, 13 पर आधारित हैं। मत्ती के दिनों में, भविष्यवक्ताओं की किताबों के संग्रह में यिर्मयाह की किताब सबसे पहली थी, इसलिए सभी भविष्यवक्ताओं की किताबों को मिलाकर ‘यिर्मयाह’ नाम दिया गया है, जिसमें जकर्याह की किताब भी शामिल थी। लूका 24:44 से मिलाएँ।

यह सवाल कियाः “क्या तू यहूदियों का
राजा है?” यीशु ने जवाब दियाः “तू
खुद यह कहता है।” **12** मगर जिस
दौरान प्रधान याजक और बुज़ुर्ग उस पर
इलज़ाम लगा रहे थे, तो उसने कोई
जवाब न दिया। **13** तब पीलातुस ने
उससे कहाः “क्या तू सुनता नहीं कि ये
तेरे खिलाफ कितनी बातों की गवाही दे
रहे हैं?” **14** फिर भी यीशु ने उसे
कोई जवाब न दिया, यहाँ तक कि एक
शब्द भी न कहा, इसलिए राज्यपाल को
बड़ा ताज्जुब हुआ।

15 राज्यपाल का यह रिवाज़ था कि
वह साल-दर-साल त्योहार के वक्त किसी
एक कैदी को, जिसे लोग चाहते थे, रिहा
कर दिया करता था। **16** ठीक उसी
दौरान, बरअब्बा नाम का एक कुख्यात
कैदी उनकी कैद में था। **17** इसलिए
जब वे इकट्ठा हुए, तो पीलातुस ने उनसे
पूछाः “तुम क्या चाहते हो, मैं तुम्हारे
लिए किसे रिहा कर दूँ, बरअब्बा को
या यीशु को जिसे मसीह कहा जाता
है?” **18** क्योंकि वह जानता था कि
उन्होंने ईर्ष्या की वजह से यीशु को उसके
हवाले किया था। **19** इतना ही नहीं,
जब वह न्याय-आसन पर बैठा हुआ था,
तो उसकी पत्नी ने उसके पास यह संदेश
भेजाः “तू उस नेक इंसान के मामले में
दखल न देना, क्योंकि उसकी वजह से
आज मैंने सपने में बहुत दुःख उठाया है।”
20 मगर प्रधान याजकों और बुज़ुर्गों ने
भीड़ को यह माँग करने के लिए उकसाया
कि बरअब्बा को रिहा किया जाए, मगर
यीशु को मार डाला जाए। **21** अब
राज्यपाल ने एक बार फिर उनसे पूछाः
“तुम क्या चाहते हो, मैं दोनों में से
किसे तुम्हारे लिए रिहा कर दूँ?” उन्होंने
कहाः “बरअब्बा को।” **22** पीलातुस
ने उनसे कहाः “तो फिर मैं इस यीशु के
साथ, जिसे मसीह कहा जाता है, क्या
करूँ?” उन सबने कहाः “इसे सूली पर
चढ़ाया जाए!” **23** राज्यपाल ने कहाः
“क्यों, इसने क्या बुरा किया है?” मगर
वे और भी ज़ोर से चिल्लाते रहेः “इसे
सूली पर चढ़ाया जाए!”

24 जब पीलातुस ने देखा कि उसके
कहने का कोई फायदा नहीं हो रहा,
बल्कि हुल्लड़ बढ़ता ही जा रहा है, तो
उसने पानी लिया और भीड़ के सामने
अपने हाथ धोते हुए कहाः “मैं इस आदमी
के खून से निर्दोष हूँ। तुम ही जानो।”
25 इस पर सब लोगों ने जवाब में कहाः
“उसका खून हमारे और हमारे बच्चों के
सिर पर पड़े।” **26** तब उसने उनके
लिए बरअब्बा को रिहा कर दिया। मगर
यीशु को उसने कोड़े लगवाए और सूली
पर चढ़ाने के लिए सौंप दिया।

27 इसके बाद, राज्यपाल के सैनिक
यीशु को राज्यपाल के महल के अंदर
ले गए और उन्होंने पूरे फौजी दस्ते
को वहाँ उसके पास इकट्ठा कर लिया।
28 उन्होंने उसके कपड़े उतारकर उसे
सुर्ख लाल रंग का एक कपड़ा पहनाया,
29 और काँटों का एक ताज बनाकर
उसके सिर पर रख दिया और उसके दाएँ
हाथ में एक सरकंडा दिया। फिर वे

उसके सामने घुटने टेककर यह कहते हुए
उसका मज़ाक उड़ाने लगेः “हे यहूदियों
के राजा, यह दिन तुझे मुबारक हो!”
30 उन्होंने उस पर थूका और सर-
कंडा लेकर उसके सिर पर मारने लगे।
31 जब उन्होंने उसका खूब मज़ाक उड़ा
लिया, तब आखिर में, उन्होंने वह कपड़ा
उस पर से उतार लिया और उसी के
कपड़े उसे पहनाकर सूली पर चढ़ाने के
लिए ले गए।

32 जब वे जा रहे थे, तो उन्हें
कुरेने शहर का रहनेवाला एक आदमी
मिला जिसका नाम शमौन था। उन्होंने
इस आदमी को ज़बरन सेवा के लिए
पकड़ा कि वह यीशु की यातना की सूली[*]
उठाकर ले चले। **33** जब वे *गुलगुता*
नाम की एक जगह पहुँचे, जो ‘खोपड़ी
स्थान’ कहलाती है, **34** तो उन्होंने
यीशु को पीने के लिए पित्त मिली दाख-
मदिरा दी। मगर उसने चखने के बाद, उसे
पीने से इनकार कर दिया। **35** जब
सैनिकों ने उसे सूली पर ठोंक दिया,
तो उन्होंने चिट्ठियाँ डालकर उसका ओढ़ना
आपस में बाँट लिया। **36** फिर वहाँ
बैठकर वे उसकी पहरेदारी करने लगे।
37 साथ ही, उस पर जो इलज़ाम था,
उन्होंने वह लिखकर उसके सिर के ऊपर
सूली पर लगा दियाः “यह यहूदियों का
राजा यीशु है।”

38 उसके साथ दो लुटेरों को सूली
पर चढ़ाया गया था, एक उसकी
दायीं तरफ और दूसरा बायीं तरफ था।
39 जो लोग वहाँ से आ-जा रहे थे,
वे सिर हिला-हिलाकर उसकी बेइज़्ज़ती
करने लगे **40** और कहने लगेः “अरे
मंदिर के ढानेवाले और तीन दिन के अंदर
उसे बनानेवाले, खुद को बचा ले! अगर तू
परमेश्वर का बेटा है, तो यातना की सूली
से नीचे उतर आ!” **41** इसी तरह,
प्रधान याजक भी शास्त्रियों और बुज़ुर्गों
के साथ मिलकर उसका मज़ाक उड़ाने लगे
और यह कहने लगेः **42** “इसने दूसरों
को तो बचाया, मगर खुद को बचा नहीं
सकता! यह इसराएल का राजा है। अब
यह यातना की सूली से नीचे उतरकर आ
जाए, तब हम इसका यकीन करेंगे।
43 इसने परमेश्वर पर भरोसा रखा है,
अगर परमेश्वर इसे चाहता है, तो इसे
बचाए, क्योंकि इसने कहा है, ‘मैं पर-
मेश्वर का बेटा हूँ।’ ” **44** यहाँ तक
कि जिन लुटेरों को उसके साथ सूली पर
चढ़ाया गया था, वे भी इसी तरह उसे
बुरा-भला कहने लगे।

45 छठे घंटे[*] से उस पूरे देश में
अंधकार छा गया और नौवें घंटे[#] तक
छाया रहा। **46** नौवें घंटे के करीब
यीशु ने ज़ोर से पुकारते हुए कहाः *“एली,
एली, लामा शबकतानी?”* जिसका मत-
लब है, “मेरे परमेश्वर, मेरे परमेश्वर, तू
ने मुझे क्यों छोड़ दिया है?” **47** यह
सुनने पर, वहाँ खड़े कुछ लोग कहने लगेः
“यह आदमी एल्लियाह को पुकार रहा
है।” **48** उनमें से एक ने फौरन दौड़-

मत्ती 27:32* अतिरिक्त लेख 6 देखें।

मत्ती 27:45* मत्ती 20:5 पहला फुटनोट देखें।
45# मत्ती 20:5 दूसरा फुटनोट देखें।

कर एक स्पंज लिया और उसे खट्टी दाख-
मदिरा में डुबोकर सरकंडे पर रखा और
उसे पीने के लिए दिया। **49** मगर
बाकियों ने कहा: “इसे रहने दो! देखते हैं,
एल्लियाह इसे बचाने के लिए आता है कि
नहीं।” [[एक और आदमी ने भाला लेकर
उसकी पसलियों के बीच भोंका और खून
और पानी बह निकला।]]* **50** यीशु
ने एक बार फिर ज़ोर से चिल्लाकर दम
तोड़ दिया।

51 तब देखो! मंदिर का परदा*
ऊपर से नीचे तक फटकर दो टुकड़े हो
गया, और भूकंप से धरती काँप उठी और
चट्टानें फट गयीं। **52** कब्रें खुल गयीं
और मौत की नींद में सोए बहुत-से पवित्र
जनों के शव कब्रों से बाहर जा गिरे,
53 और कब्रिस्तान में मौजूद बहुत-से
लोगों ने ये शव देखे। (और कुछ लोग
जो कब्रों के पास गए थे, वे यीशु के जी
उठाए जाने के बाद पवित्र शहर* आए।)
54 मगर सेना-अफसर और जो उसके
साथ यीशु की पहरेदारी कर रहे थे,
जब उन्होंने भूकंप और उन सारी घट-
नाओं को देखा, तो वे बहुत डर गए और
कहने लगे: “वाकई, यह परमेश्वर का
बेटा था।”

55 साथ ही, वहाँ बहुत-सी स्त्रियाँ,
जो यीशु की सेवा करने के लिए
उसके साथ गलील से आयी थीं, दूर
खड़ी देख रही थीं। **56** उनमें मरि-
यम मगदलीनी, याकूब और योसेस की
माँ मरियम और जब्दी के बेटों की माँ
भी थी।

57 अब दोपहर काफी बीत चुकी थी,
इसलिए अरिमतियाह का यूसुफ नाम का
एक अमीर आदमी वहाँ आया। वह
भी यीशु का एक चेला बन चुका था।
58 इस आदमी ने पीलातुस के पास
जाकर यीशु का शव माँगा। तब पीलातुस
ने हुक्म दिया कि उसे शव दे दिया जाए।
59 यूसुफ ने शव लेकर उसे साफ बढ़िया
मलमल में लपेटा, **60** और अपनी
नयी कब्र में रखा, जिसे उसने चट्टान खोद-
कर बनवाया था। उस कब्र के दरवाज़े
पर एक बड़ा पत्थर लुढ़काने के बाद, वह
वहाँ से चला गया। **61** लेकिन मरि-
यम मगदलीनी और दूसरी मरियम वहीं
कब्र के सामने बैठी रहीं।

62 अगले दिन, यानी तैयारी के
दिन* के बाद, प्रधान याजक और
फरीसी, पीलातुस के सामने जमा हुए
63 और कहने लगे: “हुज़ूर, हमें
याद आया है कि उस फरेबी ने जीते-
जी कहा था, ‘तीन दिन बाद मुझे जी
उठाया जाएगा।’ **64** इसलिए हुक्म दे
कि तीसरे दिन तक कब्र की चौकसी की

मत्ती 27:49* दोहरे ब्रैकेट के बारे में जानकारी के लिए मत्ती 16:3 का फुटनोट देखें। **51*** यह परदा परम-पवित्र और पवित्र स्थान के बीच था और इन्हें एक-दूसरे से अलग करता था। **53*** यानी, यरूशलेम।

मत्ती 27:62* सब्त से पहले का दिन “तैयारी का दिन” कहलाता था। इस दिन यहूदी सब्त के दिन के लिए खाना तैयार करते थे और हर वह ज़रूरी काम पूरा कर लेते थे, जिसके लिए सब्त का दिन खत्म होने तक रुका नहीं जा सकता था। (निर्ग 16:5; 20:10 से मिलाएँ।)

जाए, ताकि उसके चेले आकर उसे चुरा न ले जाएँ और लोगों से कहें कि 'उसे मरे हुओं में से जी उठाया गया है!' फिर यह आखिरी फरेब, पहले फरेब से भी बदतर होगा।"
65 पीलातुस ने उनसे कहा: "तुम पहरेदार ले जा सकते हो। और जैसा पहरा बिठाना चाहते हो वैसा बिठा दो।"
66 तब वे गए और कब्र का पहरा देने के लिए उन्होंने पत्थर को सीलबंद किया और पहरेदार तैनात कर दिए।

28 सब्त के बाद, हफ्ते के पहले दिन* मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम कब्र को देखने आयीं। उस वक्त सुबह का उजाला होने लगा था।
2 लेकिन देखो! इससे पहले एक बड़ा भूकंप हो चुका था। क्योंकि यहोवा का दूत स्वर्ग से उतर आया था। उसने आकर कब्र के मुँह पर रखा पत्थर लुढ़का दिया था और उस पर बैठा हुआ था।
3 उसका रूप बिजली जैसा था और उसके कपड़े बर्फ जैसे सफेद थे।
4 उसके खौफ से पहरेदार काँपने लगे थे और मुरदे जैसे हो गए थे।
5 मगर जब ये स्त्रियाँ कब्र पर आयीं, तो स्वर्गदूत ने उनसे कहा: "डरो मत। मैं जानता हूँ कि तुम यीशु को ढूँढ़ रही हो, जिसे सूली पर चढ़ाया गया था।
6 वह यहाँ नहीं है, क्योंकि जैसा उसने कहा था, उसे जी उठाया गया है। आकर यह जगह देखो जहाँ उसे लिटाया गया था।
7 अब तुम जल्दी जाओ और जाकर उसके चेलों को बताओ कि उसे मरे हुओं में से जी उठाया गया है। और यह भी बताओ कि वह तुम्हारे आगे गलील जा रहा है। वहाँ तुम उसे देखोगे। मैं तुम्हें यही संदेश देने आया हूँ।"
8 यह सुनकर वे फौरन कब्र के पास से निकल पड़ीं। वे डर गयी थीं मगर अब उनकी खुशी का ठिकाना न था। वे दौड़ी-दौड़ी जा रही थीं ताकि उसके चेलों को खबर दें।
9 तभी अचानक यीशु उनसे रास्ते में मिला और उसने कहा: "खुश रहो!" वे उसके पास गयीं और झुककर उसके पैर पकड़ लिए और उसे प्रणाम किया।
10 तब यीशु ने उनसे कहा: "डरो मत! जाकर मेरे भाइयों को खबर दो कि वे गलील चले जाएँ। वे मुझे वहाँ देखेंगे।"
11 जब ये स्त्रियाँ रास्ते में ही थीं, तो देखो! कब्र पर पहरा देनेवाले पहरेदारों में से कुछ शहर में गए और उन्होंने सारी घटनाएँ प्रधान याजकों को सुना दीं।
12 तब प्रधान याजकों ने, बुज़ुर्गों को बुलाया और उनके साथ सलाह-मशविरा करने के बाद, सैनिकों को घूस में बहुत चाँदी दी।
13 और उनसे कहा: "तुम यह कहना कि 'रात में जब हम सो रहे थे, तब उसके चेले आए और उसे चुराकर ले गए।'
14 और अगर यह बात राज्यपाल के कानों तक पहुँचेगी, तो हम उसे मना लेंगे और तुम्हारी सारी चिंता दूर कर देंगे।"
15 तब पहरेदारों ने

मत्ती 28:1* यह वह दिन है जिसे हम आज रविवार कहते हैं। यहूदियों के लिए यह हफ्ते का पहला दिन हुआ करता था।

चाँदी के सिक्के ले लिए और जो उन्हें बताया गया था वही बात फैला दी। और यहूदियों में यह बात आज के दिन तक फैली हुई है।

16 मगर वे ग्यारह चेले गलील में उस पहाड़ पर गए, जहाँ यीशु ने उन्हें इकट्ठा होने के लिए कहा था। **17** जब उन्होंने उसे देखा तो झुककर प्रणाम किया, मगर किसी-किसी ने शक किया। **18** यीशु उनके पास आया और उनसे यह कहा: "स्वर्ग में और धरती पर सारा अधिकार मुझे दिया गया है। **19** इसलिए जाओ और सब राष्ट्रों के लोगों को मेरा चेला बनना सिखाओ और उन्हें पिता, बेटे और पवित्र शक्ति* के नाम से बपतिस्मा दो। **20** और उन्हें वे सारी बातें मानना सिखाओ जिनकी मैंने तुम्हें आज्ञा दी है। और देखो! मैं दुनिया की व्यवस्था के आखिरी वक्त तक हमेशा तुम्हारे साथ हूँ।"

मत्ती 28:19* यूनानी *नफ्मा।* अतिरिक्त लेख 7 देखें।

मरकुस

के मुताबिक खुशी का संदेश

1 यीशु मसीह के बारे में खुशखबरी यूँ शुरू होती है: **2** जैसा यशायाह भविष्यवक्ता की किताब में लिखा है: "(देख! मैं अपना दूत तेरे आगे भेज रहा हूँ, जो तेरे लिए राह तैयार करेगा।)* **3** सुनो! वीराने में कोई यह पुकार लगा रहा है: 'यहोवा* का मार्ग तैयार करो, उसकी सड़कें सीधी करो,'" **4** इसी के मुताबिक, यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला वीरान इलाकों में आया। उसने यह प्रचार किया कि लोगों को बपतिस्मा* लेने की ज़रूरत है, जो इस बात की निशानी ठहरेगा कि उन्होंने अपने पापों के लिए पश्चाताप किया है और वे परमेश्वर से इनकी माफी पाना चाहते हैं। **5** इसलिए सारे यहूदिया प्रदेश और यरूशलेम शहर के सब रहनेवाले निकलकर यूहन्ना के पास जाने लगे। वे अपने पापों को खुलकर मान लेते थे और वह उन्हें यरदन नदी में बपतिस्मा देता था। **6** यूहन्ना ऊँट के बालों से बनी पोशाक पहनता था और चमड़े का कमरबंध बाँधा करता था। वह टिड्डियाँ और जंगली शहद खाता था। **7** वह यह प्रचार करता था: "मेरे बाद जो आनेवाला है वह मुझसे कहीं शक्तिशाली है। मैं इस लायक भी नहीं कि झुककर उसकी जूतियों के फीते खोलूँ। **8** मैं तो तुम्हें पानी से बप-

---

मर 1:2* मला 3:1 देखें, जहाँ से आयत का यह हिस्सा लिया गया है। **3*** यह उन 237 जगहों में से एक जगह है, जहाँ परमेश्वर का नाम, 'यहोवा' इस अनुवाद के मुख्य पाठ में पाया जाता है। अतिरिक्त लेख 2 देखें। **4*** बपतिस्मे का मतलब किसी को पानी में पूरी तरह डुबकी देना है। यह एक धार्मिक रस्म है।

तिस्मा देता हूँ, मगर वह तुम्हें पवित्र
शक्ति* से बपतिस्मा देगा।"#
9 उन्हीं दिनों यीशु, गलील प्रदेश के
नासरत शहर से यूहन्ना के पास आया
और उसने यरदन नदी में यूहन्ना से बप-
तिस्मा लिया। **10** जैसे ही यीशु पानी
से ऊपर आया, उसने आकाश को खुलते
और पवित्र शक्ति को कबूतर के रूप में
अपने ऊपर उतरते देखा। **11** फिर
स्वर्ग से परमेश्वर की आवाज़ सुनायी दीः
"तू मेरा प्यारा बेटा है, मैंने तुझे मंज़ूर
किया है।"

12 इसके बाद, पवित्र शक्ति ने
यीशु को फौरन वीराने में जाने के लिए
उकसाया। **13** यीशु चालीस दिन तक
वीराने में ही रहा, जहाँ शैतान उसकी
परीक्षा लेने के लिए उसे फुसलाने की
कोशिश करता रहा। वह जंगली जानवरों
के बीच रहा, और स्वर्गदूतों ने उसकी
सेवा की।

14 फिर यूहन्ना के गिरफ्तार होने
के बाद, यीशु गलील गया और पर-
मेश्वर की खुशखबरी सुनाने लगा।
15 उसने यह प्रचार कियाः "तय किया
गया वक्त आ चुका है और परमेश्वर का
राज पास आ गया है। इसलिए लोगो,
पश्चाताप करो और इस खुशखबरी पर
विश्वास करो।"

16 फिर यीशु ने गलील झील* के
किनारे चलते-चलते शमौन और उसके
भाई अन्द्रियास को देखा। वे दोनों मछु-
वारे थे और झील में अपने जाल डाल रहे
थे। **17** तब यीशु ने उनसे कहाः "मेरे
पीछे हो लो, और जिस तरह तुम मछ-
लियाँ इकट्ठी करते हो, मैं तुम्हें इंसानों को
इकट्ठा करनेवाले बनाऊँगा।" **18** तब
वे फौरन अपने जाल छोड़कर उसके पीछे
हो लिए। **19** थोड़ी और दूर चलने
पर यीशु ने याकूब और यूहन्ना को देखा।
ये दोनों भाई थे और जब्दी नाम के आदमी
के बेटे थे। वे अपनी नाव में जाल ठीक
कर रहे थे। **20** उसने बिना देर किए
उन्हें बुलाया। तब वे अपने पिता जब्दी
को मज़दूरों के साथ नाव में छोड़ यीशु
के पीछे चल दिए। **21** इसके बाद ये
लोग कफरनहूम शहर गए।

जैसे ही सब्त* का दिन आया, यीशु
वहाँ के एक सभा-घर में गया और लोगों
को सिखाने लगा। **22** लोग उसका
सिखाने का तरीका देखकर दंग थे,
क्योंकि वह उन्हें शास्त्रियों* की तरह
नहीं, बल्कि अधिकार रखनेवाले की तरह
सिखा रहा था। **23** उसी वक्त सभा-
घर में एक आदमी था जिसमें एक दुष्ट
स्वर्गदूत समाया था। उस दुष्ट दूत के
वश में वह आदमी चिल्लायाः **24** "हे
यीशु नासरी, हमें तुझसे क्या लेना-देना?
क्या तू हमें नाश करने आया है? मैं
जानता हूँ तू असल में कौन है, तू पर-
मेश्वर का भेजा हुआ पवित्र जन है।"
25 मगर यीशु ने उसे डाँटते हुए कहाः
"खामोश रह, और उसमें से बाहर निकल

मर 1:8* यूनानी *नफ्मा*। अतिरिक्त लेख 7 देखें। **8#** मत्ती 3:11 फुटनोट देखें। **16*** मत्ती 4:18 फुटनोट देखें।

मर 1:21* मत्ती 12:1 फुटनोट देखें। **22*** शास्त्री, यीशु के ज़माने में परमेश्वर के कानून का मतलब समझानेवाले और इसके शिक्षक थे।

जा!” **26** तब उस दुष्ट स्वर्गदूत ने
उस आदमी को मरोड़ा और फिर बड़ी
ज़ोर से चीखता हुआ उसमें से बाहर
निकल गया। **27** यह देखकर लोग
इस कदर हैरत में पड़ गए कि आपस में
कहने लगे, “यह क्या है? एक नयी
तालीम! वह दुष्ट स्वर्गदूतों को भी अधि-
कार के साथ आज्ञा देता है, और वे
उसकी मानते हैं।” **28** और यीशु की
चर्चा बड़ी तेज़ी से गलील के आस-पास
के सारे इलाके में चारों तरफ फैल गयी।

29 इसके बाद, वे फौरन सभा-घर
से निकलकर शमौन और अन्द्रियास के
घर गए। याकूब और यूहन्ना भी उनके
साथ थे। **30** शमौन की सास बीमार
थी और बुखार में पड़ी थी, और उन्होंने
फौरन यीशु को उसके बारे में बताया।
31 यीशु उसके पास गया और उसका
हाथ पकड़कर उसे उठाया। तब उसका
बुखार उतर गया और वह उनकी सेवा
करने लगी।

32 फिर शाम होने के बाद जब सूरज
ढल चुका था तब लोग उन सभी को जो
बीमार थे और जिनमें दुष्ट स्वर्गदूत समाए
थे, यीशु के पास लाने लगे। **33** यहाँ
तक कि पूरा शहर उनके दरवाज़े पर जमा
हो गया। **34** तब उसने तरह-तरह
की बीमारियों के शिकार बहुत-से लोगों
को चंगा किया और कई दुष्ट स्वर्गदूतों
को निकाला। मगर वह उन दुष्ट स्वर्ग-
दूतों को बोलने नहीं देता था, क्योंकि
वे जानते थे कि वह मसीह* है।

35 अगली सुबह, जब अंधेरा ही था,
तब यीशु उठकर बाहर गया और किसी
एकांत जगह की तरफ निकल पड़ा। वहाँ
वह प्रार्थना करने लगा। **36** मगर,
शमौन और उसके साथी उसकी खोज में
निकल पड़े **37** और यीशु को पाकर
उससे कहा: “सब लोग तुझे ढूँढ़ रहे हैं।”
38 मगर उसने उनसे कहा: “आओ हम
कहीं और आस-पास के दूसरे कसबों में
जाएँ, ताकि मैं वहाँ भी प्रचार कर सकूँ,
क्योंकि मैं इसी वजह से निकला हूँ।”
39 यीशु वहाँ से गया और सारे गलील
प्रदेश से होता हुआ उनके सभा-घरों में
प्रचार करता और लोगों में समाए दुष्ट
स्वर्गदूतों को निकालता रहा।

40 फिर उसके पास एक कोढ़ी भी
आया। उसने यीशु के सामने घुटने टेक-
कर गिड़गिड़ाते हुए कहा: “बस, अगर तू
चाहे तो मुझे शुद्ध कर सकता है।”
41 उस कोढ़ी को देखकर यीशु तड़प
उठा और उसने अपना हाथ बढ़ाकर उसे
छूआ और कहा: “हाँ, मैं चाहता हूँ।
शुद्ध हो जा।” **42** उसी पल उसका
कोढ़ गायब हो गया और वह शुद्ध
हो गया। **43** इसके बाद, यीशु ने
उसे सख्त हिदायत दी और यह कहते
हुए उसे फौरन विदा किया: **44** “देख,
किसी से कुछ न कहना। मगर, जाकर
खुद को याजक को दिखा और शुद्ध हो
जाने के बारे में मूसा ने जो-जो हिदायत
दी है उसके मुताबिक अपनी भेंट चढ़ा
ताकि वे खुद इस बात के गवाह हों।”
45 लेकिन वहाँ से निकलते ही वह

मर 1:34* या, “अभिषिक्त जन; मसीहा।” मत्ती 1:1 फुटनोट देखें।

आदमी सबको बताने लगा। और उसने
यह किस्सा इस कदर मशहूर कर दिया
कि इसके बाद यीशु खुलेआम किसी शहर
में दाखिल न हो सका। बल्कि वह एकांत
इलाकों में ही रहा। फिर भी, लोग हर
कहीं से उसके पास आते रहे।

2 मगर कुछ दिन बाद, यीशु फिर
कफरनहूम में आया और चारों
तरफ खबर फैल गयी कि वह घर आ
गया है। **2** इसलिए वहाँ लोगों की
भीड़ लग गयी, और वह घर लोगों से
खचाखच भर गया। यहाँ तक कि दर-
वाज़े में घुसने तक की जगह न रही। यीशु
उन्हें परमेश्वर के वचन सुनाने लगा।
3 तब लोग एक लकवे के मारे हुए
को वहाँ लाए, जिसे चार आदमी उठाए
हुए थे। **4** मगर भीड़ की वजह से
वे उसे अंदर यीशु के नज़दीक न ले
जा सके। इसलिए जहाँ यीशु बैठा था,
उन्होंने ठीक उसके ऊपर घर की छत को
खोदा और खोल दिया और लकवे के मारे
हुए को उसकी खाट समेत नीचे उतार
दिया। **5** जब यीशु ने उनका विश्वास
देखा, तो उसने लकवे के मारे आदमी से
कहा: "बेटे, तेरे पाप माफ किए गए।"
6 वहाँ कुछ शास्त्री बैठे थे जो अपने
दिलों में कहने लगे: **7** "यह आदमी
ऐसे क्यों बोल रहा है? यह परमेश्वर की
तौहीन कर रहा है। परमेश्वर के सिवा
और कौन पापों को माफ कर सकता है?"
8 मगर यीशु ने फौरन अपने मन में
जान लिया कि वे अपने दिलों में क्या
सोच रहे हैं। इसलिए यीशु ने उनसे कहा:
"तुम क्यों अपने दिलों में ये बातें सोच
रहे हो? **9** इस लकवे के मारे से क्या
कहना ज़्यादा आसान है, 'तेरे पाप माफ
किए गए,' या यह कहना कि 'उठ,
और अपनी खाट उठा और चल-फिर'?
10 मगर इसलिए कि तुम जान लो
कि इंसान के बेटे को इस धरती पर
पाप माफ करने का अधिकार दिया गया
है," . . . यीशु ने लकवे के मारे हुए से
कहा: **11** "मैं तुझसे कहता हूँ, खड़ा
हो, अपनी खाट उठा और अपने घर
जा।" **12** तब वह आदमी उठ बैठा
और फौरन अपनी खाट उठाकर सबके
देखते बाहर निकल गया। यह देखकर
सभी दंग रह गए और यह कहकर पर-
मेश्वर की बड़ाई करने लगे: "हमने पहले
ऐसा कभी नहीं देखा।"

13 फिर यीशु निकलकर झील के
किनारे गया और लोगों की सारी
भीड़ उसके पास आती रही और वह
उन्हें सिखाने लगा। **14** फिर चलते-
चलते उसने हलफई के बेटे लेवी को
कर-वसूली के दफ्तर में बैठे देखा और
उससे कहा: "मेरा चेला बन जा और
मेरे पीछे हो ले।" और वह उठकर
उसके पीछे हो लिया। **15** बाद में
वह लेवी के घर खाना खाने के लिए
मेज़ से टेक लगाए था और बहुत-से
कर-वसूलनेवाले* और दूसरे ऐसे पापी,
यीशु और उसके चेलों के साथ खाने बैठे

मर 2:15* कर-वसूलनेवालों को, लोग इज़्ज़त की
नज़र से नहीं देखा करते थे।

थे। ये लोग बड़ी तादाद में वहाँ जमा थे।
उनमें से कई ऐसे थे जो यीशु के चेले बन
गए थे। **16** मगर जब फरीसी-दल के
कुछ शास्त्रियों ने देखा कि वह पापियों
और कर-वसूलनेवालों के साथ खाना खा
रहा है, तो वे उसके चेलों से कहने लगे:
"यह कर-वसूलनेवालों और पापियों के
साथ खाता है?" **17** यह सुनकर यीशु
ने उनसे कहा: "जो भले-चंगे हैं, उन्हें वैद्य
की ज़रूरत नहीं होती, मगर बीमारों को
होती है। मैं धर्मियों को नहीं, बल्कि
पापियों को बुलाने आया हूँ।"

18 यूहन्ना के चेले और फरीसी उप-
वास किया करते थे। इसलिए वे यीशु के
पास आए और उससे पूछा: "क्या बात
है कि यूहन्ना के चेले और फरीसियों
के चेले उपवास रखते हैं, मगर तेरे
चेले उपवास नहीं रखते?" **19** तब
यीशु ने उनसे कहा: "जब तक दूल्हे के
दोस्तों के साथ दूल्हा है, क्या वे उपवास
रख सकते हैं? नहीं रख सकते। जब तक
दूल्हा उनके साथ रहता है, तब तक वे
उपवास नहीं रख सकते। **20** मगर वे
दिन आएँगे जब दूल्हे को उनसे जुदा कर
दिया जाएगा, तब उस दिन वे उपवास
करेंगे। **21** कोई भी पुराने कपड़े पर
नए कपड़े से पैवंद काटकर नहीं लगाता।
अगर लगाए, तो नए पैवंद की पूरी
ताकत पुराने कपड़े को खींच लेती है और
चीरा पहले से ज़्यादा बड़ा हो जाता है।
22 न ही कोई पुरानी मश्कों में नयी
दाख-मदिरा भरता है। अगर वह भरे तो
मदिरा मश्कों को फाड़ देगी और मदिरा
के साथ-साथ मश्कें भी नष्ट हो जाएँगी।
मगर लोग नयी मदिरा, नयी मश्कों में
भरते हैं।"

23 ऐसा हुआ कि यीशु सब्त के दिन
खेतों से होकर जा रहा था और उसके
चेले चलते-चलते अनाज की बालें तोड़ने
लगे। **24** इस पर फरीसी उससे कहने
लगे: "यह देख! ये सब्त के दिन ऐसा
काम क्यों कर रहे हैं जो कानून के
खिलाफ है?" **25** मगर यीशु ने कहा:
"क्या तुमने कभी नहीं पढ़ा कि जब
दाविद और उसके आदमी भूखे थे और
उनके पास खाने के लिए कुछ नहीं था,
तब दाविद ने क्या किया? **26** क्या
तुमने प्रधान याजक अबियातार के ब्यौरे
में नहीं पढ़ा कि किस तरह दाविद पर-
मेश्वर के भवन में गया और चढ़ावे की
रोटियाँ खायीं और कुछ अपने साथियों
को भी दीं, जबकि याजकों के सिवा किसी
और का ये रोटियाँ खाना मूसा के कानून
के खिलाफ था?" **27** यीशु ने आगे
कहा: "सब्त का दिन इंसान के लिए बना
है, न कि इंसान सब्त के दिन के लिए।
28 लेकिन, इंसान का बेटा सब्त के दिन
का भी प्रभु है।"

3 एक बार फिर वह किसी सभा-
घर में गया और वहाँ एक आदमी
मौजूद था जिसका हाथ सूखा हुआ था।
2 इसलिए फरीसी यीशु पर नज़र जमाए
हुए थे कि देखें वह उस आदमी को सब्त
के दिन चंगा करता है या नहीं, ताकि वे
उस पर इलज़ाम लगा सकें। **3** तब

यीशु ने उस सूखे हाथवाले आदमी से
कहाः "उठ और यहाँ बीच में खड़ा हो
जा।" 4 इसके बाद उसने उनसे पूछाः
"परमेश्वर के कानून के हिसाब से सब्त
के दिन क्या करना सही है, किसी का
भला करना या बुरा करना? किसी की
जान बचाना या किसी की जान लेना?"
मगर वे चुप्पी साधे रहे। 5 उनके
दिलों की कठोरता देखकर यीशु बेहद
दुःखी हुआ और उसने क्रोध से भरकर
उन सब पर नज़र डाली और उस आदमी
से कहाः "अपना हाथ आगे बढ़ा।" जब
उसने हाथ बढ़ाया, तो उसका हाथ ठीक
हो गया। 6 यह देखकर फरीसी बाहर
निकल गए और उसी वक्त हेरोदियों के
दल के साथ मिलकर यीशु के खिलाफ
साज़िश करने लगे कि किस तरह उसका
खात्मा किया जा सके।

7 मगर यीशु वहाँ से निकलकर
अपने चेलों के साथ झील की तरफ चला
गया। तब गलील और यहूदिया प्रदेश से
भारी तादाद में लोग उसके पीछे हो लिए।
8 यहाँ तक कि उसके बड़े-बड़े कामों की
चर्चा सुनकर यरूशलेम और इदूमिया और
यरदन पार के इलाकों और सोर और
सीदोन के आस-पास से भारी तादाद में
लोग उसके पास आए। 9 उसने अपने
चेलों से कहा कि एक छोटी नाव उसके
लिये हर वक्त तैयार रखें, ताकि वह भीड़
से दब न जाए। 10 यीशु ने बहुतों को
चंगा किया था, इसलिए जितनों को तरह-
तरह की दर्दनाक बीमारियाँ थीं वे उसे
छूने के लिए उस पर गिरे पड़ते थे।
11 वे लोग भी जिनमें दुष्ट स्वर्गदूत*
समाए थे, जब कभी उसे देखते, तो उसके
आगे गिर पड़ते और चिल्लाकर कहतेः
"तू परमेश्वर का बेटा है।" 12 मगर
उसने कई बार उन्हें कड़ाई से हुक्म दिया
कि यह ज़ाहिर न करें कि वह कौन है।

13 फिर यीशु एक पहाड़ पर चढ़
गया। इसके बाद, उसने उन चेलों को
अपने पास बुलाया जिन्हें वह बुलाना
चाहता था और वे उसके पास आए।
14 यीशु ने इनमें से बारह चेलों का एक
दल बनाया और उन्हें "प्रेषित"* नाम भी
दिया। यीशु ने यह इसलिए किया ताकि
वे लगातार उसके साथ रहें और वह उन्हें
प्रचार के लिए भेज सके। 15 और
उनके पास दुष्ट स्वर्गदूतों को निकालने
का अधिकार हो।

16 जिन बारहों का दल उसने बनाया
वे थे, शमौन जिसे उसने पतरस नाम
दिया, 17 जब्दी का बेटा याकूब और
याकूब का भाई यूहन्ना (इन्हें यीशु ने
बोअनरगिस नाम दिया, जिसका मत-
लब है गर्जन के बेटे), 18 अन्द्रियास,
फिलिप्पुस, बरतुलमै, मत्ती, थोमा, हलफई
का बेटा याकूब, तद्दी, जोशीला शमौन
19 और यहूदा इस्करियोती, जिसने बाद
में उसे धोखे से पकड़वाया।

फिर यीशु एक घर में गया।
20 तब एक बार फिर लोगों की इतनी
भीड़ जमा हो गयी कि यीशु और उसके
चेले खाना तक न खा सके। 21 जब

मर 3:11* यूनानी *नफ्मा।* अतिरिक्त लेख 7 देखें। **14*** या, "भेजे गए।" यूनानी में *"अपोस्टोलोस।"*

यीशु के घरवालों ने इन सब बातों की
चर्चा सुनी, तो वे निकले ताकि उसे पकड़-
कर अपने साथ ले जाएँ, क्योंकि वे कह
रहे थेः "उसका दिमाग फिर गया है।"
22 जो शास्त्री यरूशलेम से आए थे, वे
कह रहे थेः "उसमें बालज़बूल है और
वह, दुष्ट स्वर्गदूतों के राजा की मदद से,
लोगों में समाए दुष्ट दूतों को निकालता
है।" **23** तब यीशु ने उन्हें अपने पास
बुलाया और मिसालें देकर उनसे कहाः
"शैतान खुद शैतान को कैसे निकाल
सकता है? **24** अगर किसी राज्य में
फूट पड़ जाए, तो वह राज्य टिक नहीं
सकता। **25** और अगर किसी घर में
फूट पड़ जाए तो वह घर टिक नहीं
सकता। **26** उसी तरह, अगर शैतान
अपने ही खिलाफ उठ खड़ा हो और
उसमें फूट पड़ जाए, तो वह टिक नहीं
सकता, बल्कि उसका अंत हो जाएगा।
27 सच तो यह है कि कोई किसी बल-
वान के घर में घुसकर उसका सामान तब
तक लूट नहीं सकता जब तक कि वह
पहले उस बलवान को पकड़कर बाँध न
दे, और इसके बाद वह उसका घर लूट
सकेगा। **28** मैं तुमसे सच कहता हूँ
कि इंसानों की सब बातें माफ की जाएँगी,
चाहे उन्होंने जो भी पाप किए हों और
निंदा करने के लिए चाहे जो भी निंदा की
बातें कही हों। **29** मगर जो कोई
पवित्र शक्ति के खिलाफ निंदा करेगा,
उसे कभी माफ नहीं किया जाएगा, बल्कि
वह ऐसे पाप का दोषी होगा जो कभी
नहीं मिटेगा।" **30** यीशु ने यह इस-
लिए कहा, क्योंकि वे कह रहे थेः "उसमें
एक दुष्ट स्वर्गदूत* है।"
31 फिर उसकी माँ और उसके भाई
आए और उन्होंने बाहर खड़े होकर उसे
बुलाने के लिए कहा। **32** क्योंकि
भीड़ उसके चारों तरफ बैठी थी, इस-
लिए उन्होंने उससे कहाः "देख! तेरी
माँ और तेरे भाई बाहर खड़े हैं और
तुझसे मिलना चाहते हैं।" **33** मगर
उसने जवाब दियाः "कौन है मेरी माँ और
कौन हैं मेरे भाई?" **34** फिर उसने
उन लोगों पर नज़र दौड़ाते हुए, जो
उसके चारों तरफ घेरा बनाकर बैठे थे,
यह कहाः "देखो, ये रहे मेरी माँ और
मेरे भाई! **35** जो कोई परमेश्वर की
मरज़ी पूरी करता है, वही है मेरा भाई,
मेरी बहन, और मेरी माँ।"

4 एक बार फिर वह झील के किनारे
सिखाने लगा। मगर वहाँ उसके पास
लोगों की बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गयी। इस-
लिए वह एक नाव पर चढ़ गया और
झील में किनारे से थोड़ी दूरी पर नाव में
बैठकर भीड़ को सिखाने लगा, लेकिन
सारी भीड़ किनारे पर थी। **2** तब वह
उन्हें मिसालें देकर कई बातें सिखाने लगा
और उन्हें शिक्षा देते हुए यह कहाः
3 "ध्यान से सुनो। एक बीज बोनेवाला
बीज बोने निकला। **4** जब वह बो
रहा था, तो कुछ बीज रास्ते के किनारे
गिरे और पंछी आकर उन्हें खा गए।
5 कुछ बीज ऐसी जगह गिरे जहाँ ज़्यादा

मर 3:30* यूनानी *नफ्मा*। अतिरिक्त लेख 7 देखें।

मिट्टी नहीं थी, क्योंकि मिट्टी के नीचे चट्टान
थी। इन बीजों के अंकुर फौरन दिखायी
देने लगे, क्योंकि वहाँ मिट्टी गहरी नहीं
थी। **6** लेकिन जब सूरज निकला, तो
वे झुलस गए और जड़ न पकड़ने की
वजह से सूख गए। **7** कुछ और बीज
काँटों में गिरे और कंटीले पौधों ने बढ़-
कर उन्हें दबा लिया और वे फल नहीं
लाए। **8** मगर कुछ और बीज बढ़िया
मिट्टी पर गिरे, और वे उगे और बढ़े और
उनमें फल आना शुरू हुआ। किसी में
तीस गुना, किसी में साठ गुना और किसी
में सौ गुना।" **9** यीशु ने आगे कहा:
"कान लगाकर सुनो और मैं जो कह रहा
हूँ उसे समझने की कोशिश करो।"

10 भीड़ के जाने के बाद जब यीशु
अकेला था, तो जो चेले उसके पास थे वे
उन बारहों के साथ उससे इन मिसालों के
बारे में सवाल पूछने लगे। **11** यीशु
ने उनसे कहा: "परमेश्वर के राज के
पवित्र रहस्य की समझ तुम्हें दी गयी है,
मगर बाहरवालों के लिए सब बातें मिसालें
ही हैं, **12** ताकि वे देखें, और देखते
हुए भी देख न पाएँ और सुनें और सुनते
हुए भी इसके मायने न समझ पाएँ, न ही
कभी पलटकर लौट आएँ और उन्हें
माफी दी जाए।" **13** फिर उसने उनसे
कहा: "तुम यह मिसाल नहीं समझते तो
फिर बाकी सब मिसालों का मतलब कैसे
समझोगे?

14 बोनेवाला वचन बोता है।
15 रास्ते के किनारे जहाँ वचन बोया
गया: ये वे लोग हैं जो वचन सुनते हैं,
मगर फौरन शैतान आता है और उनमें
बोया गया वचन ले जाता है। **16** वैसे
ही जो चट्टानी जगहों में बोए जाते हैं: ये वे
लोग हैं जो वचन को सुनते ही उसे खुशी-
खुशी स्वीकार करते हैं। **17** मगर उन
लोगों में जड़ नहीं होती, इसलिए वे थोड़े
वक्त के लिए कायम रहते हैं। फिर जैसे
ही वचन की वजह से उन पर क्लेश आता
है या ज़ुल्म होता है, तो वे वचन पर
विश्वास करना छोड़ देते हैं। **18** कुछ
और बीज हैं जो काँटों के बीच बोए गए
हैं: ये वे लोग हैं जिन्होंने वचन सुना तो
है, **19** मगर इस ज़माने* की ज़िंदगी
की चिंताएँ और भ्रम में डालनेवाली पैसे
की ताकत और बाकी सब चीज़ों की
चाहतें उनमें समा जाती हैं और वचन को
दबा देती हैं और वे फल नहीं लाते।
20 आखिर में, जो बढ़िया मिट्टी में बोए
गए हैं: ये वे लोग हैं जो वचन को सुनते
हैं और इसे खुशी-खुशी मानते हैं और
तीस गुना, साठ गुना और सौ गुना फल
लाते हैं।"

21 फिर यीशु ने उनसे आगे कहा:
"क्या दीपक जलाने के बाद कोई उसे
टोकरी* से ढककर या पलंग के नीचे
रखता है? क्या उसे लाकर एक दीवट
के ऊपर नहीं रखा जाता? **22** ऐसा
कुछ भी नहीं जो छिपाया गया हो
और बेनकाब न किया जाए। ऐसी कोई
भी चीज़ नहीं जिसे बड़ी सावधानी से
छिपाया गया हो और जो निकलकर खुले

मर 4:19* या, "दुनिया की व्यवस्था।" **21*** या, "नापने की टोकरी।"

में न आए। **23** कान लगाकर सुनो
और मैं जो कह रहा हूँ उसे समझने की
कोशिश करो।”

24 फिर यीशु ने उनसे यह भी कहा:
“तुम जो सुनते हो, उस पर ध्यान दो।
जिस नाप से तुम नापते हो, उसी से तुम्हारे
लिए भी नापा जाएगा, हाँ, तुम्हें उससे
भी ज़्यादा दिया जाएगा। **25** क्योंकि
जिसके पास है उसे और दिया जाएगा।
लेकिन जिसके पास नहीं है, उससे वह
भी ले लिया जाएगा जो उसके पास है।”

26 फिर उसने आगे कहा: “पर-
मेश्वर का राज ऐसा है जैसे कोई
आदमी ज़मीन पर बीज छितराता है।
27 वह आदमी रात होने पर सो जाता
है और सुबह होने पर उठ जाता
है। इस दौरान, जैसे-जैसे दिन बीतते
हैं, बीज में अंकुर फूटते हैं और वह
अपने-आप बढ़ता है लेकिन कैसे यह
वह आदमी नहीं जानता। **28** ज़मीन
अपने-आप धीरे-धीरे फल लाती है, पहले
घास जैसा अंकुर निकलता है, फिर डंठल
और आखिरकार तैयार दाने की बाल।
29 मगर जैसे ही दाना पक जाता है,
वह आदमी हँसिया चलाता है, क्योंकि
कटाई का वक्त आ गया है।”

30 यीशु ने उनसे आगे कहा: “हम
परमेश्वर के राज को किसके जैसा बताएँ,
या क्या मिसाल देकर उसे समझाएँ?
31 वह राई के दाने की तरह है, जो
ज़मीन में बोए जाने के वक्त धरती
के सारे बीजों में सबसे छोटा था—
32 लेकिन बोए जाने के बाद जब वह
उगता है, तो सभी साग-सब्ज़ियों से बड़ा
हो जाता है। उसमें ऐसी बड़ी-बड़ी डालियाँ
लगती हैं कि उसकी छाँव में आकाश के
पंछी आकर बसेरा करते हैं।”

33 तो इस तरह की कई मिसालें
देकर, जितना वे समझ सकते थे, उसके
मुताबिक यीशु उनको परमेश्वर का वचन
सुनाया करता था। **34** वाकई, वह
बगैर मिसाल के लोगों से बात नहीं करता
था, मगर अपने चेलों को अकेले में उन
सब बातों का मतलब समझाता था।

35 उस दिन, जब शाम ढल गयी
तो यीशु ने चेलों से कहा: “आओ हम
उस पार चलें।” **36** इसलिए, भीड़
को विदा करने के बाद, वे उसे नाव में
जिस तरह वह था, उसी तरह ले चले और
वहाँ उसके साथ दूसरी नौकाएँ भी थीं।
37 अब एक ज़ोरदार आँधी चलने लगी
और लहरें नाव से इतनी ज़ोर से टक-
राने लगीं कि नाव पानी से पूरी तरह
भरने पर थी। **38** मगर यीशु नाव के
पिछले हिस्से में, एक बड़े तकिए पर सिर
रखकर सो रहा था। इसलिए चेलों ने उसे
जगाया और उससे कहा: “गुरु, क्या
तुझे फिक्र नहीं कि हम नाश होनेवाले
हैं?” **39** यह सुनकर वह उठा और
उसने आँधी को डाँटा और लहरों से
कहा: “श्‍श्‍श! खामोश हो जाओ!” तब
आँधी थम गयी और बड़ा सन्‍नाटा छा
गया। **40** फिर यीशु ने उनसे कहा:
“तुम्हारे दिल क्यों काँप रहे हैं? क्या
अब तक तुममें ज़रा भी विश्वास नहीं?”
41 मगर उनमें अजीब-सा डर समा गया

और वे एक-दूसरे से कहने लगेः “आखिर
यह कौन है कि आँधी और समुद्र तक
इसका हुक्म मानते हैं?”

5 फिर वे झील के उस पार गिरा-
सेनियों के इलाके में पहुँचे।
2 जैसे ही यीशु नाव से उतरा, तो
एक आदमी जो एक दुष्ट स्वर्गदूत के
वश में था, कब्रों के बीच से निकलकर
उसके सामने आया। **3** यह आदमी
कब्रों के बीच भटकता फिरता था।
कोई भी उसे बाँधकर रखने में काम-
याब नहीं हो सका था, यहाँ तक कि
ज़ंजीरों से भी नहीं, **4** क्योंकि उसे
कई बार बेड़ियों और ज़ंजीरों से बाँधा
गया था, मगर वह ज़ंजीरों को तोड़
डालता और बेड़ियों के टुकड़े-टुकड़े कर
देता था। और किसी में इतनी ताकत
नहीं थी कि उसे काबू में कर सके।
5 वह रात-दिन कब्रों और पहाड़ों के
बीच चिल्लाता रहता और पत्थरों से खुद
को ज़ख्मी करता था। **6** लेकिन जैसे
ही दूर से उसकी नज़र यीशु पर पड़ी,
तो वह भागकर उसके पास गया और
झुककर उसे प्रणाम किया। **7** फिर
ज़ोर से चिल्लाने के बाद उसने कहाः
“हे यीशु, परम-प्रधान परमेश्वर के
बेटे, मेरा तुझसे क्या लेना-देना? मैं तुझे
परमेश्वर की शपथ देता हूँ, मुझे मत
तड़पा,” **8** यह उसने इसलिए कहा
क्योंकि यीशु उससे कह रहा थाः
“हे दुष्ट स्वर्गदूत, इस आदमी से बाहर
निकल जा।” **9** मगर फिर यीशु उससे
पूछने लगाः “तेरा नाम क्या है?” उसने
कहाः “मेरा नाम पलटन* है, क्योंकि हम
बहुत सारे हैं।” **10** और उसने बार-
बार यीशु से बिनती की कि वह उसे उस
इलाके से बाहर न भेजे।

11 उस पहाड़ पर सुअरों का एक
बड़ा झुंड चर रहा था। **12** इस-
लिए दुष्ट स्वर्गदूतों ने उससे यह बिनती
कीः “हमें उन सुअरों में भेज दे, ताकि
हम उनमें समा जाएँ।” **13** और उसने
उनको इजाज़त दे दी। इस पर वे दुष्ट
स्वर्गदूत बाहर निकले और उन सुअरों में
समा गए और करीब दो हज़ार सुअरों
का यह पूरा झुंड बड़ी तेज़ी से टीले की
तरफ दौड़ा और सारे सुअर एक-के-पीछे-
एक झील में जा गिरे और डूब मरे।
14 मगर उनके चरवाहे वहाँ से भाग खड़े
हुए और शहर और देहात में जाकर
इसकी खबर दी। और लोग देखने आए
कि वहाँ क्या हुआ था। **15** वे यीशु
के पास आए और उन्होंने देखा कि वह
आदमी जिसमें दुष्ट स्वर्गदूत समाया था,
वहाँ बैठा हुआ है। वह कपड़े पहने है
और बिलकुल ठीक दिमागी हालत में है।
यह वही आदमी था जिसमें पहले पलटन
समायी हुई थी। और लोग बहुत डर गए।
16 जिन्होंने यह सब कुछ अपनी आँखों
से देखा था, उन्होंने लोगों को बताया कि
जिस आदमी में दुष्ट स्वर्गदूत समाया था
उसके साथ यह सब कैसे हुआ और सुअरों
का क्या हाल हुआ। **17** इसलिए वे
यीशु से बिनती करने लगे कि वह उनके
ज़िलों से दूर चला जाए।

मर 5:9* मत्ती 26:53 फुटनोट देखें।

18 जब यीशु नाव पर चढ़ रहा
था, तब वह आदमी जिसमें पहले
दुष्ट स्वर्गदूत समाया था, उससे बिनती
करने लगा कि यीशु उसे अपने संग
आने दे। **19** मगर यीशु ने उसे आने
न दिया बल्कि उससे कहा: "अपने घर,
अपने रिश्तेदारों के पास जा और यहोवा
ने जो कुछ तेरे लिए किया है और जो दया
तुझ पर दिखायी है, वे सारी बातें उन्हें
बता।" **20** तब वह आदमी वहाँ से
चला गया और दिकापुलिस* में उन सारे
कामों का ऐलान करने लगा, जो यीशु ने
उसके लिए किए थे और सब लोग
ताज्जुब करने लगे।

21 जब यीशु नाव से इस पार लौट
आया, तब एक बड़ी भीड़ उसके पास
जमा हो गयी; और वह झील के किनारे
था। **22** वहाँ सभा-घर का एक अधि-
कारी आया, जिसका नाम याइर था।
जैसे ही उसने यीशु को देखा तो उसके
पैरों पर गिर पड़ा **23** और उससे
बार-बार यह मिन्नत करने लगा: "मेरी
बच्ची की हालत बहुत खराब है। मेहर-
बानी कर और मेरे साथ चल और उस
पर अपने हाथ रख ताकि वह अच्छी हो
जाए और जीती रहे।" **24** इस पर
यीशु उसके साथ चल दिया। एक बड़ी
भीड़ उसके पीछे थी और लोग उस पर
गिरे पड़ते थे।

25 उस भीड़ में एक स्त्री थी जिसे
बारह साल से खून बहने की
बीमारी थी। **26** उसने कई वैद्यों के
हाथों इलाज करवा-करवाकर बहुत दुःख
उठाया था और उसके पास जो कुछ था,
वह सब खर्च करने के बाद भी उसे
कोई फायदा नहीं हुआ, उलटा उसकी
हालत पहले से ज़्यादा बिगड़ गयी थी।
27 जब उसने यीशु के कामों की चर्चा
सुनी, तो वह भीड़ में पीछे से आयी और
उसके कपड़े को छूआ, **28** क्योंकि
वह कहती थी: "अगर मैं उसके कपड़े
को ही छू लूँगी, तो अच्छी हो जाऊँगी।"
29 उसी घड़ी उसका खून बहना बंद हो
गया और उसने अपने शरीर में महसूस
किया कि उसकी दर्दनाक बीमारी ठीक
हो गयी है।

30 उसी घड़ी यीशु ने भी खुद में
जान लिया कि उसके अंदर से शक्ति
निकली है और उसने भीड़ में पीछे मुड़-
कर कहा: "मेरे कपड़ों को किसने
छूआ?" **31** मगर उसके चेले उससे
कहने लगे: "तू देख रहा है कि
भीड़ तुझे कैसे दबाए जा रही है,
फिर भी तू कह रहा है, 'मुझे किसने
छूआ?'" **32** लेकिन यीशु की आँखें
उस स्त्री को ढूँढ़ रही थीं जिसने ऐसा
किया था। **33** मगर वह स्त्री, यह
जानते हुए कि उसके साथ क्या हुआ है,
डरती और काँपती हुई आयी और उसके
आगे गिर पड़ी और उसे पूरा हाल सच-
सच बता दिया। **34** यीशु ने उससे
कहा: "बेटी, तेरे विश्वास ने तुझे ठीक
किया है। तंदुरुस्त रह और यह दर्द-
नाक बीमारी तुझे फिर कभी न हो।"

मर 5:20* या, "दस शहर।"

35 वह जब बोल ही रहा था, तो
सभा-घर के उस अधिकारी के घर से कुछ
आदमी आए और कहने लगे: "तेरी
बेटी मर गयी! अब गुरु को और क्यों
परेशान करें?" **36** मगर जब उनकी
बातें यीशु के कानों में पड़ीं, तो उसने
सभा-घर के अधिकारी से कहा: "मत डर,
बस विश्वास रख।" **37** फिर उसने
पतरस, याकूब और उसके भाई यूहन्ना
को छोड़ किसी और को अपने पीछे आने
नहीं दिया।

38 तब वे सभा-घर के अधिकारी के
घर पहुँचे और उसने देखा कि वहाँ
काफी हो-हल्ला मचा है। लोग रो रहे
थे और ज़ोर-ज़ोर से मातम कर रहे
थे। **39** यीशु ने अंदर कदम रखने के
बाद उनसे कहा: "तुम क्यों हो-हल्ला
मचाते और रोते हो? लड़की मरी नहीं,
बल्कि सो रही है।" **40** इस पर वे
उसकी खिल्ली उड़ाते हुए उस पर हँसने
लगे। मगर, उन सबको बाहर भेजने
के बाद यीशु लड़की के माँ-बाप और
अपने साथियों को लेकर अंदर गया जहाँ
वह लड़की थी। **41** फिर यीशु ने
लड़की का हाथ अपने हाथ में लेकर
कहा: *"तलीता, कूमी,"* जिसका मतलब
है: "बच्ची, मैं तुझसे कहता हूँ, उठ!"
42 उसी वक्त वह लड़की उठ बैठी और
चलने-फिरने लगी। वह बारह साल की
थी। यह देखकर उनकी खुशी का ठिकाना
न रहा। **43** मगर यीशु ने उन्हें बार-
बार आज्ञा दी कि वे किसी को भी यह
बात न बताएँ और कहा कि लड़की को
कुछ खाने के लिए दिया जाए।

6 फिर वहाँ से रवाना होकर यीशु
अपने इलाके में आया जहाँ वह
पला-बढ़ा था और उसके चेले उसके
साथ हो लिए। **2** जब सब्त का दिन
आया, तो वह सभा-घर में सिखाने लगा।
उसकी बात सुननेवाले ज़्यादातर लोग
हैरान थे। उन्होंने कहा: "इस आदमी को
ये बातें कहाँ से आ गयीं? और भला
ऐसी बुद्धि इसने कहाँ से पायी और
ऐसे शक्तिशाली काम इसके हाथों से
कैसे हो रहे हैं? **3** यह तो वही बढ़ई
है जो मरियम का बेटा और याकूब,
यूसुफ, यहूदा और शमौन का भाई है, है
कि नहीं? और इसकी बहनें यहाँ हमारे
बीच हैं, हैं कि नहीं?" इसलिए उन्होंने
उस पर यकीन नहीं किया। **4** मगर
यीशु उनसे कहने लगा: "एक भविष्य-
वक्ता का अपने इलाके, अपने रिश्तेदारों
और अपने घर को छोड़ कहीं और
अनादर नहीं होता।" **5** इसलिए वह
चंद बीमारों पर हाथ रखकर उन्हें चंगा
करने के सिवा वहाँ और कोई शक्तिशाली
काम नहीं कर पाया। **6** बेशक, उनके
विश्वास की कमी देखकर उसे ताज्जुब
हुआ। फिर वह उस इलाके के गाँव-गाँव
में घूमकर सिखाने लगा।

7 फिर यीशु ने उन बारहों को बुलाया
और उन्हें दो-दो की जोड़ी में भेजने के
काम की शुरूआत की। उसने उनको दुष्ट
स्वर्गदूतों पर अधिकार दिया। **8** साथ
ही, उसने ये हिदायतें दीं कि वे सफर के
लिए एक लाठी को छोड़ और कुछ न लें,
न रोटी, न खाने की पोटली, न अपने

कमरबंध में ताँबे के पैसे, **9** और दो-
दो कुरते भी न लें,* बल्कि जूतियाँ कस
लें। **10** यीशु ने उनसे आगे कहा:
“जहाँ कहीं तुम किसी घर में दाखिल होते
हो, वहाँ तब तक ठहरो जब तक कि उस
इलाके को न छोड़ो। **11** जिस इलाके
में तुम्हें स्वीकार न किया जाए, और
तुम्हारी न सुनी जाए, वहाँ से बाहर
निकलते वक्त अपने तलवों की धूल
झाड़ देना,* ताकि उन पर गवाही हो।”
12 तब वे निकल पड़े और उन्होंने प्रचार
किया ताकि लोग पश्चाताप कर सकें।
13 वे कई दुष्ट स्वर्गदूतों को निकालते
और कई बीमारों पर तेल मलते और उन्हें
चंगा करते थे।

14 यह बात राजा हेरोदेस* के कानों
में पड़ी, क्योंकि यीशु का नाम मशहूर हो
गया था। लोग कहते थे: “यूहन्ना बप-
तिस्मा देनेवाले को मरे हुओं में से जी
उठाया गया है। इसीलिए उससे ये शक्ति-
शाली काम हो रहे हैं।” **15** मगर
दूसरे कहते थे: “यह एलिय्याह है।”
कुछ और लोग कहते थे: “यह
भविष्यवक्ताओं जैसा कोई भविष्यवक्ता
है।” **16** मगर जब हेरोदेस ने यह
बात सुनी, तो वह कहने लगा: “यूहन्ना
जिसका सिर मैंने कटवाया था, वही जी
उठा है।” **17** हेरोदेस ने अपने भाई
फिलिप्पुस की पत्नी हेरोदियास से खुद
शादी कर ली थी। उसी की वजह से हेरो-
देस ने यूहन्ना को गिरफ्तार कर लिया
था, और उसे ज़ंजीरों में बाँधकर कैद-
खाने में डलवा दिया था। **18** इसकी
वजह यह थी कि यूहन्ना ने हेरोदेस से
बार-बार कहा था: “तू ने जो अपने भाई
की पत्नी को अपनी बना लिया है, यह
सही नहीं किया।” **19** इसलिए हेरो-
दियास यूहन्ना के खिलाफ मन में बैर
पाले हुए थी। वह उसे मार डालना
चाहती थी, मगर ऐसा न कर सकी
थी। **20** क्योंकि हेरोदेस जानता था
कि यूहन्ना नेक और पवित्र इंसान है।
इसलिए वह उससे डरता था और उसे
बचाए रखता था। वह यूहन्ना की बातें
सुनने के बाद बड़ी उलझन में पड़ जाता
था कि क्या करे। फिर भी वह खुशी
से उसकी सुना करता था।

21 मगर एक दिन वह मौका आया
जिसकी हेरोदियास को तलाश थी।
उस दिन हेरोदेस का जन्मदिन था
और उसने शाम की बड़ी दावत रखी
जिसमें उसने बड़े-बड़े अधिकारियों और
सेनापतियों और गलील के जाने-माने
लोगों को बुलाया। **22** तब इसी हेरो-
दियास की बेटी वहाँ आयी और
उसने नाचकर हेरोदेस के साथ-साथ
उसकी दावत में मौजूद लोगों का दिल
खुश किया। तब राजा ने उस लड़की
से कहा: “तू जो चाहे मुझसे माँग ले,
मैं तुझे दे दूँगा।” **23** हाँ, राजा ने
कसम खायी: “तू जो चाहे माँग ले, मैं
अपना आधा राज्य तक तुझे दे दूँगा।”
24 तब लड़की ने बाहर जाकर अपनी

मर 6:9* शाब्दिक, “दो-दो कुरते भी न पहनें।” **11*** मत्ती 10:14 फुटनोट देखें। **14*** लूका 3:1 फुटनोट देखें।

माँ से पूछाः “मैं क्या माँगूं?” उसकी
माँ ने कहाः “यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले
का सिर।” **25** उसी वक्त वह लड़की
बड़ी तेज़ी से अंदर राजा के पास गयी
और उसने यह माँग कीः “मैं चाहती हूँ
कि तू अभी, इसी वक्त मुझे एक थाल
में यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले का सिर
ला दे।” **26** यह सुनकर राजा बेहद
दुःखी हुआ, फिर भी उसने जो कसमें
खायी थीं, और वहाँ जो लोग बैठे थे,
उनकी वजह से उसे टालना न चाहा।
27 इसलिए राजा ने फौरन एक अंग-
रक्षक भेजा और उसे यूहन्ना का सिर
लाने का हुक्म दिया। वह गया और कैद-
खाने में जाकर उसका सिर काट डाला।
28 वह उसका सिर एक थाल में ले
आया और लड़की को दिया, और लड़की
ने उसे ले जाकर अपनी माँ को दिया।
29 जब यूहन्ना के चेलों को इसकी खबर
मिली, तो वे आए और उसका शव ले
गए और एक कब्र में रख दिया।

30 यीशु के सभी प्रेषित उसके सामने
हाज़िर हुए और उन्होंने लोगों के बीच
जो-जो काम किए थे और उन्हें जो-जो
सिखाया था उन सबका ब्यौरा उसे दिया।
31 तब यीशु ने उनसे कहाः “आओ,
तुम सब अलग किसी एकांत जगह में
चलकर थोड़ा आराम कर लो।” क्योंकि
वहाँ बहुत लोग आ-जा रहे थे और उन्हें
खाने तक की फुरसत नहीं मिली थी।
32 इसलिए वे एक नाव पर चढ़कर
किसी एकांत जगह के लिए निकल पड़े।
33 मगर लोगों ने उन्हें जाते देख लिया
और बहुतों को इस बात का पता चल
गया। तब सब शहरों से लोग पैदल दौड़-
कर उनसे पहले ही उस जगह जा पहुँचे।
34 जब यीशु नाव से उतरा तो उसने
एक बड़ी भीड़ देखी और उन्हें देखकर
वह तड़प उठा, क्योंकि वे उन भेड़ों की
तरह थे जिनका कोई चरवाहा न हो।
और वह उन्हें बहुत-सी बातें सिखाने
लगा।

35 अब काफी वक्त बीत चुका था
और उसके चेलों ने उसके पास आकर
कहाः “यह जगह सुनसान है और काफी
देर हो चुकी है। **36** इसलिए इन्हें
विदा कर, ताकि वे आस-पास के देहातों
और गाँवों में जाकर अपने खाने के लिए
कुछ खरीद लें।” **37** जवाब में यीशु
ने उनसे कहाः “तुम्हीं उन्हें कुछ खाने को
दो।” यह सुनकर चेलों ने कहाः “क्या
हम दो सौ दीनार* की रोटियाँ खरीदें
और इन्हें खाने को दें?” **38** यीशु ने
उनसे कहाः “जाओ देखो, तुम्हारे पास
कितनी रोटियाँ हैं।” पता लगाकर उन्होंने
कहाः “पाँच, और दो मछलियाँ भी हैं।”
39 फिर यीशु ने सब लोगों से कहा कि
वे अलग-अलग टोलियाँ बनाकर हरी
घास पर आराम से बैठ जाएँ। **40** वे
सौ-सौ और पचास-पचास की टोलियों
में बैठ गए। **41** अब यीशु ने उन
पाँच रोटियों और दो मछलियों को लेकर
आकाश की तरफ देखा और प्रार्थना
में धन्यवाद दिया और रोटियाँ तोड़-

मर 6:37* दीनार, चाँदी का एक रोमी सिक्का था,
जिसका वज़न 3.85 ग्राम था।

कर चेलों को देने लगा, ताकि वे उन्हें
लोगों में बाँटें। उसने वे दो मछलियाँ
भी सब के लिए बाँट दीं। **42** तब
सब लोगों ने भरपेट खाया। **43** और
उन्होंने बची हुई रोटियों के टुकड़े उठाए
जिनसे बारह टोकरियाँ भर गयीं। इनके
अलावा मछलियाँ भी थीं। **44** और
रोटियाँ खानेवालों में आदमियों की गिनती
पाँच हज़ार थी।

45 फिर यीशु ने बिना देर किए
अपने चेलों को जबरन भेजा कि वे नाव
पर चढ़कर, उससे पहले उस पार बैत-
सैदा की तरफ चले जाएँ, जबकि वह
खुद भीड़ को विदा करने में लगा था।
46 मगर उनको अलविदा कहने के बाद,
वह प्रार्थना करने के लिए एक पहाड़ पर
चढ़ गया। **47** अब शाम ढल चुकी
थी और नाव झील के बीच थी, मगर वह
खुद अकेला पहाड़ पर था। **48** जब
उसने देखा कि लहरों के थपेड़े नाव का
आगे बढ़ना मुश्किल कर रहे हैं और वे
नाव खेते-खेते बेहाल हो रहे हैं, क्योंकि
हवा का रुख उनके खिलाफ था, तो रात
के करीब चौथे पहर* वह झील पर
चलते हुए उनके पास आया। मगर ऐसा
लग रहा था जैसे वह उनसे आगे निकल
जाना चाहता है। **49** जब चेलों की
नज़र उस पर पड़ी कि वह पानी पर चल
रहा है, तो उन्होंने सोचा: "हमें ज़रूर
कोई वहम हो रहा है!" और वे ज़ोर
से चिल्ला उठे। **50** क्योंकि वह उन
सबको नज़र आ रहा था और वे घबरा
गए थे। मगर उसने फौरन उनसे बात की
और कहा: "हिम्मत रखो, मैं ही हूँ। डरो
मत।" **51** फिर यीशु भी नाव पर
चढ़कर उनके साथ हो लिया, और हवा
थम गयी। वे मन-ही-मन बेहद हैरान थे,
52 क्योंकि रोटियों का चमत्कार देखने
के बाद भी वे यीशु के बारे में अब तक
नहीं समझ सके थे। उनके मन अभी-भी
समझने में मंद थे।

53 जब वे इस पार किनारे पर पहुँचे,
तो गन्नेसरत आए और वहीं पास में नाव
का लंगर डाला। **54** मगर जैसे ही
उन्होंने नाव से बाहर कदम रखा, लोगों
ने यीशु को पहचान लिया। **55** और
वे उस सारे इलाके में यहाँ-वहाँ दौड़े गए
और बीमारों को खाटों पर डालकर उन
जगहों पर ले गए, जहाँ-जहाँ उन्हें यीशु के
होने की खबर मिलती थी। **56** यीशु
जिन-जिन गाँवों या शहरों या देहातों में
जाता था, लोग वहाँ के बाज़ारों में अपने
बीमारों को रख देते थे और उससे बिनती
करते थे कि वह उन्हें अपने कपड़े की
झालर को ही छू लेने दे। और जितनों
ने उसे छूआ, वे सभी चंगे हो गए।

7 अब फरीसी और कुछ शास्त्री जो
यरूशलेम से वहाँ आए थे, उसके
पास जमा हुए। **2** जब उन्होंने देखा
कि यीशु के कुछ चेले दूषित हाथों से,
जिसका मतलब था, बिना हाथ धोए खाना
खाते हैं* . . . **3** दरअसल फरीसी
और सारे यहूदी उन परंपराओं को सख्ती
से मानते थे जो उनके बुज़ुर्गों ने ठहरायी

मर 6:48* मर 13:35 और मत्ती 14:25 के फुट-
नोट देखें।

मर 7:2* मत्ती 15:2 फुटनोट देखें।

थीं। इसलिए वे तब तक खाना नहीं खाते
जब तक कि पहले कोहनी तक अपने
हाथ न धो लें। **4** और बाज़ार से
लौटने पर वे तब तक नहीं खाते जब तक
कि पहले पानी छिड़ककर खुद को शुद्ध
न कर लें। ऐसी कई और परंपराएँ
उन्हें सख्ती से पालन करने के लिए
मिली हैं। जैसे प्यालों और सुराहियों और
ताँबे के बरतनों को पानी में डुबकी
देकर धोना . . . **5** इन फरीसियों
और शास्त्रियों ने यीशु से पूछा: "आखिर
क्यों तेरे चेले हमारे बुज़ुर्गों की ठह-
रायी परंपराओं का पालन नहीं करते
और दूषित हाथों से खाना खाते हैं?"
6 यीशु ने उनसे कहा: "यशायाह ने तुम
कपटियों के बारे में बिलकुल सही भविष्य-
वाणी की थी, जैसा लिखा है: 'ये लोग
होंठों से तो मेरा आदर करते हैं, मगर
इनके दिल मुझसे कोसों दूर रहते हैं।
7 ये बेकार ही मेरी उपासना करते हैं,
क्योंकि ये इंसानों की आज्ञाओं को पर-
मेश्वर की शिक्षाएँ बताकर सिखाते हैं।'
8 इंसानों की परंपराओं को पकड़े रहने
के लिए, तुम परमेश्वर की आज्ञाओं को
छोड़ देते हो।"

9 उसने आगे कहा: "तुम अपनी परं-
परा को बनाए रखने के लिए, कितनी
चतुराई से परमेश्वर की आज्ञा को ताक
पर रख देते हो। **10** मिसाल के लिए,
मूसा ने कहा था: 'अपने पिता और अपनी
माँ का आदर कर,' और 'जो कोई अपने
पिता या अपनी माँ को गाली दे वह
मार डाला जाए।' **11** मगर तुम लोग
कहते हो: 'अगर एक आदमी अपने पिता
या अपनी माँ से कहता है: "मेरे पास जो
कुछ है जिससे तुझे फायदा पहुँच सकता
था वह कुरबान है, (इसका मतलब है कि
वह चीज़ परमेश्वर को समर्पित एक भेंट
है)"'— **12** इसलिए तुम ऐसे आदमी
को अपने पिता या अपनी माँ के लिए
कुछ भी नहीं करने देते। **13** इस तरह
तुम अपनी ठहरायी हुई परंपरा की वजह
से परमेश्वर के वचन को रद्द कर देते
हो। और ऐसे कई काम तुम करते हो।"
14 फिर उसने भीड़ को दोबारा अपने
पास बुलाया और वह उनसे कहने लगा:
"तुम सब मेरी बात ध्यान से सुनो और
इसके मायने समझो। **15** ऐसी कोई
चीज़ नहीं जो बाहर से इंसान के अंदर
जाकर उसे दूषित कर सके। मगर जो
चीज़ें इंसान के अंदर से निकलती हैं, वही
उसे दूषित करती हैं।" **16*** ——

17 जब वह भीड़ से दूर एक घर में
गया, तो उसके चेले उस मिसाल के बारे
में उससे सवाल पूछने लगे। **18** तब
उसने चेलों से कहा: "क्या तुम भी उनकी
तरह समझ नहीं रखते? क्या तुम नहीं
जानते कि बाहर की कोई भी चीज़ जो
इंसान के अंदर जाती है, उसे दूषित नहीं
कर सकती? **19** क्योंकि वह उसके
दिल में नहीं बल्कि उसकी आँतों में जाती
है, और फिर मल-कुंड में निकल जाती
है?" इस तरह उसने खाने की सभी
चीज़ों को शुद्ध ठहराया। **20** इसके
बाद उसने कहा: "इंसान के अंदर से

मर 7:16* मत्ती 17:21 फुटनोट देखें।

जो निकलता है, वही उसे दूषित करता
है। **21** क्योंकि इंसानों के अंदर से
ही, उनके दिलों से ही घातक विचार
निकलते हैं, जैसेः व्यभिचार, चोरी, कत्ल,
22 शादी के बाहर यौन-संबंध, लालच,
दुष्टता के काम, छल, बदचलनी, ईर्ष्या
से भरी आँखें, निंदा, घमंड, कठोरता।
23 ये सभी दुष्ट बातें इंसान के अंदर से
निकलती हैं और उसे दूषित करती हैं।"

24 वहाँ से उठकर यीशु सोर और
सीदोन के इलाकों में गया। और वह एक
घर में गया और नहीं चाहता था कि कोई
उसके बारे में जाने। फिर भी, वह लोगों
की नज़र से छिप न सका। **25** वहाँ
एक स्त्री थी, जिसकी छोटी बच्ची में दुष्ट
स्वर्गदूत था। वह स्त्री यीशु की खबर
सुनकर फौरन आयी और उसके पैरों पर
गिर पड़ी। **26** यह स्त्री यूनानी थी
और सीरिया प्रांत के फिनीके इलाके की
रहनेवाली थी। वह उससे बिनती करती
रही कि मेरी बेटी में से दुष्ट स्वर्गदूत
निकाल दे। **27** मगर यीशु उससे यह
कहने लगाः "पहले बच्चों को जी भर के
खा लेने दो, क्योंकि बच्चों की रोटी लेकर
पिल्लों के आगे फेंकना सही नहीं है।"
28 मगर जवाब में स्त्री ने उससे कहाः
"सही कहा साहब, मगर फिर भी पिल्ले
बच्चों की मेज़ से गिरे टुकड़े तो खाते हैं।"
29 यह सुनकर यीशु ने उस स्त्री से कहाः
"क्योंकि तू ने ऐसी बात कही है, इसलिए
जा, दुष्ट स्वर्गदूत तेरी बेटी में से निकल
चुका है।" **30** तब वह स्त्री अपने घर
चली गयी और उसने पाया कि उसकी
बच्ची बिस्तर पर लेटी है और दुष्ट स्वर्ग-
दूत उसमें से निकल चुका है।

31 अब वह सोर के इलाकों से
निकला और सीदोन से होकर दिका-
पुलिस* के इलाकों के बीच से होता
हुआ वापस गलील झील पहुँचा।
32 यहाँ लोग उसके पास एक बहरे को
लाए जो ठीक से बोल भी नहीं पाता था
और उन्होंने यीशु से बिनती की कि वह
अपना हाथ उस पर रखे। **33** यीशु
उस आदमी को भीड़ से दूर, अलग ले
गया और उसके कानों में अपनी उंग-
लियाँ डालीं और थूकने के बाद उसकी
जीभ को छूआ। **34** फिर उसने
आकाश की तरफ देखा और गहरी आह
भरकर उससे कहाः *"एफ्फतह,"* जिसका
मतलब है "खुल जा।" **35** तब उस
आदमी की सुनने की शक्ति लौट आयी
और उसकी जीभ के बंधन खुल गए और
वह साफ-साफ बोलने लगा। **36** फिर
यीशु ने उन्हें सख्त हिदायत दी कि किसी
को कुछ न बताएँ। मगर जितना वह मना
करता था, उतना ही ज़्यादा वे उसकी
खबर फैलाते थे। **37** वाकई, लोग
बेहद हैरान थे और उन्होंने कहाः "उसने
सब कुछ बहुत अच्छा किया है। यहाँ तक
कि वह बहरों को सुनने की और गूँगों
को बोलने की शक्ति देता है।"

8 उन दिनों, जब एक बार फिर एक
बड़ी भीड़ जमा थी और उनके पास
खाने को कुछ न था, तो यीशु ने चेलों
को बुलाकर उनसे कहाः **2** "इस भीड़

मर 7:31* या, "दस शहर।"

को देखकर मुझे तरस आता है, क्योंकि
इन्हें मेरे साथ रहते हुए तीन दिन बीत
चुके हैं और इनके पास खाने के लिए
कुछ भी नहीं है। **3** अगर मैं इन्हें
भूखा ही घर भेज दूँ, तो वे रास्ते में ही
पस्त हो जाएँगे। इनमें से कुछ तो बहुत
दूर से आए हैं।” **4** मगर उसके चेलों
ने उससे कहा: “यहाँ इस सुनसान जगह
पर कोई कहाँ से इतनी रोटियाँ लाए कि ये
भरपेट खा सकें?” **5** फिर भी यीशु ने
उनसे पूछा: “तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ
हैं?” उन्होंने कहा: “सात।” **6** फिर
उसने भीड़ को ज़मीन पर आराम से बैठने
की हिदायत दी और वे सातों रोटियाँ लीं,
प्रार्थना में धन्यवाद दिया और तोड़कर
अपने चेलों को देने लगा कि वे उन्हें बाँट
दें। तब चेलों ने ये रोटियाँ लोगों में बाँट
दीं। **7** उनके पास कुछ छोटी मछ-
लियाँ भी थीं। उसने मछलियों के लिए
प्रार्थना में धन्यवाद दिया और चेलों से
कहा कि इन्हें भी बाँट दें। **8** तब
लोगों ने भरपेट खाया और बचे हुए टुकड़े
इकट्ठे किए, जिनसे सात बड़े-टोकरे भर
गए। **9** खानेवालों में आदमियों की
गिनती करीब चार हज़ार थी। आखिर में
उसने उन्हें विदा किया।

10 वह फौरन अपने चेलों के
साथ नाव पर चढ़ गया और दलमनूता
के इलाकों में आया। **11** यहाँ फरीसी
निकलकर आए और उससे बहस करने
लगे। उन्होंने यीशु की परीक्षा करने के
लिए माँग की कि वह उन्हें आकाश से
कोई निशानी दिखाए। **12** तब उसने
अपने दिल में गहरी आह भरी और
कहा: “यह पीढ़ी हमेशा किसी हैरतअँगेज़
निशानी की ताक में क्यों रहती है? मैं
सच कहता हूँ, इस पीढ़ी को कोई निशानी
नहीं दी जाएगी।” **13** इसी के साथ,
वह उन्हें छोड़कर फिर से नाव पर चढ़
गया और उस पार चला गया।

14 ऐसा हुआ कि चेले अपने साथ
रोटियाँ लेना भूल गए थे और नाव में
उनके पास एक रोटी को छोड़ और कुछ
नहीं था। **15** यीशु ने यह कहकर उन्हें
सख्ती से हुक्म दिया और खबरदार किया:
“अपनी आँखें खुली रखो और फरीसियों
के खमीर और हेरोदेस के खमीर से
चौकन्ने रहो।” **16** इस पर वे एक-
दूसरे से बहस करने लगे कि वे अपने
साथ रोटियाँ क्यों नहीं लाए। **17** यह
देखकर यीशु ने उनसे कहा: “तुम इस
बात पर क्यों बहस कर रहे हो कि तुम्हारे
पास रोटियाँ नहीं हैं? क्या तुम अभी-भी
नहीं जान सके और इसके मायने नहीं
समझ सके? क्या तुम्हारे मन समझने
में मंद हो गए हैं? **18** ‘आँखें होते
हुए भी तुम नहीं देखते और कान होते
हुए भी तुम नहीं सुनते?’ क्या तुम्हें
याद नहीं, **19** जब मैंने पाँच हज़ार
आदमियों के लिए पाँच रोटियाँ तोड़ीं, तब
तुमने टुकड़ों से भरी कितनी टोकरियाँ
उठायी थीं?” उन्होंने कहा: “बारह।”
20 “जब मैंने चार हज़ार आदमियों के
लिए सात रोटियाँ तोड़ीं, तब तुमने टुकड़ों
से भरे हुए जो बड़े-टोकरे उठाए थे उनकी
गिनती क्या थी?” उन्होंने कहा: “सात।”

21 इस पर यीशु ने उनसे कहा: “क्या
तुम्हें अभी-भी समझ में नहीं आया कि मैं
किस बारे में बात कर रहा हूँ?”

22 अब वे बैतसैदा में आए।
यहाँ लोग उसके पास एक अंधे आदमी
को लाए और उन्होंने यीशु से बिनती
की कि वह उसे छूए। **23** उसने उस
अंधे आदमी का हाथ पकड़ा और उसे
गाँव के बाहर ले गया। यीशु ने उसकी
आँखों पर थूककर अपने हाथ उस पर
रखे और उससे पूछा: “क्या तुझे कुछ
दिखायी दे रहा है?” **24** उस आदमी
ने ऊपर देखा और कहा: “मुझे लोग
दिखाई तो देते हैं, मगर ऐसे लग रहे हैं
जैसे चलते-फिरते पेड़ हों।” **25** फिर
यीशु ने दोबारा उस आदमी की आँखों पर
हाथ रखे, और उसे साफ-साफ दिखायी
दिया और वह अच्छा हो गया। अब उसे
सबकुछ एकदम साफ-साफ दिखायी देने
लगा। **26** तब यीशु ने यह कहकर
उसे घर भेजा: “अभी गाँव में न जाना।”

27 यीशु और उसके चेले अब कैस-
रिया फिलिप्पी के गाँवों में जाने के लिए
निकल पड़े। रास्ते में वह अपने चेलों
से यह सवाल पूछने लगा: “लोग मेरे
बारे में क्या कहते हैं, मैं कौन हूँ?”
28 उन्होंने कहा: “कुछ कहते हैं, यूहन्ना
बपतिस्मा देनेवाला और दूसरे एलिय्याह,
और कुछ कहते हैं भविष्यवक्ताओं में
से एक।” **29** फिर उसने यही सवाल
चेलों से पूछा: “लेकिन, तुम क्या कहते
हो, मैं कौन हूँ?” पतरस ने जवाब दिया:
“तू मसीह है।” **30** इस पर उसने उन्हें
सख्त हिदायत दी कि किसी को उसके
बारे में न बताएँ। **31** फिर यीशु चेलों
को सिखाकर समझाने लगा कि यह ज़रूरी
है कि इंसान का बेटा कई दुःख-तक-
लीफें सहे और बुज़ुर्ग, प्रधान याजक और
शास्त्री उसे ठुकरा दें और वह मार डाला
जाए। फिर तीन दिन बाद जी उठे।
32 वह बेधड़क होकर उन्हें यह बात
बता रहा था। मगर पतरस उसे अलग ले
गया और झिड़कने लगा। **33** इस पर
यीशु ने मुड़कर अपने चेलों की तरफ
देखा और पतरस को झिड़का और कहा:
“अरे शैतान, मेरे सामने से दूर हो जा,
क्योंकि तेरी सोच परमेश्वर जैसी नहीं,
बल्कि इंसानों जैसी है।”

34 अब उसने भीड़ को अपने चेलों
समेत पास बुलाया और उनसे कहा:
“अगर कोई मेरे पीछे आना चाहता
है, तो वह खुद से इनकार करे और
अपनी यातना की सूली* उठाए और मेरे
पीछे चलता रहे। **35** क्योंकि जो कोई
अपनी जान बचाना चाहता है वह उसे
खोएगा, मगर जो कोई मेरी और खुश-
खबरी की खातिर अपनी जान गँवाता
है वह उसे बचाएगा। **36** वाकई,
अगर एक इंसान सारा जहान हासिल
कर ले और अपनी जान देकर इसकी
कीमत चुकाए, तो उसे क्या फायदा?
37 एक इंसान अपनी जान के बदले
भला क्या दे सकता है? **38** जो कोई
इस विश्वासघाती* और पापी पीढ़ी के

मर 8:34* अतिरिक्त लेख 6 देखें। **38*** शाब्दिक,
“व्यभिचारी।”

सामने मेरा चेला होने और मेरे वचनों पर
विश्वास करने में शर्मिंदा महसूस करता
है, इंसान का बेटा भी ऐसे को उस वक्त
स्वीकार करने में शर्मिंदा महसूस करेगा,
जब वह अपने पिता से मिले वैभव में
पवित्र स्वर्गदूतों के साथ आएगा।”

9 यीशु ने उनसे यह भी कहा: “मैं
तुमसे सच कहता हूँ, यहाँ जो खड़े
हैं उनमें से कुछ ऐसे हैं जो तब तक
मौत का मुँह हरगिज़ न देखेंगे, जब
तक कि पहले वे परमेश्वर के राज
को शक्ति के साथ राज करता हुआ
न देख लें।” **2** इसके छः दिन बाद
यीशु ने पतरस, याकूब और यूहन्ना को
अपने साथ लिया और वह उनको एक
ऊँचे पहाड़ पर ले गया, जहाँ इनके सिवा
कोई और नहीं था। तब इनके सामने
यीशु का रूप बदल गया। **3** उसके
कपड़े चमकने लगे और इतने उजले
सफेद हो गए जितना कि दुनिया का
कोई भी धोबी धोकर सफेद नहीं कर
सकता। **4** और चेलों को एलिय्याह
और मूसा दिखायी दिए और वे दोनों यीशु
से बातें कर रहे थे। **5** यह देखकर
पतरस ने यीशु से कहा: “गुरु,* हमारा
यहाँ रहना अच्छा है। इसलिए हमें तीन
तंबू खड़े करने दे, एक तेरे लिए, एक
मूसा के लिए और एक एलिय्याह के
लिए।” **6** सच तो यह है कि पतरस
की समझ में नहीं आ रहा था कि उसे
क्या कहना चाहिए, क्योंकि वे बहुत डर
गए थे। **7** फिर एक बादल उभरा
और उन पर छा गया और बादल में से
यह आवाज़ आयी: “यह मेरा प्यारा बेटा
है, इसकी सुनो।” **8** मगर एकाएक
जब चेलों ने आस-पास नज़र डाली तो
देखा कि अब वहाँ उनके साथ यीशु के
सिवा और कोई न था।

9 जब वे पहाड़ से नीचे उतर रहे
थे, तो यीशु ने उन्हें सख्ती से आदेश
दिया कि जब तक इंसान का बेटा
मरे हुओं में से जी न उठे, तब तक
उन्होंने जो देखा है वह किसी से न कहें।
10 चेलों ने यीशु की इस बात की
गाँठ बाँध ली। मगर वे आपस में चर्चा
करने लगे कि मरे हुओं में से जी उठने
की जो बात उसने कही, उसका क्या
मतलब है। **11** उन्होंने यीशु से यह
सवाल किया: “शास्त्री क्यों कहते हैं कि
पहले एलिय्याह का आना ज़रूरी है?”
12 उसने कहा: “यह बात सच है कि
एलिय्याह पहले आएगा और सबकुछ
बहाल करेगा। मगर एलिय्याह के आने
का उन बातों से क्या नाता है जो इंसान
के बेटे के बारे में शास्त्र में लिखी हैं, यानी
इन बातों से कि उसे बहुत-सी दुख-तक-
लीफें झेलनी पड़ेंगी और उसके साथ ऐसा
सलूक किया जाएगा, मानो उसका कोई
मोल न हो? **13** मगर मैं तुमसे कहता
हूँ कि एलिय्याह दरअसल आ चुका है
और ठीक जैसा उसके बारे में लिखा है,
उन्होंने उसके साथ वह सब किया जो वे
करना चाहते थे।”

14 अब जब वे बाकी चेलों की तरफ
आए, तो उन्होंने देखा कि लोगों की भीड़

मर 9:5* इब्रानी में *“रब्बी।”*

उनके आस-पास खड़ी है और शास्त्री
उनसे बहस कर रहे हैं। **15** मगर जैसे
ही भीड़ ने यीशु को देखा, वे हक्के-बक्के
रह गए और भागकर उसके पास आए
और उसका स्वागत किया। **16** यीशु
ने उनसे पूछा: "तुम उनके साथ किस बात
पर बहस कर रहे हो?" **17** तब भीड़
में से एक ने जवाब दिया: "गुरु, मैं अपने
बेटे को तेरे पास लाया था, क्योंकि
उसमें एक गूँगा दुष्ट दूत समाया है।
18 और जहाँ कहीं वह मेरे बेटे को
पकड़ता है, वहीं ज़मीन पर पटक देता है
और मेरा बेटा मुँह से झाग निकालने
लगता है, दाँत पीसता है और बिलकुल
बेजान हो जाता है। मैंने तेरे चेलों से इस
दुष्ट दूत को निकालने के लिए कहा, मगर
वे निकाल न सके।" **19** यह सुनकर
यीशु ने उनसे कहा: "हे अविश्वासी पीढ़ी,
मैं और कब तक तुम्हारे साथ रहूँ? कब
तक मैं तुम्हारी सहूँ? लड़के को मेरे
पास लाओ।" **20** वे उसे यीशु के
पास ले आए। मगर जैसे ही उस दुष्ट
स्वर्गदूत ने यीशु को देखा, उसने लड़के
को मरोड़ा और वह लड़का ज़मीन पर
गिर पड़ा और लोटने और झाग उगलने
लगा। **21** तब यीशु ने लड़के के पिता
से पूछा: "इसकी यह हालत कब से है?"
उसने कहा: "बचपन से। **22** इसकी
जान लेने के लिए इस दुष्ट दूत ने कई
बार इसे आग में झोंका है, तो कई बार
पानी में गिराया है। लेकिन अगर तू कुछ
कर सके, तो हम पर तरस खा और
हमारी मदद कर।" **23** यीशु ने उससे
कहा: "क्या तू यह कह रहा है, 'अगर
तू कुछ कर सके'? इंसान में विश्वास
हो, तो उसके लिए सब कुछ मुमकिन
है।" **24** उसी वक्त उस बच्चे का
पिता पुकार उठा: "मुझमें विश्वास है,
लेकिन जहाँ मेरे विश्वास में कमी है, वहाँ
मेरी मदद कर!"

25 यह देखकर कि लोगों की
एक भीड़ उनकी तरफ दौड़ी चली आ
रही है, यीशु ने उस दुष्ट स्वर्गदूत को
डाँटा और उससे कहा: "हे गूँगे और
बहरे दूत, मैं तुझे हुक्म देता हूँ, उसमें
से बाहर निकल आ और आइंदा कभी
उसमें मत समाना।" **26** तब वह दुष्ट
दूत ज़ोर से चिल्लाया और लड़के को
बहुत मरोड़ने के बाद उसमें से निकल
गया। वह लड़का मुरदा-सा हो गया, इस-
लिए ज़्यादातर लोग कहने लगे: "यह
तो मर गया है!" **27** लेकिन यीशु ने
उसका हाथ पकड़कर उसे उठाया और
वह खड़ा हो गया। **28** इसके बाद,
यीशु जब एक घर में गया तो उसके चेले
अकेले में उससे पूछने लगे: "हम उस
दुष्ट दूत को क्यों नहीं निकाल पाए?"
29 तब यीशु ने उनसे कहा: "इस किस्म
का दुष्ट दूत प्रार्थना के सिवा किसी और
तरीके से नहीं निकाला जा सकता।"

30 वे उस जगह से निकल पड़े और
गलील से होकर गुज़रे, मगर यीशु नहीं
चाहता था कि किसी को उनके सफर के
बारे में मालूम पड़े। **31** क्योंकि इस
दौरान वह अपने चेलों को सिखा रहा था
और उन्हें यह बता रहा था: "इंसान का

बेटा लोगों के हवाले किया जाएगा और
वे उसे मार डालेंगे, लेकिन मारे जाने के
बावजूद, वह तीन दिन बाद जी उठेगा।"
32 मगर वे उसकी बात नहीं समझ
रहे थे और उससे सवाल पूछने से भी
डरते थे।

33 फिर वे कफरनहूम आए। जब
वह घर के अंदर था, तो यीशु ने उनसे
यह सवाल किया: "तुम रास्ते में किस बात
को लेकर झगड़ रहे थे?" **34** वे चुप्पी
साधे रहे, क्योंकि वे रास्ते में इस बात को
लेकर झगड़ रहे थे कि हम में बड़ा कौन
है। **35** इसलिए वह बैठ गया और
उसने उन बारहों को बुलाकर उनसे कहा:
"अगर कोई सबसे बड़ा बनना चाहता है,
तो ज़रूरी है कि वह सबसे छोटा बने और
सबका सेवक बने।" **36** फिर उसने
एक छोटे बच्चे को लेकर उनके बीच में
खड़ा किया और उसे अपनी बाँहों में भर-
कर उनसे कहा: **37** "जो कोई मेरे
नाम से इस बच्चे-समान किसी को स्वीकार
करता है, वह मुझे स्वीकार करता है।
और जो मुझे स्वीकार करता है, वह सिर्फ
मुझे नहीं बल्कि उसे भी स्वीकार करता
है जिसने मुझे भेजा है।"

38 यूहन्ना ने उससे कहा: "गुरु,
हमने देखा कि एक आदमी तेरे नाम
से दुष्ट स्वर्गदूतों को निकाल रहा है
और हमने उसे रोकने की कोशिश की,
क्योंकि वह हमारे साथ नहीं आता था।"
39 लेकिन यीशु ने कहा: "उसे रोकने
की कोशिश मत करो, क्योंकि ऐसा कोई
नहीं जो मेरे नाम से शक्तिशाली काम करे
और पलटकर मुझे बदनाम भी कर सके।
40 क्योंकि जो हमारे खिलाफ नहीं, वह
हमारे साथ है। **41** जो कोई तुम्हें इस-
लिए एक प्याला पानी पिलाता है कि तुम
मसीह के हो, मैं तुमसे सच कहता हूँ कि
वह हरगिज़ अपना इनाम न खोएगा।
42 लेकिन जो कोई विश्वास करनेवाले
ऐसे छोटों में से किसी के विश्वास से गिर
जाने की वजह बनता है, उसके लिए भला
होगा कि उसके गले में चक्की का वह
पाट लटकाया जाए जिसे गधा खींचता है,
और उसे समुद्र में फेंक दिया जाए।

43 और अगर तेरा हाथ तुझसे पाप
करवा रहा है तो उसे काट डाल। तेरे
लिए एक हाथ के बिना जीवन पाना
भला है, बजाय इसके कि तू दोनों हाथों
समेत *गेहन्ना** में डाला जाए, हाँ,
उस आग में जो कभी बुझायी नहीं जा
सकती। **44*** —— **45** और अगर
तेरा पैर तुझसे पाप करवा रहा है, तो
उसे काट डाल। तेरे लिए एक पैर के बिना
जीवन पाना भला है, बजाय इसके कि तू
दोनों पैरों समेत *गेहन्ना* में डाला जाए।
46* —— **47** और अगर तेरी आँख
तुझसे पाप करवा रही है, तो उसे निकाल-
कर दूर फेंक दे। तेरे लिए एक आँख के
बिना परमेश्वर के राज में दाखिल होना
भला है, बजाय इसके कि तुझे दोनों आँखों
समेत *गेहन्ना* में फेंका जाए, **48** जहाँ

मर 9:43* यरूशलेम के बाहर कूड़ा-करकट जलाने की जगह। अतिरिक्त लेख 9 देखें। **44*** मत्ती 17:21 फुटनोट देखें। **46*** मत्ती 17:21 फुट-नोट देखें।

कीड़े कभी नहीं मरते और आग कभी
नहीं बुझती।

49 क्योंकि ऐसे लोगों पर इस तरह
आग बरसायी जाएगी, जैसे कोई इंसान
नमक छिड़कता है। **50** नमक बढ़िया
है, लेकिन नमक अगर कभी फीका हो
जाए, तो तुम उसे किस चीज़ से ज़ायकेदार
बनाओगे? खुद में नमक जैसा ज़ायका
रखो और आपस में शांति बनाए रखो।”

10 यीशु उठा और वहाँ से निकल-
कर यरदन के पार और यहू-
दिया प्रदेश की सरहदों के पास आया।
उसके पास फिर से भीड़ जमा हो गयी।
और जैसा उसका दस्तूर था, वह उन्हें
एक बार फिर सिखाने लगा। **2** अब
फरीसी आए और यीशु की परीक्षा लेने के
लिए उससे यह सवाल किया: एक आदमी
के लिए अपनी पत्नी को तलाक देना मूसा
के कानून के हिसाब से सही है या नहीं?
3 जवाब में उसने कहा: “मूसा ने
तुम्हें क्या आज्ञा दी है?” **4** उन्होंने
कहा: “मूसा ने तलाकनामा लिखकर पत्नी
को तलाक देने की इजाज़त दी है।”
5 मगर यीशु ने उनसे कहा: “तुम्हारे
दिलों की कठोरता की वजह से उसने
तुम्हें यह आज्ञा लिखकर दी। **6** मगर,
सृष्टि की शुरूआत से ‘परमेश्वर ने उन्हें
नर और नारी बनाया था। **7** इस
वजह से पुरुष अपने माता-पिता को छोड़
देगा **8** और पति-पत्नी दोनों एक तन
होंगे।’ तो वे अब दो नहीं रहे बल्कि एक
तन हैं। **9** इसलिए जिसे परमेश्वर ने
एक बंधन में बाँधा है,* उसे कोई इंसान
अलग न करे।” **10** एक बार फिर
जब वह घर में था, तो चेले इस बारे में
उससे सवाल पूछने लगे। **11** यीशु ने
उनसे कहा: “जो कोई अपनी पत्नी को
तलाक देता है और दूसरी से शादी
करता है, वह उस पहली का हक मारने
और शादी के बाहर यौन-संबंध रखने का
गुनहगार है। **12** और अगर एक स्त्री
अपने पति को तलाक देने के बाद कभी
किसी दूसरे से शादी करती है, तो वह
शादी के बाहर यौन-संबंध रखने की
गुनहगार है।”

13 अब लोग यीशु के पास छोटे
बच्चों को लाने लगे ताकि वह उन्हें अपने
हाथ से छूए, मगर चेलों ने उन्हें डाँटा।
14 यह देखकर यीशु नाराज़ हुआ और
उनसे कहा: “बच्चों को मेरे पास आने
दो। उन्हें रोकने की कोशिश मत करो,
क्योंकि परमेश्वर का राज ऐसों ही का
है। **15** मैं तुमसे सच कहता हूँ, जो
कोई परमेश्वर के राज को एक छोटे
बच्चे की तरह स्वीकार नहीं करता वह
उसमें किसी भी तरह दाखिल न होगा।”
16 और उसने बच्चों को अपनी बाँहों में
लिया और उन पर हाथ रखकर उन्हें
आशीष देने लगा।

17 जब वह निकलकर अपने रास्ते
जा रहा था, तो एक आदमी दौड़कर आया
और उसके सामने घुटनों के बल गिरा
और उससे यह सवाल किया: “अच्छे गुरु,
हमेशा की ज़िंदगी का वारिस बनने के

मर 10:9* शाब्दिक, “परमेश्वर ने जूए में जोड़ा है।”

लिए मैं क्या काम करूँ?” 18 यीशु
ने उससे कहा: “तू मुझे अच्छा क्यों
कहता है? कोई अच्छा नहीं है, सिवा एक
के, और वह है परमेश्‍वर। 19 तू
आज्ञाओं को तो जानता है, ‘खून न
करना, शादी के बाहर यौन-संबंध न
रखना, चोरी न करना, झूठी गवाही
न देना, किसी को न ठगना, अपने पिता
और अपनी माँ का आदर करना।’ ”
20 उस आदमी ने कहा: “गुरु, ये सारी
बातें तो मैं लड़कपन से ही मानता आया
हूँ।” 21 यीशु ने प्यार से उसकी तरफ
देखा और कहा: “तुझमें एक चीज़ की
कमी है: जा और जो कुछ तेरे पास है
उसे बेचकर कंगालों को दे दे क्योंकि तुझे
स्वर्ग में खज़ाना मिलेगा और आकर मेरा
चेला बन जा और मेरे पीछे हो ले।”
22 मगर इस बात पर वह उदास हो
गया और दुःखी होकर चला गया, क्योंकि
उसके पास बहुत धन-संपत्ति थी।

23 यीशु ने चारों तरफ देखने के
बाद अपने चेलों से कहा: “पैसेवालों के
लिए परमेश्‍वर के राज में दाखिल होना
कितना मुश्‍किल होगा!” 24 मगर
चेले उसकी बातें सुनकर ताज्जुब करने
लगे। इसलिए यीशु ने उनसे एक बार
फिर कहा: “बच्चो, परमेश्‍वर के राज में
दाखिल होना कितनी मुश्‍किल बात है!
25 परमेश्‍वर के राज में एक दौलतमंद
आदमी के दाखिल होने से, एक ऊँट
का सुई के छेद से निकल जाना ज़्यादा
आसान है।” 26 इस पर उन्हें और
भी हैरानी हुई और उन्होंने उससे कहा:
“तो फिर, किसका उद्धार हो सकता है?”
27 यीशु ने सीधे उनकी तरफ देखते हुए
कहा: “इंसानों के लिए यह नामुमकिन है,
मगर परमेश्‍वर के लिए नहीं, क्योंकि पर-
मेश्‍वर के लिए सबकुछ मुमकिन है।”
28 पतरस उससे कहने लगा: “देख! हम
तो सबकुछ छोड़कर तेरे पीछे चल रहे
हैं।” 29 यीशु ने कहा: “मैं तुम लोगों
से सच कहता हूँ, ऐसा कोई नहीं जिसने
मेरी और खुशखबरी की खातिर, घर
या भाइयों या बहनों या पिता या माँ या
बच्चों या खेतों को छोड़ा हो, 30 और
जो इस ज़माने में घरों, भाइयों और बहनों
और माँओं और बच्चों और खेतों का सौ
गुना न पाए पर ज़ुल्मों के साथ, और
आनेवाली दुनिया* में हमेशा की ज़िंदगी।
31 फिर भी, बहुत-से जो पहले हैं वे
आखिरी होंगे और जो आखिरी हैं वे
पहले।”

32 अब वे यरूशलेम के रास्ते पर
बढ़े चले जा रहे थे और यीशु उनके आगे-
आगे चल रहा था और चेलों को ताज्जुब
हो रहा था। मगर जो उनके पीछे-पीछे
चल रहे थे उन्हें डर लगने लगा। एक
बार फिर वह उन बारहों को अलग ले
गया और उन्हें वे बातें बताने लगा जो
उस पर गुज़रनी तय थीं: 33 “देखो,
हम यरूशलेम जा रहे हैं और इंसान का
बेटा प्रधान याजकों और शास्त्रियों के
हवाले किया जाएगा और वे उसे मौत की
सज़ा सुनाएँगे और उसे दूसरी जातियों के
लोगों के हवाले करेंगे। 34 वे उसका
मज़ाक उड़ाएँगे और उस पर थूकेंगे और

मर 10:30* या, “दुनिया की व्यवस्था।”

कोड़े लगाएँगे और उसे मार डालेंगे, मगर
वह तीन दिन बाद जी उठेगा।”

35 जब्दी के दो बेटे, याकूब और
यूहन्ना उसके पास आए और उससे
कहा: “गुरु, हम चाहते हैं कि हम तुझसे
जो कुछ कहें, तू हमारे लिए कर
दे।” **36** उसने उनसे कहा: “तुम क्या
चाहते हो, मैं तुम्हारे लिए क्या करूँ?”
37 उन्होंने कहा: “जब तू महिमा का पद
पाएगा, तब हममें से एक को अपने दाएँ
और दूसरे को अपने बाएँ बैठने देना।”
38 मगर यीशु ने उनसे कहा: “तुम नहीं
जानते कि तुम क्या माँग रहे हो। क्या
तुम वह प्याला पी सकते हो जिसे मैं पी
रहा हूँ? या, क्या वह बपतिस्मा ले सकते
हो जिसमें मेरा बपतिस्मा हो रहा है?”
39 उन्होंने कहा: “हम कर सकते हैं।”
इस पर यीशु ने उनसे कहा: “जो प्याला
मैं पी रहा हूँ, उसे तुम पीओगे, और जैसा
बपतिस्मा मेरा हो रहा है, वैसा बपतिस्मा
तुम्हारा भी होगा। **40** मगर मेरी दायीं
या बायीं तरफ बैठने की इजाज़त देना
मेरे अधिकार में नहीं, लेकिन ये जगह
उनके लिए हैं जिनके लिए ये तैयार की
गयी हैं।”

41 जब बाकी दस ने इस बारे में
सुना, तो वे याकूब और यूहन्ना पर
भड़कने लगे। **42** मगर यीशु ने चेलों
को अपने पास बुलाकर उनसे कहा:
“तुम जानते हो कि दुनिया में जिन्हें
राज करनेवाले माना जाता है, वे लोगों
पर हुक्म चलाते हैं और उनके बड़े-
बड़े लोग उन पर अधिकार जताते हैं।
43 मगर तुम्हारे बीच ऐसा नहीं है,
बल्कि तुममें जो बड़ा बनना चाहता है, उसे
तुम्हारा सेवक होना चाहिए। **44** और
जो कोई तुममें पहला होना चाहता है, उसे
सबका दास होना चाहिए। **45** क्योंकि
इंसान का बेटा भी सेवा करवाने नहीं,
बल्कि सेवा करने आया है और इसलिए
आया है कि बहुतों की फिरौती के लिए
अपनी जान बदले में दे।”

46 और वे यरीहो शहर में आए।
मगर जब यीशु और उसके चेले और
भारी तादाद में लोग, यरीहो से बाहर जा
रहे थे, तो (तिमाई का बेटा) बरतिमाई
नाम का एक अंधा भिखारी सड़क के
किनारे बैठा था। **47** जब उसने सुना
कि यह यीशु नासरी है, तो वह चिल्ला-
कर कहने लगा: “दाविद के वंशज, यीशु,
मुझ पर दया कर!” **48** इस पर कई
लोगों ने उसे कड़ाई से कहा कि चुप हो
जाए, मगर वह और ज़्यादा ज़ोर से
चिल्लाता रहा: “दाविद के वंशज, मुझ
पर दया कर!” **49** इस पर यीशु रुक
गया और उसने कहा: “उसे बुलाओ।”
और उन्होंने उस अंधे आदमी को यह
कहकर बुलाया: “हिम्मत रख, खड़ा हो,
वह तुझे बुला रहा है।” **50** उसने
अपना चोगा फेंका और उछलकर खड़ा हो
गया और यीशु के पास गया। **51** तब
यीशु ने उससे कहा: “तू क्या चाहता है,
मैं तेरे लिए क्या करूँ?” उस अंधे आदमी
ने उससे कहा: “हे मेरे गुरु,* मेरी आँखों
की रौशनी लौट आए।” **52** यीशु ने

मर 10:51* इब्रानी में *“रब्बोनी।”*

उससे कहा: “जा, तेरे विश्वास ने तुझे
ठीक किया है।” उसी घड़ी उसकी आँखों
की रौशनी लौट आयी और वह रास्ते में
यीशु के पीछे हो लिया।

11 अब वे यरूशलेम के पास, जैतून
पहाड़ पर बैतफगे और बैत-
निय्याह गाँव पहुँचनेवाले थे। वहाँ उसने
अपने दो चेलों को यह कहकर भेजा:
2 “जो गाँव तुम्हें नज़र आ रहा है उसमें
जाओ। जैसे ही तुम उसमें दाखिल होगे,
तुम्हें एक गधी का बच्चा बंधा हुआ
मिलेगा, जिस पर आज तक कोई आदमी
नहीं बैठा। उसे खोलकर ले आओ।
3 अगर कोई तुमसे कहता है, ‘तुम यह
क्यों कर रहे हो?’ तो कहना, ‘प्रभु को
इसकी ज़रूरत है, और वह इसे जल्द यहाँ
वापस भेज देगा।’” 4 इसलिए वे चले
गए और उन्होंने गली के नुक्कड़ पर एक
दरवाज़े के पास गधी के बच्चे को बंधा
हुआ पाया, और उन्होंने उसे खोल लिया।
5 मगर वहाँ खड़े कुछ लोग उनसे पूछने
लगे: “तुम गधी के बच्चे को क्यों खोल
रहे हो?” 6 चेलों ने इनसे ठीक वही
कहा जो यीशु ने बताया था। तब उन्होंने
चेलों को जाने दिया।

7 वे गधी के बच्चे को यीशु के
पास ले आए। उन्होंने अपने ओढ़ने उस
पर डाले और वह उस पर बैठ गया।
8 साथ ही, बहुतों ने अपने ओढ़ने रास्ते
में बिछाए, जबकि दूसरों ने रास्ते के
किनारे से पेड़ों की डालियाँ काटकर बिछा
दीं। 9 जो लोग आगे-आगे चल रहे
थे और जो पीछे-पीछे आ रहे थे, वे लगा-
तार यह पुकार रहे थे: “बचा ले, हम
बिनती करते हैं!* धन्य है वह जो यहोवा
के नाम से आता है! 10 हमारे पुरखे
दाविद का राज जो आ रहा है, धन्य हो!
स्वर्ग में रहनेवाले, हम बिनती करते हैं,
बचा ले!” 11 और यीशु यरूशलेम में
दाखिल हुआ और मंदिर में गया। उसने
आस-पास की सब चीज़ों पर नज़र डाली।
मगर काफी वक्त हो चुका था, इसलिए
वह उन बारहों के साथ बैतनिय्याह चला
गया।

12 अगले दिन जब वे बैतनिय्याह से
निकल चुके थे, तो यीशु को भूख लगी।
13 दूर से उसकी नज़र एक अंजीर के
पेड़ पर पड़ी, जिसमें पत्तियाँ आयी हुई
थीं। वह यह देखने के लिए उसके पास
गया कि उसे शायद उसमें कुछ फल मिल
जाएँ। मगर नज़दीक पहुँचने पर उसे
पत्तियों को छोड़ कुछ न मिला, क्योंकि
उस वक्त अंजीरों का मौसम नहीं था।
14 इसलिए उसने पेड़ से कहा: “अब से
फिर कभी कोई तेरा फल न खा सके।”
और उसके चेले सुन रहे थे।

15 अब वे यरूशलेम आए। वहाँ वह
मंदिर गया और जो लोग मंदिर के अंदर
बिक्री कर रहे थे और जो खरीदारी कर
रहे थे, वह उन्हें वहाँ से खदेड़ने लगा।
उसने पैसा बदलनेवाले सौदागरों की मेज़ें
और कबूतर बेचनेवालों की चौकियाँ उलट
दीं। 16 वह किसी को भी बर्तन लेकर
मंदिर में से आने-जाने नहीं देता था।
17 मगर वह उन्हें सिखाता और यह

मर 11:9* शाब्दिक, *“होसन्ना।”*

कहता रहा: “क्या यह नहीं लिखा है कि
‘मेरा घर सब जातियों के लिए प्रार्थना
का घर कहलाएगा’? मगर तुम लोगों ने
इसे लुटेरों का अड्डा* बना दिया है।”
18 जब प्रधान याजकों और शास्त्रियों
ने यह सुना, तो वे उसका खात्मा करने
की तरकीब सोचने लगे, क्योंकि वे उससे
डरते थे। इसलिए कि सारी भीड़ उसकी
शिक्षा से लगातार दंग हो रही थी।

19 जब शाम हो गयी, तो वे रोज़
की तरह शहर से बाहर निकल गए।
20 मगर जब वे अगले दिन तड़के सुबह
रास्ते से गुज़र रहे थे, तो उन्होंने देखा
कि वह अंजीर का पेड़ जड़ तक सूख गया
है। **21** इसलिए पतरस ने वह बात
याद करते हुए उससे कहा: “गुरु, देख!
वह अंजीर का पेड़ जिसे तू ने शाप दिया
था, सूख गया है।” **22** जवाब में यीशु
ने उनसे कहा: “परमेश्वर पर विश्वास
रखो। **23** मैं तुमसे सच कहता हूँ कि
जो कोई इस पहाड़ से कहे, ‘यहाँ से
उखड़कर समुद्र में जा गिर,’ और अपने
दिल में ज़रा भी शक न करे मगर
विश्वास रखे कि जो वह कह रहा है वह
हो जाएगा, तो उसके लिए वैसा ही हो
जाएगा। **24** इसीलिए मैं तुमसे कहता
हूँ, जो कुछ तुम प्रार्थना में माँगते हो, यह
विश्वास रखो कि तुम उसे असल में
पा चुके, और वह तुम्हें ज़रूर मिलेगा।
25 जब तुम प्रार्थना करने खड़े हो, तो
तुम्हारे दिल में किसी के खिलाफ जो कुछ
है उसे माफ करो। ताकि तुम्हारा पिता
जो स्वर्ग में है, वह भी तुम्हारे अपराधों
को माफ करे।” **26*** ——

27 फिर वे यरूशलेम आए। जब वह
मंदिर में टहल रहा था, तो प्रधान याजक
और शास्त्री और बुज़ुर्ग उसके पास
आए। **28** और उससे कहने लगे: “तू
ये सब किस अधिकार से करता है? या
किसने तुझे ये सब करने का अधिकार
दिया है?” **29** यीशु ने उनसे कहा:
“मैं भी तुमसे एक सवाल पूछता हूँ।
तुम मुझे जवाब दो, तब मैं भी तुम्हें
बताऊँगा कि मैं ये सब किस अधिकार
से करता हूँ। **30** जो बपतिस्मा यूहन्ना
ने दिया, वह स्वर्ग की तरफ से था
या इंसानों की तरफ से? जवाब दो।”
31 वे आपस में सलाह-मशविरा करने
लगे और यह कहने लगे: “अगर हम
कहें, ‘स्वर्ग की तरफ से,’ तो वह कहेगा,
‘तो फिर क्यों तुमने उसका यकीन नहीं
किया?’ **32** पर हम यह कहने की
जुर्रत कैसे करें कि ‘इंसानों की तरफ से
था’?”—क्योंकि इन धर्मगुरुओं को भीड़
का डर था, इसलिए कि सभी लोग
मानते थे कि यूहन्ना वाकई एक भविष्य-
वक्ता था। **33** इसलिए उन्होंने यीशु
को जवाब दिया: “हम नहीं जानते।”
तब यीशु ने उनसे कहा: “न ही मैं तुम्हें
यह बतानेवाला हूँ कि मैं किस अधिकार
से यह सब करता हूँ।”

12 साथ ही, यीशु उन्हें ये मिसालें
देने लगा: “किसी आदमी ने
अंगूरों का बाग लगाया और उसके चारों

मर 11:17* शाब्दिक, “गुफा।”

मर 11:26* मत्ती 17:21 फुटनोट देखें।

तरफ एक बाड़ा बनाया। उसने अंगूर
रौंदने का हौद खोदा और एक बुर्ज खड़ा
किया। फिर वह अंगूरों का बाग बागबानों
को ठेके पर देकर परदेस चला गया।
2 अंगूरों की कटाई का मौसम आने पर
उसने एक दास को बागबानों के पास
भेजा, ताकि वह अंगूरों की फसल में से
उसका हिस्सा उनसे ले आए। **3** मगर
बागबानों ने उस दास को पकड़ लिया,
उसे पीटा और खाली हाथ भेज दिया।
4 फिर बाग के मालिक ने उनके पास
एक और दास भेजा। बागबानों ने उसका
सिर फोड़ दिया और उसे बेइज़्ज़त किया।
5 फिर मालिक ने एक और दास को
भेजा और उन्होंने उसे मार डाला। मालिक
ने और भी बहुतों को भेजा, मगर कुछ
को उन्होंने पीटा तो कुछ को मार डाला।
6 अब मालिक के पास एक ही रह गया
था, उसका प्यारा बेटा। उसने आखिर में
यह सोचकर बागबानों के पास उसे भेजा,
'वे मेरे बेटे की ज़रूर इज़्ज़त करेंगे।'
7 मगर वे बागबान आपस में कहने लगे,
'यह तो वारिस है। आओ हम इसे मार
डालें, तब इसकी विरासत हमारी हो
जाएगी।' **8** तब उन्होंने उसे पकड़
लिया और मार डाला और उसे अंगूरों के
बाग के बाहर फेंक दिया। **9** अब बाग
का मालिक क्या करेगा? वह आकर उन
बागबानों का खात्मा करेगा और अंगूरों
का बाग दूसरों को ठेके पर दे देगा।
10 क्या तुमने शास्त्र के ये वचन कभी
नहीं पढ़े, 'जिस पत्थर को राजमिस्त्रियों
ने ठुकराया, वही कोने का मुख्य पत्थर
बन गया है।' **11** क्या तुमने यह भी
नहीं पढ़ा, 'यह यहोवा की तरफ से हुआ
है और हमारी नज़र में लाजवाब है'?"

12 यह सुनकर धर्मगुरु उसे पकड़ने
का कोई तरीका ढूँढ़ने लगे, क्योंकि वे
जान गए थे कि उसने यह मिसाल उन्हीं
को मन में रखकर दी थी। लेकिन वे भीड़
से डरते थे। इसलिए वे उसे छोड़कर
चले गए।

13 इसके बाद उन्होंने कुछ फरीसियों
और हेरोदियों के दल के लोगों को यीशु
के पास भेजा ताकि वे उसकी बातों में उसे
पकड़ सकें। **14** वे उसके पास आए
और बोले: "गुरु, हम जानते हैं कि तू
सच्चा है और किसी की परवाह नहीं
करता, क्योंकि तू इंसान की सूरत देख-
कर बात नहीं करता बल्कि सच्चाई के
मुताबिक परमेश्वर का मार्ग सिखाता है:
हमें बता कि सम्राट* को कर देना सही
है या नहीं? **15** हमें कर देना चाहिए
या नहीं?" उनका कपट भाँपकर यीशु ने
उनसे कहा: "तुम मेरी परीक्षा क्यों लेते
हो? एक दीनार लाकर मुझे दिखाओ।"
16 वे एक दीनार लाए। उसने उनसे
कहा: "इस पर किसकी सूरत और किसके
नाम की छाप है?" उन्होंने कहा: "सम्राट
की।" **17** तब यीशु ने कहा: "जो
सम्राट का है वह सम्राट को चुकाओ, मगर
जो परमेश्वर का है वह परमेश्वर को।"
यह जवाब सुनकर वे उस पर बहुत
ताज्जुब करने लगे।

18 अब सदूकी लोग उसके पास

मर 12:14* यूनानी में *"कैसर।"*

आए। सदूकी कहते हैं कि मरे हुओं के
फिर से जी उठने की शिक्षा सच नहीं है।
इन सदूकियों ने यीशु से यह सवाल किया:
19 "गुरु, मूसा ने हमारे लिए लिखा है
कि अगर कोई आदमी बेऔलाद मर
जाए और अपनी पत्नी छोड़ जाए, तो
उसके भाई को चाहिए कि वह अपने मरे
हुए भाई की पत्नी से शादी कर ले
और अपने भाई के लिए उससे औलाद
पैदा करे। **20** सात भाई थे। पहले
ने शादी की मगर बेऔलाद मर गया।
21 तब दूसरे भाई ने उसकी पत्नी से
शादी कर ली, मगर वह भी बेऔलाद
मर गया। तीसरे के साथ भी ऐसा ही
हुआ। **22** सातों भाई बेऔलाद मर
गए। आखिर में वह स्त्री भी मर गयी।
23 तो फिर, जब मरे हुए जी उठेंगे, तब
वह उन सातों में से किसकी पत्नी होगी?
क्योंकि सातों उसे अपनी पत्नी बना चुके
थे।" **24** यीशु ने उनसे कहा: "तुम
बड़ी गलतफहमी में हो। क्या इसकी वजह
यह नहीं कि तुम न तो शास्त्र को जानते
हो, न ही परमेश्वर की शक्ति को?
25 क्योंकि मरे हुओं के जी उठने पर
उनमें न तो पुरुष शादी करेंगे न स्त्रियाँ
ब्याही जाएँगी, मगर वे स्वर्गदूतों की तरह
होंगे। **26** क्या तुमने मरे हुओं के जी
उठने के बारे में, मूसा की किताब में झाड़ी
के किस्से में नहीं पढ़ा कि कैसे परमेश्वर
ने उससे कहा, 'मैं अब्राहम का परमेश्वर
और इसहाक का परमेश्वर और याकूब
का परमेश्वर हूँ'? **27** वह मरे हुओं
का नहीं बल्कि जीवितों का परमेश्वर है।
तुम बड़ी गलतफहमी में हो।"

28 वहाँ आए शास्त्रियों में से एक
उनकी बहस सुन रहा था। उसने यह देख-
कर कि यीशु ने उन्हें क्या ही बेहतरीन
ढंग से जवाब दिया है, उससे पूछा:
"सब आज्ञाओं में सबसे पहले कौन-सी
आज्ञा आती है?" **29** यीशु ने जवाब
दिया: "सबसे पहली यह है, 'हे इसरा-
एल, सुन, हमारा परमेश्वर यहोवा एक
ही यहोवा है। **30** और तुझे अपने
परमेश्वर यहोवा से अपने पूरे दिल,
अपनी पूरी जान, अपने पूरे दिमाग और
अपनी पूरी ताकत से प्यार करना है।'
31 और दूसरी यह है, 'तुझे अपने
पड़ोसी से वैसे ही प्यार करना है जैसे तू
खुद से करता है।' और कोई आज्ञा इनसे
बढ़कर नहीं।" **32** तब उस शास्त्री
ने उससे कहा: "गुरु, तू ने बिलकुल सही
कहा। तेरी बात सच्चाई के मुताबिक है
कि 'वह एक ही है और उसको छोड़ कोई
दूसरा नहीं है।' **33** और उसे अपने
पूरे दिल और अपनी पूरी समझ और
अपनी पूरी ताकत से प्यार करना और
अपने पड़ोसी से वैसे ही प्यार करना जैसे
हम खुद से करते हैं, सारी होमबलियों
और बलिदानों से कहीं बढ़कर है।"
34 यीशु ने यह जानकर कि उस शास्त्री
ने समझदारी के साथ जवाब दिया है,
उससे कहा: "तू परमेश्वर के राज से
ज़्यादा दूर नहीं।" इसके बाद किसी की
भी हिम्मत नहीं हुई कि यीशु से कोई और
सवाल करे।

35 लेकिन, मंदिर में सिखाते वक्त
यीशु ने उनसे यह कहा: "शास्त्री यह कैसे

कहते हैं कि मसीह, दाविद का महज़
एक वंशज है? **36** दाविद ने खुद
पवित्र शक्ति से उभारे जाने पर यह कहा
है, 'यहोवा ने मेरे प्रभु से कहाः "मेरी
दायीं तरफ बैठ जब तक कि मैं तेरे
दुश्मनों को तेरे पैरों तले न कर दूँ।"'
37 दाविद तो खुद मसीह को 'प्रभु' कह-
कर पुकारता है, फिर वह दाविद का
वंशज कैसे हुआ?"

लोगों की बड़ी भीड़ खुशी से उसकी
सुन रही थी। **38** और सिखाते हुए
उसने आगे यह कहाः "शास्त्रियों से खबर-
दार रहो। जिन्हें लंबे-लंबे चोगे पहनकर
घूमना और बाज़ारों के चौक में लोगों
से नमस्कार सुनना अच्छा लगता है।
39 और सभा घरों में सबसे आगे की
जगहों पर बैठना और शाम की दावतों
में सबसे खास जगह लेना उन्हें पसंद है।
40 मगर यही हैं वे जो विधवाओं के घर
हड़प जाते हैं और दिखावे के लिए लंबी-
लंबी प्रार्थनाएँ करते हैं। ये बहुत भारी
दंड पाएँगे।"

41 फिर यीशु दान-पात्रों के सामने
बैठ गया और देखने लगा कि
लोगों की भीड़ कैसे इन दान-पात्रों
में पैसे डाल रही है। वहाँ बहुत-से धनवान
ढेरों सिक्के डाल रहे थे। **42** फिर
एक गरीब विधवा आयी और उसने दो
पैसे* डाले। **43** तब यीशु ने अपने
चेलों को पास बुलाया और उनसे कहाः
"मैं तुमसे सच कहता हूँ कि जो लोग दान-
पात्रों में पैसे डाल रहे हैं उनमें इस
गरीब विधवा ने सबसे ज़्यादा डाला है।
44 क्योंकि उन सभी ने अपनी बहुतायत
में से डाला है, मगर इसने अपनी तंगी
में से, जो कुछ उसके पास था यानी अपनी
सारी जीविका डाल दी है।"

13 जब वह मंदिर से बाहर निकल
रहा था, तो उसके चेलों में से
एक ने उससे कहाः "गुरु, यह देख! कैसे-
कैसे पत्थर और कैसी-कैसी इमारतें हैं!"
2 लेकिन यीशु ने उससे कहाः "क्या तू
इन आलीशान इमारतों को देख रहा है?
यहाँ किसी भी हाल में एक पत्थर के
ऊपर दूसरा पत्थर बाकी न बचेगा जो
ढाया न जाए।"

3 जब वह जैतून पहाड़ पर बैठा था,
जहाँ से सामने मंदिर नज़र आता था, तब
पतरस और याकूब और यूहन्ना और
अन्द्रियास अकेले में उससे पूछने लगेः
4 "हमें बता, ये सब बातें कब होंगी और
उस वक्त की क्या निशानी होगी जब इन
सब बातों का अपने आखिरी वक्त में
पहुँचना तय है?" **5** तब यीशु उनसे
कहने लगाः "खबरदार रहो कि कोई तुम्हें
गुमराह न करे। **6** बहुत-से लोग मेरे
नाम से आएँगे और कहेंगे, 'मैं वही हूँ'
और बहुतों को गुमराह करेंगे। **7** जब
तुम युद्धों का शोरगुल और युद्धों की
खबरें सुनो, तो दहशत न खाना। इन
सबका होना ज़रूरी है, मगर तभी अंत
न होगा।

मर 12:42* शाब्दिक, "दो *लेप्टा।*" एक *लेप्टा* यहू-
दियों का सबसे छोटा सिक्का था, जो पीतल या ताँबे
का हुआ करता था। दो *लेप्टा* एक दिन की मज़दूरी
का 1/64वाँ हिस्सा था।

8 क्योंकि एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र पर
और एक राज्य दूसरे राज्य पर हमला
करेगा। एक-के-बाद-एक कई जगहों पर
भूकंप होंगे और अकाल पड़ेंगे। ये बातें
प्रसव-पीड़ा की तरह मुसीबतों की सिर्फ
शुरूआत होंगी।

9 मगर तुम अपने बारे में खबर-
दार रहो। लोग तुम्हें निचली अदालतों
के हवाले करेंगे और तुम सभा-घरों में
पीटे जाओगे। तुम मेरी वजह से राज्य-
पालों और राजाओं के सामने कठघरे
में पेश किए जाओगे ताकि उन पर गवाही
हो। **10** साथ ही यह ज़रूरी है कि
पहले सब राष्ट्रों में खुशखबरी का प्रचार
किया जाए। **11** मगर जब वे तुम्हें
अदालत के हवाले करने के लिए ले
जा रहे होंगे, तो पहले से फिक्र न
करना कि हम क्या कहेंगे। उस घड़ी
तुम जान जाओगे कि तुम्हें क्या कहना
है, इसलिए वही कहना क्योंकि बोलने-
वाले तुम नहीं, बल्कि पवित्र शक्ति है।
12 भाई, भाई को मरवाने के लिए सौंप
देगा और पिता अपने बच्चे को, और
बच्चे अपने माँ-बाप के खिलाफ खड़े होंगे
और उन्हें मरवा डालेंगे। **13** मेरे नाम
की वजह से तुम सब लोगों की नफरत
के शिकार बनोगे। मगर जो अंत तक
धीरज धरता है, वही उद्धार पाएगा।

14 लेकिन जब तुम उस उजाड़ने-
वाली घिनौनी चीज़ को वहाँ खड़ी देखो
जहाँ उसे खड़ा नहीं होना चाहिए (पढ़ने-
वाला समझ इस्तेमाल करे), तब जो यहू-
दिया में हों वे पहाड़ों की तरफ भागना
शुरू कर दें। **15** जो आदमी घर की
छत पर हो वह नीचे न उतरे, न ही
कुछ लेने के लिए अपने घर के अंदर
जाए। **16** जो आदमी खेत में हो वह
अपना चोगा लेने या उन चीज़ों को लेने
वापस न लौटे जो पीछे छूट गयी हैं।
17 उन दिनों, जो गर्भवती होंगी और
जो बच्चे को दूध पिलाती होंगी, उनके
लिए ये दिन क्या ही भयानक होंगे!
18 प्रार्थना करते रहो कि ऐसा सर्दियों
के मौसम में न हो। **19** क्योंकि वे दिन
ऐसे संकट के होंगे जैसा संकट सृष्टि की
शुरूआत से, जो परमेश्वर ने रची है,
न अब तक हुआ और न फिर कभी
होगा। **20** दरअसल, यहोवा ने अगर
वे दिन घटाए न होते, तो कोई* भी नहीं
बच पाता। मगर चुने हुओं की खातिर
जिन्हें परमेश्वर ने चुना है, उसने वे दिन
घटाए हैं।

21 और फिर अगर कोई तुमसे कहे,
‘देखो! मसीह यहाँ है,’ ‘देखो! वह वहाँ
है,’ तो यकीन न करना। **22** क्योंकि
झूठे मसीह और झूठे भविष्यवक्ता उठ
खड़े होंगे और चमत्कार और अजूबे
दिखाएँगे, ताकि हो सके तो चुने
हुओं को भी बहका लें। **23** इसलिए
तुम चौकन्ने रहो। मैंने तुम्हें सब बातें
पहले से बता दी हैं।

24 मगर उन दिनों, उस संकट के
बाद सूरज अंधियारा हो जाएगा और
चाँद अपनी रौशनी न देगा, **25** तारे

मर 13:20* शाब्दिक, “शरीर।”

आकाश से गिरेंगे और आकाश की
शक्तियाँ हिलायी जाएँगी। **26** और
फिर वे इंसान के बेटे को महाशक्ति और
महिमा के साथ बादलों में आता देखेंगे।
27 और फिर वह स्वर्गदूतों को भेजेगा
और पृथ्वी के इस छोर से लेकर आकाश
के उस छोर तक चारों दिशाओं* से अपने
चुने हुओं को इकट्ठा करेगा।

28 अंजीर के पेड़ की मिसाल से यह
बात सीखो: जैसे ही उसकी नयी डाली
नरम हो जाती है और उस पर पत्तियाँ
आने लगती हैं, तो तुम जान लेते हो कि
गर्मियों का मौसम पास है। **29** उसी
तरह, जब तुम ये बातें होती देखो, तो
जान लो कि इंसान का बेटा पास ही दर-
वाज़े पर है। **30** मैं तुमसे सच कहता
हूँ कि जब तक ये सारी बातें न हो लें,
तब तक यह पीढ़ी हरगिज़ न मिटेगी।
31 आकाश और पृथ्वी मिट जाएँगे,
मगर मेरे शब्द नहीं मिटेंगे।

32 उस दिन या उस वक्त* के
बारे में कोई नहीं जानता, न स्वर्ग के
दूत, न बेटा, बल्कि पिता जानता है।
33 चौकन्ने रहो, आँखों में नींद न आने
दो, क्योंकि तुम नहीं जानते कि तय किया
हुआ वक्त कौन-सा है। **34** यह एक
ऐसे आदमी की तरह है जिसने परदेस
जाने के लिए अपना घर छोड़ा। उसने
अपने दासों को अधिकार दिया और हरेक
को उसका काम सौंपा और दरबान को
जागते रहने का हुक्म दिया। **35** इस-
लिए जागते रहो, क्योंकि तुम नहीं जानते
कि घर का मालिक कब आ रहा है, दिन
ढलने पर,* या आधी रात# को या मुर्गे
के बाँग देने के वक्त△ या तड़के सुबह।⊠
36 ताकि जब वह अचानक आए, तो
तुम्हें सोता हुआ न पाए। **37** मगर जो
मैं तुमसे कहता हूँ, वही सब से कहता हूँ,
जागते रहो।"

14 दो दिन बाद फसह और बिन-
खमीर की रोटियों का त्योहार
था। और प्रधान याजक और शास्त्री
मौका ढूँढ़ रहे थे कि कैसे यीशु को छल
से पकड़ें और मार डालें। **2** फिर भी
वे बार-बार कह रहे थे: "त्योहार के वक्त
नहीं, कहीं ऐसा न हो कि लोग हुल्लड़
मचा दें।"

3 बैतनिय्याह गाँव में शमौन नाम का
एक आदमी था जो पहले कोढ़ी था। यीशु
उसके घर पर खाने की मेज़ से टेक लगाए
था। तब एक स्त्री संगमरमर की बोतल
में, असली जटामाँसी का खुशबूदार तेल

मर 13:27* शाब्दिक, "चारों हवाओं से।" **32*** शाब्दिक, "घड़ी।"

मर 13:35* "दिन ढलने पर।" यूनानियों और रोमियों के मुताबिक रात के चार पहरों का पहला पहर। यह पहर सूरज ढलने से लेकर रात के करीब नौ बजे तक होता था। **35#** "आधी रात।" यूनानियों और रोमियों के मुताबिक रात के चार पहरों का दूसरा पहर। यह पहर रात के करीब नौ बजे से आधी रात तक होता था। **35△** "मुर्गे के बाँग देने के वक्त।" यूनानियों और रोमियों के मुताबिक रात के चार पहरों का तीसरा पहर। यह पहर आधी रात से लेकर रात के करीब तीन बजे तक होता था। **35⊠** "तड़के सुबह।" यूनानियों और रोमियों के मुताबिक रात के चार पहरों का चौथा पहर। यह पहर सुबह करीब तीन बजे से लेकर सूरज निकलने तक होता था।

लेकर आयी, जो बहुत कीमती था। उस
स्त्री ने संगमरमर की बोतल तोड़कर
खोली और यीशु के सिर पर तेल उँडेलने
लगी। **4** इस पर वहाँ मौजूद कुछ
लोग भड़क उठे और आपस में कहने
लगे: “इस खुशबूदार तेल को ऐसे बर-
बाद क्यों किया गया? **5** इसे तीन सौ
दीनार से भी ज़्यादा दाम में बेचकर पैसा
गरीबों को दिया जा सकता था!” उन्हें
उस स्त्री पर बहुत गुस्सा आ रहा था।
6 मगर यीशु ने कहा: “इसे रहने दो।
तुम इस स्त्री को क्यों सताते हो? इसने
तो मेरी खातिर एक बेहतरीन काम किया
है। **7** गरीब तो हमेशा तुम्हारे साथ
होंगे और तुम जब कभी चाहो उनके
साथ भलाई कर सकते हो, मगर मैं हमेशा
तुम्हारे साथ नहीं रहूँगा। **8** वह जो
कर सकती थी उसने किया है। मेरे दफ-
नाए जाने की तैयारी में उसने पहले से
मेरे शरीर पर खुशबूदार तेल मलने का
काम किया है। **9** मैं तुमसे सच कहता
हूँ, सारी दुनिया में जहाँ कहीं खुशखबरी
का प्रचार किया जाएगा, वहाँ इस स्त्री के
इस काम को याद कर इसकी चर्चा की
जाएगी।”

10 यहूदा इस्करियोती जो बारहों में
से एक था, निकलकर प्रधान याजकों के
पास गया ताकि यीशु को धोखे से उनके
हवाले कर दे। **11** जब उन्होंने उसकी
बात सुनी तो वे बेहद खुश हुए और उसे
चाँदी के सिक्के देने का वादा किया। तब
से यहूदा इस ताक में लग गया कि कैसे
सही मौका देखकर यीशु को पकड़वा दे।

12 बिन-खमीर की रोटियों के
त्योहार के पहले दिन,* जब यहूदी अपने
दस्तूर के मुताबिक फसह का पशु बलि
करते थे, उसके चेलों ने उससे कहा: “तू
कहाँ चाहता है कि हम जाकर तेरे लिए
फसह का खाना खाने की तैयारी करें?”
13 इस पर उसने अपने दो चेलों को
यह कहकर भेजा: “शहर में जाओ और
तुम्हें एक आदमी पानी का घड़ा उठाए
हुए मिलेगा। उसके पीछे-पीछे जाना।
14 वह जिस घर में दाखिल हो उस
घर के मालिक से कहना, ‘गुरु पूछता
है: “मेहमानों का वह कमरा कहाँ है,
जहाँ मैं अपने चेलों के साथ फसह का
खाना खाऊँ?”’ **15** फिर वह तुम्हें
एक बड़ा और सजा हुआ ऊपर का
कमरा दिखाएगा। वहाँ हमारे लिए तैयारी
करना।” **16** तब वे चेले निकले और
शहर के अंदर गए और जैसा उसने
बताया था ठीक वैसा ही पाया। और
उन्होंने फसह की तैयारी की।

17 शाम होने पर वह बारहों के साथ
आया। **18** और जब वे मेज़ से टेक
लगाए खा रहे थे, तब यीशु ने कहा: “मैं
तुमसे सच कहता हूँ, तुममें से एक जो
मेरे साथ खा रहा है, मुझे धोखे से पकड़-
वाएगा।” **19** वे दुःखी होने लगे और
एक-एक कर उससे कहने लगे: “वह
मैं तो नहीं हूँ न?” **20** उसने उनसे
कहा: “वह तुम बारहों में से एक है जो मेरे
साथ एक ही कटोरे में निवाला डुबोकर
खाता है। **21** सच है कि इंसान का

मर 14:12* मत्ती 26:17 फुटनोट देखें।

बेटा तो जा ही रहा है, ठीक जैसा उसके
बारे में लिखा है, मगर धिक्कार है उस
आदमी पर जिसके हाथों इंसान का बेटा
पकड़वाया जाएगा! उस आदमी के लिए
अच्छा तो यह होता कि वह पैदा ही न
हुआ होता।"

22 जब उनका खाना जारी था,
तो यीशु ने एक रोटी ली, प्रार्थना में
धन्यवाद किया और उसे तोड़कर उन्हें
दिया और कहा: "यह लो, यह मेरे
शरीर का प्रतीक है।" **23** फिर प्याला
लेकर उसने प्रार्थना में धन्यवाद किया
और उन्हें दिया और उन सबने उसमें से
पीया। **24** तब यीशु ने उनसे कहा:
"यह 'करार के मेरे लहू' का प्रतीक है
जिसे बहुतों की खातिर बहाया जाना है।
25 मैं तुमसे सच कहता हूँ, मैं किसी
भी हाल में यह दाख-मदिरा* उस दिन
तक न पीऊँगा जिस दिन मैं परमेश्वर
के राज में नयी दाख-मदिरा न पीऊँ।"
26 आखिर में, वे परमेश्वर के गुणगान
के भजन गाने के बाद जैतून पहाड़ की
तरफ निकल पड़े।

27 यीशु ने उनसे कहा: "तुम सबका
विश्वास डगमगा जाएगा, क्योंकि लिखा
है, 'मैं चरवाहे को मारूँगा और भेड़ें
तित्तर-बित्तर हो जाएँगी।' **28** लेकिन
मेरे जी उठाए जाने के बाद मैं तुमसे
पहले गलील जाऊँगा।" **29** मगर
पतरस ने उससे कहा: "चाहे ये सभी
विश्वास से क्यों न डगमगा जाएँ,
मगर मेरा विश्वास नहीं डगमगाएगा।"
30 इस पर यीशु ने उससे कहा: "मैं
तुझसे सच कहता हूँ, आज ही, हाँ इसी
रात मुर्गे के दो बार बाँग देने से पहले, तू
तीन बार मुझे जानने से इनकार करेगा।"
31 मगर पतरस बार-बार ज़ोर देकर
कहने लगा: "अगर मुझे तेरे साथ मरना
भी पड़े, तब भी मैं तुझे जानने से हर-
गिज़ इनकार न करूँगा।" उसके साथ-
साथ, बाकी चेले भी यही बात कहने लगे।

32 फिर वे गतसमनी नाम की जगह
पर आए और उसने अपने चेलों से कहा:
"जब तक मैं प्रार्थना करूँ, यहीं बैठे रहो।"
33 फिर उसने पतरस और याकूब और
यूहन्ना को अपने साथ लिया। उसकी
सदमे की सी हालत होने लगी और वह
दुःख से बेहाल होने लगा। **34** उसने
उनसे कहा: "मेरा जी बेहद दुःखी है, यहाँ
तक कि मेरी मरने जैसी हालत है। यहीं
ठहरो और जागते रहो।" **35** फिर
थोड़ा आगे जाकर वह ज़मीन पर गिर-
कर प्रार्थना करने लगा कि अगर मुमकिन
हो तो यह वक्त टल जाए। **36** और
वह कहने लगा: *"हे अब्बा,* हे पिता, तेरे
लिए सबकुछ मुमकिन है। यह प्याला*
मेरे सामने से हटा दे। मगर जो मैं
चाहता हूँ वह नहीं, बल्कि वही हो जो तू
चाहता है।" **37** फिर वह आया और
चेलों को सोता हुआ पाया और उसने पत-
रस से कहा: "शमौन, क्या तू सो रहा है?
क्या तुझमें इतनी भी ताकत नहीं कि थोड़ी
देर मेरे साथ जाग सके? **38** जागते
रहो और प्रार्थना करते रहो ताकि तुम

मर 14:25* शाब्दिक, "अंगूर की बेल की उपज से बनी यह चीज़।"

मर 14:36* मत्ती 26:39 फुटनोट देखें।

परीक्षा में न पड़ो। दिल तो बेशक तैयार
है, मगर शरीर कमज़ोर है।” **39** फिर
वह दोबारा गया और उसने फिर से वही
सब कहकर प्रार्थना की। **40** और वह
फिर से आया और उन्हें सोता हुआ पाया,
क्योंकि उनकी आँखें नींद से भरी थीं। वे
नहीं जानते थे कि उसे क्या जवाब दें।
41 फिर वह तीसरी बार उनके पास
आया और कहाः “तुम ऐसे वक्त में
सो रहे हो और आराम कर रहे हो!
बहुत हुआ! वह वक्त आ गया है! देखो!
इंसान का बेटा धोखे से पापियों के हाथों
में सौंपा जाता है। **42** उठो, आओ
चलें। देखो! मुझे पकड़वानेवाला पास आ
गया है।”

43 जब वह बोल ही रहा था, तब
उसी घड़ी यहूदा जो बारहों में से एक था,
आया और उसके साथ तलवारें और
सोंटे लिए हुए लोगों की भीड़ थी जिसे
प्रधान याजकों और शास्त्रियों और बुज़ुर्गों
ने भेजा था। **44** उसे धोखा देनेवाले
यहूदा ने यह कहकर उन्हें पहले से एक
निशानी दी थीः “जिसे मैं चूमूंगा, वही
यीशु है। उसे गिरफ्तार कर लेना और
होशियारी से ले जाना।” **45** वह सीधे
यीशु की तरफ आया और पास आकर
उससे कहाः “रब्बी!” और उसे चूमा।
46 तब उन्होंने उस पर हाथ डाले और
उसे हिरासत में ले लिया। **47** मगर,
वहाँ जो खड़े थे उनमें से एक चेले
ने अपनी तलवार निकाली और महा-
याजक के दास पर वार कर उसका कान
उड़ा दिया। **48** यीशु ने भीड़ से कहाः
“क्या तुम मुझे तलवारें और सोंटे लेकर
गिरफ्तार करने आए हो, मानो मैं कोई
लुटेरा हूँ? **49** मैं हर दिन तुम्हारे बीच
मंदिर में सिखाया करता था, फिर भी
तुमने मुझे हिरासत में न लिया। यह इस-
लिए हुआ कि शास्त्र के वचन पूरे हों।”

50 तब सब चेले उसे छोड़कर भाग
गए। **51** मगर एक नौजवान, जो
अधनंगे शरीर पर बढ़िया मलमल का
कपड़ा ओढ़े हुए था, थोड़ी दूरी पर रह-
कर उसके पीछे-पीछे आने लगा। मगर
जब भीड़ ने उसे पकड़ने की कोशिश की,
52 तो वह अपना मलमल का कपड़ा
छोड़ उनसे छूटकर अधनंगा भाग गया।

53 अब वे यीशु को महायाजक के
पास ले गए और सारे प्रधान याजक
और बुज़ुर्ग और शास्त्री वहाँ इकट्ठा हुए।
54 मगर पतरस, काफी दूरी पर उसका
पीछा करते हुए महायाजक के आँगन तक
आ गया। वह घर के कर्मचारियों के साथ
तेज़ आग के सामने बैठा आग ताप रहा
था। **55** इस दौरान, प्रधान याजक
और पूरी महासभा* यीशु के खिलाफ
गवाही की खोज में थी ताकि उसे मरवा
डालें, मगर उन्हें एक भी गवाही न मिली।
56 बेशक, बहुत-से उसके खिलाफ झूठी
गवाही दे रहे थे, मगर उनके बयान एक-
दूसरे से मेल नहीं खाते थे। **57** साथ
ही, कुछ लोग उसके खिलाफ खड़े होकर
यह झूठी गवाही दे रहे थेः **58** “हमने
इसे यह कहते सुना है कि मैं हाथ के
बनाए इस मंदिर को ढा दूँगा और तीन

मर 14:55* मत्ती 26:59 फुटनोट देखें।

दिन के अंदर दूसरा मंदिर खड़ा कर दूँगा
जो हाथों से न बना हो।” **59** मगर
इस बारे में भी उनके बयान एक-दूसरे से
मेल नहीं खाते थे।

60 आखिर में महायाजक उनके बीच
खड़ा हुआ और उसने यीशु से यह सवाल
किया: “क्या तू जवाब में कुछ नहीं
कहेगा? ये जो तेरे खिलाफ गवाही दे रहे
हैं, इसके बारे में तुझे क्या कहना है?”
61 मगर यीशु चुप रहा और उसने कोई
जवाब नहीं दिया। एक बार फिर महा-
याजक उससे सवाल करने लगा और
उससे कहा: “क्या तू उस परमधन्य का
बेटा, मसीह है?” **62** तब यीशु ने
कहा: “हाँ मैं हूँ। और तुम लोग इंसान के
बेटे को उस शक्तिशाली की दायीं तरफ
बैठा और आकाश के बादलों के साथ
आता देखोगे।” **63** इस पर महा-
याजक ने अपना अंदर का कुरता फाड़
डाला और कहा: “अब हमें और गवाहों
की क्या ज़रूरत है? **64** तुम लोगों ने
यह तौहीन सुनी है। तुम्हारी क्या राय
है?” उन सबने उसे मौत की सज़ा के
लायक ठहराया। **65** कुछ उस पर
थूकने लगे और उसका मुँह ढाँपकर उसे
घूँसे मारने लगे और उससे कहने लगे:
“भविष्यवाणी कर, तुझे किसने मारा!”
और प्यादों ने उसके मुँह पर थप्पड़ मारे
और उसे ले गए।

66 जब पतरस नीचे आँगन में था,
तो महायाजक की एक नौकरानी आयी।
67 पतरस को आग तापते देख, वह
उस पर नज़रें गड़ाकर बोली: “तू भी इस
नासरी यीशु के साथ था।” **68** मगर
उसने यह कहकर इनकार किया: “न तो
मैं उसे जानता हूँ न मुझे यह समझ आ
रहा है कि तू क्या कह रही है।” तब वह
बाहर ओसारे में चला गया। **69** वहाँ
उस नौकरानी ने उसे देखकर, वहाँ खड़े
लोगों से फिर कहा: “यह भी उनमें से
एक है।” **70** पतरस फिर से इनकार
करने लगा। थोड़ी देर के बाद, एक बार
फिर आस-पास खड़े लोग पतरस से
कहने लगे: “बेशक तू उनमें से एक है,
क्योंकि यकीनन तू एक गलीली है।”
71 मगर वह खुद को कोसने और कसमें
खा-खाकर कहने लगा: “मैं इस आदमी
को नहीं जानता जिसकी तुम बात कर
रहे हो।” **72** उसी घड़ी एक मुर्गे ने
दूसरी बार बाँग दी और पतरस को यीशु
की यह बात याद आयी: “मुर्गे के दो बार
बाँग देने से पहले, तू तीन बार मुझे जानने
से इनकार करेगा।” तब वह और सह न
सका और फूट-फूटकर रोने लगा।

15 सुबह होते ही फौरन प्रधान
याजकों के साथ बुज़ुर्गों और
शास्त्रियों, यानी पूरी महासभा* ने आपस
में सलाह-मशविरा किया। उन्होंने यीशु को
बाँधा और उसे ले गए और पीलातुस# के
हवाले कर दिया। **2** तब पीलातुस ने
यीशु से सवाल किया: “क्या तू यहूदियों
का राजा है?” जवाब में उसने कहा:
“तू खुद यह कहता है।” **3** लेकिन
प्रधान याजक उस पर कई बातों का

मर 15:1* मत्ती 26:59 फुटनोट देखें। **1#** मत्ती 27:2 फुटनोट देखें।

इलज़ाम लगाने लगे। **4** अब पीलातुस एक बार फिर उससे सवाल करने लगा: "क्या तेरे पास कोई जवाब नहीं है? देख, ये तुझ पर कितने इलज़ाम लगा रहे हैं।" **5** मगर यीशु ने आगे कोई जवाब न दिया, इसलिए पीलातुस ताज्जुब करने लगा।

6 ऐसा था कि पीलातुस साल-दर-साल त्योहार के वक्त, किसी एक कैदी को जिसके लिए लोग फरियाद करते थे, रिहा कर दिया करता था। **7** उस वक्त बरअब्बा नाम का एक आदमी कुछ और बागियों के साथ कैद में था। इन सबने बगावत के दौरान खून किया था। **8** अब भीड़ ने ऊपर जाकर पीलातुस से फरियाद की कि जैसा वह उनके लिए करता आया है, वैसा ही करे। **9** जवाब में पीलातुस ने उनसे कहा: "क्या मैं तुम्हारे लिए यहूदियों के राजा को रिहा कर दूँ?" **10** क्योंकि वह जानता था कि प्रधान याजकों ने ईर्ष्या की वजह से यीशु को उसके हवाले किया है। **11** मगर प्रधान याजकों ने भीड़ को यह कहने के लिए भड़काया कि वह यीशु के बजाय बरअब्बा को रिहा करे। **12** एक बार फिर पीलातुस उनसे कहने लगा: "तो फिर मैं इस आदमी का क्या करूँ जिसे तुम यहूदियों का राजा कहते हो?" **13** एक बार फिर वे चिल्ला उठे: "उसे सूली पर चढ़ा दे!" **14** मगर पीलातुस ने उनसे कहा: "क्यों, इसने क्या बुरा किया है?" मगर वे और भी ज़ोर से चिल्लाने लगे: "उसे सूली पर चढ़ा दे!" **15** इस पर पीलातुस ने भीड़ को खुश करने के इरादे से उनके लिए बरअब्बा को रिहा कर दिया, और यीशु को कोड़े लगवाने के बाद, सूली पर चढ़ाए जाने के लिए सौंप दिया।

16 फिर सैनिक यीशु को राज्यपाल के महल के अंदर, आँगन में ले गए। उन्होंने पूरे फौजी दस्ते को वहाँ बुला लिया। **17** उन्होंने उसे बैंजनी कपड़ा पहनाया और काँटों का एक ताज बनाकर उसके सिर पर रखा। **18** वे यह कहकर उसे सलाम करने लगे: "हे यहूदियों के राजा, यह दिन तुझे मुबारक हो!" **19** साथ ही, वे सरकंडे से उसके सिर पर मारते और उस पर थूकते थे और उसके सामने घुटने टेककर उसे प्रणाम करते थे। **20** जब उन्होंने उसका खूब मज़ाक उड़ा लिया, तब आखिर में, उन्होंने वह बैंजनी कपड़ा उस पर से उतार दिया और उसी के कपड़े उसे पहना दिए। फिर वे उसे सूली पर चढ़ाने के लिए ले गए। **21** उस वक्त शमौन नाम का आदमी देहात से आ रहा था और वहाँ से गुज़र रहा था। वह कुरेने का रहनेवाला और सिकंदर और रूफुस का पिता था। सैनिकों ने उसे जबरन सेवा करने के लिए पकड़ा कि वह यीशु के लिए यातना की सूली* उठाकर ले चले।

22 फिर वे यीशु को *गुलगुता* नाम की जगह ले आए, जिसका मतलब

मर 15:21* अतिरिक्त लेख 6 देखें।

है, ‘खोपड़ी स्थान।’ **23** यहाँ उन्होंने
उसे नशीला मुर्र मिली हुई दाख-मदिरा
पिलाने की कोशिश की, मगर उसने
पीने से इनकार कर दिया। **24** और
उन्होंने उसे सूली पर चढ़ा दिया और यह
तय करने के लिए उसके कपड़ों पर चिट्ठी
डाली कि कौन क्या लेगा और उन्हें
आपस में बाँट लिया। **25** यह तीसरा
घंटा* था और उन्होंने उसे सूली पर
चढ़ाया। **26** उस पर जो इलज़ाम था,
उसे लिखकर ऊपर लगा दिया गया,
“यहूदियों का राजा।” **27** साथ ही,
उन्होंने दो लुटेरों को उसके साथ सूली
पर चढ़ाया, एक उसकी दायीं तरफ
और दूसरा बायीं तरफ। **28*** ——
29 जो लोग वहाँ से गुज़र रहे थे वे सिर
हिला-हिलाकर उसकी बेइज़्ज़ती करते हुए
कहते थे: “अरे वाह, मंदिर के ढानेवाले
और तीन दिन के अंदर उसे बनानेवाले,
30 यातना की सूली से नीचे उतरकर
खुद को बचा ले।” **31** इसी तरह,
प्रधान याजक भी शास्त्रियों के साथ मिल-
कर यह कहते हुए आपस में उसका
मज़ाक उड़ा रहे थे: “इसने दूसरों को
तो बचाया, मगर खुद को बचा नहीं
सकता! **32** इसराएल का राजा मसीह
अब यातना की सूली से नीचे उतरकर
आए, ताकि हम देखें और यकीन करें।”
यहाँ तक कि जिन्हें उसके साथ सूली पर
चढ़ाया गया था, वे भी उसे बुरा-भला
कह रहे थे।

33 जब छठा घंटा* हुआ, तो पूरे
देश में अंधकार छा गया और नौवें
घंटे# तक छाया रहा। **34** नौवें घंटे
में यीशु ने ज़ोर से पुकारा: *“एली, एली,
लामा शबकतानी?”* जिसका मतलब
है: “मेरे परमेश्वर, मेरे परमेश्वर, तू ने
मुझे क्यों छोड़ दिया है?” **35** इस
पर पास खड़े कुछ लोग कहने लगे:
“सुनो! यह एलिय्याह को पुकार रहा है।”
36 मगर उनमें से एक भागकर गया
और एक स्पंज को खट्टी दाख-मदिरा में
डुबोकर सरकंडे पर रखा और उसे यह
कहते हुए पीने के लिए दिया: “इसे
रहने दो! देखते हैं, एलिय्याह इसे नीचे
उतारने के लिए आता है कि नहीं।”
37 लेकिन यीशु ने बड़े ज़ोर से चिल्ला-
कर दम तोड़ दिया। **38** तब मंदिर
का परदा ऊपर से नीचे तक फटकर
दो टुकड़े हो गया। **39** जब उसके
सामने खड़े सेना-अफसर* ने देखा कि
उसने इन हालात में दम तोड़ा है, तो उसने
कहा: “वाकई यह इंसान, परमेश्वर का
बेटा था।”

40 वहाँ कुछ स्त्रियाँ भी थीं, जो
दूर खड़ी देख रही थीं। उनमें मरि-
यम मगदलीनी, छोटे याकूब और योसेस
की माँ मरियम और सलोमी भी थीं।
41 ये स्त्रियाँ उसके साथ-साथ रहती थीं
और जब वह गलील में था तब उसकी
सेवा करती थीं। साथ ही, वहाँ दूसरी

मर 15:25* मत्ती 20:3 फुटनोट देखें। **28*** मत्ती 17:21 फुटनोट देखें।

मर 15:33* मत्ती 20:5 पहला फुटनोट देखें। **33#** मत्ती 20:5 दूसरा फुटनोट देखें। **39*** या, “शतपति,” जिसकी कमान के नीचे सौ सैनिक होते थे।

बहुत-सी स्त्रियाँ थीं जो उसके साथ यरू-
शलेम आयी थीं।

42 दोपहर काफी बीत चुकी थी और
यह तैयारी का दिन* था, यानी सब्त से
पहले का दिन। **43** इसलिए अरि-
मतियाह का यूसुफ वहाँ आया जो महा-
सभा का एक इज़्ज़तदार सदस्य था, और
जो खुद परमेश्वर के राज की राह देख
रहा था। वह हिम्मत कर पीलातुस के
पास गया और उसने यीशु का शव माँगा।
44 मगर पीलातुस को ताज्जुब हुआ कि
यीशु वाकई मर चुका है। इसलिए उसने
सेना-अफसर को बुलाकर पूछा कि क्या
वह मर चुका है। **45** पीलातुस ने
सेना-अफसर से यह बात पक्की तरह
जान लेने के बाद कि यीशु मर चुका
है उसका शव यूसुफ को सौंप दिया।
46 तब यूसुफ बढ़िया मलमल खरीदकर
ले आया और यीशु का शव नीचे उतारा
और उसे मलमल में लपेटकर एक कब्र
में रखा जो चट्टान खोदकर बनायी गयी
थी। और उस कब्र के दरवाज़े पर एक
पत्थर लुढ़काकर उसे बंद कर दिया।
47 मगर मरियम मगदलीनी और योसेस
की माँ मरियम देखती रहीं कि उसे कहाँ
रखा जा रहा है।

16 जब सब्त का दिन बीत गया, तो
मरियम मगदलीनी और याकूब
की माँ मरियम और सलोमी ने खुशबूदार
मसाले खरीदे ताकि आकर उस पर मलें।
2 वे हफ्ते के पहले दिन बहुत सुबह,
जब सूरज निकला ही था, कब्र पर आयीं।
3 वे आपस में कह रही थीं: "कौन हमारे
लिए कब्र के मुँह से पत्थर हटाएगा?"
4 मगर जब उन्होंने नज़र उठाकर देखा,
तो पत्थर पहले से ही दूर लुढ़का हुआ
था, हालाँकि वह बहुत ही बड़ा था।
5 जब वे कब्र के अंदर गयीं, तो उन्होंने
देखा कि एक नौजवान सफेद उजला
चोगा पहने दायीं तरफ बैठा है, और वे
हैरान रह गयीं। **6** उसने उनसे कहा:
"हैरान मत हो। तुम यीशु नासरी को ढूँढ़
रही हो, जिसे सूली पर चढ़ाया गया था।
उसे मरे हुओं में से जी उठाया गया है
और वह यहाँ नहीं है। यह जगह देखो
जहाँ उसे रखा गया था। **7** जाओ
और जाकर पतरस से और उसके बाकी
चेलों से कहो, 'वह तुमसे पहले गलील
जाएगा। वहाँ तुम उसे देखोगे, ठीक जैसा
उसने तुमसे कहा था।'" **8** इसलिए
जब वे बाहर निकलीं तो कब्र से भागीं,
क्योंकि वे डर के मारे थर-थर काँप रही
थीं और ज़बरदस्त हैरत ने उन्हें आ घेरा
था। उन्होंने किसी को कुछ नहीं बताया,
क्योंकि वे डरती थीं।

लंबी समाप्ति

कुछ प्राचीन हस्तलिपियों (कोडेक्स एलेक्ज़ैंड्रिनस, कोडेक्स एफ्रीमी, कोडेक्स बेज़ी) और प्राचीन अनुवादों (लैटिन *वलगेट,* क्युरेटोनियन सिरियक, सिरियक पेशिट्टा) में आगे यह लंबी समाप्ति दी गयी है, मगर कोडेक्स साइनाइटिकस, कोडेक्स वैटिकेनस और साइनाइटिक सिरियक कोडेक्स और अर्मेनियन वर्शन में यह नहीं पायी जाती:

9 हफ्ते के पहले दिन सुबह होते ही, जी
उठने के बाद यीशु पहले मरियम मगदलीनी को

मर 15:42* मत्ती 27:62 फुटनोट देखें।

दिखायी दिया, जिसमें से उसने सात दुष्ट स्वर्गदूतों
को निकाला था। **10** वह गयी और जो यीशु
के साथ रहा करते थे उन्हें जाकर इसकी खबर
दी, क्योंकि वे मातम मना रहे थे और रो रहे
थे। **11** मगर जब उन्होंने सुना कि वह जी
उठा है और उसे दिखायी दिया है, तो यकीन न
किया। **12** इसके अलावा, यह सब होने के
बाद जब उनमें से दो देहात की तरफ जा रहे
थे, तब यीशु उन्हें दूसरे रूप में दिखायी दिया
और उनके साथ-साथ चल रहा था। **13** वे
वापस आए और बाकियों को खबर दी। मगर
उन्होंने इनका भी यकीन नहीं किया। **14** मगर
बाद में जब वे खाने की मेज़ के सामने टेक
लगाए थे, तो वह ग्यारहों को दिखायी दिया, और
उसने उनके विश्वास की कमी और दिलों की
कठोरता के लिए उन्हें उलाहना दी। क्योंकि उन्होंने
उनका यकीन नहीं किया था जिन्होंने उसे मरे हुओं
में से जी उठने के बाद देखा था। **15** और
उसने उनसे कहा: "सारी दुनिया में जाओ और सब
लोगों को खुशखबरी सुनाओ। **16** जो यकीन
करता है और बपतिस्मा लेता है वह उद्धार पाएगा,
मगर जो यकीन नहीं करता वह दोषी ठहरा-
या जाएगा। **17** इसके अलावा, यकीन करने-
वालों में ये अलग-अलग चमत्कार दिखायी देंगे:
वे मेरे नाम से दुष्ट स्वर्गदूतों को निकालेंगे, अलग-
अलग भाषाएँ बोलेंगे, **18** और वे अपने हाथों
से साँपों को उठा लेंगे और अगर वे कोई ज़हरीली
चीज़ पी जाएँ, तौभी वह उन्हें कोई नुकसान न
पहुँचाएगी। वे बीमार लोगों पर अपने हाथ रखेंगे
और वे चंगे हो जाएँगे।"

19 इस तरह प्रभु यीशु उनसे बातें करने के
बाद स्वर्ग में उठा लिया गया और परमेश्वर की
दायीं तरफ बैठ गया। **20** इसी के मुताबिक,
चेले निकले और उन्होंने हर जगह प्रचार किया।
इस दौरान प्रभु ने उनके साथ काम किया और
उनके ज़रिए अलग-अलग चमत्कारों से उनके
संदेश की गवाही दी।

छोटी समाप्ति

बाद की कुछ हस्तलिपियों और प्राचीन अनुवादों में मरकुस 16:8 के बाद यह छोटी समाप्ति पायी जाती है:

मगर जितनी बातों की उन्हें आज्ञा दी गयी थी, वे सब उन्होंने चंद शब्दों में उन्हें बता दीं जो पतरस के आस-पास थे। इसके अलावा, इन सब बातों के बाद, यीशु ने खुद उनके ज़रिए पूरब से पश्चिम तक, हमेशा के उद्धार के पवित्र और अविनाशी संदेश का ऐलान करवाया।

लूका

के मुताबिक खुशी का संदेश

1 आदरणीय थियुफिलुस, जिन सच्ची
घटनाओं पर हम सब यकीन करते
हैं, उनका ब्यौरा लिखने का काम बहुत-से
लोगों ने अपने हाथ में लिया। **2** उसी
तरह, जो लोग शुरूआत से इन बातों के
चश्मदीद गवाह रहे और हमें परमेश्वर का
संदेश सुनानेवाले सेवक बने, उन्होंने भी
ये बातें हम तक पहुँचायी हैं। **3** मैंने
भी ठीक ऐसा ही करने की ठानी है।
क्योंकि मैंने सारी बातों का शुरूआत से
सही-सही पता लगाया है ताकि मैं तुझे ये
बातें तर्क के मुताबिक सिलसिलेवार ढंग
से लिख सकूँ, **4** जिससे कि तू पक्की
तरह जान सके कि जो बातें तुझे ज़बानी
तौर पर सिखायी गयी थीं वे एकदम
भरोसे के लायक हैं।

5 जब हेरोदेस* यहूदिया प्रदेश का राजा था, उन दिनों जकर्याह नाम का एक याजक था। वह अबिय्याह के दल का था और उसकी पत्नी का नाम इलीशिबा था। वह हारून के वंश की थी। **6** वे दोनों परमेश्वर की नज़र में नेक थे, क्योंकि वे यहोवा* की सभी आज्ञाओं और कानूनों को मानते थे और निर्दोष थे। **7** लेकिन उनके कोई बच्चा न था, इसलिए कि इलीशिबा बाँझ थी और वे दोनों बूढ़े हो चुके थे।

8 जब जकर्याह अपने दल की पारी में परमेश्वर के सामने याजक का काम कर रहा था, **9** तो याजकपद के रिवाज़ के मुताबिक धूप जलाने की उसकी बारी आयी और वह यहोवा के मंदिर में गया। **10** धूप जलाने के वक्त, लोगों की सारी भीड़ बाहर प्रार्थना कर रही थी। **11** तब जकर्याह के सामने यहोवा का दूत प्रकट हुआ। वह धूप की वेदी की दायीं तरफ खड़ा था। **12** उसे देखकर जकर्याह घबरा गया और बेहद डर गया। **13** लेकिन स्वर्गदूत ने उससे कहा: "जकर्याह मत डर, क्योंकि तेरी मिन्नतें सुन ली गयी हैं। तेरी पत्नी इलीशिबा माँ बनेगी और तेरे बेटे को जन्म देगी और तू उसका नाम यूहन्ना रखना। **14** तुझे खुशी और बड़ा आनंद होगा और बहुत लोग उस बच्चे के जन्म पर खुशियाँ मनाएँगे, **15** क्योंकि वह यहोवा की नज़र में महान होगा। मगर उसे दाख-मदिरा या शराब बिलकुल नहीं पीनी है। वह अपनी माँ के गर्भ से ही परमेश्वर की पवित्र शक्ति से भरपूर होगा। **16** वह इस-राएल के बहुत-से बेटों को लौटाकर उनके परमेश्वर यहोवा के पास ले आएगा। **17** साथ ही, वह परमेश्वर के आगे एलिय्याह जैसे जोश* और शक्ति के साथ जाएगा कि पिताओं के दिलों को पलट-कर बच्चों का कर दे। और जो आज्ञा नहीं मानते उन्हें नेक जनों की व्यावहारिक बुद्धि दे, और इस तरह लोगों को यहोवा के लिए तैयार करे।"

18 तब जकर्याह ने स्वर्गदूत से कहा: "मैं इस बात का कैसे यकीन करूँ कि मैं पिता बनूँगा? क्योंकि मैं बूढ़ा हो चुका हूँ और मेरी पत्नी की भी उम्र ढल चुकी है।" **19** जवाब में स्वर्गदूत ने उससे कहा: "मैं जिब्राईल हूँ, और परमेश्वर के सामने हाज़िर रहता हूँ। मुझे तुझसे बात करने और तुझे इन बातों की खुश-खबरी सुनाने के लिए भेजा गया है। **20** मगर देख! जिस दिन तक ये बातें पूरी न हो जाएँ, उस दिन तक के लिए तू गूँगा हो जाएगा और कुछ बोल न सकेगा। क्योंकि तू ने मेरी बातों का यकीन नहीं किया, जो अपने ठहराए हुए वक्त पर ज़रूर पूरी होंगी।" **21** इस दौरान लोग बाहर जकर्याह का इंतज़ार करते रहे। वे ताज्जुब करने लगे कि उसे मंदिर में इतनी देर क्यों लग रही है।

लूका 1:5* मत्ती 2:1 फुटनोट देखें। **6*** यह उन 237 जगहों में से एक जगह है, जहाँ परमेश्वर का नाम, 'यहोवा' इस अनुवाद के मुख्य पाठ में पाया जाता है। अतिरिक्त लेख 2 देखें।

लूका 1:17* यूनानी *नफ्मा।* अतिरिक्त लेख 7 देखें।

22 लेकिन जब वह बाहर आया, तो
उनसे कुछ बोल न सका। तब वे समझ
गए कि ज़रूर उसने मंदिर में अभी-अभी
कोई दर्शन देखा है। वह उनसे इशारों
में बात करता रहा और गूँगा रहा।
23 फिर जब उसकी जन-सेवा के दिन
पूरे हुए, तो वह अपने घर लौट गया।

24 इसके बाद उसकी पत्नी इली-
शिबा गर्भवती हुई। वह पाँच महीने तक
अपने घर से न निकली। वह कहती थी:
25 "इन दिनों यहोवा ने मुझ पर ध्यान
दिया है और लोगों के बीच से मेरी बद-
नामी दूर करने के लिए मुझ पर मेहर-
बानी की है।"

26 इलीशिबा के छठे महीने में पर-
मेश्वर ने जिब्राईल स्वर्गदूत को गलील
प्रदेश के नासरत शहर में 27 एक
कुँवारी के पास भेजा। उसकी मँगनी
दाविद के घराने में यूसुफ नाम के एक
आदमी से हो चुकी थी। उस कुँवारी का
नाम मरियम था। 28 जब वह स्वर्ग-
दूत अंदर उसके सामने आया, तो उससे
कहा: "सुखी रह! परमेश्वर की बड़ी
आशीष तुझ पर है। यहोवा तेरे साथ
है।" 29 मगर वह यह सुनकर बहुत
घबरा गयी और सोचने लगी कि ऐसे
नमस्कार का क्या मतलब हो सकता है।
30 तब स्वर्गदूत ने उससे कहा: "मत डर
मरियम, क्योंकि तू ने परमेश्वर की बड़ी
आशीष पायी है। 31 देख! तू गर्भवती
होगी और एक बेटे को जन्म देगी और
तू उसका नाम यीशु रखना। 32 वह
महान होगा और परम-प्रधान का बेटा
कहलाएगा और यहोवा परमेश्वर उसके
पुरखे दाविद की राजगद्दी उसे देगा।
33 वह याकूब के घराने पर हमेशा तक
राजा बनकर राज करेगा और उसके राज
का कभी अंत न होगा।"

34 मगर मरियम ने स्वर्गदूत से
कहा: "मेरे बच्चा कैसे हो सकता है,
मैं तो कुँवारी हूँ?"* 35 जवाब में
स्वर्गदूत ने उससे कहा: "परमेश्वर की
पवित्र शक्ति तुझ पर आएगी और परम-
प्रधान की सामर्थ तुझ पर छा जाएगी।
इसी वजह से, जो पैदा होगा वह
पवित्र और परमेश्वर का बेटा कहला-
एगा। 36 देख! तेरी रिश्तेदार इली-
शिबा जिसे बाँझ कहा जाता था, उसने भी
अपने बुढ़ापे में गर्भ धारण किया है। वह
एक बेटे को जन्म देनेवाली है और यह
उसका छठा महीना है। 37 क्योंकि
परमेश्वर के मुँह से निकली कोई भी बात
नामुमकिन नहीं हो सकती।" 38 तब
मरियम ने कहा: "देख! मैं यहोवा की दासी
हूँ! तू ने जैसा कहा है, वैसा ही मेरे साथ
हो।" तब वह स्वर्गदूत उसके पास से चला
गया।

39 उन दिनों मरियम ने जल्दी-
जल्दी तैयारी की और पहाड़ी इलाके में
यहूदा के एक शहर के लिए निकल
पड़ी। 40 वह जकर्याह के घर पहुँची
और इलीशिबा को नमस्कार किया।
41 जैसे ही इलीशिबा ने मरियम का
नमस्कार सुना, उसके गर्भ में शिशु उछल
पड़ा। और इलीशिबा पवित्र शक्ति से भर

लूका 1:34* शाब्दिक, "मैं पुरुष को नहीं जानती।"

गयी। **42** उसने ज़ोर से पुकारते हुए
कहा: “सब स्त्रियों में से तू ने आशीष
पायी है, और तेरे गर्भ के फल पर भी
आशीष है! **43** मुझे यह सम्मान कैसे
मिला कि मेरे प्रभु की माँ मेरे पास आयी?
44 क्योंकि देख! जैसे ही तेरे नमस्कार
की आवाज़ मेरे कानों में पड़ी, मेरे गर्भ
में शिशु खुशी से उछल पड़ा। **45** तू
इसलिए भी धन्य है कि तू ने यकीन किया,
क्योंकि यहोवा की जो बातें तुझसे कही
गयी हैं, वे पूरी होकर रहेंगी।”

46 तब मरियम ने कहा: “मैं यहोवा
का गुणगान करती हूँ **47** और मेरा
दिल मेरे उद्धार करनेवाले परमेश्वर पर
मगन हुए बिना नहीं रह सकता।
48 क्योंकि उसने अपनी दासी की दीन
दशा पर नज़र की है। क्योंकि देखो! अब
से सारी पीढ़ियाँ मुझे सुखी कहा करेंगी।
49 क्योंकि उस शक्तिशाली ने मेरी
खातिर बड़े-बड़े काम किए हैं और उसका
नाम पवित्र है। **50** जो उसका भय
मानते हैं, उन पर उसकी दया पीढ़ी-दर-
पीढ़ी बनी रहती है। **51** उसने अपना
बाहुबल दिखाया है और जो अपने दिलों
में घमंड-भरे इरादे रखते हैं, उन्हें तित्तर-
बित्तर किया है। **52** उसने अधिकार
रखनेवालों को उनकी गद्दियों से नीचे
उतारा है और दीन-हीनों को ऊँचा किया
है। **53** उसने भूखों को भरपेट अच्छी
चीज़ें दी हैं, जबकि दौलतमंदों को खाली
हाथ लौटा दिया है। **54** वह अपने
सेवक इसराएल को सहारा देने आया
है ताकि ठीक जैसे उसने हमारे बाप-
दादों से कहा था, **55** उसी के मुता-
बिक उसे अब्राहम और उसके वंश पर
सदा-सदा तक दया दिखाना याद रहा।”
56 मरियम करीब तीन महीने तक इली-
शिबा के साथ रही और फिर अपने घर
लौट आयी।

57 फिर इलीशिबा ने दिन पूरे होने
पर एक बेटे को जन्म दिया। **58** जब
उसके पड़ोसियों और रिश्तेदारों ने सुना
कि यहोवा ने उस पर बड़ी दया दिखायी
है, तो वे उसके साथ खुशियाँ मनाने लगे।
59 आठवें दिन वे उस बच्चे का खतना
करने आए। वे उसके पिता जकर्याह के
नाम पर उसका नाम रखने जा रहे थे।
60 लेकिन बच्चे की माँ ने जवाब में
कहा: “नहीं! उसका नाम यूहन्ना होगा।”
61 इस पर वे उससे कहने लगे: “तेरे
रिश्तेदारों में किसी का भी यह नाम नहीं
है।” **62** तब उन्होंने जाकर बच्चे के
पिता से इशारों में पूछा कि वह उसका
क्या नाम रखना चाहता है। **63** उसने
एक तख्ती मँगवायी और उस पर लिखा:
“इसका नाम यूहन्ना होगा।” इस पर वे
सब हैरत में पड़ गए। **64** उसी घड़ी
जकर्याह का मुँह और उसकी ज़ुबान खुल
गयी और वह बोलने और परमेश्वर की
बड़ाई करने लगा। **65** उनके आस-
पास रहनेवाले सभी लोगों पर भय छा
गया। यहूदिया के सारे पहाड़ी इलाके में
हर तरफ इन बातों की चर्चा होने लगी।
66 और जितनों ने इस बारे में सुना उन
सभी ने ये बातें अपने दिल में रखीं और
कहने लगे: “यह बच्चा बड़ा होकर क्या

बनेगा?" इसलिए कि यहोवा का हाथ
वाकई उस बच्चे पर था।

67 उसका पिता जकर्याह परमेश्वर
की पवित्र शक्ति* से भर गया और यह
भविष्यवाणी करने लगाः **68** "इसरा-
एल के परमेश्वर यहोवा की जयजयकार
हो, क्योंकि उसने अपने लोगों पर ध्यान
दिया है और उन्हें छुटकारा दिलाया है।
69 उसने अपने सेवक दाविद के घराने
में हमारे लिए एक शक्तिशाली उद्धार-
कर्त्ता* पैदा किया है, **70** ठीक जैसे
उसने इसके बारे में प्राचीनकाल के पवित्र
भविष्यवक्ताओं के मुँह से कहलवाया
था। **71** उसने यह बताया था कि वह
हमारे दुश्मनों से और जो हमसे नफरत
करते हैं उन सबसे हमें छुटकारा दिला-
एगा। **72** वह हमारे बापदादों पर
दया करते हुए अपने पवित्र करार
को याद करेगा, **73** उसी शपथ को
जो उसने हमारे पुरखे अब्राहम से खायी
थी। **74** उसी के मुताबिक जब वह
हमें दुश्मनों के हाथों से छुड़ाएगा, तो हमें
यह सम्मान देगा कि हम निडर होकर
उसकी पवित्र सेवा करें, **75** और
हम ऐसा उसके सामने वफादारी से और
उसके स्तरों पर चलते हुए अपनी सारी
ज़िंदगी करते रहें। **76** मगर मेरे बेटे,
जहाँ तक तेरी बात है तू परम-प्रधान
का भविष्यवक्ता कहलाएगा, इसलिए कि
तू यहोवा के आगे-आगे जाकर उसके
मार्ग तैयार करेगा। **77** और उसके
लोगों को ज्ञान देगा कि वे अपने पापों
की माफी पाकर उद्धार पाएँ। **78** यह
हमारे परमेश्वर की कोमल करुणा की
वजह से होगा। इस करुणा के साथ हम
पर ऊपर से सुबह का वह उजाला चम-
केगा **79** जो अंधेरे में और मौत के
साए में बैठे हुओं को रौशनी देगा और
हमारे कदमों को खुशहाली के साथ शांति
की राह पर ले चलेगा।"

80 वह लड़का बड़ा होता गया और
मन के सही रुझान और चरित्र में मज़-
बूत होता गया और वह इसराएल के
सामने आने के दिन तक वीरान इलाकों
में रहा।

2 उन दिनों सम्राट* औगूस्तुस की
तरफ से एक फरमान जारी हुआ
कि सारे साम्राज्य# के लोग अपना-अपना
नाम दर्ज़ कराएँ। **2** (यह पहली नाम-
लिखाई तब हुई जब क्विरिनियुस, सीरिया
का राज्यपाल था।) **3** इसलिए सब
लोग नाम लिखवाने के लिए अपने-अपने
शहर जाने लगे, जहाँ वे पैदा हुए थे।
4 यूसुफ गलील के नासरत शहर में
रहता था। वह दाविद के खानदान और
उसके वंश का था, इसलिए वह भी यहू-
दिया में दाविद के शहर गया जो बेत-
लेहेम कहलाता है, **5** ताकि मरियम
के साथ अपना नाम लिखवाए। मरि-
यम अब उसकी पत्नी बन चुकी थी
और इस वक्त पूरे दिनों पेट से थी।
6 जब वे बेतलेहेम में थे, तब मरियम

लूका 1:67* यूनानी *नफ्मा।* अतिरिक्त लेख 7 देखें। **69*** शाब्दिक, "उद्धार करनेवाला सींग खड़ा किया है।"

लूका 2:1* यूनानी में *"कैसर।"* **1#** या, "पूरी दुनिया।"

का बच्चे को जन्म देने का समय आ गया। **7** उसने अपने बेटे को जन्म दिया, जो उसका पहलौठा था। उन्हें ठहरने के लिए सराय में कोई कमरा नहीं मिला था, इसलिए मरियम ने बच्चे को कपड़ों की पट्टियों में लपेटकर एक चरनी में रखा।

8 उसी इलाके में कुछ चरवाहे भी थे जो मैदानों में रह रहे थे। वे रात के एक-एक पहर में बारी-बारी से अपने झुंडों की पहरेदारी कर रहे थे **9** कि तभी अचानक यहोवा का दूत उनके सामने आकर खड़ा हो गया, और यहोवा की महिमा का तेज उनके चारों तरफ चमक उठा, और वे बहुत डर गए। **10** मगर स्वर्गदूत ने उनसे कहा: “डरो मत, क्योंकि देखो! मैं तुम्हें एक बड़ी खुशखबरी सुना रहा हूँ जिससे सब लोगों को बेहद खुशी मिलेगी। **11** क्योंकि आज दाविद के शहर में तुम्हारे लिए एक उद्धार करनेवाले का जन्म हो चुका है। यही मसीह* प्रभु है। **12** उसे पहचानने की तुम्हारे लिए यह निशानी है: तुम एक शिशु को कपड़े की पट्टियों में लिपटा और चरनी में लेटा हुआ पाओगे।” **13** तभी अचानक उस स्वर्गदूत के साथ, स्वर्ग की एक बड़ी सेना परमेश्वर की महिमा करती और यह कहती दिखायी दी: **14** “स्वर्ग में परमेश्वर की महिमा हो, और धरती पर उन लोगों को शांति मिले जिनसे परमेश्वर खुश है।”

15 जब स्वर्गदूत चरवाहों के पास से स्वर्ग चले गए, तो चरवाहे एक-दूसरे से कहने लगे: “आओ हम फौरन बेतलेहेम चलें और यह जो बात वहाँ हुई है और जिसके बारे में यहोवा ने हम पर ज़ाहिर किया है उसे देखें।” **16** तब वे जल्दी-जल्दी गए और उन्होंने वहाँ मरियम और उसके साथ यूसुफ को देखा, साथ ही उस शिशु को चरनी में लेटा हुआ पाया। **17** जब चरवाहों ने उस शिशु को देखा, तो उन्होंने वे सारी बातें बतायीं जो स्वर्गदूत ने शिशु के बारे में कही थीं। **18** जितनों ने चरवाहों की ये बातें सुनीं, वे सब ताज्जुब करने लगे। **19** मगर मरियम इन सब बातों को अपने दिल में संजोकर रखती और इनके मतलब के बारे में गहराई से सोचती थी। **20** तब चरवाहे, परमेश्वर की बड़ाई और उसका गुणगान करते हुए लौट गए। जैसा उन्हें बताया गया था उन्होंने सबकुछ वैसा ही सुना और देखा था।

21 जब आठ दिन पूरे हुए और शिशु का खतना करने का समय आया, तो उसका नाम यीशु रखा गया। यह वही नाम था जो स्वर्गदूत ने उसके गर्भ में पड़ने से पहले बताया था।

22 साथ ही, जब मूसा के कानून के मुताबिक उनके शुद्ध होने के दिन पूरे हुए, तो वे उसे यहोवा के सामने पेश करने के लिए यरूशलेम ले आए, **23** ताकि ठीक वैसा ही करें जैसा यहोवा के कानून

लूका 2:11* यानी “परमेश्वर का अभिषिक्त जन।”

में लिखा है: “हरेक पहलौठे को यहोवा
के लिए पवित्र ठहराया जाना चाहिए,”
24 साथ ही वह बलिदान चढ़ाएँ जो
यहोवा के कानून में बताया गया है:
“फाख्ता का एक जोड़ा या कबूतर के दो
बच्चे।”

25 और देखो! यरूशलेम में शमौन
नाम का एक आदमी था, जो नेक और
परमेश्वर का भक्त था। पवित्र शक्ति उस
पर थी और वह इस इंतज़ार में था कि
परमेश्वर इसराएल को दिलासा देगा।
26 साथ ही, परमेश्वर ने पवित्र शक्ति
से उस पर ज़ाहिर किया था कि जब तक
वह यहोवा के मसीह को न देख ले, तब
तक मौत का मुँह न देखेगा। **27** अब
वह पवित्र शक्ति* से उभारे जाने पर
मंदिर में आया। जब नन्हे यीशु को उसके
माता-पिता अंदर ला रहे थे ताकि मूसा
के कानून के मुताबिक रिवाज़ पूरा करें,
28 तब शमौन ने बच्चे को अपनी बाँहों
में लिया और परमेश्वर का धन्यवाद
करते हुए कहा: **29** “हे सारे जहान
के महाराजा और मालिक, अब तू अपने
वचन के मुताबिक अपने दास को शांति
से विदा करता है। **30** क्योंकि मेरी
आँखों ने उद्धार का तेरा ज़रिया देख लिया
है **31** जिसे तू ने सब लोगों के सामने
खड़ा किया है। **32** वह राष्ट्रों की
आँखों पर पड़े परदे को हटाने के लिए
एक रौशनी और तेरी प्रजा, इसराएल की
महिमा है।” **33** उस बच्चे के माता-
पिता उसके बारे में कही जा रही बातों पर
ताज्जुब करते रहे। **34** फिर शमौन ने
उन्हें भी आशीष दी, मगर उसकी माँ मरि-
यम से कहा: “देख! यह इसराएल में
बहुतों के गिरने और बहुतों के फिर से
उठने का कारण होगा और एक ऐसी
निशानी होगा जिसके खिलाफ बातें की
जाएँगी **35** (और जहाँ तक तेरी बात
है, एक लंबी तलवार तेरे आर-पार हो
जाएगी), ताकि बहुतों के दिलों के विचार
खुलकर सामने आएँ।”

36 वहाँ हन्ना नाम की एक भविष्य-
वक्तिन थी, जो आशेर के गोत्र के फनू-
एल की बेटी थी (यह स्त्री बहुत बूढ़ी थी।
वह अपने कुँवारेपन के बाद शादी के
सिर्फ सात साल अपने पति के साथ रह
पायी थी। **37** वह विधवा थी और
अब उसकी उम्र चौरासी साल थी।) वह
मंदिर से कभी गैर-हाज़िर नहीं रहती थी,
बल्कि उपवास और मिन्नतों के साथ रात-
दिन परमेश्वर की पवित्र सेवा में लगी
रहती थी। **38** वह ठीक उसी घड़ी
वहाँ आयी और परमेश्वर का धन्यवाद
करने लगी और उन सबको जो यरूशलेम
के छुटकारे का इंतज़ार कर रहे थे, उस
बच्चे के बारे में बताने लगी।

39 जब यूसुफ और मरियम यहोवा
के कानून के मुताबिक सारे काम पूरे कर
चुके, तो गलील में अपने शहर नासरत
लौट गए। **40** वह बच्चा बढ़ता और
बलवंत होता गया। वह बुद्धिमान होता
गया और परमेश्वर की आशीष लगातार
उस पर थी।

लूका 2:27* यूनानी *नफ्मा।* अतिरिक्त लेख 7 देखें।

41 उसके माता-पिता अपने दस्तूर
के मुताबिक हर साल फसह के त्योहार
के लिए यरूशलेम जाया करते थे।
42 जब वह बारह साल का हुआ, तो
वे त्योहार के दस्तूर के मुताबिक यरूश-
लेम गए। **43** मगर त्योहार के दिन
पूरे होने के बाद जब वे लौट रहे थे,
तो वह लड़का यीशु, पीछे यरूशलेम में ही
रह गया। मगर उसके माता-पिता का इस
बात पर ध्यान नहीं गया। **44** उन्होंने
यह समझा कि वह दूसरे मुसाफिरों के संग
होगा। इसलिए उन्होंने एक दिन का सफर
तय कर लिया। मगर इसके बाद वे उसे
अपने रिश्तेदारों और जान-पहचानवालों
में ढूँढ़ने लगे। **45** लेकिन जब वह
नहीं मिला, तो वे और भी ज़्यादा उसकी
तलाश करते-करते वापस यरूशलेम आ
गए। **46** फिर तीन दिन बाद उन्होंने
उसे मंदिर में पाया, जहाँ वह शिक्षकों
के बीच बैठा उनकी सुन रहा था और
उनसे सवाल कर रहा था। **47** जितने
लोग उसकी सुन रहे थे, वे सभी उसकी
समझ और उसके जवाबों से रह-रहकर
दंग हो रहे थे। **48** जब उसके माता-
पिता ने उसे वहाँ देखा, तो वे बेहद हैरान
हो गए, और उसकी माँ ने उससे कहा:
“बेटा, तू ने हमारे साथ ऐसा क्यों किया?
देख, तेरा पिता और मैं तुझे ढूँढ़-ढूँढ़कर
कितने बेहाल हो गए हैं।” **49** लेकिन
उसने उनसे कहा: “तुम मुझे यहाँ-वहाँ क्यों
ढूँढ़ते रहे? क्या तुम्हें मालूम नहीं था कि
मैं अपने पिता के घर में होऊँगा?”
50 मगर वे उसकी इस बात का मतलब
नहीं समझ सके।

51 तब वह उनके साथ चला गया
और नासरत आ गया और लगातार
उनके अधीन रहा। उसकी माँ ने बड़े
ध्यान से इन सारी बातों को अपने दिल
में संजोकर रखा। **52** यीशु डील-डौल
और बुद्धि में बढ़ता और तरक्की करता
गया और दिनोंदिन उस पर परमेश्वर की
आशीष और लोगों का अनुग्रह बढ़ता
गया।

3 सम्राट तिबिरियुस के राज के
पंद्रहवें साल में, जिस दौरान पुन्ति-
युस पीलातुस, यहूदिया प्रदेश का राज्य-
पाल था और हेरोदेस* गलील प्रदेश
का ज़िला-शासक# था, साथ ही हेरो-
देस का भाई फिलिप्पुस, इतूरैया और
त्रखोनीतिस इलाके का ज़िला-शासक था
और लिसानियास, अबिलेने इलाके का
ज़िला-शासक था **2** और हन्ना एक
प्रधान याजक और कैफा महायाजक था,
उन्हीं दिनों परमेश्वर का संदेश वीराने में
यूहन्ना के पास पहुँचा जो जकर्याह का
बेटा था।

3 इसलिए यूहन्ना, यरदन नदी के
आस-पास के इलाके में आया और उस
पूरे इलाके में यह प्रचार करने लगा कि
लोगों को बपतिस्मा* लेने की ज़रूरत है,
जो इस बात की निशानी ठहरेगा कि

लूका 3:1* यानी, हेरोदेस अन्तिपास, हेरोदेस महान का बेटा। **1#** शाब्दिक, *“तित्रअर्खेस”* यानी रोमी सम्राट के लिए प्रांत के चौथाई इलाके पर शासन करनेवाला। **3*** बपतिस्मे का मतलब किसी को पानी में पूरी तरह डुबकी देना है। यह एक धार्मिक रस्म है।

उन्होंने अपने पापों के लिए पश्चाताप
किया है और वे परमेश्वर से इनकी माफी
पाना चाहते हैं, **4** ठीक जैसा यशा-
याह भविष्यवक्ता के कहे वचनों की
किताब में लिखा है: "सुनो! वीराने में कोई
यह पुकार लगा रहा है, 'यहोवा का
मार्ग तैयार करो, उसकी सड़कें सीधी
करो। **5** हर एक घाटी भर दी जाए
और हर एक पहाड़ और पहाड़ी सपाट
कर दी जाए और टेढ़े-मेढ़े रास्ते सीधे
और ऊबड़-खाबड़ जगह समतल कर दी
जाएँ। **6** और हर इंसान उद्धार का
वह ज़रिया देखेगा जो परमेश्वर की तरफ
से है।' "

7 जो भीड़ यूहन्ना से बपतिस्मा लेने
आ रही थी, वह उससे कहा करता था:
"अरे साँप के संपोलो, किसने तुम्हें आगाह
कर दिया कि तुम आनेवाले कहर से भाग
सकते हो? **8** पश्चाताप दिखानेवाले
फल पैदा करो। खुद से यह मत कहो,
'हम तो अब्राहम के वंशज हैं।' क्योंकि
मैं तुमसे कहता हूँ कि परमेश्वर इन
पत्थरों से अब्राहम के लिए संतान पैदा
करने की ताकत रखता है। **9** वाकई,
पेड़ों की जड़ पर वार करने के लिए
कुल्हाड़ा तैयार है। इसलिए हर वह पेड़
जो बढ़िया फल नहीं ला रहा, उसे काटा
और आग में झोंका जाएगा।"

10 इस पर भीड़ उससे यह पूछती:
"तो हमें क्या करना चाहिए?" **11** वह
उन्हें यह जवाब देता: "जिस आदमी के
पास दो कुरते हों, वह एक उसे दे दे
जिसके पास एक भी नहीं। जिसके पास
खाने की चीज़ें हों वह भी ऐसा ही करे।"
12 इतना ही नहीं, कर-वसूलनेवाले*
भी यूहन्ना के पास बपतिस्मा लेने
आए। उन्होंने उससे पूछा: "गुरु,
हमें क्या करना चाहिए?" **13** उसने
उनसे कहा: "जितना कर बनता है उससे
ज़्यादा का तकाज़ा मत करो।" **14** जो
फौजी सेवा में थे उन्होंने यूहन्ना से पूछा:
"हमें क्या करना चाहिए?" उसने कहा:
"किसी को मत सताओ या किसी पर झूठा
इलज़ाम न लगाओ। मगर तुम्हें जो रोज़ी-
रोटी मिलती है उसी में संतोष करो।"

15 उस दौरान लोग मसीह* के
आने की बड़ी आस लगाए थे और सभी
अपने-अपने दिलों में यूहन्ना के बारे में
यह सोच-विचार कर रहे थे: "कहीं यही
तो मसीह नहीं?" **16** यूहन्ना ने उन
सबको जवाब देते हुए कहा: "मैं तो तुम्हें
पानी से बपतिस्मा देता हूँ। मगर वह
आनेवाला है जो मुझसे कहीं शक्तिशाली
है। मैं उसकी जूतियों के फीते खोलने के
भी लायक नहीं। वह तुम लोगों को पवित्र
शक्ति से और आग से बपतिस्मा देगा।*
17 उसके हाथ में, भूसी अलग करने-
वाला उसाने का बेलचा है कि अपने खलि-
हान को पूरी तरह साफ करे और गेहूँ
को इकट्ठा कर अपने गोदाम में रखे, मगर
भूसी को उस आग में जला दे जिसे बुझाया
नहीं जा सकता।"

लूका 3:12* कर-वसूलनेवालों को, लोग इज़्ज़त की नज़र से नहीं देखा करते थे। **15*** या, "अभिषिक्त जन, मसीहा।" मत्ती 1:1 फुटनोट देखें। **16*** मत्ती 3:11 फुटनोट देखें।

18 इस तरह यूहन्ना ने लोगों को
और भी कई नसीहतें दीं और उन्हें
खुशखबरी सुनाता रहा। 19 लेकिन
जब यूहन्ना ने ज़िला-शासक हेरोदेस को,
उसके भाई की पत्नी हेरोदियास के मामले
में और उन सभी दुष्ट कामों की वजह
से जो हेरोदेस ने किए थे, ताड़ना दी,
20 तो हेरोदेस ने अपने दुष्ट कामों में
एक और काम जोड़ दियाः उसने यूहन्ना
को जेल में डलवा दिया।

21 जब सब लोग बपतिस्मा ले रहे
थे, तब यीशु ने भी बपतिस्मा लिया
और जब वह प्रार्थना कर रहा था, तो
आकाश खुल गया 22 और परमेश्वर
की पवित्र शक्ति कबूतर जैसे आकार में
उसके ऊपर उतरती दिखायी दी और
स्वर्ग से परमेश्वर की आवाज़ सुनायी दीः
"तू मेरा प्यारा बेटा है। मैंने तुझे मंज़ूर
किया है।"

23 जब यीशु ने सेवा का काम शुरू
किया, तो वह करीब तीस साल का था।
जैसा माना जाता था

वह यूसुफ का बेटा था,
और यूसुफ एली का बेटा था,
24 और एली मत्तात का बेटा था,
मत्तात लेवी का बेटा था,
लेवी मलकी का बेटा था,
मलकी यन्ना का बेटा था,
यन्ना यूसुफ का बेटा था,
25 यूसुफ मत्तित्याह का बेटा था,
मत्तित्याह आमोस का बेटा था,
आमोस नहूम का बेटा था,
नहूम असल्याह का बेटा था,
असल्याह नोगह का बेटा था,
26 नोगह मात का बेटा था,
मात मत्तित्याह का बेटा था,
मत्तित्याह शिमी का बेटा था,
शिमी योसेख का बेटा था,
योसेख योदाह का बेटा था,
27 योदाह योनान का बेटा था
योनान रेसा का बेटा था,
रेसा जरुब्बाबिल का बेटा था,
जरुब्बाबिल शालतिएल का बेटा था,
शालतिएल नेरी का बेटा था,
28 नेरी मलकी का बेटा था,
मलकी अद्दी का बेटा था,
अद्दी कोसाम का बेटा था,
कोसाम इलमोदाम का बेटा था,
इलमोदाम ऐर का बेटा था,
29 ऐर यीशु का बेटा था,
यीशु एलीएजेर का बेटा था,
एलीएजेर योरीम का बेटा था,
योरीम मत्तात का बेटा था,
मत्तात लेवी का बेटा था,
30 लेवी शमौन का बेटा था,
शमौन यहूदा का बेटा था,
यहूदा यूसुफ का बेटा था,
यूसुफ योनाम का बेटा था,
योनाम इलयाकीम का बेटा था,
31 इलयाकीम मलेआह का बेटा था,
मलेआह मिन्नाह का बेटा था,
मिन्नाह मत्तता का बेटा था,
मत्तता नातान का बेटा था,
नातान दाविद का बेटा था,

32 दाविद यिशै का बेटा था,
यिशै ओबेद का बेटा था,
ओबेद बोअज का बेटा था,
बोअज सलमोन का बेटा था,
सलमोन नहशोन का बेटा था,
33 नहशोन अम्मीनादाब का बेटा था,
अम्मीनादाब अरनी का बेटा था,
अरनी हिसरोन का बेटा था,
हिसरोन पेरेस का बेटा था,
पेरेस यहूदा का बेटा था,
34 यहूदा याकूब का बेटा था,
याकूब इसहाक का बेटा था,
इसहाक अब्राहम का बेटा था,
अब्राहम तेरह का बेटा था,
तेरह नाहोर का बेटा था,
35 नाहोर सरूग का बेटा था,
सरूग रऊ का बेटा था,
रऊ पेलेग का बेटा था,
पेलेग एबेर का बेटा था,
एबेर शेलह का बेटा था,
36 शेलह केनान का बेटा था,
केनान अर्पक्षद का बेटा था,
अर्पक्षद शेम का बेटा था,
शेम नूह का बेटा था,
नूह लेमेक का बेटा था,
37 लेमेक मथूशेलह का बेटा था,
मथूशेलह हनोक का बेटा था,
हनोक येरेद का बेटा था,
येरेद महललेल का बेटा था,
महललेल केनान का बेटा था,
38 केनान एनोश का बेटा था,
एनोश शेत का बेटा था,
शेत आदम का बेटा था
और आदम परमेश्वर का बेटा था।

4 यीशु, पवित्र शक्ति से भरा हुआ,
यरदन से चला गया। यह पवित्र
शक्ति उसे वीराने में ले गयी, **2** जहाँ
वह चालीस दिन तक रहा। तब शैतान*
ने उसकी परीक्षा लेने के लिए उसे फुस-
लाने की कोशिश की। उन दिनों के
दौरान यीशु ने कुछ नहीं खाया। जब वे
चालीस दिन पूरे हुए तो उसे भूख लगी।
3 तब शैतान ने यीशु से कहा: “अगर
तू सचमुच परमेश्वर का बेटा है, तो इस
पत्थर से बोल कि यह रोटी बन जाए।”
4 मगर यीशु ने उसे जवाब दिया: “यह
लिखा है, ‘इंसान सिर्फ रोटी से ज़िंदा नहीं
रह सकता।’ ”

5 और शैतान उसे एक ऊँची जगह
ले आया और पल-भर में उसे दुनिया
के तमाम राज्य दिखाए। **6** शैतान ने
उससे कहा: “मैं इन सबका अधिकार और
इनकी जो शानो-शौकत है, तुझे दे दूँगा,
क्योंकि यह सब मेरे हवाले किया गया
है, और मैं जिसे चाहूँ उसे देता हूँ।
7 इसलिए अगर तू बस एक बार मेरे
सामने मेरी उपासना करे, तो यह सबकुछ
तेरा हो जाएगा।” **8** जवाब में यीशु
ने उससे कहा: “यह लिखा है, ‘तू सिर्फ
अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना करना
और उसी की पवित्र सेवा करना।’ ”

9 फिर शैतान, यीशु को यरूशलेम
ले गया और मंदिर की चारदीवारी* पर

लूका 4:2* यूनानी में *“दियाबोलोस,”* जिसका मतलब है “निंदा करनेवाला।” **9*** शाब्दिक, “परकोटे।”

लाकर खड़ा किया और उससे कहा: "अगर तू सचमुच परमेश्वर का बेटा है, तो यहाँ से नीचे छलाँग लगा दे।
10 क्योंकि शास्त्र में लिखा है, 'परमेश्वर अपने स्वर्गदूतों को हुक्म देगा कि वे तुझे बचाएँ,' **11** और 'वे तुझे हाथों-हाथ उठा लेंगे, ताकि ऐसा न हो कि तेरा पैर किसी पत्थर से चोट खाए।'"
12 जवाब में यीशु ने उससे कहा: "यह कहा गया है, 'तू अपने परमेश्वर यहोवा की परीक्षा न लेना।'" **13** इस तरह जब शैतान हर तरीके से उसकी परीक्षा कर चुका, तब कोई और सही मौका मिलने तक उसके पास से चला गया।

14 इसके बाद यीशु, पवित्र शक्ति से भरा हुआ गलील लौटा। और आस-पास के पूरे इलाके में उसके बारे में अच्छी बातों की चर्चाएँ फैल गयीं। **15** वह उनके सभा-घरों में सिखाने लगा और सब लोग उसका बड़ा आदर करते थे।

16 फिर वह नासरत आया जहाँ उसकी परवरिश हुई थी। और अपने दस्तूर के मुताबिक सब्त* के दिन, वहाँ के सभा-घर में गया और पढ़ने के लिए खड़ा हुआ। **17** भविष्यवक्ता यशायाह का खर्रा उसके हाथ में दिया गया और उसने खर्रा खोला और वह जगह ढूँढ़कर निकाली, जहाँ यह लिखा था:
18 "यहोवा की पवित्र शक्ति मुझ पर है, क्योंकि उसने गरीबों को खुश-खबरी सुनाने के लिए मेरा अभिषेक किया है। उसने कैदियों को रिहाई का और अंधों को आँखों की रौशनी पाने का संदेश सुनाने के लिए मुझे भेजा है कि कुचले हुओं को रिहाई देकर आज़ाद करूँ
19 और यहोवा की मंज़ूरी पाने के वक्त का प्रचार करूँ।" **20** फिर उसने उस खर्रे को लपेटकर सेवक को वापस दे दिया और बैठ गया। सभा-घर में सब लोगों की नज़रें उस पर जमी हुई थीं।
21 तब उसने कहा: "यह शास्त्रवचन जो तुमने अभी-अभी सुना, वह आज पूरा हुआ है।"

22 वे सभी उसकी तारीफ करने लगे और उसकी दिल जीतनेवाली बातों पर ताज्जुब करने और यह कहने लगे: "क्या यह यूसुफ का बेटा नहीं है?" **23** इस पर यीशु ने उनसे कहा: "बेशक, तुम यह कहावत कहोगे, 'अरे वैद्य, पहले खुद का इलाज कर,' और मुझ पर यह कहते हुए लागू करोगे, 'कफरनहूम में हुए जिन कामों के बारे में हमने सुना है, वे यहाँ अपने घर के इलाके में भी कर।'" **24** यीशु ने कहा: "मैं तुमसे सच कहता हूँ कि कोई भी भविष्यवक्ता अपने इलाके में कबूल नहीं किया जाता। **25** मिसाल के लिए, यकीन मानो, एलिय्याह के दिनों में जब साढ़े तीन साल तक बारिश नहीं हुई थी जिस वजह से पूरे देश में भारी अकाल पड़ा था, उस दौरान इसराएल में बहुत-सी विधवाएँ थीं। **26** फिर भी एलिय्याह को उनमें से किसी भी स्त्री के पास नहीं भेजा गया, बल्कि सिर्फ सीदोन देश के

लूका 4:16* मत्ती 12:1 फुटनोट देखें।

सारपत कसबे की एक विधवा के पास
भेजा गया। **27** यही नहीं, भविष्य-
वक्ता एलीशा के वक्त में इसराएल में
बहुत-से कोढ़ी थे, फिर भी उनमें से किसी
को भी शुद्ध नहीं किया गया, बल्कि
सीरिया के नामान को शुद्ध किया गया।"
28 जब सभा-घर में मौजूद सारे लोगों
ने ये बातें सुनीं, तो वे आग-बबूला हो
उठे। **29** वे उठे और उतावली में
यीशु को शहर के बाहर, उस पहाड़ के
टीले पर ले गए जिस पर उनका शहर
बनाया गया था, ताकि उसे वहाँ से नीचे
धकेल दें। **30** मगर वह उनके बीच
में से निकलकर अपने रास्ते चला गया।

31 यीशु कफरनहूम चला गया, जो
गलील प्रदेश का एक शहर था। वह
सब्त के दिन लोगों को सिखा रहा था।
32 वे उसका सिखाने का तरीका देख-
कर दंग रह गए, क्योंकि वह पूरे अधि-
कार के साथ बोलता था। **33** उस
सभा-घर में एक आदमी था, जिसमें एक
दुष्ट स्वर्गदूत समाया था और वह ज़ोर से
चिल्लाने लगाः **34** "ओ यीशु नासरी,
हमारा तुझसे क्या लेना-देना? क्या तू
हमें नाश करने आया है? मैं जानता हूँ
तू असल में कौन है, तू परमेश्वर का
भेजा हुआ पवित्र जन है।" **35** मगर
यीशु ने उसे डाँटते हुए कहाः "खामोश
रह, और उसमें से बाहर निकल जा।"
तब उस दुष्ट स्वर्गदूत ने उस आदमी को
लोगों के बीच पटक दिया, और उसे बिना
कोई नुकसान पहुँचाए उसमें से निकल
गया। **36** इस पर सभी हैरत में पड़
गए और एक-दूसरे से कहने लगेः "देखो!
यह कैसे बोलता है! क्योंकि यह अधिकार
और शक्ति के साथ दुष्ट स्वर्गदूतों को
हुक्म देता है और वे निकल जाते हैं।"
37 इसलिए आस-पास के पूरे इलाके में
हर तरफ उसकी धूम मच गयी।

38 सभा-घर से निकलने के बाद,
यीशु शमौन के घर आया। शमौन की
सास तेज़ बुखार से तप रही थी। उन्होंने
शमौन की सास के लिए यीशु से बिनती
की। **39** इसलिए यीशु ने उसके पास
खड़े होकर बुखार को डाँटा और उसका
बुखार उतर गया। उसी पल वह उठ गयी
और उनकी सेवा करने लगी।

40 लेकिन जब सूरज ढलने लगा,
तब सब लोग अपने-अपने बीमारों को
जिन्हें तरह-तरह की बीमारियाँ थीं, उसके
पास ले आए। वह उनमें से हरेक पर
अपने हाथ रखकर उन्हें चंगा करता था।
41 यहाँ तक कि दुष्ट स्वर्गदूत भी यह
चिल्लाते हुए बहुतों में से निकल जाते थेः
"तू परमेश्वर का बेटा है।" मगर वह उन्हें
डाँटता था और बोलने की इजाज़त नहीं
देता था, क्योंकि वे जानते थे कि वह
मसीह है।

42 लेकिन जब दिन हुआ, तो वह
वहाँ से निकलकर किसी एकांत जगह की
तरफ चला गया। मगर लोगों की भीड़
उसे तलाशने लगी और ढूँढ़ते-ढूँढ़ते वहाँ
पहुँच गयी जहाँ वह था। लोग उसे रोकने
लगे कि वह उनके पास से न जाए।
43 मगर यीशु ने उनसे कहाः "मुझे
दूसरे शहरों में भी परमेश्वर के राज की

खुशखबरी सुनानी है, क्योंकि मुझे इसी-
लिए भेजा गया है।” **44** फिर वह
जाकर यहूदिया प्रदेश के सभा-घरों में
प्रचार करने लगा।

5 एक बार यीशु गन्नेसरत झील* के
किनारे खड़ा एक बड़ी भीड़ को पर-
मेश्वर का वचन सिखा रहा था। लोग उस
पर गिरे पड़ रहे थे। **2** तब उसने
झील के किनारे लगी दो नाव देखीं, जिनमें
से मछुवारे उतरकर अपने जाल धो रहे
थे। **3** तब वह उनमें से एक नाव पर
चढ़ गया जो शमौन की थी। उसने शमौन
से कहा कि नाव को खेकर किनारे से
थोड़ी दूर ले जाए। फिर यीशु नाव में बैठ-
कर भीड़ को सिखाने लगा। **4** जब
उसने बोलना खत्म किया, तो शमौन
से कहा: “नाव को खेकर गहरे पानी
में ले चल और तुम लोग वहाँ मछलियाँ
पकड़ने के लिए अपने जाल डालना।”
5 मगर शमौन ने कहा: “गुरु, हमने
सारी रात मेहनत की है, मगर हमारे हाथ
कुछ नहीं लगा। फिर भी तेरे कहने पर
मैं जाल डालूँगा।” **6** जब उन्होंने ऐसा
किया, तो देखो, भारी तादाद में मछलियाँ
उनके जाल में आ फँसीं। यहाँ तक
कि उनके जाल फटने लगे। **7** तब
उन्होंने दूसरी नाव में सवार अपने साथियों
को इशारा किया कि उनकी मदद के
लिए आएँ। और वे आए और आकर
दोनों नाव में मछलियाँ भरने लगे और
नाव मछलियों से इतनी भर गयीं कि
डूबने लगीं। **8** यह देख शमौन पत-
रस यीशु के आगे गिर पड़ा और कहने
लगा: “मेरे पास से चला जा प्रभु, क्योंकि
मैं एक पापी इंसान हूँ।” **9** क्योंकि
इतनी तादाद में मछलियाँ पकड़ने की
वजह से वह और उसके सब साथी हक्के-
बक्के रह गए थे। **10** जब्दी के दोनों
बेटों, याकूब और यूहन्ना का भी यही
हाल था जो शमौन के साझेदार थे।
मगर यीशु ने शमौन से कहा: “डरना
छोड़। अब से तू जीते-जागते इंसानों को
पकड़ा करेगा।” **11** तब वे अपनी-
अपनी नाव किनारे पर ले आए और
सबकुछ छोड़कर उसके पीछे हो लिए।

12 एक और मौके पर जब यीशु
किसी शहर में था, तो देखो! वहाँ एक
आदमी था जिसका शरीर पूरी तरह कोढ़
से ग्रस्त था! जैसे ही उसकी नज़र यीशु
पर पड़ी, वह उसके सामने मुँह के बल
गिरा और गिड़गिड़ाकर उससे कहने लगा:
“प्रभु, बस अगर तू चाहे, तो मुझे शुद्ध
कर सकता है।” **13** इस पर, यीशु ने
अपना हाथ बढ़ाकर उसे यह कहते हुए
छूआ: “हाँ, मैं चाहता हूँ। शुद्ध हो जा।”
उसी पल उसका कोढ़ गायब हो गया।
14 यीशु ने उस आदमी को आदेश
दिया कि किसी को कुछ न बताए और
कहा: “जाकर खुद को याजक को दिखा
और ठीक जैसे मूसा ने हिदायत दी
है, अपने शुद्ध होने के संबंध में एक
भेंट चढ़ा ताकि उन पर गवाही हो।”
15 मगर, यीशु की चर्चा दूर-दूर तक
फैलती गयी और भीड़-की-भीड़ उसकी
सुनने और बीमारियों से चंगा होने के लिए
उसके पास आती रही। **16** लेकिन,

लूका 5:1* या, गलील झील।

वह वीरान इलाकों में ही रहा और प्रार्थना
में लगा रहा।

17 एक दिन वह लोगों को सिखा
रहा था और वहाँ गलील और यहूदिया
प्रदेश के हर गाँव से और यरूशलेम से
आए फरीसी और मूसा के कानून के
शिक्षक भी बैठे हुए थे। और लोगों को
चंगा करने के लिए यहोवा की शक्ति
उस पर थी। **18** तभी लोग लकवे
के मारे हुए एक आदमी को बिस्तर
पर लेकर आए। वे उसे किसी तरह
उस कमरे के अंदर ले जाना चाहते थे
जहाँ यीशु था। **19** मगर जब भीड़
की वजह से उसे अंदर ले जाने का
रास्ता न मिला, तो वे ऊपर छत पर
चढ़ गए। उन्होंने खपरैल हटाकर उसे
बिस्तर समेत उन लोगों के बीच नीचे
उतार दिया जो यीशु के सामने मौजूद
थे। **20** जब यीशु ने इन आदमियों
का विश्वास देखा तो लकवे के मारे
से कहा: “तेरे पाप माफ किए गए।”
21 यह सुनकर शास्त्री* और फरीसी
अपने मन में कहने लगे: “यह कौन है
जो अपनी बातों से परमेश्वर की तौहीन
कर रहा है? परमेश्वर को छोड़ और
कौन पापों को माफ कर सकता है?”
22 मगर यीशु ने यह जानकर कि वे
क्या सोच रहे हैं, उन्हें जवाब दिया: “तुम
अपने दिलों में क्या बातें सोच रहे हो?
23 क्या कहना ज़्यादा आसान है, ‘तेरे
पाप माफ किए गए’ या यह कहना कि
‘उठ और चल-फिर’? **24** मगर, इस-
लिए कि तुम जान लो कि इंसान के बेटे
को इस धरती पर पाप माफ करने का
अधिकार है . . .” यीशु ने लकवे के मारे
हुए आदमी से कहा: “मैं तुझसे कहता हूँ,
खड़ा हो, अपना बिस्तर उठा और अपने
घर चला जा।” **25** उसी पल वह
आदमी उनके देखते-देखते उठ बैठा।
उसने वह बिस्तर उठाया जिस पर वह
लेटा था और परमेश्वर की बड़ाई करता
हुआ अपने घर चला गया। **26** यह
देखकर वे सब-के-सब हैरान रह गए और
परमेश्वर की बड़ाई करने लगे और उन
पर भय छा गया। वे कहने लगे: “आज
हमने अजब घटनाएँ देखी हैं!”

27 इसके बाद, यीशु बाहर गया और
उसने कर-वसूली के दफ्तर में लेवी नाम
के एक आदमी को बैठे देखा जो कर
वसूला करता था। यीशु ने उससे कहा:
“मेरा चेला बन जा और मेरे पीछे हो
ले।” **28** तब लेवी उठा और सब-
कुछ छोड़-छाड़कर उसके पीछे हो लिया।
29 साथ ही, लेवी ने यीशु के स्वागत में
अपने घर में एक बड़ी दावत रखी। वहाँ
भारी तादाद में कर-वसूलनेवाले और
दूसरे लोग मौजूद थे जो उनके साथ
खाने की मेज़ पर बैठे थे। **30** इस
पर फरीसी और उनके शास्त्री कुड़कुड़ाने
लगे और यीशु के चेलों से कहने लगे:
“तुम कर-वसूलनेवालों और पापियों के
साथ क्यों खाते हो?” **31** यीशु ने
जवाब में उनसे कहा: “जो सेहतमंद हैं,
उन्हें वैद्य की ज़रूरत नहीं होती, मगर

लूका 5:21* शास्त्री, यीशु के ज़माने में परमेश्वर के कानून का मतलब समझानेवाले और इसके शिक्षक थे।

बीमारों को होती है। **32** मैं धर्मियों
को नहीं बल्कि पापियों को पश्चाताप के
लिए बुलाने आया हूँ।"

33 उन्होंने कहा: "यूहन्ना के चेले
अकसर उपवास रखते और मिन्नतें और
प्रार्थनाएँ करते हैं और फरीसियों के चेले
भी ऐसा ही करते हैं, मगर तेरे चेले खाते-
पीते हैं।" **34** यीशु ने उनसे कहा:
"जब तक दूल्हा अपने दोस्तों के साथ है,
तब तक तुम उसके दोस्तों से उपवास नहीं
करवा सकते, क्या करवा सकते हो?
35 लेकिन वे दिन आएँगे जब दूल्हे को
उनसे वाकई जुदा कर दिया जाएगा। तब
उन दिनों वे उपवास करेंगे।"

36 इसके बाद, यीशु ने उन्हें एक
मिसाल भी दी: "कोई भी नए कपड़े
से पैवंद काटकर पुराने कपड़े पर नहीं
लगाता। लेकिन अगर लगाए, तो नया
पैवंद फटकर अलग हो जाएगा और नए
कपड़े का यह पैवंद पुराने से मेल भी नहीं
खाएगा। **37** कोई पुरानी मश्कों में
नयी दाख-मदिरा नहीं भरता। लेकिन
अगर भरे, तो नयी मदिरा मश्कों को फाड़
देगी और बाहर बह जाएगी और मश्कें
भी बेकार हो जाएँगी। **38** मगर नयी
दाख-मदिरा नयी मश्कों में भरी जानी
चाहिए। **39** जिसने पुरानी दाख-
मदिरा पी है वह नयी नहीं चाहता, क्योंकि
वह कहता है, 'पुरानी ही बढ़िया है।'"

6 एक बार सब्त के दिन वह खेतों से
होते हुए गुज़र रहा था और उसके
चेले अनाज की बालें तोड़-तोड़कर और
हाथों से मसलकर खाने लगे। **2** इस
पर कुछ फरीसियों ने कहा: "तुम सब्त के
दिन ऐसा काम क्यों कर रहे हो जो कानून
के खिलाफ है?" **3** मगर यीशु ने उन्हें
जवाब दिया: "क्या तुमने यह कभी नहीं
पढ़ा कि जब दाविद और उसके आदमी
भूखे थे तब उसने क्या किया? **4** किस
तरह वह परमेश्वर के भवन में गया और
चढ़ावे की वे रोटियाँ लेकर खायीं और
कुछ अपने साथियों को भी दीं, जिन्हें
याजकों को छोड़ किसी का भी खाना
कानून के खिलाफ था?" **5** फिर यीशु
ने उनसे यह भी कहा: "इंसान का बेटा
सब्त के दिन का प्रभु है।"

6 एक और सब्त के दिन यीशु सभा-
घर में गया और सिखाने लगा। वहाँ एक
आदमी था जिसका दायाँ हाथ सूखा हुआ
था। **7** शास्त्री और फरीसी यीशु पर
नज़र जमाए हुए थे कि देखें वह सब्त
के दिन चंगा करता है या नहीं, ताकि
किसी तरह उस पर इलज़ाम लगा सकें।
8 मगर यीशु जानता था कि वे अपने
मन में क्या सोच रहे हैं। फिर भी, उसने
सूखे हाथवाले उस आदमी से कहा: "उठ
और यहाँ बीच में खड़ा हो जा।" तब वह
आदमी उठा और बीच में खड़ा हो गया।
9 फिर यीशु ने उनसे कहा: "मैं तुम
लोगों से पूछता हूँ, परमेश्वर के कानून
के हिसाब से सब्त के दिन किसी का भला
करना सही है या किसी का बुरा करना?
किसी की जान बचाना सही है या किसी
की जान लेना?" **10** फिर यीशु ने
चारों तरफ उन सब पर नज़र डालने के
बाद, उस आदमी से कहा: "अपना हाथ

आगे बढ़ा।” उसने ऐसा ही किया और
उसका हाथ ठीक हो गया। **11** मगर
शास्त्री और फरीसी गुस्से से पागल हो
गए और एक-दूसरे से सलाह करने लगे
कि उन्हें यीशु के साथ क्या करना चाहिए।

12 उन दिनों यीशु प्रार्थना करने के
लिए पहाड़ पर गया, और सारी
रात परमेश्वर से प्रार्थना करता रहा।
13 फिर जब दिन निकला तो उसने
अपने चेलों को पास बुलाया और
उनमें से बारह को चुना, जिन्हें
उसने “प्रेषित”* नाम भी दिया।
14 ये थे: शमौन, जिसे उसने पतरस
नाम भी दिया और उसका भाई अन्द्रियास
और याकूब, यूहन्ना, फिलिप्पुस, बर-
तुलमै, **15** मत्ती, थोमा, हलफई का
बेटा याकूब, शमौन जो “जोशीला” कह-
लाता था, **16** यहूदा जिसके पिता का
नाम याकूब था और यहूदा इस्करियोती
जो बाद में दगाबाज़ बन गया।

17 यीशु इनके साथ नीचे आया और
एक समतल जगह में आकर रुक गया।
वहाँ उसके चेलों की एक बड़ी भीड़
थी और सारे यहूदिया और यरूशलेम
से, साथ ही समुद्र-तट के देश, यानी
सोर और सीदोन से भारी तादाद
में लोग वहाँ जमा थे। वे उसकी बातें
सुनने और अपनी बीमारियों से ठीक
होने आए थे। **18** यहाँ तक कि जिन्हें
दुष्ट स्वर्गदूत सताते थे, वे भी चंगे हो
गए। **19** भीड़ में से सभी उसे छूने की
कोशिश कर रहे थे, क्योंकि उसके अंदर
से शक्ति निकलती थी और सबको चंगा
करती थी।

20 यीशु ने नज़र उठाकर अपने
चेलों को देखा और यह कहना शुरू किया:

“सुखी हो तुम गरीबो, क्योंकि पर-
मेश्वर का राज तुम्हारा है।

21 सुखी हो तुम जो अभी भूखे हो,
क्योंकि तुम्हें तृप्त किया जाएगा।

सुखी हो तुम जो अभी रोते हो, क्योंकि
तुम हँसोगे।

22 सुखी हो तुम जब भी लोग इंसान
के बेटे की वजह से तुमसे नफरत करें,
और अपने बीच से तुम्हारा बहिष्कार
कर दें और तुम्हें बदनाम करें और
दुष्ट करार देकर तुम्हारा नाम खराब
करें। **23** उस दिन खुशियाँ मनाना
और उछलना, इसलिए कि स्वर्ग में तुम्हारे
लिए बड़ा इनाम है, क्योंकि उनके बाप-
दादों ने भी भविष्यवक्ताओं के साथ यही
सब किया था।

24 मगर धनवानो, तुम पर हाय,
क्योंकि तुम अपने हिस्से का दिलासा
पा चुके।

25 हाय तुम पर जो अभी भरे-पूरे
हो, क्योंकि तुम्हें भूख सताएगी।

हाय तुम पर जो अभी हँस रहे हो,
क्योंकि तुम मातम मनाओगे और रोओगे।

26 हाय तुम पर जब सभी तुम्हारी
तारीफ करें, क्योंकि उनके बापदादे झूठे
भविष्यवक्ताओं के साथ ऐसा ही किया
करते थे।

27 मगर मैं तुमसे, जो सुन रहे हो
कहता हूँ, अपने दुश्मनों से प्यार करते

लूका 6:13* या, “भेजे गए।” यूनानी में *“अपोस्टो-लोस।”*

रहो। जो तुमसे नफरत करते हैं उनके
साथ भलाई करते रहो। **28** जो तुम्हें
कोसते हैं उन्हें आशीष देते रहो और जो
तुम्हारी बेइज़्ज़ती करते हैं, उनके लिए
प्रार्थना करते रहो। **29** जो तेरे एक
गाल पर थप्पड़ मारता है, उसकी तरफ
अपना दूसरा गाल भी कर दे। जो तेरा
ओढ़ना तुझसे छीन लेता है, उसे कुरता
लेने से भी न रोक। **30** जो कोई
तुझसे माँगता है उसे दे और जो तेरी चीज़ें
उठाकर ले जाता है, उससे वापस मत
माँग।

31 ठीक जैसा तुम चाहते हो कि
लोग तुम्हारे साथ करें, तुम भी उनके साथ
वैसा ही करो।

32 अगर तुम उन्हीं से प्यार करो जो
तुमसे प्यार करते हैं, तो इसमें तुम्हारी
क्या तारीफ? इसलिए कि पापी भी
अपने प्यार करनेवालों से प्यार करते हैं।
33 अगर तुम उन्हीं के साथ भलाई करो
जो तुम्हारे साथ भलाई करते हैं, तो
इसमें तुम्हारी क्या तारीफ? पापी भी तो
ऐसा करते हैं। **34** साथ ही, अगर
तुम बिन ब्याज के उन लोगों को उधार
दो जिनसे तुम्हें पाने की उम्मीद है, तो
इसमें तुम्हारी क्या तारीफ? पापी भी तो
पापियों को बिन ब्याज के उधार देते हैं,
ताकि उनसे उतना ही वापस पा सकें।
35 इसके बजाय, अपने दुश्मनों से प्यार
करते रहो और भलाई करते रहो और
बिन ब्याज के उधार देते रहो और बदले
में कुछ भी पाने की उम्मीद मत करो।
इसका तुम्हें बड़ा इनाम मिलेगा और तुम
परम-प्रधान के बेटे ठहरोगे, क्योंकि वह
एहसान न माननेवालों और दुष्टों पर
भी कृपा करता है। **36** जैसा तुम्हारा
पिता दयालु है, वैसे ही तुम भी दया
करते रहो।

37 दोष लगाना बंद करो, और तुम
पर भी हरगिज़ दोष नहीं लगाया जाएगा।
दूसरों को मुजरिम ठहराना बंद करो,
और तुम्हें हरगिज़ मुजरिम नहीं ठहराया
जाएगा। छोड़ दिया करो, और तुम्हें भी
छोड़ दिया जाएगा। **38** दिया करो,
और लोग तुम्हें भी देंगे। वे तुम्हारी झोली
में नाप भर-भरकर, दबा-दबाकर और
अच्छी तरह हिला-हिलाकर और ऊपर
तक भरकर डालेंगे। इसलिए कि जिस
नाप से तुम नापते हो, बदले में वे भी
उसी नाप से तुम्हारे लिए नापेंगे।”

39 फिर उसने उन्हें एक मिसाल भी
दी: “एक अंधा दूसरे अंधे को राह नहीं
दिखा सकता, क्या दिखा सकता है? अगर
वह दिखाए, तो क्या वे दोनों गड्ढे में नहीं
गिरेंगे? **40** चेला अपने गुरु से बड़ा
नहीं होता, मगर हर कोई जिसे पूरी तरह
सिखाया जाता है, वह अपने गुरु जैसा
होगा। **41** तू क्यों अपने भाई की
आँख में पड़े तिनके को देखता है, मगर
उस लट्ठे पर ध्यान नहीं देता जो तेरी
अपनी आँख में पड़ा है? **42** तू अपने
भाई से यह कैसे कह सकता है, ‘भाई,
आ मैं तेरी आँख का तिनका निकाल दूँ,’
जबकि तू उस लट्ठे को नहीं देख रहा
जो तेरी अपनी ही आँख में पड़ा है?
अरे कपटी! पहले अपनी आँख से लट्ठा

निकाल, तब तू साफ-साफ देख सकेगा
कि वह तिनका कैसे निकालना है जो तेरे
भाई की आँख में है।

43 इसलिए कि ऐसा कोई भी बढ़िया
पेड़ नहीं, जो सड़ा हुआ फल पैदा करता
हो। न ही ऐसा कोई सड़ा हुआ पेड़
है, जो बढ़िया फल पैदा करता हो।
44 इसलिए कि हर पेड़ अपने फल से
जाना जाता है। मिसाल के लिए, लोग
कभी कंटीली झाड़ियों से अंजीर नहीं
बटोरते, न ही जंगली पौधों से अंगूर
की कटाई करते हैं। **45** एक अच्छा
इंसान अपने दिल की अच्छाई के खज़ाने
से अच्छाई निकालता है, मगर एक दुष्ट
इंसान अपनी दुष्टता के खज़ाने से दुष्टता
निकालता है। इसलिए कि जो इंसान के
दिल में भरा है, वही उसके मुँह पर
आता है।

46 तो फिर, तुम क्यों मुझे 'प्रभु!
प्रभु!' पुकारते हो, मगर मैं जो कहता हूँ
वह नहीं करते? **47** हर कोई जो मेरे
पास आता है और मेरी बातें सुनता है
और इन पर चलता है, मैं बताता हूँ
कि वह किसके जैसा है: **48** वह उस
आदमी के जैसा है, जिसने एक घर बनाने
के लिए गहराई तक खुदाई की और
चट्टान पर नींव डाली। इसलिए जब बाढ़
आयी, और नदी की तेज़ धाराएँ उस
घर से टकरायीं, तो वे उसे हिला न
सकीं क्योंकि उसकी नींव मज़बूत थी।
49 दूसरी तरफ, जो मेरी बातें सुनता
तो है मगर उन पर चलता नहीं, वह उस
आदमी जैसा है जिसने बिना कोई नींव
डाले अपना घर ज़मीन पर बनाया। नदी
की तेज़ धाराएँ उसके घर से टकरायीं,
और वह उसी वक्त ढह गया और पूरी
तरह तहस-नहस हो गया।"

7 लोग उसकी सुन रहे थे और जब
वह सारी बातें कह चुका, तो कफर-
नहूम में आया। **2** वहाँ एक सेना-
अफसर* था जिसका एक दास, जो उसे
बहुत प्यारा था, बीमार था और मरने पर
था। **3** जब सेना-अफसर ने यीशु के
बारे में सुना, तो उसने यहूदियों के बुज़ुर्गों
को उसके पास यह कहने भेजा कि आकर
मेरे दास की जान बचा ले। **4** जब वे
बुज़ुर्ग यीशु के पास पहुँचे, तो उससे यह
कहते हुए बहुत बिनती करने लगे: "यह
सेना-अफसर इस लायक है कि तू उसकी
मदद करे, **5** इसलिए कि वह हम
यहूदियों से प्यार करता है और उसने
खुद हमारे लिए सभा-घर बनवाया है।"
6 तब यीशु उनके साथ चल दिया। मगर
जब वह उसके घर से थोड़ी ही दूरी पर
था, उस सेना-अफसर ने पहले ही अपने
दोस्तों के हाथ यह संदेश भेजा कि उससे
कहना: "प्रभु, और तकलीफ न उठा,
क्योंकि मैं इस लायक नहीं कि तू मेरी
छत तले आए। **7** इसी वजह से मैंने
अपने आपको इस काबिल नहीं समझा
कि खुद तेरे पास आऊँ। मगर बस तू
अपने मुँह से कह दे, और मेरा सेवक
चंगा हो जाएगा। **8** क्योंकि मैं भी
किसी और के अधिकार के अधीन हूँ और
मेरे नीचे भी सिपाही हैं और जब मैं एक

लूका 7:2* या, "शतपति," जिसकी कमान के नीचे सौ सैनिक होते थे।

से कहता हूँ, 'जा!' तो वह जाता है और
दूसरे से कहता हूँ, 'आ!' तो वह आता है
और अपने दास से कहता हूँ, 'यह कर!'
और वह करता है।" **9** जब यीशु ने
ये बातें सुनीं तो उस पर ताज्जुब किया
और मुड़कर अपने पीछे आनेवाली भीड़
से कहा: "मैं तुमसे कहता हूँ, मैंने इसरा-
एल में भी ऐसा ज़बरदस्त विश्वास नहीं
पाया।" **10** जो भेजे गए थे उन्होंने
घर वापस लौटने पर पाया कि वह दास
बिलकुल ठीक हो चुका है।

11 इसके बाद वह नाईन नाम के
एक शहर गया और उसके चेले और एक
बड़ी भीड़ उसके साथ जा रही थी।
12 जब वह उस शहर के फाटक के
पास पहुँचा, तो देखो! एक मुरदे को ले
जाया जा रहा था जो अपनी माँ का इक-
लौता बेटा था। और-तो-और, वह विधवा
थी। उस शहर से बड़ी तादाद में लोग
उस स्त्री के साथ जा रहे थे। **13** जब
प्रभु की नज़र उस स्त्री पर पड़ी, तो वह
तड़प उठा और उससे कहा: "मत रो।"
14 तब उसने पास आकर अर्थी को
छूआ और अर्थी उठानेवाले रुक गए और
उसने कहा: "जवान, मैं तुझसे कहता हूँ,
उठ!" **15** तब जो मर गया था वह
उठ बैठा और बात करने लगा और
यीशु ने उसे उसकी माँ को सौंप दिया।
16 तब सब लोगों पर डर छा गया
और वे यह कहते हुए परमेश्वर की
बड़ाई करने लगे: "हमारे बीच एक महान
भविष्यवक्ता उठा है," और "परमेश्वर
ने अपने लोगों की तरफ ध्यान दिया है।"
17 उसके बारे में यह खबर सारे यहू-
दिया और आस-पास के सारे इलाके में
फैल गयी।

18 यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के
चेलों ने यूहन्ना को इन सारी बातों की
खबर दी। **19** तब उसने अपने दो
चेलों को बुलाया और उन्हें प्रभु से यह
पूछने के लिए भेजा: "वह जो आनेवाला
था, क्या तू ही है, या हम किसी और की
भी आस लगाएँ?" **20** जब वे यीशु
के पास आए, तो उन्होंने कहा: "यूहन्ना
बपतिस्मा देनेवाले ने हमें तेरे पास यह
पूछने के लिए भेजा है, 'वह जो आने-
वाला था, क्या तू ही है, या हम किसी
और की भी आस लगाएँ?' " **21** उसी
वक्त यीशु ने बहुत-से लोगों की बीमा-
रियाँ और दर्दनाक रोग दूर किए और
लोगों में समाए दुष्ट स्वर्गदूतों को निकाला
और बहुत-से अंधों को आँखों की रौशनी
दी। **22** इसलिए जवाब में उसने उन
दोनों से कहा: "जाओ और जो तुमने
देखा और सुना है उसकी खबर यूहन्ना
को दो: अंधे आँखों की रौशनी पा रहे
हैं, लंगड़े चल-फिर रहे हैं, कोढ़ी शुद्ध
किए जा रहे हैं, बहरे सुन रहे हैं, मरे
हुओं को ज़िंदा किया जा रहा है और
गरीबों को खुशखबरी सुनायी जा रही है।
23 सुखी है वह जिसने मेरे बारे में संदेह
न किया हो।"*

24 जब यूहन्ना का संदेश लानेवाले
चले गए, तो वह भीड़ से यूहन्ना के बारे
में यह कहने लगा: "तुम बाहर वीराने में
क्या देखने गए थे? हवा से इधर-उधर

लूका 7:23* या, "मुझ से ठोकर न खायी हो।"

हिलते किसी सरकंडे को? 25 फिर
तुम क्या देखने गए थे? क्या रेशमी मुला-
यम पोशाक पहने किसी आदमी को?
शानदार कपड़े पहननेवाले और ऐशो-
आराम से जीनेवाले तो महलों में रहते
हैं। 26 तो आखिर तुम बाहर क्या
देखने गए थे? एक भविष्यवक्ता को?
हाँ। और मैं तुमसे कहता हूँ, भविष्यवक्ता
से भी किसी बड़े को। 27 यह वही है
जिसके बारे में लिखा है, 'देख! मैं अपना
दूत तेरे आगे भेज रहा हूँ, जो तेरे
आगे-आगे तेरा रास्ता तैयार करेगा।'
28 मैं तुमसे कहता हूँ, जितने स्त्रियों से
जन्मे हैं, उनमें यूहन्ना से बड़ा कोई भी
नहीं। मगर परमेश्वर के राज में जो
बाकियों से छोटा है, वह यूहन्ना से बड़ा
है।" 29 (जब सब लोगों ने और कर-
वसूलनेवालों ने भी यह सुना, तो स्वीकार
किया कि परमेश्वर सच्चा है, क्योंकि
उन्होंने यूहन्ना से बपतिस्मा लिया था।
30 मगर फरीसी और जो मूसा के कानून
के जानकार थे, उन्होंने यूहन्ना से बप-
तिस्मा नहीं लिया और इस तरह परमेश्वर
ने उनके लिए जो इच्छा ठहरायी थी उसे
ठुकरा दिया था।)

31 "इसलिए, मैं इस पीढ़ी के लोगों
की तुलना किससे करूँ और वे किसके
जैसे हैं? 32 वे उन बच्चों जैसे हैं
जो बाज़ार में बैठे हुए एक-दूसरे को
पुकारते और यह कहते हैं, 'हमने तुम्हारे
लिए बाँसुरी बजायी, मगर तुम न नाचे।
हमने विलाप किया, मगर तुम न रोए।'
33 उसी तरह, यूहन्ना बपतिस्मा देने-
वाला, औरों की तरह न रोटी खाता, न
दाख-मदिरा पीता आया, मगर तुम कहते
हो, 'उसमें दुष्ट स्वर्गदूत समाया है।'
34 जबकि इंसान का बेटा खाता-पीता
आया, फिर भी तुम कहते हो, 'देखो! यह
आदमी पेटू और पियक्कड़ है और कर-
वसूलनेवालों और पापियों का दोस्त है!'
35 लेकिन, बुद्धि अपने सारे नतीजों*
से सही साबित होती है।"

36 शमौन नाम का एक फरीसी था
जिसने यीशु से कई बार गुज़ारिश की थी
कि उसके यहाँ खाने पर आए। इस-
लिए यीशु उस फरीसी के घर गया और
खाने बैठा। 37 उसी शहर में एक
बदनाम स्त्री थी, जिसके बारे में सब
जानते थे कि वह एक पापिन है। जब
उसे मालूम पड़ा कि यीशु उस फरीसी के
घर खाने पर आया है, तो वह संग-
मरमर की बोतल लायी जिसमें खुशबू-
दार तेल था। 38 वह पीछे, यीशु
के पैरों के पास आकर खड़ी हो गयी
और रो-रोकर अपने आंसुओं से उसके
पैर भिगोने लगी और अपने बालों से
उन्हें पोंछने लगी। वह बार-बार उसके
पैरों को चूमती और उन पर खुशबूदार
तेल मलती थी। 39 यह देखकर वह
फरीसी जिसने यीशु को न्यौता दिया
था, मन-ही-मन कहने लगा: "अगर यह
आदमी एक भविष्यवक्ता होता, तो जान
जाता कि यह स्त्री जो उसे छू रही है,
कौन और कैसी है और यह कि वह एक
पापिन है।" 40 मगर यीशु ने उससे

लूका 7:35* शाब्दिक, "बच्चों।"

कहाः “शमौन, मैं तुझसे कुछ कहना
चाहता हूँ।” उसने कहाः “गुरु, बोल!”
41 “दो आदमी किसी साहूकार के
कर्ज़दार थे। एक पर पाँच सौ दीनार का
कर्ज़ था और दूसरे पर पचास का।
42 लेकिन जब अपना कर्ज़ चुकाने
के लिए उनके पास कुछ भी नहीं था,
तब साहूकार ने बड़ी उदारता से उन
दोनों का कर्ज़ माफ कर दिया। इसलिए
बता, उन दोनों में से कौन साहूकार से
ज़्यादा प्यार करेगा?” 43 शमौन ने
जवाब दियाः “मैं समझता हूँ कि वही
जिसका उसने ज़्यादा कर्ज़ माफ किया।”
यीशु ने कहाः “तू ने बिलकुल सही सोचा
है।” 44 इस पर यीशु ने घूमकर उस
स्त्री की तरफ देखा और शमौन से कहाः
“क्या तू इस स्त्री को देख रहा है? मैं तेरे
घर में आया और तू ने मेरे पाँव धोने के
लिए पानी न दिया। मगर इस स्त्री ने
अपने आंसुओं से मेरे पैर धोए और
अपने बालों से उन्हें पोंछा। 45 तू ने
मुझे नहीं चूमा। मगर इस स्त्री ने जब
से मैं आया हूँ तब से मेरे पैरों को
चूमना नहीं छोड़ा। 46 तू ने मेरे सिर
पर तेल नहीं मला। मगर इस स्त्री ने
मेरे पैरों पर खुशबूदार तेल मला है।
47 इस वजह से, मैं तुझसे कहता हूँ कि
इसके पाप हालाँकि बहुत हैं वे माफ हुए,
क्योंकि इसने ज़्यादा प्यार किया। मगर
जिसका कम माफ किया गया है वह कम
प्यार करता है।” 48 तब यीशु ने स्त्री
से कहाः “तेरे पाप माफ किए गए।”
49 यह सुनकर जो लोग उसके साथ मेज़
पर थे, मन-ही-मन कहने लगेः “यह
आदमी कौन है जो पाप तक माफ करता
है?” 50 मगर यीशु ने स्त्री से कहाः
“तेरे विश्वास ने तुझे बचा लिया है। शांति
से चली जा।”

8 इसके कुछ समय बाद, यीशु शहर-
शहर और गाँव-गाँव फिरता हुआ
लोगों को प्रचार करता और परमेश्वर के
राज की खुशखबरी सुनाता गया। वे बारह
चेले उसके साथ थे 2 और कुछ स्त्रियाँ
भी थीं, जिनमें से या तो दुष्ट स्वर्ग-
दूत निकाले गए थे या उन्हें बीमारियों
से चंगा किया गया था। इनमें मरि-
यम जो मगदलीनी कहलाती थी, और
जिसमें से सात दुष्ट स्वर्गदूत निकले थे,
3 साथ ही हेरोदेस के घर के प्रबंधक
खुज़ा की पत्नी योअन्ना, और सुसन्ना
और दूसरी कई स्त्रियाँ थीं। ये सभी
अपनी धन-संपत्ति से यीशु और उसके
चेलों की सेवा करती थीं।

4 जो लोग शहर-शहर से उसके पास
आया करते थे, उनके अलावा जब एक
बड़ी भीड़ उसके पास जमा हो
गयी, तो उसने उन्हें एक मिसाल बतायीः
5 “एक बीज बोनेवाला बीज बोने
निकला। जब वह बो रहा था, तो उनमें
से कुछ बीज रास्ते के किनारे गिरे और
वे पैरों तले रौंदे गए और आकाश के
पंछी आकर उन्हें खा गए। 6 कुछ
चट्टानी जगह पर गिरे और अंकुर फूटने
के बाद सूख गए, क्योंकि उन्हें नमी न
मिली। 7 कुछ बीज काँटों में गिरे
और उनके साथ-साथ बढ़नेवाले कंटीले

पौधों ने उन्हें दबा दिया। **8** कुछ और
बीज अच्छी मिट्टी पर गिरे और अंकुर
फूटने के बाद सौ गुना फल लाए।” ये
बातें बताने के बाद उसने ऊँची आवाज़ में
कहाः “कान लगाकर सुनो और मैं जो कह
रहा हूँ उसे समझने की कोशिश करो।”

9 मगर उसके चेले उससे पूछने लगे
कि इस मिसाल का क्या मतलब है।
10 उसने कहाः “परमेश्वर के राज के
पवित्र रहस्यों की समझ तुम्हें दी गयी है,
मगर बाकियों के लिए ये मिसालें ही हैं,
ताकि देखते हुए भी वे न देख सकें और
सुनते हुए भी इसके मायने न समझ सकें।
11 इस मिसाल का मतलब यह हैः बीज
परमेश्वर का वचन है। **12** जो रास्ते
के किनारे गिरे, ये वे हैं जिन्होंने वचन
सुना है मगर इसके बाद शैतान* आता है
और उनके दिलों से वचन उठा ले जाता
है, ताकि वे न तो यकीन करें और न ही
उद्धार पाएँ। **13** जो चट्टानी जगह पर
हैं, ये वे हैं जो वचन को सुनने पर इसे
खुशी-खुशी कबूल करते हैं, मगर इनमें
जड़ नहीं होती। ये थोड़े वक्त के लिए
यकीन करते हैं, मगर परीक्षा के वक्त
गिर जाते हैं। **14** और जो काँटों के
बीच गिरे, ये वे हैं जिन्होंने वचन सुना तो
है, मगर इस ज़िंदगी की चिंताएँ और धन-
दौलत और ऐशो-आराम उन्हें भटका देते
हैं और इनसे वे पूरी तरह दब जाते हैं
और ऐसा फल पैदा नहीं करते जो पूरी
तरह पका हुआ हो। **15** जो बढ़िया
मिट्टी पर गिरे, ये वे हैं जिन्होंने अपने
उत्तम और भले दिल से वचन सुना है
और सुनने के बाद इसे संजोए रखते हैं
और धीरज से फल पैदा करते हैं।

16 कोई भी दीया जलाकर उसे बर-
तन से नहीं ढकता या पलंग के नीचे नहीं
रखता, मगर उसे दीवट पर रखता है
ताकि जो कमरे के अंदर आते हैं वे रौशनी
देख सकें। **17** ऐसा कुछ नहीं जो
छिपा हुआ हो और ज़ाहिर न किया जाए,
न ही ऐसी कोई चीज़ है जो बड़ी साव-
धानी से गुप्त रखी गयी हो और जो कभी
जानी न जाए और कभी खुले में न आए।
18 इसलिए ध्यान दो कि तुम कैसे सुनते
हो। क्योंकि जिस किसी के पास है, उसे
और दिया जाएगा, मगर जिस किसी के
पास नहीं है, उससे वह भी ले लिया
जाएगा जो उसे लगता है कि उसका
अपना है।”

19 फिर, यीशु की माँ और उसके
भाई उससे मिलने आए। मगर भीड़ की
वजह से वे उस तक पहुँच नहीं पा रहे
थे। **20** लेकिन उसे खबर दी गयीः
“तेरी माँ और तेरे भाई बाहर खड़े हैं और
तुझसे मिलना चाहते हैं।” **21** जवाब
में उसने उनसे कहाः “मेरी माँ और मेरे
भाई ये हैं, जो परमेश्वर का वचन सुनते
और उस पर चलते हैं।”

22 एक दिन ऐसा हुआ कि वह और
उसके चेले एक नाव पर चढ़े और यीशु
ने उनसे कहाः “आओ, हम झील के उस
पार चलें।” तब वे नाव में रवाना हो गए।
23 मगर सफर के दौरान वह सो गया।

लूका 8:12* यूनानी में *“दियाबोलोस,”* जिसका
मतलब है “निंदा करनेवाला।”

तब झील में भयंकर तूफान उठा और
उनकी नाव में पानी भरने लगा, उनकी
जान जोखिम में थी। 24 तब चेले
उसके पास आकर उसे जगाते हुए कहने
लगेः "गुरु, गुरु, हम नाश होनेवाले हैं!"
तब यीशु ने उठकर आँधी और उफनती
लहरों को डाँटा और वे शांत हो गए और
सन्नाटा छा गया। 25 तब उसने चेलों
से कहाः "कहाँ गया तुम्हारा विश्वास?"
मगर उन पर डर छा गया और वे ताज्जुब
करने लगे और एक-दूसरे से कहने लगेः
"आखिर यह कौन है जो आँधी और पानी
तक को हुक्म देता है और वे उसकी
मानते हैं?"

26 फिर वे किनारे पर गिरासेनियों
के इलाके में पहुँचे, जो गलील के सामने
उस पार है। 27 मगर जब वह उतर-
कर किनारे पर आया, तो पास के शहर
का एक आदमी उससे मिला, जिसमें
दुष्ट स्वर्गदूत समाए हुए थे। उस आदमी
ने काफी वक्त से कपड़े नहीं पहने थे
और वह घर में नहीं बल्कि कब्रों के
बीच रहता था। 28 जब उसने यीशु
को देखा तो ज़ोर से चिल्लाया और
उसके आगे गिरकर ऊँची आवाज़ में
उससे कहाः "हे यीशु, परम-प्रधान पर-
मेश्वर के बेटे, मेरा तुझसे क्या लेना-देना?
मैं तुझसे बिनती करता हूँ, मुझे मत
तड़पा।" 29 (इसलिए कि यीशु उस
दुष्ट स्वर्गदूत को हुक्म दे रहा था कि
वह उस आदमी में से निकल आए।
क्योंकि एक लंबे अरसे से उसने उस
आदमी को अपने कब्ज़े में कर रखा था।
उस आदमी को बार-बार ज़ंजीरों और
बेड़ियों से बाँधा जाता था और उसकी
पहरेदारी की जाती थी, मगर वह उन
बंधनों को तोड़ देता था। वह दुष्ट स्वर्ग-
दूत उस आदमी को भगाए फिरता था
और सुनसान जगहों में ले जाता था।)
30 यीशु ने उससे पूछाः "तेरा नाम क्या
है?" उसने कहाः "पलटन,"* क्योंकि
उसमें बहुत सारे दुष्ट स्वर्गदूत समाए थे।
31 वे उससे बिनती करते रहे कि वह
उन्हें अथाह-कुंड में जाने का हुक्म न दे।
32 वहीं पहाड़ पर बहुत सारे सुअर चर
रहे थे। इसलिए दुष्ट स्वर्गदूतों ने यीशु
से बिनती की कि वह उन्हें सुअरों में समा
जाने की इजाज़त दे। और उसने उन्हें
इजाज़त दी। 33 तब दुष्ट स्वर्गदूत
उस आदमी में से निकल गए और उन
सुअरों में समा गए। तब सुअरों का यह
पूरा झुंड बड़ी तेज़ी से टीले की तरफ
दौड़ा और वहाँ से गिरकर झील में डूब
मरा। 34 मगर जब उनके चरवाहों ने
देखा कि क्या हुआ है, तो वे भाग खड़े
हुए और जाकर शहर और देहात में
इसकी खबर दी।

35 जो हुआ था, उसे देखने के
लिए लोग बाहर आए। जब वे यीशु
के पास आए तो उन्होंने देखा कि वह
आदमी जिसमें से दुष्ट स्वर्गदूत निकले थे,
कपड़े पहने और बिलकुल ठीक दिमागी
हालत में यीशु के पैरों के पास
बैठा है। यह देखकर लोगों में डर समा
गया। 36 जिन्होंने अपनी आँखों से

लूका 8:30* मत्ती 26:53 फुटनोट देखें।

सबकुछ देखा था, वे उन्हें बताने लगे
कि वह आदमी जिसमें दुष्ट स्वर्गदूत
समाए थे, किस तरह ठीक हुआ है।
37 तब गिरासेनियों के आस-पास के
इलाके से भारी तादाद में आए सब लोगों
ने यीशु से कहा कि वह उनके यहाँ से
चला जाए। क्योंकि उन्हें ज़बरदस्त डर ने
जकड़ लिया था। तब यीशु नाव पर
चढ़ गया और लौट पड़ा। **38** लेकिन
जिस आदमी से दुष्ट स्वर्गदूत निकले थे,
वह यीशु से बिनती करता रहा कि वह
उसे अपने साथ रहने दे। मगर यीशु ने
उस आदमी को यह कहते हुए भेज दिया:
39 "अपने घर वापस चला जा और पर-
मेश्वर ने जो कुछ तेरे लिए किया है, वह
सब बताता रह।" तब वह आदमी चला
गया और पूरे शहर में सुनाता गया कि
यीशु ने उसके लिए क्या किया था।

40 जब यीशु इस पार आया, तो
भीड़ ने बड़े प्यार से उसका स्वागत किया
क्योंकि वे सब उसका इंतज़ार कर रहे
थे। **41** लेकिन तभी वहाँ याइर नाम
का एक आदमी आया, जो सभा-घर में
अगुवाई करनेवाला एक अधिकारी था।
वह यीशु के पैरों पर गिर पड़ा और
उससे बिनती करने लगा कि वह उसके
घर चले। **42** क्योंकि उसकी इकलौती
बेटी जो करीब बारह साल की थी, मरने
पर थी।

जब यीशु जा रहा था, तो लोगों
का बड़ा जमघट उसे घेरे हुए साथ-
साथ चलने लगा। **43** एक स्त्री, जिसे
बारह साल से खून बहने की बीमारी थी
और जो किसी के भी इलाज से ठीक नहीं
हो पायी थी, **44** वह पीछे से आयी
और यीशु के कपड़े की झालर छू ली।
उसी घड़ी उस स्त्री का खून बहना बंद हो
गया। **45** तब यीशु ने कहा: "किसने
मुझे छूआ था?" जब वे सभी इनकार
करने लगे, तो पतरस ने कहा: "गुरु,
भीड़ तुझे दबाए जा रही है और तुझ पर
गिरी पड़ती है।" **46** फिर भी यीशु ने
कहा: "किसी ने मुझे छूआ है, क्योंकि मुझे
महसूस हुआ कि मेरे अंदर से शक्ति बाहर
निकली है।" **47** जब उस स्त्री ने देखा
कि यीशु को मालूम हो चुका है, तो वह
काँपती हुई आयी और उसके आगे गिर
पड़ी और सब लोगों के सामने बता
दिया कि उसने किस वजह से उसे छूआ
और वह कैसे फौरन ठीक हो गयी।
48 तब यीशु ने स्त्री से कहा: "बेटी, तेरे
विश्वास ने तुझे ठीक किया है। शांति से
चली जा।"

49 जब वह बोल ही रहा था,
तो सभा-घर के अधिकारी के घर से
एक आदमी आया और कहने लगा:
"तेरी बेटी मर चुकी है। गुरु को और
परेशान न कर।" **50** यह सुनने पर
यीशु ने उस अधिकारी को जवाब दिया:
"मत डर, बस विश्वास रख और वह बच
जाएगी।" **51** जब यीशु उस घर में
पहुँचा तो उसने पतरस, यूहन्ना, याकूब
और लड़की के माता-पिता को छोड़ और
किसी को अपने साथ अंदर आने न
दिया। **52** लेकिन सारे लोग रो रहे
थे और उस लड़की के मातम में छाती

पीट रहे थे। इसलिए यीशु ने कहाः “रोना
बंद करो, क्योंकि लड़की मरी नहीं, बल्कि
सो रही है।” **53** इस पर वे उसकी
खिल्ली उड़ाते हुए उस पर हँसने लगे,
क्योंकि वे जानते थे कि वह मर चुकी है।
54 मगर यीशु ने लड़की का हाथ अपने
हाथ में लिया और कहाः “बच्ची, उठ!”
55 तब उस लड़की में जान* आ गयी
और वह फौरन उठ बैठी। यीशु ने हिदा-
यत दी कि लड़की को खाने के लिए
कुछ दिया जाए। **56** लड़की को ज़िंदा
देखकर उसके माता-पिता खुशी के मारे
अपने आपे में न रहे। मगर यीशु ने उन्हें
हिदायत दी कि जो हुआ है, वह किसी
को न बताएँ।

9 फिर यीशु ने उन बारहों को साथ
बुलाया और उन्हें सब दुष्ट स्वर्ग-
दूतों पर अधिकार और शक्ति दी कि वे
लोगों में से उन्हें निकालें और बीमा-
रियाँ ठीक करें। **2** तब उसने उन्हें
परमेश्वर के राज का प्रचार करने और
चंगा करने भेजा **3** और उनसे कहाः
“सफर के लिए कुछ न लेना, न लाठी,
न खाने की पोटली, न रोटी, न चाँदी के
पैसे, न ही दो कुरते लेना। **4** मगर
जहाँ कहीं तुम किसी घर में दाखिल होते
हो, वहीं ठहरना और वहीं से विदा लेना।
5 जहाँ कहीं लोग तुम्हें स्वीकार न करें,
उस शहर से बाहर निकलते वक्त अपने
पैरों की धूल झाड़ देना,* ताकि उनके
खिलाफ गवाही हो।” **6** तब वे एक
गाँव से दूसरे गाँव होते हुए पूरे इलाके
में हर कहीं खुशखबरी सुनाते और चंगा
करते गए।

7 फिर जब ज़िला-शासक* हेरोदेस
ने इन सारी घटनाओं के बारे में सुना तो
वह भारी उलझन में पड़ गया। इसलिए
कि यीशु के बारे में कुछ लोग कहते थे
कि वह यूहन्ना है जिसे मरे हुओं में से
जी उठाया गया है। **8** जबकि दूसरे
उसके बारे में कहते थे कि एलिय्याह प्रकट
हुआ है मगर कुछ और कहते थे कि पुराने
भविष्यवक्ताओं में से कोई एक जी उठा
है। **9** हेरोदेस ने कहाः “यूहन्ना का
तो मैंने सिर कटवा दिया था। तो फिर,
यह कौन है जिसके बारे में मैं ऐसी बातें
सुन रहा हूँ?” इसलिए वह यीशु को
देखना चाहता था।

10 जब प्रेषित लौटे, तो उन्होंने जो-
जो किया था उसका सारा ब्यौरा यीशु को
कह सुनाया। तब वह उन्हें साथ लेकर
बैतसैदा नाम के शहर में, किसी एकांत
जगह के लिए चला गया। **11** मगर
भीड़ को इसका पता चल गया और वह
उसके पीछे गयी। यीशु बड़ी कृपा दिखाते
हुए उनसे मिला और उन्हें परमेश्वर
के राज के बारे में बताने लगा और
जिन्हें इलाज की ज़रूरत थी, उन्हें ठीक
किया। **12** फिर दिन ढलने लगा और
वे बारह उसके पास आए और उससे
कहाः “भीड़ को भेज दे ताकि वे आस-
पास के गाँवों और देहातों में जाकर
अपने ठहरने और खाने का इंतज़ाम

लूका 8:55* यूनानी *नफ्मा*। अतिरिक्त लेख 7 देखें।
9:5* मत्ती 10:14 फुटनोट देखें।

लूका 9:7* लूका 3:1 का दूसरा फुटनोट देखें।

करें, क्योंकि हम यहाँ सुनसान जगह में
हैं।” **13** मगर यीशु ने उनसे कहा:
“तुम्हीं उन्हें कुछ खाने को दो।” उन्होंने
कहा: “हमारे पास पाँच रोटियों और दो
मछलियों से ज़्यादा और कुछ नहीं है,
या फिर शायद हमें खुद जाना होगा
और इन सारे लोगों के लिए खाने की
चीज़ें खरीदनी होंगी।” **14** दरअसल,
वहाँ करीब पाँच हज़ार आदमी थे। यीशु
ने अपने चेलों से कहा: “उन्हें तकरीबन
पचास-पचास की टोलियों में खाने के लिए
बिठा दो।” **15** उन्होंने ऐसा ही किया
और उन सबको बिठा दिया। **16** तब
उसने पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ लीं
और आकाश की तरफ देखकर प्रार्थना में
धन्यवाद दिया और उन्हें तोड़कर चेलों को
देने लगा, ताकि वे भीड़ के सामने परोस
दें। **17** तब उन सब लोगों ने भरपेट
खाया। जो टुकड़े बाकी बच गए थे,
उन्होंने वे जमा किए और उनसे बारह
टोकरियाँ भर गयीं।

18 बाद में, जब यीशु अकेले प्रार्थना
कर रहा था, तब चेले एक-साथ उसके
पास आए और उसने उनसे यह सवाल
पूछा: “लोग मेरे बारे में क्या कहते हैं, मैं
कौन हूँ?” **19** जवाब में उन्होंने कहा:
“कुछ कहते हैं, यूहन्ना बपतिस्मा देने-
वाला। मगर दूसरे एलियाह और कुछ
कहते हैं पुराने भविष्यवक्ताओं में से कोई
जी उठा है।” **20** तब यीशु ने उनसे
कहा: “लेकिन तुम क्या कहते हो, मैं कौन
हूँ?” पतरस ने जवाब में कहा: “तू
परमेश्वर का भेजा हुआ मसीह है।”
21 तब उसने उन्हें कड़ाई से हिदा-
यत दी कि यह बात किसी से न कहें,
22 मगर यह कहा: “यह ज़रूरी है कि
इंसान का बेटा कई दुःख-तकलीफें सहे
और बुज़ुर्ग, प्रधान याजक और शास्त्री
उसे ठुकरा दें और वह मार डाला जाए
और तीसरे दिन जी उठाया जाए।”

23 तब यीशु ने सबसे कहा: “अगर
कोई मेरे पीछे आना चाहता है, तो वह
खुद से इनकार करे और अपनी यातना
की सूली* उठाए और दिन-ब-दिन लगा-
तार मेरे पीछे चलता रहे। **24** क्योंकि
जो कोई अपनी जान बचाना चाहता है वह
उसे खोएगा, मगर जो कोई मेरी खातिर
अपनी जान गँवाता है वही उसे बचाएगा।
25 वाकई, अगर एक इंसान सारा जहान
हासिल कर ले मगर अपनी जान से हाथ
धो बैठे या खुद का नुकसान कर ले, तो
उसका क्या फायदा? **26** इसलिए कि
जो कोई मुझसे और मेरे वचनों से शर्मिंदा
होता है, उससे इंसान का बेटा भी उस
वक्त शर्मिंदा होगा जब वह अपने और
पिता के और पवित्र स्वर्गदूतों के वैभव
के साथ आएगा। **27** मगर मैं तुमसे
सच कहता हूँ, यहाँ जो खड़े हैं उनमें से
कुछ ऐसे हैं जो तब तक मौत का मुँह
हरगिज़ न देखेंगे जब तक कि पहले वे
परमेश्वर के राज को न देख लें।”

28 दरअसल यह कहने के करीब
आठ दिन बाद ऐसा हुआ कि वह पत-
रस, यूहन्ना और याकूब को अपने साथ
लेकर प्रार्थना करने के लिए एक पहाड़
पर चढ़ गया। **29** जब वह प्रार्थना

लूका 9:23* अतिरिक्त लेख 6 देखें।

कर रहा था, तो उसके चेहरे का रूप
बदल गया। उसकी पोशाक जगमगाती
सफेद हो उठी। **30** साथ ही देखो! दो
आदमी उसके साथ बात कर रहे थे।
ये थे मूसा और एलिय्याह। **31** ये
ऐश्वर्य के साथ दिखायी दिए और उसकी
विदाई के बारे में बात करने लगे, जो
यरूशलेम से होनी तय थी। **32** पत-
रस और उसके साथी नींद से बोझिल
हो चुके थे। मगर जब वे पूरी तरह
जाग गए, तो उन्होंने यीशु का ऐश्वर्य
देखा और उसके साथ दो आदमी खड़े
देखे। **33** जब वे दोनों यीशु के पास
से जाने लगे, तो पतरस ने उससे कहा:
"गुरु, हमारा यहाँ रहना अच्छा है, इस-
लिए हमें तीन तंबू खड़े करने दे, एक
तेरे लिए, एक मूसा के लिए और एक
एलिय्याह के लिए।" पतरस नहीं जानता
था कि वह क्या कह रहा है। **34** मगर
जब वह ये बातें बोल ही रहा था, एक
बादल उभरा और उन पर छाने लगा।
जैसे ही वे बादल से घिरने लगे, वे घबरा
गए। **35** उस बादल में से यह आवाज़
आयी: "यह मेरा बेटा है, जिसे मैंने चुना
है। इसकी सुनो।" **36** और जब वह
आवाज़ आयी, तो उन्होंने देखा कि यीशु
वहाँ अकेला है। मगर वे चुप रहे और
उन्होंने जो देखा था उन दिनों उसके बारे
में किसी को कुछ नहीं बताया।

37 अगले दिन जब वे पहाड़ से नीचे
उतरे, तो एक बड़ी भीड़ उससे मिली।
38 तभी अचानक भीड़ में से एक
आदमी फरियाद करता हुआ कहने लगा:
"गुरु, मैं तुझसे बिनती करता हूँ कि
मेरे बेटे को एक नज़र देख ले, क्योंकि
वह मेरा इकलौता है। **39** देख! एक
दुष्ट स्वर्गदूत उसे जकड़ लेता है, और
अचानक मेरा बेटा चिल्लाने लगता है
और वह दूत उसे ऐसे मरोड़ता है कि
वह मुँह से झाग उगलने लगता है और
उसे घायल करने के बाद बड़ी मुश्किल
से छोड़ता है। **40** मैंने तेरे चेलों
से इसे निकालने की बिनती की, मगर
वे निकाल न सके।" **41** जवाब में
यीशु ने कहा: "अरे अविश्वासी और
टेढ़ी पीढ़ी, मैं और कब तक तुम्हारे
साथ रहूँ और कब तक तुम्हारी सहूँ?
अपने बेटे को यहाँ ला।" **42** मगर
जिस वक्त वह आ रहा था, तो दुष्ट
स्वर्गदूत ने उसे ज़मीन पर पटक दिया
और बुरी तरह मरोड़ा। लेकिन यीशु
ने उस दुष्ट स्वर्गदूत को डाँटा और
लड़के को ठीक किया और उसे उसके
पिता को सौंप दिया। **43** तब वे
सभी परमेश्वर की महाशक्ति देखकर दंग
रह गए।

जब वे उसके सब कामों पर ताज्जुब
करते हुए उसकी सराहना कर रहे थे, तो
उसने अपने चेलों से कहा: **44** "मैं
जो बताने जा रहा हूँ उस बात पर
कान लगाओ। यह तय है कि इंसान
का बेटा लोगों के हवाले किया जाए।"
45 मगर चेले अभी-भी उसकी बात का
मतलब नहीं समझ रहे थे। दरअसल, इस
बात का मतलब उनसे छिपाया गया था
कि वे इसे समझ न सकें। साथ ही,

वे इस बारे में उससे सवाल पूछने से
डरते थे।
46 इसके बाद, उनमें आपस में यह
बहस छिड़ गयी कि उनमें सबसे बड़ा कौन
होगा। **47** तब यीशु ने यह जानते हुए
कि वे अपने दिलों में क्या सोच रहे हैं,
एक छोटे बच्चे को अपने पास खड़ा किया
48 और उनसे कहाः “जो कोई इस छोटे
बच्चे को मेरे नाम से स्वीकार करता है
वह मुझे भी स्वीकार करता है और
जो मुझे स्वीकार करता है वह उसे भी
स्वीकार करता है जिसने मुझे भेजा है।
इसलिए कि तुम सबमें जो अपने आपको
बाकियों से छोटा समझकर चलता है, वही
है जो तुम सबमें बड़ा है।”
49 जवाब में यूहन्ना ने कहाः “गुरु,
हमने देखा कि एक आदमी लोगों में समाए
दुष्ट स्वर्गदूतों को तेरे नाम से निकाल रहा
है और हमने उसे रोकने की कोशिश
की, क्योंकि वह हमारे साथ तेरे पीछे
नहीं आता।” **50** मगर यीशु ने उससे
कहाः “उसे रोकने की कोशिश मत करो,
क्योंकि जो तुम्हारे खिलाफ नहीं, वह
तुम्हारे साथ है।”
51 जब वह वक्त पास आ रहा
था कि वह ऊपर उठाया जाए, तब
उसने यरूशलेम की तरफ रुख करने की
ठान ली। **52** इसलिए उसने अपने
दूत आगे भेजे। वे आगे गए और साम-
रियों के एक गाँव में दाखिल हुए
कि उसके लिए तैयारी करें। **53** मगर
गाँववालों ने यीशु को अपने यहाँ जगह
देने से इनकार कर दिया, क्योंकि वह
यरूशलेम की तरफ रुख करने की ठान
चुका था। **54** जब चेले याकूब और
यूहन्ना ने यह देखा तो कहाः “प्रभु, क्या
तू चाहता है कि हम यह कहें कि आकाश
से आग बरसे और इन्हें भस्म कर दे?”
55 मगर उसने पलटकर उन्हें डाँटा।
56 तब वे किसी और गाँव में चले गए।
57 जब वे सड़क पर जा रहे
थे, तो किसी ने यीशु से कहाः “तू
जहाँ कहीं जाएगा मैं तेरे पीछे चलूँगा।”
58 तब यीशु ने उससे कहाः “लोम-
ड़ियों की माँदें और आकाश के
पंछियों के बसेरे होते हैं, मगर इंसान
के बेटे के पास कहीं सिर टिकाने की
भी जगह नहीं है।” **59** तब उसने
एक और से कहाः “मेरा चेला बनकर
मेरे पीछे हो ले।” उस आदमी ने कहाः
“मुझे इजाज़त दे कि मैं चला जाऊँ
और पहले अपने पिता को दफना दूँ।”
60 मगर यीशु ने उससे कहाः “मुरदों
को अपने मुरदे दफन करने दे, मगर
तू जाकर परमेश्वर के राज का ऐलान
कर।” **61** फिर किसी और ने यह
कहाः “हे प्रभु, मैं तेरा चेला बनकर तेरे
पीछे आऊँगा, मगर मुझे इजाज़त दे कि
पहले अपने घरवालों को अलविदा कह
दूँ।” **62** यीशु ने उससे कहाः “कोई
भी आदमी जो हल पर हाथ रखने के
बाद, पीछे छोड़ी हुई चीज़ों को मुड़कर
देखता है, वह परमेश्वर के राज के लायक
नहीं।”

10 इसके बाद प्रभु ने सत्तर और
चेले चुने और जिस-जिस शहर
और इलाके में वह खुद जानेवाला था,
वहाँ उन्हें दो-दो की जोड़ियों में अपने

आगे भेजा। **2** वह उनसे कहने लगाः
“कटाई के लिए फसल वाकई बहुत है,
मगर मज़दूर थोड़े हैं। इसलिए खेत के
मालिक से बिनती करो कि वह कटाई के
लिए और मज़दूर भेज दे। **3** जाओ।
देखो! मैं तुम्हें भेज रहा हूँ, जैसे भेड़ियों
के बीच मेम्ने होते हैं, तुम भी वैसे ही
ठहरोगे। **4** अपने साथ कोई बटुआ न
लेना, न खाने की पोटली, न जूतियाँ
लेना, और राह में किसी को नमस्कार
करने के लिए उसे गले न लगाना।
5 जहाँ कहीं तुम किसी घर में जाओ तो
पहले कहो, ‘इस घर को शांति मिले।’
6 अगर वहाँ कोई शांति चाहनेवाला हो,
तो तुम्हारी शांति उस पर बनी रहेगी।
लेकिन अगर न हो तो तुम्हारी शांति
तुम्हारे पास लौट आएगी। **7** इसलिए
उसी घर में रहो और जो कुछ वे तुम्हें दें,
वही खाओ-पीओ, क्योंकि काम करने-
वाला अपनी मज़दूरी पाने का हकदार है।
अपने ठहरने के लिए घर-पर-घर बदलते
मत रहना।

8 जिस किसी शहर में जाने पर वे
तुम्हारा आदर-सत्कार करें, तो वहाँ जो
कुछ तुम्हारे सामने रखा जाता है, वही
खाओ। **9** वहाँ जो बीमार हों उन्हें
ठीक करो और प्रचार करो कि ‘पर-
मेश्वर का राज तुम्हारे पास आ गया
है।’ **10** लेकिन जिस किसी शहर में
जाने पर वे तुम्हें स्वीकार न करें, तो
वहाँ के चौराहों में जाओ और कहो,
11 ‘तुम्हारे शहर की धूल तक, जो
हमारे पैरों में लगी है, उसे हम पोंछ डालते
हैं, ताकि यह तुम्हारे खिलाफ गवाही दे।
फिर भी, याद रखो कि परमेश्वर का
राज पास आ गया है।’ **12** मैं तुमसे
कहता हूँ कि उस दिन उस शहर के हाल
से सदोम का हाल ज़्यादा सहने लायक
होगा।

13 हे खुराजीन, तुझ पर हाय!
हे बैतसैदा, तुझ पर हाय! क्योंकि जो
शक्तिशाली काम तुममें हुए थे, अगर वे
सोर और सीदोन* में हुए होते, तो
उन्होंने टाट ओढ़कर और राख में बैठ-
कर कब का पश्चाताप कर लिया होता।
14 इसलिए न्याय के वक्त तुम्हारे हाल
से सोर और सीदोन का हाल ज़्यादा सहने
लायक होगा। **15** और कफरनहूम तू,
क्या तू सोचता है कि तुझे आकाश तक
ऊँचा किया जाएगा? तू तो नीचे कब्र*
में जाएगा!

16 जो तुम्हारी सुनता है, वह मेरी
भी सुनता है। जो तुम्हारा तिरस्कार करता
है, वह मेरा भी तिरस्कार करता है। जो
मेरा तिरस्कार करता है, वह उसका भी
तिरस्कार करता है जिसने मुझे भेजा है।”

17 इसके बाद वे सत्तर चेले बड़े
आनंद के साथ लौटे और कहने लगेः
“प्रभु, तेरा नाम इस्तेमाल करने से दुष्ट
स्वर्गदूत भी हमारे अधीन किए जा रहे
हैं।” **18** इस पर यीशु ने उनसे कहाः
“मैं देखता हूँ कि शैतान बिजली की तरह
आकाश से गिर चुका है। **19** देखो!
मैंने तुम्हें साँपों और बिच्छुओं को पैरों तले

लूका 10:13* ये गैर-यहूदी शहर थे। **15*** यूनानी में *“हेडिज़।”* अतिरिक्त लेख 8 देखें।

रौंदने और दुश्मन की सारी शक्ति को
कुचलने का अधिकार दिया है, और कोई
भी चीज़ तुम्हें किसी भी तरह नुकसान
नहीं पहुँचाएगी। **20** फिर भी, इस
बात से खुश मत हो कि स्वर्गदूत तुम्हारे
अधीन किए जा रहे हैं, मगर इस बात
पर खुशी मनाओ कि तुम्हारे नाम स्वर्ग
में लिखे गए हैं।” **21** उसी घड़ी वह
पवित्र शक्ति और बड़े आनंद से भर गया
और बोलाः “हे पिता, स्वर्ग और पृथ्वी
के मालिक, मैं सबके सामने तेरी बड़ाई
करता हूँ कि तू ने ये बातें बुद्धिमानों और
ज्ञानियों से तो बहुत ध्यान से छिपाए
रखीं, मगर बच्चों पर ज़ाहिर की हैं। हाँ,
हे पिता, क्योंकि तुझे ऐसा ही करना मंज़ूर
हुआ। **22** मेरे पिता ने सबकुछ मेरे
हवाले किया है। बेटा कौन है, यह कोई
नहीं जानता सिवा पिता के, और पिता
कौन है, यह कोई नहीं जानता सिवा बेटे
के और उसके जिस पर बेटा उसे ज़ाहिर
करना चाहे।”

23 तब उसने फिरकर अपने चेलों
से अकेले में कहाः “सुखी हैं वे जिनकी
आँखें वह सब देखती हैं जो तुम देख रहे
हो। **24** क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ कि
बहुत-से भविष्यवक्ताओं और राजाओं की
तमन्ना थी कि वह सब देखें जो तुम देख
रहे हो मगर न देख सके और वे बातें सुनें
जो तुम सुन रहे हो मगर न सुन सके।”

25 इसके बाद, एक आदमी जो मूसा
के कानून का अच्छा जानकार था, यीशु
की परीक्षा लेने के लिए खड़ा हुआ।
उसने कहाः “गुरु, हमेशा की ज़िंदगी का
वारिस बनने के लिए मुझे क्या काम
करना चाहिए?” **26** यीशु ने उससे
कहाः “कानून में क्या लिखा है? तू ने क्या
पढ़ा है?” **27** जवाब में उसने कहाः
“ ‘तुझे अपने परमेश्वर यहोवा से अपने
पूरे दिल, अपनी पूरी जान, अपनी पूरी
ताकत और अपने पूरे दिमाग से प्यार
करना है,’ और ‘अपने पड़ोसी से वैसे ही
प्यार करना है जैसे तू खुद से करता है।’ ”
28 यीशु ने कहाः “तू ने सही जवाब
दिया। ‘ऐसा ही करता रह और तुझे
ज़िंदगी मिलेगी।’ ”

29 मगर उस आदमी ने खुद को
नेक साबित करने के इरादे से यीशु से
पूछाः “असल में मेरा पड़ोसी कौन है?”
30 जवाब में यीशु ने कहाः “एक
आदमी यरूशलेम से नीचे उतरकर यरीहो
जा रहा था और लुटेरों ने उसे घेर
लिया। उन्होंने उसके कपड़े तक उतरवा
लिए और उसका सब कुछ छीनकर उसे
बहुत मारा और अधमरा छोड़कर वहाँ से
चले गए। **31** इत्तफाक से एक याजक
उसी सड़क से नीचे जा रहा था, मगर
जब उसने उस आदमी को वहाँ पड़ा देखा,
तो सड़क की दूसरी तरफ से निकलकर
चला गया। **32** उसी तरह, जब एक
लेवी भी, नीचे उतरता हुआ उस जगह
तक आया और उस आदमी को देखा,
तो सड़क की दूसरी तरफ से निकलकर
चला गया। **33** मगर एक सामरी उस
सड़क से गुज़र रहा था। जब वह उस
आदमी के पास आया और उसे देखा, तो
उसका दिल तड़प उठा। **34** इसलिए

वह उसके पास गया और उसके घावों पर
तेल और दाख-मदिरा डालकर पट्टियाँ
बाँधी। इसके बाद, वह उसे अपने गधे
पर लादकर एक सराय में ले आया और
उसकी देखभाल की। **35** अगले दिन
उसने दो दिन की मज़दूरी* निकाली और
सरायवाले को देते हुए कहा: 'इस आदमी
की देखभाल करना और इसके अलावा
जो कुछ तेरा खर्च हो, वह मैं वापस लौटने
पर तुझे चुका दूँगा।' **36** अब बता,
तुझे क्या लगता है, इन तीनों में से कौन
उस आदमी का पड़ोसी बना जिसे लुटेरों
ने घेर लिया था?" **37** उसने कहा:
"वही जिसने उस पर दया दिखाते हुए
उसकी मदद की।" तब यीशु ने उससे
कहा: "जा और तू भी ऐसा ही कर।"

38 फिर जब वे जा रहे थे तो वह
किसी गाँव में गया। वहाँ मारथा नाम की
एक स्त्री थी, जिसने उसे अपने घर मेह-
मान ठहराया। **39** इस स्त्री की एक
बहन भी थी, जिसका नाम मरियम था।
वह नीचे बैठकर प्रभु के पैरों के पास
उसके वचन सुनती रही। **40** मगर
मारथा का ध्यान बहुत-सी तैयारियाँ करने
में बँटा हुआ था। इसलिए वह यीशु के
पास आयी और बोली: "प्रभु, क्या तुझे
खयाल नहीं कि मेरी बहन ने सारा काम
मुझ अकेली पर छोड़ दिया है? इसलिए
उससे कह कि वह काम में मेरा हाथ
बँटाए।" **41** जवाब में प्रभु ने उससे
कहा: "मारथा, मारथा, तू बहुत बातों
को लेकर चिंता कर रही है और परे-
शान हो रही है। **42** असल में थोड़ी
ही चीज़ों की ज़रूरत है या बस एक
ही काफी है। लेकिन मरियम ने अच्छा
भाग चुना है और वह उससे छीना नहीं
जाएगा।"

11 एक बार यीशु किसी जगह
प्रार्थना कर रहा था। जब
वह प्रार्थना कर चुका, तो उसके चेलों
में से एक ने उससे कहा: "प्रभु,
जैसे यूहन्ना ने अपने चेलों को प्रार्थना
करना सिखाया था, तू भी हमें सिखा कि
प्रार्थना कैसे करें।"

2 तब उसने उनसे कहा: "जब कभी
तुम प्रार्थना करते हो तो कहो, 'हे पिता,
तेरा नाम पवित्र किया जाए। तेरा राज
आए। **3** आज के दिन की ज़रूरत
के मुताबिक हमें आज की रोटी दे।
4 हमारे पापों की हमें माफी दे, इसलिए
कि जो भी हमारे खिलाफ पाप कर हमारा
कर्ज़दार बन गया है, हम भी उसे माफ
करते हैं। और जब हम पर परीक्षा आए
तो हमें गिरने न दे।'"

5 यीशु ने आगे उनसे कहा: "तुममें
ऐसा कौन है जिसका एक दोस्त हो और
जिसके पास वह आधी रात को जाकर
कहे, 'दोस्त, मुझे तीन रोटियाँ उधार दे
दे, **6** क्योंकि मेरा एक दोस्त सफर से
अभी-अभी मेरे पास आया है और मेरे
पास उसके आगे परोसने के लिए कुछ
भी नहीं है'? **7** तब वह अंदर से
जवाब दे, 'मुझे तंग मत कर। दरवाज़ा
बंद हो चुका है और मेरे छोटे बच्चे मेरे
साथ बिस्तर में लेटे हुए हैं। मैं उठ-

लूका 10:35* शाब्दिक, "दो दीनार।"

कर तुझे कुछ नहीं दे सकता।’ **8** मैं
तुमसे कहता हूँ, भले ही वह उसका
दोस्त होने के नाते उसे उठकर कुछ न
दे, फिर भी उसके शर्म-हया छोड़कर
माँगते रहने की वजह से वह ज़रूर
उठेगा और उसे जो कुछ चाहिए वह
देगा। **9** इसी तरह मैं तुमसे कहता हूँ,
माँगते रहो और तुम्हें दे दिया जाएगा।
ढूँढ़ते रहो और तुम पाओगे। खटखटाते
रहो, और तुम्हारे लिए खोला जाएगा।
10 क्योंकि हर कोई जो माँगता है, उसे
मिलता है और हर कोई जो ढूँढ़ता है,
वह पाता है और हर कोई जो खट-
खटाता है, उसके लिए खोला जाएगा।
11 आखिर तुममें ऐसा कौन-सा पिता है
जिसका बेटा अगर उससे मछली माँगे, तो
वह उसे मछली के बजाय साँप थमा दे?
12 या अगर वह अंडा माँगे, तो उसे
एक बिच्छू थमा दे? **13** इसलिए, जब
तुम दुष्ट होते हुए भी यह जानते हो कि
अपने बच्चों को अच्छी चीज़ें कैसे देनी हैं,
तो स्वर्ग में रहनेवाला पिता और भी बढ़-
कर, अपने माँगनेवालों को पवित्र शक्ति
क्यों न देगा!”

14 बाद में, यीशु एक आदमी में से
दुष्ट स्वर्गदूत निकाल रहा था, जिसने उस
आदमी को गूँगा कर दिया था। जब दुष्ट
स्वर्गदूत निकल गया तो वह आदमी
बोलने लगा। यह देखकर भीड़ हैरान रह
गयी। **15** मगर उनमें से कुछ ने कहा:
“वह दुष्ट दूतों के राजा शैतान* की मदद
से दुष्ट स्वर्गदूतों को निकालता है।”
16 जबकि दूसरे लोग यीशु की परीक्षा
करने के लिए उससे स्वर्ग से एक निशानी
माँगने लगे। **17** यह जानते हुए कि
वे मन में क्या सोच रहे हैं, यीशु ने उनसे
कहा: “ऐसा हर राज जिसमें फूट पड़
जाए, उजड़ जाता है और जिस घर में फूट
पड़ जाए वह ढह जाता है। **18** उसी
तरह, अगर शैतान ही खुद अपने खिलाफ
हो गया है, तो उसका राज कैसे टिकेगा?
क्योंकि तुम कहते हो कि मैं बालज़बूल
की मदद से दुष्ट स्वर्गदूतों को निकालता
हूँ। **19** अगर मैं बालज़बूल की मदद
से दुष्ट स्वर्गदूतों को निकालता हूँ, तो
तुम्हारे बेटे किसकी मदद से इन्हें निकालते
हैं? इसलिए वे ही तुम्हारे न्यायी ठहरें।
20 लेकिन अगर मैं परमेश्वर की पवित्र
शक्ति* से दुष्ट स्वर्गदूतों को निकालता
हूँ, तो परमेश्वर के राज ने वाकई तुम्हें
आ घेरा है। **21** जब कोई बलवान,
हथियारों से लैस होकर अपने घर की
रखवाली करता है, तो उसके घर का
सामान बचा रहता है। **22** मगर जब
कोई उससे भी बलवान उस पर चढ़ाई
कर उसे हरा देता है, तो उसे जिन हथि-
यारों पर भरोसा था, वे सब उससे छीन
लेता है और उसका सामान लूटकर बाँट
देता है। **23** जो मेरी तरफ नहीं है,
वह मेरे खिलाफ है और जो मेरे साथ नहीं
बटोरता वह तित्तर-बित्तर कर देता है।

24 जब एक दुष्ट स्वर्गदूत किसी
आदमी से बाहर निकल आता है, तो वह
आराम की कोई जगह तलाशता हुआ
वीरान जगहों में फिरता है। मगर जब

लूका 11:15* शाब्दिक, “बालज़बूल।”

लूका 11:20* शाब्दिक, “उँगली।”

कोई जगह नहीं पाता, तो कहता है, ‘मैं
अपने जिस घर से निकला था उसमें फिर
लौट जाऊँगा,’ **25** और आकर पाता
है कि वह झाड़ा-बुहारा और सजा-सजाया
पड़ा है। **26** तब वह जाकर अपने से
भी बुरे सात दुष्ट स्वर्गदूतों को ले आता है
और वे उसमें समाकर वहीं बस जाते हैं।
तब उस आदमी की हालत, पहले से भी
बदतर हो जाती है।”

27 जब वह ये बातें कह रहा था,
तो भीड़ में से किसी स्त्री ने ऊँची आवाज़
में उससे कहा: “सुखी है वह स्त्री जिसके
गर्भ में तू रहा और जिसका तू ने दूध
पीया!” **28** मगर यीशु ने कहा: “नहीं,
इसके बजाय सुखी हैं वे जो परमेश्वर का
वचन सुनते हैं और उस पर चलते हैं!”

29 जब भीड़ बढ़ने लगी, तो वह यह
कहने लगा: “यह पीढ़ी एक दुष्ट पीढ़ी
है, यह एक निशानी ढूँढ़ती है। मगर इसे
योना की निशानी को छोड़ और कोई
निशानी नहीं दी जाएगी। **30** इसलिए
कि ठीक जैसे योना नीनवे के लोगों के
लिए एक निशानी ठहरा था, उसी तरह
इंसान का बेटा भी इस पीढ़ी के लिए
निशानी ठहरेगा। **31** दक्षिण की रानी
को न्याय के वक्त में इस पीढ़ी के लोगों
के साथ उठाया जाएगा और वह इन्हें
दोषी ठहराएगी। क्योंकि वह सुलैमान की
बुद्धि की बातें सुनने के लिए पृथ्वी की
छोर से आयी थी, मगर देखो! यहाँ वह
मौजूद है जो सुलैमान से भी बड़ा है।
32 नीनवे के लोग न्याय के वक्त में इस
पीढ़ी के साथ उठेंगे और इसे दोषी ठह-
राएँगे। क्योंकि उन्होंने योना का प्रचार
सुनकर पश्चाताप किया था। मगर देखो!
यहाँ वह मौजूद है जो योना से भी बड़ा
है। **33** एक इंसान दीपक जलाकर
उसे न तो तहखाने में रखता है, न ही
टोकरी* से ढककर रखता है, मगर दीप-
दान पर रखता है ताकि अंदर आनेवाले
रौशनी देख सकें। **34** तेरी आँख तेरे
शरीर का दीपक है। अगर तेरी आँख
एक ही चीज़ पर टिकी है, तो तेरा
सारा शरीर भी रौशन होगा। लेकिन
अगर तेरी आँख बुरी बातों पर लगी है,
तो तेरा शरीर भी अंधकार से भरा
है। **35** इसलिए सतर्क रहो कि जो
रौशनी तुम्हारे अंदर है वह कहीं अंधकार
न हो। **36** इसलिए अगर तेरा सारा
शरीर रौशन है और उसका कोई भी
हिस्सा अंधकार में नहीं, तो यह इस
कदर रौशन होगा जैसे एक दीपक अपनी
किरणों से तुझे रौशनी देता है।”

37 जब वह यह कह चुका, तो एक
फरीसी ने उससे गुज़ारिश की कि वह
उसके यहाँ दोपहर के खाने पर आए।
इसलिए वह उसके यहाँ आया और मेज़
से टेक लगाकर बैठा। **38** लेकिन,
उस फरीसी को यह देखकर हैरानी हुई
कि उसने खाने से पहले हाथ नहीं धोए।*
39 मगर प्रभु ने उससे कहा: “हे फरी-
सियो, तुम प्याले और थाली को बाहर से
तो साफ करते हो, मगर अंदर से तुम
लूट-खसोट और दुष्टता से भरे हुए हो।
40 अरे अक्ल के दुश्मनो! जिसने बाहर
से बनाया है, क्या उसी ने अंदर से

लूका 11:33* या, “नापने की टोकरी।” **38*** मत्ती 15:2 फुटनोट देखें।

नहीं बनाया? **41** इसलिए अपने दिल
से दया का दान दो, फिर देखो! तुम
बाकी सब मामलों में शुद्ध हो जाओगे।
42 मगर धिक्कार है तुम फरीसियों पर,
क्योंकि तुम पुदीने और सुदाब और दूसरी
सभी साग-सब्ज़ियों का दसवाँ अंश देते
हो, मगर तुम न्याय और परमेश्वर के
लिए प्यार से किनारा कर लेते हो! तुम्हारा
फर्ज़ था कि तुम ये सब करते, मगर
साथ-साथ इन दूसरी बातों को भी न
छोड़ते। **43** धिक्कार है तुम फरीसियों
पर, क्योंकि तुम्हें सभा-घरों में सबसे आगे
की जगहों पर बैठना और बाज़ारों के
चौक में लोगों का तुम्हें नमस्कार करना
पसंद है! **44** धिक्कार है तुम पर,
क्योंकि तुम उन कब्रों जैसे हो जो ऊपर
से दिखायी नहीं देतीं, इसलिए लोग उन
पर चलते-फिरते हैं और उन्हें मालूम ही
नहीं पड़ता कि वे दूषित हो गए हैं!”

45 जवाब में मूसा के कानून के एक
जानकार ने उससे कहा: “गुरु, यह सब
कहकर तू हमारी बेइज़्ज़ती कर रहा है।”
46 तब यीशु ने कहा: “अरे कानून
के जानकारो, तुम पर भी धिक्कार है,
क्योंकि तुम ऐसे नियम बनाते हो जो लोगों
पर भारी बोझ की तरह हैं, मगर तुम
खुद इस बोझ को उठाने के लिए अपनी
एक उंगली तक नहीं लगाते!

47 धिक्कार है तुम पर, क्योंकि
तुम भविष्यवक्ताओं की कब्रें बनवाते हो,
जबकि तुम्हारे बापदादों ने उन्हें मार डाला
था! **48** बेशक, तुम अपने बापदादों
की करतूतों के गवाह हो और फिर भी
तुम उनके कामों को मंज़ूरी देते हो।
उन्होंने भविष्यवक्ताओं को मार डाला
था और तुम उन भविष्यवक्ताओं की
कब्रें बनाते हो। **49** इसलिए परमेश्वर
ने अपनी बुद्धि से यह भी कहा, ‘मैं
उनके पास भविष्यवक्ताओं और प्रेषितों
को भेजूँगा और वे उनमें से कुछ को
मार डालेंगे और कुछ पर ज़ुल्म करेंगे,
50 ताकि दुनिया की शुरूआत से जितने
भविष्यवक्ताओं का खून बहाया गया है,
उन सबका हिसाब इस पीढ़ी से लिया
जाए, **51** यानी हाबिल के खून से
लेकर जकर्याह के खून तक, जिसका वेदी
और मंदिर के बीच कत्ल कर दिया गया
था।’ हाँ, मैं तुमसे कहता हूँ कि उन
सबके खून का हिसाब इस पीढ़ी से लिया
जाएगा।

52 धिक्कार है तुम पर जो कानून
के जानकार हो, क्योंकि तुमने वह चाबी
चुरा ली है, जो परमेश्वर के बारे में ज्ञान
का दरवाज़ा खोलती है। तुम खुद उस
दरवाज़े के अंदर नहीं गए और जो जा रहे
थे उन्हें भी तुमने रोकने की कोशिश की!”

53 जब यीशु वहाँ से बाहर निकला,
तो शास्त्री और फरीसी बुरी तरह उस पर
चढ़ आए और दूसरी बहुत-सी बातों के
बारे में उसके सामने सवालों की झड़ी
लगा दी। **54** वे इस ताक में थे कि
उसके मुँह से कोई ऐसी बात निकले
जिससे वे उसे पकड़ सकें।

12 इस बीच, लोग हज़ारों की
तादाद में वहाँ इकट्ठा हो चुके थे,
यहाँ तक कि वे एक-दूसरे पर चढ़े जा
रहे थे। तब वह पहले अपने चेलों से

कहने लगा: "फरीसियों के खमीर यानी
कपट से चौकन्ने रहो। 2 लेकिन ऐसा
कुछ नहीं जो बड़े जतन से छिपाया गया
हो और ज़ाहिर न किया जाएगा और कुछ
राज़ हो जो जाना न जाएगा। 3 इस
वजह से जो बातें तुम अंधेरे में कहते हो वे
उजाले में सुनी जाएँगी, और जो तुम अंदर
के कमरों में फुसफुसाकर कहते हो उसे
घरों की छतों से प्रचार किया जाएगा।
4 मेरे दोस्तो, मैं तुमसे कहता हूँ, उनसे
मत डरो जो तुम्हारी जान ले सकते हैं
और इससे ज़्यादा कुछ नहीं कर सकते।
5 मगर मैं तुम्हें बताता हूँ कि तुम्हें
किससे डरना चाहिए: उससे डरो जिसके
पास न सिर्फ तुम्हें मार डालने का, बल्कि
इसके बाद तुम्हें *गेहन्ना** में फेंकने का
भी अधिकार है। 6 क्या दो पैसे* में
पाँच चिड़ियाँ नहीं बिकतीं? फिर भी,
उनमें से एक भी ऐसी नहीं जिसे परमेश्वर
भुला दे। 7 मगर तुम्हारे सिर के सारे
बाल तक गिने हुए हैं। इसलिए मत
डरो, तुम बहुत-सी चिड़ियों से कहीं अन-
मोल हो।

8 इसलिए, मैं तुमसे कहता हूँ,
जो कोई लोगों के सामने यह स्वीकार
करता है कि वह मेरी तरफ है,
इंसान का बेटा भी परमेश्वर के स्वर्ग-
दूतों के सामने उसे स्वीकार कर लेगा।
9 मगर जो लोगों के सामने मुझसे इन-
कार करता है, परमेश्वर के स्वर्गदूतों के
सामने मैं भी उसे जानने से इनकार कर
दूँगा। 10 जो कोई इंसान के बेटे के
खिलाफ कुछ कहता है, उसे तो इसकी
माफी दी जाएगी, मगर जो पवित्र शक्ति
के खिलाफ निंदा की बातें बोलता है उसे
इसकी माफी नहीं मिलेगी। 11 मगर
जब वे तुम्हें जनता की सभाओं और
सरकारी अफसरों और अधिकारियों के
सामने ले जाएँ, तो यह चिंता न करना कि
अपनी सफाई पेश करने के लिए तुम क्या
कहोगे और कैसे कहोगे। 12 इसलिए
कि परमेश्वर की पवित्र शक्ति उसी घड़ी
तुम्हें वे सारी बातें सिखा देगी जो तुम्हें
बोलनी चाहिए।"

13 तब भीड़ में से किसी ने उससे
कहा: "गुरु, मेरे भाई से कह कि वह
हमारी विरासत का बँटवारा कर दे।"
14 यीशु ने उस आदमी से कहा: "किसने
मुझे तुम लोगों का न्यायी या हिस्सा-बाँट
करनेवाला ठहराया है?" 15 फिर
उसने उनसे कहा: "तुम अपनी आँखें खुली
रखो और हर तरह के लालच से खुद को
बचाए रखो, क्योंकि चाहे इंसान के पास
बहुत कुछ हो, तो भी उसकी ज़िंदगी
उसकी संपत्ति की बदौलत नहीं होती।"
16 इस पर उसने यह कहते हुए उन्हें
एक मिसाल दी: "किसी दौलतमंद आदमी
की ज़मीन से बहुत उपज हुई। 17 तब
वह अपने दिल में यह कहने लगा: 'मैं
क्या करूँ, क्योंकि मेरे पास अपनी फसल
रखने के लिए और जगह नहीं है?'
18 इसलिए उसने कहा, 'मैं ऐसा करता
हूँ: मैं अपने गोदाम तुड़वाकर और भी
बड़े गोदाम बनवाऊँगा और वहीं अपना
सारा अनाज और सारी अच्छी चीज़ें जमा

लूका 12:5* यरूशलेम के बाहर कूड़ा-करकट जलाने की जगह। अतिरिक्त लेख 9 देखें। **6*** शाब्दिक, *"असारियन,"* एक दीनार का 1/16वाँ हिस्सा।

करूँगा; **19** और मैं खुद से कहूँगा: “तेरे पास बरसों के लिए बहुत सारी अच्छी चीज़ें जमा हैं; इसलिए चैन से रह, खा-पी और मौज कर।”’ **20** मगर परमेश्वर ने उससे कहा, ‘अरे मूर्ख, आज ही रात वे तुझसे तेरी ज़िंदगी माँग रहे हैं। फिर, जो कुछ तू ने जमा किया है वह किसका होगा?’ **21** ऐसा ही वह इंसान है जो धन-दौलत बटोरने में लगा रहता है, मगर परमेश्वर की नज़र में असल में कंगाल है।”

22 फिर उसने अपने चेलों से कहा: “इस वजह से मैं तुमसे कहता हूँ, यह चिंता करना छोड़ो कि तुम क्या खाओगे या क्या पहनोगे। **23** क्योंकि जीवन का मोल भोजन से और शरीर का मोल कपड़ों से बढ़कर है। **24** ध्यान दो कि कौवे न तो बीज बोते हैं, न कटाई करते हैं, न उनके अनाज के भंडार होते हैं, न ही गोदाम, फिर भी परमेश्वर उन्हें खिलाता है। तो फिर, तुम्हारा मोल पक्षियों से कितना बढ़कर होगा? **25** तुममें ऐसा कौन है जो चिंता कर पल-भर के लिए भी अपनी ज़िंदगी बढ़ा सके?* **26** इसलिए, अगर तुम इतना तक नहीं कर सकते, तो बाकी चीज़ों की चिंता क्यों करते हो? **27** ध्यान दो कि सोसन के फूल कैसे उगते हैं। वे न तो कड़ी मज़दूरी करते हैं न ही सूत कातते हैं। मगर मैं तुमसे कहता हूँ, सुलैमान भी अपने पूरे वैभव में इनमें से किसी एक की तरह सज-धज न सका। **28** इसलिए, अगर परमेश्वर मैदान में उगनेवाले घास-फूस को, जो आज मौजूद है और कल तंदूर की आग में झोंक दिया जाएगा, ऐसे कपड़े पहनाता है, तो अरे कम विश्वास रखनेवालो, वह तुम्हें इससे भी बढ़कर क्यों न पहनाएगा! **29** इसलिए इस बात की खोज करना बंद करो कि तुम क्या खाओगे और क्या पीओगे, और कशमकश में रहकर चिंता करना बंद करो। **30** क्योंकि इन्हीं सब चीज़ों के पीछे इस दुनिया के लोग दिन-रात भाग रहे हैं, मगर तुम्हारा पिता जानता है कि तुम्हें इन चीज़ों की ज़रूरत है। **31** इसके बजाय, उसके राज की खोज में लगे रहो और ये चीज़ें तुम्हें दे दी जाएँगी।

32 हे छोटे झुंड, मत डर, क्योंकि तुम्हारे पिता ने तुम्हें राज देना मंज़ूर किया है। **33** जो चीज़ें तुम्हारी हैं उन्हें बेचकर दान* कर दो। अपने लिए ऐसे बटुए बनाओ जो कभी पुराने नहीं पड़ते, यानी स्वर्ग में ऐसा खज़ाना जमा करो जो कभी खत्म नहीं होता, जहाँ चोर पास नहीं फटकता, न ही कीड़ा उसे खाता है। **34** क्योंकि जहाँ तुम्हारा खज़ाना होगा, वहीं तुम्हारा दिल भी होगा।

35 तुम्हारी कमर कसी रहे और तुम्हारे दीपक जलते रहें। **36** तुम खुद उन आदमियों की तरह बनो जो अपने मालिक का इंतज़ार करते हैं कि वह शादी से कब लौटेगा, ताकि जब वह आकर दरवाज़ा खटखटाए, तो फौरन

लूका 12:25* शाब्दिक, “अपनी उम्र की लंबाई को हाथ-भर भी बढ़ा सके।”

लूका 12:33* शाब्दिक, “दया के दान।”

उसके लिए खोल सकें। **37** सुखी होंगे
वे दास जिनका मालिक आने पर उन्हें
जागता हुआ पाए! मैं तुमसे सच कहता
हूँ, वह अपनी कमर कसेगा और उन्हें
खाने की मेज़ से टेक लेने के लिए
कहेगा और पास आकर उनकी सेवा
करेगा। **38** अगर वह दूसरे पहर*
में, यहाँ तक कि तीसरे पहर# में आकर
उन्हें जागता हुआ पाए, तो उनके लिए
खुशी की बात है! **39** लेकिन यह जान
लो कि अगर घर के मालिक को पता
होता कि चोर किस वक्त आनेवाला है,
तो वह जागता रहता और अपने घर में
सेंध न लगने देता। **40** तुम भी तैयार
रहो, क्योंकि जिस घड़ी तुम्हें लगता भी
न होगा, उसी घड़ी इंसान का बेटा आ
रहा है।”

41 तब पतरस ने कहा: “प्रभु, क्या
तू यह मिसाल हम ही से कह रहा
है या सभी से?” **42** प्रभु ने कहा:
“असल में वह विश्वासयोग्य और सूझ-
बूझ से काम लेनेवाला प्रबंधक कौन है,
जिसे उसका मालिक अपने घर के सेवकों
के दल पर ठहराएगा कि उन्हें सही
वक्त पर सही मात्रा में खाना देता रहे?
43 सुखी होगा वह दास, अगर उसका
मालिक आने पर उसे ऐसा ही करता
पाए! **44** मैं तुमसे सच कहता हूँ, वह
उसे अपनी सारी संपत्ति पर अधिकारी
ठहराएगा। **45** लेकिन अगर कभी
वह दास अपने दिल में कहने लगे,
‘मेरा मालिक आने में देर कर रहा है,’
और नौकर-नौकरानियों को पीटने लगे
और खाने-पीने और पीकर धुत्त होने
लगे, **46** तो उस दास का मालिक
ऐसे दिन आएगा जिस दिन वह उम्मीद
न कर रहा होगा और उस घड़ी आएगा
जिसकी उसे खबर तक न होगी और वह
उसे सख्त-से-सख्त सज़ा देगा और उसका
हिस्सा विश्वासघातियों के साथ ठहरा-
एगा। **47** तब वह दास जिसने समझ
तो लिया था कि उसके मालिक की मरज़ी
क्या है, मगर तैयार न हुआ या उसकी
मरज़ी के मुताबिक काम न किया, वह
बहुत मार खाएगा। **48** मगर वह दास
जिसने अपने मालिक की मरज़ी न समझी
थी और इसलिए मार खाने लायक काम
किए थे वह कम मार खाएगा। हाँ, जिस
किसी को बहुत दिया गया है, उससे
बहुत का हिसाब लिया जाएगा। और
जिसे लोग निगरानी करने के लिए बहुत
कुछ सौंपते हैं, उससे वे और भी ज़्यादा
हिसाब माँगेंगे।

49 मैं पृथ्वी पर आग लगाने आया
हूँ। यह आग सुलग चुकी है, इसलिए मैं
इससे बढ़कर और क्या चाह सकता हूँ?
50 हाँ, एक बपतिस्मा है जो मुझे लेना
है और जब तक यह बपतिस्मा लेना पूरा
नहीं हो जाता, मैं कैसी तकलीफ में रहूँगा!
51 क्या तुम्हें लगता है कि मैं धरती पर
शांति देने आया हूँ? नहीं, शांति नहीं,

लूका 12:38* दूसरा पहर, रात के करीब नौ बजे से आधी रात तक होता था। मर 13:35 के फुट-नोट देखें। **38#** तीसरा पहर, आधी रात से लेकर रात के करीब तीन बजे तक होता था। मर 13:35 के फुटनोट देखें।

बल्कि मैं तुमसे कहता हूँ, मैं फूट डालने
आया हूँ। 52 इसलिए कि अब से एक
घर में पाँच लोग एक-दूसरे के खिलाफ
होंगे, तीन दो के और दो तीन के खिलाफ
होंगे। 53 वे एक-दूसरे के खिलाफ
होंगे, पिता बेटे के खिलाफ और बेटा
पिता के, माँ बेटी के खिलाफ और बेटी
अपनी माँ के, सास अपनी बहू के खिलाफ
होगी और बहू अपनी सास के।"

54 इसके बाद उसने भीड़ से भी
कहा: "जब तुम पश्चिम से एक बादल
उठता देखते हो, तो फौरन कहते हो,
'बरसाती तूफान आनेवाला है' और ऐसा
ही होता है। 55 और जब तुम दक्षिणी
हवा चलती देखते हो, तो कहते हो
'लू चलेगी,' और ऐसा ही होता है।
56 अरे कपटियो, तुम धरती और आस-
मान की सूरत देखकर मौसम को समझना
तो जानते हो, मगर इस खास वक्त का
क्या मतलब है यह समझना भला तुम्हें
क्यों नहीं आता? 57 तुम खुद यह
फैसला क्यों नहीं करते कि सही क्या है?
58 मिसाल के लिए, जब तुम अपने
मुद्दई के साथ फैसले के लिए किसी अधि-
कारी के पास जा रहे हो, तो रास्ते में ही
झगड़ा निपटाकर खुद को छुड़ाने की पूरी
कोशिश शुरू कर दो। कहीं ऐसा न हो
कि वह तुम्हें न्यायाधीश के सामने हाज़िर
करे और न्यायाधीश तुम्हें कोतवाल के
हवाले करे और कोतवाल तुम्हें जेल में
डलवा दे। 59 मैं तुमसे कहता हूँ, जब
तक तुम एक-एक पाई* न चुका दो, तब
तक तुम वहाँ से किसी भी हाल में छूट
न सकोगे।"

13 उसी दौरान, वहाँ कुछ लोग
मौजूद थे जिन्होंने यीशु को
बताया कि कैसे पीलातुस ने कुछ
गलीलियों को उस वक्त मरवा डाला,
जब वे मंदिर में बलिदान चढ़ा रहे थे।
2 इसलिए जवाब में उसने उनसे कहा:
"क्या तुम्हें लगता है कि ये गलीली दूसरे
सभी गलीलियों से बढ़कर पापी साबित
हुए, क्योंकि उन्हें यह भुगतना पड़ा था?
3 नहीं, हरगिज़ नहीं, लेकिन मैं तुमसे
कहता हूँ कि अगर तुम पश्चाताप न
करोगे, तो तुम सब इसी तरह नाश हो
जाओगे। 4 या क्या तुम्हें लगता है कि
वे अठारह लोग, जिन पर सिलोम का
बुर्ज गिरा था और जो दबकर मर गए
थे, यरूशलेम में रहनेवाले दूसरे सभी
लोगों से बढ़कर पापी* साबित हुए थे?
5 मैं तुमसे कहता हूँ कि नहीं। लेकिन
अगर तुम पश्चाताप न करोगे, तो तुम
सब इसी तरह नाश हो जाओगे।"

6 इसके बाद उसने यह मिसाल दी:
"एक आदमी था जिसके अंगूर के बाग
में एक अंजीर का पेड़ लगा था। वह उस
पेड़ में फल ढूँढ़ने आया, मगर उसे एक
भी फल नहीं मिला। 7 तब उसने बाग
के माली से कहा, 'मैं पिछले तीन साल
से इस अंजीर के पेड़ से फल पाने की
उम्मीद से आता रहा हूँ, लेकिन आज तक
एक भी फल नहीं पाया। इस पेड़ को
काट डाल! यह बेकार में ज़मीन को क्यों

लूका 12:59* शाब्दिक, "आखिरी *लेप्टान।*"

लूका 13:4* शाब्दिक, "कर्ज़दार।"

घेरे खड़ा है?’ **8** जवाब में माली ने
उससे कहा, ‘मालिक, इस साल भी इसे
रहने दे ताकि मैं इसके चारों तरफ खुदाई
करूँ और खाद डालूँ। **9** और इसके
बाद अगर यह भविष्य में फल पैदा करे,
तो अच्छी बात है। लेकिन अगर नहीं,
तो तू इसे कटवा देना।’ ”

10 यीशु एक सब्त के दिन किसी
सभा-घर में सिखा रहा था। **11** वहाँ
एक स्त्री थी जिसमें अठारह साल से एक
दुष्ट स्वर्गदूत समाया था, जिसने उसे बेहद
कमज़ोर कर दिया था। उसकी कमर
झुककर दोहरी हो गयी थी और वह ज़रा
भी सीधी नहीं हो पाती थी। **12** जब
यीशु ने उस स्त्री को देखा, तो उसे पुकार-
ते हुए कहा: “हे स्त्री, तुझे तेरी कम-
ज़ोरी से छुटकारा दिया जा रहा है।”
13 यीशु ने अपने हाथ उस स्त्री पर
रखे और वह फौरन सीधी हो गयी
और परमेश्वर की बड़ाई करने लगी।
14 मगर जब सभा-घर के अधिकारी ने
देखा कि यीशु ने सब्त के दिन चंगा करने
का काम किया है, तो वह नाराज़ होकर
लोगों से कहने लगा: “छः दिन होते हैं
जिनमें काम किया जाना चाहिए। इसलिए
उन्हीं दिनों में आकर चंगे हो, मगर सब्त
के दिन नहीं।” **15** लेकिन प्रभु ने उसे
जवाब दिया और कहा: “अरे कपटियो,
क्या तुममें से हरेक सब्त के दिन अपने
बैल या गधे को थान से खोलकर पानी
पिलाने नहीं ले जाता? **16** तो क्या
यह सही नहीं था कि यह स्त्री, जो अब्राहम
की बेटी है और जिसे शैतान ने अठारह
साल तक अपने कब्ज़े में कर रखा था,
उसे सब्त के दिन उसकी कैद से आज़ाद
किया जाए?” **17** जब यीशु ने ये बातें
कहीं, तो उसके सभी विरोधी शर्मिंदा
महसूस करने लगे। मगर सारी भीड़
उन सभी शानदार कामों को देखकर जो
उसने किए थे, खुशियाँ मनाने लगी।

18 इसलिए उसने आगे यह कहा:
“परमेश्वर का राज किसके जैसा है और
मैं किसके साथ उसकी तुलना करूँ?
19 यह एक राई के दाने जैसा है, जिसे
एक आदमी ने लेकर अपने बाग में बो
दिया और वह उगकर बड़ा पेड़ हो
गया और आकाश के पंछियों ने उसकी
डालियों पर आकर बसेरा किया।”

20 एक बार फिर उसने कहा: “मैं
परमेश्वर के राज की तुलना किससे करूँ?
21 यह खमीर की तरह है, जिसे लेकर
एक स्त्री ने करीब दस किलो* आटे में
गूंध दिया और सारा आटा खमीरा हो
गया।”

22 फिर यीशु शहर-शहर और गाँव-
गाँव फिरता हुआ सिखाता रहा और उसने
यरूशलेम की तरफ अपना सफर जारी
रखा। **23** तब एक आदमी ने उससे
कहा: “प्रभु, जो उद्धार पाएँगे क्या वे थोड़े
हैं?” यीशु ने उनसे कहा: **24** “संकरे
दरवाज़े से अंदर दाखिल होने के लिए
जी-तोड़ संघर्ष करो, क्योंकि मैं तुमसे
कहता हूँ कि बहुत-से अंदर दाखिल होना
चाहेंगे, मगर न हो पाएँगे **25** क्योंकि
जब एक बार घर का मालिक उठकर दर-

लूका 13:21* शाब्दिक, ‘तीन सआ।’

वाज़े को अंदर से बंद कर चुका हो, और
तुम दरवाज़े के बाहर खड़े होकर खट-
खटाने लगो और यह कहने लगो, ‘प्रभु,
हमारे लिए दरवाज़ा खोल दे,’ तब वह
जवाब में तुमसे कहेगा, ‘मैं नहीं जानता
कि तुम कहाँ से आए हो।’ **26** और
तुम यह कहने लगोगे, ‘हमने तेरे साथ
बैठकर खाया-पीया और तू ने हमारे शहर
के चौराहों में सिखाया था।’ **27** मगर
वह तुमसे कहेगा, ‘मैं नहीं जानता कि तुम
कहाँ से आए हो। अरे दुष्टता के काम
करनेवालो, मेरे सामने से दूर हो जाओ!’
28 जब तुम अब्राहम, इसहाक और
याकूब और सभी भविष्यवक्ताओं को पर-
मेश्वर के राज में देखोगे, मगर खुद
को बाहर फेंका हुआ पाओगे, तब वहीं
तुम्हारा रोना और दाँत पीसना होगा।
29 इतना ही नहीं, लोग पूरब और
पश्चिम और उत्तर और दक्षिण से आएँगे
और परमेश्वर के राज में खाने की मेज़
से टेक लगाएँगे। **30** और देखो! कुछ
जो आखिरी थे वे पहले होंगे और जो
पहलों में थे वे आखिरी होंगे।”

31 उसी घड़ी कुछ फरीसी आए और
यीशु से कहने लगे: “यहाँ से निकल जा
और चला जा, क्योंकि हेरोदेस* तुझे मार
डालना चाहता है।” **32** लेकिन उसने
उनसे कहा: “जाओ और जाकर उस
लोमड़ी से कहो, ‘देख! मैं आज और
कल भी दुष्ट स्वर्गदूतों को निकालता
और चंगाई का काम करता हूँ और
तीसरे दिन तक अपना काम पूरा
करूँगा।’ **33** फिर भी, मुझे आज,
कल और परसों तक अपना सफर
जारी रखना है, क्योंकि यह हो नहीं
सकता कि एक भविष्यवक्ता यरूशलेम
के बाहर मारा जाए। **34** यरूशलेम,
यरूशलेम, तू जो भविष्यवक्ताओं की
हत्यारी नगरी है और जो तेरे पास भेजे
जाते हैं उन पर पत्थरवाह करती है,
—मैंने कितनी बार चाहा कि जिस तरीके
से मुर्गी अपने चूज़ों को अपने पंखों के
नीचे समेट लेती है, मैं भी उसी तरह तेरे
बच्चों को इकट्ठा करूँ! मगर तुम लोगों ने
यह नहीं चाहा! **35** देखो! तुम्हारा घर
छोड़ा और तुम्हारे हवाले किया जाता है।
मैं तुमसे कहता हूँ कि तुम मुझे तब तक
हरगिज़ न देखोगे जब तक कि यह न
कहो, ‘धन्य है वह जो यहोवा के नाम से
आता है!’ ”

14 एक मौके पर यीशु सब्त के दिन
फरीसियों में से एक धर्म-अधि-
कारी के घर खाने पर गया और वे उस
पर नज़रें जमाए हुए थे। **2** वहाँ उसके
सामने एक आदमी था जो जलोदर का
रोगी था। **3** तब यीशु ने मूसा के
कानून के जानकारों और फरीसियों से यह
पूछा: “क्या सब्त के दिन बीमारी से
ठीक करना कानून के हिसाब से सही
है?” **4** मगर वे खामोश रहे। इस पर
यीशु ने उस आदमी को हाथ लगा-
कर ठीक किया और उसे विदा किया।
5 उसने उनसे कहा: “अगर तुममें से
किसी का बेटा या बैल सब्त के दिन
कुएँ में गिर जाए, तो कौन है जो उसे

लूका 13:31* लूका 3:1 फुटनोट देखें।

फौरन खींचकर बाहर नहीं निकालेगा?”
6 वे इन बातों का जवाब न दे सके।

7 इसके बाद जब उसने देखा कि
वहाँ न्यौते में आए लोग बैठने के
लिए कैसे खास-खास जगह चुन रहे थे,
तो वह उन्हें मिसाल देकर कहने लगाः
8 “जब कोई तुझे शादी की दावत के
लिए न्यौता देता है, तो तू जाकर सबसे
खास जगह पर न पसर जाना। हो सकता
है मेज़बान ने किसी और को न्यौता
दिया हो जो तुझसे भी बड़ा है **9** और
जिसने तुझे और उसे न्यौता दिया है, वह
तुझसे आकर कहे, ‘इस शख्स को यहाँ
बैठने दे।’ और तब तुझे शर्मिंदा होकर
वहाँ से उठना पड़ेगा और जाकर सबसे
नीची जगह बैठना पड़ेगा। **10** इस-
लिए जब तुझे न्यौता दिया गया हो, तो
जा और सबसे नीची जगह पर बैठ
जा, ताकि जब मेज़बान आए तो वह
तुझसे कहेगा, ‘अरे, मेरे दोस्त, वहाँ
ऊपर जाकर बैठ।’ तब सभी मेहमानों के
सामने तेरी इज़्ज़त बढ़ेगी। **11** क्योंकि
जो कोई खुद को ऊँचा करता है, उसे
नीचा किया जाएगा, और जो खुद को
नीचे रखता है उसे ऊँचा किया जाएगा।”

12 इसके बाद वह अपने मेज़बान से
भी यह कहने लगाः “जब तू दोपहर का
या शाम का खाना करे, तो अपने दोस्तों
या भाइयों या रिश्तेदारों या अमीर पड़ो-
सियों को न बुलाना। हो सकता है कि
बदले में वे भी तुझे कभी खाने पर बुलाएँ
और बात बराबर हो जाए। **13** मगर
जब तू दावत दे, तो गरीबों, अपाहिजों,
लंगड़ों, अंधों को न्यौता देना। **14** तब
तुझे खुशी मिलेगी क्योंकि तेरा बदला
चुकाने के लिए उनके पास कुछ नहीं है।
लेकिन तुझे नेक जनों के जी उठने के
वक्त इसका इनाम मिलेगा।”

15 ये बातें सुनकर वहाँ मौजूद मेह-
मानों में से एक ने उससे कहाः “सुखी
है वह जो परमेश्वर के राज में रोटी
खाएगा।”

16 यीशु ने उससे कहाः “किसी
आदमी ने शाम के खाने की आलीशान
दावत रखी और बहुतों को न्यौता दिया।
17 और उसने दावत शुरू होने के वक्त
अपने दास को न्यौते गए लोगों के पास
यह कहने भेजा, ‘आ जाओ, क्योंकि
सबकुछ तैयार हो चुका है।’ **18** मगर
वे सभी बहाने बनाने लगे। पहले ने उससे
कहा, ‘मैंने खेत खरीदा है इसलिए उसे
देखने के लिए मेरा जाना ज़रूरी है, इस-
लिए तू मुझे तो माफ कर।’ **19** एक
और ने कहा, ‘मैंने पाँच जोड़ी बैल खरीदे
हैं और मैं उनकी जाँच-परख करने जा
रहा हूँ, इसलिए तू मुझे तो माफ कर।’
20 एक और ने कहा, ‘मेरी अभी-अभी
शादी हुई है, इसलिए मैं नहीं आ सकता।’
21 तब दास ने लौटकर यह सारी खबर
अपने मालिक को दी। तब घर के मालिक
का गुस्सा भड़क उठा और उसने अपने
दास से कहा, ‘फौरन चौराहों में और
शहर की गलियों में जा, और गरीबों,
अपाहिजों, अंधों और लंगड़ों को यहाँ ले
आ।’ **22** कुछ वक्त के बाद दास ने
कहा, ‘मालिक, जैसा तेरा हुक्म था वैसे

ही किया गया है, मगर फिर भी जगह
खाली है।’ **23** तब उस मालिक ने
दास से कहा, ‘सड़कों पर जा और जिन
जगहों में बाड़े लगे हैं वहाँ जा और लोगों
को आने के लिए मजबूर कर, ताकि
मेरा घर भर जाए। **24** क्योंकि मैं तुम
लोगों से कहता हूँ, जिन-जिन को न्यौता
दिया गया था, उनमें से एक भी मेरी
दावत न चख सकेगा।’ ”

25 जब बड़ी तादाद में लोगों की
भीड़ यीशु के साथ-साथ चल रही थी, तो
उसने मुड़कर उनसे कहा: **26** “अगर
कोई मेरे पास आता है और अपने पिता
और माँ और पत्नी और बच्चों और
भाइयों और बहनों, यहाँ तक कि अपनी
जान से नफरत नहीं करता, तो वह मेरा
चेला नहीं बन सकता। **27** जो कोई
अपनी यातना की सूली* नहीं उठाता
और मेरे पीछे नहीं चलता, वह मेरा
चेला नहीं बन सकता। **28** मिसाल के
लिए, तुममें से ऐसा कौन है जो एक बुर्ज
बनाना चाहता हो और पहले बैठकर इसमें
लगनेवाले खर्च का हिसाब न लगाए,
ताकि देख सके कि उसे पूरा करने के
लिए उसके पास काफी पैसा है कि नहीं?
29 नहीं तो ऐसा होगा कि वह उसकी
नींव तो डाल सकेगा मगर उसे पूरा न
कर पाएगा और सब देखनेवाले उसका
मज़ाक उड़ाने लगेंगे और **30** कहेंगे,
‘यह आदमी बनाने तो चला, मगर पूरा
न कर सका।’ **31** या कौन-सा राजा
ऐसा है जो दूसरे राजा से युद्ध के लिए
निकलने से पहले, बैठकर यह सलाह नहीं
करता कि वह अपने दस हज़ार की फौज
से उस दूसरे राजा का मुकाबला कर
पाएगा या नहीं, जो उसके खिलाफ बीस
हज़ार की फौज लेकर आ रहा है?
32 अगर असल में वह मुकाबला नहीं
कर सकता, तो दूसरे राजा के दूर रहते ही
वह अपने राजदूतों का दल भेजकर उसके
साथ सुलह करने की कोशिश करेगा।
33 इसी तरह, यकीन मानो कि तुममें से
जो कोई अपनी सारी संपत्ति को अल-
विदा नहीं कहता वह मेरा चेला नहीं बन
सकता।

34 बेशक, नमक तो बढ़िया है।
लेकिन अगर नमक ही अपना असर खो
दे, तो उसे किस चीज़ से ज़ायकेदार
बनाया जा सकता है? **35** वह न तो
ज़मीन के लिए अच्छा होता है न खाद में
मिलाने के लिए, बल्कि लोग उसे बाहर
फेंक देते हैं। कान लगाकर सुनो और
मैं जो कह रहा हूँ उसे समझने की
कोशिश करो।”

15 फिर सभी कर-वसूलनेवाले*
और दूसरे ऐसे पापी यीशु की
सुनने के लिए उसके पास आते रहे।
2 यह देखकर फरीसी और शास्त्री,
दोनों बड़बड़ाते हुए यह कहने लगे: “यह
आदमी पापियों को अपने पास आने
देता है और उनके साथ खाता है।”
3 तब यीशु ने यह मिसाल उनसे कही:
4 “अगर किसी के पास सौ भेड़ें हों और

लूका 14:27* अतिरिक्त लेख 6 देखें।

लूका 15:1* कर-वसूलनेवालों को, लोग इज़्ज़त की नज़र से नहीं देखा करते थे।

उनमें से एक खो जाए, तो तुममें से ऐसा कौन होगा जो उस खोई हुई भेड़ को ढूँढ़ने के लिए बाकी निनानवे को वीराने में पीछे छोड़कर न जाए? क्या वह उस खोई हुई भेड़ को तब तक ढूँढ़ता न रहेगा जब
तक कि वह मिल न जाए? 5 और
जब वह उसे मिल जाती है तब वह उसे अपने कंधों पर उठा लेता है और
खुशी से फूला नहीं समाता। 6 वह घर
पहुँचकर अपने दोस्तों और पास-पड़ोसियों को बुलाता है और उनसे कहता है, 'मेरे साथ खुशियाँ मनाओ, क्योंकि मुझे अपनी
खोयी हुई भेड़ मिल गयी है।' 7 मैं
तुमसे कहता हूँ कि इसी तरह एक पापी के पश्चाताप करने पर स्वर्ग में इतनी ज़्यादा खुशियाँ मनायी जाएँगी, जितनी कि ऐसे निनानवे नेक लोगों के लिए नहीं मनायी जातीं, जिन्हें पश्चाताप की ज़रूरत नहीं।

8 या ऐसी कौन-सी स्त्री होगी जिसके पास दस चाँदी के सिक्के* हों और अगर उनमें से एक खो जाए, तो वह दीया जलाकर अपने घर को तब तक न बुहारे और वह सिक्का बड़े जतन से न ढूँढ़ती रहे जब तक कि उसे मिल
न जाए? 9 और जब वह सिक्का उसे
मिल जाता है, तो अपनी सहेलियों और पड़ोसिनों को बुलाती और कहती है, 'मेरे साथ खुशियाँ मनाओ, क्योंकि मुझे अपना खोया हुआ चाँदी का सिक्का मिल गया
है।' 10 मैं तुमसे कहता हूँ कि इसी
तरह, उस एक पापी के लिए जो पश्चा-ताप करता है, परमेश्वर के स्वर्गदूतों के बीच खुशियाँ मनायी जाती हैं।"

11 फिर उसने कहा: "किसी आदमी
के दो बेटे थे। 12 छोटे ने अपने पिता
से कहा, 'पिता, जायदाद में से मेरा हिस्सा मुझे दे दे।' तब पिता ने अपनी संपत्ति उन
दोनों में बाँट दी। 13 बहुत दिन भी
न बीते थे कि छोटा बेटा अपना सबकुछ बटोरकर किसी दूर देश चला गया और वहाँ ऐयाशी में अपनी सारी संपत्ति उड़ा
दी। 14 जब वह सबकुछ खर्च कर
चुका, तो उस पूरे देश में एक भारी अकाल पड़ा और वह कंगाल हो गया।
15 यहाँ तक कि वह उस देश के एक
निवासी के यहाँ जा पड़ा जिसने उसे अपनी ज़मीन में सुअर चराने भेजा।
16 जो फलियाँ सुअर खाते थे उनसे वह
अपना पेट भरने के लिए तरसता था, और उसे कोई कुछ नहीं देता था।

17 जब उसकी अक्ल ठिकाने आयी,
तो उसने कहा, 'मेरे पिता के यहाँ दिन की मज़दूरी पर काम करनेवाले कितने ही मज़दूर हैं जिनके पास रोटी की कोई कमी नहीं, और एक मैं हूँ जो यहाँ भुख-
मरी से मर रहा हूँ! 18 अब मैं उठ-
कर अपने पिता के पास जाऊँगा और उससे कहूँगा: "पिता, मैंने स्वर्ग के और
तेरे खिलाफ पाप किया है। 19 अब
मैं इस लायक नहीं रहा कि तेरा बेटा कह-लाऊँ। मुझे अपने यहाँ मज़दूर की तरह
रख ले।"' 20 इसलिए वह उठा और
अपने पिता के पास गया। अभी वह

लूका 15:8* शाब्दिक, *"द्राख्मा,"* जो 3.40 ग्राम चाँदी का यूनानी सिक्का था।

काफी दूरी पर था कि पिता की नज़र
उस पर पड़ी और वह तड़प उठा। वह
दौड़ा-दौड़ा गया और बेटे को गले लगा
लिया और बहुत प्यार से उसे चूमने लगा।
21 तब बेटे ने उससे कहा, 'पिता, मैंने
स्वर्ग के और तेरे खिलाफ पाप किया है।
अब मैं इस लायक नहीं रहा कि तेरा
बेटा कहलाऊँ। मुझे अपने यहाँ मज़दूर
की तरह रख ले।' **22** मगर पिता
ने अपने दासों से कहा, 'जल्दी करो!
और सबसे बढ़िया चोगा लाओ, और
इसे पहनाओ, और इसके हाथ में एक
अंगूठी और पाँवों में जूतियाँ पहनाओ।
23 एक मोटा-ताज़ा जवान बैल लाकर
काटो कि हम खाएँ और खुशियाँ मनाएँ।
24 क्योंकि मेरा यह बेटा जो मर गया
था, अब फिर से जीने लगा है। यह खो
गया था और अब मिल गया है।' और
वे सब मिलकर खुशियाँ मनाने लगे।

25 उस आदमी का बड़ा बेटा
खेत में था। जब वह घर के पास आ
रहा था, तो उसे गाने-बजाने और नाचने
की आवाज़ सुनायी दी। **26** इसलिए
उसने एक नौकर को अपने पास बुला-
कर पूछा कि यह सब क्या हो रहा है।
27 नौकर ने कहा, 'तेरा भाई आया
है और तेरे पिता ने एक मोटा-ताज़ा
जवान बैल कटवाया है, क्योंकि अपने बेटे
को सही-सलामत पाया है।' **28** मगर
बड़ा बेटा क्रोध से भर गया और वह घर
के अंदर नहीं जाना चाहता था। तब
उसका पिता बाहर आया और उसे मनाने
लगा। **29** जवाब में उसने अपने पिता
से कहा, 'मैं इतने बरसों से तेरी गुलामी
कर रहा हूँ, और मैंने एक बार भी तेरा
हुक्म नहीं टाला, फिर भी तू ने मुझे कभी
बकरी का एक बच्चा तक न दिया, ताकि
मैं अपने दोस्तों के साथ मिलकर मौज
कर सकता। **30** लेकिन जैसे ही तेरा
यह बेटा, जिसने तेरी संपत्ति वेश्याओं पर
उड़ा दी, वापस आया, तो तू ने इसके
लिए मोटा-ताज़ा जवान बैल कटवाया।'
31 इस पर पिता ने उससे कहा, 'बच्चे,
तू तो हमेशा से मेरे साथ है, और जो
कुछ मेरा है वह सब तेरा ही तो है।
32 लेकिन यह सही है कि हम खुशियाँ
मनाएँ और आनंद करें, क्योंकि तेरा यह
भाई जो मर गया था, ज़िंदा हो गया है।
हमने इसे खो दिया था, लेकिन अब पा
लिया है।' "

16 तब यीशु ने अपने चेलों से यह
भी कहा: "एक अमीर आदमी
के यहाँ एक प्रबंधक था, जिसके खिलाफ
उससे यह शिकायत की गयी कि वह तेरे
माल की बरबादी कर रहा है। **2** इस-
लिए उसने प्रबंधक को बुलाया और उससे
कहा: 'मैं तेरे बारे में यह क्या सुन रहा
हूँ? प्रबंधक के अपने काम का हिसाब दे,
क्योंकि अब से तू मेरे घर का कारोबार
नहीं देखेगा।' **3** तब उस प्रबंधक ने
अपने आपसे कहा, 'अब मैं क्या करूँ,
क्योंकि मेरा मालिक मुझे प्रबंधक के काम
से हटा देगा? मुझमें मिट्टी खोदने की
ताकत नहीं और भीख माँगने में मुझे शर्म
आती है। **4** हाँ! मुझे समझ आ गया
कि मुझे क्या करना चाहिए, ताकि जब

मुझे प्रबंधक के काम से हटा दिया जाए,
तो लोग मुझे अपने घरों में स्वीकार करें।’
5 उसने अपने मालिक के कर्ज़दारों को
एक-एक कर अपने पास बुलाया और
पहलेवाले से कहा, ‘तुझे मेरे मालिक को
कितना देना है?’ **6** उसने कहा, ‘दो
हज़ार दो सौ लीटर* जैतून का तेल।’
प्रबंधक ने कहा, ‘अपना लिखित करार-
नामा वापस ले और बैठकर फौरन ग्यारह
सौ लिख दे।’ **7** इसके बाद, उसने
दूसरे से पूछा, ‘हाँ, तुझे कितना देना है?’
उसने कहा, ‘एक सौ सत्तर क्विन्टल*
गेहूँ।’ उसने उससे कहा, ‘अपना लिखित
करारनामा वापस ले और एक सौ छत्तीस
लिख दे।’ **8** उस प्रबंधक के मालिक
ने उसके बेईमान होने के बावजूद उसकी
सराहना की, क्योंकि उसने होशियारी से
काम लिया था। मैं तुमसे यह इसलिए कह
रहा हूँ, क्योंकि इस दुनिया के लोग अपनी
पीढ़ी के लोगों के साथ व्यवहार करने में,
उन लोगों से ज़्यादा होशियार हैं जो
रौशनी में हैं।

9 मैं तुमसे यह भी कहता हूँ, बेईमानी
की दौलत से अपने लिए दोस्त बना लो,
ताकि जब यह दौलत न रहे, तो ये दोस्त
तुम्हें हमेशा कायम रहनेवाले निवासों में
ले लें। **10** जो इंसान थोड़े में भरोसे
के लायक है, वह बहुत में भी भरोसे के
लायक होता है और जो थोड़े में बेईमान
है, वह बहुत में भी बेईमान होता है।
11 इसलिए, अगर तुमने बेईमानी की
दौलत के इस्तेमाल में खुद को भरोसे के
लायक साबित नहीं किया है, तो कौन
तुम्हें सच्ची दौलत सौंपेगा? **12** और
जो किसी दूसरे का है, अगर उसके मामले
में तुमने खुद को भरोसे के लायक साबित
नहीं किया, तो कौन तुम्हें वह देगा जो
तुम्हारे अपने लिए है? **13** कोई भी
सेवक दो मालिकों का दास नहीं हो
सकता। क्योंकि या तो वह एक से नफ-
रत करेगा और दूसरे से प्यार, या वह
एक से जुड़ा रहेगा और दूसरे को तुच्छ
समझेगा। तुम परमेश्वर के साथ-साथ
धन-दौलत के दास नहीं हो सकते।”

14 तब फरीसी जिन्हें पैसे से प्यार
था, वे यीशु की ये सारी बातें सुनकर
उसकी खिल्ली उड़ाने लगे। **15** इस-
लिए उसने उनसे कहा: “तुम वे हो
जो इंसानों के सामने खुद को बड़े नेक
बताते हो, मगर परमेश्वर तुम्हारे दिलों
को जानता है। क्योंकि जो इंसानों के बीच
बहुत बड़ी बात समझी जाती है वह पर-
मेश्वर की नज़र में घिनौनी है।

16 दरअसल मूसा का कानून और
भविष्यवक्ताओं के लेख यूहन्ना के समय
तक के लिए थे। तब से परमेश्वर के
राज का एक खुशखबरी के तौर पर
ऐलान किया जा रहा है और हर किस्म
का इंसान उस तक पहुँचने के लिए ज़ोर
लगा रहा है। **17** आकाश और धरती
का मिट जाना तो आसान है, लेकिन
कानून के एक अक्षर का एक बिंदु भी
बिना पूरा हुए मिट जाना नामुमकिन है।

लूका 16:6* शाब्दिक, ‘सौ बत।’ एक बत करीब 22 लीटर के बराबर होता था। **7*** शाब्दिक, ‘सौ कोर।’ एक कोर करीब 170 किलोग्राम के बराबर होता था, और ‘सौ कोर’ 17,000 किलोग्राम।

18 जो कोई अपनी पत्नी को तलाक
देता है और दूसरी से शादी करता है,
वह शादी के बाहर यौन-संबंध रखने का
गुनहगार है और जो कोई एक तलाक-
शुदा स्त्री से शादी करता है, वह शादी
के बाहर यौन-संबंध रखने का गुनह-
गार है।

19 एक अमीर आदमी था जो बैंजनी
और रेशमी कपड़े पहना करता था और
हर दिन बड़े ठाठ-बाट से रहता और ऐश
करता था। **20** मगर लाज़र नाम का
एक भिखारी था जिसका शरीर फोड़ों से
भरा हुआ था। उसे उस अमीर आदमी के
फाटक के पास छोड़ दिया जाता था
21 और वह उसकी मेज़ से गिरनेवाले
टुकड़े खाने के लिए तरसता था। हाँ,
यहाँ तक कि कुत्ते आकर उसके फोड़े
चाटा करते थे। **22** कुछ वक्त गुज़रने
पर वह भिखारी मर गया और स्वर्गदूतों
ने उसे लेकर अब्राहम के पास* पहुँचाया।
और वह अमीर आदमी भी मर गया
और उसे गाड़ा गया। **23** कब्र* में
जहाँ वह अमीर आदमी पीड़ा में था,
उसने आँखें उठायीं और दूर अब्राहम को
देखा और लाज़र को उसके सीने से लगा
खड़ा देखा। **24** इसलिए उसने ज़ोर से
पुकारकर कहा, ‘पिता अब्राहम, मुझ पर
दया कर और लाज़र को मेरे पास भेज
दे कि वह अपनी उंगली की छोर पानी
में भिगोकर मेरी जीभ को ठंडा करे,
क्योंकि मैं यहाँ इस धधकती आग में तड़प
रहा हूँ।’ **25** मगर अब्राहम ने कहा,
‘बच्चे, याद कर कि तू ने अपनी सारी
ज़िंदगी बढ़िया-बढ़िया चीज़ें बहुतायत में
पायीं, मगर दूसरी तरफ लाज़र ने सिर्फ
बुरा-ही-बुरा पाया। लेकिन, अब वह यहाँ
आराम से है जबकि तू तड़प रहा है।
26 इसके अलावा, हमारे और तुम लोगों
के बीच एक बड़ी खाई ठहरायी गयी है,
ताकि यहाँ से जो उस पार तुम लोगों के
पास जाना चाहे वह न जा सके, न ही
वहाँ से लोग इस पार हमारे पास आ
सकें।’ **27** तब उसने कहा, ‘अगर
ऐसी बात है, तो हे पिता मैं तुझसे बिनती
करता हूँ कि तू उसे मेरे पिता के घर भेज
दे, **28** क्योंकि मेरे पाँच भाई हैं। वह
जाकर उन्हें अच्छी तरह समझाए, कहीं
ऐसा न हो कि वे इस जगह पहुँच जाएँ
और उन्हें भी यह पीड़ा सहनी पड़े।’
29 मगर अब्राहम ने कहा, ‘उनके पास
मूसा और भविष्यवक्ताओं के वचन हैं,
वे उनकी सुनें।’ **30** तब उसने कहा,
‘नहीं पिता अब्राहम, लेकिन अगर मरे
हुओं में से कोई उनके पास जाएगा,
तो वे पश्चाताप करेंगे।’ **31** लेकिन
अब्राहम ने उससे कहा, ‘अगर वे मूसा
और भविष्यवक्ताओं की नहीं सुनते, तो
चाहे मरे हुओं में से कोई जी उठे, तो भी
उन्हें यकीन नहीं दिलाया जा सकता।’”

17 फिर यीशु ने अपने चेलों से
कहा: “ऐसा हो नहीं सकता कि
विश्वास की राह में बाधाएँ* न आएँ।
मगर हाय उस इंसान पर जो इनकी

लूका 16:22* शाब्दिक, “गोद में या सीने के पास सबसे करीब।” **23*** यूनानी में *“हेडिज़।”* अतिरिक्त लेख 8 देखें।

लूका 17:1* या, “ठोकर खिलाने की वजह।”

वजह बनता है। **2** ऐसे इंसान के
लिए ज़्यादा अच्छा होगा कि उसके गले
में चक्की का पाट लटकाया जाए और
उसे समुद्र में फेंक दिया जाए, बजाय
इसके कि वह इन छोटों में से किसी
एक के पाप में पड़ने* की वजह बने।
3 खुद पर ध्यान दे। अगर तेरा भाई
पाप करता है तो उसे डाँट, और अगर
वह पश्चाताप करता है तो उसे माफ कर।
4 यहाँ तक कि अगर वह तेरे खिलाफ
दिन में सात बार पाप करे और सात बार
तेरे पास वापस आकर कहे, ‘मैं पछता
रहा हूँ,’ तो तुझे उसे माफ करना है।”
5 फिर प्रेषितों ने प्रभु से कहा:
“हमारा विश्वास बढ़ा।” **6** तब प्रभु
ने कहा: “अगर तुम्हारे अंदर राई के दाने
के बराबर भी विश्वास है, तो तुम शह-
तूत के इस पेड़ से कहोगे, ‘यहाँ से उखड़-
कर समंदर में जा लग!’ तो वह तुम्हारा
कहना मानेगा।

7 तुममें ऐसा कौन है जिसका
दास हल जोतता या भेड़-बकरियों की
देखभाल करता हो और जब वह खेत
से वापस आए, तो उससे कहे, ‘फौरन
यहाँ आ और खाने के लिए मेज़ से टेक
लगा’? **8** इसके बजाय क्या वह उससे
यह न कहेगा, ‘मेरे शाम के खाने के लिए
कुछ तैयार कर और जब तक मैं खा-पी
न लूँ तब तक अंगोछे से कमर बाँधकर
मेरी सेवा कर और उसके बाद तू खा-पी
सकता है’? **9** क्या वह उस दास का
एहसान मानेगा कि उसने वे सारे काम
किए जो उसे करने के लिए दिए गए थे?
10 वैसे ही तुम भी, जब वे सब काम
कर चुको जो तुम्हें दिए गए हैं, तो कहो,
‘हम निकम्मे दास हैं। हमें जो करना
चाहिए था, बस वही हमने किया है।’”

11 जब यीशु यरूशलेम जा रहा था,
तो वह इस सफर के दौरान सामरिया और
गलील के बीच से होता हुआ निकला।
12 जब वह किसी गाँव में दाखिल
हो रहा था, तो दस कोढ़ी उसे मिले,
जो उसे दूर से देखकर खड़े हो गए।
13 उन्होंने ऊँची आवाज़ में उसे पुकार-
कर कहा: “हे गुरु यीशु, हम पर दया
कर!” **14** जब यीशु की नज़र उन पर
पड़ी, तो उसने उनसे कहा: “जाओ और
खुद को याजकों को दिखाओ।” जिस
वक्त वे जा रहे थे, वे शुद्ध हो गए।
15 उनमें से एक ने जब देखा कि वह
ठीक हो गया है, तो ज़ोर-ज़ोर से पर-
मेश्वर का गुणगान करता हुआ वापस
आया। **16** वह यीशु के पाँवों पर मुँह
के बल गिरा और उसका धन्यवाद करने
लगा। और-तो-और, वह एक सामरी था।
17 जवाब में यीशु ने कहा: “क्या दसों
के दस शुद्ध नहीं हुए थे? तो फिर, बाकी
नौ कहाँ हैं? **18** क्या दूसरी जाति के
इस आदमी को छोड़ और कोई भी ऐसा
न निकला जो वापस आकर परमेश्वर की
बड़ाई करता?” **19** उसने उससे कहा:
“उठ और अपने रास्ते चला जा। तेरे
विश्वास ने तुझे अच्छा किया है।”

20 मगर जब फरीसियों ने उससे
पूछा कि परमेश्वर का राज कब आ रहा
है, तो उसने उन्हें जवाब देते हुए कहा:

लूका 17:2* या “ठोकर खाने।”

“परमेश्‍वर का राज ऐसे अनोखे अंदाज़
से नहीं आ रहा कि उसे साफ-साफ देखा
जा सके, **21** न ही लोग यह कहेंगे,
‘देखो यहाँ है!’ या ‘वहाँ है!’ इसलिए
कि देखो! परमेश्‍वर का राज तुम्हारे ही
बीच है।”

22 फिर उसने चेलों से कहा: “वह
वक्‍त आएगा जब तुम इंसान के बेटे के
दिनों में से एक दिन देखना चाहोगे,
मगर न देख सकोगे। **23** लोग तुमसे
कहेंगे, ‘देखो वहाँ है!’ या ‘देखो यहाँ
है!’ तुम बाहर न जाना, न उनके पीछे
भागना। **24** इसलिए कि जैसे बिजली
कौंधने पर उसकी चमक आकाश के एक
छोर से दूसरे छोर तक दिखायी देती है,
इंसान के बेटे के प्रकट होने का दिन भी
ऐसा ही होगा। **25** मगर, पहले यह
ज़रूरी है कि वह बहुत दुःख-तकलीफें सहे
और इस पीढ़ी के ज़रिए ठुकराया जाए।
26 और ठीक जैसा नूह के दिनों में हुआ
था, वैसा ही इंसान के बेटे के दिनों में
भी होगा: **27** जिस दिन तक कि नूह
जहाज़* के अंदर न गया और जलप्रलय
ने आकर उन सबको नाश न कर दिया,
उस दिन तक लोग खा रहे थे, पी रहे थे,
पुरुष शादी कर रहे थे और स्त्रियाँ ब्याही
जा रही थीं। **28** और ठीक जैसा लूत
के दिनों में हुआ था: लोग खा रहे थे, पी
रहे थे, खरीदारी कर रहे थे, बिक्री कर
रहे थे, बोआई कर रहे थे, घर बना रहे
थे। **29** लेकिन जिस दिन लूत सदोम
से बाहर आया, उस दिन आकाश से आग
और गंधक बरसी और उन सबको नाश
कर दिया। **30** जिस दिन इंसान के
बेटे को प्रकट होना है, उस दिन भी ऐसा
ही होगा।

31 उस दिन जो इंसान घर की छत
पर हो मगर जिसका सामान घर के अंदर
हो, वह इन्हें उठाने के लिए नीचे न उतरे।
उसी तरह जो आदमी बाहर खेत में हो,
वह भी पीछे छोड़ी हुई चीज़ों को लेने न
लौटे। **32** लूत की पत्नी को याद
रखो। **33** जो कोई अपनी जान बचाने
की कोशिश करता है वह उसे खोएगा,
लेकिन जो कोई इसे खोता है वह इसे
बचाएगा। **34** मैं तुमसे कहता हूँ, उस
रात दो आदमी एक बिछौने पर होंगे।
एक को साथ ले लिया जाएगा, मगर दूसरे
को छोड़ दिया जाएगा। **35** दो स्त्रियाँ
एक ही चक्की से पीस रही होंगी। एक
को साथ ले लिया जाएगा और दूसरी
को छोड़ दिया जाएगा।” **36*** ——
37 जवाब में उन्होंने उससे पूछा: “कहाँ
प्रभु?” उसने कहा: “जहाँ लाश है, वहीं
उकाब जमा होंगे।”

18 फिर यीशु ने उन्हें हमेशा प्रार्थना
करते रहने और कभी हिम्मत
न हारने की ज़रूरत के बारे में समझाने
के लिए यह मिसाल दी: **2** “किसी
शहर में एक न्यायाधीश था, जो न तो
परमेश्‍वर का डर मानता था और न
ही किसी इंसान की इज़्ज़त करता था।

लूका 17:27* मत्ती 24:38 फुटनोट देखें।

लूका 17:36* यह आयत कुछ बाइबल अनुवादों में पायी जाती है, मगर इसे वेस्टकॉट और हॉर्ट के यूनानी पाठ में शामिल नहीं किया गया है, जो सबसे प्राचीन यूनानी हस्तलिपियों के मुताबिक है।

3 उस शहर में एक विधवा थी जो बार-बार उसके पास जाती रही और कहती रही, 'देख, मेरे मुद्दई से मुझे इंसाफ दिला।' **4** बहुत समय तक तो वह नहीं माना, मगर बाद में वह अपने दिल में कहने लगा, 'न तो मैं परमेश्वर का डर मानता हूँ, न ही किसी इंसान की इज़्ज़त करता हूँ, **5** फिर भी इस विधवा के लगातार मुझे परेशान करते रहने की वजह से मैं इसे ज़रूर इंसाफ दिलाऊँगा, ताकि ऐसा न हो कि यह बार-बार आती रहे और मेरा जीना दुश्वार कर दे।'" **6** फिर प्रभु ने कहा: "ध्यान दो कि उस न्यायाधीश ने बुरा होने के बावजूद क्या कहा! **7** बेशक, क्या वह अपने चुने हुओं की खातिर इंसाफ न करेगा, जो दिन-रात उससे फरियाद करते रहते हैं? परमेश्वर ज़रूर ऐसा करेगा, इसके बावजूद कि वह उनके मामले में सहनशीलता दिखाता है। **8** मैं तुमसे कहता हूँ, वह बड़ी तेज़ी से उन्हें इंसाफ दिलाएगा। फिर भी, जब इंसान का बेटा आएगा, तब क्या वह धरती पर वाकई यह विश्वास पाएगा?"

9 मगर उसने कुछ ऐसे लोगों से यह मिसाल भी कही जिन्हें खुद के बारे में यह यकीन था कि वे बहुत नेक हैं और बाकी सभी तुच्छ हैं: **10** "दो आदमी मंदिर में प्रार्थना करने गए। एक फरीसी था और दूसरा कर-वसूलनेवाला।* **11** फरीसी खड़ा होकर मन-ही-मन प्रार्थना में ये बातें कहने लगा, 'हे परमेश्वर, मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ कि मैं बाकियों जैसा नहीं हूँ, जो लुटेरे, बेईमान और बदचलन* हैं, और न ही इस कर-वसूलनेवाले जैसा हूँ। **12** मैं हफ्ते में दो बार उपवास रखता हूँ और जो कुछ पाता हूँ, उन सबका दसवाँ अंश देता हूँ।' **13** मगर कर-वसूलनेवाला दूर खड़ा रहा और आकाश की तरफ आँखें भी न उठानी चाहीं, मगर छाती पीटते हुए कहता रहा: 'हे परमेश्वर, मुझ पापी पर दया कर।' **14** मैं तुमसे कहता हूँ, यह आदमी उस फरीसी से ज़्यादा नेक साबित होकर अपने घर गया। क्योंकि हर कोई जो खुद को ऊँचा करता है, उसे नीचा किया जाएगा, मगर जो खुद को नीचे रखता है, उसे ऊँचा किया जाएगा।"

15 फिर लोग अपने नन्हे-मुन्नों को भी उसके पास लाने लगे कि वह उन्हें अपने हाथ से छूए, मगर यह देखकर चेले उन्हें डाँटने लगे। **16** मगर यीशु ने यह कहते हुए नन्हे-मुन्नों को अपने पास बुलाया: "बच्चों को मेरे पास आने दो और उन्हें रोकने की कोशिश मत करो। क्योंकि परमेश्वर का राज ऐसों ही का है। **17** मैं तुमसे सच कहता हूँ, जो कोई परमेश्वर के राज को एक छोटे बच्चे की तरह स्वीकार नहीं करता, वह उसमें किसी भी तरह जा न पाएगा।"

18 किसी अधिकारी ने उससे यह सवाल पूछा: "अच्छे गुरु, मैं कौन-सा

लूका 18:10* लूका 15:1 फुटनोट देखें।

लूका 18:11* या, "शादी के बाहर यौन-संबंध रखनेवाले।"

काम कर हमेशा की ज़िंदगी का वारिस
बन सकता हूँ?” **19** यीशु ने उससे
कहा: “तू मुझे अच्छा क्यों कहता है?
कोई अच्छा नहीं है, सिवा एक के, और
वह है परमेश्‍वर। **20** तू आज्ञाओं को
तो जानता है, ‘शादी के बाहर यौन-
संबंध न रखना, खून न करना, चोरी न
करना, झूठी गवाही न देना, अपने पिता
और अपनी माँ का आदर करना।’ ”
21 तब उसने कहा: “ये सारी बातें
मैं लड़कपन से ही मानता आया हूँ।”
22 यह सुनने के बाद, यीशु ने उससे
कहा: “तुझमें अब भी एक बात की कमी
है: जो कुछ तेरे पास है, वह सब बेचकर
कंगालों में बाँट दे, और तुझे स्वर्ग में
खज़ाना मिलेगा। और आ, मेरा चेला बन-
कर मेरे पीछे हो ले।” **23** जब उसने
यह सुना, तो वह बेहद दुःखी हुआ,
क्योंकि वह बहुत अमीर था।

24 यीशु ने उसकी तरफ देखा और
कहा: “जिनके पास पैसा है, उनके
लिए परमेश्‍वर के राज में दाखिल हो
पाना कितना मुश्‍किल होगा! **25** दर-
असल, परमेश्‍वर के राज में एक दौलत-
मंद आदमी के दाखिल होने से, एक ऊँट
का सिलाई की सुई के छेद से निकल जाना
ज़्यादा आसान है।” **26** जिन्होंने यह
सुना, उन्होंने कहा: “तो आखिर किसका
उद्धार होना मुमकिन है?” **27** उसने
कहा: “जो बातें इंसानों के लिए नामुमकिन
हैं, वे परमेश्‍वर के लिए मुमकिन हैं।”
28 मगर पतरस ने कहा: “देख! हमने
तो अपना सबकुछ छोड़ दिया है और तेरे
पीछे हो लिए हैं।” **29** उसने उनसे
कहा: “मैं तुमसे सच कहता हूँ, ऐसा कोई
नहीं जिसने परमेश्‍वर के राज की खातिर
घर या पत्नी या भाइयों या माँ-बाप या
बच्चों को छोड़ा हो **30** और जो इस
ज़माने में किसी तरह इन सबका कई
गुना न पाए और आनेवाली दुनिया* में
हमेशा की ज़िंदगी पाए।”

31 फिर यीशु उन बारहों को अलग
ले गया और उनसे कहा: “देखो! हम यरू-
शलेम जा रहे हैं, और जो-जो बातें इंसान
के बेटे के बारे में भविष्यवक्ताओं के
ज़रिए लिखी गयी हैं, वे सब पूरी होंगी।
32 मिसाल के लिए, वह दूसरी जातियों
के लोगों के हवाले कर दिया जाएगा और
उसका मज़ाक उड़ाया जाएगा और उसके
साथ बुरा सलूक किया जाएगा और उस
पर थूका जाएगा। **33** वे उसे कोड़े
लगाने के बाद मार डालेंगे, मगर तीसरे
दिन वह जी उठेगा।” **34** लेकिन चेले
इनमें से किसी भी बात के मायने न समझ
पाए। मगर यह वचन उनसे छिपा रहा,
और जो बातें कही गयी थीं, उन्हें वे नहीं
जानते थे।

35 जिस दौरान वह यरीहो के करीब
पहुँचनेवाला था, एक अंधा वहाँ सड़क
के किनारे बैठा भीख माँग रहा था।
36 जब उस अंधे ने पास से गुज़रती
भीड़ का शोर सुना, तो पूछने लगा कि
यह क्या हो रहा है। **37** लोगों ने उसे
बताया: “यीशु नासरी यहाँ से गुज़र रहा
है!” **38** यह सुनकर उसने ज़ोर से

लूका 18:30* या, “दुनिया की व्यवस्था।”

पुकारकर कहाः “हे यीशु, दाविद के
वंशज, मुझ पर दया कर!” **39** जो
आगे-आगे जा रहे थे वे उसे कड़ाई से
कहने लगे कि चुप हो जा, मगर वह और
ज़्यादा ज़ोर से चिल्लाता रहाः “दाविद के
वंशज, मुझ पर दया कर।” **40** तब
यीशु रुककर खड़ा हो गया और हुक्म
दिया कि उस आदमी को उसके पास
लाया जाए। जब वह उसके पास आया,
तो यीशु ने उससे पूछाः **41** “तू क्या
चाहता है, मैं तेरे लिए क्या करूँ?” उसने
कहाः “प्रभु, मेरी आँखों की रौशनी लौट
आए।” **42** इसलिए यीशु ने उससे
कहाः “अपनी आँखों की रौशनी पा।
तेरे विश्वास ने तुझे ठीक किया है।”
43 उसी पल उसकी आँखों की रौशनी
लौट आयी और वह तब से परमेश्वर की
बड़ाई करता हुआ उसके पीछे हो लिया।
साथ ही, यह देखने पर सभी लोगों ने
परमेश्वर की बड़ाई की।

19 यीशु यरीहो में आया और उसके
बीच से होकर जा रहा था।
2 यहाँ जक्कई नाम का एक आदमी था।
वह कर-वसूलनेवालों का एक प्रधान था
और बहुत अमीर था। **3** वह देखना
चाहता था कि यह यीशु कौन है, मगर
भीड़ की वजह से देख नहीं पा रहा था
क्योंकि वह ठिंगना था। **4** इसलिए
वह भागकर आगे गया और उसे देखने
के लिए रास्ते में एक गूलर के पेड़ पर
चढ़ गया, क्योंकि यीशु वहीं से गुज़रने-
वाला था। **5** जब यीशु वहाँ पहुँचा,
तो उसने ऊपर देखा और उससे कहाः
“जक्कई, जल्दी से नीचे उतर आ, क्योंकि
आज मुझे तेरे घर ठहरना है।” **6** तब
वह जल्दी-जल्दी नीचे उतरा और बड़ी
खुशी के साथ उसे अपना मेहमान बनाया।
7 मगर जब उन्होंने यह देखा, तो वे सब
बड़बड़ाने लगे और कहने लगेः “यह
एक ऐसे आदमी के घर ठहरने गया
है जो पापी है।” **8** मगर जक्कई ने
खड़े होकर प्रभु से कहाः “प्रभु देख! मैं
अपनी आधी संपत्ति गरीबों को देता हूँ
और मैंने जिस किसी का गैर-कानूनी
तरीके से जबरन कुछ लूटा है, उसे मैं
चौगुना वापस लौटाता हूँ।” **9** इस पर
यीशु ने उससे कहाः “आज के दिन इस
घर में उद्धार आया है, क्योंकि यह भी
अब्राहम का एक वंशज है। **10** इस-
लिए कि जो खो गए हैं, इंसान का
बेटा उन्हें ढूँढ़ने और उनका उद्धार करने
आया है।”

11 जब चेले ये बातें सुन रहे थे, तो
उसने एक मिसाल भी दी, क्योंकि वह
यरूशलेम के करीब था और चेले यह
सोच रहे थे कि परमेश्वर का राज बस
कुछ ही पल में ज़ाहिर होनेवाला है।
12 इसलिए उसने कहाः “एक आदमी
था जो शाही खानदान से था। वह दूर
देश के लिए रवाना हुआ ताकि राज-
अधिकार पाकर लौट आए। **13** इस-
लिए, उसने अपने दस दासों को बुलाकर
उन्हें चाँदी के दस टुकड़े* दिए और उनसे

लूका 19:13* शाब्दिक, “दस *मीना।” मीना* यूनानी तौल की एक इकाई थी, जो 340 ग्राम चाँदी के बराबर थी। एक *मीना* करीब तीन महीने की मज़दूरी के बराबर था।

कहा, 'जब तक मैं वापस न आऊँ, तब
तक इससे व्यापार करो।' **14** मगर
उसके देश के लोग उससे नफरत करते
थे और उन्होंने उसके पीछे-पीछे यह कहने
के लिए राजदूतों का एक दल भेजा,
'हम नहीं चाहते कि यह आदमी हमारा
राजा बने।'

15 जब वह राज-अधिकार हासिल
करने के बाद आखिरकार लौट आया, तो
उसने हुक्म दिया कि उन दासों को बुलाया
जाए जिन्हें उसने चाँदी दी थी, ताकि
पता लगा सके कि उन्होंने उनसे व्यापार
कर क्या कमाया है। **16** तब पहला
दास उसके सामने हाज़िर हुआ और कहने
लगा, 'मालिक, तेरी चाँदी के टुकड़े से
मैंने चाँदी के दस टुकड़े कमाए हैं।'
17 तब मालिक ने उससे कहा, 'शाबाश,
अच्छे दास! तू ने एक छोटी-सी बात में
विश्वासयोग्य होने का सबूत दिया है, इस-
लिए मैं तुझे दस शहरों का अधिकारी
बनाता हूँ।' **18** अब दूसरा आकर
कहने लगा, 'मालिक, तेरे चाँदी के टुकड़े
से मैंने चाँदी के पाँच टुकड़े कमाए हैं।'
19 मालिक ने उससे भी कहा, 'मैं तुझे
भी पाँच शहरों के ऊपर अधिकारी बनाता
हूँ।' **20** मगर एक और आया और
कहने लगा, 'मालिक, यह रहा तेरा चाँदी
का टुकड़ा जिसे मैंने कपड़े में बाँधकर
अलग रख दिया था। **21** मैं तुझसे
डरता था, क्योंकि तू एक कठोर आदमी
है। तू वह पैसा निकालता है जो तू ने
जमा नहीं किया और वह फसल काटता
है जो तू ने नहीं बोयी।' **22** मालिक
ने उससे कहा, 'अरे दुष्ट दास, मैं तेरे ही
मुँह की बात से तेरा फैसला करता हूँ।
तू जानता था न कि मैं एक कठोर आदमी
हूँ। मैं वह पैसा निकालता हूँ जो मैंने
जमा नहीं किया और उस फसल की
कटाई करता हूँ, जिसे मैंने नहीं बोया?
23 तो फिर, तू ने मेरी चाँदी साहूकारों
के पास जमा क्यों नहीं की? तब जब मैं
लौटता तो अपनी चाँदी के साथ-साथ
ब्याज़ भी पाता।'

24 तब जो आस-पास खड़े थे उनसे
मालिक ने कहा, 'यह चाँदी का टुकड़ा
इससे ले लो और उसे दे दो जिसके
पास दस हैं।' **25** मगर उन्होंने कहा,
'मालिक, उसके पास तो पहले से दस
टुकड़े हैं!'— **26** 'मैं तुमसे कहता हूँ,
जिस किसी के पास है, उसे और ज़्यादा
दिया जाएगा। मगर जिसके पास नहीं
है, उससे वह भी ले लिया जाएगा जो
उसके पास है। **27** मेरे जो दुश्मन
नहीं चाहते थे कि मैं उनका राजा बनूँ,
उन्हें यहाँ लाओ और मेरे सामने उन्हें
कत्ल करो।' "

28 जब यीशु ये बातें कह चुका, तो
वह आगे-आगे चलता हुआ यरूशलेम की
तरफ बढ़ने लगा। **29** जब वह जैतून
नाम पहाड़ पर बैतफगे और बैतनिय्याह
के पास पहुँचा, तो उसने दो चेलों को यह
कहते हुए आगे भेजाः **30** "जो गाँव
तुम्हें नज़र आ रहा है उसमें जाओ, और
उसमें दाखिल होने पर तुम्हें एक गधी का
बच्चा बंधा हुआ मिलेगा, जिस पर आज
तक कोई आदमी नहीं बैठा। उसे खोल-
कर ले आओ। **31** लेकिन अगर कोई

तुमसे पूछे, 'तुम इसे क्यों खोल रहे
हो?' तो कहना, 'प्रभु को इसकी ज़रू-
रत है।'" **32** तब जिन्हें भेजा गया
था, वे निकले और ठीक जैसा उसने
कहा था वैसा ही पाया। **33** लेकिन
जब वे गधी के बच्चे को खोल रहे थे,
तब उसके मालिक ने उनसे कहा: "तुम
इस गधी के बच्चे को क्यों खोल रहे हो?"
34 उन्होंने कहा: "प्रभु को इसकी ज़रू-
रत है।" **35** और वे उसे यीशु के पास
ले गए और उन्होंने उस गधी के बच्चे के
ऊपर अपने ओढ़ने बिछाए और यीशु को
उस पर सवार किया।

36 जैसे-जैसे वह आगे बढ़ रहा था,
वे सड़क पर उसके आगे-आगे अपने
कपड़े बिछाते रहे। **37** जैसे ही वह
उस सड़क के पास पहुँचा जो जैतून पहाड़
से नीचे की तरफ जाती है, तो उसके
चेलों की सारी भीड़, उन सभी शक्ति-
शाली कामों की वजह से जो उन्होंने
देखे थे, खुशियाँ मनाते हुए ऊँची
आवाज़ से परमेश्वर की बड़ाई करने लगी
38 और कहने लगी: "धन्य है वह
जो यहोवा के नाम से राजा बनकर
आ रहा है! स्वर्ग में शांति और सबसे
ऊँचे पर विराजनेवाले की महिमा हो!"
39 लेकिन, भीड़ में से कुछ फरीसियों ने
उससे कहा: "गुरु, अपने चेलों को डाँट।"
40 मगर जवाब में उसने कहा: "मैं तुमसे
कहता हूँ, अगर ये खामोश रहे तो पत्थर
बोल उठेंगे।"

41 जब वह शहर के करीब पहुँचा,
तो उसने शहर को देखा और उसकी वजह
से रोने लगा, **42** और कहने लगा:
"काश आज के दिन तू ने, हाँ तू ने, उन
बातों को समझा होता जिनका नाता शांति
से है—लेकिन अब ये तेरी आँखों से
छिपा दी गयी हैं। **43** क्योंकि तुझ पर
वे दिन आएँगे जब तेरे दुश्मन तेरे चारों
तरफ नुकीले लट्ठों से घेराबंदी कर तुझे
घेर लेंगे और हर तरफ से तुझे दबाएँगे।
44 वे तुझे और तेरे बच्चों को जो तुझमें
रहते हैं ज़मीन पर दे मारेंगे और तुझ में
एक पत्थर पर दूसरा पत्थर न छोड़ेंगे,
क्योंकि तू ने उस वक्त को न समझा जब
तुझे जाँचा जा रहा था।"

45 यीशु मंदिर के अंदर गया और
वहाँ जो बिक्री कर रहे थे उन्हें बाहर
खदेड़ते हुए कहने लगा: **46** "यह
लिखा है, 'मेरा घर, प्रार्थना का घर कह-
लाएगा,' मगर तुम लोगों ने इसे लुटेरों
का अड्डा बना दिया है।"

47 वह हर दिन मंदिर में सिखाता
रहा। मगर प्रधान याजक और शास्त्री
और जनता के खास-खास लोग उसका
खात्मा करने की कोशिश में लगे हुए थे।
48 मगर उन्हें ऐसा करने का सही मौका
नहीं मिल पा रहा था, क्योंकि सारे लोग
उसकी सुनने के लिए हमेशा उसे घेरे
रहते थे।

20 उन दिनों के दौरान, एक दिन
जब वह लोगों को मंदिर में
सिखा रहा था और खुशखबरी का ऐलान
कर रहा था, तो प्रधान याजक और
शास्त्री, बुज़ुर्गों के साथ उसके पास आए,
2 और सबके सामने उससे यह पूछने

लगे: “हमें बता कि तू ये सब किस
अधिकार से करता है, या कौन है वह
जिसने तुझे यह अधिकार दिया है।”
3 जवाब में उसने कहा: “मैं भी तुमसे
एक सवाल पूछता हूँ, और तुम मुझे
जवाब दो: **4** यूहन्ना का बपतिस्मा
स्वर्ग की तरफ से था या इंसानों की तरफ
से?” **5** तब वे आपस में मशविरा
करते हुए कहने लगे: “अगर हम कहें,
‘स्वर्ग की तरफ से,’ तो वह कहेगा,
‘तो फिर क्यों तुमने उसका यकीन नहीं
किया?’ **6** लेकिन अगर हम कहें,
‘इंसानों की तरफ से,’ तो सब लोग हम
पर पत्थरवाह करेंगे, इसलिए कि उन्हें
यकीन है कि यूहन्ना एक भविष्यवक्ता
था।” **7** इसलिए उन्होंने जवाब दिया
कि हम नहीं जानते कि किसकी तरफ से
था। **8** तब यीशु ने उनसे कहा: “न ही
मैं तुम्हें यह बतानेवाला हूँ कि मैं किस
अधिकार से यह सब करता हूँ।”

9 फिर वह लोगों को यह मिसाल
बताने लगा: “एक आदमी ने अंगूरों का
एक बाग लगाया और बागबानों को ठेके
पर देकर काफी समय के लिए पर-
देस चला गया। **10** मगर अंगूरों की
कटाई का मौसम आने पर उसने एक दास
को बागबानों के पास भेजा, ताकि वे
अंगूरों की फसल में से उसका हिस्सा दें।
मगर बागबानों ने उस दास को पीटने
के बाद उसे खाली हाथ भेज दिया।
11 फिर उसने एक और दास को
उनके पास भेजा। उन्होंने इसे भी पीटा
और बेइज़्ज़त किया और खाली हाथ
भेज दिया। **12** फिर भी उसने तीसरे
को भेजा। उन्होंने इसे भी घायल कर
बाहर फेंक दिया। **13** इस पर बाग
के मालिक ने कहा, ‘मैं क्या करूँ? मैं
अपने प्यारे बेटे को भेजूँगा। वे ज़रूर
इसकी इज़्ज़त करेंगे।’ **14** जब बाग-
बानों की नज़र उसके बेटे पर पड़ी,
तो वे आपस में कहने लगे, ‘यह तो
वारिस है। आओ हम इसे मार डालें,
तब यह विरासत हमारी हो जाएगी।’
15 इस पर वे उसे खदेड़कर बाग के
बाहर ले गए और मार डाला। अब बाग
का मालिक उनके साथ क्या करेगा?
16 वह आकर उन बागबानों का खात्मा
करेगा और अंगूरों का बाग दूसरों को
ठेके पर दे देगा।”

यह सुनने पर उन्होंने कहा: “ऐसा
कभी न हो!” **17** मगर उसने उन्हें
देखा और कहा: “तो फिर, यह जो बात
लिखी है, इसका क्या मतलब है, ‘जिस
पत्थर को राजमिस्त्रियों ने ठुकराया, वही
कोने का मुख्य पत्थर बन गया है’?
18 हर कोई जो उस पत्थर पर गिरेगा
वह टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा। और जिस
किसी पर यह पत्थर गिरेगा, उसे यह
पीसकर चकनाचूर कर देगा।”

19 तब शास्त्रियों और प्रधान
याजकों ने चाहा कि उसे किसी तरह
उसी घड़ी पकड़ लें, क्योंकि वे समझ
गए थे कि उसने यह मिसाल उन्हीं
को मन में रखकर दी है। मगर वे
लोगों से डरते थे। **20** वे उस पर
कड़ी नज़र रखे हुए थे। तब उन्होंने

किराए के जासूस भेजे कि वे उसके सामने
नेक होने का ढोंग करें, ताकि उसी की
बातों में उसे पकड़ सकें और उसे सर-
कार के और राज्यपाल के अधिकार के
हवाले कर सकें। **21** उन्होंने यह कह-
कर उससे सवाल किया: “गुरु, हम जानते
हैं कि तू सही-सही बोलता और सिखाता
है और बिलकुल भेदभाव नहीं करता,
बल्कि तू सच्चाई के मुताबिक परमेश्वर
का मार्ग सिखाता है: **22** हमें बता
कि हमारे लिए सम्राट* को कर देना
सही है या नहीं?” **23** मगर उसने
उनकी चालाकी भाँप ली और उनसे कहा:
24 “मुझे एक दीनार दिखाओ। इस
पर किसकी सूरत और किसके नाम की
छाप है?” उन्होंने कहा: “सम्राट की।”
25 उसने उनसे कहा: “तो फिर, जो
सम्राट का है, वह सम्राट को चुकाओ,
मगर जो परमेश्वर का है वह परमेश्वर
को।” **26** वे इस बात में लोगों के
सामने उसे पकड़ न सके, मगर उसके
जवाब से हैरान रह गए और एक शब्द
भी न कहा।

27 मगर कुछ सदूकी, जो कहते हैं
कि मरे हुओं के फिर से जी उठने* की
शिक्षा सच नहीं है, उसके पास आए और
यह कहते हुए उससे सवाल करने लगे:
28 “गुरु, मूसा ने हमारे लिए लिखा
है, ‘अगर कोई आदमी बेऔलाद मर
जाए, तो उसके भाई को चाहिए कि वह
अपने मरे हुए भाई की पत्नी से शादी
कर ले और अपने भाई के लिए उससे
औलाद पैदा करे।’ **29** ऐसा हुआ कि
सात भाई थे। पहले ने शादी की मगर
वह बेऔलाद मर गया। **30** तब दूसरे
ने अपने भाई की पत्नी से शादी कर
ली मगर वह भी बेऔलाद मर गया
31 फिर तीसरे ने उससे शादी की और
वह भी बेऔलाद मर गया। इसी तरह
उन सातों भाइयों के साथ हुआ: एक-एक
कर उन्होंने उस स्त्री से शादी की लेकिन
बेऔलाद मर गए। **32** आखिर में,
वह स्त्री भी मर गयी। **33** तो मरे
हुओं के जी उठने के वक्त, वह इन सात
भाइयों में से किसकी पत्नी होगी? क्योंकि
सातों उसे अपनी पत्नी बना चुके थे।”

34 यीशु ने उनसे कहा: “इस
ज़माने* में लोग शादी करते हैं
और अपनी बेटियों की शादी करवाते
हैं, **35** मगर जो उस ज़माने में जीवन
पाने और मरे हुओं में से जी उठने
के लायक समझे जाएँगे, वे शादी नहीं
करेंगे और पति या पत्नी नहीं बनेंगे।
36 दरअसल वे फिर कभी नहीं मर
सकते, क्योंकि वे स्वर्गदूतों की तरह
होंगे और मरे हुओं में से जी उठने की
वजह से परमेश्वर के बेटे-बेटियाँ ठहरेंगे।
37 मगर यह बात कि मरे हुओं को
ज़िंदा किया जाता है, मूसा ने भी झाड़ी
के किस्से में ज़ाहिर की है, जहाँ वह
यहोवा को ‘अब्राहम का परमेश्वर, इस-
हाक का परमेश्वर और याकूब का पर-
मेश्वर’ कहता है। **38** वह मरे हुओं

लूका 20:22* यूनानी में *“कैसर।”* **27*** या, “पुन-
रुत्थान।”

लूका 20:34* या, “दुनिया की व्यवस्था।”

का नहीं, बल्कि जीवितों का परमेश्‍वर है, इसलिए कि वे सभी उसकी नज़र में ज़िंदा हैं।" **39** यह सुनकर शास्त्रियों में से कुछ ने कहा: "गुरु, तू ने बढ़िया तरीके से बात की।" **40** इसके बाद उनमें और हिम्मत न रही कि उससे एक भी सवाल कर सकें।

41 फिर उसने उनसे कहा: "वे यह कैसे कहते हैं कि मसीह, दाविद का वंशज है? **42** क्योंकि दाविद खुद भजनों की किताब में कहता है, 'यहोवा ने मेरे प्रभु से कहा: "मेरी दायीं तरफ बैठ, **43** जब तक कि मैं तेरे दुश्‍मनों को तेरे पाँवों के नीचे न कर दूँ।"'* **44** इसलिए, जब दाविद उसे 'प्रभु' कहकर पुकारता है, तो वह उसका वंशज कैसे हुआ?"

45 इसके बाद, जिस दौरान सब लोग उसकी सुन रहे थे, तब यीशु ने चेलों से कहा: **46** "शास्त्रियों से खबरदार रहो, जिन्हें लंबे-लंबे चोगे पहनकर घूमना और बाज़ारों के चौक में लोगों से नमस्कार सुनना पसंद है और सभा-घरों में सबसे आगे की जगहों पर बैठना और शाम की दावतों में सबसे खास जगह लेना उन्हें अच्छा लगता है, **47** लेकिन वे विधवाओं के घर हड़प जाते हैं और दिखावे के लिए लंबी-लंबी प्रार्थनाएँ करते हैं। ये बहुत भारी दंड पाएँगे।"

21 फिर उसने नज़र उठायी और देखा कि अमीर लोग दान-पात्रों में अपना-अपना दान डाल रहे हैं। **2** तब उसने एक ज़रूरतमंद विधवा को दो पैसे* डालते देखा। **3** यह देखकर उसने कहा: "मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ, इस विधवा ने गरीब होते हुए भी, उन सबसे ज़्यादा डाला है। **4** इसलिए कि उन सभी ने अपनी बहुतायत में से दान डाला, मगर इस स्त्री ने अपनी तंगी में से, जो कुछ उसके जीने का सहारा था वह सबकुछ डाल दिया।"

5 बाद में, जब उनमें से कुछ मंदिर के बारे में बात कर रहे थे कि वह कैसे शानदार पत्थरों और समर्पित की हुई चीज़ों से सजाया गया है, **6** तो उसने कहा: "तुम ये जो चीज़ें देख रहे हो, ऐसे दिन आएँगे जब यहाँ एक पत्थर के ऊपर दूसरा पत्थर बाकी न बचेगा जो ढाया न जाए।" **7** तब चेलों ने उससे पूछा: "गुरु, ये सब बातें असल में कब होंगी और उस वक्‍त की क्या निशानी होगी जब इनका होना तय है?" **8** उसने कहा: "खबरदार रहो कि तुम गुमराह न किए जाओ। इसलिए कि बहुत-से मेरे नाम से आएँगे और कहेंगे, 'मैं वही हूँ,' और 'तय किया हुआ वक्‍त पास आ गया है।' उनके पीछे मत जाना। **9** इसके अलावा, जब तुम युद्धों और हंगामों की खबरें सुनो, तो दहशत न खाना। इसलिए कि पहले इन सबका होना ज़रूरी है, मगर अंत फौरन नहीं आएगा।"

10 इसके बाद, यीशु आगे उनसे

लूका 20:43* शाब्दिक, "चौकी न बना दूँ।"

लूका 21:2* शाब्दिक, "दो *लेप्टा।"* एक *लेप्टा* यहूदियों का सबसे छोटा सिक्का था, जो पीतल या ताँबे का हुआ करता था। दो *लेप्टा* एक दिन की मज़दूरी का 1/64वाँ हिस्सा था।

कहने लगा: “एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र पर
और एक राज्य दूसरे राज्य पर हमला
करेगा। **11** बड़े-बड़े भूकंप होंगे और
एक-के-बाद-एक कई जगहों पर महा-
मारियाँ फैलेंगी और अकाल पड़ेंगे।
लोगों को खौफनाक नज़ारे दिखायी देंगे
और आकाश से बड़ी-बड़ी निशानियाँ
दिखायी देंगी।

12 मगर इन सब बातों के होने से
पहले लोग तुम्हें पकड़वाएँगे और तुम पर
ज़ुल्म ढाएँगे और तुम्हें सभा-घरों और
जेलखानों के हवाले कर देंगे और मेरे नाम
की खातिर तुम्हें राजाओं और राज्यपालों
के सामने पेश किया जाएगा। **13** यह
तुम्हारे लिए गवाही देने का मौका होगा।
14 इसलिए अपने दिलों में यह बात
बिठा लो कि तुम पहले से यह तैयारी न
करोगे कि अपनी सफाई में क्या-क्या
कहना है। **15** इसलिए कि मैं तुम्हें
ऐसे शब्द* और ऐसी बुद्धि दूँगा, जिसका
तुम्हारे सारे विरोधी एक-साथ मिलकर भी
मुकाबला नहीं कर पाएँगे, न ही उसकी
काट कर पाएँगे। **16** इतना ही नहीं,
तुम्हारे माता-पिता और भाई और रिश्ते-
दार और दोस्त तक तुम्हारे साथ विश्वास-
घात कर तुम्हें पकड़वाएँगे और तुममें
से कुछ को मरवा डालेंगे। **17** मेरे
नाम की वजह से तुम सब लोगों की
नफरत के शिकार बनोगे। **18** लेकिन
फिर भी तुम्हारे सिर का एक बाल तक
बाँका न होगा। **19** तुम धीरज धरने
की वजह से अपनी जान बचा पाओगे।

20 जब तुम यरूशलेम को डेरा डाली
हुई फौजों से घिरा हुआ देखो, तब जान
लेना कि उसके उजड़ने का समय पास आ
गया है। **21** इसके बाद जो यहूदिया
में हों, वे पहाड़ों की तरफ भागना शुरू
कर दें और जो यरूशलेम शहर के अंदर
हों, वे बाहर निकल जाएँ और जो देहातों
में हों वे इस शहर के अंदर न जाएँ।
22 क्योंकि ये दिन बदला चुकाने के दिन
होंगे, ताकि जितनी बातें लिखी हैं वे सब
पूरी हों। **23** उन दिनों, जो गर्भवती
होंगी और जो बच्चे को दूध पिलाती होंगी,
उनके लिए ये दिन क्या ही भयानक होंगे!
इसलिए कि देश में घोर तंगहाली होगी
और लोगों पर बड़ा क्रोध भड़केगा।
24 और वे तलवार से मौत के घाट
उतारे जाएँगे और उन्हें बंदी बनाकर सारे
राष्ट्रों में ले जाया जाएगा। और जब तक
इन राष्ट्रों के लिए तय किया हुआ वक्त
पूरा न हो जाए, तब तक यरूशलेम इन
राष्ट्रों के पैरों तले रौंदा जाएगा।

25 साथ ही, सूरज, चाँद और तारों
में निशानियाँ दिखायी देंगी और धरती पर
राष्ट्र बड़ी मुसीबत में होंगे, क्योंकि समुद्र
के गरजने और उसकी बड़ी हलचल की
वजह से उन्हें बचने का कोई रास्ता नहीं
सूझेगा। **26** साथ ही, धरती पर और
क्या-क्या होनेवाला है इस फिक्र और
डर के मारे लोगों के जी में जी न
रहेगा, इसलिए कि आकाश की शक्तियाँ
हिलायी जाएँगी। **27** और इसके बाद
वे इंसान के बेटे को एक बादल में शक्ति
और बड़ी महिमा के साथ आता देखेंगे।
28 लेकिन जब ये बातें होने लगें, तो

लूका 21:15* शाब्दिक, “मुँह।”

तुम सिर उठाकर सीधे खड़े हो जाना,
क्योंकि तुम्हारे छुटकारे का वक्त पास आ
रहा होगा।"

29 यीशु ने उन्हें एक मिसाल दी:
"अंजीर के पेड़ और दूसरे सभी पेड़ों पर
गौर करो: **30** जब उनमें नयी पत्तियाँ
निकल आती हैं, तो यह देखकर तुम जान
जाते हो कि गर्मियों का मौसम पास है।
31 इसी तरह, जब तुम ये बातें होती
देखो, तो जान लो कि परमेश्वर का राज
पास है। **32** मैं तुमसे सच कहता हूँ
कि जब तक ये सारी बातें पूरी न हो लें,
तब तक यह पीढ़ी हरगिज़ न मिटेगी।
33 आकाश और पृथ्वी मिट जाएँगे,
मगर मेरे शब्द किसी भी हाल में न
मिटेंगे।

34 मगर खुद पर ध्यान दो कि हद-
से-ज़्यादा खाने और पीने से और ज़िंदगी
की चिंताओं के भारी बोझ से कहीं तुम्हारे
दिल दब न जाएँ और वह दिन तुम पर
पलक झपकते ही अचानक **35** फंदे
की तरह न आ पड़े। इसलिए कि वह
दिन धरती पर रहनेवाले सभी लोगों पर
आ पड़ेगा। **36** इसलिए, आँखों में
नींद न आने दो, और हर घड़ी प्रार्थना
और मिन्नत करते रहो ताकि जिन बातों
का होना तय है, उन सबसे बचने और
इंसान के बेटे के सामने खड़े रहने में तुम
कामयाब हो सको।"

37 इस तरह, यीशु दिन के वक्त
मंदिर में सिखाया करता था, मगर रात
के वक्त शहर से बाहर चला जाता और
जैतून नाम पहाड़ पर ठहरा करता था।
38 सब लोग मंदिर में उसकी सुनने के
लिए सुबह जल्दी उसके पास आ जाते थे।

22 बिन-खमीर की रोटियों का
त्योहार, जो फसह कहलाता है,
नज़दीक आ रहा था। **2** और प्रधान
याजक और शास्त्री यीशु को अपने रास्ते
से हटाना चाहते थे मगर उन्हें लोगों का
डर था, इसलिए वे कोई बढ़िया तर-
कीब ढूँढ़ रहे थे। **3** मगर शैतान,
यहूदा में समा गया, जो इस्करियोती कह-
लाता था और जिसकी गिनती उन बारहों
में होती थी। **4** वह निकलकर प्रधान
याजकों और मंदिर के सरदारों से यह
बात करने गया कि यीशु को धोखे से
उनके हवाले करने की बढ़िया तरकीब
क्या होगी। **5** इस पर, वे बड़े खुश
हुए और उसे चाँदी के सिक्के देने के लिए
राज़ी हो गए। **6** यहूदा मान गया और
तब से उसे पकड़वाने के लिए किसी ऐसे
बढ़िया मौके की ताक में रहने लगा जब
उसके आस-पास भीड़ न हो।

7 अब बिन-खमीर की रोटियों के
त्योहार का दिन आया, जब फसह का पशु
बलि किया जाना ज़रूरी था। **8** यीशु
ने पतरस और यूहन्ना को यह कहकर
भेजा: "जाओ और हमारे लिए फसह
के खाने की तैयारी करो।" **9** उन्होंने
पूछा: "तू कहाँ चाहता है कि हम इसकी
तैयारी करें?" **10** उसने कहा: "देखो!
जब तुम शहर में जाओगे तो तुम्हें एक
आदमी पानी का घड़ा उठाए हुए मिलेगा।
उसके पीछे-पीछे उस घर में जाना जिसमें
वह दाखिल होगा। **11** तुम उस घर

के मालिक से कहना, ‘गुरु तुझसे पूछता
है: “मेहमानों का वह कमरा कहाँ है,
जहाँ मैं अपने चेलों के साथ फसह का
खाना खाऊँ?”’ **12** फिर वह तुम्हें
एक बड़ा और सजा हुआ ऊपर का कमरा
दिखाएगा। वहाँ इसकी तैयारी करना।”
13 इसलिए वे निकल पड़े और जैसा
उसने बताया था ठीक वैसा ही पाया, और
उन्होंने फसह की तैयारी की।

14 कुछ वक्त के बाद जब वह घड़ी
आयी, तो वह खाने की मेज़ से टेक लगा-
कर बैठा और उसके प्रेषित भी उसके साथ
खाने बैठे। **15** यीशु ने उनसे कहा:
“मेरी बड़ी तमन्ना थी कि मैं दुःख झेलने
से पहले तुम्हारे साथ फसह का यह भोज
खाऊँ। **16** क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ
कि जब तक कि यह परमेश्वर के राज
में पूरा न हो, तब तक मैं इसे फिर न
खाऊँगा।” **17** फिर एक प्याला लेकर
उसने प्रार्थना में धन्यवाद दिया और कहा:
“इसे लो और तुम एक-एक कर इसमें
से पीओ। **18** इसलिए कि मैं तुमसे
कहता हूँ कि मैं यह दाख-मदिरा* तब
तक फिर न पीऊँगा जब तक परमेश्वर
का राज नहीं आता।”

19 साथ ही, उसने एक रोटी ली
और प्रार्थना में धन्यवाद दिया और उसे
तोड़कर उन्हें यह कहते हुए दी: “यह मेरे
शरीर का प्रतीक है, जो तुम्हारी खातिर
दिया जाना है। मेरी याद में ऐसा ही किया
करना।” **20** जब वे शाम का खाना
खा चुके, तो उसने इसी तरह प्याला भी
लिया और कहा: “यह प्याला उस नए
करार का प्रतीक है जो मेरे लहू के आधार
पर बाँधा गया है, जो तुम्हारी खातिर
बहाया जाना है।

21 मगर देखो! मेरे पकड़वानेवाले
का हाथ मेरे साथ मेज़ पर है।
22 क्योंकि इंसान का बेटा तो जा ही
रहा है, ठीक जैसे उसके लिए ठहराया
गया है। लेकिन धिक्कार है उस आदमी
पर जिसके हाथों वह पकड़वाया जाएगा!”
23 इसलिए वे आपस में चर्चा करने लगे
कि आखिर उनमें से वह कौन है जो ऐसा
करनेवाला है।

24 मगर साथ ही उनके बीच इस
बात पर गरमा-गरम बहस छिड़ गयी कि
उनमें सबसे बड़ा किसे समझा जाए।
25 मगर उसने उनसे कहा: “दुनिया के
राजा लोगों पर हुक्म चलाते हैं, और जो
अधिकार रखते हैं, वे दाता कहलाते हैं।
26 मगर तुम्हें ऐसा नहीं होना है। इसके
बजाय, जो तुम्हारे बीच सबसे बड़ा है वह
सबसे छोटा बने, और जो प्रधान जैसा है,
वह सेवक जैसा बने। **27** इसलिए कि
कौन ज़्यादा बड़ा है, जो खाने के लिए
मेज़ से टेक लगाए हुए है या जो सेवा
कर रहा है? क्या वही नहीं जो मेज़ से
टेक लगाए हुए है? मगर मैं तुम्हारे बीच
सेवक जैसा हूँ।

28 मगर तुम वे हो जो मेरी परी-
क्षाओं के दौरान लगातार मेरे साथ रहे।
29 ठीक जैसे मेरे पिता ने मेरे साथ एक

लूका 22:18* शाब्दिक, “अंगूर की बेल की उपज से बनी यह चीज़।”

राज के लिए करार किया है, वैसे ही मैं
भी तुम्हारे साथ एक राज के लिए करार
करता हूँ, **30** कि तुम मेरे राज में मेरी
मेज़ पर खाओ-पीओ, और राजगद्दियों
पर बैठकर इसराएल के बारह गोत्रों का
न्याय करो।

31 शमौन, शमौन, देख! शैतान ने
तुम लोगों को गेहूँ की तरह फटकने और
छानने की माँग की है। **32** मगर मैंने
तेरे लिए मिन्नत की है कि तू अपना
विश्वास खो न दे। जब तू पश्चाताप कर
लौट आए, तो अपने भाइयों को मज़-
बूत करना।" **33** तब पतरस ने उससे
कहा: "प्रभु, मैं तो तेरे साथ जेल
जाने और मरने के लिए भी तैयार हूँ।"
34 मगर उसने कहा: "पतरस, मैं तुझसे
कहता हूँ, आज जब तक तू मुझे जानने
से तीन बार इनकार न करेगा, मुर्गा बाँग
न देगा।"

35 उसने चेलों से यह भी कहा: "जब
मैंने तुम्हें बटुए और खाने की पोटली और
जूतियों के बगैर भेजा था, तो क्या तुम्हें
किसी चीज़ की कमी हुई थी?" उन्होंने
कहा: "नहीं!" **36** फिर उसने उनसे
कहा: "मगर अब जिसके पास बटुआ है
वह उसे ले ले और खाने की पोटली भी
ले। जिसके पास कोई तलवार न हो वह
अपना बागा बेचकर एक खरीद ले।
37 इसलिए कि मैं तुमसे कहता हूँ कि
यह जो बात लिखी है, ज़रूरी है कि यह
मुझमें पूरी हो, 'और उसकी गिनती दुरा-
चारियों में हुई।' इसलिए कि मेरे बारे में
जो लिखा है, वह पूरा हो रहा है।"
38 तब उन्होंने कहा: "प्रभु, देख! यहाँ
दो तलवारें हैं।" उसने उनसे कहा: "ये
काफी हैं।"

39 फिर वह बाहर निकलकर अपने
दस्तूर के मुताबिक जैतून पहाड़ पर
गया। उसके चेले भी उसके पीछे-पीछे
गए। **40** उस जगह पहुँचकर उसने
उनसे कहा: "प्रार्थना में लगे रहो ताकि
तुम परीक्षा में न पड़ो।" **41** वह उनसे
कुछ दूर* आगे गया और घुटने टेक-
कर प्रार्थना करने **42** और यह कहने
लगा: "हे पिता, अगर तेरी मरज़ी हो, तो
यह प्याला* मेरे सामने से हटा दे। मगर
जो मेरी मरज़ी है, वह नहीं बल्कि वही
हो जो तेरी मरज़ी है।" **43** तब स्वर्ग
से एक दूत उसके सामने प्रकट हुआ और
उसकी हिम्मत बँधायी। **44** मगर वह
असहनीय वेदना से गुज़रते हुए और भी
गिड़गिड़ाकर प्रार्थना करता रहा। उसका
पसीना खून की बूँदें बनकर ज़मीन पर
गिर रहा था। **45** वह प्रार्थना कर
उठा और अपने चेलों के पास गया और
देखा कि वे सो रहे थे, क्योंकि वे बेहद
दुःख की वजह से पस्त हो चुके थे।
46 उसने उनसे कहा: "तुम सो क्यों रहे
हो? उठो और प्रार्थना में लगे रहो, ताकि
तुम परीक्षा में न पड़ो।"

47 जब वह बोल ही रहा था, तो
देखो! एक भीड़ वहाँ आयी और उसके
आगे-आगे यहूदा नाम का आदमी चल

लूका 22:41* या, "पत्थर को जितनी दूर फेंका जा सकता है, करीब उतनी दूर।" **42*** मत्ती 26:39 फुटनोट देखें।

रहा था, जो उन बारहों में से एक था।
वह यीशु को चूमने के लिए उसके पास
आया। **48** मगर यीशु ने उससे कहा:
"यहूदा, क्या तू इंसान के बेटे को चूम-
कर धोखे से पकड़वाता है?" **49** जो
उसके साथ थे, जब उन्होंने देखा कि क्या
होनेवाला है, तो उन्होंने कहा: "प्रभु,
क्या हम तलवार चलाएँ?" **50** यहाँ
तक कि उनमें से एक ने महायाजक के
दास पर तलवार चलाकर उसका दायाँ
कान उड़ा दिया। **51** मगर जवाब में
यीशु ने कहा: "बहुत हो चुका।" और
यीशु ने उस दास का कान छूकर उसे
ठीक किया। **52** तब यीशु ने प्रधान
याजकों और मंदिर के सरदारों और
बुज़ुर्गों से जो उसे पकड़ने के लिए वहाँ
आए थे, कहा: "क्या तुम मुझे तल-
वारें और सोंटे लेकर पकड़ने आए हो,
मानो मैं कोई लुटेरा हूँ? **53** जब मैं
हर दिन तुम्हारे बीच मंदिर में था, तब
तुमने मुझ पर हाथ न डाले। मगर यह
वक्त तुम्हारा है और अंधकार का अधि-
कार है।"

54 तब वे उसे गिरफ्तार कर ले गए
और महायाजक के घर में ले आए। मगर
पतरस कुछ दूरी पर रहते हुए उनका
पीछा करता रहा। **55** जब वे आँगन
के बीच आग जलाकर एक-साथ बैठ गए,
तो पतरस भी उनके बीच बैठा हुआ था।
56 मगर एक नौकरानी ने उसे आग के
सामने बैठा देखा और उस पर ऊपर-नीचे
निगाह डाली और कहा: "यह आदमी
भी उसके साथ था।" **57** मगर उसने
यह कहते हुए इनकार कर दिया: "मैं
उसे नहीं जानता।" **58** थोड़ी ही देर
बाद किसी और ने उसे देखकर कहा:
"तू भी उनमें से एक है।" मगर पत-
रस ने कहा: "नहीं भई, मैं नहीं हूँ।"
59 फिर करीब एक घंटा गुज़रने के
बाद, एक और आदमी ज़ोर देकर यह
कहने लगा: "बेशक, यह आदमी भी
उसके साथ था। क्योंकि यकीनन, यह
एक गलीली है!" **60** मगर पतरस ने
कहा: "मैं नहीं जानता कि तू क्या कह
रहा है।" वह बोल ही रहा था कि उसी
घड़ी एक मुर्गे ने बाँग दी। **61** और
प्रभु ने मुड़कर पतरस को देखा और पत-
रस को प्रभु की कही यह बात याद आयी:
"आज मुर्गे के बाँग देने से पहले, तू तीन
बार मुझे जानने से इनकार करेगा।"
62 और वह बाहर जाकर फूट-फूटकर
रोने लगा।

63 जिन आदमियों ने यीशु को
हिरासत में ले लिया था, वे उसका मज़ाक
उड़ाने और उसे मारने लगे। **64** वे
उसका मुँह ढककर उससे पूछते थे:
"भविष्यवाणी कर। तुझे किसने मारा?"
65 वे उसकी निंदा करते हुए उसके
खिलाफ बहुत-सी बातें कहते रहे।

66 जब दिन निकल आया तो लोगों
के बुज़ुर्गों की सभा इकट्ठी हुई, जिसमें
प्रधान याजक और शास्त्री भी थे, और वे
उसे अपनी महासभा* के भवन में ले गए
और उससे पूछा: **67** "अगर तू मसीह
है, तो हमें बता दे।" मगर उसने कहा:

लूका 22:66* मत्ती 26:59 फुटनोट देखें।

“अगर मैं तुम्हें बताऊँ तो भी तुम हरगिज़
यकीन न करोगे। **68** इतना ही नहीं,
अगर मैं तुमसे सवाल करूँ, तो तुम
मुझे हरगिज़ जवाब न दोगे। **69** मगर
अब से इंसान का बेटा परमेश्वर के
शक्तिशाली दाएँ हाथ की तरफ बैठा हुआ
होगा।” **70** इस पर उन सभी ने कहा:
“तो क्या तू परमेश्वर का बेटा है?” उसने
उनसे कहा: “तुम खुद कह रहे हो कि मैं
हूँ।” **71** उन्होंने कहा: “अब हमें और
गवाही की क्या ज़रूरत है? इसलिए कि
हमने खुद इसके मुँह से सुन लिया है।”

23 तब वे सब-के-सब उठे और
सारी भीड़ उसे पीलातुस के पास
ले चली। **2** वहाँ पहुँचकर वे उस पर
ये इलज़ाम लगाने लगे: “यह आदमी
हमारी जाति को बगावत के लिए भड़-
काता है, सम्राट* को कर देने से मना
करता है और कहता है कि मैं खुद मसीह
राजा हूँ।” **3** तब पीलातुस ने उससे
पूछा: “क्या तू यहूदियों का राजा है?”
जवाब में यीशु ने उससे कहा: “तू खुद
यह कह रहा है।” **4** तब पीलातुस ने
प्रधान याजकों और सारी भीड़ से कहा:
“मैं इस आदमी को दोषी नहीं पाता।”
5 मगर वे और भी ज़ोर देकर कहने
लगे: “यह सारे यहूदिया में, यहाँ तक कि
गलील से लेकर इस जगह तक लोगों को
सिखा-सिखाकर भड़काता है।” **6** यह
सुनकर पीलातुस ने पूछा कि क्या यह
आदमी गलीली है, **7** और यह पता
कर लेने के बाद कि वह उस इलाके से
है जो हेरोदेस* के अधिकार में है, उसने
उसे हेरोदेस के पास भेज दिया। हेरोदेस
इन दिनों यरूशलेम में मौजूद था।

8 जब हेरोदेस ने यीशु को देखा तो
बेहद खुश हुआ, इसलिए कि वह एक
अरसे से उसे देखना चाहता था। हेरोदेस
ने उसके बारे में सुन रखा था और
उम्मीद कर रहा था कि यीशु उसके
सामने कोई चमत्कार दिखाए। **9** इस-
लिए हेरोदेस उससे बहुत देर तक कई
सवाल करता रहा, मगर यीशु ने कोई
जवाब न दिया। **10** लेकिन, प्रधान
याजक और शास्त्री बड़े तैश में बार-बार
खड़े हो-होकर उस पर इलज़ाम लगाते
रहे। **11** तब हेरोदेस ने अपने सैनिकों
के साथ मिलकर उसकी बेइज़्ज़ती की और
उसे एक शानदार कपड़ा पहनाकर उसका
मज़ाक उड़ाया और उसे वापस पीलातुस
के पास भेज दिया। **12** उसी दिन
हेरोदेस और पीलातुस के बीच दोस्ती
हो गयी, जबकि इससे पहले तक उनमें
आपस में दुश्मनी थी।

13 तब पीलातुस ने प्रधान याजकों,
अधिकारियों और लोगों को इकट्ठा
किया **14** और उनसे कहा: “तुम
इस आदमी को मेरे पास यह कह-
कर लाए कि यह लोगों को बगावत
के लिए भड़काता है और देखो! मैंने
तुम्हारे सामने इसकी जाँच-पड़ताल की है,
मगर मुझे उन इलज़ामों का कोई आधार
नहीं मिला जो तुमने इस आदमी के
खिलाफ लगाए हैं। **15** यहाँ तक कि

लूका 23:2* यूनानी में *“कैसर।”*

लूका 23:7* लूका 3:1 फुटनोट देखें।

हेरोदेस को भी कोई वजह न मिली, इस-
लिए उसने इसे वापस हमारे पास भेज
दिया है। इसने ऐसा कोई काम नहीं
किया है जिसके लिए यह मौत की सज़ा
के लायक ठहरे। **16** इसलिए मैं इसे
पिटवाकर छोड़ देता हूँ।” **17*** ——
18 मगर उनके साथ सारी भीड़ चिल्ला
उठी और कहने लगीः “इसका काम
तमाम कर और हमारे लिए बरअब्बा को
रिहा कर दे!” **19** (बरअब्बा को शहर
में बगावत और कत्ल की किसी वार-
दात के लिए जेल में डाला गया था।)
20 एक बार फिर पीलातुस ने उनसे बात
की, क्योंकि वह यीशु को रिहा करना
चाहता था। **21** तब वे चीख-चीखकर
यह कहने लगेः “इसे सूली पर चढ़ा दे!
सूली पर चढ़ा दे!” **22** उसने तीसरी
बार उनसे कहाः “क्यों, इस आदमी ने
ऐसा क्या बुरा किया है? मैंने इसमें ऐसा
कुछ नहीं पाया जिसके लिए इसे मौत की
सज़ा दी जाए। इसलिए मैं इसे पिटवाकर
छोड़ देता हूँ।” **23** इस पर वे उतावले
होकर ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगे और
उसे सूली पर चढ़ाने की माँग करने लगे।
उनका चिल्लाना इस कदर ज़ोर पकड़-
ता गया **24** कि पीलातुस ने हार-
कर उनकी मान ली और यह फैसला
सुनाया कि उनकी माँग पूरी की जाएः
25 उसने उस आदमी को तो रिहा कर
दिया, जिसे बगावत और कत्ल के लिए
जेल में डाला गया था और जिसकी वे
माँग कर रहे थे, जबकि यीशु को उनकी
मरज़ी के मुताबिक मार डालने के लिए
सौंप दिया।

26 जब वे उसे ले जा रहे थे, तो
उन्होंने शमौन नाम के एक आदमी को
पकड़ा जो कुरेने का रहनेवाला था और
देहात से आ रहा था। उन्होंने यातना की
सूली* उस पर रख दी कि उसे उठाकर
यीशु के पीछे-पीछे चले। **27** उसके
पीछे लोगों की बड़ी भीड़ चल रही थी
जिसमें स्त्रियाँ भी थीं, जो दुःख के मारे
छाती पीट-पीटकर उसके लिए विलाप कर
रही थीं। **28** यीशु ने पलटकर उन
स्त्रियों को देखा और कहाः “यरूशलेम की
बेटियो, मेरे लिए रोना बंद करो। इसके
बजाय, खुद अपने और अपने बच्चों
के लिए रोओ। **29** क्योंकि, देखो! वे
दिन आ रहे हैं जब लोग कहेंगे, ‘सुखी
हैं वे स्त्रियाँ जो बाँझ हैं और जिन्होंने
किसी बच्चे को जन्म नहीं दिया और
किसी को दूध नहीं पिलाया!’ **30** तब
वे पहाड़ों से कहने लगेंगे, ‘हम पर गिर
पड़ो!’ और पहाड़ियों से कहेंगे, ‘हमें ढक
लो!’ **31** क्योंकि जब उन्होंने हरे पेड़
के साथ ऐसा किया है, तो उस वक्त क्या
हाल होगा जब यह सूख जाएगा?”

32 उसके साथ दो और आदमियों
को, जो अपराधी थे, मार डालने के लिए
ले जाया जा रहा था। **33** जब वे
खोपड़ी कहलानेवाली जगह पर पहुँचे, तो
वहाँ उन्होंने उसे और उन दो अपरा-

लूका 23:17* यह आयत कुछ बाइबल अनुवादों में पायी जाती है, मगर इसे वेस्टकॉट और हॉर्ट के यूनानी पाठ में शामिल नहीं किया गया है, जो सबसे प्राचीन यूनानी हस्तलिपियों के मुताबिक है।

लूका 23:26* अतिरिक्त लेख 6 देखें।

धियों को सूली पर चढ़ा दिया। एक
उसकी दायीं तरफ था और दूसरा बायीं
तरफ। **34** [[मगर यीशु यह कह रहा
थाः "पिता, इन्हें माफ कर, इसलिए
कि ये नहीं जानते कि क्या कर रहे
हैं।"]][*] उन्होंने उसके कपड़ों का आपस
में बँटवारा करने के लिए चिट्ठियाँ डालीं।
35 और लोग वहाँ खड़े देख रहे थे।
मगर उनके धर्म-अधिकारी[*] यह कहते
हुए उसकी खिल्ली उड़ाते रहे: "इसने
दूसरों को तो बचाया। लेकिन अगर यह
परमेश्वर का भेजा हुआ मसीह और
उसका चुना हुआ है तो अब खुद को बचा
ले।" **36** यहाँ तक कि सैनिकों ने भी
उसका मज़ाक उड़ाया और उसके पास
आकर उसे खट्टी दाख-मदिरा देते हुए
37 कहाः "अगर तू यहूदियों का राजा
है, तो खुद को बचा ले।" **38** साथ
ही, ऊपर यह लिखकर लगा दिया गयाः
"यह यहूदियों का राजा है।"

39 यही नहीं, उसके साथ लटकाया
गया एक अपराधी उसे ताना मारने लगाः
"तू तो मसीह है न? तो फिर खुद को
बचा और हमें भी।" **40** जवाब में
दूसरे ने उसे डाँटकर कहाः "क्या तुझे पर-
मेश्वर का ज़रा भी डर नहीं, जबकि तू
भी वही सज़ा पा रहा है? **41** हम तो
न्याय के हिसाब से वाकई इस सज़ा के
लायक हैं, क्योंकि हमने जो काम किए हैं
उन्हीं का अंजाम भुगत रहे हैं। मगर इस
इंसान ने तो कोई बुरा काम नहीं किया
है।" **42** फिर वह कहने लगाः "यीशु,
जब तू अपने राज में आए, तो मुझे याद
करना।" **43** तब यीशु ने उससे कहाः
"मैं आज तुझसे सच कहता हूँ, तू मेरे
साथ फिरदौस[*] में होगा।"

44 यह दिन का करीब छठा घंटा[*]
था, फिर भी पूरी धरती पर अंधकार
छा गया और नौवें घंटे[#] तक छाया
रहा, **45** क्योंकि सूरज की रौशनी
नहीं रही। तब मंदिर का परदा बीच से
फटकर दो टुकड़े हो गया। **46** यीशु
ने ज़ोर से पुकारते हुए कहाः "पिता, मैं
अपनी जान[*] तेरे हवाले करता हूँ।"
जब वह यह कह चुका, तो उसने दम
तोड़ दिया। **47** जो कुछ हुआ उसे
देखकर सेना-अफसर यह कहते हुए पर-
मेश्वर की बड़ाई करने लगाः "वाकई यह
इंसान नेक था।" **48** वहाँ जमा हुई
भीड़ के लोगों ने जब यह सारा नज़ारा
देखा, तो वे छाती पीटते हुए लौटने लगे।
49 इतना ही नहीं, उसकी जान-पहचान-
वाले सभी, कुछ दूरी पर खड़े थे। साथ
ही, जो स्त्रियाँ गलील से उसके पीछे आयी
थीं, वे भी खड़ी होकर यह सब देख
रही थीं।

50 वहाँ यूसुफ नाम का एक आदमी

लूका 23:34* दोहरे ब्रैकेट दिखाते हैं कि इनके अंदर की आयतें कुछ प्राचीन हस्तलिपियों में नहीं पायी जातीं, मगर ये दूसरी हस्तलिपियों में पायी जाती हैं। **35*** शाब्दिक, "शासक।"

लूका 23:43* यानी, एक खूबसूरत बाग जैसी धरती, जहाँ कोई दुःख-तकलीफ न होगी। **44*** मत्ती 20:5 पहला फुटनोट देखें। **44#** मत्ती 20:5 दूसरा फुटनोट देखें। **46*** यूनानी *नफ्मा।* अति-रिक्त लेख 7 देखें।

था, जो धर्म-सभा* का सदस्य और एक
अच्छा और नेक इंसान था। **51** उसने
धर्म-अधिकारियों की साज़िश और काम
में उन्हें अपना समर्थन नहीं दिया था। वह
यहूदिया के लोगों के एक शहर अरि-
मतियाह का रहनेवाला था और परमेश्वर
के राज की राह देख रहा था। **52** इस
आदमी ने पीलातुस के पास जाकर यीशु
का शव माँगा। **53** उसने शव नीचे
उतारा और उसे बढ़िया मलमल में लपेट-
कर चट्टान में खोदी गयी कब्र में रखा,
जिसमें इससे पहले किसी का भी शव नहीं
रखा गया था। **54** यह तैयारी का
दिन* था और शाम के झुटपुटे के साथ
सब्त शुरू होनेवाला था। **55** मगर जो
स्त्रियाँ पीछे-पीछे गलील से आयी थीं,
वे भी साथ-साथ गयीं और कब्र को अच्छी
तरह देखा और यह भी कि उसका शव
कैसे रखा गया था। **56** तब वे लौट
गयीं कि मसाले और खुशबूदार तेल तैयार
करें। मगर हाँ, जैसी आज्ञा थी, उन्होंने
सब्त के दिन आराम किया।

24 लेकिन हफ्ते के पहले दिन, वे
स्त्रियाँ तैयार किए हुए खुशबू-
दार मसाले लेकर जल्दी सुबह कब्र पर
गयीं। **2** मगर उन्होंने पाया कि पत्थर
कब्र से दूर लुढ़का हुआ है, **3** और
अंदर जाने पर उन्होंने वहाँ प्रभु यीशु का
शव न पाया। **4** जब वे इस बात को
लेकर बड़ी उलझन में थीं, तभी अचानक
दो आदमी उनके पास आ खड़े हुए
जिनकी पोशाक बिजली की तरह चमक
रही थी। **5** वे स्त्रियाँ डर गयीं और
उन्होंने अपना मुँह न उठाया। तब उन
आदमियों ने उनसे कहा: “जो ज़िंदा है,
उसे तुम मरे हुओं के बीच क्यों ढूँढ़ रही
हो? **6** [[वह यहाँ नहीं है, बल्कि उसे
ज़िंदा किया गया है।]]* याद करो कि
जब वह गलील में ही था, तो उसने तुमसे
क्या कहा था। **7** उसने कहा था कि
ज़रूरी है कि इंसान का बेटा पापियों के
हाथों में सौंपा जाए और सूली पर चढ़ाया
जाए, मगर फिर तीसरे दिन जी उठे।”
8 तब उन्हें उसकी बातें याद आयीं,
9 और वे कब्र से लौट आयीं और इन
सारी बातों की खबर उन ग्यारहों को और
बाकी सभी को दी। **10** ये स्त्रियाँ थीं,
मरियम मगदलीनी, योअन्ना और याकूब
की माँ मरियम। इनके अलावा, उनके
साथ की बाकी स्त्रियाँ भी प्रेषितों को ये
बातें बता रही थीं। **11** मगर प्रेषितों
और दूसरे चेलों को ये बातें कोरी बक-
वास लगीं और उन्होंने इन स्त्रियों का
यकीन नहीं किया।

12 [[मगर पतरस उठा और कब्र की
तरफ दौड़ा गया और झुककर कब्र के
अंदर देखा कि वहाँ सिर्फ कफन की
पट्टियाँ पड़ी हैं। इसलिए जो कुछ हुआ
था, उस पर वह मन-ही-मन ताज्जुब
करता हुआ चला गया।]]

13 मगर देखो! उसी दिन दो चेले

लूका 23:50* या, “यहूदी महासभा।” **54*** मत्ती
27:62 फुटनोट देखें।

लूका 24:6* मत्ती 16:3 फुटनोट देखें।

इम्माऊस नाम के एक गाँव जा रहे थे,
जो यरूशलेम से करीब ग्यारह किलोमीटर
की दूरी पर है, **14** और जो-जो हुआ
था, उन सबके बारे में वे एक-दूसरे से
बात कर रहे थे।

15 जब वे आपस में चर्चा कर रहे थे,
तो खुद यीशु उनके पास पहुँचकर उनके
साथ-साथ चलने लगा। **16** मगर वे
उसे पहचान न पाए। **17** उसने उनसे
कहा: “ये क्या बातें हैं, जिनके बारे में
तुम चलते-चलते आपस में बहस कर
रहे हो?” तब वे रुककर खड़े हो गए
और उनके चेहरों पर उदासी छायी हुई
थी। **18** जवाब में क्लियुपास नाम के
चेले ने उससे कहा: “क्या तू यरूशलेम
में सबसे अलग रहनेवाला कोई पर-
देसी है, इसलिए नहीं जानता कि
इस शहर में इन दिनों क्या-क्या हुआ
है?” **19** तब उसने उनसे पूछा: “क्या-
क्या हुआ है?” उन्होंने कहा: “यीशु
नासरी के साथ जो-जो हुआ है। उसने
ऐसा भविष्यवक्ता होने का सबूत दिया,
जो परमेश्वर और सब लोगों के सामने
अपने कामों और वचनों में शक्तिशाली
था। **20** हमारे प्रधान याजकों और
धर्म-अधिकारियों ने उसे मौत की सज़ा
दिए जाने और सूली पर चढ़ाए जाने के
लिए सौंप दिया। **21** मगर हम यह
उम्मीद लगाए बैठे थे कि यह वही है
जो इसराएल को छुटकारा दिलाने के
लिए ठहराया गया है। और हाँ, इसके
अलावा, इन सब घटनाओं को हुए आज
तीसरा दिन हो चुका है। **22** और-तो-
और, हमारे बीच कुछ स्त्रियों ने भी हमें
हैरत में डाल दिया है, क्योंकि वे सुबह-
सुबह कब्र पर गयी थीं, **23** मगर उन्हें
उसका शव नहीं मिला और वे आकर यह
कहने लगीं कि उन्हें स्वर्गदूत भी दिखायी
दिए, जो कह रहे थे कि वह ज़िंदा है।
24 इसके अलावा, हममें से कुछ उसकी
कब्र पर गए, तो जैसा स्त्रियों ने बताया
था, ठीक वैसा ही पाया, मगर उसे न
देखा।”

25 तब उसने उनसे कहा: “अरे,
नासमझ लोगो, और भविष्यवक्ताओं की
कही सब बातों पर मुश्किल से विश्वास
करनेवालो! **26** क्या मसीह के लिए
यह ज़रूरी नहीं था कि वह ये सारे दुःख
झेले और फिर अपनी महिमा पाए?”
27 उसने मूसा से शुरू कर सारे
भविष्यवक्ताओं की किताबों में, यानी सारे
शास्त्र में जितनी भी बातें उसके बारे में
लिखी थीं, उन सबका मतलब उन्हें खोल-
कर समझाया।

28 आखिरकार वे उस गाँव के नज़-
दीक आ पहुँचे जहाँ वे जा रहे थे और
उसने ऐसे दिखाया जैसे वह सफर पर
आगे जा रहा हो। **29** मगर उन्होंने
यह कहकर उस पर दबाव डाला: “हमारे
साथ रुक जा, क्योंकि शाम होने पर
है और दिन ढल चुका है।” तब वह
उनके यहाँ रुकने के लिए अंदर गया।
30 जब वह उनके साथ खाने के लिए
मेज़ से टेक लगाए था, तो उसने रोटी
ली, प्रार्थना में धन्यवाद कर उसे तोड़ा
और उन्हें देने लगा। **31** तब उनकी
आँखें खुल गयीं और वे उसे पहचान गए

और वह उनके सामने से गायब हो गया।
32 उन्होंने एक-दूसरे से कहा: “जब वह
सड़क पर हमसे बात कर रहा था और
शास्त्र का मतलब हमें खोल-खोलकर
समझा रहा था, तो क्या हमारे दिल
की धड़कनें तेज़ नहीं हो गयी थीं?”
33 तब उसी घड़ी वे उठे और यरूशलेम
लौटे, और उन्होंने उन ग्यारहों को दूसरे
चेलों के साथ इकट्ठा पाया, **34** जो
कह रहे थे: “यह सच है कि प्रभु जी उठा
है और वह शमौन को दिखायी दिया है!”
35 फिर इन लोगों ने भी वे सारी घट-
नाएँ बतायीं जो सड़क पर हुई थीं और
कैसे रोटी तोड़ने के ज़रिए वह उन पर
ज़ाहिर हुआ था।

36 जब वे इन बातों के बारे में बता
ही रहे थे, तब यीशु खुद उनके बीच आ
खड़ा हुआ [[और उनसे कहा: “तुम्हें शांति
मिले।”]] **37** मगर दहशत और डर
की वजह से, उन्होंने सोचा कि यह ज़रूर
कोई स्वर्गदूत है। **38** इसलिए उसने
उनसे कहा: “तुम क्यों परेशान हो रहे हो,
और क्यों तुम्हारे दिलों में शक पैदा
हो रहा है? **39** मेरे हाथ और मेरे
पैर देखो कि यह मैं ही हूँ। मुझे छूओ
और देखो, क्योंकि स्वर्गदूत का हाड़-माँस
नहीं होता, जैसा कि तुम मेरा देख रहे
हो।” **40** [[और यह कहते हुए उसने
उन्हें अपने हाथ और पैर दिखाए।]]
41 मगर वे अभी भी मारे खुशी और
हैरत के यकीन नहीं कर रहे थे। तब
उसने उनसे कहा: “क्या तुम्हारे पास खाने
के लिए यहाँ कुछ है?” **42** उन्होंने
उसे भुनी हुई मछली का एक टुकड़ा दिया
43 और उसने लेकर उन सबकी नज़रों
के सामने खाया।

44 तब उसने उनसे कहा: “ये मेरी
वही बातें हैं, जो मैंने तुम्हारे साथ रहते हुए
तुम्हें बतायी थीं कि मूसा के कानून और
भविष्यवक्ताओं की किताबों और भजनों
में मेरे बारे में जो कुछ लिखा है, वह सब
पूरा होना ज़रूरी है।” **45** तब उसने
शास्त्रों का मतलब समझने के लिए उनके
दिमाग पूरी तरह खोल दिए, **46** और
उसने उनसे कहा: “इस तरह यह लिखा
है कि मसीह दुःख झेलेगा और तीसरे दिन
मरे हुओं में से जी उठेगा। **47** फिर
यरूशलेम से शुरूआत करते हुए सब
राष्ट्रों में, उसके नाम से पापों की माफी
पाने के लिए पश्चाताप करने का प्रचार
किया जाएगा। **48** तुम्हें इन बातों की
गवाही देनी है। **49** और देखो! मैं तुम
पर वह शक्ति भेज रहा हूँ, जिसका वादा
मेरे पिता ने किया है। मगर जब तक तुम
ऊपर से यह शक्ति हासिल न कर लो,
तब तक इसी शहर में रहना।”

50 वह उन्हें बैतनिय्याह तक बाहर
ले आया और अपने हाथ ऊपर उठाकर
उन्हें आशीष दी। **51** जब वह उन्हें
आशीष दे रहा था, तो वह उनसे जुदा
होने लगा और ऊपर स्वर्ग की तरफ
उठाया जाने लगा। **52** उन्होंने झुक-
कर उसे प्रणाम किया और बड़ी खुशी
के साथ यरूशलेम लौट गए। **53** वे
लगातार मंदिर में परमेश्वर की बड़ाई
करते रहे।

यूहन्ना

के मुताबिक खुशी का संदेश

1 बहुत पहले, जब परमेश्वर ने किसी
भी चीज़ की सृष्टि नहीं की थी,
तब वचन परमेश्वर के साथ था और
वचन ईश्वरीय था।* **2** यही शुरू-
आत में परमेश्वर के साथ था।
3 सारी चीज़ें उसी के ज़रिए वजूद में
आयीं और एक भी चीज़ ऐसी नहीं जो
उसके बिना वजूद में आयी हो।

4 उसके ज़रिए जो कुछ वजूद में
आया वह जीवन था। और वह जीवन
इंसानों के लिए रौशनी था। **5** यह
रौशनी अंधेरे में चमक रही है, लेकिन
अंधेरा उस पर हावी न हो सका।

6 परमेश्वर की तरफ से भेजा हुआ
एक आदमी आयाः उसका नाम यूहन्ना
था। **7** यह आदमी गवाह बनकर
आया, ताकि उस रौशनी के बारे में गवाही
दे और इस तरह उसके ज़रिए सब किस्म
के लोग यकीन करें। **8** यूहन्ना खुद
वह रौशनी नहीं था, मगर उस रौशनी
की गवाही देने आया था।

9 वह सच्ची रौशनी जो सब किस्म
के इंसानों को रौशनी देती है, बहुत जल्द
दुनिया में आनेवाली थी। **10** वचन
दुनिया में था और दुनिया उसके ज़रिए
वजूद में आयी, मगर दुनिया ने उसे नहीं
जाना। **11** वह अपने घर आया, मगर
उसके अपने ही लोगों ने उसे न अपनाया।
12 मगर, जितनों ने उसे स्वीकार किया,
उन्हें उसने परमेश्वर के बच्चे होने का
अधिकार दिया क्योंकि उन्होंने दिखाया था
कि उन्हें उसके नाम पर विश्वास है।
13 वे न तो लहू से, न शरीर की इच्छा
से, न ही किसी इंसान की मरज़ी से
बल्कि परमेश्वर की मरज़ी के मुताबिक
पैदा हुए।

14 वचन इंसान बना और हमारे
बीच रहा और हमने उसका तेज देखा,
ऐसा तेज जैसा एक पिता के इकलौते बेटे
का होता है और वह महा-कृपा और
सच्चाई से भरपूर था। **15** (यूहन्ना ने
उसके बारे में गवाही दी, हाँ, असल में,
उसी ने यह पुकार लगायी और कहाः "जो
मेरे पीछे आ रहा है वह मेरे आगे निकल
गया है, क्योंकि वह मुझसे पहले से वजूद
में था।") **16** हम सबने उससे भरपूर
महा-कृपा पायी, क्योंकि वह खुद महा-
कृपा से भरपूर है। **17** क्योंकि पर-
मेश्वर ने हमें मूसा के ज़रिए कानून दिया
था, मगर वह यीशु मसीह के ज़रिए
महा-कृपा और सच्चाई वजूद में लाया।
18 किसी भी इंसान ने परमेश्वर को
कभी नहीं देखा। इकलौता बेटा जो ईश्व-
रीय है और जो पिता के सबसे करीब
है,* उसी ने पिता के बारे में समझाया है।

यूह 1:1* अतिरिक्त लेख 3 देखें।

यूह 1:18* शाब्दिक, "गोद में या सीने के पास सबसे करीब," जिसका मतलब है सबसे अज़ीज़।

19 यूहन्ना ने यह गवाही तब दी जब
यहूदियों ने यरूशलेम से याजकों और
लेवियों को उसके पास यह पूछने के लिए
भेजा, “तू कौन है?” 20 उसने जवाब
देने से इनकार न किया, बल्कि मान
लिया: “मैं मसीह* नहीं हूँ।” 21 फिर
उन्होंने पूछा: “तो फिर क्या तू एलिय्याह
है?” उसने कहा: “नहीं।” “क्या तू वह
भविष्यवक्ता है जिसे आना था?” उसने
जवाब दिया: “नहीं, मैं वह नहीं हूँ!”
22 तब उन्होंने पूछा: “फिर तू कौन
है? हमें बता ताकि हम अपने भेजने-
वालों को जवाब दे सकें। तू अपने बारे
में क्या कहता है?” 23 यूहन्ना ने
कहा: “मैं वह आवाज़ हूँ जो वीराने
में पुकार लगा रही है, ‘यहोवा* का
मार्ग सीधा करो,’ ठीक जैसा यशायाह
भविष्यवक्ता ने कहा है।” 24 जो
यूहन्ना के पास आए थे उन्हें फरीसियों ने
भेजा था। 25 इसलिए उन्होंने सवाल
किया: “अगर तू मसीह नहीं है, न ही
एलिय्याह है, न ही वह भविष्यवक्ता है,
तो फिर तू बपतिस्मा* क्यों देता है?”
26 यूहन्ना ने जवाब दिया: “मैं पानी में
बपतिस्मा देता हूँ। मगर तुम्हारे बीच एक
ऐसा शख्स खड़ा है जिसे तुम नहीं जानते,
27 यानी वह जो मेरे पीछे आ रहा है,
और मैं उसकी जूतियों के फीते खोलने
के भी लायक नहीं।” 28 ये सारी
बातें यरदन के पार बैतनिय्याह* में हुईं,
जहाँ यूहन्ना बपतिस्मा देता था।

29 अगले दिन जब उसने यीशु को
अपनी तरफ आते देखा, तो कहा: “देखो,
परमेश्वर का मेम्ना जो दुनिया का पाप दूर
ले जाता है! 30 यह वही है जिसके
बारे में मैंने कहा था, जो मेरे पीछे आ
रहा है वह मेरे आगे निकल गया है,
क्योंकि वह मुझसे पहले से वजूद में था।
31 मैं भी उसके बारे में नहीं जानता था।
मगर मैं इसी वजह से पानी में बपतिस्मा
देता हुआ आया कि वह इसराएल पर
ज़ाहिर हो सके।” 32 यूहन्ना ने यह
भी गवाही दी: “मैंने पवित्र शक्ति को
कबूतर के रूप में आकाश से उतरते देखा
और वह उस पर ठहर गयी। 33 मैं
भी उसके बारे में नहीं जानता था, मगर
जिसने मुझे पानी में बपतिस्मा देने के लिए
भेजा उसी ने मुझे बताया, ‘जिस किसी
पर तू पवित्र शक्ति को उतरते और
ठहरते देखे, यही है वह जो पवित्र शक्ति
से बपतिस्मा देता है।’ 34 मैंने यह
देखा है और मैंने गवाही दी है कि यही
परमेश्वर का बेटा है।”

35 अगले दिन फिर, यूहन्ना अपने
दो चेलों के साथ खड़ा था। 36 जब
उसने यीशु को वहाँ से गुज़रते देखा

यूह 1:20* या, “अभिषिक्त जन, मसीहा।” मत्ती 1:1 फुटनोट देखें। **23*** यह उन 237 जगहों में से एक जगह है, जहाँ परमेश्वर का नाम, ‘यहोवा’ इस अनुवाद के मुख्य पाठ में पाया जाता है। अतिरिक्त लेख 2 देखें। **25*** बपतिस्मे का मतलब किसी को पानी में पूरी तरह डुबकी देना है। यह एक धार्मिक रस्म है।

यूह 1:28* यह वह बैतनिय्याह नहीं जो यरूशलेम के पास था।

तो कहाः “देखो, परमेश्वर का मेम्ना!”
37 तब वे दोनों चेले उसकी बात सुनकर
यीशु के पीछे-पीछे गए। **38** तब यीशु
ने मुड़कर उन्हें पीछे आते देखा और उनसे
पूछाः “तुम क्या चाहते हो?” उन्होंने
कहाः “रब्बी, (जिसका मतलब है, गुरु)
तू कहाँ ठहरा हुआ है?” **39** यीशु
ने उनसे कहाः “आओ और चल-
कर देख लो।” तब वे उसके साथ गए
और देखा कि वह कहाँ ठहरा हुआ है
और वे उस दिन उसी के यहाँ ठहरे।
यह दिन का करीब दसवाँ घंटा* था।
40 यूहन्ना की बात सुनकर यीशु के
पीछे जानेवाले इन दो जनों में से एक का
नाम अन्द्रियास था जो शमौन पतरस
का भाई था। **41** अगले दिन, अन्द्रि-
यास सबसे पहले अपने सगे भाई शमौन
से मिला और उससे कहाः “हमें मसीहा
मिल गया है।” (जिसका मतलब है,
अभिषिक्त जन)। **42** अन्द्रियास उसे
यीशु के पास ले गया। जब यीशु ने शमौन
को देखा, तो कहाः “तू यूहन्ना का बेटा
शमौन है। तुझे कैफा पुकारा जाएगा”
(जिसका यूनानी भाषा में अनुवाद पत-
रस है)।

43 अगले दिन, यीशु गलील जाना
चाहता था। तब वह फिलिप्पुस से मिला
और उससे कहाः “मेरा चेला बन जा और
मेरे पीछे हो ले।” **44** फिलिप्पुस बैत-
सैदा का रहनेवाला था, जो अन्द्रि-
यास और पतरस का भी शहर था।
45 फिलिप्पुस ने नतनएल को ढूँढ़-
कर उससे कहाः “हमें वह मिल गया है
जिसके बारे में मूसा ने कानून में और
भविष्यवक्ताओं ने अपने लेखों में लिखा
था। वह नासरत का रहनेवाला यीशु है,
जो यूसुफ का बेटा है।” **46** मगर
नतनएल ने उससे कहाः “भला नासरत
से भी कुछ अच्छा निकल सकता है?”
फिलिप्पुस ने उससे कहाः “आ और देख
ले।” **47** यीशु ने नतनएल को अपनी
तरफ आते देखा और उसके बारे में
कहाः “देखो, यह एक सच्चा इसराएली
है जिसमें कोई कपट नहीं।” **48** तब
नतनएल ने उससे कहाः “तू मुझे कैसे
जानता है?” यीशु ने जवाब में कहाः
“फिलिप्पुस के बुलाने से भी पहले, जिस
वक्त तू अंजीर के पेड़ के नीचे था, मैंने
तुझे देख लिया था।” **49** नतनएल ने
उसे जवाब दियाः “गुरु, तू परमेश्वर
का बेटा है, तू इसराएल का राजा है।”
50 यीशु ने जवाब में कहाः “क्या तू ने
इसलिए यकीन किया कि मैंने तुझे उस
वक्त देखने की बात कही जब तू अंजीर
के पेड़ के नीचे था? तू इससे भी बड़े-
बड़े काम देखेगा।” **51** यीशु ने यह
भी कहाः “मैं तुम लोगों से सच कहता
हूँ, तुम स्वर्ग को खुला हुआ और पर-
मेश्वर के स्वर्गदूतों को इंसान के बेटे के
पास नीचे आते और ऊपर जाते देखोगे।”

2 फिर तीसरे दिन गलील के काना
नाम कस्बे में एक शादी की दावत
थी और यीशु की माँ वहाँ थी।
2 यीशु और उसके चेलों को भी शादी

यूह 1:39* यानी, सूरज निकलने के वक्त से गिनें, तो “दसवाँ घंटा,” या शाम करीब 4 बजे।

की इस दावत के लिए न्यौता दिया गया था।
3 जब वहाँ दाख-मदिरा कम पड़ गयी, तो यीशु की माँ ने उससे कहा: "उनके पास दाख-मदिरा नहीं है।"
4 मगर यीशु ने उससे कहा: "हे स्त्री, मुझे तुझसे क्या काम? मेरा वक्त अब तक नहीं आया है।"
5 उसकी माँ ने सेवा करनेवालों से कहा: "वह तुमसे जो कुछ कहे, वही करना।"
6 वहाँ पत्थर के छः मटके रखे थे, जैसा यहूदियों के शुद्धिकरण नियमों के मुताबिक ज़रूरी था। हर मटके में चवालीस से छियासठ लीटर* पानी समा सकता था।
7 यीशु ने उनसे कहा: "मटकों को पानी से भर दो।" तब उन्होंने मटके मुँह तक लबालब भर दिए।
8 फिर उसने कहा: "अब इसमें से थोड़ा लेकर दावत के इंतज़ाम की देख-रेख करनेवाले के पास ले जाओ।" तब वे ले गए।
9 दावत के इंतज़ाम की देख-रेख करनेवाले ने वह पानी चखा, जो दाख-मदिरा में बदल चुका था। मगर वह नहीं जानता था कि यह मदिरा कहाँ से आयी, जबकि सेवा करनेवाले जानते थे जिन्होंने मटके से पानी निकाला था। तब देख-रेख करनेवाले ने दूल्हे को बुलाया
10 और उससे कहा: "हर कोई बढ़िया दाख-मदिरा पहले निकालता है और जब लोग पीकर धुत्त हो जाते हैं, तो हल्की दाख-मदिरा देता है। मगर तू ने अब तक इस बेहतरीन दाख-मदिरा को अलग रखा हुआ है।"
11 इस तरह यीशु ने गलील के काना नाम कस्बे में पहला चमत्कार किया और अपनी शक्ति ज़ाहिर की। और उसके चेलों ने उस पर विश्वास किया।
12 इसके बाद, यीशु, उसकी माँ, उसके भाई और चेले कफरनहूम गए, मगर वहाँ ज़्यादा दिन नहीं ठहरे।
13 यहूदियों का फसह का त्योहार पास था और यीशु यरूशलेम गया।
14 उसने वहाँ मंदिर में, मवेशियों और भेड़ों और कबूतरों की बिक्री करनेवालों को और पैसे बदलनेवाले सौदागरों को अपनी-अपनी गद्दियों पर बैठा देखा।
15 तब उसने रस्सियों का एक कोड़ा बनाया और उन सभी को उनकी भेड़ों और उनके मवेशियों के साथ मंदिर से बाहर खदेड़ दिया। उसने सौदागरों के सिक्के बिखरा दिए और उनकी मेज़ें पलट दीं।
16 उसने कबूतर बेचनेवालों से कहा: "यह सब लेकर यहाँ से निकल जाओ! मेरे पिता के घर को बाज़ार मत बनाओ!"
17 तब उसके चेलों को याद आया कि यह लिखा है: "तेरे घर के लिए जोश की आग मुझे भस्म कर देगी।"
18 यह देखकर यहूदियों ने उससे कहा: "तू किस अधिकार से यह सब कर रहा है, इसके लिए तू हमें कौन-सा चमत्कार दिखाएगा?"
19 जवाब में यीशु ने उनसे कहा: "इस मंदिर को गिरा दो और मैं तीन दिन के अंदर इसे खड़ा कर दूँगा।"
20 तब यहूदी कहने लगे: "यह मंदिर बनाने में छिया-

यूह 2:6* शाब्दिक, "2 से 3 *मेत्रेतेस।*" एक *मेत्रेतेस* करीब 22 लीटर के बराबर होता था।

लिस साल लगे थे, और तू इसे तीन दिन
में खड़ा करेगा?” **21** मगर मंदिर से
उसका मतलब था, उसका अपना शरीर।
22 जब उसे मरे हुओं में से जी उठाया
गया, तो उसके चेलों को याद आया कि
वह यह बात कहा करता था। और उन्होंने
शास्त्र का और यीशु की बात का यकीन
किया।

23 जब वह फसह के त्योहार के
वक्त यरूशलेम में था, तो बहुत-से लोगों
ने उसके चमत्कार देखकर जो वह कर
रहा था, उसके नाम पर विश्वास किया।
24 मगर यीशु ने खुद को उनके भरोसे
नहीं छोड़ा, क्योंकि वह सबको जानता
था। **25** उसे इंसान के बारे में किसी
की गवाही की ज़रूरत नहीं थी, क्योंकि
वह खुद जानता था कि एक इंसान अंदर
से कैसा है।

3 नीकुदेमुस नाम का एक फरीसी, जो
यहूदियों का एक धर्म-अधिकारी था,
2 रात के वक्त यीशु के पास आया और
उससे कहा: “रब्बी, हम जानते हैं कि तू
परमेश्वर की तरफ से आया शिक्षक है।
इसलिए कि तू जो ये चमत्कार दिखाता
है, वह कोई भी इंसान तब तक नहीं कर
सकता, जब तक कि परमेश्वर उसके साथ
न हो।” **3** यीशु ने उसे जवाब दिया:
“मैं तुझसे सच-सच कहता हूँ कि जब तक
कोई दोबारा पैदा न हो, वह परमेश्वर
का राज नहीं देख सकता।” **4** नीकु-
देमुस ने कहा: “एक इंसान बड़ा होकर
दोबारा कैसे पैदा हो सकता है? क्या
वह वापस अपनी माँ के गर्भ में जाकर
दोबारा पैदा हो सकता है?” **5** यीशु
ने उसे जवाब दिया: “मैं तुझसे सच-सच
कहता हूँ, जब तक कोई पानी और पवित्र
शक्ति से पैदा न हो, तब तक वह पर-
मेश्वर के राज में दाखिल नहीं हो सकता।
6 जो शरीर से पैदा हुआ है, वह शारी-
रिक है और जो पवित्र शक्ति से पैदा
हुआ है, वह स्वर्गीय है। **7** मैंने तुझे
जो बताया है कि तुम लोगों के लिए
दोबारा पैदा होना ज़रूरी है, इस बात पर
ताज्जुब मत कर। **8** हवा* जहाँ चाहे
वहाँ बहती है और तू हवा चलने की
आवाज़ सुनता है, मगर तू नहीं जानता
कि यह कहाँ से आती है और कहाँ जा
रही है। ऐसा ही वह है जो पवित्र शक्ति
से पैदा हुआ है।”

9 जवाब में नीकुदेमुस ने उससे
कहा: “यह सब कैसे हो सकता है?”
10 यीशु ने जवाब दिया: “क्या तू इस-
राएलियों का एक धर्म-गुरु है, फिर भी
ये बातें नहीं जानता? **11** मैं तुझ से
सच-सच कहता हूँ, हम जो जानते हैं उसी
के बारे में बताते हैं और हमने जो देखा
है उसी की गवाही देते हैं, मगर तुम
लोग हमारी गवाही कबूल नहीं करते।
12 अगर मैंने तुम्हें धरती की बातें
बतायी हैं और फिर भी तुमने यकीन नहीं
किया, तो अगर मैं तुम्हें स्वर्ग की बातें
बताऊँ, तो तुम कैसे यकीन करोगे?
13 इतना ही नहीं, कोई भी इंसान स्वर्ग
नहीं चढ़ा, मगर इंसान का बेटा है जो

यूह 3:8* यूनानी *नफ्मा।* अतिरिक्त लेख 7 देखें।

स्वर्ग से उतरा है। **14** ठीक जैसे मूसा
ने वीराने में उस साँप को ऊँचे पर चढ़ाया,
उसी तरह इंसान के बेटे को भी ऊँचे पर
चढ़ाया जाना है **15** ताकि हर कोई
जो उस पर यकीन करे वह हमेशा की
ज़िंदगी पाए।

16 क्योंकि परमेश्वर ने दुनिया से
इतना ज़्यादा प्यार किया कि उसने अपना
इकलौता बेटा दे दिया, ताकि जो कोई
उस पर विश्वास दिखाता है, वह नाश न
किया जाए बल्कि हमेशा की ज़िंदगी
पाए। **17** परमेश्वर ने अपने बेटे को
दुनिया में इसलिए नहीं भेजा कि वह
दुनिया को सज़ा सुनाए, मगर इसलिए
कि दुनिया उसके ज़रिए उद्धार पाए।
18 जो उस पर विश्वास दिखाता है, उस
पर सज़ा नहीं हुई। जो उस पर विश्वास
नहीं दिखाता, उस पर पहले ही सज़ा हो
चुकी है, क्योंकि उसने परमेश्वर के इक-
लौते बेटे के नाम पर विश्वास नहीं
दिखाया। **19** सज़ा का आधार यह है
कि रौशनी दुनिया में आयी, मगर लोगों ने
रौशनी के बजाय अंधकार से प्यार किया,
क्योंकि उनके काम दुष्ट थे। **20** जो
बुरे कामों में लगा रहता है, वह रौशनी
से नफरत करता है और रौशनी में नहीं
आता ताकि यह ज़ाहिर न हो जाए कि
उसके काम गलत हैं। **21** मगर जो
सही काम करता है वह रौशनी में आता
है, ताकि उसके काम ज़ाहिर हों कि उसने
ये काम परमेश्वर की मरज़ी के मुताबिक
किए हैं।”

22 इन बातों के बाद, यीशु और
उसके चेले यहूदिया के इलाके में गए
और उसने वहाँ उनके साथ कुछ वक्त
बिताया और लोगों को बपतिस्मा दिया।
23 मगर यूहन्ना भी सालिम के पास
एनोन नाम की एक जगह में बपतिस्मा
दे रहा था, क्योंकि वहाँ बहुत पानी
था और लोग आते रहे और बपतिस्मा
लेते रहे। **24** उस वक्त तक यूहन्ना
को जेल में नहीं डाला गया था।

25 तब शुद्ध किए जाने के रिवाज़
को लेकर किसी यहूदी के साथ यूहन्ना के
चेलों की बहस छिड़ गयी। **26** फिर
यूहन्ना के चेले उसके पास आए और
उससे कहा: “गुरु, वह आदमी जो यरदन
के उस पार तेरे साथ था, जिसके बारे में
तू ने गवाही दी थी, देख, वह बपतिस्मा दे
रहा है और सब उसके पास जा रहे हैं।”
27 जवाब में यूहन्ना ने कहा: “जब तक
एक इंसान को स्वर्ग से न दिया जाए,
तब तक वह एक भी चीज़ हासिल नहीं
कर सकता। **28** तुम खुद इस बात के
गवाह हो कि मैंने कहा था, मैं मसीह नहीं
हूँ, मगर मुझे उसके आगे भेजा गया है।
29 जिसके पास दुल्हन है वही दूल्हा है।
मगर जब दूल्हे का दोस्त खड़ा होता है
और दूल्हे को बात करते सुनता है, तो
उसकी आवाज़ सुनकर उसकी खुशी का
ठिकाना नहीं रहता। इसलिए मेरी यह
खुशी पूरी की गयी है। **30** मसीह को
अब बढ़ते जाना है, मगर मुझे घटते
जाना है।”

31 जो ऊपर से आता है वह बाकी
सबके ऊपर है। जो धरती से है, वह
धरती का होता है और धरती की बातें
बोलता है। जो स्वर्ग से आता है, वह
बाकी सबके ऊपर है। **32** उसने जो
देखा और सुना है, उसकी वह गवाही देता
है, मगर कोई आदमी उसकी गवाही नहीं
मानता। **33** जिसने उसकी गवाही
मान ली है उसने इस बात पर अपनी
मुहर लगायी है कि परमेश्वर सच्चा है।
34 इसलिए कि परमेश्वर ने जिसे भेजा
है, वह परमेश्वर की बातें बताता है,
क्योंकि वह नाप-नापकर पवित्र शक्ति
नहीं देता। **35** पिता बेटे से प्यार
करता है और उसने सबकुछ उसके हाथों
में सौंप दिया है। **36** जो बेटे पर
विश्वास दिखाता है, हमेशा की ज़िंदगी
उसकी है। जो बेटे की आज्ञा नहीं मानता
वह ज़िंदगी नहीं पाएगा, बल्कि परमेश्वर
का क्रोध उस पर बना रहता है।

4 जब प्रभु को पता चला कि फरी-
सियों ने यह बात सुनी है कि यीशु,
यूहन्ना से ज़्यादा चेले बना रहा है और
उन्हें बपतिस्मा दे रहा है **2** (हालाँकि
यीशु खुद बपतिस्मा नहीं देता था, बल्कि
उसके चेले देते थे), **3** तो वह यहू-
दिया छोड़कर फिर से गलील चला गया।
4 मगर उसे सामरिया से होकर जाना
ज़रूरी था। **5** रास्ते में वह सामरिया
के सूखार नाम के एक शहर पहुँचा। यह
शहर उस ज़मीन के पास था जो याकूब
ने अपने बेटे यूसुफ को दी थी। **6** दर-
असल याकूब का कुआँ वहीं था और
यीशु सफर से थका-माँदा उस कुएँ के
पास बैठा था। यह दिन का करीब छठा
घंटा* था।

7 वहाँ सामरिया की एक स्त्री
पानी भरने आयी। तब यीशु ने उससे
कहा: "मुझे पानी पिला।" **8** (उसके
चेले खाना खरीदने शहर गए हुए थे।)
9 उस सामरी स्त्री ने उससे कहा: "यह
कैसी बात है कि तू एक यहूदी होकर
मुझसे पानी माँगता है, जबकि मैं एक
सामरी स्त्री हूँ?" (क्योंकि यहूदी, सामरियों
से कोई नाता नहीं रखते।) **10** जवाब
में यीशु ने कहा: "अगर तू यह जानती
कि परमेश्वर का मुफ्त वरदान क्या है
और वह कौन है जो तुझसे कह रहा
है कि 'मुझे पानी पिला,' तो तू उससे
माँगती और वह तुझे जीवन देनेवाला
पानी देता।" **11** तब स्त्री ने कहा:
"तेरे पास तो पानी निकालने के लिए कोई
बर्तन तक नहीं है और कुआँ भी गहरा है।
फिर तेरे पास यह जीवन देनेवाला पानी
कहाँ से आया? **12** क्या तू हमारे
पुरखे याकूब से भी महान है, जिसने हमें
यह कुआँ दिया और जिसमें से खुद उसने
साथ ही उसके बेटों और मवेशियों ने पीया
था?" **13** जवाब में यीशु ने कहा:
"हर कोई जो यह पानी पीता है वह फिर
प्यासा होगा। **14** मगर जो कोई वह
पानी पीता है, जो मैं उसे दूँगा वह फिर
कभी-भी प्यासा नहीं होगा। मगर जो पानी
मैं उसे दूँगा वह उसके अंदर पानी का

यूह 4:6* यानी, सूरज निकलने के वक्त से गिनें, तो "छठा घंटा," या दोपहर करीब 12 बजे।

एक सोता बन जाएगा और हमेशा की
ज़िंदगी देने के लिए उमड़ता रहेगा।”
15 तब स्त्री ने कहा: “मुझे वह पानी दे
ताकि मैं प्यासी न रहूँ, न ही मुझे पानी
भरने के लिए बार-बार यहाँ आना पड़े।”

16 उसने स्त्री से कहा: “जा और
अपने पति को लेकर यहाँ आ।”
17 जवाब में स्त्री ने कहा: “मेरा कोई
पति नहीं है।” यीशु ने उससे कहा: “यह
तू ने सही कहा कि ‘मेरा कोई पति नहीं।’
18 क्योंकि तेरे पाँच पति हो चुके हैं,
और अब तू जिस आदमी के साथ रहती
है वह भी तेरा पति नहीं है। यह तू ने
बिलकुल सच कहा।” **19** तब स्त्री ने
उससे कहा: “प्रभु, मुझे लगता है कि
तू कोई भविष्यवक्ता है। **20** हमारे
पुरखों ने इस पहाड़ पर उपासना की थी,
मगर तुम लोग कहते हो कि यरूशलेम
वह जगह है जहाँ एक इंसान को उपासना
करनी चाहिए।” **21** यीशु ने उससे
कहा: “हे स्त्री, मेरा यकीन कर, वह घड़ी
आ रही है जब तुम लोग न तो इस पहाड़
पर, न ही यरूशलेम में पिता की उपा-
सना करोगे। **22** तुम ज्ञान के बिना
उपासना करते हो, मगर हम ज्ञान के
साथ उपासना करते हैं, क्योंकि परमेश्वर
ने उद्धार का ज्ञान यहूदियों के ज़रिए दिया
है। **23** मगर वह वक्त आ रहा है
और अभी भी है, जब सच्चे उपासक पिता
की उपासना उसकी पवित्र शक्ति से और
सच्चाई से करेंगे, क्योंकि वाकई पिता
ऐसे लोगों को ढूँढ़ता है जो इसी तरह
उसकी उपासना करते हैं। **24** पर-
मेश्वर आत्मा* है और ज़रूरी है कि जो
उसकी उपासना करते हैं, वे पवित्र शक्ति
और सच्चाई से उसकी उपासना करें।”
25 तब उस स्त्री ने उससे कहा: “मैं
जानती हूँ कि मसीहा आनेवाला है जो
अभिषिक्त कहलाता है। जब कभी वह
आएगा तो हमें सारी बातें खुलकर सम-
झाएगा।” **26** यीशु ने उससे कहा:
“मैं जो तुझसे बात कर रहा हूँ, वही हूँ।”

27 तब तक उसके चेले लौट आए
और वे ताज्जुब करने लगे क्योंकि वह
एक स्त्री से बात कर रहा था। हाँ, किसी
ने उससे यह नहीं पूछा, “तू क्या चाहता
है?” या “तू इस स्त्री से क्यों बात कर
रहा है?” **28** तब वह स्त्री अपना
पानी का घड़ा वहीं छोड़ शहर चली गयी
और लोगों से कहा: **29** “यहाँ आओ,
उस आदमी को देखो जिसने वह सबकुछ
बता दिया जो मैंने किया है। कहीं यही
तो मसीह नहीं?” **30** लोग शहर से
निकलकर उसके पास आने लगे।

31 इस दौरान, चेले उससे गुज़ा-
रिश करते रहे: “गुरु, खाना खा ले।”
32 मगर उसने उनसे कहा: “मेरे पास
खाने के लिए ऐसा खाना है जिसके बारे
में तुम नहीं जानते।” **33** तब चेले
एक-दूसरे से कहने लगे: “कोई उसके
खाने के लिए कुछ ले तो नहीं आया था?”
34 यीशु ने उनसे कहा: “मेरा खाना यह
है कि मैं अपने भेजनेवाले की मरज़ी
पूरी करूँ और उसका काम पूरा करूँ।

यूह 4:24* यूनानी *नफ्मा।* अतिरिक्त लेख 7 देखें।

35 तुम कहते हो न कि फसल की कटाई
के लिए अभी चार महीने बाकी हैं? देखो!
मैं तुमसे कहता हूँ: अपनी आँखें उठाओ
और खेतों पर नज़र डालो कि वे कटाई के
लिए पक चुके हैं। **36** कटाई करने-
वाला मज़दूरी पा रहा है और हमेशा
की ज़िंदगी के लिए फल बटोर रहा
है, जिससे कि बोनेवाला और कटाई
करनेवाला दोनों मिलकर खुशी मनाएँ।
37 इस मायने में वाकई यह कहावत सच
है कि बोता कोई और है, काटता कोई
और। **38** मैंने तुम्हें उस फसल की
कटाई करने भेजा जिसके लिए तुमने
मेहनत न की थी। दूसरों ने कड़ी मेहनत
की और तुम उनकी मेहनत का फल पा
रहे हो।”

39 उस शहर के बहुत-से सामरियों
ने उस पर विश्वास किया क्योंकि उस स्त्री
ने यह कहते हुए गवाही दी थी: “उसने
वह सबकुछ बता दिया जो मैंने किया है।”
40 इसलिए जब सामरिया के लोग यीशु
के पास आए, तो उससे उनके यहाँ
ठहरने की गुज़ारिश करने लगे। तब वह
दो दिन उनके यहाँ ठहरा। **41** नतीजा
यह हुआ कि और भी बहुतों ने उसकी
बातें सुनकर यकीन किया **42** और वे
स्त्री से कहने लगे: “अब हम सिर्फ तेरी
बात सुनने की वजह से नहीं बल्कि इस-
लिए यकीन करते हैं कि हमने खुद सुन
लिया है और हमने जान लिया है कि यह
आदमी वाकई दुनिया का उद्धारकर्त्ता है।”

43 दो दिन बाद यीशु उस जगह को
छोड़कर गलील के लिए निकल पड़ा।
44 मगर उसने खुद यह गवाही दी कि
एक भविष्यवक्ता अपने देश में आदर
नहीं पाता। **45** जब वह गलील पहुँचा
तो वहाँ के लोगों ने उसका स्वागत किया
क्योंकि उन्होंने वे सारे काम देखे थे जो
उसने त्योहार के वक्त यरूशलेम में किए
थे। वे लोग भी त्योहार के लिए वहाँ
गए थे।

46 फिर यीशु गलील के काना नाम
कसबे में आया, जहाँ उसने पानी को
दाख-मदिरा बनाया था। वहाँ राजा का
एक कर्मचारी था, जिसका बेटा कफर-
नहूम में बीमार था। **47** जब इस
आदमी ने सुना कि यीशु यहूदिया
से गलील आ गया है, तो वह उसके
पास गया और उससे बिनती करने लगा
कि वह आए और उसके बेटे को चंगा
करे, क्योंकि उसका बेटा मरने पर था।
48 लेकिन यीशु ने उससे कहा: “जब
तक तुम लोग चमत्कार और आश्चर्य के
काम न देख लो, तब तक तुम हर-
गिज़ यकीन न करोगे।” **49** राजा के
कर्मचारी ने उससे कहा: “प्रभु, इससे
पहले कि मेरा बच्चा मर जाए, मेरे साथ
चल।” **50** यीशु ने उससे कहा: “जा,
तेरा बेटा ज़िंदा है।” उस आदमी ने
यीशु की बात पर यकीन किया और
अपनी राह चला गया। **51** जब वह
रास्ते में ही था, तो उसके दास
उससे मिले और कहा कि उसका
लड़का ठीक हो गया है। **52** इसलिए
वह उनसे पूछने लगा कि लड़का किस
वक्त ठीक हुआ। उन्होंने जवाब दिया:

“कल सातवें घंटे* में उसका बुखार उतर
गया।” **53** तब पिता जान गया कि
यह वही घड़ी थी जब यीशु ने उससे
कहा था: “तेरा बेटा ज़िंदा है।” और
उसने और उसके पूरे घराने ने यीशु पर
यकीन किया। **54** यीशु का यह दूसरा
चमत्कार था जो उसने यहूदिया से गलील
आने पर किया था।

5 इसके बाद, यहूदियों का एक
त्योहार आया और यीशु यरूशलेम
गया। **2** यरूशलेम में भेड़-फाटक के
पास एक कुंड है जो इब्रानी भाषा में
बेतहसदा कहलाता है। उस कुंड के चारों
तरफ खंभोंवाला बरामदा है। **3** इस
बरामदे में बड़ी तादाद में बीमार, अंधे,
लंगड़े और अपंग लोग पड़े हुए थे।
4* —— **5** वहाँ एक आदमी था जो
अड़तीस साल से बीमार था। **6** यीशु
ने इस आदमी को पड़ा हुआ देखकर और
यह जानकर कि वह एक लंबे अरसे से
बीमार चल रहा है, उससे पूछा: “क्या तू
ठीक होना चाहता है?” **7** उस बीमार
आदमी ने जवाब दिया: “साहब, मेरे साथ
कोई आदमी नहीं जो मुझे उस वक्त कुंड
में उतारे जब पानी हिलाया जाता है।
इससे पहले कि मैं पहुँचूं कोई दूसरा मेरे
आगे पानी में उतर जाता है।” **8** यीशु
ने उससे कहा: “उठ, अपना बिस्तर उठा
और चल-फिर।” **9** वह आदमी उसी
वक्त ठीक हो गया और उसने अपना
बिस्तर उठाया और चलने-फिरने लगा।

वह सब्त* का दिन था। **10** इस-
लिए यहूदी उस आदमी से जो ठीक हो
गया था, कहने लगे: “आज सब्त है और
आज के दिन तेरे लिए बिस्तर उठाना
कानून के हिसाब से सही नहीं है।”
11 मगर उसने जवाब दिया: “जिसने
मुझे ठीक किया है उसी ने मुझसे कहा,
‘अपना बिस्तर उठा और चल-फिर।’ ”
12 उन्होंने पूछा: “वह कौन आदमी है
जिसने तुझसे कहा कि ‘इसे उठा और
चल-फिर’?” **13** मगर जो ठीक हुआ
था, वह नहीं जानता था कि उसे ठीक
करनेवाला कौन था, क्योंकि भीड़ की
वजह से यीशु वहाँ से चला गया था।

14 इन बातों के बाद, यीशु मंदिर में
उस आदमी से मिला और उससे कहा:
“देख, अब तू ठीक हो चुका है। इसलिए
आगे पाप मत करना, कहीं ऐसा न हो कि
तेरे साथ इससे भी बुरा हो।” **15** तब
उस आदमी ने जाकर यहूदियों को बता
दिया कि वह यीशु था जिसने उसे ठीक
किया था। **16** इस वजह से यहूदी
धर्मगुरु, यीशु को सताने लगे, क्योंकि वह
सब्त के दौरान यह सब कर रहा था।
17 मगर इसके जवाब में यीशु ने उनसे
कहा: “मेरा पिता अब तक काम करता
आ रहा है और मैं भी काम करता रहता
हूँ।” **18** इस वजह से यहूदी उसे मार

यूह 4:52* यानी, सूरज निकलने के वक्त से गिनें, तो “सातवाँ घंटा,” या दोपहर करीब एक बजे। **5:4*** मत्ती 17:21 फुटनोट देखें।

यूह 5:9* यहूदियों के लिए हफ्ते का सातवाँ दिन सब्त हुआ करता था। यह दिन, आराम के लिए और पर-मेश्वर की बातों पर ध्यान देने के लिए अलग रखा गया था।

डालने की और भी ज़्यादा फिराक में लग
गए, क्योंकि उनके हिसाब से वह न सिर्फ
सब्त का कानून तोड़ रहा था, बल्कि पर-
मेश्वर को अपना पिता कहकर खुद को
परमेश्वर के बराबर ठहरा रहा था।

19 इसलिए जवाब में यीशु उनसे
कहने लगाः "मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ,
बेटा अपनी पहल पर कुछ भी नहीं कर
सकता, मगर सिर्फ वही करता है जो पिता
को करते हुए देखता है। इसलिए कि
पिता जो कुछ करता है, बेटा भी उसी
तरीके से वे काम करता है। **20** पिता
को बेटे से गहरा लगाव है और वह
खुद जो करता है वह सब बेटे को भी
दिखाता है और वह इनसे भी बड़े-बड़े
काम उसे दिखाएगा ताकि तुम ताज्जुब
करो। **21** जैसे पिता मरे हुओं को
ज़िंदा करता है और उन्हें जीवन देता है,
ठीक वैसे ही बेटा भी जिन्हें चाहता है
उन्हें जीवन देता है। **22** पिता खुद
किसी का भी न्याय नहीं करता, बल्कि
उसने न्याय करने की सारी ज़िम्मेदारी बेटे
को सौंप दी है, **23** ताकि जैसे वे पिता
का आदर करते हैं वैसे ही सभी बेटे का
भी आदर करें। जो बेटे का आदर नहीं
करता, वह पिता का आदर नहीं करता
जिसने उसे भेजा है। **24** मैं तुमसे
सच-सच कहता हूँ, जो मेरे वचन सुनता है
और मेरे भेजनेवाले का यकीन करता है,
वह हमेशा की ज़िंदगी पाता है और उस
पर सज़ा का हुक्म नहीं होता बल्कि वह
मौत को पार कर ज़िंदगी में दाखिल हो
गया है।

25 मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ, वह
वक्त आ रहा है और अब भी है जब मरे
हुए, परमेश्वर के बेटे की आवाज़ सुनेंगे
और जिन्होंने उसकी बात मानी है वे
जीएँगे। **26** इसलिए कि ठीक जैसे
पिता के पास जीवन देने की शक्ति है,
वैसे ही उसने अपने बेटे को भी जीवन देने
की शक्ति दी है। **27** और उसने उसे
न्याय करने का अधिकार दिया है, क्योंकि
वह इंसान का बेटा है। **28** इस बात
पर ताज्जुब मत करो, क्योंकि वह वक्त
आ रहा है जब वे सभी जो स्मारक कब्रों
में हैं उसकी आवाज़ सुनेंगे **29** और
बाहर निकल आएँगे। जिन्होंने अच्छे काम
किए हैं उनका जी उठना जीवन पाने के
लिए होगा और जो दुष्ट कामों में लगे
रहे, उनका जी उठना सज़ा पाने के लिए
होगा। **30** मैं अपनी पहल पर एक
भी काम नहीं कर सकता। मगर ठीक
जैसा पिता से सुनता हूँ वैसा ही न्याय
करता हूँ। मैं जो न्याय करता हूँ वह सच्चा
है, क्योंकि मैं अपनी नहीं बल्कि उसकी
मरज़ी पूरी करना चाहता हूँ जिसने मुझे
भेजा है।

31 अगर मैं अकेला ही अपने बारे
में गवाही दूँ, तो मेरी गवाही सच नहीं
है। **32** एक और है जो मेरे बारे में
गवाही देता है और मैं जानता हूँ कि वह
मेरे बारे में जो गवाही देता है, वह सच्ची
है। **33** तुमने यूहन्ना के पास आदमी
भेजे और उसने मेरे बारे में सच्चाई की
गवाही दी। **34** फिर भी, मैं इंसानों
की गवाही मंज़ूर नहीं करता, मगर मैं ये

बातें इसलिए कहता हूँ ताकि तुम उद्धार
पा सको। 35 वह आदमी एक जलता
और जगमगाता दीपक था और तुम थोड़े
वक्त के लिए उसकी रौशनी में बड़ी खुशी
मनाने के लिए तैयार थे। 36 मगर
मेरे पास वह गवाही है जो यूहन्ना की
गवाही से भी बढ़कर है। जो काम मेरे
पिता ने मुझे पूरे करने के लिए सौंपे हैं,
यानी जो काम मैं कर रहा हूँ, वही मेरे
बारे में गवाही देते हैं कि मुझे पिता ने
भेजा है। 37 साथ ही पिता ने भी,
जिसने मुझे भेजा है, खुद मेरे बारे में
गवाही दी है। तुमने न तो कभी उसकी
आवाज़ सुनी, न ही कभी उसका रूप
देखा 38 और उसका वचन तुम्हारे
दिलों में कायम नहीं रहता, क्योंकि तुम
उसी का यकीन नहीं करते जिसे पिता ने
भेजा है।

39 तुम पवित्रशास्त्र में खोजबीन
करते हो, क्योंकि तुम सोचते हो कि
इसके ज़रिए तुम्हें हमेशा की ज़िंदगी
मिलेगी। यही शास्त्र मेरे बारे में गवाही
देता है। 40 फिर भी तुम मेरे पास
नहीं आना चाहते कि तुम ज़िंदगी पा
सको। 41 मैं इंसानों से अपनी बड़ाई
नहीं चाहता। 42 मगर मैं अच्छी तरह
जानता हूँ कि तुम्हारे अंदर परमेश्वर
के लिए प्यार नहीं है। 43 मैं अपने
पिता के नाम से आया हूँ, मगर तुम
मुझे स्वीकार नहीं करते। अगर कोई
और अपने ही नाम से आता तो तुम
उसे स्वीकार कर लेते। 44 तुम मेरा
यकीन कर भी कैसे सकते हो, क्योंकि
तुम इंसानों की बड़ाई करते हो और उनसे
अपनी बड़ाई करवाते हो और वह बड़ाई
पाना नहीं चाहते जो एकमात्र परमेश्वर
से मिलती है? 45 यह मत सोचो कि
मैं पिता के सामने तुम पर दोष लगाऊँगा।
क्योंकि तुम पर दोष लगानेवाला एक है,
यानी मूसा जिस पर तुमने आशा रखी
है। 46 दरअसल, अगर तुमने मूसा
का यकीन किया होता तो मेरा भी यकीन
करते, इसलिए कि उसने मेरे बारे में
लिखा था। 47 लेकिन जब तुम उसके
लेखों का यकीन नहीं करते, तो भला मेरी
बातों का यकीन कैसे करोगे?”

6 इन बातों के बाद, यीशु गलील
या तिबिरियास झील* के उस
पार चला गया। 2 मगर एक बड़ी
भीड़ उसके पीछे-पीछे गयी, क्योंकि लोग
उन चमत्कारों को देख रहे थे जो वह
बीमारों के लिए कर रहा था। 3 तब
यीशु एक पहाड़ पर चढ़ गया, और
अपने चेलों के साथ वहाँ बैठा हुआ था।
4 तब यहूदियों का फसह का त्योहार
पास था। 5 जब यीशु ने नज़र उठा-
कर देखा कि एक बड़ी भीड़ उसकी तरफ
चली आ रही है, तो उसने फिलिप्पुस से
कहा: “हम इनके खाने के लिए रोटियाँ
कहाँ से खरीदें?” 6 मगर वह उसे
परखने के लिए यह बात कह रहा था,
क्योंकि वह जानता था कि वह खुद क्या
करने जा रहा है। 7 फिलिप्पुस ने उसे

यूह 6:1* मत्ती 4:18 फुटनोट देखें।

जवाब दियाः “दो सौ दीनार की रोटियाँ
भी इन सबके लिए पूरी नहीं पड़ेंगी कि
हरेक को थोड़ा-थोड़ा भी मिल सके।”
8 तब यीशु के एक चेले, अन्द्रियास ने
जो शमौन पतरस का भाई था, उससे
कहाः **9** “यहाँ एक लड़का है, जिसके
पास जौ की पाँच रोटियाँ और दो छोटी
मछलियाँ हैं। मगर इतनी बड़ी भीड़ के
लिए इससे क्या होगा?”

10 यीशु ने कहाः “लोगों को खाने
के लिए बिठा दो।” उस जगह बहुत घास
थी। इसलिए लोग वहाँ आराम से बैठ
गए। इनमें आदमियों की गिनती करीब
पाँच हज़ार थी। **11** तब यीशु ने वे
रोटियाँ लीं और प्रार्थना में धन्यवाद देने
के बाद, बैठे हुए लोगों में बाँट दीं। उसी
तरह उसने छोटी मछलियाँ भी, जिसे
जितनी चाहिए थीं, बाँट दीं। **12** जब
उन्होंने भरपेट खा लिया, तो उसने चेलों
से कहाः “जो टुकड़े बच गए हैं, उन्हें
इकट्ठा कर लो, ताकि कुछ भी फेंका
न जाए।” **13** इसलिए जौ की पाँच
रोटियों के जितने टुकड़े खानेवालों ने
बचा दिए थे, वे उन्होंने इकट्ठे किए,
जिनसे बारह टोकरियाँ भर गयीं।

14 इसलिए जब लोगों ने उसके
चमत्कार देखे, तो वे कहने लगेः “यह
ज़रूर वही भविष्यवक्ता है जिसके दुनिया
में आने की भविष्यवाणी की गयी थी।”
15 इसलिए यीशु यह जानते हुए कि
वे उसे ज़बरदस्ती राजा बनाने के लिए
पकड़ने आ रहे हैं, फिर से पहाड़ पर
अकेला चला गया।

16 जब शाम हुई तो उसके चेले
झील के किनारे गए। **17** वे एक नाव
पर चढ़कर झील के उस पार कफर-
नहूम के लिए रवाना हो गए। इस वक्त
अंधेरा हो गया था और यीशु तब तक
उनके पास नहीं पहुँचा था। **18** साथ
ही, आँधी की वजह से झील में ऊँची-
ऊँची लहरें उठने लगीं। **19** लेकिन
जब चेले करीब पाँच-छः किलोमीटर*
तक नाव खे चुके थे, तो उन्होंने यीशु को
झील पर चलते हुए नाव की तरफ आते
देखा। यह देखकर वे डर के मारे थर-
थराने लगे। **20** मगर यीशु ने उनसे
कहाः “डरो मत, मैं ही हूँ!” **21** इस-
लिए वे उसे नाव में चढ़ाने के लिए तैयार
हो गए और जल्द ही नाव उस जगह
किनारे जा लगी जहाँ वे जाने की कोशिश
कर रहे थे।

22 अगले दिन, झील के उस पार
खड़ी भीड़ ने देखा कि वहाँ एक छोटी
नाव को छोड़ और कोई नाव नहीं है और
यीशु अपने चेलों के साथ नाव पर नहीं
गया बल्कि सिर्फ चेले वहाँ से चले गए हैं।
23 लेकिन तब तिबिरियास से कुछ नाव
उस जगह के पास आयीं जहाँ उन्होंने वे
रोटियाँ खायी थीं जो प्रभु ने प्रार्थना
में धन्यवाद देने के बाद उन्हें दी थीं।
24 इसलिए जब भीड़ ने देखा कि वहाँ
न तो यीशु न ही उसके चेले मौजूद हैं, तो
वे अपनी छोटी नावों में सवार होकर यीशु
को ढूँढ़ने के लिए कफरनहूम आ गए।

यूह 6:19* शाब्दिक, “25 से 30 *स्तादिया।*” एक *स्तादियोन* करीब 185 मीटर के बराबर था।

25 जब उन्होंने उसे झील के इस पार
देखा तो उससे कहाः “गुरु, तू यहाँ कब
आया?” **26** जवाब में यीशु ने उनसे
कहाः “मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ कि
तुम मुझे इसलिए नहीं ढूँढ़ रहे हो कि
तुमने चमत्कार देखे थे बल्कि इसलिए
कि तुमने रोटियाँ खायी थीं और अपनी
भूख मिटायी थी। **27** उस खाने के
लिए काम मत करो जो मिट जाता है,
बल्कि उस खाने के लिए काम करो जो
कायम रहता है और हमेशा की ज़िंदगी
देता है, जो खाना तुम्हें इंसान का बेटा
देगा। क्योंकि पिता यानी परमेश्वर ने भी
उसी बेटे पर अपनी मंज़ूरी की मुहर
लगायी है।”

28 इसलिए उन्होंने उससे कहाः “हम
परमेश्वर की मंज़ूरी पाने के लिए क्या
काम करें?” **29** जवाब में यीशु ने
उनसे कहाः “परमेश्वर की मंज़ूरी पाने के
लिए तुम उस पर विश्वास दिखाओ जिसे
उसने भेजा है।” **30** तब उन्होंने कहाः
“फिर तू हमें क्या चमत्कार दिखानेवाला
है कि हम देखें और तेरा यकीन करें?
तू कौन-सा काम करने जा रहा है?
31 हमारे बापदादों ने तो वीराने में मन्ना
खाया था, ठीक जैसा लिखा है, ‘उसने
उन्हें खाने के लिए स्वर्ग से रोटी दी।’”
32 इस पर यीशु ने उनसे कहाः “मैं
तुमसे सच-सच कहता हूँ कि मूसा ने तुम्हें
स्वर्ग की रोटी नहीं दी थी, मगर मेरा
पिता ज़रूर तुम्हें स्वर्ग की सच्ची रोटी
देता है। **33** इसलिए कि वह पर-
मेश्वर की रोटी है जो स्वर्ग से नीचे आता
है और दुनिया को जीवन देता है।”
34 तब लोगों ने कहाः “प्रभु, हमें यह
रोटी हमेशा दिया कर।”

35 यीशु ने उनसे कहाः “मैं जीवन
देनेवाली रोटी हूँ। जो मेरे पास आता है
वह फिर कभी भूखा नहीं होगा, और जो
मुझमें विश्वास दिखाता है वह कभी-भी
प्यासा नहीं होगा। **36** मगर जैसा मैं
पहले तुम्हें बता चुका हूँ कि तुम मुझे
देखने पर भी मेरा यकीन नहीं करते।
37 हर कोई जिसे पिता ने मुझे दिया है,
मेरे पास आएगा और जो मेरे पास
आता है मैं उसे हरगिज़ खुद से दूर
नहीं करूँगा। **38** क्योंकि मैं अपनी
मरज़ी नहीं बल्कि उसकी मरज़ी पूरी करने
स्वर्ग से नीचे आया हूँ जिसने मुझे भेजा
है। **39** जिसने मुझे भेजा है, उसकी
मरज़ी यह है कि उसने जितनों को मुझे
दिया है, उनमें से एक को भी न खोऊँ,
बल्कि आखिरी दिन में उसे जी उठाऊँ।
40 मेरे पिता की मरज़ी यह है कि जो
कोई बेटे को देखता है और उसमें विश्वास
दिखाता है उसे हमेशा की ज़िंदगी मिले
और मैं उसे आखिरी दिन में जी उठा-
ऊँगा।”

41 इसलिए यहूदी उस पर कुड़कुड़ाने
लगे क्योंकि उसने कहा थाः “मैं वह
रोटी हूँ जो स्वर्ग से नीचे उतरी है।”
42 वे कहने लगेः “क्या यह यूसुफ
का बेटा यीशु नहीं जिसके माता-पिता
को हम जानते हैं? तो फिर यह अब
क्यों कहता है कि ‘मैं स्वर्ग से नीचे आया

हूँ'?" **43** जवाब में यीशु ने उनसे
कहा: "आपस में कुड़कुड़ाना बंद करो।
44 कोई भी इंसान मेरे पास तब तक
नहीं आ सकता जब तक कि पिता, जिसने
मुझे भेजा है, उसे मेरे पास खींच न लाए।
और मैं उसे आखिरी दिन में जी उठा-
ऊँगा। **45** भविष्यवक्ताओं के लेखों
में यह लिखा है, 'वे सब यहोवा के सिखाए
हुए होंगे।' हर कोई जिसने पिता से सुना
है और सीखा है, वह मेरे पास आता है।
46 किसी इंसान ने पिता को कभी नहीं
देखा है सिवा मेरे, मैं जो परमेश्‍वर की
तरफ से आया हूँ। सिर्फ मैंने पिता को
देखा है। **47** मैं तुमसे सच-सच कहता
हूँ कि जो मुझ पर यकीन करता है, हमेशा
की ज़िंदगी उसकी है।

48 मैं जीवन देनेवाली रोटी हूँ।
49 तुम्हारे बापदादों ने वीराने में मन्‍ना
खाया था और फिर भी मर गए।
50 मगर जो कोई उस रोटी से खाता है
जो स्वर्ग से उतरी है, वह नहीं मरेगा।
51 मैं वह जीवित रोटी हूँ जो स्वर्ग से
उतरी है। अगर कोई इस रोटी में से खाता
है तो वह हमेशा तक ज़िंदा रहेगा। और
दरअसल जो रोटी मैं दूँगा वह मेरा शरीर
है जो मैं दुनिया के जीवन की खातिर
देता हूँ।"

52 इसलिए यहूदी आपस में एक-
दूसरे से तकरार करने लगे: "यह आदमी
भला कैसे अपना शरीर हमें खाने के लिए
दे सकता है?" **53** तब यीशु ने उनसे
कहा: "मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ कि
जब तक तुम इंसान के बेटे का माँस
न खाओ और उसका लहू न पीओ,
तुममें जीवन नहीं। **54** जो मेरे शरीर
में से खाता है और मेरे लहू में से
पीता है, हमेशा की ज़िंदगी उसकी है,
और मैं आखिरी दिन उसे जी उठाऊँगा।
55 इसलिए कि मेरा शरीर असली खाना
है और मेरा लहू पीने की असली चीज़
है। **56** जो मेरे शरीर में से खाता है
और मेरे लहू में से पीता है, वह मेरे साथ
एकता में बना रहता है और मैं उसके साथ
एकता में बना रहता हूँ। **57** ठीक
जैसे जीवित पिता ने मुझे भेजा है और
मैं पिता की वजह से जीता हूँ, वैसे ही
जो मुझमें से खाता है वह भी मेरी वजह
से जीएगा। **58** यह वह रोटी है जो
स्वर्ग से नीचे उतरी है। यह वैसी नहीं
जैसी तुम्हारे बापदादों ने खायी और फिर
भी मर गए। जो इस रोटी में से खाता
है, वह हमेशा जीता रहेगा।" **59** ये
बातें उसने कफरनहूम में उस वक्‍त कही
थीं जब वह एक जन-सभा में सिखा
रहा था।

60 इसलिए जब उसके चेलों में से
बहुतों ने यह सुना तो वे कहने लगे: "यह
बात कितनी घिनौनी है, भला कौन इसे
सुन सकता है?" **61** मगर यीशु ने
मन में यह जानते हुए कि उसके चेले इस
बारे में कुड़कुड़ा रहे हैं, उनसे कहा:
"क्या तुम्हें इस बात से ठेस पहुँची है?
62 तो फिर तब क्या होगा जब तुम
इंसान के बेटे को वहाँ ऊपर जाता देखो
जहाँ वह पहले था? **63** परमेश्‍वर की
पवित्र शक्‍ति है जो ज़िंदगी देती है, शरीर
किसी काम का नहीं। जो बातें मैंने तुमसे

कही हैं, वे परमेश्‍वर की पवित्र शक्‍ति से
हैं और ज़िंदगी देती हैं। **64** मगर
तुम में से कुछ ऐसे हैं जो मेरी बात
पर यकीन नहीं करते।" इसलिए कि
यीशु शुरूआत से जानता था कि वे
कौन हैं जो यकीन नहीं करते और वह
कौन है जो उसे धोखे से पकड़वाएगा।
65 तब वह उनसे कहने लगा: "इसी-
लिए मैंने तुमसे कहा था कि कोई भी तब
तक मेरे पास नहीं आ सकता जब तक
कि पिता उसे इजाज़त न दे।"

66 इस वजह से उसके बहुत-से चेलों
ने उसके पीछे चलना छोड़ दिया और
वापस उन कामों में लग गए जिन्हें वे पीछे
छोड़ आए थे। **67** इसलिए यीशु ने
उन बारहों से कहा: "क्या तुम भी चले
जाना चाहते हो?" **68** शमौन पत-
रस ने जवाब दिया: "प्रभु, हम किसके
पास जाएँ? हमेशा की ज़िंदगी की बातें
तो तेरे ही पास हैं। **69** हमने यकीन
किया है और जाना है कि तू परमेश्‍वर
का पवित्र जन है।" **70** जवाब में
यीशु ने उनसे कहा: "मैंने तुम बारहों को
चुना था न? मगर तुम में से एक बद-
नाम करनेवाला* है।" **71** दरअसल
वह शमौन इस्करियोती के बेटे यहूदा की
बात कर रहा था, क्योंकि वही था जो
उन बारहों में से एक होते हुए भी उसे
धोखे से पकड़वानेवाला था।

7 इन बातों के बाद, यीशु ने गलील
का दौरा करना जारी रखा, इसलिए
कि वह यहूदिया नहीं जाना चाहता था
क्योंकि यहूदी उसे मार डालने की ताक में
थे। **2** यहूदियों का मंडपों का त्योहार
पास था। **3** इसलिए यीशु के भाइयों
ने उससे कहा: "यहाँ से निकलकर यहू-
दिया जा, ताकि तेरे सभी चेले उन कामों
को देख सकें जो तू करता है। **4** इस-
लिए कि कोई भी इंसान जो चाहता है कि
सब लोग उसे जानें, वह छिपकर काम
नहीं करता। अगर तू ये काम करता है,
तो खुद को दुनिया के सामने ज़ाहिर
कर।" **5** दरअसल, उसके भाई उस
पर विश्‍वास नहीं दिखाते थे। **6** इस-
लिए यीशु ने उनसे कहा: "मेरे लिए तय
वक्‍त अभी तक नहीं आया है, मगर
तुम्हारा वक्‍त तो हमेशा है। **7** दुनिया
के पास तुमसे नफरत करने की कोई
वजह नहीं है, मगर यह मुझसे नफरत
करती है, क्योंकि मैं इसके बारे में गवाही
देता हूँ कि इसके काम दुष्ट हैं। **8** तुम
त्योहार के लिए जाओ। मैं इस त्योहार
के लिए अभी नहीं जा रहा, क्योंकि मेरे
लिए तय वक्‍त अभी पूरी तरह नहीं आया
है।" **9** उनसे यह कहने के बाद, वह
गलील में ही रहा।

10 मगर जब उसके भाई त्योहार
के लिए चले गए तो उसके बाद वह
खुद भी गया। लेकिन वह सरेआम नहीं
बल्कि छिपकर गया। **11** इसलिए
त्योहार के दौरान यहूदी यह कहते हुए
उसे ढूँढ़ने लगे: "वह आदमी कहाँ
है?" **12** लोगों के बीच उसे लेकर
बहुत-सी दबी-दबी बातें हो रही थीं।
कुछ कहते थे: "वह अच्छा आदमी है।"

यूह 6:70* यूनानी में *"दियाबोलोस,"* जिसका मत-
लब है "निंदा करनेवाला।"

दूसरे कहते थेः “नहीं, वह अच्छा आदमी
नहीं है, बल्कि लोगों को गुमराह करता
है।” **13** मगर यहूदियों के डर से कोई
भी सरेआम उसके बारे में बात नहीं
करता था।

14 जब त्योहार के आधे दिन
बीत चुके थे, तो यीशु मंदिर में
गया और सिखाने लगा। **15** इसलिए
यहूदी ताज्जुब करने लगे और कहने
लगेः “इस आदमी को इतना ज्ञान और
शिक्षा कहाँ से मिली, जबकि इसने धर्म-
गुरुओं के स्कूलों में पढ़ाई नहीं की है?”
16 जवाब में यीशु ने उनसे कहाः “जो
मैं सिखाता हूँ वह मेरी तरफ से नहीं बल्कि
उसकी तरफ से है जिसने मुझे भेजा है।
17 अगर कोई उसकी मरज़ी पूरी करना
चाहता है, तो वह इस शिक्षा के बारे में
जान जाएगा। वह जान जाएगा कि यह
परमेश्वर की तरफ से है या मैं अपने
विचार सिखा रहा हूँ। **18** जो अपने
विचार सिखाता है, वह अपनी ही बड़ाई
चाहता है। मगर वह जो अपने भेजने-
वाले की बड़ाई चाहता है वह सच्चा है
और उसमें झूठ नहीं। **19** मूसा ने
तुम्हें कानून दिया था न? लेकिन तुममें से
एक भी उस कानून पर नहीं चलता।
तुम मुझे क्यों मार डालना चाहते हो?”
20 भीड़ ने उसे जवाब दियाः “तेरे अंदर
दुष्ट स्वर्गदूत है। कौन तुझे मार डालना
चाहता है?” **21** जवाब में यीशु ने
उनसे कहाः “मैंने बस एक काम किया
और तुम सब ताज्जुब कर रहे हो।
22 इसलिए इस बात पर गौर करो, मूसा
ने तुम्हें खतने की आज्ञा दी थी (वह आज्ञा
मूसा के वक्त से नहीं, बल्कि हमारे बाप-
दादों के वक्त से थी), और तुम सब्त के
दिन भी आदमी का खतना करते हो।
23 अगर एक आदमी का सब्त के दिन
इसलिए खतना किया जाता है कि मूसा
के कानून की आज्ञा न टूटे, तो क्या
तुम इस बात को लेकर मुझ पर आग-
बबूला हो रहे हो कि मैंने सब्त के दिन एक
इंसान को पूरी तरह तंदुरुस्त किया है?
24 इंसान की सूरत देखकर न्याय करना
बंद करो, बल्कि सच्चाई से न्याय करो।”

25 इसलिए यरूशलेम के कुछ रहने-
वाले कहने लगेः “यह वही आदमी
है न जिसे वे मार डालना चाहते हैं?
26 फिर भी देखो! वह लोगों के सामने
खुल्लमखुल्ला बातें कर रहा है और वे
उसे कुछ भी नहीं कहते। कहीं ऐसा तो
नहीं कि धर्म-अधिकारियों को पक्के तौर
पर मालूम हो गया है कि यही मसीह है?
27 मगर दूसरी तरफ, हम जानते हैं कि
यह आदमी कहाँ का है। लेकिन जब
मसीह आएगा तो कोई नहीं जान पाएगा
कि वह कहाँ का है।” **28** इसलिए
यीशु ने मंदिर में सिखाते वक्त ज़ोर से
पुकारकर कहाः “तुम मुझे जानते हो और
यह भी जानते हो कि मैं कहाँ का हूँ। मैं
अपनी मरज़ी से नहीं आया, बल्कि जिसने
मुझे भेजा है वह सचमुच वजूद में है, और
तुम उसे नहीं जानते। **29** मगर मैं उसे
जानता हूँ, क्योंकि मैं उसका भेजा हुआ
प्रतिनिधि हूँ और उसी ने मुझे भेजा है।”

30 तब वे उसे किसी तरह पकड़ने का
मौका ढूँढ़ने लगे, मगर किसी ने भी उस
पर हाथ नहीं डाले क्योंकि उसके लिए
तय किया हुआ वक्त अभी तक नहीं
आया था। **31** फिर भी, भीड़ में से
बहुतों ने उस पर विश्वास किया और यह
कहने लगे: "इस आदमी ने इतने चमत्कार
दिखाए हैं, जितने कि मसीह आने पर
दिखाता।"

32 फरीसियों ने सुना कि भीड़ के
लोग उसके बारे में ये बातें बुदबुदा रहे
हैं। तब प्रधान याजकों और फरीसियों ने
पहरेदार भेजे ताकि वे यीशु को पकड़
सकें। **33** तब यीशु ने कहा: "जिसने
मुझे भेजा है उसके पास जाने से पहले मैं
तुम्हारे साथ थोड़ा वक्त और रहूँगा।
34 तुम मुझे ढूँढ़ोगे मगर नहीं पाओगे,
और जहाँ मैं हूँ वहाँ तुम नहीं आ सकते।"
35 इसलिए यहूदी आपस में कहने लगे:
"यह आदमी कहाँ जाना चाहता है जिससे
हम उसे ढूँढ़ न सकेंगे? यह उन यहू-
दियों के पास तो नहीं जाना चाहता जो
यूनानियों के बीच तित्तर-बित्तर होकर
रहते हैं? कहीं यह यूनानियों को तो नहीं
सिखाना चाहता? **36** इस बात का
क्या मतलब है जो उसने कही, 'तुम मुझे
ढूँढ़ोगे मगर नहीं पाओगे और जहाँ मैं हूँ
वहाँ तुम नहीं आ सकते।' ?"

37 फिर त्योहार के आखिरी दिन
जो सबसे खास दिन होता है, यीशु
खड़ा हुआ और उसने पुकारकर कहा:
"अगर कोई प्यासा हो तो मेरे पास
आए और पानी पीए। **38** जो मुझमें
विश्वास करता है, 'उसके दिल की गह-
राइयों से जीवन देनेवाले पानी की धाराएँ
बहेंगी,' जैसा शास्त्र में भी कहा गया है।"
39 यह बात उसने पवित्र शक्ति के बारे
में कही जो यीशु पर विश्वास करनेवालों
को मिलनेवाली थी। इसलिए कि तब
तक उन्होंने पवित्र शक्ति नहीं पायी थी,
क्योंकि तब तक यीशु को महिमा नहीं
मिली थी। **40** इसलिए भीड़ के कुछ
लोगों ने जब ये बातें सुनीं, तो वे कहने
लगे: "यह वाकई वह भविष्यवक्ता है जो
आनेवाला था।" **41** दूसरे कह रहे थे:
"यही मसीह है।" मगर कुछ और कह
रहे थे: "मसीह असल में गलील से नहीं
आनेवाला। **42** क्या शास्त्र यह नहीं
कहता कि मसीह दाविद के वंश से और
उस बेतलेहेम गाँव से आएगा जहाँ दाविद
रहा करता था?" **43** इसलिए यीशु
की वजह से भीड़ में फूट पड़ गयी।
44 उनमें से कुछ उसे पकड़ना चाहते थे,
फिर भी किसी ने उस पर हाथ न डाले।

45 इसलिए जब पहरेदार, प्रधान
याजकों और फरीसियों के पास खाली
हाथ लौट आए, तो उन्होंने उनसे पूछा:
"तुम उसे पकड़कर क्यों नहीं लाए?"
46 पहरेदारों ने उन्हें जवाब दिया:
"आज तक किसी भी इंसान ने इस तरह
बात नहीं की जिस तरह वह करता है।"
47 तब फरीसियों ने उनसे कहा: "क्या
तुम भी गुमराह हो गए? **48** क्या
धर्म-अधिकारियों और फरीसियों में से
एक ने भी उस पर विश्वास किया है?
49 मगर ये लोग जो कानून की रत्ती

भर भी समझ नहीं रखते, शापित लोग
हैं।” 50 तब नीकुदेमुस ने जो इन
धर्म-अधिकारियों में से एक था और पहले
यीशु के पास आया था, उनसे कहाः
51 “हमारा कानून तब तक एक आदमी
को दोषी नहीं ठहराता जब तक कि पहले
उसकी सुन न ले और यह जान न ले कि
वह क्या कर रहा है। क्या ऐसा नहीं है?”
52 जवाब में उन्होंने नीकुदेमुस से कहाः
“कहीं तू भी तो गलील का नहीं? शास्त्र
में ढूँढ़ और देख कि कोई भी भविष्य-
वक्ता गलील से नहीं आएगा।”*

8 12 इसलिए यीशु ने फिर लोगों से
बात की और कहाः “मैं दुनिया की
रौशनी हूँ। जो मेरे पीछे चलता है वह
हरगिज़ अंधकार में न चलेगा, मगर
ज़िंदगी की रौशनी उसके पास होगी।”
13 इसलिए फरीसियों ने उससे कहाः
“तू खुद अपने बारे में गवाही देता है,
इसलिए तेरी गवाही सच्ची नहीं है।”
14 जवाब में यीशु ने उनसे कहाः “अगर
मैं अपने बारे में खुद गवाही देता हूँ, तो
भी मेरी गवाही सच्ची है, क्योंकि मैं
जानता हूँ कि मैं कहाँ से आया हूँ और
कहाँ जा रहा हूँ। मगर तुम नहीं जानते
कि मैं कहाँ से आया हूँ और कहाँ जा रहा
हूँ। 15 तुम इंसानी नज़रिए से न्याय
करते हो, मगर मैं किसी का न्याय नहीं
करता। 16 और अगर न्याय करता
भी हूँ, तो मेरा न्याय सच्चा है, क्योंकि
मैं अकेला नहीं हूँ बल्कि पिता मेरे साथ
है जिसने मुझे भेजा है। 17 साथ ही

---

* कोडेक्स साइनाइटिकस, कोडेक्स वैटिकेनस और साइनाइटिक सिरियक कोडेक्स हस्तलिपियों में
7:53 से 8:11 तक की आयतें नहीं हैं। (अलग-अलग यूनानी पाठ और अनुवादों में थोड़े-बहुत
अंतर के साथ) इन आयतों में यूँ लिखा हैः
53 इसलिए वे अपने-अपने घर लौट गए।

8 मगर यीशु जैतून पहाड़ पर चला गया। 2 लेकिन, सुबह होने पर वह फिर मंदिर में आया
और सब लोग उसके पास आने लगे। वह बैठ गया और उन्हें सिखाने लगा। 3 तब
शास्त्री और फरीसी एक स्त्री को ले आए जो किसी गैर-आदमी के साथ व्यभिचार करते
पकड़ी गयी थी। उन्होंने उस स्त्री को बीच में खड़ा करने के बाद 4 यीशु से कहाः “हे गुरु,
यह स्त्री किसी गैर-आदमी के साथ संभोग करते पकड़ी गयी है। 5 मूसा ने कानून में हमें यह
बताया है कि ऐसी स्त्रियों को पत्थरवाह कर मार डालना चाहिए। तू इस बारे में क्या कहता है?”
6 बेशक, उन्होंने यह बात उसकी परीक्षा करने के लिए कही थी, ताकि उन्हें उस पर इलज़ाम
लगाने की कोई वजह मिल जाए। मगर यीशु झुककर उंगली से ज़मीन पर कुछ लिखने लगा।
7 मगर जब वे उससे पूछते ही रहे, तो उसने सीधे होकर उनसे कहाः “तुममें से जो पापी न हो,
वह सबसे पहले इसे पत्थर मारे।” 8 और यह कहकर वह फिर से झुककर ज़मीन पर लिखता
रहा। 9 मगर उसकी यह बात सुनकर, बड़ों से लेकर छोटों तक, एक-एक कर सभी वहाँ से
जाने लगे और वह अकेला रह गया और वह स्त्री भी रह गयी जो उनके बीच खड़ी थी। 10 तब
यीशु ने सीधे होकर उस स्त्री से कहाः “हे स्त्री, वे लोग कहाँ गए? क्या किसी ने भी तुझे सज़ा के
लायक नहीं ठहराया?” 11 स्त्री ने कहाः “नहीं साहब, किसी ने नहीं।” यीशु ने कहाः “न ही
मैं तुझे सज़ा के लायक ठहराऊँगा। चली जा, लेकिन फिर से पाप में न लग जाना।”

तुम्हारे अपने कानून में यह लिखा है: 'दो
लोगों की गवाही सच्ची मानी जाए।'
18 एक मैं खुद हूँ जो अपने बारे में
गवाही देता हूँ, और दूसरा पिता है जिसने
मुझे भेजा है, वह मेरे बारे में गवाही देता
है।" **19** इसलिए वे उससे कहने लगे:
"कहाँ है तेरा पिता?" यीशु ने जवाब
दिया: "तुम न तो मुझे, न ही मेरे पिता
को जानते हो। अगर तुम मुझे जानते,
तो मेरे पिता को भी जानते।" **20** ये
बातें उसने मंदिर में सिखाते वक्त खज़ाने
के भवन के अहाते में कही थीं। मगर
किसी ने उसे नहीं पकड़ा, क्योंकि उसका
वक्त अभी नहीं आया था।

21 यीशु ने एक बार फिर उनसे
कहा: "मैं जा रहा हूँ और तुम मुझे ढूँढ़ोगे,
मगर फिर भी अपनी पापी हालत में
मरोगे। जहाँ मैं जा रहा हूँ वहाँ तुम नहीं
आ सकते।" **22** इसलिए यहूदी कहने
लगे: "क्या यह खुद को मार डालेगा?
क्योंकि यह कहता है: 'जहाँ मैं जा रहा हूँ
वहाँ तुम नहीं आ सकते।'" **23** इस-
लिए वह उनसे कहने लगा: "तुम नीचे के
हो, मैं ऊपर का हूँ। तुम इस दुनिया के
हो, मैं इस दुनिया का नहीं। **24** इस-
लिए मैंने तुमसे कहा कि तुम अपनी पापी
हालत में मरोगे। क्योंकि अगर तुम इस
बात पर यकीन नहीं करते कि मैं वही हूँ
तो तुम अपनी पापी हालत में मरोगे।"
25 तब वे उससे कहने लगे: "तू है
कौन?" यीशु ने उनसे कहा: "आखिर मैं
तुमसे अब तक बात कर ही क्यों रहा हूँ,
जबकि तुम्हें मेरी बात समझ ही नहीं
आती? **26** तुम्हारे बारे में मुझे बहुत-
सी बातें कहनी हैं, साथ ही बहुत-से
मामलों का न्याय करना है। सच तो यह
है कि जिसने मुझे भेजा है वह सच्चा है
और जो बातें मैंने उससे सुनीं, वही मैं
दुनिया में बता रहा हूँ।" **27** वे समझ
न सके कि यीशु उनसे पिता के बारे
में बात कर रहा है। **28** इसलिए यीशु
ने कहा: "जब एक बार तुम इंसान के
बेटे को ऊँचे पर चढ़ा चुके होगे, तो तुम
जान लोगे कि मैं वही हूँ और मैं अपनी
पहल पर कुछ भी नहीं करता, बल्कि
जैसा पिता ने मुझे सिखाया है मैं ये बातें
बताता हूँ। **29** जिसने मुझे भेजा है
वह मेरे साथ है। उसने मुझे अकेला नहीं
छोड़ा, क्योंकि मैं हमेशा वही करता हूँ
जिससे वह खुश होता है।" **30** जब
वह ये बातें बोल रहा था, तो बहुतों ने
उस पर विश्वास किया।

31 तब यीशु उन यहूदियों से जिन्होंने
उस पर यकीन किया था, कहने लगा:
"अगर तुम मेरी शिक्षा में बने रहते
हो, तो तुम सचमुच मेरे चेले हो।
32 तुम सच्चाई को जानोगे और सच्चाई
तुम्हें आज़ाद करेगी।" **33** उन्होंने उसे
जवाब दिया: "हम अब्राहम के वंशज हैं
और कभी-भी किसी के गुलाम नहीं रहे।
तो फिर तू कैसे कहता है कि 'तुम
आज़ाद हो जाओगे।'?" **34** यीशु ने
उन्हें जवाब दिया: "मैं तुमसे सच-सच
कहता हूँ, हर कोई जो पाप करता है वह
पाप का गुलाम है। **35** और गुलाम

घर में हमेशा नहीं रहता, मगर बेटा हमेशा
तक रहता है। **36** इसलिए अगर बेटा
तुम्हें आज़ाद करे, तो तुम सचमुच आज़ाद
हो जाओगे। **37** मैं जानता हूँ कि तुम
अब्राहम के वंशज हो, मगर तुम मुझे मार
डालने की ताक में हो, क्योंकि मेरी
बातें तुम्हारे दिलों में जड़ नहीं पकड़तीं।
38 मैंने अपने पिता के यहाँ जो देखा है
मैं वही कहता हूँ। जबकि तुम वही करते
हो जो तुमने अपने पिता से सुना है।”
39 यहूदियों ने उसे जवाब दियाः “हमारा
पिता तो अब्राहम है।” यीशु ने उनसे
कहाः “अगर तुम अब्राहम के वंशज
हो, तो अब्राहम के जैसे काम करो।
40 मगर तुम मुझे, एक ऐसे इंसान को
मार डालने की ताक में हो, जिसने तुम्हें
वह सच्चाई बतायी है जो मैंने परमेश्वर
से सुनी है। अब्राहम ने तो ऐसा नहीं किया
था। **41** तुम अपने पिता जैसे काम
करते हो।” उन्होंने कहाः “हम व्यभिचार
से पैदा नहीं हुए। हमारा एक ही पिता
है, परमेश्वर।”

42 यीशु ने उनसे कहाः “अगर पर-
मेश्वर तुम्हारा पिता होता, तो तुम मुझसे
प्यार करते, क्योंकि मैं परमेश्वर की तरफ
से भेजा गया हूँ और यहाँ हूँ। मैं अपनी
मरज़ी से नहीं आया, बल्कि उसी ने मुझे
भेजा है। **43** क्या वजह है कि मैं जो
बोल रहा हूँ वह तुम नहीं जानते? इसलिए
कि तुम मेरी बातों को स्वीकार नहीं कर
सकते। **44** तुम अपने पिता शैतान से
हो और अपने पिता की ख्वाहिशों को पूरा
करना चाहते हो। वह शुरूआत से ही
हत्यारा है और सच्चाई में टिका न रहा,
क्योंकि सच्चाई उसमें है ही नहीं। जब वह
झूठ बोलता है तो अपनी फितरत के मुता-
बिक ही बोलता है, क्योंकि वह झूठा है
और झूठ का पिता है। **45** दूसरी
तरफ, क्योंकि मैं तुम्हें सच्चाई बताता हूँ,
तुम मेरा यकीन नहीं करते। **46** तुममें
से कौन है जो यह साबित करे कि मैं
पापी हूँ? और अगर मैं सच बोल रहा हूँ,
तो फिर तुम मेरा यकीन क्यों नहीं करते?
47 जो परमेश्वर की तरफ से है वह
परमेश्वर की बातें सुनता है। तुम इसी-
लिए मेरी बात नहीं सुनते, क्योंकि तुम
परमेश्वर की तरफ से नहीं हो।”

48 जवाब में यहूदियों ने उससे कहाः
“क्या हम सही नहीं कहते कि तू एक
सामरी है और तेरे अंदर एक दुष्ट स्वर्ग-
दूत है?” **49** यीशु ने जवाब दियाः
“मेरे अंदर कोई दुष्ट स्वर्गदूत नहीं, मगर
मैं अपने पिता का आदर करता हूँ, और
तुम मेरा निरादर करते हो। **50** मैं
अपने लिए महिमा नहीं चाहता, मगर एक
है जो मेरे लिए यह चाहता है और
वही न्यायी है। **51** मैं तुमसे सच-सच
कहता हूँ, अगर कोई मेरे वचन पर चलता
है, तो वह कभी-भी मौत का मुँह न
देखेगा।” **52** यहूदियों ने उससे कहाः
“अब हम जान गए हैं कि तेरे अंदर
एक दुष्ट स्वर्गदूत है। अब्राहम मर गया
और भविष्यवक्ता भी मर गए। मगर तू
कहता है, ‘अगर कोई मेरे वचनों पर
चलता है, तो वह कभी-भी मौत का
स्वाद न चखेगा।’ **53** क्या तू हमारे

पिता अब्राहम से भी बढ़कर है? वह
तो मर गया और भविष्यवक्ता भी मर
गए। तू कौन होने का दावा करता है?”
54 यीशु ने जवाब दियाः “अगर मैं
अपनी महिमा करूँ, तो मेरी महिमा कुछ
भी नहीं। मगर मेरा पिता है जो मेरी
महिमा करता है, वही जिसके बारे में तुम
कहते हो कि वह तुम्हारा परमेश्वर है
55 और फिर भी तुमने उसे नहीं जाना
है। मगर मैं उसे जानता हूँ। और अगर
मैं यह कहूँ कि मैं उसे नहीं जानता,
तो मैं तुम्हारे जैसा ठहरूँगा, यानी एक
झूठा। मगर मैं उसे जानता हूँ और उसके
वचन पर चलता हूँ। **56** तुम्हारा पिता
अब्राहम मेरा दिन देखने की आशा से
बेहद खुश था और उसने उसे देखा भी
और बहुत खुश हुआ।” **57** इसलिए
यहूदियों ने उससे कहाः “तू अब तक
पचास साल का भी नहीं हुआ और
फिर भी तू ने अब्राहम को देखा है?”
58 यीशु ने उनसे कहाः “मैं तुमसे सच-
सच कहता हूँ, इससे पहले कि अब्राहम
वजूद में आया, मेरा वजूद रहा है।”
59 इस पर उन्होंने यीशु को मारने के
लिए पत्थर उठा लिए। मगर वह छिप
गया और मंदिर से बाहर निकल गया।

9 जब यीशु जा रहा था, तो उसने
एक आदमी को देखा जो जन्म से
अंधा था। **2** तब चेलों ने उससे पूछाः
“गुरु,* किसने पाप किया कि यह अंधा
पैदा हुआ। इसने या इसके माता-पिता
ने?” **3** यीशु ने जवाब दियाः “न तो
इस आदमी ने पाप किया, न इसके माता-
पिता ने, मगर यह इसलिए था कि इसके
मामले में परमेश्वर के काम ज़ाहिर हों।
4 जिसने मुझे भेजा है उसके काम हमें
दिन रहते ही कर लेने चाहिए। वह
रात आ रही है जब कोई आदमी काम
न कर सकेगा। **5** जब तक मैं दुनिया
में हूँ, मैं दुनिया की रौशनी हूँ।” **6** ये
बातें कहने के बाद, उसने ज़मीन पर
थूका और थूक से मिट्टी सानकर लेप
बनाया और उस अंधे की आँखों पर
लगाया **7** और उससे कहाः “जा और
जाकर सिलोम के कुंड में धो ले” (सिलोम
का मतलब है, ‘भेजा हुआ’)। उसने
जाकर धोया और देखता हुआ लौटा।

8 इसलिए उस आदमी के पड़ोसी
और वे लोग जो उसे पहले भीख माँगते
देखा करते थे, कहने लगेः “क्या यह वही
आदमी नहीं, जो पहले बैठकर भीख माँगा
करता था?” **9** कुछ कहते थेः “यह
वही है।” दूसरे कहते थेः “नहीं, नहीं,
यह वह नहीं है, मगर उसी के जैसा
दिखता है।” वह आदमी कहता थाः
“मैं वही हूँ।” **10** तब वे उससे पूछने
लगेः “फिर, तेरी आँखों की रौशनी कैसे
लौट आयी?” **11** उसने जवाब दियाः
“यीशु नाम के आदमी ने मिट्टी सानकर
मेरी आँखों पर लगायी और मुझसे कहा,
‘जाकर सिलोम में धो ले।’ मैं गया और
अपनी आँखें धोयीं और देखने लगा।”
12 इस पर वे उससे पूछने लगेः “कहाँ
है वह आदमी?” उसने कहाः “मैं नहीं
जानता।”

यूह 9:2* शाब्दिक, “रब्बी।”

13 तब वे लोग उस आदमी को,
जो पहले अंधा था फरीसियों के पास
ले गए। **14** इत्तफाक से, जिस दिन
यीशु ने मिट्टी का लेप लगाकर उसकी
आँखें खोली थीं, वह सब्त का दिन
था। **15** इसलिए, अब फरीसी भी उस
आदमी से पूछताछ करने लगे कि उसने
आँखों की रौशनी कैसे पायी। उस आदमी
ने कहा: “उसने मेरी आँखों पर मिट्टी का
लेप लगाया और मैंने धोया और देखने
लगा।” **16** इसलिए कुछ फरीसियों ने
कहा: “वह आदमी परमेश्वर की तरफ
से नहीं है, क्योंकि वह सब्त को नहीं
मानता।” मगर दूसरे कहने लगे: “एक
पापी भला इस तरह के चमत्कार कैसे
कर सकता है?” इसलिए उनके बीच फूट
पड़ गयी। **17** तब उन्होंने उस अंधे से
फिर कहा: “उसने तेरी आँखें खोली हैं, तू
उसके बारे में क्या कहता है?” उस आदमी
ने कहा: “उसे परमेश्वर ने भेजा है।”

18 मगर, जब तक यहूदियों ने उस
आदमी के माता-पिता को न बुला
लिया, तब तक इस बात का यकीन
नहीं किया कि वह पहले अंधा था और
अब उसने आँखों की रौशनी पायी है।
19 उन्होंने उसके माता-पिता से पूछा:
“क्या यह तुम्हारा बेटा है जिसके बारे में
तुम कहते हो कि यह अंधा पैदा हुआ
था? तो फिर, अब यह देखने कैसे लगा?”
20 जवाब में उसके माता-पिता ने कहा:
“हमें मालूम है कि यह हमारा बेटा है और
यह अंधा पैदा हुआ था। **21** मगर हमें
यह नहीं मालूम कि अब यह कैसे देखने
लगा है या किसने इसकी आँखों की
रौशनी लौटायी है। तुम उसी से पूछ लो।
वह बालिग है। उसे खुद अपने बारे
में बताना चाहिए।” **22** उसके माता-
पिता ने ये बातें इसलिए कहीं क्योंकि वे
यहूदी धर्म-अधिकारियों से डरते थे, इस-
लिए कि यहूदी पहले से तय कर चुके थे
कि अगर कोई यीशु को मसीह मानता है,
तो उसे सभा-घर से बेदखल कर दिया
जाए। **23** इसी वजह से उसके माता-
पिता ने कहा था: “वह बालिग है। उसी
से पूछो।”

24 तब उन्होंने उस आदमी को जो
पहले अंधा था, दूसरी बार बुलाया और
उससे कहा: “परमेश्वर को हाज़िर जान-
कर, सच-सच बोल। क्योंकि हम जानते हैं
कि वह आदमी पापी है।” **25** उसने
जवाब दिया: “वह पापी है या नहीं
यह तो मैं नहीं जानता। मैं तो बस
इतना जानता हूँ कि मैं पहले अंधा था,
मगर अब देखता हूँ।” **26** इसलिए
उन्होंने उससे पूछा: “उसने तेरे साथ क्या
किया? उसने तेरी आँखें कैसे खोलीं?”
27 उसने उन्हें जवाब दिया: “मैं तो तुम्हें
पहले ही बता चुका हूँ, मगर तुमने मेरी
बात नहीं सुनी। फिर तुम दूसरी बार क्यों
सुनना चाहते हो? कहीं तुम भी तो उसके
चेले नहीं बनना चाहते?” **28** इस पर
वे उसे बुरा-भला कहने लगे: “तू ही
उसका चेला है, मगर हम तो मूसा के चेले
हैं। **29** हम जानते हैं कि परमेश्वर ने
मूसा से बातें की थीं, मगर इस आदमी
के बारे में हम नहीं जानते कि यह कहाँ से

आया है।" **30** जवाब में उस आदमी
ने उनसे कहा: "यह तो वाकई कमाल की
बात है कि तुम नहीं जानते कि वह कहाँ
से आया है और फिर भी उसने मेरी आँखें
खोल दीं। **31** हम जानते हैं कि पर-
मेश्वर पापियों की नहीं सुनता, लेकिन
अगर कोई उसका डर मानता हो और
उसकी मरज़ी पूरी करता हो, तो वह
उसकी सुनता है। **32** दुनिया की शुरू-
आत से यह बात कभी सुनने में नहीं
आयी कि किसी ने जन्म के अंधे को
आँखों की रौशनी दी हो। **33** अगर
यह आदमी परमेश्वर की तरफ से नहीं
होता, तो कुछ भी नहीं कर सकता था।"
34 उन्होंने जवाब में उससे कहा: "तू
पूरा-का-पूरा पापों में जन्मा है और फिर
भी तू हमें सिखाने चला है?" और उन्होंने
उसे बेदखल कर दिया!

35 यीशु ने सुना कि उन्होंने उस
आदमी को निकालकर बाहर कर दिया
है। उससे मिलने पर यीशु ने कहा: "क्या
तू इंसान के बेटे पर विश्वास करता है?"
36 उस आदमी ने जवाब दिया: "साहब,
वह कौन है ताकि मैं उस पर विश्वास
कर सकूँ?" **37** यीशु ने उससे कहा:
"तू ने उसे देखा है। दरअसल वही तुझसे
बात कर रहा है।" **38** तब उसने
कहा: "प्रभु, मैं विश्वास करता हूँ," और
उसने झुककर यीशु को प्रणाम किया।
39 तब यीशु ने कहा: "मैं दुनिया में यह
न्याय करने आया हूँ: कि जो नहीं देखते
हैं वे देखें, और जो देखते हैं वे अंधे हो
जाएँ।" **40** जो फरीसी उसके साथ थे,
उन्होंने यह सुनकर उससे कहा: "क्या हम
भी अंधे हैं?" **41** यीशु ने उनसे कहा:
"अगर तुम अंधे होते, तो तुममें कोई पाप
न होता। मगर अब तुम कहते हो, 'हम
देखते हैं,' इसलिए तुम्हारा पाप बना
रहता है।"

10 "मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ कि
जो दरवाज़े से भेड़शाला में नहीं
आता मगर किसी और जगह से चढ़कर
आता है, वह एक चोर और लुटेरा
है। **2** मगर जो दरवाज़े से आता है,
वह भेड़ों का चरवाहा है। **3** दरबान
उसके लिए दरवाज़ा खोलता है और भेड़ें
उसकी आवाज़ सुनती हैं। वह अपनी
भेड़ों को नाम ले-लेकर बुलाता और
उन्हें बाहर ले जाता है। **4** जब चर-
वाहा अपनी सब भेड़ों को बाहर ले
आता है, तो वह उनके आगे-आगे चलता
है और भेड़ें उसके पीछे-पीछे चलती
हैं, क्योंकि वे उसकी आवाज़ पहचान-
ती हैं। **5** वे किसी अजनबी के पीछे
हरगिज़ नहीं जाएँगी बल्कि उससे दूर
भागेंगी, क्योंकि वे अजनबियों की आवाज़
नहीं पहचानतीं।" **6** यीशु ने उन्हें यह
तुलना बतायी, मगर वे नहीं जानते थे
कि वह जो बातें उनसे कह रहा है उसका
क्या मतलब है।

7 इसलिए यीशु ने एक बार फिर
कहा: "मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ कि मैं
भेड़ों के लिए दरवाज़ा हूँ। **8** जितने
भी ढोंगी मेरी जगह लेने आए वे
सब-के-सब चोर और लुटेरे हैं। मगर
भेड़ों ने उनकी नहीं सुनी। **9** मैं दर-

वाज़ा हूँ, जो कोई मुझसे होकर जाता
है वह उद्धार पाएगा और अंदर-बाहर
आया-जाया करेगा और चरागाह पाएगा।
10 चोर सिर्फ चोरी करने, हत्या करने
और तबाह करने आता है। मगर मैं इस-
लिए आया हूँ कि वे जीवन पाएँ और बहु-
तायत में पाएँ। **11** बेहतरीन चरवाहा
मैं हूँ। बेहतरीन चरवाहा भेड़ों की खातिर
अपनी जान दे देता है। **12** लेकिन
मज़दूरी पर रखा गया आदमी, चरवाहा
नहीं है और भेड़ें उसकी अपनी नहीं
होतीं। जब वह भेड़िए को आता देखता
है, तो भेड़ों को छोड़कर भाग जाता है,
(और भेड़िया, भेड़ों पर झपट पड़ता है
और उन्हें तित्तर-बित्तर कर देता है)
13 क्योंकि वह आदमी, मज़दूरी पर
रखा गया है और उसे भेड़ों की परवाह
नहीं होती। **14** अच्छा चरवाहा मैं हूँ,
और मैं अपनी भेड़ों को जानता हूँ और
मेरी भेड़ें मुझे जानती हैं, **15** ठीक
जैसे पिता मुझे जानता है और मैं पिता
को जानता हूँ। मैं अपनी भेड़ों की खातिर
अपनी जान देता हूँ।

16 मेरी दूसरी भेड़ें भी हैं जो इस
भेड़शाला की नहीं, मुझे उन्हें भी लाना है।
वे मेरी आवाज़ सुनेंगी और तब एक झुंड
और एक चरवाहा होगा। **17** पिता
इसीलिए मुझसे प्यार करता है क्योंकि मैं
अपनी जान देता हूँ ताकि उसे फिर से
पाऊँ। **18** कोई भी इंसान मुझसे मेरी
जान नहीं छीनता, मगर मैं खुद अपनी
मरज़ी से इसे देता हूँ। मुझे इसे देने का
अधिकार है और इसे दोबारा पाने का भी
अधिकार है। इसकी आज्ञा मुझे अपने
पिता से मिली है।"

19 इन बातों को लेकर यहूदियों
में एक बार फिर फूट पड़ गयी।
20 उनमें से बहुत-से कह रहे थे: "इसमें
दुष्ट स्वर्गदूत समाया हुआ है और यह
पागल है। तुम इसकी क्यों सुनते हो?"
21 दूसरे कहते थे: "ये बातें किसी ऐसे
आदमी की नहीं जिसमें दुष्ट स्वर्गदूत
समाया हो। क्या कोई दुष्ट स्वर्गदूत अंधों
की आँखें खोल सकता है?"

22 उस वक्त यरूशलेम में मंदिर के
समर्पण का त्योहार चल रहा था। यह
सर्दियों का मौसम था, **23** और यीशु
मंदिर में सुलैमान के बरामदे में टहल
रहा था। **24** तब यहूदियों ने उसे घेर
लिया और उससे पूछने लगे: "तू और
कब तक हमें दुविधा में रखेगा? अगर
तू मसीह है तो साफ-साफ कह दे।"
25 यीशु ने उन्हें जवाब दिया: "मैं तुमसे
कह चुका, फिर भी तुम यकीन नहीं
करते। मैं अपने पिता के नाम से जो काम
करता हूँ वही काम मेरे बारे में गवाही
देते हैं। **26** मगर तुम यकीन नहीं
करते क्योंकि तुम में से एक भी मेरी
भेड़ नहीं। **27** मेरी भेड़ें मेरी आवाज़
सुनती हैं और मैं उन्हें जानता हूँ और वे
मेरे पीछे-पीछे चलती हैं। **28** मैं उन्हें
हमेशा की ज़िंदगी देता हूँ, और उन्हें
कभी-भी नाश न किया जाएगा, और
कोई भी उन्हें मेरे हाथ से न छीनेगा।
29 मेरे पिता ने मुझे जो दिया है, वह
बाकी सब चीज़ों से कहीं ज़्यादा कीमती
है, और कोई भी उन्हें पिता के हाथ से

छीन नहीं सकता। **30** मेरे और पिता
के बीच एकता है।”

31 एक बार फिर यहूदियों ने उसे
पत्थरवाह करने के लिए पत्थर उठा
लिए। **32** यीशु ने उन्हें जवाब दियाः
“मैंने तुम्हें पिता की तरफ से बहुत-
से बढ़िया काम दिखाए। तुम उनमें से
किन कामों के लिए मुझ पर पत्थर-
वाह करते हो?” **33** यहूदियों ने उसे
जवाब दियाः “हम किसी बढ़िया काम के
लिए नहीं बल्कि इसलिए तुझ पर पत्थर-
वाह कर रहे हैं क्योंकि तू परमेश्वर की
तौहीन करता है। तू एक इंसान होकर
खुद को एक ईश्वर का दर्जा देता है।”
34 यीशु ने उन्हें जवाब दियाः “क्या
तुम्हारे कानून में नहीं लिखा है, ‘मैंने कहाः
“तुम ईश्वर हो।”’ **35** तो अगर वह
उन्हें ‘ईश्वर’ कहता है जिनके खिलाफ
परमेश्वर का वचन पहुँचा था, और फिर
भी शास्त्र को रद्द नहीं किया जा सकता,
36 तो तुम मुझसे, जिसे पिता ने पवित्र
ठहराया है और दुनिया में भेजा है, यह
कैसे कह सकते हो कि ‘तू परमेश्वर की
तौहीन करता है’? इसलिए कि मैंने कहा,
मैं परमेश्वर का बेटा हूँ? **37** अगर
मैं अपने पिता के काम नहीं कर रहा,
तो मेरा यकीन मत करो। **38** लेकिन
अगर मैं अपने पिता के काम कर रहा
हूँ तो चाहे तुम मुझ पर यकीन न करो,
मगर उन कामों पर यकीन करो ताकि
तुम जान सको और आगे भी और अच्छी
तरह समझ सको कि पिता मेरे साथ
एकता में है और मैं पिता के साथ एकता
में हूँ।” **39** इसलिए उन्होंने एक बार
फिर उसे पकड़ने की कोशिश की मगर
वह उनके हाथ से निकल गया।

40 फिर वह यरदन के पार उस
जगह चला गया जहाँ यूहन्ना पहले बप-
तिस्मा दिया करता था, और वह वहीं
रहा। **41** फिर बहुत-से लोग उसके
पास आए और उसके बारे में कहने लगेः
“यूहन्ना ने तो एक भी चमत्कार नहीं
दिखाया, मगर उसने इस आदमी के बारे
में जितनी बातें कही थीं, वे सब सच
थीं।” **42** वहाँ बहुतों ने यीशु पर
विश्वास किया।

11 बैतनिय्याह गाँव का रहनेवाला
लाज़र नाम का एक आदमी
बीमार था। इसी गाँव में उसकी बहनें,
मारथा और मरियम भी रहती थीं।
2 दरअसल, यह वह मरियम थी जिसने
प्रभु पर खुशबूदार तेल डालकर उसके
पैरों को अपने बालों से पोंछा था।
बीमार लाज़र इसी मरियम का भाई था।
3 इसलिए लाज़र की बहनों ने यीशु के
लिए यह संदेशा भेजाः “प्रभु, आकर देख!
जिससे तुझे गहरा लगाव है वह बीमार
है।” **4** मगर जब यीशु ने यह सुना
तो कहाः “इस बीमारी का अंजाम मौत
नहीं, बल्कि परमेश्वर की बड़ाई है, ताकि
इसके ज़रिए परमेश्वर के बेटे की बड़ाई
हो सके।”

5 यीशु को मारथा और उसकी बहन
और लाज़र से प्यार था। **6** मगर,

जब उसने सुना कि लाज़र बीमार है, तो
वह जिस जगह रुका था वहाँ दो दिन
और ठहर गया। **7** इसके बाद उसने
अपने चेलों से कहाः “आओ हम फिर
से यहूदिया जाएँ।” **8** तब चेलों ने
उससे कहाः “गुरु, अभी कुछ ही वक्‍त
पहले यहूदिया के लोग तुझ पर पत्थर-
वाह करना चाहते थे, क्या तू फिर वहीं
जाना चाहता है?” **9** यीशु ने जवाब
दियाः “दिन की रौशनी क्या बारह घंटे
नहीं होती? अगर कोई दिन की रौशनी
में चलता है, तो वह किसी चीज़ से ठोकर
नहीं खाता, क्योंकि वह इस दुनिया की
रौशनी देखता है। **10** लेकिन अगर
कोई रात में चलता है, तो वह ठोकर
खाता है क्योंकि उसमें रौशनी नहीं है।”
11 ये बातें कहने के बाद यीशु ने
उनसे कहाः “हमारा दोस्त लाज़र सो
गया है, लेकिन मैं उसे नींद से
जगाने वहाँ जा रहा हूँ।” **12** इस-
लिए चेलों ने उससे कहाः “प्रभु, अगर
वह सो गया है, तो ठीक हो जाएगा।”
13 मगर यीशु ने उसकी मौत के बारे में
कहा था। लेकिन चेलों ने समझा कि वह
नींद की वजह से सो जाने की बात
कर रहा है। **14** इसलिए, यीशु ने
उन्हें साफ-साफ बता दियाः “लाज़र मर
चुका है **15** और मैं तुम्हारी वजह से
खुश हूँ कि मैं वहाँ नहीं था, ताकि तुम
यकीन करो। मगर अब आओ, हम उसके
पास चलते हैं।” **16** इसलिए थोमा ने,
जो जुड़वाँ* कहलाता था, अपने साथियों
से कहाः “आओ हम भी उसके साथ चलें,
ताकि उसके साथ अपनी जान दें।”
17 जब यीशु बैतनिय्याह पहुँचा,
तो उसे पता चला कि लाज़र को
कब्र में रखे चार दिन बीत चुके हैं।
18 बैतनिय्याह, यरूशलेम के पास,
करीब तीन किलोमीटर की दूरी पर
था। **19** बहुत-से यहूदी, मारथा और
मरियम को उनके भाई की मौत पर
दिलासा देने आए थे। **20** जब मारथा
ने सुना कि यीशु आ रहा है, तो वह उससे
मिली। मगर मरियम घर में बैठी रही।
21 मारथा ने यीशु से कहाः “प्रभु, अगर
तू यहाँ होता तो मेरा भाई न मरता।
22 और मैं अब भी यह जानती हूँ कि
तू परमेश्‍वर से जो कुछ माँगेगा, पर-
मेश्‍वर तुझे दे देगा।” **23** यीशु ने
उससे कहाः “तेरा भाई जी उठेगा।”
24 मारथा ने उससे कहाः “मैं जानती हूँ
कि वह आखिरी दिन मरे हुओं में से
जी उठेगा।” **25** यीशु ने उससे कहाः
“मरे हुओं का जी उठना* और जीवन मैं
ही हूँ। जो मुझमें विश्‍वास दिखाता है,
वह चाहे मर जाए, तो भी जी उठेगा।
26 और हर कोई जो ज़िंदा है और मुझ
पर विश्‍वास दिखाता है, वह कभी न
मरेगा। क्या तू इस पर विश्‍वास करती
है?” **27** उसने कहाः “हाँ प्रभु, मैंने
विश्‍वास किया है कि तू ही परमेश्‍वर का
बेटा मसीह है, जो दुनिया में आनेवाला
था।” **28** यह कहने के बाद वह चली
गयी और जाकर अपनी बहन मरियम को

यूह 11:16* या, “दिदुमुस।”

यूह 11:25* या, “पुनरुत्थान।”

चुपके से बुलाकर कहा: “गुरु आ चुका
है और तुझे बुला रहा है।” **29** जब
मरियम ने यह सुना तो वह फौरन उठी
और उससे मिलने के लिए निकल पड़ी।

30 दरअसल, यीशु गाँव के अंदर
नहीं आया था, मगर जहाँ मारथा उससे
मिली थी वह अब भी वहीं पर था।
31 इसलिए जो यहूदी घर में मरियम के
साथ थे और जो उसे दिलासा दे रहे थे,
जब उन्होंने देखा कि वह उठकर जल्दी-
जल्दी गयी है, तो यह सोचकर वे उसके
पीछे-पीछे गए कि वह ज़रूर कब्र पर
रोने जा रही होगी। **32** जब मरि-
यम उस जगह आयी जहाँ यीशु था
और उसकी नज़र यीशु पर पड़ी, तो
वह यह कहते हुए उसके पैरों पर गिर
पड़ी: “प्रभु, अगर तू यहाँ होता तो
मेरा भाई न मरता।” **33** इसलिए जब
यीशु ने उसे और उसके साथ आए यहू-
दियों को रोते देखा, तो उसका दिल भर
आया और उसने गहरी आह* भरते
हुए पूछा: **34** “तुमने उसे कहाँ रखा
है?” उन्होंने कहा: “प्रभु, आ और देख
ले।” **35** यीशु के आंसू बहने लगे।
36 इसलिए यहूदियों ने कहा: “देखो,
यह उससे कितना गहरा लगाव रखता
था!” **37** मगर कुछ ने कहा: “क्या
यह आदमी जिसने अंधे की आँखें खोलीं,
इतना भी न कर सका कि यह इंसान न
मरता?”

38 तब यीशु ने फिर से गहरी आह
भरी और कब्र के पास आया। यह असल
में एक गुफा थी और इसके मुँह पर एक
पत्थर रखा हुआ था। **39** यीशु ने
कहा: “पत्थर को हटाओ।” जो मर गया
था, उसकी बहन मारथा ने उससे कहा:
“प्रभु, अब तक तो उसमें से दुर्गंध आती
होगी, क्योंकि उसे मरे चार दिन हो चुके
हैं।” **40** यीशु ने उससे कहा: “क्या
मैंने तुझसे यह न कहा था कि अगर तू
विश्वास करेगी, तो परमेश्वर की महिमा
देखेगी?” **41** इसलिए उन्होंने पत्थर
हटा दिया। तब यीशु ने आँखें उठाकर
स्वर्ग की तरफ देखा और कहा: “पिता, मैं
तेरा धन्यवाद करता हूँ कि तू ने मेरी सुनी
है। **42** मैं जानता था कि तू हमेशा
मेरी सुनता है। लेकिन यहाँ खड़ी भीड़ की
वजह से मैंने ऐसा कहा ताकि ये यकीन
कर सकें कि तू ने ही मुझे भेजा है।”
43 जब वह ये बातें कह चुका, तो
उसने ऊँची आवाज़ में पुकारते हुए कहा:
“लाज़र, बाहर आ जा!” **44** तब वह
जो मर चुका था बाहर निकल आया।
उसके पैर और हाथ कफन की पट्टियों में
लिपटे हुए थे और उसका चेहरा कपड़े से
लिपटा हुआ था। यीशु ने उनसे कहा:
“इसे खोल दो और जाने दो।”

45 इसलिए बहुत-से यहूदियों ने जो
मरियम के पास आए थे और जिन्होंने
यीशु का यह काम देखा, उस पर
विश्वास किया। **46** मगर दूसरे कुछ
लोग फरीसियों के पास गए और जाकर
उन्हें बता दिया कि यीशु ने क्या किया
था। **47** इस पर प्रधान याजक और

यूह 11:33* यूनानी *नफ्सा* / अतिरिक्त लेख 7 देखें।

फरीसियों ने महा-सभा* को इकट्ठा किया
और यह कहने लगे: “हम क्या करें
क्योंकि यह आदमी तो बहुत-से चमत्कार
करता है? **48** अगर हम उसे इसी
तरह छोड़ दें, तो सभी लोग उस पर
विश्वास करने लगेंगे और रोमी आकर
हमसे हमारी जगह* और राष्ट्र दोनों छीन
लेंगे।” **49** मगर उनमें से कैफा नाम
के आदमी ने, जो उस साल का महा-
याजक था, उनसे कहा: “तुम कुछ नहीं
जानते, **50** और यह नहीं सोचते कि
यह तुम्हारे ही फायदे के लिए है कि एक
आदमी सब लोगों की खातिर मरे, बजाय
इसके कि सारा राष्ट्र नाश किया जाए।”
51 उसने यह बात अपनी तरफ से नहीं
कही थी, बल्कि उस साल का महायाजक
होने की वजह से उसने यह भविष्यवाणी
की कि यीशु का पूरे राष्ट्र के लिए मरना
तय था, **52** और सिर्फ उस राष्ट्र के
लिए ही नहीं, बल्कि इसलिए कि पर-
मेश्वर के सब बच्चों को, जो यहाँ-वहाँ
तित्तर-बित्तर हैं इकट्ठा कर एक करे।
53 इसलिए उस दिन से वे यीशु को मार
डालने की साज़िश करने लगे।

54 इस वजह से यीशु इसके बाद
सरेआम यहूदियों के बीच नहीं घूमा,
बल्कि वह उस जगह से निकलकर वीराने
के पास के इलाके में इफ्राइम नाम के
शहर चला गया और वहीं अपने चेलों
के साथ रहा। **55** अब यहूदियों का
फसह का त्योहार पास था और बहुत-से
लोग फसह से पहले अपने-अपने इलाकों
से निकलकर यरूशलेम गए ताकि खुद
को मूसा के कानून के मुताबिक शुद्ध कर
सकें। **56** इसलिए वे यीशु को ढूँढ़ने
लगे और मंदिर के इलाके में खड़े होकर
आपस में कहने लगे: “तुम्हें क्या लगता
है? क्या वह त्योहार के लिए बिलकुल
नहीं आएगा?” **57** और ऐसा था कि
प्रधान याजकों और फरीसियों ने हुक्म
दिया हुआ था कि अगर किसी को उसकी
खबर मिले कि वह कहाँ है, तो वह आकर
उन्हें बताए, ताकि वे उसे पकड़ सकें।

12 फिर फसह के त्योहार से
छः दिन पहले यीशु बैतनिय्याह
पहुँचा। लाज़र, जिसे यीशु ने मरे हुओं में
से जी उठाया था इसी बैतनिय्याह गाँव का
रहनेवाला था। **2** वहाँ कुछ लोगों ने
यीशु के लिए शाम का खाना किया और
मारथा सेवा करने में लगी थी। जो लोग
यीशु के साथ खाने बैठे थे, लाज़र भी
उनमें से एक था। **3** तब मरियम ने
करीब तीन सौ ग्राम* असली जटामाँसी
का खुशबूदार तेल लिया जो बहुत ही
कीमती था। उसने यीशु के पैरों पर यह
तेल मला और अपने बालों से उन्हें पोंछा।
वह सारा घर इस खुशबूदार तेल की सुगंध
से महक उठा। **4** मगर यहूदा इस्क-
रियोती ने, जो यीशु के चेलों में से एक
था और उसे धोखे से पकड़वानेवाला था,
कहा: **5** “इस खुशबूदार तेल को तीन

यूह 11:47* मत्ती 26:59 फुटनोट देखें। **48*** या, “मंदिर।”

यूह 12:3* शाब्दिक, *“लित्रा।”*

सौ दीनार* में बेचकर इसका पैसा गरीबों
को क्यों नहीं दिया गया?” **6** मगर
यह उसने इस वजह से नहीं कहा था कि
उसे गरीबों की चिंता थी, बल्कि इस-
लिए कहा था क्योंकि वह एक चोर था
और उसके पास पैसों का बक्सा रहता
था जिसमें से वह पैसे चुरा लेता था।
7 इसलिए यीशु ने मरियम के लिए कहा:
“उसे रहने दो, ताकि वह मेरे दफनाए
जाने के दिन की तैयारी के लिए यह
दस्तूर पूरा करे। **8** क्योंकि गरीब तो
हमेशा तुम्हारे साथ होंगे, मगर मैं हमेशा
तुम्हारे साथ नहीं रहूँगा।”

9 जब यहूदियों की बड़ी भीड़ को
पता चला कि यीशु वहाँ है तो वे न सिर्फ
उसके लिए बल्कि लाज़र को भी देखने
वहाँ आए, जिसे उसने मरे हुओं में से जी
उठाया था। **10** अब प्रधान याजकों
ने सलाह की कि वे लाज़र को भी
मार डालें, **11** क्योंकि उसकी वजह से
बहुत-से यहूदी वहाँ जा रहे थे और यीशु
पर विश्‍वास कर रहे थे।

12 अगले दिन त्योहार के लिए आए
लोगों की बड़ी भीड़ ने जब सुना कि यीशु
यरूशलेम आ रहा है, **13** तो वे खजूर
की डालियाँ लिए उससे मिलने निकले।
वे यह कहकर ज़ोर-ज़ोर से पुकार लगाने
लगे: “बचा ले, हम तुझसे बिनती करते
हैं! धन्य है वह जो यहोवा के नाम से
आता है और इसराएल का राजा है!”
14 जब यीशु को गधे का एक बच्चा
मिला, तो वह उस पर सवार हो गया,
ठीक जैसा लिखा है: **15** “सिय्योन की
बेटी, मत डर। देख! तेरा राजा गधे के
बच्चे पर बैठा आ रहा है।” **16** शुरू-
आत में उसके चेलों ने इन बातों पर गौर
नहीं किया, मगर जब यीशु ने महिमा
पायी तब उन्होंने याद किया कि उसके
बारे में ये बातें लिखी थीं और यीशु के
लिए यह सब किया गया।

17 यीशु ने जिस वक्‍त लाज़र को
कब्र से बाहर बुलाया था और उसे मरे
हुओं में से जी उठाया था, उस वक्‍त जो
लोग उसके साथ मौजूद थे वे इस बात
की गवाही देते रहे। **18** इसलिए जब
भीड़ ने सुना कि उसने यह चमत्कार
किया था, तो वे भी उससे मिलने आए।
19 इसलिए फरीसी आपस में कहने
लगे: “तुम देख रहे हो कि तुम कुछ भी
नहीं कर पा रहे। देखो! सारी दुनिया
उसके पीछे हो चली है।”

20 त्योहार के वक्‍त उपासना के
लिए आनेवालों में कुछ यूनानी भी थे।
21 इसलिए ये फिलिप्पुस के पास आए
जो गलील के बैतसैदा का रहनेवाला
था और उससे यह कहते हुए गुज़ारिश
करने लगे: “साहब, हम यीशु से मिलना
चाहते हैं।” **22** फिलिप्पुस ने आकर
अन्द्रियास को बताया। अन्द्रियास और
फिलिप्पुस ने आकर यीशु को बताया।

23 मगर यीशु ने उन्हें यह कहते
हुए जवाब दिया: “वह घड़ी आ चुकी
है जब इंसान का बेटा महिमा पाए।
24 मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ, जब तक

यूह 12:5* एक दीनार, एक दिन की मज़दूरी होती थी। तीन सौ दीनार करीब एक साल की मज़दूरी थी।

गेहूँ का एक दाना मिट्टी में गिरकर मर
नहीं जाता तब तक वह सिर्फ एक ही
दाना रहता है। लेकिन अगर वह मर
जाता है तो फिर बहुत फल लाता है।
25 जिसे अपनी जान से लगाव है,
वह इसे नाश करता है, मगर जो इस
दुनिया में अपनी जान से नफरत करता
है वह इसे हमेशा की ज़िंदगी के लिए
बचाए रखेगा। **26** अगर कोई मेरी
सेवा करना चाहता है, तो वह मेरे पीछे
हो ले और जहाँ मैं हूँ वहाँ मेरा सेवक भी
होगा। अगर कोई मेरी सेवा करेगा, तो
पिता उसका आदर करेगा। **27** अब
मैं और क्या कहूँ? मेरा जी बेचैन है।
पिता, मुझे इस घड़ी से बचा ले। दर-
असल, मैं इसी वजह से इस घड़ी तक
पहुँचा हूँ। **28** पिता, अपने नाम की
महिमा कर।" तब आकाश* से एक
आवाज़ आयी: "मैंने इसकी महिमा की है
और फिर से इसकी महिमा करूँगा।"

29 जब आस-पास खड़ी भीड़ ने यह
आवाज़ सुनी, तो वे कहने लगे कि बादल
गरजा है। दूसरे कहने लगे: "किसी स्वर्ग-
दूत ने उससे बात की है।" **30** जवाब
में यीशु ने कहा: "यह आवाज़ मेरी खातिर
नहीं बल्कि तुम्हारी खातिर सुनायी दी है।
31 अब इस दुनिया का न्याय किया जा
रहा है और इस दुनिया का राजा बाहर
कर दिया जाएगा। **32** मगर, जहाँ
तक मेरी बात है, जब मुझे धरती से ऊपर
उठाया जाएगा, तो मैं सब तरह के लोगों
को अपनी तरफ आकर्षित करूँगा।"
33 यह बात उसने दरअसल यह दिखाने
के लिए कही कि वह कैसी मौत मरने पर
था। **34** इस पर भीड़ ने उसे जवाब
दिया: "हमने तो कानून में सुना है कि
मसीह हमेशा तक रहेगा, फिर तू यह कैसे
कहता है कि इंसान के बेटे को ऊपर
उठाया जाना है? यह इंसान का बेटा कौन
है?" **35** तब यीशु ने उनसे कहा:
"रौशनी कुछ ही वक्त और तुम्हारे बीच
में है। जब तक तुम्हारे पास रौशनी है,
तब तक इसमें चलो ताकि अंधकार तुम
पर हावी न हो। जो अंधकार में चलता
है वह नहीं जानता कि वह कहाँ जा रहा
है। **36** जिस दौरान रौशनी तुम्हारे
पास है, उस दौरान रौशनी पर विश्वास
दिखाओ ताकि तुममें रौशनी हो।"

यीशु ये बातें कहने के बाद चला गया
और उनसे छिप गया।

37 उसने उनके सामने बहुत-
से चमत्कार किए थे, इसके बावजूद
वे उस पर विश्वास नहीं कर रहे थे।
38 इसलिए यशायाह भविष्यवक्ता का
कहा यह वचन पूरा हुआ: "यहोवा,
किसने हमारे संदेश पर विश्वास किया
है? और यहोवा ने अपनी ताकत* किस
पर ज़ाहिर की है?" **39** वे क्यों यकीन
नहीं कर पाए, इसकी वजह बताते हुए
यशायाह फिर कहता है: **40** "उसने
उनकी आँखें अंधी कर दी हैं और उनके

यूह 12:28* यहाँ इस्तेमाल हुए यूनानी शब्द का मतलब आकाश या स्वर्ग, दोनों हो सकता है।

यूह 12:38* शाब्दिक, "भुजा।"

दिल कठोर कर दिए हैं ताकि वे कभी
अपनी आँखों से न देख सकें और न ही
अपने दिलों से समझें और पलट आएँ
और मैं उन्हें चंगा करूँ।” **41** यशा-
याह ने ये बातें इसलिए कहीं क्योंकि उसने
मसीह की महिमा देखी थी और उसके
बारे में बताया था। **42** हालाँकि, धर्म-
अधिकारियों में से भी बहुत-से ऐसे थे
जिन्होंने असल में यीशु पर विश्वास तो
किया, मगर फरीसियों के डर से वे खुल-
कर उसे स्वीकार नहीं करते थे ताकि
ऐसा न हो कि उन्हें सभा-घर से बेदखल
कर दिया जाए। **43** क्योंकि उन्हें पर-
मेश्वर से मिलनेवाली महिमा से बढ़कर
इंसानों से मिलनेवाली महिमा प्यारी थी।

44 मगर यीशु ने ज़ोर से पुकारकर
कहा: “जो मुझ पर विश्वास करता है वह
मुझ पर ही नहीं बल्कि उस पर भी
विश्वास करता है जिसने मुझे भेजा है।
45 और जो मुझे देखता है वह उसे भी
देखता है जिसने मुझे भेजा है। **46** मैं
इस दुनिया में रौशनी बनकर आया हूँ
ताकि हर कोई जो मुझ पर विश्वास करे
वह अंधकार में न रहे। **47** लेकिन
अगर कोई मेरी बातें सुनता है मगर उन्हें
मानता नहीं, तो मैं उसे दोषी नहीं ठह-
राऊँगा क्योंकि मैं दुनिया को दोषी ठहराने
नहीं बल्कि बचाने आया हूँ। **48** जो
मुझे ठुकरा देता है और मेरे वचन स्वीकार
नहीं करता, उसे दोषी ठहरानेवाला कोई
और है। जो वचन मैंने कहा है वही
उसे आखिरी दिन में दोषी ठहराएगा।
49 क्योंकि मैंने अपनी तरफ से बात
नहीं की। मगर खुद पिता ने, जिसने मुझे
भेजा है, उसी ने मुझे आज्ञा दी है कि मैं
क्या-क्या बताऊँ और क्या-क्या बोलूँ।
50 साथ ही, मैं जानता हूँ कि उसकी
आज्ञा का मतलब हमेशा की ज़िंदगी है।
इसलिए जो बातें मैं बोलता हूँ, वह ठीक
वैसे ही बोलता हूँ जैसे पिता ने मुझे
बताया है।”

13 फसह के त्योहार से पहले यीशु
यह जानता था कि इस दुनिया
को छोड़कर पिता के पास जाने की उसकी
घड़ी आ पहुँची है। इसलिए दुनिया में जो
उसके अपने थे जिनसे वह प्यार करता
आया था, वह उनसे आखिर तक प्यार
करता रहा। **2** जब शाम का खाना
चल रहा था और शैतान,* शमौन के बेटे
यहूदा इस्करियोती के दिल में यह बात
पहले ही डाल चुका था कि वह यीशु को
धोखे से पकड़वाए, **3** तब यीशु, यह
जानते हुए कि पिता ने सबकुछ उसके
हाथों में सौंप दिया है और वह परमेश्वर
की तरफ से आया है और परमेश्वर के
पास जा रहा है, **4** खाने की मेज़ से
उठा और अपना चोगा उतारकर अलग
रख दिया और तौलिया लेकर कमर से
बाँध लिया। **5** इसके बाद उसने एक
बरतन में पानी भरा और अपने चेलों
के पैर धोने लगा और कमर पर बंधे
तौलिये से पोंछने लगा। **6** जब वह
शमौन पतरस के पास आया, तो पतरस
ने उससे कहा: “प्रभु, क्या तू मेरे पैर धो

यूह 13:2* यूनानी में *“दियाबोलोस,”* जिसका मत-
लब है “निंदा करनेवाला।”

रहा है?” **7** जवाब में यीशु ने उससे
कहा: “मैं जो कर रहा हूँ उसे तू अभी
नहीं समझता, मगर इन बातों के बाद तू
समझेगा।” **8** पतरस ने उससे कहा:
“तू मेरे पैर हरगिज़ न धोएगा।” यीशु ने
उसे जवाब दिया: “अगर मैं तुझे न धोऊँ,
तो मेरे साथ तेरा कुछ भी साझा नहीं।”
9 शमौन पतरस ने उससे कहा: “तो प्रभु,
मेरे पैर ही नहीं, बल्कि मेरे हाथ और
मेरा सिर भी धो दे।” **10** यीशु ने
उससे कहा: “जो नहा चुका है उसे पैर के
सिवा और कुछ धोने की ज़रूरत नहीं,
बल्कि वह पूरी तरह शुद्ध है। तुम लोग
शुद्ध हो, मगर सभी नहीं।” **11** दर-
असल, वह जानता था कि वह शख्स कौन
है जो उसे धोखे से पकड़वानेवाला है।
इसीलिए उसने कहा था: “तुममें से सभी
शुद्ध नहीं हैं।”

12 जब वह उनके पैर धो चुका और
अपना चोगा पहनकर फिर से मेज़ से टेक
लगाकर बैठ गया, तो उसने उनसे कहा:
“क्या तुम जानते हो कि मैंने तुम्हारे साथ
क्या किया है? **13** तुम मुझे ‘गुरु’
और ‘प्रभु’ पुकारते हो और तुम ठीक
कहते हो, क्योंकि मैं वही हूँ। **14** इस-
लिए, अगर मैंने प्रभु और गुरु होते हुए
भी तुम्हारे पैर धोए हैं, तो तुम्हें भी एक-
दूसरे के पैर धोने चाहिए। **15** इस-
लिए कि मैंने तुम्हारे लिए नमूना छोड़ा है
कि जैसे मैंने तुम्हारे साथ किया, वैसे ही
तुम्हें भी करना चाहिए। **16** मैं तुमसे
सच-सच कहता हूँ, दास अपने मालिक से
बड़ा नहीं होता, न ही भेजा हुआ अपने
भेजनेवाले से बड़ा होता है। **17** तुमने
ये बातें जान ली हैं, इसलिए अगर तुम
ऐसा करते हो तो सुखी हो तुम। **18** मैं
तुम सबके बारे में बात नहीं कर रहा।
जिन्हें मैंने चुना है उन्हें मैं जानता हूँ, मगर
शास्त्र की इस बात का पूरा होना ज़रूरी
है, ‘जो मेरी रोटी खाया करता था उसी
ने मेरे खिलाफ लात उठाई है।’ **19** मैं
अब से, यह सब होने से पहले ही तुम्हें
बता रहा हूँ, ताकि जब ऐसा हो तो तुम
यकीन कर सको कि मैं वही हूँ। **20** मैं
तुमसे सच-सच कहता हूँ, मैं जिस किसी
को भेजता हूँ अगर एक इंसान उसे
स्वीकार करता है तो वह मुझे भी स्वीकार
करता है। जो मुझे स्वीकार करता है, वह
उसे भी स्वीकार करता है जिसने मुझे
भेजा है।”

21 ये बातें कहने के बाद यीशु दुःख
से बेहाल होने* लगा और उसने खुलकर
कह दिया: “मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ,
तुममें से एक मुझे धोखे से पकड़वाएगा।”
22 यह सुनकर चेले एक-दूसरे का मुँह
ताकने लगे, क्योंकि वे समझ नहीं पा रहे
थे कि वह किसके बारे में बात कर
रहा है। **23** यीशु के सीने के पास
उसका एक चेला टेक लगाए बैठा था,
जिससे यीशु को प्यार था। **24** इस-
लिए शमौन पतरस ने सिर हिलाते हुए
उस चेले से कहा: “बता, वह किसके बारे
में ऐसा कह रहा है।” **25** इसलिए उस
चेले ने पीछे यीशु की छाती की तरफ
झुककर उससे पूछा: “प्रभु, वह कौन है?”

यूह 13:21* यूनानी *नफ्मा* / अतिरिक्त लेख 7 देखें।

26 तब यीशु ने जवाब दिया: "जिसे मैं
रोटी का टुकड़ा डुबोकर दूँगा, वही है।"
फिर उसने रोटी का टुकड़ा डुबोया और
शमौन इस्करियोती के बेटे यहूदा को
दिया। **27** यहूदा के टुकड़ा लेने के
बाद, शैतान ने उसके दिलो-दिमाग पर
काम करना शुरू कर दिया। इसलिए यीशु
ने उससे कहा: "जो तू कर रहा है,
उसे फौरन कर।" **28** मगर, खाने की
मेज़ पर जो बैठे थे उनमें से कोई न जानता
था कि यीशु ने यहूदा से यह क्यों कहा।
29 कुछ तो यह सोच रहे थे कि यहूदा
के पास पैसों का बक्सा रहता है, इसलिए
यीशु उससे कह रहा है: "त्योहार के लिए
हमें जिन चीज़ों की ज़रूरत है वे खरीद
ले," या यह कि उसे गरीबों को कुछ देना
चाहिए। **30** इसलिए, रोटी का टुकड़ा
लेने के बाद यहूदा फौरन वहाँ से चला
गया। यह रात का वक्त था।

31 उसके चले जाने के बाद यीशु ने
कहा: "अब इंसान के बेटे की महिमा हुई
है और उसके ज़रिए परमेश्वर की महिमा
हुई है। **32** परमेश्वर खुद उसकी
महिमा करेगा और जल्द ऐसा करेगा।
33 प्यारे बच्चो, मैं थोड़ी देर और तुम्हारे
साथ हूँ। तुम मुझे ढूँढ़ोगे और ठीक जैसे
मैंने यहूदियों से कहा था, वही मैं अब
तुमसे भी कह रहा हूँ, 'जहाँ मैं जा रहा हूँ
वहाँ तुम नहीं आ सकते।' **34** मैं तुम्हें
एक नयी आज्ञा देता हूँ कि तुम एक-दूसरे
से प्यार करो। ठीक जैसे मैंने तुमसे प्यार
किया है, वैसे ही तुम भी एक-दूसरे से
प्यार करो। **35** अगर तुम्हारे बीच
प्यार होगा, तो इसी से सब जानेंगे कि
तुम मेरे चेले हो।"

36 शमौन पतरस ने उससे कहा:
"प्रभु, तू कहाँ जा रहा है?" यीशु ने जवाब
दिया: "जहाँ मैं जा रहा हूँ वहाँ तू अभी
मेरे पीछे नहीं आ सकता, मगर बाद में तू
आएगा।" **37** पतरस ने उससे कहा:
"प्रभु, मैं अभी तेरे पीछे क्यों नहीं आ
सकता? मैं तेरी खातिर अपनी जान भी
दे दूँगा।" **38** यीशु ने जवाब दिया:
"क्या तू मेरी खातिर अपनी जान देगा?
मैं तुझसे सच-सच कहता हूँ, जब तक तू
मुझे जानने से तीन बार इनकार न कर
चुका होगा, तब तक मुर्गा हरगिज़ बाँग
न देगा।

14 तुम्हारे दिल दुःख से बेहाल
न हों। परमेश्वर पर विश्वास
दिखाओ, मुझ पर भी विश्वास दिखाओ।
2 मेरे पिता के घर में रहने की बहुत-
सी जगह हैं। अगर यह बात सच न होती,
तो मैं तुमसे नहीं कहता। मगर यह
बात सच है, क्योंकि मैं तुम्हारे लिए
जगह तैयार करने जा रहा हूँ। **3** और
जब मैं जाकर तुम्हारे लिए जगह तैयार
करूँगा, तो मैं दोबारा आ रहा हूँ और
तुम्हें अपने घर ले जाऊँगा ताकि जहाँ मैं
हूँ वहीं तुम भी रह सको। **4** मैं जहाँ
जा रहा हूँ, तुम वहाँ की राह जानते हो।"

5 थोमा ने उससे कहा: "प्रभु, हम
नहीं जानते कि तू कहाँ जा रहा है। तो
फिर हम वहाँ की राह कैसे जानें?"

6 यीशु ने उससे कहा: "मैं ही वह
राह, सच्चाई और जीवन हूँ। कोई भी

पिता के पास नहीं आ सकता, सिवा उसके
जो मेरे ज़रिए आता है। **7** अगर
तुमने मुझे सचमुच जाना होता, तो तुम
मेरे पिता को भी जानते। इस घड़ी से तुम
उसे जानते हो और तुमने उसे देखा है।”

8 फिलिप्पुस ने उससे कहा: “प्रभु,
हमें पिता दिखा दे और यही हमारे लिए
काफी है।”

9 यीशु ने उससे कहा: “मैं इतने
समय से तुम्हारे साथ हूँ और फिर भी,
फिलिप्पुस तू मुझे नहीं जान पाया? जिसने
मुझे देखा है उसने पिता को भी देखा है।
तो फिर तू क्यों कहता है, ‘हमें पिता
दिखा दे’? **10** क्या तू यकीन नहीं
करता कि मैं पिता के साथ एकता में
हूँ और पिता मेरे साथ एकता में है?
मैं जो बातें तुमसे कहता हूँ वे अपनी
तरफ से नहीं कहता, बल्कि पिता है जो
अपने काम कर रहा है और मेरे साथ
एकता में रहता है। **11** मेरा यकीन
करो कि मैं पिता के साथ एकता में हूँ
और पिता मेरे साथ एकता में है। नहीं
तो, जो काम मैंने किए हैं उन्हीं की वजह
से मेरा यकीन करो। **12** मैं तुमसे
सच-सच कहता हूँ, जो मुझ पर विश्वास
दिखाता है, वह भी वे काम करेगा जो मैं
करता हूँ और वह इनसे भी बड़े-बड़े
काम करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास
जा रहा हूँ। **13** साथ ही, जो कुछ
तुम मेरे नाम से माँगोगे, मैं वह करूँगा
ताकि बेटे के ज़रिए पिता महिमा पाए।
14 अगर तुम मेरे नाम से कुछ भी
माँगोगे, तो मैं वह करूँगा।

15 अगर तुम मुझसे प्यार करते हो,
तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे। **16** मैं
पिता से बिनती करूँगा और वह तुम्हें एक
और मददगार देगा जो हमेशा तुम्हारे
साथ रहेगा, **17** यानी सच्चाई की वह
पवित्र शक्ति जो दुनिया को नहीं मिल
सकती। क्योंकि दुनिया न तो परमेश्वर
की इस पवित्र शक्ति को देखती है न ही
इसे जानती है। तुम इसे जानते हो, क्योंकि
यह तुम्हारे साथ रहती है और तुममें है।
18 मैं तुम्हें मातम की हालत में नहीं
छोड़ूँगा। मैं तुम्हारे पास फिर आ रहा
हूँ। **19** थोड़ी देर और है और फिर
दुनिया मुझे नहीं देखेगी, मगर तुम मुझे
देखोगे, क्योंकि मैं जीवित हूँ और तुम भी
जीओगे। **20** उस दिन तुम जानोगे कि
मैं अपने पिता के साथ एकता में हूँ और
तुम मेरे साथ एकता में हो और मैं तुम्हारे
साथ एकता में हूँ। **21** जिसके पास
मेरी आज्ञाएँ हैं और जो उन्हें मानता है,
वही है जो मुझसे प्यार करता है। जो
मुझसे प्यार करता है उससे मेरा पिता
प्यार करेगा और मैं उससे प्यार करूँगा
और अपने आपको उस पर खुलकर
ज़ाहिर करूँगा।”

22 यहूदा (इस्करियोती नहीं) ने
उससे कहा: “प्रभु, ऐसा क्या हुआ है कि
तू अपने आपको हम पर तो खुलकर
ज़ाहिर करना चाहता है मगर दुनिया पर
नहीं?”

23 जवाब में यीशु ने उससे कहा:
“अगर कोई मुझसे प्यार करता है, तो
वह मेरे वचन पर चलेगा और मेरा

पिता उससे प्यार करेगा। हम उसके पास
आएँगे और उसके साथ निवास करेंगे।
24 जो मुझसे प्यार नहीं करता वह मेरे
वचनों पर नहीं चलता। जो वचन तुम
सुन रहे हो वह मेरा नहीं, बल्कि पिता
का है जिसने मुझे भेजा है।
25 तुम्हारे साथ रहते हुए मैंने ये बातें
तुम्हें बतायी हैं। **26** मगर वह मदद-
गार, यानी पवित्र शक्ति* जिसे पिता मेरे
नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सारी बातें सिखा-
एगा और जितनी बातें मैंने तुम्हें बतायी
हैं वे सब तुम्हें याद दिलाएगा। **27** मैं
तुम्हें शांति दिए जाता हूँ, मैं तुम्हें अपनी
शांति देता हूँ। मैं तुम्हें यह शांति इस
तरीके से नहीं देता जैसे दुनिया देती है।
तुम्हारे दिल दुःख से बेहाल न हों, न ही
वे डर के मारे कमज़ोर पड़ें। **28** तुमने
सुना कि मैंने तुमसे कहा था, मैं जा रहा
हूँ और मैं फिर तुम्हारे पास वापस आ
रहा हूँ। अगर तुम मुझसे प्यार करते,
तो तुम खुशी मनाते कि मैं पिता के पास
जा रहा हूँ, क्योंकि पिता मुझसे बड़ा है।
29 और अब मैं तुम्हें ऐसा होने से पहले
बता चुका हूँ, ताकि जब ऐसा हो तो
तुम यकीन कर सको। **30** मैं अब
इसके बाद तुमसे ज़्यादा बात नहीं करूँगा,
क्योंकि इस दुनिया का राजा आ रहा है
और मुझ पर उसका कोई ज़ोर नहीं
चलता। **31** मगर ताकि दुनिया जान
जाए कि मैं पिता से प्यार करता हूँ, इस-
लिए ठीक जैसे पिता ने मुझे आज्ञा दी है,
मैं वैसे ही कर रहा हूँ। उठो, आओ हम
यहाँ से चलें।

15 सच्ची बेल* मैं हूँ और मेरा
पिता बागबान है। **2** मेरी
हर वह डाली जो फल नहीं लाती, उसे
वह काट देता है और ऐसी हर डाली जो
फल लाती है, उसकी वह छँटाई करता
है ताकि उसमें और ज़्यादा फल लगे।
3 मैंने तुमसे जो वचन कहा है उसकी
वजह से तुम पहले ही शुद्ध हो। **4** मेरे
साथ एकता में बने रहो और मैं तुम्हारे
साथ एकता में रहूँगा। एक डाली तब तक
फल लाती है जब तक वह बेल से जुड़ी
रहती है। बेल से अलग होकर डाली
अपने आप फल नहीं ला सकती। उसी
तरह तुम भी अगर मेरे साथ एकता में
न रहो, तो फल नहीं ला सकते। **5** मैं
अंगूर की बेल हूँ और तुम डालियाँ हो।
जो मेरे साथ एकता में रहता है और
जिसके साथ मैं एकता में रहता हूँ, वह
बहुत फल लाता है, क्योंकि मुझसे अलग
होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।
6 अगर कोई मेरे साथ एकता में नहीं
रहता, तो उसे ऐसे फेंक दिया जाता है
जैसे एक डाली को फेंक दिया जाता
है और वह सूख जाती है। लोग ऐसी
डालियाँ बटोरकर आग में झोंक देते हैं
और ये जला दी जाती हैं। **7** अगर
तुम मेरे साथ एकता में रहो और मेरी बातें
तुममें बनी रहें, तो तुम जो चाहते हो वह
माँगो और वह तुम्हारे लिए हो जाएगा।
8 मेरे पिता की महिमा इस बात से होती
है कि तुम बहुत फल लाते रहो और
यह साबित करो कि तुम मेरे चेले हो।
9 ठीक जैसे पिता ने मुझसे प्यार किया

यूह 14:26* यूनानी *नफ्मा*। अतिरिक्त लेख 7 देखें।

यूह 15:1* शाब्दिक, “अंगूर की बेल।”

और मैंने तुमसे प्यार किया है, वैसे ही
तुम मेरे प्यार में बने रहो। **10** अगर
तुम मेरी आज्ञाओं पर चलो तो मेरे प्यार
में बने रहोगे, ठीक जिस तरह मैं पिता
की आज्ञाओं पर चलता हूँ और उसके
प्यार में बना रहता हूँ।

11 ये बातें मैंने तुमसे इसलिए कही
हैं कि मेरी खुशी तुममें हो और तुम्हारी
खुशी भरपूर हो जाए। **12** मेरी यह
आज्ञा है कि तुम वैसे ही एक-दूसरे से
प्यार करो जैसे मैंने तुमसे प्यार किया है।
13 इससे बढ़कर प्यार कोई क्या करेगा
कि वह अपने दोस्तों की खातिर अपनी
जान दे दे। **14** मैं तुम्हें जो आज्ञा देता
हूँ अगर तुम वह मानो तो तुम मेरे
दोस्त हो। **15** मैं अब से तुम्हें दास
नहीं कहता क्योंकि दास नहीं जानता कि
उसका मालिक क्या करता है। लेकिन मैंने
तुम्हें अपना दोस्त कहा है, क्योंकि मैंने
अपने पिता से जो कुछ सुना है वह
सब तुम्हें बता दिया है। **16** तुमने मुझे
नहीं चुना मगर मैंने तुम्हें चुना है, और
इसलिए ठहराया है कि तुम बढ़ते जाओ
और फल लाते रहो। तुम्हारा फल बना
रहे ताकि तुम मेरे नाम से पिता से जो
कुछ माँगो वह तुम्हें दे दे।

17 मैं तुम्हें इन बातों की आज्ञा देता
हूँ कि तुम एक-दूसरे से प्यार करो।
18 अगर दुनिया तुमसे नफरत करती
है, तो तुम यह जानते हो कि इसने तुमसे
पहले मुझसे नफरत की है। **19** अगर
तुम दुनिया के होते तो दुनिया जो उसका
अपना है उसे पसंद करती। मगर क्योंकि
तुम दुनिया के नहीं हो बल्कि मैंने तुम्हें
दुनिया से चुन लिया है, इसलिए दुनिया
तुमसे नफरत करती है। **20** मैंने जो
बात तुमसे कही थी, उसे याद रखो। एक
दास अपने मालिक से बड़ा नहीं होता।
अगर उन्होंने मुझ पर ज़ुल्म किया है,
तो तुम पर भी ज़ुल्म करेंगे। अगर
उन्होंने मेरी बात मानी है तो वे तुम्हारी
भी मानेंगे। **21** मगर वे मेरे नाम की
वजह से तुम्हारे खिलाफ यह सब करेंगे
क्योंकि वे मेरे भेजनेवाले को नहीं जानते।
22 अगर मैं नहीं आता और उनसे बात
नहीं करता तो उनमें पाप न होता। मगर
अब उनके पास अपने पाप के लिए कोई
बहाना नहीं है। **23** जो मुझसे नफरत
करता है वह मेरे पिता से भी नफरत
करता है। **24** मैंने उनके बीच वे काम
किए जो किसी और ने नहीं किए थे।
अगर मैंने उनके बीच ये काम न किए
होते, तो उनमें कोई पाप न होता। मगर
अब उन्होंने मेरे काम देखे हैं और मुझसे
और मेरे पिता, दोनों से नफरत की
है। **25** मगर यह इसलिए हुआ कि
उनके कानून में लिखी यह बात पूरी
हो सके: 'उन्होंने बेवजह मुझसे नफ-
रत की।' **26** मैं स्वर्ग में अपने पिता
के यहाँ से तुम्हारे पास एक मददगार
भेजूँगा, यानी सच्चाई की पवित्र शक्ति,
जो पिता से निकलती है। जब यह मदद-
गार आएगा तो यह मेरे बारे में गवाही
देगा। **27** फिर तुम्हें भी मेरे बारे में
गवाही देनी है, क्योंकि तुम शुरू से मेरे
साथ रहे हो।

16 मैंने तुमसे ये बातें इसलिए कही
हैं कि तुम डगमगा न जाओ।
2 लोग तुम्हें सभा-घर से बेदखल कर
देंगे। दरअसल वह घड़ी आ रही है जब
हर कोई जो तुम्हें मार डालेगा, यह सोचेगा
कि उसने परमेश्वर की पवित्र सेवा की
है। 3 मगर वे ये काम इसलिए करेंगे
क्योंकि उन्होंने न तो पिता को जाना है,
न ही मुझे। 4 फिर भी मैंने तुमसे ये
बातें इसलिए कहीं कि जब इनके होने का
वक्त आए, तो तुम याद कर सको कि
मैंने ये बातें तुम्हें बतायी थीं।

मगर मैंने ये बातें तुम्हें पहले नहीं
बतायीं क्योंकि मैं तुम्हारे साथ था।
5 मगर अब मैं अपने भेजनेवाले के पास
जा रहा हूँ और फिर भी तुममें से कोई
मुझसे यह नहीं पूछता कि 'तू कहाँ जा रहा
है?' 6 मगर क्योंकि मैंने तुमसे ये बातें
कही हैं इसलिए तुम्हारा दिल दुःख से भर
गया है। 7 तौभी मैं तुमसे सच कह
रहा हूँ, मैं तुम्हारे ही भले के लिए जा
रहा हूँ। इसलिए कि अगर मैं न जाऊँ,
तो वह मददगार हरगिज़ तुम्हारे पास नहीं
आएगा। लेकिन अगर मैं जाता हूँ, तो
मैं उसे तुम्हारे पास भेजूँगा। 8 जब
वह आएगा तो दुनिया को साफ-साफ
दिखाएगा कि पाप क्या है और परमेश्वर
के स्तर के मुताबिक सही क्या है और
न्याय क्या हैः 9 सबसे पहले पाप के
बारे में, क्योंकि वे मुझ पर विश्वास नहीं
दिखा रहे। 10 फिर सही क्या है इसके
बारे में, क्योंकि मैं पिता के पास जा रहा
हूँ और तुम मुझे अब और न देखोगे।
11 फिर न्याय के बारे में, क्योंकि इस
दुनिया के राजा का न्याय किया गया है।

12 मुझे तुमसे और भी बहुत-सी
बातें कहनी हैं, मगर इस वक्त तुम
इन्हें समझ नहीं सकते। 13 लेकिन
जब वह मददगार आएगा, यानी सच्चाई
की पवित्र शक्ति, तो वह सच्चाई की
पूरी समझ पाने में तुम्हारी मदद करेगा।
इसलिए कि वह अपनी तरफ से नहीं
बोलेगा, बल्कि जो बातें वह सुनता है वही
बोलेगा और आनेवाली बातों के बारे
में तुम्हें साफ-साफ बताएगा। 14 वह
मेरी महिमा करेगा क्योंकि उसे मेरी तरफ
से जो मिला है वही तुम्हें साफ-साफ
बताएगा। 15 जो कुछ पिता का है
वह सब मेरा है। इसीलिए मैंने कहा कि
उस मददगार को मेरी तरफ से जो मिला
है वही तुम्हें बताएगा। 16 अब से
थोड़ी देर बाद तुम मुझे नहीं देखोगे और
फिर थोड़ी देर बाद तुम मुझे देखोगे।"

17 इसलिए उसके कुछ चेले एक-
दूसरे से कहने लगेः "यह जो हमसे कह
रहा है इसका क्या मतलब है कि 'थोड़ी
देर बाद तुम मुझे नहीं देखोगे और फिर
थोड़ी देर बाद तुम मुझे देखोगे' और यह
बात 'क्योंकि मैं अपने पिता के पास जा
रहा हूँ'?" 18 इसलिए वे कहने लगेः
"यह जो कह रहा है 'थोड़ी देर बाद,'
इसका क्या मतलब है? हम नहीं जानते
कि यह किस बारे में बात कर रहा है।"
19 यीशु जानता था कि वे उससे सवाल
पूछना चाहते हैं, इसलिए उसने चेलों से
कहाः "क्या तुम एक-दूसरे से मेरी इस

बात के बारे में पूछताछ कर रहे हो कि
थोड़ी देर बाद तुम मुझे नहीं देखोगे और
फिर थोड़ी देर बाद तुम मुझे देखोगे?
20 मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ, तुम
रोओगे और विलाप करोगे, मगर दुनिया
खुशियाँ मनाएगी। तुम शोक करोगे मगर
तुम्हारा शोक खुशी में बदल जाएगा।
21 एक स्त्री जब बच्चे को जन्म देनेवाली
होती है, तो उसे दुःख होता है क्योंकि
उसकी घड़ी आ पहुँची है। मगर जब वह
बच्चे को जन्म दे देती है तो फिर उसे
अपना दुःख-दर्द याद नहीं रहता क्योंकि
उसे खुशी होती है कि एक इंसान दुनिया
में पैदा हुआ है। **22** उसी तरह, तुम
भी अभी शोक करते हो। मगर मैं तुमसे
फिर मिलूँगा और तुम्हारे दिल खुशी
से भर जाएँगे और कोई भी तुमसे तुम्हारी
खुशी नहीं छीनेगा। **23** उस दिन तुम
मुझसे कोई सवाल नहीं करोगे। मैं तुमसे
सच-सच कहता हूँ, अगर तुम पिता से
कुछ भी माँगोगे तो वह मेरे नाम से तुम्हें
देगा। **24** इस वक्त तक तुमने मेरे
नाम से एक भी चीज़ नहीं माँगी है। माँगो
और तुम पाओगे, ताकि तुम्हारी खुशी
भरपूर हो जाए।

25 मैंने ये बातें तुमसे मिसालों में
कही हैं। वह घड़ी आ रही है जब मैं तुमसे
मिसालों में बात नहीं करूँगा, मगर पिता
के बारे में तुम्हें साफ-साफ खबर दूँगा।
26 उस दिन तुम मेरे नाम से पिता से
प्रार्थना कर सकोगे। मेरे कहने का मतलब
यह नहीं कि मैं हर बार तुम्हारे लिए पिता
से बिनती करूँगा। **27** इसलिए कि
पिता खुद तुमसे गहरा लगाव रखता है,
क्योंकि तुम मुझसे गहरा लगाव रखते हो
और तुमने यकीन किया है कि मैं पिता का
भेजा प्रतिनिधि हूँ। **28** मैं पिता की
तरफ से इस दुनिया में आया हूँ। और
मैं दुनिया को छोड़कर पिता के पास जा
रहा हूँ।"

29 उसके चेलों ने कहा: "देख! अब
तू हमें साफ-साफ बता रहा है और मिसालें
नहीं दे रहा। **30** अब हम जानते हैं
कि तुझे सब बातें पता हैं और किसी को
तुझसे सवाल करने की ज़रूरत नहीं।
इससे हमें यकीन होता है कि तू परमेश्वर
की तरफ से आया है।" **31** यीशु ने
जवाब दिया: "क्या तुम अभी यकीन
करते हो? **32** देखो! वह घड़ी आ रही
है, दरअसल आ चुकी है, जब तुम में से
हर कोई तित्तर-बित्तर होकर अपने-अपने
घर चला जाएगा और तुम मुझे अकेला
छोड़ दोगे। फिर भी मैं अकेला नहीं हूँ
क्योंकि पिता मेरे साथ है। **33** मैंने
तुमसे ये बातें इसलिए कही हैं ताकि मेरे
ज़रिए तुम शांति पा सको। दुनिया में
तुम्हें तकलीफें झेलनी पड़ रही हैं, मगर
हिम्मत रखो! मैंने इस दुनिया पर जीत
हासिल की है।"

17 यीशु ने ये बातें कहने के बाद,
स्वर्ग की तरफ नज़रें उठायीं
और कहा: "पिता, वह घड़ी आ गयी है।
अपने बेटे की महिमा कर, ताकि तेरा बेटा
तेरी महिमा कर सके, **2** क्योंकि तू ने
उसे सब इंसानों पर अधिकार दिया है
ताकि जितनों को तू ने उसे दिया है उन

सबको वह हमेशा की ज़िंदगी दे सके।
3 हमेशा की ज़िंदगी पाने के लिए ज़रूरी
है कि वे तुझ एकमात्र सच्चे परमेश्वर का
और यीशु मसीह का, जिसे तू ने भेजा है,
ज्ञान लेते रहें। 4 जो काम तू ने मुझे
दिया है उसे पूरा कर मैंने धरती पर
तेरी महिमा की है। 5 इसलिए अब हे
पिता, मुझे अपने साथ वह महिमा दे, जो
दुनिया के शुरू होने से पहले मेरी तेरे
साथ थी।

6 मैंने तेरा नाम उन लोगों पर ज़ाहिर
किया है जिन्हें तू ने दुनिया में से मुझे
दिया है। वे तेरे थे और तू ने उन्हें मुझे
दिया है और उन्होंने तेरा वचन माना है।
7 वे जान गए हैं कि जो कुछ तू ने मुझे
दिया है, वह सब तेरी तरफ से है।
8 क्योंकि जो बातें तू ने मुझे बतायी हैं
वे मैंने उन तक पहुँचायी हैं। उन्होंने ये
बातें स्वीकार की हैं और वे पक्के तौर
पर जान गए हैं कि मैं तेरा प्रतिनिधि बन-
कर आया हूँ और उन्होंने यकीन किया
है कि तू ने मुझे भेजा है। 9 मैं उनके
लिए बिनती करता हूँ। मैं दुनिया के लिए
बिनती नहीं करता, मगर उनके लिए
करता हूँ जिन्हें तू ने मुझे दिया है, क्योंकि
वे तेरे हैं, 10 और मेरा सबकुछ तेरा
है और जो तेरा है वह मेरा है, और उनके
बीच मुझे आदर मिला है।

11 यही नहीं, अब से मैं इस दुनिया
में नहीं रहूँगा मगर वे इसी दुनिया में हैं
और मैं तेरे पास आ रहा हूँ। पवित्र पिता,
अपने नाम की खातिर जो तू ने मुझे दिया
है, उनकी देखभाल कर, ताकि वे भी एक
हो सकें जैसे हम एक हैं। 12 जब मैं
उनके साथ था, तो मैं तेरे नाम की खातिर
जो तू ने मुझे दिया है, उनकी देखभाल
किया करता था। मैंने उन्हें बचाए रखा
और विनाश के बेटे को छोड़, उनमें
से एक भी नाश नहीं हुआ है, ताकि
शास्त्रवचन पूरा हो सके। 13 मगर
अब मैं तेरे पास आ रहा हूँ, और ये बातें
मैं दुनिया में रहते हुए इसलिए कह रहा
हूँ ताकि वे मेरी खुशी से भर जाएँ।
14 मैंने उन्हें तेरा वचन दिया है मगर
दुनिया ने उनसे नफरत की है क्योंकि वे
दुनिया के नहीं, ठीक जैसे मैं भी दुनिया
का नहीं।

15 मैं तुझसे यह बिनती नहीं करता
कि तू उन्हें दुनिया से निकाल ले, मगर
यह कि उस दुष्ट की वजह से उनकी
देखभाल कर। 16 वे दुनिया के नहीं
हैं, ठीक जैसे मैं दुनिया का नहीं हूँ।
17 सच्चाई से उन्हें पवित्र कर। तेरा
वचन सच्चा है। 18 ठीक जैसे तू ने
मुझे दुनिया में भेजा है, वैसे ही मैंने भी
उन्हें दुनिया में भेजा है। 19 और मैं
उनकी खातिर खुद को पवित्र करता हूँ
कि वे भी सच्चाई से पवित्र किए जाएँ।

20 मैं सिर्फ इन्हीं के लिए बिनती
नहीं करता, मगर उनके लिए भी करता
हूँ जो इनके वचन के ज़रिए मुझ पर
विश्वास करते हैं, 21 ताकि वे सभी
एक हो सकें। ठीक जैसे हे पिता, तू मेरे
साथ एकता में है और मैं तेरे साथ एकता
में हूँ। उसी तरह, वे भी हमारे साथ एकता
में हो सकें जिससे दुनिया यकीन कर सके

कि तू ने मुझे भेजा है। **22** मैंने उन्हें
वह महिमा दी है जो तू ने मुझे दी थी,
ताकि वे भी एक हों ठीक जैसे हम एक
हैं। **23** मैं उनके साथ एकता में हूँ
और तू मेरे साथ एकता में है, ताकि वे
पूरी तरह से एक हों, जिससे कि दुनिया
यह जाने कि तू ने मुझे भेजा है और तू
ने उनसे भी वैसे ही प्यार किया है
जैसे मुझसे किया है। **24** हे पिता,
जिन्हें तू ने मुझे दिया है उनके बारे में मैं
चाहता हूँ कि जहाँ मैं हूँ वे भी मेरे साथ
हों, ताकि वे मेरे उस वैभव को देख सकें
जो तू ने मुझे दिया है, क्योंकि तू ने दुनिया
की शुरूआत के पहले से मुझसे प्यार
किया है। **25** हे सच्चे पिता, दुनिया
वाकई तुझे नहीं जान पायी है, मगर मैंने
तुझे जाना है और इन्होंने भी जाना है कि
तू ने मुझे भेजा है। **26** मैंने तेरा नाम
उन्हें बताया है और आगे भी बताऊँगा
ताकि जो प्यार तू ने मुझसे किया, वह
उनमें भी हो और मैं उनके साथ एकता
में रहूँ।"

18 ये बातें कहने के बाद, यीशु
अपने चेलों के साथ किद्रोन
घाटी पार कर उस जगह गया जहाँ एक
बाग था। वह और उसके चेले बाग
के अंदर गए। **2** उसे पकड़वानेवाले
यहूदा को भी इस जगह का पता था,
क्योंकि यीशु ने अपने चेलों के साथ वहाँ
कई बार वक्त बिताया था। **3** इस-
लिए यहूदा, सैनिकों के दल और प्रधान
याजकों और फरीसियों की तरफ से पहरे-
दारों को साथ लेकर वहाँ आया। वे अपने
हाथों में मशालें और दीपक और हथियार
लिए हुए थे। **4** यीशु जानता था कि
उसके साथ क्या-क्या होनेवाला है, इस-
लिए उसने आगे आकर उनसे कहा:
"तुम किसे ढूँढ़ रहे हो?" **5** उन्होंने
जवाब दिया: "यीशु नासरी को।" यीशु
ने उनसे कहा: "मैं वही हूँ।" उसे पकड़-
वानेवाला यहूदा भी उनके साथ खड़ा था।

6 मगर जब यीशु ने कहा: "मैं
वही हूँ," तो वे पीछे हट गए और
ज़मीन पर गिर पड़े। **7** इसलिए यीशु
ने उनसे दोबारा पूछा: "तुम किसे ढूँढ़ रहे
हो?" उन्होंने कहा: "यीशु नासरी को।"
8 यीशु ने जवाब दिया: "मैं तुमसे कह
चुका हूँ कि मैं वही हूँ। अगर तुम मुझे
ही ढूँढ़ रहे हो, तो इन्हें जाने दो,"
9 जिससे कि वह बात पूरी हो सके जो
उसने कही थी: "जिन्हें तू ने मुझे दिया,
मैंने उनमें से एक को भी नहीं खोया।"

10 शमौन पतरस के पास तलवार
थी। इसलिए उसने तलवार निकालकर
महायाजक के दास पर वार किया जिससे
दास का दायाँ कान कट गया। उस दास
का नाम मलखुस था। **11** मगर यीशु
ने पतरस से कहा: "तलवार को उसकी
म्यान में रख। पिता ने जो प्याला* मुझे
दिया है, क्या मुझे हर हाल में उसे नहीं
पीना चाहिए?"

12 तब सैनिकों के दल और सेना-
पति* और यहूदियों के भेजे हुए पहरे-

यूह 18:11* मत्ती 26:39 फुटनोट देखें।
12* यानी, वह सेनापति जिसकी कमान के नीचे एक
हज़ार सैनिक होते थे।

दारों ने यीशु को पकड़ लिया और उसे
बाँध दिया। **13** वे उसे पहले हन्ना
के पास ले गये, इसलिए कि वह उस
साल के महायाजक कैफा का ससुर था।
14 दरअसल, वह कैफा ही था जिसने
यहूदियों को यह सलाह दी थी कि यह
उन्हीं के फायदे में है कि एक आदमी सब
लोगों की खातिर मरे।

15 ऐसा हुआ कि शमौन पतरस
और एक और चेला यीशु का पीछा करते
हुए गए। यह चेला महायाजक की जान-
पहचान का था और वह यीशु के साथ
महायाजक के घर के आँगन में दाखिल
हुआ। **16** मगर पतरस बाहर दरवाज़े
पर खड़ा था। इसलिए वह दूसरा चेला,
जो महायाजक की जान-पहचान का था,
बाहर गया और दरबान से बात की और
पतरस को अंदर ले आया। **17** तब
उस नौकरानी ने, जो दरबान थी, पतरस
से कहाः "क्या तू भी इस आदमी के चेलों
में से है?" उसने कहाः "नहीं, मैं नहीं हूँ।"
18 वहाँ आस-पास दास और पहरेदार
खड़े थे, जो ठंड की वजह से लकड़ी के
कोयले जलाकर वहाँ खड़े आग ताप रहे
थे। पतरस भी उनके साथ खड़ा आग
ताप रहा था।

19 तब प्रधान याजक ने यीशु से
उसके चेलों और उसकी शिक्षा के बारे
में पूछताछ की। **20** यीशु ने जवाब
दियाः "मैंने दुनिया के सामने सरेआम बात
की है। मैं हमेशा सभा-घर और मंदिर में
सिखाया करता था, जहाँ सभी यहूदी
इकट्ठा होते हैं और मैंने कुछ भी छिप-
कर नहीं कहा। **21** तो फिर तू मुझसे
क्यों पूछता है? उनसे पूछ जिन्होंने मेरी
बातें सुनी हैं कि मैंने उनसे क्या कहा।
देख! ये जानते हैं कि मैंने क्या कहा।"
22 जब उसने यह कहा, तो वहाँ खड़े
पहरेदारों में से एक ने यीशु के मुँह पर
थप्पड़ मारकर कहाः "क्या प्रधान याजक
को जवाब देने का यह तरीका है?"
23 यीशु ने उसे जवाब दियाः "अगर
मैंने कुछ गलत कहा, तो मुझे बता।
लेकिन अगर मैंने सही कहा, तो तू मुझे
क्यों मारता है?" **24** तब हन्ना ने उसे
बँधा हुआ, महायाजक कैफा के पास भेज
दिया।

25 शमौन पतरस खड़ा हुआ आग
ताप रहा था। तब लोगों ने उससे कहाः
"क्या तू भी उसके चेलों में से एक नहीं?"
उसने इनकार किया और कहाः "नहीं, मैं
नहीं हूँ।" **26** तब महायाजक के एक
दास ने, जो उस आदमी का रिश्तेदार था
जिसका कान पतरस ने काट दिया था,
कहाः "क्या मैंने तुझे उसके साथ बाग में
नहीं देखा था?" **27** मगर, पतरस ने
फिर इनकार किया और फौरन एक मुर्गे
ने बाँग दी।

28 तब वे यीशु को कैफा के यहाँ से
राज्यपाल के महल ले गए। यह सुबह
का वक्त था। मगर वे खुद राज्यपाल के
महल के अंदर नहीं गए, ताकि वे दूषित
न हो जाएँ और फसह का खाना खा सकें।
29 इसलिए पीलातुस* ने बाहर उनके

यूह 18:29* मत्ती 27:2 फुटनोट देखें।

पास आकर कहा: “तुम इस आदमी को
किस इलज़ाम में मेरे पास लाए हो?”
30 जवाब में उन्होंने उससे कहा: “अगर
यह आदमी गुनहगार न होता, तो हम इसे
तेरे हवाले न करते।” 31 इसलिए
पीलातुस ने उनसे कहा: “तुम्हीं इसे ले
जाओ और अपने कानून के मुताबिक
इसका न्याय करो।” यहूदियों ने उससे
कहा: “कानून के हिसाब से हमें किसी
को जान से मारने का अधिकार नहीं है।”
32 यह इसलिए हुआ कि यीशु का वचन
पूरा हो सके जो उसने यह बताने के लिए
कहा था कि उसके लिए कैसी मौत मरना
तय है।

33 तब पीलातुस फिर से महल के
अंदर गया और यीशु को बुलाकर उससे
पूछा: “क्या तू यहूदियों का राजा है?”
34 यीशु ने जवाब दिया: “क्या तू यह
अपनी तरफ से कह रहा है या क्या
दूसरों ने तुझे मेरे बारे में बताया है?”
35 पीलातुस ने जवाब दिया: “क्या मैं
यहूदी हूँ? तेरे ही लोगों ने और प्रधान
याजकों ने तुझे मेरे हवाले किया है।
तू ने क्या किया है?” 36 यीशु ने
जवाब दिया: “मेरा राज इस दुनिया का
नहीं है। अगर मेरा राज इस दुनिया का
होता तो मेरे सेवक लड़ते कि मुझे यहू-
दियों के हवाले न किया जाए। मगर, बात
यह है कि मेरा राज इस दुनिया का नहीं।”
37 इसलिए पीलातुस ने उससे कहा: “तो
क्या तू राजा है?” यीशु ने जवाब दिया:
“तू खुद कह रहा है कि मैं एक राजा हूँ।
मैं इसीलिए पैदा हुआ हूँ और इस दुनिया
में आया हूँ कि सच्चाई की गवाही दूँ। हर
कोई जो सच्चाई के पक्ष में है वह मेरी
आवाज़ सुनता है।” 38 पीलातुस ने
उससे कहा: “सच्चाई क्या है?”

यह कहने के बाद, पीलातुस फिर
बाहर यहूदियों के पास गया और उनसे
कहा: “मैं उसमें कोई दोष नहीं पाता।
39 तुम्हारे दस्तूर के मुताबिक मुझे फसह
के त्योहार पर तुम्हारी गुज़ारिश पर एक
आदमी को कैद से रिहा करना चाहिए।
तो क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए
यहूदियों के इस राजा को रिहा करूँ?”
40 तब वे फिर से चिल्लाए: “नहीं, इस
आदमी को नहीं, बल्कि बरअब्बा को रिहा
कर!” दरअसल, बरअब्बा एक डाकू था।

19 इसलिए तब पीलातुस यीशु को
ले गया और उसे कोड़े लगवाए।
2 सैनिकों ने काँटों का एक ताज बना-
कर उसके सिर पर रखा और उसे एक
बैंजनी कपड़ा ओढ़ाया। 3 वे उसके
पास आकर कहने लगे: “हे यहूदियों
के राजा, यह दिन तुझे मुबारक हो!”
साथ ही वे उसके मुँह पर थप्पड़ मारते
थे। 4 पीलातुस एक बार फिर बाहर
आया और लोगों से कहा: “देखो! मैं उसे
बाहर लाता हूँ ताकि तुम जानो कि मैंने
उसमें कोई दोष नहीं पाया।” 5 तब
यीशु काँटों का ताज पहने और बैंजनी
ओढ़ना ओढ़े बाहर आया। और पीलातुस
ने उनसे कहा: “देखो! यह है वह आदमी!”
6 लेकिन जब प्रधान याजकों और पहरे-

दारों ने उसे देखा, तो वे चिल्लाने लगे: "इसे सूली पर चढ़ा दे! इसे सूली पर चढ़ा दे!" पीलातुस ने उनसे कहा: "तुम खुद ही इसे ले जाकर सूली पर चढ़ाओ, क्योंकि मैं इसमें कोई दोष नहीं पाता।"
7 यहूदियों ने उसे जवाब दिया: "हमारा एक कानून है और उस कानून के मुताबिक यह मौत की सज़ा के लायक है क्योंकि इसने खुद को परमेश्वर का बेटा बताया है।"

8 जब पीलातुस ने यह बात सुनी तो वह और भी डर गया। **9** वह फिर
से महल के अंदर गया और यीशु से पूछा: "तू कहाँ का है?" मगर यीशु ने उसे कोई जवाब न दिया। **10** इसलिए पीलातुस
ने उससे कहा: "क्या तू मुझे जवाब नहीं देगा? क्या तुझे यह नहीं मालूम कि मेरे पास तुझे रिहा करने का भी अधिकार है और तुझे सूली पर चढ़ाने का भी?"
11 यीशु ने उसे जवाब दिया: "अगर तुझे यह अधिकार ऊपर से न दिया गया होता, तो तेरे पास मेरे खिलाफ कुछ भी करने का अधिकार न होता। इसीलिए जिस आदमी ने मुझे तेरे हवाले किया है, उसका पाप ज़्यादा बड़ा है।"

12 इस वजह से पीलातुस किसी तरह उसे रिहा करने की कोशिश करता रहा। मगर यहूदियों ने चिल्ला-चिल्लाकर कहा: "अगर तू इस आदमी को रिहा करता है, तो तू सम्राट* का दोस्त नहीं। हर आदमी जो खुद को एक राजा बनाता है वह सम्राट के खिलाफ बोलता
है।" **13** इसलिए ये बातें सुनने के बाद पीलातुस यीशु को बाहर लाया और एक न्याय-आसन पर यानी उस जगह बैठ गया जो पत्थर का चबूतरा कहलाता था। मगर इब्रानी में उसे *गब्बता* कहा जाता था। **14** यह फसह की
तैयारी का दिन* था और दिन का करीब छठा घंटा# था। पीलातुस ने यहूदियों से कहा: "देखो! तुम्हारा राजा!"
15 लेकिन वे चिल्लाए: "इसका काम तमाम कर! इसका काम तमाम कर! इसे सूली पर चढ़ा दे!" पीलातुस ने उनसे कहा: "क्या मैं तुम्हारे राजा को सूली पर चढ़ा दूँ?" तब प्रधान याजकों ने जवाब दिया: "सम्राट को छोड़ हमारा कोई राजा नहीं।" **16** तब उसने यीशु को सूली
पर चढ़ाने के लिए उन्हें सौंप दिया।

तब सैनिकों ने यीशु को अपने कब्ज़े में ले लिया। **17** यीशु अपनी यातना की
सूली* उठाए उस जगह तक गया जिसे खोपड़ी स्थान कहा जाता है, जो इब्रानी में *गुलगुता* कहलाता है। **18** वहाँ उन्होंने
उसे सूली पर चढ़ा दिया और उसके साथ दो आदमियों को, एक को इस तरफ और दूसरे को उस तरफ सूली पर चढ़ाया और यीशु बीच में था। **19** पीलातुस
ने एक दोष-पत्र लिखकर यातना की सूली पर लगवा दिया, जिस पर लिखा था: "यीशु नासरी, यहूदियों का राजा।"
20 इसलिए इस दोष-पत्र को बहुत-से

यूह 19:12* यूनानी में *"कैसर।"*

यूह 19:14* मत्ती 27:62 फुटनोट देखें। **14#** मत्ती 20:5 पहला फुटनोट देखें। **17*** अतिरिक्त लेख 6 देखें।

यहूदियों ने पढ़ा, क्योंकि जिस जगह यीशु
को सूली पर चढ़ाया गया था वह जगह
शहर के पास ही थी। इस दोष-पत्र
पर इब्रानी, लातीनी और यूनानी भाषा
में लिखा था। **21** लेकिन यहूदियों के
प्रधान याजक पीलातुस से कहने लगेः
"यह मत लिखः 'यहूदियों का राजा' मगर
यह लिख कि उसने कहा, 'मैं यहूदियों का
राजा हूँ।'" **22** पीलातुस ने जवाब
दियाः "मैंने जो लिखवा दिया सो लिखवा
दिया।"

23 जब सैनिकों ने यीशु को सूली पर
चढ़ा दिया, तो उन्होंने उसका ओढ़ना
लिया और उसके चार टुकड़े कर आपस
में बाँट लिए यानी हर सैनिक ने एक
टुकड़ा ले लिया। फिर उन्होंने कुरता भी
लिया। मगर कुरते में कोई जोड़ नहीं था,
बल्कि यह ऊपर से नीचे तक बुना हुआ
था। **24** इसलिए उन्होंने एक-दूसरे से
कहाः "हम इसे नहीं फाड़ते, बल्कि यह
तय करने के लिए कि यह किसका होगा
हम चिट्ठियाँ डालते हैं।" ऐसा इसलिए
हुआ कि यह वचन पूरा होः "उन्होंने मेरा
ओढ़ना आपस में बाँट लिया और मेरे
कुरते पर चिट्ठियाँ डालीं।" सैनिकों ने
वाकई ऐसा ही किया।

25 यीशु की यातना की सूली के पास
उसकी माँ, उसकी मौसी, क्लोपास की
पत्नी मरियम और मरियम मगदलीनी
खड़ी थीं। **26** इसलिए जब यीशु ने
अपनी माँ को और उस चेले को जिससे
वह बहुत प्यार करता था, पास खड़े देखा
तो अपनी माँ से कहाः "हे स्त्री, देख!
तेरा बेटा!" **27** इसके बाद यीशु ने
उस चेले से कहाः "देख! तेरी माँ!" और
वह चेला तब से मरियम को अपने घर
ले आया।

28 इसके बाद, यीशु ने यह जानते
हुए कि सबकुछ पूरा हो चुका है, इसलिए
कि शास्त्र में लिखी बात पूरी हो, यह
कहाः "मैं प्यासा हूँ।" **29** वहाँ खट्टी
दाख-मदिरा से भरा एक बरतन रखा
था। इसलिए उन्होंने खट्टी दाख-मदिरा में
भिगोए हुए एक स्पंज को जूफे की डंडी
पर रखा और उसके मुँह के पास किया।
30 जब यीशु ने वह खट्टी दाख-मदिरा
ली तो कहाः "पूरा हुआ!" और सिर
झुकाकर दम तोड़ दिया।

31 वह तैयारी का दिन था और इस-
लिए कि लाशें सब्त के दिन यातना की
सूली पर लटकी न रहें (क्योंकि यह बड़ा
सब्त था) यहूदियों ने पीलातुस से गुज़ा-
रिश की कि अपराधियों की टाँगें तोड़ दी
जाएँ और उनकी लाशें उतार ली जाएँ।
32 इसलिए सैनिकों ने आकर यीशु के
साथ सूली पर चढ़ाए गए पहले आदमी
की टाँगें तोड़ीं और फिर दूसरे की।
33 मगर जब उन्होंने यीशु के पास
आकर देखा कि वह पहले ही मर चुका
है, तो उसकी टाँगें नहीं तोड़ीं **34** फिर
भी सैनिकों में से एक ने अपना भाला
उसकी पसलियों के बीच भोंका और
फौरन खून और पानी बह निकला।
35 जिसने यह सबकुछ अपनी आँखों से
देखा उसने इसकी गवाही दी है और
उसकी गवाही सच्ची है। वह खुद जानता

है कि उसने जो कुछ कहा वह सच है,
जिससे तुम भी यकीन करो। **36** दर-
असल यह सब इसलिए हुआ ताकि शास्त्र
में लिखी यह बात पूरी हो: “उसकी एक
भी हड्डी नहीं तोड़ी जाएगी।” **37** फिर
शास्त्र में एक और जगह लिखा है: “वे
उसे देखेंगे जिसे उन्होंने बेधा है।”

38 इन बातों के बाद अरिमतियाह
के यूसुफ ने, जो यीशु का एक चेला था,
मगर यहूदियों के डर से इस बात को
छिपाए रखता था, पीलातुस से गुज़ारिश
की कि वह यीशु का शव ले जाना चाहता
है। पीलातुस ने उसे इजाज़त दे दी।
इसलिए यूसुफ आया और उसका शव
अपने साथ ले गया। **39** नीकुदेमुस
भी, जो पहली बार यीशु के पास रात के
वक्त आया था, वह करीब तैंतीस किलो
गंधरस और अगर का मिश्रण ले आया।
40 तब उन्होंने यीशु का शव लिया और
यहूदियों के दफनाने की रीत के मुताबिक
उसे इन खुशबूदार मसालों के साथ पट्टियों
से लपेटा। **41** इत्तफाक से जिस जगह
उसे सूली पर चढ़ाया गया था, वहीं एक
बाग था और उसमें एक नयी कब्र थी
जिसमें अब तक कोई शव नहीं रखा गया
था। **42** इसलिए यहूदियों के त्योहार
की तैयारी के दिन की वजह से, साथ ही
उस कब्र के नज़दीक होने की वजह से
उन्होंने यीशु को उस कब्र में रख दिया।

20 हफ्ते के पहले दिन बड़े सवेरे
जब अंधेरा ही था, मरियम
मगदलीनी कब्र पर आयी। उसने देखा कि
कब्र पर रखा पत्थर पहले से हटा हुआ
है। **2** इसलिए वह दौड़ी-दौड़ी शमौन
पतरस और उस दूसरे चेले के पास गयी
जिससे यीशु को गहरा लगाव था, और
उनसे कहा: “वे प्रभु को कब्र से निकाल-
कर ले गए हैं और हम नहीं जानतीं कि
उन्होंने उसे कहाँ रखा है।”

3 तब पतरस और वह दूसरा
चेला बाहर आए और कब्र की तरफ
निकल पड़े। **4** जी हाँ, वे दोनों साथ-
साथ भागने लगे, मगर दूसरा चेला पत-
रस से तेज़ दौड़ता हुआ आगे निकल
गया और कब्र पर पहले पहुँच गया।
5 उसने झुककर अंदर झाँका तो पट्टियाँ
पड़ी देखीं, मगर वह अंदर नहीं गया।
6 तब शमौन पतरस भी उसके पीछे-पीछे
आ पहुँचा और कब्र के अंदर घुस गया।
उसने वहाँ पट्टियाँ पड़ी देखीं, **7** और
वह कपड़ा भी देखा जिससे यीशु का सिर
लपेटा गया था। यह कपड़ा पट्टियों के
साथ नहीं बल्कि एक तरफ लपेटा हुआ
रखा था। **8** तब वह दूसरा चेला भी,
जो कब्र पर पहले पहुँचा था, अंदर गया
और उसने देखा और यकीन किया।
9 वे अब तक शास्त्र की यह बात नहीं
समझे थे कि उसका मरे हुओं में से जी
उठना ज़रूरी था। **10** तब ये चेले
अपने घरों को लौट गए।

11 मगर मरियम रोती हुई कब्र के
बाहर ही खड़ी रही। फिर जब उसने
रोते-रोते झुककर कब्र के अंदर झाँका,
12 तो सफेद कपड़े पहने दो स्वर्गदूतों
को उस जगह बैठा देखा। एक को उस
जगह जहाँ यीशु का सिर था और दूसरे

को जहाँ उसके पैर थे। **13** उन्होंने
मरियम से कहा: “हे स्त्री, तू क्यों रो रही
है?” उसने उनसे कहा: “वे मेरे प्रभु को
ले गए हैं, और मैं नहीं जानती कि उन्होंने
उसे कहाँ रखा है।” **14** यह कहने के
बाद जब वह मुड़ी तो उसने यीशु को खड़े
देखा, मगर वह पहचान न सकी कि वह
यीशु है। **15** यीशु ने उससे कहा:
“हे स्त्री, तू क्यों रो रही है? तू किसे ढूँढ़
रही है?” मरियम ने उसे माली समझकर
उससे कहा: “भाई, अगर तू उसे उठाकर
ले गया है तो मुझे बता दे कि तू ने उसे
कहाँ रखा है, और मैं उसे ले जाऊँगी।”
16 यीशु ने उससे कहा: “मरियम!” इस
पर उसने घूमकर उससे इब्रानी में कहा:
“रब्बोनी!” (जिसका मतलब है, “गुरु!”)
17 यीशु ने उससे कहा: “मुझसे लिपटी
मत रह। इसलिए कि मैं अभी तक ऊपर
पिता के पास नहीं गया। मगर जाकर
मेरे भाइयों से कह: ‘मैं अपने पिता
और तुम्हारे पिता और अपने परमेश्वर
और तुम्हारे परमेश्वर के पास ऊपर जा
रहा हूँ।’” **18** मरियम मगदलीनी यह
खबर लेकर चेलों के पास आयी: “मैंने
प्रभु को देखा है!” उसने यह भी बताया
कि यीशु ने उससे क्या-क्या बातें कहीं।

19 इसलिए उसी दिन यानी हफ्ते के
पहले दिन, जब शाम का वक्त था, चेले
यहूदियों के डर से दरवाज़े बंद किए घर
के अंदर थे। लेकिन दरवाज़े बंद होने के
बावजूद यीशु उनके बीच आ खड़ा हुआ,
और उनसे कहा: “तुम्हें शांति मिले।”
20 यह कहने के बाद उसने उन्हें अपने
दोनों हाथ और अपनी पसलियाँ दिखायीं।
तब चेले प्रभु को देखकर बेहद खुश हुए।
21 यीशु ने एक बार फिर उनसे कहा:
“तुम्हें शांति मिले। जैसे पिता ने मुझे भेजा
है, मैं भी तुम्हें भेजता हूँ।” **22** यह
कहने के बाद उसने उन पर फूँका और
उनसे कहा: “परमेश्वर की पवित्र शक्ति
पाओ। **23** अगर तुम किसी के पाप
माफ करोगे, तो वे उनके लिए माफ कर
दिए जाएँगे। तुम जिनका पाप माफ न
करोगे, उनका पाप बना रहेगा।”

24 मगर जब यीशु आया था, तब
थोमा जो उन बारहों में से एक था, और
जुड़वाँ* कहलाता था, उस वक्त चेलों
के बीच मौजूद नहीं था। **25** इसलिए
दूसरे चेले उससे कहते थे: “हमने प्रभु को
देखा है!” मगर थोमा ने उनसे कहा: “जब
तक मैं उसके हाथों में कीलों के निशान
न देख लूँ और उनमें अपनी उँगली
न डालूँ और उसकी पसली में अपना हाथ
डालकर देख न लूँ, तब तक हरगिज़
यकीन न करूँगा।”

26 ऐसा हुआ कि आठ दिन बाद
चेले फिर से घर के अंदर थे और थोमा
भी उनके साथ था। तब घर के दरवाज़े
बंद होने के बावजूद यीशु उनके बीच
आ खड़ा हुआ और उनसे कहा: “तुम्हें
शांति मिले।” **27** इसके बाद उसने
थोमा से कहा: “अपनी उँगली लगा-
कर मेरे हाथ देख, और अपना हाथ

यूह 20:24* या, “दिदुमुस।”

मेरी पसली में लगाकर देख, और अ-
विश्वासी बनना छोड़ बल्कि विश्वासी
बन।" 28 जवाब में थोमा ने उससे
कहा: "हे मेरे प्रभु, हे मेरे परमेश्वर!"
29 यीशु ने उससे कहा: "तू ने मुझे देखा
है क्या इसीलिए यकीन करता है? सुखी
हैं वे जिन्होंने देखा नहीं फिर भी यकीन
करते हैं।"

30 सच तो यह है कि यीशु ने चेलों
के सामने और भी बहुत-से चमत्कार
किए जो इस खर्रे में नहीं लिखे गए।
31 मगर जो लिखे गए हैं वे इसलिए
लिखे गए हैं ताकि तुम यकीन करो कि
यीशु ही परमेश्वर का बेटा मसीह है और
यकीन करने की वजह से तुम उसके नाम
से ज़िंदगी पाओ।

21 इन बातों के बाद, एक बार फिर
यीशु ने खुद को तिबिरियास
झील के किनारे चेलों पर ज़ाहिर किया।
उसने खुद को इस तरह ज़ाहिर किया।
2 ऐसा हुआ कि शमौन पतरस और
थोमा जो जुड़वाँ कहलाता था और गलील
के काना का नतनएल और जब्दी के बेटे
और यीशु के दो और चेले एक-साथ थे।
3 तब शमौन पतरस ने उनसे कहा: "मैं
मछली पकड़ने जा रहा हूँ," तो उन्होंने
कहा: "हम भी तेरे साथ आ रहे हैं।" वे
बाहर निकले और नाव पर सवार हो गए,
मगर उस रात उनके हाथ कुछ न लगा।

4 जब सुबह होने लगी तब यीशु
किनारे पर आकर खड़ा हो गया। मगर
हाँ, चेलों ने उसे न पहचाना कि
वह यीशु है। 5 तब यीशु ने उनसे
कहा: "बच्चो, क्या तुम्हारे पास खाने के
लिए कुछ है?" उन्होंने जवाब दिया:
"नहीं!" 6 उसने उनसे कहा: "नाव
की दायीं तरफ जाल डालो और तुम्हें कुछ
मिलेगा।" तब उन्होंने जाल डाला, मगर
उसे फिर खींच न पाए क्योंकि उसमें ढेरों
मछलियाँ फँसी थीं। 7 इसलिए उस
चेले ने, जिसे यीशु प्यार करता था,
पतरस से कहा: "यह तो प्रभु है!" जब
शमौन पतरस ने सुना कि यह प्रभु है तो
उसने अपना कुरता पहन लिया क्योंकि
वह अधनंगा था, और झील में कूद पड़ा।
8 मगर दूसरे चेले छोटी नाव में मछ-
लियों से भरा जाल खींचते हुए आए,
क्योंकि वे किनारे से ज़्यादा दूर नहीं बल्कि
करीब नब्बे मीटर की दूरी पर थे।

9 जब वे किनारे पर आए, तो
उन्होंने देखा कि लकड़ी के कोयले की
आग जली हुई है और उस पर मछलियाँ
रखी हुई हैं और रोटी भी है। 10 यीशु
ने उनसे कहा: "तुमने अभी-अभी जो मछ-
लियाँ पकड़ी हैं उनमें से कुछ ले आओ।"
11 इसलिए शमौन पतरस नाव पर चढ़ा
और मछलियों से भरा जाल खींच लाया,
जिसमें एक सौ तिरपन बड़ी मछलियाँ
फँसी थीं। मगर इतनी ज़्यादा मछलियाँ
होने के बावजूद वह जाल फटा नहीं था।
12 यीशु ने उनसे कहा: "आओ, नाश्ता
कर लो।" लेकिन चेलों में से किसी की
भी यह पूछने की हिम्मत न हुई कि "तू
कौन है?" क्योंकि वे जानते थे कि वह
प्रभु ही है। 13 यीशु आया और रोटी

लेकर उन्हें दी और इसी तरह मछली भी
दी। **14** यह तीसरी बार था जब यीशु
मरे हुओं में से जी उठने के बाद चेलों को
दिखायी दिया।

15 जब वे नाश्ता कर चुके, तो यीशु
ने शमौन पतरस से कहा: "शमौन, यूहन्ना
के बेटे, क्या तू इनसे ज़्यादा मुझसे प्यार
करता है?" पतरस ने उससे कहा: "हाँ
प्रभु, तू जानता है कि मुझे तुझसे गहरा
लगाव है।" यीशु ने उससे कहा: "मेरे
मेम्नों को खिला।" **16** यीशु ने फिर
दूसरी बार उससे कहा: "शमौन, यूहन्ना
के बेटे, क्या तू मुझसे प्यार करता है?"
पतरस ने उससे कहा: "हाँ प्रभु, तू जानता
है कि मुझे तुझसे गहरा लगाव है।" उसने
उससे कहा: "चरवाहों की तरह मेरी छोटी
भेड़ों की देखभाल कर।" **17** यीशु ने
तीसरी बार उससे कहा: "शमौन, यूहन्ना
के बेटे, क्या तुझे मुझसे गहरा लगाव
है?" इस पर पतरस दुःखी हुआ कि
उसने तीसरी बार उससे पूछा कि 'क्या
तुझे मुझसे गहरा लगाव है?' इसलिए
पतरस ने उससे कहा: "प्रभु, तू सब-
कुछ जानता है। तू यह भी जानता है
कि मैं तुझसे गहरा लगाव रखता हूँ।"
यीशु ने कहा: "मेरी छोटी भेड़ों को
खिला। **18** मैं तुझसे सच-सच कहता
हूँ, जब तू जवान था तो खुद अपनी
कमर कसकर जहाँ चाहता वहाँ जाता
था। मगर जब तू बूढ़ा होगा, तो तू
अपने हाथ आगे बढ़ाएगा और कोई और
आदमी तेरी कमर बाँधेगा और जहाँ
तू नहीं चाहेगा वहाँ तुझे ले जाएगा।"
19 उसने ऐसा यह बताने के लिए कहा
कि वह किस तरह की मौत मरकर पर-
मेश्वर की महिमा करेगा। यह कहने के
बाद यीशु ने उससे कहा: "मेरे पीछे चलना
जारी रख।"

20 जब पतरस मुड़ा तो उस चेले को
पीछे आते देखा जिसे यीशु प्यार करता
था। यह वही चेला था जिसने शाम के
खाने के वक्त यीशु के सीने के पास झुक-
कर उससे पूछा था: "प्रभु, वह कौन है जो
तुझे धोखे से पकड़वाएगा?" **21** जब
पतरस की नज़र उस चेले पर पड़ी, तो
उसने यीशु से पूछा: "प्रभु, इस आदमी
का क्या होगा?" **22** यीशु ने उससे
कहा: "अगर मेरी मरज़ी है कि यह मेरे
आने तक रहे, तो तुझे इससे क्या? तू
मेरे पीछे चलना जारी रख।" **23** इस
वजह से, भाइयों में यह बात फैल गयी
कि वह चेला नहीं मरेगा। मगर, यीशु ने
उससे यह नहीं कहा कि वह न मरेगा
बल्कि सिर्फ इतना कहा कि "अगर मेरी
मरज़ी है कि यह मेरे आने तक रहे, तो
तुझे इससे क्या?"

24 यह वही चेला है जो इन बातों
की गवाही देता है और जिसने ये बातें
लिखी हैं और हम जानते हैं कि वह जो
गवाही देता है वह सच्ची है।

25 दरअसल, ऐसे और भी बहुत-से
काम हैं जो यीशु ने किए थे। अगर कभी
इनके बारे में पूरा ब्यौरा लिखा जाए, तो
मैं समझता हूँ कि जो खर्रे लिखे जाते वे
पूरी दुनिया में भी न समाते।

प्रेषितों के काम

1 प्यारे थियुफिलुस, जब से यीशु ने
सेवा करनी शुरू की तब से उसने
जो-जो किया और सिखाया, वह सब
मैंने अपनी पहली किताब में लिखा है।
2 उसमें उस वक्त तक का ब्यौरा है जब
यीशु ने अपने चुने हुए प्रेषितों* को
पवित्र शक्ति के ज़रिए हिदायतें दीं और
इसके बाद उसे स्वर्ग उठा लिया गया।
3 अपनी मौत तक दुःख उठाने के बाद,
उसने कितने ही ठोस सबूत देकर इन्हीं
चेलों पर यह ज़ाहिर किया कि वह जी
उठा है। वह चालीस दिन तक उन्हें
दिखायी देता रहा और उन्हें परमेश्वर के
राज के बारे में बताता रहा। **4** और
चेलों से मुलाकात के दौरान, यीशु ने उन्हें
यह आज्ञा दी: "यरूशलेम छोड़कर मत
जाना। पिता ने जिस बात का वादा किया
है और जिसके बारे में तुमने मुझसे सुना
है, उस वादे के पूरा होने का वहीं इंतज़ार
करते रहना, **5** क्योंकि यूहन्ना ने तो
पानी से बपतिस्मा* दिया था, मगर अब
से कुछ दिन बाद तुम पवित्र शक्ति से
बपतिस्मा पाओगे।"

6 जब चेले इकट्ठा हुए, तो उससे
पूछने लगे: "प्रभु, क्या तू इसी वक्त इस-
राएल के राज को फिर से बहाल करने
जा रहा है?" **7** उसने उनसे कहा:
"उन समयों या ठहराए हुए दिनों की
जानकारी पाने की तुम्हें ज़रूरत नहीं।
ये समय या दिन कौन-से होंगे, इन्हें
तय करना पिता ने अपने ही अधिकार
में रखा है; **8** लेकिन जब तुम पर
पवित्र शक्ति* आएगी, तो तुम ताकत
पाओगे, और यरूशलेम और सारे यहू-
दिया और सामरिया देश में यहाँ तक कि
दुनिया के सबसे दूर के इलाकों में मेरे
बारे में गवाही दोगे।" **9** और जब वह
ये बातें कह चुका, तो उनके देखते-देखते
वह ऊपर उठा लिया गया और एक
बादल ने उसे उनकी नज़रों से छिपा
लिया। **10** जब वह जा रहा था, तब
वे आकाश की तरफ ताक रहे थे। तभी
अचानक सफेद कपड़े पहने दो आदमी
उनके पास आ खड़े हुए, **11** और
उन्होंने कहा: "हे गलीली पुरुषो, तुम यहाँ
खड़े, आकाश की तरफ क्यों ताक रहे
हो? यह यीशु, जो तुम्हारे पास से आकाश
में उठा लिया गया है, वह इसी ढंग से
आएगा जैसे तुमने उसे आकाश में जाते
देखा है।"

12 फिर वे उस पहाड़ से, जिसे जैतून
पहाड़ कहा जाता है, यरूशलेम लौट
आए। यह पहाड़ यरूशलेम के पास है

प्रेषि 1:2* या, "भेजे गए।" यूनानी में *"अपोस्टो-लोस।"* **5*** बपतिस्मे का मतलब किसी को पानी में पूरी तरह डुबकी देना है। यह एक धार्मिक रस्म है।

प्रेषि 1:8* यूनानी *नफ्मा।* अतिरिक्त लेख 7 देखें।

और सब्त के दिन की यात्रा* की दूरी
पर है। **13** यरूशलेम शहर पहुँचकर
चेले ऊपर के उस कमरे में गए, जहाँ वे
ठहरे हुए थे। ये चेले थे पतरस, यूहन्ना
और याकूब, अन्द्रियास, फिलिप्पुस और
थोमा, बरतुलमै और मत्ती, हलफई का
बेटा याकूब और जोशीला शमौन और
याकूब का बेटा यहूदा। **14** ये सब
एक मन से प्रार्थना में लगे हुए थे। और
उनके साथ कुछ स्त्रियाँ, यीशु के भाई
और उसकी माँ मरियम भी थी।

15 इन्हीं दिनों की बात है, जब
करीब एक सौ बीस चेले जमा थे, तब
पतरस खड़ा हुआ और वहाँ मौजूद सभी
भाई-बहनों से कहने लगाः **16** "प्यारे
भाइयो, परमेश्वर की पवित्र शक्ति ने
दाविद के मुँह से यहूदा के बारे में
पहले से जो भविष्यवाणी की थी, उस
वचन का पूरा होना ज़रूरी था। यहूदा,
यीशु के गिरफ्तार करनेवालों को उसके
ठिकाने तक ले गया। **17** उसकी
गिनती हमारे साथ होती थी और उसने
हमारी तरह सेवा में हिस्सा भी लिया था।
18 (इसी आदमी ने अपनी बेईमानी की
कमाई से एक ज़मीन खरीदी। वह सिर के
बल गिरा और बड़ी आवाज़ के साथ बीच
में से फट गया और उसकी सारी अँत-
ड़ियाँ बाहर निकल आयीं।* **19** यरू-
शलेम के सभी रहनेवालों को भी ये सारी
बातें पता चलीं, इसलिए उनकी भाषा
में वह ज़मीन हकलदमा यानी खून की
ज़मीन कहलायी।) **20** क्योंकि भजनों
की किताब में लिखा है, 'उसका घर उजड़
जाए और उसमें रहनेवाला कोई न हो'
और 'उसका निगरानी का पद दूसरा ले
ले।' **21** इसलिए यह ज़रूरी है कि
यहूदा की जगह कोई और ले। प्रभु यीशु
ने जितने समय सेवा की और हमारे बीच
रहा,* **22** यानी यूहन्ना से बपतिस्मा
पाने के वक्त से लेकर उस दिन तक
जिस दिन वह हमारे बीच से उठा लिया
गया, उतने समय के दौरान हमारे साथ
इकट्ठा होनेवाले आदमियों में से कोई एक
यीशु के मरे हुओं में से जी उठने* का
गवाह बन जाए।"

23 इसलिए उन्होंने दो चेलों का
नाम आगे रखा। पहला था यूसुफ जो
बर-सबा और युसतुस भी कहलाता है
और दूसरा मत्तियाह। **24** इनके लिए
चेलों ने परमेश्वर से यह प्रार्थना कीः
"हे यहोवा,* तू जो सबके दिलों को
जानता है, हम पर ज़ाहिर कर कि तू ने
इन दो आदमियों में से किसे चुना है,
25 ताकि वह इस सेवा और प्रेषित-पद
को हासिल करे जिसे ठुकराकर यहूदा ने
अपनी राह इख्तियार की।" **26** तब
उन्होंने उनके नाम पर चिट्ठियाँ डालीं और

प्रेषि 1:12* यह करीब आधे मील की दूरी थी। **18*** ज़ाहिर है कि यहाँ वे हालात बताए गए हैं, जिनमें यहूदा ने खुद को फाँसी लगायी थी। मत्ती 27:5 से मिलाकर देखें।

प्रेषि 1:21* या, "अपना काम किया करता था।" **22*** या, "पुनरुत्थान।" **24*** यह उन 237 जगहों में से एक जगह है, जहाँ परमेश्वर का नाम, 'यहोवा' इस अनुवाद के मुख्य पाठ में पाया जाता है। अतिरिक्त लेख 2 देखें।

चिट्ठी मत्तियाह के नाम निकली; और वह
उन ग्यारह प्रेषितों के साथ गिना गया।

2 पिन्तेकुस्त के त्योहार के दिन, जब
वे सब एक ही घर में इकट्ठा थे,
2 तभी अचानक आकाश से साँय-साँय
करती तेज़ आँधी जैसी आवाज़ हुई और
इससे सारा घर जिसमें वे बैठे थे, गूँज
उठा। **3** और उन्हें आग की लपटें
दिखायी दीं जो जीभ जैसी थीं और ये
अलग-अलग बँट गयीं और उनमें से हरेक
के ऊपर एक-एक जा ठहरी। **4** तब
वे सभी पवित्र शक्ति से भर गए और
जैसा पवित्र शक्ति उन्हें बोलने के काबिल
कर रही थी, वे अलग-अलग भाषाएँ
बोलने लगे।

5 उस वक्त, दुनिया के हर देश
से आए यहूदी भक्त यरूशलेम में थे।
6 इसलिए जब यह आवाज़ सुनायी दी,
तो भीड़-की-भीड़ इकट्ठी हो गयी और वे
सब हैरान थे, क्योंकि हर किसी को चेलों
के मुँह से अपनी ही भाषा सुनायी दे रही
थी। **7** लोग सचमुच बड़े ताज्जुब में
थे और वे कहने लगे: “कमाल हो गया! ये
जो बोल रहे हैं, क्या ये सब गलीली नहीं?
8 फिर कैसे हम में से हरेक को अपनी
ही मातृ-भाषा सुनायी दे रही है, जिसे हम
जन्म से सुनते आए हैं? **9** हम तो
पारथी और मादी और एलामी हैं, और
मेसोपोटामिया, यहूदिया और कप्पदूकिया,
पुन्तुस और एशिया* ज़िले के रहनेवाले
हैं, **10** और फ्रूगिया, पमफूलिया और
मिसर से और लिबिया के हिस्सों से हैं जो
कुरेने की तरफ है, और रोम से आए
मुसाफिर हैं। हम सब यहूदी और यहूदी
धर्म अपनानेवालों में से हैं। **11** साथ
ही हम में क्रेती और अरबी लोग भी हैं।
फिर भी हम सब इन लोगों को हमारी
अपनी भाषा में परमेश्वर के शानदार
कामों का बखान करते हुए सुन रहे हैं।”
12 वाकई, सब लोग चकित थे और
बड़ी उलझन में एक-दूसरे से कहने लगे:
“यह जो हो रहा है, इसका क्या मतलब
है?” **13** मगर कुछ और लोग चेलों
की खिल्ली उड़ाने लगे और कहने लगे:
“ये तो नयी दाख-मदिरा के नशे में हैं।”

14 तब पतरस उन ग्यारहों के साथ
खड़ा हुआ और वहाँ मौजूद लोगों से बुलंद
आवाज़ में यह कहने लगा: “हे यहू-
दिया के लोगो और यरूशलेम के सब
रहनेवालो, तुम कान लगाकर मेरी बात
सुनो और समझ लो। **15** जैसा तुम
सोच रहे हो, ये लोग नशे में नहीं हैं,
क्योंकि अभी सुबह का तीसरा घंटा* ही
हुआ है। **16** इसके बजाय, यह वही
हो रहा है जिसकी भविष्यवाणी योएल
भविष्यवक्ता ने की थी: **17** ‘पर-
मेश्वर कहता है, “आखिरी दिनों में मैं हर
तरह के इंसान पर अपनी पवित्र शक्ति
उंडेलूँगा, और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी
बेटियाँ भविष्यवाणी करेंगे, तुम्हारे जवान
दर्शन देखेंगे और तुम्हारे बुज़ुर्ग खास तरह
के सपने देखेंगे; **18** यहाँ तक कि उन

प्रेषि 2:9* मसीही यूनानी शास्त्र में उस रोमी प्रांत को ‘एशिया ज़िला’ कहा गया है, जो एशिया माइनर के पश्चिमी हिस्से में था। इसका मतलब आज का एशिया महाद्वीप नहीं है।

प्रेषि 2:15* मत्ती 20:3 फुटनोट देखें।

दिनों मैं अपने दासों और अपनी दासियों
पर भी अपनी पवित्र शक्ति उंडेलूँगा
और वे भविष्यवाणी करेंगे। **19** और
मैं ऊपर आकाश में आश्चर्य के काम
और नीचे धरती पर चमत्कार दिखाऊँगा:
खून और आग और धूँए का बादल।
20 यहोवा के महान और महिमा से भरे
दिन के आने से पहले सूरज अंधियारा हो
जाएगा और चाँद खून जैसा लाल हो
जाएगा। **21** और जो कोई यहोवा का
नाम पुकारेगा, वह उद्धार पाएगा।"'

22 हे इसराएलियो, मेरी यह बात
सुनो: यीशु नासरी वह इंसान था
जो परमेश्वर का भेजा हुआ था। पर-
मेश्वर ने यह ज़ाहिर करने के लिए उसके
ज़रिए तुम्हारे बीच बड़े-बड़े शक्तिशाली
और आश्चर्य के काम और चमत्कार
किए, जैसा कि तुम खुद भी जानते हो।
23 इस आदमी को, परमेश्वर की तय
मरज़ी और भविष्य के ज्ञान के मुताबिक
तुम्हारे हवाले किया गया। उसे तुमने दुष्टों
के हाथों सौंपा और सूली पर चढ़ाकर
मार डाला। **24** मगर परमेश्वर ने उसे
ज़िंदा कर मौत के बंधनों से आज़ाद किया,
क्योंकि यह नामुमकिन था कि वह मौत
के बंधनों में इसी तरह जकड़ा रहे।
25 इसलिए कि दाविद ने उसके बारे में
यूँ भविष्यवाणी की, 'यहोवा हर पल मेरी
आँखों के सामने था, क्योंकि वह मेरी
दायीं तरफ है, मैं कभी न डगमगाऊँगा।
26 इस वजह से मेरा दिल खुशी से भर
गया और मेरी जीभ बड़े हर्ष से बोल
उठी। यहाँ तक कि मैं आशा में रहूँगा।*
27 क्योंकि तू मुझे कब्र* में न छोड़ेगा,
न ही तू अपने वफादार जन को सड़ने
देगा। **28** तू ने जीवन का मार्ग मुझे
बताया है, तेरी मेहरबानी की नज़र मुझे
खुशी से भर देगी।'

29 इसलिए भाइयो, मैं कुलपिता
दाविद के बारे में बेझिझक तुमसे यह
कह सकता हूँ कि वह मरा भी और
उसे दफनाया भी गया और उसकी कब्र
आज के दिन तक हमारे बीच मौजूद है।
30 लेकिन वह एक भविष्यवक्ता था
और जानता था कि परमेश्वर ने शपथ
खाकर उससे वादा किया है कि वह उसकी
संतानों* में से एक को उसकी गद्दी
पर बिठाएगा, **31** इसलिए उसने होने-
वाली बातों को पहले से देखकर मसीह*
के जी उठने के बारे में बताया कि
उसे न तो कब्र में छोड़ा जाएगा, न ही
उसके शरीर को सड़ने दिया जाएगा।
32 इसी यीशु को परमेश्वर ने जी उठाया
है जिस सच्चाई के हम सब गवाह हैं।
33 उसे परमेश्वर की दायीं तरफ सबसे
ऊँचा पद दिया गया है और वादे के मुता-
बिक उसने पिता से पवित्र शक्ति* पायी
है। यही शक्ति उसने हम पर उंडेली है
और इसी को तुम काम करता हुआ
देख और सुन रहे हो। **34** दरअसल

प्रेषि 2:26* शाब्दिक, "मेरा शरीर आशा में वास करेगा।" **27*** यूनानी में "*हेडिज़।*" अतिरिक्त लेख 8 देखें। **30*** या, "उसकी जाँघों का फल।" **31*** या, "अभिषिक्त जन, मसीहा।" मत्ती 1:1 फुटनोट देखें। **33*** यूनानी *नफ्मा।* अतिरिक्त लेख 7 देखें।

दाविद स्वर्ग नहीं गया, मगर वह खुद
कहता है, 'यहोवा ने मेरे प्रभु से कहाः
"मेरी दायीं तरफ बैठ, **35** जब तक
कि मैं तेरे दुश्मनों को तेरे पाँवों के नीचे
न कर दूँ।"'* **36** इसलिए इसराएल
का सारा घराना हर हाल में यह जान ले
कि परमेश्वर ने इसी यीशु को प्रभु और
मसीह दोनों ठहराया है, जिसे तुमने सूली
पर चढ़ाकर मार डाला।"

37 जब उन्होंने यह सुना तो
उनका दिल उन्हें बेहद कचोटने लगा,
और उन्होंने पतरस और बाकी प्रेषितों से
कहाः "भाइयो, अब हम क्या करें?"
38 पतरस ने उनसे कहाः "पश्चा-
ताप करो, और तुममें से हरेक अपने
पापों की माफी के लिए यीशु मसीह
के नाम से बपतिस्मा ले और तब तुम
पवित्र शक्ति का मुफ्त वरदान पाओगे।
39 क्योंकि यह वादा तुम्हारे और तुम्हारे
बच्चों के लिए और दूर-दूर के उन तमाम
लोगों के लिए है जिनको हमारा पर-
मेश्वर यहोवा अपने पास बुलाएगा।"
40 और उसने कई और बातें कहते हुए
अच्छी तरह गवाही दी और उन्हें उक-
साता रहाः "इस टेढ़ी पीढ़ी से बचकर
उद्धार पाओ।" **41** इसलिए जितनों
ने पूरे दिल से उसके वचन को माना,
उन सभी ने बपतिस्मा लिया और उस
दिन करीब तीन हज़ार लोग, चेलों में
शामिल हो गए। **42** और वे सब एक
मन से प्रेषितों से शिक्षा पाने में लगे रहे
और उनका जो कुछ था वे उसे आपस
में बाँटा करते, साथ-साथ खाना खाते और
प्रार्थना में लगे रहते थे।

43 हर इंसान पर भय छाने लगा
और प्रेषितों के ज़रिए बहुत-से आश्चर्य
के काम और चमत्कार होने लगे।
44 जितने विश्वासी बने, उनके पास जो
कुछ था उसमें सभी का साझा हुआ करता
था। **45** वे अपना सामान और अपनी
जायदाद बेच देते थे और मिलनेवाली
रकम को सबमें, यानी जैसी जिसकी ज़रू-
रत होती थी, बाँट देते थे। **46** और
वे हर दिन एक मन से मंदिर में हाज़िर
रहते और एक-दूसरे के घरों में जाकर
खाना खाते और बड़े आनंद और मन की
सीधाई से साथ-साथ भोजन करते थे।
47 और वे परमेश्वर का गुणगान करते
थे और सब लोगों में उनका अच्छा नाम
था। यहोवा हर दिन और भी ज़्यादा लोगों
को उनमें शामिल करता रहा, जिन्हें वह
उद्धार दिला रहा था।

3 पतरस और यूहन्ना, नौवें घंटे* के
करीब यानी प्रार्थना के वक्त मंदिर
जा रहे थे, **2** और तभी लोग, जन्म
के एक लंगड़े को ला रहे थे। वे उसे हर
रोज़ मंदिर के उस फाटक के पास बिठा
दिया करते थे जिसका नाम 'सुंदर फाटक'
था, ताकि वह मंदिर में जानेवालों से
भीख* माँग सके। **3** जब उसने देखा
कि पतरस और यूहन्ना मंदिर के अंदर जा
रहे हैं, तो वह उनसे भीख माँगने लगा।
4 तब पतरस ने यूहन्ना के साथ उसकी

प्रेषि 2:35* शाब्दिक, "चौकी न बना दूँ।"

प्रेषि 3:1* मत्ती 20:5 दूसरा फुटनोट देखें। **2*** शाब्दिक, "दया के दान।"

तरफ गौर से देखा और उससे कहा:
“हमारी तरफ देख।” **5** वह उनसे
कुछ पाने की उम्मीद में उन्हें ताकने लगा।
6 मगर पतरस ने कहा: “सोना-चाँदी तो
मेरे पास नहीं है, मगर जो मेरे पास है
वह तुझे दे रहा हूँ: यीशु मसीह नासरी के
नाम से मैं तुझसे कहता हूँ, खड़ा हो और
चल-फिर।” **7** पतरस ने उसका दायाँ
हाथ पकड़कर उसे उठाया। उसी घड़ी उस
आदमी के पैरों के तलवे और टखनों की
हड्डियाँ मज़बूत हो गयीं **8** और वह
उछलकर खड़ा हो गया और चलने-फिरने
लगा, और वह चलते, उछलते-कूदते और
परमेश्वर की बड़ाई करते हुए उनके साथ
मंदिर में गया। **9** और जब वह चल-
फिर रहा था और परमेश्वर की बड़ाई
कर रहा था तब सब लोगों की नज़र उस
पर पड़ी। **10** इतना ही नहीं, वे पह-
चान गए कि यह वही आदमी है जो मंदिर
के ‘सुंदर फाटक’ के पास बैठा भीख माँगा
करता था, और जो कुछ उसके साथ हुआ
था उसे देखकर उन्हें बड़ी हैरानी हुई और
वे अपार खुशी से भर गए।

11 जब वह आदमी पतरस और
यूहन्ना को थामे हुए था तब वहाँ मौजूद
सारे लोग उनके पास उस जगह दौड़े आए
जिसे सुलैमान का बरामदा कहा जाता है
और उनके होश उड़े हुए थे। **12** जब
पतरस ने यह देखा, तो उसने लोगों से
कहा: “हे इसराएल के लोगो, तुम इस
पर क्यों इतना ताज्जुब कर रहे हो?
तुम हमें ऐसे क्यों देख रहे हो मानो हमने
अपनी ही शक्ति या ईश्वरीय भक्ति से
इसे चलने-फिरने के काबिल बनाया हो?
13 अब्राहम, इसहाक, याकूब और
हमारे बापदादों के परमेश्वर ने अपने
सेवक, यीशु की महिमा की है, जिसे
तुमने, हाँ तुम्हीं ने पकड़वाया। तुमने
पीलातुस* के सामने उसे ठुकरा दिया,
जबकि पीलातुस ने उसे छोड़ने का फैसला
किया था। **14** हाँ, तुमने उस पवित्र
और नेक इंसान को ठुकरा दिया और
उसके बदले अपने लिए एक हत्यारे को
माँग लिया। **15** जबकि तुमने जीवन
दिलानेवाले खास नुमाइंदे को मार डाला।
मगर परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से
जी उठाया है और इस सच्चाई के हम
गवाह हैं। **16** इसलिए उसके नाम से,
हाँ उसके नाम पर हमारे विश्वास से,
इस आदमी को बल मिला है जिसे तुम
देख रहे हो और जानते भी हो। यीशु
पर हमारे विश्वास ने ही तुम सबके
सामने इस आदमी को पूरी तरह तंदुरुस्त
किया है। **17** मैं जानता हूँ भाइयो कि
तुमने जो किया वह सब अनजाने में
किया, और यही तुम्हारे धर्म-अधिकारियों
ने भी किया। **18** मगर इस तरह पर-
मेश्वर ने वे बातें पूरी कीं जो उसने सारे
भविष्यवक्ताओं के मुँह से पहले से बता
दी थीं कि उसका मसीह दुःख उठाएगा।

19 इसलिए पश्चाताप करो और
पलटकर लौट आओ ताकि तुम्हारे
पाप मिटाए जाएँ और यहोवा के पास
से तुम्हारे लिए ताज़गी के दिन आएँ,

प्रेषि 3:13* मत्ती 27:2 फुटनोट देखें।

20 और वह तुम्हारे लिए ठहराए
गए मसीह यानी यीशु को भेजे।
21 उसका तब तक स्वर्ग में रहना
ज़रूरी है जब तक कि उन सब बातों को
बहाल करने का वक्त न आ जाए,
जिनके बारे में परमेश्वर ने बीते ज़माने
के अपने पवित्र भविष्यवक्ताओं के
मुँह से कहा था। 22 दरअसल, मूसा
ने कहा था, 'यहोवा परमेश्वर तुम्हारे
भाइयों के बीच में से तुम्हारे लिए मेरे
जैसा एक भविष्यवक्ता खड़ा करेगा।
जो कुछ वह तुमसे कहे, उन सब बातों
को तुम सुनना। 23 और जो कोई
उस भविष्यवक्ता की बात पर ध्यान
नहीं देगा, परमेश्वर उसे लोगों के
बीच से मिटा देगा।' 24 और सभी
भविष्यवक्ताओं ने, हाँ, शमूएल से लेकर
जितने भी भविष्यवक्ताओं ने भविष्य-
वाणी की, उन सभी ने इन दिनों के
बारे में साफ़-साफ़ ऐलान किया था।
25 तुम भविष्यवक्ताओं के वंशज और
उस करार के वारिस हो जो परमेश्वर ने
तुम्हारे बापदादों के साथ किया था, जिसने
अब्राहम से यह कहा था, 'तेरे वंश से
पृथ्वी के सभी परिवार आशीष पाएँगे।'
26 परमेश्वर ने अपने सेवक को खड़ा
कर सबसे पहले तुम्हारे पास भेजा ताकि
तुम में से हरेक को उसके दुष्ट कामों से
फेरकर तुम्हें आशीष दे।"

4 जब ये दोनों, लोगों को ये बातें बता
रहे थे, तभी प्रधान याजक और
मंदिर के पहरेदारों का सरदार और सदूकी
वहाँ आ धमके। 2 वे इस बात से चिढ़
गए थे कि पतरस और यूहन्ना लोगों को
सिखा रहे हैं और यीशु की मिसाल
दे-देकर मरे हुओं के जी उठने का सरेआम
ऐलान कर रहे हैं। 3 और उन्होंने
पतरस और यूहन्ना को पकड़ लिया और
शाम हो जाने की वजह से उन्हें अगले
दिन तक हिरासत में रखा। 4 मगर
जिन लोगों ने वह भाषण सुना था, उनमें
से बहुतों ने विश्वास किया और चेलों में
आदमियों की गिनती करीब पाँच हज़ार
तक पहुँच गयी।

5 अगले दिन यरूशलेम में यहूदियों
के धर्म-अधिकारी, बुज़ुर्ग और शास्त्री*
जमा हुए। 6 (उनमें प्रधान याजक
हन्ना और कैफा और यूहन्ना और
सिकंदर भी थे, यहाँ तक कि प्रधान
याजक के सभी भाई-बंधु वहाँ मौजूद थे)
7 उन्होंने पतरस और यूहन्ना को अपने
बीच खड़ा कर उनसे पूछताछ करनी शुरू
की: "तुमने किस अधिकार से या किसके
नाम से यह काम किया है?" 8 तब
पतरस ने परमेश्वर की पवित्र शक्ति से
भरकर उनसे कहा:

"धर्म-अधिकारियो और बुज़ुर्गो सुनो,
9 अगर आज के दिन इस अपाहिज
आदमी का भला करने की वजह से
हमसे पूछताछ की जा रही है कि हमने
किसका नाम लेकर इसे ठीक किया है,*
10 तो तुम सब और इसराएल के सभी
लोग यह जान लें कि यीशु मसीह नासरी
के नाम से, जिसे तुमने सूली पर ठोंक
दिया था, मगर जिसे परमेश्वर ने मरे

प्रेषि 4:5* शास्त्री, यीशु के ज़माने में परमेश्वर के कानून का मतलब समझानेवाले और इसके शिक्षक थे। **9*** या, "इसका उद्धार हुआ है।"

हुओं में से ज़िंदा किया, उसी के नाम से
यह आदमी यहाँ तुम्हारे सामने भला-चंगा
खड़ा है। **11** यीशु ही ‘वह पत्थर है
जिसे तुम राजमिस्त्रियों ने बेकार समझा
और वही कोने का मुख्य पत्थर बन गया
है।’ **12** यह भी जान लो कि किसी
और के ज़रिए उद्धार नहीं है, क्योंकि पर-
मेश्वर ने हमें उद्धार दिलाने के लिए धरती
पर इंसानों में कोई और नाम नहीं चुना।”

13 जब उन्होंने देखा कि पतरस और
यूहन्ना कैसे बेधड़क होकर बोल रहे हैं,
और यह जाना कि ये कम पढ़े-लिखे,
मामूली आदमी हैं, तो वे ताज्जुब करने
लगे। फिर वे जान गए कि ये लोग यीशु
के साथ रहा करते थे। **14** यह देखते
हुए कि वह आदमी जिसे पतरस और
यूहन्ना ने ठीक किया था, उनके साथ
ही खड़ा है, उनके पास उनके खिलाफ
कहने के लिए कुछ न रहा। **15** इस-
लिए उन्होंने पतरस और यूहन्ना को
महासभा* के भवन से बाहर जाने का
हुक्म दिया और फिर वे आपस में एक-
दूसरे से मशविरा करने लगे, **16** और
कहने लगे: “हम इन आदमियों के साथ
क्या करें? क्योंकि वाकई इनके हाथों एक
बड़ा चमत्कार हुआ है, जिसे यरूशलेम
के सब रहनेवालों ने देखा है; और हम
इसे झुठला नहीं सकते। **17** फिर भी
यह बात और लोगों में दूर-दूर तक न
फैले, इसलिए आओ हम इन्हें धमकाएँ
कि वे इस नाम को लेकर फिर कभी किसी
से बात न करें।”

18 तब उन्होंने उनको बुलाकर
सख्ती से कहा कि वे यीशु के नाम को
लेकर कहीं कोई बात न करें और न ही
कोई शिक्षा दें। **19** मगर पतरस और
यूहन्ना ने उन्हें जवाब दिया: “क्या पर-
मेश्वर की नज़र में यह सही होगा कि
हम उसकी बात मानने के बजाय तुम्हारी
सुनें, तुम खुद फैसला करो। **20** मगर
जहाँ तक हमारी बात है, हम उन बातों
के बारे में बोलना नहीं छोड़ सकते जो
हमने देखी और सुनी हैं।” **21** उन्होंने
पतरस और यूहन्ना को एक बार फिर
धमकाकर छोड़ दिया, क्योंकि उन्हें सज़ा
देने की कोई वजह न मिली। साथ ही
अधिकारियों को लोगों का भी डर था,
क्योंकि जो कुछ हुआ था, उसे लेकर वे
सभी परमेश्वर की महिमा कर रहे थे;
22 और जो आदमी इस चमत्कार से
चंगा हुआ था, उसकी उम्र चालीस साल
से ज़्यादा थी।

23 वहाँ से छूटकर पतरस और
यूहन्ना अपने लोगों के पास गए और उन
सारी बातों की उन्हें खबर दी जो प्रधान
याजकों और बुज़ुर्गों ने उनसे कही थीं।
24 यह सुनने के बाद उन सभी ने एक
मन होकर ऊँची आवाज़ में परमेश्वर से
यह बिनती की:

“हे सारे जहान के महाराजा और
मालिक, तू ही ने आकाश और पृथ्वी और
समुद्र और उनमें की सब चीज़ों को बनाया
है, **25** और तू ने पवित्र शक्ति के
ज़रिए हमारे पुरखे, अपने सेवक दाविद
के मुँह से कहलवाया, ‘राष्ट्रों में खल-
बली क्यों मची हुई है और लोग क्यों

प्रेषि 4:15* मत्ती 26:59 फुटनोट देखें।

खोखली बातों के बारे में बड़बड़ा रहे हैं?
26 यहोवा और उसके अभिषिक्त जन*
के खिलाफ इस पृथ्वी के राजा खड़े
हुए और अधिकारियों ने मिलकर उनके
खिलाफ मोर्चा बाँधा है।’ **27** और
सचमुच ऐसा ही हुआ। राजा हेरोदेस*
और पुन्तियुस पीलातुस दोनों, गैर-यहू-
दियों और इसराएल की जनता के साथ
मिलकर इस शहर में तेरे पवित्र सेवक
यीशु के खिलाफ इकट्ठा हुए, जिसका तू
ने अभिषेक किया, **28** ताकि उसके
साथ वह सब करें जो तेरी शक्ति और
तेरी इच्छा ने पहले से ठहराया था।
29 और अब हे यहोवा, उनकी धमकियों
पर ध्यान दे और अपने दासों को यह
वरदान दे कि वे पूरी तरह निडर होकर
तेरा वचन सुनाते रहें, **30** जबकि तू
अपना हाथ बढ़ाकर चंगाई करता रहे
और तेरे पवित्र सेवक यीशु के नाम के
ज़रिए चमत्कार और आश्चर्य के काम
होते रहें।”

31 और जब वे गिड़गिड़ाकर मिन्नत
कर चुके, तो वह जगह जहाँ वे इकट्ठा थे,
काँप उठी; और वे सब-के-सब पवित्र
शक्ति से भर गए और निडर होकर पर-
मेश्वर का वचन सुनाने लगे।

32 और विश्वास करनेवाले तमाम
लोग एक दिल और एक जान थे, और
उनमें से एक भी ऐसा न था जो अपनी
संपत्ति को अपनी कहता हो; बल्कि सब
चीज़ों में सबका साझा था। **33** साथ
ही प्रेषित, प्रभु यीशु के मरे हुओं में से
जी उठने के बारे में बड़े ज़बरदस्त ढंग
से गवाही देते रहे; और उन सब पर पर-
मेश्वर की अपार महा-कृपा बनी रही।
34 सच तो यह है कि उनमें ऐसा कोई
भी न था जो तंगी में हो; क्योंकि जितनों
के पास ज़मीन या घर थे, वे उन्हें बेच देते
और बिक्री से मिलनेवाली रकम लाकर
35 प्रेषितों के पैरों पर रख देते थे। और
फिर जिसकी जैसी ज़रूरत होती, उसके
मुताबिक उनके बीच बाँट दिया जाता था।
36 यूसुफ, जिसे प्रेषितों ने बरनबास नाम
दिया था, जिसका मतलब “दिलासे का
बेटा” है, कुप्रुस का रहनेवाला लेवी था।
37 उसके पास ज़मीन का एक टुकड़ा
था, जिसे उसने बेच दिया और रकम
लाकर प्रेषितों के पैरों पर रख दी।

5 मगर, हनन्याह नाम के एक आदमी
और उसकी पत्नी सफीरा ने अपनी
कुछ संपत्ति बेची **2** और हनन्याह
ने चोरी-छिपे उसकी कीमत का कुछ
हिस्सा अपने पास रख लिया और यह
बात उसकी पत्नी भी जानती थी। वह
उस रकम का सिर्फ कुछ हिस्सा ले आया
और प्रेषितों के पैरों पर लाकर रख दिया।
3 तब पतरस ने कहा: “हनन्याह, क्यों
शैतान ने तुझे ऐसा ढीठ कर दिया है कि
तू पवित्र शक्ति से झूठ बोले और ज़मीन
की कीमत का कुछ हिस्सा चोरी से अपने
पास रख ले? **4** जब तक वह तेरे
पास थी, क्या वह तेरी न थी और बेचने
के बाद भी क्या उसकी कीमत पर तेरा
अधिकार न था? तो फिर क्यों तू ने अपने

प्रेषि 4:26* या, “उसके मसीह।” **27*** लूका 3:1
फुटनोट देखें।

दिल में ऐसा काम करने की ठानी? तू
ने इंसानों से नहीं, बल्कि परमेश्‍वर से
झूठ बोला है।” **5** ये शब्द सुनते ही
हनन्याह गिर पड़ा और दम तोड़ दिया।
और इस बारे में सुननेवाले हर किसी पर
बड़ा भय छा गया। **6** फिर कुछ नौ-
जवानों ने उठकर उसे कपड़े में लपेटा
और उसे बाहर ले गए और दफना दिया।

7 अब करीब तीन घंटे बाद उसकी
पत्नी आयी और उसे खबर न थी कि
वहाँ क्या हो चुका है। **8** पतरस ने
उससे कहा: “मुझे बता, क्या तुम दोनों ने
अपनी ज़मीन इतने ही दाम में बेची
थी?” उसने कहा: “हाँ, इतने में ही
बेची थी।” **9** पतरस ने उससे कहा:
“क्यों तुम दोनों ने आपस में एका कर
लिया कि यहोवा की पवित्र शक्‍ति की
परीक्षा लो? देख! तेरे पति को दफनाने-
वालों के कदम दरवाज़े तक आ पहुँचे हैं
और वे तुझे भी उठाकर ले जाएँगे।”
10 उसी घड़ी वह उसके पैरों पर गिर
पड़ी और मर गयी। जब वे नौजवान
अंदर आए तो उन्होंने उसे मरा हुआ पाया
और वे उसे उठाकर बाहर ले गए और
उसके पति के बराबर उसे दफना दिया।
11 इस घटना से, पूरी मंडली* पर और
इन बातों के बारे में सुननेवाले हर किसी
पर बड़ा भय छा गया।

12 इतना ही नहीं, प्रेषितों के हाथों
से लोगों के बीच बहुत से चमत्कार और
आश्‍चर्य के काम होते रहे। वे सभी एक
मन से सुलैमान के खंभोंवाले बरामदे में
इकट्ठा हुआ करते थे। **13** सच है कि
बाकियों में से किसी ने इतनी हिम्मत न की
कि चेलों में जा मिले, फिर भी आम लोग
चेलों की तारीफ करते थे। **14** और-
तो-और, प्रभु पर विश्‍वास करनेवाले स्त्री-
पुरुष बड़ी तादाद में उनमें शामिल होते
रहे। **15** यहाँ तक कि वे बीमारों को
बड़ी सड़कों पर लाकर बिछौनों और चार-
पाइयों पर लिटा देते थे, ताकि जब पत-
रस वहाँ से गुज़रे, तो कम-से-कम उसकी
परछाईं ही उनमें से किसी पर पड़ जाए।
16 यही नहीं, यरूशलेम के आस-पास
के शहरों से भारी तादाद में लोग वहाँ
आते रहे और बीमारों और दुष्ट स्वर्ग-
दूतों के सताए हुओं को लाते रहे और
वे सब-के-सब ठीक किए जाते थे।

17 मगर महायाजक और वे सभी जो
उसके साथ थे, यानी उस वक्‍त के सदूकी
गुट के लोग, जलन से भरकर उठे और
18 उन्होंने प्रेषितों को पकड़ लिया और
जेल में डाल दिया। **19** मगर रात
के वक्‍त यहोवा के स्वर्गदूत ने जेल
के दरवाज़े खोल दिए, और उन्हें बाहर
लाकर उनसे कहा: **20** “अपनी राह
लो, और मंदिर में खड़े होकर लोगों को
हमेशा की ज़िंदगी के बारे में सब बातें
बताते रहो।” **21** यह सुनने के बाद,
वे सुबह होते ही मंदिर में गए और
सिखाने लगे।

फिर जब महायाजक और उसके साथी
आए, तब उन्होंने महासभा* और इसरा-
एलियों के बुज़ुर्गों की सारी सभा को इकट्ठा

प्रेषि 5:11* मत्ती 16:18 दूसरा फुटनोट देखें।

प्रेषि 5:21* मत्ती 26:59 फुटनोट देखें।

किया और जेल से प्रेषितों को लाने के
लिए पहरेदार भेजे। **22** मगर वहाँ
जाने पर पहरेदारों ने उन्हें जेल में न
पाया। इसलिए वे लौट आए और आकर
यह खबर दीः **23** “हमने देखा कि
जेलखाना पूरी सुरक्षा के साथ बंद है और
दरवाज़ों पर पहरेदार भी तैनात हैं, मगर
खोलने पर हमें अंदर कोई न मिला।”
24 जब मंदिर के पहरेदारों के सरदार
और प्रधान याजकों ने यह सुना, तो इन
बातों को लेकर वे बड़ी दुविधा में पड़
गए और उन्हें कुछ नहीं सूझ रहा था
कि अब क्या होगा। **25** मगर एक
आदमी ने आकर उन्हें यह खबर दीः
“देखो! तुमने जिन आदमियों को जेल में
डाला था, वे तो मंदिर में हैं और वहाँ
खड़े होकर लोगों को सिखा रहे हैं।”
26 तब सरदार अपने पहरेदारों के साथ
गया और उन्हें ले आया, मगर उनके साथ
कोई ज़ोर-ज़बरदस्ती नहीं की, क्योंकि
उन्हें डर था कि कहीं लोग उन पर पत्थर-
वाह न करने लगें।

27 वे उन्हें ले आए और महासभा
के भवन में लाकर खड़ा कर दिया।
और महायाजक ने उनसे सवाल पूछाः
28 “हमने तुम्हें कड़ा आदेश दिया था
कि इस नाम से सिखाना बंद कर दो,
मगर फिर भी देखो! तुमने सारे यरूश-
लेम को अपनी शिक्षाओं से भर दिया
है और तुमने इस आदमी* का खून
हमारे सिर पर थोपने की ठान ली है।”
29 जवाब में पतरस और दूसरे प्रेषितों
ने कहाः “इंसानों के बजाय परमेश्वर को
अपना राजा जानकर उसकी आज्ञा मानना
ही हमारा कर्तव्य है। **30** हमारे बाप-
दादों के परमेश्वर ने उस यीशु को जी
उठाया, जिसे तुमने सूली* पर लटकाकर
घात किया था। **31** उसी को परमेश्वर
ने खास नुमाइंदा और उद्धार करनेवाला
ठहराकर और अपनी दायीं तरफ बिठा-
कर उसकी महिमा की है, ताकि इसरा-
एल को पश्चाताप और पापों की माफी
दे। **32** और इन सब बातों के हम
गवाह हैं और पवित्र शक्ति भी, जिसे पर-
मेश्वर ने उन लोगों को दिया है जो उसे
राजा जानकर उसकी आज्ञा मानते हैं।”

33 जब उन्होंने यह सुना, तो मानो
उनके कलेजे में आग लग गयी और
वे उनको खत्म कर देना चाहते थे।
34 मगर महासभा में एक आदमी उठ
खड़ा हुआ। यह गमलीएल नाम का एक
फरीसी था, जो मूसा के कानून का शिक्षक
था और लोगों में उसकी बड़ी इज़्ज़त थी।
उसने इन आदमियों को कुछ देर के
लिए बाहर ले जाने का हुक्म दिया।
35 और गमलीएल ने उनसे कहाः “इस-
राएल के लोगो, तुम इन आदमियों के
साथ जो करना चाहते हो, उसके बारे में
अच्छी तरह सोच लो। **36** मिसाल के
लिए, कुछ वक्त पहले थियूदास यह कहते
हुए उठ खड़ा हुआ था कि मैं भी कुछ हूँ,
और कई आदमी, करीब चार सौ लोग
उसके दल में शामिल हो गए थे। मगर वह
मार डाला गया और जितने उसके मान-

प्रेषि 5:28* या, यीशु।

प्रेषि 5:30* या, “पेड़।”

नेवाले थे, वे सब तित्तर-बित्तर हो गए।
37 उसके बाद, नाम लिखाई के दिनों में
गलील का यहूदा उठ खड़ा हुआ और
उसने लोगों को बहकाकर अपने पीछे कर
लिया। मगर वह आदमी भी मिट गया
और जो उसकी मानते थे वे भी यहाँ-
वहाँ तित्तर-बित्तर हो गए। 38 इस-
लिए, मौजूदा हालात को देखते हुए, मैं
तुमसे कहता हूँ, इन आदमियों के काम
में दखल मत दो, पर इन्हें अपने हाल पर
छोड़ दो। (क्योंकि अगर यह योजना या
यह काम इंसानों की तरफ से है, तो यह
मिट जाएगा, 39 लेकिन अगर यह
परमेश्वर की तरफ से है, तो तुम इन्हें
मिटा न सकोगे।) कहीं ऐसा न हो कि
तुम असल में परमेश्वर से लड़नेवाले
ठहरो।" 40 इस पर उन्होंने उसकी
बात मान ली और प्रेषितों को बुलवाकर
उन्हें पिटवाया और हुक्म दिया कि यीशु
के नाम से बोलना बंद कर दें, और तब
उन्हें जाने दिया।

41 इसलिए, वे महासभा के सामने
से इस बात पर बड़ी खुशी मनाते हुए
अपने रास्ते चल दिए कि उन्हें यीशु के
नाम से बेइज़्ज़त होने के लायक तो समझा
गया। 42 और वे बिना नागा हर दिन
मंदिर में और घर-घर जाकर सिखाते रहे
और मसीह यीशु के बारे में खुशखबरी
सुनाते रहे।

6 उन दिनों चेलों की गिनती बढ़ती
जा रही थी। तब ऐसा हुआ कि
यूनानी बोलनेवाले यहूदी चेले, इब्रानी
बोलनेवाले यहूदी चेलों के खिलाफ कुड़-
कुड़ाने लगे, क्योंकि रोज़ के खाने
के बँटवारे में यूनानी बोलनेवाली विध-
वाओं को नज़रअंदाज़ किया जा रहा था।
2 तब उन बारहों ने सभी चेलों को
अपने पास बुलाकर कहा: "यह ठीक
नहीं कि हम प्रेषित, परमेश्वर का
वचन सिखाना छोड़कर खाना परोसने
के काम में लग जाएँ। 3 इसलिए
भाइयो, अपने बीच से सात ऐसे योग्य
पुरुष चुनो जिनका तुम्हारे बीच अच्छा
नाम हो, और जो पवित्र शक्ति और
बुद्धि से भरपूर हों, ताकि हम उन्हें इस
ज़रूरी काम की देखरेख के लिए ठह-
राएँ। 4 मगर हम प्रार्थना करने और
वचन सिखाने की सेवा में लगे रहेंगे।"
5 यह बात सबको अच्छी लगी और
उन्होंने स्तिफनुस को चुना, जो विश्वास
और पवित्र शक्ति से भरपूर था। उसके
अलावा, उन्होंने फिलिप्पुस, प्रुखुरुस,
नीकानोर, तीमोन, परमिनास और निकु-
लाउस को भी चुना। निकुलाउस, अंता-
किया का रहनेवाला था और उसने यहूदी
धर्म अपनाया था। 6 और चेलों ने इन
सातों को प्रेषितों के सामने पेश किया,
जिन्होंने प्रार्थना करने के बाद, उन पर
अपने हाथ रखकर उन्हें इस काम के लिए
नियुक्त किया।

7 और परमेश्वर का वचन फैलता
गया और यरूशलेम में चेलों की गिनती
बड़ी तेज़ी से बढ़ती चली गयी; और बड़ी
तादाद में याजक भी विश्वासी बन गए।

8 स्तिफनुस पर परमेश्वर की बड़ी
कृपा थी। वह परमेश्वर की शक्ति से

भरपूर था और लोगों के बीच बड़े-
बड़े आश्चर्य के काम और चमत्कार
कर रहा था। **9** मगर तब आज़ाद
गुलामों का सभा-घर कहलानेवाले दल के
कुछ आदमी और इनके साथ कुरेने,
सिकंदरिया, किलिकिया और एशिया
के लोग मिलकर स्तिफनुस के खिलाफ
खड़े हो गए और उससे झगड़ने लगे।
10 मगर स्तिफनुस जिस बुद्धि और पर-
मेश्वर की पवित्र शक्ति के साथ बोल रहा
था, उसका वे सामना नहीं कर पाए।
11 तब उन्होंने चोरी-छिपे कुछ आदमियों
को फुसलाया कि वे लोगों में यह बात
फैलाएँ: "हमने इसे मूसा और परमेश्वर
के खिलाफ निंदा की बातें कहते सुना
है।" **12** और उन्होंने जनता को और
बुज़ुर्गों और शास्त्रियों को भड़काया और
अचानक स्तिफनुस पर धावा बोल दिया
और उसे जबरन खींचकर महासभा*
के सामने ले गए। **13** और वे झूठे
गवाहों को सामने लाए, जिन्होंने कहा:
"यह आदमी हमारे पवित्र मंदिर और पर-
मेश्वर के कानून के खिलाफ बोलना
नहीं छोड़ता। **14** जैसे, हमने इसे यह
कहते सुना है कि यीशु नासरी इस मंदिर
को ढा देगा और उन रीतियों को बदल
डालेगा जो मूसा ने हमें सौंपी हैं।"

15 जब महासभा में बैठे सब लोगों
ने स्तिफनुस पर नज़र डाली, तो देखा
कि उसका चेहरा ऐसा दिखायी दे रहा है
जैसे किसी स्वर्गदूत का हो।

7 तब महायाजक ने उससे पूछा: "क्या
ये बातें सच हैं?" **2** स्तिफ-
नुस ने जवाब में कहा: "भाइयो और
पिता-समान बुज़ुर्गो, सुनो। हमारा पुरखा
अब्राहम, हारान शहर में बसने से
पहले जब मेसोपोटामिया के इलाके में
रहता था, तब महिमा से भरपूर परमेश्वर
ने उसे दर्शन दिया **3** और उससे कहा,
'अपने देश और अपने रिश्तेदारों के बीच
से निकलकर उस देश को चला जा जो
मैं तुझे दिखाऊँगा।' **4** तब अब्राहम
कसदियों के उस देश से निकला और
जाकर हारान में रहने लगा। और उसके
पिता की मौत के बाद, परमेश्वर उसे वहाँ
से निकालकर इस देश में रहने के लिए
लाया जहाँ अब तुम रहते हो। **5** मगर
फिर भी परमेश्वर ने उस वक्त अब्राहम
को इस देश में कोई ज़मीन नहीं दी, यहाँ
तक कि पैर रखने तक की ज़मीन भी
नहीं। मगर परमेश्वर ने उससे वादा किया
कि वह यह देश उसे और उसके बाद
उसके वंश को विरासत के तौर पर देगा।
जबकि उस वक्त तक अब्राहम की कोई
औलाद नहीं थी। **6** और परमेश्वर ने
यह भी कहा कि अब्राहम के वंशज एक
पराए देश में परदेसी होकर रहेंगे और
उस देश के लोग उन्हें गुलाम बना लेंगे
और चार सौ साल तक उन्हें सताएँगे।
7 परमेश्वर ने आगे कहा, 'और जिस
देश की वे गुलामी करेंगे उसको मैं सज़ा
दूँगा और यह सब होने के बाद वे वहाँ
से निकल आएँगे और इस जगह मेरी
पवित्र सेवा करेंगे।'

प्रेषि 6:12* मत्ती 26:59 फुटनोट देखें।

8 परमेश्वर ने अब्राहम के साथ
खतने का करार भी किया। फिर अब्राहम,
इसहाक का पिता बना और आठवें दिन
उसका खतना किया और इसहाक से
याकूब और याकूब से बारह बेटे पैदा
हुए जो कुलपिता बने। **9** ये कुल-
पिता अपने भाई यूसुफ से जलने लगे और
उसे मिसिरयों को बेच दिया। मगर पर-
मेश्वर यूसुफ के साथ था, **10** और
परमेश्वर ने उसे उसकी सारी मुसीबतों से
छुटकारा दिलाया और ऐसा किया कि
मिसर के राजा फिरौन की नज़र में वह
बुद्धिमान ठहरा और उसने फिरौन का
दिल जीत लिया। और फिरौन ने उसे सारे
मिसर और अपने पूरे घराने का अधि-
कारी ठहराया। **11** मगर फिर, पूरे
मिसर और कनान देश में अकाल पड़ा,
यहाँ तक कि महा-संकट टूट पड़ा; और
हमारे बापदादों को कहीं भी खाने की
चीज़ें नहीं मिल पा रही थीं। **12** मगर
जब याकूब ने सुना कि मिसर में अनाज
है, तो उसने अपने बेटों यानी हमारे
बापदादों को पहली बार वहाँ भेजा।
13 और जब वे दूसरी बार वहाँ गए,
तब यूसुफ ने खुद को अपने भाइयों
पर ज़ाहिर किया और बताया कि वह
कौन है, और फिरौन को पता चला कि
यूसुफ किस जाति का है। **14** तब
यूसुफ ने अपने पिता याकूब को और
अपने घराने के सभी लोगों को कनान से
बुलवा लिया, जो कुल मिलाकर पचहत्तर
लोग थे। **15** तब याकूब मिसर में
आकर रहने लगा। और वहीं उसकी मौत
हुई और हमारे बापदादों की भी मौत हुई,
16 और उनकी हड्डियाँ शकेम लायी गयीं
और उस कब्र में रखी गयीं जिसे अब्राहम
ने चाँदी देकर शकेम में हमोर के बेटों से
खरीदा था।

17 और परमेश्वर ने अब्राहम से जो
वादा किया था, जैसे-जैसे उसके पूरा
होने का वक्त पास आ रहा था, वैसे-
वैसे अब्राहम के वंशज मिसर में बढ़ते
गए और उनकी गिनती बहुत हो गयी।
18 फिर मिसर में दूसरा राजा हुआ, जो
यूसुफ को नहीं जानता था। **19** उसने
हमारी जाति के खिलाफ सियासी चाल
चली और हमारे बापदादों को मजबूर
किया कि वे अपने शिशुओं को पैदा होते
ही मरने के लिए बेसहारा छोड़ दें।
20 उसी दौरान मूसा पैदा हुआ और वह
बहुत सुंदर* था। तीन महीने तक तो
उसके माता-पिता ने उसे घर में पाला-
पोसा। **21** मगर जब उसे बेसहारा
छोड़ दिया गया, तो फिरौन की बेटी ने
उसे उठा लिया और अपने बेटे की तरह
उसकी परवरिश की। **22** और मूसा
को मिसिरयों की हर तरह की शिक्षा
दी गयी। दरअसल वह अपने कामों में
शक्तिशाली और बातों में दमदार था।

23 जब वह चालीस साल का होने-
वाला था, तब उसके दिल में यह बात
आयी कि जाकर अपने इसराएली भाई-
बंधुओं का हाल देखूँ। **24** और जब
मूसा ने देखा कि एक मिसरी किसी

प्रेषि 7:20* शाब्दिक, “परमेश्वर के सामने बेहद खूबसूरत था।”

इसराएली पर अन्याय कर रहा है, तो
उसने जाकर उसे बचाया और मिसरी को
मारकर सताए जानेवाले का बदला लिया।
25 उसने सोचा कि उसके भाई यह
समझ लेंगे कि परमेश्वर उसके हाथों
उन्हें छुटकारा दिला रहा है, मगर उन्होंने
ऐसा नहीं समझा। **26** और अगले
दिन जब दो इसराएली आपस में झगड़
रहे थे, तो वह उनके सामने गया और
यह कहकर उनमें सुलह करवाने की
कोशिश की, 'तुम तो भाई-भाई हो। फिर
क्यों एक-दूसरे पर अन्याय करते हो?'
27 मगर जो अपने साथी के साथ बुरा
सलूक कर रहा था, उसने मूसा को झटक-
कर दूर किया और कहाः 'किसने तुझे
हम पर अधिकारी और न्यायी ठहराया?
28 जैसे तू ने कल उस मिसरी को मार
डाला था, क्या तू मुझे भी मार डालना
चाहता है?' **29** यह बात सुनकर मूसा
वहाँ से भागा और मिद्यान देश में पर-
देसी होकर रहने लगा। वहाँ रहने के
दौरान उसके दो बेटे पैदा हुए।

30 फिर चालीस साल के बाद, जब
मूसा सीनै पहाड़ के पास वीराने में था,
तब एक स्वर्गदूत मूसा के सामने एक
जलती हुई कंटीली झाड़ी की लपटों के
बीच प्रकट हुआ। **31** जब मूसा ने
जलती हुई झाड़ी का यह नज़ारा देखा,
तो वह हैरत में पड़ गया। जब वह
जाँच-पड़ताल करने के लिए झाड़ी के
पास जाने लगा, तो उसे यहोवा की यह
आवाज़ सुनायी दीः **32** 'मैं तेरे बाप-
दादों का परमेश्वर, अब्राहम और इस-
हाक और याकूब का परमेश्वर हूँ।' मूसा
डर के मारे काँपने लगा और उसने आगे
जाकर जाँच-पड़ताल करने की हिम्मत
न की। **33** यहोवा ने उससे कहाः
'अपने पाँवों की जूतियाँ उतार दे, क्योंकि
जिस जगह तू खड़ा है वह पवित्र ज़मीन
है। **34** मैंने वाकई देखा है कि मिसर
में मेरे लोगों के साथ कैसा बुरा सलूक
किया जा रहा है और मैंने उनका कराहना
सुना है और मैं उनको छुड़ाने के लिए
नीचे आया हूँ। और अब आ, मैं तुझे
मिसर भेजूँगा।' **35** यही मूसा, जिसे
उन्होंने यह कहते हुए झटककर दूर कर
दिया था कि 'किसने तुझे हम पर अधि-
कारी और न्यायी ठहराया है?' उसी
को परमेश्वर ने अधिकारी और छुड़ाने-
वाला दोनों ठहराकर उस स्वर्गदूत के
ज़रिए भेजा, जो कंटीली झाड़ी में उसे
दिखायी दिया था। **36** यही मूसा उन्हें
मिसर और लाल सागर में चमत्कार और
आश्चर्य के काम दिखाता हुआ वहाँ से
निकाल लाया और उसने ऐसे ही आश्चर्य
के काम चालीस साल तक वीराने में भी
दिखाए।

37 यह वही मूसा है जिसने इसराए-
लियों से कहा था कि 'परमेश्वर तुम्हारे
ही भाइयों में से तुम्हारे लिए मेरे जैसा एक
भविष्यवक्ता खड़ा करेगा।' **38** यह
वही मूसा है जो वीराने में इसराएल की
मंडली के बीच था और वह उस स्वर्गदूत
के साथ था, जिसने सीनै पहाड़ पर उससे
बात की थी। इसी मूसा ने हमारे बाप-
दादों से बात की थी और तुम तक पहुँ-

चाने के लिए जीवित पवित्र वचन पाए।
39 लेकिन, हमारे बापदादों ने उसकी
बात मानने से इनकार कर दिया, और
उसे झटककर दूर कर दिया और वे अपने
दिलों में वापस मिसर लौटने के सपने
संजोने लगे। **40** और उन्होंने हारून
से कहा, 'हमारे लिए देवता बना कि वह
हमारे आगे-आगे चले। क्योंकि हम नहीं
जानते कि इस मूसा का क्या हुआ जो
हमें मिसर देश से बाहर निकाल लाया
था।' **41** तब उन दिनों उन्होंने बछड़े
की एक मूरत बनायी और उस मूरत के
आगे बलि चढ़ायी और अपने हाथ की
इस रचना के सामने वे मौज-मस्ती करने
लगे। **42** इसलिए परमेश्वर ने उनसे
मुँह मोड़ लिया और उन्हें सूरज, चाँद और
तारों को पूजने के लिए छोड़ दिया,
ठीक जैसा भविष्यवक्ताओं की किताब में
भी लिखा है: 'हे इसराएल के घराने,
क्या तुमने वीराने में चालीस साल तक
पशु-बलियाँ और दूसरे बलिदान मुझ ही
को चढ़ाए थे? **43** नहीं, बल्कि तुम
मोलोक* के तंबू और रिफान देवता के
तारे की मूरत लिए फिरते रहे, उन निशा-
नियों को जिन्हें तुमने इसलिए बनाया था
कि तुम उनकी पूजा करो। इसलिए मैं
तुम्हें देश-निकाला देकर बैबिलोनिया के
पार भेज दूँगा।'

44 हमारे बापदादों के पास वीराने
में गवाही का तंबू* था, जिसके बारे
में परमेश्वर ने मूसा से बात करते
वक्त हुक्म दिया था कि उस तंबू का जो
नमूना उसे दिखाया गया था, उसी के
मुताबिक उसे बनाए। **45** और हमारे
जिन बापदादों ने इसे विरासत में
पाया, वे इसे यहोशू के साथ इस देश में
ले आए जिस पर दूसरी जातियों का
कब्ज़ा था। इन जातियों को परमेश्वर
ने हमारे बापदादों के सामने से खदेड़कर
इस देश से बाहर निकाल दिया। और
गवाही का यह तंबू दाविद के दिनों
तक यहीं रहा। **46** दाविद ने पर-
मेश्वर की कृपा-दृष्टि पायी थी और उसने
यह बिनती की कि उसे याकूब के पर-
मेश्वर के निवास का एक भवन बनाने
का मौका मिले। **47** मगर सुलैमान था
जिसने यह भवन बनाया। **48** फिर
भी, परम-प्रधान परमेश्वर हाथ के बनाए
भवनों* में नहीं रहता, ठीक जैसे एक
भविष्यवक्ता परमेश्वर के बारे में कहता
है, **49** 'स्वर्ग मेरी राजगद्दी और पृथ्वी
मेरे पाँवों की चौकी है। तुम मेरे लिए
कैसा भवन बनाओगे? यहोवा कहता है।
या मेरे आराम करने की क्या कोई जगह
है? **50** क्या मेरे ही हाथों ने ये सारी
चीज़ें नहीं बनायीं?'

51 अरे ढीठ, कठोर और आज्ञा न
माननेवाले लोगो,* तुम हमेशा से पवित्र
शक्ति का विरोध करते आए हो; तुम्हारे
बापदादों ने जो किया था, तुम भी वही
करते हो। **52** ऐसा कौन-सा भविष्य-
वक्ता हुआ है जिस पर तुम्हारे बापदादों

प्रेषि 7:43* हो सकता है कि यह अम्मोनियों का देवता मोलेक हो। पहला राजा 11:7 देखें। **44*** या "निवास-स्थान।"

प्रेषि 7:48* या, "चीज़ों; जगहों।" **51*** या, "दिलों और कानों से खतनारहित हो।"

ने ज़ुल्म नहीं ढाए? हाँ, उन्होंने उन लोगों
को मार डाला जिन्होंने पहले से उस नेक
जन के आने का ऐलान किया था, जिसके
साथ तुमने विश्वासघात किया और अब
तुम जिसके हत्यारे बन गए हो, **53** हाँ
तुम, जिन्होंने स्वर्गदूतों के ज़रिए पहुँचाया
गया कानून तो पाया मगर उस पर
चले नहीं।"

54 जब उन्होंने ये बातें सुनीं, तो
वे तिलमिला उठे और उस पर दाँत
पीसने लगे। **55** मगर, उसने पवित्र
शक्ति से भरकर स्वर्ग की तरफ एक-
टक देखा और उसे परमेश्वर की महिमा
दिखायी दी और उसने यीशु को परमेश्वर
की दायीं तरफ खड़े देखा, **56** और
कहा: "देखो! मैं स्वर्ग को खुला हुआ और
इंसान के बेटे को परमेश्वर की दायीं तरफ
खड़ा देख रहा हूँ।" **57** इस पर वे
चीख उठे और हाथों से अपने कान बंद
कर लिए और सब मिलकर उस पर लपक
पड़े। **58** और वे उसे खदेड़कर शहर
के बाहर ले गए और उसे पत्थरों से
मारने लगे। स्तिफनुस के खिलाफ झूठी
गवाही देनेवालों ने अपने चोगे उतार-
कर शाऊल नाम के एक नौजवान के
पाँवों के पास रख दिए थे। **59** और
जब वे स्तिफनुस को पत्थर मार रहे
थे, तब उसने यह प्रार्थना की: "हे प्रभु
यीशु, मैं अपनी जान* अब तेरे हवाले
करता हूँ।" **60** फिर उसने घुटने टेक-
कर बड़ी ज़ोर से यह पुकार लगायी:
"यहोवा, यह पाप इनके सिर न लगाना।"
और यह कहने के बाद वह मौत की नींद
सो गया।

8 और शाऊल खुद स्तिफनुस की
हत्या का समर्थन कर रहा था।

उस दिन से यरूशलेम की मंडली पर
बड़ा ज़ुल्म होने लगा; और प्रेषितों को
छोड़ बाकी सभी, यहूदिया और साम-
रिया के सारे इलाके में तित्तर-बित्तर हो
गए। **2** मगर कुछ भक्त जन स्तिफ-
नुस को दफनाने के लिए ले गए और
उन्होंने उसके लिए बड़ा मातम किया।
3 शाऊल बड़ी बेरहमी से मंडली पर
ज़ुल्म करने लगा। वह घर-घर घुसकर
स्त्री-पुरुष, सभी को घसीटकर निकालता
और उन्हें कैदखाने में डलवा देता था।

4 मगर, जो चेले तित्तर-बित्तर हो
गए थे वे जहाँ कहीं गए सारे इलाके
में वचन की खुशखबरी सुनाते गए।
5 इनमें से एक फिलिप्पुस था। वह साम-
रिया शहर गया और वहाँ लोगों को मसीह
का प्रचार करने लगा। **6** और लोगों
की भीड़ ने फिलिप्पुस की बातों पर ध्यान
दिया और मन लगाकर उन्हें सुना और
उसके चमत्कार देखे। **7** और वहाँ
ऐसे बहुत-से लोग थे जिनमें दुष्ट स्वर्ग-
दूत समाए थे और ये बड़ी ज़ोर से चीखते-
चिल्लाते हुए उनसे बाहर निकल जाते थे।
इसके अलावा, बहुत-से लोग जो लकवे
के मारे थे और जो लंगड़े थे वे चंगे हुए।
8 और उस शहर में बड़ा आनंद छा
गया।

9 वहाँ शमौन नाम का एक आदमी
रहता था, जो अब तक अपनी जादू-

प्रेषि 7:59* यूनानी *नफ्मा* / अतिरिक्त लेख 7 देखें।

विद्या से सामरिया के लोगों को हैरत में
डालता आया था और वह खुद को एक
महापुरुष बताता था। **10** और छोटे
से लेकर बड़े तक, सभी लोग उसकी
बात पर ध्यान देते थे और कहते थे:
“इस आदमी में परमेश्वर की शक्ति
है, महाशक्ति।” **11** उसने उन्हें काफी
समय से अपनी जादूगरी से हैरत में डाल
रखा था, इसलिए वे उसकी बात मानते
थे। **12** मगर जब उन्होंने फिलिप्पुस
का यकीन किया, जो उन्हें परमेश्वर
के राज की और यीशु मसीह के नाम
की खुशखबरी सुना रहा था, तो क्या
पुरुष, क्या स्त्री सभी ने बपतिस्मा लिया।
13 शमौन खुद भी एक विश्वासी बन
गया और बपतिस्मा पाने के बाद लगा-
तार फिलिप्पुस के साथ रहता था। वह
चमत्कार और बड़े-बड़े शक्तिशाली काम
देखकर हैरत में पड़ जाता था।

14 जब यरूशलेम में प्रेषितों ने सुना
कि सामरिया के लोगों ने परमेश्वर का
वचन मान लिया है, तो उन्होंने पत-
रस और यूहन्ना को उनके पास भेजा।
15 पतरस और यूहन्ना ने वहाँ जाकर
उनके लिए प्रार्थना की कि वे पवित्र शक्ति
पाएँ। **16** क्योंकि तब तक उनमें से
किसी पर भी पवित्र शक्ति नहीं उतरी थी,
मगर उनका प्रभु यीशु के नाम से सिर्फ
बपतिस्मा हुआ था। **17** तब पतरस
और यूहन्ना ने उन पर हाथ रखे और वे
पवित्र शक्ति पाने लगे।

18 अब जब शमौन ने देखा कि
प्रेषितों के हाथ रखने से पवित्र शक्ति
मिलती है, तो उसने उन्हें पैसा देते हुए
19 कहा: “मुझे भी यह अधिकार दो कि
जिस किसी पर मैं अपने हाथ रखूँ वह
पवित्र शक्ति पाए।” **20** मगर पतरस
ने उससे कहा: “तेरी चाँदी तेरे संग नाश
हो, क्योंकि तू ने सोचा कि तू पैसे देकर
परमेश्वर के मुफ्त वरदान को खरीद
सकता है। **21** लेकिन इस सेवा में न
तेरा कोई साझा है, न हिस्सा, क्योंकि पर-
मेश्वर की नज़र में तेरा दिल सीधा
नहीं है। **22** इसलिए अपनी यह बुराई
छोड़ और पश्चाताप कर और यहोवा से
मिन्नत कर कि हो सके तो तेरे दिल
का यह धूर्त्त विचार माफ किया जाए;
23 क्योंकि मैं देख सकता हूँ कि तेरे दिल
में ज़हर भरा है* और तू बुराई की बेड़ियों
में जकड़ा हुआ है।” **24** जवाब में
शमौन ने कहा: “मेहरबानी से मेरे लिए
यहोवा से मिन्नत करो कि जो बातें तुमने
कही हैं उनमें से कोई भी मुझ पर न
आ पड़े।”

25 इस तरह जब पतरस और
यूहन्ना सारे इलाके में अच्छी तरह गवाही
दे चुके और यहोवा का वचन सुना चुके,
तो वे यरूशलेम लौट चले और रास्ते में
सामरियों के बहुत-से गाँवों में खुशखबरी
सुनाते गए।

26 मगर, यहोवा के स्वर्गदूत ने
फिलिप्पुस से कहा: “उठ और दक्षिण की
तरफ उस रास्ते पर जा जो यरूशलेम
से गाज़ा जाता है।” (यह एक सुनसान
रेगिस्तानी रास्ता है।) **27** यह सुनकर

प्रेषि 8:23* शाब्दिक, “तू एक ज़हरीला पित्त है।”

फिलिप्पुस उठा और निकल पड़ा और
उसे रास्ते में इथियोपिया का एक खोजा
मिला। यह खोजा इथियोपिया की रानी
कन्दाके के दरबार में ऊँचे पद पर था
और उसके सारे खज़ाने पर अधिकारी
था। वह यरूशलेम में उपासना करने
गया था, **28** और अब लौट रहा
था। वह अपने रथ पर बैठा ऊँची
आवाज़ में यशायाह भविष्यवक्ता की
किताब पढ़ रहा था। **29** और पवित्र
शक्ति ने फिलिप्पुस से कहा: "रथ
के नज़दीक जा और उसके संग हो
ले।" **30** फिलिप्पुस उस रथ के साथ-
साथ दौड़ने लगा और खोजे को यशायाह
भविष्यवक्ता की किताब पढ़ते हुए सुना
और उससे पूछा: "तू जो पढ़ रहा है,
क्या उसे समझता भी है?" **31** उसने
कहा: "जब तक कोई मुझे न समझाए,
मैं भला कैसे समझ सकता हूँ?" और
उसने फिलिप्पुस से बिनती की कि चढ़-
कर रथ पर उसके पास बैठ जाए।
32 शास्त्र का जो हिस्सा वह ज़ोर से पढ़
रहा था, वह यह था: "वह भेड़ की तरह
बलि होने के लिए लाया गया, और जैसे
मेम्ना, अपने ऊन कतरनेवाले के सामने
चुपचाप रहता है, वैसे ही उसने अपना
मुँह नहीं खोला। **33** उसका निरादर
होते वक्त, उसके साथ न्याय नहीं किया
गया। उसकी पीढ़ी के बारे में कौन जान-
कारी देगा? क्योंकि धरती से उसका
जीवन ले लिया गया।"

34 तब खोजे ने फिलिप्पुस से पूछा:
"मैं तुझसे बिनती करता हूँ, मुझे बता कि
भविष्यवक्ता यह किसके बारे में कह रहा
है? अपने बारे में या किसी दूसरे के बारे
में?" **35** तब फिलिप्पुस ने बोलना
शुरू किया और शास्त्र के इस वचन से
शुरू करते हुए उसे यीशु के बारे में खुश-
खबरी सुनायी। **36** जब वे सड़क पर
जा रहे थे, तो वे एक ऐसी जगह पहुँचे
जहाँ काफी पानी था और खोजे ने कहा:
"देख! यहाँ पानी है, अब मुझे बपतिस्मा
लेने में क्या रुकावट है?" **37*** ——
38 इस पर खोजे ने रथ रोकने का
हुक्म दिया और वे दोनों पानी में उतरे;
और फिलिप्पुस ने उसे बपतिस्मा दिया।
39 जब वे पानी से बाहर निकले, तो
यहोवा की पवित्र शक्ति फिलिप्पुस को
वहाँ से फौरन कहीं और ले गयी और
खोजा उसे फिर नहीं देख पाया और वह
खुशी मनाता हुआ अपनी राह चला गया।
40 इसके बाद, फिलिप्पुस अशदोद में
पाया गया और कैसरिया पहुँचने तक वह
उस सारे इलाके में और सभी शहरों में
खुशखबरी सुनाता रहा।

9 मगर शाऊल पर अब भी प्रभु
के चेलों को धमकाने और मार
डालने का जुनून सवार था। इसलिए
वह महायाजक के पास गया **2** और
उससे दमिश्क शहर के सभा-घरों के नाम
चिट्ठियाँ माँगीं ताकि प्रभु के मार्ग पर
चलनेवाला जो भी मिले, चाहे स्त्री हो
या पुरुष, उन्हें गिरफ्तार कर* यरूशलेम
ले आए।

प्रेषि 8:37* मत्ती 17:21 फुटनोट देखें। **9:2*** या, "उनके हाथ बाँधकर।"

3 जब वह दमिश्‍क के पास रास्ते में
था, तब अचानक आकाश से ज़बरदस्त
रौशनी उसके चारों तरफ चमक उठी।
4 और वह ज़मीन पर गिर पड़ा और
उसने एक आवाज़ सुनी जो उससे कह
रही थी: “शाऊल, शाऊल, तू क्यों मुझ
पर ज़ुल्म कर रहा है?” 5 शाऊल ने
कहा: “हे प्रभु, तू कौन है?” उसने कहा:
“मैं यीशु हूँ, जिस पर तू ज़ुल्म कर रहा
है। 6 मगर अब उठ और शहर में जा
और जो तुझे करना है वह तुझे बताया
जाएगा।” 7 जो आदमी शाऊल के
साथ सफर कर रहे थे, वे एकदम सुन्‍न
होकर खड़े रहे। उन्हें यह आवाज़ तो
सुनायी दे रही थी, मगर कोई दिखायी नहीं
पड़ रहा था। 8 तब शाऊल ज़मीन से
उठकर खड़ा हुआ। उसकी आँखें तो खुली
थीं मगर वह कुछ देख नहीं पा रहा
था। इसलिए वे उसका हाथ पकड़कर
उसे ले गए और दमिश्‍क पहुँचा दिया।
9 और तीन दिन तक वह कुछ नहीं देख
पाया और न उसने कुछ खाया, न पीया।

10 वहाँ दमिश्‍क में हनन्याह नाम का
एक चेला था और प्रभु ने एक दर्शन में
उससे कहा: “हनन्याह!” उसने कहा: “जी
प्रभु, मैं हाज़िर हूँ।” 11 प्रभु ने उससे
कहा: “उठ, और उस गली को जा जो
सीधी कहलाती है, और वहाँ यहूदा के
घर में शाऊल नाम के आदमी का पता
लगा जो तरसुस का रहनेवाला है। क्योंकि
देख! वह प्रार्थना कर रहा है, 12 और
उसने एक दर्शन में हनन्याह नाम के
एक आदमी को आते और अपने ऊपर
हाथ रखते देखा है जिससे उसकी आँखों
की रौशनी लौट आएगी।” 13 मगर
हनन्याह ने जवाब दिया: “प्रभु, मैंने इस
आदमी के बारे में बहुतों से सुना है कि
उसने यरूशलेम में तेरे पवित्र जनों को
कैसी-कैसी पीड़ाएँ दी हैं। 14 और
अब उसके पास प्रधान याजकों की तरफ
से यह अधिकार है कि जितने तेरा नाम
लेते हैं, उन सबको बंदी बना ले।”
15 मगर प्रभु ने उससे कहा: “तू रवाना
हो जा, क्योंकि यह आदमी मेरा चुना
हुआ पात्र है जो गैर-यहूदियों, साथ ही
राजाओं और इसराएलियों के पास मेरा
नाम ले जाएगा। 16 मैं उसे साफ-
साफ दिखाऊँगा कि उसे मेरे नाम की
खातिर कितने दुःख सहने होंगे।”

17 तब हनन्याह चल पड़ा और उस
घर में गया जहाँ शाऊल था। उसने अपने
हाथ शाऊल पर रखे और कहा: “शाऊल,
मेरे भाई, प्रभु यीशु जिसने उस सड़क पर
तुझे दर्शन दिया जहाँ से तू आ रहा
था, उसी ने मुझे तेरे पास भेजा है
ताकि तेरी आँखों की रौशनी लौट आए
और तू पवित्र शक्‍ति से भर जाए।”
18 और उसी घड़ी शाऊल की आँखों
से छिलके-से गिरे और वह फिर से
देखने लगा; और उसने उठकर बपतिस्मा
लिया। 19 उसने खाना खाया और
ताकत पायी।

शाऊल कुछ दिनों तक दमिश्‍क में
चेलों के साथ रहा। 20 वहाँ उसने
बिना वक्‍त गँवाए सभा-घरों में यीशु
का प्रचार करना शुरू कर दिया कि

यही परमेश्‍वर का बेटा है। **21** मगर
जितनों ने भी सुना वे सब दंग रह गए
और कहने लगे: “क्या यह वही आदमी
नहीं जो यरूशलेम में यीशु के चेलों को*
तबाह करता था और यहाँ भी इसी इरादे
से आया था कि उन्हें गिरफ्तार कर प्रधान
याजकों के पास ले जाए?” **22** दूसरी
तरफ, शाऊल और भी प्रभावशाली बनता
गया। वह दमिश्‍क में रहनेवाले यहूदियों
के सामने तर्कसंगत तरीके से यह साबित
करता था कि यीशु ही मसीह है और
इस तरह वह सबकी ज़बान बंद कर
देता था।

23 इस तरह कई दिन गुज़र जाने
के बाद, यहूदियों ने उसे मार डालने के
लिए आपस में सलाह की। **24** मगर
शाऊल को उनकी साज़िश का पता चल
गया। यहूदी उसे मार डालने के लिए दिन-
रात शहर के फाटकों पर भी घात लगाए
रहते थे। **25** इसलिए उसके चेलों ने
उसे एक बड़े टोकरे में बिठाकर, रात के
वक्‍त शहर की दीवार में बनी एक खिड़की
से नीचे उतार दिया।

26 जब वह यरूशलेम पहुँचा तो
उसने चेलों से मिलने की कोशिश की,
मगर वे सभी उससे डरते थे क्योंकि उन्हें
यकीन नहीं हो रहा था कि वह भी एक
चेला बन चुका है। **27** इसलिए बरन-
बास उसकी मदद के लिए आगे आया
और उसे प्रेषितों के पास ले गया। बरन-
बास ने उन्हें पूरा ब्यौरा देकर बताया कि
कैसे शाऊल ने सड़क पर प्रभु को देखा
था और यह भी कि प्रभु ने उससे बात
की थी, और कैसे उसने दमिश्‍क में निडर
होकर यीशु के नाम से प्रचार किया
था। **28** और शाऊल यरूशलेम में
चेलों के साथ-साथ रहा और खुलेआम
आता-जाता था और प्रभु के नाम से निडर
होकर बात करता था। **29** साथ ही,
वह यूनानी बोलनेवाले यहूदियों से बात-
चीत और बहस किया करता था। मगर
इन्होंने उसे खत्म करने की कोशिश की।
30 जब भाइयों ने यह भाँप लिया, तो
वे उसे कैसरिया ले आए और वहाँ से
उसे तरसुस भेज दिया।

31 इसके बाद, सारे यहूदिया, गलील
और सामरिया में मंडली के लिए शांति
का दौर शुरू हुआ और वह
विश्‍वास में मज़बूत होती गयी। और
मंडली यहोवा का भय मानते हुए और
पवित्र शक्‍ति से मिलनेवाले दिलासे से
हिम्मत पाती रही और उसमें बढ़ोतरी
होती गयी।

32 जब पतरस सब जगहों का दौरा
कर रहा था, तो वह लुद्दा शहर में रहने-
वाले पवित्र जनों के पास भी आया।
33 वहाँ उसे ऐनियास नाम का एक
आदमी मिला, जो लकवे का मारा होने
की वजह से आठ साल से खाट पर पड़ा
था। **34** पतरस ने उससे कहा: “ऐनि-
यास, यीशु मसीह तुझे चंगा करता है।
उठ और अपना बिस्तर ठीक कर।” और
वह फौरन उठ खड़ा हुआ। **35** और
लुद्दा और शारोन के मैदानी इलाके में

प्रेषि 9:21* शाब्दिक, “इस नाम के लेनेवालों।”

रहनेवाले सभी लोगों ने उसे देखा और वे
प्रभु की तरफ फिर गए।

36 याफा शहर में तबीता नाम की
एक शिष्या थी जिसके नाम का यूनानी
में मतलब है दोरकास यानी हिरणी।
वह बहुत-से भले काम करती और
दान दिया करती थी। **37** मगर उन
दिनों वह बीमार पड़ गयी और मर
गयी। तब उन्होंने उसे नहलाकर ऊपर
के एक कमरे में रखा। **38** क्योंकि
लुद्दा, याफा के पास ही था, इसलिए जब
चेलों ने सुना कि पतरस लुद्दा शहर में है,
तो उन्होंने दो आदमियों को भेजकर उससे
बिनती की: "हमारे पास आने में देर न
कर।" **39** तब पतरस उठकर उनके
साथ गया। और जब वह याफा पहुँचा
तो वे उसे ऊपरी कमरे में ले गए; और
सारी विधवाएँ रोती हुई उसके पास आयीं
और उसे वे कुरते और कपड़े दिखाने लगीं
जो दोरकास उनके लिए बनाया करती
थी। **40** मगर पतरस ने सबको बाहर
कर दिया और घुटने टेककर प्रार्थना
की और मुरदे की तरफ मुड़कर कहा:
"तबीता, उठ!" उस स्त्री ने अपनी आँखें
खोलीं और जैसे ही उसने पतरस को
देखा, वह उठ बैठी। **41** पतरस ने
अपना हाथ बढ़ाकर उसे उठाया और
पवित्र जनों और विधवाओं को बुला-
कर उसे जीती-जागती उन्हें सौंप दिया।
42 यह बात पूरे याफा शहर में फैल
गयी और बहुत-से लोग प्रभु में विश्वासी
बन गए। **43** पतरस काफी दिनों तक
याफा में ही शमौन नाम के एक आदमी
के यहाँ रहा जो चमड़े का काम करता था।

10 कैसरिया में कुरनेलियुस नाम का
एक आदमी था। वह उस फौजी
टुकड़ी का अफसर* था जो इतालवी
टुकड़ी कहलाती थी। **2** वह एक
भक्त इंसान था और उसका पूरा घराना
परमेश्वर का भय मानता था। वह लोगों
को बहुत-से दान देता था और परमेश्वर
के सामने हमेशा गिड़गिड़ाकर बिनती
किया करता था। **3** उसने दिन के
करीब नौवें घंटे* में, परमेश्वर के एक
दूत को दर्शन में साफ-साफ देखा जिसने
पास आकर उससे कहा: "कुरनेलियुस!"
4 उसने उस दूत की तरफ गौर से देखा
और डरकर कहा: "प्रभु, क्या बात है?"
उसने कुरनेलियुस से कहा: "तेरी प्रार्थ-
नाएँ और दान परमेश्वर ने याद किए हैं।
5 इसलिए अब तू अपने आदमी भेज
और याफा से शमौन को, जो पतरस
भी कहलाता है, बुलवा ले। **6** वह,
चमड़े का काम करनेवाले किसी शमौन
के यहाँ मेहमान है, जिसका घर समुद्र
के किनारे है।" **7** उस स्वर्गदूत के
जाते ही कुरनेलियुस ने अपने घर के दो
सेवकों और उसकी सेवा में हाज़िर रहने-
वाले सैनिकों में से एक भक्त सैनिक को
बुलाया। **8** उसने उन्हें पूरी बात बता-
कर याफा भेजा।

9 अगले दिन जब वे सफर

प्रेषि 10:1* या, "शतपति," जिसकी कमान के नीचे सौ सैनिक होते थे। **3*** मत्ती 20:5 दूसरा फुटनोट देखें।

करते-करते शहर के करीब आ चुके थे, तब छठे घंटे* के करीब पतरस प्रार्थना करने के लिए घर की छत पर गया।
10 मगर उसे ज़ोरों की भूख लगने लगी और वह कुछ खाना चाहता था। जब वे खाना तैयार कर रहे थे, तो उसे एक दर्शन दिखायी दिया।*
11 और उसने देखा कि आकाश खुल गया है और एक किस्म का पात्र नीचे उतर रहा है जो दिखने में बड़ी चादर जैसा था और जिसे चारों कोनों से पकड़कर धरती पर उतारा जा रहा था।
12 उसमें धरती पर पाए जानेवाले हर किस्म के जानवर* और रेंगनेवाले जीव-जंतु और आकाश के पक्षी थे।
13 और पतरस को एक आवाज़ सुनायी दी: "पतरस उठ, इन्हें मार और खा!"
14 मगर उसने कहा: "नहीं प्रभु, हरगिज़ नहीं, क्योंकि मैंने कभी कोई दूषित और अशुद्ध चीज़ नहीं खायी है।"
15 फिर दूसरी बार उसी आवाज़ ने उससे कहा: "तू उन चीज़ों को दूषित कहना बंद कर जिन्हें परमेश्वर ने शुद्ध किया है।"
16 तीन बार ऐसा हुआ और फिर वह पात्र फौरन आकाश में उठा लिया गया।

17 जब पतरस मन-ही-मन बड़ी उलझन में था कि जो दर्शन उसने देखा उसका क्या मतलब हो सकता है, तभी देखो! कुरनेलियुस के भेजे आदमी शमौन का घर पूछते-पूछते उसके दरवाज़े पर आ खड़े हुए।
18 उन्होंने ज़ोर से आवाज़ लगायी और पूछा कि शमौन जो पतरस कहलाता है, क्या वह यहीं पर ठहरा हुआ है।
19 जब पतरस मन में दर्शन के बारे में सोच ही रहा था, तब पवित्र शक्ति ने उससे कहा: "देख! तीन आदमी तुझे ढूँढ़ रहे हैं।
20 उठ, नीचे जा और उनके साथ बेखटके चला जा, क्योंकि मैंने ही उन्हें भेजा है।"
21 तब पतरस सीढ़ियाँ उतरकर उन आदमियों के पास गया और कहा: "देखो! तुम जिसे ढूँढ़ रहे हो, वह मैं ही हूँ। यहाँ कैसे आना हुआ?"
22 उन्होंने कहा: "सेना-अफसर कुरनेलियुस ने हमें भेजा है। वह परमेश्वर का भय माननेवाला नेक इंसान है। यहूदियों की सारी जाति भी उसकी तारीफ करती है। उसी को एक पवित्र स्वर्गदूत ने परमेश्वर की तरफ से हिदायत दी है कि तुझे बुलवा ले और जो बातें तू बताएगा वे सुने।"
23 यह सुनकर पतरस ने उन्हें अंदर बुलाया और उनकी खातिरदारी की।

अगले दिन पतरस उठा और उनके साथ निकल पड़ा और याफा के कुछ भाई भी उसके साथ गए।
24 दूसरे दिन वह कैसरिया पहुँचा। बेशक, वहाँ कुरनेलियुस उनका इंतज़ार कर रहा था और उसने अपने रिश्तेदारों और करीबी दोस्तों को अपने यहाँ इकट्ठा किया हुआ था।
25 जब पतरस आया, तो कुरनेलियुस उससे मिला और उसके पैरों पर गिरकर उसे प्रणाम किया।
26 मगर पतरस ने उसे उठाकर कहा: "खड़ा हो, मैं एक

प्रेषि 10:9* मत्ती 20:5 पहला फुटनोट देखें। **10*** या, "उस पर बेसुधी छा गयी।" **12*** शाब्दिक, "चार-पैरोंवाले प्राणी।"

इंसान ही हूँ।” **27** और वह उससे
बातें करता हुआ अंदर गया और पाया
कि वहाँ बहुत लोग जमा हैं, **28** और
पतरस ने उनसे कहा: “तुम अच्छी तरह
जानते हो कि एक यहूदी के लिए दूसरी
जाति के किसी इंसान से मिलना-जुलना या
उसके यहाँ जाना भी नियम के खिलाफ है,
मगर फिर भी परमेश्वर ने मुझे दिखाया
है कि मैं किसी भी इंसान को दूषित या
अशुद्ध न कहूँ। **29** इसलिए जब मुझे
बुलाया गया, तो मैं बिना किसी एतराज़ के
चला आया। अब मैं पूछता हूँ कि तुमने
मुझे किस वजह से बुलाया है।”

30 तब कुरनेलियुस ने कहा: “आज
से ठीक चार दिन पहले की बात है, जब
मैं नौवें घंटे* में अपने घर में प्रार्थना कर
रहा था, तब मैंने देखा कि एक आदमी
चमकदार कपड़े पहने मेरे सामने आ खड़ा
हुआ **31** और मुझसे कहा: ‘कुरने-
लियुस, तेरी प्रार्थना सुन ली गयी है और
तेरे दान परमेश्वर ने याद किए हैं।
32 इसलिए, अब अपने आदमियों को
याफा भेज और शमौन को, जो पत-
रस भी कहलाता है, बुलवा ले। यह
आदमी, चमड़े का काम करनेवाले शमौन
के यहाँ मेहमान है, जिसका घर समुद्र के
किनारे है।’ **33** इसलिए मैंने फौरन
तुझे बुलावा भेजा और तू ने यहाँ आकर
बहुत अच्छा किया। अब इस वक्त, हम
सब परमेश्वर के सामने हाज़िर हैं ताकि
वे सारी बातें सुनें, जिन्हें सुनाने की आज्ञा
यहोवा ने तुझे दी है।”

34 तब पतरस ने बोलना शुरू किया:
“अब मुझे पूरा यकीन हो गया है कि पर-
मेश्वर भेदभाव नहीं करता, **35** मगर
हर ऐसा इंसान जो उसका भय मानता है
और नेक काम करता है, फिर चाहे वह
किसी भी जाति का क्यों न हो, वह पर-
मेश्वर को भाता है। **36** परमेश्वर ने
इसराएलियों के पास अपना संदेश भेजा
और उन्हें यह खुशखबरी सुनायी कि
यीशु मसीह के ज़रिए उसके साथ शांति
कायम करना मुमकिन है: यह संदेश
कि यीशु ही सबका प्रभु है। **37** जब
यूहन्ना ने बपतिस्मे का प्रचार किया उसके
बाद, गलील में जिस बात पर चर्चा शुरू
हुई और सारे यहूदिया में चारों तरफ
फैल गयी तुम उसके बारे में जानते हो,
38 यानी नासरत के यीशु की चर्चा कि
कैसे परमेश्वर ने पवित्र शक्ति और
बल से उसका अभिषेक किया और वह
पूरे देश में भलाई करता हुआ और
शैतान* के सताए हुओं को चंगा करता
फिरा, क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था।
39 और हम उन सभी कामों के गवाह
हैं जो उसने यहूदियों के देश में और यरू-
शलेम में किए थे। उन्होंने उसे सूली पर
लटकाकर मार डाला। **40** मगर पर-
मेश्वर ने इसी यीशु को तीसरे दिन जी
उठाया और इस काबिल किया कि वह
खुद को लोगों पर ज़ाहिर कर सके,
41 मगर सभी लोगों पर नहीं बल्कि उन
गवाहों पर जिन्हें परमेश्वर ने पहले से
चुना था, यानी हम पर, जिन्होंने मरे हुओं

प्रेषि 10:30* मत्ती 20:5 दूसरा फुटनोट देखें।

प्रेषि 10:38* यूनानी में *“दियाबोलोस,”* जिसका मत-
लब है “निंदा करनेवाला।”

में से यीशु के जी उठने के बाद उसके
साथ खाया-पीया। **42** साथ ही, उसने
हमें यह आज्ञा दी कि हम लोगों को प्रचार
करें और इस बात की अच्छी तरह गवाही
दें कि यह वही है जिसे परमेश्‍वर ने
जीवितों और मरे हुओं का न्यायी ठहराया
है। **43** सारे भविष्यवक्‍ता इसी यीशु
की गवाही देते हैं कि जो कोई उस पर
विश्‍वास करता है उसे उसके नाम से पापों
की माफी मिलती है।”

44 जब पतरस ये बातें बोल ही
रहा था तभी पवित्र शक्‍ति इस वचन
को सुननेवाले सभी लोगों पर उतरी।
45 और यहूदियों में से* जो विश्‍वासी
भाई पतरस के साथ आए थे वे दंग रह
गए, क्योंकि पवित्र शक्‍ति का मुफ्त वर-
दान, गैर-यहूदियों को भी दिया जा रहा
था। **46** क्योंकि वे उन्हें अलग-अलग
भाषाएँ बोलते और परमेश्‍वर की बड़ाई
करते सुन रहे थे। फिर पतरस ने कहा:
47 “इन लोगों ने ठीक वैसे ही पवित्र
शक्‍ति पायी है जैसे हमने* पायी है, तो
क्या कोई इन्हें पानी में बपतिस्मा लेने
से रोक सकता है?” **48** तब पत-
रस ने यह आज्ञा दी कि उन्हें यीशु मसीह
के नाम से बपतिस्मा दिया जाए। इसके
बाद उन्होंने उससे कुछ दिन वहीं ठहरने
की बिनती की।

11 यह बात प्रेषितों और उन
भाइयों ने सुनी, जो यहूदिया में
थे कि गैर-यहूदियों ने भी परमेश्‍वर का
वचन मान लिया है। **2** इसलिए जब
पतरस यरूशलेम आया, तो खतने का
समर्थन करनेवाले यह कहकर उससे बहस
करने लगे कि **3** वह ऐसे लोगों के घर
गया था जिनका खतना नहीं हुआ और
उनके साथ खाना भी खाया। **4** इस
पर पतरस उन्हें शुरू से लेकर सारी बात
समझाने लगा कि क्या-क्या हुआ था:

5 “जब मैं याफा शहर में प्रार्थना कर
रहा था, तो मुझ पर बेसुधी छा गयी और
मैंने एक दर्शन देखा। एक किस्म का
पात्र जो दिखने में बड़ी चादर जैसा था,
आकाश से नीचे उतर रहा था और उसे
चारों कोनों से पकड़कर धरती पर उतारा
जा रहा था; और वह बिलकुल मेरे पास
आ गया। **6** जब मैंने देखा, तो गौर
किया कि उसमें धरती पर पाए जाने-
वाले चार-पैरोंवाले जीव, जंगली जानवर,
रेंगनेवाले जीव-जंतु और आकाश के पक्षी
थे। **7** साथ ही मैंने एक आवाज़ भी
सुनी जो मुझ से कह रही थी: ‘पतरस उठ,
इन्हें मार* और खा!’ **8** मगर मैंने
कहा, ‘नहीं प्रभु, हरगिज़ नहीं, क्योंकि
कभी कोई दूषित या अशुद्ध चीज़ मेरे मुँह
में नहीं गयी है।’ **9** फिर दूसरी बार
आकाश से उस आवाज़ ने कहा, ‘तू उन
चीज़ों को दूषित कहना बंद कर जिन्हें
परमेश्‍वर ने शुद्ध किया है।’ **10** ऐसा
ही तीसरी बार हुआ और फिर सबकुछ
वापस आकाश में खींच लिया गया।
11 और देखो! ठीक उसी घड़ी, तीन
आदमी उस घर के सामने आ खड़े हुए

प्रेषि 10:45* शाब्दिक, “खतना किए हुए।” **47*** यानी, खतना किए हुए यहूदी मसीही।

प्रेषि 11:7* शाब्दिक, “इन्हें हलाल कर।”

जहाँ हम थे। उन्हें कैसरिया से मेरे पास
भेजा गया था। **12** पवित्र शक्ति ने
मुझे बताया कि मैं उनके साथ बेखटके
चला जाऊँ। और ये छः भाई भी मेरे साथ
हो लिए, और हम कुरनेलियुस नाम के
आदमी के घर गए।

13 उसने हमें बताया कि कैसे उसने
एक स्वर्गदूत को अपने घर में खड़े देखा
जिसने उससे कहा, 'याफा में आदमी भेज-
कर शमौन को, जो पतरस भी कह-
लाता है, बुलवा ले, **14** और वह तुझे
वे बातें बताएगा जिनसे तू और तेरा सारा
घराना उद्धार पा सकेगा।' **15** मगर
जब मैंने बोलना शुरू किया, तो उन पर
भी पवित्र शक्ति उतरी, ठीक जैसे शुरू-
आत में हम पर उतरी थी। **16** तब
मुझे प्रभु की वह बात याद आयी, जो वह
कहा करता था, 'यूहन्ना ने तो पानी से
बपतिस्मा दिया, मगर तुम पवित्र शक्ति से
बपतिस्मा पाओगे।' **17** इसलिए जब
परमेश्वर ने उन्हें वह मुफ्त वरदान दिया,
जो उसने हमें भी दिया, जिन्होंने प्रभु यीशु
मसीह पर विश्वास किया है, तो परमेश्वर
को रोकनेवाला भला मैं कौन होता हूँ?"

18 अब जब उन्होंने ये बातें सुनीं तो
इस बारे में आगे और कुछ न कहा और
यह कहकर परमेश्वर की बड़ाई करने
लगे: "तो इसका मतलब है कि परमेश्वर
ने गैर-यहूदियों को भी जीवन पाने के
लिए पश्चाताप करने का मौका दिया है।"

19 स्तिफनुस को लेकर हुए क्लेश
की वजह से जो चेले तित्तर-बित्तर हो
गए थे, वे फिरते हुए फीनीके, कुप्रुस
और अंताकिया तक पहुँच गए, मगर
उन्होंने यहूदियों के अलावा किसी और
को परमेश्वर का संदेश नहीं सुनाया।
20 लेकिन उनमें से कुछ आदमी जो
कुप्रुस और कुरेने के थे, वे अंता-
किया आए और उन्होंने यूनानी बोलने-
वाले लोगों को प्रभु यीशु की खुशखबरी
सुनानी शुरू की। **21** साथ ही, यहोवा
का हाथ उन पर था, और बड़ी तादाद
में लोगों ने विश्वास किया और प्रभु की
तरफ फिर गए।

22 उनके बारे में यरूशलेम की
मंडली के कानों तक खबर पहुँची और
उन्होंने बरनबास को अंताकिया भेजा।
23 वहाँ पहुँचकर जब उसने परमेश्वर
की महा-कृपा देखी, तो वह बहुत खुश
हुआ और सबका हौसला बढ़ाने लगा
कि वे दिल में पक्के इरादे के साथ
प्रभु के वफादार बने रहें; **24** क्योंकि
बरनबास एक अच्छा इंसान था और
पवित्र शक्ति और विश्वास से भरपूर था।
इसलिए, बड़ी तादाद में लोग प्रभु पर
विश्वास करने लगे। **25** इसे देखते
हुए, बरनबास तरसुस को रवाना हुआ
ताकि ढूँढ़कर शाऊल का पता लगा सके।
26 और जब वह उसे मिल गया, तो
वह उसे अंताकिया ले आया। इसके बाद,
पूरे एक साल तक वे उस मंडली में भाइयों
के साथ इकट्ठा होते रहे और लोगों की
बड़ी भीड़ को सिखाते रहे। और परमेश्वर
के मार्गदर्शन से अंताकिया में ही पहली
बार चेले 'मसीही' कहलाए।

27 उन्हीं दिनों यरूशलेम से
कुछ भविष्यवक्ता अंताकिया आए।

28 उनमें से एक का नाम अगबुस था।
वह उठा और उसने पवित्र शक्ति की
प्रेरणा से बताया कि सारे जगत में भारी
अकाल पड़नेवाला है। वाकई, क्लौदियुस
के दिनों में यह अकाल पड़ा। 29 इस-
लिए अंताकिया के चेलों ने ठान लिया कि
उनमें से हरेक से जितना भी बन पड़ेगा,
उतना वे यहूदिया में रहनेवाले भाइयों की
मदद के लिए राहत का सामान भेजेंगे।
30 और उन्होंने ऐसा ही किया और यह
मदद बरनबास और शाऊल के हाथों
बुज़ुर्गों के पास भेजी।

12 उन्हीं दिनों राजा हेरोदेस* कड़ा
रुख अपनाते हुए मंडली के कुछ
लोगों पर ज़ुल्म ढाने लगा। 2 उसने
यूहन्ना के भाई याकूब को तलवार से
मरवा डाला। 3 जब उसने देखा कि
यहूदी इससे खुश हुए हैं, तो उसने पत-
रस को भी गिरफ्तार कर लिया। (ये बिन
खमीर की रोटियों के त्योहार के दिन
थे।) 4 हेरोदेस ने पतरस को पकड़-
कर कैदखाने में डाल दिया और उसे चार
सिपाहियोंवाली चार पालियों के हवाले
कर दिया गया, ताकि वे बारी-बारी उस
पर पहरा दें। उसका इरादा था कि फसह
के त्योहार के बाद वह उसे लोगों के
सामने पेश करेगा। 5 इस वजह से,
पतरस को कैदखाने में पहरे में रखा गया
था, मगर मंडली उसके लिए परमेश्वर से
दिलो-जान से प्रार्थना कर रही थी।

6 जिस दिन हेरोदेस उसे लोगों के
सामने पेश करने पर था, उससे पहले की
रात को पतरस दो ज़ंजीरों से बँधा हुआ
दो सिपाहियों के बीच सो रहा था और
दरवाज़े पर पहरेदार कैदखाने का पहरा
दे रहे थे। 7 मगर तभी अचानक
यहोवा का स्वर्गदूत वहाँ आ खड़ा हुआ
और कैदखाने की वह कोठरी रौशनी से
जगमगा उठी। स्वर्गदूत ने पतरस की
बगल थपथपायी और यह कहकर उसे
उठायाः "उठ, जल्दी कर!" और उसके
हाथों की ज़ंजीरें खुलकर गिर पड़ीं।
8 स्वर्गदूत ने पतरस से कहाः "कमर
बाँध और अपनी जूतियाँ कस ले।" उसने
ऐसा ही किया। आखिर में उसने पतरस
से कहाः "अपना चोगा पहन ले और मेरे
पीछे चलता चल।" 9 वह निकलकर
उसके पीछे-पीछे चलता गया, मगर वह
यह नहीं जानता था कि स्वर्गदूत जो कर
रहा है वह हकीकत में हो रहा है। उसे
तो यही लगा कि शायद वह कोई दर्शन
देख रहा है। 10 पहरेदारों की पहली
और दूसरी चौकी को पार कर वे लोहे
के उस फाटक पर आ पहुँचे जो शहर
की तरफ खुलता है और यह फाटक उनके
लिए अपने आप खुल गया। और बाहर
निकलने के बाद वे एक गली के अंदर
पहुँचे और तब उसी घड़ी वह स्वर्गदूत
उसे छोड़कर चला गया। 11 तब पत-
रस अपने आपे में आया और कहाः
"अब मैं जान गया हूँ कि वाकई यहोवा
ने अपना दूत भेजकर मुझे हेरोदेस के
हाथ से और उन सब बातों से बचाया है
जो यहूदी उम्मीद कर रहे थे कि मेरे साथ
होंगी।"

प्रेषि 12:1* यानी, हेरोदेस अग्रिप्पा प्रथम।

12 इस बात पर सोचने के बाद, वह
मरियम के घर गया जो मरकुस कहला-
नेवाले यूहन्ना की माँ थी। वहाँ काफी
चेले जमा थे और प्रार्थना कर रहे थे।
13 जब पतरस ने बाहर का फाटक
खटखटाया, तो रुदे नाम की नौकरानी
यह देखने आयी कि कौन आया है।
14 उसने पतरस की आवाज़ तो पह-
चान ली, मगर बेहद खुशी की वजह से
फाटक न खोला। वह दौड़ती हुई अंदर
गयी और खबर दी कि पतरस बाहर दर-
वाज़े के सामने खड़ा है। **15** घर में
जमा चेलों ने उससे कहा: “तू पागल
है।” मगर वह ज़ोर देकर कहती रही
कि सचमुच वही आया है। वे उससे
कहने लगे: “वह उसका स्वर्गदूत होगा।”
16 मगर पतरस वहीं खड़ा खटखटाता
रहा। जब उन्होंने दरवाज़ा खोला और उसे
देखा तो वे दंग रह गए। **17** मगर
पतरस ने हाथ से उन्हें चुप रहने का
इशारा किया और उन्हें पूरा किस्सा कह
सुनाया कि कैसे यहोवा ने उसे कैदखाने
से बाहर निकाला। फिर उसने कहा: “ये
बातें याकूब और दूसरे भाइयों को बता
देना।” इसके बाद वह वहाँ से निकलकर
किसी और जगह के लिए रवाना हो गया।

18 फिर जब दिन हुआ, तो
सिपाहियों में अफरा-तफरी मच गयी कि
आखिर पतरस गया कहाँ। **19** हेरो-
देस ने उसकी बहुत तलाश करवायी और
जब उसे न पाया, तो उसने पहरेदारों से
पूछताछ की और हुक्म दिया कि उन्हें
सज़ा के लिए ले जाया जाए। फिर हेरो-
देस यहूदिया से कैसरिया चला गया और
वहाँ कुछ वक्त बिताया।

20 राजा हेरोदेस, सोर और सीदोन
के लोगों से बहुत गुस्सा था। इसलिए वे
सभी एकमत होकर उसके पास आए
और उन्होंने राजा के घराने की देख-
रेख करनेवाले बलासतुस को मनाकर
राजा के साथ सुलह करनी चाही, क्योंकि
उनके देश को राजा के देश से ही खाने
का सामान मिलता था। **21** फिर एक
दिन एक खास मौके पर, हेरोदेस शाही
लिबास में न्याय-आसन पर बैठा और
उसने जनता को भाषण देना शुरू किया।
22 उसकी बातें सुनकर वहाँ जमा लोग
यह पुकार उठे: “यह किसी इंसान की
नहीं, बल्कि एक ईश्वर की आवाज़ है!”
23 उसी घड़ी यहोवा के दूत ने हेरोदेस
को मारा, क्योंकि उसने परमेश्वर को
महिमा नहीं दी; और उसके शरीर में कीड़े
पड़ गए और वह मर गया।

24 मगर यहोवा का वचन बढ़ता
और फैलता चला गया।

25 और बरनबास और शाऊल यरू-
शलेम में राहत का काम पूरा करने के
बाद लौट गए और अपने साथ यूहन्ना
को ले गए जो मरकुस कहलाता है।

13 अंताकिया की मंडली में कई
भविष्यवक्ता और शिक्षक थे।
ये थे, बरनबास, शमौन जो काला* कह-
लाता था, कुरेने का लूकियुस, मनाएन जो
ज़िला शासक हेरोदेस के साथ पढ़ा था

प्रेषि 13:1* शाब्दिक, “नीगर।”

और शाऊल। **2** जब ये यहोवा की
सेवा करने और उपवास करने में लगे हुए
थे, तो पवित्र शक्ति ने कहा: “सब लोगों
में से मेरे लिए बरनबास और शाऊल को
उस काम के लिए अलग करो, जिसके
लिए मैंने उन्हें बुलाया है।” **3** तब
उन्होंने उपवास और प्रार्थना की और उन
पर हाथ रखे और उन्हें रवाना कर दिया।

4 इसी के मुताबिक, ये आदमी पवित्र
शक्ति के मार्गदर्शन में सिलूकिया गए
और फिर वहाँ से समुद्री जहाज़ पर चढ़-
कर कुप्रुस द्वीप के लिए रवाना हुए।
5 और जब वे उस द्वीप के सलमीस
शहर पहुँचे, तो वे यहूदियों के सभा-घरों
में परमेश्वर का वचन सुनाने लगे। उनके
साथ यूहन्ना मरकुस भी था, जो उनकी
सेवा किया करता था।

6 जब वे उस पूरे द्वीप का दौरा करते
हुए पाफुस शहर पहुँचे, तो वहाँ उन्हें बार-
यीशु नाम का एक यहूदी मिला। वह
एक जादूगर और झूठा भविष्यवक्ता था।
7 और वह उस प्रांत के राज्यपाल*
सिरगियुस पौलुस के साथ-साथ रहता था।
सिरगियुस पौलुस बहुत अक्लमंद इंसान
था और उसने बरनबास और शाऊल को
अपने पास बुलाया और परमेश्वर का
वचन सुनने की गहरी इच्छा दिखायी।
8 मगर बार-यीशु जो इलीमास जादूगर
कहलाता है (इलीमास नाम का मत-
लब है, जादूगर), उनका विरोध करने
लगा और उसने पूरी कोशिश की कि
राज्यपाल इस विश्वास को न अपनाए।
9 तब शाऊल ने, जिसका नाम पौलुस
भी है, पवित्र शक्ति से भरकर उसकी
तरफ टकटकी लगाकर देखा **10** और
कहा: “अरे शैतान की औलाद, तू जो हर
तरह की जालसाज़ी और मक्कारी से भरा
हुआ है और हर तरह की नेकी का दुश्मन
है, क्या तू यहोवा की सीधी राहों को
बिगाड़ना नहीं छोड़ेगा? **11** अब देख!
यहोवा का हाथ तेरे खिलाफ उठा है, और
तू अंधा हो जाएगा और कुछ वक्त
के लिए सूरज की रौशनी नहीं देख
पाएगा।” उसी पल उसकी आँखों के
आगे घने कोहरे जैसा धुँधलापन और
अंधेरा छा गया और वह इधर-उधर
टटोलने लगा कि कोई उसका हाथ पकड़-
कर उसे ले चले। **12** तब जो कुछ
हुआ, उसे देखकर राज्यपाल विश्वासी
बन गया क्योंकि वह यहोवा की शिक्षा से
दंग रह गया था।

13 इसके बाद पौलुस और उसके
साथी, पाफुस शहर से समुद्री यात्रा करते
हुए पमफूलिया प्रांत के पिरगा शहर
पहुँचे। मगर यूहन्ना मरकुस उन्हें छोड़-
कर यरूशलेम लौट गया। **14** मगर
वे पिरगा से आगे बढ़े और पिसिदिया
इलाके के अंताकिया शहर में आए और
सब्त के दिन सभा-घर में जाकर बैठ
गए। **15** वहाँ सबके सामने मूसा के
कानून और भविष्यवक्ताओं की किताबों
से पढ़ाई किए जाने के बाद, सभा-घर के
अधिकारियों ने यह कहकर उन्हें बुलाया:
“भाइयो, अगर लोगों की हिम्मत बँधाने
के लिए तुम्हारे पास कहने को कुछ हो
तो कहो।” **16** तब पौलुस उठा और

प्रेषि 13:7* रोमी सेनेट का एक प्रांतीय राज्यपाल।

हाथ से सबको शांत हो जाने का इशारा
करते हुए कहाः
"इसराएलियो और परमेश्वर का
भय माननेवाले दूसरे लोगो, सुनो।
17 परमेश्वर ने हम इसराएली लोगों के
बापदादों को चुना। जिस दौरान वे मिसर
देश में परदेसी होकर रहते थे, तब
परमेश्वर ने उनका मान बढ़ाया और
शक्तिशाली हाथ से उन्हें वहाँ से
बाहर निकाल लाया। **18** और करीब
चालीस साल तक वीराने में उनके
तौर-तरीकों को सहता रहा। **19** उसने
कनान देश में सात जातियों का नाश
करने के बाद, इसराएलियों को उनके
देश में विरासत के तौर पर अपना-अपना
हिस्सा दियाः **20** यह सब करीब चार
सौ पचास साल के दौरान हुआ।

यह सब होने के बाद, परमेश्वर ने
उनके बीच न्याय करने के लिए न्यायी
ठहराए और इन न्यायियों का दौर शमूएल
भविष्यवक्ता तक चला। **21** मगर
इसके बाद इसराएली एक राजा की माँग
करने लगे और परमेश्वर ने उन्हें कीश
का बेटा शाऊल दिया, जो बिन्यामीन के
गोत्र का था। वह चालीस साल तक
उनका राजा रहा। **22** उसे हटाने के
बाद, उसने दाविद को उनका राजा बना-
कर खड़ा किया, जिसके बारे में उसने
गवाही दी और कहा, 'मैंने यिशै के बेटे,
दाविद में एक ऐसा इंसान पाया है जो मेरे
मन के मुताबिक है। वह मेरी सारी मरज़ी
पूरी करेगा।' **23** परमेश्वर ने जैसा
वादा किया था उसी के मुताबिक उसने
इसी दाविद के वंश से, इसराएल के लिए
एक उद्धारकर्ता, यानी यीशु को भेजा।
24 यीशु के आने से पहले यूहन्ना ने
सरेआम इसराएल के सब लोगों को प्रचार
किया था कि वे पश्चाताप दिखानेवाला
बपतिस्मा लें। **25** मगर जिस दौरान
यूहन्ना अपना काम पूरा करने में लगा था,
तो वह कहा करता था, 'तुम्हें क्या लगता
है कि मैं कौन हूँ? मैं वह नहीं हूँ। मगर
देखो! मेरे बाद वह आ रहा है जिसके
पैरों की जूतियाँ तक खोलने के मैं लायक
नहीं हूँ।'

26 भाइयो, तुम जो अब्राहम के वंश
से हो और उसकी संतान हो, साथ ही
परमेश्वर का भय माननेवाले बाकी लोगो,
परमेश्वर ने हमारे लिए उद्धार का जो यह
ज़रिया चुना है उसका संदेश उसने हमारे
पास भेजा है। **27** यरूशलेम के रहने-
वालों और उनके धर्म-अधिकारियों* ने
उसे न पहचाना, मगर उसका न्याय करते
वक्त उन्होंने भविष्यवक्ताओं की कही
वे सारी बातें पूरी कीं जो हर सब्त के दिन
पढ़कर सुनायी जाती हैं। **28** हालाँकि
उसे सज़ा-ए-मौत देने की उन्हें कोई वजह
न मिली, फिर भी उन्होंने पीलातुस से माँग
की कि वह मार डाला जाए। **29** और
जब उन्होंने उसके बारे में लिखी सारी बातें
पूरी कर दीं, तो उसे सूली से नीचे उतारा
गया और एक कब्र में रख दिया गया।
30 मगर परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में
से जी उठाया; **31** और वह कई दिनों
तक उन लोगों को दिखायी देता रहा जो
उसके साथ गलील से यरूशलेम गए थे,

प्रेषि 13:27* शाब्दिक, "शासक।"

और जो अब सब लोगों के सामने उसके गवाह हैं।

32 इसलिए हम तुम्हें उस वादे के बारे में खुशखबरी सुना रहे हैं जो हमारे बापदादों से किया गया था। **33** इस वादे को परमेश्वर ने उनकी संतानों पर, यानी हम पर हर तरह से पूरा किया है और इसके लिए यीशु को मरे हुओं में से जी उठाया है; जैसा कि दूसरे भजन में लिखा भी है, 'तू मेरा बेटा है, मैं आज के दिन तेरा पिता बना हूँ।' **34** परमेश्वर ने यीशु को मरे हुओं में से जी उठाया है और यह तय कर दिया है कि वह फिर कभी सड़ने के लिए न लौटे, इस सच्चाई को परमेश्वर ने यूँ बयान किया है, "मैं तुम लोगों के लिए अटल कृपा के वे काम करता रहूँगा जो विश्वास-योग्य हैं और जिनका वादा मैंने दाविद से किया था।" **35** इसलिए दाविद भी एक और भजन में कहता है, 'तू अपने वफादार जन को सड़ने न देगा।' **36** जहाँ एक तरफ दाविद था जिसने अपनी पीढ़ी में परमेश्वर की मरज़ी पूरी की जो उस पर ज़ाहिर की गयी थी। वह मौत की नींद सो गया और अपने बापदादों के साथ रखा गया और सड़ भी गया। **37** दूसरी तरफ, वह था जिसे परमेश्वर ने जी उठाया और उसने सड़न का मुँह नहीं देखा।

38 इसलिए भाइयो, तुम जान लो कि इसी यीशु के ज़रिए तुम्हें पापों की माफी मिल सकती है, जिसकी खबर तुम्हें सुनायी जा रही है। **39** और यह भी कि जिन बातों में मूसा का कानून तुम्हें निर्दोष नहीं ठहरा सकता, एक विश्वास करनेवाले को उन्हीं सब बातों के मामले में इसी यीशु के ज़रिए निर्दोष ठहराया जाता है। **40** इसलिए खबरदार रहो कि भविष्यवक्ताओं की किताबों में लिखी यह बात कहीं तुम पर न आ पड़े: **41** 'हे ठट्ठा करनेवालो, देखो, ताज्जुब करो और मिट जाओ, क्योंकि मैं तुम्हारे दिनों में एक काम करनेवाला हूँ, ऐसा काम जिसके बारे में अगर कोई तुम्हें पूरी बारीकी से भी बताए, तब भी तुम हरगिज़ उसका यकीन न करोगे।'"

42 यह सब कहने के बाद जब वे बाहर जा रहे थे, तब लोग बिनती करने लगे कि ये बातें उन्हें अगले सब्त के दिन फिर सुनायी जाएँ। **43** इसलिए जब सभा बरखास्त हो गयी तो बहुत-से यहूदी और यहूदी धर्म अपनानेवाले, जो परमेश्वर की उपासना करते थे, पौलुस और बरनबास के पीछे हो लिए। और पौलुस और बरनबास उनसे बातें कर उन्हें उकसाते रहे कि वे परमेश्वर की महा-कृपा में बने रहें।

44 अगले सब्त के दिन करीब-करीब पूरा शहर यहोवा का वचन सुनने के लिए जमा हो गया। **45** जब यहूदियों ने इतनी भारी तादाद में लोग देखे, तो वे जलन से भर गए और पौलुस जो कह रहा था उसे झूठ बताकर परमेश्वर की निंदा की। **46** इसलिए पौलुस और बरनबास ने निडर होकर कहा: "यह ज़रूरी था कि परमेश्वर का वचन पहले

तुम यहूदियों को सुनाया जाए। मगर इस-
लिए कि तुम इसे ठुकराकर खुद से दूर
कर रहे हो और खुद को हमेशा की
ज़िंदगी के लायक नहीं ठहराते, इसलिए
देखो! हम दूसरी जातियों में जा रहे हैं।
47 दरअसल यहोवा ने यह कहकर हमें
आज्ञा दी है, 'मैंने तुम्हें दूसरी जातियों के
लिए रौशनी ठहराया है ताकि तुम पृथ्वी
की छोर तक जाकर यह ऐलान करो कि मैं
किसके ज़रिए लोगों का उद्धार करूँगा।'"

48 जब गैर-यहूदियों ने यह बात
सुनी, तो वे बड़ी खुशी मनाने लगे और
यहोवा के वचन की बड़ाई करने लगे,
और वे सभी जो हमेशा की ज़िंदगी पाने
के लायक अच्छा मन रखते थे, विश्वासी
बन गए। **49** इतना ही नहीं, यहोवा
का वचन आस-पास के पूरे इलाके में
फैलाया जाता रहा। **50** मगर यहू-
दियों ने शहर की जानी-मानी स्त्रियों को,
जो परमेश्वर की भक्त थीं और खास-
खास आदमियों को भड़काया। ये लोग,
पौलुस और बरनबास पर ज़ुल्म कर-
वाने लगे और उन्हें अपनी सरहदों के
बाहर खदेड़ दिया। **51** तब पौलुस
और बरनबास ने उनके खिलाफ अपने
पाँवों की धूल झाड़ दी* और इकुनियुम
शहर चले गए। **52** और चेले आनंद
और पवित्र शक्ति से भरपूर होते रहे।

14 अब पौलुस और बरनबास इकु-
नियुम में एक-साथ यहूदियों के
सभा-घर में गए और वहाँ उन्होंने इतने
बढ़िया ढंग से बात की कि यहूदियों
और यूनानियों में से भारी तादाद में
लोग विश्वासी बन गए। **2** मगर जो
यहूदी विश्वास नहीं लाए थे, उन्होंने गैर-
यहूदियों को भड़काया और भाइयों के
खिलाफ उनके मन में कड़वाहट भर दी।
3 इसलिए पौलुस और बरनबास ने वहाँ
काफी समय बिताया और यह जानते हुए
कि यहोवा ने उन्हें यह अधिकार दिया है
वे निडर होकर उसका वचन सुनाते रहे।
और परमेश्वर उनके हाथों चमत्कार और
आश्चर्य के काम करवाता रहा ताकि
इससे साबित हो कि परमेश्वर की महा-
कृपा का जो संदेश पौलुस और बरनबास
सुना रहे हैं वह उसी की तरफ से है।
4 मगर, शहर के लोगों में फूट पड़ गयी
और कुछ यहूदियों की तरफ हो गए, तो
दूसरे प्रेषितों की तरफ। **5** गैर-यहू-
दियों और यहूदियों के साथ उनके अधि-
कारियों ने मिलकर उन्हें बेइज़्ज़त करने
और उन पर पत्थरवाह करने की योजना
बनायी। **6** मगर पौलुस और बरन-
बास को इसकी खबर मिल गयी, इसलिए
वे वहाँ से भाग गए और लुकाउनिया के
लुस्त्रा और दिरबे शहरों के आस-पास के
इलाकों में चले गए। **7** वहाँ वे खुश-
खबरी का ऐलान करते चले।

8 लुस्त्रा में एक आदमी था जो पाँवों
से लाचार था। वह जन्म से ही लँगड़ा
था और कभी चला नहीं था। **9** यह
आदमी बैठकर पौलुस की बातें ध्यान
से सुन रहा था। पौलुस ने उसे गौर
से देखा और यह समझकर कि उसमें
ठीक होने का विश्वास है, **10** ऊँची

प्रेषि 13:51* मत्ती 10:14 फुटनोट देखें।

आवाज़ में कहाः “अपने पाँवों के बल
सीधा खड़ा हो जा।” तब वह उछलकर
खड़ा हो गया और चलने-फिरने लगा।
11 जब लोगों ने पौलुस का यह
काम देखा, तो लुकाउनिया की बोली में
ऊँची आवाज़ में कहने लगेः “देवता,
इंसान बनकर हमारे बीच उतर आए हैं!”
12 और वे बरनबास को ज़्यूस, मगर
पौलुस को हिरमेस कहने लगे क्योंकि
बात करने में वही आगे था। **13** और
शहर के सामने जो ज़्यूस का मंदिर था,
वहाँ का पुजारी बैल और फूलों के हार
लिए फाटक के पास आया और चाहता
था कि लोगों के साथ मिलकर पौलुस
और बरनबास के आगे बलि चढ़ाए।

14 मगर जब प्रेषितों यानी बरनबास
और पौलुस ने इस बारे में सुना, तो उन्होंने
अपने चोगे फाड़े और यह चिल्लाते हुए
भीड़ में कूद पड़ेः **15** “हे लोगो, तुम
यह सब क्यों कर रहे हो? हम भी तुम्हारी
तरह अदना इंसान हैं और तुम्हें एक खुश-
खबरी सुना रहे हैं ताकि तुम इन बेकार
की चीज़ों को छोड़कर जीवित परमेश्वर
के पास आओ, जिसने आकाश और
पृथ्वी और समुद्र और उनमें की सब
चीज़ों को बनाया है। **16** बीते समय
में उसने सब जातियों को अपनी-अपनी
राह चलने दिया, **17** फिर भी उसने
खुद को बे-गवाह न छोड़ा, यानी वह
भलाई करता रहा और तुम्हें आकाश से
बरसात और अच्छी पैदावार के मौसम
देता रहा और तुम्हें जी भर के खाना और
ढेरों खुशियाँ देकर तुम्हारे दिलों को आनंद
से भरता रहा।” **18** यह सब कहने के
बावजूद वे बड़ी मुश्किल से भीड़ को रोक
पाए कि उनके आगे बलिदान न चढ़ाएँ।

19 मगर अंताकिया और इकुनियुम
से यहूदी वहाँ आ धमके और उन्होंने
लोगों को अपनी तरफ कर लिया।
तब लोगों ने पौलुस पर पत्थरवाह किया
और उसे मरा समझकर शहर के बाहर
घसीटकर ले गए। **20** मगर जब चेले
उसके चारों तरफ आ खड़े हुए, तो वह
उठ बैठा और शहर में गया। दूसरे
दिन वह बरनबास के साथ दिरबे चला
गया। **21** और वे उस शहर में खुश-
खबरी सुनाने और कई चेले बनाने के
बाद, लुस्त्रा और इकुनियुम और अंता-
किया लौट गए। **22** वे चेलों की
हिम्मत बँधाते रहे और उन्हें यह कह-
कर विश्वास में बने रहने का बढ़ावा
देते रहेः “हमें बहुत तकलीफें झेलकर
ही परमेश्वर के राज में दाखिल होना
है।” **23** इसके अलावा, पौलुस और
बरनबास ने हर मंडली में उनके लिए
बुज़ुर्ग* ठहराए। उन्होंने इन बुज़ुर्गों को
प्रार्थना और उपवास कर यहोवा के हाथ
सौंपा जिस पर वे विश्वास लाए थे।

24 और वे पिसिदिया के इलाके से
होते हुए पमफूलिया के प्रांत में पहुँचे,
25 और पिरगा शहर में वचन सुनाने
के बाद वे अत्तलिया कस्बे में आए।
26 और वहाँ से वे समुद्री जहाज़ पर
चढ़कर अंताकिया गए। यह वही जगह
थी जहाँ भाइयों ने पौलुस और बरनबास

प्रेषि 14:23* या, “प्राचीन।”

को इस भरोसे के साथ परमेश्‍वर के हवाले सौंप दिया था कि वह उन्हें महा-कृपा दिखाएगा जिससे वे अपना काम पूरा कर सकें। और अब वे यह काम पूरा कर चुके थे।

27 जब वे अंताकिया पहुँचे, तो उन्होंने मंडली को इकट्ठा किया और उन्हें बताने लगे कि परमेश्‍वर ने उनके ज़रिए कैसे-कैसे काम किए और किस तरह उसने गैर-यहूदियों के लिए विश्‍वास को अपनाने का रास्ता* खोल दिया है।
28 और उन्होंने वहाँ चेलों के साथ काफी वक्‍त बिताया।

15 फिर यहूदिया से कुछ लोग अंताकिया आए और भाइयों को सिखाने लगे: "जब तक तुम मूसा के रिवाज़ के मुताबिक खतना नहीं करवाओगे, तब तक तुम उद्धार नहीं पा सकते।"
2 मगर जब इस बात पर पौलुस और बरनबास के साथ उनका काफी वाद-विवाद और झगड़ा हुआ, तो उन्होंने इस झगड़े के सिलसिले में पौलुस और बरनबास को साथ ही अपने बीच से कुछ और भाइयों को, प्रेषितों और बुज़ुर्गों के पास यरूशलेम भेजने का इंतज़ाम किया।

3 मंडली ने उन्हें कुछ दूर तक विदा किया और फिर ये भाई फीनीके और सामरिया के इलाकों से होते हुए गए और वहाँ के भाइयों को ब्यौरेदार जानकारी दी कि कैसे गैर-यहूदियों ने धर्म-परिवर्तन किया है और इन बातों से सभी भाइयों को बड़ी खुशी देते गए।
4 जब वे यरूशलेम पहुँचे तो मंडली और प्रेषितों और बुज़ुर्गों ने बड़ी खुशी से उनका स्वागत किया, और पौलुस और बरनबास ने उन सब कामों के बारे में उन्हें बताया जो परमेश्‍वर ने उनके ज़रिए किए थे।
5 मगर फरीसियों के गुट के कुछ लोग, जो विश्‍वासी बन गए थे, अपनी जगह से उठ खड़े हुए और कहा: "यह बेहद ज़रूरी है कि इन गैर-यहूदियों का खतना कराया जाए और उन्हें मूसा का कानून मानने की सख्त हिदायत दी जाए।"

6 तब प्रेषित और बुज़ुर्ग इस मामले पर गौर करने के लिए इकट्ठा हुए।
7 फिर काफी बहस के बाद, पतरस ने उठकर उनसे कहा: "भाइयो, तुम अच्छी तरह जानते हो कि शुरू के दिनों से परमेश्‍वर ने तुम्हारे बीच में से मुझे चुना कि मेरे मुँह से गैर-यहूदी खुशखबरी का संदेश सुनें और विश्‍वास लाएँ;
8 और दिलों को जाननेवाले परमेश्‍वर ने उन्हें पवित्र शक्‍ति देकर यह गवाही दी कि उसने उन्हें मंज़ूर किया है, ठीक जैसे उसने हमारे साथ भी किया था।
9 और उसने हमारे और उनके बीच कोई फर्क नहीं किया, मगर विश्‍वास से उनके दिलों को शुद्ध किया।
10 तो अब तुम क्यों परमेश्‍वर की परीक्षा करने के लिए चेलों पर मूसा का कानून मानने का भारी बोझ लादते हो, जिसे न हमारे बापदादा उठा सके थे और न हम?
11 इसके बजाय, हम प्रभु यीशु की महा-कृपा के

प्रेषि 14:27* शाब्दिक, "विश्‍वास का द्वार।"

ज़रिए उद्धार पाने का भरोसा रखते हैं,
वैसे ही जैसे वे लोग भी रखते हैं।"
12 इस पर पूरी सभा खामोश
हो गयी और वे बरनबास और पौलुस
की सुनने लगे कि कैसे परमेश्वर ने
उनके ज़रिए गैर-यहूदियों के बीच बहुत-
से चमत्कार और आश्चर्य के काम किए
थे। **13** जब वे बोल चुके तो याकूब
ने यह कहकर जवाब दियाः "भाइयो,
मेरी सुनो। **14** पतरस* ने पूरा ब्यौरा
देकर बताया है कि परमेश्वर ने कैसे
पहली बार गैर-यहूदी राष्ट्रों की तरफ
ध्यान दिया कि उनके बीच से वे लोग चुन
ले जो परमेश्वर के नाम से पहचाने जाएँ।
15 और इस बात से भविष्यवक्ताओं के
वचन भी मेल खाते हैं, जैसा कि लिखा
हैः **16** 'इन बातों के बाद मैं वापस
आऊँगा और दाविद का गिरा हुआ डेरा
फिर से खड़ा करूँगा; और उसके खंड-
हरों को फिर बनाऊँगा और उसे दोबारा
उठाऊँगा, **17** ताकि उसके बचे हुए
लोग जी-जान से यहोवा की खोज करें
और उनके साथ वे सारे गैर-यहूदी भी,
जिनके बारे में यहोवा, जो ये काम करता
है, कहता है, ये मेरे नाम से पुकारे
जाते हैं। **18** इन बातों की जानकारी
उसे सदियों से थी।' **19** इसलिए मेरा
फैसला यह है कि जो गैर-यहूदियों में से
परमेश्वर की तरफ फिर रहे हैं, उन्हें हम
परेशान न करें, **20** मगर उन्हें यह
लिख भेजें कि वे मूर्तिपूजा के ज़रिए
अपवित्र हुई चीज़ों से, और व्यभि-
चार* से और गला घोंटे हुए जानवरों के
माँस से# और लहू से हमेशा दूर रहें।
21 इसलिए कि शहर-शहर में मूसा की
किताबों में लिखी इन्हीं बातों का प्रचार
करनेवाले पुराने ज़माने से होते चले आए
हैं, क्योंकि हर सब्त को सभा-घरों में
उसके लेख पढ़कर सुनाए जाते हैं।"
22 फिर प्रेषितों और बुज़ुर्गों को,
साथ ही सारी मंडली को यह सही लगा कि
वे पौलुस और बरनबास के साथ, अपने
बीच से चुने हुए आदमियों को अंताकिया
भेजें, यानी बर-सबा कहलानेवाले यहूदा
और सीलास को, जो भाइयों में अगुवे थे;
23 और अपने हाथ से उन्होंने यह लिख
भेजाः
"अंताकिया, सीरिया और किलिकिया
के इलाकों में गैर-यहूदी भाइयों को,
आपके भाइयों यानी प्रेषितों और बुज़ुर्गों
का नमस्कार! **24** हमने सुना है कि
हममें से कुछ लोगों ने अपनी बातों से
तुम्हें घबरा दिया है और तुम्हारे विश्वास
को खत्म करने की कोशिश की है।
हालाँकि हमने उन्हें कोई भी हिदायत नहीं
दी थी। **25** इसलिए हम सब ने एक-
मत से यह तय किया है कि कुछ चुने
हुए आदमियों को हमारे प्यारे बरनबास
और पौलुस के साथ तुम्हारे पास भेजें,
26 जिन्होंने हमारे प्रभु यीशु मसीह के
नाम की खातिर अपनी जान तक दाँव पर

प्रेषि 15:14* शाब्दिक, "सिमियन।"

प्रेषि 15:20* यानी, हर किस्म के नाजायज़ यौन-संबंध। अतिरिक्त लेख 4 देखें। **20#** या, "मारने के बाद जिसका खून निकल जाने न दिया गया हो।"

लगा दी है। **27** इसलिए हम यहूदा
और सीलास को भी भेज रहे हैं, ताकि
वे भी अपने मुँह से इन्हीं बातों की जान-
कारी तुम्हें दें। **28** हम पवित्र शक्ति
की मदद से इस नतीजे पर पहुँचे हैं कि
इन ज़रूरी बातों को छोड़ हम तुम पर
और ज़्यादा बोझ न लादें, **29** कि तुम
मूरतों को बलि की हुई चीज़ों से और लहू
से और गला घोंटे हुए जानवरों के माँस
से और व्यभिचार से हमेशा दूर रहो।
अगर तुम इन बातों से दूर रहने में हर
वक्त सावधान रहो, तो तुम्हारा भला
होगा। सलामत रहो!"

30 फिर जब इन आदमियों को
विदा किया गया, तो वे अंताकिया गए
और उन्होंने मंडली को इकट्ठा कर उन्हें
वह चिट्ठी सौंप दी। **31** चिट्ठी पढ़कर
वे लोग उसके हौसला बढ़ानेवाले संदेश
से बेहद खुश हुए। **32** और क्योंकि
यहूदा और सीलास खुद भविष्यवक्ता
थे, इसलिए उन्होंने कई भाषण देकर
भाइयों की हिम्मत बँधायी और उन्हें मज़-
बूत किया। **33** जब उन्होंने वहाँ कुछ
वक्त बिता लिया, तो भाइयों ने उन्हें शांति
से विदा किया कि वे उन लोगों के
यहाँ वापस जाएँ जिन्होंने उन्हें भेजा था।
34* —— **35** मगर पौलुस और
बरनबास अंताकिया में ही रहे और कई
और लोगों के साथ मिलकर यहोवा के
वचन की खुशखबरी सुनाने और सिखाने
में अपना वक्त लगाते रहे।

36 फिर कुछ दिन बाद पौलुस ने
बरनबास से कहा: "आओ जिन-जिन
शहरों में हमने यहोवा के वचन का प्रचार
किया था, वहाँ लौटकर भाइयों से मिलें
और देखें कि वे किस हाल में हैं।"
37 बरनबास ने तो ठान लिया था कि
वह अपने साथ यूहन्ना को भी ले जाएगा
जो मरकुस कहलाता है। **38** मगर
पौलुस को उसे अपने साथ ले जाना
ठीक नहीं लगा, क्योंकि वह पम-
फूलिया में उन्हें छोड़कर चला गया
था और इस काम में उनका साथ नहीं
दिया था। **39** इस पर पौलुस और
बरनबास के बीच ज़बरदस्त तकरार हुई,
इसलिए वे एक-दूसरे से अलग हो गए;
और बरनबास मरकुस को लेकर समुद्री
जहाज़ से कुप्रुस के लिए रवाना हो गया।
40 लेकिन पौलुस ने सीलास को चुना।
भाइयों ने पौलुस को यहोवा की महा-
कृपा के भरोसे सौंपा और वह निकल
पड़ा। **41** वह सीरिया और किलि-
किया के इलाकों से होता हुआ मंडलियों
को मज़बूत करता गया।

16 फिर पौलुस दिरबे और लुस्त्रा
शहर भी पहुँचा। और देखो!
वहाँ तीमुथियुस नाम का एक चेला था, जो
एक विश्वासी यहूदिन का बेटा था मगर
उसका पिता यूनानी था। **2** लुस्त्रा
और इकुनियुम के भाई तीमुथियुस की
बहुत तारीफ किया करते थे। **3** इस-
लिए, पौलुस ने यह इच्छा ज़ाहिर की कि
वह तीमुथियुस को अपने साथ सफर पर
ले जाना चाहता है। उसने तीमुथियुस को
अपने साथ लिया और वह जिन इलाकों
में जानेवाला था वहाँ रहनेवाले यहूदियों

प्रेषि 15:34* मत्ती 17:21 फुटनोट देखें।

की वजह से तीमुथियुस का खतना किया,
क्योंकि हर कोई जानता था कि उसका
पिता यूनानी था। **4** इसके बाद अपने
सफर में वे जिन-जिन शहरों से गुज़रे
वहाँ वे उन आदेशों को मानने के बारे
में बताते गए जिनका फैसला यरूशलेम
में मौजूद प्रेषितों और बुज़ुर्गों ने किया
था। **5** नतीजा यह हुआ कि मंडलियाँ
विश्‍वास में लगातार मज़बूत होती रहीं
और उनकी तादाद दिनों-दिन बढ़ती चली
गयी।

6 इसके बाद वे फ्रूगिया और गला-
तिया के देश से गुज़रे, क्योंकि पवित्र
शक्‍ति ने उन्हें एशिया ज़िले में वचन
सुनाने से मना किया था। **7** इसके
बाद, उन्होंने मूसिया पहुँचकर बितू-
निया प्रांत में जाने की कोशिश की,
मगर यीशु ने पवित्र शक्‍ति के ज़रिए
उन्हें इसकी इजाज़त नहीं दी। **8** इस-
लिए वे मूसिया से होकर त्रोआस शहर
पहुँचे। **9** और रात के वक्‍त पौलुस
को एक दर्शन दिखायी दिया। उसने देखा
कि मकिदुनिया का एक आदमी खड़ा
हुआ उससे यह बिनती कर रहा है:
"इस पार मकिदुनिया आकर हमारी मदद
कर।" **10** जैसे ही उसने यह दर्शन
देखा, हम लोगों ने यह समझकर मकि-
दुनिया जाने का इरादा किया कि पर-
मेश्‍वर ने हमें वहाँ के लोगों को खुशख-
बरी सुनाने का बुलावा दिया है।

11 इसलिए हम त्रोआस से जहाज़
पर समुद्र के रास्ते चल पड़े और
सीधे समोथ्राके द्वीप पहुँचे, और अगले
दिन नियापुलिस शहर। **12** वहाँ से
हम फिलिप्पी गए जो मकिदुनिया के उस
ज़िले का सबसे जाना-माना शहर और
एक रोमी उपनिवेश बस्ती है। हम इस
शहर में कुछ दिन रहे। **13** और सब्त
के दिन हम यह सोचकर शहर के फाटक
के बाहर नदी किनारे गए कि वहाँ प्रार्थना
करने की कोई जगह होगी, और जो
स्त्रियाँ वहाँ जमा थीं हम बैठकर उन्हें
प्रचार करने लगे। **14** वहाँ थुआतीरा
शहर की लुदिया नाम की एक स्त्री भी
थी, जो बैंजनी कपड़े* बेचती थी और
परमेश्‍वर की उपासक थी। जब वह सुन
रही थी तब यहोवा ने उसके दिल के द्वार
पूरी तरह खोल दिए कि वह पौलुस की
कही बातों पर ध्यान दे। **15** नतीजा
यह हुआ कि लुदिया और उसके घराने ने
बपतिस्मा लिया। फिर उसने हमसे बिनती
की: "अगर तुम वाकई मानते हो कि मैं
यहोवा की वफादार हूँ, तो मेरे घर आकर
ठहरो।" और वह हमें जैसे-तैसे मनाकर
अपने घर ले ही गयी।

16 फिर जब हम प्रार्थना की जगह
जा रहे थे, तो हमें एक दासी मिली जिसमें
भविष्य बतानेवाला दुष्ट स्वर्गदूत समाया
था। वह दासी भविष्य बताया करती थी
जिससे उसके मालिकों की बहुत कमाई
होती थी। **17** पौलुस और हम जहाँ
कहीं भी जाते, यह लड़की हमारे पीछे-
पीछे आकर यह चिल्लाती थी: "ये आदमी
परमप्रधान परमेश्‍वर के दास हैं, जो तुम्हें
उद्धार के मार्ग का संदेश सुना रहे हैं।"
18 वह बहुत दिनों तक ऐसा करती
रही। आखिरकार, पौलुस इससे तंग आ

प्रेषि 16:14* या, बैंजनी रंग की डाई।

गया और उसने मुड़कर उस दासी में समाए दुष्ट दूत से कहा: “मैं तुझे यीशु मसीह के नाम से हुक्म देता हूँ, उससे बाहर निकल जा।” और उसी घड़ी वह बाहर निकल गया।

19 जब उस दासी के मालिकों ने
देखा कि उनकी कमाई का ज़रिया खत्म हो चुका है, तो उन्होंने पौलुस और सीलास को पकड़ लिया और उन्हें घसीट-कर चौक* में अधिकारियों के सामने ले
आए। **20** वे उन्हें नगर-अधिकारियों
के पास ले गए और उन पर यह इल-ज़ाम लगाया: “ये आदमी यहूदी हैं और हमारे शहर में बहुत गड़बड़ी मचा रहे हैं।
21 ये ऐसे रिवाज़ों का प्रचार कर रहे हैं
जिन्हें अपनाने या मानने की हमें इजाज़त नहीं है, क्योंकि हम रोमी नागरिक हैं।”
22 और लोगों की भीड़ इकट्ठी होकर
उनके खिलाफ चढ़ आयी और नगर-अधिकारियों ने पौलुस और सीलास के कपड़े फाड़ दिए और उन्हें बेंत लगाने का
हुक्म दिया। **23** जब वे उन्हें बेंतों से
बहुत मार चुके, तो उन्हें कैदखाने में डलवा दिया और जेलर को हुक्म दिया कि
उन पर सख्त पहरा रखे। **24** ऐसा
कड़ा हुक्म पाने की वजह से जेलर ने उन्हें अंदर की कोठरी में डाल दिया और उनके पाँव काठ में कस दिए।

25 मगर आधी रात के वक्त, पौलुस
और सीलास प्रार्थना कर रहे थे और भजन गाकर परमेश्वर का गुणगान कर रहे थे; हाँ, कैदी उनकी सुन रहे थे।
26 तभी अचानक एक बड़ा भूकंप हुआ
जिससे कैदखाने की नींव तक हिल गयी। इतना ही नहीं, कैदखाने के सारे दरवाज़े उसी घड़ी खुल गए और सबकी ज़ंजीरें
खुलकर गिर पड़ीं। **27** तब जेलर
जाग उठा और कैदखाने के दरवाज़े खुले देखकर सोचा कि कैदी भाग गए हैं, इस-लिए उसने अपनी तलवार खींची और
अपनी जान लेनेवाला था। **28** मगर
पौलुस ने ऊँची आवाज़ में पुकार-कर कहा: “अपनी जान न ले, क्योंकि
हम सब यहीं हैं!” **29** तब जेलर
ने दीपक मँगवाए और लपककर अंदर आया और थर-थर काँपता हुआ पौलुस और सीलास के पैरों पर गिर पड़ा।
30 वह उन्हें बाहर ले आया और उनसे
कहा: “साहिबो, उद्धार पाने के लिए मुझे
क्या करना होगा?” **31** उन्होंने कहा:
“प्रभु यीशु पर विश्वास कर, तो तू और तेरा सारा घराना भी उद्धार पाएगा।”
32 पौलुस और सीलास ने उसे और
उसके घर के सभी लोगों को यहोवा का
वचन सुनाया। **33** और जेलर रात
को उसी घड़ी उन्हें अपने साथ ले गया और उनके घाव धोए, तब उसने और उसके घराने के सब लोगों ने बिना देर
किए बपतिस्मा लिया। **34** फिर वह
उन्हें अपने घर ले आया और उनके सामने मेज़ सजायी और उसने अपने पूरे घराने के साथ इस बात पर बड़ा आनंद मनाया कि अब वह परमेश्वर का विश्वासी बन गया है।

प्रेषि 16:19* बाज़ार का वह चौक, जहाँ लोग जमा होते थे।

35 जब दिन निकला, तो नगर-
अधिकारियों ने अपने प्यादों के हाथ यह
संदेश भेजाः “उन आदमियों को रिहा कर
दो।” **36** तब जेलर ने उनकी बात
पौलुस को बतायीः “नगर-अधिकारियों ने
इस संदेश के साथ आदमी भेजे हैं कि
तुम दोनों को रिहा कर दिया जाए। इस-
लिए अब तुम बाहर निकलकर शांति से
अपने रास्ते चले जाओ।” **37** मगर
पौलुस ने उनसे कहाः “पहले तो उन्होंने
हमें जो रोमी नागरिक हैं, बिना कोई जुर्म
साबित किए सरेआम पिटवाया और कैद-
खाने में डाल दिया और अब चुपचाप यहाँ
से निकल जाने के लिए कह रहे हैं? नहीं,
ऐसा हरगिज़ नहीं होगा! उन्हें खुद आकर
हमें यहाँ से बाहर निकालना होगा।”
38 प्यादों ने जाकर ये बातें नगर-अधि-
कारियों को बतायीं। जब अधिकारियों ने
सुना कि ये आदमी रोमी नागरिक हैं, तो
वे बहुत डर गए। **39** इसलिए वे आए
और उन्हें मनाने लगे, और उन्हें बाहर
लाकर उनसे गुज़ारिश की कि वे शहर
छोड़कर चले जाएँ। **40** मगर वे कैद-
खाने से निकलकर लुदिया के घर गए
और जब वे भाइयों से मिले, तो उनकी
हिम्मत बँधायी और फिर वहाँ से विदा
हो गए।

17 अब वे अम्फिपुलिस और
अपुल्लोनिया शहरों से होते हुए
थिस्सलुनीके शहर आए, जहाँ यहू-
दियों का एक सभा-घर था। **2** पौलुस
अपने रिवाज़ के मुताबिक उस सभा-घर
में गया और उसने तीन सब्त तक पवित्र
शास्त्र से उन यहूदियों के साथ तर्क-वितर्क
किया, **3** और वह शास्त्र से हवाले दे-
देकर समझाता रहा और इस बात का
सबूत देता रहा कि मसीह के लिए दुःख
उठाना और मरे हुओं में से जी उठना
ज़रूरी था। वह कहता थाः “यही है वह
मसीह, वह यीशु जिसका मैं तुम्हें प्रचार
कर रहा हूँ।” **4** नतीजा यह हुआ कि
उनमें से कुछ विश्वासी बन गए और
पौलुस और सीलास के साथ संगति करने
लगे। इनके अलावा, परमेश्वर की भक्ति
करनेवाले यूनानियों की एक बड़ी भीड़
ने भी विश्वास किया और उनके साथ हो
ली। इनमें कई नामी स्त्रियाँ भी थीं।

5 मगर यह देखकर यहूदी जलन से
भर गए और अपने साथ बाज़ार के कुछ
आवारा बदमाशों को लेकर एक दल
बना लिया और शहर भर में हंगामा
करने लगे। उन्होंने भाई यासोन के घर
पर धावा बोल दिया ताकि पौलुस और
सीलास को इस पागल भीड़ के हवाले कर
दें। **6** मगर जब ढूँढ़ने पर उन्हें पौलुस
और सीलास वहाँ न मिले, तो उन्होंने
यासोन और कुछ और भाइयों को पकड़
लिया और उन्हें घसीटकर नगर-अधि-
कारियों के पास ले गए और चिल्ला-
चिल्लाकर उन पर यह इलज़ाम लगाते
रहेः “जिन आदमियों ने सारी दुनिया में
उथल-पुथल मचा रखी है, वे अब यहाँ
भी आ पहुँचे हैं **7** और यासोन ने उन्हें
अपने घर में मेहमान ठहराया है। ये सब
आदमी सम्राट* के आदेशों के खिलाफ

प्रेषि 17:7* यूनानी में *“कैसर।”*

बगावत करते हैं और कहते हैं कि कोई
दूसरा राजा है, जिसका नाम यीशु है।”
8 यह सब कहकर उन्होंने भीड़ को और
नगर-अधिकारियों को बेहद भड़का दिया।
9 इसलिए, नगर-अधिकारियों ने यासोन
और बाकियों को तब तक न छोड़ा जब
तक उन्होंने ज़मानत के तौर पर उनसे
भारी रकम न ले ली।

10 तब भाइयों ने रात में ही
पौलुस और सीलास, दोनों को फौरन
बिरीया शहर भेज दिया और वहाँ पहुँचने
पर वे यहूदियों के सभा-घर में गए।
11 बिरीया के लोग तो थिस्सलुनीके के
लोगों से ज़्यादा भले और खुले मन के थे
क्योंकि उन्होंने मन की बड़ी उत्सुकता से
वचन स्वीकार किया। वे हर दिन बड़े
ध्यान से शास्त्र की जाँच करते रहे कि
जो बातें वे सुन रहे थे वे ऐसी ही
लिखी हैं या नहीं। **12** इसलिए उनमें
से बहुत-से विश्वासी बन गए। इसी तरह,
कई इज़्ज़तदार यूनानी स्त्रियाँ और पुरुष
भी विश्वासी बन गए। **13** मगर जब
थिस्सलुनीके के यहूदियों को पता चला
कि पौलुस ने बिरीया में भी परमेश्वर के
वचन का प्रचार किया है, तो वे वहाँ
भी आ गए और जनता को भड़काने
और हुल्लड़ मचाने लगे। **14** इस पर
भाइयों ने फौरन पौलुस को विदा किया
कि वह वहाँ से बहुत दूर समुद्र किनारे
चला जाए, मगर सीलास और तीमुथियुस
वहीं बिरीया में रह गए। **15** और
पौलुस को पहुँचानेवाले भाई उसे एथेन्स
शहर तक ले गए। पौलुस ने उन्हें सीलास
और तीमुथियुस के लिए यह आज्ञा देकर
विदा किया कि वे जल्द-से-जल्द उसके
पास एथेन्स चले आएँ।

16 जब पौलुस एथेन्स में उनका
इंतज़ार कर रहा था, तब उसने देखा
कि पूरा शहर मूरतों से भरा हुआ है।
यह देखकर उसका जी* जल उठा।
17 इसलिए उसने यहूदियों के सभा-
घर में जाकर उनके साथ और पर-
मेश्वर का डर माननेवाले दूसरे लोगों के
साथ शास्त्र से तर्क-वितर्क करना शुरू
कर दिया। साथ ही, हर दिन बाज़ार
में उसे जो भी मिलता था उसके साथ
वह इसी तरह तर्क-वितर्क करता था।
18 मगर इपिकूरी और स्तोइकी दार्श-
निकों में से कुछ पौलुस से बहस करने
लगे। उनमें से कुछ कहते थे: “यह बक-
बक करनेवाला हमसे क्या कहना चाहता
है?” दूसरे कहते थे: “यह तो कोई विदेशी
देवताओं का प्रचारक मालूम होता है।”
यह उन्होंने इसलिए कहा क्योंकि पौलुस,
यीशु की और मरे हुओं के जी उठने की
खुशखबरी सुना रहा था। **19** तब ये
लोग उसे अपने साथ अरियुपगुस* ले गए
और कहने लगे: “क्या हम जान सकते
हैं कि तू यह जो नयी शिक्षा सिखा रहा
है वह क्या है? **20** क्योंकि तू हमें
ऐसी नयी बातें बता रहा है जो हमारे
कानों को अजीब लगती हैं। इसलिए

प्रेषि 17:16* यूनानी *नफ्मा* / अतिरिक्त लेख 7 देखें।
19* “प्राचीन एथेन्स की एक पहाड़ी, जहाँ सबसे बड़ी
अदालत भी लगती थी।”

हम जानना चाहते हैं कि इन सब बातों
का क्या मतलब है।” 21 दरअसल,
एथेन्स के सभी लोग और वहाँ आनेवाले
विदेशी अपना फुरसत का वक्त किसी
और काम में नहीं बल्कि कुछ-न-कुछ नया
सुनने या सुनाने में बिताते थे। 22 तब
पौलुस अरियुपगुस के बीच खड़ा हुआ
और उनसे कहने लगाः

“एथेन्स के लोगो, मैं देखता हूँ कि तुम
हर बात में दूसरों से बढ़कर देवताओं के
भक्त हो।* 23 मिसाल के लिए, जब
मैं यहाँ से गुज़र रहा था और उन चीज़ों
पर गौर कर रहा था जिनकी तुम पूजा
करते हो, तो मैंने एक वेदी देखी जिस पर
लिखा था, ‘अनजाने परमेश्वर के लिए।’
इसलिए तुम जिस परमेश्वर की अनजाने
में भक्ति कर रहे हो, मैं उसी का तुम्हें
प्रचार कर रहा हूँ। 24 जिस परमेश्वर
ने पूरे विश्व और उसकी सब चीज़ों
को बनाया, वही परमेश्वर आकाश और
धरती का मालिक* है। वह हाथ के बनाए
मंदिरों में नहीं रहता, 25 न ही वह
इंसान के हाथों अपनी सेवा करवाता है,
मानो उसे किसी चीज़ की ज़रूरत हो,
क्योंकि वह खुद सबको जीवन और साँसें
और सबकुछ देता है। 26 और उसने
एक ही इंसान से सारी जातियाँ बनायीं
कि वे सारी धरती पर रहें और उनका
वक्त ठहराया और उनके रहने की हदें
तय कीं 27 कि वे परमेश्वर को ढूँढ़ें
और उसकी खोज करें और वाकई उसे
पा भी लें, क्योंकि सच तो यह है कि वह
हममें से किसी से भी दूर नहीं है।
28 क्योंकि उसी से हमारी ज़िंदगी है और
हम चलते-फिरते हैं और वजूद में हैं, जैसा
तुम्हारे कुछ कवियों ने भी कहा है, ‘हम
तो उसी की संतान हैं।’

29 इसलिए यह जानते हुए कि हम
परमेश्वर की संतान हैं, हमें यह नहीं
सोचना चाहिए कि परमेश्वर सोने या चाँदी
या पत्थर जैसा है या इंसान की कल्पना
और कला से गढ़ी गयी किसी चीज़
जैसा है। 30 सच है कि परमेश्वर
ने उस वक्त को नज़रअंदाज़ किया है जब
लोग अज्ञानता में थे। मगर अब वह हर
जगह के सब लोगों को यह आदेश दे रहा
है कि वे पश्चाताप करें। 31 क्योंकि
उसने एक दिन तय किया है जिसमें वह
सच्चाई से सारे जगत का न्याय एक ऐसे
आदमी के ज़रिए करनेवाला है जिसे उसने
ठहराया है। परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में
से ज़िंदा कर सब इंसानों के लिए एक
गारंटी दे दी है।”

32 जब उन्होंने मरे हुओं के जी उठने
के बारे में सुना, तो कुछ लोग उसकी
खिल्ली उड़ाने लगे, जबकि दूसरों ने कहाः
“हम फिर कभी इस बारे में तुझसे और
ज़्यादा सुनेंगे।” 33 इस पर पौलुस
उनके बीच से निकल गया। 34 मगर
कुछ आदमी उसके साथ हो लिए और
विश्वासी बन गए, इनमें अरियुपगुस की
अदालत का एक न्यायी, दियुनिसियुस
और दमरिस नाम की एक स्त्री और इनके
अलावा और भी लोग थे।

प्रेषि 17:22* शाब्दिक, “का भय मानते हो।”
24* शाब्दिक, “प्रभु।”

18 इसके बाद पौलुस एथेन्स से
निकला और कुरिंथ शहर
आया। **2** कुरिंथ में उसे अक्विला नाम
का एक यहूदी मिला, जिसका जन्म पुन्तुस
इलाके में हुआ था। वह हाल ही में अपनी
पत्नी प्रिस्किल्ला के साथ इटली से आया
था, क्योंकि सम्राट क्लौदियुस ने सभी
यहूदियों को रोम से निकल जाने का
हुक्म दिया था। पौलुस, अक्विला और
प्रिस्किल्ला के पास गया। **3** पौलुस
का और उनका पेशा एक ही था, इसलिए
वह उनके घर में रहने और उनके साथ
काम करने लगा। वे तंबू बनाया करते थे।
4 पौलुस हर सब्त के दिन सभा-घर में
भाषण देता और यहूदियों और यूनानियों
को दलीलें देकर कायल करता था।

5 जब सीलास और तीमुथियुस, दोनों
मकिदुनिया से आ गए, तो पौलुस और भी
ज़ोर-शोर से वचन का प्रचार करने में पूरी
तरह लग गया और यहूदियों को गवाही
दे-देकर साबित करने लगा कि यीशु
ही मसीह है। **6** मगर जब वे लगा-
तार पौलुस के संदेश का विरोध करते रहे
और उसके बारे में बुरी-बुरी बातें कहनी न
छोड़ीं, तो उसने अपना पल्ला झाड़ते हुए
उनसे कहा: “तुम्हारा खून तुम्हारे ही सिर
पर पड़े। मैं निर्दोष हूँ। अब से मैं गैर-यहू-
दियों के पास जाऊँगा।” **7** फिर वह
अपनी जगह बदलकर तितुस युस्तुस नाम
के एक आदमी के घर रहने लगा, जो पर-
मेश्वर का उपासक था और जिसका घर
सभा-घर से सटा हुआ था। **8** सभा-
घर का अधिकारी क्रिसपुस और उसका
पूरा घराना पौलुस का संदेश सुनकर
प्रभु में विश्वासी बन गया। और
कुरिंथ के बहुत-से लोग भी यह संदेश सु-
नकर विश्वास लाए और उन्होंने बपतिस्मा
लिया। **9** इतना ही नहीं रात में प्रभु,
पौलुस को एक दर्शन में दिखायी दिया
और उससे कहा: “मत डर, और प्रचार
किए जा, चुप मत रह। **10** इस शहर
में मेरे बहुत-से लोग हैं जिन्हें इकट्ठा करना
बाकी है। इसलिए मैं तेरे साथ हूँ और
कोई भी इंसान तुझ पर हमला कर तुझे
चोट न पहुँचा सकेगा।” **11** इसलिए
पौलुस डेढ़ साल तक वहीं रहा और उनके
बीच परमेश्वर का वचन सुनाता रहा।

12 फिर जिस दौरान गल्लियो,
अखया* प्रांत का राज्यपाल था, तब
यहूदी एकजुट होकर पौलुस पर चढ़
आए और उसे न्याय-आसन के सामने
ले गए। **13** वे उस पर यह इल-
ज़ाम लगाने लगे: “यह आदमी सरकारी
कानून के खिलाफ जाकर किसी और
तरीके से परमेश्वर की उपासना करने के
लिए लोगों को कायल कर रहा है।”
14 मगर इससे पहले कि पौलुस कुछ
बोलता, राज्यपाल गल्लियो ने यहूदियों से
कहा: “यहूदियो, अगर यह मामला किसी
अन्याय या बड़े अपराध का होता, तो
वाजिब होता कि मैं सब्र के साथ तुम्हारी
बात सुनूं। **15** लेकिन अगर ये झगड़े
तुम्हारे अपने कानून को लेकर हैं और

प्रेषि 18:12* दक्षिणी यूनान का रोमी प्रांत, जिसकी राजधानी कुरिंथ थी।

शब्दों और नामों के बारे में हैं, तो तुम्हीं
जानो। मैं इन बातों में तुम्हारा न्यायी
नहीं बनना चाहता।” **16** यह कहकर
उसने यहूदियों को न्याय-आसन के सामने
से निकलवा दिया। **17** फिर उन सभी
ने सभा-घर के अधिकारी सोस्थिनेस को
पकड़ लिया और न्याय-आसन के सामने
उसे पीटने लगे। मगर गल्लियो ने इस
पर ज़रा भी ध्यान नहीं दिया।

18 फिर भी, पौलुस वहाँ और भी
कई दिन ठहरा और इसके बाद उसने
भाइयों से विदा ली। उसने किंख्रिया*
में अपने बाल कटवाए, क्योंकि
उसने मन्नत मानी थी। फिर वह समुद्री
जहाज़ से सीरिया प्रांत के लिए रवाना हो
गया और प्रिस्किल्ला और अक्विला भी
उसके साथ थे। **19** सफर के दौरान,
वे इफिसुस आए और वह प्रिस्किल्ला और
अक्विला को वहीं छोड़कर खुद वहाँ
के सभा-घर में गया और यहूदियों के
साथ तर्क-वितर्क कर उन्हें समझाने लगा।
20 हालाँकि वे उससे कुछ और वक्त
वहीं रहने की बिनती करते रहे, फिर भी
वह नहीं माना **21** मगर यह कहकर
उनसे विदा लीः “अगर यहोवा ने चाहा
तो मैं तुम्हारे पास दोबारा आऊँगा।” और
वह इफिसुस से समुद्री यात्रा पर निकल
पड़ा **22** और कैसरिया आया। और
फिर वह यरूशलेम जाकर वहाँ की मंडली
से मिला और उन्हें नमस्कार किया और
वहाँ से अंताकिया* शहर गया।

23 अंताकिया में कुछ वक्त बिताने
के बाद, पौलुस वहाँ से रवाना हुआ और
गलातिया प्रांत और फ्रूगिया देश का दौरा
करते हुए शहर-शहर जाकर सभी चेलों
की हिम्मत बँधाता रहा।

24 अपुल्लोस नाम का एक
यहूदी, जिसका जन्म सिकंदरिया शहर
में हुआ था, इफिसुस आया। वह
बात करने में माहिर था और शास्त्र
का बहुत अच्छा ज्ञान रखता था।
25 इस आदमी को यहोवा का मार्ग
ज़बानी तौर पर सिखाया गया था, और
क्योंकि वह पवित्र शक्ति के तेज से भर-
पूर था, इसलिए वह यीशु के बारे में सही-
सही बातें बोलता और सिखाता था। मगर
उसे सिर्फ उस बपतिस्मे की जानकारी
थी जिसका यूहन्ना ने प्रचार किया था।
26 यह आदमी सभा-घर में बेधड़क
होकर बोलने लगा। जब प्रिस्किल्ला और
अक्विला ने उसकी बातें सुनी, तो उन्होंने
उसे अपनी संगति में ले लिया और उसे
परमेश्वर के मार्ग की बारीकियों की
और भी सही समझ दी। **27** और
अपुल्लोस की इच्छा थी कि वह उस पार
अखया प्रांत जाए, इसलिए भाइयों ने वहाँ
के चेलों को चिट्ठी लिखकर उन्हें बढ़ावा
दिया कि वे उसका प्यार से स्वागत करें।
अखया पहुँचने के बाद, अपुल्लोस ने उन
लोगों की बहुत मदद की जिन्होंने पर-
मेश्वर की महा-कृपा की वजह से विश्वास
किया था, **28** क्योंकि उसने सरेआम
और बड़े दमदार तरीके से यहूदियों को
पूरी तरह से गलत साबित किया और

प्रेषि 18:18* पूर्वी इलाकों के लिए कुरिंथ का बंदरगाह। **22*** सीरिया के।

शास्त्र से साफ-साफ दिखाया कि यीशु ही
मसीह था।

19 जिस दौरान अपुल्लोस कुरिंथ में
था, पौलुस तटीय इलाकों से
दूर अंदर के इलाकों का दौरा
करता हुआ इफिसुस शहर आया और
वहाँ उसने कुछ चेले पाए। **2** उसने
उनसे पूछाः "जब तुम विश्वासी बने तब
क्या तुमने पवित्र शक्ति पायी?" उन्होंने
कहाः "हमने इस बारे में कभी कुछ नहीं
सुना कि पवित्र शक्ति कैसे पायी जाती
है।" **3** तब पौलुस ने कहाः "तो फिर,
तुमने किस तरह का बपतिस्मा पाया?"
उन्होंने कहाः "यूहन्ना का।" **4** पौलुस
ने कहाः "यूहन्ना ने पश्चाताप दिखाने-
वाला बपतिस्मा दिया था और लोगों को
बताया कि उसके बाद जो आनेवाला है
उस पर, हाँ यीशु पर विश्वास करें।"
5 यह सुनने पर, उन्होंने प्रभु यीशु के
नाम से बपतिस्मा लिया। **6** और जब
पौलुस ने उन पर अपने हाथ रखे, तो
उन पर पवित्र शक्ति आयी और वे
अलग-अलग भाषाओं में बोलने और
भविष्यवाणी करने लगे। **7** ये करीब
बारह आदमी थे।

8 फिर पौलुस तीन महीने तक इफि-
सुस के सभा-घर में जा-जाकर निडरता से
बोलता रहा और परमेश्वर के राज के
बारे में भाषण देकर कायल करता रहा।
9 मगर जब कुछ लोगों ने खुद को कठोर
कर लिया और विश्वास नहीं किया, और
लोगों के सामने प्रभु के मार्ग को बदनाम
करने लगे, तो उसने उन्हें छोड़ दिया और
चेलों को उनसे अलग कर लिया। वह
हर दिन तरन्नुस के स्कूल के सभा-भवन
में भाषण दिया करता था। **10** ऐसा
दो साल तक चलता रहा, और इससे
एशिया ज़िले में रहनेवाले हर किसी ने,
चाहे वह यहूदी हो या यूनानी, प्रभु का
वचन सुना।

11 परमेश्वर, पौलुस के हाथों बड़े-
बड़े शक्तिशाली काम करवाता रहा।
12 यहाँ तक कि उसके शरीर को छूने-
वाले कपड़े और रुमाल बीमारों के पास
ले जाए जाते थे और उनकी बीमा-
रियाँ दूर हो जाती थीं और जिनमें दुष्ट
स्वर्गदूत समाए थे वे उनमें से बाहर
निकल जाते थे। **13** मगर यहूदियों में
से कुछ लोग ऐसे थे जो जगह-जगह
घूमकर दुष्ट स्वर्गदूतों को निकालने का
काम किया करते थे। उन्होंने भी कोशिश
की कि जिनमें दुष्ट स्वर्गदूत समाए थे
उन पर प्रभु यीशु का नाम लेकर यह
कहें: "मैं तुम्हें उस यीशु के नाम से
हुक्म देता हूँ जिसका प्रचार पौलुस करता
है।" **14** स्कीवा नाम के एक यहूदी
प्रधान याजक के सात बेटे ऐसा ही कहते
हुए एक आदमी में समाए दुष्ट स्वर्गदूत
को निकालने की कोशिश कर रहे थे।
15 मगर उस दुष्ट स्वर्गदूत ने उन्हें
जवाब दियाः "मैं यीशु को भी जानता हूँ
और पौलुस को भी; मगर तुम कौन हो?"
16 यह कहकर वह आदमी उन पर
झपटा और एक-एक कर उन सातों को
धर दबोचा और उन पर इस कदर हावी
हो गया कि वे नंगे और ज़ख्मी हालत में

उस घर से भागे। **17** यह बात इफि-
सुस में रहनेवाले यहूदियों और यूनानियों,
सबको पता चली; और उन सब पर
डर छा गया और प्रभु यीशु का नाम
महिमा पाता गया। **18** और विश्‍वास
करनेवालों में से बहुत-से आते थे और
वे सरेआम अपने बुरे काम मान लिया
करते थे और इनके बारे में खुलकर
बताया करते थे। **19** वाकई, बहुत-से
लोग जो जादूगरी की विद्या में लगे हुए
थे, अपनी-अपनी पोथियाँ ले आए और
सबके सामने उन्हें जला दिया। और जब
उन्होंने उनका हिसाब लगाया तो उनकी
कीमत पचास हज़ार चाँदी के सिक्के
निकली। **20** इस तरह बड़े शक्ति-
शाली तरीके से यहोवा का वचन बढ़ता
और प्रबल होता गया।

21 यह सब होने के बाद, पौलुस ने
अपने मन में ठाना कि वह मकिदुनिया
और अखया का दौरा करने के बाद यरू-
शलेम के सफर पर निकलेगा। उसने
कहा: "वहाँ पहुँचने के बाद मुझे रोम भी
जाना होगा।" **22** और उसने अपनी
सेवा करनेवालों में से दो भाइयों यानी
तीमुथियुस और इरास्तुस को मकिदुनिया
भेजा, मगर वह खुद कुछ वक्‍त के लिए
एशिया ज़िले* में रुका रहा।

23 उसी दौरान, इफिसुस में प्रभु
के मार्ग को लेकर बड़ा हुल्लड़ मचा।
24 वहाँ देमेत्रियुस नाम का एक आदमी
था, जो चाँदी का काम करनेवाला सुनार
था। वह अरतिमिस के मंदिर की चाँदी
की प्रतिमाएँ बनवाकर कारीगरों का बहुत
मुनाफा करवाता था। **25** उसने इन
कारीगरों को और ऐसा ही काम करने-
वाले दूसरे लोगों को इकट्ठा किया और
उनसे कहा: "लोगो, तुम अच्छी तरह
जानते हो कि इस कारोबार से हमारी
कितनी कमाई होती है। **26** और
तुमने यह भी देखा और सुना है कि कैसे
न सिर्फ इफिसुस में, बल्कि एशिया के
करीब-करीब पूरे ज़िले में इस पौलुस ने
भारी तादाद में लोगों को कायल किया
है और उन्हें यह कहकर दूसरे मत की
तरफ फेर दिया है कि जो हाथ के बनाए
हुए हैं वे ईश्‍वर हैं ही नहीं। **27** और
इससे न सिर्फ इस बात का खतरा है कि
हमारे इस पेशे की बदनामी होगी बल्कि
यह भी कि महान देवी अरतिमिस के
मंदिर की शान खत्म हो जाएगी। और
जिस देवी को एशिया का सारा ज़िला
और सारा जगत पूजता है, उसका ऐश्‍वर्य
मिट्टी में मिल जाएगा।" **28** यह सुनने
पर लोग आग-बबूला हो उठे और चिल्ला-
चिल्लाकर कहने लगे: "इफिसियों की देवी
अरतिमिस महान है!"

29 तब शहर में बड़ा हुल्लड़ मच
गया और वे सब इकट्ठे रंगशाला में घुस
गए और अपने साथ मकिदुनिया के रहने-
वाले गयुस और अरिस्तरखुस को ज़बर-
दस्ती ले गए। ये दोनों पौलुस के सफरी
साथी थे। **30** पौलुस तो चाहता था
कि वह खुद अंदर लोगों के सामने जाए,
मगर चेलों ने उसे जाने नहीं दिया।

प्रेषि 19:22* प्रेषि 2:9 फुटनोट देखें।

31 यहाँ तक कि त्योहारों और खेलों के
कुछ प्रबंधकों ने, जो पौलुस का भला
चाहते थे, उसे पैगाम भेजा और यह
बिनती की कि वह रंगशाला में जाने का
जोखिम न उठाए। **32** और ऐसा हुआ
कि भीड़ में कोई कुछ चिल्ला रहा था तो
कोई कुछ; क्योंकि सभा में गड़बड़ी मची
हुई थी और उनमें से ज़्यादातर को यह
पता नहीं था कि आखिर वे क्यों जमा हुए
हैं। **33** इसलिए भीड़ में से कुछ लोगों
ने मिलकर सिकंदर को आगे कर दिया
और यहूदियों ने उसे सामने की तरफ
धकेल दिया; और सिकंदर ने अपने हाथ
से इशारा किया और लोगों को अपनी
तरफ से सफाई देनी चाही। **34** मगर
जब उन्होंने उसे पहचान लिया कि वह
एक यहूदी है, तो वे सब एक साथ लल-
कार उठे और दो घंटे तक चिल्लाते रहे:
"इफिसियों की देवी अरतिमिस महान है!"

35 आखिर में नगर-प्रमुख ने भीड़
को शांत किया और उनसे कहा: "इफि-
सुस के लोगो, इस दुनिया में ऐसा कौन
है जो यह न जानता हो कि इफिसियों का
शहर, महान अरतिमिस के मंदिर और
आकाश से गिरी मूरत का रखवाला है?
36 इसलिए जबकि इन बातों को कोई
काट ही नहीं सकता, तो यह ज़रूरी है
कि तुम शांत रहो और जल्दबाज़ी में कोई
कदम न उठाओ। **37** क्योंकि तुम ऐसे
आदमियों को पकड़ लाए हो, जो न तो
मंदिरों के लुटेरे हैं, न ही हमारी देवी
को बदनाम करनेवाले हैं। **38** इस-
लिए अगर देमेत्रियुस और उसके साथी
कारीगरों का किसी के साथ कोई झगड़ा
है, तो ऐसे मामलों के लिए तय दिनों पर
अदालत लगती है और राज्यपाल भी हैं।
वे वहाँ जाकर एक-दूसरे के खिलाफ इल-
ज़ाम लगाएँ। **39** लेकिन, अगर इनके
खिलाफ तुम्हारे दूसरे कोई इलज़ाम हैं, तो
इनका फैसला जनता की सभा में किया
जाना चाहिए। **40** क्योंकि आज के
इस मामले को लेकर हम पर देशद्रोह का
इलज़ाम लगने का खतरा है, इसलिए कि
हमारे पास ऐसी एक भी वजह नहीं
कि हम हुल्लड़ मचानेवाली ऐसी भीड़
को इकट्ठा होने दें।" **41** जब वह ये
बातें कह चुका, तब उसने सभा बर-
खास्त कर दी।

20 जब हुल्लड़ थम गया, तो पौलुस
ने चेलों को बुलवाया और
उनका हौसला बढ़ाने के बाद उन्हें अल-
विदा कहा और मकिदुनिया के सफर पर
निकल पड़ा। **2** उन इलाकों का दौरा
करते वक्त उसने बहुत-सी बातें कहकर
वहाँ के चेलों का हौसला बढ़ाया और फिर
वह यूनान आया। **3** वहाँ तीन महीने
रहने के बाद, जब वह समुद्री जहाज़ पर
सीरिया के लिए रवाना होने पर था, तो
यहूदियों ने उसके खिलाफ साज़िश रची,
इसलिए उसने मकिदुनिया से होते हुए
लौटने का मन बनाया। **4** उसके साथ
बिरीया के पुर्रुस का बेटा सोपत्रुस, थिस्स-
लुनीकियों में से अरिस्तरखुस और सिकुं-
दुस और दिरबे का गयुस और तीमुथि-
युस और एशिया ज़िले से तुखिकुस और

त्रुफिमुस हो लिए। 5 ये आगे निकल
गए और त्रोआस शहर में हमारा इंतज़ार
कर रहे थे। 6 मगर हम बिन-खमीर
की रोटियों के त्योहार के दिनों के बाद
फिलिप्पी से समुद्री यात्रा पर निकले और
पाँच दिन के अंदर उनके पास त्रोआस
पहुँचे; और हमने वहाँ सात दिन बिताए।
7 हफ्ते के पहले दिन जब हम खाना
खाने के लिए इकट्ठा हुए, तो पौलुस जमा
हुए लोगों को उपदेश देने लगा क्योंकि
वह अगले दिन वहाँ से निकलने पर था।
वह आधी रात तक भाषण देता रहा।
8 ऊपर के जिस कमरे में हम इकट्ठा थे
वहाँ बहुत-से दीए जल रहे थे। 9 युतु-
खुस नाम का एक जवान, खिड़की पर
बैठा हुआ था। जब पौलुस देर तक बातें
करता रहा, तो वह जवान गहरी नींद
सो गया और नींद के झोंके में तीसरी
मंज़िल से नीचे गिर पड़ा और जब उसे
उठाया गया, तो वह मर चुका था।
10 मगर पौलुस सीढ़ियाँ उतरकर नीचे
गया और उस पर झुककर उससे लिपट
गया और भाइयों से कहा: "शांत हो
जाओ, क्योंकि यह अब ज़िंदा हो गया
है।" 11 इसके बाद वह ऊपर गया
और उसने रोटी तोड़कर खाना शुरू
किया और काफी देर तक उनसे बातें
करता रहा, जब तक कि उजाला न हो
गया और फिर उसने उनसे विदा ली।
12 और वे उस लड़के को ले गए और
उसे ज़िंदा पाकर उन्हें इतना दिलासा मिला
जिसका बयान नहीं किया जा सकता।
13 इसके बाद हम पहले निकले और
जहाज़ पर चढ़कर अस्सुस के लिए रवाना
हुए। वहाँ हमें पौलुस को भी अपने साथ
जहाज़ पर लेना था, क्योंकि उसने हमें
ऐसा करने की हिदायतें देने के बाद
खुद पैदल जाने का इरादा किया था।
14 और जब वह अस्सुस में हमसे
आ मिला, तो हमने उसे अपने साथ
जहाज़ पर चढ़ाया और मितुलेने गए।
15 अगले दिन हम वहाँ से जहाज़ पर
निकले और खियुस के सामने पहुँचे, मगर
दूसरे दिन जहाज़ ने सामुस में कुछ वक्त
के लिए लंगर डाला और फिर अगले
दिन हम मीलेतुस पहुँचे। 16 पौलुस
ने तय किया था कि वह इफिसुस में रुके
बिना आगे बढ़ जाएगा ताकि उसे एशिया
ज़िले में और वक्त न बिताना पड़े। वह
इसलिए जल्दी कर रहा था कि हो सके
तो पिन्तेकुस्त के त्योहार के दिन तक
यरूशलेम पहुँच जाए।

17 मगर उसने मीलेतुस से इफिसुस
में कहलवा भेजा और वहाँ की मंडली के
बुज़ुर्गों को बुलवा लिया। 18 जब वे
उसके पास आए तो उसने उनसे कहा:
"तुम अच्छी तरह जानते हो कि एशिया
ज़िले में कदम रखने के पहले दिन से मैं
कैसे सारा वक्त तुम्हारे ही साथ रहा।
19 मैं मन के बड़े दीन स्वभाव से
और आँसू बहा-बहाकर और यहूदियों की
साज़िशों की वजह से आयी परीक्षाओं
को झेलते हुए प्रभु का दास बनकर
सेवा करता रहा। 20 इस दौरान मैं
तुम्हें ऐसी कोई भी बात बताने से न
चूका जो तुम्हारे फायदे की थी, न ही
तुम्हें सरेआम और घर-घर जाकर सिखाने
से रुका। 21 मगर मैंने यहूदी और

यूनानी, दोनों को परमेश्वर के सामने
पश्चाताप करने और हमारे प्रभु यीशु
में विश्वास करने के बारे में अच्छी
तरह गवाही दी। **22** और अब देखो,
मैं पवित्र शक्ति के मार्गदर्शन के मुता-
बिक यरूशलेम जाने के लिए विवश हूँ,
हालाँकि मैं नहीं जानता कि वहाँ मुझ पर
क्या-क्या बीतेगी। **23** मैं सिर्फ इतना
जानता हूँ कि हर शहर में पवित्र शक्ति
ने बार-बार गवाही देकर मुझ पर ज़ाहिर
किया कि कैद और क्लेश मेरी राह तक
रहे हैं। **24** फिर भी, मैं अपनी जान
को ज़रा भी कीमती नहीं समझता कि
इसकी परवाह करूँ, बस इतना चाहता हूँ
कि मैं किसी तरह अपनी दौड़ पूरी कर
सकूँ और अपनी सेवा पूरी कर सकूँ। यही
सेवा जो मुझे प्रभु यीशु से मिली थी कि
परमेश्वर की महा-कृपा के बारे में खुश-
खबरी की अच्छी गवाही दूँ।

25 और अब देखो! मैं जानता हूँ
कि तुम सब जिनके बीच मैंने राज का
प्रचार किया, मेरा मुँह फिर न देखोगे।
26 इसलिए आज के दिन तुम इस बात
के गवाह हो कि मैं सब लोगों के खून से
निर्दोष हूँ। **27** क्योंकि मैं तुम्हें पर-
मेश्वर की सारी मरज़ी बताने से नहीं
रुका। **28** तुम अपनी और पूरे झुंड
की चौकसी करो जिसके बीच पवित्र
शक्ति ने तुम्हें निगरानी करनेवाले ठह-
राया है कि तुम परमेश्वर की उस मंडली
की चरवाहों की तरह देखभाल करो जिसे
उसने अपने बेटे के लहू से मोल लिया
है। **29** मैं जानता हूँ कि मेरे जाने के
बाद अत्याचारी भेड़िए तुम्हारे बीच घुस
आएँगे और झुंड के साथ कोमलता से पेश
नहीं आएँगे, **30** और तुम्हारे ही बीच
में से ऐसे आदमी उठ खड़े होंगे जो चेलों
को अपने पीछे खींच लेने के लिए टेढ़ी-
मेढ़ी बातें कहेंगे।

31 इसलिए जागते रहो और याद
रखो कि तीन साल तक, रात-दिन आँसू
बहा-बहाकर मैंने तुममें से हरेक को सम-
झाना-बुझाना न छोड़ा। **32** और अब
मैं तुम्हें परमेश्वर के और उसकी महा-
कृपा के वचन के हवाले सौंपता हूँ। यह
वचन तुम्हें मज़बूत कर सकता है और
सब पवित्र जनों के बीच विरासत दिला
सकता है। **33** मैंने किसी की चाँदी या
सोने या कपड़े का लालच नहीं किया।
34 तुम खुद यह बात जानते हो कि मेरे
इन्हीं हाथों ने न सिर्फ मेरी बल्कि मेरे
साथियों की ज़रूरतों को भी पूरा किया
है। **35** मैंने सब बातों में तुम्हें यह कर
दिखाया है ताकि तुम भी इसी तरह मेहनत
करते हुए उन लोगों की मदद करो जो
कमज़ोर हैं, और प्रभु यीशु के ये शब्द
हमेशा याद रखो जो उसने खुद कहे थे,
'लेने से ज़्यादा खुशी देने में है।'"

36 जब पौलुस ये बातें कह चुका,
तो उसने उन सबके साथ घुटने टेके और
प्रार्थना की। **37** तब वे सब फूट-फूट-
कर रोने लगे और पौलुस के गले लग-
कर उसे प्यार से चूमने लगे। **38** वे
खासकर पौलुस की इस बात से दुःखी हो
गए थे कि वे फिर कभी उसका मुँह
न देखेंगे। फिर वे उसे जहाज़ तक विदा
करने आए।

21 हमने भारी दिल से उनसे विदा
ली और अपनी समुद्री यात्रा शुरू
की। हम बड़ी तेज़ी से सीधे कोस द्वीप
पहुँचे, फिर दूसरे दिन रुदुस द्वीप आए
और वहाँ से पतरा बंदरगाह। **2** वहाँ
हमें एक जहाज़ मिला जो सीधे समुद्र पार
फीनीके जा रहा था, हम उस पर सवार
होकर वहाँ से रवाना हुए। **3** रास्ते में
हमें कुप्रुस द्वीप दिखायी दिया जो हमारी
बायीं तरफ था। उसे पीछे छोड़ते हुए हम
सीरिया की तरफ बढ़ते गए और सोर के
बंदरगाह पहुँचकर वहाँ जहाज़ से उतरे,
क्योंकि वहाँ जहाज़ का माल उतारा जाना
था। **4** वहाँ हमने ढूँढ़कर पता लगाया
कि चेले कहाँ रहते हैं और हम सात
दिन तक उन्हीं के यहाँ ठहरे। मगर
पवित्र शक्ति ने जो ज़ाहिर किया था
उसकी वजह से चेलों ने पौलुस से बार-
बार कहा कि वह यरूशलेम में कदम न
रखे। **5** जब वहाँ ठहरने के दिन पूरे
हुए, तो हम वहाँ से निकले और अपने
सफर पर चल पड़े; मगर सारे भाई,
स्त्रियों और बच्चों के साथ हमें शहर के
बाहर तक विदा करने आए। और समुद्र
के किनारे हमने घुटने टेककर प्रार्थना की
6 और एक-दूसरे को अलविदा कहने के
बाद हम अपने जहाज़ पर चढ़ गए और
वे अपने घरों को लौट गए।

7 फिर हम सोर से निकले और
समुद्री रास्ते से पतुलिमयिस शहर के
बंदरगाह पहुँचे। वहाँ हम भाइयों से
मिले और एक दिन उनके साथ रहे।
8 अगले दिन हम वहाँ से निकलकर
कैसरिया पहुँचे और प्रचारक* फिलिप्पुस
के घर गए। फिलिप्पुस उन सात योग्य
पुरुषों में से एक था जिनका अच्छा
नाम था, और हम उसके यहाँ ठहरे।
9 इस आदमी की चार कुँवारी बेटियाँ थीं
जो भविष्यवाणी करती थीं। **10** फिर
जब हम वहाँ काफी दिन रहे, तो यहू-
दिया से अगबुस नाम का एक भविष्य-
वक्ता वहाँ आया **11** वह हमारे पास
आया और उसने पौलुस का कमर-बंध
लिया और उससे अपने हाथ-पैर बाँध-
कर कहा: “पवित्र शक्ति यह कहती है,
‘जिस आदमी का यह कमर-बंध है, उसे
यहूदी इसी तरीके से यरूशलेम में बाँधेंगे
और दूसरी जातियों के लोगों के हवाले
कर देंगे।’” **12** जब हमने यह सुना,
तो हम और उस जगह के लोग भी
पौलुस से मिन्नतें करने लगे कि वह यरू-
शलेम न जाए। **13** इस पर पौलुस ने
जवाब दिया: “तुम यह क्या कर रहे हो,
तुम क्यों रो-रोकर मेरा दिल कमज़ोर कर
रहे हो? यकीन मानो, मैं प्रभु यीशु के
नाम की खातिर यरूशलेम में न सिर्फ बंदी
होने के लिए बल्कि मारे जाने के लिए
भी तैयार हूँ।” **14** जब वह अपनी
बात से न टला, तो हम यह कहकर चुप
हो गए: “यहोवा की मरज़ी पूरी हो।”

15 उन दिनों के बाद हमने सफर
की तैयारी की और यरूशलेम जाने के
लिए निकल पड़े। **16** कैसरिया में से
कुछ चेले भी हमारे संग हो लिए कि

प्रेषि 21:8* या, “एक मिशनरी” जो खुशखबरी का प्रचार करता है।

हमें कुप्रुस के मनासोन के घर ले जाएँ
जिसके यहाँ हमें ठहरना था। वह शुरू के
चेलों में से एक था। **17** जब हम
यरूशलेम पहुँचे, तो भाइयों ने खुशी-
खुशी हमारा स्वागत किया। **18** मगर
अगले दिन पौलुस हमारे साथ याकूब से
मिलने गया और सभी बुज़ुर्ग वहाँ मौजूद
थे। **19** पौलुस ने उन्हें नमस्कार किया
और उन सभी कामों का ब्यौरा देने लगा,
जो परमेश्वर ने उसकी सेवा के ज़रिए
गैर-यहूदियों के बीच किए थे।

20 यह सुनकर वे परमेश्वर की
महिमा करने लगे और उन्होंने पौलुस से
कहाः "भाई, तू देख रहा है कि यहूदियों
में हज़ारों ने विश्वास किया है। उन सब
में मूसा का कानून मानने का जोश है।
21 मगर उन्होंने तेरे बारे में ये अफवाहें
सुनी हैं कि तू दूसरी जातियों के बीच
रहनेवाले सब यहूदियों को परमेश्वर की
उन शिक्षाओं के खिलाफ बगावत करना*
सिखा रहा है जो उसने हमें मूसा के ज़रिए
सौंपी थीं। तू उनसे कहता है कि न तो
अपने बच्चों का खतना करें न ही सदियों
से चले आ रहे उन रिवाज़ों को मानें
जिनका सख्ती से पालन किया जाता है।
22 अब इस बारे में क्या किया जाए?
चाहे कुछ भी हो, लोगों को तो पता चल
ही जाएगा कि तू यहाँ आया हुआ है।
23 इसलिए हम जो तुझसे कह रहे हैं
वह करः हमारे यहाँ चार आदमी ऐसे हैं
जिन्होंने मन्नत मानी है। **24** तू इन
आदमियों को साथ ले जा और उनके साथ
जैसा मूसा के कानून में बताया गया है
उसके मुताबिक खुद को शुद्ध कर और
उनका खर्च उठा कि वे अपना सिर
मुंड़ाएँ। ऐसा करने से हर कोई जान लेगा
कि तेरे बारे में उन्होंने जो अफवाहें सुनी
थीं वे सच नहीं हैं, बल्कि तू मूसा के
कानून को मानता है और उसके मुताबिक
ठीक चाल चलता है। **25** जहाँ तक
दूसरी जातियों के विश्वासियों की बात है,
हमने अपना फैसला उन्हें लिख भेजा है
कि वे मूरतों के आगे बलि की हुई चीज़ों
से, साथ ही लहू से और गला घोंटे हुए
जानवरों के माँस से और व्यभिचार से
हमेशा दूर रहें।"

26 तब पौलुस अगले दिन उन
आदमियों को ले गया और मूसा के कानून
के मुताबिक उनके साथ खुद को शुद्ध
किया और मंदिर के अंदर यह बताने गया
कि कानून के मुताबिक शुद्ध किए जाने
के दिन कब पूरे होने हैं और कब
उनमें से हरेक के लिए बलिदान चढ़ाए
जाने चाहिए।

27 जब वे सात दिन पूरे होने पर थे,
तो एशिया से आए यहूदियों ने उसे मंदिर
में देखा और भीड़ को भड़काकर उसे
पकड़ लिया **28** और चिल्ला-चिल्ला-
कर कहने लगेः "इसराएल के लोगो,
हमारी मदद करो! यही वह आदमी है जो
हर कहीं, हर किसी को हमारे लोगों और
मूसा के कानून और इस जगह के खिलाफ
शिक्षा देता है। और-तो-और, यह यूना-
नियों को इस मंदिर में लाया है और इसने
इस पवित्र जगह को दूषित कर दिया है।"

प्रेषि 21:21* या, "सच्ची उपासना से मुँह मोड़ लेने।"

29 ऐसा उन्होंने इसलिए कहा क्योंकि
उन्होंने पहले, इफिसुस के त्रुफिमुस को
उसके साथ शहर में देखा था और उन्हें
लगा कि पौलुस उसे मंदिर के अंदर ले
आया था। **30** तब सारे शहर में हो-
हल्ला होने लगा और लोग इकट्ठा होकर
मंदिर की तरफ दौड़ पड़े। उन्होंने पौलुस
को धर-दबोचा और उसे घसीटते हुए
मंदिर के बाहर ले गए। उसी घड़ी दर-
वाज़े बंद कर दिए गए। **31** जब वे
उसे मार डालना चाहते थे, तो रोमी
पलटन के सेनापति* को खबर मिली कि
सारे यरूशलेम में हाहाकार मचा हुआ
है। **32** तब वह फौरन सैनिकों और
सेना-अफसरों को लेकर नीचे उनके पास
सरपट दौड़ा। जब यहूदियों ने सेनापति
और उसके सैनिकों को देखा, तो पौलुस
को पीटना बंद कर दिया।

33 तब सेनापति पास आया और
पौलुस को पकड़कर सैनिकों को हुक्म
दिया कि उसे दो ज़ंजीरों से बाँध दिया
जाए। फिर वह पूछताछ करने लगा कि
वह कौन है और उसने क्या किया है।
34 मगर भीड़ में कोई कुछ चिल्लाता
तो कोई कुछ। जब वह इस हंगामे की
वजह से पौलुस के बारे में ठीक-ठीक
नहीं जान पाया, तो उसने हुक्म दिया
कि पौलुस को सैनिकों के दुर्ग में लाया
जाए। **35** मगर जब पौलुस सीढ़ियों
पर पहुँचा, तो भीड़ ऐसी हिंसक हो उठी
कि सैनिकों को उसे उठाकर ले जाना
पड़ा। **36** क्योंकि लोगों की भीड़ यह
चिल्लाती हुई पीछे-पीछे आ रही थी: "इसे
मार डालो!"*

37 जब सैनिक उसे अपने दुर्ग में
ले जाने पर थे, तो पौलुस ने सेना-
पति से कहा: "क्या मुझे तुझसे कुछ
कहने की इजाज़त है?" उसने कहा: "क्या
तू यूनानी बोल सकता है? **38** क्या तू
वह मिसरी नहीं जिसने कुछ दिन पहले
बगावत की आग भड़कायी थी और चार
हज़ार कटारबंद आदमियों को वीराने में
ले गया था?" **39** तब पौलुस ने कहा:
"मैं दरअसल एक यहूदी हूँ और किलि-
किया के तरसुस शहर का नागरिक हूँ
और वह कोई छोटा शहर नहीं है। इस-
लिए मैं तुझ से बिनती करता हूँ कि मुझे
इन लोगों से बात करने की इजाज़त दे।"
40 उसके इजाज़त देने के बाद, पौलुस
ने सीढ़ियों पर खड़े-खड़े अपने हाथ से
लोगों को शांत होने का इशारा किया।
जब चारों तरफ सन्नाटा छा गया, तो
पौलुस इब्रानी भाषा में उनसे बात करने
लगा और उसने कहा:

22 "भाइयो और पिता-समान
बुज़ुर्गो, अब मैं अपनी सफाई
में जो तुमसे कहता हूँ वह सुनो।"
2 (जब उन्होंने पौलुस को इब्रानी भाषा
में बात करते सुना, तो वे और भी
शांत हो गए और उसने कहा:) **3** "मैं
एक यहूदी हूँ। मेरा जन्म किलिकिया के
तरसुस शहर में हुआ था। मगर मैंने

प्रेषि 21:31* या, "सहसरपति," जिसकी कमान के नीचे एक हज़ार सैनिक होते थे।

प्रेषि 21:36* शाब्दिक, "इसे दूर करो!"

यहाँ यरूशलेम शहर में खुद गमलीएल
से* शिक्षा पायी और हमारे बापदादों के
कानून की एक-एक बारीकी का मुझे
सख्ती से पालन करना सिखाया गया। मैं
परमेश्वर की सेवा में बहुत जोशीला था,
जैसे आज तुम सब हो। **4** और मैं इस
मार्ग के माननेवाले सबको, चाहे वे स्त्री
हों या पुरुष, गिरफ्तार कर कैद में डल-
वाता था। मैंने उन पर बहुत ज़ुल्म ढाए
यहाँ तक कि उन्हें मरवा डालता था।
5 मैं जो कह रहा हूँ इसकी गवाही महा-
याजक और बुज़ुर्गों की पूरी सभा दे
सकती है। मैंने उनसे दमिश्क के यहूदी
भाइयों के नाम चिट्ठियाँ भी माँगी थीं। वहाँ
इस मार्ग के माननेवाले जो थे उनको मैं
गिरफ्तार कर यरूशलेम लाने के लिए
निकल पड़ा था ताकि उन्हें सज़ा दिलाऊँ।

6 मगर जब मैं सफर करते-करते
दमिश्क के पास आ पहुँचा, तो दोपहर
के करीब अचानक आकाश से तेज़ रौशनी
मेरे चारों तरफ चमक उठी, **7** और
मैं ज़मीन पर गिर पड़ा और एक आवाज़
सुनी जो मुझसे कह रही थी, 'शाऊल,
शाऊल, तू क्यों मुझ पर ज़ुल्म कर रहा
है?' **8** मैंने जवाब दिया, 'हे प्रभु तू
कौन है?' और उसने मुझसे कहा, 'मैं
यीशु नासरी हूँ, जिस पर तू ज़ुल्म कर
रहा है।' **9** जो आदमी मेरे साथ थे,
उन्हें रौशनी तो दिखायी दे रही थी मगर
उन्हें मुझसे बात करनेवाली आवाज़ के
शब्द समझ नहीं आ रहे थे। **10** तब
मैंने कहा, 'प्रभु मैं क्या करूँ?' प्रभु ने
मुझसे कहा, 'उठ और दमिश्क में जा और
वहाँ वे सारे काम तुझे बताए जाएँगे जो
तेरे लिए ठहराए गए हैं।' **11** मगर
मैं उस रौशनी की चमक की वजह से कुछ
देख नहीं पा रहा था, इसलिए जो मेरे
साथ थे उन्होंने मेरा हाथ पकड़कर मुझे
दमिश्क पहुँचाया।

12 वहाँ हनन्याह नाम का एक
आदमी था जो परमेश्वर के कानून पर
चलनेवाला एक भक्त इंसान था और वहाँ
रहनेवाले सभी यहूदी उसकी तारीफ किया
करते थे। **13** वह मेरे पास आकर
खड़ा हुआ और मुझसे कहा: 'शाऊल, मेरे
भाई, आँखों की रौशनी पा!' और उसी
घड़ी मैंने मुँह उठाकर उसकी तरफ देखा।
14 उसने कहा: 'हमारे बापदादों के पर-
मेश्वर ने तुझे चुना है कि तू उसकी मरज़ी
को जाने और उस नेक जन को देखे और
उसके मुँह का वचन सुने, **15** क्योंकि
तू उसकी तरफ से सब इंसानों के सामने
उन बातों का गवाह होगा जो तू ने देखी
और सुनी हैं। **16** और अब तू देर
क्यों करता है? उठ और बपतिस्मा ले
और उसका नाम लेकर अपने पापों को
धो ले।'

17 मगर जब मैं यरूशलेम लौटकर
मंदिर में प्रार्थना कर रहा था, तो मैंने एक
दर्शन देखा।* **18** और मैंने उसे देखा
जो मुझसे कह रहा था, 'जल्दी कर और
फौरन यरूशलेम से निकल जा, क्योंकि
वे मेरे बारे में तेरी गवाही नहीं मानेंगे।'
19 तब मैंने कहा, 'प्रभु, वे खुद जानते

प्रेषि 22:3* शाब्दिक, "के पैरों के पास बैठकर।"

प्रेषि 22:17* या, "बेसुधी छा गयी।"

हैं कि मैं तुझ पर विश्वास करनेवालों को
कैद में डालता था और एक-एक सभा-घर
में जाकर उन्हें पीटता था। 20 और
जब तेरे गवाह स्तिफनुस का खून बहाया
जा रहा था, तब मैं भी वहीं पास खड़ा
था और उस हत्या का समर्थन कर रहा
था और उसे मारनेवालों के कपड़ों की
रखवाली कर रहा था।' 21 फिर भी
उसने मुझसे कहा, 'तू उठ और जा,
क्योंकि मैं तुझे दूर-दूर के गैर-यहूदियों के
पास भेजूँगा।'"

22 भीड़ के लोग अब तक पौलुस
की बात सुन रहे थे, मगर फिर ज़ोर-
ज़ोर से चिल्लाते हुए कहने लगे: "ऐसे
आदमी का धरती से नामो-निशान मिटा
दो, क्योंकि यह ज़िंदा रहने के लायक नहीं
है!" 23 और क्योंकि वे ज़ोर-ज़ोर से
चिल्लाकर अपने चोगे यहाँ-वहाँ हवा में
उछाल रहे थे और धूल उड़ा रहे थे,
24 तो सेनापति ने हुक्म दिया कि पौलुस
को सैनिकों के दुर्ग में लाया जाए और
कहा कि उसे कोड़े लगाकर पूछताछ करो
ताकि मैं ठीक-ठीक जान सकूँ कि ये लोग
क्यों इसके खिलाफ इस कदर चिल्ला रहे
हैं। 25 मगर जब सैनिकों ने उसे कोड़े
लगाने के लिए बाँध दिया, तो पौलुस ने
वहाँ खड़े सेना-अफसर से कहा: "क्या यह
कानून के हिसाब से जायज़ है कि तुम
लोग एक ऐसे आदमी को कोड़े लगाओ
जो रोमी नागरिक है और जिसका जुर्म
साबित नहीं हुआ है?" 26 जब सेना-
अफसर ने यह सुना, तो वह सेनापति के
पास गया और उसे यह कहते हुए खबर
दी: "यह तू क्या करना चाहता है?
यह आदमी तो एक रोमी नागरिक है।"
27 तब सेनापति ने पौलुस के पास
आकर उससे पूछा: "मुझे बता, क्या तू
रोमी नागरिक है?" उसने कहा: "हाँ।"
28 सेनापति ने कहा: "मैंने बड़ी रकम
देकर नागरिक होने के ये अधिकार खरीदे
हैं।" पौलुस ने कहा: "मगर मेरे पास तो
ये जन्म से ही हैं।"

29 तब फौरन वे आदमी जो उसे
मार-पीटकर पूछताछ करनेवाले थे, उसके
पास से हट गए और सेनापति यह जान-
कर डर गया कि उसने एक रोमी को बंदी
बनाया है।

30 इसलिए अगले दिन, यह सच्चाई
जानने के इरादे से कि यहूदी क्यों उस
पर इलज़ाम लगा रहे थे, उसने पौलुस के
बंधन खोल दिए और प्रधान याजकों और
पूरी महासभा* को इकट्ठा होने का हुक्म
दिया। और वह पौलुस को नीचे लाया
और उनके बीच उसे खड़ा किया।

23 पौलुस ने महासभा* की
तरफ टकटकी लगाकर देखा
और कहा: "भाइयो, मैंने आज के दिन
तक परमेश्वर के सामने बिलकुल साफ
ज़मीर से ज़िंदगी बितायी है।" 2 इस
पर महायाजक हनन्याह ने, उसके पास
जो खड़े थे, उन्हें पौलुस के मुँह पर
थप्पड़ मारने का हुक्म दिया। 3 तब
पौलुस ने उससे कहा: "अरे कपटी,*

प्रेषि 22:30* मत्ती 26:59 फुटनोट देखें। **23:1*** मत्ती 26:59 फुटनोट देखें। **3*** या, "सफेदी से पोती गयी दीवार।"

तुझ पर परमेश्वर की मार पड़ेगी। तू
कानून के मुताबिक मेरा न्याय करने
बैठा है और साथ ही मुझे मारने का
हुक्म देकर उसी कानून को तोड़ भी
रहा है?” **4** तब वहाँ खड़े लोगों ने
कहाः “क्या तू परमेश्वर के महायाजक
को बुरा कहता है?” **5** तब पौलुस ने
कहाः “भाइयो, मुझे मालूम नहीं था कि
यह महायाजक है। क्योंकि लिखा है, ‘तू
अपने लोगों के अधिकारी के लिए बुरा
बोल न बोलना।’”

6 जब पौलुस ने गौर किया कि उनमें
से एक दल सदूकियों का है और दूसरा
फरीसियों का, तो वह महासभा में बड़ी
ज़ोर से पुकारकर कहने लगाः “भाइयो,
मैं एक फरीसी हूँ, और फरीसियों का बेटा
हूँ। मरे हुओं के फिर से जी उठने की
आशा को लेकर मुझ पर मुकदमा चलाया
जा रहा है।” **7** जब उसने यह कहा,
तो फरीसियों और सदूकियों में झगड़ा
होने लगा और सभा में फूट पड़ गयी।
8 क्योंकि सदूकी कहते हैं कि न तो मरे
हुए जी उठते हैं, न स्वर्गदूत होते हैं, और
न स्वर्ग के प्राणी, मगर फरीसी इन सब
पर विश्वास करते हैं और इनके बारे
में सिखाते हैं। **9** इसलिए वहाँ बड़ी
चीख-पुकार मच गयी और फरीसियों के
दल के कुछ शास्त्री उठे और यह कहकर
ज़बरदस्त तकरार करने लगेः “हमें इस
आदमी में कोई बुराई नज़र नहीं आती;
क्या पता स्वर्ग से किसी ने या किसी
स्वर्गदूत ने उससे बात की हो, —।”
10 जब झगड़ा हद-से-ज़्यादा बढ़ गया,
तो सेनापति ने इस डर से कि कहीं वे
पौलुस की बोटियाँ न नोच लें, सैनिकों के
दल को हुक्म दिया कि वे नीचे जाकर
पौलुस को उनके बीच से जबरन छुड़ाएँ
और सैनिकों के दुर्ग में ले आएँ।

11 मगर उसी रात प्रभु पौलुस के
पास आ खड़ा हुआ और उससे कहाः
“हिम्मत रख! क्योंकि जैसे तू यरूशलेम
में मेरे बारे में अच्छी तरह गवाही देता
रहा है, उसी तरह रोम में भी तुझे गवाही
देनी है।”

12 जब दिन निकला, तो यहूदियों ने
एक साज़िश रची और यह कसम खायी
कि जब तक हम पौलुस को मार न
डालें तब तक अगर हम अन्न या जल
कुछ भी लें, तो हम पर शाप पड़े।
13 चालीस से ज़्यादा आदमियों ने यह
कसम खाकर साज़िश रची थी। **14** वे
प्रधान याजकों और बुज़ुर्गों के पास गए
और उनसे कहाः “हमने कसम खायी है
कि जब तक हम पौलुस को मार नहीं
डालते अगर उससे पहले एक निवाला भी
खाएँ तो हम पर शाप पड़े। **15** इस-
लिए अब तुम लोग महासभा के साथ
मिलकर सेनापति को यह समझाओ कि
पौलुस को नीचे तुम्हारे पास ले आए,
मानो तुम उससे जुड़े मामलों का और भी
सही-सही जायज़ा लेना चाहते हो। मगर
हम उसके यहाँ पहुँचने से पहले ही उसका
काम तमाम करने के लिए तैयार रहेंगे।”

16 लेकिन, पौलुस के भाँजे ने यह
सुन लिया कि वे घात लगाकर बैठेंगे और

उसने सैनिकों के दुर्ग में जाकर पौलुस
को इसकी खबर दी। **17** इस पर
पौलुस ने एक सेना-अफसर को अपने
पास बुलाकर उससे कहाः "इस नौजवान
को सेनापति के पास ले जाओ, क्योंकि
यह उसे एक खबर देना चाहता है।"
18 इसलिए यह अफसर उसे अपने साथ
लेकर सेनापति के पास गया और उससे
कहाः "कैदी पौलुस ने मुझे अपने पास
बुलाया और मुझसे यह गुज़ारिश की कि
इस नौजवान को तेरे पास ले आऊँ,
क्योंकि यह तुझे कुछ बताना चाहता
है।" **19** सेनापति उस नौजवान का
हाथ पकड़कर उसे अलग ले गया और
अकेले में उससे पूछने लगाः "तू मुझे
क्या खबर देना चाहता है?" **20** उसने
कहाः "यहूदियों ने मिलकर यह तय किया
है कि तुझसे कल पौलुस को महासभा के
सामने लाने की बिनती करें मानो वे उसके
बारे में और सही-सही पता करना चाहते
हैं। **21** चाहे कुछ भी हो जाए, तू
उनकी बातों में न आना क्योंकि उनमें से
चालीस से ज़्यादा आदमी पौलुस के लिए
घात लगाए बैठे हैं और उन्होंने यह कसम
खायी है कि जब तक वे पौलुस का खात्मा
न कर दें तब तक अगर अन्न या जल
कुछ भी लें, तो उन पर शाप पड़े। और
अब वे तैयार हैं और तुझसे इजाज़त पाने
का इंतज़ार कर रहे हैं।" **22** इसलिए
सेनापति ने उस नौजवान को यह हुक्म
देकर जाने दियाः "किसी के सामने बड़-
बड़ा मत देना कि तू ने मुझे ये बातें
बतायी हैं।"

23 उसने दो सेना-अफसरों को
बुलाया और उनसे कहाः "दो सौ सैनिक,
सत्तर घुड़सवार और दो सौ भाला
चलानेवाले तैयार रखो कि वे रात के
तीसरे घंटे* कैसरिया के लिए कूच करें।
24 और पौलुस की सवारी के लिए घोड़े
तैयार रखो कि वे उसे ले जाएँ और सही-
सलामत राज्यपाल फेलिक्स तक पहुँचा
दें।" **25** और उसने चिट्ठी लिखी
जिसमें ये बातें थीं:

26 "महाप्रतापी राज्यपाल फेलिक्स
को क्लौदियुस लूसियास का नमस्कार!
27 इस आदमी को यहूदियों ने पकड़
लिया था और वे इसे मारने पर थे, मगर
मैंने अपने सैनिकों के दस्ते के साथ
अचानक वहाँ पहुँचकर इसे बचा लिया,
क्योंकि मुझे पता चला था कि यह एक
रोमी नागरिक है। **28** मैं यह जानना
चाहता था कि वे किस वजह से इस पर
इलज़ाम लगा रहे हैं, इसलिए मैं इसे
उनकी महासभा में ले गया। **29** मैंने
पाया कि उनके कानून के सवालों को
लेकर इस पर इलज़ाम लगाया गया था,
मगर इस पर ऐसा कोई भी इलज़ाम नहीं
था जिससे यह मौत की सज़ा पाने या कैद
किए जाने के लायक ठहरे। **30** मगर
मुझे खबर मिली कि इसके खिलाफ एक
साज़िश रची गयी है, इसलिए मैं बिना
देर किए इसे तेरे पास भेज रहा हूँ और
मैंने मुद्दइयों को भी हुक्म दिया है कि
तेरे सामने इसके खिलाफ अपने इलज़ाम
बताएँ।"

प्रेषि 23:23* मत्ती 20:3 फुटनोट देखें।

31 इसलिए सैनिकों को जैसा
हुक्म मिला था, वे पौलुस को रातों-
रात अंतिपत्रिस शहर ले आए।
32 अगले दिन उन्होंने घुड़सवारों को
उसके साथ आगे जाने दिया और वे खुद
सैनिकों के दुर्ग लौट आए। **33** घुड़-
सवार कैसरिया में दाखिल हुए और
उन्होंने राज्यपाल को चिट्ठी दी और
पौलुस को भी उसके सामने पेश किया।
34 राज्यपाल ने चिट्ठी पढ़ी और पूछा कि
पौलुस किस प्रांत का है और पता किया
कि वह किलिकिया से है। **35** उसने
पौलुस से कहा, “जब तेरे मुद्दई भी
यहाँ आएँगे, तो मैं तुझे अपनी सफाई में
बोलने का पूरा-पूरा मौका दूँगा।” और
उसने हुक्म दिया कि उसे हेरोदेस के महल
में पहरे में रखा जाए।

24 पाँच दिन बाद महायाजक
हनन्याह कुछ बुज़ुर्गों और तिर-
तुल्लुस नाम के किसी वकील के साथ वहाँ
आया और उन्होंने राज्यपाल के सामने
पौलुस के खिलाफ मुकदमा पेश किया।
2 जब उन्होंने तिरतुल्लुस को बोलने का
इशारा किया, तो उसने यह कहते हुए
पौलुस पर इलज़ाम लगाना शुरू किया:

“हे महाप्रतापी फेलिक्स, तेरी बदौलत
हम बड़े अमन-चैन से हैं और तेरी दूरं-
देशी की वजह से इस जाति में सुधार हो
रहे हैं। **3** इनका फायदा हमें हर वक्त
और हर जगह हो रहा है और इसके लिए
हम तेरे बहुत एहसानमंद हैं। **4** मगर
मैं तुझे और तकलीफ नहीं देना चाहता,
इसलिए मैं तुझसे मिन्नत करता हूँ कि
अगर तू कुछ देर के लिए हमारी सुने तो
तेरी बड़ी मेहरबानी होगी। **5** हमने
पाया है कि यह आदमी फसाद की जड़ है,
और पूरी दुनिया में यहूदियों को बगावत
के लिए भड़काता है और नासरियों के गुट
का एक मुखिया है। **6** इसने मंदिर को
अपवित्र करने की भी कोशिश की है
और हमने इसे पकड़ा था। **7*** ——
8 जिन बातों का हम इस पर इलज़ाम
लगा रहे हैं, उन सबके बारे में तू खुद
इससे पूछताछ कर पता लगा सकता है।”

9 इस पर वे यहूदी भी उसके
खिलाफ बोलने लगे और दावा करने
लगे कि ये बातें सही हैं। **10** और
जब राज्यपाल ने सिर हिलाकर पौलुस
को बोलने का इशारा किया, तो उसने
जवाब दिया:

“यह जानते हुए कि तू कई सालों से
इस जाति का न्यायी रहा है, मैं बड़ी
खुशी से अपनी सफाई पेश कर रहा हूँ,
11 जैसा कि तू खुद भी इस बारे में
मालूम कर सकता है कि मुझे उपासना के
लिए यरूशलेम को गए बारह दिन से
ज़्यादा नहीं हुए **12** और यहूदियों ने
मुझे न तो मंदिर में किसी से बहस करते
पाया, न ही सभा-घरों में या शहर में किसी
भी जगह भीड़ को इकट्ठा करते पाया।
13 न ही वे उन बातों के सच होने का
सबूत दे सकते हैं जिनका ये मुझ पर इस
वक्त इलज़ाम लगा रहे हैं। **14** मगर
मैं तेरे सामने यह स्वीकार करता हूँ कि
जिस मार्ग को ये एक “गुट” कह रहे

प्रेषि 24:7* मत्ती 17:21 फुटनोट देखें।

हैं, उसी के मुताबिक मैं अपने बाप-
दादों के परमेश्वर की पवित्र सेवा कर
रहा हूँ, क्योंकि मैं मूसा के कानून और
भविष्यवक्ताओं की लिखी सारी बातों पर
विश्वास करता हूँ। **15** और मैं पर-
मेश्वर से आशा रखता हूँ, जैसे ये लोग
खुद भी आशा रखते हैं कि अच्छे और
बुरे,* दोनों तरह के लोग मरे हुओं में से
जी उठेंगे।# **16** बेशक मैं इस मामले
में अपना ज़मीर साफ रखने के लिए लगा-
तार कड़ी मेहनत करता हूँ कि परमेश्वर
और इंसानों के खिलाफ कोई अपराध न
करूँ। **17** इसलिए कई सालों बाद मैं
अपनी जाति के लिए दान देने और
बलिदान चढ़ाने आया था। **18** जब मैं
ये काम कर रहा था, तो उन्होंने मुझे
मंदिर में मूसा के कानून के मुताबिक शुद्ध
दशा में पाया, मगर न तो मेरे साथ
कोई भीड़ थी, न ही मैं कोई दंगा कर
रहा था। मगर वहाँ एशिया ज़िले के
कुछ यहूदी मौजूद थे। **19** अगर उन्हें
मेरे खिलाफ कुछ कहना था तो उन्हें
यहाँ तेरे सामने हाज़िर होना चाहिए था
और मुझ पर इलज़ाम लगाने चाहिए
थे। **20** या फिर, ये लोग ही बताएँ
कि जब मैं महासभा* के सामने खड़ा
था तो इन्होंने मुझमें क्या बुरा पाया,
21 सिर्फ इस एक बात को छोड़कर जो
मैंने इनके बीच खड़े होकर बुलंद आवाज़
में कही थी, 'मरे हुओं के जी उठने
को लेकर आज तुम्हारे सामने मुझ पर
मुकदमा चलाया जा रहा है!' "

22 मगर फेलिक्स जो प्रभु के मार्ग
के बारे में बहुत अच्छी तरह जानता था,
उसने यह कहकर उन आदमियों को
टाल दियाः "जब सेनापति लूसियास यहाँ
आएगा तब मैं तुम्हारे इन मामलों का
फैसला करूँगा।" **23** तब उसने सेना-
अफसर को हुक्म दिया कि इस आदमी
को हिरासत में रखा जाए और पहरे में
कुछ रिआयत दी जाए और उसके लोगों
में से जो कोई उसकी सेवा करना चाहता
है, उनमें से किसी को भी न रोका जाए।

24 कुछ दिन बाद, फेलिक्स अपनी
पत्नी द्रुसिल्ला को, जो यहूदिन थी,
साथ लेकर आया और उसने पौलुस
को बुलवाकर उससे मसीह यीशु में
विश्वास करने के बारे में सुना।
25 लेकिन जब पौलुस नेकी और संयम
और आनेवाले न्याय के बारे में बात
करने लगा, तो फेलिक्स घबरा उठा और
कहाः "फिलहाल तू जा, मगर जब मुझे
सही मौका मिलेगा तब मैं दोबारा तुझे
बुला लूँगा।" **26** लेकिन, साथ ही वह
पौलुस से रिश्वत पाने की भी उम्मीद
लगाए हुए था। इसलिए वह उसे और
भी ज़्यादा बुला-बुलाकर उससे बातचीत
किया करता था। **27** मगर जब दो
साल बीत गए, तो फेलिक्स की जगह
पुरकियुस फेस्तुस ने ले ली; और क्योंकि
फेलिक्स यहूदियों को खुश करना चाहता
था, इसलिए वह पौलुस को कैद में ही
छोड़ गया।

प्रेषि 24:15* या, "धर्मी और अधर्मी।" **15#** या, "पुनरुत्थान होनेवाला है।" **20*** मत्ती 26:59 फुटनोट देखें।

25 प्रांत* की सत्ता सँभालने के तीन
दिन बाद, फेस्तुस कैसरिया से
यरूशलेम गया। **2** तब प्रधान याजकों
और यहूदियों के नामी लोगों ने उसके
सामने पौलुस के खिलाफ अपने इलज़ाम
पेश किए। और वे उससे **3** बिनती
करने लगे कि फेस्तुस, उस आदमी यानी
पौलुस के खिलाफ उनकी तरफदारी करे
और उसे यरूशलेम आने के लिए
बुलवा भेजे, क्योंकि यहूदी रास्ते में ही
पौलुस को मार डालने के लिए घात
लगाए बैठे थे। **4** मगर फेस्तुस ने
जवाब दिया कि पौलुस को कैसरिया
में ही हिरासत में रखा जाना है और
मैं खुद भी बहुत जल्द वहाँ जानेवाला हूँ।
5 उसने कहा: "इसलिए आप लोगों के
जो बड़े अधिकारी हैं वे मेरे साथ चलें
और इस आदमी ने अगर कुछ बुरा किया
है, तो उस पर इलज़ाम लगाएँ।"

6 जब फेस्तुस उनके बीच आठ-दस
दिन बिता चुका, तो वह कैसरिया आया
और अगले दिन न्याय-आसन पर बैठा।
उसने हुक्म दिया कि पौलुस को लाया
जाए। **7** जब वह आया, तो जो यहूदी
यरूशलेम से आए थे वे उसे घेरकर खड़े
हो गए और उस पर कई गंभीर इलज़ाम
लगाने लगे जिनका वे कोई सबूत नहीं दे
सकते थे।

8 मगर पौलुस ने अपने बचाव में
कहा: "मैंने किसी के खिलाफ कोई पाप
नहीं किया है, न यहूदियों के कानून के
खिलाफ, न मंदिर के खिलाफ और न
ही सम्राट के खिलाफ।" **9** फेस्तुस ने
यहूदियों को खुश करने के इरादे से
पौलुस को जवाब दिया: "तो क्या तू यरू-
शलेम जाना चाहता है ताकि वहाँ मेरे
सामने इन मामलों के बारे में तेरा न्याय
किया जाए?" **10** मगर पौलुस ने
कहा: "मैं सम्राट के न्याय-आसन के
सामने खड़ा हूँ, मेरा न्याय यहीं किया
जाना चाहिए। मैंने यहूदियों के साथ
कुछ बुरा नहीं किया है, जैसा कि तुझे
खुद अच्छी तरह मालूम हो रहा है।
11 अगर मैं वाकई अपराधी हूँ और मैंने
मौत की सज़ा पाने लायक कोई अपराध
किया है, तो मैं मरने से पीछे नहीं हटता;
लेकिन दूसरी तरफ, अगर उन बातों में
से एक भी सच नहीं है जिनका ये लोग
मुझ पर इलज़ाम लगा रहे हैं, तो कोई
भी आदमी उन्हें खुश करने के इरादे से
मुझे उनके हवाले नहीं सौंप सकता। मैं
सम्राट से फरियाद करता हूँ!" **12** तब
फेस्तुस ने अपने सलाहकारों की सभा के
साथ मशविरा करने के बाद उसे जवाब
दिया: "तू ने सम्राट से फरियाद की है,
तू सम्राट के पास जाएगा।"

13 कुछ दिन बीतने के बाद, राजा
अग्रिप्पा* और बिरनीके, फेस्तुस का
अभिवादन करने के लिए उससे मिलने
कैसरिया आए। **14** उनके वहाँ कई
दिन रहने के दौरान, फेस्तुस ने पौलुस का
मामला राजा के सामने रखा और कहा:

प्रेषि 25:1* यानी, यहूदिया का प्रांत। राज्यपाल का निवास-स्थान कैसरिया में हुआ करता था।

प्रेषि 25:13* यानी, हेरोदेस अग्रिप्पा द्वितीय।

“एक आदमी है जिसे फेलिक्स कैद में
छोड़ गया है, **15** और जब मैं यरू-
शलेम में था तो प्रधान याजकों और यहू-
दियों के बाकी बुज़ुर्गों ने इसके बारे में
मुझे जानकारी दी, और इसे सज़ा सुनाने
के लिए मुझसे बिनती की। **16** मगर
मैंने उन्हें यह जवाब दिया कि यह रोमी
तरीका नहीं कि किसी मुलज़िम को उसके
मुद्दइयों के सामने लाकर अपने बचाव
में बोलने का मौका दिए बगैर उनके
हवाले किया जाए ताकि वे खुश हों।
17 इसलिए जब वे यहाँ इकट्ठा हुए,
तो मैं बिना देर किए अगले ही दिन
न्याय-आसन पर बैठा और उस आदमी
को लाने का हुक्म दिया। **18** जब
मुद्दई खड़े हुए तो उन्होंने उस पर ऐसे
किसी भी बुरे काम का इलज़ाम नहीं
लगाया जिसकी मैंने उम्मीद की थी।
19 उनका झगड़ा बस अपने ईश्वर की
उपासना और किसी यीशु को लेकर था,
जो मर चुका है मगर जिसके बारे में
पौलुस दावा करता रहा कि वह ज़िंदा
है। **20** क्योंकि मुझे यह सूझ नहीं
रहा था कि इस मामले का क्या करूँ,
इसलिए मैंने उससे पूछा कि क्या वह
यरूशलेम जाना चाहेगा ताकि वहाँ इन
मामलों को लेकर उसका न्याय किया
जाए। **21** मगर जब पौलुस ने फरि-
याद की कि उसका फैसला महामहिम*
के हाथों हो और तब तक उसे वहीं पहरे
में रखा जाए, तो मैंने हुक्म दिया कि
जब तक मैं उसे सम्राट के पास न
भेजूँ तब तक उसे वहीं रखा जाए।”
22 इस पर अग्रिप्पा ने फेस्तुस से
कहाः “मैं खुद इस आदमी की बात
सुनना चाहूँगा।” फेस्तुस ने कहाः “तू
कल उसे सुन सकेगा।” **23** इसलिए
अगले दिन, अग्रिप्पा और बिरनीके बड़ी
धूमधाम के साथ दरबार में आए और
उनके साथ सेनापति और शहर के जाने-
माने लोग भी वहाँ आए। और जब
फेस्तुस ने हुक्म दिया, तो पौलुस को वहाँ
लाया गया। **24** और फेस्तुस ने कहाः
“राजा अग्रिप्पा और यहाँ मौजूद सभी
सज्जनो, तुम उस आदमी को देख रहे हो
जिसके खिलाफ सारे यहूदियों ने यरूश-
लेम में और यहाँ भी चिल्ला-चिल्लाकर
मुझसे बिनती की है कि यह आदमी ज़िंदा
रहने के लायक नहीं है। **25** मगर मैंने
जान लिया कि इस आदमी ने ऐसा कुछ
नहीं किया है कि इसे मौत की सज़ा दी
जाए। इसलिए जब इस आदमी ने खुद
महामहिम से फरियाद की, तो मैंने इसे
भेजने का फैसला किया। **26** मगर
इसके बारे में मेरे पास अपने स्वामी को
लिखने लायक कोई पुख्ता बात नहीं है।
इसलिए मैं इस आदमी को तुम सबके
सामने, खासकर राजा अग्रिप्पा तेरे सामने
लाया हूँ, ताकि अदालती जाँच करने के
बाद, मुझे इसके बारे में लिखने के लिए
कुछ मिल सके। **27** क्योंकि मुझे यह
बड़ा अजीब लगता है कि मैं एक कैदी
को भेजूँ तो सही, मगर उस पर लगे
इलज़ाम न बताऊँ।”

प्रेषि 25:21* यह कैसर नीरो की उपाधि थी, जो ऑक्टेवियन के बाद चौथा सम्राट था और जिसने पहली बार यह उपाधि पायी थी।

26 फिर अग्रिप्पा ने पौलुस से कहा:
“तुझे अपने पक्ष में सफाई देने
की इजाज़त है।” तब पौलुस ने अपना
हाथ उठाया और अपने बचाव में यह
कहने लगा:

2 “हे राजा अग्रिप्पा, यहूदियों ने मुझ
पर जिन बातों का इलज़ाम लगाया है,
उन सबके बारे में आज तेरे सामने अपना
बचाव करने में मुझे बड़ी खुशी हो रही
है, **3** खासकर इसलिए कि तू यहूदियों
के सभी रिवाज़ों, साथ ही विवादों का बड़ा
ज्ञानी है। इसलिए मैं तुझसे बिनती करता
हूँ कि तू सब्र के साथ मेरी सुन ले।

4 वाकई, मैंने लड़कपन से अपने
जाति-भाइयों के बीच और यरूशलेम में
रहते वक्त जैसी ज़िंदगी बितायी है, उसके
बारे में उन सभी यहूदियों को **5** मालूम
है जो मुझे पहले से जानते हैं, और अगर
वे चाहें तो इस बात की गवाही दे सकते
हैं कि मैं अपने धर्म के सबसे कट्टर पंथ
को मानते हुए, एक फरीसी की ज़िंदगी
जीता था। **6** मगर अब उस आशा की
वजह से जिसका वादा परमेश्वर ने हमारे
बापदादों से किया था, मुझे यहाँ खड़ा कर
मुझ पर मुकद्दमा चलाया जा रहा है।
7 जबकि हमारे बारह गोत्र इस वादे के
पूरा होने की आशा लगाए हुए हैं, इस-
लिए वे रात-दिन बड़े जतन से परमेश्वर
की पवित्र सेवा करते हैं। हे राजा, इसी
आशा के बारे में यहूदियों ने मुझ पर इल-
ज़ाम लगाए हैं।

8 परमेश्वर मरे हुओं को ज़िंदा
करता है, इस बात को तुम लोग विश्वास
के लायक क्यों नहीं समझते? **9** मैं भी
वाकई ऐसा इंसान था, जो सोचा करता था
कि यीशु नासरी के नाम का कड़े-से-कड़ा
विरोध करना मेरा फ़र्ज़ है। **10** और
यरूशलेम में मैंने ऐसा ही किया। मैंने
प्रधान याजकों से अधिकार पाकर बहुत-
से पवित्र जनों को कैदखानों में बंद
किया और जब उन्हें मौत के घाट उतारा
जाना होता, तो मैं उनके खिलाफ अपना
समर्थन देता था। **11** और सभी सभा-
घरों में उन्हें बार-बार सज़ा दिलाकर मैं
उन्हें मजबूर करता था कि वे अपने
विश्वास की निंदा करें और उसे त्याग
दें। मैं उनके खिलाफ गुस्से से इस कदर
पागल हो गया था कि दूसरे शहरों में भी
जाकर उन पर ज़ुल्म ढाने लगा।

12 जब मैं इसी काम में लगा हुआ
था और प्रधान याजकों से पूरा अधिकार
और आज्ञा पाकर दमिश्क जा रहा था,
13 तो हे राजा, दोपहर के वक्त मैंने
रास्ते में सूरज के तेज से कहीं बढ़कर
तेज़ रौशनी को आकाश से चमकते देखा,
जो मेरे और मेरे साथ चलनेवालों के चारों
तरफ चमक उठी। **14** और जब हम
सब ज़मीन पर गिर पड़े, तो मैंने इब्रानी
भाषा में एक आवाज़ को मुझसे यह कहते
सुना, ‘शाऊल, शाऊल, तू क्यों मुझ पर
ज़ुल्म कर रहा है? इस तरह विरोध कर*
तू अपने लिए मुश्किल पैदा कर रहा है।’
15 मगर मैंने कहा, ‘हे प्रभु, तू कौन
है?’ और प्रभु ने कहा, ‘मैं यीशु हूँ, जिस

प्रेषि 26:14* शाब्दिक, “अंकुश की नोंक पर लात मारकर।”

पर तू ज़ुल्म कर रहा है। **16** मगर
अब उठ और अपने पाँवों के बल खड़ा
हो। क्योंकि मैंने इसीलिए तुझे दर्शन दिया
है कि तुझे एक सेवक और उन बातों
का गवाह ठहराऊँ जो तू ने देखी हैं
और जो मैं तुझे अपने बारे में आगे
भी दिखाऊँगा। **17** और मैं इस जाति
और दूसरी जातियों के बीच तेरी हिफाज़त
करूँगा, जिनके पास मैं तुझे भेज रहा हूँ।
18 जिससे कि तू उनकी आँखें खोले
और उन्हें अंधकार से फेरकर उजाले में,
और शैतान के अधिकार से फेरकर पर-
मेश्वर के अधिकार में ले आए, ताकि वे
मुझ पर विश्वास करने की वजह से
पापों की माफी पा सकें और उनके
साथ विरासत पा सकें जो पवित्र ठहराए
गए हैं।'

19 इसलिए हे राजा अग्रिप्पा, मैंने
उस स्वर्गीय दर्शन की आज्ञा न टाली,
20 मगर पहले दमिश्क के लोगों और
फिर यरूशलेम के रहनेवालों और पूरे
यहूदिया देश में और गैर-यहूदियों को
यह संदेश देता रहा कि उन्हें पश्चा-
ताप करना चाहिए और पश्चाताप के
योग्य काम करते हुए परमेश्वर की तरफ
फिरना चाहिए। **21** इन्हीं बातों की
वजह से यहूदियों ने मुझे मंदिर में पकड़
लिया और मुझे मार डालने की कोशिश
की। **22** मगर उस मदद की वजह से
जो मुझे परमेश्वर से मिली है, मैं आज
के दिन तक छोटे-बड़े सभी को गवाही
देता रहा हूँ। मगर उन बातों के सिवा
और कुछ नहीं कहता जो भविष्यवक्ताओं
और मूसा ने भी कही थीं कि होनेवाली हैं।
23 यानी ये बातें कि मसीह को दुःख
उठाना पड़ेगा और मरे हुओं में से जी
उठाए जानेवालों में वही पहला होगा और
इन लोगों और गैर-यहूदियों को प्रचार
करेगा और रौशनी दिखाएगा।"

24 जब पौलुस अपने बचाव में ये
बातें बोल ही रहा था, तो फेस्तुस ने
ऊँची आवाज़ में कहा: "अरे पौलुस,
तेरा दिमाग खराब हो गया है, बहुत ज्ञान
ने तुझे पागल कर दिया है!" **25** मगर
पौलुस ने कहा: "हे महाप्रतापी फेस्तुस, मैं
पागल नहीं हूँ, मगर मैं सच्चाई की
और स्वस्थ मन की बातें कहता हूँ।
26 असल में मैं जिस राजा के सामने
निडर होकर बात कर रहा हूँ, वह खुद
भी इन बातों के बारे में अच्छी तरह
जानता है; क्योंकि मुझे पूरा यकीन है कि
इनमें से एक भी बात उससे छिपी नहीं
है क्योंकि ये घटनाएँ किसी कोने में तो
नहीं घटी हैं। **27** हे राजा अग्रिप्पा,
क्या तू भविष्यवक्ताओं की बातों का
विश्वास करता है? मैं जानता हूँ
कि तू विश्वास करता है।" **28** मगर
अग्रिप्पा ने पौलुस से कहा: "थोड़ी ही देर
में तू मुझे मसीही बनने के लिए कायल
कर देगा।" **29** इस पर पौलुस ने
कहा: "परमेश्वर से मेरी यही कामना है
कि चाहे थोड़ी देर में या ज़्यादा में, सिर्फ
तू ही नहीं बल्कि जितने लोग आज मेरी
सुन रहे हैं, सभी मेरी तरह बन जाएँ,
बस इस तरह ज़ंजीरों में न हों।"

30 तब राजा अग्रिप्पा उठा और
उसके साथ राज्यपाल और बिरनीके और

उनके साथ बैठे आदमी उठ खड़े हुए।
31 मगर जाते-जाते वे एक-दूसरे से
कहने लगेः “यह आदमी ऐसा कुछ नहीं
कर रहा है कि यह मौत की सज़ा पाए
या कैद में डाला जाए।” **32** इतना ही
नहीं, अग्रिप्पा ने फेस्तुस से कहाः “अगर
इस आदमी ने सम्राट से फरियाद न की
होती, तो इसे रिहा किया जा सकता था।”

27 जैसा हमारे लिए तय किया गया
था कि हम जहाज़ से इटली
जाएँ, तो उन्होंने पौलुस और दूसरे कुछ
कैदियों को औगूस्तुस की टुकड़ी के सेना-
अफसर, यूलियुस के हाथ सौंप दिया।
2 फिर हम अद्रमुत्तियुम के एक जहाज़
पर चढ़े जो एशिया ज़िले की किनारे की
जगहों पर जानेवाला था और वहाँ से
रवाना हुए। हमारे साथ अरिस्तरखुस नाम
का एक मकिदूनी था जो थिस्सलुनीके
का रहनेवाला था। **3** अगले दिन
हमने सीदोन में लंगर डाला और यूलि-
युस ने पौलुस को इंसानियत के नाते बड़ी
दया दिखाते हुए उसे अपने दोस्तों के यहाँ
जाकर उनसे सेवा-सत्कार पाने की इजा-
ज़त दी।

4 वहाँ से लंगर उठाकर हम रवाना
हुए और कुप्रुस की आड़ में होकर चले
क्योंकि हवा का रुख हमारे खिलाफ था;
5 हम खुले समुद्र में किलिकिया और
पमफूलिया के पास से होते हुए लूसिया
के मूरा बंदरगाह में उतरे। **6** मगर
वहाँ सेना-अफसर ने सिकंदरिया का एक
जहाज़ देखा जो इटली जानेवाला था
और उसने हमें उस पर चढ़ा दिया।
7 इसके बाद, कई दिनों तक धीमी
रफ्तार से बढ़ते हुए हम बड़ी मुश्किल से
कनिदुस द्वीप पहुँचे, और हवा हमें सीधे
आगे बढ़ने नहीं दे रही थी, इसलिए हम
सलमोने के सामने से होकर क्रेते की आड़
में चले। **8** और किनारे-किनारे बड़ी
मुश्किल से खेते हुए हम उस जगह पहुँचे
जो बढ़िया बंदरगाह कहलाती है, जहाँ से
लसिया शहर पास था।

9 जब बहुत दिन हो गए यहाँ तक
कि प्रायश्चित दिन* का उपवास भी बीत
गया और समुद्र में यात्रा करना अब
खतरे से खाली न था, तो पौलुस ने
एक सलाह दी **10** और उनसे कहाः
“सज्जनो, मुझे ऐसा लगता है कि आगे
जहाज़ खेते रहने से न सिर्फ माल और
जहाज़ का भारी नुकसान होगा, बल्कि हमें
अपनी जान से भी हाथ धोना पड़ेगा।”
11 मगर सेना-अफसर ने पौलुस की
बातों पर ध्यान देने के बजाय जहाज़ के
कप्तान और मालिक की बात मानी।
12 वह बंदरगाह, सर्दियाँ बिताने के लिए
अच्छा नहीं था, इसलिए ज़्यादातर लोगों
ने यह राय दी कि वहाँ से आगे रवाना
हुआ जाए और हम किसी तरह फीनिक्स
पहुँचकर वहाँ सर्दियाँ बिताएँ। फीनिक्स,
क्रेते का एक बंदरगाह है जो उत्तर-पूर्व
और दक्षिण-पूर्व की तरफ खुलता है।

13 जब दक्षिणी हवा मंद-मंद बह
रही थी, तो उन्हें लगा कि जैसा
उन्होंने सोचा था वैसा ही हो जाएगा, और
उन्होंने लंगर उठाया और क्रेते के किनारे-
किनारे होकर जहाज़ आगे बढ़ाने लगे।

प्रेषि 27:9* या, “पतझड़ के मौसम का उपवास।”

14 मगर ज़्यादा वक्त नहीं बीता था कि
उत्तर-पूर्व से क्रेते द्वीप की तरफ एक बड़ी
आँधी उठी जो यूरकुलीन कहलाती है और
इसने द्वीप को अपनी चपेट में ले लिया।
15 और जहाज़ इस तूफान में घिर गया
और आँधी को चीरकर आगे न बढ़
सका, इसलिए हमने लाचार होकर उसे
हवा के रुख के साथ-साथ बहने दिया।
16 तब हम बहते-बहते कौदा नाम के
एक छोटे द्वीप की आड़ में आ गए, फिर
भी हम बहुत मुश्किल से जहाज़ के पिछले
हिस्से में लगी डोंगी को काबू में कर सके।
17 मगर डोंगी को ऊपर खींचने के बाद,
नाविक जहाज़ को ऊपर से नीचे तक
रस्सों से लपेटकर बाँधने लगे और उथले
पानी के नीचे रेत के दलदल* में धँस
जाने के डर से उन्होंने पाल उतार दिया
और जहाज़ को बहने दिया। **18** फिर
भी जब आँधी की वजह से जहाज़ ज़बर-
दस्त हिचकोले खा रहा था, तो अगले
दिन नाविक जहाज़ को हल्का करने
के लिए समुद्र में माल फेंकने लगे।
19 तीसरे दिन, उन्होंने अपने ही हाथों से
पाल चढ़ाने के रस्से समुद्र में फेंक दिए।

20 जब कई दिनों तक न सूरज
निकला, न ही तारे दिखायी दिए, न ही
इस ज़बरदस्त आँधी के थपेड़े थम रहे थे,
तब हमारे बचने की सारी उम्मीदें खत्म
होने लगीं। **21** और जब बहुत दिनों
से किसी ने कुछ नहीं खाया, तब पौलुस
ने उनके बीच खड़े होकर कहा: "सज्जनो,
तुम्हें मेरी बात मान लेनी थी और क्रेते
से आगे सफर नहीं करना चाहिए था, तब
तुम्हें यह तकलीफ और नुकसान नहीं
झेलना पड़ता। **22** पर अब भी मैं
तुम्हें यह सलाह देता हूँ कि हिम्मत रखो,
क्योंकि तुममें से किसी की जान का
नुकसान नहीं होगा, सिवा जहाज़ के।
23 क्योंकि मैं जिस परमेश्वर का हूँ
और जिसकी मैं पवित्र सेवा करता हूँ,
उसका एक दूत रात को मेरे पास आया
24 और उसने मुझसे कहा, 'हे पौलुस,
मत डर। तू सम्राट के सामने ज़रूर खड़ा
होगा और देख! जो लोग तेरे साथ जहाज़
में सफर कर रहे हैं, परमेश्वर ने तेरी
खातिर दया दिखाकर उन सबकी जान भी
बख्श दी है।' **25** इसलिए हे लोगो,
हिम्मत रखो; क्योंकि मुझे परमेश्वर पर
विश्वास है कि जैसा मुझे बताया गया है
बिलकुल वैसा ही होगा। **26** मगर,
हमारा जहाज़ एक द्वीप के किनारे जा
टूटेगा।"

27 जब चौदहवीं रात हुई और हम
अद्रिया सागर में हिचकोले खा रहे थे,
तो आधी रात को नाविकों को लगने
लगा कि वे किसी तट के पास पहुँच
गए हैं। **28** और जब उन्होंने पानी
की गहराई जानने के लिए थाह नापी,
तो पाया कि छत्तीस मीटर गहरा है
और थोड़ी दूर जाकर फिर से नापने
पर पाया कि सत्ताइस मीटर गहरा है।
29 और इस डर से कि हम कहीं चट्टानों
से न जा टकराएँ, उन्होंने जहाज़ के
पिछले हिस्से से चार लंगर डाले और
दिन निकलने का इंतज़ार करने लगे।

प्रेषि 27:17* शाब्दिक, "सुरतिस।" चोरबालू की दो बड़ी खाड़ियाँ, जो उत्तरी अफ्रीका के लिबिया के तट के पास थीं।

30 मगर जब नाविकों ने जहाज़ से भाग
निकलने के लिए, आगे के हिस्से से लंगर
डालने के बहाने डोंगी को नीचे समुद्र में
उतारा, **31** तो पौलुस ने सेना-अफसर
और सैनिकों से कहा: "अगर ये आदमी
जहाज़ में न रहे, तो तुम भी बच नहीं
पाओगे।" **32** तब सैनिकों ने डोंगी के
रस्से काट दिए और उसे समुद्र में गिर
जाने दिया।

33 जब दिन निकलने पर था, तो
पौलुस यह कहते हुए सबको समझा-बुझा-
कर खाने के लिए मनाने लगा: "आज
चौदहवाँ दिन हो गया है और तुम इंत-
ज़ार करते-करते भूखे रहे और तुमने कुछ
नहीं खाया है। **34** इसलिए मेरी मानो
और कुछ खा लो, क्योंकि मैं यह बात
तुम्हारी ही सलामती के लिए कह रहा हूँ;
क्योंकि तुम में से किसी का एक बाल
भी बाँका न होगा।" **35** यह कहने
के बाद उसने सबके देखते एक रोटी
ली और परमेश्वर का धन्यवाद कर
तोड़ी और खाने लगा। **36** तब उन
सभी के चेहरे खिल उठे और वे खुद भी
खाने लगे। **37** उस जहाज़ में हम
सबको मिलाकर दो सौ छिहत्तर लोग थे।
38 जब उन्होंने भर-पेट खाया तो वे
जहाज़ से गेहूँ समुद्र में फेंककर उसे हल्का
करने लगे।

39 आखिरकार जब दिन निकला,
तो वे उस जगह को पहचान न सके मगर
उन्हें एक खाड़ी और उसका किनारा नज़र
आया। वे हर हाल में उस किनारे पर
जहाज़ को लगाना चाहते थे। **40** इस-
लिए उन्होंने लंगर के रस्से काट दिए और
उन्हें समुद्र में गिरा दिया, साथ ही जहाज़
को खेनेवाले पतवारों के बंधन ढीले किए
और आगे का पाल चढ़ाकर हवा के
रुख में किनारे की तरफ बढ़ चले।
41 जब उनका जहाज़ रेत के ऐसे ढेर
पर जा टिका जो दो समुद्रों की लहरों के
टकराने से बना था, तो जहाज़ रेत में
धँस गया और उसका अगला हिस्सा रेत
में गड़ गया और हिल न सका, जबकि
जहाज़ का पिछला हिस्सा लहरों के ज़बर-
दस्त थपेड़ों से चकनाचूर होने लगा।
42 इस पर सैनिकों ने तय कर लिया
कि वे कैदियों को मार डालें ताकि कोई
भी तैरकर भाग न जाए। **43** लेकिन
सेना-अफसर ने पौलुस को बचाने के इरादे
से उन्हें ऐसा करने से रोका। और हुक्म
दिया कि जो कोई तैरकर किनारे पर पहुँच
सकता है, वह समुद्र में कूद जाए और
पहले किनारे पर जा पहुँचे, **44** और
बाकी लोग जहाज़ के तख्तों और दूसरी
चीज़ों के सहारे किनारे पहुँच जाएँ। और
इस तरह सभी किनारे पर सही-सलामत
पहुँच गए।

28 जब हम सही-सलामत किनारे
पहुँच गए, तो हमें मालूम हुआ
कि उस द्वीप का नाम माल्टा था।
2 वहाँ के लोगों ने, जो दूसरी भाषा
बोलते थे, इंसानियत के नाते हम पर
बहुत कृपा की और ठंड और बारिश
की वजह से हमारे लिए आग जलायी
और हम सबका प्यार से स्वागत किया।
3 मगर जब पौलुस ने लकड़ियों का एक

गट्ठर बटोरकर आग पर रखा, तो आँच
की वजह से गट्ठर के अंदर से एक
ज़हरीला साँप निकला और पौलुस के
हाथ से लिपट गया। **4** जब वहाँ के
निवासियों* ने देखा कि एक ज़ह-
रीला साँप उसके हाथ से लटक रहा है,
तो वे एक-दूसरे से कहने लगे: "यह
आदमी वाकई हत्यारा है, यह समुद्र से
तो बच गया मगर इंसाफ ने इसकी
जान नहीं बख्शी।" **5** मगर पौलुस ने
अपना हाथ झटककर साँप को आग में
झोंक दिया और पौलुस को कुछ नुकसान
नहीं हुआ। **6** मगर लोगों को यह
उम्मीद थी कि पौलुस का शरीर सूज
जाएगा या फिर वह अचानक गिरकर मर
जाएगा। मगर जब वे बहुत देर तक देखते
रहे और उसके साथ कुछ भी बुरा नहीं
हुआ, तो उन्होंने अपनी राय बदल दी
और कहने लगे कि वह ज़रूर कोई
ईश्वर है।

7 उस जगह के पास, उस द्वीप के
प्रधान पुबलियुस की ज़मीनें थीं। उसने
आदर-सत्कार के साथ हमारा स्वागत
किया और तीन दिन तक बड़े प्रेम-
भाव से हमारी खातिरदारी की।
8 लेकिन ऐसा हुआ कि पुबलियुस का
पिता बुखार और पेचिश से बेहाल था
और बिस्तर से उठ नहीं पा रहा था। तब
पौलुस उसके पास गया, उसके लिए
प्रार्थना की, अपने हाथ उस पर रखे और
उसे चंगा किया। **9** जब ऐसा हुआ,
तो द्वीप के बाकी लोग भी जो बीमार थे
वे उसके पास आने लगे और चंगे हुए।
10 फिर उन्होंने हमें कई तोहफे देकर
हमारा सम्मान किया और जब हम जहाज़
पर चढ़कर जाने लगे, तो उन्होंने हमारी
ज़रूरत के सामान का ढेर लगा दिया।

11 तीन महीने बाद हम सिकंदरिया
के एक जहाज़ से रवाना हुए, जो सर्दियों
के दौरान उसी द्वीप पर रुका हुआ
था और उसकी निशानी थी, "ज़्यूस के
बेटे।" **12** फिर हम सुरकूसा के बंदर-
गाह में लंगर डालकर तीन दिन वहीं रहे।
13 वहाँ से हम गोल घूमकर रेगियुम
पहुँचे। और एक दिन बाद दक्षिणी हवा
चली और हम दूसरे दिन पुतियुली आए।
14 यहाँ हमें भाई मिले और उन्होंने हमसे
बिनती की कि उनके पास सात दिन ठहरें
और इस तरह हम रोम के पास आए।
15 वहाँ से जब भाइयों ने हमारे आने
की खबर सुनी, तो वे हमसे मिलने के
लिए अपियुस के बाज़ार तक आ पहुँचे
और तीन सराय तक भी आए। जैसे ही
पौलुस की नज़र भाइयों पर पड़ी, तो
उसने परमेश्वर को धन्यवाद दिया और
हिम्मत पायी। **16** आखिरकार, जब
हम रोम में दाखिल हुए, तो पौलुस को
अकेला रहने की इजाज़त मिली, और
उसके साथ उसकी पहरेदारी के लिए एक
सैनिक रहता था।

17 मगर, तीन दिन बाद उसने यहू-
दियों के खास आदमियों को अपने
यहाँ बुलाया। जब वे इकट्ठा हुए, तो
वह उनसे कहने लगा: "भाइयो, मैंने
अपने लोगों या अपने बापदादों के रीति-
रिवाज़ के खिलाफ कुछ नहीं किया। फिर

प्रेषि 28:4* दूसरी भाषा बोलनेवाले।

भी, यहूदियों ने मुझे यरूशलेम में कैदी
बनाकर रोमियों के हाथों सौंप दिया।
18 उन्होंने जाँच-पड़ताल करने के बाद
मुझे छोड़ देना चाहा, क्योंकि उन्होंने मुझे
ऐसी किसी भी बात का कसूरवार नहीं
पाया जिसके लिए मुझे मौत की सज़ा दी
जाए। **19** मगर जब यहूदी मेरी रिहाई
के खिलाफ बोलते रहे, तो मजबूरन मुझे
सम्राट से फरियाद करनी पड़ी, लेकिन
इसलिए नहीं कि मैं अपनी जाति पर कोई
दोष लगाना चाहता था। **20** वाकई,
इसी वजह से मैंने तुम्हें बुलाने और तुमसे
बात करने की बिनती की है, क्योंकि
इसराएल की आशा की वजह से मैं
इन ज़ंजीरों में कैद हूँ।” **21** उन्होंने
पौलुस से कहा: “हमें तेरे बारे में न
तो यहूदिया से चिट्ठियाँ मिली हैं, न ही
वहाँ से आए किसी यहूदी भाई ने तेरे
बारे में खबर दी या कुछ बुरा कहा।
22 मगर हमें लगता है कि जो भी तेरे
विचार हैं वे तुझी से सुनना सही होगा,
क्योंकि जहाँ तक हमें इस गुट के बारे में
मालूम हुआ है, सब जगह लोग इसके
खिलाफ ही बात करते हैं।”

23 उन्होंने उसके साथ एक दिन तय
किया और भारी तादाद में उसके ठहरने
की जगह पर इकट्ठा हुए। और पौलुस
ने उन्हें सारी बात समझायी और पर-
मेश्वर के राज के बारे में अच्छी तरह
गवाही देने के लिए वह मूसा के कानून
और भविष्यवक्ताओं की किताबों से यीशु
के बारे में दलीलें देकर उन्हें कायल
करता रहा और सुबह से शाम हो गयी।
24 और कुछ ने उसकी कही बातों
पर विश्वास किया और दूसरों ने नहीं।
25 क्योंकि वे आपस में एकमत नहीं थे,
इसलिए वे वहाँ से जाने लगे। इस पर
पौलुस ने यह एक और बात कही:

“पवित्र शक्ति ने यशायाह भविष्य-
वक्ता के ज़रिए तुम्हारे बापदादों से बिल-
कुल सही **26** कहा था: ‘जाकर इन
लोगों से कह: “तुम लोग सुनोगे और
सुनते हुए भी न समझोगे; और देखोगे,
और देखते हुए भी न देख पाओगे।
27 क्योंकि इन लोगों के दिल सख्त हो
चुके हैं, और वे अपने कानों से सुनते तो
हैं मगर सुनकर कुछ नहीं करते, और
उन्होंने अपनी आँखें बंद कर ली हैं; ताकि
वे कभी अपनी आँखों से न देख पाएँ और
अपने कानों से न सुन पाएँ और न ही
अपने दिलों से समझ पाएँ जिससे कि वे
अपने कामों से फिरें और मैं उन्हें चंगा
करूँ।”’ **28** इसलिए तुम्हें यह मालूम
हो कि परमेश्वर जिसके ज़रिए उद्धार
करता है, उसका संदेश गैर-यहूदियों के
पास भेजा गया है और वे ज़रूर इसे
सुनेंगे।” **29*** ——

30 तब पौलुस पूरे दो साल तक
किराए के मकान में रहा और जो कोई
उसके यहाँ आता था उसका बड़े प्यार
से स्वागत करता था **31** और उनको
परमेश्वर के राज का प्रचार करता था
और प्रभु यीशु मसीह के बारे में बेझिझक
और बिना किसी रुकावट के सिखाया
करता था।

प्रेषि 28:29* मत्ती 17:21 फुटनोट देखें।

रोमियों
के नाम

1 मैं पौलुस, जो यीशु मसीह का एक
दास हूँ, तुम्हें यह चिट्ठी लिख रहा
हूँ। मुझे प्रेषित* होने का बुलावा मिला
है और मुझे परमेश्वर की खुशखबरी
सुनाने के लिए अलग किया गया है।
2 इस खुशखबरी का वादा परमेश्वर ने
पहले से अपने भविष्यवक्ताओं के ज़रिए
पवित्र शास्त्र में किया था। **3** यह
खुशखबरी उसके बेटे के बारे में है। वह
शरीर के रिश्ते से तो दाविद के वंश
से निकला था, **4** मगर परमेश्वर की
पवित्र शक्ति से और मरे हुओं में से
जी उठाए जाने की वजह से सामर्थ के
साथ परमेश्वर का बेटा ठहरा, जी हाँ,
वही यीशु मसीह जो हमारा प्रभु है।
5 उसी के ज़रिए हमने परमेश्वर की
महा-कृपा और प्रेषित होने की ज़िम्मेदारी
पायी, ताकि सब राष्ट्र उसके नाम पर
विश्वास ला सकें और उसकी आज्ञा मानें।
6 इन राष्ट्रों में से तुम भी हो, जिन्हें
यीशु मसीह का होने के लिए बुलाया गया
है। **7** मैं पौलुस तुम सभी को लिख
रहा हूँ, जो रोम में रहते हो और पर-
मेश्वर के प्यारे हो और पवित्र जन होने
के लिए बुलाए गए हो:
परमेश्वर हमारे पिता की तरफ से
और प्रभु यीशु मसीह की तरफ से तुम्हें
महा-कृपा और शांति मिले।
8 सबसे पहले, मैं यीशु मसीह के
ज़रिए तुम सबके बारे में अपने परमेश्वर
का धन्यवाद करता हूँ, क्योंकि तुम्हारे
विश्वास की चर्चा सारी दुनिया में हो रही
है। **9** परमेश्वर, जिसकी पवित्र सेवा
मैं उसके बेटे की खुशखबरी सुनाते हुए
जी-जान से करता हूँ, वही मेरा गवाह है
कि कैसे मैं हमेशा अपनी प्रार्थनाओं में
लगातार तुम्हें याद करता हूँ **10** और
बिनती करता हूँ कि अगर उसकी इच्छा
हो, तो मैं कम-से-कम अब किसी तरह
तुम्हारे पास आ सकूँ। **11** क्योंकि मैं
तुमसे मिलने के लिए तरस रहा हूँ ताकि
तुम्हें परमेश्वर की तरफ से कोई आशीष*
दे सकूँ जिससे तुम मज़बूती पाओ।
12 या, यूँ कहूँ कि मैं और तुम, दोनों
अपने-अपने विश्वास के ज़रिए, आपस
में एक-दूसरे का हौसला बढ़ा सकें।
13 मगर भाइयो, मैं नहीं चाहता कि
तुम इस बात से अनजान रहो कि मैंने
तुम्हारे पास आने की कई बार योजना
बनायी, ताकि जैसे मैंने बाकी गैर-यहूदी
राष्ट्रों में फल पाया है वैसे ही तुम्हारे बीच
भी पाऊँ, मगर अब तक मुझे रोका गया
है। **14** मैं यूनानियों और गैर-यूना-

रोमि 1:1* या, "भेजे गए।" यूनानी में *"अपोस्टोलोस।"*

रोमि 1:11* या, "तोहफा।"

नियों, समझदारों और मूर्खों, दोनों का
कर्ज़दार हूँ: **15** इसलिए तुम जो वहाँ
रोम में हो, मैं तुम्हें भी खुशखबरी सुनाने
के लिए बेताब हूँ। **16** मुझे खुशखबरी
सुनाने में कोई शर्म महसूस नहीं होती।
दरअसल, यह विश्वास करनेवाले हर
किसी के लिए, पहले यहूदी और फिर
यूनानी* के उद्धार पाने के लिए परमेश्वर
की शक्ति है। **17** क्योंकि जो विश्वास
करते हैं वे यह देख पाते हैं कि इस
खुशखबरी के ज़रिए परमेश्वर अपनी
नेकी ज़ाहिर करता है और इससे उनका
विश्वास मज़बूत होता है। ठीक जैसा
लिखा भी है: "मगर जो नेक जन है, वह
अपने विश्वास से ज़िंदा रहेगा।"

18 लेकिन जो लोग परमेश्वर के
बारे में सच्चाई को गलत तरीकों से दबा
रहे हैं, उनकी सारी भक्तिहीनता और
बुराई पर स्वर्ग से परमेश्वर का क्रोध
प्रकट होता है। **19** क्योंकि परमेश्वर
के बारे में जो कुछ जाना जा सकता है
वह उनके बीच साफ ज़ाहिर है, इसलिए
कि परमेश्वर ने उन पर यह ज़ाहिर किया
है। **20** उसके अनदेखे गुण दुनिया की
रचना के वक्त से साफ दिखायी देते हैं
यानी यह कि उसके पास अनंत शक्ति है
और सचमुच वही परमेश्वर है।* क्योंकि
ये गुण उसकी बनायी चीज़ों को देखकर
अच्छी तरह समझे जा सकते हैं, इसलिए
उनके पास परमेश्वर पर विश्वास न
करने का कोई बहाना बाकी नहीं बचता।
21 क्योंकि वे परमेश्वर को जानते तो
थे, फिर भी उन्होंने उसकी वैसी बड़ाई न
की जैसी परमेश्वर की करनी चाहिए,
न ही उसका धन्यवाद किया, बल्कि वे
खोखली बातें सोचने लगे और उनका
निर्बुद्धि हृदय अंधकार से भर गया।
22 हालाँकि उनका दावा था कि वे
बुद्धिमान हैं, मगर वे मूर्ख साबित हुए
23 और उन्होंने अनश्वर परमेश्वर की
महिमा करने के बदले, नश्वर इंसान
और पक्षियों और चार-पैरोंवाले जीवों
और रेंगनेवाले जंतुओं की मूरतों की
महिमा की।

24 इसलिए परमेश्वर ने उनके दिल
की बुरी इच्छाओं के मुताबिक उन्हें
अशुद्धता के हवाले छोड़ दिया ताकि
वे अपने ही शरीर का अनादर करें।
25 ये वही लोग हैं जिन्होंने परमेश्वर
की सच्चाई के बदले झूठ पर यकीन किया
और सृष्टिकर्ता के बजाय उसकी सृष्टि
की भक्ति और पूजा की। वही सृष्टिकर्ता
सदा धन्य है, आमीन। **26** परमेश्वर
ने इन लोगों को शरीर की नीच काम-
वासनाओं के हवाले छोड़ दिया, इसलिए
कि उनकी स्त्रियाँ स्वाभाविक यौन-संबंध
छोड़कर अस्वाभाविक यौन-संबंध रखने
लगीं। **27** उसी तरह पुरुषों ने भी
स्त्रियों के साथ स्वाभाविक यौन-संबंध
छोड़ दिए और पुरुष आपस में एक-दूसरे
के लिए काम-वासना से जलने लगे।
पुरुषों ने पुरुषों के साथ अश्लील काम
किए और खुद अपनी करतूतों का पूरा-
पूरा अंजाम भुगता।

28 इन लोगों को यह मंज़ूर नहीं था
कि सही ज्ञान के मुताबिक परमेश्वर को

रोमि 1:16* ज़ाहिर है, यूनानी बोलनेवाले गैर-यहूदी।
20* शाब्दिक, "उसके परमेश्वरत्व।"

जानें। इसलिए परमेश्वर ने भी उन्हें
उनकी भ्रष्ट दिमागी हालत पर छोड़ दिया
कि वे गलत काम करें **29** क्योंकि
उनमें हर तरह का पाप, दुष्टता, लालच,
बुराई कूट-कूटकर भरी है और वे ईर्ष्या,
हत्या, झगड़े, छल और द्वेष से भरे
हैं। वे चुगली लगानेवाले, **30** पीठ
पीछे बदनाम करनेवाले, परमेश्वर से
नफरत करनेवाले, बदतमीज़, मगरूर,
खुद को बड़ा समझनेवाले, बुरी बातें
गढ़नेवाले, माता-पिता की न माननेवाले,
31 समझ न रखनेवाले, अपने वादे से
मुकरनेवाले, प्यार और लगाव से खाली
और बेरहम हैं। **32** ये परमेश्वर के
इस खरे आदेश को बहुत अच्छी तरह
जानते हैं कि जो लोग ऐसे कामों में लगे
रहते हैं वे मौत की सज़ा के लायक हैं।
फिर भी वे न सिर्फ खुद ऐसे कामों में
लगे रहते हैं बल्कि ऐसे काम करनेवालों
से खुश भी होते हैं।

2 अरे दोष लगानेवाले, तू चाहे जो भी
हो, अगर तू दूसरे पर दोष लगाता
है, तो तेरे पास कोई सफाई नहीं रह
जाती। क्योंकि जब तू किसी दूसरे को
दोषी ठहराता है, तो उसी बात से तू खुद
भी सज़ा के लायक ठहरता है, क्योंकि तू
जिन कामों के लिए दूसरों को दोषी
ठहराता है, खुद वही काम करता रहता
है। **2** हम जानते हैं कि परमेश्वर का
न्याय सच्चा है और जो इन कामों में लगे
रहते हैं, वह उन्हें सज़ा देगा।

3 लेकिन अरे इंसान, तू जो ऐसे काम
करनेवालों को दोषी ठहराता है मगर खुद
इन्हीं कामों में लगा रहता है, क्या तू यह
सोच बैठा है कि तू परमेश्वर के न्याय-
दंड से बच जाएगा? **4** या क्या तू
उसकी अपार कृपा, बरदाश्त और सह-
नशीलता का तिरस्कार करता है? क्या
तू नहीं जानता कि परमेश्वर की कृपा तुझे
पश्चाताप की तरफ ले जाने की कोशिश
कर रही है? **5** मगर तू अपनी कठो-
रता और पश्चाताप न करनेवाले दिल की
वजह से परमेश्वर के क्रोध के उस दिन
तक अपने लिए क्रोध जमा कर रहा है,
जिस दिन वह अपने सच्चे स्तरों के मुता-
बिक न्याय करेगा। **6** वह हरेक को
उसके कामों के हिसाब से बदला देगा:
7 जो धीरज के साथ भले काम में
लगे रहकर महिमा और आदर और
अनश्वरता की खोज करते हैं, वह उन्हें
हमेशा की ज़िंदगी देगा। **8** मगर जो
झगड़ालू हैं और सच्चाई को मानने के
बजाय परमेश्वर के स्तरों के खिलाफ
काम करते हैं उन पर उसका क्रोध और
गुस्सा भड़केगा, **9** और जो लोग बुरे
कामों में लगे रहते हैं, परमेश्वर उन
पर क्लेश और मुसीबत लाएगा, पहले
यहूदियों पर और इसके बाद गैर-यहू-
दियों पर भी। **10** मगर हर वह इंसान
जो अच्छे काम करता है, परमेश्वर उसे
महिमा और आदर और शांति देगा,
पहले यहूदियों को और फिर गैर-यहूदियों
को भी। **11** इसलिए कि परमेश्वर
भेदभाव नहीं करता।

12 जैसे, वे सभी जिन्होंने पर-
मेश्वर का कानून न होते हुए पाप
किया, वे कानून के न होते हुए भी

मिट जाएँगे। मगर जिन्होंने कानून के
तहत पाप किया, उनका न्याय कानून
के हिसाब से होगा। **13** क्योंकि पर-
मेश्वर के सामने, कानून को बस सुनने-
वाले नहीं, मगर कानून पर चलनेवाले
नेक ठहराए जाएँगे। **14** राष्ट्रों के
लोग,* जिनके पास परमेश्वर का कानून
नहीं है, वे जब कभी अपने आप इस
कानून के मुताबिक चलते हैं, तो इसके
न होने पर भी, वे खुद अपने लिए एक
कानून ठहरते हैं। **15** वे दिखाते हैं
कि कानून की बातें उनके दिलों में लिखी
हुई हैं और उनके साथ उनका ज़मीर भी
गवाही देता है और उनके अपने सोच-
विचार में वे या तो कसूरवार ठहरते हैं
या बेकसूर। **16** ये बातें तब देखी जा
सकेंगी जब परमेश्वर, मसीह यीशु के
ज़रिए इंसानों की छिपी हुई बातों का न्याय
करेगा। यह बात उस खुशखबरी का
हिस्सा है जो मैं सुनाता हूँ।

17 अगर तू यहूदी कहलाता है और
तुझे परमेश्वर के कानून पर भरोसा है
और तू परमेश्वर के साथ अपने रिश्ते
पर गर्व करता है **18** और जानता
है कि उसकी इच्छा क्या है और तुझे
ज़बानी तौर पर कानून सिखाया गया है
जिस वजह से तू उत्तम-से-उत्तम बातों की
समझ रखता है, **19** और तुझे यकीन
दिलाया गया है कि तू अंधों को राह
दिखानेवाला और अंधकार में रहनेवालों
के लिए रौशनी है, **20** तू ज़िद्दी लोगों
को सुधारनेवाला और नादानों को सिखा-
नेवाला गुरु है और कानून में पाए जाने-
वाले ज्ञान और सच्चाई के बुनियादी ढाँचे
की समझ रखता है — **21** तो तू जो
दूसरे को सिखाता है, क्या खुद को नहीं
सिखाता? क्या तू जो प्रचार करता है कि
"चोरी न करना," खुद चोरी करता है?
22 तू जो कहता है कि "शादी के बाहर
यौन-संबंध न रखना," क्या तू खुद ऐसा
करता है? तू जो दिखाता है कि तुझे
मूर्तियों से घिन है, क्या तू खुद मंदिरों को
लूटता है? **23** तू जो कानून पर घमंड
करता है, क्या तू खुद कानून के खिलाफ
जाकर परमेश्वर का अनादर करता है?
24 क्योंकि जैसा लिखा है, "तुम्हारी
वजह से राष्ट्रों के बीच परमेश्वर के नाम
की बदनामी हो रही है।"

25 तेरे लिए खतना तभी फायदेमंद
होगा जब तू कानून को मानता हो।
लेकिन अगर तू कानून तोड़ता है, तो तेरा
खतना, खतना न होने के बराबर है।
26 इसलिए अगर एक इंसान, खतना न
होते हुए भी कानून में दी गयी परमेश्वर
की माँगें पूरी करता है, तो क्या उसका
खतना न होना, खतना होने के बराबर
नहीं समझा जाएगा? **27** वह इंसान
जिसका शरीर से खतना नहीं हुआ, वह
कानून पर चलने की वजह से तुझे दोषी
ठहराता है, क्योंकि तू लिखित नियम और
खतना होते हुए भी कानून को तोड़ता है।
28 क्योंकि यहूदी वह नहीं जो ऊपर से
यहूदी दिखता है, न ही खतना वह है जो
बाहर शरीर पर होता है। **29** मगर
यहूदी वह है जो अंदर से यहूदी है, और

रोमि 2:14* या, "गैर-यहूदी।"

उसका खतना वह है जो लिखित नियम
के हिसाब से नहीं बल्कि परमेश्‍वर की
पवित्र शक्‍ति के हिसाब से दिल का खतना
होता है। ऐसे इंसान की बड़ाई, इंसानों
की तरफ से नहीं बल्कि परमेश्‍वर की
तरफ से होती है।

3 तो फिर किस मायने में यहूदी
दूसरों से बढ़कर हैं या खतने का
क्या फायदा? **2** हर मायने में, कई
तरह से। पहली बात तो यह कि यहू-
दियों को ही परमेश्‍वर के पवित्र वचन
सौंपे गए थे। **3** तो अगर कुछ यहू-
दियों ने विश्‍वास नहीं किया, तो क्या
हुआ? क्या उनके विश्‍वास न दिखाने से
परमेश्‍वर का विश्‍वासयोग्य होना बेकार
साबित हो जाएगा? **4** यह नामुमकिन
है! इसके बजाय, परमेश्‍वर हर हाल में
सच्चा साबित होता है, चाहे हर इंसान
झूठा साबित हो, जैसा कि लिखा भी है:
"कि तू अपनी बातों में सच्चा साबित
हो और तू अपना मुकद्दमा जीत ले।"
5 लेकिन कुछ लोग कहते हैं, 'अगर हम
बुरे काम करते हैं तो यह असल में फायदे-
मंद है क्योंकि लोग इससे देख पाते हैं कि
हम गलत हैं जबकि परमेश्‍वर सही है।
इसलिए, हमारी बुराई लोगों का ध्यान
परमेश्‍वर की तरफ दिलाने में मदद करती
है। अगर परमेश्‍वर हमें इसके लिए सज़ा
दे, तो क्या वह अन्यायी नहीं हुआ?' (मैं
एक इंसान के नज़रिए से बोलता हूँ।)
6 नहीं, वह अन्यायी नहीं हो सकता!
अगर ऐसा हो तो वह पूरी दुनिया का
न्याय कैसे करेगा?

7 कुछ यह भी दलील देते हैं: 'अगर
मेरे झूठ की वजह से परमेश्‍वर का सच्चा
होना और भी बढ़कर ज़ाहिर होता है
जिससे उसकी महिमा होती है, तो फिर
मुझे इस काम के लिए पापी ठहराकर
क्या परमेश्‍वर अन्याय नहीं कर रहा?'
8 फिर हम भी यह क्यों न कहें, "चलो
हम बुराई करें कि भलाई निकलकर
सामने आए," जैसा कि कुछ लोग हम
पर झूठा इलज़ाम लगाते हुए कहते हैं कि
हम यही सिखाते हैं। ऐसे लोग न्याय के
हिसाब से ठीक सज़ा पाएँगे।

9 तो फिर हम क्या कहें? क्या हम
यहूदी दूसरों से बढ़कर हैं? हरगिज़ नहीं!
क्योंकि हम पहले ही यह बात साफ कर
चुके हैं* कि यहूदी और गैर-यहूदी सभी
पाप के अधीन हैं। **10** ठीक जैसा
लिखा है: "कोई नेक नहीं, एक भी नहीं।
11 ऐसा कोई भी नहीं जो ज़रा भी
अंदरूनी समझ रखता हो, ऐसा कोई
नहीं जो परमेश्‍वर की खोज करता हो।
12 सभी इंसान गुमराह हो गए हैं। वे
सब-के-सब बेकार हो गए हैं। कोई भी
अच्छे काम नहीं करता, एक भी नहीं।"
13 "उनका गला एक खुली कब्र है, वे
अपनी ज़ुबान से छलते हैं।" "उनके
होठों के पीछे साँपों का ज़हर छिपा
है।" **14** "उनके मुँह में सिर्फ दूसरों
को कोसनेवाली, कड़वी बातें भरी हैं।"
15 "उनके कदम खून बहाने के लिए
फुर्ती करते हैं।" **16** "उनकी राहों में
बरबादी और मुसीबतें हैं, **17** और

रोमि 3:9* शाब्दिक, "आरोप लगा चुके हैं।"

वे शांति का रास्ता जानते ही नहीं।”
18 “उनकी आँखों में परमेश्वर का ज़रा
भी डर नहीं।”

19 हम जानते हैं कि कानून खास
तौर पर यहूदियों को दिया गया था। इस-
लिए, अगर उनमें से कोई यहूदी
यह दावा करे कि वह निष्पाप है, तो
कानून उसका मुँह बंद कर देगा, साथ ही
पूरी दुनिया परमेश्वर के सामने सज़ा के
लायक ठहरेगी। 20 क्योंकि मूसा के
कानून में बताए कामों के आधार पर कोई
भी इंसान परमेश्वर के सामने नेक नहीं
ठहर पाएगा, इसलिए कि पाप क्या है
इसका सही-सही ज्ञान कानून कराता है।

21 मगर अब यह ज़ाहिर किया
गया है कि कानून को माने बिना
एक इंसान परमेश्वर की नज़र में नेक
ठहर सकता है। मूसा का कानून और
भविष्यवक्ताओं की किताबें भी इस
बात की गवाही देते हैं कि पर-
मेश्वर की नज़र में नेक साबित होने के
लिए क्या ज़रूरी है। 22 जी हाँ, यीशु
मसीह पर विश्वास करने से परमेश्वर की
नज़र में नेक इंसान ठहरा जा सकता
है, और यह विश्वास दिखानेवाले हर
इंसान के लिए है। इसमें कोई भेदभाव
नहीं। 23 इसलिए कि सब ने पाप
किया है और वे परमेश्वर के शानदार
गुण* ज़ाहिर करने में नाकाम रहे हैं।
24 मगर परमेश्वर ने उन्हें यह मुफ्त
वरदान दिया जब उसने अपनी महा-कृपा
की वजह से उन्हें नेक इंसान करार दिया।
परमेश्वर ने उन्हें उस फिरौती के ज़रिए
रिहाई दिलाकर नेक करार दिया, जो
मसीह यीशु ने चुकायी है। 25 पर-
मेश्वर ने मसीह को बलिदान के तौर पर
दे दिया ताकि मसीह के लहू में विश्वास
करने से लोगों के पापों का प्रायश्चित्त हो
और परमेश्वर के साथ उनकी सुलह हो।
उसने ऐसा अपनी नेकी ज़ाहिर करने के
लिए किया, क्योंकि बीते ज़माने के दौरान,
जब वह बरदाश्त कर रहा था, वह
लोगों के पापों को माफ करता रहा,
26 जिससे वह इस वक्त, हमारे ज़माने
में भी अपनी नेकी ज़ाहिर कर सके, ताकि
जो इंसान यीशु में विश्वास करता है, उसे
भी नेक ठहराते वक्त वह खुद न्याय-
संगत साबित हो।

27 तो क्या घमंड करने की कोई
वजह रही? नहीं, कोई वजह नहीं रही।
किस कानून के हिसाब से? क्या कामों के
कानून के हिसाब से? नहीं, बिलकुल नहीं,
बल्कि विश्वास के कानून के हिसाब से।
28 इससे हम इस नतीजे पर पहुँचते हैं
कि एक इंसान मूसा के कानून के कामों
से नहीं, बल्कि विश्वास से परमेश्वर
की नज़र में नेक ठहराया जाता है।
29 क्या वह सिर्फ यहूदियों का परमेश्वर
है? क्या वह दूसरे राष्ट्रों के लोगों का
भी परमेश्वर नहीं? बेशक, वह उनका
भी परमेश्वर है। 30 वाकई परमेश्वर
एक है, और वही खतना किए गए लोगों
को उनके विश्वास की वजह से नेक ठह-
राता है और जिनका खतना नहीं हुआ
है, उन्हें उनके विश्वास के ज़रिए नेक

रोमि 3:23* शाब्दिक, “महिमा।”

ठहराता है, **31** तो क्या हम अपने
विश्वास से कानून को रद्द कर दें? यह
नामुमकिन है। इसके बजाय, हम कानून
को बुलंद करते हैं।

4 जब ऐसा है, तो हम अब्राहम के बारे
में क्या कहें जो शरीर के रिश्ते से
हमारा पुरखा था? **2** अगर अब्राहम
कामों की वजह से नेक ठहराया गया
होता, तो उसके पास शेखी मारने की
वजह होती, फिर भी परमेश्वर के सामने
नहीं। **3** शास्त्रवचन क्या कहता है?
"अब्राहम ने यहोवा* पर विश्वास किया
और यह उसके लिए नेकी गिना गया।"
4 जो आदमी काम करता है उसे मज़-
दूरी देना उस पर महा-कृपा करना नहीं
समझा जाता, बल्कि उसका हक* माना
जाता है। **5** दूसरी तरफ, जो इंसान
अपने कामों पर भरोसा करने के बजाय
उस परमेश्वर पर विश्वास दिखाता है
जो पापी को नेक करार देता है, तो उस
इंसान का यह विश्वास दिखाना उसके
लिए नेकी गिना जाता है। **6** दाविद
भी ऐसे इंसान को सुखी कहता है जिसके
कामों के बिना ही परमेश्वर उसकी गिनती
नेक इंसानों में करता है: **7** "सुखी हैं
वे जिनके बुरे काम माफ किए गए हैं और
जिनके पाप ढक दिए गए हैं। **8** सुखी
है वह इंसान जिसके पाप का यहोवा
हरगिज़ लेखा नहीं लेगा।"

9 तो फिर, क्या यह सुख सिर्फ उन्हें
हासिल होता है जिनका खतना हुआ है?
क्या यह उन्हें भी हासिल नहीं होता
जिनका खतना नहीं हुआ? क्योंकि हम
कहते हैं: "अब्राहम का विश्वास उसके
लिए नेकी गिना गया।" **10** तो फिर,
किन हालात में यह नेकी गिना गया?
उसका खतना होने के बाद या खतना होने
से पहले? खतना होने के बाद नहीं,
बल्कि खतना होने से पहले। **11** जब
अब्राहम ने बिना खतने की दशा में
विश्वास दिखाया, तो परमेश्वर ने उसे
नेक ठहराया और इसके लिए उसे एक
निशानी यानी खतना दिया जो उसके नेक
गिने जाने की मुहर थी, जिससे वह उन
सबका पिता बन सके जो बिना खतना हुए
भी विश्वास दिखाते हैं, ताकि यह उनके
लिए भी नेकी गिना जाए। **12** साथ
ही, वह उनका भी पिता बने जिनका
खतना हुआ है और जो न सिर्फ खतने को
मानते हैं, बल्कि उसके साथ-साथ हमारे
पिता अब्राहम के नक्शे-कदम पर सीधी
चाल चलते हुए वैसा ही विश्वास दिखाते
हैं जैसा उसने बिना खतने की दशा में
दिखाया था।

13 अब्राहम या उसका वंश दुनिया
का वारिस होगा, यह वादा कानून
के ज़रिए नहीं था बल्कि उस नेकी के
ज़रिए था जो अब्राहम ने विश्वास दिखा-
कर हासिल की थी। **14** इसलिए कि
अगर कानून पर चलनेवाले वारिस होते,
तो विश्वास करना बेमाने हो जाता और
वादा बेकार जाता। **15** सच तो यह
है कि मूसा का कानून क्रोध पैदा करता

रोमि 4:3* यह उन 237 जगहों में से एक जगह है, जहाँ परमेश्वर का नाम, 'यहोवा' इस अनुवाद के मुख्य पाठ में पाया जाता है। अतिरिक्त लेख 2 देखें।
4* शाब्दिक, "कर्ज़।"

है, मगर जहाँ कानून नहीं है वहाँ उसका
तोड़ना भी नहीं है।

16 इसलिए, वारिस होने का यह
वादा अब्राहम को विश्‍वास दिखाने की
वजह से मिला। इस तरह, इस वादे से
असल में परमेश्‍वर की महा-कृपा ज़ाहिर
हुई। यह वादा विश्‍वास दिखाने की वजह
से मिला था, इसलिए यह वादा न सिर्फ
उनके लिए है जो कानून पर चलते हैं,
बल्कि उनके लिए भी है जो अब्राहम
की तरह विश्‍वास पर चलते हैं। (वह
हम सबका पिता है, **17** ठीक जैसा
लिखा भी है: "मैंने तुझे बहुत-सी जातियों
का पिता ठहराया है।") इस वादे के पूरा
होने की गारंटी परमेश्‍वर के सामने दी
गयी थी। इसी परमेश्‍वर पर अब्राहम को
विश्‍वास था, हाँ, वही परमेश्‍वर जो मरे
हुओं को ज़िंदा करता है और जो चीज़ें
वजूद में नहीं हैं उनके बारे में ऐसे बात
करता है जैसे वे सचमुच वजूद में हों।
18 हालाँकि अब्राहम के लिए आशा
रखने की सारी वजह खत्म हो चुकी थीं,
फिर भी उसने आशा रखते हुए विश्‍वास
किया, ताकि उससे जो कहा गया था:
"इसी तरह तेरा वंश भी बहुत होगा,"
उसके मुताबिक वह बहुत-सी जातियों
का पिता हो। **19** हालाँकि अब्राहम ने
अपने शरीर की बेजान हालत पर गौर
किया क्योंकि वह करीब सौ साल का हो
चुका था और अपनी पत्नी सारा के गर्भ
की बेजान हालत भी जानता था, फिर
भी वह अपने विश्‍वास में कमज़ोर नहीं
पड़ा। **20** परमेश्‍वर के वादे की वजह
से वह विश्‍वास की कमी से नहीं डग-
मगाया, बल्कि अपने विश्‍वास के ज़रिए
शक्‍तिशाली साबित हुआ और परमेश्‍वर
की महिमा की। **21** वह इस बात का
पूरा यकीन रखता था कि जिसने वादा
किया है वह उसे पूरा करने के काबिल भी
है। **22** इसलिए, "यह विश्‍वास उसके
लिए नेकी गिना गया।"

23 मगर शास्त्र में यह बात कि
'उसके लिए गिना गया' न सिर्फ उसके
लिए है **24** बल्कि यह हमारे लिए भी
लिखी गयी है। क्योंकि हम उस परमेश्‍वर
पर विश्‍वास करते हैं जिसने हमारे प्रभु
यीशु को मरे हुओं में से ज़िंदा किया, इस-
लिए हमारे लिए भी, जो नेक गिने जाने के
लिए चुने गए हैं, यह विश्‍वास नेकी गिना
जाएगा। **25** यीशु को हमारे गुनाहों
की खातिर मार डाले जाने के लिए सौंपा
गया और हमारे नेक ठहराए जाने के
लिए ज़िंदा किया गया।

5 इसलिए, जब हमें विश्‍वास की वजह
से नेक ठहराया गया है, तो आओ
हम अपने प्रभु यीशु मसीह के ज़रिए पर-
मेश्‍वर के साथ शांति के रिश्‍ते में बने
रहें। **2** उसी के ज़रिए विश्‍वास से हम
परमेश्‍वर की महा-कृपा पाने के लिए
परमेश्‍वर के सामने पहुँच हासिल कर पाए
हैं। इसी महा-कृपा में हम अभी बने
हुए हैं। और आओ हम परमेश्‍वर से
महिमा पाने की आशा पर गर्व करें।
3 यही नहीं, हम दुःख-तकलीफें झेलते
हुए भी गर्व करें, क्योंकि हम जानते हैं
कि दुःख-तकलीफों से धीरज पैदा होता
है, **4** और धीरज से परमेश्‍वर की
मंज़ूरी की दशा हासिल होती है और इस

दशा से आशा पैदा होती है, **5** और
यह आशा हमें शर्मिंदा नहीं होने देती।
क्योंकि परमेश्‍वर का प्यार हमारे दिलों में
उस पवित्र शक्‍ति* के ज़रिए भरा गया
है, जो हमें दी गयी थी।

6 वाकई, जब हम कमज़ोर ही थे तब
मसीह, तय किए गए वक्‍त पर भक्‍ति-
हीन इंसानों के लिए मरा। **7** क्योंकि
शायद ही कोई किसी धर्मी इंसान के लिए
अपनी जान देगा। हाँ, हो सकता है कि
एक अच्छे इंसान के लिए कोई अपनी
जान देने की हिम्मत करे। **8** मगर
परमेश्‍वर ने अपने प्यार की अच्छाई हम
पर इस तरह ज़ाहिर की है कि जब हम
पापी ही थे, तब मसीह हमारे लिए मरा।
9 तो अब जब हम उसके लहू से नेक
ठहराए जा चुके हैं, तो हम उसके ज़रिए
परमेश्‍वर के क्रोध से भी क्यों न बचेंगे?
10 जब हम परमेश्‍वर के दुश्‍मन थे,
अगर तब उसके बेटे की मौत से पर-
मेश्‍वर के साथ हमारी सुलह हुई, तो अब
जब हमारी सुलह हो चुकी है, तब हम
और भी बढ़कर उसके जीवन के ज़रिए
उद्धार क्यों न पाएँगे? **11** इतना ही
नहीं, हम अपने प्रभु यीशु मसीह के ज़रिए
परमेश्‍वर के साथ अपने रिश्‍ते पर गर्व
भी करते हैं, क्योंकि प्रभु यीशु के ज़रिए
ही परमेश्‍वर से अब हमारी सुलह हो
चुकी है।

12 इसलिए, एक आदमी से पाप
दुनिया में आया और पाप से मौत
आयी, और इस तरह मौत सब इंसानों में
फैल गयी क्योंकि सबने पाप किया।
13 मूसा का कानून दिए जाने तक पाप
दुनिया में था तो सही, मगर जब कानून
नहीं होता, तब किसी को पाप का दोषी
नहीं ठहराया जा सकता। **14** फिर
भी, मौत ने आदम से लेकर मूसा के समय
तक राजा बनकर राज किया, उन पर
भी जिन्होंने आदम की तरह कानून तोड़-
कर पाप नहीं किया था। आदम बिलकुल
उसी के जैसा था जो आनेवाला था।

15 मगर वरदान का नतीजा, उस
गुनाह के नतीजे जैसा नहीं है। क्योंकि
जहाँ एक आदमी के गुनाह से बहुत मर
गए, वहीं इससे भी बढ़कर परमेश्‍वर की
महा-कृपा और उसके मुफ्त वरदान से
बहुतों को बेहिसाब फायदे मिले। यह
मुफ्त वरदान, महा-कृपा के साथ एक
आदमी यीशु मसीह के ज़रिए दिया गया।
16 मुफ्त वरदान से मिलनेवाले फायदे,
एक आदमी के पाप के अंजामों जैसे नहीं
हैं। इसलिए कि एक गुनाह के बाद जो
न्यायदंड मिला उससे इंसान सज़ा के
लायक ठहरे, मगर बहुत-से गुनाहों के
बाद जो वरदान आया उससे इंसानों का
परमेश्‍वर की नज़र में नेक करार दिया
जाना मुमकिन हुआ। **17** एक आदमी
के गुनाह की वजह से मौत ने उस एक
के ज़रिए राजा बनकर राज किया। जब
ऐसा है, तो जो लोग महा-कृपा और नेक
ठहराए जाने का मुफ्त वरदान बहुतायत
में पाते हैं, वे इससे भी बढ़कर यीशु मसीह
के ज़रिए जीवन पाकर और राजा बन-
कर राज क्यों न करेंगे?

18 इसलिए, जिस तरह एक ही
गुनाह का अंजाम यह हुआ कि सब किस्म

रोमि 5:5* यूनानी *नफ्मा*। अतिरिक्‍त लेख 7 देखें।

के लोग सज़ा के लायक ठहरे, उसी तरह
एक ही इंसान के एक नेक काम का
नतीजा, सब किस्म के इंसानों के लिए
नेक ठहराया जाना हुआ ताकि वे जीवन
पाएँ। **19** और जैसे एक आदमी के
आज्ञा न मानने से बहुत लोग पापी ठहरे,
उसी तरह एक आदमी के आज्ञा मानने
से बहुत लोग नेक ठहरेंगे। **20** फिर
इस पापी हालत के रहते बाद में कानून
आया जिसने गुनाहों को और भी बढ़कर
ज़ाहिर किया। मगर जहाँ पाप बढ़ा, वहाँ
महा-कृपा और भी बहुतायत में हुई।
21 किसलिए? ताकि जैसे पाप ने मौत
के साथ राजा बनकर राज किया, वैसे ही
महा-कृपा भी नेकी के ज़रिए राजा बन-
कर राज करे जिससे हमारे प्रभु यीशु
मसीह के ज़रिए हमें हमेशा की ज़िंदगी
मिले।

6 जब ऐसा है, तो हम क्या कहें? क्या
हम पाप करते रहें ताकि और भी
ज़्यादा महा-कृपा पाएँ? **2** ऐसा कभी
न हो! जब हम एक बार पाप के लिए
मर चुके, तो फिर आगे हम उसमें कैसे
जीते रह सकते हैं? **3** या क्या तुम
नहीं जानते कि हम सभी ने, जिन्होंने
मसीह यीशु में बपतिस्मा पाया है, उसकी
मौत में भी बपतिस्मा पाया है? **4** इस-
लिए उसकी मौत में बपतिस्मा पाने से हम
भी उसके साथ दफन किए गए, ताकि
जैसे पिता की महिमा से मसीह को मरे
हुओं में से जी उठाया गया, वैसे ही हम
भी परमेश्वर के लिए नया जीवन जीएँ।
5 जब हम उसकी मौत की समानता में
उसके साथ एक हुए हैं, तो उसके जी
उठने की समानता में भी उसके साथ एक
होंगे। **6** क्योंकि हम जानते हैं कि
हमारी पुरानी शख्सियत उसके साथ सूली
पर चढ़ा दी गयी, ताकि हमारे पापी शरीर
का हम पर अधिकार खत्म हो जाए और
अब से हम पाप के दास न बने रहें।
7 इसलिए कि जो मर चुका है, वह
अपने पाप से बरी हो चुका है।

8 और अगर हम मसीह के साथ मर
चुके हैं, तो हमें यकीन है कि हम उसके
साथ जीएँगे भी। **9** इसलिए कि हम
जानते हैं कि मसीह, जिसे मरे हुओं में से
जी उठाया गया है दोबारा मरनेवाला नहीं,
अब मौत का उस पर कोई अधिकार
नहीं। **10** इसलिए कि मसीह जो मौत
मरा, वह पाप को मिटाने के लिए हमेशा
के लिए एक ही बार मरा। लेकिन वह
जो जीवन जीता है वह परमेश्वर के लिए
जीता है। **11** इसी तरह तुम भी खुद
को पाप के लिए तो मरा हुआ, मगर
मसीह यीशु के ज़रिए परमेश्वर के लिए
ज़िंदा समझो।

12 इसलिए ऐसा मत होने दो कि
तुम्हारे नश्वर शरीर में पाप राजा बनकर
राज करता रहे और तुम शरीर की
ख्वाहिशों के गुलाम बनकर उसी की
मानो। **13** न ही अपने अंगों को बुराई
के हथियार बनने के लिए पाप के हवाले
करते रहो। इसके बजाय, मरे हुओं में से
ज़िंदा किए गए लोगों के नाते खुद को पर-
मेश्वर को सौंप दो, साथ ही अपने अंगों
को नेकी के हथियार बनने के लिए

परमेश्वर के हवाले कर दो। **14** अब
पाप का तुम पर अधिकार न हो, क्योंकि
तुम कानून के अधीन नहीं बल्कि महा-
कृपा के अधीन हो।

15 तो फिर क्या? क्या हम इस
वजह से पाप करें कि हम कानून के
अधीन नहीं बल्कि महा-कृपा के अधीन
हैं? ऐसा कभी न हो! **16** क्या तुम
नहीं जानते कि अगर तुम किसी की आज्ञा
मानने के लिए खुद को गुलामों की तरह
उसके हवाले करते रहते हो, तो उसी के
गुलाम बन जाते हो? फिर चाहे पाप
के गुलाम, जिसका अंजाम मौत है या
चाहे आज्ञा-पालन के गुलाम, जिसका
नतीजा परमेश्वर की नज़र में नेक ठह-
राया जाना है। **17** मगर परमेश्वर का
धन्यवाद हो कि तुम जो पाप के गुलाम
थे, अब तुम दिल से उस शिक्षा के
आज्ञाकारी बने जिसके हवाले उसने तुम्हें
किया था। **18** हाँ, क्योंकि तुम्हें पाप
से आज़ाद किया गया था, इसलिए तुम
नेकी के दास बने। **19** मैं मिसालें
देकर आसान शब्दों में तुमसे बात कर
रहा हूँ, क्योंकि तुम सिद्ध नहीं हो। एक
वक्त वह था जब तुमने अपने अंगों को
अशुद्धता और दुराचार की गुलामी करने
के लिए उनके हवाले कर दिया था ताकि
दुराचार करो, उसी तरह अब अपने
अंगों को नेकी के दास होने के लिए
इसके हवाले कर दो, जिससे पवित्रता
हासिल हो। **20** क्योंकि जब तुम पाप
के गुलाम थे, तो नेकी के बंधनों से
आज़ाद थे।

21 तो फिर, पहले तुम्हें इसका क्या
फल मिलता था? ऐसी बातें जिन पर
आज तुम शर्म महसूस करते हो। इसलिए
कि उन बातों का अंजाम तो मौत है।
22 मगर, अब तुम पाप से आज़ाद किए
गए हो और परमेश्वर के दास बन गए
हो, इसलिए अब तुम पवित्रता की राह में
अपना फल पा रहे हो और अंत में हमेशा
की ज़िंदगी पाओगे। **23** क्योंकि पाप
जो मज़दूरी देता है वह मौत है, मगर पर-
मेश्वर जो तोहफा देता है वह हमारे
प्रभु मसीह यीशु के ज़रिए हमेशा की
ज़िंदगी है।

7 भाइयो, क्या ऐसा हो सकता है कि
तुम्हें मालूम न हो (मैं उनसे बात
कर रहा हूँ जो कानून को जानते हैं) कि
कानून का एक इंसान पर तब तक
अधिकार है, जब तक वह ज़िंदा है?
2 मिसाल के लिए, एक शादीशुदा स्त्री
अपने पति के जीते-जी कानूनी तौर पर
उससे बँधी होती है, लेकिन अगर उसका
पति मर जाए, तो वह उसके कानून से
छूट जाती है। **3** अगर वह पति के
जीते-जी किसी और आदमी की हो जाए,
तो व्यभिचारिणी* कहलाएगी। लेकिन
अगर उसका पति मर जाता है, तो वह
उसके कानून से छूट गयी है। इसके बाद
अगर वह किसी और आदमी की हो जाए
तो वह व्यभिचारिणी नहीं है।

4 उसी तरह मेरे भाइयो, तुम मसीह
के शरीर के ज़रिए मूसा के कानून के

रोमि 7:3* या, “शादी के बाहर यौन-संबंध रखने-
वाली।”

संबंध में मर चुके हो, ताकि तुम मसीह
के हो जाओ, यानी उसके जिसे मरे हुओं
में से ज़िंदा किया गया था। इस तरह
हम परमेश्वर की महिमा के लिए फल
पैदा कर सकते हैं। **5** क्योंकि जब हम
शरीर की इच्छाओं के मुताबिक जीते थे,
तब मूसा के कानून के ज़रिए वे पाप-भरी
वासनाएँ ज़ाहिर हुईं, जो हमारे अंगों में
काम कर रही थीं कि हम ऐसे फल पैदा
करें जिनका अंत मौत है। **6** मगर
अब हम इस कानून से आज़ाद हो चुके हैं,
क्योंकि हम जिसके बंधन में थे उसके लिए
मर चुके हैं, ताकि हम लिखित कानून से
पुराने मायने में नहीं बल्कि पवित्र शक्ति
से एक नए मायने में दास बनें।

7 तो फिर, हम क्या कहें? क्या मूसा
के कानून में खोट* है? हरगिज़ नहीं!
दरअसल, अगर कानून न होता, तो मैं
पाप के बारे में कभी न जान पाता।
मिसाल के लिए, अगर कानून में यह
आज्ञा न होतीः "तू लालच न करना,"
तो लालच क्या है यह मैं नहीं जान पाता।
8 मगर कानून की इस आज्ञा की वजह
से बढ़ावा पाकर पाप ने मेरे अंदर हर
तरह का लालच पैदा किया, क्योंकि बिना
कानून के पाप मरा हुआ था। **9** दर-
असल, एक वक्त ऐसा था जब मैं कानून
के बिना ज़िंदा था, मगर जब कानून
की यह आज्ञा आयी, तो पाप फिर
से ज़िंदा हो गया, मगर मैं मर गया।
10 और जो आज्ञा जीवन के लिए थी,
मैंने पाया कि वह मेरे लिए मौत की वजह
बनी। **11** क्योंकि पाप ने इस आज्ञा
से बढ़ावा पाकर मुझे बहकाया और इसके
ज़रिए मुझे मार डाला। **12** जबकि,
जहाँ तक मूसा के कानून की बात है, वह
अपने आप में पवित्र है और यह आज्ञा
पवित्र और सच्ची और अच्छी है।

13 तो फिर जो अच्छा है, क्या वह
मेरे लिए मौत बन गया? हरगिज़ नहीं!
बल्कि पाप मेरे लिए मौत बना, ताकि जो
अच्छा है उससे यह ज़ाहिर हो सके कि
यह पाप है जो मेरे अंदर काम करते हुए
मुझे मौत की तरफ ले जा रहा है और
कानून की आज्ञा के ज़रिए पाप की बुराई
और भी बढ़कर ज़ाहिर हो। **14** हम
जानते हैं कि कानून परमेश्वर की तरफ
से है, मगर मैं असिद्ध* हूँ और पाप के
हाथों बिका हुआ हूँ। **15** मैं क्यों ऐसे
काम करता हूँ, मैं नहीं जानता। क्योंकि
मैं जो करना चाहता हूँ वह नहीं करता,
मगर जिस काम से मुझे नफरत है, वही
करता हूँ। **16** लेकिन अगर मैं वही
करता हूँ जो मैं नहीं करना चाहता,
तो मैं मानता हूँ कि कानून बेहतरीन
है। **17** इसलिए जो यह काम कर रहा
है, अब वह मैं नहीं, बल्कि पाप है
जो मेरे अंदर बसा हुआ है। **18** मैं
जानता हूँ कि मुझमें यानी मेरे शरीर में
कुछ भी अच्छा वास नहीं करता, क्योंकि
भला काम करने की इच्छा तो मेरे अंदर
है, मगर भला काम मुझसे होता नहीं।
19 क्योंकि जो अच्छा काम मैं करना
चाहता हूँ मैं नहीं कर पाता, मगर जो

रोमि 7:7* या, "क्या मूसा का कानून पाप है?"

रोमि 7:14* शाब्दिक, "शारीरिक।"

बुरा काम मैं नहीं करना चाहता, वही
करता रहता हूँ। **20** अगर मैं वही
करता हूँ जो नहीं करना चाहता, तो इसे
करनेवाला अब मैं नहीं बल्कि पाप है जो
मेरे अंदर बसा हुआ है।

21 तो फिर मैं अपने मामले में यह
नियम पाता हूँ: जब मैं अच्छा करना
चाहता हूँ, तो अपने अंदर बुराई को ही
पाता हूँ। **22** मेरे अंदर का इंसान
वाकई परमेश्वर के कानून में खुशी पाता
है **23** मगर मैं अपने अंगों में दूसरे
कानून को काम करता हुआ पाता हूँ,
जो मेरे सोच-विचार पर राज करनेवाले
कानून से लड़ता है और मुझे पाप के उस
कानून का गुलाम बना लेता है जो मेरे
अंगों में है। **24** मैं कैसा लाचार इंसान
हूँ! मुझे इस शरीर से, जो मर रहा है,
कौन छुड़ाएगा? **25** हमारे प्रभु, यीशु
मसीह के ज़रिए परमेश्वर का धन्यवाद
हो! मैं अपने सोच-विचार में तो परमेश्वर
के कानून का गुलाम हूँ, जबकि अपने
शरीर से पाप के कानून का गुलाम हूँ।

8 इसलिए जो मसीह यीशु के साथ
एकता में हैं, उन पर सज़ा का
हुक्म नहीं है। **2** क्योंकि परमेश्वर की
पवित्र शक्ति का वह कानून जो मसीह
यीशु में जीवन देता है, उस कानून ने तुम्हें
पाप और मौत के कानून से आज़ाद
कर दिया है। **3** इसलिए कि मूसा का
कानून इंसानों की असिद्धता की वजह से
कमज़ोर होकर जो न कर पाया, वह पर-
मेश्वर ने किया। परमेश्वर ने अपने बेटे
को हाड़-माँस के इंसान की समानता में
भेजा कि पाप को मिटाए। और इस तरह
उसने शरीर में पाप को सज़ा का हुक्म
सुनाया। **4** ताकि कानून की धर्मी माँगें
हममें यानी जो शरीर के मुताबिक नहीं
बल्कि पवित्र शक्ति के मुताबिक चलते
हैं, पूरी हो सकें। **5** जो शारीरिक हैं
वे शरीर की बातों पर मन लगाते हैं,
मगर जो परमेश्वर की पवित्र शक्ति के
मुताबिक चलते हैं, वे पवित्र शक्ति की
बातों पर मन लगाते हैं। **6** इसलिए
कि शरीर पर मन लगाने का मतलब मौत
है, मगर पवित्र शक्ति की बातों पर मन
लगाने का मतलब जीवन और शांति
है। **7** क्योंकि शरीर की बातों पर
मन लगाना, परमेश्वर से दुश्मनी रखना
है इसलिए कि शरीर न तो परमेश्वर के
कानून के अधीन है, न हो सकता है।
8 तो फिर, जो शरीर के मुताबिक चलते
हैं, वे परमेश्वर को खुश नहीं कर सकते।

9 लेकिन अगर परमेश्वर की पवित्र
शक्ति सचमुच तुममें वास करती है,
तो तुम शरीर के मुताबिक नहीं, बल्कि
पवित्र शक्ति के मुताबिक चलते हो।
लेकिन अगर किसी में मसीह का स्वभाव
नहीं है, तो वह मसीह का नहीं है।
10 लेकिन अगर मसीह तुम्हारे साथ
एकता में है, तो चाहे तुम्हारा शरीर
पाप की वजह से मुरदा है, फिर भी
पवित्र शक्ति तुम्हें जीवन देती है, क्योंकि
तुम परमेश्वर की नज़र में नेक ठहराए
गए हो। **11** अब अगर यीशु को मरे
हुओं में से जी उठानेवाले की पवित्र शक्ति
तुममें वास करती है, तो मसीह यीशु को
मरे हुओं में से जी उठानेवाला, तुम्हारे

नश्वर शरीर को भी अपनी उस पवित्र
शक्ति से ज़िंदा करेगा जो तुममें रहती है।
12 तो फिर भाइयो, हम शरीर के
मुताबिक जीने और उसके काम करने के
लिए मजबूर नहीं हैं। **13** अगर तुम
शरीर के मुताबिक जीते हो तो तुम्हारा
मरना तय है, लेकिन अगर तुम परमेश्वर
की पवित्र शक्ति से शरीर के कामों
को मार देते हो, तो तुम ज़िंदा रहोगे।
14 इसलिए कि जितने परमेश्वर की
पवित्र शक्ति के मार्गदर्शन में चलते हैं,
वे ही परमेश्वर के बेटे हैं। **15** पर-
मेश्वर की पवित्र शक्ति* न तो हमें
गुलाम बनाती है, न ही हमारे अंदर डर
पैदा करती है, बल्कि यह हमारा मार्ग-
दर्शन करती है ताकि हम बेटों के नाते
गोद लिए जाएँ और इस पवित्र शक्ति
की वजह से हम *"अब्बा,* हे पिता!"
पुकारते हैं। **16** परमेश्वर की पवित्र
शक्ति* हमारे अंदर के एहसास के साथ
मिलकर गवाही देती है कि हम परमेश्वर
के बच्चे हैं। **17** तो अगर हम उसके
बच्चे हैं, तो वारिस भी हैं: हाँ, परमेश्वर
के वारिस और मसीह के संगी वारिस,
बशर्ते हम उसके साथ दुःख झेलें ताकि
हम उसके साथ महिमा भी पाएँ।

18 इसलिए, मैं समझता हूँ कि
आज के दौर में हम जो दुःख झेल
रहे हैं वे उस महिमा के आगे कुछ
भी नहीं जो हमारे मामले में ज़ाहिर
होनेवाली है। **19** सृष्टि, परमेश्वर के
बेटों के ज़ाहिर होने का इंतज़ार करते
हुए बड़ी बेताबी से आस लगाए हुए
है। **20** इसलिए कि सृष्टि व्यर्थता के
अधीन की गयी, मगर अपनी मरज़ी
से नहीं बल्कि इसे अधीन करनेवाले
ने आशा के आधार पर इसे अधीन
किया। **21** इस आशा के आधार पर
कि सृष्टि भी भ्रष्टता की गुलामी से
आज़ाद होकर परमेश्वर के बच्चे होने
की शानदार आज़ादी पाएगी। **22** हम
जानते हैं कि सारी सृष्टि अब तक एक-
साथ कराहती और दर्द से तड़पती रहती
है। **23** यही नहीं, मगर हम जिन्हें
अपनी विरासत का पहला फल, यानी
पवित्र शक्ति मिली है, हाँ हम भी अपने
दिलों में कराहते हैं। इस दौरान हम बड़ी
बेचैनी से इंतज़ार कर रहे हैं कि परमेश्वर
हमें अपने बेटों के नाते गोद ले ले और
फिरौती के ज़रिए हमारे शरीरों से छुट-
कारा दिलाए। **24** जब हमें पाप की
गुलामी से छुटकारा दिलाया गया तब हमें
यह आशा थी। मगर जिस चीज़ की आशा
की जाती है, जब वह दिखायी पड़ जाती
है तो वह आशा नहीं रहती, इसलिए कि
इंसान जिसे देख लेता है क्या फिर उसकी
आशा रखता है? **25** लेकिन अगर
हम उसकी आशा रखते हैं जिसे हमने
देखा नहीं, तो हम धीरज के साथ उसका
इंतज़ार करते रहते हैं।

26 इसके अलावा, परमेश्वर की
पवित्र शक्ति भी हमारी कमज़ोरी में
हमारी मदद करती है। क्योंकि समस्या
यह है कि जब हमें प्रार्थना करनी चाहिए,

रोमि 8:15* यूनानी *नफ्मा*। अतिरिक्त लेख 7 देखें।
16* यूनानी *नफ्मा*। अतिरिक्त लेख 7 देखें।

तब हम नहीं जानते कि हम क्या प्रार्थना
करें। मगर पवित्र शक्ति खुद हमारी दबी
हुई आहों के साथ हमारे लिए बिनती
करती है। **27** और दिलों को जाँचने-
वाला जानता है कि पवित्र शक्ति का क्या
मतलब है, क्योंकि यह परमेश्वर की
मरज़ी के मुताबिक पवित्र जनों की खातिर
बिनती करती है।

28 और हम जानते हैं कि जो पर-
मेश्वर से प्यार करते हैं और जो उसके
मकसद के मुताबिक बुलाए गए हैं, उनकी
खातिर परमेश्वर अपने सब कामों के
बीच इस तरह सहयोग कराता है जिससे
इनका भला हो। **29** क्योंकि जिन पर
उसने सबसे पहले ध्यान दिया, उनके
लिए पहले से यह भी तय किया कि वे
ऐसे ढाले जाएँ कि बिलकुल उसके बेटे
जैसे हों, ताकि वह बहुत-से भाइयों में
पहलौठा ठहरे। **30** यही नहीं, जिन्हें
उसने पहले से ठहराया ये वे हैं जिन्हें उसने
बुलाया भी। और जिन्हें उसने बुलाया ये
वे हैं, जिन्हें उसने नेक करार भी दिया।
और जिन्हें उसने नेक करार दिया ये वे
हैं जिन्हें उसने महिमा भी दी।

31 तो फिर, इन बातों के बारे में
हम क्या कहें? अगर परमेश्वर हमारी
तरफ है, तो कौन हमारे खिलाफ कुछ कर
सकेगा? **32** वह जिसने अपना बेटा
तक दे दिया और हम सबके लिए उसे
मौत के हवाले कर दिया, वह हम पर
कृपा करते हुए उसके साथ-साथ हमें बाकी
सबकुछ भी क्यों न देगा? **33** पर-
मेश्वर के चुने हुओं के खिलाफ कौन इल-
ज़ाम लगा सकता है? परमेश्वर है जो
उन्हें नेक करार देता है। **34** कौन है
जो उन्हें सज़ा के लायक ठहराएगा? कोई
नहीं, क्योंकि हमारे लिए मसीह यीशु है
जो मरा, हाँ, जिसे मरे हुओं में से जी
उठाया गया, जो परमेश्वर की दायीं तरफ
है और जो हमारी खातिर बिनती भी
करता है।

35 कौन हमें मसीह के प्यार से
अलग कर सकता है? क्या संकट या
वेदना या ज़ुल्म या भूख या उघाड़ा-
पन या खतरा या तलवार? **36** ठीक
जैसा लिखा है: "तेरी खातिर हम दिन-
भर मौत के हवाले किए जाते हैं, हमें उन
भेड़ों में गिना जाता है जिन्हें काटा जाना
है।" **37** इसके उलट, इन सारी मुसी-
बतों में से हम उसके ज़रिए शानदार जीत
हासिल करते हुए निकलते हैं जिसने
हमसे प्यार किया। **38** इसलिए कि
मुझे यकीन है कि न तो मौत, न ज़िंदगी,
न स्वर्गदूत, न सरकारें, न आज की
चीज़ें, न आनेवाली चीज़ें, न कोई ताकत
39 न ऊँचाई, न गहराई, न ही कोई
और सृष्टि हमें परमेश्वर के उस प्यार से
अलग कर सकेगी जो हमारे प्रभु मसीह
यीशु में है।

9 मैं मसीह में सच कहता हूँ, मैं झूठ
नहीं बोल रहा, इसलिए कि मेरा
ज़मीर मेरे साथ पवित्र शक्ति में गवाही
देता है, **2** कि मुझे गहरा दुःख है और
मेरे दिल में ऐसा दर्द उठता है जो थमने
का नाम नहीं लेता। **3** काश ऐसा
होता कि अपने भाइयों और रिश्तेदारों के

बजाय, मैं वह शापित जन ठहरता जो
मसीह से दूर हो गया है और जिनसे मेरा
खून का रिश्ता है उनके बजाय मुझे
नाश किया जाता। **4** ये इसराएली हैं,
जिन्हें बेटों के तौर पर गोद लिया गया
था। उन्हीं को महिमा, और करार और
मूसा का कानून दिया गया था और पवित्र
सेवा सौंपी गयी थी और उन्हीं से वादे
किए गए थे। **5** हमारे पुरखे भी उन्हीं
में से हैं और उन्हीं के वंश में से मसीह
पैदा हुआ। परमेश्वर जो सबके ऊपर है,
हमेशा-हमेशा के लिए धन्य हो। आमीन।

6 मगर ऐसा नहीं है कि परमेश्वर
का वचन मानो नाकाम हो गया। इसलिए
कि इसराएल के वंश से निकलनेवाले सभी
सचमुच “इसराएली” नहीं हैं। **7** न ही
अब्राहम के वंश के होने की वजह से वे
सभी असल में उसके बच्चे हैं, मगर जैसा
लिखा है: “जो ‘तेरा वंश’ कहलाएगा, वह
इसहाक से होगा।” **8** इसका मतलब
यह है कि जो खून के रिश्ते से अब्राहम
के बच्चे हैं, वे असल में परमेश्वर के बच्चे
नहीं, बल्कि जो परमेश्वर के वादे के
मुताबिक उसके बच्चे हैं, वे ही अब्राहम
का वंश माने जाते हैं। **9** क्योंकि वादे
के शब्द ये थे: “मैं अगले साल इसी वक्त
आऊँगा और सारा एक बेटे को जन्म
देगी।” **10** मगर यह वादा सिर्फ इसी
मामले में नहीं किया गया था, बल्कि तब
भी किया गया था जब रिबका हमारे
पुरखे इसहाक से गर्भवती हुई और उसके
गर्भ में जुड़वाँ बच्चे थे। **11** और यह
वादा उस वक्त किया गया जिस वक्त
तक बच्चे पैदा भी न हुए थे, न ही उन्होंने
कोई अच्छा-बुरा काम ही किया था, ताकि
परमेश्वर के मकसद के मुताबिक चुनाव,
कामों पर निर्भर न होकर उस परमेश्वर
पर निर्भर रहे जो किसी का चुनाव करने
के लिए उसे बुलाता है। **12** रिबका
से कहा गया: “बड़ा, छोटे का दास
होगा।” **13** ठीक जैसा लिखा भी है:
“याकूब से मैंने बहुत प्यार किया, मगर
एसाव से कम*।”

14 तो हम क्या कहें? क्या पर-
मेश्वर अन्याय करता है? हरगिज़ नहीं!
15 इसलिए कि वह मूसा से कहता
है: “मैं जिस किसी पर दया दिखाना
चाहूँ उस पर दया दिखाऊँगा और जिस
किसी पर करुणा करना चाहूँ उस पर
करुणा करूँगा।” **16** तो फिर यह न
तो चाहनेवाले पर निर्भर करता है, न ही
दौड़ में शामिल होनेवाले पर, बल्कि पर-
मेश्वर पर निर्भर करता है जो दया
दिखाता है। **17** इसलिए कि शास्त्रव-
चन फिरौन के बारे में यह कहता है: “मैंने
तुझे इस वजह से अब तक ज़िंदा छोड़ा है,
ताकि तुझे मिसाल बनाकर अपनी शक्ति
दिखाऊँ जिससे मेरा नाम सारी धरती पर
मशहूर हो।” **18** तो फिर, वह जिस
किसी पर चाहता है दया दिखाता है, मगर
जिस किसी के मामले में चाहता है उसका
दिल कठोर होने देता है।

19 इसलिए अब तू मुझसे कहेगा:
“तो फिर क्यों वह इंसानों को अब तक
दोषी ठहराता है? कौन है जो उसकी
ज़ाहिर मरज़ी के खिलाफ खड़ा रह सका

रोमि 9:13* शाब्दिक, “नफरत।”

है?" **20** हे इंसान, तू कौन है जो पर-
मेश्वर को पलटकर जवाब देने की जुर्रत
करता है? क्या ढाली हुई चीज़ अपने
ढालनेवाले से कह सकती है, "तू ने मुझे
ऐसा क्यों बनाया?" **21** क्या कुम्हार
को मिट्टी पर अधिकार नहीं कि वह एक
ही लोंदे से एक बर्तन आदर के काम के
लिए और दूसरा मामूली काम* के लिए
बनाए? **22** तो क्या हुआ अगर पर-
मेश्वर ने अपना क्रोध प्रकट करने और
अपनी शक्ति दिखाने की इच्छा रखते हुए
भी बड़ी सहनशीलता के साथ उन क्रोध
के बर्तनों यानी दुष्ट लोगों को बर-
दाश्त किया जो नाश होने के लायक हैं?
23 क्या हुआ अगर उसने ऐसा इसलिए
किया कि अपनी अपार महिमा दया के
बर्तनों पर ज़ाहिर कर सके जिन्हें उसने
महिमा पाने के लिए पहले से तैयार किया
है, **24** यानी हम पर जिन्हें उसने न
सिर्फ यहूदियों में से बल्कि गैर-यहूदी
राष्ट्रों में से भी बुलाया है? **25** यह
ऐसा ही है जैसा होशे की किताब में भी
वह कहता है: "जो मेरे लोग नहीं हैं,
उन्हें मैं 'अपने लोग' कहूँगा और जो
मेरी प्यारी नहीं थी, उसे 'प्यारी' कहूँगा,
26 और जिस जगह उनसे कहा गया था
कि 'तुम मेरे लोग नहीं हो,' वहाँ वे
'जीवित परमेश्वर के बेटे' कहलाएँगे।"

27 इतना ही नहीं, यशायाह इसरा-
एल के बारे में पुकारकर यह कहता
है: "इसराएल के बेटों की गिनती चाहे
समुद्र की रेत के कणों जितनी अन-
गिनत क्यों न हो, मगर उनमें थोड़े ही
हैं जिन्हें बचाया जाएगा। **28** इसलिए
कि यहोवा उन लोगों से जो धरती पर जी
रहे हैं, हिसाब लेगा और बड़ी तेज़ी से
यह काम पूरा करेगा।" **29** साथ ही,
जैसे यशायाह ने पहले कहा था: "अगर
सेनाओं का यहोवा हमारे लिए एक वंश
न छोड़ता, तो हम बिलकुल सदोम की
तरह हो जाते और हमारा हाल अमोरा
जैसा कर दिया जाता।"

30 तो फिर हम क्या कहें? यही
कि गैर-यहूदी राष्ट्रों के लोग परमेश्वर
की मंज़ूरी पाने की कोशिश नहीं कर
रहे थे, फिर भी परमेश्वर उन्हें अपनी
मंज़ूरी देता है क्योंकि उनमें विश्वास है।
31 लेकिन इसराएल ने मूसा के कानून
पर चलकर परमेश्वर की मंज़ूरी पाने की
कोशिश की, मगर वे इस कानून का पूरी
तरह पालन न कर सके। **32** वजह
क्या थी? क्योंकि उन्होंने विश्वास से
नहीं बल्कि अपने कामों से परमेश्वर
की मंज़ूरी हासिल करनी चाही। उन्होंने
"ठोकर खिलानेवाले पत्थर" पर ठोकर
खायी। **33** जैसा लिखा भी है: "देख!
मैं सिय्योन में ठोकर खिलानेवाला पत्थर
और ठेस पहुँचानेवाली चट्टान रखता हूँ,
मगर जो उस पर विश्वास करेगा वह
निराश न होगा।"

10 भाइयो, मैं दिल से यही चाहता
हूँ और परमेश्वर से उनके
लिए मेरी यही प्रार्थना है कि इसरा-
एली उद्धार पाएँ। **2** इसलिए कि मैं
उनके बारे में गवाही देता हूँ कि वे पर-

रोमि 9:21* शाब्दिक, "अनादर।"

मेश्वर की सेवा के लिए जोश तो रखते
हैं, मगर सही ज्ञान के मुताबिक नहीं।
3 क्योंकि परमेश्वर की नज़र में नेक
ठहरने के लिए क्या ज़रूरी है, यह न
जानते हुए वे खुद को नेक ठहराने की
कोशिश में लगे रहे। इसलिए वे नेक ठह-
राए जाने की परमेश्वर की माँगों के
अधीन न हुए। **4** मसीह की मौत पर
मूसा के कानून का अंत हो गया, ताकि
हर कोई जो मसीह पर विश्वास रखे वह
परमेश्वर की नज़र में नेक ठहरे।

5 हाँ, यह सच है, मूसा ने लिखा
है कि एक इंसान कानून का सख्ती
से पालन करने पर ही परमेश्वर की
नज़र में नेक ठहर सकेगा और जीवन
पाएगा। **6** मगर जो लिखा गया था
उससे यह भी पता चलता है कि पर-
मेश्वर की नज़र में नेक ठहरने के लिए
विश्वास ज़रूरी है। ध्यान दो कि क्या
लिखा है: "अपने दिल में यह न कहो,
'कौन ऊपर स्वर्ग जाएगा?' कि मसीह को
नीचे ले आए। **7** या, 'कौन अथाह-
कुंड में उतरेगा?' ताकि मसीह को मरे
हुओं में से ऊपर ले आए।" **8** मगर
शास्त्र क्या कहता है? यह कहता है: "यह
संदेश तेरे पास, तेरे ही मुँह में और
तेरे ही दिल में है," यानी वह "संदेश"
जिसे विश्वास से स्वीकार किया जाता है
और जिसका हम प्रचार कर रहे हैं।
9 अगर तू सब लोगों के सामने 'अपने
मुँह के इस संदेश' का ऐलान करे कि
यीशु ही प्रभु है और अपने दिल में यह
विश्वास रखे कि परमेश्वर ने उसे मरे
हुओं में से जी उठाया है, तो तू उद्धार
पाएगा। **10** इसलिए कि एक इंसान
परमेश्वर की नज़र में नेक ठहरने के लिए
दिल से विश्वास करता है, मगर उद्धार
पाने के लिए सब लोगों के सामने मुँह से
अपने विश्वास का ऐलान करता है।

11 क्योंकि शास्त्र कहता है: "जो
कोई उसे अपने विश्वास का आधार
बनाता है, वह शर्मिंदा नहीं होगा।"
12 इसलिए कि यहूदी और यूनानी*
के बीच कोई फर्क नहीं, क्योंकि सबके
ऊपर एक ही प्रभु है, जो अपने सब
पुकारनेवालों को ढेरों आशीषें देता है।
13 इसलिए कि लिखा है: "जो कोई
यहोवा का नाम पुकारता है वह उद्धार
पाएगा।" **14** मगर वे उसका नाम
कैसे पुकारेंगे जिस पर उन्होंने विश्वास ही
नहीं किया? और वे उस पर कैसे विश्वास
करेंगे जबकि उन्होंने उसके बारे में सुना
ही नहीं? और वे उसके बारे में कैसे
सुनेंगे जब तक कि कोई प्रचार करने-
वाला न हो? **15** और प्रचार करने-
वाले कैसे प्रचार करेंगे जब तक कि उन्हें
भेजा न जाए? ठीक जैसा लिखा है:
"उनके पाँव कितने सुंदर हैं जो अच्छी
बातों की खुशखबरी सुनाते हैं!"

16 फिर भी, इसराएलियों में
से सबने खुशखबरी स्वीकार नहीं की।
क्योंकि यशायाह कहता है: "यहोवा,
किसने हमारे संदेश पर विश्वास किया
है?" **17** तो संदेश सुनने के बाद ही
विश्वास किया जाता है। और संदेश तब

रोमि 10:12* ज़ाहिर है, यूनानी बोलनेवाले गैर-यहूदी।

सुना जाता है जब कोई मसीह के बारे में
वचन सुनाता है। **18** मगर मैं पूछता
हूँ, क्या उन्होंने संदेश सुना नहीं? बेशक
सुना, क्योंकि लिखा है: "संदेश सुनाने-
वालों की आवाज़ सारी धरती पर गूँज
उठी और उनके वचन धरती के कोने-
कोने तक पहुँच गए।" **19** फिर भी
मैं पूछता हूँ, क्या इसराएली समझ नहीं
पाए? पहले मूसा कहता है: "मैं उन लोगों
के ज़रिए तुम्हारे अंदर जलन पैदा करूँगा
जो एक राष्ट्र तक नहीं। मैं एक मूर्ख
राष्ट्र के ज़रिए तुम्हारे अंदर गुस्से की
आग भड़काऊँगा।" **20** फिर यशा-
याह और भी बेधड़क होकर यह कहता है:
"जिन्होंने मुझे नहीं ढूँढ़ा, उन्होंने मुझे पा
लिया, और जिन्होंने मेरे बारे में न पूछा
उन पर मैं ज़ाहिर हुआ।" **21** लेकिन
इसराएलियों के बारे में वह कहता है:
"मैं दिन-भर ऐसे लोगों के लिए अपनी
बाँहें फैलाए रहा जो मेरी आज्ञा नहीं
मानते और मेरे खिलाफ बोलते हैं।"

11 तो फिर, मैं पूछता हूँ क्या पर-
मेश्वर ने अपने लोगों को ठुकरा
दिया? ऐसा हो नहीं सकता! इसलिए कि
मैं भी तो एक इसराएली हूँ, अब्राहम के
वंश और बिन्यामीन के गोत्र से हूँ।
2 परमेश्वर ने अपने उन लोगों को
नहीं ठुकराया, जिन पर उसने सबसे
पहले खास ध्यान दिया। क्यों, क्या तुम
नहीं जानते कि जब एलिय्याह ने पर-
मेश्वर से इसराएल के खिलाफ बिनती
की थी, तो शास्त्र इस बारे में क्या
कहता है? **3** "हे यहोवा, उन्होंने तेरे
भविष्यवक्ताओं को मार डाला है, उन्होंने
तेरी वेदियों को खोदकर गिरा दिया है
और मैं ही अकेला बचा हूँ और अब वे
मेरी जान लेने के लिए मुझे ढूँढ़ रहे हैं।"
4 लेकिन, परमेश्वर ने उसे क्या जवाब
दिया? "मैंने ऐसे सात हज़ार पुरुषों को
अपने लिए बचा रखा है, जिन्होंने बाल
देवता की पूजा करने के लिए उसके
आगे घुटने नहीं टेके।" **5** इसी तरह,
इस वक्त में भी कुछ बचे हुए ऐसे लोग
हैं जिन्हें परमेश्वर की महा-कृपा की वजह
से चुना गया है। **6** अगर चुना जाना
महा-कृपा की वजह से है, तो फिर अब
यह कामों के आधार पर न रहा, नहीं
तो, महा-कृपा फिर महा-कृपा नहीं रहती।

7 तो फिर, हम क्या कहें? इसराएल
जिस चीज़ की खोज में बड़े जतन से
लगा हुआ था वह उसे हासिल नहीं
हुई, मगर यह चुने हुओं को हासिल
हुई। बाकियों के दिल कठोर हो गए,
8 ठीक जैसा लिखा है: "परमेश्वर ने
उन्हें आध्यात्मिक मायने में गहरी नींद में
डाल दिया है, उनकी आँखें ऐसी हैं
जो देख नहीं सकतीं और कान ऐसे हैं
जो सुन नहीं सकते। आज तक उनकी
हालत ऐसी ही है।" **9** और दाविद
भी कहता है: "उनकी दावत की मेज़
उनके लिए फंदा और जाल और ठोकर
खिलानेवाला पत्थर और सज़ा का कारण
बन जाए। **10** उनकी आँखों में अंधेरा
छा जाए ताकि वे देख न सकें और उनकी
पीठ हमेशा के लिए झुकी रहे।"

11 इसलिए मैं पूछता हूँ, क्या उन्होंने
ऐसी ठोकर खायी कि हमेशा के लिए

गिर पड़ें? हरगिज़ नहीं! मगर उनके
गलत कदम उठाने से गैर-यहूदी राष्ट्रों के
लोगों को उद्धार मिला जिससे यहूदियों में
जलन पैदा हो। **12** अब अगर उनके
गलत कदम उठाने से दुनिया को आशीषें
मिलीं, और उनके घटने से गैर-यहूदी
राष्ट्रों के लोगों ने आशीषें पायीं, तो
उनकी गिनती के पूरा होने से और कितना
फायदा होगा!

13 अब मैं तुमसे बात करता हूँ, तुम
जो गैर-यहूदी राष्ट्रों के लोग हो। क्योंकि
असल में मैं गैर-यहूदी राष्ट्रों के लिए
प्रेषित यानी भेजा हुआ हूँ, और मैं अपनी
सेवा की बड़ाई करता हूँ। **14** और
इस सेवा के ज़रिए मैं कोशिश करता हूँ
कि उनमें, जो मेरे अपने ही लोग हैं,
किसी तरह जलन पैदा कर सकूँ और
उनमें से कुछ का उद्धार करवा सकूँ।
15 इसलिए कि जब उनका त्यागा जाना
दुनिया के लिए परमेश्वर के साथ सुलह
का कारण बना, तो उन्हें स्वीकार किया
जाना उनके लिए जी उठने जैसा क्यों
न होगा, जो मरी हुई हालत में थे?
16 इसके अलावा, अगर पहले फल के
तौर पर ली गयी आटे की लोई पवित्र है,
तो गुँधा हुआ पूरा आटा भी पवित्र है,
और अगर जड़ पवित्र है, तो डालियाँ भी
पवित्र हैं।

17 लेकिन अगर, जैतून के पेड़ की
कुछ डालियाँ तोड़ दी गयीं और तुझे,
जंगली जैतून की डाल होते हुए भी,
बाकी डालियों के बीच कलम लगाया
गया और तू जैतून की जड़ के उत्तम रस*
का हिस्सेदार हो गया है, **18** तो तू
टूटी हुई डालियों के सामने घमंड से
न फूल। अगर तू घमंड करता है, तो
याद रख कि तू जड़ को नहीं, बल्कि
जड़ तुझे संभाले हुए है। **19** फिर तू
कहेगा: "डालियाँ इसलिए तोड़ दी गयीं
ताकि मैं उसमें कलम लगाया जाऊँ।"
20 ठीक है! उनके विश्वास की कमी की
वजह से उन्हें तोड़ा गया मगर तू अपने
विश्वास की वजह से कायम है। घमंड
करना बंद कर, बल्कि सावधान रह।
21 इसलिए कि जब परमेश्वर ने असली
डालियों को न बख्शा, तो तुझे भी न
बख्शेगा। **22** इसलिए परमेश्वर की
कृपा और सख्ती पर ध्यान दे। जो गिर
गए उनके साथ सख्ती बरती गयी, लेकिन
तुझ पर परमेश्वर की कृपा हुई, बशर्ते
कि तू उसकी कृपा में बना रहे, नहीं तो
तू भी काट डाला जाएगा। **23** फिर
अगर वे भी विश्वास दिखाने लगें, तो
उनकी भी कलम लगायी जाएगी। इस-
लिए कि परमेश्वर उन्हें दोबारा कलम
लगाने के काबिल है। **24** इसलिए कि
अगर तुझे जंगली जैतून में से काटकर,
बाग में उगाए गए असली जैतून के पेड़
में प्रकृति के खिलाफ, कलम लगाया गया,
तो ये असली डालियाँ अपने ही जैतून के
पेड़ में और भी आसानी से क्यों न कलम
लगायी जाएँगी!

25 भाइयो, मैं नहीं चाहता कि तुम
अपनी ही नज़र में खुद को बेहद समझदार
मान बैठो और इस पवित्र रहस्य से अन-
जान रहो: इसराएल का एक हिस्सा तब

रोमि 11:17* शाब्दिक, "जड़ की चिकनाई।"

तक कठोर बना रहा जब तक कि गैर-
यहूदी राष्ट्रों के लोगों की पूरी संख्या
न आ गयी, **26** और इस तरह
सारा इसराएल उद्धार पाएगा। ठीक जैसा
लिखा है: “छुड़ानेवाला सिय्योन से आएगा
और याकूब से अभक्ति के काम दूर
करेगा। **27** और जब मैं उनके पापों
को दूर करूँगा, तब उनके साथ मैं एक
करार करूँगा।” **28** सच है कि जहाँ
तक खुशखबरी की बात है, वे परमेश्वर
के दुश्मन हैं और इससे तुम्हें फायदा
हुआ है, मगर जहाँ तक परमेश्वर के
चुनने की बात है, तो उनके बापदादों
को दिए गए वचन की वजह से वे
परमेश्वर के प्यारे हैं। **29** इसलिए
कि वरदानों और बुलावे के मामले में
परमेश्वर अपना फैसला नहीं बदलेगा।
30 क्योंकि ठीक जैसे तुम एक वक्त में
परमेश्वर की आज्ञा नहीं मानते थे, मगर
अब तुम पर इसलिए दया दिखायी जा
रही है, क्योंकि उन्होंने आज्ञा नहीं मानी,
31 वैसे ही इनके आज्ञा न मानने की
वजह से तुम पर दया दिखायी गयी, ताकि
अब खुद उन पर भी दया दिखायी जाए।
32 इसलिए कि परमेश्वर ने, यहूदी और
गैर-यहूदी दोनों को आज्ञा न मानने की
कैद में पड़ने दिया, ताकि वह उन सब
पर दया दिखा सके।

33 वाह! परमेश्वर की दौलत और
बुद्धि और ज्ञान की गहराई क्या ही अथाह
है! उसके फैसले हमारी सोच से कितने
परे और उसके मार्ग कैसे अगम हैं!
34 इसलिए कि “कौन यहोवा के मन
को जान सका है या कौन उसे सलाह देने-
वाला हुआ?” **35** या “कौन है जिसने
उसे पहले कुछ दिया हो जो उसे लौटाया
जाए?” **36** क्योंकि सबकुछ उसी की
तरफ से, उसी के ज़रिए और उसी के
लिए है। उसकी महिमा हमेशा-हमेशा होती
रहे। आमीन।

12 इसलिए भाइयो, मैं तुम्हें पर-
मेश्वर की करुणा का वास्ता
देकर तुमसे गुज़ारिश करता हूँ कि तुम
अपने शरीर को जीवित, पवित्र और पर-
मेश्वर को भानेवाले बलिदान के तौर पर
अर्पित करो। इस तरह तुम अपनी सोचने-
समझने की शक्ति का इस्तेमाल करते हुए
पवित्र सेवा कर सकोगे। **2** और इस
दुनिया की व्यवस्था* के मुताबिक खुद
को ढालना बंद करो, मगर अपने मन को
नयी दिशा देने की वजह से तुम्हारी काया-
पलट होती जाए, ताकि तुम परखकर खुद
के लिए मालूम करते रहो कि परमेश्वर
की भली, उसे भानेवाली और उसकी
सिद्ध# इच्छा क्या है।

3 मुझ पर जो महा-कृपा हुई है,
उसके ज़रिए मैं तुममें से हरेक से, जो
वहाँ हैं, यह कहता हूँ कि कोई भी अपने
आपको जितना समझना चाहिए, उससे
बढ़कर न समझे, बल्कि परमेश्वर ने हरेक
को जो विश्वास बाँटा है उसी के मुता-
बिक समझे, ताकि वह स्वस्थ मन हासिल
करे। **4** इसलिए कि जैसे हमारे एक
ही शरीर में अनेक अंग हैं और सभी अंगों
का काम एक जैसा नहीं है, **5** वैसे ही
हम भी अनेक होते हुए भी मसीह के साथ

रोमि 12:2* या, “ज़माने।” **2#** या “परिपूर्ण।”

एकता में एक शरीर हैं और एक-दूसरे
से जुड़े अंग हैं। **6** तो जब उस महा-
कृपा के मुताबिक जो हमें दिखायी गयी
है, हमें अलग-अलग वरदान मिले हैं,
चाहे भविष्यवाणी का वरदान हो, तो
आओ, उस विश्वास के मुताबिक जो हमें
बाँटा गया है, हम भविष्यवाणी करें।
7 या अगर सेवा का वरदान मिला है,
तो आओ, हम सेवा में लगे रहें। और
जिसे सिखाने का वरदान मिला है, वह
शिक्षा देने में लगा रहे। **8** या जिसे
सीख देकर उकसाने का वरदान मिला है,
वह ऐसा करने में लगा रहे। जो बाँटता
है वह दरियादिली से बाँटे, जो अगुवाई
करता है, वह पूरी मेहनत से करे। जो
दया दिखाता है, वह खुशी-खुशी दया
दिखाए।

9 तुम्हारे प्यार में कपट न हो।
दुष्ट बातों से घिन करो, अच्छी बातों
से लिपटे रहो। **10** आपस में भाइयों
जैसा प्यार दिखाते हुए एक-दूसरे के
लिए गहरा लगाव रखो। एक-दूसरे का
आदर करने में पहल करो। **11** अपने
काम में आलस न दिखाओ। परमेश्वर
की पवित्र शक्ति के तेज से भरे रहो।
यहोवा के दास बनकर उसकी सेवा करो।
12 अपनी आशा की वजह से खुशी
मनाओ। संकट में धीरज धरो। प्रार्थना में
लगे रहो। **13** पवित्र जनों की ज़रूरतें
पूरी करने में मदद करो। मेहमान-नवाज़ी
दिखाने की आदत डालो। **14** जो तुम
पर ज़ुल्म करते हैं, उनके लिए परमेश्वर
से आशीष माँगते रहो। हाँ, आशीष ही
दो, शाप मत दो। **15** खुशी मनाने-
वालों के साथ खुशी मनाओ, रोनेवालों के
साथ रोओ। **16** दूसरों के लिए उसी
तरह महसूस करो जैसा तुम खुद के लिए
करते हो। बड़ी-बड़ी बातों पर मन न
लगाओ, बल्कि जिन बातों* को दीन-हीन
और छोटा समझा जाता है, उनसे लगाव
रखते हुए उनके साथ लगे रहो। अपनी
ही नज़र में खुद को बड़ा समझदार न
समझो।

17 किसी को भी बुराई का बदला
बुराई से न दो। ऐसे काम करने की
कोशिश में रहो जो सबकी नज़र में बढ़िया
हों। **18** जहाँ तक तुमसे हो सके,
सबके साथ शांति बनाए रखने की पूरी
कोशिश करो। **19** हे प्यारो, अपना
बदला मत लेना, मगर परमेश्वर के क्रोध
को मौका दो, क्योंकि लिखा है: “यहोवा
कहता है, बदला देना मेरा काम है,
मैं ही बदला चुकाऊँगा।” **20** लेकिन
“अगर तेरा दुश्मन भूखा हो तो उसे खाना
खिला। अगर वह प्यासा है तो उसे पानी
पिला, इसलिए कि ऐसा करने से तू उसके
सिर पर अंगारों का ढेर लगाएगा।”
21 बुराई से न हारो बल्कि भलाई से
बुराई को जीतते रहो।

13 हर इंसान अपने ऊपर ठह-
राए गए उच्च-अधिकारियों के
अधीन रहे, इसलिए कि ऐसा कोई अधि-
कार नहीं जो परमेश्वर की इजाज़त से
न हो। मौजूदा अधिकारियों को पर-
मेश्वर ने ही उनके मातहत पदों पर रहने
दिया है। **2** इसलिए जो अधिकार का

रोमि 12:16* या, “जिन लोगों।”

विरोध करता है, वह परमेश्वर के ठह-
राए इंतज़ाम के खिलाफ खड़ा होता है।
जो इस इंतज़ाम के खिलाफ खड़े होते हैं
वे सज़ा पाएँगे। **3** राज करनेवाले,
उनके लिए डर की वजह हैं जो बुरे काम
करते हैं, न कि अच्छे काम करनेवालों
के लिए। क्या तू अधिकारी से निडर
रहना चाहता है? तो वही करता रह जो
अच्छा है और तुझे उससे तारीफ मिलेगी।
4 क्योंकि अधिकारी तेरे अच्छे के लिए
परमेश्वर का सेवक है। लेकिन अगर तू
वह करता है जो बुरा है, तो डरः क्योंकि
वह बेवजह हाथ में तलवार लिए हुए नहीं
है। इसलिए कि वह परमेश्वर का सेवक
है और उसके क्रोध के मुताबिक ऐसे
इंसान को सज़ा देता है जो बुराई में लगा
रहता है।

5 इसलिए न सिर्फ उस क्रोध की
वजह से बल्कि अपने ज़मीर की वजह से
भी तुम्हारे लिए अधीन रहना ज़रूरी है।
6 इसी वजह से तुम कर भी अदा करते
हो, क्योंकि वे परमेश्वर के ठहराए जन-
सेवक हैं, जो इसी सेवा में लगे रहते हैं।
7 इसलिए जिसका जो हक बनता है वह
उसे दो। जो कर की माँग करता है उसका
कर अदा करो। जो चुंगी की माँग करता
है, उसे चुंगी दो। जिससे डरना चाहिए,
उससे डरो। जिसे आदर देना चाहिए उसे
वह आदर दो।

8 एक-दूसरे के लिए प्यार को छोड़
किसी भी बात में एक-दूसरे के कर्ज़दार
न बनो। इसलिए कि जो अपने पड़ोसी
से प्यार करता है, उसने परमेश्वर का
कानून पूरा किया है। **9** क्योंकि ये
आज्ञाएँ, "तू शादी के बाहर यौन-संबंध
न रखना, तू खून न करना, तू चोरी न
करना, तू लालच न करना," और इनके
अलावा दूसरी जो भी आज्ञा है, उन
सबका निचोड़ इस एक बात में पाया जाता
है कि "तुझे अपने पड़ोसी से वैसे ही प्यार
करना है जैसे तू खुद से करता है।"
10 प्यार अपने पड़ोसी के बुरे के लिए
काम नहीं करता, इसलिए प्यार करना
कानून को पूरा करना है।

11 ऐसा इसलिए भी करो क्योंकि
तुम जानते हो कि कैसे वक्त में जी रहे
हो। अब तुम्हारे लिए नींद से जाग उठने
की घड़ी आ चुकी है, इसलिए कि जब
हम विश्वासी बने थे, तब के मुकाबले
आज हमारे उद्धार का वक्त और भी
पास आ गया है। **12** रात बहुत बीत
चुकी है, दिन निकलने पर है। इसलिए
आओ हम अंधकार के कामों को उतार
फेंकें और रौशनी के हथियार धारण कर
लें। **13** आओ हम शराफत से चलें,
जैसे दिन के वक्त शोभा देता है, न कि
रंग-रलियाँ मनाएँ और नशेबाज़ी के दौर
चलाएँ, न ही नाजायज़ संबंधों और बद-
चलनी में लगें, न ही झगड़ों और जलन
में। **14** इसके बजाय, प्रभु यीशु मसीह
को पहन लो और शरीर की वासनाओं
को पूरा करने के मनसूबे न बाँधो।

14 जिसका विश्वास कमज़ोर है उसे
स्वीकार करो, मगर उसके निजी
विचारों के बारे में फैसले करने के लिए
नहीं। **2** किसी को विश्वास है कि

सबकुछ खाया जा सकता है, मगर जो
विश्‍वास में कमज़ोर है वह साग-सब्ज़ी
खाता है। **3** खानेवाला, न खानेवाले
को नीचा न समझे, वैसे ही न खानेवाला
उस पर दोष न लगाए जो खाता है,
क्योंकि परमेश्‍वर उसे स्वीकार करता है।
4 तू दूसरे के घर के नौकर को दोषी
ठहरानेवाला कौन होता है? वह खड़ा
रहेगा या गिर जाएगा, इसका फैसला
करना उसके मालिक के हाथों में है। दर-
असल, उसे खड़ा किया जाएगा, क्योंकि
यहोवा उसे खड़ा कर सकता है।

5 कोई आदमी, एक दिन को दूसरे
दिन से बड़ा मानता है, तो दूसरा सभी
दिनों को एक बराबर मानता है। हर एक
इंसान वह करे जिस पर उसे पूरे मन से
यकीन है। **6** जो आदमी किसी दिन
को खास मानता है, वह यहोवा के लिए
मानता है। साथ ही, जो खाता है, वह
यहोवा के आदर के लिए खाता है, क्योंकि
वह परमेश्‍वर को धन्यवाद देकर खाता
है। और जो नहीं खाता वह यहोवा के
लिए नहीं खाता, फिर भी वह परमेश्‍वर
का धन्यवाद करता है। **7** दरअसल
हम में से कोई भी सिर्फ अपने लिए नहीं
जीता, और न ही कोई अपने लिए मरता
है। **8** क्योंकि अगर हम जीते हैं, तो
यहोवा के लिए जीते हैं और अगर मरते
हैं तो यहोवा के लिए मरते हैं। इसलिए
चाहे हम जीएँ या मरें, हम यहोवा ही के
हैं। **9** इसी वजह से मसीह मरा और
फिर जी उठा कि वह मरे हुओं और
जीवितों, दोनों का प्रभु ठहरे।

10 लेकिन तू अपने भाई को क्यों
दोषी ठहराता है? या अपने भाई को क्यों
नीचा समझता है? हम सब परमेश्‍वर
के न्याय-आसन के सामने खड़े होंगे,
11 क्योंकि यह लिखा है: "यहोवा कहता
है, 'बेशक,* हरेक का घुटना मेरे सामने
टिकेगा और हर कोई अपनी ज़बान से
सबके सामने मान लेगा कि मैं ही पर-
मेश्‍वर हूँ।'" **12** तो फिर, हम में से
हरेक इंसान परमेश्‍वर को अपना-अपना
हिसाब देगा।

13 इसलिए अब से हम एक-दूसरे
पर दोष न लगाएँ। इसके बजाय, तुम
यह ठान लो कि किसी भाई को ठोकर
न खिलाओगे, न ही गिरने की वजह
दोगे। **14** मैं जानता हूँ और प्रभु यीशु
में मुझे यकीन है कि कोई भी चीज़
अपने आप में अशुद्ध नहीं है, मगर जो
उसे अशुद्ध समझता है उसके लिए वह
चीज़ अशुद्ध है। **15** क्योंकि अगर
तेरे खाने की वजह से तेरे भाई को ठेस
पहुँचती है, तो तू अब प्यार की राह पर
नहीं चल रहा। जिसके लिए मसीह ने
अपनी जान दी है, तू अपने खाने के
ज़रिए उसे नाश न कर। **16** इसलिए
तुम लोग जो अच्छा काम करते हो, उसकी
बदनामी न होने दो। कहीं ऐसा न हो
कि यह तुम्हारे लिए नुकसानदेह हो।
17 इसलिए कि परमेश्‍वर के राज का
मतलब खाना-पीना नहीं, बल्कि नेकी,
शांति, और वह खुशी है जो परमेश्‍वर की
पवित्र शक्‍ति से मिलती है। **18** जो

रोमि 14:11* शाब्दिक, "जैसे मेरा जीवन अटल है, वैसे ही यह बात अटल है कि . . ."

इस तरीके से मसीह का दास बनकर
उसकी सेवा करता है, वह परमेश्वर को
भाता है और इंसानों से तारीफ पाता है।
19 तो आओ हम उन बातों में लगे
रहें जिनसे शांति कायम होती है और
एक-दूसरे का हौसला मज़बूत होता है।*
20 खाने की खातिर, परमेश्वर के काम
को बरबाद मत करो। माना कि सब चीज़ें
शुद्ध हैं, मगर ये तब नुकसानदेह हो जाती
हैं जब एक इंसान का खाना दूसरे के लिए
ठोकर की वजह बनता है। **21** अच्छा
तो यह है कि तू न माँस खाए, न दाख-
मदिरा पीए, न ही ऐसा कुछ करे जिससे
तेरे भाई को ठोकर लगे। **22** इन
चीज़ों के बारे में तेरा जो विश्वास है,
उसे परमेश्वर के सामने अपने तक ही
सीमित रख। सुखी है वह इंसान जो
उस बात में जिसे वह ठीक समझता है,
अपने आप को दोषी नहीं ठहराता।
23 लेकिन अगर उसके मन में शंका है,
फिर भी वह खाता है तो वह दोषी ठहर
चुका है, क्योंकि वह विश्वास से नहीं
खाता। वाकई, हर वह चीज़ जो विश्वास
से नहीं है, पाप है।

15 लेकिन हम जो विश्वास में मज़-
बूत हैं, हमें चाहिए कि हम
उनकी कमज़ोरियाँ सहें जो मज़बूत नहीं
हैं, न कि खुद को खुश करने की सोचें।
2 हरेक अपने पड़ोसी को उन बातों में
खुश करे जो उसके भले के लिए हैं
और जिनसे उसे मज़बूती मिलती है।
3 इसलिए कि मसीह ने भी खुद को खुश
नहीं किया, बल्कि ठीक जैसा लिखा है:
"जो तेरी निंदा करते थे, उनकी निंदा भरी
बातें मुझ पर आ पड़ी हैं।" **4** जो बातें
पहले लिखी गयी थीं, वे सब हमारी
हिदायत के लिए लिखी गयी थीं, ताकि
इनसे हमें धीरज धरने में मदद मिले और
हम शास्त्र से दिलासा पाएँ, और इनके
ज़रिए हम आशा रख सकें। **5** धीरज
और दिलासा देनेवाला परमेश्वर तुम्हें
ऐसी आशीष दे कि तुम्हारे मन का स्वभाव
वैसा ही हो जैसा मसीह यीशु का था,
6 ताकि तुम सब एक मन से और एक
आवाज़ में हमारे प्रभु यीशु मसीह के पर-
मेश्वर और पिता की महिमा करो।
7 इसलिए, परमेश्वर की महिमा के
लिए एक-दूसरे को अपना लो,* ठीक
जैसे मसीह ने भी हमें अपनाया है।#
8 मैं कहता हूँ कि मसीह असल में खतना
पानेवालों का सेवक बना ताकि यह गवाही
दे कि परमेश्वर सच्चा है और परमेश्वर
ने उनके बापदादों से जो वादे किए थे वे
भरोसे के लायक हैं, **9** और इसलिए
भी कि गैर-यहूदी राष्ट्र परमेश्वर की दया
के लिए उसकी बड़ाई करें। ठीक जैसा
लिखा है: "इसीलिए मैं राष्ट्रों के बीच
सरेआम तेरी तारीफ करूँगा और तेरे
नाम का गीत गाऊँगा।" **10** फिर वह
कहता है: "हे राष्ट्रो, उसके लोगों के साथ
मग्न हो।" **11** और फिर कहता है:
"हे सभी राष्ट्रो, यहोवा का गुणगान करो,
और सारे लोग उसका गुणगान करें।"
12 और फिर यशायाह कहता है: "यिशै

रोमि 14:19* या, "निर्माण होता है।"

रोमि 15:7* या, "स्वागत करो।" **7#** या, "स्वागत किया।"

की जड़ प्रकट होगी और राष्ट्रों पर राज
करनेवाला एक खड़ा होगा और राष्ट्र उस
पर आशा रखेंगे।” **13** मेरी दुआ है
कि आशा देनेवाला परमेश्वर, तुम्हारे
विश्वास करने की वजह से तुम्हें सारी
खुशी और शांति से भर दे, ताकि पवित्र
शक्ति की ताकत से तुम्हारी आशा बढ़ती
ही जाए।

14 भाइयो, मुझे तुम्हारे बारे में
यकीन है कि तुम खुद भलाई से और सारे
ज्ञान से भरपूर हो और एक-दूसरे को
सीख भी दे सकते हो। **15** फिर भी
मैं कुछ बातों के बारे में तुम्हें खुलकर
लिख रहा हूँ, मानो तुम्हें फिर से याद दिला
रहा हूँ, क्योंकि मुझे परमेश्वर की तरफ
से महा-कृपा हासिल हुई है। **16** यह
महा-कृपा मुझे इसलिए दी गयी कि मैं
मसीह यीशु के एक जन-सेवक के नाते
गैर-यहूदी राष्ट्रों में परमेश्वर की खुश-
खबरी सुनाने का पवित्र काम करूँ। यह
काम मैं इसलिए करता हूँ ताकि गैर-यहूदी
राष्ट्र एक ऐसी भेंट के तौर पर परमेश्वर
को चढ़ाए जाएँ जो उसे स्वीकार हो और
पवित्र शक्ति से पवित्र ठहरायी गयी हो।

17 इसलिए जब परमेश्वर की सेवा
से जुड़ी बात आती है, तो मैं मसीह
यीशु का चेला होने पर गर्व करता हूँ।
18 जो काम मसीह ने मेरे ज़रिए किए
हैं, उनके बारे में बताने के अलावा मैं
कुछ और कहने की जुर्रत नहीं करूँगा।
मसीह ने मेरे ज़रिए काम किया कि
गैर-यहूदी राष्ट्रों को आज्ञाकारी बनाए।
उसने मेरे वचनों और कामों के ज़रिए,
19 चमत्कारों और आश्चर्य के कामों की
ताकत से और पवित्र शक्ति की ताकत
से ऐसा किया है। मैंने यरूशलेम से इल्लु-
रिकुम के बीच चारों तरफ मसीह के बारे
में खुशखबरी का अच्छी तरह प्रचार किया
है। **20** वाकई, इस तरह मैंने अपना
यह लक्ष्य बनाया है कि मैं ऐसे इलाकों
में खुशखबरी न सुनाऊँ जहाँ मसीह के
नाम का प्रचार पहले ही हो चुका है, ताकि
मैं किसी दूसरे की डाली हुई नींव पर इमा-
रत खड़ी न करूँ। **21** इसके बजाय,
मैंने वैसा ही करने का लक्ष्य बनाया है
जैसा लिखा है: “जिन्हें उसके बारे में कभी
नहीं बताया गया, वे देखेंगे और जिन्होंने
नहीं सुना वे समझेंगे।”

22 इसलिए मुझे तुम्हारे पास आने से
बहुत बार रोका भी गया। **23** मगर
अब इन प्रांतों में मेरे पास कोई अनछूआ
इलाका नहीं बचा और मैं कुछ साल से
तुम्हारे पास आने के लिए तरस भी रहा
था। **24** इसलिए सबसे बढ़कर मेरी
यही आशा है कि जब कभी मैं स्पेन के
सफर पर निकलूँ, तो रास्ते में तुम्हारे पास
आऊँ ताकि कुछ वक्त के लिए तुम्हारी
संगति का आनंद लेकर अपना जी भर
सकूँ, जिसके बाद तुम मुझे कुछ दूर आगे
तक पहुँचा देना। **25** लेकिन अभी मैं
पवित्र जनों की सेवा करने के लिए
यरूशलेम के सफर पर जानेवाला हूँ।
26 यरूशलेम के पवित्र जनों में जो
गरीब हैं उनके लिए मकिदुनिया और
अखया के रहनेवालों ने अपनी संपत्ति में
से खुशी-खुशी दान दिया है। **27** सच
है कि उन्होंने ऐसा करने से खुशी पायी
है, फिर भी असल में वे उनके कर्ज़दार

थे। क्योंकि जब गैर-यहूदी राष्ट्रों ने पर-
मेश्वर से मिले उन वरदानों में हिस्सा पाया
जो यरूशलेम के पवित्र जनों को मिले थे,
तो उनका भी यह फर्ज़ बनता है कि वे
उनके तन की ज़रूरतें पूरी करने के लिए
दान दें। **28** इसलिए मैं यह काम पूरा
करने और खुद ही उन तक यह दान पहुँ-
चाने के बाद, तुम्हारे यहाँ से होता हुआ
स्पेन जाऊँगा। **29** और मैं जानता हूँ
कि जब मैं तुम्हारे पास आऊँगा, तो मसीह
की तरफ से भरपूर आशीष के साथ
आऊँगा।

30 अब मेरे भाइयो, हमारे प्रभु
यीशु मसीह में तुम्हारे विश्वास और उस
प्यार के ज़रिए जो पवित्र शक्ति ने
तुम्हारे अंदर पैदा किया है, मैं तुम्हें उक-
साता हूँ कि तुम मेरे लिए परमेश्वर से
प्रार्थना करने में मेरे साथ तन-मन से
लगे रहो **31** कि परमेश्वर मुझे यहू-
दिया के अविश्वासियों के हाथों में पड़ने
से बचाए और मेरी सेवा जो यरूशलेम के
लिए है वह पवित्र जनों को स्वीकार हो,
32 ताकि जब मैं परमेश्वर की मरज़ी
से खुशी-खुशी तुम्हारे पास आऊँ, तो
तुम्हारी संगति से तरो-ताज़ा हो जाऊँ।
33 दुआ करता हूँ कि शांति देनेवाला
परमेश्वर तुम सबके साथ रहे। आमीन।

16 मैं तुम्हारे पास हमारी बहन फीबे
को भेज रहा हूँ जो किंख्रिया की
मंडली* में सेवा करती है। मैं तुमसे गुज़ा-
रिश करता हूँ कि **2** प्रभु में उसका वैसे
ही स्वागत करो जैसे पवित्र जनों का
किया जाना चाहिए, और अगर किसी भी
काम में उसे तुम्हारी ज़रूरत पड़े तो
उसकी मदद करना, क्योंकि वह खुद भी
बहुतों की, और हाँ, मेरी भी मददगार*
साबित हुई है।

3 प्रिसका और अक्विला को, जो
मसीह यीशु में मेरे सहकर्मी हैं,
मेरा नमस्कार। **4** उन्होंने मेरी जान
बचाने के लिए खुद अपनी जान*
जोखिम में डाल दी, और सिर्फ मैं ही नहीं
बल्कि गैर-यहूदी राष्ट्रों की सभी मंड-
लियाँ भी उनका धन्यवाद करती हैं।
5 उनके घर में इकट्ठा होनेवाली मंडली
को भी नमस्कार। मेरे प्यारे इपैनितुस
को भी नमस्कार जो मसीह के लिए
एशिया* का पहला फल है। **6** मरि-
यम को नमस्कार, जिसने तुम्हारे लिए
बहुत मेहनत की है। **7** मेरे रिश्तेदार
अन्द्रुनीकुस और यूनियास को नमस्कार,
जो मेरे साथ कैद में थे और जिनका
प्रेषितों के बीच बड़ा नाम है और जो
मुझसे भी पहले से मसीह के चेले हैं।*

8 प्रभु में मेरे प्यारे अम्पलियातुस
को मेरा नमस्कार। **9** मसीह में हमारे
सहकर्मी उरबानुस और मेरे प्यारे
इस्तखुस को नमस्कार। **10** अपि-
ल्लेस को नमस्कार, जो मसीह में
खरा निकला है। जो अरिस्तुबुलुस के
घराने से हैं, उन्हें नमस्कार। **11** मेरे
रिश्तेदार हेरोदियोन को नमस्कार। नर-
किस्सुस के घराने के जो लोग प्रभु में

रोमि 16:1* मत्ती 16:18 दूसरा फुटनोट देखें।

रोमि 16:2* या, "हिमायती।" **4*** शाब्दिक, "अपनी गरदन।" **5*** प्रेषि 2:9 फुटनोट देखें। **7*** शाब्दिक, "के साथ एकता में हैं।"

हैं, उनको नमस्कार। **12** प्रभु में कड़ी
मेहनत करनेवाली त्रूफैना और त्रूफोसा
को नमस्कार। हमारी प्यारी पिरसिस को
नमस्कार, जिसने प्रभु में कड़ी मेहनत की
है। **13** प्रभु में चुने हुए रूफुस को
और उसकी माँ को जो मेरी भी माँ
समान है, नमस्कार। **14** असुक्रितुस
और फिलगोन और हिरमेस और पत्रु-
बास और हिरमास और उनके साथ के
भाइयों को नमस्कार। **15** फिलुलुगुस
और यूलिया, नेरयुस और उसकी बहन,
और उलुम्पास और उनके साथ के सभी
पवित्र जनों को नमस्कार। **16** पवित्र
चुंबन के साथ एक-दूसरे को नमस्कार
करो। मसीह की सारी मंडलियाँ तुम्हें
नमस्कार भेजती हैं।

17 भाइयो, अब मैं तुम्हें उकसाता हूँ
कि जो लोग उस शिक्षा के खिलाफ जो
तुमने पायी है, मंडली में फूट डालते और
किसी के लिए विश्वास की राह छोड़ देने
की वजह* बनते हैं, उन पर नज़र
रखो और उनसे कोई वास्ता न रखो।
18 क्योंकि इस तरह के आदमी हमारे
प्रभु मसीह के नहीं, बल्कि अपने पेट के
ही गुलाम हैं और वे अपनी चिकनी-चुपड़ी
बातों और तारीफों से सीधे-सादे लोगों के
दिलों को बहका देते हैं। **19** तुम्हारे
आज्ञा मानने की चर्चा सब लोगों में फैल
गयी है। इसलिए मैं तुम्हारी वजह से खुशी
मनाता हूँ। लेकिन मैं चाहता हूँ कि तुम
अच्छी बातों के मामले में बुद्धिमान बनो,
मगर बुरी बातों के मामले में मासूम रहो।
20 शांति देनेवाला परमेश्वर बहुत जल्द
शैतान को तुम्हारे पैरों तले कुचल देगा।
हमारे प्रभु यीशु की महा-कृपा तुम्हारे साथ
बनी रहे।

21 मेरा सहकर्मी, तीमुथियुस और
मेरे रिश्तेदार लूकियुस और यासोन और
सोसिपत्रुस का तुम्हें नमस्कार।

22 यह चिट्ठी लिखनेवाले मुझ तिर-
तियुस का प्रभु में तुम्हें नमस्कार।

23 गयुस, जो मेरा और सारी
मंडली का मेज़बान है, तुम्हें नमस्कार
भेजता है। इरास्तुस जो शहर का खजांची
है, और उसके भाई क्वारतुस का तुम्हें
नमस्कार। **24*** ——

25 परमेश्वर तुम्हें, यीशु मसीह के
बारे में प्रचार से जुड़ी उस खुशखबरी के
मुताबिक मज़बूत कर सकता है, जिसका
मैं ऐलान करता हूँ। यह खुशखबरी पवित्र
रहस्य की उन बातों के मुताबिक है
जो ज़ाहिर की गयी हैं। इस पवित्र रहस्य
को पुराने ज़माने से राज़ रखा गया है,
26 मगर अब इसे ज़ाहिर किया जा रहा
है और सदा कायम रहनेवाले परमेश्वर
की आज्ञा के मुताबिक भविष्यवक्ताओं के
लेखों के ज़रिए सब राष्ट्रों को बताया जा
रहा है जिससे वे विश्वास करें और आज्ञा
माननेवाले बन जाएँ। **27** उसी एक-
मात्र बुद्धिमान परमेश्वर की यीशु मसीह
के ज़रिए हमेशा-हमेशा के लिए महिमा
होती रहे। आमीन।

रोमि 16:17* शाब्दिक, "ठोकर खाने की वजह।"

रोमि 16:24* सबसे पुरानी यूनानी हस्तलिपियों में ये शब्द "हमारे प्रभु यीशु की महा-कृपा तुम्हारे साथ बनी रहे। आमीन" नहीं पाए जाते, यही शब्द आयत 20 के आखिर में हैं।

कुरिंथियों के नाम पहली चिट्ठी

1 मैं पौलुस, जो परमेश्वर की मरज़ी
से यीशु मसीह का प्रेषित* होने के
लिए बुलाया गया हूँ, हमारे भाई सोस्थि-
नेस के साथ, **2** तुम्हें जो कुरिंथ में
परमेश्वर की मंडली* में हो, यह चिट्ठी
लिख रहा हूँ। तुम मसीह यीशु के चेले
होने के नाते पवित्र किए गए हो और
पवित्र जन होने के लिए बुलाए गए हो।
साथ ही, उन सभी भाइयों को भी लिख
रहा हूँ जो हर कहीं हमारे प्रभु यीशु मसीह
का नाम ले रहे हैं, जो हमारा और उनका
भी प्रभु है:

3 परमेश्वर हमारे पिता की तरफ से
और प्रभु यीशु मसीह की तरफ से तुम्हें
महा-कृपा और शांति मिले।

4 परमेश्वर की उस महा-कृपा को
देखते हुए जो उसने मसीह यीशु के ज़रिए
तुम्हें दी है मैं हमेशा परमेश्वर का धन्य-
वाद करता हूँ। **5** उसने तुम्हें मसीह
में हर बात में, यानी वचन सुनाने की पूरी
काबिलीयत में और पूरे ज्ञान में माला-
माल किया है, **6** क्योंकि तुम्हारे बीच
मसीह के बारे में गवाही अच्छी तरह जड़
पकड़ चुकी है। **7** जिससे कि इस
दौरान जब तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह
के ज़ाहिर होने का बेताबी से इंतज़ार
कर रहे हो, तुम में किसी भी वरदान
की कोई कमी न पायी जाए। **8** पर-
मेश्वर तुम्हें आखिर तक मज़बूत भी
करेगा, ताकि हमारे प्रभु यीशु मसीह के
दिन में तुम निर्दोष ठहरो। **9** पर-
मेश्वर विश्वासयोग्य है, उसने तुम्हें अपने
बेटे और हमारे प्रभु यीशु मसीह के साथ
साझेदार होने के लिए बुलाया है।

10 अब हे भाइयो, मैं तुम्हें हमारे
प्रभु यीशु मसीह के नाम से उकसाता हूँ
कि तुम सब एक ही बात कहो और
तुम्हारे बीच फूट न हो, बल्कि तुम्हारे
विचारों और सोचने के तरीके में पूरी
तरह से एकता हो। **11** इसलिए कि
मेरे भाइयो, खलोए के घर के लोगों ने
मुझे तुम्हारे बारे में बताया है कि तुम्हारे
बीच झगड़े हो रहे हैं। **12** मेरे कहने
का मतलब यह है कि तुममें से कोई कहता
है: "मैं पौलुस का चेला हूँ," तो कोई
"मैं अपुल्लोस का चेला हूँ," और कोई
"मैं कैफा का चेला हूँ," "मैं मसीह का
चेला हूँ।" **13** मसीह तुम्हारे बीच बँट
गया है। क्या तुम्हारी खातिर पौलुस
सूली पर चढ़ा था? या क्या तुम्हें पौलुस
के नाम से बपतिस्मा दिया गया था?
14 मैं परमेश्वर का शुक्रगुज़ार हूँ कि
मैंने तुममें से क्रिसपुस और गयुस को छोड़
किसी और को बपतिस्मा नहीं दिया,
15 ताकि कोई यह न कह सके कि तुम्हें
मेरे नाम से बपतिस्मा मिला। **16** हाँ,

1कुरिं 1:1* या, "भेजा गया।" यूनानी में *"अपोस्टो-
लोस।"* **2*** मत्ती 16:18 दूसरा फुटनोट देखें।

मैंने स्तिफनास के घराने को भी बपतिस्मा
दिया। इनको छोड़ मैं नहीं जानता कि
मैंने किसी और को बपतिस्मा दिया हो।
17 इसलिए कि मसीह ने मुझे बपतिस्मा
देने के लिए नहीं, बल्कि खुशखबरी सुनाने
के लिए भेजा है और यह मुझे विद्वानों
की भाषा में नहीं सुनानी है ताकि मसीह
की यातना की सूली[*] बेकार न ठहरे।

18 इसलिए कि यातना की सूली का
संदेश उन लोगों के लिए मूर्खता है जो
विनाश की तरफ जा रहे हैं, मगर यह
हम उद्धार पानेवालों के लिए परमेश्वर
की ताकत है। **19** यह लिखा है: "मैं
बुद्धिमानों की बुद्धि को नाश कर दूँगा
और ज्ञानियों के ज्ञान को रद्द कर दूँगा।"
20 कहाँ रहा इस ज़माने[*] का बुद्धि-
मान? कहाँ रहा कानून जाननेवाला?[#]
कहाँ रहा बहस करनेवाला? क्या पर-
मेश्वर ने साबित नहीं कर दिया कि इस
दुनिया की बुद्धि, मूर्खता है? **21** इस-
लिए कि परमेश्वर की बुद्धि इस बात से
दिखायी देती है कि जब यह दुनिया अपनी
बुद्धि से परमेश्वर को जान न पायी, तो
परमेश्वर को यह अच्छा लगा कि जिस
संदेश का हम प्रचार करते हैं और जो
लोगों को मूर्खता लगता है, उस पर
विश्वास करनेवालों का वह उद्धार करे।

22 इसलिए कि यहूदी चमत्कारों की
माँग करते हैं और यूनानी बुद्धि की बातों
की तलाश में रहते हैं, **23** मगर हम
सूली पर चढ़ाए गए मसीह का प्रचार
करते हैं जो यहूदियों के लिए ठोकर की
वजह है, मगर गैर-यहूदियों के लिए
मूर्खता। **24** लेकिन, जो बुलाए गए
हैं, यहूदी और यूनानी दोनों के लिए
मसीह, परमेश्वर की शक्ति और पर-
मेश्वर की बुद्धि है। **25** क्योंकि लोग
जिसे परमेश्वर की मूर्खता समझते हैं, वह
इंसानों की बुद्धि से ज़्यादा बुद्धिमान है
और लोग जिसे परमेश्वर की कमज़ोरी
समझते हैं, वह इंसानों की ताकत से कहीं
ज़्यादा ताकतवर है।

26 इसलिए कि भाइयो, तुम अपने
ही बुलाए जाने के मामले में देख सकते
हो कि परमेश्वर ने ऐसे बहुतों को नहीं
बुलाया जो इंसान की नज़र से बुद्धिमान
हैं, न ही ताकतवरों को, न ही ऊँचे खान-
दान में पैदा होनेवालों को। **27** मगर
परमेश्वर ने दुनिया के मूर्खों को चुना,
ताकि वह बुद्धिमानों को शर्मिंदा कर सके
और परमेश्वर ने दुनिया के कमज़ोरों को
चुना ताकि ताकतवरों को शर्मिंदा कर
सके। **28** परमेश्वर ने दुनिया के गए-
गुज़रों को और जिन्हें नीची नज़र से देखा
जाता है और जो लोग[*] मानो हैं ही नहीं
ऐसों को चुना, ताकि जो हैं[#] उन्हें वह
बेकार साबित कर सके, **29** ताकि
कोई इंसान परमेश्वर के सामने शेखी न
मार सके। **30** मगर तुम परमेश्वर की
वजह से ही मसीह यीशु के चेले हो,[*]
जो हमारे लिए परमेश्वर की तरफ से

1कुरिं 1:17[*] अतिरिक्त लेख 6 देखें। **20[*]** या, "दुनिया की व्यवस्था।" **20[#]** शाब्दिक, "शास्त्री।"

1कुरिं 1:28[*] शाब्दिक, "जो चीज़ें हैं ही नहीं।" **28[#]** शाब्दिक, "जो चीज़ें हैं।" **30[*]** शाब्दिक, "के साथ एकता में हो।"

बुद्धि साथ ही नेकी बन गया और हमारे
पवित्र ठहराए जाने का और फिरौती के
ज़रिए छुटकारा पाने का ज़रिया बना,
31 ताकि वैसा ही हो जैसा लिखा है:
"जो शेखी मारता है, वह यहोवा* की
वजह से शेखी मारे।"

2 इसलिए भाइयो, जब मैं तुम्हारे पास
परमेश्वर का पवित्र रहस्य सुनाता
हुआ आया, तो लच्छेदार भाषा या बुद्धि
का दिखावा करता हुआ नहीं आया।
2 क्योंकि जब मैं तुम्हारे साथ था तो मैंने
तय किया था कि यीशु मसीह और
उसके सूली पर चढ़ाए जाने को छोड़
किसी और बात पर तुम्हारा ध्यान न
खींचूं। **3** मैं बहुत कमज़ोरी और डर
के साथ थरथराता हुआ तुम्हारे पास
आया। **4** मैंने जो बातें कहीं और जो
प्रचार किया वह बुद्धि से भरे कायल
करनेवाले शब्दों के साथ नहीं था, बल्कि
मेरे वचनों ने परमेश्वर की पवित्र
शक्ति और ताकत को ज़ाहिर किया,
5 ताकि तुम्हारा विश्वास इंसानों की
बुद्धि पर नहीं, बल्कि परमेश्वर की ताकत
पर हो।

6 जो सयाने और समझदार हैं, हम
उनके बीच बुद्धि की बातें करते हैं, मगर
न तो इस ज़माने* की बुद्धि के बारे में,
न ही इस ज़माने में राज करनेवालों की
बुद्धि के बारे में, जो मिटनेवाले हैं।
7 बल्कि हम एक पवित्र रहस्य में पर-
मेश्वर की बुद्धि, हाँ, उस छिपी हुई बुद्धि
के बारे में बताते हैं। परमेश्वर ने इसे
दुनिया की व्यवस्थाओं की शुरूआत के
पहले से ठहराया था। उसने यह इसलिए
किया ताकि हम आदर पाएँ। **8** इस
बुद्धि को इस ज़माने* में राज करने-
वालों में से कोई न जान सका, क्योंकि
अगर वे इसे जानते, तो वे महिमावान
प्रभु को सूली पर न चढ़ाते। **9** मगर
ठीक जैसा लिखा है: "जो बातें आँखों ने
नहीं देखीं और कानों ने नहीं सुनीं, न
ही जिनका खयाल इंसान के दिल में
आया, उन्हीं बातों को परमेश्वर ने उनके
लिए तैयार किया है जो उससे प्यार
करते हैं।" **10** इसलिए कि परमेश्वर
ने हम पर अपनी पवित्र शक्ति के ज़रिए
ये बातें ज़ाहिर की हैं, क्योंकि उसकी
पवित्र शक्ति सब बातों की खोजबीन
करती है, यहाँ तक कि परमेश्वर के गहरे
रहस्यों की भी।

11 इंसानों में कौन जानता है कि
किसी इंसान के दिल में क्या है, सिवा
उसके अंदर के इंसान* के? वैसे ही, पर-
मेश्वर के दिल में क्या है, यह कोई नहीं
जान पाया है, सिवा उसकी पवित्र शक्ति
के। **12** हमने दुनिया की फितरत नहीं
पायी बल्कि वह पवित्र शक्ति पायी है जो
परमेश्वर की तरफ से है, ताकि हम उन
बातों को जान सकें जो परमेश्वर ने
हम पर कृपा करते हुए हमें दी हैं।

1कुरिं 1:31* यह उन 237 जगहों में से एक जगह है, जहाँ परमेश्वर का नाम, 'यहोवा' इस अनुवाद के मुख्य पाठ में पाया जाता है। अतिरिक्त लेख 2 देखें। **2:6*** या, "दुनिया की व्यवस्था।"

1कुरिं 2:8* या, "दुनिया की व्यवस्था।" **11*** यूनानी में, *नफ्मा।*

13 यही बातें हम बताते भी हैं, मगर इंसान की बुद्धि के सिखाए शब्दों से नहीं बल्कि पवित्र शक्ति के सिखाए शब्दों से, क्योंकि हम परमेश्वर के शब्दों* से परमेश्वर की बातें समझाते हैं।

14 मगर दुनियावी ख्वाहिशें रखनेवाला* इंसान परमेश्वर की पवित्र शक्ति की बातें स्वीकार नहीं करता, क्योंकि उसकी नज़र में ये मूर्खता की बातें हैं। वह इन बातों को जान नहीं सकता, क्योंकि इन्हें परमेश्वर की पवित्र शक्ति की मदद से ही जाँचा-परखा जाता है।
15 मगर परमेश्वर की पवित्र शक्ति के मार्गदर्शन में चलनेवाला इंसान सबकुछ जाँच-परख सकता है, मगर वह खुद किसी इंसान के ज़रिए जाँचा-परखा नहीं जाता।
16 क्योंकि "कौन है जो यहोवा का मन जान सका है कि वह उसे हिदायत दे सके?" मगर हमारे पास मसीह का मन है।

3 इसलिए भाइयो, मैं तुमसे ऐसे बात न कर सका जैसे उन लोगों से, जो परमेश्वर की पवित्र शक्ति के मार्गदर्शन में चलते हैं, बल्कि मुझे ऐसे बात करनी पड़ी जैसे दुनियावी* लोगों से और उनसे जो मसीह में बच्चे हैं। **2** मैंने तुम्हें दूध ही दिया, न कि कुछ ठोस खाना, क्योंकि तुम उस वक्त उसे पचाने के काबिल नहीं थे। दरअसल तुम अब भी काबिल नहीं हो। **3** इसलिए कि तुम अब तक दुनियावी हो। तुम्हारे बीच जलन है और तकरार हो रही है, तो क्या तुम दुनियावी लोगों जैसे नहीं हो और क्या तुम इंसानों की लीक पर नहीं चल रहे? **4** इसलिए कि जब एक कहता है: "मैं पौलुस का चेला हूँ," मगर दूसरा कहता है: "मैं अप्पुलोस का हूँ," तो क्या तुम दुनियावी लोगों जैसे नहीं?

5 अप्पुलोस क्या है? और हाँ, पौलुस क्या है? सिर्फ सेवक, जिनके ज़रिए तुम विश्वासी बने, ठीक जैसे प्रभु ने हरेक को सेवा सौंपी। **6** मैंने पौधा लगाया, अप्पुलोस ने पानी देकर सींचा, लेकिन परमेश्वर उसे बढ़ाता रहा। **7** इसलिए न तो लगानेवाला कुछ है, न ही पानी देनेवाला कुछ है, मगर परमेश्वर सबकुछ है जो इसे बढ़ाता है। **8** जो पौधा लगाता है और पानी देता है, वे दोनों एकता में हैं, मगर हर कोई अपनी ही मेहनत के लिए अपना इनाम पाएगा।
9 हम परमेश्वर के सहकर्मी हैं, तुम परमेश्वर का वह खेत हो जिसमें खेती की जा रही है और परमेश्वर की इमारत हो।

10 परमेश्वर की महा-कृपा जो मुझे दी गयी थी, उसके मुताबिक मैंने बुद्धिमान राजमिस्त्री की तरह नींव डाली, मगर कोई और उस नींव पर इमारत खड़ी करता है। मगर हर कोई ध्यान देता रहे कि वह किस तरह नींव पर इमारत खड़ी कर रहा है। **11** इसलिए कि कोई भी इंसान उस नींव के सिवा जो डाली जा चुकी है, दूसरी नींव नहीं डाल सकता, और यह नींव यीशु मसीह है।

1कुरिं 2:13* या, "शब्द जो परमेश्वर की पवित्र शक्ति के मुताबिक हैं।" **14*** शाब्दिक, "शारीरिक।" **3:1*** शाब्दिक, "शारीरिक।"

12 कोई इस नींव पर सोने, चाँदी और
कीमती पत्थरों से और कोई लकड़ी, भूसे
या घास-फूस से इमारत खड़ी करता है।
13 जब परखे जाने का दिन आएगा तब
हरेक का काम ज़ाहिर हो जाएगा, क्योंकि
आग सबकुछ ज़ाहिर कर देगी और यह
साबित करेगी कि हरेक का काम कैसा
है। **14** अगर किसी इंसान की इमा-
रत जो उसने नींव पर खड़ी की है, टिकी
रहेगी तो वह इनाम पाएगा। **15** और
अगर किसी का काम जल जाता है तो
वह नुकसान उठाएगा, लेकिन वह खुद
बचा लिया जाएगा, मगर ऐसा होगा मानो
आग से जलते-जलते बचाया गया हो।

16 क्या तुम नहीं जानते कि तुम
लोग परमेश्वर का मंदिर हो और पर-
मेश्वर की पवित्र शक्ति तुममें निवास
करती है? **17** अगर कोई परमेश्वर
के मंदिर को नाश करता है, तो परमेश्वर
उसे नाश करेगा, इसलिए कि परमेश्वर
का मंदिर पवित्र है और यह मंदिर तुम
लोग हो।

18 कोई खुद को न बहकाए: अगर
तुम में से कोई सोचता है कि वह इस
ज़माने* में बुद्धिमान है, तो वह मूर्ख
बन जाए ताकि वह बुद्धिमान बन सके।
19 इसलिए कि इस दुनिया की बुद्धि
परमेश्वर की नज़र में मूर्खता है, क्योंकि
यह लिखा है: "वह बुद्धिमानों को उनकी
अपनी ही चालाकी में फँसा देता है।"
20 और यह भी लिखा है: "यहोवा
जानता है कि बुद्धिमानों के तर्क बेकार
हैं।" **21** इसलिए कोई भी इंसानों पर
शेखी न मारे। क्योंकि सबकुछ तुम्हारा है,
22 चाहे पौलुस या अप्पुलोस या कैफा
या यह दुनिया या मौत या ज़िंदगी या
आज की या आनेवाली चीज़ें, सबकुछ
तुम्हारा है **23** और तुम मसीह के हो
और मसीह, परमेश्वर का है।

4 लोग हमें मसीह के अधीन काम
करनेवाले सेवक और ऐसे प्रबंधक
समझें जिन्हें परमेश्वर के पवित्र रहस्य
सौंपे गए हैं। **2** और एक प्रबंधक में
यह देखा जाता है कि वह विश्वासयोग्य
पाया जाए। **3** मेरे लिए यह बात कोई
खास मायने नहीं रखती कि तुम या कोई
इंसानी अदालत मेरी जाँच-पड़ताल करे।
यहाँ तक कि मैं खुद अपनी जाँच-पड़ताल
नहीं करता। **4** मुझे खुद में कोई बुराई
नज़र नहीं आती। फिर भी इस बात से
मैं नेक साबित नहीं होता, लेकिन जो मेरी
जाँच-पड़ताल करता है वह यहोवा है।
5 इसलिए तय वक्त से पहले किसी बात
का न्याय न करो, जब तक कि प्रभु नहीं
आता। वही अंधकार में छिपी हुई बातों
को रौशनी में लाएगा और दिलों के
खयालों को ज़ाहिर कर देगा, और तब
हर कोई अपने लिए परमेश्वर से तारीफ
पाएगा।

6 भाइयो, मैंने तुम्हारे फायदे के लिए
खुद को और अप्पुलोस को मिसाल बना-
कर ये बातें कही हैं जिससे तुम हमारी
मिसाल से यह नियम सीख सको: "जो
लिखा है उससे आगे न जाना," ताकि तुम
एक के खिलाफ दूसरे का पक्ष लेते हुए

1कुरिं 3:18* या, "दुनिया की व्यवस्था।"

घमंड से फूल न जाओ। **7** कौन-सी
ऐसी बात है जो तुझे दूसरे से अलग
दिखाती है? दरअसल, तेरे पास ऐसा क्या
है जो तू ने पाया न हो? तो अगर तू ने
इसे पाया है, तो तू इस तरह शेखी
क्यों मारता है मानो तू ने नहीं पाया?

8 क्या तुम लोग पहले ही भरे-पूरे
हो चुके हो? क्या तुम पहले ही दौलत-
मंद हो चुके हो? क्या तुमने हमारे बिना
ही राज करना शुरू कर दिया है? वाकई
मेरी यही ख्वाहिश है कि तुमने सचमुच
राजाओं की हैसियत से राज करना शुरू
कर दिया होता, ताकि हम भी तुम्हारे
साथ राजाओं की हैसियत से राज कर
सकते। **9** मुझे ऐसा लगता है कि पर-
मेश्वर ने हम प्रेषितों को, उन आदमियों
की तरह जो मौत के लिए ठहराए गए
हैं, सबसे आखिर में नुमाइश में लाने के
लिए रखा है, क्योंकि हम दुनिया के लिए
और स्वर्गदूतों के लिए और इंसानों के
लिए तमाशा बन चुके हैं। **10** हमें
मसीह की खातिर मूर्ख समझा जाता है,
मगर तुम खुद को मसीह में सूझ-बूझवाले
समझते हो। हम कमज़ोर हैं, मगर तुम
तो बलवान हो। तुम तो बड़े इज़्ज़त-
दार हो, मगर हमारी कोई इज़्ज़त नहीं।
11 आज के दिन तक हम भूखे-प्यासे
और फटेहाल हैं, मार खाते फिरते हैं और
बेघर हैं **12** और अपने ही हाथों से
घोर परिश्रम करते हैं। लोग गाली-गलौज
करते हैं, मगर हम आशीष का कारण
बनते हैं। वे ज़ुल्म करते हैं, हम सह
लेते हैं। **13** बदनाम किए जाने पर
हम गुज़ारिश करते हैं। आज तक हमें
दुनिया का कचरा और सब चीज़ों का
कूड़ा-करकट समझा जाता है।

14 मैं तुम्हें शर्मिंदा करने के लिए
ये बातें नहीं लिख रहा, बल्कि अपने
प्यारे बच्चे समझकर तुम्हें समझा रहा
हूँ। **15** इसलिए कि मसीह में चाहे
तुम्हारे सिखानेवाले* दस हज़ार हों, तो
भी तुम्हारे पिता बहुत नहीं हैं। क्योंकि
खुशखबरी के ज़रिए मसीह यीशु में, मैं
तुम्हारा पिता बना हूँ। **16** इसलिए मैं
तुम से गुज़ारिश करता हूँ कि मेरी मिसाल
पर चलो। **17** इसी वजह से मैं तुम्हारे
पास तीमुथियुस को भेज रहा हूँ जो प्रभु
में मेरा प्यारा और विश्वासयोग्य बच्चा
है। वह मसीह की सेवा से जुड़े मेरे तौर-
तरीके तुम्हारे मन में फिर से बिठाएगा,
जिन तरीकों से मैं जगह-जगह हर मंडली
में सिखा रहा हूँ।

18 कुछ तो इस तरह घमंड से फूल
गए हैं मानो मैं वापस तुम्हारे पास
आनेवाला ही नहीं। **19** लेकिन अगर
यहोवा की मरज़ी हुई, तो मैं बहुत जल्द
तुम्हारे पास आऊँगा और जो घमंड से
फूल गए हैं, मुझे उनकी बातों से कोई
सरोकार नहीं, बल्कि मैं यह देखूँगा कि
उनमें परमेश्वर की शक्ति है या नहीं।
20 इसलिए कि परमेश्वर के राज का
आधार बातें नहीं, बल्कि परमेश्वर से
मिलनेवाली शक्ति है। **21** तुम क्या
चाहते हो? क्या मैं डंडा लेकर तुम्हारे

1कुरिं 4:15* शाब्दिक, “संरक्षक,” जिस पर बच्चों की देखरेख और हिफाज़त की ज़िम्मेदारी होती थी।

पास आऊँ या फिर प्यार और कोमल
स्वभाव के साथ आऊँ?

5 दरअसल तुम्हारे यहाँ से व्यभिचार*
की खबर मिली है और वह भी ऐसा
व्यभिचार जैसा दुनिया के लोगों में भी
नहीं होता, कि एक आदमी ने अपने पिता
की पत्नी को अपनी कर लिया है।
2 तुम इस बात पर घमंड से फूल रहे
हो, जबकि क्या तुम्हें मातम नहीं करना
चाहिए था ताकि जिस आदमी ने ऐसी
करतूत की है वह तुम्हारे बीच से निकाला
जाता? 3 मगर मैं, जो भले ही शरीर
से वहाँ गैर-हाज़िर हूँ मगर मन से मौजूद
हूँ, उस आदमी को जिसने ऐसा काम
किया है, पहले ही दोषी ठहरा चुका हूँ
मानो मैं वहीं मौजूद था, 4 कि जब
तुम हमारे प्रभु यीशु के नाम से इकट्ठा हो
और प्रभु यीशु की ताकत से मैं भी मन से
वहाँ मौजूद रहूँ, 5 तो तुम उस आदमी
को शैतान के हवाले कर दो, ताकि शरीर
का ऐसा पापी असर नाश हो। जिससे
कि प्रभु के दिन में मंडली के मन का
अच्छा रुझान बचा रह सके।

6 तुम्हारे घमंड करने की वजह सही
नहीं है। क्या तुम नहीं जानते कि ज़रा-
सा खमीर पूरे गुँधे हुए आटे को खमीर
कर देता है? 7 पुराने खमीरे आटे को
निकालकर फेंक दो ताकि तुम गुँधा हुआ
नया आटा बन सको। इसलिए कि असल
में तुम खमीर से आज़ाद हो, तुममें खमीर
नहीं होना चाहिए क्योंकि हमारे फसह का
बलिदान, मसीह बलि किया जा चुका है।
8 इसलिए आओ हम यह त्योहार न
तो पुराने खमीर से, न ही बुराई और
दुष्टता के खमीर से, बल्कि सीधाई और
सच्चाई की बिन-खमीर की रोटियों के
साथ मनाएँ।

9 मैंने अपनी चिट्ठी में लिखा था
कि तुम व्यभिचारियों के साथ मेल-जोल
रखना बंद करो। 10 मेरे कहने का
यह मतलब नहीं कि तुम इस दुनिया के
व्यभिचारियों से या लालची लोगों से और
धन ऐंठनेवालों से या मूर्तिपूजा करनेवालों
से बिलकुल भी नाता न रखो। क्योंकि
ऐसे में तो तुम्हें दुनिया से ही निकल जाना
होगा। 11 मगर अब मैं तुम्हें लिख
रहा हूँ कि ऐसे हर किसी के साथ मेल-
जोल रखना बंद कर दो, जो भाई कह-
लाते हुए भी व्यभिचारी है या लालची है
या मूर्तिपूजा करता है या गाली-गलौज
करता है या पियक्कड़ है या दूसरों
का धन ऐंठता है। यहाँ तक कि ऐसे
आदमी के साथ खाना तक न खाना।
12 बाहरवालों का न्याय करने से मुझे
क्या सरोकार? मगर क्या तुम्हें उनका
न्याय नहीं करना चाहिए जो अंदर
हैं, 13 जबकि परमेश्वर बाहरवालों
का न्याय करता है? "उस दुष्ट आदमी
को अपने बीच से निकाल बाहर करो।"

6 जब तुम में से किसी का दूसरे
के खिलाफ कोई मामला होता है,
तो वह फैसले के लिए पवित्र जनों के
पास जाने के बजाय अदालत में दुष्ट
लोगों के सामने जाने की जुर्रत कैसे करता

1कुरिं 5:1* यानी, हर किस्म के नाजायज़ यौन-संबंध। अतिरिक्त लेख 4 देखें।

है? 2 या क्या तुम नहीं जानते कि
पवित्र जन दुनिया का न्याय करेंगे? और
अगर तुम दुनिया का न्याय करनेवाले हो,
तो क्या तुम इस लायक भी नहीं कि
छोटे-छोटे मामलों का फैसला कर सको?
3 क्या तुम नहीं जानते कि हम स्वर्गदूतों
का न्याय करेंगे? तो फिर, इस ज़िंदगी
के मामलों का क्यों नहीं? 4 तो जब
तुम्हारे बीच इस ज़िंदगी के ऐसे मामले हैं
जिनका फैसला किया जाना है, तो तुम
ऐसे आदमियों को न्यायी क्यों चुनते हो
जिनके बारे में मंडली जानती है कि वे
खरे नहीं हैं? 5 मैं तुम्हें शर्म दिलाने के
लिए यह कह रहा हूँ। क्या यह सच है
कि तुम्हारे बीच एक भी ऐसा बुद्धिमान
नहीं जो अपने भाइयों के बीच न्याय कर
सके? 6 इसके बजाय, एक भाई दूसरे
भाई को अदालत ले जाता है, और वह
भी अविश्वासियों के सामने!

7 वाकई, यह हर तरह से तुम्हारी
हार है कि तुम्हारे बीच एक-दूसरे
के खिलाफ मुकद्दमे चल रहे हैं। इसके
बजाय, तुम खुद अन्याय क्यों नहीं सह
लेते? तुम क्यों ठगे जाना बरदाश्त नहीं
कर लेते? 8 मगर तुम खुद अन्याय
करते और ठगते हो, और वह भी अपने
भाइयों को।

9 क्या तुम नहीं जानते कि जो पर-
मेश्वर के स्तरों पर नहीं चलते, वे उसके
राज के वारिस नहीं होंगे? धोखे में न
रहो। न व्यभिचारी, न मूर्तियाँ पूजनेवाले,
न शादी के बाहर यौन-संबंध रखनेवाले,
न पुरुषों के साथ अस्वाभाविक संभोग के
लिए रखे गए पुरुष, न ही पुरुषों के साथ
संभोग करनेवाले पुरुष, 10 न चोर,
न लालची, न पियक्कड़, न गाली-गलौज
करनेवाले और न दूसरों का धन ऐंठने-
वाले परमेश्वर के राज के वारिस होंगे।
11 फिर भी तुम में से कुछ लोग ऐसे ही
थे। मगर परमेश्वर ने हमारे प्रभु यीशु
मसीह के नाम से और अपनी पवित्र
शक्ति से तुम्हें धोकर शुद्ध किया, पवित्र
कामों के लिए अलग किया और तुम्हें नेक
करार दिया।

12 सब बातें मेरे लिए जायज़ तो हैं,
मगर सब बातें फायदेमंद नहीं। सब बातें
मेरे लिए जायज़ तो हैं, मगर मैं खुद को
किसी भी चीज़ का गुलाम बनने नहीं
दूँगा। 13 खाना पेट के लिए है और
पेट खाने के लिए, मगर परमेश्वर इन
दोनों को मिटा देगा। शरीर व्यभिचार के
लिए नहीं बल्कि प्रभु के लिए है, और
प्रभु शरीर के लिए है। 14 मगर पर-
मेश्वर ने अपनी शक्ति से प्रभु को मरे
हुओं में से जी उठाया और वह हमें भी
जी उठाएगा।

15 क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारे
शरीर मसीह के अंग हैं? तो क्या मैं
मसीह के अंगों को ले जाकर वेश्या
के अंग बनाऊँ? ऐसा हरगिज़ न हो!
16 क्या तुम नहीं जानते कि जो वेश्या से
मिल जाता है वह उसके साथ एक तन हो
जाता है? क्योंकि परमेश्वर कहता है कि
"वे दोनों एक तन होंगे।" 17 मगर
जो प्रभु से मिल जाता है, वह उसके साथ
एक मन हो जाता है। 18 व्यभिचार

से दूर भागो। दूसरा हर पाप जो इंसान
करता है वह उसके शरीर के बाहर होता
है, मगर जो व्यभिचार में लगा रहता है
वह अपने ही शरीर के खिलाफ पाप कर
रहा है। **19** क्या तुम नहीं जानते कि
तुम लोग मिलकर जो शरीर बनते हो,
वह परमेश्वर की उस पवित्र शक्ति का
मंदिर है जो तुम्हारे अंदर रहती है और
जो परमेश्वर की तरफ से तुम्हें मिली है?
और-तो-और, तुम्हारा खुद पर अधिकार
नहीं है। **20** तुम्हें बड़ी कीमत देकर
खरीदा गया है। इसलिए मसीह के शरीर
के अंग होने के नाते, अपने शरीरों से
परमेश्वर की बड़ाई करो।

7 अब मैं उन सवालों का जवाब दे
रहा हूँ जिनके बारे में तुमने लिख-
कर मुझसे पूछा थाः एक आदमी के लिए
अच्छा तो यह है कि वह स्त्री को न छूए।
2 फिर भी, व्यभिचार के प्रचलन की
वजह से, हर आदमी की अपनी पत्नी
हो और हर स्त्री का अपना पति हो।
3 पति अपनी पत्नी का हक अदा करे
और उसी तरह पत्नी भी अपने पति का
हक अदा करे। **4** पत्नी को अपने
शरीर पर अधिकार नहीं, मगर उसके
पति को है। उसी तरह, पति को अपने
शरीर पर अधिकार नहीं बल्कि उसकी
पत्नी को है। **5** तुम एक-दूसरे को इस
हक से वंचित न रखो, लेकिन अगर
प्रार्थना के लिए वक्त निकालने के लिए
ऐसा करो भी, तो आपसी रज़ामंदी से
सिर्फ कुछ वक्त तक के लिए करो। इसके
बाद फिर से एक संग हो जाओ, ताकि
शैतान तुम्हारे संयम की कमी की वजह
से तुम्हें फुसलाता न रहे। **6** मगर, मैं
यह बात एक रिआयत के तौर पर कह
रहा हूँ, न कि आज्ञा दे रहा हूँ। **7** मैं
चाहता हूँ कि काश सब आदमी ऐसे होते
जैसा मैं हूँ। मगर, हर किसी को परमेश्वर
से अपना तोहफा मिला है, किसी को इस
तरह का, तो किसी को दूसरी तरह का।

8 अब मैं अविवाहितों और विध-
वाओं से कहता हूँ कि उनके लिए अच्छा
है कि वे ऐसे ही रहें जैसा मैं हूँ।
9 लेकिन अगर उनमें संयम नहीं तो वे
शादी करें, क्योंकि काम-इच्छा की आग
में जलने से तो बेहतर यह है कि वे
शादी कर लें।

10 शादी-शुदा लोगों को मैं ये
हिदायतें देता हूँ, दरअसल मैं नहीं
बल्कि प्रभु देता है कि एक पत्नी को
अपने पति से अलग नहीं होना चाहिए।
11 लेकिन अगर वह अलग हो भी जाए,
तो वह फिर शादी न करे या दोबारा
अपने पति के साथ मेल कर ले। और
एक पति को चाहिए कि अपनी पत्नी को
न छोड़े।

12 मगर दूसरों से प्रभु नहीं, बल्कि
मैं, हाँ मैं कहता हूँः अगर एक भाई
की पत्नी अविश्वासी हो फिर भी वह
अपने पति के साथ रहने के लिए राज़ी
हो, तो वह भाई अपनी पत्नी को न
छोड़े। **13** अगर एक स्त्री का पति
अविश्वासी हो फिर भी वह अपनी पत्नी
के साथ रहने के लिए राज़ी हो, तो वह
स्त्री अपने पति को न छोड़े। **14** इस-

लिए कि अविश्‍वासी पति अपनी पत्नी
के साथ इस रिश्‍ते की वजह से पवित्र
माना जाता है और अविश्‍वासी पत्नी
अपने पति, यानी उस भाई के साथ इस
रिश्‍ते की वजह से पवित्र मानी जाती
है। अगर ऐसा न होता, तो तुम्हारे
बच्चे असल में अशुद्ध होते, मगर अब
वे पवित्र हैं। **15** लेकिन अगर अ-
विश्‍वासी साथी अलग होना चाहता है, तो
उसे अलग होने दो। ऐसे हालात में एक
भाई या बहन बंदिश में नहीं, मगर पर-
मेश्‍वर ने तुम्हें शांति के लिए बुलाया
है। **16** इसलिए कि पत्नी, अगर तू
अपने पति के साथ रहे तो क्या जाने तू
अपने पति को बचा ले? या पति, अगर
तू अपनी पत्नी के साथ रहे तो क्या जाने
तू अपनी पत्नी को बचा ले?

17 ठीक जैसा यहोवा ने हरेक को
हिस्सा दिया है और परमेश्‍वर ने जिस
दशा में हरेक को बुलाया है, वह वैसा ही
चलता रहे। मैं सब मंडलियों के लिए यही
आदेश ठहराता हूँ। **18** क्या किसी
आदमी को खतने की हालत में बुलाया
गया था? फिर वह बिन खतने जैसा
न बने। क्या किसी आदमी को बिना
खतने की हालत में बुलाया गया था?
तो वह खतना न कराए। **19** खतना
होना कुछ मायने नहीं रखता है, न ही
खतना न होना। मगर परमेश्‍वर की
आज्ञाओं का पालन करना मायने रखता
है। **20** हरेक को जिस किसी हालत
में बुलाया गया है, वह वैसा ही रहे।
21 क्या तुझे तब बुलाया गया जब तू
एक दास था? तो यह बात तुझे परेशान
न करे। लेकिन अगर तू आज़ाद हो
सकता है, तो ऐसे मौके को न छोड़।
22 इसलिए कि जो दास की हालत में
रहते हुए प्रभु में बुलाया गया था वह
प्रभु में आज़ाद है और उसी का है।
वैसे ही जो आज़ाद हालत में बुलाया गया
था वह मसीह का दास है। **23** तुम्हें
बहुत बड़ी कीमत देकर खरीद लिया गया
है, इंसानों के गुलाम बनना छोड़ दो।
24 भाइयो, हरेक को जिस किसी हालत
में बुलाया गया है, वह उसी हालत में पर-
मेश्‍वर के साथ बना रहे।

25 अब कुँवारों के बारे में प्रभु से
मुझे कोई आज्ञा नहीं मिली है। मगर
मैं जिसे प्रभु ने दया दिखायी थी कि
मैं विश्‍वासयोग्य पाया जाऊँ, मैं अपनी
राय बताता हूँ। **26** इसलिए मुझे यह
सही लगता है कि आजकल के मुश्‍किल
हालात को देखते हुए, यह अच्छा है
कि एक आदमी जैसा है वैसा ही रहे।
27 क्या तू पत्नी से बंधा हुआ है? तो
उससे आज़ाद होने की कोशिश करना बंद
कर। क्या तू एक पत्नी से आज़ाद है?
तो एक पत्नी की खोज करना बंद कर।
28 लेकिन अगर तू शादी कर भी ले,
तो कोई पाप नहीं करेगा। और अगर
एक कुँवारा शादी करता है, तो यह
कोई पाप नहीं है। फिर भी, जो शादी
करते हैं उन्हें शारीरिक दुःख-तकलीफें
झेलनी पड़ेंगी। मगर मैं तुम्हें इनसे बचाना
चाहता हूँ।

29 इसके अलावा, भाइयो मैं यह
कहता हूँ, जो वक्त रह गया है
उसे घटाया गया है। इसलिए जिनकी
पत्नियाँ हैं, वे अब से ऐसे हों जैसे
उनकी पत्नियाँ हैं ही नहीं, **30** वे भी
जो रोते हैं वे ऐसे हों जो रोते नहीं,
जो खुशियाँ मनाते हैं वे ऐसे हों जो
खुशियाँ नहीं मनाते और जो खरीदते हैं
वे ऐसे हों कि उनके पास है ही नहीं।
31 इस दुनिया का इस्तेमाल करनेवाले
ऐसे हों जो इसका पूरा-पूरा इस्तेमाल नहीं
करते, इसलिए कि इस दुनिया का दृश्य
बदल रहा है। **32** वाकई, मैं चाहता
हूँ कि तुम चिंताओं से आज़ाद रहो।
अविवाहित आदमी प्रभु की सेवा से जुड़ी
बातों की चिंता में रहता है कि वह कैसे
प्रभु को खुश करे। **33** मगर शादी-
शुदा आदमी दुनियादारी की बातों की
चिंता में रहता है कि कैसे वह अपनी
पत्नी को खुश करे, **34** और वह बँटा
हुआ है। इसके अलावा, अविवाहित और
कुँवारी स्त्री प्रभु की सेवा से जुड़ी बातों
की चिंता में रहती है ताकि वह अपने
शरीर और मन दोनों से पवित्र रहे।
लेकिन, शादी-शुदा स्त्री दुनियादारी की
बातों की चिंता में रहती है कि कैसे वह
अपने पति को खुश करे। **35** मगर
मैं यह बात खुद तुम्हारे फायदे के लिए
कह रहा हूँ, न कि तुम पर कोई बंदिश
लगाने के लिए। इसके बजाय, मैं तुम्हें
वह करने के लिए उकसा रहा हूँ जो
तुम्हारे लिए सही है, जिससे तुम बिना
ध्यान भटकाए लगातार प्रभु की सेवा
करते रहो।

36 लेकिन अगर किसी कुँवारे को
लगता है कि वह अपने शरीर की इच्छाओं
पर काबू नहीं कर पा रहा* और अगर
वह जवानी की कच्ची उम्र पार कर चुका
है और उसे लगता है कि उसे शादी करनी
चाहिए, तो इन हालात में वह ऐसा ही
करे। ऐसे में वह पाप नहीं करता। ऐसे
लोग शादी कर लें। **37** लेकिन अगर
कोई अपने दिल में इरादा कर चुका है
कि वह कुँवारा ही रहेगा और वह अपने
इस फैसले पर अटल रहता है क्योंकि उसे
शादी करने की ज़रूरत महसूस नहीं होती,
बल्कि वह अपनी इच्छा पर पूरा अधि-
कार रखता है तो वह अच्छा करता है।
38 इसलिए वह कुँवारा भी जो शादी
करता है वह अच्छा करता है। मगर वह
जो शादी नहीं करता वह ज़्यादा अच्छा
करता है।

39 एक पत्नी अपने पति के जीते-
जी उससे बँधी होती है। लेकिन अगर
उसका पति मौत की नींद सो जाता है,
तो वह जिससे चाहे उससे शादी करने के
लिए आज़ाद है, मगर सिर्फ प्रभु में।
40 लेकिन अगर वह जैसी है वैसी ही
रहे, तो मेरी राय में ज़्यादा खुश रहेगी।
बेशक मेरा मानना है कि मुझमें भी पर-
मेश्वर की पवित्र शक्ति काम करती है।

8 अब मूर्तियों को चढ़ाई गयी खाने
की चीज़ों के बारे में: हम जानते हैं
कि इस बारे में हम सबके पास ज्ञान है।
ज्ञान घमंड से भर देता है, मगर प्यार से

1कुरिं 7:36* शाब्दिक, "अपने कुँवारेपन के साथ बुरा सलूक कर रहा है।"

बढ़ोतरी होती है और मज़बूती मिलती
है।* **2** अगर कोई सोचता है कि उसे
किसी बात का ज्ञान हासिल हो गया है,
तो उसे अब तक ऐसा ज्ञान हासिल नहीं
हुआ जैसा होना चाहिए। **3** मगर जो
कोई परमेश्वर से प्यार करता है, तो उसे
परमेश्वर जानता है।

4 मूर्तियों को चढ़ाई गयी चीज़ें खाने
के बारे में हम जानते हैं कि मूर्ति दुनिया
में कुछ नहीं है और एक को छोड़ और
कोई परमेश्वर नहीं है। **5** हालाँकि
चाहे स्वर्ग में हों या धरती पर, ऐसे बहुत-
से हैं जिन्हें ईश्वर कहा जाता है, ठीक
जैसे बहुत-से ईश्वर और प्रभु हैं भी,
6 मगर असल में हमारे लिए एक ही
परमेश्वर है, यानी पिता, जिसकी तरफ
से सब चीज़ें हैं और हम उसी के लिए
हैं। एक ही प्रभु है, यानी यीशु मसीह
जिसके ज़रिए सब चीज़ें हैं और हम भी
उसके ज़रिए हैं।

7 फिर भी यह ज्ञान सब लोगों के
पास नहीं है, बल्कि कुछ लोग अभी तक
खाना खाते वक्त मूर्तियों से जुड़े रिवाज़ों
के बारे में सोचने के आदी हैं। जब वे
खाना खाते हैं तो सोचते हैं कि यह मूर्तियों
को चढ़ाया गया खाना है। उनका ज़मीर
कमज़ोर होने की वजह से दूषित हो जाता
है। **8** मगर खाना हमें परमेश्वर के
करीब नहीं लाता। अगर हम न खाएँ,
तो हमारे अंदर कुछ घट नहीं जाता और
अगर हम खाएँ, तो हमारा कुछ बढ़
नहीं जाता। **9** मगर हमेशा यह ध्यान
रखना कि तुम्हारा यह हक किसी तरह
उन लोगों के लिए, जो कमज़ोर हैं, पाप में
पड़ने की वजह न बन जाए। **10** इस-
लिए कि अगर कोई तुझ ज्ञान रखनेवाले
को देखे कि तू मूर्ति के मंदिर में खाने के
लिए बैठा हुआ है, तो क्या वह, जो कम-
ज़ोर है, मूर्तियों के आगे चढ़ाई गयी चीज़ें
खाने के लिए अपने ज़मीर को कड़ा न
कर लेगा? **11** वाकई, तेरे ज्ञान की
वजह से वह आदमी, जो कमज़ोर है, बर-
बाद हो रहा है, हाँ, तेरा वह भाई जिसकी
खातिर मसीह ने अपनी जान दी थी।
12 लेकिन जब तुम लोग अपने भाइयों
के खिलाफ इस तरह पाप करते हो और
उनके कमज़ोर ज़मीर को चोट पहुँचाते
हो, तो तुम मसीह के खिलाफ पाप कर
रहे हो। **13** इसलिए अगर खाना मेरे
भाई के लिए पाप में गिरने की वजह
बनता है, तो मैं फिर कभी माँस न
खाऊँगा ताकि मैं अपने भाई के लिए पाप
में पड़ने की वजह न बनूँ।

9 क्या मैं आज़ाद नहीं कि जो चाहे
वह करूँ? क्या मैं एक प्रेषित नहीं?
क्या मैंने, हमारे प्रभु यीशु को नहीं देखा?
क्या तुम प्रभु में मेरा काम नहीं हो?
2 चाहे मैं दूसरों के लिए प्रेषित न सही,
फिर भी तुम्हारे लिए बेशक हूँ, इसलिए
कि तुम एक ऐसी मुहर जैसे हो जो प्रभु
में मेरे प्रेषित-पद का सबूत देती है।

3 जो मेरी जाँच-पड़ताल करते हैं,
उनके सामने मेरी सफाई यह है:
4 क्या हमें खाने-पीने का हक नहीं?
5 क्या हमें यह हक नहीं कि किसी

1कुरिं 8:1* शाब्दिक, “निर्माण करता है।”

मसीही बहन से शादी करें और जहाँ कहीं
जाएँ उसे अपने साथ-साथ ले जाएँ, जैसा
कि बाकी प्रेषितों और प्रभु के भाइयों और
कैफा ने भी किया है? **6** या क्या सिर्फ
बरनबास और मुझे ही यह हक नहीं कि
अपने गुज़ारे के लिए काम-धंधा करना
बंद कर सकें? **7** ऐसा कौन है जो
सैनिक-सेवा में हो, मगर अपना खर्च खुद
उठाता हो? कौन है जो अंगूर का बाग
तो लगाता है मगर उसका फल न खाता
हो? या कौन चरवाहा है जो झुंड की
देखभाल तो करता है मगर उसके दूध में
से कुछ हिस्सा न लेता हो?

8 क्या मैं ये बातें इंसान के स्तरों के
मुताबिक कह रहा हूँ? या क्या कानून भी
यही बातें नहीं कहता? **9** इसलिए कि
मूसा के कानून में यह लिखा है: "अनाज
की दँवरी करनेवाले बैल का मुँह न
बाँधना।" क्या परमेश्वर बैलों की परवाह
की वजह से ऐसा कहता है? **10** या
क्या वह, हर तरह से, हमारी खातिर ऐसा
कहता है? वाकई, यह हमारी ही खातिर
लिखा गया था, क्योंकि जो आदमी हल
चलाता है उसका अनाज पाने की आशा
से हल चलाना सही है और जो आदमी
अनाज दाँवता है उसका अनाज में से
हिस्सा पाने की आशा करना सही है।

11 अगर हमने तुम्हारी खातिर
आध्यात्मिक बीज बोए हैं, और बदले में
तुमसे शरीर की ज़रूरत की चीज़ें पाएँ,
तो क्या यह कोई गलत बात होगी?
12 अगर दूसरे तुम पर यह हक जता
सकते हैं, तो क्या हमारा और भी ज़्यादा
हक नहीं बनता? तो भी, हमने इस हक
का इस्तेमाल नहीं किया है, मगर हम
सबकुछ सह रहे हैं ताकि हम मसीह के
बारे में खुशखबरी के फैलने में कोई रुका-
वट न डालें। **13** क्या तुम नहीं जानते
कि जो आदमी मंदिर में पवित्र सेवा के
काम करते हैं, वे मंदिर से खाते हैं और
जो वेदी के पास सेवा में लगे रहते हैं वे
वेदी के साथ बलिदान का हिस्सा पाते हैं?
14 इसी तरह, प्रभु ने खुशखबरी सुनाने-
वालों के लिए भी यह ठहराया कि खुश-
खबरी से उनकी गुज़र-बसर हो।

15 मगर मैंने इनमें से एक भी इंत-
ज़ाम का इस्तेमाल नहीं किया। दरअसल,
मैंने ये बातें इसलिए नहीं लिखीं कि
मेरे लिए यह सब किया जाए, क्योंकि
इससे बेहतर तो मेरे लिए मर जाना
होगा—कोई भी आदमी मेरे शेखी
मारने की वजह को बेकार नहीं कह
सकता! **16** अब अगर मैं खुशखबरी
सुनाता हूँ, तो यह मेरे लिए शेखी मारने
की कोई वजह नहीं, इसलिए कि यह
मेरी ज़िम्मेदारी है। वाकई, धिक्कार है
मुझ पर अगर मैं खुशखबरी न सुनाऊँ!
17 अगर मैं यह काम अपनी मरज़ी से
खुशी-खुशी करता हूँ, तो मेरे लिए एक
इनाम है। लेकिन अगर मैं इसे अपनी
मरज़ी के खिलाफ करता हूँ, तो इस मामले
में भी मुझे ज़िम्मेदारी सौंपी गयी है।
18 तो फिर, मेरा इनाम क्या है? यही
कि खुशखबरी सुनाते वक्त मैं बिना किसी
कीमत के खुशखबरी सुनाऊँ, ताकि मैं

खुशखबरी के मामले में अपने हक का
गलत इस्तेमाल न करूँ।

19 हालाँकि मैं सब लोगों से आज़ाद
हूँ फिर भी मैंने खुद को सबका
गुलाम बनाया है ताकि मैं ज़्यादा-से-ज़्यादा
लोगों को मसीह की राह पर ला सकूँ।
20 इसलिए मैं यहूदियों के लिए यहूदी
जैसा बना, ताकि मैं यहूदियों को ला सकूँ।
जो कानून के अधीन हैं उनके लिए मैं
कानून के अधीन जैसा बना ताकि जो
कानून के अधीन हैं, उन्हें ला सकूँ,
हालाँकि मैं खुद कानून के अधीन नहीं।
21 जिनके पास कानून नहीं है, उनके
लिए मैं उन्हीं के जैसा बना, इसके बावजूद
कि मैं परमेश्वर के सामने बिना कानून
का नहीं हूँ, बल्कि मसीह के कानून के
अधीन हूँ कि मैं उन्हें ला सकूँ जिनके पास
कानून नहीं है। **22** मैं कमज़ोरों के
लिए कमज़ोर बना, ताकि कमज़ोरों को
ला सकूँ। मैं सब किस्म के लोगों के लिए
सबकुछ बना ताकि मैं हर संभव तरीके
से कुछ लोगों का उद्धार करा सकूँ।
23 मैं सबकुछ खुशखबरी की खातिर
करता हूँ ताकि यह खबर मैं दूसरों के
साथ बाँट सकूँ।

24 क्या तुम नहीं जानते कि दौड़ में
दौड़नेवाले सभी दौड़ते हैं, मगर इनाम एक
ही को मिलता है? तुम इस तरह से दौड़ो
कि इनाम पा सको। **25** यही नहीं,
प्रतियोगिता में हिस्सा लेनेवाला हर आदमी
सब बातों में संयम से काम लेता है।
बेशक, वे एक ऐसा ताज पाने के लिए
यह सब करते हैं, जो नाश हो जाता है
मगर हम उस ताज के लिए करते हैं जो
कभी नाश नहीं हो सकता। **26** इस-
लिए मैं अंधाधुंध यहाँ-वहाँ नहीं दौड़ता,
मैं इस तरह मुक्के नहीं चलाता मानो हवा
को पीट रहा हूँ। **27** बल्कि मैं अपने
शरीर को मारता-कूटता हूँ और उसे एक
दास बनाकर काबू में रखता हूँ ताकि
दूसरों को प्रचार करने के बाद मैं खुद
किसी वजह से अयोग्य न ठहरूँ।

10 भाइयो, मैं नहीं चाहता कि तुम
इस बात से अनजान रहो कि
हमारे बापदादा सभी बादल के नीचे थे
और वे सभी समुद्र में से होकर गुज़रे।
2 उन सभी ने बादल के नीचे और
समुद्र के बीच मूसा में बपतिस्मा लिया।
3 सभी ने परमेश्वर से मिलनेवाला एक
ही खाना खाया। **4** सभी ने परमेश्वर
से मिलनेवाला एक ही पानी पीया। इस-
लिए कि वे परमेश्वर की उस चट्टान से
पीया करते थे, जो उनके साथ-साथ चलती
थी और वह चट्टान मसीह को दर्शाती थी।
5 फिर भी, परमेश्वर उनमें से ज़्यादा-
तर लोगों से खुश न हुआ, इसलिए वे
वीराने में मार डाले गए।

6 ये बातें हमारे लिए सबक बनीं कि
हम ऐसे इंसान न हों जो बुरी बातों की
चाह रखते हैं, जैसे उन्होंने भी चाहीं।
7 न ही हम मूर्तियों की पूजा करनेवाले
बनें, जैसे उनमें से कुछ ने की थी, ठीक
जैसा लिखा है: "लोग खाने-पीने बैठे, और
फिर उठकर नाचने और मौज-मस्ती करने
लगे।" **8** न ही हम व्यभिचार में लगे
रहें, जैसे उनमें से कुछ ने व्यभिचार किया

और एक ही दिन में उनमें से तेईस हज़ार
मारे गए। **9** न ही हम यहोवा की
परीक्षा लें, जैसे उनमें से कुछ ने उसकी
परीक्षा ली और साँपों के डसने से मारे
गए। **10** न ही हम कुड़कुड़ानेवाले
बनें, ठीक जैसे उनमें से कुछ कुड़कुड़ाते
थे और नाश करनेवाले के हाथों मारे
गए। **11** अब ये बातें जो उन पर
बीतीं, मिसालों की तरह थीं और हमारी
चेतावनी के लिए लिखी गयी थीं जिन पर
दुनिया की व्यवस्थाओं का आखिरी वक्त
आ पहुँचा है।

12 इसलिए जो सोचता है कि वह
मज़बूती से खड़ा है, वह खबरदार रहे कि
कहीं गिर न पड़े। **13** तुम ऐसी किसी
अनोखी परीक्षा से नहीं गुज़रे, जिससे
दूसरे इंसान कभी न गुज़रे हों। मगर पर-
मेश्वर विश्वासयोग्य है और वह तुम्हें ऐसी
किसी भी परीक्षा में नहीं पड़ने देगा
जो तुम्हारी बरदाश्त के बाहर हो, मगर
परीक्षा के साथ-साथ वह उससे निकलने
का रास्ता भी निकालेगा ताकि तुम इसे
सहन कर सको।

14 इसलिए, मेरे प्यारो, मूर्तिपूजा से
दूर भागो। **15** मैं तुमसे ऐसे बात
करता हूँ जैसे उनसे जिनके पास परख-
शक्ति है। मैं जो कहता हूँ उसका तुम
खुद ही फैसला करो। **16** धन्यवाद
का वह प्याला, जिसके लिए हम प्रार्थना
में धन्यवाद देते हैं, क्या वह मसीह के
लहू में एक हिस्सेदारी नहीं? जो रोटी हम
तोड़ते हैं, क्या वह मसीह के शरीर में
एक हिस्सेदारी नहीं? **17** क्योंकि रोटी
एक है, और हम बहुत होने पर भी एक
ही शरीर हैं, इसलिए कि हम सब उस
एक रोटी में से खाते हैं।

18 उन्हें देखो जो पैदाइशी इसराएली
हैं: जो बलिदानों में से खाते हैं क्या वे वेदी
के साथ हिस्सेदार नहीं होते? **19** तो
फिर, मैं क्या कहूँ? मूर्तियों के आगे जो
बलिदान चढ़ाया जाता है क्या वह कुछ
है? या क्या मूर्ति कुछ है? **20** नहीं।
मगर मैं यह कहता हूँ कि दूसरे राष्ट्र जो
बलि चढ़ाते हैं वे परमेश्वर के लिए नहीं,
बल्कि दुष्ट स्वर्गदूतों के लिए बलि चढ़ाते
हैं और मैं नहीं चाहता कि तुम दुष्ट स्वर्ग-
दूतों के साथ हिस्सेदार बनो। **21** तुम
ऐसा नहीं कर सकते कि यहोवा के
प्याले से पीओ और दुष्ट स्वर्गदूतों के
प्याले से भी पीओ। तुम ऐसा नहीं कर
सकते कि "यहोवा की मेज़" से खाओ
और दुष्ट स्वर्गदूतों की मेज़ से भी खाओ।
22 या "क्या हम यहोवा को जलन
दिला रहे हैं"? क्या हम उससे ज़्यादा
ताकतवर हैं?

23 सब बातें जायज़ तो हैं, मगर सब
बातें फायदेमंद नहीं। सब बातें जायज़ तो
हैं, मगर सब बातें हौसला नहीं बढ़ातीं।
24 हर कोई अपना ही फायदा न सोचे,
बल्कि उन बातों की खोज में लगा रहे
जिनसे दूसरों का फायदा हो।

25 गोश्त-बाज़ार में जो कुछ बिकता
है वह खाओ और अपने ज़मीर की वजह
से कोई पूछताछ मत करो। **26** इस-
लिए कि "धरती और वे सारी चीज़ें
जिनसे वह भरी है, यहोवा की हैं।"

27 अगर कोई अविश्वासी तुम्हें दावत
पर बुलाए और तुम जाना चाहो, तो वहाँ
जो कुछ तुम्हारे सामने रखा जाए उसे
खाओ और अपने ज़मीर की वजह से कोई
पूछताछ मत करो। **28** लेकिन अगर
कोई तुमसे यह कहता है: “यह चढ़ाए गए
बलिदान में से है,” तो उसके बताने की
वजह से और ज़मीर की वजह से मत
खाना। **29** “ज़मीर” से मेरा मतलब
है उस दूसरे का ज़मीर, न कि तुम्हारा
ज़मीर। लेकिन, मेरी आज़ादी दूसरे के
ज़मीर से क्यों परखी जाए? **30** अगर
मैं प्रार्थना में धन्यवाद देकर खाता हूँ, तो
फिर उसके लिए मुझे बुरा क्यों कहा जाए,
जिसके लिए मैं धन्यवाद देता हूँ?

31 इसलिए चाहे तुम खाते हो या
पीते हो या कोई और काम करते हो,
सबकुछ परमेश्वर की महिमा के लिए
करो। **32** तुम यहूदियों और यूना-
नियों के लिए, साथ ही परमेश्वर की
मंडली के लिए पाप में गिरने की वजह
मत बनो, **33** ठीक जैसे मैं भी सब
बातों में सब लोगों को खुश कर रहा हूँ
और अपने फायदे की नहीं, बल्कि बहुतों
के फायदे की खोज में रहता हूँ ताकि वे
उद्धार पा सकें।

11 मेरी मिसाल पर चलो, ठीक
जैसे मैं मसीह की मिसाल पर
चलता हूँ।

2 अब मैं तुम्हारी तारीफ करता हूँ
क्योंकि तुम सब बातों में मुझे ध्यान में
रखते हो और जैसी हिदायतें मैंने तुम्हें
सौंपी थीं, उन्हें तुम उसी तरह मज़बूती से
थामे रहते हो। **3** मगर मैं चाहता हूँ
कि तुम जान लो कि हर पुरुष का सिर
मसीह है और स्त्री का सिर पुरुष है और
मसीह का सिर परमेश्वर है। **4** हर
पुरुष जो अपना सिर ढककर प्रार्थना या
भविष्यवाणी करता है, वह अपने सिर का
अपमान करता है। **5** मगर हर स्त्री
जो बिना सिर ढके प्रार्थना या भविष्य-
वाणी करती है, वह अपने सिर का
अपमान करती है, क्योंकि यह ऐसा ही
होगा मानो वह एक ऐसी स्त्री है जिसका
सिर मुंडाया गया हो। **6** इसलिए कि
अगर एक स्त्री अपना सिर नहीं ढकती,
तो वह अपने बाल भी कटवा ले। लेकिन
अगर एक स्त्री के लिए बाल कटवाना
या सिर मुंडाना शर्मनाक बात है, तो उसे
अपना सिर ढकना चाहिए।

7 एक पुरुष को अपना सिर नहीं
ढकना चाहिए, क्योंकि वह परमेश्वर की
छवि और उसकी महिमा है। लेकिन स्त्री,
पुरुष की महिमा है। **8** इसलिए कि
पुरुष स्त्री से नहीं निकला, बल्कि स्त्री
पुरुष से निकली है। **9** साथ ही, पुरुष
को स्त्री की खातिर नहीं, बल्कि स्त्री
को पुरुष की खातिर बनाया गया था।
10 इसलिए स्वर्गदूतों की वजह से एक
स्त्री को चाहिए कि वह अपने सिर पर
अधीनता की निशानी रखे।

11 फिर भी, प्रभु के इंतज़ाम में न
स्त्री पुरुष के बिना है न पुरुष स्त्री के
बिना। **12** इसलिए कि जैसे स्त्री पुरुष
से निकली है, वैसे ही पुरुष स्त्री के ज़रिए
आया है, लेकिन सबकुछ परमेश्वर से

निकला है। **13** तुम खुद ही फैसला
करोः क्या यह सही है कि एक स्त्री
बिना सिर ढके परमेश्वर से प्रार्थना करे?
14 क्या स्वाभाविक तौर पर तुमने यह
बात नहीं सीखी कि अगर एक पुरुष के
बाल लंबे हों, तो यह उसके लिए अपमान
की बात है। **15** लेकिन अगर एक
स्त्री के बाल लंबे हों, तो ये उसकी शोभा
हैं? क्योंकि उसे ओढ़नी के बजाय उसके
बाल दिए गए हैं। **16** लेकिन, अगर
कोई आदमी किसी और दस्तूर को मानने
के लिए बहस करे, तो वह जान ले कि
हमारे बीच और परमेश्वर की मंडलियों
के बीच कोई और दस्तूर नहीं।

17 मगर ये हिदायतें देते वक्त,
मैं तुम्हारी तारीफ नहीं करता क्योंकि
जब तुम इकट्ठा होते हो, तो भला होने
से ज़्यादा बुरा होता है। **18** सबसे
पहले तो मेरे सुनने में आया है कि जब
तुम मंडली में इकट्ठा होते हो, तो तुम्हारे
बीच फूट होती है और कुछ हद तक
मैं इस बात पर यकीन भी करता हूँ।
19 तुम्हारे बीच गुट भी ज़रूर होंगे और
इससे तुम्हारे बीच वे लोग भी ज़ाहिर हो
जाएँगे जिन पर परमेश्वर की मंज़ूरी है।

20 इसलिए, जब तुम एक जगह
इकट्ठा होते हो, तो प्रभु के संध्या-भोज के
मौके पर खाना मुमकिन नहीं होता।
21 क्योंकि जब इसे खाने का वक्त
आता है, तो तुममें से कुछ पहले ही अपना
खाना खा चुके होते हैं, इस तरह कोई
भूखा होता है तो कोई पीकर धुत्त हो चुका
होता है। **22** क्या खाने-पीने के लिए
तुम्हारे घर नहीं हैं? या क्या तुम परमेश्वर
की मंडली का तिरस्कार करते हो और
जिनके पास कुछ नहीं उन्हें शर्मिंदा करते
हो? मैं तुम से क्या कहूँ? क्या मैं तुम्हारी
तारीफ करूँ? इस बात में मैं तुम्हारी
तारीफ नहीं करता।

23 जो बात मैंने प्रभु से पायी है,
वही तुम्हें सिखायी थी कि जिस रात प्रभु
यीशु पकड़वाया जानेवाला था, उसने एक
रोटी ली **24** और प्रार्थना में धन्यवाद
देने के बाद, उसने यह तोड़ी और कहाः
"यह मेरे शरीर का प्रतीक है जो तुम्हारी
खातिर दिया जाना है। मेरी याद में ऐसा
ही किया करना।" **25** उसने प्याला
लेकर भी ऐसा ही किया और शाम का
खाना खाने के बाद उसने कहाः "यह
प्याला उस नए करार का प्रतीक है जो
मेरे लहू के आधार पर बाँधा गया है।
हर बार जब तुम इसे पीते हो तो मेरी
याद में ऐसा ही किया करो।" **26** हर
बार जब तुम यह रोटी खाते हो और
यह प्याला पीते हो, तो जब तक प्रभु
नहीं आता, तुम उसकी मौत का ऐलान
करते हो।

27 इसलिए हर कोई जो अयोग्य
दशा में रोटी खाता या प्रभु के प्याले में
से पीता है, वह प्रभु के शरीर और लहू
के मामले में दोषी ठहरेगा। **28** एक
आदमी पहले अपनी जाँच करे कि वह
इस लायक है या नहीं और फिर वह रोटी
में से खाए और प्याले में से पीए।
29 इसलिए कि जो खाता और पीता है,

अगर वह प्रभु के शरीर को समझे बिना
खाता और पीता है तो खुद पर सज़ा
लाता है। **30** इसीलिए तुम्हारे बीच
बहुत-से कमज़ोर और बीमार हैं और कई
मौत की नींद सो रहे हैं। **31** लेकिन
अगर हम खुद की जाँच करें कि हम
असल में क्या हैं, तो हम दोषी नहीं
ठहरेंगे। **32** लेकिन, जब हम दोषी
ठहरते हैं, तो यहोवा से अनुशासन पाते
हैं, ताकि हम दुनिया के साथ सज़ा न
पाएँ। **33** इसलिए, मेरे भाइयो, जब
तुम इसे खाने के लिए इकट्ठा होते हो,
तो एक-दूसरे का इंतज़ार किया करो।
34 अगर कोई भूखा है, तो वह घर पर
खाए, ताकि तुम्हारा इकट्ठा होना सज़ा का
कारण न बने। बाकी बातें जब मैं वहाँ
आऊँगा तब आकर सुधारूँगा।

12 अब भाइयो, मैं नहीं चाहता
कि तुम परमेश्वर की पवित्र
शक्ति से मिलनेवाले वरदानों के बारे में
अनजान रहो। **2** तुम जानते हो कि
जब तुम दुनिया के लोगों का हिस्सा थे,
तो तुम अलग-अलग तरीकों से गूँगी
मूर्तियों की पूजा करने में लगे हुए थे और
ऐसे ही चले जा रहे थे। **3** इसलिए मैं
चाहता हूँ कि तुम यह जान लो कि जब
कोई परमेश्वर की पवित्र शक्ति से उभारा
जाता है, तो वह यह नहीं कहता कि
“यीशु शापित है!” और न ही कोई पवित्र
शक्ति के बिना यह कह सकता है: “यीशु
प्रभु है!”

4 अब वरदान तो अलग-अलग
किस्म के हैं, मगर परमेश्वर की पवित्र
शक्ति एक ही है। **5** सेवाएँ अलग-
अलग किस्म की हैं, फिर भी प्रभु एक
ही है। **6** और जो काम हो रहे हैं वे
अलग-अलग किस्म के हैं, फिर भी वह
परमेश्वर एक ही है जो सब लोगों के
अंदर ये सारे काम करता है। **7** मगर
हर किसी में जिस तरह पवित्र शक्ति काम
करती ज़ाहिर होती है, उसका मकसद
सबको फायदा पहुँचाना है। **8** मिसाल
के लिए, किसी को पवित्र शक्ति के
ज़रिए बुद्धि की बातें बोलने का वरदान
मिला है, तो दूसरे को उसी शक्ति से
ज्ञान की बातें बोलने का, **9** किसी
को उसी शक्ति से विश्वास का, किसी
को उसी एक शक्ति से चंगा करने का
वरदान दिया जाता है, **10** और किसी
को शक्तिशाली काम करने का, किसी को
भविष्यवाणी करने का, किसी को प्रेरित
वचनों को परखने का, किसी को अलग-
अलग भाषाएँ बोलने का और किसी को
भाषाओं का अनुवाद कर समझाने का
वरदान दिया जाता है। **11** मगर ये
सारे काम वही एक पवित्र शक्ति करती
है और हरेक को जैसा चाहती है वैसा
अलग-अलग वरदान बाँट देती है।

12 इसलिए कि जैसे शरीर एक होता
है मगर उसके कई अंग होते हैं और शरीर
के अंग चाहे बहुत-से हों, फिर भी सब
मिलकर एक ही शरीर हैं, वैसे ही मसीह
भी है। **13** वाकई, चाहे यहूदी हो या
यूनानी, चाहे गुलाम हो या आज़ाद, हम
सब ने एक ही पवित्र शक्ति से एक ही

शरीर में बपतिस्मा लिया और हम सभी को एक ही पवित्र शक्ति मिली।

14 वाकई, पूरा शरीर सिर्फ एक अंग नहीं होता बल्कि शरीर के कई अंग होते हैं। **15** अगर पाँव यह कहे: "मैं हाथ नहीं हूँ, इसलिए मैं शरीर का हिस्सा नहीं," तो क्या वह इस वजह से शरीर का हिस्सा नहीं है? **16** और अगर कान यह कहे: "मैं आँख नहीं हूँ, इसलिए मैं शरीर का हिस्सा नहीं," तो क्या वह इस वजह से शरीर का हिस्सा नहीं? **17** अगर सारा शरीर आँख ही हो, तो सुनना कहाँ होता? अगर सारा शरीर कान हो, तो सूँघना कहाँ होता? **18** मगर परमेश्वर ने शरीर के हर अंग को, जैसा उसे अच्छा लगा वैसे, उसकी जगह दी है।

19 अगर वे सब-के-सब एक ही अंग होते, तो शरीर कहाँ होता? **20** मगर अब वे बहुत-से अंग हैं, फिर भी एक ही शरीर है। **21** आँख हाथ से नहीं कह सकती: "मुझे तेरी कोई ज़रूरत नहीं है," या सिर पाँवों से नहीं कह सकता: "मुझे तुम्हारी कोई ज़रूरत नहीं।" **22** इसके बजाय, शरीर के जो अंग दूसरों से कमज़ोर लगते हैं, वे असल में बहुत ज़रूरी हैं। **23** और शरीर के जिन हिस्सों को हम कम आदर के लायक समझते हैं, उन्हीं को हम ढककर और भी ज़्यादा आदर देते हैं और इस तरह शरीर के हमारे जो हिस्से कुरूप हैं उनकी शोभा और भी बढ़ती है। **24** जबकि हमारे सुंदर अंगों को ऐसी देखभाल की ज़रूरत नहीं होती। फिर भी, परमेश्वर ने शरीर के अंगों को आपस में ऐसे जोड़ा है कि जिस अंग को आदर की घटी है उसे और भी बढ़कर आदर मिले, **25** जिससे कि शरीर में कोई फूट न हो, बल्कि इसके अंगों को एक-दूसरे के लिए बराबर फिक्र हो। **26** अगर एक अंग को तकलीफ होती है, तो बाकी सभी अंग उसके साथ तकलीफ उठाते हैं। या अगर एक अंग इज़्ज़त पाता है, तो बाकी सभी अंग उसके साथ खुश होते हैं।

27 तुम मसीह का शरीर और उसके अलग-अलग अंग हो। **28** और परमेश्वर ने मंडली में हरेक को उसकी जगह दी है, पहले प्रेषित, दूसरे भविष्यवक्ता, तीसरे शिक्षक, उनके बाद शक्तिशाली काम करनेवाले, फिर बीमारियों को ठीक करने का वरदान रखनेवाले, मदद के लिए सेवाएँ देनेवाले, सही राह दिखानेवाले और अलग-अलग भाषाएँ बोलने की काबिलीयत रखनेवाले। **29** तो क्या सभी प्रेषित हैं? क्या सभी भविष्यवक्ता हैं? क्या सभी शिक्षक हैं? क्या सभी शक्तिशाली काम करनेवाले हैं? **30** क्या सबके पास बीमारियों को ठीक करने का वरदान है? क्या सबके पास दूसरी भाषाएँ बोलने का वरदान है? क्या सभी अनुवाद करनेवाले हैं? **31** मगर तुम जोश के साथ परमेश्वर से और भी बड़े-बड़े वरदान पाने की कोशिश करते रहो। तो भी मैं तुम्हें इन सबसे बेहतरीन एक राह दिखाता हूँ।

13 अगर मैं इंसानों और स्वर्गदूतों की भाषाएँ बोलूँ, मगर मुझ में प्यार न हो, तो मैं टनटन बजता पीतल या झनझन बजती झांझ हूँ। **2** और अगर मुझे भविष्यवाणी करने का वरदान मिला है और मैं सारे पवित्र रहस्यों की जानकारी और सारा ज्ञान रखता हूँ, और अगर मुझमें इतना विश्वास है कि मैं उसके बल से पहाड़ों को भी यहाँ से वहाँ हटा सकता हूँ, लेकिन अगर मुझमें प्यार नहीं, तो मैं कुछ भी नहीं। **3** अगर मैं अपनी सारी संपत्ति दूसरों को खिलाने के लिए दे दूँ और अपना शरीर बलिदान के लिए दे दूँ कि मैं घमंड कर सकूँ, लेकिन मुझ में प्यार न हो, तो इन सबका मुझे कोई फायदा नहीं होगा।

4 प्यार सहनशील और कृपा करने-वाला होता है। प्यार जलन नहीं रखता, यह डींगें नहीं मारता, घमंड से नहीं फूलता, **5** बदतमीज़ी से पेश नहीं आता, सिर्फ अपने फायदे की नहीं सोचता, भड़क नहीं उठता। यह चोट का हिसाब नहीं रखता। **6** यह बुराई से खुश नहीं होता, बल्कि सच्चाई से खुशी पाता है। **7** यह सबकुछ बरदाश्त कर लेता है, सब बातों पर यकीन करता है, सब बातों की आशा रखता है, सबकुछ धीरज के साथ सह लेता है।

8 प्यार कभी नहीं मिटता।* मगर चाहे भविष्यवाणी के वरदान हों, तो वे मिट जाएँगे, चाहे दूसरी भाषाएँ बोलने का वरदान हो, तो वह खत्म हो जाएगा, चाहे ज्ञान हो तो वह मिट जाएगा। **9** इसलिए कि हमारा ज्ञान अधूरा है और हम अधूरी भविष्यवाणी करते हैं। **10** लेकिन जब वह आएगा जो पूरा है, तो जो अधूरा है वह मिट जाएगा। **11** जब मैं बच्चा था, तो बच्चों की तरह बात करता था, बच्चों की तरह सोचता था, बच्चों जैसी समझ रखता था। मगर अब क्योंकि मैं बड़ा हो गया हूँ, तो मैंने बचपना छोड़ दिया है। **12** क्योंकि अभी हम धुंधला आकार देखते हैं, मानो हम एक धातु के आइने में देख रहे हों, मगर उस वक्त आमने-सामने एकदम साफ-साफ देखेंगे। अभी मैं परमेश्वर के बारे में अधूरा जानता हूँ, मगर उस वक्त मैं पूरा-पूरा जान लूँगा, ठीक जैसे पर-मेश्वर मेरे बारे में पूरी तरह से जानता है। **13** लेकिन जो तीन बाकी रह जाएँगे, वे हैं विश्वास, आशा और प्यार, मगर इन तीनों में सबसे बड़ा है प्यार।

14 एक-दूसरे से जी-जान से प्यार करो,* साथ ही, तुम जोश के साथ परमेश्वर के वरदान पाने की कोशिश करते रहो। मगर बेहतर यह होगा कि तुम भविष्यवाणियों का मत-लब समझा सको। **2** इसलिए कि जो दूसरी भाषा बोलता है वह इंसानों से नहीं बल्कि परमेश्वर से बात करता है, क्योंकि वह इंसान पवित्र शक्ति के ज़रिए पवित्र रहस्य बताता तो है, मगर कोई समझ-

---

1कुरिं 13:8* या, "कभी नाकाम नहीं होता।"

1कुरिं 14:1* शाब्दिक, "प्यार का पीछा करो।"

ता नहीं। 3 लेकिन जो भविष्यवाणी
करता है वह अपनी बातों से लोगों
को मज़बूत करता है और उनकी
हिम्मत बँधाता है और उन्हें दिलासा देता
है। 4 जो दूसरी भाषा बोलता है वह
खुद को ही मज़बूत करता है, मगर जो
भविष्यवाणी करता है वह मंडली को
मज़बूत करता है। 5 मैं तुम सबके
लिए चाहता तो हूँ कि तुम सभी दूसरी
भाषाएँ बोलो, मगर मेरे हिसाब से बेहतर
यह होगा कि तुम भविष्यवाणी करो।
दरअसल भविष्यवाणी करनेवाला, दूसरी
भाषाएँ बोलनेवाले से कहीं बढ़कर है।
क्योंकि दूसरी भाषाएँ बोलनेवाला अगर
अपनी बातों का अनुवाद न करे, तो
उसकी बातों से मंडली को मज़बूती नहीं
मिल सकेगी। 6 मगर भाइयो, अगर
मैं इस वक्त तुम्हारे पास आकर दूसरी
भाषाएँ बोलूँ, तो इससे तुम्हारा क्या भला
होगा, जब तक कि मैं परमेश्वर के संदेश
का खुलासा करने के वरदान या ज्ञान या
भविष्यवाणी या किसी शिक्षा के वर-
दान के साथ न बोलूँ?

7 इसी तरह बेजान चीज़ें जिनसे
आवाज़ निकलती है, चाहे बाँसुरी हो या
सुर-मंडल, अगर इनके सुर-तान में अंतर
न हो तो यह कैसे मालूम पड़ेगा कि बाँसुरी
या सुर-मंडल पर क्या बजाया जा रहा है?
8 वाकई, अगर तुरही की पुकार साफ न
हो, तो लड़ाई के लिए कौन तैयार होगा?
9 उसी तरह, अगर तुम अपनी ज़बान
से ऐसी बोली न बोलो जो आसानी से
समझ में आ सके, तो जो बोला जा रहा
है वह कैसे समझ में आएगा? दरअसल,
तुम हवा में बात करनेवाले ठहरोगे।
10 दुनिया में चाहे कितनी ही किस्म की
बोलियाँ क्यों न हों, मगर एक भी बोली
ऐसी नहीं जिसका कोई मतलब न हो।
11 अगर मैं किसी बोली के मायने नहीं
समझता, तो बोलनेवाले के लिए मैं एक
विदेशी जैसा हूँ और वह मेरे लिए विदेशी
जैसा होगा। 12 इसलिए तुम भी जो
पूरे जोश के साथ पवित्र शक्ति के वर-
दान पाने की ख्वाहिश रखते हो, इन्हें बहु-
तायत में पाने की इसलिए कोशिश करो
ताकि मंडली मज़बूत हो सके।

13 इसलिए जो दूसरी भाषा में बात
करता है वह प्रार्थना करे कि वह उसका
अनुवाद भी कर सके। 14 क्योंकि
अगर मैं दूसरी भाषा में प्रार्थना कर रहा
हूँ, तो पवित्र शक्ति का जो वरदान मुझे
मिला है, उससे मैं प्रार्थना कर रहा हूँ,
मगर मैं दिमाग से नहीं समझता कि मैं
क्या प्रार्थना कर रहा हूँ। 15 तो फिर
क्या किया जाए? मैं पवित्र शक्ति के वर-
दान के साथ प्रार्थना करूँगा, मगर साथ
ही मैं अपने दिमाग से समझते हुए भी
प्रार्थना करूँगा। मैं पवित्र शक्ति के वर-
दान से स्तुति के गीत गाऊँगा, मगर मैं
अपने दिमाग से समझते हुए भी इन्हें
गाऊँगा। 16 वरना, अगर तू पवित्र
शक्ति के वरदान से प्रार्थना में स्तुति करे,
तो आम इंसान तेरी धन्यवाद की प्रार्थना
के लिए "आमीन" कैसे कहेगा, क्योंकि
वह नहीं जानता कि तू क्या कह रहा है?
17 हाँ, यह सच है कि तू बहुत बढ़िया

तरीके से प्रार्थना में धन्यवाद देता है, मगर
उस दूसरे इंसान को इससे फायदा नहीं
होता।* **18** मैं परमेश्वर का धन्यवाद
करता हूँ कि मैं तुम सबसे ज़्यादा भाषाएँ
बोलता हूँ। **19** फिर भी, एक मंडली
में मैं दूसरी भाषा में दस हज़ार शब्द
बोलने के बजाय, अपने दिमाग से पाँच
ऐसे शब्द कहना पसंद करूँगा जो समझ
में आते हैं ताकि मैं दूसरों को ज़बानी तौर
पर हिदायत दे सकूँ।

20 भाइयो, सोचने-समझने की
काबिलीयत में बच्चों जैसे नादान न बनो,
बल्कि बुराई के मामले में तो बच्चे रहो,
मगर सोचने-समझने की काबिलीयत में
सयाने बनो। **21** कानून में लिखा है:
“यहोवा कहता है, ‘मैं इन लोगों से
विदेशियों की भाषाओं और अजनबियों
की बोली में* बात करूँगा, इसके बावजूद
भी वे मेरी बात पर ध्यान नहीं देंगे।’”
22 इसलिए, दूसरी भाषाएँ विश्वासियों
के लिए नहीं बल्कि अविश्वासियों के
लिए एक निशानी हैं, जबकि भविष्य-
वाणी करना अविश्वासियों के लिए
नहीं बल्कि विश्वास करनेवालों के लिए
है। **23** इसलिए अगर सारी मंडली
एक जगह इकट्ठा होती है और वे सभी
दूसरी भाषाएँ बोलते हैं और अगर आम
लोग या अविश्वासी अंदर आते हैं, तो
क्या वे यह न कहेंगे कि तुम पागल हो?
24 लेकिन अगर तुम सभी भविष्यवाणी
करते हो और कोई अविश्वासी या आम
इंसान अंदर आता है, तो तुम सबकी बातों
से उसे ताड़ना मिलती है और सबकी बातों
से उसकी बारीकी से जाँच होती है।
25 उसके दिल के राज़ ज़ाहिर हो जाते
हैं, जिससे कि वह अपने मुँह के बल गिर-
कर यह कहते हुए परमेश्वर की उपा-
सना करेगा: “वाकई, परमेश्वर तुम्हारे
बीच है।”

26 तो फिर भाइयो, क्या किया जाना
चाहिए? जब तुम इकट्ठा होते हो, तो एक
भजन सुनाता है, दूसरा शिक्षा देता है।
जिस पर कुछ प्रकट किया गया है, वह
उसके बारे में बताता है। कोई दूसरी भाषा
में बात करता है, कोई उसका अनुवाद
कर समझाता है। यह सब कुछ एक-दूसरे
का हौसला बढ़ाने के लिए किया जाए।
27 अगर दूसरी भाषा में बोलनेवाले हों
तो ऐसे लोग ज़्यादा-से-ज़्यादा दो या तीन
हों, और वे बारी-बारी से बोलें और
कोई अनुवाद कर उनकी बात समझाए।
28 लेकिन अगर अनुवाद करनेवाला
कोई न हो तो वे मंडली में चुप रहें
और मन-ही-मन खुद से और परमेश्वर
से बात करें। **29** भविष्यवक्ताओं में
से दो या तीन बोलें और दूसरे उनकी
बातों का मतलब समझें। **30** लेकिन
अगर वहाँ बैठे हुए किसी और पर
कोई रहस्य ज़ाहिर किया जाता है तो
जो बोल रहा है, वह चुप हो जाए।
31 इसलिए कि तुम सभी एक-एक कर
भविष्यवाणी कर सकते हो ताकि सभी
सीख सकें और उनकी हिम्मत बँधे।
32 भविष्यवक्ताओं को पवित्र शक्ति से

1कुरिं 14:17* या, “उसका निर्माण नहीं होता।”
21* शाब्दिक, “होंठ।”

भविष्यवाणी करने के अपने वरदान पर
काबू रखना है। **33** इसलिए कि पर-
मेश्वर गड़बड़ी का नहीं, बल्कि शांति का
परमेश्वर है।

जैसे पवित्र जनों की सारी मंड-
लियों में होता है, **34** वैसे ही मंडलियों
में स्त्रियाँ चुप रहें, क्योंकि उन्हें बोलने
की इजाज़त नहीं है, बल्कि वे अधीन
रहें, ठीक जैसे कानून भी कहता है।
35 अगर वे कुछ जानना चाहती हैं, तो
वे घर पर अपने-अपने पति से सवाल
करें, क्योंकि एक स्त्री के लिए मंडली के
सामने बोलना अपमान की बात है।

36 क्या परमेश्वर का वचन तुम में
से निकला था या क्या यह सिर्फ तुम तक
ही पहुँचा?

37 अगर कोई सोचता है कि वह
एक भविष्यवक्ता है या उसे पवित्र शक्ति
का वरदान मिला है, तो वह इन बातों की
हामी भरे जो मैं तुम्हें लिख रहा हूँ, क्योंकि
ये प्रभु की आज्ञाएँ हैं। **38** लेकिन
अगर कोई अनजान बनता है तो वह
अनजान बना रहे। **39** इसलिए मेरे
भाइयो, भविष्यवाणी करने के वरदान की
पूरे जोश के साथ खोज करते रहो, मगर
साथ ही दूसरी भाषाओं में बोलनेवालों को
भी मत रोको। **40** मगर सब बातें
कायदे से और अच्छे इंतज़ाम के मुता-
बिक हों।

15 भाइयो, अब मैं तुम्हें वही खुश-
खबरी बता रहा हूँ जिसका मैं
तुम्हारे बीच प्रचार कर चुका हूँ,
जिसे तुमने स्वीकार भी किया था और
जिसमें तुम कायम भी हो। **2** तुमने
मुझसे जो यह खुशखबरी सुनी है उसके
ज़रिए तुम्हारा उद्धार भी हो रहा है, बशर्ते
तुम इसे मज़बूती से थामे रहो, वरना
तुम्हारा विश्वासी बनना बेकार गया।

3 इसलिए कि जो बातें मुझे मिली
थीं और जो मैंने तुम तक पहुँचायी हैं
उनमें सबसे ज़रूरी यह है कि जैसा शास्त्र
में लिखा है, मसीह हमारे पापों के लिए
मरा **4** और उसे दफनाया गया, हाँ,
शास्त्र के मुताबिक उसे तीसरे दिन जी
उठाया गया। **5** और यह कि वह
कैफा को और फिर बारहों को दिखायी
दिया। **6** उसके बाद वह एक ही वक्त
पर पाँच सौ से ज़्यादा भाइयों को दिखायी
दिया, जिनमें से ज़्यादातर आज भी मौजूद
हैं, मगर कुछ मौत की नींद सो गए हैं।
7 इसके बाद वह याकूब को दिखायी
दिया, फिर सभी प्रेषितों को, **8** मगर
सबसे आखिर में वह मुझे भी दिखायी
दिया, जो मानो वक्त पूरा होने से पहले
जन्मा हो।

9 मैं प्रेषितों में सबसे छोटा हूँ
यहाँ तक कि प्रेषित कहलाने के भी
लायक नहीं हूँ, क्योंकि मैंने परमेश्वर
की मंडली पर ज़ुल्म ढाया। **10** मगर
आज मैं जो हूँ वह परमेश्वर की महा-
कृपा से हूँ। और मेरे लिए उसकी महा-
कृपा बेकार साबित नहीं हुई, क्योंकि मैंने
उन सबसे ज़्यादा मेहनत की है, फिर भी
यह मेहनत मैंने नहीं बल्कि परमेश्वर की
उस महा-कृपा ने की है, जो मेरे साथ है।
11 लेकिन चाहे मैं हूँ या वे हों, हम यही

प्रचार कर रहे हैं और इसी बात पर तुमने
यकीन भी किया है।

12 अब अगर मसीह का इसी तरह
प्रचार किया जा रहा है कि उसे मरे हुओं
में से जी उठाया गया है, तो तुममें से
कुछ यह कैसे कहते हैं कि मरे हुओं
का जी उठना नहीं होगा? **13** वाकई,
अगर मरे हुओं का जी उठना नहीं होगा,
तो मसीह को भी नहीं जी उठाया
गया। **14** अगर मसीह को नहीं जी
उठाया गया, तो हमारा प्रचार करना
वाकई बेकार है और हमारा विश्वास
बेकार है। **15** इतना ही नहीं, हम
परमेश्वर के झूठे गवाह भी ठहरे, क्योंकि
हमने परमेश्वर के खिलाफ गवाही दी है
कि उसने मसीह को जी उठाया है, जबकि
अगर यह सच है कि वाकई मरे हुओं का
जी उठना नहीं होगा, तो परमेश्वर ने उसे
भी नहीं जी उठाया। **16** इसलिए कि
अगर मरे हुए ज़िंदा नहीं किए जाएँगे,
तो मसीह को भी नहीं उठाया गया।
17 और अगर मसीह को जी उठाया नहीं
गया, तो तुम्हारा विश्वास बेकार है और
तुम अब-भी अपने पापों में पड़े हुए हो।
18 अगर ऐसा है तो जो मसीह में मौत
की नींद सो गए हैं, वे भी पूरी तरह
मिट गए। **19** अगर हमने सिर्फ इसी
ज़िंदगी के लिए मसीह में आशा रखी है,
तो सारे इंसानों में सबसे ज़्यादा हम तरस
खाने लायक हैं।

20 लेकिन, सच तो यह है कि मसीह
को मरे हुओं में से जी उठाया गया है,
जो मौत की नींद सो गए हैं उनमें से वह
पहला फल है। **21** इसलिए कि एक
इंसान के ज़रिए मौत आयी, तो एक
इंसान के ज़रिए ही मरे हुओं का जी
उठना होगा। **22** ठीक जैसे आदम में
सभी मर रहे हैं, वैसे ही मसीह में सभी
ज़िंदा किए जाएँगे। **23** मगर हर कोई
अपनी-अपनी बारी से: पहले फलों के तौर
पर मसीह, उसके बाद वे जो मसीह के
हैं उसकी मौजूदगी* के दौरान ज़िंदा किए
जाएँगे। **24** इसके बाद अंत में, जब
वह सारी हुकूमत और सारे अधिकार और
सारी ताकत को मिटा चुका होगा, तब वह
अपने परमेश्वर और पिता के हाथ में राज
सौंप देगा। **25** इसलिए कि उसका
तब तक राजा बनकर राज करना ज़रूरी
है जब तक कि परमेश्वर सारे दुश्मनों
को उसके पाँव तले नहीं कर देता।
26 सब से आखिरी दुश्मन जो मिटा
दिया जाएगा, वह मौत है। **27** पर-
मेश्वर ने "सबकुछ उसके पाँवों तले कर
दिया।" मगर जब वह कहता है कि
'सबकुछ पाँव तले कर दिया गया है,' तो
ज़ाहिर है कि जिसने सबकुछ उसके पाँव
तले किया है वह खुद इसमें शामिल
नहीं है। **28** मगर जब सबकुछ उसके
अधीन कर दिया जाएगा, तब बेटा भी
अपने आप को उस एक के अधीन
कर देगा जिसने सबकुछ उसके अधीन
किया था, ताकि परमेश्वर ही सबके लिए
सबकुछ हो।

29 अगर मरे हुओं का जी उठना है

1कुरिं 15:23* अतिरिक्त लेख 5 देखें।

ही नहीं, तो वे क्या करेंगे जो मरे हुए
होने के मकसद से बपतिस्मा लेते हैं?
अगर ऐसा है ही नहीं, तो वे मरे हुए होने
के मकसद से बपतिस्मा क्यों ले रहे हैं?
30 हम भी क्यों हर घड़ी जोखिम उठाते
हैं? **31** भाइयो, जितना यह सच है
कि हमारे प्रभु मसीह यीशु में मैं तुम पर
गर्व करता हूँ, उतना ही यह भी सच है
कि मैं हर दिन मौत का सामना करता हूँ।
32 अगर बाकी इंसानों की तरह मैं भी,
इफिसुस में जंगली जानवरों से लड़ा, तो
इससे मुझे क्या फायदा हुआ? अगर मरे
हुओं को जी उठाया नहीं जाएगा, तो
"आओ हम खाएँ-पीएँ, क्योंकि कल तो
मरना ही है।" **33** धोखा न खाओ।
बुरी सोहबत अच्छी आदतें बिगाड़ देती
है। **34** नेकी के काम करने के लिए
होश में आ जाओ और पाप करने में न
लगे रहो, क्योंकि कुछ लोग परमेश्वर के
बारे में ज्ञान नहीं रखते। मैं तुम्हें शर्म
दिलाने के लिए यह कह रहा हूँ।

35 फिर भी, कोई कहेगाः "मरे हुओं
को कैसे जी उठाया जाएगा? हाँ, वे किस
किस्म के शरीर के साथ जी उठेंगे?"
36 अरे मूर्ख इंसान! तू जो बोता है वह
जब तक कि पहले मर न जाए, जीवन
नहीं पाता। **37** और तू जो बोता है,
वह पौधा नहीं है जो उगेगा बल्कि सिर्फ
एक दाना है, फिर चाहे वह गेहूं का हो
या बाकी किसी अनाज का। **38** मगर
परमेश्वर को जैसा अच्छा लगता है
वह उसे एक शरीर देता है और
हर बीज को उसका अपना एक शरीर
देता है। **39** सब शरीर एक जैसे नहीं
होते। इंसानों का शरीर अलग होता है,
जानवरों का शरीर अलग। पक्षियों का
शरीर अलग होता है और मछलियों का
शरीर अलग। **40** स्वर्गीय शरीर हैं
और धरती पर रहनेवालों के शरीर हैं,
मगर स्वर्गीय शरीरों का तेज एक किस्म
का है और धरती पर रहनेवालों के शरीर
का तेज दूसरे किस्म का है। **41** सूरज
का तेज एक किस्म का है और चाँद का
तेज दूसरे किस्म का और तारों का तेज
और किस्म का। दरअसल, एक तारे
से दूसरे तारे के तेज में फर्क है।

42 ऐसा ही मरे हुओं का जी
उठना भी है। शरीर नश्वर दशा में
बोया जाता है और अनश्वर दशा में जी
उठाया जाता है। **43** इसे अनादर की
दशा में बोया जाता है और महिमा की
दशा में जी उठाया जाता है। इसे कम-
ज़ोर दशा में बोया जाता है और शक्ति-
शाली दशा में जी उठाया जाता है।
44 हाड़-माँस का शरीर बोया जाता
है और आत्मिक* शरीर जी उठाया
जाता है। अगर हाड़-माँस का शरीर है,
तो आत्मिक शरीर भी है। **45** ऐसा
लिखा भी हैः "पहला आदमी, आदम
जीवित प्राणी बना।" आखिरी आदम
जीवन देनेवाला आत्मिक प्राणी* बना।
46 फिर भी, पहला वह नहीं था जो
आत्मिक* है, बल्कि वह था जो हाड़-

1कुरिं 15:44* यूनानी *नफ्मा।* अतिरिक्त लेख 7 देखें। **45*** यूनानी *नफ्मा।* अतिरिक्त लेख 7 देखें। **46*** यूनानी *नफ्मा।* अतिरिक्त लेख 7 देखें।

माँस का था, उसके बाद वह आया जो
आत्मिक है। **47** पहला आदमी धरती
से था और मिट्टी से बनाया गया था, दूसरा
स्वर्ग से था। **48** जैसा वह है जो मिट्टी
से बनाया गया है, वैसे ही दूसरे हैं जो
मिट्टी से बनाए गए हैं। और जैसा वह है
जो स्वर्गीय है, वैसे ही दूसरे भी हैं जो
स्वर्गीय हैं। **49** और ठीक जैसे हमने
उसकी छवि धारण की है जो मिट्टी से
बना था, वैसे ही हम उसकी छवि भी
धारण करेंगे जो स्वर्गीय है।

50 मगर भाइयो, मैं यह कहता हूँ
कि माँस और लहू परमेश्वर के राज के
वारिस नहीं हो सकते, न ही नश्वर-
ता, अनश्वरता की वारिस होती है।
51 देखो! मैं तुम्हें एक पवित्र रहस्य
बताता हूँ: हम सभी मौत की नींद नहीं
सोएँगे, मगर हम सभी बदल जाएँगे,
52 पल-भर में पलक झपकते ही,
आखिरी तुरही फूँके जाने के दौरान ऐसा
होगा। तुरही फूँकी जाएगी और मरे हुए
अनश्वर दशा में जी उठाए जाएँगे और
हम बदल जाएँगे। **53** इसलिए कि
यह जो नश्वर है इसे अनश्वरता को पह-
नना है और यह जो मरनहार है इसे
अमरता को पहनना है। **54** इसलिए
जब [यह जो नश्वर है वह अनश्वरता
को पहन लेता है और] यह जो मरनहार
है वह अमरता को पहन लेता है, तब यह
बात पूरी होगी जो लिखी है: "मौत को
हमेशा के लिए निगल लिया गया है।"
55 "मौत, तेरी जीत कहाँ है? मौत, तेरा
डंक कहाँ है?" **56** मौत पैदा करने-
वाला डंक पाप है, मगर पाप को जिससे
बल मिलता है वह मूसा का कानून है।
57 मगर परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो
हमारे प्रभु यीशु मसीह के ज़रिए हमें जीत
दिलाता है!

58 इसलिए मेरे प्यारे भाइयो, अटल
बनो, डटे रहो और प्रभु की सेवा
में व्यस्त रहने के लिए हमेशा तुम्हारे
पास बहुत काम हो, क्योंकि तुम जानते
हो कि प्रभु में तुम्हारी कड़ी मेहनत बेकार
नहीं है।

16 अब पवित्र जनों के लिए इकट्ठा
किए जानेवाले पैसों के बारे में,
मैंने जो आदेश गलातिया की मंडलियों को
दिए हैं, ठीक उसी तरह तुम भी करो।
2 हर हफ्ते के पहले दिन तुममें से हर
कोई अपने ही घर में अपनी आमदनी के
मुताबिक कुछ अलग जमा करता रहे
ताकि जब मैं आऊँ तो उस वक्त पैसे
इकट्ठे न करने पड़ें। **3** मगर जब मैं
वहाँ आऊँगा, तो तुमने अपनी चिट्ठियों में
जिन आदमियों की सिफारिश की है उन्हें
मैं भेज दूँगा कि वे उदारता से दिया
हुआ तुम्हारा तोहफा यरूशलेम ले जाएँ।
4 लेकिन अगर मेरे लिए भी वहाँ जाना
मुनासिब हुआ, तो वे मेरे साथ वहाँ
जाएँगे।

5 मगर मैं मकिदुनिया का दौरा पूरा
करने के बाद तुम्हारे पास आऊँगा क्योंकि
मैं मकिदुनिया से होकर ही आऊँगा
6 और शायद मैं तुम्हारे यहाँ ठहरूँ
या फिर शायद तुम्हारे यहीं सर्दियाँ भी
बिताऊँ और इसके बाद जहाँ मैं जाऊँगा
वहाँ के लिए तुम कुछ दूरी तक मुझे विदा

कर देना। **7** क्योंकि मैं नहीं चाहता
कि मैं अभी रास्ते में तुमसे बस मुला-
कात करता जाऊँ, इसलिए कि अगर
यहोवा इजाज़त दे तो मैं तुम्हारे साथ
कुछ वक्त बिताने की उम्मीद करता हूँ।
8 मगर मैं पिन्तेकुस्त के त्योहार तक
इफिसुस में ही रहूँगा, **9** इसलिए कि
मेरे लिए मौके का एक बड़ा दरवाज़ा
खोला गया है, ताकि मैं और भी सरगर्मी
के साथ सेवा कर सकूँ, मगर विरोधी भी
बहुत हैं।

10 लेकिन अगर तीमुथियुस वहाँ
आता है, तो इस बात का ध्यान रखना
कि वह तुम्हारे बीच बिना किसी डर के
रहे, इसलिए कि वह भी मेरी तरह यहोवा
का काम कर रहा है। **11** कोई उसे
तुच्छ न समझे। तुम उसे कुछ दूरी तक
ठीक तरह से विदा कर देना ताकि वह
यहाँ मेरे पास आ सके क्योंकि मैं भाइयों
के साथ उसका इंतज़ार कर रहा हूँ।

12 अब हमारे भाई अप्पुलोस की
बात कहूँ, तो मैंने उससे बहुत गुज़ारिश
की कि भाइयों के साथ तुम्हारे पास आए,
मगर अभी तुम्हारे पास आने की उसकी
बिलकुल भी इच्छा नहीं थी। मगर जब
उसे मौका मिलेगा तब वह तुम्हारे पास
आएगा।

13 जागते रहो, विश्वास में मज़बूत
खड़े रहो, दिलेर बनो,* शक्तिशाली
बनते जाओ। **14** तुम्हारे बीच सारे
काम प्यार से किए जाएँ।

15 अब भाइयो मैं तुम्हें यह सीख
देकर उकसाता हूँ: तुम जानते हो
कि स्तिफनास का घराना अखया के
पहले फल हैं और वे पवित्र जनों की
सेवा के लिए हमेशा तैयार रहते हैं।
16 तुम भी ऐसों के अधीन रहो और
ऐसे हर किसी के अधीन रहो जो सह-
योग देते हैं और कड़ी मेहनत करते हैं।
17 मगर मैं स्तिफनास और फूरतूना-
तुस और अखइखुस की मौजूदगी से
बेहद खुश हूँ, क्योंकि उन्होंने तुम्हारे
यहाँ न होने की कमी पूरी कर दी है।
18 उन्होंने तुम्हारा और मेरा जी* तरो-
ताज़ा किया है। इसलिए ऐसे आदमियों
की कदर किया करो।

19 एशिया* की मंडलियाँ तुम्हें
अपना नमस्कार भेजती हैं। अक्विला
और प्रिस्का, साथ ही उनके घर में इकट्ठा
होनेवाली मंडली भी प्रभु में तुम्हें दिल से
नमस्कार कहते हैं। **20** सारे भाई तुम्हें
नमस्कार भेजते हैं। पवित्र चुंबन से एक-
दूसरे का स्वागत करो।

21 मैं पौलुस खुद अपने हाथ से अब
तुम्हें नमस्कार लिखता हूँ।

22 अगर कोई प्रभु के लिए गहरा
लगाव नहीं रखता तो वह शापित
हो। हे हमारे प्रभु, आ! **23** प्रभु यीशु
की महा-कृपा हमेशा तुम्हारे साथ रहे।
24 मसीह यीशु में मेरा प्यार तुम सबके
साथ रहे।

1कुरिं 16:13* शाब्दिक, "मरदानगी से काम करते रहो।"

1कुरिं 16:18* यूनानी *नफ्मा।* अतिरिक्त लेख 7 देखें। **19*** प्रेषि 2:9 फुटनोट देखें।

कुरिंथियों के नाम दूसरी चिट्ठी

1 मैं पौलुस, जो परमेश्वर की मरज़ी
से मसीह यीशु का एक प्रेषित* हूँ,
हमारे भाई तीमुथियुस के साथ, कुरिंथ
में परमेश्वर की मंडली# को यह चिट्ठी
लिख रहा हूँ। और यह चिट्ठी उन सभी
पवित्र जनों के लिए भी है, जो सारे
अखया में हैं।

2 तुम्हें परमेश्वर हमारे पिता की
तरफ से और प्रभु यीशु मसीह की तरफ
से महा-कृपा और शांति मिले।

3 हमारे प्रभु यीशु मसीह का पर-
मेश्वर और पिता धन्य हो। वह कोमल
दया का पिता है और हर तरह का
दिलासा देनेवाला परमेश्वर है। **4** वह
हमारी सब दुःख-तकलीफों में हमें दिलासा
देता है ताकि हम, किसी भी तरह का
दुःख झेलनेवाले लोगों को वही दिलासा
दे सकें जो परमेश्वर हमें दे रहा है।
5 इसलिए कि जैसे मसीह की खातिर
हम बहुत दुःख झेलते हैं, उसी तरह मसीह
के ज़रिए हम बहुत दिलासा भी पाते हैं।
6 चाहे हम दुःख-तकलीफ में हैं, तो यह
तुम्हारे दिलासे और उद्धार के लिए है।
या, अगर हम दिलासा पा रहे हैं, तो यह
भी तुम्हारे दिलासे के लिए है। यह
दिलासा, वे सारे दुःख सहने में तुम्हारी
मदद करने का काम करता है जिन्हें हम
भी सहते हैं। **7** तुम्हारे बारे में हमारी
आशा अटल है, क्योंकि हम जानते हैं कि
जैसे तुम हमारे दुःखों में हिस्सेदार हो, वैसे
ही तुम हमारे साथ दिलासा भी पाओगे।

8 भाइयो, हम नहीं चाहते कि तुम
उस संकट से अनजान रहो जो एशिया*
ज़िले में हम पर आ पड़ा था। हम पर
ऐसी भारी मुसीबत आ पड़ी थी कि उसे
सहना हमारे बस के बाहर था, यहाँ तक
कि हमें अपने ज़िंदा बच पाने का बिल-
कुल भरोसा नहीं था। **9** दरअसल हमें
महसूस होने लगा था कि हम पर सज़ा-
ए-मौत का हुक्म हो चुका है। यह इस-
लिए हुआ कि हमारा भरोसा खुद पर न
हो बल्कि उस परमेश्वर पर हो जो मरे
हुओं को जी उठाता है। **10** उसने हमें
मौत के बड़े खतरे से बचाया है और
बचाएगा। हमारी यह आशा है कि वह
हमें आगे भी बचाता रहेगा। **11** तुम
भी प्रार्थना में हमारे लिए मिन्नतें करते
हुए हमारी मदद कर सकते हो। तब
बहुतों की प्रार्थनाओं की वजह से हम पर
जो कृपा की जाएगी, उसके लिए हमारी
खातिर बहुत-से लोग बदले में धन्यवाद
दे सकेंगे।

12 हमारे गर्व करने की वजह यह है
और हम साफ ज़मीर के साथ ऐसा कह
सकते हैं कि हम दुनिया में और खासकर

2कुरिं 1:1* या, "भेजा गया।" यूनानी में *"अपोस्टो-
लोस।"* **1#** मत्ती 16:18 दूसरा फुटनोट देखें।

2कुरिं 1:8* प्रेषि 2:9 फुटनोट देखें।

तुम्हारे बीच ऐसी पवित्रता और सीधाई
से रहे हैं जो परमेश्वर सिखाता है।
हम दुनियावी बुद्धि पर नहीं बल्कि पर-
मेश्वर की महा-कृपा पर निर्भर रहे हैं।
13 दरअसल, हम उन बातों को छोड़
तुम्हें और कुछ नहीं लिख रहे जिन्हें तुम
अच्छी तरह जानते हो या मानते भी
हो, और आशा करता हूँ कि आखिर
तक मानते भी रहोगे। **14** ठीक जैसे
तुमने, कुछ हद तक यह बात मानी भी
है कि हम तुम्हारे लिए गर्व करने की
वजह हैं, वैसे ही तुम भी हमारे प्रभु यीशु
के दिन में हमारे लिए गर्व करने की वजह
ठहरोगे।

15 इस भरोसे के साथ मैंने पहले
इरादा किया था कि तुम्हारे पास दूसरी
बार आऊँ ताकि तुम्हें खुशी का एक
और मौका मिले **16** और तुम्हारे यहाँ
ठहरने के बाद मकिदुनिया जाऊँ, और
फिर मकिदुनिया से लौटकर तुम्हारे पास
आऊँ और तुम मुझे यहूदिया के सफर
पर कुछ दूरी तक विदा करो। **17** जब
मैंने यह इरादा किया तो क्या मैंने बिना
सोचे-समझे ऐसा किया था या जब मैं कुछ
इरादा करता हूँ तो क्या मैं शरीर की
ख्वाहिश के मुताबिक चलता हूँ कि एक
ही वक्त में पहले तो 'हाँ, हाँ' कहूँ, मगर
फिर 'न, न'? **18** मगर जैसे पर-
मेश्वर पर भरोसा किया जा सकता है,
वैसे ही इस बात का भी भरोसा किया जा
सकता है कि जब हम तुमसे 'हाँ' कहते
हैं, तो उसका मतलब 'न' नहीं होता।
19 इसलिए कि परमेश्वर का बेटा मसीह
यीशु, जिसका हमने यानी, मैंने, सिल-
वानुस* और तीमुथियुस ने तुम्हारे बीच
प्रचार किया था, वह 'हाँ' होने के साथ-
साथ 'न' नहीं है, बल्कि उसके मामले में
'हाँ' का मतलब हमेशा 'हाँ' हुआ है।
20 इसलिए कि परमेश्वर के चाहे कितने
ही वादे हों, वे सब उसी के ज़रिए 'हाँ' हुए
हैं। इसलिए उसी के ज़रिए परमेश्वर से
"आमीन" कहा जाता है, ताकि हम पर-
मेश्वर को महिमा दे सकें। **21** मगर
वह जो इस बात की गारंटी देता है कि
तुम और हम मसीह के हैं और जिसने
हमारा अभिषेक किया है, वह परमेश्वर
है। **22** उसने हम पर अपनी मुहर भी
लगायी है और जो आनेवाला है, उसका
बयाना यानी पवित्र शक्ति दी है जो हमारे
दिलों में है।

23 अगर मेरी बात सच नहीं तो पर-
मेश्वर मेरे खिलाफ गवाह होगा कि मैं
अब तक सिर्फ इसलिए कुरिंथ नहीं आया
क्योंकि मैं तुम्हें और ज़्यादा दुःखी नहीं
करना चाहता था। **24** यह बात नहीं
कि हम तुम्हारे विश्वास के मालिक हैं,
बल्कि हम तुम्हारी खुशी के लिए तुम्हारे
सहकर्मी हैं, क्योंकि तुम अपने ही विश्वास
की वजह से खड़े हो।

2 मैंने यह फैसला किया है कि जब मैं
दोबारा तुम्हारे पास आऊँ, तो तुम्हें
उदास न करूँ। **2** इसलिए कि अगर
मैं तुम्हें उदास कर दूँ तो मुझे कौन खुश
करेगा, सिवा उसके जिसे मैंने उदास किया
है? **3** मैंने तुम्हें यह सब लिखा है,

2कुरिं 1:19* या, "सीलास।"

ताकि जब मैं आऊँ तो जिनसे मुझे खुशी
मिलनी चाहिए उनकी वजह से मैं उदास
न हो जाऊँ, क्योंकि मुझे तुम सब पर
भरोसा है कि जिन बातों से मुझे खुशी
मिलती है उन्हीं बातों से तुम्हें भी खुशी
मिलती है। **4** मैंने बड़ी तकलीफ और
दिल की तड़प के साथ आँसू बहा-बहाकर
तुम्हें लिखा, इसलिए नहीं कि तुम उदास
हो जाओ बल्कि इसलिए कि तुम मेरे उस
प्यार को जान सको जो मुझे खास तौर
पर तुमसे है।

5 अब अगर किसी ने उदास किया
है, तो उसने मुझे नहीं बल्कि तुम सबको
कुछ हद तक उदास किया है, हालाँकि
मैं बहुत कड़े शब्द इस्तेमाल नहीं करना
चाहता। **6** उस आदमी को ज़्यादातर
लोगों ने जो ताड़ना दी है वह काफी है।
7 इसलिए अब तुम्हें उसे कृपा दिखाते
हुए माफ करना चाहिए और उसे दिलासा
देना चाहिए, कहीं ऐसा न हो कि वह
आदमी हद-से-ज़्यादा उदासी में डूब जाए।
8 इसलिए मैं तुम्हें उकसाता हूँ कि तुम
उस आदमी को अपने प्यार का सबूत दो।
9 मैं तुम्हें यह चिट्ठी इसलिए भी लिख
रहा हूँ कि मैं इस बात का सबूत पा सकूँ
कि तुम सब बातों में आज्ञा मानते हो कि
नहीं। **10** तुम जिस किसी पर कृपा
दिखाते हुए उसका कोई अपराध माफ
करते हो, मैं भी उसे माफ करता हूँ। दर-
असल, जहाँ तक मेरी बात है, अगर मैंने
कृपा दिखाते हुए कोई अपराध माफ किया
है, तो जो कुछ मैंने माफ किया है वह
मसीह के सामने तुम्हारी खातिर किया है,
11 ताकि शैतान हम पर हावी न हो
जाए, इसलिए कि हम उसकी चालबाज़ियों
से अनजान नहीं।

12 जब मैं मसीह के बारे में खुश-
खबरी सुनाने त्रोआस पहुँचा और प्रभु का
काम और ज़्यादा करने के लिए मुझे एक
मौका दिया गया,* **13** तो मेरे भाई
तीतुस को वहाँ न पाने की वजह से मेरे
जी* को चैन न मिला। तब मैंने वहाँ चेलों
से अलविदा कहा और मकिदुनिया के
लिए रवाना हो गया।

14 मगर परमेश्वर का धन्यवाद हो
जो हमेशा हमारे आगे-आगे चलता हुआ
हमें जीत के जुलूस में मसीह के संग लिए
चलता है और हमारे ज़रिए अपने ज्ञान
की सुगंध हर जगह फैलाता है!
15 इसलिए कि परमेश्वर के सामने
हम, उद्धार की राह पर चलनेवालों और
विनाश की राह पर चलनेवालों, दोनों के
लिए मसीह के बारे में समाचार की सुगंध
हैं, **16** यानी कितनों के लिए मौत की
वह गंध जिसका अंजाम मौत होता है और
कितनों के लिए जीवन की वह सुगंध
जिसका अंजाम ज़िंदगी होता है। और
कौन ऐसी सेवा के लिए ज़रूरी योग्यता
रखता है? **17** हम रखते हैं, इसलिए
कि हम परमेश्वर के वचन का सौदा
करनेवाले* नहीं, जैसा कितने ही करते
हैं, मगर हम मन की सीधाई से, हाँ, पर-
मेश्वर की तरफ से भेजे हुओं के नाते,

2कुरिं 2:12* शाब्दिक, “मेरे लिए एक दर-वाज़ा खोला गया।” **13*** यूनानी *नफ्मा* / अतिरिक्त लेख 7 देखें। **17*** शाब्दिक, “फेरीवाले।”

परमेश्वर को हाज़िर जानकर मसीह के
संग बोलते हैं।

3 क्या हम एक बार फिर नए सिरे से
अपना परिचय देने के लिए अपनी
सिफारिश कर रहे हैं? या शायद कुछ
लोगों की तरह, क्या हमें भी तुम्हें दिखाने
के लिए सिफारिशी चिट्ठियाँ चाहिए या
क्या हमें तुमसे सिफारिशी चिट्ठी पाने की
ज़रूरत है? **2** हमारी सिफारिशी चिट्ठी
तुम खुद हो, जो हमारे दिलों पर लिखी
है और जिसे सब लोग जानते और पढ़ते
हैं। **3** यह ज़ाहिर है कि तुम मसीह
की चिट्ठी हो जिसे हम सेवकों ने स्याही
से नहीं बल्कि जीवित परमेश्वर की पवित्र
शक्ति से और पत्थर की पटियाओं पर
नहीं बल्कि दिलों* पर लिखा है।

4 मसीह के ज़रिए परमेश्वर के
सामने हम यही भरोसा रखते हैं।
5 हमारे अंदर ज़रूरी योग्यता अपनी
तरफ से नहीं है, न ही हम यह मानते हैं
कि हमारी अपनी किसी खूबी की वजह
से हममें यह योग्यता है। बल्कि हमें ज़रू-
रत के हिसाब से योग्यता परमेश्वर की
तरफ से मिली है। **6** वाकई उसी ने
हमें ज़रूरत के हिसाब से योग्य बनाया है
कि हम किसी लिखित कानून के नहीं,
बल्कि एक नए करार के और पवित्र
शक्ति के सेवक बनें। क्योंकि लिखित
कानून तो मौत की सज़ा सुनाता है,
मगर परमेश्वर की पवित्र शक्ति जीवन
देती है।

7 यही नहीं, अगर वह कानून जो
मौत देता है और जो पत्थरों पर खोद-
कर लिखा गया था, इतनी महिमा के साथ
आया कि इसराएली, मूसा के चेहरे से
निकलनेवाले तेज की वजह से उसे एक-
टक नहीं देख सके, जबकि वह ऐसा
तेज था जिसे मिट जाना था, **8** तो
पवित्र शक्ति का दिया जाना और भी
ज़्यादा महिमा के साथ क्यों नहीं होना
चाहिए? **9** अगर दोषी ठहरानेवाला
कानून महिमा से भरपूर था, तो नेक ठह-
रानेवाली सेवा और भी कितनी महिमा से
भरपूर होगी। **10** दरअसल जिसे एक
वक्त महिमा से भरपूर किया गया था,
उसकी महिमा भी इस मायने में घटायी
गयी कि जो उसके सामने लाया गया वह
इससे भी बढ़कर महिमा से भरपूर था।
11 तो जिसे मिटा दिया जाना था, अगर
उसे बड़ी महिमा के साथ लाया गया, तो
जो रहनेवाला है, उसकी महिमा कितनी
बढ़कर होगी।

12 क्योंकि हमारी ऐसी आशा है,
इसलिए हम बड़ी हिम्मत के साथ बेझिझक
बोलते हैं **13** और हम वह नहीं करते
जो मूसा करता था जब वह अपने चेहरे
पर परदा डाला करता था ताकि इसरा-
एली उस मिटनेवाले के अंजाम* को एक-
टक न देख सकें। **14** मगर उनकी
सोचने-समझने की शक्ति मंद पड़ गयी
थी। इसलिए कि आज के दिन तक पुराने
करार* के पढ़े जाने के वक्त उनके मनों

2कुरिं 3:3* शाब्दिक, "माँस की पटियाओं पर, दिलों पर।"

2कुरिं 3:13* या, "अंत।" **14*** अतिरिक्त लेख 10 देखें।

पर वही परदा पड़ा रहता है, क्योंकि वह
परदा सिर्फ मसीह के ज़रिए दूर किया
जाता है। **15** असल में, आज के दिन
तक जब कभी मूसा के लेख पढ़कर सुनाए
जाते हैं, तो उनके दिलों पर परदा पड़ा
रहता है। **16** मगर जब कोई पलट-
कर यहोवा* के पास आता है, तो वह
परदा हटा दिया जाता है। **17** यहोवा
आत्मा* है और जहाँ यहोवा की
पवित्र शक्ति है, वहाँ आज़ादी होती है।
18 हम उसी की छवि में बदलते जाते
हैं और इस दौरान हम कम महिमा से बढ़-
कर और भी ज़्यादा महिमा हासिल करते
जाते हैं और अपने चेहरों से आइने की
तरह यह महिमा झलकाते हैं। इस तरह
हम ठीक वैसे ही बनते जा रहे हैं जैसा
खुद यहोवा हमें बनाना चाहता है, जो
आत्मा* है।

4 इसलिए जब हम पर ऐसी दया की
गयी कि हमें यह सेवा सौंपी गयी
तो हम हिम्मत नहीं हारते, **2** मगर
हमने छल-कपट के काम छोड़ दिए हैं जो
शर्मनाक हैं। हम न तो चालाकी करते हैं,
न ही परमेश्वर के वचन में मिलावट करते
हैं, मगर हम सच्चाई ज़ाहिर करते हैं
और परमेश्वर के सामने हर इंसान के
ज़मीर को भानेवाली अच्छी मिसाल रखते
हैं। **3** अब अगर उस खुशखबरी पर,
जिसका हम ऐलान करते हैं, वाकई परदा
पड़ा हुआ है, तो यह परदा उनके लिए
पड़ा हुआ है जो विनाश की तरफ जा रहे
हैं। **4** उन अविश्वासियों के मन, इस
दुनिया की व्यवस्था* के ईश्वर ने अंधे
कर दिए हैं, ताकि मसीह जो परमेश्वर
की छवि है, उसके बारे में शानदार खुश-
खबरी की रौशनी उन पर न चमके।
5 इसलिए कि हम खुद अपने बारे में
नहीं, बल्कि मसीह यीशु के बारे में प्रचार
कर रहे हैं कि वह प्रभु है और अपने
बारे में यह कहते हैं कि हम यीशु की
खातिर तुम्हारे दास हैं। **6** इसलिए कि
वह परमेश्वर ही था जिसने कहा: "अंध-
कार से रौशनी चमके।" वही हमारे दिलों
पर चमका है ताकि इन्हें परमेश्वर के उस
शानदार ज्ञान से रौशन करे जो मसीह के
चेहरे से झलकता है।

7 लेकिन, हमारे पास यह खज़ाना
मिट्टी के बरतनों में है, ताकि यह ज़ाहिर
हो सके कि वह ताकत जो आम इंसानों
की ताकत से कहीं बढ़कर है, हमें पर-
मेश्वर की तरफ से मिली है, न कि यह
हमारी अपनी है। **8** हम हर तरह से
दबाए तो जाते हैं, मगर ना-उम्मीदी की
हद तक नहीं, उलझन में तो होते हैं कि
क्या करें, मगर यह नहीं कि सारे रास्ते
बंद हो जाएँ। **9** हम पर ज़ुल्म तो ढाए
जाते हैं, मगर हम मँझधार में नहीं छोड़े
जाते। हम गिराए तो जाते हैं, मगर नाश
नहीं किए जाते। **10** जहाँ कहीं हम
जाते हैं हम अपने शरीर पर वह जानलेवा

2कुरिं 3:16* यह उन 237 जगहों में से एक जगह है, जहाँ परमेश्वर का नाम, 'यहोवा' इस अनुवाद के मुख्य पाठ में पाया जाता है। अतिरिक्त लेख 2 देखें। **17*** यूनानी *नफ्मा* / अतिरिक्त लेख 7 देखें। **18*** यूनानी *नफ्मा* / अतिरिक्त लेख 7 देखें।

2कुरिं 4:4* या, "ज़माने।"

बदसलूकी बरदाश्त करते हैं जो यीशु
के साथ की गयी थी, ताकि यीशु की
ज़िंदगी भी हमारे शरीर में ज़ाहिर की जा
सके। **11** इसलिए कि हम जो ज़िंदा
हैं, यीशु की खातिर हमेशा मौत के मुँह
में डाले जाते हैं, ताकि हमारे मरनहार
शरीर में यीशु का जीवन भी ज़ाहिर हो।
12 इसीलिए हममें मौत काम कर रही
है, मगर तुममें जीवन।

13 अब क्योंकि हममें विश्वास की
वही भावना है जिसके बारे में यह लिखा
है: "मैंने विश्वास दिखाया, इसलिए मैं
बोला," हम भी विश्वास दिखाते हैं और
इसलिए हम बोलते हैं, **14** यह जानते
हुए कि जिसने यीशु को जी उठाया वह
हमें भी उसी तरह जी उठाएगा जैसे यीशु
को और तुम्हारे साथ हमें भी उसके सामने
पेश करेगा। **15** यह सबकुछ तुम्हारी
खातिर हुआ है, ताकि जो महा-कृपा बहु-
तायत में हुई है वह और भी बहुत-से
लोगों के धन्यवाद देने से और ज़्यादा बढ़े,
जिससे परमेश्वर की महिमा भी बढ़े।

16 इसलिए हम हार नहीं मानते,
चाहे हमारा बाहर का इंसान* मिटता
जा रहा है, मगर हमारा अंदर का
इंसान दिन-ब-दिन नया होता जा रहा है।
17 हालाँकि हमारी दुःख-तकलीफें पल-
भर के लिए और हल्की हैं, ये हमारे लिए
ऐसी अपार महिमा पैदा करती हैं जो
बेमिसाल है और हमेशा तक कायम रहती
है। **18** इस दौरान हम अपनी नज़र
दिखायी देनेवाली चीज़ों पर नहीं, बल्कि
अनदेखी चीज़ों पर टिकाए रखते हैं। इस-
लिए कि जो चीज़ें दिखायी देती हैं वे कुछ
वक्त के लिए हैं, मगर जो दिखायी नहीं
देतीं वे हमेशा कायम रहती हैं।

5 हम जानते हैं कि जब धरती पर
हमारा यह घर, यानी शरीर का यह
डेरा मिट जाएगा, तब हमें परमेश्वर की
तरफ से स्वर्ग में हमेशा तक कायम रहने-
वाली ऐसी इमारत, ऐसा घर मिलेगा जो
हाथ से नहीं बनाया गया। **2** क्योंकि
हम इस डेरे में वाकई कराहते हैं और
हमारे अंदर उसे पहनने की दिली तमन्ना
है जो हमारे लिए स्वर्ग से है, **3** ताकि
जब हम उसे सचमुच पहन लेंगे, तो हम
नंगे नहीं पाए जाएँगे। **4** दरअसल,
हम जो इस डेरे में हैं, हम बोझ से दबे
हुए कराहते हैं। यह नहीं कि हम इसे
उतारना चाहते हैं, बल्कि स्वर्ग के उस डेरे
को पहनना चाहते हैं, ताकि जो मरनहार
है उसे जीवन निगल सके। **5** जिसने
हमें इसी बात के लिए तैयार किया है,
वह परमेश्वर है। उसने हमें जो आने-
वाला है उसके बयाने के तौर पर अपनी
पवित्र शक्ति दी है।

6 इसलिए हम हमेशा हिम्मत रखते
हैं और जानते हैं कि जब तक हम इस
घर-सरीखे शरीर में हैं, तब तक हम प्रभु
के सामने से गैर-हाज़िर हैं **7** और
हम यह बात इसलिए जानते हैं क्योंकि
हम आँखों-देखी चीज़ों से नहीं बल्कि
विश्वास से चलते हैं। **8** मगर हम
हिम्मत रखते हैं और यही चाहते हैं कि
इस इंसानी शरीर में अब न जीएँ और

2कुरिं 4:16* या, "हमारा शरीर।"

प्रभु के साथ निवास करें। **9** इसलिए
हमने यह लक्ष्य भी रखा है कि चाहे हम
उसके साथ निवास करें या उसके सामने
से गैर-हाज़िर हों, हम उसे खुश करें।
10 क्योंकि मसीह के न्याय-आसन के
सामने हममें से हरेक के बारे में ज़ाहिर
हो जाएगा कि हम कैसे इंसान हैं, ताकि
हरेक को उन कामों का बदला मिल सके
जो वह अपने शरीर से करता रहा है,
फिर चाहे वे अच्छे हों या बुरे।

11 इसलिए, हम प्रभु का भय मानते
हुए इंसानों को दलीलें देकर यकीन दिलाते
हैं कि हमारी सुनें, मगर परमेश्वर जानता
है कि हम कैसे इंसान हैं और मैं उम्मीद
करता हूँ कि तुम सबका ज़मीर भी यह
जान गया है कि हम कैसे इंसान हैं।
12 हम तुम्हारे सामने एक बार फिर,
नए सिरे से अपनी सिफारिश नहीं कर
रहे, मगर तुम्हें हमारे अपने बारे में गर्व
करने का मौका दे रहे हैं, ताकि तुम
उन्हें जवाब दे सको जो दिल को नहीं
बल्कि सूरत देखकर शेखी मारते हैं।
13 अगर हमारा दिमाग ठिकाने पर
नहीं था, तो यह परमेश्वर के लिए था,
अगर हम दिमाग से ठीक हैं तो यह
तुम्हारे लिए है। **14** मसीह का प्यार
हमें मजबूर करता है, क्योंकि हमने यह
निचोड़ निकाला है: एक आदमी सबके
लिए मरा और इस तरह सभी मर गए।
15 वह सबके लिए मरा ताकि जो जीते
हैं वे अब से खुद के लिए न जीएँ, बल्कि
उसके लिए जीएँ जो उनके लिए मरा और
जी उठाया गया।

16 इसलिए अब से हम किसी भी
इंसान को शरीर के मुताबिक नहीं देखते।
चाहे हमने पहले मसीह को शरीर के मुता-
बिक जाना भी था, मगर अब से हम उसे
ऐसे नहीं जानते। **17** इसलिए अगर
कोई मसीह के साथ एकता में है, तो वह
एक नयी सृष्टि है। पुरानी चीज़ें गुज़र
चुकी हैं, देखो! नयी चीज़ें वजूद में आयी
हैं। **18** मगर सारी चीज़ें परमेश्वर की
तरफ से हैं जिसने मसीह के ज़रिए अपने
साथ हमारी सुलह करवायी और हमें
सुलह करवाने की सेवा दी। **19** यानी
यह ऐलान करने की सेवा कि परमेश्वर,
मसीह के ज़रिए दुनिया की अपने साथ
सुलह करवा रहा है और उसने उनके
गुनाहों का उनसे हिसाब नहीं लिया और
हमें सुलह का संदेश सौंपा।

20 इसलिए हम मसीह के बदले में
काम करनेवाले राजदूत हैं, मानो पर-
मेश्वर हमारे ज़रिए गुज़ारिश कर रहा है।
मसीह के बदले में काम करनेवालों के
नाते हम बिनती करते हैं: "परमेश्वर
के साथ सुलह कर लो।" **21** जिसने
कभी पाप नहीं किया, उसे परमेश्वर
ने हमारे लिए पाप-बलि ठहराया ताकि
उसके ज़रिए हम परमेश्वर की नज़र में
नेक ठहरें।

6 परमेश्वर के साथ काम करते हुए
हम तुमसे यह भी गुज़ारिश करते हैं
कि परमेश्वर की महा-कृपा को स्वीकार
करने के बाद उस कृपा का मकसद मत
भूलो। **2** इसलिए कि वह कहता है:
"मंज़ूरी पाने के वक्त में मैंने तेरी सुनी

और उद्धार के दिन में तेरी मदद की।”
देखो! अभी खास तौर पर मंज़ूरी पाने का
वक्त है। देखो! अभी उद्धार का वह
दिन है।

3 हम किसी भी तरह से ठोकर
खाने की कोई वजह नहीं देते ताकि
हमारी सेवा में कोई खामी न पायी जाए।
4 लेकिन हर तरह से हम परमेश्वर के
सेवक होने का सबूत देते हैं, बहुत कुछ
धीरज के साथ सहने से, दुःख-तकलीफों
से, तंगहाली से, मुश्किलों से, **5** मार
खाने से, कैद होने से, हंगामों से, कड़ी
मेहनत से, जागते हुए रातें काटने से,
भूखे पेट रहने से, **6** शुद्धता से, ज्ञान
से, सहनशीलता से, कृपा से, परमेश्वर
की पवित्र शक्ति से, बिना कपट प्यार
करने से, **7** सच्ची बातें बोलने से,
परमेश्वर की ताकत से। दाएँ और बाएँ
हाथ में नेकी के हथियारों के ज़रिए,
8 इज़्ज़त और बेइज़्ज़ती के दौरान, नेक-
नामी और बदनामी के दौरान। हम धोखा
देनेवाले मालूम होते हैं, मगर सच्चे हैं,
9 अनजानों जैसे हैं फिर भी मशहूर हैं,
मरने पर हैं फिर भी देखो! हम ज़िंदा हैं
और ऐसे हैं जिन्हें अनुशासन दिया गया
है फिर भी हमें मौत के हवाले नहीं
किया गया, **10** दुःख मनानेवालों जैसे
हैं मगर हमेशा खुश रहते हैं, गरीब जैसे
हैं फिर भी बहुतों को अमीर बनाते हैं,
मानो कंगाल हैं फिर भी हमारे पास स-
बकुछ है।

11 कुरिंथियो, हमने खुलकर तुमसे
बात की है, हमने तुम्हारे लिए अपना दिल
और बड़ा किया है। **12** हमारे दिल
में तुम्हारे लिए बहुत जगह है, मगर
तुम्हारे अपने दिल में कोमल स्नेह के लिए
जगह नहीं, तुम तंगदिल हो गए हो।
13 इसलिए अपने बच्चे जानकर तुमसे
कहता हूँ कि तुम भी बदले में अपने दिलों
को बड़ा करो।

14 अविश्वासियों के साथ बेमेल जूए
में न जुतो। क्योंकि नेकी के साथ दुरा-
चार का क्या मेल? या रौशनी के साथ
अंधेरे की क्या साझेदारी? **15** और
मसीह और शैतान* के बीच क्या ताल-
मेल? या एक विश्वासयोग्य इंसान का
एक अविश्वासी के साथ क्या हिस्सा?
16 और परमेश्वर के मंदिर का मूर्तियों
के साथ क्या समझौता? इसलिए कि
हम जीवित परमेश्वर का एक मंदिर
हैं, ठीक जैसा परमेश्वर ने कहा है:
“मैं उनके बीच रहूँगा और उनके
बीच चलूँगा-फिरूँगा और मैं उनका पर-
मेश्वर होऊँगा और वे मेरे लोग होंगे।”
17 “यहोवा कहता है, ‘इसलिए उनके
बीच में से निकल आओ और खुद को
उनसे अलग करो और अशुद्ध चीज़
को छूना बंद करो, तब मैं तुम्हें
अपने पास ले लूँगा।’” **18** “सर्व-
शक्तिमान यहोवा कहता है, ‘और मैं
तुम्हारा पिता होऊँगा और तुम मेरे बेटे-
बेटियाँ होगे।’”

7 इसलिए, मेरे प्यारो, जबकि हमसे
ये वादे किए गए हैं, तो आओ हम
तन और मन की हर गंदगी को दूर कर
खुद को शुद्ध करें और परमेश्वर का

2कुरिं 6:15* या, “बलियाल।”

भय मानते हुए पूरी हद तक पवित्रता
हासिल करें।
2 हमें अपने दिलों में जगह दो। हमने
किसी का बुरा नहीं किया, किसी को भ्रष्ट
नहीं किया, न ही किसी का फायदा
उठाया। 3 मैं तुम्हें दोषी ठहराने के
लिए यह नहीं कहता। इसलिए कि मैंने
पहले तुमसे कहा था कि हम चाहे जीएँ,
चाहे मरें तुम हर हाल में हमारे दिल में
रहते हो। 4 मैं तुमसे बेझिझक खुल-
कर बात कर सकता हूँ। मैं तुम्हारे बारे
में बहुत शेखी मारता हूँ। मुझे पूरा दिलासा
मिला है, सारे दुःख-दर्द में भी मेरा दिल
खुशी से उमड़ रहा है।
5 दरअसल, जब हम मकिदुनिया
पहुँचे, तो हमें बिलकुल भी चैन नहीं
मिला, मगर हम हर तरह का दुःख-दर्द
झेलते रहे—बाहर झगड़े थे और अंदर
डर था। 6 फिर भी, परमेश्वर जो
मुसीबत के मारे हुओं को दिलासा देता है,
उसने हमें तीतुस की मौजूदगी से दिलासा
दिया। 7 मगर सिर्फ उसकी मौजूदगी
से ही नहीं बल्कि तीतुस ने तुम्हारी वजह
से जो तसल्ली पायी उससे भी हमें दिलासा
मिला, क्योंकि उसने वापस आकर हमें
तुम्हारी दिली तमन्ना, तुम्हारे शोक और
मेरे लिए तुम्हारे जोश की खबर दी, इस-
लिए मैं और भी खुश हुआ।
8 इसलिए, चाहे मैंने तुम्हें अपनी
चिट्ठी से उदास किया हो, तो भी अब मुझे
इसका अफसोस नहीं। हाँ, शुरू में मुझे
इसका अफसोस हुआ था, (मैं देखता हूँ
कि उस चिट्ठी ने तुम्हें उदास किया, मगर
थोड़ी ही देर के लिए) 9 मगर अब मैं
खुशी मनाता हूँ, इसलिए नहीं कि तुम
सिर्फ उदास हुए थे, बल्कि इस कदर
उदास हुए कि तुमने पश्चाताप किया।
क्योंकि तुम परमेश्वर की मरज़ी के मुता-
बिक उदास हुए ताकि तुम हमारी वजह
से कोई नुकसान न उठाओ। 10 इस-
लिए कि परमेश्वर की मरज़ी के मुता-
बिक उदास होने से पश्चाताप पैदा होता है
जिसका नतीजा उद्धार है और इसमें पछ-
ताने की कोई बात नहीं, मगर दुनियावी
उदासी मौत ले आती है। 11 देखो!
इसी बात से, हाँ, परमेश्वर की मरज़ी के
मुताबिक तुम्हारे उदास होने से तुममें
कितनी ज़्यादा तत्परता, हाँ, खुद पर से
लांछन दूर करने का कैसा जज़्बा, कितना
आक्रोश, कितना भय पैदा हुआ, हाँ,
तुम्हारे अंदर कैसी हसरत, कैसा जोश
पैदा हुआ और तुमने गलती को सुधारा!
तुमने हर तरह से ज़ाहिर किया है कि तुम
इस मामले में बेदाग हो। 12 असल
में, मैंने तुम्हें लिखा तो सही, मगर मैंने
न तो उसकी वजह से लिखा जिसने यह
बुराई की थी, न ही उसकी वजह से
जिसके खिलाफ यह बुराई हुई थी, बल्कि
इसलिए लिखा ताकि तुम अपने बीच और
परमेश्वर के सामने यह ज़ाहिर कर सको
कि तुम हमारी बात मानने के लिए कितने
तत्पर हो। 13 इसलिए हमें दिलासा
मिला है।

लेकिन, खुद दिलासा पाने के अलावा
हम तीतुस की खुशी की वजह से
और भी ज़्यादा खुश थे, क्योंकि तुम

सबने उसके दिल* को ताज़गी दी है।
14 इसलिए कि अगर मैंने उसके सामने
तुम्हारे बारे में कोई शेखी मारी थी,
तो मुझे अपनी बातों पर शर्मिंदा नहीं
होना पड़ा। मगर जिस तरह हमने तुमसे
जो कुछ कहा वह सच था, उसी तरह
हमने तीतुस के सामने तुम्हारे बारे में जो
शेखी मारी थी वह भी सच साबित हुई।
15 और जब वह याद करता है कि तुम
सबने किस तरह आज्ञा मानी और डरते
और काँपते हुए उसका स्वागत किया तो
तुम्हारे लिए उसका कोमल स्नेह और भी
बढ़ता जाता है। **16** मैं खुशी मनाता
हूँ, क्योंकि तुम्हारी वजह से मुझे बड़ी
हिम्मत मिलती है।

8 भाइयो, अब हम तुम्हें परमेश्वर की
उस महा-कृपा के बारे में बता रहे
हैं जो मकिदुनिया की मंडलियों पर हुई है
2 कि जब वे बड़ी परीक्षा के दौरान
दुःख झेल रहे थे तब अपनी घोर गरीबी
के बावजूद उन्होंने बड़ी खुशी के साथ
अपनी दरियादिली की दौलत लुटायी।
3 उन्होंने अपने बूते से बढ़कर, हाँ, मैं
गवाही देता हूँ कि अपनी हैसियत से
कहीं बढ़कर ऐसा किया। **4** और इन
भाइयों ने अपने आप ही हमसे गुज़ा-
रिश की, यहाँ तक कि मिन्नतें कीं कि
पवित्र जनों की सेवा के लिए जो तय
किया गया है, उसमें दान करने का
उन्हें भी सम्मान दिया जाए। **5** और
उन्होंने हमारी उम्मीद से भी बढ़कर किया,
क्योंकि पहले तो उन्होंने खुद को प्रभु के
लिए और परमेश्वर की मरज़ी से हमारे
लिए दे दिया। **6** इस वजह से हमने
तीतुस को उकसाया कि जिस तरह उसने
तुम्हारे बीच इस काम की शुरूआत की
थी, उसी तरह वह तुम्हारे बीच दान इकट्ठा
करने का काम पूरा भी करे। **7** तो
फिर, ठीक जैसे तुम हर बात में, यानी
विश्वास और बोलने की काबिलीयत और
ज्ञान और सारी तत्परता और वैसा ही
प्यार दिखाने में जो हमें तुमसे है, धनी
हो, वैसे ही तुम यह तोहफा देने में भी
धनी बनो।

8 यह बात मैं तुम्हें हुक्म की तरह
नहीं कह रहा, मगर दूसरों की तत्परता
को देखते हुए और तुम्हारे प्यार की
सच्चाई को परखने के लिए मैं ऐसा कह
रहा हूँ। **9** इसलिए कि तुम हमारे प्रभु
यीशु मसीह की महा-कृपा को जानते हो
कि वह अमीर होते हुए भी तुम्हारी खातिर
गरीब बना, ताकि तुम उसकी गरीबी से
अमीर बन सको।

10 और इस मामले में मैं अपनी राय
दे रहा हूँ: यह काम पूरा करना तुम्हारे
ही फायदे के लिए है, क्योंकि एक साल
बीत चुका है जब तुमने न सिर्फ यह काम
करने की इच्छा दिखायी थी, बल्कि यह
काम शुरू भी किया था। **11** इसलिए,
अब यह काम पूरा भी करो, ताकि जैसे
तुमने इसे करने की तैयारी दिखायी थी,
वैसे ही तुम्हारे पास जो है उससे अब
यह काम पूरा भी किया जाना चाहिए।
12 इसलिए कि जहाँ कोई इंसान कुछ

2कुरिं 7:13* यूनानी *नफ्मा।* अतिरिक्त लेख 7 देखें।

देना चाहता है, वहाँ उसके पास देने के
लिए जो कुछ हो वह मंज़ूर होता है। उससे
कुछ ऐसा देने की उम्मीद नहीं की जाती
जो उसके पास नहीं है। **13** ऐसा नहीं
कि मैं दूसरों को रिआयत दे रहा हूँ और
तुम पर बोझ डाल रहा हूँ, **14** बल्कि
यह चाहता हूँ कि इस वक्त तुम्हारी बहु-
तायत उनकी घटी को पूरा करे, ताकि
उनकी बहुतायत भी तुम्हारी घटी को पूरा
करने के काम आए, जिससे कि बराबरी
हो जाए। **15** ठीक जैसा लिखा भी है:
“जिसके पास ज़्यादा था उसके पास बहुत
ज़्यादा न था, और जिसके पास कम था
उसके पास बहुत कम न था।”

16 परमेश्वर का धन्यवाद हो जिसने
तीतुस के दिल में तुम्हारे लिए वैसी ही
उत्सुकता पैदा की जैसी हमें तुम्हारे लिए
है, **17** क्योंकि न सिर्फ वह हमारे उक-
साने पर राज़ी हो गया है, बल्कि अपनी
मरज़ी से, बड़ी उत्सुकता के साथ वह
तुम्हारे पास आ रहा है। **18** मगर हम
उसके साथ उस भाई को भी भेज रहे हैं
जिसने खुशखबरी सुनाने के काम में जो
किया है उसकी वजह से सारी मंडलियों में
उसकी तारीफ हो रही है। **19** इतना
ही नहीं, मंडलियों ने इस भाई को हमारे
साथ जाने के लिए भी ठहराया ताकि वह
उदारता से दिए गए इस तोहफे को ले
जाने का काम हमारे साथ पूरा कर सके,
जिसे हम खुद प्रभु की महिमा के लिए
सौंपने जा रहे हैं और जो हमारी तत्पर-
ता का भी सबूत है। **20** इस तरह हम
खुद के लिए एहतियात बरतते हैं ताकि
उदारता से दिया गया दान पहुँचाने के
मामले में कोई आदमी हम पर दोष न
लगा सके। **21** इसलिए कि हम “न
सिर्फ यहोवा की नज़र में बल्कि इंसानों
की नज़र में भी सारे काम पूरी ईमानदारी
से करने के लिए सावधानी बरतते हैं।”

22 इसके अलावा, हम उनके साथ
अपने उस भाई को भी भेज रहे हैं
जिसे हमने बार-बार परखा और बहुत
बातों में जोशीला पाया है और क्योंकि
उसे तुम पर बहुत भरोसा है इसलिए वह
और भी ज़्यादा जोश से भरा हुआ है।
23 अगर तीतुस के बारे में कोई भी
सवाल है, तो मैं तुम्हें बता दूँ कि वह भी
मेरी तरह तुम्हारी भलाई के लिए मेरा
सहकर्मी है। या फिर, अगर दूसरे भाइयों
के बारे में सवाल है तो वे मंडलियों
को भेजे गए प्रेषित हैं और मसीह की
महिमा करते हैं। **24** इसलिए, मंड-
लियों के सामने उन्हें अपने प्यार की
सच्चाई का सबूत दो और यह भी कि
तुम्हारे बारे में हमारा शेखी मारना क्यों
सही है।

9 जहाँ तक उस मदद* की बात
है, जो पवित्र जनों के लिए है,
मैं तुम्हें लिखना ज़रूरी नहीं समझता।
2 क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम मन से
तैयार हो जैसा कि मैं मकिदुनिया के
भाइयों के आगे गर्व करता हूँ कि अखया
के भाई पिछले एक साल से मदद देने के
लिए तैयार हैं और तुम्हारे जोश ने उनमें
से बहुतों के अंदर उत्साह भर दिया है।
3 मगर मैं भाइयों को पहले इसलिए भेज

2कुरिं 9:1* शाब्दिक, “सेवा।”

रहा हूँ ताकि इस मामले में हमने तुम्हारे
बारे में जो शेखी मारी है वह कहीं खोखली
साबित न हो, बल्कि तुम वाकई तैयार
पाए जाओ, ठीक जैसे मैं कहा करता था
कि तुम तैयार रहोगे। **4** नहीं तो,
अगर किसी तरह मकिदुनिया के भाई मेरे
साथ वहाँ आएँ और यह पाएँ कि तुम
तैयार नहीं हो, तो तुम पर यह भरोसा
दिखाने की वजह से हमें—मैं यह नहीं
कहता कि तुम्हें—शर्मिंदा होना पड़ेगा।
5 इसलिए मैंने यह ज़रूरी समझा कि
भाइयों को पहले से तुम्हारे यहाँ आने के
लिए उकसाऊँ कि वे उदारता से दिए गए
तुम्हारे तोहफे को तैयार रखें जिसे देने
का तुमने पहले वादा किया था, ताकि यह
दान उदारता से दिया गया तोहफा ठहरे,
न कि ऐसा जो ज़बरदस्ती वसूला गया हो।

6 मगर इस मामले में जो कंजूसी से
बोता है वह थोड़ा काटेगा, लेकिन जो भर-
भरकर बोता है वह भर-भरकर कटाई
करेगा। **7** हर कोई जैसा उसने अपने
दिल में ठाना है, वैसा ही करे, न कुड़-
कुड़ाते हुए, न ही किसी दबाव में, क्योंकि
परमेश्वर खुशी-खुशी देनेवाले से प्यार
करता है।

8 परमेश्वर तुम पर अपनी सारी
महा-कृपा की बौछार करने के काबिल है,
ताकि ठीक जैसे तुम्हारे पास हर चीज़
बहुतायत में होती है, वैसे ही हर भला
काम करने के लिए जो कुछ ज़रूरी है
वह भी तुम्हारे पास बहुतायत में हो।
9 (जैसा लिखा भी है: "उसने दिल
खोलकर बाँटा है, उसने गरीबों को दिया
है, उसकी नेकी हमेशा तक बनी रहेगी।"
10 जो बोनेवाले को बहुतायत में बीज
देता है और खानेवाले को रोटी देता है,
वही तुम्हारे बोने के लिए बीजों की बहु-
तायत कर देगा और तुम्हारी नेकी के
फल बढ़ाएगा।) **11** हर बात में तुम्हें
आशीषें देकर मालामाल किया जा रहा है
ताकि तुम भी हर तरह से उदारता से दे
सको और हमारे इस काम की वजह से
परमेश्वर को धन्यवाद दिया जा सके।
12 क्योंकि जब यह जन-सेवा की जाती
है, तो इससे न सिर्फ पवित्र जनों की ज़रू-
रतें बहुतायत में पूरी की जाती हैं, बल्कि
इसकी वजह से परमेश्वर का धन्यवाद
बढ़-चढ़कर किया जाता है। **13** यह
सेवा जिस बात का सबूत देती है उसे देख-
कर, वे परमेश्वर की महिमा करते हैं
क्योंकि जैसा तुम सरेआम ऐलान करते
हो वैसे ही तुम मसीह के बारे में खुश-
खबरी के अधीन भी रहते हो, और तुम
उनके लिए और बाकी सभी के लिए
दान देने में उदारता भी दिखाते हो।
14 वे तुम्हारे लिए परमेश्वर से मिन्नतें
करते हुए तुम्हें देखने की तमन्ना रखते
हैं, क्योंकि तुम पर परमेश्वर की बेजोड़
महा-कृपा हुई है।

15 परमेश्वर के उस मुफ्त वरदान
के लिए जिसका शब्दों में बयान नहीं
किया जा सकता, उसका धन्यवाद हो।

10 अब मैं पौलुस खुद, मसीह की
कोमलता और कृपा का वास्ता
देकर तुमसे गुज़ारिश करता हूँ, भले ही
तुम्हें लगता है कि तुम्हारे बीच रहते हुए
गया-गुज़रा दिखायी देता हूँ और न रहते

हुए सख्ती से पेश आता हूँ। 2 मैं
तुमसे बिनती करता हूँ कि जब मैं तुम्हारे
बीच मौजूद रहूँ तो मुझे ऐसी सख्ती न
बरतनी पड़े जैसी सख्ती मैं उन लोगों के
साथ बरतने का इरादा रखता हूँ जो यह
समझते हैं कि हम शरीर की इच्छाओं के
मुताबिक चलते हैं। 3 हालाँकि हम
शरीर में चलते हैं, मगर हम शरीर के
हिसाब से युद्ध नहीं लड़ते। 4 क्योंकि
हमारे युद्ध के हथियार शारीरिक नहीं हैं,
बल्कि ऐसे शक्तिशाली हथियार हैं जो
परमेश्वर ने हमें दिए हैं कि हम गहराई
तक समायी हुई बातों को जड़ से उखाड़
सकें। 5 हम ऐसी दलीलों को और हर
ऐसी ऊँची बात को जो परमेश्वर के ज्ञान
के खिलाफ खड़ी की जाती है, उलट देते
हैं और हरेक विचार को जीतकर उसे
कैद कर लेते हैं ताकि उसे मसीह की
आज्ञा माननेवाला बना दें। 6 हम हर
उस इंसान को जो आज्ञा नहीं मानता,
सज़ा देने के लिए तैयार हैं, बेशक इससे
पहले तुम्हें साबित करना होगा कि तुम हर
बात में पूरी तरह आज्ञा मानते रहे हो।

7 तुम बाहरी रूप देखकर राय
कायम करते हो। अगर किसी को खुद
के बारे में यह भरोसा है कि वह मसीह
का है, तो वह इस सच्चाई को एक
बार फिर अपने लिए जान ले कि जैसे
वह मसीह का है, वैसे ही हम भी हैं।
8 अगर मैं उस अधिकार के बारे में बहुत
ज़्यादा शेखी भी मारूँ, जो प्रभु ने हमें
तुम्हारी हिम्मत बँधाने के लिए, न कि
तुम्हें गिराने के लिए दिया है, तो मुझे
शर्मिंदा नहीं होना पड़ेगा। 9 मैं यह
इसलिए कह रहा हूँ ताकि तुम्हें ऐसा न
लगे कि मैं अपनी चिट्ठियों से तुम्हें डराने
की कोशिश कर रहा हूँ। 10 वे कहते
हैं: "उसकी चिट्ठियाँ तो वज़नदार और
दमदार हैं, मगर जब वह खुद मौजूद होता
है तो बहुत हल्का जान पड़ता है और
उसकी बातें सुनने लायक नहीं होतीं।"
11 यह कहनेवाला इंसान जान ले कि
हम अपनी गैर-मौजूदगी में चिट्ठियों में
अपनी बातों से जो लगते हैं, वैसे ही जब
हम मौजूद होंगे, तो अपने कामों से भी
दिखाएँगे। 12 इसलिए कि हम यह
जुर्रत नहीं करते कि अपनी गिनती उन
लोगों में करें या खुद की तुलना उनसे
करें जो खुद ही अपनी तारीफ करते हैं।
बेशक, जब वे अपने ही नाप से खुद को
नापते हैं और अपनी तुलना खुद से करते
हैं, तो दिखाते हैं कि उनमें समझ नहीं।

13 जहाँ तक हमारी बात है, जो
सीमा हमारे लिए ठहरायी गयी है, हम
उससे बाहर जाकर शेखी नहीं मारेंगे,
मगर परमेश्वर ने नापकर जो इलाका हमें
दिया है, जिसमें तुम भी आ गए हो, उसी
की सीमाओं में रहते हुए हम शेखी मारेंगे।
14 हम वाकई अपनी सीमा से आगे नहीं
बढ़ रहे। अगर तुम हमारी सीमा के दायरे
में न होते तो शायद हमें ऐसा करने की
ज़रूरत पड़ती। मगर हमने ही सबसे पहले
तुम तक मसीह की खुशखबरी पहुँचायी
है। 15 बेशक, हम ठहरायी सीमा से
बाहर जाकर किसी दूसरे की मेहनत पर
शेखी नहीं मार रहे, बल्कि हम यह आशा

रखते हैं कि जैसे-जैसे तुम्हारा विश्वास
बढ़ता जा रहा है, वैसे-वैसे हमारे इलाके
के मामले में तुम्हारे बीच हमारी काम-
याबी और भी बढ़ती जाए। इसके बाद
हम और भी बढ़ेंगे, **16** ताकि हम
तुमसे आगे के देशों में भी खुशखबरी सुना
सकें, जिससे कि हम उस काम पर शेखी
न मारें, जो किसी और के इलाके में पहले
ही किया जा चुका है। **17** “मगर जो
शेखी मारता है, वह यहोवा की वजह
से शेखी मारे।” **18** इसलिए कि जो
अपनी तारीफ खुद करता है वह नहीं,
बल्कि जिसकी तारीफ यहोवा करता है,
वही उसकी मंज़ूरी पाता है।

11 काश कि तुम मेरी इस थोड़ी-सी
ज़्यादती को बरदाश्त कर लेते।
असल में तुम मुझे बरदाश्त कर भी
रहे हो! **2** मुझे तुम्हारे लिए वैसी ही
जलन है, जैसी जलन परमेश्वर रखता है,
क्योंकि मैं खुद, तुम्हारी शादी करवाने के
लिए एक पुरुष यानी मसीह से तुम्हारी
सगाई करवा चुका हूँ ताकि मैं तुम्हें एक
पवित्र कुँवारी की तरह मसीह को सौंप
सकूँ। **3** मगर मुझे डर है कि जैसे
साँप ने अपनी चालाकी से हव्वा को
बहका लिया था, वैसे ही तुम्हें किसी तरह
तुम्हारे सोचने के तरीके में भ्रष्ट कर, उस
सीधाई और पवित्रता से भटका न दिया
जाए, जिसे पाने का हकदार मसीह है।
4 अगर कोई आकर किसी और यीशु
का प्रचार करता है, जिसका प्रचार हमने
नहीं किया या जो शक्ति* तुम्हारे मन
पर पहले काम कर रही थी, उसके बजाय
कोई तुम्हें किसी और तरह का मन का
रुझान देता है, या जो खुशखबरी तुमने
स्वीकार की थी उसे छोड़ कोई और
ही खुशखबरी सुनाता है, तो तुम बड़ी
आसानी से उसकी बात मान लेते हो।
5 मैं समझता हूँ कि मैं तुम्हारे महा-
प्रेषितों से किसी भी बात में कम नहीं हूँ।
6 चाहे मैं बोलने में अनाड़ी सही, मगर
ज्ञान में हरगिज़ नहीं हूँ और हमने यह
ज्ञान सब बातों में हर तरह से तुम पर
ज़ाहिर किया है।

7 या जब मैंने खुद को इसलिए छोटा
किया ताकि तुम बड़े हो जाओ और बिना
कोई दाम लिए तुम्हें खुशी-खुशी परमेश्वर
की खुशखबरी सुनायी, तो क्या कोई
पाप किया? **8** मैंने दूसरी मंडलियों
को लूटा यानी उनसे मदद ली ताकि
तुम्हारी सेवा करूँ। **9** फिर भी जब मैं
तुम्हारे बीच मौजूद था और मुझ पर भारी
तंगी आ पड़ी, तब मैं किसी पर भी बोझ
न बना, क्योंकि मकिदुनिया से आए
भाइयों ने ज़रूरत से बढ़कर मेरी मदद
की। हाँ, मैंने हर तरह से कोशिश की
कि तुम पर बोझ न बनूँ और ऐसा ही
करता रहूँगा। **10** अगर मसीह की
सच्चाई मुझ में है, तो अखया के इलाकों
में मेरा यह शेखी मारना बंद नहीं किया
जा सकता। **11** क्या वजह है कि मैं
तुम पर बोझ न बना? क्या इसलिए कि
मैं तुमसे प्यार नहीं करता? परमेश्वर
जानता है कि मैं करता हूँ।

2कुरिं 11:4* या, “परमेश्वर की शक्ति।”

12 लेकिन मैं जो कर रहा हूँ उसे
करता ही रहूँगा ताकि उन लोगों को कोई
मौका न दूँ जो हमारे बराबर दर्जा रखने
की शेखी मारते हैं और हमारी बराबरी
करने के लिए किसी मौके की तलाश में
रहते हैं। **13** ऐसे आदमी झूठे प्रेषित,
छल से काम करनेवाले हैं और मसीह के
प्रेषित होने का रूप धारण करते हैं।
14 इसमें कोई ताज्जुब नहीं क्योंकि
शैतान खुद भी रौशनी देनेवाले स्वर्गदूत
का रूप धारण करता है। **15** इसलिए
अगर उसके सेवक भी नेकी के सेवक होने
का ढोंग करते हैं, तो यह कोई बड़ी बात
नहीं है। मगर उनका अंत उनके कामों के
हिसाब से होगा।

16 मैं फिर कहता हूँ कि कोई आदमी
यह न सोचे कि मैं ज़्यादती कर रहा हूँ।
अगर तुम ऐसा समझते भी हो, तब
भी मुझे ज़्यादती करनेवाला समझकर
ही बरदाश्त कर लो, ताकि मैं थोड़ी-
सी और शेखी मार सकूँ। **17** मैं जो
कहता हूँ, वह प्रभु की मिसाल पर नहीं
कहता, बल्कि ज़्यादती करनेवाले की तरह
कहता हूँ, जैसे शेखी मारनेवाला अकसर
हद-से-ज़्यादा यकीन के साथ कहता है।
18 बहुत-से लोग दुनियावी बातों पर
शेखी मार रहे हैं, इसलिए मैं भी शेखी
मारूँगा। **19** क्योंकि तुम तो इतने
लिहाज़दार हो कि ज़्यादती करनेवालों
की खुशी-खुशी सह लेते हो। **20** दर-
असल, तुम ऐसे हर किसी को, जो तुम्हें
अपना गुलाम बना लेता है, जो कुछ
तुम्हारा है उसे हड़प लेता है, जो तुम्हारे
पास है उसे छीन लेता है, तुम्हारे सिर
पर सवार हो जाता है और तुम्हारे मुँह
पर थप्पड़ मारता है उसे बरदाश्त कर
लेते हो।

21 मेरे लिए यह कहना शर्म की बात
है, क्योंकि कुछ लोगों को लगता है कि
हम अपना अधिकार सही तरह से नहीं
चला रहे हैं।

अगर कोई किसी बात में ढिठाई
दिखाता है, तो मैं भी ढिठाई दिखाता हूँ,
फिर चाहे कोई मेरी बात को ज़्यादती
समझे। **22** क्या वे इब्रानी हैं? मैं भी
हूँ। क्या वे इसराएली हैं? मैं भी हूँ।
क्या वे अब्राहम के वंशज हैं? मैं भी
हूँ। **23** क्या वे मसीह के सेवक हैं?
मैं पागलों की तरह चिल्ला-चिल्लाकर
कहता हूँ, मैं उनसे कहीं बढ़कर हूँ:
बहुत ज़्यादा कड़ी मेहनत करने में, बार-
बार कैद होने में, हद-से-ज़्यादा पिटाई
खाने में, अकसर मौत के खतरे में।
24 मैंने पाँच बार यहूदियों से उनतालिस-
उनतालिस कोड़े खाए **25** तीन बार
मुझे डंडों से पीटा गया, एक बार मुझ पर
पत्थरवाह हुआ, तीन बार जिन जहाजों
पर मैं चढ़ा वे समंदर में टूट गए, एक रात
और एक दिन मैंने समंदर के बीच काटा।
26 मैं बार-बार सफर में, नदियों के
खतरों में, डाकुओं के खतरों में, अपनी
ही जाति के लोगों से खतरों में, दूसरी
जाति के लोगों से खतरों में, शहर के
खतरों में, वीराने के खतरों में, समंदर के
खतरों में, झूठे भाइयों के बीच रहने
के खतरों में रहा हूँ। **27** मैंने कड़ी

मेहनत और घोर मज़दूरी में, अकसर
रात-रात भर जागते रहने में, भूख और
प्यास में, कई बार भूखे पेट रहने में, ठंड
में और उघाड़े में दिन बिताए।

28 इन सब बातों के अलावा हर
दिन सारी मंडलियों की चिंता मुझे खाए
जाती है। **29** किसकी कमज़ोरी से मैं
खुद को कमज़ोर महसूस नहीं करता?
किसके ठोकर खाने से मेरा जी नहीं
जलता?

30 अगर मुझे शेखी मारनी ही
है, तो मैं उन बातों पर शेखी मारूँगा
जिनसे मेरी कमज़ोरियाँ ज़ाहिर होती हैं।
31 प्रभु यीशु का परमेश्वर और पिता,
वही जिसका गुणगान हमेशा-हमेशा तक
होता रहेगा, जानता है कि मैं झूठ नहीं
बोल रहा हूँ। **32** दमिश्क में अरितास
राजा के अधीन जो राज्यपाल था, उसने
मुझे पकड़ने के लिए दमिश्कियों के शहर
पर पहरा बिठा रखा था, **33** मगर
मुझे एक बड़े टोकरे में बिठाकर शहर की
दीवार में बनी एक खिड़की से नीचे उतार
दिया गया और मैं उसके हाथ से बच
गया।

12 शेखी मारने से कोई फायदा तो
नहीं, फिर भी मुझे ऐसा करना
ही होगा। मगर अब मैं प्रभु के दिखाए
चमत्कारी दर्शनों और उससे मिले संदेशों
की बात करूँगा। **2** मैं मसीह में एक
आदमी को जानता हूँ जिसे चौदह साल
पहले, न जाने शरीर के साथ या शरीर
से अलग, परमेश्वर ही जानता है, तीसरे
स्वर्ग तक उठा लिया गया। **3** हाँ, मैं
उस आदमी को जानता हूँ—न जाने
शरीर के साथ या शरीर से अलग, मैं नहीं
जानता, परमेश्वर जानता है— **4** कि
उसे उठाकर फिरदौस में ले जाया गया
और उसने ऐसी बातें सुनीं जो ज़ुबान पर
नहीं लायी जा सकतीं और जिन्हें कहने
की एक इंसान को इजाज़त नहीं। **5** मैं
ऐसे इंसान के बारे में शेखी मारूँगा, मगर
मैं अपनी कमज़ोरियों को छोड़ किसी और
बात में खुद के बारे में शेखी नहीं मारूँगा।
6 अगर मैं कभी शेखी मारना चाहूँ, तो
भी ज़्यादती करनेवाला नहीं ठहरूँगा,
क्योंकि मैं सच ही कहूँगा। लेकिन मैं शेखी
मारने से दूर रहता हूँ ताकि कोई भी, उन
कामों से बढ़कर जो वह मुझे करते देखता
है और जो बोलते सुनता है, किसी और
बात का श्रेय मेरे खाते में न जोड़े,
7 सिर्फ इसलिए कि मुझ पर हद-से-
ज़्यादा रहस्य प्रकट किए गए, कोई मुझे
बहुत बड़ा न समझे।

कहीं मैं घमंड से फूल न जाऊँ, इस-
लिए मेरे शरीर में एक काँटा चुभाया गया
है, यानी शैतान का एक दूत, ताकि
मुझे थप्पड़ मारता रहे जिससे कि मैं
खुद को हद-से-ज़्यादा बड़ा न समझूँ।
8 इस बारे में मैंने प्रभु से तीन बार गिड़-
गिड़ाकर बिनती की थी कि यह काँटा
निकाल दिया जाए। **9** फिर भी प्रभु
ने मुझसे कहा: “मेरी महा-कृपा तेरे लिए
काफी है। मेरी ताकत, तेरी कमज़ोरी में
पूरी तरह ज़ाहिर होती है।” इसलिए, मैं
बड़ी खुशी के साथ अपनी कमज़ोरियों के
बारे में शेखी मारूँगा, ताकि मसीह की

ताकत तंबू की तरह मेरे ऊपर छायी रहे।
10 मैं मसीह की खातिर कमज़ोरियों में,
बेइज़्ज़ती में, तंगहाली में, ज़ुल्मों और
मुश्किलों में खुश होता हूँ। क्योंकि जब
मैं कमज़ोर होता हूँ, तभी मैं ताकतवर
होता हूँ।

11 मैं ज़्यादती करनेवाला बना, इस-
लिए कि तुमने मुझे ऐसा करने पर मज-
बूर किया। होना तो यह चाहिए था कि
तुम मेरी तरफ से बोलते। मैं तुम्हारे महा-
प्रेषितों से एक बात में भी कम नहीं
हूँ, भले ही मैं तुम्हारे हिसाब से कुछ
नहीं। **12** सच तो यह है, मेरे प्रेषित-
पद के सबूत तुमने खुद अपनी आँखों से
देखे थे, जो तुम्हारे बीच सारे धीरज,
और चमत्कारों और आश्चर्यजनक और
शक्तिशाली कामों से ज़ाहिर किए गए थे।
13 तुम किस मायने में बाकी मंडलियों
से छोटे बने, सिवा इसके कि मैं खुद तुम
पर बोझ न बना? मेहरबानी से मेरी यह
गलती माफ करो।

14 देखो! यह तीसरी बार है कि
मैं तुम्हारे पास आने के लिए तैयार
हूँ और फिर भी मैं तुम पर बोझ न
बनूँगा। क्योंकि मैं तुमसे तुम्हारी दौलत
नहीं चाहता, मगर तुम्हें चाहता हूँ। बच्चों
का यह फर्ज़ नहीं बनता कि वे माँ-बाप के
लिए धन इकट्ठा करें, बल्कि माँ-बाप का
फर्ज़ बनता है कि वे बच्चों के लिए इकट्ठा
करें। **15** मैं तुम्हारी खातिर हँसते-
हँसते खर्च करूँगा, यहाँ तक कि खुद भी
पूरी तरह खर्च हो जाऊँगा। अगर मैं
तुमसे इतना ज़्यादा प्यार करता हूँ तो
क्या मुझे कम प्यार मिलना चाहिए?
16 माना कि मैंने तुम पर बोझ नहीं
डाला। फिर भी तुम कहते हो कि मैं
"धूर्त्त" था और मैंने तुम्हें "छल से" फँसा
लिया। **17** और मैंने जितनों को भी
तुम्हारे पास भेजा, उनमें से एक के ज़रिए
भी मैंने तुम्हारा फायदा नहीं उठाया। क्या
उठाया? **18** मैंने तीतुस से गुज़ारिश
की और उसके साथ एक भाई को भेजा।
तीतुस ने तुम्हारा बिलकुल भी फायदा नहीं
उठाया, क्या उठाया? क्या हमने एक ही
तरह की नीयत नहीं दिखायी? क्या हम
एक ही लीक पर नहीं चले?

19 क्या इस दौरान तुम यह सोच रहे
हो कि हम तुम्हारे सामने अपनी सफाई
पेश कर रहे हैं? तुम्हारे सामने नहीं बल्कि
परमेश्वर के सामने हम मसीह में सफाई
दे रहे हैं। लेकिन मेरे प्यारो, हम सब-
कुछ तुम्हें मज़बूत करने के लिए करते
हैं। **20** मुझे डर है कि जब मैं तुम्हारे
पास आऊँ तो मैं तुम्हें ऐसा न पाऊँ
जैसा चाहता हूँ और तुम भी मुझे वैसा
न पाओ जैसा तुम चाहते हो। इसके
बजाय, कहीं ऐसा न हो कि तुममें तक-
रार, जलन, गुस्से से आग-बबूला होना,
झगड़े, पीठ पीछे बदनाम करना, चुगली
लगाना, घमंड से फूलना, और हंगामे पाए
जाएँ। **21** कहीं ऐसा न हो कि जब मैं
दोबारा तुम्हारे पास आऊँ तो मेरा पर-
मेश्वर तुम्हारे बीच मुझे शर्मिंदा करे और
मुझे उन बहुतों के लिए शोक मनाना पड़े
जो पाप की राह पर चले हैं और जिन्होंने
अपनी अशुद्धता और व्यभिचार और

बदचलनी से अभी तक पश्‍चाताप नहीं
किया।

13 मैं तीसरी बार तुम्हारे पास आ
रहा हूँ। “हर मामला दो या
तीन गवाहों की गवाही से साबित हो।”
2 हालाँकि मैं अभी तुमसे बहुत दूर हूँ,
लेकिन तुम मेरी बात इस तरह लो, मानो
मैं तुम्हारे साथ दूसरी बार मौजूद हूँ। जैसा
मैंने पहले कहा था अब भी मैं तुम्हें पहले
से खबरदार कर रहा हूँ कि जब कभी
मैं दोबारा आऊँगा, तो उन्हें बख्शूँगा
नहीं। **3** क्योंकि तुम इस बात का
सबूत चाहते हो कि मसीह मुझ में होकर
बोलता है। मसीह तुम्हारे मामले में कम-
ज़ोर नहीं है, इसके बजाय वह तुम्हारे
बीच ताकतवर है। **4** यह सच है कि
वह कमज़ोर हालत में* सूली पर चढ़ाया
गया, फिर भी वह परमेश्‍वर की ताकत
से ज़िंदा है। यह भी सच है कि जैसा वह
पहले कमज़ोर था वैसे हम भी अभी कम-
ज़ोर हैं, मगर हम उसके साथ जीएँगे और
यह परमेश्‍वर की उसी ताकत से होगा
जो तुम्हारे बीच काम करती है।
5 खुद को जाँचते रहो कि तुम
विश्‍वास में हो या नहीं। तुम खुद क्या
हो, इसका सबूत देते रहो। या क्या तुम्हें
यह एहसास नहीं कि यीशु मसीह तुम्हारे
साथ एकता में है? अगर नहीं है तो तुम
ना-मंज़ूर किए गए हो। **6** मैं वाकई
आशा करता हूँ कि तुम जान जाओगे कि
हम ना-मंज़ूर नहीं किए गए।
7 अब हम परमेश्‍वर से प्रार्थना करते
हैं कि तुम कुछ भी गलत न करो, इस-
लिए नहीं कि हम खुद तुम्हारे बीच खरे
दिखायी दें, बल्कि तुम खुद जो भला है
वह करते हुए पाए जाओ, फिर चाहे हम
ना-मंज़ूर किए हुए क्यों न दिखायी दें।
8 इसलिए कि हम सच्चाई के खिलाफ
कुछ नहीं कर सकते, बल्कि सिर्फ सच्चाई
की खातिर ही कर सकते हैं। **9** जब
कभी हम कमज़ोर होते हैं, मगर तुम
ताकतवर होते हो तो हम खुशी मनाते हैं,
और हम प्रार्थना करते हैं कि तुम सुधार
करते जाओ। **10** मैं गैर-हाज़िर होने
पर भी इसलिए तुम्हें ये बातें लिख रहा
हूँ कि जब मैं तुम्हारे बीच मौजूद रहूँ तो
मुझे प्रभु के दिए अधिकार के मुताबिक
तुम्हारे साथ सख्ती न करनी पड़े। यह
अधिकार उसने मुझे तुम्हें मज़बूत करने
के लिए दिया है, न कि तुम्हें गिराने
के लिए।
11 अब आखिर में भाइयो, मैं तुम्हें
उकसाता हूँ कि तुम खुशी मनाते रहो,
सुधारे जाते रहो, दिलासा पाते रहो, एक
ही तरह की सोच रखो, शांति से रहो और
प्यार और शांति का परमेश्‍वर तुम्हारे
साथ रहेगा। **12** पवित्र चुंबन से
एक-दूसरे का स्वागत करो। **13** सभी
पवित्र जन तुम्हें नमस्कार भेजते हैं।
14 प्रभु यीशु मसीह की महा-कृपा
और परमेश्‍वर का प्यार और पवित्र
शक्‍ति* में जो हिस्सेदारी हम सबको मिली
है, वह तुम सबके साथ रहे।

2कुरिं 13:4* या, “इंसान होने की वजह से।”

2कुरिं 13:14* यूनानी *नफ्मा* / अतिरिक्‍त लेख 7 देखें।

गलातियों
के नाम

1 मैं पौलुस, न तो इंसानों की तरफ
से और न किसी इंसान के ज़रिए
प्रेषित* हूँ, बल्कि परमेश्वर हमारे पिता
ने मुझे यीशु मसीह के ज़रिए प्रेषित ठह-
राया है, जिसे उसने मरे हुओं में से जी
उठाया। **2** मैं और मेरे साथ के सभी
भाई, गलातिया प्रदेश* की मंडलियों# को
यह चिट्ठी लिख रहे हैं:

3 तुम्हें परमेश्वर हमारे पिता की
तरफ से और प्रभु यीशु मसीह की
तरफ से महा-कृपा और शांति मिले।
4 हमारे परमेश्वर और पिता की मरज़ी
के मुताबिक मसीह ने हमारे पापों
के लिए खुद को दे दिया ताकि हमें
मौजूदा दुष्ट दुनिया की व्यवस्था से छुट-
कारा दिलाए। **5** परमेश्वर की महिमा
हमेशा-हमेशा तक होती रहे। आमीन।

6 मुझे ताज्जुब होता है कि तुम ने
इतनी जल्दी उस परमेश्वर से मुँह मोड़
लिया जिसने तुम्हें मसीह की महा-कृपा के
साथ बुलाया था और अब तुम किसी और
ही किस्म की खुशखबरी की तरफ फिर
गए हो। **7** मगर कोई और खुश-
खबरी है ही नहीं। सच तो यह है कि वहाँ
कुछ ऐसे लोग हैं जो तुम्हारे लिए मुश्किल
पैदा कर रहे हैं और मसीह के बारे में
खुशखबरी को भ्रष्ट करना चाहते हैं।
8 लेकिन चाहे हम या स्वर्ग का कोई
दूत भी, खुशखबरी के नाम पर उसके
अलावा जो हमने तुम्हें सुनायी है कोई
और खुशखबरी सुनाए, तो वह शापित
ठहरे। **9** जैसे हमने ऊपर कहा है, मैं
एक बार फिर कहता हूँ कि वह चाहे कोई
भी क्यों न हो अगर वह तुम्हें खुशखबरी
के नाम पर उसे छोड़ जिसे तुमने स्वीकार
किया था, कुछ और सिखा रहा है तो
वह शापित ठहरे।

10 क्या अब मैं इंसानों को कायल
करने की कोशिश कर रहा हूँ या पर-
मेश्वर को? या क्या मैं इंसानों को खुश
करने की कोशिश कर रहा हूँ? अगर मैं
अब भी इंसानों को खुश करने में लगा
होता, तो मसीह का दास न होता।
11 मेरे भाइयो, मैं तुम्हें बताए देता
हूँ कि मैंने तुम्हें जो खुशखबरी सुनायी
है वह इंसानों की तरफ से नहीं है।
12 क्योंकि मैंने इसे न तो किसी इंसान
से पाया है, न ही मैंने यह किसी से सीखी
है, बल्कि खुद यीशु मसीह ने इसे मुझ
पर प्रकट किया है।

13 बेशक, तुमने सुना होगा कि जब
मैं पहले यहूदी धर्म मानता था तो मेरा

गला 1:1* या, "भेजा गया।" यूनानी में *"अपोस्टो-लोस।"* **2*** यह प्रदेश, आज के तुर्की देश के अंकारा शहर के आस-पास का इलाका था। **2#** मत्ती 16:18 दूसरा फुटनोट देखें।

बर्ताव कैसा था। मैं परमेश्‍वर की मंडली
पर हद-से-ज़्यादा ज़ुल्म ढाता रहा और
उसे तबाह करता रहा। **14** और मैं
यहूदी धर्म में अपनी जाति और अपनी
उम्र के कई लोगों से कहीं ज़्यादा तरक्की
कर रहा था, क्योंकि मैं अपने बापदादों
की परंपराओं को मानने में सबसे ज़्यादा
जोशीला था। **15** लेकिन परमेश्‍वर,
जिसने मुझे इस दुनिया में पैदा किया*
और मुझ पर महा-कृपा कर मुझे बुलाया,
जब उसे यह अच्छा लगा **16** कि वह
मेरे ज़रिए अपने बेटे को प्रकट करे
और मैं गैर-यहूदियों को उसके बेटे की
खुशखबरी सुनाऊँ, तो मैं फौरन किसी
इंसान के पास इस बारे में सलाह-मशविरा
करने नहीं गया। **17** न ही मैं यरू-
शलेम में उनके पास गया जो मुझसे
पहले से प्रेषित थे, मगर मैं अरब देश
चला गया और बाद में दमिश्‍क लौट
आया।

18 इसके तीन साल बाद मैं कैफा
से मिलने यरूशलेम गया और पंद्रह दिन
तक उसके साथ रहा। **19** लेकिन मैंने
प्रभु के भाई याकूब को छोड़ किसी और
प्रेषित को नहीं देखा। **20** जो बातें मैं
तुम्हें लिख रहा हूँ उनके बारे में परमेश्‍वर
को हाज़िर जानकर कहता हूँ कि मेरी ये
बातें झूठी नहीं हैं।

21 इसके बाद, मैं सीरिया और
किलिकिया के इलाकों में गया।
22 मगर यहूदिया की मसीही मंड-
लियों ने मुझे पहले कभी नहीं देखा था।
23 वे सिर्फ मेरे बारे में यह सुना करते
थे: "जो आदमी पहले हम पर ज़ुल्म ढाता
था, वह अब इसी विश्‍वास के बारे
में खुशखबरी सुना रहा है, जिसे वह
पहले तबाह करता था।" **24** इसलिए
वे मेरी वजह से परमेश्‍वर की महिमा
करने लगे।

2 इसके चौदह साल बाद, मैं बरन-
बास के साथ एक बार फिर यरू-
शलेम गया और मैंने तीतुस को भी अपने
साथ लिया। **2** मगर मैं वहाँ इसलिए
गया क्योंकि मुझ पर प्रकट किया गया
था कि मुझे वहाँ जाना चाहिए। वहाँ मैंने
उस खुशखबरी के बारे में बताया जो
मैं गैर-यहूदियों को सुनाता हूँ। मगर
अकेले में सिर्फ उन भाइयों को बताया
जिन्हें खास समझा जाता है। मैंने उन्हें
इसलिए बताया ताकि ऐसा न हो कि मैंने
सेवा में अब तक जो दौड़-धूप की है या
कर रहा हूँ, वह बेकार साबित हो।
3 मगर तीतुस को, जो मेरे साथ था,
यूनानी होने पर भी खतना कराने के लिए
मजबूर नहीं किया गया। **4** यह मुद्दा
उन झूठे भाइयों की वजह से उठा था जो
मंडली में चुपचाप घुस आए थे। वे चोरी-
छिपे हमारी जासूसी करने आए थे ताकि
मसीह यीशु के चेले होने के नाते हमें जो
आज़ादी है उसे छीनकर हमें पूरी तरह
अपने गुलाम बना लें। **5** लेकिन हम

गला 1:15* शाब्दिक, "मेरी माँ के गर्भ से मुझे तराशकर निकाला।"

एक पल के लिए भी उनके आगे नहीं झुके, न ही उनके अधीन हुए, हाँ ताकि खुशखबरी की जो सच्चाई तुमने पायी है वह तुममें कायम रहे।

6 मगर वे भाई जिन्हें खास समझा
जाता था, हाँ, बाकियों से बड़े समझे जाने-
वाले उन भाइयों ने मुझे ऐसा कुछ भी
नहीं बताया जो मेरे लिए नया हो। उन
भाइयों को पहले जो भी दर्जा दिया जाता
रहा है, उससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता,
क्योंकि परमेश्वर इंसान की शक्ल देख-
कर उसे मंज़ूर नहीं करता। **7** इसके
बजाय, जब इन भाइयों ने देखा कि
मुझे गैर-यहूदियों* को खुशखबरी सुनाने
के लिए ठहराया गया है, जैसे पतरस
को यहूदियों# को खुशखबरी सुनाने के
लिए ठहराया गया था, **8** (इसलिए
कि जिसने पतरस को यहूदियों के लिए
प्रेषित होने की ज़रूरी काबिलीयत दी है,
उसी ने मुझे गैर-यहूदियों के लिए यह
काबिलीयत दी है।) **9** हाँ, जब उन्हें
उस महा-कृपा के बारे में पता चला जो
मुझे दी गयी थी, तो याकूब, कैफा और
यूहन्ना ने, जो मंडली के खंभे समझे
जाते थे, मुझसे और बरनबास से अपना
दायाँ हाथ मिलाकर जताया कि हम सब
साझेदार हैं और हम दूसरी जातियों के
पास जाएँ, जबकि वे यहूदियों के पास
जाएँगे। **10** मगर हमसे इतना और
कहा गया कि हम गरीब भाइयों को याद
रखें। मैंने जी-जान से ऐसा ही करने की
कोशिश की है।

11 लेकिन जब कैफा अंताकिया
आया तो मैंने उसके मुँह पर उसका
सामना किया क्योंकि वह दोषी ठहरा था।
12 इसलिए कि याकूब के यहाँ से कुछ
लोगों के आने से पहले तक, कैफा
गैर-यहूदियों के साथ खाया-पीया करता
था, मगर जब वे भाई आए तो
उसने खतनावालों के डर से उन गैर-यहू-
दियों से किनारा कर लिया और
उनसे दूर-दूर रहने लगा। **13** बाकी
यहूदी भी उसकी देखा-देखी यही दिखावा
करने लगे। यहाँ तक कि बरनबास भी
इस दिखावे में उनके साथ हो लिया।
14 मगर जब मैंने देखा कि वे खुश-
खबरी की सच्चाई के मुताबिक सीधी चाल
नहीं चल रहे हैं, तो उन सबके सामने
कैफा से कहा: "जब तू एक यहूदी होकर
गैर-यहूदियों की तरह जी रहा है, और
यहूदियों की तरह नहीं, तो तू गैर-यहू-
दियों को यहूदियों की रीतियाँ मानने के
लिए कैसे मजबूर कर सकता है?"

15 हम जो जन्म से यहूदी हैं, और
पापी गैर-यहूदियों में से नहीं, **16** हम
जानते हैं कि एक इंसान को मूसा के
कानून में बताए कामों से नहीं बल्कि सिर्फ
मसीह यीशु पर विश्वास करने से नेक
करार दिया जाता है। हमने भी मसीह
यीशु पर विश्वास किया है ताकि हमें
मसीह पर विश्वास की वजह से नेक
करार दिया जा सके, न कि कानून में

गला 2:7* या, "बिना खतना किए हुओं को।"
7# या, "खतना किए हुओं को।"

बताए कामों के आधार पर, क्योंकि
कानून में बताए कामों के आधार पर
किसी भी इंसान का नेक करार दिया
जाना मुमकिन नहीं। **17** अगर हमें
भी, जो मसीह के ज़रिए नेक करार दिए
जाने की कोशिश में लगे हैं, मूसा के
कानून के खिलाफ पाप करनेवाले समझा
जा रहा है, तो क्या असल में मसीह
पाप को बढ़ावा दे रहा है? ऐसा हर-
गिज़ नहीं है! **18** मैं जिसे एक बार
ढा चुका हूँ, अगर उसे दोबारा बनाने
लगूँ, तो खुद को एक गुनहगार साबित
करूँगा। **19** जहाँ तक मेरी बात है,
कानून के ज़रिए मैं कानून के लिए मर
गया ताकि परमेश्वर के लिए ज़िंदा हो
सकूँ। **20** मैं मसीह के साथ सूली पर
चढ़ाया गया हूँ। इसलिए, अब मैं ज़िंदा
नहीं रहा, बल्कि मसीह मुझमें ज़िंदा है।
अब मैं जो ज़िंदगी जी रहा हूँ वह सिर्फ
उस विश्वास से जी रहा हूँ जो मुझे पर-
मेश्वर के बेटे पर है, जिसने मुझसे प्यार
किया और खुद को मेरे लिए दे दिया।
21 मैं परमेश्वर की महा-कृपा को दर-
किनार नहीं करता। इसलिए कि अगर
मूसा के कानून को मानने से एक इंसान
परमेश्वर के सामने नेक ठहरता है, तो
असल में मसीह का मरना बेकार गया।

3 अरे, गलातिया के नासमझ लोगो,
किसने तुम्हें भरमा लिया है? हाँ
तुम्हें, जिनके सामने सूली पर चढ़ाए गए
यीशु मसीह की जीती-जागती तसवीर पेश
की गयी थी। **2** मैं तुमसे बस इतना
जानना चाहता हूँ: क्या तुम्हें पवित्र शक्ति,
मूसा के कानून में बताए काम करने से
मिली थी या खुशखबरी सुनकर उस पर
विश्वास करने से? **3** क्या तुम इतने
नासमझ हो? क्या तुम परमेश्वर की
पवित्र शक्ति के मुताबिक चलना शुरू
करने के बाद अब शरीर के मुताबिक
काम करने से पूरे होना चाहते हो?
4 क्या तुमने इतने दुःख बेकार ही सहे?
मैं नहीं मानता कि यह सब बेकार था।
5 इसलिए, जो तुम्हें पवित्र शक्ति देता
है और तुम्हारे बीच शक्तिशाली काम
करता है, क्या वह इसलिए करता है कि
तुम कानून में बताए गए काम करते हो
या इसलिए कि तुमने खुशखबरी सुनकर
उस पर विश्वास किया था? **6** ठीक
जैसे अब्राहम ने "यहोवा* पर विश्वास
किया और यह उसके लिए नेकी गिना
गया।"

7 बेशक तुम यह जानते हो कि जो
विश्वास से चलते हैं वे ही अब्राहम के
वंशज हैं। **8** शास्त्र ने पहले से यह
देखकर कि परमेश्वर विश्वास के आधार
पर गैर-यहूदी लोगों को नेक ठहरा-
एगा, पहले से ही अब्राहम को यह खुश-
खबरी बता दी: "तेरे ज़रिए सब जातियों
के लोगों को आशीष दी जाएगी।"
9 इसलिए जो विश्वास से चलते हैं,
वे विश्वासयोग्य अब्राहम की तरह ही
आशीष पाते हैं।

गला 3:6* यह उन 237 जगहों में से एक जगह है, जहाँ परमेश्वर का नाम, 'यहोवा' इस अनुवाद के मुख्य पाठ में पाया जाता है। अतिरिक्त लेख 2 देखें।

10 जितने भी कानून में बताए कामों
पर भरोसा करते हैं, वे शाप के अधीन
हैं। क्योंकि लिखा है: “जो कोई मूसा के
कानून की किताब में लिखी सब बातों
का पालन नहीं करता, वह शापित है।”
11 इसके अलावा, मूसा के कानून के
आधार पर किसी को भी परमेश्वर की
नज़र में इसलिए नेक नहीं ठहराया जा
सकता, क्योंकि लिखा है कि “जो नेक है,
वह अपने विश्वास से ज़िंदा रहेगा।”
12 मूसा के कानून में विश्वास की माँग
नहीं की गयी, मगर उसमें सिर्फ यह कहा
गया है कि “जो कानून के नियमों पर
चलता है वह इनके ज़रिए ज़िंदा रहेगा।”
13 मसीह ने हमें खरीदकर मूसा के
कानून के शाप से छुड़ाया और खुद हमारी
जगह शापित बना क्योंकि लिखा है: “हर
वह इंसान जो सूली पर लटकाया जाता
है वह शापित है।” **14** यह इस मक-
सद से हुआ कि अब्राहम को जो आशीष
मिली थी वह यीशु मसीह के ज़रिए दूसरी
जातियों को भी मिल सके, और हम अपने
विश्वास के ज़रिए वह पवित्र शक्ति पाएँ
जिसका वादा किया गया था।

15 भाइयो, मैं रोज़मर्रा ज़िंदगी की
एक मिसाल से समझाता हूँ: इंसानों का
बनाया कोई करारनामा भी जब पक्का
कर दिया जाता है, तो न तो उसे रद्द
किया जा सकता है न ही उसमें कुछ जोड़ा
जा सकता है। **16** अब जो वादे थे वे
अब्राहम और उसके वंश से किए गए थे।
शास्त्र यह नहीं कहता: “और वंशजों से,”
मानो वह बहुतों की बात कर रहा हो,
बल्कि वह सिर्फ एक के बारे में बात कर
रहा था: “और तेरे वंश को,” जो मसीह
है। **17** मेरे कहने का मतलब यह है:
जिस करार को परमेश्वर ने पहले से
पक्का कर दिया था, उसे वह कानून जो
चार सौ तीस साल बाद आया, खारिज
नहीं कर देता कि उस वादे को रद्द
कर दे। **18** इसलिए कि अगर विरा-
सत मूसा के कानून के ज़रिए मिलनी
है, तो यह फिर वादे के ज़रिए नहीं
रही, जबकि परमेश्वर ने मेहरबान होकर
यह विरासत अब्राहम को एक वादे के
ज़रिए दी है।

19 तो फिर, कानून देने की ज़रूरत
क्या थी? यह तब तक पापों को ज़ाहिर
करने के लिए जोड़ा गया, जब तक कि
वह वंश न आए जिससे यह वादा किया
गया था। यह कानून स्वर्गदूतों के ज़रिए
एक बिचवई के हाथों पहुँचाया गया था।
20 जहाँ सिर्फ एक पक्ष होता है वहाँ
बिचवई की ज़रूरत नहीं होती। परमेश्वर
अकेला वह पक्ष है जिसने यह वादा
किया। **21** तो फिर, क्या मूसा का
कानून परमेश्वर के वादों के खिलाफ
है? ऐसा हरगिज़ नहीं है! क्योंकि अगर
ऐसा कानून दिया जाता जो ज़िंदगी दिला
सकता, तो नेक ठहराया जाना असल में
कानून का पालन करने पर निर्भर होता।
22 मगर शास्त्र ने सबको पाप की
हिरासत में सौंप दिया, ताकि वह वादा जो
यीशु मसीह में विश्वास के ज़रिए

है, विश्वास दिखानेवालों को हासिल हो सके।

23 मगर, विश्वास के आने से
पहले, हम मूसा के कानून की हिफाज़त में थे, और हम सभी इसकी हिरासत में रहने के लिए सौंपे गए थे और हम उस विश्वास का इंतज़ार कर रहे थे
जिसका प्रकट होना तय था। 24 इस-
लिए मूसा का कानून हमें मसीह तक ले जानेवाला संरक्षक* बना है, ताकि हम विश्वास की वजह से नेक ठहराए जाएँ।
25 अब क्योंकि विश्वास आ पहुँचा है, इसलिए हम किसी संरक्षक के अधीन नहीं रहे।

26 तुम सब असल में मसीह यीशु
में अपने विश्वास के ज़रिए परमेश्वर के
बेटे हो। 27 इसलिए कि तुम सबने,
जिन्होंने मसीह में बपतिस्मा लिया है,
मसीह को पहन लिया है। 28 इस-
लिए न तो कोई यहूदी रहा न यूनानी, न कोई गुलाम न ही आज़ाद, न कोई पुरुष न ही कोई स्त्री, क्योंकि तुम सब मसीह यीशु के साथ एकता में एक हो गए हो।
29 और अगर तुम मसीह के हो, तो तुम वाकई वादे के मुताबिक अब्राहम का वंश और वारिस हो।

4 लेकिन मैं यह कहता हूँ कि जब तक वारिस बच्चा होता है, हालाँकि वह सब चीज़ों का मालिक है, फिर भी उसमें और गुलाम में कोई फर्क नहीं होता।
2 मगर वह अपने पिता के ठहराए दिन तक देख-रेख करनेवालों और घर के प्रबंधकों की निगरानी में रहता है।
3 उसी तरह, हम भी जब बच्चे थे, तो दुनियादारी के उसूलों के गुलाम बने हुए
थे। 4 मगर जब वक्त पूरा हुआ तो
परमेश्वर ने अपना बेटा भेजा जो एक स्त्री से पैदा हुआ और मूसा के कानून के
अधीन हुआ। 5 यह इसलिए हुआ
ताकि वह उनको जो मूसा के कानून के अधीन हैं, खरीदकर छुड़ा सके और कि हम बदले में बेटों के नाते गोद लिए जा सकें।

6 क्योंकि तुम बेटे हो, इसलिए पर-
मेश्वर ने वही पवित्र शक्ति जो उसके बेटे को दी गयी थी, हमारे दिलों में भेजी है, और यह *"अब्बा,* पिता!" पुकारती है।
7 तो अब तुम गुलाम नहीं रहे बल्कि बेटे हो। और अगर बेटे हो तो परमेश्वर ने तुम्हें वारिस भी बनाया है।

8 जब तुम परमेश्वर को नहीं जानते
थे, तब तुम उनकी गुलामी करते थे जो
असल में ईश्वर हैं ही नहीं।* 9 मगर
अब जब तुम परमेश्वर को जान गए हो या यूँ कहें कि अब परमेश्वर तुम्हें जानता है, तो फिर क्यों तुम गयी-गुज़री बेकार बातों की तरफ फिर से मुड़ रहे हो और दोबारा उनकी गुलामी करना चाहते हो?
10 तुम बड़े ध्यान से खास दिन, महीने, ठहराए समय और साल मनाते हो।
11 मैं तुम्हारे बारे में डरता हूँ कि मैंने

गला 3:24* 1 कुरिं 4:15 फुटनोट देखें।

गला 4:8* शाब्दिक, "जिनमें ईश्वर होने का तत्व है ही नहीं।"

तुम पर जो कड़ी मेहनत की है, वह कहीं
बेकार तो नहीं गयी।

12 भाइयो, मैं तुमसे बिनती करता
हूँ, तुम वैसे बन जाओ जैसा मैं हूँ
क्योंकि मैं पहले वैसा ही था, जैसे तुम
अब हो। तुमने मेरे साथ कुछ बुरा नहीं
किया। **13** मगर तुम जानते हो कि
मेरे शरीर की बीमारी की वजह से मैं तुम्हें
पहली बार खुशखबरी सुना सका था।
14 और हालाँकि मेरे शरीर की बीमारी
तुम्हारे लिए एक परीक्षा थी, फिर भी
तुमने मुझे तुच्छ नहीं समझा, न ही मुझे
देखकर घिन से थूका। मगर तुमने मुझे
परमेश्वर के एक दूत की तरह, मसीह
यीशु की तरह स्वीकार किया। **15** तो
अब तुम्हारी वह खुशी कहाँ चली गयी?
मैं इस बात का गवाह हूँ कि अगर
मुमकिन होता तो तुमने अपनी आँखें
निकालकर मुझे दे दी होतीं। **16** तो
क्या अब मैं इस वजह से तुम्हारा दुश्मन
बन गया हूँ, क्योंकि मैं सच बोल रहा हूँ?
17 वे तुम्हें अपनी तरफ खींचने के लिए
बड़े जोश के साथ तुम्हारे पीछे पड़े
हैं। लेकिन वे अच्छा इरादा नहीं रखते,
क्योंकि वे तुम्हें मुझसे दूर कर देना चाहते
हैं ताकि तुम बड़े जोश के साथ उनके
पीछे हो जाओ। **18** अगर कोई भले
काम के लिए तुम्हारे पीछे पड़ता है,
तो यह अच्छी बात है। ऐसा न सिर्फ
तब किया जाए जब मैं तुम्हारे बीच
होता हूँ, बल्कि हर समय किया जाए,
19 तो मेरे प्यारे बच्चो, यह अच्छी बात
है। जब तक मसीह तुम्हारे अंदर तैयार
नहीं हो जाता, तब तक मैं तुम्हारे लिए
फिर से जच्चा की सी पीड़ा में हूँ।
20 काश मैं अभी तुम्हारे पास मौजूद
होता और तुमसे प्यार के लहज़े में बात
करता, क्योंकि मैं तुम्हारी वजह से अस-
मंजस में हूँ।

21 तुम जो मूसा के कानून के अधीन
होना चाहते हो, मुझे बताओ कि क्या
तुमने नहीं सुना कि कानून क्या कहता
है? **22** मिसाल के लिए, यह लिखा है
कि अब्राहम के दो बेटे हुए, एक दासी से
और दूसरा आज़ाद स्त्री से। **23** मगर
जो दासी से था वह स्वाभाविक तौर पर*
पैदा हुआ, और दूसरा आज़ाद स्त्री से
वादे के ज़रिए पैदा हुआ। **24** इन
बातों के पीछे एक मतलब छिपा है।*
इन दो स्त्रियों का मतलब दो करार हैं।
एक सीनै पहाड़ पर किया गया था जो
गुलामी के लिए बच्चे पैदा करता है और
यह हाजिरा है। **25** यह हाजिरा मानो
अरब का सीनै पहाड़ है और आज की
यरूशलेम के समान है, क्योंकि यरू-
शलेम अपने बच्चों समेत गुलामी में है।
26 मगर ऊपर की यरूशलेम आज़ाद है
और वह हमारी माँ है।

27 क्योंकि यह लिखा है: "हे बाँझ,
तू जिसके बच्चे नहीं होते, तू खुशियाँ
मना। तू जो जच्चा की पीड़ाओं से नहीं

गला 4:23* शाब्दिक, "शरीर के मुताबिक।"
24* या, "यह एक लाक्षणिक नाटक है।"

गुज़री, तू खुशी से चिल्ला। इसलिए कि
छोड़ी हुई स्त्री की संतान उस स्त्री की
संतान से ज़्यादा हैं जिसका पति उसके
साथ है।” **28** भाइयो, हम भी इस-
हाक की तरह वे बच्चे हैं जो वादे से जुड़े
हैं। **29** मगर जिस तरह स्वाभाविक
तरीके से पैदा होनेवाला, पवित्र शक्ति
से पैदा होनेवाले पर ज़ुल्म करने लगा,
वैसा ही आज है। **30** मगर शास्त्र
क्या कहता है? “दासी और उसके बेटे
को निकाल बाहर कर, क्योंकि दासी
का बेटा आज़ाद स्त्री के बेटे के संग
हरगिज़ वारिस नहीं होगा।” **31** इस-
लिए भाइयो, हम दासी के नहीं बल्कि
आज़ाद स्त्री के बच्चे हैं।

5 ऐसी आज़ादी* के लिए ही मसीह
ने हमें आज़ाद किया है। इसलिए
मज़बूती से खड़े रहो और खुद को फिर
से गुलामी के जूए में न जुतने दो।

2 देखो! मैं पौलुस, तुम्हें बता रहा हूँ
कि अगर तुम खतना करवाते हो, तो
मसीह ने जो किया है उसका तुम्हें कोई
फायदा नहीं होगा। **3** यही नहीं, मैं
खतना करानेवाले हर आदमी से एक
बार फिर यह कहता हूँ कि अगर वह
खतना करता है तो उसे मूसा के बाकी
सभी कानूनों का भी पालन करना होगा।
4 तुम जो कानून का पालन करने से
नेक करार दिए जाने की कोशिश करते
हो, तुम चाहे जो भी हो, तुम मसीह से
अलग हो गए हो। तुम उसकी महा-कृपा
के दायरे से बाहर हो गए हो। **5** मगर
हम परमेश्वर की पवित्र शक्ति के ज़रिए
विश्वास से परमेश्वर की नज़र में नेक
करार दिए जाने का बेताबी से इंत-
ज़ार कर रहे हैं जिसकी हमें आशा है।
6 क्योंकि मसीह यीशु के मामले में न
तो खतना कराने की कोई अहमियत है,
न ही खतना न कराने की कोई अहमियत
है, बल्कि उस विश्वास की है जो प्यार
के ज़रिए काम करता है।

7 तुम सच्चाई की राह पर अच्छे
खासे चल रहे थे।* फिर किसने
तुम्हें सच्चाई को मानते रहने से रोका?
8 इस तरह की दलीलें, तुम्हारे बुलाने-
वाले की तरफ से नहीं हैं। **9** ज़रा-सा
खमीर पूरे गुँधे हुए आटे को खमीर कर
देता है। **10** तुम जो प्रभु के साथ
एकता में हो, मुझे तुम पर यकीन है कि
तुम्हारी सोच इससे अलग नहीं होगी।
मगर वह जो तुम्हारे लिए मुसीबत खड़ी
कर रहा है, वह चाहे जो भी हो, सज़ा
से नहीं बचेगा। **11** भाइयो, जहाँ तक
मेरी बात है, अगर मैं अब भी खतना
कराने का प्रचार कर रहा हूँ, तो मुझ पर
आज तक ज़ुल्म क्यों ढाए जा रहे हैं?
अगर मैं इसका प्रचार कर रहा होता, तो
यातना की सूली* की वजह से लोगों को
ठेस पहुँचने की समस्या नहीं रहती।
12 अच्छा होता कि जो आदमी तुम्हें

गला 5:1* या, “उस स्त्री की आज़ादी जैसी आज़ादी के साथ।”

गला 5:7* शाब्दिक, “अच्छी तरह दौड़ रहे थे।” **11*** अतिरिक्त लेख 6 देखें।

तबाह करना चाहते हैं, वे खुद अपना
अंग काट डालते।*

13 भाइयो, तुम्हें आज़ाद होने
के लिए बुलाया गया था। बस इतना
करो कि इस आज़ादी को शरीर की
ख्वाहिशें उकसाने का साधन न
बनाओ, मगर प्यार से एक-दूसरे
की सेवा करो। **14** इसलिए कि सारा
कानून इस एक ही बात से पूरा होता है:
“तुझे अपने पड़ोसी से वैसे ही प्यार
करना है जैसे तू खुद से करता है।”
15 लेकिन, अगर तुम एक-दूसरे को
काट-खाने और फाड़ने में लगे हो, तो
खबरदार रहो कि तुम एक-दूसरे का
सर्वनाश न कर दो।

16 मगर मैं कहता हूँ, पवित्र शक्ति
के मार्गदर्शन में चलते रहो और तुम
शरीर की ख्वाहिशों को हरगिज़ पूरा न
करोगे। **17** इसलिए कि पापी शरीर
की ख्वाहिशें, पवित्र शक्ति के खिलाफ
होती हैं और पवित्र शक्ति, शरीर के
खिलाफ है। ये दोनों एक-दूसरे के विरोध
में हैं, इसलिए तुम जो कुछ करना चाहते
हो, वही तुम नहीं करते। **18** अगर
तुम पवित्र शक्ति के मार्गदर्शन में चलते
हो, तो तुम मूसा के कानून के अधीन
नहीं हो।

19 शरीर के काम तो ज़ाहिर हैं और
वे हैं, व्यभिचार, अशुद्धता, बदचलनी,
20 मूर्तिपूजा, भूत-विद्या, दुश्मनी,
तकरार, जलन, गुस्से से उबलना, झगड़े,
फूट, गुटबंदी, **21** ईर्ष्या, नशेबाज़ी
के दौर, रंगरलियाँ और ऐसी ही और
बुराइयाँ। इन बुराइयों के बारे में मैं तुम्हें
पहले से खबरदार कर रहा हूँ, जैसे मैंने
तुम्हें पहले भी किया है कि जो लोग ऐसे
कामों में लगे रहते हैं वे परमेश्वर के राज
के वारिस न होंगे।

22 दूसरी तरफ, परमेश्वर की पवित्र
शक्ति का फल है, प्यार, खुशी, शांति,
सहनशीलता, कृपा, भलाई, विश्वास,
23 कोमलता, संयम। ऐसी बातों के
खिलाफ कोई कानून नहीं है। **24** जो
मसीह यीशु के हैं उन्होंने अपने शरीर को
उसकी वासनाओं और बुरी ख्वाहिशों
समेत सूली पर चढ़ा दिया है।

25 अगर हमारा जीने का तरीका
पवित्र शक्ति के मुताबिक है, तो आओ
हम इसी तरह पवित्र शक्ति के मुताबिक
सीधी चाल चलते रहें। **26** हम अहं-
कारी न बनें, एक-दूसरे को होड़ लगाने
के लिए न उकसाएँ और एक-दूसरे से
ईर्ष्या न करें।

6 भाइयो, हो सकता है कि कोई इंसान
गलत कदम उठाए और उसे इस
बात का एहसास न हो। लेकिन ऐसे में
भी, तुम जो परमेश्वर के स्तरों के मुता-
बिक काबिलीयत रखते हो, कोमलता की
भावना के साथ ऐसे इंसान का सुधार
करने की कोशिश करो। साथ ही, तुममें
से हरेक खुद पर भी नज़र रखे कि
कहीं तुम भी फुसलावे में न आ जाओ।

गला 5:12* शाब्दिक, “बधिया करा लेते।”

2 एक-दूसरे के भार उठाते रहो और
इस तरह मसीह का कानून पूरा करो।
3 अगर कोई कुछ न होने पर भी खुद
को कुछ समझता है, तो वह अपने आप
को धोखा दे रहा है। **4** मगर हर कोई
खुद अपने काम की जाँच करे और तब
उसके पास किसी दूसरे की तुलना में नहीं,
बल्कि खुद अपने ही काम के बारे में गर्व
करने की वजह होगी। **5** इसलिए कि
हर कोई अपनी ज़िम्मेदारी का बोझ खुद
उठाएगा।

6 जो कोई ज़बानी तौर पर परमेश्वर
के वचन की शिक्षा पा रहा है, वह ऐसी
शिक्षा देनेवाले को सब अच्छी चीज़ों में
साझेदार बनाए।

7 धोखे में न रहो: परमेश्वर की
खिल्ली नहीं उड़ायी जा सकती। इसलिए
कि इंसान जो बोएगा, वही काटेगा भी।
8 क्योंकि जो शरीर के लिए बोता है,
वह शरीर से विनाश की फसल काटेगा,
मगर जो पवित्र शक्ति के लिए बोता है,
वह पवित्र शक्ति से हमेशा की ज़िंदगी की
फसल काटेगा। **9** इसलिए आओ हम
बढ़िया काम करने में हार न मानें, क्योंकि
अगर हम हिम्मत न हारें, तो वक्त आने
पर ज़रूर फल पाएँगे। **10** वाकई,
जब तक अच्छा वक्त चल रहा है, तब
तक हम सबके साथ भलाई करें, मगर
खासकर उनके साथ जो विश्वास में हमारे
भाई-बहन हैं।

11 देखो, मैंने कैसे बड़े-बड़े अक्षरों
में अपने ही हाथ से तुम्हें लिखा है।

12 वे सभी जो बाहरी दिखावे से
इंसानों को खुश करना चाहते हैं, वे ही
तुम्हारा खतना करवाने के लिए तुम
पर दबाव डालने की कोशिश कर रहे
हैं, सिर्फ इसलिए कि मसीह यीशु की
यातना की सूली* की वजह से उन्हें
ज़ुल्म न सहना पड़े। **13** इसलिए कि
जिनका खतना हो चुका है वे खुद तो मूसा
के कानून का पालन नहीं करते, मगर
तुम्हारा खतना इसलिए करवाना चाहते
हैं ताकि तुम्हारे शरीर की दशा पर वे
शेखी मार सकें। **14** ऐसा कभी न हो
कि हमारे प्रभु यीशु मसीह की यातना की
सूली के सिवा मैं किसी और बात पर
शेखी मारूँ। मसीह के ज़रिए दुनिया मेरी
नज़र में सूली पर चढ़ाई जा चुकी है और
मैं दुनिया की नज़र में। **15** न तो
खतना कुछ मायने रखता है, न ही खतना
न होना, मगर नयी सृष्टि मायने रखती
है। **16** उन सभी पर जो इस नियम
के मुताबिक कायदे से चलेंगे, यानी पर-
मेश्वर के इसराएल पर शांति और दया
होती रहे।

17 आखिर में मैं यह कहता हूँ, कोई
मुझे परेशान न करे, इसलिए कि मैं अपने
शरीर पर यीशु का दास होने की उन
निशानियों को लिए फिरता हूँ, जो मेरे
शरीर पर दागी गयी हैं।

18 भाइयो, हमारे प्रभु यीशु मसीह
की महा-कृपा तुम्हारी उस भावना के साथ
हो जो तुम दिखाते हो। आमीन।

गला 6:12* अतिरिक्त लेख 6 देखें।

इफिसियों
के नाम

1 मैं पौलुस, जो परमेश्वर की मरज़ी
से मसीह यीशु का प्रेषित* हूँ, इफि-
सुस के पवित्र जनों को लिख रहा हूँ, जो
मसीह यीशु के साथ एकता में विश्वास-
योग्य हैं।
2 तुम्हें परमेश्वर हमारे पिता की
तरफ से और प्रभु यीशु मसीह की तरफ
से महा-कृपा और शांति मिले।
3 हमारे प्रभु यीशु मसीह का पर-
मेश्वर और पिता धन्य हो। क्योंकि उसने
हमें मसीह यीशु के साथ एकता में होने
की वजह से स्वर्गीय स्थानों में हर तरह
की आशीष दी है। **4** जैसा कि इस
बात से दिखाया गया है कि परमेश्वर ने
दुनिया की शुरूआत के पहले से हमें
मसीह के साथ एकता में चुन लिया, ताकि
हम प्यार में परमेश्वर के सामने पवित्र
और बेदाग हों। **5** जैसा उसे अच्छा
लगा उसने अपनी मरज़ी के मुताबिक
पहले से यह ठहराया था कि हमें यीशु
मसीह के ज़रिए अपने बेटों के नाते गोद
ले, **6** ताकि परमेश्वर की इस शान-
दार महा-कृपा के लिए उसकी तारीफ हो,
जो उसने मेहरबान होकर अपने प्यारे बेटे
के ज़रिए हम पर की है। **7** उसी बेटे
के लहू के ज़रिए फिरौती देकर हमें
छुड़ाया गया है। हाँ, उसी के ज़रिए पर-
मेश्वर की महा-कृपा की दौलत हम पर
लुटायी गयी और इस महा-कृपा से हमें
गुनाहों की माफी दी गयी।
8 उसने हमें यह महा-कृपा सारी
बुद्धि और समझ के रूप में बहुतायत में
दी है, **9** यानी अपनी मरज़ी के बारे
में पवित्र रहस्य हम पर ज़ाहिर किया।
यह रहस्य उसने अपनी मरज़ी के मुता-
बिक खुद तय किया था **10** कि तय
वक्त के पूरा होने पर वह एक इंतज़ाम
की शुरूआत करे, यानी चाहे स्वर्ग की
चीज़ें हों या धरती की, सबकुछ फिर
से मसीह में इकट्ठा करे, हाँ उसी में।
11 उसी के साथ एकता में हम वारिस
भी ठहराए गए हैं। परमेश्वर ने अपने
मकसद के मुताबिक हमें वारिस होने
के लिए पहले से चुन लिया है और
वह अपनी मरज़ी के हिसाब से सबकुछ
चलाता है। **12** परमेश्वर ने हमें इस-
लिए चुना ताकि हम जो मसीह में आशा
रखनेवालों में सबसे पहले हैं, हमारे ज़रिए
परमेश्वर का गुणगान और महिमा हो।
13 तुमने भी जब अपने उद्धार की
खुशखबरी यानी सच्चाई का वचन सुना
था तब मसीह पर आशा रखी। तुम्हारे
विश्वास करने के बाद, उसी के ज़रिए
तुम पर उस पवित्र शक्ति की मुहर
लगायी गयी जिसका वादा किया गया
था। **14** यह पवित्र शक्ति हमें अपनी

इफि 1:1* या, "भेजा गया।" यूनानी में *"अपोस्टो-लोस।"*

विरासत मिलने से पहले एक बयाने के
तौर पर दी गयी है, ताकि परमेश्वर
फिरौती देकर अपने लोगों* को छुड़ाए
जिससे कि उसकी महिमा की बड़ाई हो।
15 इसीलिए, जब से मैंने तुम्हारे
विश्वास के बारे में सुना जो तुम्हें प्रभु
यीशु पर है और जिस तरह तुम सभी
पवित्र जनों के साथ अपने बर्ताव से यह
विश्वास दिखाते हो, **16** मैंने तुम्हारे
लिए प्रार्थना में धन्यवाद देना नहीं छोड़ा।
मैं हमेशा तुम्हारे लिए प्रार्थना करता रहता
हूँ **17** कि हमारे प्रभु यीशु मसीह का
परमेश्वर, वह पिता जो महिमा से भर-
पूर है, तुम्हें बुद्धि और उन बातों को स-
मझने की शक्ति दे जो वह प्रकट करता
है ताकि तुम उसका सही ज्ञान हासिल कर
सको। **18** और क्योंकि उसने तुम्हारे
मन की आँखें खोलकर तुम्हें समझ की
रौशनी दी है, इसलिए मैं यह भी प्रार्थना
करता हूँ कि तुम जान सको कि वह आशा
क्या है जिसके लिए उसने तुम्हें बुलाया
है और वह शानदार दौलत क्या है
जो उसने पवित्र लोगों को विरासत में देने
के लिए रखी है। **19** और यह भी
समझ सको कि हम विश्वास करनेवालों
की ज़िंदगी में उसकी जो ताकत असर
करती है वह कितनी बेजोड़, कितनी
महान है। इस ताकत की महानता, उसकी
महा-शक्ति के काम करने से ज़ाहिर होती
है। **20** परमेश्वर ने यह महा-शक्ति
मसीह के मामले में तब दिखायी जब उसने

इफि 1:14* शाब्दिक, "अपनी संपत्ति।"

उसे मरे हुओं में से जी उठाया और
स्वर्गीय स्थानों में अपनी दायीं तरफ
बिठाया। **21** यानी हर सरकार और
अधिकार और ताकत और प्रभुता और
हर उस नाम से, जो न सिर्फ इस ज़माने*
में बल्कि आनेवाले ज़माने में दिया जाएगा,
उसे कहीं ऊपर बिठाया है। **22** साथ
ही परमेश्वर ने सबकुछ उसके पैरों तले
कर दिया और उसे सब चीज़ों पर मुखिया
ठहराकर मंडली* की खातिर दे दिया।
23 मंडली, मसीह का शरीर है, जिसमें
वह पूरी तरह समाया हुआ है और वही है
जो सब चीज़ों में सबकुछ पूरा करता है।

2 यही नहीं, तुम्हीं को परमेश्वर
ने ज़िंदा किया जबकि तुम अपने
गुनाहों और पापों की वजह से मरे हुओं
जैसे थे। **2** इन पापों में पड़े हुए तुम
एक वक्त पर इस दुनिया और इसकी
व्यवस्था के मुताबिक जीते थे। तुम उस
राजा की मानते हुए चलते थे जो दुनिया
की फितरत के अधिकार पर राज करता
है। यह फितरत चारों तरफ हवा की तरह
फैली हुई है और अब आज्ञा न मानने-
वालों में काम करती हुई दिखायी देती
है। **3** हाँ, एक वक्त पर हम सब
इन्हीं लोगों के बीच रहते थे और अपने
शरीर की ख्वाहिशों के मुताबिक चलते
थे। हम वही करते थे जो हमारा शरीर
चाहता था और सोचता था। और हम
पैदाइश से उन बाकियों की तरह थे जिन

इफि 1:21* या, "दुनिया की व्यवस्था।" **22*** मत्ती
16:18 दूसरा फुटनोट देखें।

पर परमेश्वर का क्रोध है।* **4** मगर
परमेश्वर ने, जो दया का धनी है, उस
बड़े प्यार की वजह से जो उसने हमसे
किया, **5** हमें ज़िंदा किया और मसीह
के साथ एक किया, जब हम अपने गुनाहों
की वजह से मरे हुओं जैसे थे, (तुमने
महा-कृपा की वजह से ही उद्धार पाया
है) **6** उसी परमेश्वर ने हमें मसीह
यीशु के साथ एकता में जी उठाया है
और हमें उसके साथ स्वर्गीय स्थानों में
बिठाया है **7** ताकि आनेवाले ज़मानों*
में परमेश्वर अपनी महा-कृपा की बेशु-
मार दौलत हम पर ज़ाहिर कर सके
जो उसने बड़ी उदारता दिखाते हुए हम
पर की है, जो मसीह यीशु के साथ
एकता में हैं।

8 वाकई, तुम्हारा उद्धार इसी महा-
कृपा की वजह से, विश्वास के ज़रिए
किया गया है। और यह इंतज़ाम तुम्हारी
अपनी वजह से नहीं है, बल्कि यह पर-
मेश्वर का तोहफा है। **9** नहीं! यह
उद्धार तुम्हारे कामों की वजह से नहीं है,
जिससे किसी भी इंसान के पास शेखी
मारने की कोई वजह न हो। **10** इस-
लिए कि हम उसी के हाथों की कारीगरी
हैं और हमें मसीह यीशु के साथ एकता
में उन अच्छे कामों के लिए सिरजा गया
था, ताकि हम वे अच्छे काम करें* जिन्हें
परमेश्वर ने पहले से हमारे लिए तय कर
दिया है।

11 इसलिए यह हमेशा याद रखो कि
एक वक्त तुम पैदाइश के हिसाब से दूसरी
जातियों के लोग थे। और जिनका शरीर
में हाथ से खतना हुआ है, वे तुम्हें बिना
खतनेवाले लोग कहते थे। **12** यह भी
याद रखो कि उस वक्त तुम मसीह के
बिना, इसराएल राष्ट्र से अलग थे और
अजनबी होने की वजह से तुम्हारा वादे
के करारों में कोई हिस्सा न था और
तुम्हारे पास कोई आशा न थी और तुम
इस दुनिया में बिना परमेश्वर के थे।
13 मगर अब तुम्हें, जो एक वक्त पर-
मेश्वर से बहुत दूर थे, मसीह के लहू
के ज़रिए मसीह यीशु के साथ एकता
में परमेश्वर के पास लाया गया है।
14 इसलिए कि मसीह हमारे लिए शांति
लाया है। उसी ने दो पक्षों को एक किया
और उस दीवार को ढा दिया है जो इन
दोनों के बीच एक बाड़े की तरह थी और
इन्हें अलग किए हुए थी। **15** उसने
अपना शरीर बलिदान कर इस दुश्मनी
की वजह को रद्द कर दिया, और वह
वजह थी, मूसा का कानून जिसमें कई
आज्ञाएँ थीं, ताकि वह दो किस्म के लोगों
को अपने साथ एकता में लाकर एक
नया इंसान बनाए और इनके बीच शांति
कायम कर सके **16** और वह इन दोनों
किस्म के लोगों को एक शरीर बनाकर
यातना की सूली* के ज़रिए परमेश्वर
के साथ इनकी पूरी तरह सुलह करा
सके, क्योंकि उसने खुद अपने ज़रिए इस

इफि 2:3* शाब्दिक, "हम क्रोध की संतान थे।" **7*** शाब्दिक, "दुनिया की व्यवस्थाओं।" **10*** शाब्दिक, "हम अच्छे कामों में चलें।"

इफि 2:16* अतिरिक्त लेख 6 देखें।

दुश्मनी को खत्म कर दिया। **17** और
वह आया और उसने तुम्हें, जो दूर थे
और उन्हें भी जो पास थे शांति की
खुशखबरी सुनायी **18** क्योंकि उसी के
ज़रिए हम दोनों किस्म के लोग, एक ही
पवित्र शक्ति के ज़रिए पिता के पास
पहुँच हासिल करते हैं।

19 इसलिए, बेशक अब तुम
अजनबी और परदेसी नहीं रहे, मगर
पवित्र जनों के साथ संगी नागरिक हो
और परमेश्वर के घराने के सदस्य हो।
20 तुम्हें प्रेषितों और भविष्यवक्ताओं
की नींव पर खड़ा किया गया है, जिसका
नींव का कोने का पत्थर खुद मसीह यीशु
है। **21** यह पूरी इमारत जो मसीह के
साथ एकता में है और जिसके सारे
हिस्से एक-दूसरे के साथ पूरे तालमेल से
जुड़े हुए हैं, बढ़ती जा रही है ताकि
यहोवा* के लिए एक पवित्र मंदिर बने।
22 उसी के साथ एकता में, तुम्हारा
एक-साथ निर्माण किया जा रहा है ताकि
तुम परमेश्वर के लिए एक निवास-स्थान
बन सको जहाँ वह अपनी पवित्र शक्ति
के ज़रिए रहे।

3 इस वजह से, मैं पौलुस जो मसीह
यीशु की खातिर तुम लोगों के लिए
कैद में हूँ, तुम जो दूसरी जातियों के हो,
तुम्हारे लिए . . . **2** तुमने ज़रूर सुना
होगा कि तुम्हारे फायदे के लिए मुझे पर-
मेश्वर की महा-कृपा के प्रबंधक होने की
ज़िम्मेदारी सौंपी गयी थी, **3** और यह
भी कि मुझ पर पवित्र रहस्य प्रकट
किया गया था, जैसा कि मैं पहले चंद
शब्दों में लिख चुका हूँ। **4** इस बात
को ध्यान में रखते हुए, जब तुम यह
पढ़ोगे तो जान सकोगे कि मसीह के बारे
में पवित्र रहस्य की मैं कैसी समझ रखता
हूँ। **5** पिछली पीढ़ियों के लोगों पर
यह रहस्य उस हद तक प्रकट नहीं किया
गया जैसे आज पवित्र शक्ति से उसके
पवित्र प्रेषितों और भविष्यवक्ताओं पर
प्रकट किया गया है। **6** यानी, यह कि
खुशखबरी के ज़रिए मसीह यीशु में दूसरी
जातियों के लोग हमारे संगी वारिस हों
और एक ही शरीर के अंग हों और पर-
मेश्वर के वादे में हमारे साथ साझेदार
हों। **7** मैं परमेश्वर की महा-कृपा की
वजह से इसी पवित्र रहस्य का सेवक बना
हूँ। उसने मुझे यह मुफ्त वरदान अपनी
ताकत के सबूत के तौर पर दिया है।

8 मुझ जैसे आदमी को, जो सभी
पवित्र जनों में सबसे छोटे से भी
छोटा है, यह महा-कृपा दी गयी कि मैं
दूसरी जातियों को मसीह के बारे में उस
बेशुमार दौलत की खुशखबरी सुनाऊँ
जिसका अंदाज़ा नहीं लगाया जा सकता,
9 और लोगों को यह दिखा सकूँ कि
पवित्र रहस्य कैसे अमल में लाया गया
है, जिसे सब चीज़ों के सिरजनहार, पर-
मेश्वर ने लंबे अरसे से छिपा रखा है।
10 ऐसा इसलिए किया गया ताकि
मंडली के ज़रिए स्वर्गीय स्थानों की सर-
कारों और अधिकारियों को परमेश्वर की

इफि 2:21* यह उन 237 जगहों में से एक जगह है, जहाँ परमेश्वर का नाम, 'यहोवा' इस अनुवाद के मुख्य पाठ में पाया जाता है। अतिरिक्त लेख 2 देखें।

बुद्धि के अलग-अलग अनगिनत पहलू
बताए जा सकें, **11** यह युग-युग से
चले आ रहे उस मकसद के मुताबिक है,
जो उसने मसीह, हमारे प्रभु यीशु के
मामले में तय किया है। **12** मसीह के
ज़रिए ही हमें इस तरह बेझिझक बोलने
की हिम्मत मिली है और उस पर हमारे
विश्वास के ज़रिए पूरे भरोसे के साथ पर-
मेश्वर के सामने पहुँच हासिल हुई है।
13 इसलिए मैं तुमसे कहता हूँ कि मेरी
इन दुःख-तकलीफों की वजह से, जो मैं
तुम्हारी खातिर सह रहा हूँ, तुम हिम्मत
न हारना क्योंकि इनका मतलब तुम्हारी
महिमा है।

14 . . . इस वजह से मैं उस पिता
के सामने घुटने टेककर तुम्हारे लिए
प्रार्थना करता हूँ, **15** जिसकी बदौलत
स्वर्ग में और धरती पर हर परिवार का
नाम वजूद में आया है,* **16** कि वह
जिसके पास अपार महिमा है अपनी
पवित्र शक्ति* से तुम्हें वह ताकत दे
जिससे तुम्हारे अंदर का इंसान शक्ति-
शाली होता जाए, **17** और मसीह
तुम्हारे विश्वास के ज़रिए तुम्हारे प्यार-
भरे दिलों में निवास करे। और परमेश्वर
तुम्हें यह आशीष भी दे कि तुम मज़बूती
से जड़ पकड़कर उस नींव पर कायम हो
जाओ। **18** ताकि तुम सभी पवित्र
जनों के साथ अच्छी तरह समझ सको
कि सच्चाई की चौड़ाई, लंबाई, ऊँचाई
और गहराई क्या है, **19** और मसीह
के प्यार को भी जान सको जो ज्ञान से
कहीं बढ़कर है, ताकि परमेश्वर के गुण
अपनी पूरी हद तक तुम में पाए जाएँ।

20 अब उस परमेश्वर को, जिसकी
ताकत हमारे अंदर काम कर रही है और
जितना हम माँग सकते हैं या जहाँ तक
हम सोच सकते हैं, उससे कहीं बढ़कर
जो हमारे लिए कर सकता है, **21** उसे
मंडली के ज़रिए और मसीह यीशु के
ज़रिए पीढ़ी-दर-पीढ़ी हमेशा-हमेशा तक
महिमा मिलती रहे। आमीन।

4 इसलिए, मैं जो प्रभु का चेला होने
के नाते कैदी हूँ, तुमसे गुज़ारिश
करता हूँ कि तुम्हारा चालचलन उस
बुलावे के योग्य हो जो तुम्हें दिया गया है।
2 और मन की पूरी दीनता, कोमलता
और सहनशीलता के साथ प्यार से एक-
दूसरे की सहते रहो, **3** शांति के एक
करनेवाले बंधन में बंधे हुए उस एकता
में रहने की जी-जान से कोशिश करते
रहो जो पवित्र शक्ति की तरफ से मिलती
है। **4** एक ही शरीर है और परमेश्वर
की भी एक ही पवित्र शक्ति* है, ठीक
जैसे वह आशा भी एक ही है जिसके लिए
तुम बुलाए गए थे। **5** एक ही प्रभु है,
एक ही विश्वास, एक ही बपतिस्मा।
6 और सबका एक ही परमेश्वर और
पिता है, जो सबके ऊपर है और सबके
ज़रिए और सब में काम करता है।

7 मसीह ने हरेक को जिस नाप से
मुफ्त वरदान दिया है, उसी के मुताबिक

इफि 3:15* या, "हर परिवार को नाम मिला है।"
16* यूनानी *नफ्मा।* अतिरिक्त लेख 7 देखें।

इफि 4:4* यूनानी *नफ्मा।* अतिरिक्त लेख 7 देखें।

हममें से हरेक को महा-कृपा दी गयी है।
8 इसलिए वह कहता है:* "जब वह
ऊँचे पर चढ़ा तो बंदियों को बाँध ले
गया। उसने आदमियों के रूप में तोहफे
दिए।" **9** "वह चढ़ा," इस बात का
क्या मतलब है? यही कि वह निचले
इलाकों यानी धरती पर उतरा भी था।
10 वह जो उतरा, वही है जो सारे स्वर्गों
से कहीं ऊपर चढ़ा ताकि वह सब बातों
को अंजाम तक लाए।

11 और उसने कुछ को प्रेषित, कुछ
को भविष्यवक्ता, कुछ को प्रचारक,
कुछ को चरवाहे और शिक्षक ठहराया,
12 ताकि पवित्र जनों का सुधार हो और
वे सेवा का काम करें और मसीह का
शरीर तब तक तरक्की करता जाए*
13 जब तक कि हम सब विश्वास में
और परमेश्वर के बेटे के बारे में सही
ज्ञान में एकता हासिल न कर लें और
एक पूरी तरह से विकसित आदमी की
तरह मसीह की पूरी कद-काठी हासिल न
कर लें, **14** ताकि हम अब से बच्चे
न रहें जो झूठी बातों की लहरों से यहाँ-
वहाँ उछाले जाते और शिक्षाओं के हर
झोंके से इधर-उधर उड़ाए जाते हैं, क्योंकि
वे ऐसे इंसानों की बातों में आ जाते हैं
जो फरेब और चालाकी से बातें गढ़कर
उन्हें झूठ की तरफ बहका लेते हैं।
15 मगर प्यार के साथ सच बोलते
हुए आओ हम, सब बातों में मसीह के
अधीन बढ़ते जाएँ जो हमारा सिर* है।
16 उसी से शरीर के सारे अंग, ज़रूरी
काम करनेवाले हरेक जोड़ के ज़रिए
आपस में पूरे तालमेल से जुड़े हुए हैं और
एक-दूसरे को सहयोग देते हैं और शरीर
के ये अलग-अलग अंग अपना-अपना
काम पूरा करते हैं। इसीलिए सारा शरीर
बढ़ता जाता है और प्यार में अपना
निर्माण करता है।

17 इस वजह से मैं प्रभु के सामने
तुमसे यह कहता हूँ और तुम्हें सीख देकर
उकसाता हूँ कि तुम अब से दुनिया के
लोगों की तरह न बनो जो अपने मन
के खोखले विचारों के मुताबिक चलते
हैं। **18** उनके जान-बूझकर अनजान
बने रहने और उनके दिलों की कठो-
रता की वजह से, वे दिमागी तौर पर
अंधकार में हैं और उस ज़िंदगी से दूर हैं
जो परमेश्वर देता है। **19** वे शर्म-हया
की सारी हदें पार कर चुके हैं* इसलिए
उन्होंने खुद को बदचलनी के हवाले कर
दिया है ताकि हर तरह का घिनौना काम
करें और उसकी और लालसा करें।

20 मगर, तुमने मसीह के बारे
में ऐसी शिक्षा नहीं पायी। **21** बशर्ते,
जब तुम्हें वह सच्चाई सिखायी गयी
जो यीशु ने सिखायी, तब तुमने उसकी
सुनी हो और उससे सीखा हो **22** कि
तुम्हें उस पुरानी शख्सियत को उतार
देना चाहिए जो तुम्हारे पिछले चालचलन
के मुताबिक है और जो उसकी गुमराह
करनेवाली ख्वाहिशों के मुताबिक भ्रष्ट

इफि 4:8* या, "वे कहते हैं," यानी शास्त्र। **12*** शाब्दिक, "निर्माण करे।" **15*** यानी, "मुखिया।"

इफि4:19* शाब्दिक, "उनका एहसास मिट चुका है।"

होती जा रही है। **23** इसके बजाय,
तुम्हें अपने मन को प्रेरित करनेवाली
शक्ति को नया बनाते जाना चाहिए,
24 और नयी शख्सियत को पहन लेना
चाहिए, जो परमेश्वर की मरज़ी के मुता-
बिक रची गयी है और परमेश्वर की नज़र
में सच्चाई, नेकी और वफादारी की माँगों
के मुताबिक है।

25 इसलिए, जब तुमने झूठ को
अपने से दूर किया है, तो तुममें से हरेक
अपने पड़ोसी से सच बोले, क्योंकि हम
एक ही शरीर के अलग-अलग अंग हैं।
26 अगर तुम्हें क्रोध आए, तो भी पाप
मत करो। सूरज ढलने तक तुम्हारा गुस्सा
बना न रहे, **27** न ही शैतान[*] को
मौका दो। **28** जो चोरी करता है वह
अब से चोरी न करे। इसके बजाय, कड़ी
मेहनत करे और अपने हाथों से ईमान-
दारी का काम करे, ताकि किसी ज़रूरत-
मंद को देने के लिए उसके पास कुछ हो।
29 कोई गंदी बात[*] तुम्हारे मुँह से न
निकले, मगर सिर्फ ऐसी बात निकले जो
ज़रूरत के हिसाब से हिम्मत बँधाने[#] के
लिए अच्छी हो, ताकि उससे सुननेवालों
को फायदा पहुँचे। **30** और परमेश्वर
की पवित्र शक्ति को दुःखी न करो,
जिससे तुम पर उस दिन के लिए मुहर
लगायी गयी है, जब फिरौती के ज़रिए
तुम छुड़ाए जाओगे।

31 हर तरह की जलन-कुढ़न,
गुस्सा, क्रोध, चीखना-चिल्लाना और
गाली-गलौज, साथ ही हर तरह की
बुराई को खुद से दूर करो। **32** इसके
बजाय, एक-दूसरे के साथ कृपा से पेश
आओ और कोमल-करुणा दिखाते हुए
एक-दूसरे को दिल से माफ करो, ठीक
जैसे परमेश्वर ने भी मसीह के ज़रिए तुम्हें
दिल से माफ किया है।

5 इसलिए, परमेश्वर के प्यारे बच्चों
की तरह उसकी मिसाल पर चलो,
2 और प्यार की राह पर चलते रहो,
ठीक जैसे मसीह ने भी तुमसे प्यार किया
और तुम्हारी खातिर परमेश्वर के सामने
सुगंध देनेवाली भेंट और बलिदान के तौर
पर खुद को सौंप दिया।

3 जैसा पवित्र लोगों को शोभा देता
है, तुम्हारे बीच व्यभिचार और किसी भी
तरह की अशुद्धता या लालच का ज़िक्र
तक न हो, **4** न तुम्हारे बीच शर्मनाक
बर्ताव, न बेवकूफी की बातें, न ही
अश्लील मज़ाक हो जो शोभा नहीं देते।
इसके बजाय, परमेश्वर का धन्यवाद ही
सुना जाए। **5** क्योंकि तुम जानते हो
और तुम्हें इस बात का पूरा एहसास है
कि कोई भी व्यभिचारी या अशुद्ध काम
करनेवाला या लालची, जो मूरतों को
पूजनेवाले के बराबर है, मसीह के और
परमेश्वर के राज में कोई विरासत नहीं
पाएगा।

6 कोई भी इंसान तुम्हें खोखली बातों
से धोखा न दे, क्योंकि इन्हीं बुराइयों
की वजह से परमेश्वर का क्रोध
आज्ञा न माननेवालों पर आ रहा है।

इफि 4:27* यूनानी में *“दियाबोलोस,”* जिसका मतलब है “निंदा करनेवाला।” **29*** शाब्दिक, “सड़न से भरी।” **29#** शाब्दिक, “निर्माण।”

7 इसलिए उनके साथ साझेदार न बनो।
8 इसलिए कि तुम एक वक्त अंधकार
में थे, मगर अब तुम प्रभु के साथ
एकता में होने की वजह से रौशनी में
हो। रौशनी की संतानों के नाते चलते
रहो, **9** क्योंकि रौशनी का नतीजा हर
तरह की भलाई, नेकी और सच्चाई है।
10 जाँच कर पक्का करते रहो कि प्रभु
को क्या भाता है, **11** और उनके
साथ अंधकार के निकम्मे कामों में हिस्सा
लेना छोड़ दो। इसके बजाय उनकी निंदा
करते रहो, **12** क्योंकि वे गुप्त में जो
काम करते हैं, उनके बारे में बताना भी
शर्मनाक है। **13** जितनी भी बातों का
पर्दाफाश किया जाता है, वे रौशनी से
ज़ाहिर की जाती हैं, क्योंकि हर वह बात
जो ज़ाहिर की जा रही है, वह रौशनी
है। **14** इसलिए वह कहता है: "अरे
सोनेवाले, जाग और मरे हुओं में से* जी
उठ, तब तू मसीह की तरफ से ज्ञान की
रौशनी पाएगा।"

15 इसलिए खुद पर कड़ी नज़र
रखो कि तुम्हारा चालचलन कैसा है,
मूर्खों की तरह नहीं बल्कि बुद्धिमानों
की तरह चलो। **16** तय वक्त का
पूरा-पूरा इस्तेमाल करो* जिससे तुम्हें
फायदा हो, क्योंकि दिन बुरे हैं।
17 इस वजह से अड़ियल मत बनो,
बल्कि यह समझो और मालूम करते
रहो कि यहोवा की मरज़ी क्या है।
18 साथ ही, दाख-मदिरा पीकर धुत्त न
हो, जो बदचलनी की तरफ ले जाता है,
मगर पवित्र शक्ति से भरपूर होते जाओ।
19 आपस में भजन गाते और परमेश्वर
का गुणगान करते और उसकी उपासना
के गीत गाते रहो, और अपने दिलों में
संगीत के साथ यहोवा के लिए गीत गाते
रहो, **20** और हमारे प्रभु यीशु मसीह
के नाम से हमेशा सब बातों के लिए
हमारे परमेश्वर और पिता का धन्यवाद
करते रहो।

21 मसीह का भय मानते हुए एक-
दूसरे के अधीन रहो। **22** पत्नियाँ
अपने-अपने पति के ऐसे अधीन रहें जैसे
प्रभु के, **23** क्योंकि पति अपनी पत्नी
का सिर है, ठीक जैसे मसीह भी अपने
शरीर यानी मंडली का सिर है और उसका
उद्धारकर्त्ता है। **24** ठीक जैसे मंडली
मसीह के अधीन है, वैसे ही पत्नियाँ
भी हर बात में अपने-अपने पति के
अधीन रहें। **25** हे पतियो, अपनी-
अपनी पत्नी से प्यार करते रहो, ठीक
जैसे मसीह ने भी मंडली से प्यार किया
और अपने आपको उसकी खातिर दे
दिया, **26** ताकि वह पानी-रूपी वचन
के स्नान से स्वच्छ कर उसे पवित्र बनाए।
27 और मंडली को इसके पूरे वैभव के
साथ अपने सामने पेश करे जिसमें न कोई
दाग हो, न झुर्री हो, न ही ऐसी कोई
और खामी हो, बल्कि यह पवित्र और
बेदाग हो।

28 इसी तरह पतियों को चाहिए कि
वे अपनी-अपनी पत्नी से ऐसे प्यार करते
रहें जैसे अपने शरीर से। जो अपनी पत्नी

इफि 5:14* यानी, मुरदा हालत में से।
16* शाब्दिक, "वक्त को खरीद लो।"

से प्यार करता है, वह खुद से प्यार
करता है। 29 इसलिए कि कोई भी
इंसान अपने शरीर से कभी नफरत नहीं
करता, बल्कि वह उसे खिलाता-पिलाता
है और उसे अनमोल समझकर बड़े प्यार
से उसकी देखभाल करता है, ठीक जैसे
मसीह भी मंडली के साथ करता है,
30 क्योंकि हम उसके शरीर के अंग हैं।
31 "इस वजह से पुरुष अपने पिता
और अपनी माँ को छोड़ देगा और
अपनी पत्नी से जुड़ा रहेगा, और वे दोनों
एक तन होंगे।" 32 यह पवित्र रहस्य
महान है। मैं मसीह और मंडली के बारे
में बात कर रहा हूँ। 33 साथ ही, तुम
में से हरेक अपनी पत्नी से वैसा ही प्यार
करे जैसा वह अपने आप से करता है।
और पत्नी भी अपने पति का गहरा
आदर करे।

6 बच्चो, प्रभु में अपने माता-पिता
का कहना माननेवाले बनो, क्योंकि
यह परमेश्वर की नज़र में सही है:
2 "अपने पिता और अपनी माँ का
आदर कर।" यह पहली आज्ञा है
जिसके साथ यह वादा भी किया गया है:
3 "कि तेरे साथ भला हो और तू
धरती पर बहुत दिनों तक ज़िंदा रहे।"
4 और हे पिताओ, अपने बच्चों को चिढ़
मत दिलाओ, बल्कि उन्हें यहोवा की तरफ
से आनेवाला अनुशासन देते हुए और
उसी की सोच के मुताबिक उनके मन को
ढालते हुए उनकी परवरिश करो।

5 हे दासो, जो दुनिया में तुम्हारे
मालिक हैं, उनसे डरते और थरथराते हुए
दिल की सीधाई के साथ उनकी आज्ञा
मानो, जैसे तुम मसीह की मानते हो।
6 इंसानों को खुश करनेवालों की तरह
दिखावे के लिए नहीं, बल्कि मसीह के
दासों की तरह तन-मन से परमेश्वर की
मरज़ी पूरी करो। 7 अच्छी भावना के
साथ काम करनेवाले दास बनो, मानो तुम
यह सेवा यहोवा के लिए करते हो, न कि
इंसानों के लिए, 8 क्योंकि तुम जानते
हो कि हर कोई, चाहे दास हो या आज़ाद,
जो अच्छा काम करेगा, वह यहोवा से
इसका इनाम पाएगा। 9 साथ ही तुम
जो मालिक हो, तुम भी उनके साथ ऐसा
ही बर्ताव करो और उन्हें धमकाना छोड़ो,
क्योंकि तुम जानते हो कि तुम दोनों का
मालिक स्वर्ग में है और वह पक्षपात नहीं
करता।

10 आखिर में, मैं तुम्हें उकसाता हूँ
कि प्रभु में और उसकी महा-शक्ति में
ताकत हासिल करते जाओ। 11 पर-
मेश्वर के दिए सारे हथियार बाँध
लो ताकि तुम शैतान के दाँव-पेंचों* के
खिलाफ डटे रह सको। 12 इसलिए
कि हमारी कुश्ती हाड़-माँस* के इंसानों
से नहीं, बल्कि सरकारों, अधिकारियों,
दुनिया के अंधकार के शासकों और उन
शक्तिशाली दुष्ट दूतों से है जो स्वर्गीय
स्थानों में हैं। 13 इसलिए परमेश्वर
के दिए सारे हथियार बाँध लो, ताकि जब
बुरा दिन आए, तो तुम सामना कर सको

इफि 6:11* या, "धूर्त चालों।" **12*** शाब्दिक, "लहू और माँस।"

और जो करना चाहिए वह सब अच्छी
तरह करने के बाद, डटे रह सको।

14 इसलिए, सच्चाई से अपनी कमर
कसकर और नेकी का कवच पहनकर
डटे रहो। **15** साथ ही, पैरों में शांति
की खुशखबरी सुनाने की तैयारी के जूते
पहनकर डटे रहो। **16** सबसे बढ़कर,
विश्वास की बड़ी ढाल उठा लो, जिससे
तुम उस दुष्ट के सभी जलते हुए तीरों
को बुझा सकोगे। **17** और उद्धार का
टोप और पवित्र शक्ति की तलवार, यानी
परमेश्वर का वचन ले लो। **18** साथ
ही, हर मौके पर पवित्र शक्ति के ज़रिए
हर तरह की प्रार्थना और मिन्नतें करते
रहो। और यह करने के लिए पूरी लगन
के साथ जागते रहो और सभी पवित्र
जनों की खातिर मिन्नतें करते रहो।
19 मेरे लिए भी करो ताकि मुझे बोलने
की ऐसी काबिलीयत दी जाए कि मैं
हिम्मत के साथ बेझिझक होकर बोल सकूँ
और खुशखबरी का पवित्र रहस्य सुना
सकूँ **20** जिसके लिए मैं ज़ंजीरों में
जकड़ा हुआ राजदूत हूँ। मेरे लिए प्रार्थना
करो ताकि जैसा मुझे बोलना चाहिए
वैसा ही बोल सकूँ।

21 हमारा प्यारा भाई और प्रभु में
विश्वासयोग्य सेवक तुखिकुस तुम्हें मेरे
बारे में सारी बात बता देगा ताकि तुम
मेरा हाल-चाल जान सको और यह भी
कि मैं क्या कर रहा हूँ। **22** मैं इसी
मकसद से उसे तुम्हारे पास भेज रहा हूँ
कि तुम हमारे बारे में जान सको और
वह तुम्हारे दिलों को दिलासा दे सके।

23 हमारे परमेश्वर और पिता और
प्रभु यीशु मसीह की तरफ से भाइयों को
विश्वास के साथ शांति और प्यार मिले।
24 उन सभी पर महा-कृपा होती रहे,
जो हमारे प्रभु यीशु मसीह से ऐसा प्यार
रखते हैं जो कभी मिटता नहीं।

फिलिप्पियों
के नाम

1 मैं पौलुस और तीमुथियुस, जो
मसीह यीशु के दास हैं, फिलिप्पी में
रहनेवाले सभी पवित्र जनों को जो मसीह
यीशु में हैं, साथ ही निगरानी करनेवालों
और सहायक सेवकों को लिख रहे हैं:

2 तुम्हें परमेश्वर हमारे पिता की
तरफ से और प्रभु यीशु मसीह की तरफ
से महा-कृपा और शांति मिले।

3 मैं जब-जब तुम्हें याद करता हूँ,
तब-तब अपने परमेश्वर का धन्यवाद
करता हूँ। **4** तुम सबके लिए अपनी
हरेक मिन्नत में मैं हमेशा उसे धन्य-
वाद देता हूँ। मैं खुशी-खुशी तुम्हारे लिए
मिन्नतें करता हूँ, **5** क्योंकि जिस दिन
से तुमने खुशखबरी सुनी, उस दिन से
लेकर आज के दिन तक तुमने खुशखबरी

फैलाने में योगदान दिया है। 6 मुझे
इस बात का यकीन है कि परमेश्वर
जिसने तुम्हारे बीच एक भले काम की
शुरूआत की है, वह यीशु मसीह के
दिन तक उसे पूरा भी करेगा। 7 तुम
सबके बारे में ऐसा सोचना मेरे लिए बिल-
कुल सही है। तुम सब मेरे दिल में बसे
हो, क्योंकि चाहे मेरी ज़ंजीरों में कैद
होने की बात हो या खुशखबरी की पैरवी
करने और उसे कानूनी तौर पर मान्यता
दिलाने की, तुम सब मेरे साथ परमेश्वर
की महा-कृपा में साझेदार रहे हो।

8 परमेश्वर मेरा गवाह है कि मैं तुम
सबसे मिलने के लिए कितना तरस रहा
हूँ, क्योंकि मैं तुमसे वैसा ही गहरा लगाव
रखता हूँ जैसा मसीह यीशु रखता है।
9 और मैं यही प्रार्थना करता रहता हूँ
कि सही ज्ञान और पूरी परख-शक्ति के
साथ तुम्हारा प्यार और भी बढ़ता जाए,
10 ताकि तुम पहचान सको कि ज़्यादा
अहमियत रखनेवाली बातें क्या हैं, जिससे
कि मसीह के दिन तक तुम्हारे अंदर कोई
खामी न हो और तुम दूसरों के विश्वास में
बाधा न बनो, 11 और नेकी के फलों
से लद जाओ जो तुम यीशु मसीह की
बदौलत पैदा कर पाओगे और जिनसे पर-
मेश्वर की महिमा और तारीफ होती है।

12 भाइयो, मैं चाहता हूँ कि तुम यह
जान लो कि मेरे साथ जो कुछ हुआ है,
उससे खुशखबरी के फैलने में रुकावट
नहीं आयी बल्कि तरक्की ही हुई है।
13 सम्राट के अंगरक्षक-दल में से हर
कोई और बाकी सभी लोग यह जान गए
हैं कि मैं मसीह की वजह से ज़ंजीरों में हूँ।
14 और ज़्यादातर भाई मेरी ज़ंजीरों की
वजह से प्रभु में पूरा भरोसा रखते हुए
निडर होकर और भी हिम्मत के साथ पर-
मेश्वर का वचन सुना रहे हैं।

15 यह सच है कि कुछ लोग ईर्ष्या
और होड़ लगाने की भावना से मसीह का
प्रचार कर रहे हैं, मगर दूसरे अच्छी
भावना से प्रचार कर रहे हैं। 16 जो
अच्छी भावना रखते हैं वे प्यार की वजह
से मसीह का प्रचार करते हैं, क्योंकि वे
जानते हैं कि मैं खुशखबरी की पैरवी
करने के लिए ही यहाँ ठहराया गया हूँ।
17 मगर जो ईर्ष्या करते हैं, वे नेक
इरादे से नहीं बल्कि झगड़े और विरोध
की भावना से प्रचार करते हैं, क्योंकि
उन्हें लगता है कि इस तरह वे कैद में मेरे
दुःख को और बढ़ा सकेंगे। 18 तो
क्या हुआ? कुछ नहीं! बस इतना कि चाहे
बुरी भावना से हो या सच्ची भावना
से, मसीह का प्रचार हर तरह से हो
रहा है और यह बात मुझे खुशी देती
है। दरअसल, मैं खुशी मनाता रहूँगा,
19 क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम्हारी
मिन्नतों की वजह से और यीशु मसीह
से ज़रूरी पवित्र शक्ति मिलने से मेरा
उद्धार होगा। 20 और मैं दिल से यही
उम्मीद और आशा करता हूँ कि मुझे
किसी भी तरह से शर्मिंदा न होना पड़ेगा।
इसके बजाय जैसे हमेशा होता आया है,
वैसे ही अब भी मेरे बेझिझक होकर
बोलने की वजह से मेरे शरीर के ज़रिए
मसीह की बड़ाई होगी, फिर चाहे मैं जीऊँ
या मर जाऊँ।

21 मेरे मामले में ज़िंदगी का मतलब
है मसीह की सेवा में लगे रहना, और
मौत का मतलब है फायदा। **22** जब
तक मैं दुनिया में* ज़िंदा हूँ, मैं अपने काम
से और ज़्यादा फल पैदा कर सकूँगा।
मैं नहीं बताता कि मैं क्या चुनूँगा।
23 मैं इन दोनों चुनावों के दबाव में
हूँ। मगर मैं तो यही चाहता हूँ कि
छुड़ाए जाकर मसीह के साथ रहूँ, क्योंकि
वाकई यह बाकी सबसे कहीं बढ़कर है।
24 लेकिन, तुम्हारी खातिर मेरे लिए इस
दुनिया में जीते रहना ज़्यादा ज़रूरी है।
25 मुझे इस बात का भरोसा है और मैं
जानता हूँ कि मैं यहीं तुम सबके साथ
रहूँगा ताकि तुम तरक्की करो और वह
खुशी पाओ जो तुम्हारे विश्वास से है,
26 ताकि जब मैं तुम्हारे बीच फिर से
मौजूद रहूँ, तो मसीह यीशु में तुम्हारी
खुशी उमड़ती रहे।

27 सिर्फ इसका ध्यान रखो कि तुम
ऐसे पेश आओ* जैसे मसीह की खुश-
खबरी के योग्य है, ताकि चाहे मैं आकर
तुमसे मिलूँ या चाहे दूर रहूँ, मैं तुम्हारे
बारे में यही सुनूँ कि तुम सब एक ही
सोच रखते हुए, मज़बूती से एक-साथ
खड़े हो और खुशखबरी पर विश्वास के
लिए कंधे-से-कंधा मिलाकर कड़ा संघर्ष
कर रहे हो **28** और किसी भी तरह
विरोधियों से नहीं डरते। यही उनके लिए
इस बात का सबूत है कि वे नाश किए
जाएँगे, और तुम्हारे लिए यह सबूत है कि
तुम्हारा उद्धार होगा। और यह निशानी
परमेश्वर की तरफ से है। **29** क्योंकि
मसीह की खातिर तुम्हें यह सम्मान दिया
गया कि तुम न सिर्फ उस पर विश्वास
करो बल्कि उसकी खातिर दुःख भी सहो।
30 इसी वजह से तुम्हारा भी वैसा ही
संघर्ष है जैसा तुमने मेरे मामले में देखा
था और जैसा तुम मेरे मामले में सुनते हो
कि मैं अब भी संघर्ष कर रहा हूँ।

2 तो फिर, जब कभी तुम मसीह में
एक-दूसरे की हिम्मत बँधा सको,
जब कभी प्यार से दिलासा दे सको, जब
कभी हमदर्दी दिखा सको, जब कभी
तुम्हारे बीच गहरा लगाव और करुणा की
भावना हो, **2** तो मेरी खुशी इस बात
से पूरी करो कि तुम एक ही मन रखो
और तुममें एक-सा प्यार हो। तुम एक
जान बनकर एक-दूसरे से जुड़े रहो और
एक ही सोच रखो। **3** झगड़ालूपन या
अहंकार की वजह से कुछ न करो, मगर
मन की दीनता के साथ दूसरों को खुद
से बेहतर समझो **4** और हर एक
सिर्फ अपने भले की फिक्र में न रहे,
बल्कि दूसरे के भले की भी फिक्र करे।

5 तुम मन का वैसा स्वभाव पैदा करो
जैसा मसीह यीशु का था। **6** उसने
परमेश्वर के स्वरूप में होते हुए भी, उस
पद को हथियाने की बात कभी न सोची,
यानी यह कि वह परमेश्वर की बराबरी
करे। **7** इसके बजाय, उसने अपना
सबकुछ त्याग दिया* और एक दास का

फिलि 1:22* शाब्दिक, "शरीर में।" **27*** शाब्दिक, "नागरिकों जैसा बर्ताव करो।"

फिलि 2:7* शाब्दिक, "खुद को पूरी तरह खाली कर दिया।"

स्वरूप ले लिया और इंसान बन गया।
8 इतना ही नहीं, जब उसने खुद को
इंसान की शक्ल-सूरत में पाया, तो उसने
खुद को नम्र किया और इस हद तक
आज्ञा माननेवाला बना कि उसने मौत भी,
हाँ, यातना की सूली* पर मौत भी सह
ली। **9** इसी वजह से परमेश्‍वर ने
उसे पहले से भी ऊँचा पद देकर महान
किया और मेहरबान होकर उसे वह नाम
दिया जो दूसरे हर नाम से महान है
10 ताकि जो स्वर्ग में हैं और जो धरती
पर हैं और जो ज़मीन के नीचे हैं, हर कोई
यीशु के नाम से घुटना टेके, **11** और
हर जीभ खुलकर यह स्वीकार करे कि
यीशु मसीह ही प्रभु है, जिससे परमेश्‍वर
हमारे पिता की महिमा हो।

12 इसलिए मेरे प्यारो, जिस तरह
तुम हमेशा आज्ञा मानते आए हो, न सिर्फ
मेरी मौजूदगी में बल्कि अब उससे भी
ज़्यादा मेरी गैर-मौजूदगी में, डरते और
काँपते हुए अपने उद्धार के लिए काम
करते जाओ। **13** क्योंकि परमेश्‍वर है
जो अपनी मरज़ी के मुताबिक तुम्हारे
अंदर काम कर रहा है ताकि तुम्हारे अंदर
इच्छा पैदा हो और तुम उस पर अमल
भी करो। **14** सब काम बिना कुड़-
कुड़ाए और बिना झगड़ा किए करते रहो,
15 ताकि तुम निर्दोष और मासूम और
परमेश्‍वर के बच्चे ठहरो और एक टेढ़ी
और भ्रष्ट पीढ़ी के बीच बेदाग बने रहो,
जिसके बीच तुम इस दुनिया में रौशनी की
तरह चमक रहे हो **16** और जीवन के
वचन पर मज़बूत पकड़ बनाए रखो,
ताकि मसीह के दिन मुझे खुशी मनाने की
वजह मिले कि मैं बेकार ही नहीं दौड़ा
या मैंने बेकार ही कड़ी मेहनत नहीं
की। **17** फिर चाहे तुम्हारे उस बलि-
दान पर और तुम्हारी जन-सेवा पर जो
तुम विश्‍वास की वजह से कर रहे हो,
मुझे अर्घ की तरह उंडेला जा रहा है, तो
भी मैं खुश होता हूँ और तुम सबके साथ
खुशी मनाता हूँ। **18** इसी तरह तुम
भी मेरे साथ खुश रहो और आनंद
मनाओ।

19 जहाँ तक मेरी बात है, अगर प्रभु
यीशु की मरज़ी हो, तो मैं आशा करता हूँ
कि बहुत जल्द तीमुथियुस को तुम्हारे पास
भेजूँगा, ताकि मैं जब तुम्हारे बारे में सुनूँ
तो मेरा जी खुश हो। **20** इसलिए कि
मेरे पास उसके जैसा स्वभाव रखनेवाला
दूसरा और कोई भी नहीं जो सच्चे दिल
से तुम्हारी परवाह करेगा। **21** क्योंकि
बाकी सभी अपने ही भले की फिक्र में
रहते हैं, कोई मसीह यीशु के काम की
फिक्र नहीं करता। **22** लेकिन तुम
जानते हो कि तीमुथियुस ने तुम्हारे सामने
अपने बारे में कैसा सबूत दिया है, जैसे
एक बेटा अपने पिता का हाथ बँटाता है
वैसे ही उसने खुशखबरी फैलाने में मेरे
साथ कड़ी मेहनत की है। **23** मैं इसी
आदमी को तुम्हारे पास जल्द-से-जल्द
भेजने की आशा करता हूँ। जैसे ही
मुझे मालूम पड़ जाएगा कि मेरे मामले
का क्या होनेवाला है, मैं उसे भेज दूँगा
24 और प्रभु में मुझे यह भरोसा है कि

फिलि 2:8* अतिरिक्त लेख 6 देखें।

मैं खुद भी जल्द तुम्हारे पास आऊँगा।
25 फिर भी, मुझे यह ज़रूरी जान
पड़ता है कि मैं तुम्हारे पास इपफ्रुदीतुस
को भेजूँ। वह मेरा भाई और सहकर्मी
और संगी सैनिक है, मगर तुम्हारा भेजा
हुआ दूत और मेरी ज़रूरत के वक्त मेरा
सेवक रहा है। **26** वह तुम सबको
देखने के लिए तरस रहा है और इसलिए
बहुत हताश हो गया है, क्योंकि तुमने
सुना था कि वह बीमार पड़ गया है।
27 हाँ, वह वाकई बहुत बीमार हो गया
था, यहाँ तक कि मरने पर था। मगर
परमेश्वर ने उस पर दया की और सिर्फ
उस पर ही नहीं बल्कि मुझ पर भी की,
ताकि मुझे दुःख पर दुःख न मिले।
28 इसलिए मैं और भी ज़्यादा जल्दी
करते हुए उसे भेज रहा हूँ, ताकि उसे
देखकर तुम फिर खुश हो जाओ और मेरा
दुःख भी कुछ हल्का हो। **29** इस-
लिए, जैसा दस्तूर है प्रभु में बड़ी गर्मजोशी
और पूरी खुशी के साथ उसका स्वागत
करना; और ऐसे भाइयों की कदर किया
करना। **30** क्योंकि प्रभु के काम की
खातिर उसने अपनी जान की बाज़ी लगा
दी यहाँ तक कि वह मरने पर था, ताकि
तुम लोगों के यहाँ न होने की कमी पूरी
करने के लिए तुम्हारे बदले वह मेरी सेवा
कर सके।

3 आखिर में, मेरे भाइयो, तुम प्रभु में
खुशी मनाते रहो। तुम्हें वही बातें
फिर से लिखना मेरे लिए परेशानी की
बात नहीं है, मगर इनसे तुम्हारी ही हिफा-
ज़त होगी।
2 अशुद्ध लोगों* से खबरदार रहो,
नुकसान पहुँचानेवालों से खबरदार रहो
और जो परंपरा की वजह से शरीर के
अंगों की काट-कूट करते हैं, उनसे खबर-
दार रहो। **3** इसलिए कि हम वे हैं
जिनका सच्चा खतना हुआ है, जो पर-
मेश्वर की पवित्र शक्ति से पवित्र सेवा
करते हैं और मसीह यीशु में गर्व करते
हैं और शरीर पर भरोसा नहीं करते।
4 लेकिन अगर किसी के पास शरीर पर
भरोसा करने की वजह है, तो सबसे बढ़-
कर मेरे पास है।

अगर कोई और आदमी सोचता है कि
उसे शरीर पर भरोसा करने की वजह है
तो सबसे ज़्यादा मेरे पास ये वजह हैं:
5 आठवें दिन मेरा खतना हुआ, मैं इस-
राएल की जाति से बिन्यामीन के गोत्र
का हूँ, मैं पैदाइशी इब्रानी हूँ और मेरे
माता-पिता भी इब्रानी थे। मूसा के कानून
को मानने के हिसाब से देखा जाए, तो मैं
एक फरीसी हूँ। **6** जहाँ तक जोशीला
होने की बात है, तो मैं मंडली* पर
ज़ुल्म किया करता था, जहाँ तक मूसा
का कानून मानकर नेक ठहराए जाने की
बात है, मैंने खुद को निर्दोष साबित किया
है। **7** फिर भी जो बातें मेरे फायदे
की थीं, उन्हीं को मैंने मसीह की खातिर
नुकसान समझा है। **8** दरअसल मैं
अपने प्रभु मसीह यीशु के बारे में उस
ज्ञान की खातिर जिसका कोई मोल नहीं
लगाया जा सकता, सब बातों को वाकई

फिलि 3:2* शाब्दिक, "कुत्तों।" **6*** मत्ती 16:18 दूसरा फुटनोट देखें।

नुकसान समझता हूँ। उसी की खातिर
मैंने सब बातों का नुकसान उठाया है
और मैं इन्हें ढेर सारा कूड़ा समझता
हूँ ताकि मसीह को पा सकूँ **9** और
उसके साथ एकता में पाया जाऊँ, जिसका
मतलब मूसा का कानून मानकर नेकी
हासिल करना नहीं, बल्कि वह नेकी
हासिल करना है जो मसीह पर विश्वास
करने से मिलती है, यानी वह नेकी जिसे
परमेश्वर विश्वास के आधार पर देता है,
10 ताकि मसीह को और उसके जी
उठने की ताकत को जानूँ और उसके
जैसी दुःख-तकलीफें सहने में हिस्सेदार
बनूँ और उसके जैसी मौत मरने के लिए
खुद को सौंप दूँ, **11** ताकि मैं किसी
तरह उन लोगों में शामिल हो जाऊँ जो
पहले जी उठाए जाएँगे।

12 यह नहीं कि मैं यह इनाम पा
चुका हूँ या मैं सिद्ध हो चुका हूँ, बल्कि
मैं उसका पीछा कर रहा हूँ ताकि उसे
हर हाल में पकड़ सकूँ जिसके लिए
मसीह यीशु ने वाकई मुझे चुना था।
13 भाइयो, मैं अपने बारे में यह नहीं
मानता कि मैं उसे पकड़ चुका हूँ, मगर
इसके बारे में एक बात यह है: जो बातें
पीछे रह गयी हैं, उन्हें भूलकर मैं खुद
को खींचता हुआ आगे की बातों की तरफ
बढ़ता जा रहा हूँ। **14** और मसीह
यीशु के ज़रिए परमेश्वर ने ऊपर का जो
बुलावा रखा है, उस इनाम के लक्ष्य तक
पहुँचने के लिए उसका पीछा कर रहा हूँ।
15 तो आओ, हम सभी जो सयाने और
समझदार हैं, हमारे मन का स्वभाव ऐसा
ही हो। और अगर तुम्हारे मन का झुकाव
किसी और तरफ होगा तो परमेश्वर तुम
पर ज़ाहिर कर देगा कि मन का सही
स्वभाव क्या है। **16** और हमने जिस
हद तक तरक्की की है, आओ हम इसी
नियम पर कायदे से चलते रहें।

17 भाइयो, तुम सब मिलकर मेरी
मिसाल पर चलो और उन पर गौर करते
रहो जो उस मिसाल के मुताबिक चलते
हैं जो हमने तुम्हारे सामने कायम की है।
18 इसलिए कि ऐसे कई हैं जिनका मैं
पहले अकसर ज़िक्र किया करता था
लेकिन अब आँसुओं के साथ ज़िक्र करता
हूँ, क्योंकि वे मसीह की यातना की सूली*
के दुश्मन बन गए हैं। **19** उनका
अंजाम विनाश है, और उनका पेट ही
उनका ईश्वर है, और जिन बातों पर उन्हें
शर्मिंदा होना चाहिए, उन पर वे घमंड
करते हैं और अपना मन धरती की बातों
पर लगाते हैं। **20** जहाँ तक हमारी
बात है, हमारी नागरिकता स्वर्ग की है,
और उसी जगह से हम एक उद्धारकर्ता
यानी प्रभु यीशु मसीह का बेसब्री से इंत-
ज़ार कर रहे हैं, **21** उसके पास सब-
कुछ अपने वश में कर लेने की ताकत है।
वह इसी ताकत का इस्तेमाल कर हमारे
तुच्छ शरीरों को बदल देगा और इन्हें
अपने जैसा महिमा से भरपूर बना देगा।

4 इसलिए, मेरे प्यारे भाइयो, तुम जो
मेरी खुशी और मेरे ताज हो और
जिनसे मिलने के लिए मेरा मन तरस रहा

फिलि 3:18* अतिरिक्त लेख 6 देखें।

है, तुम प्रभु में इसी तरह मज़बूती से खड़े रहो।

2 यूओदिया को मैं उकसाता हूँ और सुन्तुखे को भी कि वे प्रभु में एक ही मन रखें। **3** हाँ, मेरे सच्चे सह-कर्मी, मैं तुझसे भी गुज़ारिश करता हूँ कि इन स्त्रियों की मदद करता रह, जिन्होंने खुशखबरी सुनाने में मेरे साथ और क्लेमेंस और मेरे बाकी सहकर्मियों के साथ जिनके नाम जीवन की किताब में हैं, कंधे-से-कंधा मिलाकर कड़ी मेहनत की है।

4 प्रभु में हमेशा खुश रहो। मैं एक बार फिर कहता हूँ, खुश रहो! **5** सब लोग यह जान जाएँ कि तुम लिहाज़ करनेवाले इंसान हो। प्रभु पास है। **6** किसी भी बात को लेकर चिंता मत करो, मगर हर बात में प्रार्थना और मिन्नतों और धन्यवाद के साथ अपनी बिनतियाँ परमेश्वर को बताते रहो। **7** और परमेश्वर की वह शांति जो हमारी समझने की शक्ति से कहीं ऊपर है, मसीह यीशु के ज़रिए तुम्हारे दिल के साथ-साथ तुम्हारे दिमाग की सोचने-समझने की ताकत की हिफाज़त करेगी।

8 आखिर में भाइयो, जो बातें सच्ची हैं, जो बातें गंभीर सोच-विचार के लायक हैं, जो बातें नेकी की हैं, जो बातें पवित्र और साफ-सुथरी हैं, जो बातें चाहने लायक हैं, जो बातें अच्छी मानी जाती हैं, जो सद्‌गुण हैं और जो बातें तारीफ के लायक हैं, लगातार उन्हीं पर ध्यान देते रहो। **9** जो बातें तुमने मुझसे सीखीं और स्वीकार कीं, साथ ही मुझसे सुनीं और मुझ में देखीं, उनका पालन करते रहो; और शांति का परमेश्वर तुम्हारे साथ रहेगा।

10 मैं प्रभु में बहुत खुश हूँ कि अब फिर से तुम मेरे भले के बारे में सोचने लगे हो। तुम पहले भी मेरे भले की चिंता करते थे, मगर तुम्हें यह दिखाने का मौका नहीं मिला था। **11** मैं यह इसलिए नहीं कह रहा क्योंकि मैं तंगी में हूँ, इसलिए कि मैं चाहे जैसे भी हाल में रहूँ उसी में संतोष करना मैंने सीख लिया है। **12** मैं जानता हूँ कि कम चीज़ों में गुज़ारा करना कैसा होता है, और यह भी जानता हूँ कि भरपूरी में जीना कैसा होता है। मैंने हर बात में और हर तरह के हालात में यह राज़ सीख लिया है कि भरपेट होना कैसा होता है और भूखे पेट होना कैसा होता है, भरा-पूरा होना कैसा होता है और तंगी झेलना कैसा होता है। **13** इसलिए कि जो मुझे ताकत देता है, उसी से मुझे सब बातों के लिए शक्ति मिलती है।

14 फिर भी, तुमने यह अच्छा काम किया कि मेरे दुःखों में मेरे साथ हिस्सेदार हुए। **15** फिलिप्पी के भाइयो, तुम असल में यह भी जानते हो कि जब मैंने खुशखबरी सुनानी शुरू की और मकिदुनिया से रवाना हुआ, तो सिर्फ तुम्हें छोड़ किसी भी मंडली ने न तो मेरी मदद की, और न मुझसे मदद ली,

16 क्योंकि थिस्सलुनीके में भी तुमने मेरी
ज़रूरत को पूरा करने के लिए मुझे एक
बार नहीं बल्कि दो बार कुछ भेजा था।
17 ऐसा नहीं है कि मैं तुमसे तोहफा
पाने की कोशिश में लगा हूँ, बल्कि मैं
वह फल पाने की कोशिश में जी-जान
से लगा हूँ, जो तुम्हारे खाते में और
अच्छाई जोड़ देगा। **18** मगर, मेरे
पास सबकुछ है और भरपूर है। इप-
फ्रुदीतुस के हाथों तुम्हारी भेजी हुई चीज़ें
पाकर मैं तृप्त हो गया हूँ। यह तोहफा
परमेश्वर को भानेवाला ऐसा खुशबूदार
बलिदान है जिससे वह बेहद खुश होता
है। **19** इसके बदले में, मेरा परमेश्वर
अपनी आशीषों की बेशुमार दौलत से
तुम्हारी हर ज़रूरत को मसीह यीशु के
ज़रिए पूरा करेगा। **20** हमारे पर-
मेश्वर और पिता की महिमा हमेशा-हमेशा
होती रहे। आमीन।

21 हर एक पवित्र जन को
जो मसीह यीशु के साथ एकता में
है, मेरा नमस्कार कहना। जो भाई
मेरे साथ हैं वे तुम्हें नमस्कार कहते
हैं। **22** सभी पवित्र जन, खासकर जो
सम्राट* के घराने के हैं, तुम्हें नमस्कार
कहते हैं।

23 हमारे प्रभु यीशु मसीह की महा-
कृपा तुम्हारी उस भावना के साथ हो जो
तुम दिखाते हो।

फिलि 4:22* यूनानी में, *“कैसर।”*

कुलुस्सियों

के नाम

1 मैं पौलुस, जो परमेश्वर की मरज़ी
से मसीह यीशु का प्रेषित* हूँ और
हमारा भाई तीमुथियुस, **2** कुलुस्से के
पवित्र जनों को और विश्वासयोग्य भाइयों
को जो मसीह के साथ एकता में हैं,
लिख रहे हैं।

तुम्हें परमेश्वर हमारे पिता की तरफ
से महा-कृपा और शांति मिले।

3 हम जब-जब तुम्हारे लिए प्रार्थना
करते हैं, तो हमारे प्रभु यीशु मसीह के
परमेश्वर और पिता का हमेशा धन्यवाद
करते हैं, **4** क्योंकि हमने मसीह यीशु
में तुम्हारे विश्वास के बारे में और उस
प्यार के बारे में सुना है जो सभी पवित्र
जनों के लिए तुम रखते हो **5** यह
उस आशा की वजह से है जो स्वर्ग में
तुम्हारे लिए पूरी होनेवाली है। इस आशा
के बारे में तुमने पहले तब सुना, जब
तुम्हें सच्चाई यानी यह खुशखबरी दी
गयी **6** जो तुम तक आ पहुँची है।
यह खुशखबरी सारी दुनिया में फल ला
रही है और बढ़ती जा रही है, और

कुलु 1:1* या, “भेजा गया।” यूनानी में *“अपोस्टो-लोस।”*

तुम्हारे बीच भी यह ऐसा ही उस दिन से कर रही है जब से तुमने परमेश्वर की महा-कृपा के बारे में सुना और सचमुच उसे सही-सही जाना।
7 इसी के बारे में तुमने हमारे प्यारे संगी दास, इप-फ्रास से सीखा है, जो हमारी तरफ से मसीह का एक विश्वासयोग्य सेवक है।
8 उसने हमारे सामने तुम्हारे उस प्यार का खुलासा भी किया जो पवित्र शक्ति ने तुममें पैदा किया है।

9 इसी वजह से हमने भी जिस दिन से तुम्हारे इस प्यार और विश्वास के बारे में सुना है, हमने तुम्हारे लिए प्रार्थना करना और यह माँगना नहीं छोड़ा कि तुम सारी बुद्धि और परमेश्वर की पवित्र शक्ति से मिलनेवाली समझ के साथ उसकी मरज़ी के बारे में सही-सही ज्ञान से भरपूर हो जाओ।
10 ताकि तुम्हारा चालचलन ऐसा हो जैसा यहोवा* के सेवक का होना चाहिए जिससे कि तुम उसे पूरी तरह खुश कर सको। साथ ही, तुम हर भले काम के फल पैदा करते जाओ और परमेश्वर के बारे में सही ज्ञान में बढ़ते जाओ,
11 और परमेश्वर के उस बल से जो महिमा से भरपूर है, तुम्हें वह सारी शक्ति मिले जिसकी तुम्हें ज़रूरत है ताकि तुम पूरी तरह धीरज धर सको और खुशी के साथ सहनशीलता दिखाओ
12 और पिता का धन्यवाद करते रहो जिसने तुम्हें उन पवित्र जनों के साथ विरासत में हिस्सा पाने के योग्य किया है जिन्हें ज्ञान की रौशनी मिली है।

13 उसने हमें अंधकार के अधिकार से छुड़ाया और अपने प्यारे बेटे के राज में ले आया,
14 जिसके ज़रिए उसने फिरौती देकर हमें छुटकारा दिलाया है, यानी हमारे पापों की माफी दी है।
15 वह उस अदृश्य परमेश्वर की छवि है और सारी सृष्टि में पहलौठा है,
16 क्योंकि उसी के ज़रिए स्वर्ग में और धरती पर बाकी सब चीज़ें सिरजी गयीं, देखी हों या अनदेखी, चाहे राजगद्दियाँ हों या साम्राज्य, सरकारें हों या अधिकार। बाकी सब चीज़ें उसके ज़रिए और उसी के लिए सिरजी गयी हैं।
17 साथ ही, वह बाकी सब चीज़ों से पहले था और उसी के ज़रिए बाकी सब चीज़ें वजूद में लायी गयीं,
18 और वही शरीर का यानी मंडली* का सिर है। वही सब चीज़ों की शुरूआत है, वही मरे हुओं में से जी उठनेवालों में पहलौठा है, ताकि वह सब बातों में पहला ठहरे।
19 क्योंकि परमेश्वर को यह अच्छा लगा कि हर तरह की पूर्णता उसी में निवास करे।
20 उसी के ज़रिए अपने साथ बाकी सब चीज़ों की सुलह करवाए, फिर चाहे वे धरती की चीज़ें हों या स्वर्ग की। यह शांति उस लहू के आधार पर कायम की जाती है जो मसीह ने यातना की सूली पर बहाया था।

21 वाकई, तुम जो एक वक्त परमेश्वर के दुश्मन थे और उससे दूर थे,

---

कुलु 1:10* यह उन 237 जगहों में से एक जगह है, जहाँ परमेश्वर का नाम, 'यहोवा' इस अनुवाद के मुख्य पाठ में पाया जाता है। अतिरिक्त लेख 2 देखें।

कुलु 1:18* मत्ती 16:18 दूसरा फुटनोट देखें।

क्योंकि तुम्हारे मन दुष्ट कामों में लगे हुए
थे, **22** परमेश्वर ने तुम्हारे साथ उस
जन के इंसानी शरीर की मौत के ज़रिए
सुलह की है, ताकि तुम्हें पवित्र, बेदाग
और निर्दोष ठहराकर खुद के सामने
पेश कर सके। **23** हाँ, बशर्ते तुम
विश्वास में बने रहो, इसकी नींव पर
कायम और मज़बूत रहो और उस खुश-
खबरी से मिलनेवाली आशा को न छोड़ो
जो तुमने सुनी है और जिसका प्रचार
दुनिया के कोने-कोने में किया जा चुका
है। मैं पौलुस, इस खुशखबरी का सेवक
बना हूँ।

24 मैं अब तुम्हारी खातिर दुःख
झेलने में खुशी मना रहा हूँ और मसीह
के शरीर, यानी उसकी मंडली की खातिर
दुःख-तकलीफें झेलने में जो कमी रह गयी
है उसे मैं अपने शरीर में झेलकर पूरा
कर रहा हूँ। **25** मैं परमेश्वर से मिली
प्रबंधक की अपनी ज़िम्मेदारी के मुताबिक
तुम्हारे भले के लिए इस मंडली का एक
सेवक बना हूँ कि मैं परमेश्वर के वचन
का पूरी तरह प्रचार करूँ, **26** उस
पवित्र रहस्य का, जिसे गुज़रे ज़मानों*
के दौरान और पिछली पीढ़ियों से छिपा-
कर रखा गया था। मगर अब इसे पर-
मेश्वर के पवित्र जनों पर ज़ाहिर किया
गया है, **27** जिन पर परमेश्वर को
यह ज़ाहिर करना अच्छा लगा कि दूसरी
जातियों के बीच इस पवित्र रहस्य की
दौलत और महिमा क्या है। यह पवित्र
रहस्य, मसीह का तुम्हारे साथ एकता में
होना है, जिसका मतलब यह है कि
तुम उसके साथ महिमा पाने की आशा
रखते हो। **28** वही है जिसके बारे में
हम प्रचार कर रहे हैं यानी हर आदमी
को सारी बुद्धि के साथ सिखाते और
समझाते हैं ताकि हम हर किसी को मसीह
के प्रौढ़ चेले के नाते परमेश्वर के सामने
पेश कर सकें। **29** इसी काम को पूरा
करने के लिए मैं कड़ी मेहनत करते हुए
संघर्ष कर रहा हूँ और यह मैं उस
शक्ति से कर रहा हूँ जो मेरे अंदर काम
कर रही है।

2 मैं चाहता हूँ कि तुम यह जान लो
कि मैं तुम्हारी खातिर और जो
लौदीकिया में हैं और उन सबकी खातिर
जिन्होंने मुझे कभी नहीं देखा, कितना
कड़ा संघर्ष कर रहा हूँ **2** ताकि उनके
दिलों को दिलासा मिले और वे सब पूरे
तालमेल के साथ प्यार में एक-दूसरे से
जुड़े रहें। जिससे कि वे उस अपार धन
को हासिल करें, यानी सच्चाई की उस
समझ को जिसके सच होने का उन्हें पूरा-
पूरा यकीन है और वे परमेश्वर के पवित्र
रहस्य का, यानी मसीह का सही ज्ञान
हासिल करें। **3** उसी में बुद्धि और
ज्ञान का सारा खज़ाना बड़ी सावधानी से
छिपाया गया है। **4** मैं यह इसलिए
कह रहा हूँ ताकि कोई भी इंसान कायल
करनेवाली दलीलें देकर तुम्हें न छले।
5 मैं भले ही शरीर से तुम्हारे यहाँ गैर-
हाज़िर हूँ, फिर भी मन से तुम्हारे साथ

कुलु 1:26* शाब्दिक, "दुनिया की व्यवस्थाओं।"

हूँ। यह देखकर मुझे खुशी होती है कि
तुम्हारे बीच अच्छी व्यवस्था है और मसीह
पर तुम्हारा विश्वास बहुत मज़बूत है।

6 इसलिए, जबकि तुमने प्रभु मसीह
यीशु को स्वीकार किया है, तो उसी के
साथ एकता में चलते रहो। **7** उसमें
जड़ पकड़कर मज़बूत बने रहो और उसमें
बढ़ते जाओ और विश्वास में मज़बूती पाते
रहो, ठीक जैसे तुम्हें सिखाया गया था।
और जब तुम परमेश्वर को धन्यवाद
देते हो, तो विश्वास तुम्हारे अंदर उमड़-
ता रहे।

8 खबरदार रहोः कहीं ऐसा न हो
कि कोई तुम्हें दुनियावी फलसफों और
छलनेवाली उन खोखली बातों से अपना
शिकार बनाकर ले जाए, जो इंसानों की
परंपराओं और दुनियादारी के उसूलों के
मुताबिक हैं और मसीह की शिक्षाओं के
मुताबिक नहीं; **9** क्योंकि मसीह में ही
ईश्वरत्व का स्वभाव पूरी हद तक निवास
करता है। **10** और इसलिए उसके
ज़रिए तुम्हारे पास सबकुछ पूरी हद तक
है, जो सारी हुकूमत और अधिकार का
मुखिया है। **11** उसी के साथ रिश्ता
होने की वजह से तुम्हारा ऐसा खतना भी
हुआ जो हाथ से नहीं किया गया, बल्कि
पापी शरीर को उतार फेंकने से तुम्हारा
ऐसा खतना हुआ जैसा मसीह के सेवकों
का होना चाहिए **12** इसलिए कि तुम
उसके बपतिस्मे में उसके साथ दफन किए
गए और उसी के साथ तुम्हारा रिश्ता होने
की वजह से तुम उसके साथ जी उठाए
भी गए। क्योंकि तुम्हें विश्वास था कि
परमेश्वर अपनी शक्ति काम में लाकर
ऐसा कर सकता है, जिसने मसीह को मरे
हुओं में से जी उठाया।

13 यही नहीं, चाहे तुम अपने
गुनाहों की वजह से मरे हुओं जैसे थे
और तुम्हारा शरीर बिन खतने की दशा
में था, फिर भी परमेश्वर ने तुम्हें जी
उठाया और उसके साथ एक किया। उसने
बड़ी कृपा दिखाते हुए हमारे सारे गुनाह
माफ किए **14** और हाथ से लिखे उस
दस्तावेज़ को जिसमें कई आदेश थे और
जो हमारे खिलाफ था, रद्द कर दिया।
और उसने यातना की सूली पर उसे कीलों
से ठोंककर हमारे सामने से हटा दिया।
15 और इस यातना की सूली के ज़रिए
उसने हुकूमतों और अधिकारियों को नंगा
कर सब लोगों के सामने, हारे हुओं की
तरह उनकी नुमाइश की और जीत के
जुलूस में उन्हें अपने पीछे-पीछे चलाया।

16 इसलिए कोई भी इंसान खाने-
पीने या कोई त्योहार मनाने या नए
चाँद का दिन या सब्त मानने के मामले
में तुम्हारा न्यायी न बने; **17** क्योंकि
ये सब आनेवाली बातों की छाया थीं,
मगर हकीकत मसीह की है। **18** कोई
भी ऐसा इंसान, जिसे नम्रता का ढोंग
करना और स्वर्गदूतों की उपासना पसंद
है, तुम्हें उस इनाम से दूर न कर दे
जो तुम्हें मिलनेवाला है। ऐसा इंसान
उन दर्शनों पर "अड़ा रहता है,"*

कुलु 2:18* शाब्दिक, "में प्रवेश करता है।"

जिन्हें देखने का वह दावा करता है और
अपने मन की शारीरिक सोच से बे-
वजह फूलता है। **19** जबकि वह उस
सिर* के साथ मज़बूती से जुड़ा नहीं
रहता जिससे सारे शरीर की ज़रूरत पूरी
होती है और शरीर अपने जोड़ों और
माँस-पेशियों के ज़रिए पूरे तालमेल के
साथ जुड़ा हुआ है और उस बढ़ोतरी के
साथ बढ़ता जाता है जो परमेश्वर देता है।

20 एक बार जब तुम दुनिया-
दारी के उसूलों के मामले में मसीह
के साथ मर गए, तो फिर अब तुम
क्यों दुनिया के लोगों की तरह खुद
को ऐसे आदेशों के गुलाम बनाते हो:
21 “उसे हाथ न लगाना, इसे न चखना,
उसे न छूना,” **22** जबकि ये आदेश
और शिक्षाएँ इंसानों की सिखायी हुई हैं
और उन चीज़ों के बारे में हैं, जो इस्तेमाल
होते-होते नाश हो जाती हैं? **23** यह
सब करनेवाले वाकई बड़े ज्ञानी और
बुद्धिमान लगते हैं, मगर वे अपने मन-
माने ढंग से पूजा-प्रार्थना करते हैं और
नम्रता का ढोंग करते हैं और अपने शरीर
को यातना देते हैं। मगर इनसे पापी शरीर
की वासनाओं से लड़ने में कोई मदद नहीं
मिलती।

3 लेकिन अगर तुम मसीह के साथ जी
उठाए गए थे, तो स्वर्ग की बातों की
खोज में लगे रहो जहाँ मसीह, परमेश्वर
की दायीं तरफ बैठा है। **2** अपना मन
स्वर्ग की बातों पर ही लगाए रखो, न
कि धरती की बातों पर। **3** इसलिए
कि तुम मर गए और परमेश्वर की
मरज़ी के मुताबिक मसीह के साथ तुम्हारा
जीवन छिपा हुआ है। **4** जब मसीह
जो हमारा जीवन है, अपनी महिमा ज़ाहिर
करेगा,* तब तुम भी उसके साथ महिमा
में ज़ाहिर किए जाओगे।

5 इसलिए, अपने शरीर के उन अंगों
को* मार डालो जिनमें ऐसी लालसाएँ
पैदा होती हैं जैसे, व्यभिचार, अशुद्धता,
काम-वासना, बुरी इच्छाएँ और लालच जो
कि मूर्तिपूजा के बराबर है। **6** इन्हीं
बातों की वजह से परमेश्वर का क्रोध
आनेवाला है। **7** तुम भी एक वक्त
पर इन्हीं कामों में लगे हुए ऐसा ही
जीवन बिताते थे। **8** मगर अब तुम
इन सब बातों को खुद से पूरी तरह दूर
करो, जैसे क्रोध, गुस्सा, बुराई, गाली-
गलौज और मुँह से अश्लील बातें कहना।
9 एक-दूसरे से झूठ मत बोलो। पुरानी
शख्सियत को उसकी आदतों समेत उतार
फेंको **10** और सही ज्ञान के जरिए
वह नयी शख्सियत पहन लो जिसकी
रचना परमेश्वर करता है। और इसे
लगातार नया बनाते जाओ, ताकि तुम्हारी
यह शख्सियत परमेश्वर की छवि के मुता-
बिक हो। **11** यहाँ न तो कोई यूनानी
रहा न यहूदी, न खतनावाला रहा न बिन
खतनावाला, न परदेसी रहा न स्कूती,*

कुलु 2:19* यानी, मसीह।

कुलु 3:4* शाब्दिक, “ज़ाहिर होगा।” **5*** शाब्दिक, “अपने शरीर के उन अंगों को जो धरती पर हैं।” **11*** “स्कूती” का मतलब जंगली और असभ्य लोग भी होता था।

न दास रहा न आज़ाद, मगर मसीह
सबकुछ और सब में है।
12 इसलिए, परमेश्‍वर के चुने हुओं
के नाते तुम जो पवित्र और प्यारे हो,
करुणा से भरपूर गहरे लगाव, कृपा, मन
की दीनता, कोमलता और सहनशीलता
को पहन लो। **13** अगर किसी के
पास दूसरे के खिलाफ शिकायत की कोई
वजह है, तो एक-दूसरे की सहते रहो और
एक-दूसरे को दिल खोलकर माफ करो।
जैसे यहोवा ने तुम्हें दिल खोलकर माफ
किया है, वैसे ही तुम भी दूसरे को माफ
करो। **14** मगर, इन सब बातों के
अलावा, प्यार को अपना पहनावा बना
लो, क्योंकि यह लोगों को पूरी तरह से
एकता में जोड़नेवाला जोड़ है।
15 साथ ही, मसीह की शांति तुम्हारे
दिलों पर काबू रखे, क्योंकि इसमें तुम
दरअसल एक शरीर में बुलाए गए हो।
और दिखाओ कि तुम कितने एहसानमंद
हो। **16** मसीह का वचन तुम्हारे अंदर
इस कदर बहुतायत में बस जाए कि
तुम पूरी बुद्धि पाओ। साथ ही, भजन
गाते, परमेश्‍वर का गुणगान करते और
उपासना के मनभावने गीत गाते हुए,
एक-दूसरे को सिखाते और समझाते-
बुझाते रहो। अपने दिलों में यहोवा के
लिए गीत गाते रहो। **17** और जो
कुछ तुम कहो या करो, सबकुछ प्रभु यीशु
के नाम में करो और उसके ज़रिए पर-
मेश्‍वर पिता का धन्यवाद करो।
18 हे पत्नियो, अपने-अपने पति के
अधीन रहो, जैसा प्रभु के चेलों को
शोभा देता है। **19** हे पतियो, अपनी-
अपनी पत्नी से प्यार करते रहो और
उन पर गुस्से से आग-बबूला मत
हो। **20** हे बच्चो, हर बात में अपने
माता-पिता का कहना माननेवाले बनो,
क्योंकि प्रभु इससे खुश होता है।
21 हे पिताओ, अपने बच्चों को खीझ
न दिलाओ, कहीं ऐसा न हो कि
वे हिम्मत हार बैठें। **22** हे दासो, जो
दुनिया में तुम्हारे मालिक हैं हर बात में
उनकी आज्ञा मानो, इंसानों को खुश
करनेवालों की तरह दिखावे के लिए
नहीं, बल्कि मन की सीधाई से और
यहोवा का डर मानते हुए ऐसा करो।
23 तुम चाहे जो भी काम करो, उसे
तन-मन लगाकर ऐसे करो मानो यहोवा
के लिए करते हो न कि इंसानों के लिए,
24 क्योंकि तुम जानते हो कि यहोवा ही
से तुम्हें उस विरासत का उचित इनाम
मिलेगा। अपने मालिक मसीह के दास
बनकर उसकी सेवा करो। **25** बेशक
जो बुराई करता है वह बदले में अपने
बुरे कामों का फल पाएगा और किसी
तरह का पक्षपात नहीं किया जाएगा।

4 हे मालिको, अपने दासों के साथ
ऐसे पेश आओ जैसा न्याय के मुता-
बिक और सही है, यह जानते हुए कि
स्वर्ग में तुम्हारा भी एक मालिक है।
2 प्रार्थना में लगे रहो और धन्यवाद
देते हुए इस बारे में जागरूक रहो।
3 साथ ही, हमारे लिए भी प्रार्थना करते
रहो ताकि परमेश्‍वर हमारे लिए मौके का

दरवाज़ा खोल दे कि हम वचन का प्रचार कर सकें और मसीह के बारे में पवित्र रहस्य बता सकें, क्योंकि दरअसल मैं इसी वजह से जेल में कैद हूँ।
4 और यह भी प्रार्थना करो कि मैं इसके बारे में ठीक वैसे ही समझा सकूँ जैसे मुझे समझाना चाहिए।

5 तय वक्त का पूरा-पूरा इस्तेमाल करते हुए,* जो बाहरवाले हैं उनके साथ बुद्धिमानी से पेश आओ।
6 तुम्हारे बोल हमेशा मन को भानेवाले, सलोने* हों। अगर तुम ऐसा करोगे तो तुम्हें हर एक को वैसे जवाब देना आ जाएगा, जैसे तुमसे उम्मीद की जाती है।

7 मेरा प्यारा भाई और प्रभु में विश्वासयोग्य सेवक और संगी दास तुखिकुस तुम्हें मेरे बारे में सब बातें बता देगा।
8 मैं इसी मकसद से उसे तुम्हारे पास भेज रहा हूँ कि तुम हमारे हालात के बारे में जान सको और वह तुम्हारे दिलों को दिलासा दे सके।
9 मैं उसके साथ अपने विश्वासयोग्य और प्यारे भाई उनेसिमुस को भेज रहा हूँ जो तुम्हारे यहाँ का है। वे तुम्हें यहाँ के हालात के बारे में पूरी जानकारी देंगे।

10 अरिस्तरखुस जो मेरे साथ कैद है, तुम्हें नमस्कार कहता है और मरकुस भी जो बरनबास का भाई लगता है तुम्हें नमस्कार कहता है (वही मरकुस जिसके बारे में तुम्हें आदेश मिले थे कि जब कभी वह तुम्हारे पास आए तो उसका स्वागत करना)
11 और यीशु भी जो युसतुस कहलाता है तुम्हें नमस्कार कहता है। ये खतना किए हुओं में से हैं। सिर्फ ये ही हैं जो परमेश्वर के राज के लिए मेरे सहकर्मी हैं और मेरी हिम्मत बँधानेवाले मेरे मददगार बने हैं।
12 मसीह यीशु का दास, इपफ्रास जो तुम्हारे यहाँ का है, तुम्हें नमस्कार कहता है। वह हमेशा अपनी प्रार्थनाओं में तन-मन से तुम्हारी खातिर कड़ा प्रयास करता है ताकि तुम परमेश्वर की सारी मरज़ी में पक्के यकीन के साथ आखिर में परिपूर्ण पाए जाओ।
13 हाँ, मैं उसका गवाह हूँ कि वह तुम्हारी खातिर और जो लौदीकिया और हियरापुलिस में हैं, उनकी खातिर बड़ा जतन करता है।

14 हमारा प्यारा भाई, वैद्य लूका तुम्हें नमस्कार कहता है और देमस भी।
15 लौदीकिया के भाइयों को और बहन नुमफास और उसके घर में इकट्ठा होनेवाली मंडली को मेरा नमस्कार।
16 जब यह चिट्ठी तुम्हारे बीच पढ़ी जा चुकी हो, तो इसे लौदीकिया मंडली में भी पढ़वाने का इंतज़ाम करना और लौदीकिया से आयी चिट्ठी तुम भी पढ़ लेना।
17 और अरखिप्पुस से कहना: "प्रभु में सेवा की जो ज़िम्मेदारी तुझे सौंपी गयी है, ध्यान रख कि तू उसे पूरा करे।"

18 मैं पौलुस खुद अपने हाथ से यह नमस्कार लिख रहा हूँ। मेरे कैद की ज़ंजीरों को याद रखना। परमेश्वर की महा-कृपा तुम पर होती रहे।

कुलु 4:5* शाब्दिक, "वक्त को खरीद लो।" **6*** शाब्दिक, "नमक से मले हुए हों।"

थिस्सलुनीकियों के नाम पहली चिट्ठी

1 पौलुस, सिलवानुस* और तीमुथि-
युस, थिस्सलुनीकियों की मंडली#
को लिख रहे हैं, जो परमेश्वर हमारे
पिता और प्रभु यीशु मसीह के साथ
एकता में है।
तुम्हें परमेश्वर की महा-कृपा और
शांति मिले।
2 हम जब-जब अपनी प्रार्थनाओं में
तुम्हारा ज़िक्र करते हैं, तो तुम सबके
लिए परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं।
3 हम अपने पिता और परमेश्वर के
सामने हर वक्त तुम्हें याद करते हैं कि
किस तरह तुमने विश्वास के काम किए
और प्यार से कड़ी मेहनत की। और यह
भी नहीं भूलते कि हमारे प्रभु यीशु मसीह
पर आशा रखने की वजह से किस
तरह तुमने धीरज धरा है। **4** इसलिए
भाइयो, तुम जो परमेश्वर के प्यारे हो,
हम जानते हैं कि तुम उसके चुने हुए हो।
5 क्योंकि हमने तुम्हारे बीच जिस खुश-
खबरी का प्रचार किया था, वह खाली
बातें ही नहीं थीं। बल्कि उसका ज़बर-
दस्त असर हुआ, और तुम्हारे बीच पवित्र
शक्ति ने काम किया और यह खुश-
खबरी पक्के यकीन के साथ सुनायी
गयी। तुम खुद जानते हो कि हमने
किस तरह तुम्हारी खातिर काम किया।
6 तुमने बहुत क्लेश सहते हुए भी पवित्र
शक्ति से मिलनेवाली खुशी के साथ वचन
को स्वीकार किया। और तुम हमारी
और प्रभु की मिसाल पर चलनेवाले बने,
7 जिससे तुम मकिदुनिया और अखया
के सभी विश्वासियों के लिए एक मिसाल
बन गए।
8 सच तो यह है कि तुम्हारे यहाँ से
यहोवा* के वचन की चर्चा न सिर्फ
मकिदुनिया और अखया में फैली है,
बल्कि परमेश्वर पर तुम्हारे विश्वास की
चर्चा हर जगह हो रही है, इसलिए हमें
इसमें कुछ और जोड़ने की ज़रूरत नहीं।
9 क्योंकि सब लोग खुद ही बताते हैं
कि हम पहली बार किस तरह तुम्हारे यहाँ
आए थे और तुमने किस तरह अपनी
मूरतों को छोड़ दिया और जीवित और
सच्चे परमेश्वर की तरफ फिरे कि उसकी
सेवा करो, **10** और इसलिए भी कि
तुम स्वर्ग से उसके बेटे, यीशु के आने
का इंतज़ार करो, जिसे उसने मरे हुओं में
से जी उठाया और जो हमें परमेश्वर के
आनेवाले क्रोध से बचाएगा।

2 भाइयो, हमें यकीन है कि तुम खुद
यह जानते हो कि हमने तुम्हारे यहाँ
जो दौरा किया था, वह बेकार साबित नहीं

1थिस्स 1:1* 2 कुरि 1:19 फुटनोट देखें। **1#** मत्ती 16:18 दूसरा फुटनोट देखें।

1थिस्स 1:8* यह उन 237 जगहों में से एक जगह है, जहाँ परमेश्वर का नाम, 'यहोवा' इस अनुवाद के मुख्य पाठ में पाया जाता है। अतिरिक्त लेख 2 देखें।

हुआ। **2** मगर कैसे हमने फिलिप्पी में
दुःख सहने और बेइज़्ज़त होने के बाद
भी (जैसा कि तुम जानते हो) हमारे पर-
मेश्वर के ज़रिए हिम्मत जुटायी ताकि
कड़ा संघर्ष करते हुए तुम्हें उसकी खुश-
खबरी सुना सकें। **3** हम तुम्हें जो
सीख देते हैं वह झूठी बातों के आधार
पर या गलत इरादों से नहीं है, न ही इसमें
कोई छल-कपट है। **4** मगर परमेश्वर
है जिसने हमें परखकर इस योग्य समझा
कि हमें खुशखबरी सौंपी जाए। इसलिए
हम इंसानों को नहीं बल्कि परमेश्वर को
खुश करने के लिए प्रचार करते हैं, जो
हमारे दिलों को जाँचता है।

5 असल में, जैसे तुम जानते हो कि
हमने कभी-भी तुम्हारे बीच चापलूसी की
बातें नहीं कीं, न ही कोई ढोंग रचा
मानो अपनी लालच पर परदा डालना
चाहते हों। परमेश्वर हमारा गवाह है!
6 न ही हमने किसी इंसान से मान-
सम्मान पाना चाहा। न तुमसे न ही दूसरों
से, जबकि अगर हम चाहते तो मसीह के
प्रेषित* होने के नाते तुम पर एक खर्चीला
बोझ बन सकते थे। **7** इसके बजाय,
जैसे एक दूध पिलानेवाली माँ अपने
नन्हे-मुन्नों से दुलार करती है वैसे ही
हम तुम्हारे बीच रहते हुए बड़ी नर्मी से
पेश आए। **8** हमें तुमसे इतना गहरा
लगाव हो गया कि हमने तुम्हें न सिर्फ
परमेश्वर की खुशखबरी सुनायी बल्कि
तुम्हारे लिए अपनी जान तक देने को
तैयार थे, क्योंकि तुम हमारे प्यारे हो
गए थे।

9 भाइयो, तुम्हें हमारी कड़ी मेहनत
और घोर मज़दूरी ज़रूर याद होगी।
जब हमने तुम्हें परमेश्वर की खुशखबरी
सुनायी तो इसलिए रात-दिन काम किया
कि तुममें से किसी पर भी खर्चीला बोझ
न बनें। **10** तुम इस बात के गवाह
हो और परमेश्वर भी है कि तुम विश्वा-
सियों के बीच रहते वक्त हम कैसे वफा-
दार और नेक और निर्दोष साबित हुए।
11 तुम अच्छी तरह जानते हो कि जैसे
एक पिता अपने बच्चों के साथ करता है,
वैसे ही हम भी तुममें से हरेक को सीख
देकर उकसाते रहे, और तुम्हें तसल्ली
देकर समझाते-बुझाते रहे, **12** जिससे
कि तुम्हारा जीने का तरीका ऐसा हो जो
परमेश्वर को भाए जिसने तुम्हें अपने राज
और अपनी महिमा में भागीदार होने के
लिए बुलाया है।

13 वाकई, हम इसीलिए परमेश्वर
का लगातार धन्यवाद भी करते हैं क्योंकि
जब तुमने परमेश्वर का वचन हमसे सुना
तो इसे इंसानों का नहीं बल्कि परमेश्वर
का वचन समझकर स्वीकार किया, जो
यह सचमुच है। और यह वचन तुम
विश्वास करनेवालों में वाकई काम कर
रहा है। **14** भाइयो, तुम यहूदिया के
इलाके की मसीही मंडलियों की मिसाल
पर चले जो परमेश्वर की मंडलियाँ हैं।
क्योंकि तुमने अपने ही देश के लोगों के
हाथों वैसे ही दुःख सहे जैसे वे भी यहूदियों

1थिस्स 2:6* या, “भेजे गए।” यूनानी में *“अपोस्टो-लोस।”*

के हाथों दुःख झेल रहे हैं। **15** उन
यहूदियों ने प्रभु यीशु तक को मार डाला,
ठीक जैसे वे भविष्यवक्ताओं को मार
डालते थे और हम पर भी ज़ुल्म किया।
और वे परमेश्वर को खुश नहीं करते
बल्कि सब इंसानों की भलाई के खिलाफ
काम करते हैं। **16** क्योंकि वे हमें
दूसरी जातियों के लोगों को संदेश सुनाने
से रोकते हैं कि उनका उद्धार न हो।
इस तरह, जैसा हमेशा होता आया है,
ऐसे लोग अपने पाप का घड़ा भरते हैं।
मगर आखिरकार उन पर परमेश्वर के
क्रोध का वक्त आ गया है।

17 भाइयो, जब हमें तुमसे बिछड़ना
पड़ा, भले ही यह थोड़े वक्त के लिए था,
हालाँकि हम शरीर से तुमसे दूर हुए थे,
मगर दिल से नहीं तो हमने दिल में
बड़ी तमन्ना लिए हुए तुमसे मिलने की
बहुत कोशिश की। **18** इसी वजह से
हम, हाँ, मैं पौलुस, तुम्हारे पास आना
चाहता था मगर शैतान ने एक बार नहीं
बल्कि दोनों बार हमारा रास्ता रोका।
19 भला हमारी आशा या खुशी या
हमारी जीत का ताज और कौन है?
क्या हमारे प्रभु यीशु की मौजूदगी* के
वक्त उसके सामने वह तुम ही न होगे?
20 बेशक, हमारा गर्व और हमारी खुशी
तुम ही हो।

3 इसलिए, जब हम और सह न सके,
तो हमने एथेन्स में खुद अकेले
रह जाना बेहतर समझा **2** और हमारे
भाई तीमुथियुस को तुम्हारे पास भेजा, जो
मसीह की खुशखबरी सुनानेवाला पर-
मेश्वर का सेवक है, ताकि वह तुम्हें
मज़बूत करे और तुम्हारे विश्वास को
पक्का करने के लिए तुम्हें दिलासा दे,
3 ताकि तुम में से कोई भी इन दुःख-
तकलीफों की वजह से न डगमगाए।
क्योंकि तुम खुद जानते हो कि हमारे लिए
यह सब सहना पहले से ठहराया गया है।
4 सच तो यह है कि जब हम तुम्हारे
साथ थे, तो हम पहले ही तुम्हें कहा करते
थे कि हमें दुःख-तकलीफें झेलनी पड़ेंगी।
और ऐसा ही हुआ है जैसा कि तुम जानते
हो। **5** दरअसल इसी वजह से, जब
मैं तुम्हारी जुदाई सह न कर सका, तो यह
जानने के लिए कि तुम अपने विश्वास
पर कायम हो, मैंने तीमुथियुस को तुम्हारे
पास भेजा ताकि यह जान सकूँ कि कहीं
लुभानेवाले ने तुम्हें किसी तरह लुभा तो
नहीं लिया और हमारी कड़ी मेहनत बेकार
हो गयी हो।

6 मगर तुम्हारे यहाँ से अभी-अभी
तीमुथियुस हमारे पास आया है और
उसने हमें तुम्हारे प्यार के बारे में अच्छी
खबर दी है और यह बताया है कि तुम
विश्वासयोग्य पाए गए हो। उसने यह भी
बताया कि तुम हमेशा हमें बड़े प्यार के
साथ याद करते हो। और जैसे हम तुम्हें
देखने के लिए तरसते हैं वैसे ही तुम भी
हमें देखने के लिए तरसते हो। **7** इसी
वजह से भाइयो, तुम्हारे विश्वासयोग्य
होने की खबर सुनकर हमें अपनी सारी

1थिस्स 2:19* अतिरिक्त लेख 5 देखें।

मुसीबतों और दुःख-तकलीफों में दिलासा
मिला है। 8 क्योंकि प्रभु में तुम्हारे
मज़बूती से टिके रहने की वजह से
हमारे अंदर एक नयी जान आ गयी है।
9 तुम्हारी वजह से परमेश्वर ने जो हमें
इस कदर खुशी दी है, उसके बदले हम
उसका धन्यवाद कैसे चुकाएँ? 10 हम
रात-दिन बेहद गिड़गिड़ाते हुए परमेश्वर
से मिन्नतें करते हैं कि किसी तरह तुम्हें
देख पाएँ और तुम्हारे विश्वास में जिस
किसी बात की कमी रह गयी है उसे पूरा
कर पाएँ।

11 हमारी दुआ है कि खुद हमारा
परमेश्वर और पिता साथ ही हमारा प्रभु
यीशु हमें तुम्हारे यहाँ आने में कामयाबी
दिलाए। 12 हम यह भी दुआ करते
हैं कि प्रभु तुम्हें बढ़ाए, हाँ, ठीक
जैसे हम तुमसे बेहद प्यार करते हैं वैसे
ही एक-दूसरे के लिए और सबके लिए
तुम्हारा प्यार बढ़ता रहे, 13 ताकि
जब हमारा प्रभु यीशु अपने सब पवित्र
जनों के साथ मौजूद हो, तो हमारे पर-
मेश्वर और पिता के सामने वह तुम्हारे
दिलों को मज़बूत करे और पवित्र और
निर्दोष ठहराए।

4 अब आखिर में भाइयो, जैसी तुमने
हमसे शिक्षा पायी कि तुम्हें कैसे
ठीक चाल चलनी है और परमेश्वर को
खुश करना है, तुम असल में ऐसा कर
भी रहे हो। और हम प्रभु यीशु के नाम
से तुमसे गुज़ारिश करते हैं और तुम्हें
उकसाते हैं कि तुम और भी पूरी तरह
ऐसे ही चलते रहो। 2 तुम जानते हो
कि हमने प्रभु यीशु की तरफ से तुम्हें
क्या-क्या आदेश पहुँचाए थे।

3 परमेश्वर की मरज़ी यही है कि
तुम पवित्र बनो, यानी तुम व्यभिचार
से दूर रहो। 4 और तुममें से हरेक
जन पवित्रता और आदर के साथ अपने
शरीर* को वश में रखना जाने, 5 न
कि काम-वासना की लालसा के साथ,
जैसी उन जातियों में है जो परमेश्वर को
नहीं जानतीं। 6 और कोई भी इस
मामले में अपने भाई को नुकसान न पहुँ-
चाए और उसका हक न मारे। क्योंकि
यहोवा है जो इन सब बातों की सज़ा देता
है, ठीक जैसे हम तुम्हें पहले भी बता
चुके हैं और अच्छी तरह समझा चुके
हैं। 7 इसलिए कि परमेश्वर ने हमें
अशुद्ध कामों की छूट देने के लिए नहीं,
बल्कि पवित्र होने के लिए बुलाया है।
8 तो फिर, जो इंसान इस शिक्षा का
तिरस्कार करता है वह किसी इंसान का
नहीं बल्कि उस परमेश्वर का तिरस्कार
करता है, जो तुम्हें अपनी पवित्र शक्ति
देता है।

9 मगर, जहाँ तक भाइयों जैसा प्यार
दिखाने की बात है, इस मामले में हमें
तुम्हें कुछ लिखने की ज़रूरत नहीं, क्योंकि
तुम्हें खुद परमेश्वर ने एक-दूसरे से प्यार
करना सिखाया है। 10 और वाकई
तुम सारे मकिदुनिया के सभी भाइयों को

1थिस्स 4:4* या, “अपने पात्र को।”

ऐसा ही प्यार दिखा रहे हो। मगर भाइयो,
हम तुम्हें उकसाते हैं कि तुम यह पूरे
पैमाने पर करते रहो। **11** और जैसा
हमने तुम्हें आदेश दिया तुम अपना यह
लक्ष्य बना लो कि शांति से जीवन बिताओ
और अपने काम से काम रखो और अपने
हाथों से मेहनत करो, **12** ताकि जो
मसीही मंडली का हिस्सा नहीं हैं, उनकी
नज़रों में तुम्हारे जीने का ढंग आदर के
लायक हो और तुम्हें किसी चीज़ की
घटी न हो।

13 इसके अलावा भाइयो, हम नहीं
चाहते कि तुम उनके भविष्य के मामले
में अनजान रहो जो मौत की नींद सो जाते
हैं, ताकि तुम दूसरों की तरह मातम न
मनाओ जिनके पास कोई आशा नहीं है।
14 अगर हमें विश्‍वास है कि यीशु मरा
और जी उठाया भी गया, तो हमारा यह
भी विश्‍वास है कि जो यीशु के साथ
एकता में मौत की नींद सो गए हैं उन्हें
परमेश्‍वर, यीशु के ज़रिए जी उठाएगा।
15 क्योंकि हम यहोवा के वचन से
तुम्हें बताते हैं कि हम में से जो प्रभु
की मौजूदगी के दौरान जी रहे होंगे,
हम किसी भी हाल में उनसे आगे न
बढ़ेंगे जो मौत की नींद सो गए हैं।
16 क्योंकि प्रभु खुद स्वर्ग से बड़ी लल-
कार और प्रधान स्वर्गदूत की आवाज़ से
पुकार लगाता हुआ परमेश्‍वर की तुरही
की आवाज़ के साथ उतरेगा। और जो
मसीह में मरे हुए हैं वे पहले जी उठेंगे।
17 इसके बाद हम जो ज़िंदा हैं और जो
बचे रहेंगे, हम उनके साथ बादलों में उठा
लिए जाएँगे ताकि हम हवा में प्रभु से
मिलें। इस तरह हम हमेशा प्रभु के
साथ रहेंगे। **18** इसलिए, इन बातों से
एक-दूसरे को दिलासा देते रहो।

5 भाइयो, ये बातें कब होंगी, हमें
इनके समयों और ठहराए हुए दिनों
के बारे में तुम्हें कुछ लिखने की ज़रूरत
नहीं। **2** इसलिए कि तुम खुद यह
अच्छी तरह जानते हो कि यहोवा का दिन
ठीक वैसे ही आ रहा है जैसे रात को चोर
आता है। **3** जब लोग कहते होंगे:
“शांति और सुरक्षा है!” तब उसी वक्‍त
अचानक उन पर विनाश आ पड़ेगा, जैसे
एक गर्भवती स्त्री को अचानक प्रसव-
पीड़ाएँ उठने लगती हैं। और वे किसी
भी हाल में बच नहीं पाएँगे। **4** मगर
भाइयो, तुम अंधकार में नहीं हो कि वह
दिन तुम पर इस तरह आ पड़े, जिस
तरह दिन का उजाला चोरों पर आ पड़ता
है। **5** इसलिए कि तुम सब रौशनी के
बेटे और दिन के बेटे हो। हम न तो रात
के हैं न ही अंधकार के।

6 तो फिर आओ हम बाकियों की
तरह न सोएँ, बल्कि जागते रहें और
होश-हवास बनाए रखें। **7** जो सोते
हैं, वे रात को सोने के आदी होते हैं,
और जो पीकर धुत्त होते हैं वे अकसर
रात के वक्‍त धुत्त होते हैं। **8** मगर
हम जो दिन के हैं, आओ हम अपने

होश-हवास बनाए रखें और विश्वास
और प्यार का कवच और उद्धार की
आशा का टोप पहने रहें। **9** क्योंकि
परमेश्वर ने हमें उसका क्रोध झेलने
के लिए नहीं बल्कि हमारे प्रभु यीशु
मसीह के ज़रिए उद्धार हासिल करने के
लिए चुना है। **10** मसीह हमारे लिए
मरा कि हम चाहे ज़िंदा हों या मौत की
नींद सो जाएँ, हम उसके साथ जीएँगे।
11 इसलिए एक-दूसरे को दिलासा देते
रहो और एक-दूसरे की हिम्मत बंधाते
रहो,* ठीक जैसा तुम कर भी रहे हो।

12 भाइयो, अब हम तुमसे गुज़ा-
रिश करते हैं कि तुम्हारे बीच जो कड़ी
मेहनत करते हैं और प्रभु के काम में
तुम्हारी अगुवाई करते हैं, और तुम्हें
समझाते-बुझाते हैं, उनकी कदर करो।
13 और उनके काम की वजह से प्यार
के साथ उनकी और भी बढ़कर इज़्ज़त
करो। एक-दूसरे के साथ शांति कायम
करनेवाले बनो। **14** और भाइयो,
हम तुम्हें उकसाते हैं कि जो मनमानी
करते हैं, उन्हें समझाओ, जो मायूस हैं,
उन्हें अपनी बातों से तसल्ली दो, कम-
ज़ोरों को सहारा दो, और सबके साथ
सहनशीलता से पेश आओ। **15** इस
बात का ध्यान रखो कि तुम में से कोई
किसी की बुराई का बदला बुराई से न
दे, मगर हमेशा एक-दूसरे की और बाकी
सबकी भलाई करने में लगे रहो।

16 हमेशा खुश रहो। **17** लगा-
तार प्रार्थना करते रहो। **18** हर बात
के लिए धन्यवाद देते रहो। क्योंकि
मसीह यीशु के ज़रिए तुम्हारे लिए पर-
मेश्वर की यही मरज़ी है। **19** पवित्र
शक्ति* के ज़बरदस्त असर में रुकावट
न डालो।# **20** भविष्यवाणियों के
वचनों को तुच्छ न समझो। **21** सब
बातों को परखो, जो बढ़िया है उसे थामे
रहो। **22** हर तरह की दुष्टता से
दूर रहो।

23 मेरी दुआ है कि शांति
का परमेश्वर तुम्हें पूरी तरह पवित्र
करे। तुम भाइयों का पूरा मन,*
जान और शरीर हमारे प्रभु यीशु मसीह
की मौजूदगी के दौरान निर्दोष हालत
में सुरक्षित पाया जाए। **24** तुम्हारा
बुलानेवाला विश्वासयोग्य है और वह
ऐसा ही करेगा।

25 भाइयो, हमारे लिए प्रार्थना
करते रहो।

26 पवित्र चुंबन से सब भाइयों का
स्वागत करो।

27 मैं प्रभु के नाम से तुम पर यह
ज़िम्मेदारी डालता हूँ कि यह चिट्ठी सब
भाइयों को पढ़कर सुनायी जाए।

28 हमारे प्रभु यीशु मसीह की महा-
कृपा तुम पर होती रहे।

1थिस्स 5:11* शाब्दिक, “निर्माण करते रहो।”

1थिस्स 5:19* यूनानी *नफ्मा।* अतिरिक्त लेख 7 देखें। **19#** शाब्दिक, “पवित्र शक्ति की आग न बुझाओ।” **23*** यूनानी *नफ्मा।* अतिरिक्त लेख 7 देखें।

थिस्सलुनीकियों के नाम दूसरी चिट्ठी

1 पौलुस और सिलवानुस[*] और तीमु-
थियुस, थिस्सलुनीकियों की मंडली[#]
को लिख रहे हैं, जो परमेश्वर हमारे
पिता और प्रभु यीशु मसीह के साथ
एकता में है।

2 तुम्हें परमेश्वर हमारे पिता और
प्रभु यीशु मसीह की तरफ से महा-कृपा
और शांति मिले।

3 भाइयो, हमारा फर्ज़ बनता है कि
हम तुम्हारे लिए हमेशा परमेश्वर का
धन्यवाद करें जैसा सही भी है, क्योंकि
तुम्हारा विश्वास बहुत बढ़ता जा रहा है
और तुम में से हरेक का और सबका
आपसी प्यार भी बढ़ता जा रहा है।
4 इस वजह से, तुम ज़ुल्म सहते हुए भी
जो धीरज और विश्वास दिखा रहे हो,
और जो क्लेश सह रहे हो उसे देखते हुए
हम खुद परमेश्वर की मंडलियों में तुम
पर गर्व करते हैं। **5** यह परमेश्वर के
सच्चे न्याय का सबूत है और इस वजह
से तुम परमेश्वर के राज के योग्य ठह-
राए जाओगे, जिसके लिए असल में तुम
दुःख उठा रहे हो।

6 वाकई परमेश्वर की नज़र में यह
न्याय है कि जो तुम्हें क्लेश देते हैं,
उन्हें वह बदले में क्लेश दे। **7** मगर
तुम जो क्लेश सहते हो, तुम्हें हमारे
साथ उस वक्त राहत दे जब प्रभु यीशु
अपने शक्तिशाली दूतों के साथ धधकती
आग में स्वर्ग से प्रकट होगा। **8** वह
उन लोगों से बदला लेगा जो परमेश्वर
को नहीं जानते और हमारे प्रभु यीशु
के बारे में खुशखबरी को नहीं मानते।
9 यही हैं जो हमेशा के विनाश की सज़ा
पाएँगे और प्रभु के सामने से मिटा दिए
जाएँगे और उसकी महाशक्ति से दूर कर
दिए जाएँगे। **10** उस वक्त वह अपने
पवित्र जनों के बीच महिमा पाने के लिए
आएगा और उस पर विश्वास दिखाने-
वाले सभी लोग उसकी वजह से आश्चर्य
करेंगे। और यह तुम्हारे मामले में भी
होगा क्योंकि जो गवाही हमने दी है उस
पर तुमने भी विश्वास दिखाया है।

11 दरअसल, इसी वजह से हम
तुम्हारे लिए हमेशा प्रार्थना करते हैं ताकि
हमारा परमेश्वर तुम्हें अपने बुलावे के
योग्य जाने और अपनी शक्ति से वह जो-
जो भलाई करना चाहता है वह सब पूरी
करे और तुम्हारे विश्वास के कामों को
सफल करे, **12** ताकि हमारे परमेश्वर
और प्रभु यीशु मसीह की महा-कृपा के
मुताबिक, हमारे प्रभु यीशु का नाम तुम्हारे
ज़रिए महिमा पाए और तुम उसके साथ
एकता में महिमा पाओ।

2थिस्स 1:1* 2 कुरि 1:19 फुटनोट देखें।
1# मत्ती 16:18 दूसरा फुटनोट देखें।

2 मगर भाइयो, जहाँ तक हमारे प्रभु
यीशु मसीह की मौजूदगी* और
उसके साथ हमारे इकट्ठा होने के वक्त
की बात है, हम तुमसे यह गुज़ारिश करते
हैं: **2** किसी प्रेरित वचन* या ज़बानी
संदेश या चिट्ठी से, जिसके बारे में कहा
जाए कि यह हमारी तरफ से है, तुम यह
न मान लेना कि यहोवा# का दिन आ
पहुँचा है और उतावली में आकर अपनी
समझ-बूझ न खो बैठना, न ही घबरा
जाना।

3 इस मामले में कोई भी तुम्हें बहका
न पाए, क्योंकि वह दिन तब तक नहीं
आएगा, जब तक कि पहले परमेश्वर के
खिलाफ बगावत* न हो और दुराचारी
पुरुष यानी विनाश का बेटा प्रकट न
किया जाए। **4** वह विरोध करने पर
तुला हुआ है और ऐसा हर कोई जिसे
“ईश्वर” कहा जाता है और ऐसी हर
चीज़ जिसे श्रद्धा दी जाती है, उन सबसे
खुद को बड़ा ठहराता है। यहाँ तक कि
वह परमेश्वर के मंदिर में बैठ जाता है
और इस तरह सब लोगों के सामने यह
दिखाता है कि वह एक ईश्वर जैसा है।
5 क्या तुम्हें याद नहीं कि जब मैं तुम्हारे
साथ था, तब मैं तुम्हें बताया करता था
कि ये बातें होंगी?

6 और तुम अब उस चीज़ को जानते
हो जो दुराचारी पुरुष को रोकने का काम
कर रही है जिससे कि वह अपने वक्त
पर ज़ाहिर किया जाए। **7** सच है कि
यह दुराचार, जो एक रहस्य है, अभी से
अपना काम शुरू कर चुका है। मगर यह
सिर्फ तब तक रहस्य है जब तक कि वह
हट नहीं जाता जो अभी इसे रोकने का
काम कर रहा है। **8** इसके बाद, वह
दुराचारी वाकई सामने आ जाएगा, और
प्रभु यीशु जिस दौरान अपनी मौजूदगी
ज़ाहिर करेगा वह उस दुराचारी को अपने
मुँह की फूँक से मिटा देगा और उसे भस्म
कर देगा। **9** मगर उस दुराचारी का
मौजूद होना शैतान का काम है। वह दुरा-
चारी हर तरह के शक्तिशाली काम और
झूठे चमत्कारों, आश्चर्य के कामों और
10 हर तरह की बुराई और छल के
साथ मौजूद होगा। उसके इन सब कामों
का निशाना वे लोग होंगे जो विनाश की
तरफ बढ़ रहे हैं, क्योंकि उन्होंने सच्चाई
से प्यार नहीं किया जिससे कि वे उद्धार
पा सकें। **11** इसी वजह से परमेश्वर
उनके बीच छल को काम करने देता है कि
वे झूठ पर यकीन करें, **12** जिससे
कि उन सबको न्यायदंड दिया जा सके
क्योंकि उन्होंने सच्चाई पर यकीन नहीं
किया बल्कि बुराई से खुशी पायी।

13 लेकिन भाइयो, तुम जो यहोवा
के प्यारे हो, तुम्हारे लिए हमेशा पर-
मेश्वर का धन्यवाद करना हमारा फर्ज़
बनता है, क्योंकि परमेश्वर ने तुम्हें
शुरू से चुन लिया है। उसने अपनी
पवित्र शक्ति से तुम्हें शुद्ध करने

2थिस्स 2:1* अतिरिक्त लेख 5 देखें। **2*** यूनानी *नफ्मा*। अतिरिक्त लेख 7 देखें। **2#** यह उन 237 जगहों में से एक जगह है, जहाँ परमेश्वर का नाम, ‘यहोवा’ इस अनुवाद के मुख्य पाठ में पाया जाता है। अतिरिक्त लेख 2 देखें। **3*** शाब्दिक, “धर्मत्याग।”

के ज़रिए और सच्चाई पर तुम्हारे
विश्वास की वजह से तुम्हें उद्धार के
लिए चुना है। **14** इसी उद्धार को
पाने के लिए उसने तुम्हें उस खुशखबरी
के ज़रिए बुलाया जो हम सुनाते हैं।
इसका मकसद यह है कि तुम हमारे प्रभु
यीशु मसीह की महिमा हासिल करो।
15 इसलिए भाइयो, मज़बूत खड़े रहो
और जो बातें* तुम्हें सिखायी गयी थीं
उन्हें थामे रहो, चाहे वे तुम्हें ज़बानी
सिखायी गयी थीं या हमारी चिट्ठी के
ज़रिए। **16** ऐसा हो कि खुद हमारा
प्रभु यीशु मसीह और परमेश्वर हमारा
पिता, जिन्होंने हमसे प्यार किया और
अपनी महा-कृपा के ज़रिए हमें हमेशा
कायम रहनेवाला दिलासा दिया और एक
शानदार आशा दी, **17** तुम्हारे दिलों
को दिलासा दें और तुम्हें हर अच्छे काम
और वचन के लिए मज़बूत करें।

3 भाइयो, आखिर में मैं यह कहता
हूँ कि हमारे लिए प्रार्थना करते
रहो ताकि यहोवा का वचन तेज़ी से
बढ़ता जाए और यह वैसे ही आदर के
साथ स्वीकार किया जाए जैसे तुम्हारे बीच
स्वीकार किया गया है। **2** और यह
भी प्रार्थना करो कि हम ऐसे लोगों से
बचाए जाएँ जो खतरनाक और दुष्ट हैं,
क्योंकि विश्वास हर किसी में नहीं होता।
3 मगर प्रभु विश्वासयोग्य है और वह
तुम्हें मज़बूत करेगा और उस दुष्ट से
बचाए रखेगा। **4** और हमें प्रभु में
तुम्हारे बारे में यह भरोसा है कि हमने
जिन-जिन बातों का आदेश दिया है तुम
वह सब कर रहे हो और आगे भी
करते रहोगे। **5** हमारी दुआ है कि
प्रभु तुम्हारे दिलों को कामयाबी से सही
दिशा में ले जाए, और तुम इसी तरह
परमेश्वर से प्यार करते रहो और मसीह
की खातिर धीरज धरते रहो।

6 भाइयो, हम प्रभु यीशु मसीह के
नाम से तुम्हें आदेश देते हैं कि ऐसे किसी
भी भाई से दूर हो जाओ और उससे कोई
मेल-जोल न रखो जो कायदे से नहीं
चलता और जो उस दस्तूर के मुताबिक
नहीं चलता जो तुमने हमसे पाया है।
7 तुम खुद जानते हो कि तुम्हें कैसे
हमारी मिसाल पर चलना चाहिए, क्योंकि
हमने तुम्हारे बीच रहते वक्त अपनी मन-
मानी नहीं की, **8** न ही हमने मुफ्त की
रोटी तोड़ी। इसके बजाय, हम रात-दिन
कड़ी मेहनत और घोर मज़दूरी करते थे
ताकि तुममें से किसी पर भी खर्चीला बोझ
न डालें। **9** ऐसा नहीं कि हमें अधि-
कार नहीं है, बल्कि हमने यह इसलिए
किया कि हम तुम्हारे लिए ऐसी मिसाल
बनें जिस पर तुम चलो। **10** सच तो
यह है कि जब हम तुम्हारे साथ थे, तो हम
तुम्हें यह आदेश दिया करते थे: “अगर
कोई काम नहीं करना चाहता, तो उसे
खाने का भी हक नहीं।” **11** हमने
सुना है कि तुम्हारे बीच कुछ लोग अपनी
मनमानी कर रहे हैं। वे कोई काम-धंधा
नहीं करते बल्कि उन बातों में दखल देते
फिरते हैं जिनसे उनका कोई लेना-देना

2थिस्स 2:15* शाब्दिक, “दस्तूर।”

नहीं। **12** ऐसे लोगों को हम प्रभु यीशु
मसीह में आदेश देते और उकसाते हैं कि
वे शांति से अपना काम-धंधा करें और
अपनी ही कमाई की रोटी खाएँ।

13 भाइयो, जहाँ तक तुम्हारी बात
है, सही काम करने में हार न मानो।
14 लेकिन अगर कोई उन बातों को
जो इस चिट्ठी के ज़रिए हमने कही हैं
नहीं मानता, तो ऐसे आदमी पर नज़र
रखो और उसके साथ मिलना-जुलना छोड़
दो ताकि वह शर्मिंदा हो। **15** फिर
भी उसे दुश्मन न समझो, मगर एक
भाई के नाते उसे समझाते-बुझाते रहो।

16 हमारी दुआ है कि शांति का प्रभु
तुम्हें हर वक्त और हर तरह से शांति
दे। प्रभु तुम सबके साथ हो।

17 मैं पौलुस खुद अपने हाथ से यह
नमस्कार लिख रहा हूँ, जो मेरी हर चिट्ठी
की पहचान है। मेरे लिखने का तरीका
यही है।

18 हमारे प्रभु यीशु मसीह की महा-
कृपा तुम सबके साथ हो।

तीमुथियुस के नाम पहली चिट्ठी

1 मैं पौलुस, हमारे उद्धारकर्त्ता पर-
मेश्वर और मसीह यीशु की आज्ञा
से, मसीह यीशु का एक प्रेषित* हूँ,
जो हमारी आशा है। **2** प्यारे तीमुथि-
युस के नाम, जो विश्वास में मेरा सच्चा
बेटा है:

तुझे परमेश्वर हमारे पिता और हमारे
प्रभु मसीह यीशु की तरफ से महा-कृपा,
दया और शांति मिले।

3 जब मैं मकिदुनिया जाने पर था,
तो मैंने तुझे इफिसुस में रहने का बढ़ावा
दिया था। अब भी मैं तुझे यही बढ़ावा
देता हूँ, ताकि तू वहाँ ऐसे कुछ लोगों
को जो अलग किस्म की शिक्षाएँ दे
रहे हैं, आज्ञा दे कि वे ऐसा न करें
4 और झूठी कहानियों पर और वंशा-
वलियों पर ध्यान न दें जिनसे कोई फायदा
नहीं होता। उनसे खोजबीन के लिए
सवाल उठते हैं और परमेश्वर की तरफ
से ऐसा कुछ हासिल नहीं होता जिससे
विश्वास मज़बूत हो। **5** वाकई इस
आदेश का मकसद यह है कि हम एक
साफ दिल और साफ ज़मीर से और ऐसे
विश्वास के साथ प्यार करें जिसमें कोई
कपट न हो। **6** इनसे भटककर कुछ
लोग फिज़ूल की बातों में लग गए हैं।
7 वे कानून के सिखानेवाले तो बनना
चाहते हैं मगर जो बातें वे कहते हैं या
जिन बातों के बारे में बड़े यकीन के साथ
दावा करते हैं, उन्हें समझते नहीं।

8 हम जानते हैं कि मूसा का कानून
बढ़िया है, बशर्ते इसे सही तरह से काम
में लाया जाए। **9** इस सच्चाई को

1तीमु 1:1* या, “भेजा गया।” यूनानी में *“अपोस्टो-लोस।”*

ध्यान में रखते हुए कि कानून नेक इंसान
के लिए नहीं बल्कि ऐसों के लिए जारी
किया जाता है जो दुराचारी और बागी
हैं, भक्तिहीन और पापी हैं, जो वफा-
दार नहीं होते,* पवित्र बातों को ठुक-
राते हैं, माता-पिता का कत्ल करने-
वाले, हत्यारे, **10** व्यभिचारी, पुरुषों
के साथ संभोग करनेवाले पुरुष, अपहरण
करनेवाले, झूठे, कसम तोड़नेवाले और
ऐसा हर काम करनेवाले हैं जो खरी*
शिक्षा के खिलाफ है। **11** यह खरी
शिक्षा, आनंदित परमेश्‍वर की उस शान-
दार खुशखबरी के मुताबिक है जिसे
सुनाने की ज़िम्मेदारी मुझे सौंपी गयी है।

12 हमारे प्रभु मसीह यीशु का मैं
एहसान मानता हूँ जिसने मुझे शक्ति
दी है क्योंकि उसने मुझे विश्‍वास-
योग्य मानकर एक सेवा के लिए ठह-
राया है, **13** हालाँकि पहले मैं पर-
मेश्‍वर की तौहीन करनेवाला और
ज़ुल्म ढानेवाला गुस्ताख था। फिर भी
मुझ पर दया की गयी क्योंकि मैंने यह
सब अविश्‍वास की दशा में, अनजाने में
किया था। **14** मगर मैंने हमारे प्रभु
की महा-कृपा बढ़-चढ़कर, बहुत ज़्यादा
पायी और मसीह यीशु में विश्‍वास और
प्यार भी पाया। **15** यह बात सच
और पूरी तरह मानने लायक है कि मसीह
यीशु पापियों का उद्धार करने के लिए
दुनिया में आया। और इन पापियों में
सबसे बड़ा मैं हूँ। **16** फिर भी, मुझ
पर इसलिए दया की गयी कि मुझ सबसे
बड़े पापी के ज़रिए मसीह यीशु अपनी
सारी सहनशीलता दिखा सके ताकि मैं
उन सबके लिए एक नमूना बनूँ जो हमेशा
की ज़िंदगी पाने के लिए उस पर विश्‍वास
रखनेवाले हैं।

17 युग-युग के राजा, अनश्‍वर,
अदृश्‍य और एकमात्र परमेश्‍वर का आदर
और उसकी महिमा हमेशा-हमेशा के लिए
होती रहे। आमीन।

18 मेरे बेटे तीमुथियुस, जो भविष्य-
वाणियाँ साफ तौर पर तेरे बारे में की
गयी थीं, उन्हीं के मुताबिक मैं तुझे यह
आदेश देता हूँ कि तू इनके मुताबिक
अच्छी लड़ाई लड़ता रह। **19** और
विश्‍वास को थामे रह और साफ ज़मीर
बनाए रख, जिसे कुछ लोगों ने दरकिनार
किया है और इस वजह से उनका विश्‍वास
ऐसे तहस-नहस हो गया है जैसे समंदर
में जहाज़ टूटकर तहस-नहस हो जाता
है। **20** हुमिनयुस और सिकंदर ऐसे
ही लोगों में से हैं और मैंने इन्हें शैतान
के हवाले कर दिया है ताकि वे अनु-
शासन पाकर यह सीख हासिल करें कि
परमेश्‍वर की तौहीन न करें।

2 इसलिए सबसे पहले मैं उकसाता हूँ
कि सब किस्म के लोगों के लिए
मिन्‍नतें, प्रार्थनाएँ, दूसरों की खातिर बिन-
तियाँ और धन्यवाद की प्रार्थनाएँ की
जाएँ। **2** राजाओं और उन सभी के
लिए जो ऊँची पदवी रखते हैं प्रार्थनाएँ

1तीमु 1:9* या, “अटल-कृपा नहीं दिखाते।”
10* शाब्दिक, “स्वास्थ्यकर।”

की जाएँ, ताकि हम चैन के साथ शांत
जीवन बिता सकें और पूरी गंभीरता के
साथ परमेश्वर की भक्ति कर सकें।
3 यह बात हमारे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर
की नज़र में अच्छी है और उसे यह
मंज़ूर भी है। **4** उसकी यही मरज़ी है
कि सब किस्म के लोगों का उद्धार हो
और वे सच्चाई का सही ज्ञान हासिल
करें। **5** परमेश्वर एक है और पर-
मेश्वर और इंसानों के बीच एक ही बिच-
वई है, यानी एक इंसान, मसीह यीशु
6 जिसने सबकी खातिर फिरौती का
बराबर दाम चुकाने के लिए खुद को दे
दिया। और इस बात की गवाही तय वक्त
पर ज़रूर दी जाएगी। **7** यही गवाही
देने के लिए मुझे एक प्रचारक और प्रेषित
ठहराया गया। मैं सच कह रहा हूँ,
झूठ नहीं बोलता कि मुझे विश्वास और
सच्चाई के बारे में गैर-यहूदियों का शिक्षक
ठहराया गया है।

8 इसलिए मैं चाहता हूँ कि हर जगह
वफादार पुरुष हाथ उठाकर प्रार्थना में
लगे रहें और क्रोध और बहसबाज़ी से
बचें। **9** इसी तरह मैं चाहता हूँ कि
स्त्रियाँ सलीकेदार कपड़ों से, मर्यादा के
साथ और स्वस्थ मन से अपना सिंगार
करें। वे खास तरीकों से बाल गूंथने, और
सोने या मोतियों या महँगे-महँगे कपड़ों से
नहीं **10** बल्कि भले कामों से अपना
सिंगार करें, क्योंकि परमेश्वर की भक्ति
करने का दावा करनेवाली स्त्रियों को यही
शोभा देता है।

11 एक स्त्री पूरी अधीनता दिखाते
हुए शांत रहकर सीखे। **12** मैं स्त्री
को सिखाने या पुरुष पर अधिकार चलाने
की इजाज़त नहीं देता, इसके बजाय उसे
शांत रहना चाहिए। **13** इसलिए कि
आदम पहले बनाया गया था, उसके
बाद हव्वा बनायी गयी थी। **14** और
आदम छला नहीं गया था, बल्कि स्त्री
पूरी तरह से छलावे में आ गयी और पाप
में पड़ गयी। **15** मगर वह बच्चों को
जन्म देने से सुरक्षित रहेगी, मगर ज़रूरी
है कि वह अपना विश्वास, प्यार, पवि-
त्रता और स्वस्थ मन बनाए रखे।

3 यह बात विश्वास के योग्य है।
अगर कोई आदमी निगरानी के पद
की ज़िम्मेदारी पाने की कोशिश में आगे
बढ़ता है, तो वह एक बढ़िया काम
करने की चाहत रखता है। **2** एक
निगरान को ऐसा होना चाहिए जिस
पर कोई आरोप न हो, उसकी एक ही
पत्नी हो, वह हर बात में संयम बरतता
हो, स्वस्थ मन रखनेवाला हो, कायदे से
चलता हो, मेहमान-नवाज़ी दिखानेवाला
हो, सिखाने की काबिलीयत रखता हो,
3 नशे में झगड़ा करनेवाला न हो, किसी
को चोट पहुँचानेवाला न हो, मगर लिहाज़
दिखानेवाला हो, झगड़ालू न हो, पैसे
का लालची न हो, **4** अपने घरबार
की अगुवाई करते हुए अच्छी देखरेख
करता हो, जिसके बच्चे पूरी गंभीर-
ता के साथ उसके अधीन रहते हों,
5 (वाकई अगर कोई आदमी अपने घर-
बार की देखरेख करना नहीं जानता, तो

वह परमेश्वर की मंडली* की देखभाल
कैसे कर पाएगा?) **6** नया विश्वासी
न हो कि कहीं वह घमंड से फूल न जाए
और वही दंड न पाए जो शैतान* ने पाया
है। **7** यही नहीं, बाहर के लोग भी
उसके बारे में अच्छा कहते हों, ताकि
उसकी बदनामी न हो और वह शैतान के
फंदे में न फँसे।

8 इसी तरह, सहायक सेवक को भी
गंभीर होना चाहिए। वह दोगली बातें
बोलनेवाला, बहुत ज़्यादा शराब पीनेवाला
और बेईमानी की कमाई का लालची
न हो। **9** और साफ ज़मीर के साथ
मसीही विश्वास, यानी पवित्र रहस्य को
थामे रहता हो।

10 यही नहीं, पहले ये परखे जाएँ
कि योग्य हैं या नहीं, इसके बाद इन्हें
सेवकों का काम दिया जाए, क्योंकि ये
निर्दोष पाए गए हैं।

11 इसी तरह, स्त्रियों को गंभीर
होना चाहिए। वे दूसरों को बदनाम करने-
वाली न हों, हर बात में संयम बरतने-
वाली हों, सब बातों में विश्वासयोग्य हों।

12 सहायक सेवक एक ही पत्नी का
पति हो, अपने बच्चों और घरबार की
अगुवाई करते हुए अच्छी देखरेख करने-
वाला हो। **13** इसलिए कि जो अच्छी
तरह से सेवा करते हैं वे अच्छा नाम
कमाते हैं और मसीही विश्वास के बारे में
बेझिझक बोलने की बड़ी हिम्मत पाते हैं।

14 हालाँकि मैं तुझे ये बातें लिख
रहा हूँ फिर भी मैं तेरे पास जल्द आने
की उम्मीद कर रहा हूँ। **15** लेकिन
अगर मुझे आने में देर हुई तो भी
तुझे पता रहेगा कि परमेश्वर के घराने
में तुझे किस तरह पेश आना चाहिए।
यह घराना जीवित परमेश्वर की मंडली
है और सच्चाई के लिए खंभा और
सहारा है। **16** वाकई, परमेश्वर के
लिए भक्ति का यह पवित्र रहस्य बहुत
महान है: 'यीशु हाड़-माँस के शरीर में
ज़ाहिर किया गया, उसे आत्मिक शरीर
में नेक करार दिया गया, वह स्वर्गदूतों
के सामने प्रकट हुआ, दूसरे राष्ट्रों के
बीच उसका प्रचार किया गया, दुनिया में
उस पर यकीन किया गया और महिमा
में उसे स्वर्ग उठा लिया गया।'

4 परमेश्वर की प्रेरणा* से कहे गए
वचन साफ-साफ कहते हैं कि आगे
ऐसा वक्त आएगा जब कुछ लोग, गुम-
राह करनेवाले प्रेरित वचनों और दुष्ट
स्वर्गदूतों की शिक्षाओं पर ध्यान देने
की वजह से विश्वास को छोड़ देंगे।
2 यह इसलिए होगा क्योंकि वे ऐसे कप-
टियों की झूठी बातों में आ जाते हैं,
जिनका ज़मीर ऐसे सुन्न हो गया है जैसे
गर्म लोहे से दागा गया हो। **3** ये लोग
शादी न करने की शिक्षा देंगे, और कुछ
चीज़ें खाने से मना करेंगे जिन्हें परमेश्वर
ने इसलिए बनाया है कि जो विश्वास
रखते हैं और सच्चाई को सही-सही जानते

1तीमु 3:5* मत्ती 16:18 दूसरा फुटनोट देखें। **6*** यूनानी में *"दियाबोलोस,"* जिसका मतलब है "निंदा करनेवाला।"

1तीमु 4:1* यूनानी *नफ्मा*। अतिरिक्त लेख 7 देखें।

हैं, वे धन्यवाद देकर उन्हें खा सकें।
4 इसकी वजह यह है कि परमेश्‍वर की
हर सृष्टि बढ़िया है और ऐसी कोई चीज़
नहीं जो ठुकराने लायक हो, बशर्ते उसे
धन्यवाद के साथ खाया जाए। **5** इस-
लिए कि परमेश्‍वर के वचन से और
उस पर की गयी प्रार्थना से वह पवित्र हो
जाती है।

6 भाइयों को इन बातों की सलाह
देने से तू मसीह यीशु का एक बढ़िया
सेवक ठहरेगा, जो विश्‍वास के वचनों से
और उस उत्तम शिक्षा से अपने मन
का पोषण करता है, जिस पर तू बड़े
ध्यान से चलता आया है। **7** मगर
झूठी कथा-कहानियों को ठुकरा दे जो
पवित्र बातों के खिलाफ हैं और जो बूढ़ियाँ
सुनाया करती हैं। इसके बजाय, परमेश्‍वर
की भक्‍ति के लक्ष्य तक पहुँचने के लिए
खुद को प्रशिक्षण देता रह। **8** इस-
लिए कि शरीर की कसरत सिर्फ कुछ हद
तक फायदेमंद होती है, मगर परमेश्‍वर
की भक्‍ति सब बातों के लिए फायदेमंद
है। क्योंकि इसके साथ आशीषों का वादा
जुड़ा हुआ है, न सिर्फ आज की ज़िंदगी
के लिए बल्कि आगे मिलनेवाली ज़िंदगी
के लिए भी। **9** यह बात विश्‍वास के
योग्य और पूरी तरह मानने लायक है।
10 इसी लक्ष्य को पाने के लिए हम कड़ी
मेहनत करते हुए संघर्ष कर रहे हैं,
क्योंकि हमने एक जीवित परमेश्‍वर पर
अपनी आशा रखी है जो सब किस्म के
लोगों का उद्धार करानेवाला परमेश्‍वर है,
खासकर उनका जो विश्‍वासयोग्य हैं।

11 इन बातों की आज्ञा देता रह और
इनके बारे में सिखाता रह। **12** कोई
भी तेरी कम उम्र की वजह से तुझे नीची
नज़रों से न देखे। इसके बजाय, बोलने
में, चालचलन में, प्यार में, विश्‍वास में
और शुद्ध चरित्र बनाए रखने में विश्‍वास-
योग्य लोगों के लिए एक मिसाल बन जा।
13 जब तक मैं न आऊँ, तब तक लोगों
के सामने पढ़कर सुनाने, सीख देकर उक-
साने और सिखाने में जी-जान से लगा
रह। **14** अपने उस वरदान की तरफ
लापरवाह न हो जो तुझे उस वक्‍त दिया
गया था जब भविष्यवक्‍ताओं ने तेरे बारे
में भविष्यवाणी की थी और प्राचीनों के
दल ने तुझ पर अपने हाथ रखे थे।
15 इन बातों के बारे में गहराई से
सोचता रह और इन्हीं में लगा रह, ताकि
तेरी तरक्की सब लोगों पर ज़ाहिर हो।
16 खुद पर और अपनी शिक्षा पर लगा-
तार ध्यान देता रह। इन्हीं बातों को थामे
रह, क्योंकि इससे तू खुद अपना और तेरी
बात सुननेवालों का भी उद्धार करेगा।

5 किसी बुज़ुर्ग की सख्ती से आलोचना
न कर। इसके बजाय, उसे अपना
पिता समझकर प्यार से समझा, नौ-
जवानों को अपने भाई समझकर,
2 बुज़ुर्ग स्त्रियों को माँ समझकर और
कम उम्र की स्त्रियों को बहनें समझकर
सारी पवित्रता के साथ समझा।

3 जो विधवाएँ वाकई ज़रूरतमंद हैं,
उनका आदर कर और उनकी देखभाल
कर। **4** लेकिन अगर किसी विधवा

के बच्चे या नाती-पोते हैं, तो ये बच्चे
परमेश्वर की भक्ति दिखाते हुए पहले
अपने ही घर के लोगों की देखभाल करना
सीखें और अपने माता-पिता और उनके
माता-पिता को उनका हक अदा करते
रहें, क्योंकि परमेश्वर इससे खुश होता
है। **5** जो विधवा सचमुच ज़रूरतमंद
है और जिसका देखनेवाला कोई नहीं है,
वह परमेश्वर पर आशा रखती है और
रात-दिन मिन्नतों और प्रार्थनाओं में लगी
रहती है। **6** मगर जो भोग-विलास में
पड़ जाती है वह ज़िंदा होते हुए भी मर
गयी है। **7** इसलिए ये आज्ञाएँ उन्हें
देता रह ताकि कोई उन पर उंगली
न उठा सके। **8** बेशक अगर कोई
अपनों की, खासकर अपने घर के लोगों
की देखभाल नहीं करता, तो वह विश्वास
से मुकर गया है और अविश्वासी से भी
बदतर हो गया है।

9 उसी विधवा का नाम मदद की
सूची में लिखा जाए जो साठ साल से कम
की न हो, एक ही पति की पत्नी रही हो,
10 जिसके भले कामों की लोग गवाही
देते हों कि उसने अपने बच्चों को अच्छी
परवरिश दी है, मेहमान-नवाज़ी दिखायी
है, पवित्र जनों के पाँव धोए हैं, जो
मुसीबत में थे उन्हें राहत पहुँचायी है और
हर भला काम करने में मेहनत की है।

11 दूसरी तरफ, कम उम्र की
विधवाओं को जो शादी करना चाहती हैं,
सूची में शामिल न कर। क्योंकि जब
उनकी यौन-इच्छाएँ उनके और मसीह की
सेवा के बीच आ जाती हैं, **12** तो वे
दोषी ठहरती हैं, क्योंकि उन्होंने विश्वास
की वजह से पहले जो इरादा ज़ाहिर किया
था अब वे उसके खिलाफ जाती हैं।
13 साथ ही उन्हें खाली रहने और घर-
घर घूमने की आदत पड़ जाती है। हाँ,
वे न सिर्फ खाली रहती हैं बल्कि उन्हें
गप्पे लड़ाने की आदत पड़ जाती है और
वे दूसरों के मामलों में दखल देती रहती
हैं। वे ऐसी बातों के बारे में बोलती हैं जो
उन्हें नहीं बोलनी चाहिए। **14** इस-
लिए मैं यही चाहता हूँ कि कम उम्र
की विधवाएँ शादी करें, बच्चे पैदा करें
और घर-गृहस्थी संभालें ताकि विरोधियों
को हमारे बारे में बुरा-भला कहने का
मौका न दें। **15** दरअसल, कुछ तो
भटककर शैतान के पीछे हो भी चुकी
हैं। **16** अगर किसी विश्वासी स्त्री के
परिवार में विधवाएँ हैं, तो वह उनकी
देखभाल करे और मंडली पर उनका
बोझ न डाले। तब मंडली ऐसी विध-
वाओं की देखभाल कर पाएगी जो वाकई
ज़रूरतमंद हैं।

17 जो प्राचीन बढ़िया तरीके से
अगुवाई करते हैं, वे दुगुने आदर के
योग्य समझे जाएँ। खासकर वे जो बोलने
और सिखाने में कड़ी मेहनत करते हैं।
18 इसलिए कि शास्त्रवचन कहता है:
"अनाज की दँवरी करनेवाले बैल का मुँह
न बाँधना" और यह भी कि "काम करने-
वाला अपनी मज़दूरी पाने का हकदार
है।" **19** किसी भी प्राचीन के खिलाफ
लगाए गए इलज़ाम को तब तक स्वीकार
न करना, जब तक दो या तीन गवाह

इसका सबूत न दें। **20** जो पाप में
लगे रहते हैं, उन्हें सब देखनेवालों के
सामने ताड़ना दे, ताकि बाकी लोग भी
पाप करने से डरें। **21** मैं तुझे पर-
मेश्वर और मसीह यीशु और चुने हुए
स्वर्गदूतों के सामने पूरी गंभीरता के साथ
यह हुक्म देता हूँ कि पहले से कोई राय
कायम किए बिना तू यह सब कर और
पक्षपात की भावना से कुछ न कर।

22 किसी भी आदमी को ज़िम्मेदारी
के पद पर ठहराने में* कभी जल्दबाज़ी
न कर। न ही दूसरों के पापों का हिस्से-
दार बन, अपना चरित्र साफ बनाए रख।

23 अब से पानी मत पीया कर,*
बल्कि अपने पेट के लिए और बार-बार
की बीमारी की वजह से थोड़ी दाख-मदिरा
पिया कर।

24 कुछ लोगों के पाप तो सरेआम
ज़ाहिर हो जाते हैं जिससे उन्हें फौरन
सज़ा मिलती है, मगर दूसरों के पाप भी
ज़ाहिर होते हैं, चाहे बाद में ही सही।
25 इसी तरह अच्छे काम भी सरेआम
ज़ाहिर होते हैं और जो अच्छे काम ज़ाहिर
नहीं होते, वे भी छिपाए नहीं जा सकते।

6 जितने भी दास हैं,* वे सब अपने
मालिकों को पूरे आदर के लायक
समझा करें ताकि परमेश्वर के नाम और
मसीही शिक्षाओं की कभी कोई तौहीन
न कर सके। **2** और जिन दासों के
मालिक विश्वासी हैं, वे अपने मालिकों
को नीची नज़र से न देखें क्योंकि वे
विश्वास में उनके भाई हैं। इसके बजाय,
वे और भी खुशी से उनकी सेवा करें
क्योंकि जो उनकी अच्छी सेवा से फायदा
पा रहे हैं वे उनके संगी विश्वासी और
प्यारे भाई हैं।

यही बातें सिखाता रह और सीख
देकर उकसाता रह। **3** अगर कोई
आदमी इससे अलग शिक्षा देता है और
हमारे प्रभु यीशु मसीह की खरी शिक्षा से
सहमत नहीं होता, न ही उस शिक्षा से
सहमत होता है जो परमेश्वर की भक्ति के
मुताबिक है, **4** तो वह घमंड से फूल
गया है और कोई समझ नहीं रखता।
बल्कि उसे वाद-विवाद करने और शब्दों
पर बहसबाज़ी करने का मानसिक रोग
है। इन्हीं बातों से ईर्ष्या, झगड़े, गाली-
गलौज और बैर-भाव से शक करने की
शुरूआत होती है **5** और ये उन लोगों
में छोटी-छोटी बातों पर झगड़े पैदा करती
हैं जिनका दिमाग भ्रष्ट हो गया है और
जो सच्चाई से दूर हैं। वे सोचते हैं कि
परमेश्वर की भक्ति, कमाई करने का
एक साधन है। **6** असल में, परमेश्वर
की भक्ति ही अपने आप में बड़ी कमाई
है, बशर्ते कि जो हमारे पास है हम उसी
में संतोष करें। **7** क्योंकि हम न तो
दुनिया में कुछ लाए हैं, न ही यहाँ
से कुछ ले जा सकते हैं। **8** इसलिए
अगर हमारे पास खाना, कपड़ा और सिर
छिपाने की जगह है, तो उसी में संतोष
करना चाहिए।

1तीमु 5:22* या, "पर हाथ रखने में।" **23*** यह दूषित पानी पीने के बारे में कहा गया था, जो तीमुथियुस की बीमारी की वजह थी। **6:1*** या, "दासता के जूए के नीचे हैं।"

9 लेकिन जो लोग हर हाल में अमीर
बनना चाहते हैं, वे परीक्षा और फंदे
में फँस जाते हैं और मूर्खता से भरी
और खतरनाक ख्वाहिशों में पड़ जाते हैं
जो इंसान को विनाश और बरबादी की
खाई में धकेल देती हैं। **10** पैसे का
प्यार तरह-तरह की बुराइयों की जड़ है
और इसमें पड़कर कुछ लोग विश्वास से
भटक गए हैं और उन्होंने कई तरह की
दुःख-तकलीफों से खुद को छलनी कर
लिया है।

11 मगर हे परमेश्वर के बंदे, तू इन
बातों से दूर भाग। इसके बजाय, नेकी,
परमेश्वर की भक्ति, विश्वास, प्यार और
धीरज जैसे गुण और कोमल स्वभाव पैदा
करने में लगा रह। **12** विश्वास की
अच्छी लड़ाई लड़, हमेशा की ज़िंदगी पर
अपनी पकड़ मज़बूत कर जिसके लिए
तुझे बुलाया गया था और जिसके बारे में
अपने विश्वास का तू ने बहुत-से गवाहों
के सामने ऐलान किया था।

13 सबको जीवन देनेवाले पर-
मेश्वर को और मसीह यीशु को हाज़िर
जानते हुए, जिसने पुन्तियुस पीलातुस के
सामने सरेआम बढ़िया गवाही दी थी, मैं
तुझे ये आदेश देता हूँ **14** कि जो
आज्ञा तुझे दी गयी है, उसे बेदाग और
निर्दोष रहते हुए हमारे प्रभु यीशु मसीह के
ज़ाहिर होने तक मानता रह। **15** प्रभु
यीशु मसीह तय किए गए वक्त पर खुद
को ज़ाहिर करेगा। वही धन्य और एक-
मात्र शक्तिमान सम्राट, राजाओं का राजा
और प्रभुओं का प्रभु है। **16** सिर्फ
उसी के पास अमरता है, वह उस रौशनी
में रहता है जिस तक कोई पहुँच नहीं
सकता, और जिसे इंसानों में से किसी ने
न तो देखा है और न ही देख सकता है।
आदर और हमेशा तक बनी रहनेवाली
शक्ति उसी की हो। आमीन।

17 जो इस ज़माने* में दौलतमंद हैं,
उन्हें आदेश दो कि वे अभिमानी न बनें
और अपनी आशा उस धन पर न रखें
जो आज है और कल नहीं रहेगा, बल्कि
उस परमेश्वर पर रखें जो सब चीज़ों का
लुत्फ उठाने के लिए हमें सबकुछ भरपूर
देता है। **18** उन दौलतमंदों को यह
आदेश दे कि वे ऐसे काम करें जो दूसरों
के लिए अच्छे हैं, भले कामों में धनी बनें,
दरियादिल हों और जो उनके पास है वह
दूसरों में बाँटने के लिए तैयार रहें।
19 और अपने लिए ऐसा खज़ाना जमा
करें, जो सही-सलामत रहेगा और भविष्य
के लिए एक बढ़िया नींव बन जाएगा
ताकि वे असली ज़िंदगी पर मज़बूत पकड़
हासिल कर सकें।

20 मेरे प्यारे तीमुथियुस, तुझे जो
अमानत सौंपी गयी है, उसकी हिफाज़त
कर। उन खोखली बातों से दूर रह
जो पवित्र बातों के खिलाफ हैं और उस
ज्ञान से दूर रह जिसे झूठ ही ज्ञान कहा
जाता है। **21** ऐसे ज्ञान का दिखावा
करने की वजह से कुछ लोग विश्वास की
राह से भटक गए हैं।

परमेश्वर की महा-कृपा तुम लोगों पर
होती रहे।

1तीमु 6:17* या, “दुनिया की व्यवस्था।”

तीमुथियुस के नाम दूसरी चिट्ठी

1 मैं पौलुस, उस ज़िंदगी के वादे के
मुताबिक जो मसीह यीशु से जुड़ी
है, परमेश्‍वर की मरज़ी से मसीह यीशु
का प्रेषित* हूँ। **2** मेरे प्यारे बेटे तीमु-
थियुस के नामः

परमेश्‍वर हमारे पिता और मसीह यीशु
हमारे प्रभु की महा-कृपा, दया और शांति
तुझ पर हो।

3 मैं परमेश्‍वर का एहसानमंद हूँ,
जिसकी पवित्र सेवा मैं अपने बापदादों की
तरह और साफ ज़मीर के साथ करता हूँ,
कि मैंने तुझे अपनी मिन्‍नतों में रात-दिन
याद करना नहीं छोड़ा है **4** और तेरे
आंसुओं को याद कर मैं तुझे देखने के
लिए तरस रहा हूँ, ताकि तुझसे मिलकर
खुशी से भर जाऊँ। **5** मैं तेरे उस
विश्‍वास को याद करता हूँ जिसमें कोई
कपट नहीं। ऐसा ही विश्‍वास सबसे पहले
तेरी नानी लोइस और तेरी माँ यूनीके
में था और अब मुझे यकीन है कि
तुझमें भी है।

6 इसी वजह से मैं तुझे याद
दिलाता हूँ कि परमेश्‍वर का जो वरदान
तुझे मेरे हाथ रखने से मिला था, उसे
तू एक ज्वाला की तरह जलाए रख।
7 इसलिए कि परमेश्‍वर ने हमें जो
मन का रुझान दिया है वह कायर-
ता का नहीं, बल्कि शक्‍ति का और
प्यार का और स्वस्थ मन रखने का
रुझान है। **8** इसलिए तू न तो हमारे
प्रभु की गवाही देने से और न मुझसे
जो उसकी खातिर कैदी हूँ, शर्मिंदा हो।
मगर परमेश्‍वर की शक्‍ति से खुशखबरी
की खातिर दुःख झेलने से न कतरा।
9 उसने हमें बचाया है और पवित्र बुलावे
के साथ बुलाया है। मगर यह बुलावा हमें
अपने कामों की वजह से नहीं, बल्कि
इसलिए मिला है क्योंकि यह परमेश्‍वर
का मकसद था और उसने हम पर महा-
कृपा की थी। उसने हम पर यह महा-
कृपा मसीह यीशु की वजह से मुद्दतों पहले
की थी। **10** मगर अब हमारे उद्धार-
कर्त्ता, मसीह यीशु के प्रकट होने की वजह
से इस महा-कृपा के बारे में हमें साफ
समझ दी गयी है। उसने मौत को रद्द कर
दिया और खुशखबरी के ज़रिए इस बात
पर रौशनी डाली है कि जीवन और अन-
श्‍वरता कैसे मिलेगी। **11** यही खुश-
खबरी सुनाने के लिए मुझे एक प्रचारक,
प्रेषित और शिक्षक ठहराया गया है।

12 इसी वजह से मैं ये सारे दुःख
उठा रहा हूँ, मगर मैं शर्मिंदा नहीं हूँ।
क्योंकि मैंने जिस पर यकीन किया है उसे
जानता हूँ। और मुझे पूरा भरोसा है कि
मैंने उसे जो अमानत सौंपी है उसकी
वह उस दिन तक हिफाज़त करने के

2तीमु 1:1* या, "भेजा गया।" यूनानी में *"अपोस्टो-
लोस।"*

काबिल है। **13** जो खरी* शिक्षाएँ
तू ने मुझसे सुनीं उनके नमूने को उस
विश्वास और प्यार के साथ थामे रह जो
तुझे मसीह यीशु में है। **14** परमेश्वर
की पवित्र शक्ति के ज़रिए, जो हममें
निवास करती है, इस अनमोल अमानत
की हिफाज़त कर।

15 तू जानता है कि एशिया* ज़िले
के सब लोगों ने मुझसे किनारा कर
लिया है। फूगिलुस और हिरमुगिनेस भी
इनमें से हैं। **16** उनेसिफुरुस के घराने
पर प्रभु परमेश्वर की दया बनी रहे,
क्योंकि उसने कई बार मेरे जी को तरो-
ताज़ा किया है और वह मेरी ज़ंजीरों की
वजह से शर्मिंदा नहीं हुआ। **17** इसके
बजाय, जब वह रोम में था, तो उसने
बड़ी लगन से मेरी तलाश की और मुझे
ढूँढ़ निकाला। **18** मेरी दुआ है कि
प्रभु यहोवा* उस दिन उसे अपनी दया
दिखाए। उसने इफिसुस में मेरी क्या-क्या
सेवा की, यह तू अच्छी तरह जानता है।

2 इसलिए मेरे बेटे, मसीह यीशु के
साथ एकता में होने से जो महा-
कृपा मिलती है, तू उसी में बने रहकर
शक्ति हासिल करता जा। **2** और जो
बातें तू ने मुझसे सुनी हैं और जिसकी
बहुतों ने गवाही दी है, वे बातें विश्वास-
योग्य पुरुषों को सौंप दे ताकि वे बदले
में दूसरों को सिखाने के लिए ज़रूरत
के हिसाब से योग्य बनें। **3** मसीह
यीशु के एक बढ़िया सैनिक की तरह
दुःख उठाने से न कतरा। **4** कोई भी
आदमी जो सैनिक-सेवा में है, वह खुद
को दुनिया के किसी कारोबार में नहीं
लगाता, ताकि वह उसकी मंज़ूरी पा सके
जिसने उसे सैनिक के तौर पर भर्ती किया
है। **5** और जो कोई खेल-प्रतियोगिता
में हिस्सा लेता है, अगर वह नियमों के
हिसाब से न खेले तो इनाम* नहीं पाता।
6 एक मेहनती किसान को ही सबसे
पहले अपनी उपज का हिस्सा मिलना
चाहिए। **7** मैं जो कह रहा हूँ उस पर
लगातार ध्यान देता रह। प्रभु तुझे सब
बातों की गहरी समझ देगा।

8 याद रख कि यीशु मसीह को मरे
हुओं में से जी उठाया गया था और वह
दाविद का वंश था, और इसी की खुश-
खबरी मैं सुनाता हूँ। **9** और इसकी
वजह से मैं इस हद तक दुःख सह रहा
हूँ कि मैं एक अपराधी की तरह ज़ंजीरों
में हूँ। फिर भी परमेश्वर का वचन कैद
नहीं है। **10** इसी वजह से मैं चुने
हुओं की खातिर सबकुछ सहे जा रहा हूँ,
ताकि वे भी मसीह यीशु के साथ एकता में
उद्धार और वह महिमा पा सकें जो हमेशा
तक रहेगी। **11** यह बात विश्वास के
योग्य है: अगर हम उसके साथ मर चुके
हैं तो वाकई उसके साथ जीएँगे भी।
12 अगर हम धीरज धरते रहें तो उसके
साथ राजा बनकर राज भी करेंगे। अगर

2तीमु 1:13* शाब्दिक, "स्वास्थ्यकर।" **15*** प्रेषि 2:9 फुटनोट देखें। **18*** यह उन 237 जगहों में से एक जगह है, जहाँ परमेश्वर का नाम, 'यहोवा' इस अनुवाद के मुख्य पाठ में पाया जाता है। अतिरिक्त लेख 2 देखें।

2तीमु 2:5* शाब्दिक, "ताज।"

हम उससे इनकार करेंगे, तो वह भी हमसे
इनकार कर देगा। **13** लेकिन अगर
हम विश्वासघाती निकलें, तो भी वह
विश्वासयोग्य बना रहता है, क्योंकि वह
खुद से इनकार नहीं कर सकता।

14 बतौर गवाह उन्हें परमेश्वर के
सामने इन बातों की याद दिलाता रह और
हिदायत दे कि वे शब्दों के बारे में
झगड़ा न करें, जिससे कुछ फायदा नहीं
होता क्योंकि यह सुननेवालों को नुकसान
पहुँचाता है। **15** तू अपना भरसक
कर ताकि खुद को परमेश्वर के सामने
एक ऐसे सेवक की तरह पेश कर सके जो
उसकी मंज़ूरी पाए और जिसे अपने काम
पर शर्मिंदा न होना पड़े, और जो सच्चाई
के वचन को सही तरह से इस्तेमाल करता
हो। **16** खोखली बातों से दूर रह जो
पवित्र बातों के खिलाफ हैं, क्योंकि जो
ऐसी बातें करते हैं वे भक्तिहीनता में और
भी बढ़ते जाएँगे। **17** और जैसे सड़ा
घाव शरीर को गलाता जाता है वैसे ही
उनकी शिक्षाएँ फैलती जाएँगी। हुमिनयुस
और फिलेतुस ऐसे ही लोगों में से हैं।
18 ये आदमी सच्चाई के रास्ते से हट
गए हैं, क्योंकि ये कहते हैं कि मरे हुओं
का जी उठना हो चुका है, और ये कुछ
लोगों के विश्वास को तबाह कर रहे हैं।
19 मगर परमेश्वर ने जो पक्की नींव
डाली है वह मज़बूत बनी रहती है और
उस पर ये वचन एक मुहर की तरह लिखे
हैं: "यहोवा उन्हें जानता है जो उसके
अपने हैं" और "हर कोई जो यहोवा का
नाम लेता है वह बुराई को त्याग दे।"

20 एक बड़े घर में न सिर्फ सोने
और चाँदी के बल्कि लकड़ी और मिट्टी
के भी बर्तन होते हैं। कुछ आदर के काम
के लिए तो कुछ मामूली इस्तेमाल के
लिए। **21** अगर कोई मामूली इस्ते-
माल के इन बर्तनों से खुद को दूर रखता
है, तो वह ऐसा बर्तन बनेगा जो आदर
के इस्तेमाल के लिए पवित्र ठहराया जाता
है, अपने मालिक के काम आता है और
हर अच्छे काम के लिए तैयार किया जाता
है। **22** इसलिए जवानी में उठनेवाली
इच्छाओं से दूर भाग, और उन लोगों के
साथ जो साफ दिल से प्रभु का नाम लेते
हैं, नेकी, विश्वास, प्यार और शांति
हासिल करने में जी-जान से लगा रह।

23 मूर्खता से भरे और बेकार
के वाद-विवादों में न पड़, क्योंकि तू
जानता है कि इनसे झगड़े पैदा होते हैं।
24 मगर प्रभु के दास को लड़ने की
ज़रूरत नहीं बल्कि ज़रूरी है कि वह सब
लोगों के साथ नर्मी से पेश आए, सिखाने
की काबिलीयत रखता हो और बुराई
का सामना करते वक्त खुद को काबू में
रखे **25** और जो सही नज़रिया नहीं
दिखाते उन्हें कोमलता से हिदायतें दे। हो
सकता है परमेश्वर उन्हें पश्चाताप करने
का मौका दे जिससे उन्हें सच्चाई का सही
ज्ञान हासिल हो, **26** और वे शैतान*
के उस फंदे से छूटकर होश में आ जाएँ
जिसमें उसने उन्हें जीते-जी फँसा लिया था
ताकि वे उसकी मरज़ी पूरी करें।

2तीमु 2:26* यूनानी में *"दियाबोलोस,"* जिसका मत-
लब है "निंदा करनेवाला।"

3 मगर यह जान ले कि आखिरी दिनों
में संकटों से भरा ऐसा वक्त आएगा
जिसका सामना करना मुश्किल होगा।
2 इसलिए कि लोग सिर्फ खुद से प्यार
करनेवाले, पैसे से प्यार करनेवाले, डींगें
मारनेवाले, मगरूर, निंदा करनेवाले,
माता-पिता की न माननेवाले, एहसान
न माननेवाले, विश्वासघाती, **3** मोह-
ममता न रखनेवाले, किसी भी बात पर
राज़ी न होनेवाले, बदनाम करनेवाले, अ-
संयमी, खूँखार, भलाई से प्यार न रख-
नेवाले, **4** धोखेबाज़, ढीठ, घमंड से
फूले हुए, परमेश्वर के बजाय मौज-
मस्ती से प्यार करनेवाले होंगे। **5** वे
भक्ति का दिखावा तो करेंगे, मगर उनकी
ज़िंदगी में इसकी शक्ति का असर नहीं
दिखायी देगा। ऐसों से दूर हो जाना।
6 इन्हीं में से वे लोग उठते हैं जो
चालाकी से घरों में अपनी पैठ बना लेते
हैं और ऐसी डाँवाँडोल स्त्रियों को फाँस-
कर अपना गुलाम बना लेते हैं जिन पर
पाप हावी रहता है और जो तरह-तरह की
ख्वाहिशों के पीछे भागती हैं, **7** हमेशा
सीखती तो रहती हैं मगर फिर भी सच्चाई
का सही ज्ञान कभी हासिल नहीं कर
पातीं।

8 जिस तरह यन्नेस और यम्ब्रेस ने
मूसा का विरोध किया था, उसी तरह ये
लोग सच्चाई का विरोध करते रहते हैं।
इनका दिमाग पूरी तरह से भ्रष्ट हो चुका
है और जहाँ तक मसीही विश्वास की बात
है, इन्हें ठुकरा दिया गया है। **9** मगर
ये लोग और आगे नहीं बढ़ पाएँगे,
क्योंकि जैसे उन दोनों का पागलपन
सब पर ज़ाहिर हो गया था वैसे ही
इनका भी हो जाएगा। **10** मगर तू
ने मेरी शिक्षाओं, मेरे जीने के तरीके,
मेरे मकसद, मेरे विश्वास, मेरी सह-
नशीलता, मेरे प्यार और धीरज को
11 और मुझ पर ढाए गए ज़ुल्मों और
मेरे दुःखों को नज़दीकी से देखा है। तू यह
भी जानता है कि अंताकिया, इकुनियुम
और लुस्त्रा में मैंने क्या-क्या झेला और
कैसे-कैसे ज़ुल्म सहे, और फिर भी प्रभु
ने मुझे इन सबसे बचाया। **12** दर-
असल, जितने भी मसीह यीशु में पर-
मेश्वर की भक्ति के साथ जीवन बिताना
चाहते हैं उन सब पर इसी तरह ज़ुल्म ढाए
जाएँगे। **13** मगर दुष्ट और फरेबी,
बुराई में बद-से-बदतर होते चले जाएँगे।
वे खुद तो गुमराह होंगे, साथ ही दूसरों
को भी गुमराह करते जाएँगे।

14 मगर जो बातें तू ने सीखी हैं और
जिनका तुझे दलीलें देकर यकीन दिलाया
गया था, उन्हीं बातों पर कायम रह, यह
जानते हुए कि तू ने ये किन लोगों से
सीखी थीं **15** और यह भी कि जब
तू एक शिशु था तभी से पवित्र शास्त्र के
लेख तेरे जाने हुए हैं। ये वचन तुझे
मसीह यीशु में विश्वास के ज़रिए उद्धार
पाने के लिए बुद्धिमान बना सकते हैं।
16 पूरा शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से
लिखा गया है और सिखाने, ताड़ना देने,
टेढ़ी बातों को सीध में लाने और पर-
मेश्वर के स्तरों के मुताबिक अनुशासन

देने के लिए फायदेमंद है, **17** ताकि
परमेश्वर का सेवक हर अच्छे काम के
लिए पूरी तरह से योग्य और हर तरह
से तैयार हो सके।

4 मैं तुझे परमेश्वर के सामने और
मसीह यीशु के सामने, जिसे जीवितों
और मरे हुओं का न्यायी ठहराया
गया है, और उसके ज़ाहिर होने और
उसके राज के ज़रिए यह आदेश देता
हूँ **2** कि तू वचन का प्रचार करने
में जी-जान से लगा रह, चाहे अच्छा
वक्त हो या बुरा। पूरी सहनशीलता और
सिखाने की कला के साथ ताड़ना दे, डाँट
और सीख देकर उकसा। **3** इसलिए
कि ऐसा वक्त आएगा जब वे खरी
शिक्षा को बरदाश्त न कर सकेंगे, मगर
अपनी ख्वाहिशों के मुताबिक अपने लिए
ऐसे शिक्षक इकट्ठे करेंगे जो उनके कानों
की खुजली मिटा सकें। **4** वे सच्चाई
की तरफ तो अपने कान बंद कर लेंगे
मगर झूठी कहानियों पर कान लगाएँगे।
5 लेकिन तू सब बातों में चौकन्ना रह,
बुराई सह, प्रचारक का काम कर, अपनी
सेवा को अच्छी तरह पूरा कर।

6 मुझे अब अर्घ की तरह उंडेला जा
रहा है और मेरी रिहाई का वक्त एक-
दम करीब है। **7** मैंने अच्छी लड़ाई
लड़ी है। मैंने अपनी दौड़ पूरी कर ली है,
मैंने विश्वास को थामे रखा है। **8** अब
से मेरे लिए नेकी का ताज रखा हुआ है,
जिसे प्रभु जो सच्चा न्यायी है, मुझे उस
दिन इनाम में देगा। यह इनाम सिर्फ मुझे
नहीं बल्कि उन सभी को मिलेगा जो
उसके ज़ाहिर होने का बेताबी से इंतज़ार
करते हैं।

9 मेरे पास जल्द-से-जल्द आने की
पूरी कोशिश कर। **10** इसलिए कि
देमास ने इस ज़माने* के मोह में पड़कर
मुझे छोड़ दिया है और वह थिस्सलुनीके
चला गया। क्रेसकेंस गलातिया को और
तीतुस दलमतिया को चला गया है।
11 सिर्फ लूका मेरे साथ है। मरकुस को
अपने साथ लेते आना क्योंकि वह सेवा के
लिए मेरे बहुत काम का है। **12** तुखि-
कुस को मैंने इफिसुस भेज दिया है।
13 जब तू आए तो मेरा वह चोगा, जिसे
मैंने त्रोआस में करपुस के यहाँ छोड़ा था,
और खर्रे, खासकर चर्मपत्र लेते आना।

14 तांबे का काम करनेवाले ठठेरे
सिकंदर ने मुझे बहुत नुकसान पहुँचाया
है। यहोवा उसकी करतूतों का बदला उसे
देगा। **15** और तू भी उससे होशियार
रहना क्योंकि उसने हमारे संदेश का हद-
से-बढ़कर विरोध किया है।

16 अपनी सफाई देने में, मेरी पहली
पेशी के वक्त कोई भी मेरा साथ देने नहीं
आया। सबने मुझसे किनारा कर लिया,
(काश उनके इस काम का उनसे लेखा न
लिया जाए।) **17** मगर प्रभु मेरे पास
खड़ा रहा और उसने मुझमें शक्ति भर
दी ताकि मेरे ज़रिए अच्छी तरह प्रचार
पूरा हो और सब जातियों के लोग सुन
सकें। मुझे शेर के मुँह से छुड़ाया गया।
18 प्रभु मुझे हर दुष्ट चाल से ज़रूर

2तीमु 4:10* या, “दुनिया की व्यवस्था।”

बचाएगा और अपने स्वर्गीय राज के
लिए ज़रूर बचाए रखेगा। उसकी महिमा
हमेशा-हमेशा के लिए होती रहे। आमीन।
19 प्रिसका और अक्विला को, और
उनेसिफुरुस के घराने को मेरा नमस्कार
कहना।
20 इरास्तुस कुरिंथ में रह गया,
मगर त्रुफिमुस को मैं मीलेतुस में बीमार
छोड़ आया था। **21** सर्दियाँ शुरू
होने से पहले मेरे पास आने की पूरी
कोशिश कर।

यूबूलुस, पूदेंस, लीनुस, क्लौदिया और
सारे भाई तुझे नमस्कार कहते हैं।

22 तू जिस भावना के साथ सेवा
करता है, उस पर प्रभु की आशीष हो।
उसकी महा-कृपा तुम लोगों पर होती रहे।

तीतुस

के नाम

1 मैं पौलुस, परमेश्वर का दास
और यीशु मसीह का प्रेषित* हूँ।
मेरी यह सेवा परमेश्वर के चुने हुओं
के विश्वास और उस सच्चाई के सही
ज्ञान के मुताबिक है जो परमेश्वर की
भक्ति से जुड़ी है। **2** इस भक्ति का
आधार हमेशा की ज़िंदगी की आशा है,
जिसका वादा मुद्दतों पहले उस परमेश्वर
ने किया था जो झूठ नहीं बोल सकता।
3 उसने अपने तय वक्त में अपने वचन
को उस प्रचार से ज़ाहिर किया है, जिसकी
ज़िम्मेदारी हमारे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर की
आज्ञा से मुझे सौंपी गयी है। **4** जिस
विश्वास में हम सब साझेदार हैं, उस
विश्वास में मेरे सच्चे बेटे तीतुस, मैं तुझे
यह चिट्ठी लिख रहा हूँ:

मेरी दुआ है कि परमेश्वर हमारे पिता
और मसीह यीशु हमारे उद्धारकर्त्ता की
तरफ से तुझे महा-कृपा और शांति मिले।
5 मैं इस वजह से तुझे क्रेते में छोड़
आया था कि तू वहाँ के बिगड़े हुए
हालात को सुधार सके और जैसे मैंने
आदेश दिया था, तू शहर-शहर प्राचीनों
को ठहरा सके। **6** ऐसे भाई को ठह-
राना जिस पर कोई आरोप नहीं,
जो एक ही पत्नी का पति है, जिसके
बच्चे विश्वासी हैं और जिन पर बद-
चलन होने या बेकायदा चलने का इल-
ज़ाम नहीं है। **7** क्योंकि निगरानी की
ज़िम्मेदारी संभालनेवाला भाई परमेश्वर
का ठहराया प्रबंधक होता है, इसलिए उस
पर कोई इलज़ाम नहीं होना चाहिए।
वह मनमानी करनेवाला, गुस्सैल, नशे
में झगड़ा करनेवाला, दूसरों को चोट
पहुँचानेवाला और बेईमानी की कमाई का
लालची नहीं होना चाहिए। **8** बल्कि
उसे मेहमान-नवाज़ी दिखानेवाला, भलाई
से प्यार करनेवाला, स्वस्थ मन रखने-

तीतु 1:1* या, “भेजा गया।” यूनानी में *“अपोस्टो-लोस।”*

वाला, नेक, वफादार, संयम बरतनेवाला
होना चाहिए। 9 सिखाने की कला के
मामले में वह विश्वासयोग्य वचन को मज़-
बूती से थामे रहता हो, ताकि वह न सिर्फ
खरी शिक्षा से सीख देकर उकसा सके
बल्कि जो इस शिक्षा का विरोध करते हैं
उन्हें ताड़ना भी दे सके।

10 क्योंकि वहाँ ऐसे बहुत-से आदमी
हैं जो अपनी मनमानी करते हैं, बेकार
की बक-बक करते हैं और दूसरों के मन
को भरमा लेते हैं। इनमें खासकर वे लोग
हैं जो खतना कराने की बात पर अड़े
रहते हैं। 11 ऐसे लोगों का मुँह बंद
करना ज़रूरी है, क्योंकि यही लोग हैं जो
बेईमानी की कमाई के लिए पूरे-पूरे परि-
वारों का विश्वास तबाह कर देते हैं और
ऐसी शिक्षाएँ देते हैं जिन्हें देना सही नहीं।
12 उन्हीं के किसी नबी* ने कहा है:
"क्रेती लोग हमेशा झूठे, जंगली जान-
वरों जैसे खतरनाक, आलसी और पेटू
होते हैं।"

13 यह गवाही सच्ची है। इसी वजह
से उन्हें सख्ती से ताड़ना देता रह ताकि
वे विश्वास में मज़बूत* बनें, 14 और
यहूदियों की कथा-कहानियों और उन
लोगों की आज्ञाओं पर ध्यान न दें
जो सच्चाई की राह को छोड़ देते हैं।
15 शुद्ध लोगों के लिए सबकुछ शुद्ध है।
मगर जो दूषित हैं और जिनमें विश्वास
नहीं है, उनके लिए कुछ भी शुद्ध नहीं,
बल्कि उनका मन और ज़मीर दोनों
दूषित हैं। 16 वे परमेश्वर को जानने
का सरेआम दावा तो करते हैं, मगर
अपने कामों से उससे इनकार करते हैं,
क्योंकि वे घिनौने और आज्ञा न मानने-
वाले हैं और किसी भी अच्छे काम के
लायक नहीं।

2 मगर तू ऐसी बातों के बारे में बताता
रह जो खरी शिक्षा के मुताबिक हैं।
2 बुज़ुर्ग भाई हर बात में संयम बरतने-
वाले हों, गंभीर हों, स्वस्थ मन रखते हों,
विश्वास, प्यार और धीरज में मज़बूत*
हों। 3 इसी तरह, बुज़ुर्ग बहनों का
बर्ताव ऐसा हो जैसा पवित्र लोगों का
होता है। वे बदनाम करनेवाली न हों,
बहुत ज़्यादा दाख-मदिरा पीने की आदी
न हों, बल्कि अच्छी बातों की सिखाने-
वाली हों, 4 ताकि वे जवान स्त्रियों
को सीख देकर सुधार सकें कि वे अपने-
अपने पति और बच्चों से प्यार करें,
5 स्वस्थ मन रखें, साफ चरित्र रखें।
साथ ही वे अपने घर का काम-काज
करनेवाली, भली, और अपने-अपने पति
के अधीन रहनेवाली हों जिससे कि पर-
मेश्वर के वचन की बदनामी न की
जा सके।

6 इसी तरह जवान भाइयों को उक-
साता रह कि वे स्वस्थ मन रखें।
7 और तू खुद हर बात में बढ़िया काम
करने की मिसाल रख। ऐसी शिक्षाएँ दे
जिनमें ज़रा भी भ्रष्टता न हो। गंभीरता

तीतु 1:12* यहाँ ई.पू. छठी सदी के क्रेते द्वीप के कवि एपिमेनिडीस का ज़िक्र किया गया है। **13*** शाब्दिक, "स्वस्थ।"

तीतु 2:2* शाब्दिक, "स्वस्थ।"

दिखा। 8 तेरी बातचीत हितकर हो
ताकि उसमें कोई दोष न निकाल सके,
जिससे वे जो विरोधी हैं शर्मिंदा हों और
उन्हें हमारे बारे में कुछ भी बुरा कहने का
मौका न मिले। 9 जो दास हैं वे सब
बातों में अपने मालिकों के अधीन रहें
और उन्हें अच्छी तरह खुश करें और मुँह-
ज़ोर न बनें, 10 चोरी न करें, बल्कि
पूरी वफादारी दिखाएँ ताकि वे सब बातों
में हमारे उद्धारकर्त्ता, परमेश्वर की शिक्षा
की शोभा बढ़ा सकें।

11 इसलिए कि परमेश्वर की वह
महा-कृपा जो सब किस्म के लोगों के लिए
उद्धार लाती है, ज़ाहिर की गयी है,
12 और यह हमें सिखाती है कि हम ऐसे
चालचलन को त्याग दें जो परमेश्वर
की मरज़ी के खिलाफ है और दुनियावी
ख्वाहिशों को त्याग दें और मौजूदा दुनिया
की व्यवस्था में स्वस्थ मन से और पर-
मेश्वर के स्तरों पर चलते हुए और
उसकी भक्ति करते हुए जीवन बिताएँ।
13 और उस वक्त का इंतज़ार करते
रहें जब हमारी सुखद आशा पूरी होगी
और महान परमेश्वर की महिमा ज़ाहिर
होगी और साथ ही हमारे उद्धारकर्त्ता,
मसीह यीशु की महिमा ज़ाहिर होगी।
14 मसीह ने खुद को हमारे लिए दे दिया
कि हमें हर तरह के दुराचार से छुड़ाए
और शुद्ध कर ऐसे लोग बना ले जो खास
उसके अपने हों और बढ़िया कामों के
लिए जोशीले हों।

15 इन सारी बातों के बारे में उन्हें
सीख देकर उकसाता रह और आज्ञा देने
के पूरे अधिकार के साथ उन्हें ताड़ना देता
रह। कोई भी इंसान तुझे तुच्छ न समझे।

3 उन्हें याद दिलाता रह कि सरकारों
और अधिकारियों के अधीन रहें
और उनकी आज्ञा मानें, हर अच्छे काम
के लिए तैयार रहें, 2 किसी के बारे
में भी बुरा न कहें, झगड़ालू न हों, लिहाज़
दिखानेवाले हों, सब लोगों के साथ पूरी
कोमलता से पेश आएँ। 3 इसलिए
कि एक वक्त पर हम भी नासमझ और
आज्ञा न माननेवाले थे, गुमराह हो रहे
थे, तरह-तरह की ख्वाहिशों और शारी-
रिक सुख के गुलाम थे, बुराई में लगे हुए
थे, ईर्ष्या करते थे, घिनौने थे और एक-
दूसरे से नफरत करते थे।

4 मगर, जब हमारे उद्धारकर्त्ता पर-
मेश्वर की कृपा और वह प्यार ज़ाहिर
हुआ जो वह इंसानों से करता है,
5 तो उसने हमारी नेकी के कामों की
वजह से नहीं बल्कि अपनी दया की वजह
से हमारा उद्धार किया। उसने हमें वह
स्नान देकर जिससे हमें नया जीवन मिला
और अपनी पवित्र शक्ति* के ज़रिए
हमें नया बनाकर हमारा उद्धार किया।
6 उसने यह पवित्र शक्ति हमारे उद्धार-
कर्त्ता यीशु मसीह के ज़रिए हम पर बहु-
तायत में उंडेली है, 7 ताकि उस एक
की महा-कृपा के ज़रिए नेक करार दिए
जाने के बाद हम हमेशा की ज़िंदगी की
आशा के मुताबिक वारिस बन सकें।

8 यह बात विश्वास के योग्य है और
मैं चाहता हूँ कि तू इन बातों पर ज़ोर देते

तीतु 3:5* यूनानी *नफ्मा*। अतिरिक्त लेख 7 देखें।

हुए दावे के साथ बोलता रह, ताकि जिन्होंने परमेश्वर पर यकीन किया है वे अपना ध्यान बढ़िया काम करने में ही लगाए रखें। ये बातें लोगों के लिए बढ़िया और फायदेमंद हैं।

9 मगर मूर्खता से भरे वाद-विवादों से और वंशावलियों की छानबीन से और झगड़ों और मूसा के कानून के बारे में बखेड़ों से दूर रह, क्योंकि इनसे कोई फायदा नहीं होता और ये बेकार हैं।
10 अगर कोई आदमी किसी गुट को बढ़ावा देता है, तो उसे पहली और दूसरी बार चेतावनी देकर समझा-बुझा और इसके बाद उससे संगति रखना बंद कर दे,
11 यह जानते हुए कि ऐसा आदमी सच्चाई की राह से हट गया है और पाप कर रहा है। उसने खुद को दोषी ठहराया है।

12 जब मैं अरतिमास या तुखिकुस को तेरे पास भेजूं, तो तू नीकुपुलिस में मेरे पास आने की पूरी कोशिश करना, क्योंकि मैंने सर्दियाँ वहीं बिताने का फैसला किया है। 13 ज़ेनस जो मूसा के कानून का जानकार है और अप्पुलोस के सफर के लिए पूरी मदद देने का ध्यान रखना ताकि उन्हें किसी भी चीज़ की कमी न हो। 14 हमारे लोग भी बढ़िया कामों में लगे रहना सीखें ताकि वे अपनी ज़रूरतें पूरी कर सकें, जिससे कि वे सेवा में निकम्मे साबित न हों।*

15 जो लोग मेरे साथ हैं वे सब तुझे नमस्कार भेज रहे हैं। उन लोगों को मेरा नमस्कार कहना जो विश्वास में हमसे गहरा लगाव रखते हैं।

परमेश्वर की महा-कृपा तुम सब पर होती रहे।

तीतु 3:14* शाब्दिक, "फल नहीं लाते।"

फिलेमोन
के नाम

1 मैं पौलुस, जो मसीह यीशु की खातिर एक कैदी हूँ, हमारे भाई तीमुथियुस के साथ, हमारे प्यारे भाई और सहकर्मी फिलेमोन को लिख रहा हूँ।
2 साथ ही, हमारी बहन अफफिया और हमारे संगी सैनिक अरखिप्पुस और तेरे घर में इकट्ठा होनेवाली मंडली* को:

3 हमारी दुआ है कि तुम लोगों को परमेश्वर हमारे पिता और प्रभु यीशु मसीह की तरफ से महा-कृपा और शांति मिले।

4 मैं जब-जब अपनी प्रार्थनाओं में तुझे याद करता हूँ, तब-तब अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ,
5 क्योंकि मैं तेरे उस प्यार और विश्वास के बारे में सुनता रहता हूँ जो तुझे प्रभु

फिले 2* मत्ती 16:18 दूसरा फुटनोट देखें।

यीशु के लिए और सभी पवित्र जनों के
लिए है। **6** मैं प्रार्थना करता हूँ कि तू
दूसरों के साथ जिस विश्वास में साझेदार
है, वह तुझे भले काम करने के लिए उक-
साए, क्योंकि तू खुद भी यह जानता है
कि हमने जो भी अच्छी चीज़ पायी है वह
मसीह के साथ एकता में होने की वजह
से है। **7** मैंने तेरे प्यार की वजह से
बहुत खुशी और तसल्ली पायी है क्योंकि
मेरे भाई, तेरे ज़रिए पवित्र जनों के
दिलों* को ताज़गी मिली है।

8 इसी वजह से, हालाँकि मसीह का
प्रेषित होने के नाते मैं तुझे बेझिझक होकर
हुक्म दे सकता हूँ कि तू वह कर जो सही
है, **9** फिर भी यह देखते हुए कि मैं
पौलुस जो एक बुज़ुर्ग हूँ, और अब मसीह
यीशु की खातिर कैद में भी हूँ, मैं तुझे
प्यार का वास्ता देकर उकसा रहा हूँ।
10 हाँ, मैं तुझे अपने बच्चे उनेसिमुस के
बारे में उकसा रहा हूँ जिसका मैं ज़ंजीरों
में रहते हुए पिता बना। **11** वह पहले
तेरे लिए बेकार था मगर अब न सिर्फ
मेरे लिए बल्कि तेरे लिए भी बहुत काम
का है। **12** इसी को मैं तेरे पास
वापस भेज रहा हूँ, हाँ, इसे जो मेरे जिगर
का टुकड़ा है।

13 मैं चाहता तो हूँ कि इसे अपने
पास ही रखूँ ताकि वह तेरे बदले में मेरी
सेवा करता रहे, मैं जो खुशखबरी की
खातिर इन ज़ंजीरों का बोझ सह रहा हूँ।
14 मगर तेरी रज़ामंदी के बिना मैं कुछ
नहीं करना चाहता ताकि तेरा यह भला
काम किसी दबाव में आकर नहीं बल्कि
खुशी-खुशी तेरी अपनी मरज़ी से हो।
15 शायद इसी वजह से वह कुछ वक्त
के लिए तुझसे अलग हो गया था ताकि
तू उसे हमेशा के लिए दोबारा पा सके,
16 लेकिन अब से एक दास की तरह
नहीं, बल्कि दास से भी बढ़कर एक प्यारे
भाई की तरह पाए। खासकर मेरे लिए
तो वह प्यारा भाई ही है। लेकिन वह तेरे
लिए और कितना बढ़कर है क्योंकि तेरा
उसके साथ दो तरह से रिश्ता है, दास-
मालिक का और प्रभु में भाई का।*
17 इसलिए अगर तू मुझे अपना संगी-
साथी समझता है, तो मेहरबानी करते हुए
उसे वैसे ही स्वीकार कर जैसे तू मुझे
स्वीकार करता। **18** अगर उसने तेरा
कुछ नुकसान किया भी है या उस पर
तेरा कुछ बनता है, तो तू उसे मेरे खाते
में लिख लेना। **19** मैं पौलुस अपने
हाथ से यह लिख रहा हूँ: मैं तेरा नुक-
सान भर दूँगा। साथ ही, मुझे यह बताने
की ज़रूरत नहीं कि तू खुद अपने जीवन
के लिए मेरा कर्ज़दार है। **20** हाँ मेरे
भाई, प्रभु में मुझे तुझसे यह फायदा पाने
दे। मसीह में मेरा दिल खुश कर।

21 मैं इस भरोसे के साथ लिख रहा
हूँ कि तू मेरी बात ज़रूर मानेगा, और
मैं यह भी जानता हूँ कि मैंने जो कहा है
तू उससे भी बढ़कर करेगा। **22** साथ
ही मेरे ठहरने की जगह तैयार रख,
क्योंकि मुझे उम्मीद है कि तुम लोगों की

फिले 7* शाब्दिक, "अँतड़ियाँ," जो एक इंसान की सबसे गहरी भावनाओं को दर्शाती हैं।

फिले 16* शाब्दिक, "शरीर में और प्रभु में।"

प्रार्थनाओं की बदौलत मुझे तुम्हारी खातिर
बहुत जल्द आज़ाद कर दिया जाएगा।
23 इपफ्रास जो मसीह यीशु में
मेरा साथी कैदी है तुझे नमस्कार
भेज रहा है। **24** इसके साथ मरकुस,
अरिस्तरखुस, देमास और लूका, जो मेरे
सहकर्मी हैं, तुझे नमस्कार कहते हैं।
25 प्रभु यीशु मसीह की महा-कृपा
तुम्हारी उस भावना के साथ हो जो तुम
लोग दिखाते हो।

इब्रानियों
के नाम

1 परमेश्वर ने गुज़रे ज़मानों में,
अलग-अलग मौकों पर अलग-
अलग तरीकों से भविष्यवक्ताओं के
ज़रिए हमारे बापदादों से बात की थी।
2 मगर अब इन दिनों के आखिर में
उसने हमसे अपने बेटे के ज़रिए बात की
है, जिसे उसने सब चीज़ों का वारिस ठह-
राया और जिसके ज़रिए उसने दुनिया
की व्यवस्थाएँ* बनायीं। **3** इस बेटे में
परमेश्वर की महिमा झलकती है और वह
परमेश्वर की हू-ब-हू छवि है। वह अपने
शक्तिशाली वचन से सब चीज़ों को संभा-
लता है। और हमारे पापों को धोने के
बाद वह ऊँचे पर महामहिम की दायीं
तरफ जा बैठा है। **4** इस तरह वह
स्वर्गदूतों से भी श्रेष्ठ बन गया है। यहाँ
तक कि वह ऐसे नाम का वारिस बन गया
है जो उनके नाम से कहीं श्रेष्ठ है।
5 मिसाल के लिए, परमेश्वर ने कब
किसी स्वर्गदूत से यह कहा: "तू मेरा बेटा
है, आज मैं तेरा पिता बना हूँ"? और
फिर यह कि "मैं खुद उसका पिता बनूँगा
और वह मेरा बेटा बनेगा"? **6** मगर
उस वक्त के बारे में जब वह अपने पह-
लौठे को दोबारा इस धरती पर लाएगा,
वह कहता है: "परमेश्वर के सारे स्वर्ग-
दूत उसके आगे झुककर प्रणाम करें।"
7 साथ ही, वह स्वर्गदूतों के बारे
में यह कहता है: "वह अपने स्वर्गदूतों
को ताकतवर शक्तियाँ और जन-सेवा
करनेवाले स्वर्गदूतों को आग की ज्वाला
बनाता है।" **8** मगर अपने बेटे के
बारे में वह यह कहता है: "परमेश्वर
हमेशा-हमेशा के लिए तेरी राजगद्दी है
और तेरे राज का राजदंड सीधाई का
राजदंड है। **9** तू ने सच्चाई से प्यार
किया और दुराचार से नफरत की। इसी
वजह से परमेश्वर ने, हाँ, तेरे परमेश्वर ने
तेरे साथियों* से कहीं बढ़कर हर्ष के तेल
से तेरा अभिषेक किया।" **10** और
यह: "हे प्रभु, तू ने शुरूआत में पृथ्वी की
नींव डाली और आकाश तेरे हाथ की

इब्रा 1:2* या, "विश्व की सारी चीज़ें।"

इब्रा 1:9* यानी दाविद के वंश के बाकी राजाओं से।

रचना है। 11 वे तो नाश हो जाएँगे,
मगर तू हमेशा तक कायम रहेगा। एक
कपड़े की तरह वे सब पुराने हो जाएँगे,
12 और तू उन्हें ऐसे लपेटकर रख
देगा जैसे एक चोगे को, हाँ, एक कपड़े
को लपेटकर रख दिया जाता है। वे
बदल दिए जाएँगे, मगर तू जैसे का तैसा
बना रहता है और तेरी उम्र के साल कभी
खत्म न होंगे।"

13 मगर उसने कब किसी स्वर्गदूत
के बारे में यह कहा: "मेरी दायीं तरफ
बैठ, जब तक कि मैं तेरे दुश्मनों को तेरे
पाँवों की चौकी न बना दूँ"? 14 क्या
ये सब जन-सेवा करनेवाले स्वर्गदूत नहीं,
जिन्हें उनकी सेवा के लिए भेजा जाता है
जो उद्धार पाएँगे?

2 इसी वजह से, हमने जो बातें सुनी
हैं, उन पर और भी ज़्यादा ध्यान
देना ज़रूरी है, ताकि हम कभी-भी बहकर
विश्वास से धीरे-धीरे दूर न चले जाएँ।
2 जो वचन स्वर्गदूतों के ज़रिए कहा गया
था, अगर वह इतना अटल साबित हुआ
और उस वचन के खिलाफ किए गए हर
पाप की और आज्ञा तोड़ने की न्याय के
मुताबिक सज़ा मिली, 3 तो हम उस
उद्धार के बारे में, जो इतना महान है,
लापरवाही बरतकर कैसे बच सकेंगे? यह
उद्धार इसलिए महान है क्योंकि इसके बारे
में सबसे पहले हमारे प्रभु ने बताया था।
और फिर, इसके सच होने की बात को
उन लोगों ने हमारे लिए पुख्ता किया
जिन्होंने उससे सुना था। 4 साथ ही,
परमेश्वर ने भी अपनी मरज़ी के मुता-
बिक, चमत्कारों, आश्चर्य के कामों और
तरह-तरह के शक्तिशाली कामों के ज़रिए
और पवित्र शक्ति के वरदान देकर इसकी
गवाही दी है।

5 परमेश्वर ने आनेवाली उस दुनिया
को, जिसके बारे में हम बता रहे हैं, स्वर्ग-
दूतों के अधीन नहीं किया। 6 मगर
किसी गवाह ने इस बात का सबूत देते
हुए कहीं यह लिखा है: "इंसान क्या है
कि तू उसके बारे में सोचे, या इंसान का
बेटा क्या है कि तू उसकी परवाह करे?
7 तू ने उसे स्वर्गदूतों से कुछ कमतर
बनाया। और उसे महिमा और आदर का
ताज पहनाया और अपने हाथ की रच-
नाओं पर उसे अधिकार दिया। 8 तू
ने सबकुछ उसके पाँवों तले कर दिया।"
परमेश्वर ने सबकुछ उसके अधीन कर
दिया और ऐसा कुछ भी न रख छोड़ा
जो उसके अधीन न किया हो। हालाँकि
अब तक हम सबकुछ उसके अधीन नहीं
देखते, 9 मगर हम यीशु को देखते हैं
जिसे स्वर्गदूतों से थोड़ा कमतर बनाया
गया। और मौत सहने की वजह से
उसे महिमा और आदर का ताज पह-
नाया गया, ताकि परमेश्वर की महा-कृपा
से वह हर इंसान के लिए मौत का स्वाद
चख सके।

10 सबकुछ परमेश्वर की खातिर
और उसी के ज़रिए वजूद में है। इसलिए
यह सही था कि वह बहुत सारे बेटों को
महिमा में लाने के लिए, उनके उद्धार के
खास नुमाइंदे को दुःख सहने के ज़रिए
सिद्ध बनाए। 11 इसलिए कि पवित्र

करनेवाला और जो पवित्र किए जा रहे
हैं, सब एक ही पिता से हैं और इस वजह
से वह उन्हें “भाई” पुकारने में शर्मिंदा मह-
सूस नहीं करता, **12** जैसा वह कहता
है: “मैं अपने भाइयों में तेरे नाम का
ऐलान करूँगा और मंडली* के बीच
मैं गीत गाकर तेरा गुणगान करूँगा।”
13 और फिर यह: “मैं उस पर भरोसा
रखूँगा।” और यह भी: “देखो! मैं और
ये बच्चे जिन्हें यहोवा* ने मुझे दिया है।”
14 इसलिए, जैसे “बच्चे” हाड़-
माँस* के बने हैं, वह भी हाड़-माँस
का बना, ताकि अपनी मौत के ज़रिए
उसे यानी शैतान# को मिटा दे, जिसके
पास मौत देने का ज़रिया है, **15** और
उन सभी को आज़ाद करे जो मौत के
डर से पूरी ज़िंदगी गुलामी में पड़े थे।
16 वह असल में स्वर्गदूतों की नहीं
बल्कि अब्राहम के वंश की मदद कर
रहा है। **17** इसी वजह से उसके लिए
ज़रूरी था कि वह हर मायने में अपने
“भाइयों” जैसा बने, ताकि वह परमेश्वर
की सेवा से जुड़ी बातों में एक दयालु और
विश्वासयोग्य महायाजक बन सके और
लोगों के पापों के लिए प्रायश्चित्त का
बलिदान चढ़ाए जिससे परमेश्वर के साथ
उनकी सुलह हो। **18** क्योंकि उसने

इब्रा 2:12* मत्ती 16:18 दूसरा फुटनोट देखें। **13*** यह उन 237 जगहों में से एक जगह है, जहाँ परमेश्वर का नाम, ‘यहोवा’ इस अनुवाद के मुख्य पाठ में पाया जाता है। अतिरिक्त लेख 2 देखें। **14*** शाब्दिक, “माँस और लहू।” **14#** यूनानी में *“दियाबोलोस,”* जिसका मतलब है “निंदा करने-वाला।”

खुद उस वक्त जब उसकी परीक्षा ली जा
रही थी, दुःख उठाया, इसलिए अब वह
उनकी मदद करने के काबिल है जिनकी
परीक्षा ली जा रही है।

3 इसलिए, पवित्र भाइयो, तुम जो
स्वर्ग के बुलावे में हिस्सेदार हो,
उस प्रेषित* और महायाजक यीशु पर
ध्यान दो, जिस पर हम अपने विश्वास
का ऐलान करते हैं। **2** वह उस पर-
मेश्वर का विश्वासयोग्य रहा जिसने उसे
प्रेषित और महायाजक ठहराया, जैसे मूसा
भी परमेश्वर के सारे घराने में विश्वास-
योग्य था। **3** जैसे घर से ज़्यादा उसके
बनानेवाले को आदर दिया जाता है, वैसे
ही यीशु को मूसा से ज़्यादा महिमा के
लायक समझा गया। **4** बेशक, हर
घर का कोई न कोई बनानेवाला होता है,
मगर जिसने सबकुछ बनाया वह पर-
मेश्वर है। **5** मूसा तो परमेश्वर के
सारे घराने में एक सेवक के नाते वि-
श्वासयोग्य रहा। उसकी यह सेवा उन
बातों की गवाही थी जिनके बारे में बाद
में बताया जाना था। **6** मगर मसीह
तो बेटा है, जो परमेश्वर के घराने पर
अधिकारी के नाते विश्वासयोग्य रहा।
और परमेश्वर का घराना हम हैं, बशर्ते
हम बेझिझक बोलने की हिम्मत और
अपनी आशा पर गर्व को आखिर तक
मज़बूती से थामे रहें।
7 इसी वजह से, पवित्र शक्ति कहती
है: “आज अगर तुम उसकी आवाज़ सुनो,

इब्रा 3:1* या, “भेजा गया।” यूनानी में *“अपोस्टो-लोस।”*

8 तो तुम अपने दिलों को कठोर न कर
लेना। जैसे तुम्हारे बापदादों ने उस मौके
पर किया था जब उन्होंने मुझे ज़बरदस्त
क्रोध दिलाया था, जैसे उस दिन वीराने
में मेरी परीक्षा ली थी, **9** जहाँ उन्होंने
मेरी परीक्षा लेकर मुझे चुनौती दी थी,
इसके बावजूद कि उन्होंने चालीस साल
तक मेरे काम देखे थे। **10** इसी वजह
से मुझे इस पीढ़ी से घिन होने लगी और
मैंने कहा, 'इनके दिल हमेशा मुझसे दूर
हो जाते हैं, और इन्होंने मेरी राहों को
नहीं पहचाना।' **11** इस वजह से मैंने
क्रोध में आकर यह शपथ खायी, 'वे मेरे
विश्राम में दाखिल न होंगे।' "

12 भाइयो, खबरदार रहो, कहीं
जीवित परमेश्वर से दूर जाने की वजह
से तुममें से किसी का दिल कठोर होकर
ऐसा दुष्ट न हो जाए जिसमें विश्वास न
हो। **13** मगर हर दिन, जब तक कि
यह समय "आज" का दिन कहलाता है,
तुम एक-दूसरे को सीख देकर उकसाते
रहो ताकि तुम में से कोई भी पाप की
भरमाने की ताकत की वजह से कठोर न
हो जाए। **14** इसलिए कि हम सही
मायनों में मसीह के साझेदार तभी बनते
हैं जब हम उस भरोसे को आखिर तक
मज़बूती से थामे रहते हैं जो हमारे अंदर
शुरू में था। **15** जैसा कि कहा भी
गया है: "आज अगर तुम उसकी आवाज़
सुनो, तो तुम अपने दिलों को कठोर न
कर लेना। जैसे तुम्हारे बापदादों ने उस
मौके पर किया था जब उन्होंने मुझे ज़बर-
दस्त क्रोध दिलाया था।"

16 वे कौन थे जिन्होंने यह सुनकर
भी परमेश्वर को ज़बरदस्त क्रोध दिलाया
था? क्या ये सब वही न थे जो मूसा
के अधीन मिस्र से बाहर निकले थे?
17 और चालीस साल के दौरान वे
कौन थे जिनसे परमेश्वर को घिन होने
लगी? क्या ये वही नहीं थे जिन्होंने पाप
किया, जिनकी लाशें वीराने में बिछ गयीं?
18 और उसने किससे यह शपथ
खायी कि वे उसके विश्राम में दाखिल न
होंगे? क्या उनसे नहीं जिन्होंने उसकी
आज्ञाओं के खिलाफ काम किया था?
19 तो फिर, हम देखते हैं कि वे इस-
लिए विश्राम में दाखिल न हो सके क्योंकि
उनमें विश्वास नहीं था।

4 इसलिए, जबकि परमेश्वर के
विश्राम में दाखिल होने का वादा
अब तक है, तो आओ हम इस बात
का ध्यान रखें कि हममें से कोई भी
इस विश्राम में दाखिल होने के
अयोग्य न ठहरे। **2** इसलिए कि हमें
भी खुशखबरी सुनायी गयी है, ठीक
जैसे उन्हें सुनायी गयी थी। मगर
जो वचन उन्होंने सुना उसका उन्हें कुछ
फायदा नहीं हुआ, क्योंकि उन्होंने उनकी
तरह विश्वास नहीं दिखाया जिन्होंने सुना
और विश्वास दिखाया था। **3** लेकिन
हमने विश्वास दिखाया है और इसलिए
उस विश्राम में दाखिल होते हैं। हालाँकि
दुनिया की शुरूआत होने पर परमेश्वर के
काम खत्म हो चुके थे और उसने विश्राम
किया और दूसरों को भी अपने विश्राम
में दाखिल होने का न्योता दिया, फिर भी

उसने एक बार कहा है: “इस वजह से
मैंने क्रोध में आकर यह शपथ खायी,
‘वे मेरे विश्राम में दाखिल न होंगे।’”
4 एक जगह उसने सातवें दिन के बारे
में यह कहा है: “और परमेश्वर ने सातवें
दिन अपने सब कामों से विश्राम किया।”
5 और फिर उसने यह कहा: “वे मेरे
विश्राम में दाखिल न होंगे।”

6 तो फिर कुछ लोगों का इस विश्राम
में दाखिल होना बाकी है। और जिन लोगों
को पहले खुशखबरी सुनायी गयी थी,
वे आज्ञा न मानने की वजह से उसमें
दाखिल नहीं हुए। **7** इसलिए वह फिर
से बहुत दिनों बाद, दाऊद के भजन
में किसी खास दिन के बारे में बताते
हुए इसे “आज का दिन” कहता है,
ठीक जैसा ऊपर कहा गया है: “आज
अगर तुम उसकी आवाज़ सुनो, तो तुम
अपने दिलों को कठोर न कर लेना।”
8 इसलिए कि अगर यहोशू उन्हें विश्राम
की जगह में ले जा चुका होता, तो पर-
मेश्वर बाद में एक और दिन की बात न
करता। **9** तो ज़ाहिर है कि परमेश्वर
के लोगों के लिए सब्त का विश्राम बाकी
है। **10** क्योंकि जो इंसान परमेश्वर के
विश्राम में दाखिल हुआ है, उसने भी
अपने कामों से विश्राम किया है, ठीक
जैसे परमेश्वर ने किया था।

11 इसलिए आओ हम उस विश्राम
में दाखिल होने के लिए अपना भरसक
करें, कहीं ऐसा न हो कि हममें से कोई
पाप करने लगे और आज्ञा न मानने के
उनके ढर्रे में पड़ जाए। **12** इसलिए
कि परमेश्वर का वचन जीवित है और
ज़बरदस्त ताकत रखता है और दोनों
तरफ तेज़ धार रखनेवाली तलवार से भी
ज़्यादा धारदार है। यह इंसान के बाहरी
रूप[*] को उसके अंदर के इंसान[#] से
अलग करता है, और हड्डियों[△] को गूदे
तक आर-पार चीरकर अलग कर देता है
और दिल के विचारों और इरादों को जाँच
सकता है। **13** और सृष्टि में ऐसी
एक भी चीज़ नहीं जो परमेश्वर की नज़र
से छिपी हुई हो। हाँ, हमें जिसे हिसाब
देना है उसकी आँखों के सामने सारी चीज़ें
खुली और बेपरदा हैं।

14 इसलिए, यह देखते हुए कि
हमारा ऐसा महान महायाजक है, यानी
परमेश्वर का बेटा यीशु जो स्वर्ग में
दाखिल हुआ है, आओ हम उस पर
अपने विश्वास का ऐलान करते रहें।
15 क्योंकि हमारा महायाजक ऐसा नहीं
जो हमारी कमज़ोरियों में हमसे हमदर्दी न
रख सके। मगर वह ऐसा है जिसकी
हमारी तरह सब बातों में परीक्षा हुई, फिर
भी वह निष्पाप निकला। **16** इसलिए
आओ हम परमेश्वर की महा-कृपा की
राजगद्दी के सामने, बेझिझक बोलने की
हिम्मत के साथ जाएँ, ताकि हम सही वक्त
पर मदद पाने के लिए उसकी दया और
महा-कृपा हासिल कर सकें।

5 हरेक महायाजक इंसानों में से लिया
जाता है और उसे इंसानों की खातिर
परमेश्वर की सेवा में ठहराया जाता है,
ताकि वह भेंट और पापों के प्रायश्चित्त

इब्रा 4:12* यूनानी, *“प्सीकी।”* **12#** यूनानी, *“नफ्मा।”* **12△** शाब्दिक, “जोड़ों।”

के लिए बलिदान चढ़ाया करे। **2** वह
उन लोगों के साथ दया से पेश आने के
काबिल होता है जो अनजाने में गलतियाँ
करते हैं, क्योंकि वह खुद भी अपनी कम-
ज़ोरियों से घिरा होता है। **3** और इस
वजह से उसे अपने पापों के लिए भी
चढ़ावा चढ़ाना ज़रूरी होता है, ठीक जैसे
वह दूसरों के पापों के लिए चढ़ाता है।

4 और कोई भी आदमी आदर का
यह पद अपने आप नहीं ले लेता मगर
यह उसे तभी मिलता है जब वह परमेश्वर
की तरफ से ठहराया गया हो, ठीक जैसे
हारून भी ठहराया गया था। **5** इसी
तरह, मसीह ने भी खुद महायाजक का
पद लेकर अपनी महिमा नहीं की, बल्कि
उसे यह महिमा उसी ने दी जिसने उसके
बारे में यह कहा: "तू मेरा बेटा है; आज
मैं तेरा पिता बना हूँ।" **6** इसी तरह,
एक और जगह पर वह कहता है: "तू
मेल्कीसेदेक की तरह हमेशा-हमेशा के
लिए एक याजक है।"

7 जब मसीह इस धरती पर था,
उस दौरान उसने ऊँची आवाज़ में
पुकार-पुकारकर और आँसू बहा-बहाकर
उससे गिड़गिड़ाकर मिन्नतें और बिनतियाँ
कीं जो उसे मौत से बचा सकता था। और
उसकी सुनी गयी क्योंकि वह परमेश्वर
का डर मानता था। **8** परमेश्वर का
बेटा होते हुए भी उसने दुःख सह-सहकर
आज्ञा माननी सीखी। **9** और परिपूर्ण
किए जाने के बाद, उसे उन सबको
हमेशा का उद्धार दिलाने की ज़िम्मेदारी
दी गयी जो उसकी आज्ञा मानते हैं।
10 क्योंकि परमेश्वर ने उसे खास तौर
से मेल्कीसेदेक की तरह महायाजक होने
के लिए ठहराया था।

11 हमारे पास उसके बारे में कहने
के लिए बहुत कुछ है मगर तुम्हें यह
सब समझाना मुश्किल है, क्योंकि तुम्हारी
सोचने-समझने की शक्ति मंद पड़ गयी
है।* **12** दरअसल, वक्त के हिसाब
से तो तुम्हें दूसरों को सिखाने के काबिल
बन जाना चाहिए था, मगर अब यह
ज़रूरी हो गया है कि कोई तुम्हें परमेश्वर
के पवित्र वचनों की बुनियादी बातें शुरू-
आत से सिखाए और तुम उनकी तरह
बन गए हो जिन्हें ठोस आहार नहीं बल्कि
सिर्फ दूध चाहिए। **13** इसलिए कि
हर कोई जो दूध पीता है वह सच्चाई के
वचन से अनजान है, क्योंकि वह अभी
तक बच्चा है। **14** मगर ठोस आहार
तो बड़ों के लिए है, जो अपनी सोचने-
समझने की शक्ति का इस्तेमाल करते-
करते, सही-गलत में फर्क करने के लिए
इसे प्रशिक्षित कर लेते हैं।

6 इसी वजह से, अब जबकि हम
मसीह के बारे में बुनियादी शिक्षाओं
को पीछे छोड़ चुके हैं, तो आओ हम
पूरा ज़ोर लगाकर प्रौढ़ता के लक्ष्य तक
बढ़ते जाएँ। हम फिर नए सिरे से बुनि-
याद न डालें, यानी हम फिर से वही बातें
न सीखने लगें जिनसे हमने शुरूआत
की थी। जैसे मुरदा कामों से पश्चा-
ताप करने, परमेश्वर पर विश्वास करने,
2 अलग-अलग किस्म के बपतिस्मों,
हाथ रखने, मरे हुओं के जी उठने और
हमेशा तक कायम रहनेवाले न्यायदंड की

इब्रा 5:11* या, "तुम्हें कम सुनायी देने लगा है।"

शिक्षा। **3** और अगर परमेश्वर इजा-
ज़त दे, तो हम ज़रूर प्रौढ़ता के लक्ष्य
तक बढ़ते जाएँगे।

4 क्योंकि जो लोग एक बार ज्ञान की
रौशनी हासिल कर चुके हैं और जिन्होंने
स्वर्ग से मिलनेवाले मुफ्त वरदान का
स्वाद लिया है और जो पवित्र शक्ति के
भागीदार बने, **5** और जिन्होंने पर-
मेश्वर के बढ़िया वचन का और आने-
वाले ज़माने* की शक्तिशाली चीज़ों का
स्वाद लिया, **6** मगर अब गिर गए हैं
और दूर जा चुके हैं, उन्हें फिर से पश्चा-
ताप करने के लिए लौटा लाना नामुम-
किन है। क्योंकि वे खुद ही परमेश्वर के
बेटे को एक बार फिर सूली पर चढ़ाते
हैं और लोगों के सामने उसे शर्मिंदा करते
हैं। **7** जैसे वह ज़मीन जो उस पर
बार-बार पड़नेवाली बारिश का पानी पीती
है और फिर अपने जोतने-बोनेवालों के
खाने के लिए साग-सब्ज़ी उपजाती है, वह
बदले में परमेश्वर से आशीष पाती है।
8 लेकिन अगर वह काँटे और कंटीली
झाड़ियाँ उगाए, तो उसे बेकार छोड़ दिया
जाता है और वह शाप पाने के लायक
होती है। और आखिर में उसे जला दिया
जाता है।

9 हालाँकि हम इस तरह बात कर
रहे हैं, लेकिन प्यारे भाइयो, जहाँ तक
तुम्हारी बात है, हमें यकीन है कि तुम
ज़्यादा अच्छी हालत में हो। और उन
बातों को थामे हुए हो जिनसे उद्धार
हासिल होता है। **10** क्योंकि परमेश्वर
अन्यायी नहीं कि तुम्हारे काम और उस
प्यार को भूल जाए जो तुमने उसके नाम
के लिए दिखाया है। यानी कैसे तुमने
पवित्र जनों की सेवा की है और अब भी
कर रहे हो। **11** मगर हम चाहते हैं
कि तुममें से हरेक जन इसी तरह मेहनत
करता रहे ताकि आखिर तक अपनी
आशा के पूरा होने का पक्का भरोसा
हासिल कर सके। **12** जिससे कि तुम
आलसी न हो जाओ, मगर उन लोगों
की मिसाल पर चलो जो विश्वास और
सब्र रखने की वजह से वादों के वारिस
बनते हैं।

13 जब परमेश्वर ने अब्राहम से
वादा किया, तो उसने खुद अपनी शपथ
खायी, क्योंकि परमेश्वर से बड़ा कोई
और नहीं जिसकी वह शपथ खाता।
14 उसने कहा: "मैं यकीनन तुझे
आशीष दूँगा और तुझे कई गुना
बढ़ाऊँगा।" **15** इस तरह जब अ-
ब्राहम ने सब्र रखा, तो यह वादा हासिल
किया। **16** इंसान अपने से किसी बड़े
की शपथ खाते हैं और उनकी शपथ हर
विवाद का अंत होती है, क्योंकि यह
शपथ उनके लिए कानूनी गारंटी ठहरती
है। **17** इसी तरह जब परमेश्वर ने
वादे के वारिसों पर और भी पक्के तौर
पर यह ज़ाहिर करना चाहा कि उसकी
मरज़ी कितनी अटल है, तो उसने शपथ
खाते हुए अपने वादे को पुख्ता किया,
18 ताकि इन दो अटल बातों के ज़रिए
जिनके बारे में परमेश्वर का झूठ बोलना
नामुमकिन है हमें यानी हम जो भागकर
परमेश्वर की शरण में आए हैं, ऐसा ज़ब-
रदस्त हौसला मिले कि हम उस आशा पर

इब्रा 6:5* या, "दुनिया की व्यवस्था।"

पकड़ हासिल कर सकें जो हमारे सामने
रखी है। **19** यह आशा हमारी ज़िंदगी
के लिए एक लंगर है, जो पक्की और
मज़बूत है। और यह आशा हमें परदे के
उस पार ले जाती है, **20** जहाँ हमारा
अगुवा यीशु, हमारी खातिर दाखिल हो
चुका है और जो मेल्कीसेदेक की तरह
हमेशा के लिए महायाजक बन गया है।

7 यह मेल्कीसेदेक जो शालेम का
राजा और परमप्रधान परमेश्वर
का याजक था, अब्राहम से उस वक्त
मिला जब वह राजाओं को मारकर लौट
रहा था और उसने अब्राहम को आशीष
दी। **2** और अब्राहम ने उसे सब चीज़ों
का दसवाँ हिस्सा दिया। यह मेल्कीसेदेक
अपने नाम के मतलब के मुताबिक पहले
तो "खरा राजा" है और फिर शालेम का
राजा यानी "शांति का राजा" भी है।
3 उसका न तो कोई पिता, न कोई माँ,
न ही कोई वंशावली है। उसके दिनों की
न तो कोई शुरूआत है, न ही उसके
जीवन का अंत, बल्कि उसे परमेश्वर के
बेटे जैसा ठहराया गया है। इसलिए वह
सदा के लिए एक याजक बना रहता है।

4 तो फिर तुम ध्यान दो कि यह
आदमी कितना महान था, जिसे कुल-
पिता अब्राहम ने अपनी लूट की सबसे
बढ़िया चीज़ों का दसवाँ हिस्सा दिया।
5 सच है कि लेवी के बेटों में से जो
अपना याजकपद पाते हैं, उन्हें मूसा के
कानून के मुताबिक यह आज्ञा मिली है
कि वे लोगों से यानी अपने भाइयों से
दसवाँ हिस्सा इकट्ठा करें, हालाँकि इनके ये
भाई अब्राहम के वंशज[*] हैं। **6** मगर
मेल्कीसेदेक जो लेवी के वंश का नहीं था,
उसने अब्राहम से, जिससे वादे किए गए
थे, दसवाँ हिस्सा लिया और उसे आशीष
दी। **7** अब इसमें तो कोई दो राय नहीं
कि छोटा, बड़े से आशीष पाता है।
8 और पहले मामले में यानी लेवियों के
मामले में जो दसवाँ हिस्सा पाते हैं वे
मरनेवाले इंसान हैं। मगर इस दूसरे के
मामले में शास्त्र में यह गवाही दी गयी है
कि वह हमेशा ज़िंदा रहता है। **9** और
इजाज़त हो तो मैं कह सकता हूँ कि
अब्राहम के ज़रिए लेवी ने भी, जो लोगों
से दसवाँ हिस्सा पाता है, खुद इस आदमी
को दसवाँ हिस्सा दिया, **10** क्योंकि
उस वक्त वह अपने पुरखे अब्राहम के
शरीर[*] में था जब मेल्कीसेदेक अब्राहम
से मिला था।

11 तो फिर अगर लेवियों के याजक-
पद के ज़रिए वाकई परिपूर्णता हासिल
होती, (जो कानून लोगों को दिया गया
था, उसका एक पहलू याजकपद था) तो
क्या ज़रूरत थी कि एक और याजक
मेल्कीसेदेक की तरह खड़ा हो, और
जो हारून के जैसा याजक न कहलाए?
12 अब जबकि याजकपद बदला जा
रहा है तो कानून को भी बदलना ज़रूरी
हो जाता है। **13** इसलिए कि जिस
आदमी के बारे में ये बातें कही गयी हैं,
वह दूसरे गोत्र का है, जिसका कोई भी
आदमी कभी-भी वेदी पर सेवा के लिए

इब्रा 7:5* शाब्दिक, "उसकी जाँघों में से निकले हैं।"
10* शाब्दिक, "की जाँघों।"

नहीं चुना गया था। **14** अब यह तो
बिलकुल साफ है कि हमारा प्रभु यहूदा
के गोत्र से निकला था, जिसमें से याजकों
के होने के बारे में मूसा ने कोई ज़िक्र नहीं
किया था।

15 तो इस तरह यह बात हमारे
लिए और भी साफ हो जाती है कि
मेल्कीसेदेक के जैसा एक और याजक
खड़ा होता है। **16** यह याजक शारी-
रिक बातों के आधार पर दिए
कानून के किसी नियम के मुताबिक नहीं,
बल्कि उस शक्ति के मुताबिक याजक
है जिससे वह अविनाशी जीवन पाता
है। **17** क्योंकि एक शास्त्रवचन में यह
कहा गया है: “तू मेल्कीसेदेक की तरह
हमेशा-हमेशा के लिए एक याजक है।”

18 तो फिर, पिछले कानून को इस-
लिए रद्द किया गया क्योंकि यह कमज़ोर
और बेअसर है। **19** इसलिए कि मूसा
के कानून ने कुछ भी परिपूर्ण नहीं किया,
बल्कि ऐसा एक बेहतर आशा को ले आने
से मुमकिन हुआ, जिसके ज़रिए हम पर-
मेश्वर के करीब आ रहे हैं। **20** साथ
ही, जैसे यह बात शपथ के बिना नहीं
थी, **21** (क्योंकि ऐसे आदमी भी हैं
जो बिना शपथ के याजक बने हैं, मगर
एक याजक ऐसा है जिसे परमेश्वर ने
शपथ के साथ याजक ठहराया और उसके
बारे में यह कहा: “यहोवा ने शपथ खायी
है (और वह अपनी बात से पीछे नहीं
हटेगा), ‘तू हमेशा-हमेशा के लिए एक
याजक है।’ ”) **22** उसी के मुताबिक
यीशु एक बेहतर करार की ज़मानत ठहरा
है। **23** इसके अलावा, पहले एक-के-
बाद-एक कइयों को याजक बनाया जाता
था क्योंकि मौत उन्हें नहीं रहने देती थी।
24 मगर अब क्योंकि यह याजक हमेशा
तक ज़िंदा रहता है तो उसका याजकपद
भी हमेशा तक बना रहता है और उसकी
जगह कोई और नहीं लेता। **25** इस-
लिए जो उसके ज़रिए परमेश्वर के पास
आते हैं, वह उनका पूरी तरह उद्धार करने
के काबिल है। क्योंकि वह उनकी खातिर
परमेश्वर से बिनती करने के लिए हमेशा
ज़िंदा है।

26 ऐसा ही महायाजक हमारी
ज़रूरत को पूरा करने के लिए सही था,
जो वफादार, निर्दोष, बेदाग हो, पापियों
जैसा न हो और जिसे स्वर्ग से भी
ऊँचा किया गया हो। **27** उसे उन
महायाजकों की तरह हर दिन बलिदान
चढ़ाने की ज़रूरत नहीं, जो पहले अपने
पापों के लिए और फिर लोगों के पापों के
लिए बलिदान चढ़ाते हैं: (उसने एक ही
बार अपने आप को बलिदान चढ़ाकर यह
काम हमेशा-हमेशा के लिए पूरा कर दिया
है।) **28** मूसा का कानून जिन आद-
मियों को महायाजक ठहराता है उनमें
कमज़ोरियाँ होती हैं। मगर शपथ का
यह वचन, जो कानून के बाद आया
था, एक बेटे को महायाजक ठहराता है
जिसे हमेशा-हमेशा के लिए परिपूर्ण किया
गया है।

8 अब तक जिन बातों की चर्चा की
जा रही है, उनका खास मुद्दा यह
है: हमारा महायाजक ऐसा है, और वह
स्वर्ग में महामहिम की राजगद्दी की दायीं

तरफ जा बैठा है। **2** वह एक ऐसी
पवित्र जगह का और सच्चे निवास-स्थान
का जन-सेवक बना जिसे किसी इंसान ने
नहीं बल्कि यहोवा ने खड़ा किया है।
3 हर महायाजक को भेंट और बलिदान
दोनों चढ़ाने के लिए ठहराया जाता है।
इसलिए यह ज़रूरी था कि इस महा-
याजक के पास भी चढ़ाने के लिए कुछ
हो। **4** अगर वह धरती पर होता,
तो वह याजक न होता। क्योंकि यहाँ
पहले ही याजक मौजूद हैं जो मूसा के
कानून के मुताबिक भेंट चढ़ाया करते हैं।
5 मगर धरती के याजक जो पवित्र
सेवा करते हैं, वह स्वर्ग की चीज़ों का
मात्र नमूना और उनकी छाया है। ठीक
जैसे मूसा को उस वक्त बताया गया था
जब वह उस तंबू को तैयार करने पर था
जिसके बारे में परमेश्वर ने उसे यह
आज्ञा दी थी: “देख, तुझे पहाड़ पर जो
दिखाया गया था, उसी के नमूने पर
सबकुछ बनाना।” **6** मगर अब यीशु
को इससे भी श्रेष्ठ जन-सेवा के लिए ठह-
राया गया है। क्योंकि वह जिस करार
का बिचवई बना है, वह पहले करार से
भी श्रेष्ठ है, जो बेहतर वादों के आधार
पर कानूनी माँगों के मुताबिक किया
गया है।

7 अगर पहले करार में कोई कमी
न होती, तो दूसरे को लाने की गुंजा-
इश न रहती, **8** इसलिए कि परमेश्वर
लोगों को यह कहकर दोषी ठहराता है:
“यहोवा कहता है, ‘देखो! वे दिन आ
रहे हैं जब मैं इसराएल के घराने से
और यहूदा के घराने से एक नया करार
करूँगा। **9** यह उस करार जैसा न
होगा जो मैंने उनके बापदादों से उस वक्त
किया था जब मैं उनका हाथ पकड़कर
उन्हें मिस्र देश से बाहर निकाल लाया
था।’ यहोवा कहता है, ‘क्योंकि वे मेरे
करार पर बने न रहे, इसलिए मैंने उनकी
परवाह करना छोड़ दिया।’ ”

10 “यहोवा कहता है, ‘उन दिनों के
बाद मैं इसराएल के घराने से जो करार
करूँगा वह यह है: मैं अपने कानून उनके
मन में डालूँगा और इन्हें उनके दिलों पर
लिखूँगा। और मैं उनका परमेश्वर बनूँगा
और वे मेरे लोग बनेंगे।

11 उनमें से कोई भी अपने देश-
वासी को और अपने भाई को यह कह-
कर नहीं सिखाएगा: “यहोवा को जानो!”
क्योंकि उनमें छोटे से लेकर बड़े
तक सबके सब मुझे जानेंगे।
12 मैं उन्हें दया दिखाते हुए उनके
बुरे काम माफ करूँगा और उनके
पापों को फिर कभी याद न करूँगा।’ ”

13 इस तरह उसने “नए करार” की
बात कहकर पहले करार को रद्द कर
दिया है। और जो रद्द कर दिया गया है
और पुराना होता जा रहा है, वह अब
मिट जाने पर है।

9 तो फिर, उस पहले करार में पवित्र
सेवा के नियम हुआ करते थे और
धरती पर उपासना के लिए एक पवित्र
निवास-स्थान भी था। **2** इस निवास-

स्थान में जो पहला भाग बनाया गया
था, उसमें दीपदान, मेज़ और चढ़ावे की
रोटियाँ रखी गयी थीं। और यह भाग
"पवित्र" कहलाता है। 3 मगर दूसरे
परदे के पीछे "परम-पवित्र" कहलानेवाला
भाग था। 4 इस भाग में सोने की एक
धूपदानी और करार का वह संदूक था
जो सोने से मढ़ा हुआ था। इस संदूक के
अंदर सोने का वह मर्तबान था जिसमें
मन्‍ना था और हारून की वह छड़ी थी
जिसमें कलियाँ निकल आयी थीं और
करार की पटियाँ थीं। 5 इस संदूक के
ऊपर शानदार करूब* बने थे, जो प्राय-
श्‍चित्त के ढक्कन पर छाया किए हुए थे।
मगर अभी इन सब चीज़ों के बारे में एक-
एक कर ब्यौरा नहीं दिया जा सकता।#

6 जब ये सारी चीज़ें इस तरह बनायी
जा चुकी थीं, तो याजक पवित्र सेवा के
काम करने के लिए पहले भाग में बार-
बार दाखिल हुआ करते थे। 7 मगर
उस दूसरे भाग में सिर्फ महायाजक दाखिल
होता था और वह भी साल में सिर्फ एक
बार। लेकिन वह उस लहू के बिना नहीं
जाता था, जो वह खुद अपने पापों के
लिए और लोगों के उन पापों के लिए जो
अनजाने में किए गए थे, चढ़ाता था।
8 इस तरह, पवित्र शक्ति यह साफ
दिखाती है कि पवित्र भाग* के लिए
तब तक रास्ता नहीं खोला गया जब
तक पहला निवास-स्थान* खड़ा रहा।
9 यही निवास-स्थान इस तय वक्त के
लिए, जो अभी चल रहा है, एक नमूना
है। और अब तक इस इंतज़ाम में भेंट
और बलिदान दोनों चढ़ाए जाते रहे हैं।
मगर ये बलिदान और भेंट परमेश्‍वर की
सेवा करनेवाले इंसान को पूरी तरह से
शुद्ध ज़मीर नहीं दे सकते। 10 मगर
ये भेंट और बलिदान सिर्फ खान-पान और
शुद्धिकरण की अलग-अलग विधियों* के
बारे में हैं। ये शारीरिक बातों के बारे में
मूसा के कानून की माँगें थीं। और ये तब
तक के लिए लागू की गयी थीं जब तक
कि सब बातों के सुधार का वक्त न आ
जाता।

11 लेकिन जब मसीह महायाजक
बनकर आया और हमारे लिए वे बढ़िया
आशीषें लाया जो अभी हमें मिल रही हैं,
तो वह और भी श्रेष्ठ और परिपूर्ण
निवास-स्थान में दाखिल हुआ, जो इंसान
के हाथ का बनाया नहीं है यानी इस धरती
की सृष्टि का हिस्सा नहीं है। 12 तब
वह बकरों और जवान बैलों का लहू लेकर
नहीं बल्कि खुद अपना लहू लेकर, हमेशा-
हमेशा के लिए एक ही बार परम-पवित्र में
दाखिल हुआ और हमारे लिए, सदा तक
कायम रहनेवाला छुटकारा हासिल किया।
13 अगर बकरों और बैलों का लहू और
कलोर की राख का छिड़कना, दूषित
लोगों को इस हद तक पवित्र करता है

इब्रा 9:5* करूब, ऊँचा ओहदा रखनेवाले स्वर्गदूत हैं। **5#** शाब्दिक, "यह वक्त नहीं कि इन चीज़ों के बारे में पूरा ब्यौरा दिया जाए।" **8*** यहाँ जिस पवित्र भाग का ज़िक्र है वह स्वर्ग में है।

इब्रा 9:8* यहाँ जिस निवास-स्थान का ज़िक्र है वह धरती पर था। **10*** शाब्दिक, "तरह-तरह के बप-तिस्मों।"

कि वे परमेश्वर की नज़र में शारी-
रिक रूप से शुद्ध होते हैं, **14** तो
फिर मसीह का लहू, जिसने सदा तक
कायम रहनेवाली पवित्र शक्ति के ज़रिए
खुद को परमेश्वर के सामने निष्कलंक
चढ़ाया, हमारे ज़मीर को मुरदा कामों से
कितना ज़्यादा शुद्ध कर सकता है ताकि
हम जीवित परमेश्वर की पवित्र सेवा
कर सकें!

15 इसी वजह से वह एक नए करार
का बिचवई है, ताकि जो बुलाए गए हैं
वे सदा तक कायम रहनेवाली विरासत
का वादा पा सकें। यह सब उसकी मौत
की वजह से मुमकिन हुआ है, और यही
उन्हें फिरौती देकर पहले करार के तहत
किए गए पापों से छुटकारा दिलाती है।
16 इसलिए कि जहाँ कोई करार किया
जाता है, वहाँ करार करनेवाले इंसान की
मौत होना एक माँग है। **17** इसलिए
कि एक करार, मौत पर ही कारगर
होता है क्योंकि जब तक करार करने-
वाला इंसान ज़िंदा है, तब तक यह
लागू नहीं होता। **18** इसी वजह से,
पहला करार भी लहू के आधार पर ही
जारी किया गया था। **19** जब मूसा ने
सब लोगों के सामने कानून की हर
आज्ञा पढ़कर सुनायी, तब उसने जवान
बैलों और बकरों के लहू के साथ पानी
लिया और सुर्ख लाल ऊन और जूफा से
करार की किताब पर और सब लोगों
पर इन्हें छिड़का, **20** और कहा: "यह
उस करार का लहू है जिसे पूरा करने
की ज़िम्मेदारी परमेश्वर ने तुम सब पर
डाली है।" **21** और उसने निवास-
स्थान और जन-सेवा में इस्तेमाल होने-
वाले सभी बर्तनों पर भी इसी तरह लहू
छिड़का। **22** हाँ, मूसा के कानून के
मुताबिक करीब-करीब सारी चीज़ें लहू से
शुद्ध की जाती हैं। और जब तक लहू
नहीं बहाया जाता, माफी नहीं मिलती।

23 इसलिए, यह ज़रूरी था कि
स्वर्ग की चीज़ों के ये नमूने जानवरों के
लहू से शुद्ध किए जाएँ, मगर स्वर्ग की
चीज़ें ऐसे बलिदानों से शुद्ध की जाएँ जो
जानवरों के बलिदानों से कहीं बढ़कर
हों। **24** इसलिए कि मसीह, इंसान
के हाथ के बनाए किसी परम-पवित्र में
दाखिल नहीं हुआ जो असल की बस एक
नकल है। बल्कि वह स्वर्ग ही में दाखिल
हुआ ताकि हमारे लिए अब परमेश्वर के
सामने हाज़िर हो। **25** न ही मसीह
को अपने आपको बार-बार बलि चढ़ाना
है, जैसे महायाजक साल-दर-साल जान-
वरों का लहू लेकर परम-पवित्र में दाखिल
होता है, मगर अपना लहू लेकर नहीं।
26 अगर मसीह को बार-बार अपना
बलिदान चढ़ाना होता, तो उसे दुनिया की
शुरूआत से बार-बार दुःख उठाना पड़ता।
मगर अब उसने दुनिया की व्यवस्थाओं
के आखिरी वक्त में एक ही बार हमेशा
के लिए खुद को ज़ाहिर किया है ताकि
अपने बलिदान से पाप को मिटा दे।
27 और जैसा इंसानों के लिए एक बार
मरना तय है मगर इसके बाद न्याय होगा,
28 उसी तरह, मसीह भी बहुतों का पाप
उठाने के लिए एक ही बार हमेशा के लिए

बलिदान किया गया। और जब वह दूसरी
बार आएगा, तो पाप मिटाने के लिए नहीं
आएगा बल्कि उन लोगों पर ज़ाहिर होगा
जो अपने उद्धार के लिए बड़ी बेताबी से
उसका इंतज़ार कर रहे हैं।

10 मूसा का कानून आनेवाली
अच्छी बातों की महज़ छाया है,
मगर उनका असली रूप नहीं। इस-
लिए याजक लगातार साल-दर-साल जो
एक ही तरह के बलिदान चढ़ाते हैं,
उनसे वे परमेश्वर की उपासना करने-
वालों को कभी परिपूर्ण नहीं बना सकते।
2 अगर ऐसा होता तो क्या बलिदानों का
चढ़ाना बंद न हो जाता? क्योंकि बलिदान
लानेवाले* एक ही बार हमेशा के लिए
शुद्ध हो गए होते और फिर उन्हें अपने
पापी होने का एहसास नहीं रहता।#
3 इसके बजाय, इन बलिदानों से लोगों
को साल-दर-साल उनके पापों की याद
दिलायी जाती है। **4** क्योंकि यह मुम-
किन नहीं कि बैलों और बकरों का लहू
पापों को मिटा सके।

5 यही वजह है कि जब मसीह दुनिया
में आया तो उसने कहा: "'बलिदान
और चढ़ावा तू ने नहीं चाहा, मगर तू
ने मेरे लिए एक शरीर तैयार किया।
6 तू ने होम-बलियाँ* और पाप-बलियाँ
न चाहीं।' **7** तब मैंने कहा, 'हे पर-
मेश्वर, देख! मैं तेरी मरज़ी पूरी करने
आया हूँ, (ठीक जैसे शास्त्र में* मेरे बारे
में लिखा है।)'" **8** पहले यह कहने
के बाद: "तू ने बलिदान और चढ़ावे और
होम-बलियाँ और पाप-बलियाँ न चाहीं"
—जो मूसा के कानून के मुताबिक चढ़ायी
जाती हैं— **9** वह फिर यह कहता है:
"देख! मैं तेरी मरज़ी पूरी करने आया
हूँ।" वह पहले इंतज़ाम को खत्म कर
देता है ताकि दूसरा इंतज़ाम शुरू करे।
10 जिस "मरज़ी" के बारे में उसने कहा,
उसी से और यीशु मसीह के एक ही बार
हमेशा के लिए चढ़ाए गए शरीर के ज़रिए
हमें पवित्र किया गया है।

11 इसके अलावा, हर याजक लोगों
की खातिर सेवा करने के लिए रोज़-ब-
रोज़ अपनी जगह पर खड़ा होता है
और बार-बार एक ही तरह के बलिदान
चढ़ाता है, क्योंकि ये बलिदान कभी-भी
पापों को पूरी तरह मिटा नहीं सकते।
12 मगर इस इंसान ने पापों के लिए
एक ही बलिदान सदा के लिए चढ़ा दिया
और परमेश्वर की दायीं तरफ जा बैठा।
13 तब से वह उस वक्त का इंत-
ज़ार कर रहा है जब उसके दुश्मनों को
उसके पाँवों की चौकी बना दिया जाएगा।
14 उसने एक ही बलिदान चढ़ाकर जो
पवित्र किए जा रहे हैं उन्हें सदा के लिए
परिपूर्ण कर दिया है। **15** और पर-
मेश्वर की पवित्र शक्ति भी हमें इस बात
के सच होने की गवाही देती है, क्योंकि
यह पहले कहती है: **16** "यहोवा

इब्रा 10:2* शाब्दिक, "पवित्र सेवा करनेवाले।" **2#** या, "उनका ज़मीर पापों की वजह से उन्हें फिर दोषी नहीं ठहराता।" **6*** ये बलिदान आग में पूरी तरह होम या भस्म किए जाते थे।

इब्रा 10:7* शाब्दिक, "शास्त्र के खर्रे में।"

कहता है, 'उन दिनों के बाद मैं उनके साथ एक करार करूँगा। मैं अपने कानून उनके दिल में डालूँगा और उनके मन पर इन्हें लिखूँगा।'"
17 फिर वह कहती है: "मैं उनके पापों को और उनके बुरे कामों को फिर कभी याद न करूँगा।"
18 जब इन पापों की माफी दी गयी है, तो अब इसके बाद पाप के लिए किसी बलिदान की ज़रूरत नहीं रही।

19 इसलिए भाइयो, क्योंकि हमें यीशु के लहू के ज़रिए परम-पवित्र में प्रवेश पाने का साहस मिला है
20 जिसमें दाखिल होने के लिए उसने हमारे लिए एक नया और जीवित रास्ता खोला है जो परदे से पार होकर जाता है और यह परदा उसका शरीर है,
21 और जबकि हमारे पास ऐसा महान याजक है जो परमेश्‍वर के घराने पर अधिकारी है,
22 तो आओ हम विश्‍वास से पैदा होने-वाले पक्के यकीन के साथ सच्चे दिल से परमेश्‍वर के पास जाएँ। क्योंकि हमारे दिलों पर छिड़काव कर हमारे दुष्ट ज़मीर को शुद्ध किया गया है और हमारे शरीर को शुद्ध पानी से नहलाया गया है।
23 आओ हम बिना डगमगाए अपनी आशा का सब लोगों के सामने ऐलान करते रहें, क्योंकि जिसने वादा किया है वह विश्‍वासयोग्य है।
24 और आओ हम प्यार और बढ़िया कामों में उकसाने के लिए एक-दूसरे में गहरी दिलचस्पी लें,
25 और एक-दूसरे के साथ इकट्ठा होना न छोड़ें, जैसा कुछ लोगों का दस्तूर है। बल्कि एक-दूसरे की हिम्मत बंधाएँ, और जैसे-जैसे तुम उस दिन को नज़दीक आता देखो, यह और भी ज़्यादा किया करो।

26 एक बार सच्चाई का सही ज्ञान पाने के बाद अगर हम जानबूझकर पाप करते रहते हैं तो हमारे पापों के लिए कोई बलिदान नहीं बचता।
27 मगर न्यायदंड का एक भयानक इंतज़ार और परमेश्‍वर के क्रोध की ज्वाला बाकी रह जाती है जो विरोध करनेवालों को भस्म कर देगी।
28 कोई भी इंसान जिसने मूसा का कानून तोड़ा है उसे दो या तीन लोगों की गवाही पर बिना दया के मार डाला जाता है।
29 तो सोचो कि वह इंसान और भी कितने भारी दंड के लायक समझा जाएगा जो परमेश्‍वर के बेटे को रौंदता है और करार के उस लहू को मामूली समझता है जिसके ज़रिए उसे पवित्र किया गया था, और जिसने पर-मेश्‍वर की महा-कृपा की तौहीन करते हुए उसे क्रोध दिलाया है!
30 क्योंकि हम उसे जानते हैं जिसने यह कहा है: "बदला देना मेरा काम है, मैं ही बदला चुकाऊँगा" और यह भी कि "यहोवा अपने लोगों का न्याय करेगा।"
31 जीवित परमेश्‍वर के हाथों में पड़ना भयानक बात है।

32 मगर तुम उन बीते दिनों को याद करते रहो जब तुमने ज्ञान की रौशनी पाने के बाद दुःख-तकलीफों को सहने में कड़ा संघर्ष करते हुए धीरज धरा था।
33 कभी तुम्हारा मज़ाक उड़ाने और तुम्हें क्लेश देने के लिए तुम्हारा तमाशा बनाया गया और कभी तुम ये सब सहनेवालों के साथ भागीदार

बने थे। **34** इसलिए कि तुमने उन
लोगों को हमदर्दी दिखायी जो कैद में थे
और जब तुम्हारी संपत्ति लूटी जा रही थी
तो तुमने खुशी से यह सह लिया, क्योंकि
तुम जानते हो कि तुम्हारे पास इससे भी
बेहतर और कायम रहनेवाली संपत्ति है।

35 इसलिए, हिम्मत के साथ
बेझिझक बोलना मत छोड़ो, क्योंकि
इसके लिए बड़ा इनाम दिया जाएगा।
36 तुम्हें धीरज धरने की ज़रूरत है,
ताकि परमेश्वर की मरज़ी पूरी करने के
बाद तुम वह पा सको जिसका वादा
परमेश्वर ने किया है। **37** बस अब
“थोड़ा ही वक्त” बाकी रह गया है, और
“वह जो आनेवाला है वह आएगा और
देर न करेगा।” **38** “मगर मेरा नेक
जन अपने विश्वास से ज़िंदा रहेगा,” और
“अगर वह पीछे हट जाता है, तो मेरा
मन उससे खुश नहीं होगा।” **39** हम
पीछे हटकर नाश होनेवालों में से नहीं,
बल्कि उनमें से हैं जो विश्वास रखते हैं
ताकि अपना जीवन बचा सकें।

11 विश्वास, आशा की हुई चीज़ों
का पूरे भरोसे के साथ इंतज़ार
करना है और उन असलियतों का साफ
सबूत है, जो अभी दिखायी नहीं देतीं।
2 क्योंकि इसी विश्वास की वजह से
पुराने वक्त के लोगों ने अपने बारे में
गवाही पायी कि परमेश्वर उनसे खुश है।

3 विश्वास ही से हम यह समझ पाते
हैं कि परमेश्वर के वचन से दुनिया
की व्यवस्थाएँ ठहरायी गयीं, इसलिए
जो दिखायी दे रहा है वह उन चीज़ों से
आया है जो दिखायी नहीं देतीं।

4 विश्वास ही से हाबिल ने परमेश्वर
को ऐसा बलिदान चढ़ाया जो कैन के
बलिदान से श्रेष्ठ था। और इसी विश्वास
की वजह से उसे यह गवाही दी गयी कि
वह परमेश्वर की नज़र में नेक था। पर-
मेश्वर ने उसकी भेंट के बारे में गवाही
दी कि उसने उसे मंज़ूर किया है। हालाँकि
हाबिल मर चुका है फिर भी इसी विश्वास
की वजह से वह आज भी बोलता है।

5 विश्वास ही से हनोक को हटा
दिया गया ताकि वह मौत को आता न
देखे। और वह कहीं नहीं पाया गया
क्योंकि परमेश्वर ने उसे हटा लिया था।
मगर हटा दिए जाने से पहले उसे यह
गवाही दी गयी कि उसने परमेश्वर को
खुश किया है। **6** विश्वास के बिना
परमेश्वर को खुश करना नामुमकिन है,
इसलिए कि जो उसके पास आता है
उसका यह यकीन करना ज़रूरी है कि
परमेश्वर सचमुच है और वह उन लोगों
को इनाम देता है जो पूरी लगन से उसकी
खोज करते हैं।

7 विश्वास ही से नूह ने, परमेश्वर
की तरफ से उन चीज़ों के बारे में चेता-
वनी पाने के बाद जो उस वक्त तक
दिखायी नहीं दे रही थीं, परमेश्वर का डर
मानते हुए अपने परिवार को बचाने के
लिए एक जहाज़* बनाया। इसी विश्वास
की वजह से उसने उस वक्त की दुनिया
को सज़ा के लायक ठहराया और उस
नेकी का वारिस बना जो विश्वास की
वजह से है।

इब्रा 11:7* मत्ती 24:38 फुटनोट देखें।

8 विश्वास ही से अब्राहम ने, जब
उसे बुलाया गया, आज्ञा मानी और उस
जगह के लिए निकल पड़ा जो उसे वि-
रासत में मिलनेवाली थी। हालाँकि वह
नहीं जानता था कि वह कहाँ जा रहा है
फिर भी वह गया। **9** विश्वास की
वजह से वह वादा किए गए देश में ऐसे
रहा जैसे एक पराए देश में रह रहा हो।
और वह इसहाक और याकूब के साथ
तंबुओं में रहा जो उसके साथ उसी वादे
के वारिस थे। **10** इसलिए कि वह
एक ऐसे शहर के इंतज़ार में था, जो
सच्ची बुनियाद पर खड़ा है, जिसका
निर्माण करनेवाला और रचनेवाला पर-
मेश्वर है।

11 विश्वास ही से सारा ने गर्भधा-
रण करने की शक्ति पायी, हालाँकि
उसकी बच्चे पैदा करने की उम्र बीत
चुकी थी, क्योंकि जिसने वादा किया
था उसे उसने विश्वासयोग्य माना था।
12 इसलिए उस एक आदमी से जो मानो
बेजान था, आसमान के तारों और समुद्र
किनारे की रेत के कणों जैसी अनगिनत
संतानें पैदा हुईं।

13 ये सभी विश्वास रखते हुए मर
गए, हालाँकि जिन बातों का उनसे वादा
किया गया था, वे उनके दिनों में पूरी नहीं
हुईं। फिर भी, उन्होंने वादा की गयी बातों
को दूर ही से देखा और उनसे खुशी
पायी। और सब लोगों के सामने यह
ऐलान किया कि वे उस देश में अजनबी
और मुसाफिर हैं। **14** इसलिए कि जो
इस तरह की बातें कहते हैं वे ज़ाहिर
करते हैं कि वे पूरी लगन से उस जगह
की खोज में हैं जो उनकी अपनी होगी।
15 और अगर वे उस देश को याद करते
रहते जहाँ से वे निकले थे, तो उनके
पास वहाँ लौट जाने का मौका था।
16 मगर अब वे एक बढ़िया जगह पाने
की कोशिश में आगे बढ़ रहे हैं, जिसका
नाता स्वर्ग से है। इसलिए परमेश्वर
उनका परमेश्वर कहलाए जाने से शर्मिंदा
नहीं होता। यहाँ तक कि उसने उनके
लिए एक शहर तैयार किया है।

17 विश्वास ही से अब्राहम ने, जब
उसकी परीक्षा ली गयी थी, इसहाक को
मानो बलि चढ़ा ही दिया था। और
यह आदमी, जिसने खुशी-खुशी वादों को
स्वीकार किया था, अपने इकलौते बेटे को
बलि चढ़ाने ही वाला था, **18** हालाँकि
उससे यह कहा गया था: "जो 'तेरा
वंश' कहलाएगा, वह इसहाक से होगा।"
19 उसने यह इसलिए किया क्योंकि वह
मानता था कि परमेश्वर उसके बेटे को
मरे हुओं में से भी जी उठाने के काबिल
है। और वाकई उसने अपने बेटे को मौत
के मुँह से वापस पाया। और यह आने-
वाली बातों की एक मिसाल बना।

20 विश्वास ही से इसहाक ने आने-
वाली बातों के बारे में याकूब और एसाव
को आशीष दी।

21 विश्वास ही से याकूब ने, जब
वह मरने पर था, यूसुफ के दोनों बेटों
को आशीष दी और अपनी लाठी के सिरे
का सहारा लेकर परमेश्वर की उपा-
सना की।

22 विश्वास ही से यूसुफ ने, जब वह
मरने पर था, इसराएल के बेटों के मिस्र
से निकलने की बात कही और उसकी
हड्डियाँ वहाँ से ले जाने की आज्ञा दी।
23 विश्वास ही से मूसा के माता-
पिता ने उसके पैदा होने के बाद तीन
महीने तक उसे छिपाए रखा। क्योंकि
उन्होंने देखा कि बच्चा बहुत सुंदर
है और वे राजा के हुक्म से न
डरे। **24** विश्वास ही से मूसा ने, बड़ा
होने पर फिरौन की बेटी का बेटा कह-
लाने से इनकार कर दिया। **25** और
पाप का चंद दिनों का सुख भोगने
के बजाय, उसने परमेश्वर के लोगों
के साथ ज़ुल्म सहने का चुनाव किया।
26 उसने समझा कि परमेश्वर का अभि-
षिक्त जन* होने के नाते निंदा सहना,
मिस्र के खज़ानों से कहीं बड़ी दौलत है,
क्योंकि वह अपनी नज़र इनाम पाने पर
लगाए हुए था। **27** विश्वास ही से
उसने मिस्र छोड़ दिया मगर राजा के
क्रोध के डर से नहीं, क्योंकि वह उस
अदृश्य परमेश्वर को मानो देखता हुआ
डटा रहा। **28** विश्वास ही से मूसा ने
फसह का त्योहार मनाया और दरवाज़े की
चौखटों पर लहू छिड़का ताकि नाश करने-
वाला उनके पहलौठों को हाथ न लगाए।
29 विश्वास ही से वे लाल सागर के
बीच से ऐसे गुज़रे जैसे सूखी ज़मीन पर
चल रहे हों। मगर जब मिस्रियों ने इससे
गुज़रने की जुर्रत की, तो सागर ने उन्हें
निगल लिया।

30 विश्वास ही से जब इसराएलियों
ने सात दिन तक यरीहो शहर की
दीवारों के चक्कर काटे तब वे ढह गयीं।
31 विश्वास की वजह से ही राहाब नाम
की वेश्या आज्ञा न माननेवालों के साथ
नाश नहीं हुई, क्योंकि उसने जासूसों का
शांति से सत्कार किया था।
32 और किस-किसका नाम गिन-
वाऊँ? अगर मैं गिदोन, बाराक, शिम-
शोन, यिप्तह, दाविद, साथ ही शमू-
एल और दूसरे भविष्यवक्ताओं के बारे
में बताऊँ तो समय कम पड़ जाएगा।
33 इन लोगों ने विश्वास ही से उनके
खिलाफ लड़नेवाली हुकूमतों को हराया,
परमेश्वर के स्तरों के मुताबिक नेक काम
किए, वादे हासिल किए, शेरों का मुँह
बंद किया, **34** धधकती आग को ठंडा
किया, तलवार की धार से बच निकले,
उन्हें कमज़ोर हालत से शक्तिशाली किया
गया, उन्होंने युद्ध में वीरता हासिल की
और विदेशी फौजों को खदेड़ा।
35 स्त्रियों ने उन अपनों को वापस पाया
जो मर चुके थे। और दूसरे ऐसे थे जिन्हें
यातनाएँ दे-देकर मार डाला गया क्योंकि
वे किसी तरह की फिरौती देकर इन
यातनाओं से छुटकारा नहीं पाना चाहते
थे ताकि वे एक बेहतर पुनरुत्थान* पा
सकें। **36** हाँ, कितने ऐसे थे जिनकी
खिल्ली उड़ायी गयी और जिन्हें कोड़े
लगाए गए। इतना ही नहीं, उन्हें ज़ंजीरों
में बाँधा गया और कैद में डाला

इब्रा 11:26* यूनानी में, "मसीह।"

इब्रा 11:35* यानी, मरे हुओं में से जी उठना।

गया और इस तरह वे आज़माए गए।
37 उन पर पत्थरवाह किया गया, उनके
विश्वास की आज़माइश हुई, उन्हें आरे
से चीरा गया और तलवार से कत्ल किया
गया। वे भेड़ों और बकरों की खाल
पहने भागे फिरे। वे तंगी, मुसीबतें और
बदसलूकी सहते रहे, **38** और यह
दुनिया उनके लायक न थी। वे रेगिस्तानों,
पहाड़ों, गुफाओं और धरती की माँदों में
भटकते रहे।

39 इन सभी ने, हालाँकि अपने
विश्वास के ज़रिए अपने बारे में गवाही
पायी थी, फिर भी उन्होंने वादा पूरा
होते हुए नहीं देखा। **40** क्योंकि पर-
मेश्वर हमें इससे बेहतर कुछ देना चाहता
था ताकि वे हमसे अलग परिपूर्ण न
बनाए जाएँ।

12 तो फिर, जब गवाहों का ऐसा
घना बादल हमें घेरे हुए है, तो
आओ हम हरेक बोझ को और उस
पाप को जो आसानी से हमें उलझाकर
फँसा सकता है, उतार फेंकें और उस दौड़
में जिसमें हमें दौड़ना है धीरज से दौड़ते
रहें, **2** और यीशु पर नज़र टिकाए
रहें जो हमारे विश्वास का खास नुमाइंदा
और इसे परिपूर्ण करनेवाला है। उसने
उस खुशी के लिए जो उसके सामने थी,
यातना की सूली* पर मौत सह ली और
शर्मिंदगी की ज़रा भी परवाह न की और
अब वह परमेश्वर की राजगद्दी की दायीं
तरफ बैठ गया है। **3** हाँ, उसी पर
ध्यान दो और गौर करो, जिसने पापियों
के मुँह से ऐसी बुरी-बुरी बातें सहीं जिनसे
वे खुद ही दोषी ठहरे, ताकि तुम थक-
कर हार न मानो।

4 उस पाप के खिलाफ संघर्ष करते
रहने में तुम्हें कभी इस हद तक मुकाबला
नहीं करना पड़ा कि तुम्हारा खून बहा हो।
5 मगर तुम इस नसीहत को, जिसमें
तुम्हें बेटे पुकारा गया है, पूरी तरह से
भूल गए हो: "मेरे बेटे, यहोवा से मिलने-
वाले अनुशासन को हल्की बात न समझ,
और जब वह तुझे सुधारे, तो हिम्मत
न हार, **6** इसलिए कि यहोवा जिससे
प्यार करता है उसे अनुशासन देता है।
दरअसल, वह जिसे अपना बेटा मानकर
अपनाता है उसे कोड़े भी लगाता है।"

7 तुम यह सब अनुशासन पाने के
लिए सह रहे हो। परमेश्वर तुम्हें अपने
बेटे मानकर तुम्हारे साथ पेश आ रहा है।
क्योंकि ऐसा कौन-सा बेटा है जिसे पिता
अनुशासन नहीं देता? **8** लेकिन अगर
तुमने वह अनुशासन नहीं पाया जो सब
ने पाया है, तो तुम असल में बेटे नहीं
बल्कि नाजायज़ औलाद हो। **9** यही
नहीं, हमारे ऐसे शारीरिक पिता थे जो
हमें अनुशासन दिया करते थे और हम
उनका आदर करते थे। तो क्या हमें जीते
रहने के लिए खुद को अपने उस पिता के
और भी ज़्यादा अधीन नहीं करना चाहिए,
जिसने हमें अपनी पवित्र शक्ति से ठहरा-
कर जीवन दिया है? **10** शारीरिक
पिताओं ने तो कुछ दिनों के लिए जैसा
उन्हें ठीक लगा वैसा अनुशासन दिया।

इब्रा 12:2* अतिरिक्त लेख 6 देखें

लेकिन परमेश्वर हमारे ही फायदे के लिए
हमें अनुशासन देता है ताकि हम उसकी
पवित्रता में भागीदार बनें। **11** सच है,
किसी भी तरह का अनुशासन अभी के
लिए सुखद नहीं लगता बल्कि दुःख-
दायी लगता है। फिर भी जो लोग इससे
प्रशिक्षण पाते हैं, उनके लिए आगे चल-
कर यह शांति का फल पैदा करता है
यानी वे परमेश्वर के स्तरों के मुताबिक
सही काम करते हैं।

12 इसलिए ढीले हाथों और कमज़ोर
घुटनों को मज़बूत करो। **13** और
अपने कदमों के लिए सीधा रास्ता बनाते
रहो, ताकि जो अंग कमज़ोर* है वह जोड़
से उखड़ न जाए, बल्कि स्वस्थ हो जाए।
14 सब लोगों के साथ शांति बनाए रखने
में लगे रहो और उस पवित्रता को हासिल
करने में लगे रहो जिसके बिना कोई भी
इंसान प्रभु को नहीं देखेगा। **15** साथ
ही, कड़ी नज़र रखो कि तुममें से किसी
से परमेश्वर की महा-कृपा छीन न ली
जाए, और तुम्हारे बीच ऐसी कोई ज़ह-
रीली जड़ न पैदा हो जो मुसीबत बन जाए
और जिससे बहुत-से दूषित हो जाएँ,
16 कि तुम्हारे बीच कोई व्यभिचारी न
हो, न ही कोई एसाव जैसा हो जिसने
पवित्र चीज़ों की कदर नहीं की और एक
वक्त के खाने के बदले अपने पहलौठे
होने का हक दे दिया। **17** तुम जानते
हो कि बाद में जब उसने विरासत में
आशीष पानी चाही, तो उसे ठुकरा दिया
गया। हालाँकि उसने आंसू बहा-बहाकर
अपने पिता का फैसला बदलवाने की जी-
जान से कोशिश की, फिर भी वह इसे
बदल न सका।

18 इसलिए कि तुम उस पहाड़ के
पास नहीं आए जिसे छूआ जा सकता था
और जो आग की लपटों से जल रहा था
और न ही तुम काले बादल और घोर
अंधकार और आंधी के पास आए हो।
19 न ही तुम तुरही की तेज़ आवाज़ या
किसी के बोलने की आवाज़ सुन रहे हो,
जिस आवाज़ को सुनने पर लोगों ने यह
बिनती की थी कि उन्हें और वचन न
सुनाए जाएँ। **20** क्योंकि वे इस आज्ञा
से बहुत डर गए थेः "अगर कोई जान-
वर इस पहाड़ को छूए, तो उसे पत्थर-
वाह कर मार डाला जाए।" **21** और-
तो-और, यह नज़ारा इतना भयानक था
कि मूसा ने कहाः "मैं डर के मारे थरथर
काँप रहा हूँ।" **22** इसके बजाय तुम
सिय्योन पहाड़ के पास और जीवित पर-
मेश्वर की नगरी, स्वर्गीय यरूशलेम के
पास, हज़ारों-हज़ार स्वर्गदूतों **23** और
उनकी आम सभा में और परमेश्वर के
पहलौठों की सभा* में आए हो, जिनके
नाम स्वर्ग में लिखे गए हैं। और उस पर-
मेश्वर के पास आए हो जो सबका न्यायी
है और पवित्र शक्ति से पैदा हुए उन नेक
जनों के पास आए हो जिन्हें परिपूर्ण किया
गया है। **24** और नए करार के बिच-
वई यीशु और उस लहू के पास आए

इब्रा 12:13* शाब्दिक, "लंगड़ा।"

इब्रा 12:23* शाब्दिक, "मंडली।"

हो जो उसने हम पर छिड़का है और जो
हाबिल के लहू से कहीं श्रेष्ठ तरीके से
बोलता है।

25 सावधान रहो कि तुम उसकी
अनसुनी न करो जो तुमसे बोल रहा है।
इसलिए कि जब वे लोग उसकी अन-
सुनी करने पर न बच सके जो
उन्हें धरती पर परमेश्वर की चेतावनी दे
रहा था, तो सोचो कि हम उससे मुँह
मोड़ने पर कैसे बच सकेंगे जो हमसे स्वर्ग
से बात करता है! 26 गुज़रे वक्त में
तो उसकी आवाज़ से धरती काँप उठी
थी, मगर अब उसने यह कहते हुए वादा
किया है: "मैं एक बार फिर न सिर्फ धरती
को बल्कि स्वर्ग को भी हिला दूँगा।"
27 उसका यह कहना कि "एक बार
फिर" यह दिखाता है कि हिलायी जाने-
वाली चीज़ें नाश हो जाएँगी। यानी वे
चीज़ें जो परमेश्वर ने नहीं बनायी हैं ताकि
वे चीज़ें जिन्हें हिलाया नहीं जाता हमेशा
तक कायम रहें। 28 तो यह देखते
हुए कि हमें ऐसा राज मिलनेवाला है
जिसे हिलाया नहीं जा सकता, आओ
हम परमेश्वर की महा-कृपा से फायदा
पाते रहें, जिसके ज़रिए हम परमेश्वर के
लिए भय और श्रद्धा के साथ उसकी
पवित्र सेवा करते रहें। 29 इसलिए
कि हमारा परमेश्वर वह आग भी है जो
पूरी तरह भस्म कर देती है।

13 भाइयों की तरह एक-दूसरे
से प्यार करते रहो। 2 मेह-
मान-नवाज़ी करना मत भूलो, क्योंकि
इसके ज़रिए कुछ लोगों ने अनजाने में ही
स्वर्गदूतों का सत्कार किया था। 3 जो
कैद में हैं उन्हें याद रखो, मानो तुम खुद
भी उनके साथ कैद में हो। और जिनके
साथ बुरा सलूक किया जाता है उन्हें भी
याद रखो, इसलिए कि तुम खुद भी इस
धरती पर जी रहे हो। 4 शादी सब
लोगों के बीच आदर की बात हो और
शादी की सेज दूषित न की जाए। क्योंकि
परमेश्वर व्यभिचारियों और शादी के
बाहर यौन-संबंध रखनेवालों को सज़ा
देगा। 5 तुम्हारे जीने के तरीके में पैसे
का प्यार न हो, और जो कुछ तुम्हारे पास
है उसी में संतोष करो। क्योंकि परमेश्वर
ने कहा है: "मैं तुझे कभी न छोड़ूंगा, न ही
कभी त्यागूंगा।" 6 इसलिए हम पूरी
हिम्मत रखें और यह कहें: "यहोवा मेरा
मददगार है, मैं न डरूँगा। इंसान मेरा क्या
बिगाड़ सकता है?"

7 जो तुम्हारे बीच अगुवाई करते हैं
और जिन्होंने तुम्हें परमेश्वर का वचन
सुनाया है, उन्हें याद रखो और बड़े ध्यान
से उनके चालचलन के नतीजे पर गौर
करते हुए उनके विश्वास की मिसाल पर
चलो।

8 यीशु मसीह कल, आज और
हमेशा तक एक जैसा है।

9 तरह-तरह की परायी शिक्षाओं से
गुमराह न होना। क्योंकि परमेश्वर की
महा-कृपा से दिल का मज़बूत किया जाना
अच्छा है, न कि खान-पान के नियमों को
मानने से। जो इन्हें मानने में लगे रहते
हैं उन्हें कोई फायदा नहीं होता।

10 हमारी एक ऐसी वेदी है, जिससे
निवास-स्थान में पवित्र सेवा करने-
वालों को खाने का कोई अधिकार नहीं।
11 क्योंकि महायाजक जिन जानवरों का
लहू पापों के प्रायश्चित्त के लिए परम-
पवित्र में ले जाता है, उनका शरीर
तंबुओं की छावनी के बाहर जलाया जाता
है। 12 इसलिए, यीशु ने भी शहर के
फाटक के बाहर दुःख उठाया, ताकि वह
अपने लहू से लोगों को पवित्र कर सके।
13 इसलिए, आओ हम भी उस बदनामी
को अपने ऊपर लिए हुए जो उसने सही
थी, उसके पास तंबुओं की छावनी के
बाहर जाएँ। 14 क्योंकि यहाँ हमारा
ऐसा शहर नहीं जो हमेशा तक रहे, बल्कि
हम उस शहर का बेताबी से इंतज़ार कर
रहे हैं जो आनेवाला है। 15 आओ
हम यीशु के ज़रिए परमेश्वर को गुण-
गान का बलिदान हमेशा चढ़ाएँ, यानी
अपने होठों का फल जो उसके नाम का
सरेआम ऐलान करते हैं। 16 इतना
ही नहीं, भलाई करना और अपनी चीज़ों
से दूसरों की मदद करना न भूलो, क्योंकि
परमेश्वर ऐसे बलिदानों से बहुत खुश
होता है।

17 तुम्हारे बीच जो अगुवाई करते
हैं उनकी आज्ञा मानो और उनके
अधीन रहो, क्योंकि वे यह जानते हुए
तुम्हारी निगरानी करते हैं कि उन्हें इसका
हिसाब देना होगा, ताकि वे यह काम खुशी
से करें न कि आहें भरते हुए, क्योंकि
ऐसे में तुम्हारा ही नुकसान होगा।

18 हमारे लिए प्रार्थना करते रहो,
क्योंकि हमें यकीन है कि हमारा
ज़मीर साफ है, इसलिए कि हम सब बातों
में ईमानदारी से काम करना चाहते हैं।
19 मगर मैं तुम्हें खास तौर पर इसलिए
भी प्रार्थना करने के लिए उकसाता हूँ,
ताकि मैं और भी जल्दी तुम्हारे पास
आ सकूँ।

20 हमारी दुआ है कि शांति का
परमेश्वर, जिसने हमारे महान चरवाहे
और हमारे प्रभु यीशु को हमेशा तक
कायम रहनेवाले करार के लहू के साथ
मरे हुओं में से जी उठाया, 21 वही
तुम्हें उसकी मरज़ी पूरी करने के लिए हर
अच्छी चीज़ देकर तैयार करे, और यीशु
मसीह के ज़रिए हमारे अंदर वह सब काम
करे जो परमेश्वर को भाता है। उसी
की महिमा हमेशा-हमेशा तक होती रहे।
आमीन।

22 भाइयो, मैं तुम्हें उकसाता हूँ कि
हौसला बढ़ानेवाले मेरे इन वचनों को तुम
सब्र के साथ सुन लो। क्योंकि मैंने तुम्हें
थोड़े ही शब्दों में यह चिट्ठी लिखी है।
23 तुम्हें यह मालूम हो कि हमारे भाई
तीमुथियुस को रिहा कर दिया गया है।
अगर वह जल्दी आ गया तो मैं उसके
साथ आकर तुमसे मिलूँगा।

24 जो तुम्हारे बीच अगुवाई कर रहे
हैं उनके साथ-साथ सभी पवित्र जनों को
मेरा नमस्कार कहना। इटली में रहनेवाले
तुम्हें नमस्कार भेजते हैं।

25 तुम सब पर प्रभु की महा-कृपा
होती रहे।

याकूब
की चिट्ठी

1 याकूब जो परमेश्वर का और प्रभु
यीशु मसीह का दास है, उन बारह
गोत्रों को नमस्कार कहता है, जो चारों
तरफ तित्तर-बित्तर होकर रहते हैं।
2 मेरे भाइयो, जब तरह-तरह की
परीक्षाओं से तुम्हारा सामना हो तो इसे
पूरी खुशी की बात समझो, **3** क्योंकि
तुम जानते हो कि तुम्हारे परखे हुए
विश्वास का यह खरापन धीरज पैदा करने
का काम करता है। **4** मगर धीरज को
अपना काम पूरा करने दो, ताकि तुम
परिपूर्ण और सब बातों में हर तरह
से सिद्ध पाए जाओ और तुम में किसी
भी तरह की कमी न हो।
5 इसलिए अगर तुम में से किसी को
बुद्धि की कमी हो तो वह परमेश्वर से
माँगता रहे क्योंकि परमेश्वर अपने सभी
माँगनेवालों को उदारता से और बिना
डाँटे-फटकारे बुद्धि देता है और माँगने-
वाले को यह दी जाएगी। **6** लेकिन
वह विश्वास के साथ माँगता रहे, और
ज़रा भी शक न करे, क्योंकि जो शक
करता है वह समुद्र की लहरों की तरह
होता है जो हवा से यहाँ-वहाँ उछलती
रहती हैं। **7** दरअसल ऐसा इंसान यह
उम्मीद न करे कि वह यहोवा* से कुछ भी
पाएगा। **8** वह इंसान अपने फैसलों में
दुचित्ता और सारी बातों में डाँवाडोल है।
9 जो भाई गरीब है वह अपने ऊँचे
किए जाने पर खुशी मनाए, **10** और
जो अमीर है वह अपने दीन किए जाने
पर खुशी मनाए, क्योंकि वह ऐसे मिट
जाएगा जैसे मैदान में उगनेवाला फूल।
11 जैसे सूरज के चढ़ने पर उसकी तपती
धूप से घास-पत्ते मुरझा जाते हैं और
उनका फूल सूखकर गिर जाता है और
उसकी खूबसूरती मिट जाती है, ठीक वैसे
ही एक अमीर आदमी भी अपनी ज़िंदगी
की भाग-दौड़ में मिट जाएगा।
12 सुखी है वह इंसान जो परीक्षा
में धीरज धरे रहता है, क्योंकि
परीक्षा में खरा उतरने पर वह जीवन
का ताज पाएगा जिसका वादा यहोवा ने
उनसे किया है जो उससे लगातार प्यार
करते हैं। **13** जब किसी की परीक्षा
हो रही हो तो वह यह न कहे: "परमेश्वर
मेरी परीक्षा ले रहा है।" क्योंकि न तो
बुरी बातों से परमेश्वर को परीक्षा में
डाला जा सकता है, न ही वह खुद बुरी
बातों से किसी की परीक्षा लेता है।
14 लेकिन हर कोई अपनी ही इच्छाओं
से खिंचकर परीक्षाओं के जाल में फँसता
है। **15** फिर इच्छा गर्भवती होती है
और पाप को जन्म देती है, और जब
पाप कर लिया जाता है तो यह मौत
लाता है।

याकू 1:7* यह उन 237 जगहों में से एक जगह है, जहाँ परमेश्वर का नाम, 'यहोवा' इस अनुवाद के मुख्य पाठ में पाया जाता है। अतिरिक्त लेख 2 देखें।

16 मेरे प्यारे भाइयो, धोखा न
खाओ। **17** हरेक अच्छा तोहफा और
हरेक उत्तम देन ऊपर से मिलती है,
क्योंकि यह आकाश की ज्योतियों* के
पिता की तरफ से आती है। उस पिता
में कभी कोई बदलाव नहीं होता, न ही
कुछ घट-बढ़ होती है, जैसे रौशनी के
घटने-बढ़ने से छाया घटती-बढ़ती है।
18 क्योंकि उसकी यह मरज़ी थी इस-
लिए उसने सच्चाई के वचन से हमें पैदा
किया ताकि हम उसकी सृष्टि में से चुने
गए पहले फल हों।

19 मेरे प्यारे भाइयो, यह बात जान
लो। हर इंसान सुनने में फुर्ती करे, बोलने
में सब्र करे, और क्रोध करने में धीमा हो।
20 इसलिए कि इंसान के क्रोध करने
का नतीजा वह नेकी नहीं होता जिसकी
माँग परमेश्वर करता है। **21** तो फिर
हर तरह की अशुद्धता और उस बेकार
चीज़, यानी बुराई को उतार फेंको और
अपने अंदर उस वचन के बोए जाने को
कोमलता से स्वीकार करो, जो तुम्हारी
ज़िंदगियों को बचा सकता है।

22 लेकिन वचन पर चलनेवाले
बनो, न कि सिर्फ सुननेवाले जो झूठी
दलीलों से खुद को धोखा देते हैं।
23 क्योंकि जो कोई वचन को सुनता है
मगर उस पर चलता नहीं, वह उस इंसान
के जैसा है जो आइने में अपना असली
चेहरा देखता है। **24** वह अपनी
सूरत देखता है और चला जाता है,
और फौरन भूल जाता है कि वह किस
किस्म का इंसान है। **25** मगर जो
इंसान आज़ादी दिलानेवाले सिद्ध कानून
की बहुत करीब से जाँच करता है और
इसमें खोजबीन करता रहता है, वह ऐसा
करने से खुशी पाएगा क्योंकि वह सुनकर
भूलता नहीं मगर वचन पर चलनेवाला
बनता है।

26 अगर कोई आदमी खुद को पर-
मेश्वर की उपासना करनेवाला समझता
है, मगर अपनी ज़ुबान पर लगाम नहीं
लगाता बल्कि अपने दिल को धोखे में
रखता है, उस इंसान का उपासना करना
बेकार है। **27** हमारे परमेश्वर और
पिता की नज़र में शुद्ध और निष्कलंक
उपासना यह है: अनाथों और विधवाओं
की उनकी मुसीबतों में देखभाल की जाए
और खुद को दुनिया से बेदाग रखा जाए।

2 मेरे भाइयो, क्या तुम हमारे महिमा
से भरपूर प्रभु यीशु मसीह पर
विश्वास दिखाने के साथ-साथ भेदभाव
भी कर रहे हो? **2** अगर कोई इंसान
तुम्हारी सभा में सोने की अंगूठियाँ और
शानदार कपड़े पहनकर आता है और
एक गरीब आदमी मैले-कुचैले कपड़ों में
आता है, **3** तो तुम शानदार कपड़े
पहननेवाले को तो अच्छी नज़र से देखते
हो और उससे यह कहते हो: “इस
बढ़िया जगह पर बैठ” मगर गरीब से यह
कहते हो: “तू खड़ा रह,” या “यहाँ ज़मीन
पर मेरे पाँव की चौकी के पास बैठ,”
4 तो क्या तुम्हारे बीच ऊँच-नीच का
भेदभाव नहीं और क्या तुम ऐसे न्यायी
न ठहरे जो दुष्टता से फैसले करते हैं?

याकू 1:17* या, सूरज, चाँद और तारे हैं।

5 मेरे प्यारे भाइयो, सुनो। क्या पर-
मेश्वर ने ऐसों को नहीं चुना जो दुनिया
में गरीब हैं ताकि वे विश्वास में धनी
और उस राज के वारिस बनें, जिसका
वादा उसने उनसे किया है जो उससे
प्यार करते हैं? **6** लेकिन तुमने गरीब
इंसान को बेइज़्ज़त किया है। क्या अमीर
तुम पर अत्याचार नहीं करते और तुम्हें
घसीटकर अदालतों में नहीं ले जाते?
7 क्या वे उस बढ़िया नाम की निंदा
नहीं करते, जिस नाम से तुम बुलाए
गए हो? **8** अब अगर तुम शास्त्र-
वचन के मुताबिक इस शाही नियम का
पालन करते होः "तुझे अपने पड़ोसी से
वैसे ही प्यार करना है जैसे तू खुद
से करता है," तो तुम बहुत अच्छा काम
कर रहे हो। **9** लेकिन अगर तुम भेद-
भाव दिखाना जारी रखते हो, तो तुम पाप
कर रहे हो और यह नियम तुम्हें गुनह-
गार ठहराता है।

10 क्योंकि जो कोई मूसा के सारे
कानून का पालन करता है, मगर
सिर्फ एक ही आज्ञा को तोड़ता है, तो
वह सारे कानून को तोड़ने का कसूर-
वार ठहरता है। **11** क्योंकि जिस पर-
मेश्वर ने यह कहाः "तू शादी के बाहर
यौन-संबंध न रखना," उसी ने यह भी
कहाः "तू खून न करना।" इसलिए अगर
तू ने शादी के बाहर यौन-संबंध नहीं
रखे, मगर तू ने खून किया, तो तू
कानून को तोड़ने का गुनहगार ठहरा।
12 तुम उन लोगों की तरह बोलो और
उन लोगों की तरह काम करते रहो,
जिनका न्याय आज़ाद लोगों के कानून के
मुताबिक होनेवाला है। **13** क्योंकि जो
दया नहीं दिखाता उसका न्याय भी बिना
दया दिखाए किया जाएगा। दया, दंड पर
जीत हासिल करती है।

14 मेरे भाइयो, अगर कोई कहे कि
मैं परमेश्वर में विश्वास करता हूँ तो ऐसे
विश्वास का क्या फायदा अगर वह उसके
मुताबिक अच्छे काम नहीं करता? क्या
ऐसा विश्वास उसे उद्धार दिला सकता
है? **15** अगर किसी भाई या बहन के
पास कपड़े न हों और उसके पास दो
वक्त की रोटी भी न हो, **16** और
तुममें से कोई उससे यह कहेः "ठीक-ठाक
रहो, अच्छा खाओ और अच्छा पहनो,"
मगर तुम उसे तन ढकने के लिए कपड़ा
और पेट भरने के लिए कुछ न दो, तो
इसका क्या फायदा? **17** उसी तरह,
जिस विश्वास के साथ काम न हों, ऐसा
विश्वास मरा हुआ है।

18 मगर इसके बावजूद कोई तुमसे
कह सकता हैः "तुम सिर्फ विश्वास
करते हो, मगर मैं काम भी करता हूँ।
अपना विश्वास बिना काम के तो दिखा,
और मैं अपना विश्वास अपने कामों
से दिखाऊँगा।" **19** क्या तू विश्वास
करता है कि परमेश्वर एक ही है? तू
बहुत अच्छा करता है। दुष्ट स्वर्गदूत भी
यह मानते हैं और थर-थर काँपते हैं।
20 लेकिन अरे खोखले इंसान, क्या तू
इस बात को नहीं मानना चाहता कि कामों
के बिना विश्वास बेजान है? **21** क्या
हमारे पिता अब्राहम को, उसके कामों की

वजह से नेक नहीं ठहराया गया था, जब
उसने अपने बेटे इसहाक को वेदी पर
चढ़ाया? **22** तुम देख सकते हो कि
उसका विश्वास उसके कामों के साथ-साथ
सक्रिय था और उसके कामों से उसका
विश्वास परिपूर्ण किया गया **23** और
यह शास्त्रवचन पूरा हुआ जो कहता है:
"अब्राहम ने यहोवा पर विश्वास किया
और यह उसके लिए नेकी गिना गया"
और वह "यहोवा का मित्र" कहलाया।

24 तो तुम देखते हो कि एक इंसान
सिर्फ विश्वास से नहीं बल्कि कामों से नेक
ठहराया जाता है। **25** इसी तरह, क्या
राहाब नाम की वेश्या कामों से नेक नहीं
ठहरायी गयी, जब उसने दूतों को अपने
घर में ठहराकर उनका सत्कार किया और
फिर उन्हें दूसरे रास्ते से भेज दिया?
26 वाकई, जैसे जान के बिना शरीर
मुरदा होता है, वैसे ही कामों के बिना
विश्वास मरा हुआ है।

3 मेरे भाइयो, हम में से बहुत लोग
शिक्षक न बनें, क्योंकि हम जानते
हैं कि हम और भी कठोर दंड पाएँगे।
2 इसलिए कि हम सब कई बार गलती
करते हैं।* अगर कोई बोलने में गलती
नहीं करता, तो वह सिद्ध इंसान है और
अपने पूरे शरीर को भी काबू में रख
सकता है।# **3** हम घोड़े के मुँह में
लगाम लगाते हैं ताकि वह हमारा कहना
माने और इससे हम उसके पूरे शरीर
को भी काबू में कर पाते हैं। **4** ध्यान
दो! पानी के जहाज़ भी हालाँकि इतने बड़े
होते हैं और तेज़ हवाओं से चलाए जाते
हैं, फिर भी एक छोटी-सी पतवार के
ज़रिए नाविक अपनी मरज़ी के मुताबिक
जहाँ चाहे वहाँ उन्हें ले जा सकता है।

5 उसी तरह, जीभ भी हमारे शरीर
का एक छोटा-सा अंग है फिर भी यह
बड़ी-बड़ी डींगें मारती है। देखो! पूरे जंगल
में आग लगाने के लिए बस एक छोटी-
सी चिंगारी काफी होती है। **6** जीभ
भी एक आग है। यह हमारे शरीर के
अंगों में बुराई की एक दुनिया है, क्योंकि
यह पूरे शरीर को कलंकित कर देती है
और इंसान की पूरी ज़िंदगी में* आग
लगा देती है और यह *गेहन्ना*# की आग
की तरह भस्म कर देती है। **7** हर
तरह के जंगली जानवर, पक्षी, रेंगनेवाले
जीव-जंतु और समुद्री जीवों को तो पालतू
बनाया जा सकता है और इंसान ने
उन्हें काबू में कर पालतू बनाया भी है,
8 मगर जीभ को कोई भी इंसान काबू
में नहीं कर सकता। यह ऐसी खतरनाक
और बेकाबू चीज़ है जो जानलेवा ज़हर
से भरी है। **9** इसी से हम अपने पिता
यहोवा का गुणगान करते हैं, और इसी
से इंसानों को बद्-दुआ देते हैं जिन्हें
"परमेश्वर की छवि में" बनाया गया
है। **10** एक ही मुँह से गुणगान और
बद्-दुआ दोनों निकलते हैं।

भाइयो, ऐसा होते रहना सही नहीं है।
11 ऐसा नहीं हो सकता कि एक ही सोते
से मीठा पानी भी निकले और खारा

याकू 3:2* शाब्दिक, "ठोकर खाते हैं" यानी चूक जाते हैं। **2#** शाब्दिक, "लगाम लगा सकता है।"

याकू 3:6* शाब्दिक, "जीवन के पहिए में।" **6#** यरूशलेम के बाहर कूड़ा-करकट जलाने की जगह। अतिरिक्त लेख 9 देखें।

पानी भी। क्या ऐसा होता है? **12** मेरे
भाइयो, क्या अंजीर के पेड़ से जैतून पैदा
होते हैं या अंगूर की डाली से अंजीर पैदा
होते हैं? नहीं। उसी तरह, खारे पानी के
सोते से मीठा पानी नहीं निकल सकता।

13 तुम में बुद्धिमान और समझदार
कौन है? जो ऐसा हो, वह इस बात को
अपने बढ़िया चालचलन के कामों से
उस कोमलता के साथ दिखाए जो बुद्धि
से पैदा होती है। **14** लेकिन अगर
तुम्हारे दिलों में ज़बरदस्त ईर्ष्या और
झगड़े की भावना हो, तो शेखी न मारो
और सच्चाई के खिलाफ झूठ मत बोलो।
15 यह बुद्धि वह नहीं जो स्वर्ग से
मिलती है, बल्कि यह दुनियावी, शारी-
रिक और शैतानी है। **16** इसलिए कि
जहाँ ईर्ष्या और झगड़े होते हैं, वहाँ गड़-
बड़ी और हर तरह की बुराई होती है।

17 लेकिन जो बुद्धि स्वर्ग से मिलती
है, वह सबसे पहले तो पवित्र, फिर शांति
कायम करनेवाली, लिहाज़ दिखानेवाली,
आज्ञा मानने के लिए तैयार, दया और
अच्छे कामों से भरपूर होती है। यह भेद-
भाव नहीं करती और न ही कपटी होती
है। **18** जो शांति कायम करनेवाले हैं,
वे शांति के हालात में बीज बोते हैं और
नेकी के फल काटते हैं।

4 तुम्हारे बीच लड़ाइयाँ और झगड़े
कहाँ से आए? क्या इनकी जड़
तुम्हारे ही अंदर नहीं? क्या ये शरीर का
सुख पाने की तुम्हारी ज़बरदस्त लाल-
साओं की वजह से नहीं, जो तुम्हारे
अंगों में लगातार युद्ध करती रहती हैं?
2 तुम चाहते तो हो, फिर भी तुम्हें
मिलता नहीं। तुम खून करते और लालच
करते हो, और फिर भी हासिल नहीं कर
पाते। तुम लड़ाइयाँ और युद्ध करते रहते
हो। तुम्हारे पास इसलिए नहीं है, क्योंकि
तुम माँगते नहीं। **3** तुम माँगते तो हो,
और फिर भी नहीं पाते, क्योंकि तुम गलत
इरादे से माँगते हो ताकि तुम इसे शरीर
का सुख पाने की लालसाओं पर उड़ा दो।

4 अरे बदचलनी करनेवालियो,*
क्या तुम नहीं जानतीं कि दुनिया के साथ
दोस्ती करने का मतलब परमेश्वर से
दुश्मनी करना है? इसलिए, जो कोई इस
दुनिया का दोस्त बनना चाहता है वह
खुद को परमेश्वर का दुश्मन बनाता है।
5 या क्या तुम्हें लगता है कि शास्त्रवचन
बिना वजह ही कहता है: "ईर्ष्या करने
की जो फितरत हमारे अंदर समायी हुई
है, वह लगातार अलग-अलग बातों की
चाह करती रहती है"? **6** मगर, पर-
मेश्वर जो महा-कृपा हमें देता है वह
हमारी इस फितरत से कहीं महान है।
इसलिए यह वचन कहता है: "परमेश्वर
घमंडियों का सामना करता है, मगर नम्र
लोगों को अपनी महा-कृपा देता है।"

7 इसलिए, खुद को परमेश्वर के
अधीन करो, मगर शैतान* का
सामना करो और वह तुम्हारे पास से

याकू 4:4* शाब्दिक, "शादी के बाहर यौन-संबंध रखनेवालियों।" **7*** शाब्दिक, "इब्लीस।" यूनानी में *"दियाबोलोस,"* जिसका मतलब है "निंदा करने-वाला।"

भाग जाएगा। **8** परमेश्‍वर के करीब
आओ और वह तुम्हारे करीब आएगा।
अरे पापियो, अपने हाथ धोओ, अरे
दुचित्ते लोगो, अपने दिलों को शुद्ध
करो। **9** अपनी दुर्दशा पर मातम करो
और रोओ। तुम्हारी हँसी मातम में और
तुम्हारी खुशी उदासी में बदल जाए।
10 यहोवा की नज़रों में खुद को नम्र
करो और वह तुम्हें ऊँचा करेगा।

11 भाइयो, एक-दूसरे के खिलाफ
बोलना बंद करो। जो कोई किसी भाई के
खिलाफ बोलता है या उस पर दोष
लगाता है वह परमेश्‍वर के कानून के
खिलाफ बोलता है और उस कानून पर
दोष लगाता है। अगर तू कानून पर
दोष लगाता है, तो तू उस पर चलने-
वाला नहीं बल्कि उसका न्यायी ठहरा।
12 कानून देनेवाला और न्यायी तो एक
ही है, जो बचा भी सकता है और नाश
भी कर सकता है। मगर तू कौन होता
है जो अपने संगी पर दोष लगाता है?

13 सुनो, तुम जो कहते हो: "आज
या कल हम इस या उस शहर में जाएँगे
और वहाँ एक साल बिताएँगे और
व्यापार करेंगे और खूब पैसा कमाएँगे,"
14 जबकि तुम नहीं जानते कि कल
तुम्हारे जीवन का क्या होगा। क्योंकि तुम
उस धुंध की तरह हो जो थोड़ी देर
दिखायी देती है और फिर गायब हो जाती
है। **15** इसके बजाय, तुम्हें यह कहना
चाहिए: "अगर यहोवा की मरज़ी हो,
तो हम कल का दिन देखेंगे और यह
काम या वह काम करेंगे।" **16** मगर
तुम अपनी बड़ी-बड़ी डींगों पर घमंड
करते हो। ऐसा हर तरह का घमंड दुष्टता
है। **17** इसलिए, अगर एक इंसान
सही काम करना जानता है और फिर भी
नहीं करता, तो यह उसके लिए पाप है।

5 अरे धनवानो, सुनो, तुम पर
जो मुसीबतें आनेवाली हैं उनकी
वजह से दहाड़ें मार-मारकर रोओ।
2 तुम्हारी धन-दौलत सड़ गयी है
और तुम्हारे कपड़े कीड़े खा गए हैं।
3 तुम्हारे सोने और चाँदी में ज़ंग
लग गया है, और उनका ज़ंग तुम्हारे
खिलाफ गवाही देगा और तुम्हारा माँस
खा जाएगा। तुमने आखिरी दिनों के लिए
जो जमा किया है वह असल में आग है।
4 देखो! जिन मज़दूरों ने तुम्हारे खेतों में
कटाई की तुमने उनकी मज़दूरी मार ली
है। उनकी वही मज़दूरी तुम्हारे खिलाफ
चिल्ला रही है और मदद के लिए उनकी
यह पुकार सेनाओं के यहोवा के कानों
तक जा पहुँची है। **5** तुम इस धरती
पर ऐशो-आराम में जीते रहे और शरीर
के सुख भोगने में लगे रहे। तुम्हारे दिल
उन जानवरों की तरह मोटे हो गए हैं,
जिन्हें काटने से पहले खिला-खिलाकर
मोटा-ताज़ा किया जाता है। **6** तुमने
उस नेक जन को दोषी ठहराकर मार
डाला। क्या वह तुम्हारा विरोध नहीं
कर रहा?

7 इसलिए भाइयो, हमारे प्रभु की
मौजूदगी तक सब्र दिखाओ। ध्यान दो!
एक किसान ज़मीन की कीमती पैदावार
पाने के लिए इंतज़ार करता रहता है और

शुरू की बारिश और बाद की बारिश*
होने तक सब्र दिखाता है। **8** तुम भी
सब्र दिखाओ। अपने दिलों को मज़बूत
करो, क्योंकि प्रभु की मौजूदगी का वक्त
पास आ गया है।

9 भाइयो, तुम एक-दूसरे के खिलाफ
गहरी आहें मत भरो, ताकि तुम दोषी न
ठहरो। देखो! हम सबका न्यायी दर-
वाज़े तक आ पहुँचा है। **10** भाइयो,
यहोवा के नाम से वचन सुनानेवाले
भविष्यवक्ताओं ने जिस तरह बुराई सही
और सब्र दिखाया, उसे अपने लिए एक
नमूना मानकर चलो। **11** देखो! हम
उन लोगों को सुखी कहते हैं जिन्होंने
धीरज धरा है। तुमने अय्यूब के धीरज
के बारे में सुना है और यह भी कि
यहोवा ने उसे आखिर में इसका क्या फल
दिया, जिससे तुम देख सकते हो कि
यहोवा गहरी करुणा दिखाता है और
दयालु परमेश्वर है।

12 खासकर, मेरे भाइयो, कसमें
खाना बंद करो। चाहे कोई भी बात क्यों
न हो, न तो स्वर्ग की, न ही धरती की
कसम खाना, न ही किसी और तरह की।
इसके बजाय, तुम्हारी 'हाँ' का मतलब हाँ
हो और 'नहीं' का मतलब नहीं, ताकि
तुम सज़ा के लायक न ठहरो।

13 क्या तुम्हारे बीच कोई दुःख झेल
रहा है? तो वह प्रार्थना में लगा रहे। क्या
किसी का मन खुश है? वह परमेश्वर की
तारीफ में भजन गाए। **14** क्या कोई
तुम्हारे बीच बीमार है? तो वह मंडली*
के प्राचीनों को बुलाए और वे उसके लिए
प्रार्थना करें और यहोवा के नाम से
उस बीमार पर तेल मलें।# **15** और
विश्वास से की गयी प्रार्थना उस बीमार
को अच्छा कर देगी और यहोवा उसे उठा-
कर खड़ा कर देगा। और अगर उसने
पाप भी किए हों, तो वे माफ किए
जाएँगे।

16 इसलिए तुम एक-दूसरे के सामने
खुलकर अपने पाप मान लो और एक-
दूसरे के लिए प्रार्थना करो, ताकि तुम
अच्छे हो जाओ। जब नेक इंसान प्रार्थना
में मिन्नतें करता है और जब ये प्रार्थनाएँ
सुनी जाती हैं, तो उनका ज़बरदस्त असर
हो सकता है। **17** एलिय्याह भी हमारे
जैसी भावनाएँ रखनेवाला इंसान था, और
फिर भी जब उसने प्रार्थना में बिनती की
कि बारिश न हो, तो देश पर साढ़े तीन
साल तक बारिश नहीं हुई। **18** और
जब उसने फिर प्रार्थना की, तो आकाश
से बारिश हुई और धरती ने अपनी पैदा-
वार दी।

19 मेरे भाइयो, तुममें से अगर कोई
सच्चाई के रास्ते से भटक जाए और
कोई उस भटके हुए को वापस ले आए,
20 तो यह जान लो कि ऐसा इंसान जो
एक भटके हुए पापी को गलत रास्ते से
वापस ले आता है वह उसके जीवन को
मौत से बचाता है और उसके ढेर सारे
पापों को ढक देता है।

याकू 5:7* शुरू की बारिश अक्टूबर में और बाद की बारिश अप्रैल में होती थी।

याकू 5:14* मत्ती 16:18 दूसरा फुटनोट देखें। **14#** ज़ाहिर तौर पर, यहाँ परमेश्वर का वचन इस्ते-माल करने का ज़िक्र है।

पतरस की पहली चिट्ठी

1 पतरस की यह चिट्ठी, जो यीशु
मसीह का एक प्रेषित* है, उन सभी
के नाम जो पुन्तुस, गलातिया, कप्प-
दूकिया, एशिया# और बितूनिया में फैले
हुए हैं और ऐसे रहते हैं मानो परदेसी
हों। उन सभी के नाम **2** जिन्हें पर-
मेश्वर, हमारे पिता ने आनेवाली बातों को
पहले से जानने की अपनी काबिलीयत
के मुताबिक चुना है, और जो पवित्र
शक्ति के ज़रिए पवित्र ठहराए गए हैं,
ताकि आज्ञा माननेवाले बनें और उन पर
यीशु मसीह का लहू छिड़का जाए।

तुम पर परमेश्वर की महा-कृपा और
शांति और भी बढ़कर हो।

3 हमारे प्रभु यीशु मसीह का पर-
मेश्वर और पिता धन्य हो, जिसने यीशु
मसीह को मरे हुओं में से जी उठाया और
इसके ज़रिए अपनी बड़ी दया दिखाते
हुए हमें एक नया जन्म दिया जिससे
कि हम एक जीवित आशा पा सकें,
4 और हमें वह विरासत हासिल हो जो
अनश्वर और निष्कलंक है और जो कभी
नहीं मिटेगी। यह विरासत तुम्हारे लिए
स्वर्ग में सुरक्षित रखी हुई है। **5** हाँ,
तुम्हारे लिए जिनकी हिफाज़त परमेश्वर
अपनी शक्ति से कर रहा है, क्योंकि
तुममें विश्वास है। परमेश्वर उस उद्धार
के लिए तुम्हारी हिफाज़त करता है जो
आखिरी वक्त में ज़ाहिर किया जाएगा।
6 इस सच्चाई से तुम बहुत खुशी पाते
हो, हालाँकि अभी कुछ वक्त के लिए
जैसा ज़रूरी है, तुम तरह-तरह की परी-
क्षाओं की वजह से दुःख झेल रहे हो,
7 ताकि तुम्हारे परखे हुए विश्वास का
खरापन, यीशु मसीह के प्रकट होने के
वक्त तुम्हारे लिए बड़ाई, महिमा और
आदर पाने की वजह बने। तुम्हारे परखे
हुए विश्वास का यह खरापन उस खरे
सोने से कहीं अनमोल है जो आग में से
तपाकर निकाले जाने पर भी नाश हो
जाता है। **8** हालाँकि तुमने मसीह को
कभी नहीं देखा, फिर भी तुम उससे प्यार
करते हो। हालाँकि तुम उसे अभी नहीं
देखते फिर भी तुम उस पर विश्वास
दिखाते हो और ऐसी खुशी मना रहे हो जो
शब्दों में बयान नहीं की जा सकती और
जो बहुत ही शानदार है। **9** क्योंकि
तुम्हें यकीन है कि तुम्हारे विश्वास की
वजह से तुम्हें इनाम के तौर पर अपने
जीवन के लिए उद्धार मिलेगा।

10 इसी उद्धार के बारे में उन
भविष्यवक्ताओं ने बहुत लगन के साथ
पूछताछ की और बड़े ध्यान से खोज-
बीन की जिन्होंने उस महा-कृपा के बारे
में भविष्यवाणी की जो तुम्हारे लिए है।
11 वे इस बारे में जाँच-पड़ताल करते

1पत 1:1* या, "भेजा गया।" यूनानी में *"अपोस्टो-
लोस।"* **1#** प्रेषि 2:9 फुटनोट देखें।

रहे कि जो पवित्र शक्ति उनमें काम कर
रही थी और जो मसीह पर आनेवाली
तकलीफों के बारे में और इनके बाद
आनेवाली महिमा के बारे में पहले से
गवाही दे रही थी, वह किस खास वक्त
या कैसे हालात की तरफ इशारा कर रही
थी। **12** उन पर यह ज़ाहिर किया
गया कि ये बातें उनके अपने लिए नहीं
थीं, बल्कि वे तुम्हारे सेवक थे और उन्होंने
तुम तक ये बातें पहुँचायीं। अब इन बातों
का ऐलान तुम्हारे लिए उन लोगों ने किया
है जिन्होंने स्वर्ग से भेजी पवित्र शक्ति के
ज़रिए तुम्हें खुशखबरी सुनायी है। स्वर्ग-
दूत भी इन बातों में झाँककर इन्हें बहुत
करीब से देखने की तमन्ना रखते हैं।

13 इसलिए कड़ी मेहनत करने के
लिए अपने मन की सारी शक्ति बटोर
लो, पूरे होश-हवास में रहो; अपनी आशा
उस महा-कृपा पर बनाए रखो जो तुम्हें
यीशु मसीह के प्रकट होने पर मिलनेवाली
है। **14** आज्ञा माननेवाले बच्चों की
तरह, अपनी उन ख्वाहिशों के मुताबिक
खुद को ढालना बंद करो जो तुम्हारे अंदर
उस वक्त थीं जब तुम परमेश्वर का
ज्ञान नहीं रखते थे। **15** मगर उस
पवित्र परमेश्वर की तरह, जिसने तुम्हें
बुलाया है, तुम भी अपने सारे चालच-
लन में पवित्र बनो **16** क्योंकि यह
लिखा है: "तुम्हें पवित्र होना है क्योंकि मैं
पवित्र हूँ।"

17 इसके अलावा, अगर तुम उस
पिता को पुकारते हो जो हरेक के कामों
के मुताबिक बिना पक्षपात किए सबका
न्याय करता है, तो धरती पर तुम्हारे
परदेसी होकर रहने के इस वक्त के
दौरान तुम परमेश्वर का डर मानते हुए
जीवन बिताओ। **18** इसलिए कि तुम
जानते हो कि तुमने अपने बापदादों से
बेमाने जीवन के जो तौर-तरीके पाए थे
उनसे छुटकारा पा लिया है और तुमने यह
छुटकारा सोने-चाँदी जैसी नश्वर चीज़ों से
नहीं **19** बल्कि मसीह के बेशकीमती
लहू से पाया है जो एक बेदाग और निर्दोष
मेम्ना है। **20** सच है कि परमेश्वर ने
भविष्य के अपने ज्ञान के ज़रिए उसे
दुनिया की शुरूआत के पहले से ही
चुन लिया था, मगर ज़मानों के आखिर में
तुम्हारी खातिर उसे ज़ाहिर किया गया है,
21 तुम्हारी खातिर जो उसके ज़रिए पर-
मेश्वर पर विश्वास करते हो। परमेश्वर
ने उसे मरे हुओं में से जी उठाकर महिमा
दी, ताकि तुम परमेश्वर पर विश्वास और
आशा रख सको।

22 अब क्योंकि तुमने सच्चाई के
वचन को मानकर खुद को शुद्ध किया
है, तो आपस में भाईचारे का निष्कपट
प्यार दिखाओ और दिल से एक-दूसरे
को गहरा प्यार करो। **23** क्योंकि
तुम्हें एक नया जीवन दिया गया है
और यह जीवन किसी नश्वर नहीं बल्कि
अनश्वर बीज के ज़रिए दिया गया है,
जो जीवित और अनंत परमेश्वर का
वचन है। **24** "सभी इंसान घास की
तरह हैं और उनकी शोभा घास के फूल
जैसी है। घास सूख जाती है और फूल

झड़ जाता है, **25** लेकिन यहोवा* का
वचन हमेशा-हमेशा तक कायम रहता
है।” यही वह “वचन” है जो तुम्हें खुश-
खबरी के तौर पर सुनाया गया है।

2 इसलिए, सारी बुराई, छल,
कपट, ईर्ष्या और दूसरों की बे-
इज़्ज़ती करनेवाली सारी बातें अपने
अंदर से निकाल फेंको, **2** और नव-
जात शिशुओं की तरह उस शुद्ध दूध के
लिए, जो परमेश्वर के वचन में पाया
जाता है, ज़बरदस्त भूख पैदा करो ताकि
इससे तुम उद्धार पाने के लिए बढ़ते जाओ
3 क्योंकि तुमने खुद अपने तजुर्बे से
जाना है कि प्रभु कितना कृपालु है।*

4 प्रभु वह जीवित पत्थर है जिसे
इंसानों ने तो ठुकरा दिया, मगर वह पर-
मेश्वर का चुना हुआ है और उसके
लिए बेशकीमती है। इस जीवित पत्थर
के पास आने से **5** तुम्हारा भी, जो
जीवित पत्थरों जैसे हो, परमेश्वर की
पवित्र शक्ति से एक भवन के रूप में
निर्माण किया जा रहा है। यह निर्माण
इसलिए किया जा रहा है ताकि तुम पवित्र
याजकों का दल बनो और यीशु मसीह
के ज़रिए परमेश्वर को ऐसे बलिदान
चढ़ाओ जो उसकी पवित्र शक्ति के मार्ग-
दर्शन के मुताबिक हों और उसे मंज़ूर हों।
6 इसलिए कि शास्त्र में यह लिखा है:
“देख! मैं सिय्योन में एक चुना हुआ
पत्थर, यानी नींव का कोने का पत्थर
रखता हूँ, जो बेशकीमती है और उस पर
विश्वास दिखानेवाला हरगिज़ निराश न
होगा।”

7 वह तुम्हारे लिए बेशकीमती है
क्योंकि तुम उस पर यकीन करते हो।
मगर जो उस पर यकीन नहीं करते, उनके
बारे में शास्त्र कहता है कि “वही पत्थर
जिसे राजमिस्त्रियों ने ठुकराया, कोने का
मुख्य पत्थर बन गया है,” **8** और
“ठोकर खिलानेवाला पत्थर और ठेस
पहुँचानेवाली चट्टान” बन गया है। ये इस-
लिए ठोकर खाते हैं क्योंकि ये वचन की
आज्ञा नहीं मानते। इनका अंत इसी तरह
होना है। **9** मगर तुम एक चुना हुआ
वंश, शाही याजकों का दल और एक
पवित्र राष्ट्र हो और परमेश्वर की खास
संपत्ति बनने के लिए चुने गए लोग हो,
ताकि तुम सारी दुनिया में उसके महान
गुणों का ऐलान करो जिसने तुम्हें अंधकार
से निकालकर अपनी शानदार रौशनी
में बुलाया है। **10** क्योंकि एक वक्त
ऐसा था जब तुम परमेश्वर के खास लोग
नहीं थे, मगर अब उसके लोग हो। तुम
ऐसे थे जिन पर दया नहीं दिखायी गयी
थी, मगर अब ऐसे लोग हो जिन पर दया
दिखायी गयी है।

11 मेरे प्यारो, मैं तुम्हें उकसाता हूँ
कि इस दुनिया में परदेसी और प्रवासी
होने के नाते शरीर की ख्वाहिशों से
अपने आप को दूर रखो, क्योंकि यही वे
ख्वाहिशें हैं जो तुम्हारे जीवन के खिलाफ

1पत 1:25* यह उन 237 जगहों में से एक जगह है, जहाँ परमेश्वर का नाम, ‘यहोवा’ इस अनुवाद के मुख्य पाठ में पाया जाता है। अतिरिक्त लेख 2 देखें।
2:3* या, “प्रभु की कृपा का स्वाद चखा है।”

युद्ध करती रहती हैं। **12** दुनिया के
लोगों के बीच तुम बढ़िया चालचलन
बनाए रखो, ताकि चाहे वे तुम्हें बुरे काम
करनेवाले कहकर तुम पर दोष लगाते हैं,
वे तुम्हारे उन अच्छे कामों की वजह से,
जो उन्होंने खुद अपनी आँखों से देखे हैं,
उस दिन परमेश्वर की महिमा करें जिस
दिन वह जाँच करने आएगा।

13 प्रभु की खातिर खुद को इंसान
के बनाए हर अधिकार के अधीन करो:
राजा के अधीन इसलिए क्योंकि वह
दूसरों से बड़ा है **14** या उसके भेजे
हुए राज्यपालों के अधीन क्योंकि वे बुरे
काम करनेवालों को सज़ा देने और अच्छे
काम करनेवालों की तारीफ करने के लिए
ठहराए गए हैं **15** इसलिए कि पर-
मेश्वर की मरज़ी यही है कि तुम अपने
अच्छे कामों से ऐसे मूर्खों का मुँह बंद करो
जो बिना सोचे-समझे तुम्हारे खिलाफ बातें
करते हैं। **16** आज़ाद लोगों की तरह
जीओ, फिर भी अपनी आज़ादी को बुरे
काम करने के लिए आड़ की तरह इस्ते-
माल मत करो, बल्कि परमेश्वर के दासों
की तरह जीओ। **17** हर किस्म के
इंसान का आदर करो, भाइयों की सारी
बिरादरी से प्यार करो, परमेश्वर का डर
मानो, राजा का आदर करो।

18 घर के नौकर अपने-अपने
मालिकों का सब बातों में जैसा डर मानना
चाहिए वैसा डर मानते हुए उनके अधीन
रहें, न सिर्फ भले और लिहाज़ दिखाने-
वाले मालिकों के, बल्कि उनके भी जिन्हें
खुश करना मुश्किल है। **19** इसलिए
कि अगर कोई परमेश्वर के सामने अपना
ज़मीर साफ बनाए रखने के लिए दुःख-
तकलीफें और नाइंसाफी सहता है, तो
परमेश्वर की नज़र में यह अच्छी बात
है। **20** क्योंकि अगर तुम्हें पाप करने
की वजह से थप्पड़ मारे जाते हैं और
तुम सहते हो, तो इसमें तारीफ की क्या
बात है? लेकिन अगर, तुम अच्छा काम
करने की वजह से दुःख सहते हो और
धीरज धरते हो, तो परमेश्वर की नज़र
में यह अच्छी बात है।

21 दरअसल, तुम्हें ऐसी ही राह पर
चलने के लिए बुलाया गया है, क्योंकि
मसीह ने भी तुम्हारी खातिर दुःख
उठाया और तुम्हारे लिए एक आदर्श छोड़
गया ताकि तुम उसके नक्शे-कदम पर
नज़दीकी से चलो। **22** उसने कोई
पाप नहीं किया, न ही उसके मुँह से छल
की बातें निकलीं। **23** जब उसे गाली
दी जा रही थी, तो बदले में उसने गाली
देना शुरू नहीं किया। जब वह दुःख झेल
रहा था, तो वह धमकियाँ नहीं देने लगा,
बल्कि खुद को उस न्यायी के हाथ में
सौंपता रहा जो सच्चा न्याय करता है।
24 वह हमारे पाप अपने शरीर पर लिए
हुए सूली पर चढ़ गया, ताकि हम अपने
पापों से आज़ाद हों और नेकी के काम
करने के लिए जीएँ। और "उसके घावों
से तुम चंगे किए गए।" **25** क्योंकि
तुम उन भेड़ों की तरह थे जो भटक गयी
थीं, मगर अब तुम अपने चरवाहे और
तुम्हारे जीवन की निगरानी करनेवाले के
पास लौट आए हो।

3 इसी तरह, पत्नियो, तुम अपने-
अपने पति के अधीन रहो ताकि
अगर किसी का पति परमेश्वर के वचन
की आज्ञा नहीं मानता, **2** तो वह
अपनी पत्नी के पवित्र चालचलन और
गहरे आदर को देखकर तुम्हारे कुछ बोले
बिना ही जीत लिया जाए। **3** और
तुम्हारा सजना-सँवरना ऊपरी न हो, जैसे
बाल गूंथना, सोने के गहने या बढ़िया
पोशाक पहनना। **4** इसके बजाय,
तुम अपने अंदर के इंसान को सजाओ-
सँवारो और इसे शांत और कोमल स्वभाव
पहनाओ। यह ऐसी सजावट है जो कभी
पुरानी नहीं पड़ती और परमेश्वर की
नज़रों में अनमोल है। **5** इसलिए कि
गुज़रे ज़माने की पवित्र स्त्रियाँ भी, जो
परमेश्वर पर आशा रखती थीं, इसी
तरह खुद को सँवारती थीं और अपने-
अपने पति के अधीन रहा करती थीं।
6 जैसे, सारा अब्राहम की आज्ञा मानती
थी और उसे "प्रभु" पुकारती थी। अगर
तुम अच्छे काम करती रहो और किसी
भी तरह के डर से खौफ में न रहो तो
उसकी बेटियाँ ठहरोगी।

7 पतियो, तुम भी इसी तरह अपनी-
अपनी पत्नी के साथ समझदारी से जीवन
बिताते रहो। और स्त्री होने के नाते उसे
अपने से ज़्यादा नाज़ुक पात्र समझकर
उसके साथ आदर से पेश आओ, क्योंकि
तुम भी उसके साथ महा-कृपा से मिलने-
वाले जीवन के वारिस हो, ताकि तुम्हारी
प्रार्थनाओं में रुकावट न आए।

8 आखिर में मैं कहता हूँ, तुम सभी
के विचारों में एकता हो, एक-दूसरे का
दर्द महसूस करो, भाइयों जैसा गहरा
लगाव रखो, गहरी करुणा दिखाओ,
नम्र स्वभाव रखो, **9** बुराई का बदला
बुराई से न दो, न ही गाली के बदले गाली
दो। इसके बजाय, उनके साथ भलाई
करो,* क्योंकि तुम इसी राह पर चलने
के लिए बुलाए गए हो, ताकि विरासत
में आशीष पा सको।

10 क्योंकि "जो जीवन से प्यार
करता है और अच्छे दिन देखना चाहता
है वह अपनी जीभ को बुराई करने से
और अपने होठों को छल की बातें बोलने
से रोके, **11** मगर वह बुराई से दूर
हो जाए और भला करे, दूसरों के साथ
शांति कायम करने की खोज करे और
इसमें लगा रहे। **12** क्योंकि यहोवा
की आँखें नेक लोगों पर लगी रहती हैं
और उसके कान उनकी मिन्नतों की तरफ
लगे रहते हैं। मगर जो बुरे काम करते
हैं यहोवा* उनके खिलाफ हो जाता है।"

13 अगर तुम अच्छे काम करने में
जोश दिखाओ तो ऐसा कौन है जो तुम्हें
नुकसान पहुँचाएगा? **14** और अगर
तुम नेकी की खातिर दुःख भी उठाते हो
तो सुखी हो। मगर जो तुम पर ज़ुल्म
करते हैं, उनके डर से न डरो, न ही परे-
शान हो जाओ। **15** मगर मसीह को
प्रभु जानकर अपने दिलों में पवित्र मानो,
और जो कोई तुम्हारी आशा की वजह

1पत 3:9* शाब्दिक, "आशीष दो।" **12*** या, "यहोवा का मुख।"

जानने की माँग करता है, उसके सामने अपनी आशा की पैरवी करने के लिए हमेशा तैयार रहो, मगर ऐसा कोमल स्वभाव और गहरे आदर के साथ करो।

16 अपना ज़मीर साफ बनाए रखो
ताकि चाहे लोग तुम्हारी बुराई करते हैं और मसीह में तुम्हारे अच्छे चालचलन की निंदा करते हैं, उन्हीं बातों में वे
शर्मिंदा हो जाएँ। **17** अगर परमेश्वर
की यही मरज़ी है कि तुम भलाई करने की वजह से दुःख उठाओ, तो यह ज़्यादा अच्छा है, बजाय इसके कि तुम बुरे काम करने की वजह से दुःख उठाओ।
18 मसीह भी, जो नेक था, पापियों को
उनके पापों से छुटकारा दिलाने के लिए एक ही बार मरा, ताकि वह तुम्हें परमेश्वर के पास ले जाए। वह शरीर में मार डाला गया, मगर जब ज़िंदा किया गया तो उसे आत्मिक शरीर* दिया गया।
19 इसी दशा में उसने जाकर कारावास
में पड़े दुष्ट स्वर्गदूतों को प्रचार किया,
20 जिन्होंने उस वक्त के दौरान पर-
मेश्वर की आज्ञा के खिलाफ काम किया था, जब नूह के दिनों में परमेश्वर सब्र दिखाते हुए इंतज़ार कर रहा था और उस दौरान नूह का जहाज़* बन रहा था, जिस पर सवार होकर चंद लोग यानी आठ जन पानी से बच निकले थे।

21 वह घटना जिस चीज़ की निशानी
है, यानी बपतिस्मा (जिसका मतलब शरीर की गंदगी धोना नहीं, बल्कि साफ ज़मीर पाने की परमेश्वर से गुज़ारिश है) अभी तुम्हें यीशु मसीह के जी उठने के
ज़रिए बचा रहा है। **22** वह अब
स्वर्ग लौट गया है और परमेश्वर की दायीं तरफ है। और स्वर्गदूत और अधिकार और ताकतें उसके अधीन की गयी हैं।

4 जबकि मसीह ने शरीर में दुःख
झेला, तो जैसा उसका मन का रुझान था, तुम भी उसी रुझान से खुद को लैस कर लो। क्योंकि जिस इंसान ने शारीरिक दुःख झेला है वह पाप करने से
बाज़ आता है, **2** ताकि वह अपनी
बाकी की ज़िंदगी, इंसानों की अभिलाषाएँ पूरी करने के लिए नहीं, बल्कि परमेश्वर की मरज़ी पूरी करने के लिए जीए।
3 क्योंकि दुनियावी लोगों की मरज़ी पूरी
करने में तुम अब तक जो वक्त बिता चुके हो वही काफी है, जब तुम बदचलनी के कामों में, वासनाओं में, हद-से-ज़्यादा शराब पीने में, रंगरलियाँ मनाने में, शराब पीने की होड़ लगाने में और घिनौनी
मूर्तिपूजा करने में लगे हुए थे। **4** अब
क्योंकि तुमने उनके साथ बदचलनी की कीचड़ में लोटना छोड़ दिया है, इसलिए वे ताज्जुब करते हैं और तुम्हारे बारे
में बुरा-भला कहते हैं। **5** मगर इन
लोगों को उसे हिसाब देना होगा जो जीवितों और मरे हुओं का न्याय करने
के लिए तैयार है। **6** दरअसल, इसी
मकसद से मरे हुओं* को भी खुशखबरी सुनायी गयी थी, ताकि चाहे इंसान उनका

1पत 3:18* यूनानी *नफ्मा*। अतिरिक्त लेख 7 देखें। **20*** मत्ती 24:38 फुटनोट देखें।

1पत 4:6* ज़ाहिर है, ये वे लोग हैं जो अपने पापों की वजह से मरे हुओं जैसे थे। इफि 2:1 देखें।

बाहरी रूप देखकर उन्हें आँकें, मगर वे
परमेश्वर की पवित्र शक्ति के मार्गदर्शन
में जीएँ।

7 मगर सब बातों का अंत पास
आ गया है। इसलिए, स्वस्थ मन
रखो और प्रार्थना करने के लिए चौकस
रहो। **8** सबसे बढ़कर, एक-दूसरे के
लिए गहरा प्यार रखो, क्योंकि प्यार ढेर
सारे पापों को ढक देता है। **9** बिना
कुड़कुड़ाए एक-दूसरे को मेहमान-नवाज़ी
दिखाते रहो। **10** परमेश्वर की जो
महा-कृपा अलग-अलग तरीके से दिखायी
गयी है उसके मुताबिक तुममें से हरेक
ने देन पायी है। इसलिए तुम पर-
मेश्वर के ठहराए बढ़िया प्रबंधकों के नाते
अपनी इस देन को एक-दूसरे की सेवा
करने में इस्तेमाल करो। **11** अगर
कोई बोलता है, तो परमेश्वर के पवित्र
वचन बोले। अगर कोई सेवा करता है,
तो उस शक्ति पर निर्भर होकर सेवा करे
जो परमेश्वर देता है, ताकि सब बातों में
यीशु मसीह के ज़रिए परमेश्वर की महिमा
हो। महिमा और शक्ति हमेशा-हमेशा के
लिए उसी की है। आमीन।

12 मेरे प्यारो, परीक्षाओं की जो
आग तुम्हारे बीच जल रही है उस
पर हैरान मत हो, मानो तुम्हारे साथ
कोई अनोखी घटना घट रही है। यह
इसलिए हो रहा है कि तुम्हारी परख
हो। **13** इसके बजाय, तुम यह जान-
कर खुशियाँ मनाओ कि तुम मसीह की
दुःख-तकलीफों में साझेदार बन रहे हो,
ताकि तुम उसकी महिमा के प्रकट होने
के दौरान खुशियाँ मनाओ और आनंद से
भर जाओ। **14** अगर मसीह के नाम
की खातिर तुम्हें बदनाम किया जाता है,
तो तुम सुखी हो, क्योंकि परमेश्वर की
पवित्र शक्ति और इसकी महिमा तुम्हारे
ऊपर रहती है।

15 मगर तुममें से कोई खूनी, चोर
या बुरे काम करनेवाला या दूसरों के निजी
मामलों में दखल देनेवाला होने की वजह
से दुःख न उठाए। **16** लेकिन अगर
कोई मसीही होने की वजह से दुःख
उठाता है तो वह शर्मिंदा महसूस न
करे, बल्कि इस नाम को धारण किए
हुए परमेश्वर की महिमा करता रहे।
17 इसलिए कि वह तय किया हुआ
वक्त आ पहुँचा है जब न्याय हो, और
इस न्याय की शुरूआत परमेश्वर के घर
से होगी। अगर इसकी शुरूआत हम ही
से होगी, तो उनका क्या हश्र होगा जो
परमेश्वर से मिली खुशखबरी का वचन
मानने से इनकार करते हैं? **18** "और
अगर नेक इंसान का बड़ी मुश्किल से
उद्धार होगा, तो उनका क्या हश्र होगा
जो परमेश्वर की भक्ति नहीं करते और
पापी हैं?" **19** इसलिए जो परमेश्वर
की मरज़ी पूरी करने की वजह से दुःख
उठाते हैं, वे भी अच्छे काम करते हुए
खुद को विश्वासयोग्य सिरजनहार के
हवाले सौंपते रहें।

5 इसलिए, जो तुम्हारे बीच प्राचीन हैं,
उन्हें मैं यह सीख देकर उकसाता हूँ,
क्योंकि मैं भी एक प्राचीन हूँ और मसीह
की दुःख-तकलीफों का गवाह हूँ और उस

महिमा का साझेदार भी हूँ जो प्रकट होने-
वाली है: 2 परमेश्वर के झुंड की, जो
तुम्हारी देख-रेख में है, चरवाहों की तरह
देखभाल करो और ऐसा मजबूरी में नहीं
बल्कि खुशी-खुशी करो। बेईमानी से उनसे
कुछ हासिल करने के लालच से नहीं,
बल्कि तत्परता के साथ करो। 3 न
ही उन पर अधिकार जतानेवाले बनो जो
परमेश्वर की संपत्ति हैं, बल्कि झुंड के
लिए मिसाल बन जाओ। 4 और जब
प्रधान चरवाहा ज़ाहिर किया जाएगा, तो
तुम वह ताज पाओगे जिसकी महिमा
कभी नहीं मिटेगी।

5 इसी तरह, मैं नौजवानों को नसी-
हत देता हूँ कि प्राचीनों के अधीन रहें।
मगर तुम सभी एक-दूसरे से पेश
आते वक्त मन की दीनता धारण करो,
क्योंकि परमेश्वर घमंडियों का सामना
करता है, मगर जो नम्र हैं उन पर महा-
कृपा करता है।

6 इसलिए, परमेश्वर के शक्ति-
शाली हाथ के नीचे खुद को नम्र
करो, ताकि वह सही वक्त पर तुम्हें
ऊँचा करे। 7 और इस दौरान तुम
अपनी सारी चिंताओं का बोझ उसी पर
डाल दो, क्योंकि उसे तुम्हारी परवाह
है। 8 अपने होश-हवास बनाए रखो,
चौकन्ने रहो। तुम्हारा दुश्मन शैतान,*
गरजते हुए शेर की तरह इस ताक में घूम
रहा है कि किसे निगल जाए। 9 मगर
तुम विश्वास में मज़बूत रहकर उसका
मुकाबला करो, क्योंकि तुम जानते हो कि
सारी दुनिया में तुम्हारे भाइयों की पूरी
बिरादरी ऐसी ही दुःख-तकलीफें झेल
रही है। 10 मगर, परमेश्वर जो हर
तरह की महा-कृपा करता है और जिसने
तुम्हें मसीह के साथ एकता में हमेशा
कायम रहनेवाली अपनी महिमा के लिए
बुलाया है, वह तुम्हारे थोड़ी देर तक दुःख
उठाने के बाद खुद तुम्हारा प्रशिक्षण
खत्म करेगा। वह तुम्हें मज़बूत और
शक्तिशाली बनाएगा। 11 सदा तक
कायम रहनेवाली शक्ति उसी की हो।
आमीन।

12 भाई सिलवानुस* के ज़रिए,
जिसे मैंने विश्वासयोग्य पाया है, मैंने तुम्हें
ये चंद शब्द लिखे हैं, ताकि तुम्हारी
हिम्मत बँधाऊं और इस बात की सच्ची
गवाही दूँ कि यही परमेश्वर की सच्ची
महा-कृपा है और इसमें तुम मज़बूती से
खड़े रहो। 13 वह जो बैबिलोन में है
और तुम्हारी तरह चुनी हुई है,* तुम्हें
नमस्कार कहती है और मरकुस भी जो
मेरे बेटे जैसा है तुम्हें नमस्कार कहता है।
14 प्यार के चुंबन से एक-दूसरे का
स्वागत करो।

मेरी दुआ है कि तुम सबको जो मसीह
के साथ एकता में हैं, शांति मिले।

1पत 5:8* शाब्दिक, "इब्लीस।" यूनानी में *"दिया-बोलोस,"* जिसका मतलब है "निंदा करनेवाला।"

1पत 5:12* 2 कुरि 1:19 फुटनोट देखें। **13*** यूनानी भाषा में यहाँ इस्तेमाल किया गया सर्व-नाम एक स्त्री को सूचित करता है, जो कि ज़ाहिर तौर पर बैबिलोन की मंडली के लिए इस्तेमाल हुआ है।

पतरस की दूसरी चिट्ठी

1 शमौन पतरस की तरफ से, जो यीशु
मसीह का एक दास और प्रेषित*
है, उन लोगों के लिए चिट्ठी जिन्होंने हमारे
परमेश्वर की नेकी और हमारे उद्धारकर्त्ता
यीशु मसीह की नेकी के ज़रिए विश्वास
पाकर हमारे साथ हमारे जैसा सम्मान
पाया है:

2 मेरी दुआ है कि तुम परमेश्वर के
बारे में और हमारे प्रभु यीशु के बारे में
सही ज्ञान लेते रहो ताकि तुम्हें परमेश्वर
की महा-कृपा और शांति और भी बढ़-
कर मिलती रहे। **3** इसलिए कि पर-
मेश्वर ने अपनी शक्ति से हमें वे सारी
चीज़ें मुफ्त में और भरपूर दी हैं, जो
जीवन और परमेश्वर की भक्ति के लिए
ज़रूरी हैं। ये चीज़ें हमें उसके बारे में
सही ज्ञान के ज़रिए दी गयी हैं जिसने
हमें महिमा और सद्गुण से बुलाया है।
4 इस महिमा और सद्गुण की वजह
से उसने हमें उदारता से अनमोल और
बहुत ही शानदार वादे दिए हैं ताकि तुम
इन वादों के ज़रिए उसके जैसे ईश्वरीय
स्वभाव में साझेदार बन सको। उसने हमें
ये वादे उदारता से इसलिए दिए हैं क्योंकि
हम उस भ्रष्टता से छुटकारा पा चुके हैं,
जो वासना की वजह से दुनिया में है।

5 इसी वजह से, परमेश्वर ने तुम्हारे
लिए जो किया है उसके बदले में तुम भी
जी-जान से कोशिश करो ताकि तुम अपने
विश्वास में हर तरह से सद्गुण, और
सद्गुण में हर तरह से ज्ञान, **6** ज्ञान
में हर तरह से संयम, संयम में हर तरह
से धीरज, धीरज में हर तरह से परमेश्वर
की भक्ति **7** और परमेश्वर की भक्ति
में हर तरह से भाइयों जैसा लगाव और
भाइयों जैसे लगाव में प्यार बढ़ाते जाओ।
8 अगर ये गुण तुममें मौजूद हों, और
तुममें उमड़ते रहें तो ये तुम्हें हमारे प्रभु
यीशु मसीह के बारे में सही ज्ञान को
अमल में लाने में ठंडे पड़ने या निष्फल
होने नहीं देंगे।

9 क्योंकि अगर किसी में ये गुण
मौजूद न हों, तो वह अंधा है और
उसने अपनी आँखें बंद कर ली हैं और
वह रौशनी को नहीं देखना चाहता और
भूल गया है कि उसे पहले के पापों से
शुद्ध किया गया है। **10** इसी वजह से
भाइयो, तुम और भी बढ़कर अपने बुलावे
और चुने जाने को खुद पक्का करने के
लिए अपना भरसक करो। अगर तुम ये
सब करते रहोगे, तो तुम किसी भी तरह
से नाकाम न होगे। **11** दरअसल, इस
तरह तुम्हें हमारे प्रभु और उद्धारकर्त्ता
यीशु मसीह के उस राज में बड़े शानदार
तरीके से दाखिल किया जाएगा जो हमेशा
तक कायम रहेगा।

12 इसी वजह से, मैं तुम्हें इन
बातों की याद दिलाने के लिए हमेशा

2पत 1:1* या, “भेजा गया।” यूनानी में *“अपोस्टो-
लोस।”*

तैयार रहूँगा, हालाँकि तुम इन्हें जानते हो
और उस सच्चाई में मज़बूती से कायम
हो जो तुम्हें दी गयी है। **13** मगर
मैं ऐसा करना सही समझता हूँ कि मैं
जब तक शरीर के इस डेरे में हूँ तुम्हें इन
बातों की याद दिलाकर जोश दिलाता
रहूँ, **14** क्योंकि मैं जानता हूँ कि मेरे
शरीर का यह डेरा गिराए जाने का वक्‍त
करीब आ पहुँचा है, ठीक जैसे हमारे
प्रभु यीशु मसीह ने भी मुझ पर ज़ाहिर
किया था। **15** इसलिए मैं हर वक्‍त
तुम्हें याद दिलाने के लिए अपना भरसक
करूँगा, ताकि मेरे चले जाने के बाद तुम
खुद को इन बातों की याद दिला सको।

16 जब हमने तुम्हें प्रभु यीशु मसीह
की शक्‍ति और मौजूदगी* के बारे में
खुशखबरी सुनायी, तो हमने चतुराई से
गढ़ी हुई झूठी कहानियों का सहारा नहीं
लिया बल्कि उसके ऐश्‍वर्य और महिमा के
बारे में वही बताया जो हमने खुद अपनी
आँखों से देखा था। **17** इसलिए कि
उसने परमेश्‍वर हमारे पिता से आदर और
महिमा पायी, जब उस महाप्रतापी की
महिमा से उसके बारे में ये शब्द सुनायी
दिए: "यह मेरा प्यारा बेटा है, जिसे खुद
मैंने मंज़ूर किया है।" **18** हाँ, हमने
आकाश से आनेवाले ये शब्द उस वक्‍त
खुद सुने थे जब हम उसके साथ पवित्र
पहाड़ पर थे।

19 इस तरह हमारे पास जो भविष्य-
वाणी के वचन हैं वे और भी पक्के किए
गए हैं। और तुम उन्हीं पर अपना ध्यान
लगाकर अच्छा कर रहे हो क्योंकि जब
तक दिन नहीं निकलता और दिन का
तारा नहीं चढ़ता, ये वचन उस जलते हुए
दीपक की तरह हैं जो अंधेरी जगह में,
यानी तुम्हारे दिलों में जगमगा रहा है।
20 क्योंकि तुम सबसे पहले यह जान
लो कि शास्त्र की कोई भी भविष्यवाणी
किसी के अपने विचारों के मुताबिक
नहीं की गयी। **21** क्योंकि कोई भी
भविष्यवाणी इंसान की मरज़ी से कभी
नहीं हुई, बल्कि इंसान पवित्र शक्‍ति से
उभारे जाकर परमेश्‍वर की तरफ से
बोलते थे।

2 लेकिन, जैसे इसराएल के लोगों के
बीच झूठे भविष्यवक्‍ता उठ खड़े हुए
थे, वैसे ही तुम्हारे बीच भी झूठे शिक्षक
आएँगे। यही लोग तुम्हारे बीच रहते हुए
गुप्त तरीके से ऐसे गुटों की शुरूआत
करेंगे जो विनाश की तरफ ले जाते हैं
और उस मालिक को भी जानने से इन-
कार करेंगे जिसने उन्हें दाम देकर खरीदा
है। ये लोग अपने ही हाथों तेज़ी से अपना
विनाश लाएँगे। **2** यही नहीं, बहुत-
से लोग उनके पीछे चलेंगे और उनके जैसे
बदचलनी के काम करेंगे और इनकी
वजह से सच्चाई की राह की बदनामी
होगी। **3** और वे लालच की वजह से
झूठी बातें बनाकर तुम्हें लूटेंगे। मगर
उनके लिए पहले से जो कठोर दंड तय
किया गया है, उसके आने में देर न होगी
और उनका विनाश ज़रूर आएगा।

4 वाकई, परमेश्‍वर उन स्वर्गदूतों को
भी जिन्होंने पाप किया, सज़ा देने से पीछे

2पत 1:16* अतिरिक्‍त लेख 5 देखें।

नहीं हटा, मगर उन्हें तारतरस* कहलाने-
वाली कैद के घोर अंधकार से भरे गड्ढों
में डाल दिया, जहाँ वे गिरी हुई दशा में
हैं और सज़ा पाने का इंतज़ार कर रहे
हैं। **5** वह नूह के ज़माने की दुनिया
को भी सज़ा देने से पीछे न हटा, मगर
जब वह भक्तिहीन लोगों की उस पुरानी
दुनिया पर जलप्रलय लाया, तो नेकी के
प्रचारक नूह को सात और लोगों के साथ
बचा लिया। **6** साथ ही, उसने सदोम
और अमोरा नाम के शहरों को खाक में
मिलाकर सज़ा दी और इस तरह आने-
वाले वक्त में भक्तिहीन लोगों के लिए
एक नमूना ठहराया। **7** मगर उसने
नेक इंसान, लूत को बचाया, जो दुरा-
चारियों के नीच कामों का घिनौनापन
देखकर आहें भरता था। **8** क्योंकि
वह नेक इंसान हर दिन उनके बीच
रहते हुए उनके दुराचार के काम देखकर
और सुनकर तड़पता था। **9** ये सारी
बातें दिखाती हैं कि यहोवा* जानता
है कि जो उसकी भक्ति करते हैं उन्हें
परीक्षा से कैसे निकाले, साथ ही वह दुष्टों
को नाश करने के लिए उन्हें न्याय के
दिन तक रख छोड़ना भी जानता है,
10 खासकर उन्हें जो दूसरों को दूषित
करने के इरादे से उनके शरीर के पीछे
भागते हैं और जो अधिकार रखनेवालों
को नीची नज़रों से देखते हैं।

गुस्ताख और अपनी मनमानी करने-
वाले ये लोग, उनका ज़रा भी डर नहीं
मानते जिन पर परमेश्वर की महिमा है,
मगर उनके बारे में बुरी-बुरी बातें बोलते
हैं, **11** जबकि स्वर्गदूत, जो इन झूठे
शिक्षकों से कहीं ज़्यादा बलवान और
शक्तिशाली हैं, यहोवा का आदर करते
हैं इसलिए वे उन पर दोष लगाने के लिए
उन्हें बुरा-भला नहीं कहते। **12** मगर
ये लोग ऐसे जानवरों जैसे हैं जिनमें
सोचने-समझने की शक्ति नहीं होती और
जो पकड़े जाने और मार डाले जाने के
लिए ही पैदा होते हैं। ये लोग जिन बातों
के बारे में बेखबर हैं और जिनको लेकर
बुरी-बुरी बातें कहते हैं, उनकी वजह से
विनाश के अपने रास्ते पर चल रहे
हैं और आखिर में नाश हो जाएँगे।
13 इनकी बुराई का बदला इन्हें बुराई
से ही मिलेगा।

ऐसे लोगों को अपना दिन का वक्त
ऐयाशी में बिताना अच्छा लगता है।
ये दाग और कलंक हैं, जिन्हें तुम्हारे
साथ दावतें उड़ाते वक्त अपनी छल से
भरी शिक्षाओं को बढ़ावा देने में बेइंतहा
खुशी मिलती है। **14** उनकी आँखों में
वासना भरी है* और वे पाप करने से खुद
को रोक नहीं पाते और ऐसे लोगों को
फँसा लेते हैं जो डाँवाडोल हैं। इन्होंने
लालच के काम करने में अपने दिलों को
माहिर कर लिया है। ये शापित बच्चे हैं।
15 इन्होंने सीधी राह छोड़ दी है और

2पत 2:4* परमेश्वर ने नूह के ज़माने में बगावती स्वर्गदूतों को कैद की जिस गिरी हुई हालत में डाल दिया था, वह तारतरस कहलाती है। **9*** यह उन 237 जगहों में से एक जगह है, जहाँ परमेश्वर का नाम, 'यहोवा' इस अनुवाद के मुख्य पाठ में पाया जाता है। अतिरिक्त लेख 2 देखें।

2पत 2:14* या, "उनकी आँखें व्यभिचार से भरी हैं।"

ये गुमराह हो गए हैं। ये बओर के बेटे
बिलाम की राह पर चलते हैं, जिसे बुराई
करने का इनाम प्यारा था, **16** और
जिसे सही काम के खिलाफ जाने की वजह
से ताड़ना मिली। और बोझ ढोनेवाले बे-
ज़ुबान जानवर ने इंसान की आवाज़ में
बोलकर उस भविष्यवक्ता को पागलपन
का काम करने से रोका।

17 ये ऐसे सोते हैं जिनमें पानी नहीं
और धुंध के ऐसे बादल हैं जिन्हें
आँधी उड़ाए फिरती है और उनके लिए
घोर अंधकार ठहराया गया है। **18** वे
ऐसी बड़ी-बड़ी बातें करते हैं जिनसे कुछ
फायदा नहीं होता और वे शरीर की
ख्वाहिशों से और वासना से भरी आदतों
से उन लोगों को फँसा लेते हैं जो बुरे
काम करनेवाले दुनियावी लोगों के बीच
से अभी-अभी निकले ही हैं। **19** वे
उन्हें आज़ादी दिलाने का वादा करते हैं,
जबकि वे खुद भ्रष्टता के गुलाम हैं।
क्योंकि जो जिसके बस में आ जाता है
उसका गुलाम हो जाता है। **20** वाकई
अगर वे हमारे प्रभु और उद्धारकर्त्ता यीशु
मसीह के बारे में सही ज्ञान के ज़रिए
दुनिया की अशुद्धता से बच निकलने के
बाद, फिर से इन्हीं कामों में लग जाते हैं
और इनके बस में आ जाते हैं, तो उनकी
अब की हालत उनकी पहले की हालत
से भी बदतर हो गयी है। **21** इससे
तो अच्छा होता कि वे नेकी की राह के
बारे में सही ज्ञान ही न पाते, बजाय इसके
कि इसे सही-सही जानने के बाद वे उन
पवित्र आज्ञाओं से मुँह मोड़ लेते जो उन्हें
दी गयी थीं। **22** उन पर यह सच्ची
कहावत ठीक बैठती है: "कुत्ता अपनी
उल्टी चाटने के लिए लौट जाता है और
नहलायी-धुलायी सूअरनी फिर से कीचड़
में लोटने के लिए लौट जाती है।"

3 मेरे प्यारे भाइयो, मैं तुम्हें यह
दूसरी चिट्ठी लिख रहा हूँ। जैसे मैंने
पहली चिट्ठी में किया था, इस चिट्ठी
में भी मैं तुम्हें कुछ बातें याद दिला-
कर, साफ-साफ सोचने की तुम्हारी काबि-
लीयत को जगा रहा हूँ, **2** ताकि तुम
पहले के पवित्र भविष्यवक्ताओं की कही
बातों को और हमारे प्रभु और उद्धार-
कर्त्ता की आज्ञा को जो उसने तुम्हारे
प्रेषितों के ज़रिए तुम्हें दी थी, याद रखो।
3 सबसे पहली बात, तुम यह जानते
हो कि आखिरी दिनों में खिल्ली उड़ाने-
वाले आएँगे और अपनी बातों से खिल्ली
उड़ाएँगे। ये अपनी ही ख्वाहिश के मुता-
बिक ऐसा करेंगे, **4** और यह कहेंगे:
"उसने वादा किया था कि वह मौजूद
होगा, मगर वह कहाँ है? जब से हमारे
बाप-दादा मौत की नींद सो गए हैं, तब
से सबकुछ बिलकुल वैसा ही चल रहा है,
जैसा सृष्टि की शुरूआत से था।"

5 वे इस बात पर जानबूझकर ध्यान
नहीं देते कि परमेश्वर के वचन से ही
उस वक्त का आकाश कायम हुआ और
ठोस ज़मीन पानी से ऊपर उठी और पृथ्वी
चारों तरफ से पानी से घिरी हुई थी।
6 इन्हीं के ज़रिए उस वक्त की दुनिया
पानी के प्रलय से डूबकर नाश हुई।
7 मगर उसी वचन से, आज के आकाश
और पृथ्वी को आग से भस्म किए जाने

के लिए रखा गया है और उन्हें न्याय के दिन तक यानी भक्तिहीन लोगों के नाश किए जाने के दिन तक ऐसे ही रखा जाएगा।

8 मगर मेरे प्यारो, तुम इस सच्चाई
को न भूलो कि यहोवा के लिए एक दिन
एक हज़ार साल के बराबर है और एक
हज़ार साल, एक दिन के। **9** यहोवा
अपना वादा पूरा करने में देरी नहीं करता,
जैसा कुछ लोग समझते हैं मगर वह
तुम्हारे मामले में सब्र दिखाता है, क्योंकि
वह नहीं चाहता कि कोई भी नाश हो
बल्कि यह कि सब को पश्चाताप का
मौका मिले। **10** फिर भी यहोवा का
दिन ऐसे आएगा जैसे चोर आता है।
उस दिन आकाश बड़ी फुफकार के साथ
मिट जाएगा, और तत्व बेहद गर्म होकर
पिघल जाएँगे और धरती और इस पर
किए गए इंसानों के सब कामों का पर्दा-
फाश हो जाएगा।

11 इसलिए, जब ये सारी चीज़ें इस
तरह पिघल जाएँगी, तो सोचो कि आज
तुम्हें कैसे इंसान होना चाहिए! तुम्हें पवित्र
चालचलन रखनेवाले और परमेश्वर की
भक्ति के काम करनेवाले इंसान होना
चाहिए, **12** और यहोवा के दिन का
इंतज़ार करते हुए उस दिन के बहुत जल्द
आने* की बात को हमेशा अपने मन में
रखना चाहिए। उस दिन की वजह से
आकाश आग से जलकर पिघल जाएगा
और तत्व बेहद गर्म होकर गल जाएँगे।

13 मगर हम परमेश्वर के वादे के मुता-
बिक एक नए आकाश और नयी पृथ्वी
का इंतज़ार कर रहे हैं, जहाँ न्याय* का
बसेरा होगा।

14 इसलिए मेरे प्यारो, क्योंकि तुम
इन सब बातों का इंतज़ार कर रहे हो,
तो अपना भरसक करो कि आखिरकार
उसके सामने तुम निष्कलंक और बेदाग
और शांति में पाए जाओ। **15** और
यह समझो कि हमारे प्रभु का सब्र तुम्हें
उद्धार पाने का मौका दे रहा है, ठीक
जैसे हमारे प्यारे भाई पौलुस ने भी, उस
बुद्धि के मुताबिक जो उसे परमेश्वर ने दी
थी, तुम्हें लिखा था, **16** और उसने
अपनी सारी चिट्ठियों में इन्हीं बातों के बारे
में लिखा है। हालाँकि उनमें से कुछ बातें
ऐसी हैं जो समझने में मुश्किल हैं, और
जिन्हें न सीखनेवाले और डाँवाडोल लोग
तोड़-मरोड़कर बताते हैं, जैसे वे शास्त्र की
बाकी बातों का भी यही हाल करते हैं
और खुद अपने नाश की वजह बनते हैं।

17 इसलिए मेरे प्यारो, तुम पहले से
इन बातों की जानकारी रखते हुए खबर-
दार रहो कि तुम दुराचारियों के गलत
कामों में न पड़ो और गुमराह न हो जाओ
और जिस स्थिरता से तुम अटल खड़े
हो उससे गिर न जाओ। **18** इसके
बजाय, तुम्हें परमेश्वर की महा-कृपा और
भी ज़्यादा मिलती रहे और तुम हमारे प्रभु
और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह के बारे में
ज्ञान में बढ़ते जाओ। उसकी महिमा आज
और हमेशा-हमेशा के लिए होती रहे।

2पत 3:12* यूनानी में *‘पारूसीआ,’* यानी ‘मौजूदगी।’ अतिरिक्त लेख 5 देखें।

2पत 3:13* या, धार्मिकता।

यूहन्ना की पहली चिट्ठी

1 हम तुम्हें उसके बारे में लिख रहे हैं
जो जीवन का वचन है। जो शुरू-
आत से था और जिसकी हमने सुनी,
जिसे हमने अपनी आँखों से देखा, जिस
पर हमने बहुत ध्यान से गौर किया
और जिसे हमने अपने हाथों से छूआ।
2 (हाँ, हमेशा की ज़िंदगी हम पर ज़ाहिर
की गयी और हमने इसे देखा है और
इसकी गवाही दे रहे हैं और तुम्हारे सामने
इसका ऐलान कर रहे हैं। हमेशा की यह
ज़िंदगी पिता से है और यह हम पर
ज़ाहिर की गयी थी।) 3 और जिसे
हमने देखा और सुना है उसी के बारे में
हम तुम्हारे सामने भी ऐलान कर रहे हैं,
ताकि तुम भी हमारे साथ साझेदार हो
सको। इतना ही नहीं, हमारी यह साझे-
दारी पिता के साथ और उसके बेटे यीशु
मसीह के साथ है। 4 और हम तुम्हें
ये बातें लिख रहे हैं ताकि हमारी खुशी
पूरी हो सके।

5 और जो संदेश हमने उससे सुना
है वह यह है कि परमेश्वर रौशनी है और
उसमें कुछ भी अंधकार नहीं। और यही
संदेश हम तुम्हें सुना रहे हैं। 6 अगर
हम यह कहें: "हमारी उसके साथ साझे-
दारी है," और फिर भी हम अंधकार में
चलना जारी रखते हैं, तो हम झूठ बोल
रहे हैं और सच्चाई पर नहीं चल रहे।
7 लेकिन अगर हम रौशनी में चल रहे
हैं जैसा वह खुद भी रौशनी में है, तो हम
ज़रूर एक-दूसरे के साथ साझेदार हैं और
उसके बेटे यीशु का लहू हमारे सभी पापों
को धोकर हमें शुद्ध करता है।

8 अगर हम यह कहें: "हमारे अंदर
पाप नहीं," तो हम खुद को धोखा दे रहे
हैं और सच्चाई हमारे अंदर नहीं है।
9 परमेश्वर विश्वासयोग्य और सच्चा
है। इसलिए अगर हम अपने पाप मान
लें, तो वह हमारे पाप माफ करेगा और
हमें सभी दुष्ट कामों से शुद्ध करेगा।
10 अगर हम यह कहें: "हमने पाप नहीं
किया," तो हम उसे झूठा ठहराते हैं और
उसका वचन हमारे अंदर नहीं है।

2 मेरे प्यारे बच्चो, मैं तुम्हें ये बातें
इसलिए लिख रहा हूँ ताकि तुम कोई
पाप न करो। और अगर कोई पाप कर
बैठे, तो हमारे लिए एक मददगार है जो
पिता के पास है, यानी यीशु मसीह जो
परमेश्वर के स्तरों पर खरा उतरा है।
2 वह हमारे पापों के लिए, प्रायश्चित्त
का बलिदान है जो परमेश्वर के साथ
हमारी सुलह कराता है और सिर्फ हमारे
ही पापों के लिए नहीं बल्कि सारी दुनिया
के पापों के लिए भी। 3 अगर हम
उसकी आज्ञाओं को मानते रहें, तो इसी
से हमें मालूम होता है कि हम उसे जानते
हैं। 4 जो कहता है: "मैं उसे जान
गया हूँ," और फिर भी उसकी आज्ञाओं

को नहीं मानता, वह झूठा है और ऐसे
इंसान में सच्चाई नहीं है। **5** मगर जो
कोई उसकी आज्ञा मानता है, सचमुच उसी
इंसान में परमेश्‍वर के लिए प्यार पूरी हद
तक दिखायी देता है। और इसी बात से
हम जान पाते हैं कि हम उसके साथ
एकता में हैं। **6** जो कहता है कि मैं
उसके साथ एकता में हूँ उसका यह
फर्ज़ बनता है कि वह खुद भी वैसे ही
जीए जैसे यीशु जीया था।*

7 मेरे प्यारो, मैं तुम्हें कोई नयी
आज्ञा नहीं बल्कि एक पुरानी आज्ञा लिख
रहा हूँ जो तुम्हें पहले से मिली हुई है।
यह पुरानी आज्ञा वह वचन है जो तुम
सुन चुके हो। **8** फिर भी, मैं तुम्हें एक
नयी आज्ञा की तरह यही आज्ञा लिख
रहा हूँ, जो यीशु ने भी मानी थी और
तुम भी मानते हो, क्योंकि अंधकार मिटता
जा रहा है और सच्ची रौशनी अभी से
चमक रही है।

9 वह जो कहता है कि मैं रौशनी में
हूँ, मगर फिर भी अपने भाई से नफरत
करता है वह अब तक अंधकार में ही
है। **10** जो अपने भाई से प्यार करता
है वह रौशनी में बना रहता है और उसके
मामले में गिरने की कोई वजह नहीं होती।
11 मगर जो अपने भाई से नफरत
करता है वह अंधकार में है और अंध-
कार में चल रहा है, और नहीं जानता
कि कहाँ जा रहा है क्योंकि अंधकार
ने उसकी आँखों को अंधा कर दिया है।

1यूह 2:6* शाब्दिक, "वैसे ही चलता रहे जैसे वह
चला।"

12 प्यारे बच्चो, मैं तुम्हें इसलिए
लिख रहा हूँ क्योंकि यीशु के नाम की
खातिर तुम्हारे पाप माफ किए गए हैं।
13 पिताओ, मैं तुम्हें इसलिए लिख रहा
हूँ क्योंकि तुम यीशु को जान गए हो जो
शुरूआत से है। नौजवानो, मैं तुम्हें इस-
लिए लिख रहा हूँ क्योंकि तुमने उस दुष्ट
पर जीत हासिल की है। बच्चो, मैं तुम्हें
इसलिए लिख रहा हूँ क्योंकि तुम पर-
मेश्‍वर हमारे पिता को जान गए हो।
14 पिताओ, मैं तुम्हें इसलिए लिख रहा
हूँ क्योंकि तुम यीशु को जान गए हो
जो शुरूआत से है। नौजवानो, मैं तुम्हें
इसलिए लिख रहा हूँ क्योंकि तुम बलवान
हो और परमेश्‍वर का वचन तुममें बना
हुआ है और तुमने उस दुष्ट पर जीत
हासिल की है।

15 तुम दुनिया और दुनिया की
चीज़ों से प्यार करनेवाले मत बनो।
अगर कोई दुनिया से प्यार करता है,
तो उसमें पिता के लिए प्यार नहीं है।
16 क्योंकि दुनिया में जो कुछ है, यानी
शरीर की ख्वाहिशें, आँखों की ख्वाहिशें
और अपनी चीज़ों* का दिखावा, पिता
की तरफ से नहीं बल्कि दुनिया की तरफ
से है। **17** इतना ही नहीं, यह दुनिया
मिटती जा रही है और इसके साथ इसकी
ख्वाहिशें भी मिट जाएँगी, मगर जो पर-
मेश्‍वर की मरज़ी पूरी करता है वह हमेशा
तक कायम रहेगा।

18 प्यारे बच्चो, यह आखिरी वक्त

1यूह 2:16* या, "जीवन के साधनों।"

है और जैसे तुम सुन चुके हो मसीह का
विरोधी आ रहा है, यहाँ तक कि अभी-
भी मसीह के बहुत-से विरोधी आ चुके हैं।
और इस हकीकत से हम यह जान पाते
हैं कि यह आखिरी वक्त है। **19** ये
हमारे ही बीच से निकलकर गए हैं, मगर
ये हमारे जैसे नहीं थे। क्योंकि अगर होते,
तो हमारे साथ बने रहते। मगर ये निकल-
कर चले गए ताकि यह साफ दिखायी दे
कि सारे हमारे जैसे नहीं हैं। **20** और
तुम्हारा अभिषेक उस पवित्र परमेश्वर ने
किया है; इसलिए तुम सबके पास सच्चाई
का ज्ञान है। **21** मैं तुम्हें इसलिए नहीं
लिख रहा कि तुम सच्चाई नहीं जानते,
बल्कि इसलिए कि तुम सच्चाई जानते हो
और इसलिए भी कि सच्चाई से कोई झूठ
नहीं निकलता।

22 झूठा कौन है? क्या वह नहीं जो
इस बात से इनकार करता है कि यीशु
ही मसीह* है? यही मसीह का विरोधी
है, जो पिता का और बेटे का इनकार
करता है। **23** हर कोई जो बेटे का
इनकार करता है वह पिता के साथ भी
एकता में नहीं है। जो बेटे पर विश्वास
करने का ऐलान करता है वह पिता
के साथ भी एकता में है। **24** जहाँ
तक तुम्हारी बात है, जो तुमने शुरू
में सुना था वह तुममें बना रहे। तुमने
शुरू में जो सुना था अगर वह तुममें बना
रहता है, तो तुम बेटे के साथ और
पिता के साथ भी एकता में रहोगे।
25 इसके अलावा, उसने खुद हमसे
जिस चीज़ का वादा किया है वह है,
हमेशा की ज़िंदगी।

26 मैं ये बातें तुम्हें उन लोगों के
बारे में लिख रहा हूँ जो तुम्हें गुम-
राह करने की कोशिश कर रहे हैं।
27 जहाँ तक तुम्हारी बात है, परमेश्वर
ने अपनी पवित्र शक्ति से तुम्हारा अभि-
षेक किया है और यह पवित्र शक्ति
तुममें बनी रहती है। और तुम्हें इस
बात की ज़रूरत नहीं कि कोई तुम्हें
सिखाए। मगर परमेश्वर तुम्हारा अभि-
षेक करने के ज़रिए तुम्हें सब बातें सिखा
रहा है। तुम्हारा यह अभिषेक सच्चा है,
झूठा नहीं। और ठीक जैसा इसने तुम्हें
सिखाया है, तुम उसके साथ एकता में बने
रहो जिसने तुम्हारा अभिषेक किया है।
28 इसलिए, प्यारे बच्चो, उसके साथ
एकता में बने रहो, ताकि जब वह ज़ाहिर
किया जाएगा तो हमारे पास बेझिझक
बोलने की हिम्मत होगी और उसकी
मौजूदगी* के दौरान हमें शर्मिंदा कर
दूर नहीं कर दिया जाएगा। **29** अगर
तुम जानते हो कि यीशु परमेश्वर के स्तरों
पर खरा उतरा है, तो तुमने यह भी जान
लिया कि हर कोई जो परमेश्वर के स्तरों
के मुताबिक सही काम करता है वह पर-
मेश्वर से पैदा हुआ है।

3 देखो, हमारे परमेश्वर, पिता ने
हमसे किस कदर प्यार किया है कि
हमें अपने बच्चे कहलाने का सम्मान दिया
है। दरअसल हम परमेश्वर के बच्चे

1यूह 2:22* या, “अभिषिक्त जन, मसीहा।” मत्ती 1:1 फुटनोट देखें।

1यूह 2:28* अतिरिक्त लेख 5 देखें।

हैं भी। यह दुनिया हमारे बारे में नहीं
जानती, क्योंकि दुनिया ने पिता को नहीं
जाना है। **2** मेरे प्यारो, हम परमेश्वर
के बच्चे हैं, मगर अब तक यह ज़ाहिर
नहीं हुआ है कि हम भविष्य में कैसे होंगे।
हम यह ज़रूर जानते हैं कि जब भी वह
ज़ाहिर होगा तो हम उसके जैसे हो जाएँगे
क्योंकि हम उसे वाकई देखेंगे। **3** और
हर कोई जो उस पर अपनी आशा रखता
है वह खुद को वैसे ही शुद्ध करता है
जैसे वह शुद्ध है।

4 हर कोई जो पाप करता रहता है,
वह कानून को तोड़ता रहता है, इसलिए
पाप का मतलब कानून के खिलाफ जाना
है। **5** तुम यह भी जानते हो कि यीशु
हमारे पाप उठा ले जाने के लिए आया
और उसमें कोई पाप नहीं है। **6** हर
कोई जो उसके साथ एकता में बना रहता
है वह पाप करता नहीं रहता। जो कोई
पाप करता रहता है उसने न तो उसे देखा
है, न ही उसे जाना है। **7** प्यारे बच्चो,
कोई तुम्हें गुमराह न करे। जो सही कामों
में लगा रहता है वह नेक है, ठीक जैसे
यीशु नेक है। **8** जो पाप करता रहता
है वह शैतान* से है क्योंकि शैतान शुरू-
आत से पाप करता रहा है। परमेश्वर के
बेटे को इस मकसद से ज़ाहिर किया गया
कि वह शैतान के कामों को नष्ट कर दे।

9 हर कोई जो परमेश्वर से पैदा
हुआ है वह पाप करता नहीं रहता,
क्योंकि उसका बीज उसमें बना रहता है
और वह पाप में लगा नहीं रह सकता
क्योंकि वह परमेश्वर से पैदा हुआ है।
10 परमेश्वर के बच्चों और शैतान के
बच्चों की पहचान इस बात से होती है:
हर कोई जो नेकी के काम नहीं करता
रहता वह परमेश्वर से नहीं है, न ही वह
परमेश्वर से है जो अपने भाई से प्यार
नहीं करता। **11** इसलिए कि शुरू-
आत से तुमने यही संदेश सुना है कि हममें
एक-दूसरे के लिए प्यार होना चाहिए
12 और हमें कैन जैसा नहीं होना चाहिए
जो उस दुष्ट* से था और जिसने अपने
भाई का बेरहमी से कत्ल कर दिया।
आखिर क्यों उसने उसका कत्ल कर
दिया? क्योंकि उसके खुद के काम दुष्ट
थे मगर उसके भाई के काम नेकी के थे।

13 भाइयो, इस बात पर ताज्जुब
मत करो कि दुनिया तुमसे नफरत करती
है। **14** हम जानते हैं कि हम मानो
मरे हुए थे मगर अब ज़िंदा हो गए हैं,
क्योंकि हम भाइयों से प्यार करते हैं। जो
प्यार नहीं करता वह अभी-भी मौत की
हालत में है। **15** हर कोई जो अपने
भाई से नफरत करता है वह हत्यारा है,
और तुम जानते हो कि किसी भी हत्यारे
के लिए हमेशा की ज़िंदगी नहीं है।
16 प्यार क्या है, यह हमने इस बात
से जाना है कि यीशु मसीह ने हमारे
लिए अपनी जान न्यौछावर कर दी और
हमारा यह फर्ज़ बनता है कि हम अपने
भाइयों के लिए अपनी जान न्यौछावर
करें। **17** लेकिन अगर किसी के पास

1यूह 3:8* शाब्दिक, "इब्लीस।" यूनानी में *"दिया-बोलोस,"* जिसका मतलब है "निंदा करनेवाला।"

1यूह 3:12* यानी, शैतान।

गुज़र-बसर करने के लिए दुनिया के
साधन हों और वह देखे कि उसका भाई
ज़रूरत में है और फिर भी वह उसकी
तरफ अपनी दया* के दरवाज़े बंद कर
लेता है, तो ऐसे इंसान में परमेश्वर के
लिए प्यार कैसे बना रह सकता है?
18 प्यारे बच्चो, हम सिर्फ बातों से या
ज़ुबान से नहीं बल्कि अपने कामों से और
सच्चे दिल से प्यार करें।

19 इसी प्यार से हम जान लेंगे कि
हम सच्चाई के हैं, और ऐसी हर बात में
हम अपने दिलों को परमेश्वर के प्यार
का यकीन दिलाएँगे **20** जिसमें हमारा
दिल हमें दोषी ठहराता है, क्योंकि पर-
मेश्वर हमारे दिलों से बड़ा है और सारी
बातें जानता है। **21** मेरे प्यारो, जब
हमारा दिल हमें दोषी नहीं ठहराता, तो
हम परमेश्वर से बेझिझक बात करने की
हिम्मत कर सकते हैं। **22** और हम
उससे चाहे जो भी माँगें हम पाते हैं क्योंकि
हम उसकी आज्ञाओं का पालन कर रहे
हैं और वही काम कर रहे हैं जो उसकी
नज़रों में अच्छा है। **23** वाकई, यह
उसकी आज्ञा है कि हम उसके बेटे यीशु
मसीह के नाम पर विश्वास रखें और एक-
दूसरे से प्यार करते रहें, ठीक जैसे उसने
हमें आज्ञा दी है। **24** और जो उसकी
आज्ञाओं का पालन करता है वह उसके
साथ एकता में बना रहता है और वह
भी ऐसे इंसान के साथ एकता में बना
रहता है, और इसी से हम जान पाते हैं
कि वह हमारे साथ एकता में बना रहता
है क्योंकि वह हमें अपनी पवित्र शक्ति
देता है।

4 मेरे प्यारो, ऐसे हर संदेश पर यकीन
न करो जो लगता है कि परमेश्वर
की तरफ से आया है,* मगर हर संदेश
को यह जानने के लिए परखो कि वह
सचमुच परमेश्वर की तरफ से है या नहीं,
क्योंकि दुनिया में बहुत-से झूठे भविष्य-
वक्ता निकल पड़े हैं।

2 कोई संदेश परमेश्वर की तरफ से
है या नहीं, यह तुम इस तरह जान सकते
हो: हर संदेश जो परमेश्वर की तरफ
से आता है, उसमें यह स्वीकार किया
जाता है कि यीशु मसीह हाड़-माँस का
इंसान बनकर आया था, **3** मगर ऐसा
हर संदेश जिसमें यीशु के बारे में यह
स्वीकार नहीं किया जाता, वह परमेश्वर
की तरफ से नहीं है। बल्कि वह संदेश
मसीह के विरोधी की तरफ से है। तुमने
सुना है कि यह संदेश आनेवाला है और
अब यह दुनिया में आ चुका है।

4 प्यारे बच्चो, तुम परमेश्वर से हो
और तुमने इन लोगों पर जीत हासिल
की है, क्योंकि परमेश्वर जो तुम्हारे साथ
एकता में है, वह शैतान से बड़ा है
जो दुनिया के साथ एकता में है। **5** ये
लोग दुनिया से हैं। इसलिए वे वही बातें
कहते हैं जो दुनिया की तरफ से हैं और
दुनिया उनकी सुनती और मानती है।
6 हम परमेश्वर से हैं। जो परमेश्वर के
बारे में ज्ञान हासिल करता है वह हमारी
सुनता है। जो परमेश्वर से नहीं है वह

1यूह 3:17* या, "कोमल करुणा।"

1यूह 4:1* यूनानी *नफ्मा*। अतिरिक्त लेख 7 देखें।

हमारी नहीं सुनता। इसी तरह हम समझ
पाते हैं कि दिया गया कौन-सा संदेश*
सच्चाई से है और कौन-सा झूठ से।

7 मेरे प्यारो, हम एक-दूसरे से प्यार
करते रहें, क्योंकि प्यार परमेश्वर से है
और हर कोई जो प्यार करता है वह पर-
मेश्वर से पैदा हुआ है और परमेश्वर के
बारे में ज्ञान हासिल करता है। **8** जो
प्यार नहीं करता वह परमेश्वर को नहीं
जान पाया है, क्योंकि परमेश्वर प्यार है।
9 हमारे मामले में परमेश्वर का प्यार
इस बात से ज़ाहिर हुआ कि परमेश्वर ने
अपना इकलौता बेटा दुनिया में भेजा
ताकि हम उसके ज़रिए जीवन पा सकें।
10 इस बात में जो प्यार है वह इस
मायने में ज़ाहिर नहीं हुआ कि हमने पर-
मेश्वर से प्यार किया बल्कि इस मायने
में कि परमेश्वर ने हमसे प्यार किया और
अपने बेटे को हमारे पापों के लिए प्राय-
श्चित्त बलिदान के रूप में भेजा ताकि
परमेश्वर के साथ हमारी सुलह हो।

11 मेरे प्यारो, जब परमेश्वर ने
हमसे इस कदर प्यार किया है, तो फिर
हमारा यह फर्ज़ बनता है कि हम भी
एक-दूसरे से प्यार करें। **12** किसी ने
कभी-भी परमेश्वर को नहीं देखा है।
अगर हम एक-दूसरे से प्यार करते रहें,
तो परमेश्वर अब भी हमारे साथ है और
हमारे अंदर उसका प्यार पूरी हद तक
दिखायी देता है। **13** उसने हमें अपनी
पवित्र शक्ति दी है, इस बात से हम
जानते हैं कि हम उसके साथ एकता में
बने हुए हैं और वह हमारे साथ एकता
में है। **14** इसके अलावा, हमने खुद
देखा है और यह गवाही भी दे रहे हैं कि
पिता ने अपने बेटे को दुनिया का उद्धा-
रकर्त्ता बनाकर भेजा। **15** जो इंसान
यह स्वीकार करता है कि यीशु मसीह,
परमेश्वर का बेटा है, परमेश्वर उसके
साथ एकता में बना रहता है और वह
परमेश्वर के साथ एकता में रहता है।
16 हमारे मामले में परमेश्वर ने जो प्यार
दिखाया है उसे हम खुद जानते हैं और
उस पर यकीन करते हैं।

परमेश्वर प्यार है और जो लगातार
प्यार दिखाता है वह परमेश्वर के साथ
एकता में बना रहता है और परमेश्वर
उसके साथ एकता में बना रहता है।
17 हमारे मामले में प्यार इस मायने
में पूरी हद तक दिखाया गया है कि
न्याय के दिन हमें बेझिझक होकर बोलने
की हिम्मत मिले, क्योंकि इस दुनिया में
हम ठीक वैसे ही हैं जैसे मसीह है।
18 प्यार में डर नहीं होता, बल्कि जो
प्यार पूरा है वह डर को दूर कर देता है,
क्योंकि डर रुकावट का काम करता है।
हाँ, जिसमें डर समाया हुआ है उसमें पूरी
हद तक प्यार नहीं है। **19** जहाँ तक
हमारी बात है, हम इसलिए प्यार करते
हैं क्योंकि पहले परमेश्वर ने हमसे प्यार
किया।

20 अगर कोई यह कहता है: "मैं
परमेश्वर से प्यार करता हूँ," और फिर
भी अपने भाई से नफरत कर रहा है, तो
वह झूठा है। क्योंकि जो अपने भाई से

1यूह 4:6* यूनानी में, *नफ्मा।*

जिसे उसने देखा है प्यार नहीं करता,
वह परमेश्वर से जिसे उसने नहीं देखा
प्यार नहीं कर सकता। **21** और हमने
उससे यह आज्ञा पायी है कि जो परमेश्वर
से प्यार करता है उसे अपने भाई से भी
प्यार करना चाहिए।

5 हर कोई जो विश्वास करता है कि
यीशु ही मसीह है, वह परमेश्वर से
पैदा हुआ है, और हर कोई जो उस पैदा
करनेवाले परमेश्वर से प्यार करता है,
वह उसके बच्चों से भी प्यार करता है।
2 जब हम परमेश्वर से प्यार करते हैं
और उसकी आज्ञाओं को मानते हैं तो
इसी से हम जानते हैं कि हम परमेश्वर
के बच्चों से प्यार करते हैं। **3** क्योंकि
परमेश्वर से प्यार करने का मतलब यही
है कि हम उसकी आज्ञाओं पर चलें; और
उसकी आज्ञाएँ हम पर बोझ नहीं हैं,
4 क्योंकि हर कोई जो परमेश्वर से पैदा
हुआ है वह दुनिया पर जीत हासिल
करता है। और जिस जीत से हमने
दुनिया पर जीत हासिल की है, वह है
हमारा विश्वास।

5 कौन है जो दुनिया पर जीत
हासिल करता है? वही जिसमें यह
विश्वास है कि यीशु, परमेश्वर का
बेटा है। **6** यही है जो पानी और
लहू के ज़रिए आया, यानी यीशु मसीह;
सिर्फ पानी के साथ नहीं मगर पानी
और लहू के साथ। और जो गवाही दे
रही है वह पवित्र शक्ति है, क्योंकि
पवित्र शक्ति सच्ची गवाही देती है।
7 इसलिए कि गवाही देनेवाले तीन हैं,
8 पवित्र शक्ति, पानी और लहू और
ये तीनों एक ही बात पर सहमत हैं।

9 अगर हम इंसानों की गवाही को
मानते हैं, तो परमेश्वर की गवाही तो
उससे भी बढ़कर है, क्योंकि परमेश्वर
इस बात के सच होने की गवाही देता है
कि उसने अपने बेटे के बारे में गवाही
दी है। **10** जो इंसान परमेश्वर के
बेटे पर विश्वास करता है वह अपने
मामले में परमेश्वर की इस गवाही पर
यकीन करता है। जो इंसान परमेश्वर पर
विश्वास नहीं करता, उसने उसे झूठा ठह-
राया है क्योंकि उसने उसकी गवाही पर,
यानी परमेश्वर ने अपने बेटे के बारे में
जो गवाही दी है, उस पर विश्वास नहीं
किया है। **11** और वह गवाही यह है
कि परमेश्वर ने हमें हमेशा की ज़िंदगी
दी है और यह ज़िंदगी उसके बेटे में है।
12 जो बेटे को स्वीकार करता है उसके
पास यह ज़िंदगी है। जो परमेश्वर के बेटे
को स्वीकार नहीं करता, उसके पास यह
ज़िंदगी नहीं है।

13 मैं तुम्हें ये बातें इसलिए लिखता
हूँ ताकि तुम यह जान सको कि तुम्हारे
पास हमेशा की ज़िंदगी है, क्योंकि तुम वे
हो जिन्होंने परमेश्वर के बेटे के नाम पर
अपना विश्वास रखा है। **14** हमें पर-
मेश्वर के बारे में यह भरोसा है कि हम
उसकी मरज़ी के मुताबिक चाहे जो भी
माँगें वह हमारी सुनता है। **15** और
अगर हम जानते हैं कि हम जो भी माँग
रहे हैं वह हमारी सुनता है, तो हम यह

भी जानते हैं कि हमने जो कुछ उससे
माँगा है वह हमें मिलना ही है, क्योंकि
हमने उससे माँगा है।

16 अगर कोई अपने भाई को ऐसा
पाप करते हुए देख लेता है जिसका
अंजाम मौत नहीं है, तो वह अपने भाई
के लिए प्रार्थना करे, और परमेश्वर
उसे जीवन देगा, हाँ उन्हें जिन्होंने ऐसा
पाप नहीं किया जिसका अंजाम मौत है।
मगर ऐसा पाप भी है जिसका अंजाम
मौत है। मैं ऐसा पाप करनेवाले के बारे
में प्रार्थना करने के लिए नहीं कहता।
17 दुष्टता के सारे काम पाप हैं। मगर
ऐसा पाप भी है जिसका अंजाम मौत
नहीं है।

18 हम जानते हैं कि हरेक इंसान
जो परमेश्वर से पैदा हुआ है वह पाप
करने में लगा नहीं रहता, मगर ऐसे इंसान
पर वह[*] जो परमेश्वर से पैदा हुआ है,
निगरानी रखता है और ऐसे इंसान पर
वह दुष्ट[#] पकड़ हासिल नहीं कर पाता।
19 हम जानते हैं कि हम परमेश्वर से
हैं, मगर सारी दुनिया शैतान[*] के कब्ज़े
में पड़ी हुई है। **20** मगर हम जानते
हैं कि परमेश्वर का बेटा आया है और
उसने हमें दिमागी काबिलीयत दी है कि
हम सच्चे परमेश्वर के बारे में ज्ञान
हासिल करें। और हम उस सच्चे पर-
मेश्वर के बेटे यीशु मसीह के ज़रिए पर-
मेश्वर के साथ एकता में हैं। वही सच्चा
परमेश्वर है और हमेशा की ज़िंदगी वही
देता है। **21** प्यारे बच्चो, खुद को
मूरतों से बचाए रखो।

1यूह 5:18* यह यीशु मसीह को दर्शाता है। **18#** यह शैतान को दर्शाता है। **19*** शाब्दिक, “उस दुष्ट।”

यूहन्ना की दूसरी चिट्ठी

1 मैं एक प्राचीन, यह चिट्ठी चुनी हुई
स्त्री को लिख रहा हूँ। मैं उसके बच्चों
को भी लिख रहा हूँ, जिनसे मैं सच-
मुच प्यार करता हूँ और सिर्फ मैं ही
नहीं बल्कि वे सभी उनसे प्यार करते हैं
जो सच्चाई को जान गए हैं। **2** इसी
सच्चाई पर चलने की वजह से हम तुमसे
प्यार करते हैं और यह सच्चाई हमेशा
हमारे साथ रहेगी। **3** तब परमेश्वर
हमारे पिता और पिता के बेटे यीशु मसीह
की तरफ से महा-कृपा, दया और शांति
हमारे साथ होगी और सच्चाई और प्यार
भी होगा।

4 मुझे यह जानकर बहुत खुशी हुई
कि तेरे कुछ बच्चे सच्चाई की राह
पर चल रहे हैं, ठीक जैसे हमें पिता
की तरफ से आज्ञा मिली है। **5** इस-
लिए, हे स्त्री, मैं तुझे कोई नयी आज्ञा
लिखकर गुज़ारिश नहीं कर रहा बल्कि
वही आज्ञा लिख रहा हूँ जो हमारे पास
शुरू से थी कि हम एक-दूसरे से प्यार
करें। **6** और प्यार का मतलब यह है

कि हम पिता की आज्ञाओं के मुताबिक
चलते रहें। ठीक जैसा तुमने शुरू से
सुना है, आज्ञा यही है कि तुम प्यार
दिखाते रहो। **7** इसलिए कि दुनिया में
बहुत-से धोखा देनेवाले निकल पड़े हैं। ये
वे लोग हैं जो यह स्वीकार नहीं करते कि
यीशु मसीह हाड़-माँस का इंसान बनकर
आया था। जो इस बात को स्वीकार नहीं
करता, वही धोखेबाज़ और मसीह का
विरोधी है।

8 तुम अपनी खुद की चौकसी करो,
ताकि तुम उन चीज़ों को खो न दो जिन्हें
तुममें पैदा करने के लिए हमने मेहनत
की है। इसके बजाय, ऐसा हो कि तुम
पूरा इनाम पाओ। **9** हर कोई जो
मसीह की शिक्षाओं के दायरे से बाहर
निकल जाता है और उनमें बना नहीं
रहता, परमेश्वर उसे मंज़ूर नहीं करता।
जो उसकी शिक्षाओं में बना रहता है, उसी
को पिता और बेटा दोनों अपनी मंज़ूरी
देते हैं। **10** अगर कोई तुम्हारे पास
आता है और यह शिक्षा नहीं लाता, तो
ऐसे इंसान को अपने घर में कभी आने
मत देना, न ही उसे नमस्कार करना।
11 इसलिए कि जो उसे नमस्कार करता
है वह उसके दुष्ट कामों में हिस्सेदार
बनता है।

12 हालाँकि मुझे बहुत सारी बातें
लिखनी थीं मगर मैं नहीं चाहता कि
सबकुछ स्याही से कागज़ पर लिख
दूँ, बल्कि यह उम्मीद करता हूँ कि मैं
तुम्हारे पास आऊँ और आमने-सामने
तुमसे बात करूँ, ताकि तुम्हारी खुशी और
भी बढ़ जाए।

13 तेरी बहन जो चुनी हुई है, उसके
बच्चे तुझे नमस्कार कहते हैं।

यूहन्ना की तीसरी चिट्ठी

1 मैं, एक प्राचीन, अपने प्यारे गयुस
को लिख रहा हूँ, जिसे मैं सचमुच प्यार
करता हूँ।

2 प्यारे भाई गयुस, मैं यही दुआ
करता हूँ कि जैसे तेरी ज़िंदगी खुशहाल
है, वैसे ही तू हर बात में खुशहाल रहे
और सेहतमंद हो। **3** जब भाइयों ने
आकर तेरे बारे में मुझे यह गवाही दी कि
तू सच्चाई को थामे हुए है, तो मुझे बेहद
खुशी हुई। हाँ, मैं जानता हूँ कि तू
वाकई सच्चाई की राह पर चल रहा है।
4 मेरे लिए शुक्रगुज़ार होने की इससे
बड़ी और क्या वजह होगी कि मैं यह सुनूं
कि मेरे बच्चे सच्चाई की राह पर चलना
जारी रखे हुए हैं।

5 मेरे प्यारे, तू उन भाइयों के
लिए जिन्हें तू पहले से नहीं जानता,
जो कुछ कर रहा है उसमें विश्वास-
योग्य है। **6** इन भाइयों ने मंडली*
के सामने तेरे प्यार की गवाही दी है।
मेहरबानी से तू उन्हें सफर के लिए

3यूह 6* मत्ती 16:18 दूसरा फुटनोट देखें।

इस तरह से विदा कर जैसा पर-
मेश्वर अपने सेवकों के लिए चाहता
है। **7** क्योंकि वे उसी के नाम की
खातिर निकले हैं और दुनिया के लोगों
से कुछ नहीं लेते। **8** इसलिए, हमारा
यह फर्ज़ बनता है कि हम ऐसे भाइयों का
आदर-सत्कार करें और उन्हें मेहमान-
नवाज़ी दिखाएँ, जिससे कि हम भी सच्चाई
के लिए उनके सहकर्मी बनें।

9 मैंने मंडली को कुछ लिखा था,
मगर दियुत्रिफेस जो मंडली में सबसे बड़ा
बनना चाहता है, वह हमारी किसी भी
बात की इज़्ज़त नहीं करता। **10** इस-
लिए, अगर मैं आया तो उसके वे काम
ज़ाहिर करूँगा जो वह कर रहा है और
हमें बदनाम करने के लिए बुरी-बुरी बातें
कहता फिर रहा है। और वह इतने से
खुश नहीं है। वह न तो खुद भाइयों का
आदर के साथ सत्कार करता है, बल्कि
जो सत्कार करना चाहते हैं उन्हें भी
रोकने, यहाँ तक कि मंडली से बेदखल
कर देने की कोशिश करता है।

11 प्यारे भाई, बुरी मिसालों पर नहीं
बल्कि अच्छी मिसालों पर चल। जो अच्छा
करता है वह परमेश्वर से है। लेकिन जो
बुरा करता है उसने परमेश्वर को नहीं
देखा। **12** देमेत्रियुस के अच्छे गुणों के
बारे में सभी भाइयों ने गवाही दी है और
जिस तरह वह सच्चाई के मुताबिक जी
रहा है उससे भी यही साबित होता है।
दरअसल, हम भी यही गवाही देते हैं और
तू जानता है कि हमारी गवाही सच्ची है।

13 मैं तुझे और भी बहुत सारी बातें
लिखना चाहता था, मगर मैं नहीं चाहता
कि स्याही और कलम से तुझे सारी बातें
लिख दूँ, **14** बल्कि मुझे उम्मीद है कि
मैं बहुत जल्द आकर तुझसे मिलूँगा और
तब हम आमने-सामने बैठकर बात कर
सकेंगे।

मेरी दुआ है कि तुझे शांति मिले।

यहाँ के सभी दोस्त तुझे नमस्कार
कहते हैं। वहाँ के सभी दोस्तों को एक-
एक कर मेरी तरफ से नमस्कार कहना।

यहूदा

की चिट्ठी

1 मैं यहूदा, जो यीशु मसीह का दास
और याकूब का भाई हूँ, उन्हें लिख
रहा हूँ जो बुलाए गए हैं, जिनका पर-
मेश्वर हमारे पिता के साथ रिश्ता है
और इस वजह से वे उसके प्यारे
हैं। परमेश्वर इसलिए उनकी हिफाज़त
करता है ताकि वे यीशु मसीह के साथ
संगति में हों।

2 मेरी दुआ है कि परमेश्वर की
तरफ से दया, शांति और प्यार तुम्हें बढ़-
कर मिले।

3 मेरे प्यारो, हालाँकि मेरी बड़ी

तमन्ना थी कि तुम्हें उस उद्धार के बारे में लिखूँ जो हम सबको मिलनेवाला है, मगर मैंने यह ज़रूरी जाना कि तुम्हें इस बात के लिए सीख देकर उकसाऊँ कि तुम उस विश्वास की खातिर जी-जान से लड़ो। यह विश्वास पवित्र लोगों को एक ही बार हमेशा-हमेशा के लिए सौंपा गया
था। **4** मेरे लिखने की वजह यह है
कि हमारे बीच कुछ ऐसे आदमी दबे पाँव घुस आए हैं जिनके लिए शास्त्र में पहले से सज़ा ठहरायी जा चुकी है। ये ऐसे भक्तिहीन आदमी हैं जिन्होंने हमारे परमेश्वर की महा-कृपा को बदचलनी करने का बहाना बना लिया है और अपने एकमात्र मालिक और प्रभु, यीशु मसीह के साथ विश्वासघात करनेवाले साबित हो रहे हैं।

5 तुम पहले से सब बातें जानते हो,
फिर भी मैं तुम्हें याद दिलाना चाहता हूँ कि हालाँकि यहोवा* ने अपने लोगों को मिस्र देश से छुड़ाया था, फिर भी बाद में उसने उन लोगों को नाश कर दिया जिन्होंने विश्वास नहीं दिखाया।
6 और जो स्वर्गदूत सेवा की अपनी उस
जगह पर, जो उन्हें दी गयी थी, कायम न रहे बल्कि अपने रहने की सही जगह छोड़ दी, उन्हें उसने हमेशा के बंधनों में जकड़कर रखा है ताकि वे उसके महान दिन में सज़ा पाने तक घोर अंध-
कार में रहें। **7** इन स्वर्गदूतों की तरह
सदोम और अमोरा और उनके आस-पास के शहरों के लोगों ने भी हद-से-ज़्यादा व्यभिचार किया और अस्वाभाविक संभोग के लिए दूसरे शरीर के पीछे लग गए थे। इन्होंने भी हमेशा जलनेवाली आग* से नाश होकर सज़ा पायी और ये हमारे लिए एक चेतावनी ठहरे कि हम इनसे सबक हासिल करें।

8 इन सबके बावजूद, ये सपने
देखनेवाले आदमी भी इसी तरह अपने और दूसरों के शरीरों को दूषित कर रहे हैं और अधिकार रखनेवालों को नीची नज़र से देखते हैं और जिन पर परमेश्वर की महिमा है, उनके बारे में बुरी-बुरी बातें
कहते फिरते हैं। **9** लेकिन जब प्रधान
स्वर्गदूत मीकाएल की मूसा की लाश के मामले में शैतान* के साथ बहस हुई, तो उसने शैतान के खिलाफ बेइज़्ज़ती करनेवाले शब्दों का इस्तेमाल कर उसे दोषी ठहराने की जुर्रत नहीं की बल्कि
यह कहा: "यहोवा तुझे डाँटे।" **10** ये
आदमी जिन बातों की समझ नहीं रखते उन सबके बारे में बुरी-बुरी बातें कहते हैं। मगर ये स्वाभाविक तौर पर निर्बुद्धि जानवरों की तरह हैं जो बस शरीर की बातें समझते हैं और शरीर के वही काम करते हैं जिनसे वे खुद को भ्रष्ट करते जा रहे हैं।

11 हाय इन पर, क्योंकि ये कैन की
राह पर निकल पड़े हैं और इनाम पाने

यहू 5* यह उन 237 जगहों में से एक जगह है, जहाँ परमेश्वर का नाम, 'यहोवा' इस अनुवाद के मुख्य पाठ में पाया जाता है। अतिरिक्त लेख 2 देखें।

यहू 7* जिसका मतलब है, "हमेशा के लिए नाश।"
9* शाब्दिक, "इब्लीस।" यूनानी में *"दियाबोलोस,"* जिसका मतलब है "निंदा करनेवाला।"

के लिए बिलाम की गलत राह पर दौड़
रहे हैं और कोरह की तरह बगावती बातें
कर नाश हो गए हैं! **12** ये समुद्र के
पानी में छिपी चट्टानें हैं। ये तुम्हारे भाई-
चारे की दावतों में तुम्हारे साथ खाते-पीते
हैं। ये ऐसे चरवाहे हैं जिन्हें सिर्फ अपना
पेट भरने का ध्यान रहता है और पर-
मेश्वर से नहीं डरते। ये बिन पानी के
ऐसे बादल हैं जिन्हें हवा यहाँ-वहाँ उड़ा
ले जाती है। ये ऐसे पेड़ हैं जिनमें मौसम
आने पर भी कोई फल नहीं लगता। ये
पूरी तरह मर चुके हैं* और इन्हें जड़
से उखाड़ दिया गया है। **13** ये समुद्र
की भयानक लहरें हैं जो अपनी बेशर्मी
का झाग उछालते हैं। ये भटकते तारे हैं
जिनके लिए हमेशा का घोर अंधकार ठह-
राया गया है।

14 हाँ, हनोक ने भी, जो आदम से
सातवीं पीढ़ी में हुआ था, इन लोगों के
बारे में भविष्यवाणी की थी, जब उसने
कहा: "देखो! यहोवा अपने लाखों पवित्र
स्वर्गदूतों के साथ आया, **15** ताकि
उन सबको सज़ा दे* और उन सब भक्ति-
हीनों को उन भक्तिहीन कामों के लिए
दोषी ठहराए जो उन्होंने परमेश्वर के
खिलाफ जाकर किए थे और उन सभी
घिनौनी बातों के लिए जो भक्तिहीनों ने
उसके खिलाफ कही थीं, उन्हें सज़ा दे।"

16 ये आदमी कुड़कुड़ानेवाले और
अपने हालात को कोसनेवाले हैं। ये
अपनी बुरी ख्वाहिशों के मुताबिक चलते
हैं और अपने मुँह से बड़ी-बड़ी बातें करते
हैं जबकि अपने फायदे के लिए खास-
खास लोगों के सामने उनकी तारीफों के
पुल बाँधते हैं।

17 लेकिन मेरे प्यारो तुम उन बातों
को याद करो जो पहले हमारे प्रभु
यीशु मसीह के प्रेषितों* ने कही थीं,
18 किस तरह ये तुमसे कहा करते
थे: "आखिरी वक्त में खिल्ली उड़ाने-
वाले आएँगे जो परमेश्वर के खिलाफ
अपनी बुरी ख्वाहिशों के मुताबिक ऐसा
करेंगे।" **19** ये ही वे आदमी हैं जो
फूट डालते हैं और शारीरिक लोग हैं और
इनमें परमेश्वर की पवित्र शक्ति नहीं
है। **20** मगर प्यारो, तुम अपने पवित्र
विश्वास की बुनियाद पर खुद को मज़-
बूत करते हुए और पवित्र शक्ति* के
साथ प्रार्थना करते हुए **21** खुद को
ऐसा इंसान बनाए रखो जिससे पर-
मेश्वर प्यार करे, जबकि तुम हमारे प्रभु
यीशु मसीह की दया पाने का इंतज़ार
करते हो जिससे तुम्हें हमेशा की ज़िंदगी
मिलती है। **22** साथ ही, ऐसे लोगों
पर दया दिखाते रहो जिन्हें शंकाएँ हैं।
23 उन्हें झपटकर विनाश की आग से
बाहर निकालो। मगर दूसरों पर भी
दया दिखाते रहो। लेकिन दया दिखाते
वक्त पूरी एहतियात बरतो, और इस
दौरान तुम उनके बुरे कामों से* नफरत

यहू 12* शाब्दिक, "दो बार मर चुके हैं।" **15*** या, "ताकि सबका न्याय करे।"

यहू 17* या, "भेजे गए।" यूनानी में *"अपोस्टोलोस।"* **20*** यूनानी *नफ्मा।* अतिरिक्त लेख 7 देखें। **23*** शाब्दिक, "यहाँ तक कि उनके अंदर के कपड़ों से जो शरीर से दागदार हो गए हैं।"

रखो जिनसे उन्होंने खुद को दागदार कर लिया है।

24 परमेश्वर तुम्हें गिरने से बचा सकता है और अपनी महिमा में अपने सामने भरपूर खुशी के साथ निष्कलंक खड़ा कर सकता है।
25 उस एकमात्र परमेश्वर और हमारे उद्धारकर्ता की, यीशु मसीह के ज़रिए* बीते युगों, और आज और आनेवाले युगों-युगों के लिए महिमा होती रहे और ऐश्वर्य, शक्ति और अधिकार उसी के हों। आमीन।

यहू 25* या शायद, "परमेश्वर, यीशु मसीह के ज़रिए हमारा उद्धार करता है।"

यूहन्ना का

प्रकाशितवाक्य

1 ये वे बातें हैं जो यीशु मसीह के ज़रिए प्रकट की गयीं। ये उसे परमेश्वर से मिली थीं ताकि वह अपने दासों को दिखा सके कि बहुत जल्द क्या-क्या होना है। और यीशु ने अपना स्वर्गदूत भेजकर ये बातें परमेश्वर के दास* यूहन्ना को निशानियों के ज़रिए बतायीं।
2 यूहन्ना ने परमेश्वर के वचन की और जो गवाही यीशु मसीह ने दी थी, उसकी गवाही दी, यानी उन सब बातों की जो उसने देखी थीं।
3 सुखी है वह जो इस भविष्यवाणी के वचन ज़ोर से पढ़ता है और वे भी जो इन्हें सुनते हैं और इसमें लिखी बातों पर चलते हैं, क्योंकि ठहराया हुआ वक्त पास है।

4 मैं यूहन्ना एशिया* ज़िले की सात मंडलियों# को लिख रहा हूँ:

मेरी दुआ है कि तुम्हें उसकी तरफ से यानी "जो था और जो है और जो आ रहा है," महा-कृपा और शांति मिले और सात पवित्र शक्तियों की तरफ से भी जो उसकी राजगद्दी के सामने हैं।
5 तुम्हें यीशु मसीह की तरफ से भी महा-कृपा और शांति मिले जो "विश्वासयोग्य गवाह," "मरे हुओं में से जी उठनेवालों में पहलौठा" और "पृथ्वी के राजाओं का राजा" है।

यीशु जो हमसे प्यार करता है और जिसने अपने लहू के ज़रिए हमें पापों से छुड़ाया,
6 और जिसने हमें अपने परमेश्वर और पिता के लिए राजा और याजक बनाया, हाँ, उसी यीशु की महिमा और शक्ति सदा रहे। आमीन।

7 देखो! वह बादलों के साथ आ रहा है और हर आँख उसे देखेगी और वे भी देखेंगे जिन्होंने उसे बेधा था। और पृथ्वी के सारे गोत्र उसकी वजह से दुःख के मारे छाती पीटेंगे। हाँ, आमीन।

प्रका 1:1* या, "यीशु के दास।" **4*** प्रेषि 2:9 फुटनोट देखें। **4#** मत्ती 16:18 दूसरा फुटनोट देखें।

8 यहोवा* परमेश्वर, “जो था और
जो है और जो आ रहा है और जो
सर्वशक्तिमान है” वह कहता है, “शुरू-
आत और आखिर मैं ही हूँ।”#

9 मैं यूहन्ना तुम्हारा भाई, यीशु का
चेला होने के नाते दुःख झेलने, राज करने
और धीरज धरने में तुम्हारे साथ साझेदार
हूँ। मैं परमेश्वर के बारे में बोलने और
यीशु के बारे में गवाही देने की वजह से
पतमुस नाम के द्वीप में था। **10** मैं
पवित्र शक्ति के असर से प्रभु के दिन में
पहुँच गया। और मैंने अपने पीछे तुरही
फूँकने जैसी तेज़ आवाज़ सुनी **11** जो
मुझसे कह रही थीः “तू जो देखता है
उसे एक खर्रे पर लिख ले और उसे
इन सातों मंडलियों को भेजः इफिसुस,
स्मुरना, पिरगमुन, थुआतीरा, सरदीस,
फिलदिलफिया और लौदीकिया।”

12 फिर मैं यह देखने के लिए मुड़ा
कि जो आवाज़ मुझसे बोल रही थी वह
किसकी है, और मुड़कर मैंने सोने के सात
दीपदान देखे **13** मैंने इन दीपदानों के
बीच में इंसान के बेटे जैसा कोई देखा,
जो पांव तक लंबा चोगा पहने और
सीने पर सोने का सीनाबंद बाँधे हुए
था। **14** उसका सिर और उसके बाल
सफेद ऊन और बर्फ जैसे सफेद थे और
उसकी आँखें आग की ज्वाला जैसी थीं।
15 उसके पांव ऐसे चमचमाते ताँबे जैसे
थे, जो भट्ठी में तपाया गया हो। और
उसकी आवाज़ बहुत-सी जलधाराओं की
गरज जैसी थी। **16** उसके दाएँ हाथ
में सात तारे थे और उसके मुँह से एक
लंबी और दोनों तरफ तेज़ धारवाली तल-
वार निकल रही थी। उसका चेहरा ऐसे
चमक रहा था जैसे सूरज अपनी पूरी तेज़ी
में चमकता है। **17** और जब मैंने उसे
देखा, तो मैं उसके पांवों पर मुरदा-सा
गिर पड़ा।

तब उसने अपना दायाँ हाथ मुझ
पर रखकर कहाः “डर मत। मैं ही
पहला और आखिरी हूँ **18** और मैं ही
जीवित हूँ। मैं मर गया था, मगर देख!
अब मैं हमेशा-हमेशा के लिए जीता हूँ
और मेरे पास मौत और कब्र* की
चाबियाँ हैं। **19** इसलिए, तू ने जो
देखा, और जो हो रहा है और इसके बाद
जो होनेवाला है, वे सारी बातें लिख ले।
20 और मेरे दाएँ हाथ में तू ने जो सात
तारे देखे और सोने के जो सात दीपदान
तू ने देखे उनका पवित्र रहस्य यह हैः इन
सात तारों का मतलब है सात मंड-
लियों के दूत, और सात दीपदान, सात
मंडलियाँ हैं।”

2 “इफिसुस की मंडली के दूत को यह
लिखः वह जो अपने दाएँ हाथ में
सात तारे लिए हुए है और जो सोने के
सात दीपदानों के बीच चलता-फिरता है,

प्रका 1:8* यह उन 237 जगहों में से एक जगह है, जहाँ परमेश्वर का नाम, ‘यहोवा’ इस अनुवाद के मुख्य पाठ में पाया जाता है। अतिरिक्त लेख 2 देखें। **8#** शाब्दिक, “अल्फा और ओमेगा,” जो यूनानी वर्ण-माला के पहले और आखिरी अक्षर हैं।

प्रका 1:18* यूनानी में *“हेडिज़।”* अतिरिक्त लेख 8 देखें।

वह यह कहता है, **2** 'मैं तेरे काम, तेरी कड़ी मेहनत और धीरज को जानता हूँ, और यह भी कि तू बुरे लोगों को बरदाश्त नहीं कर सकता, और जो खुद को प्रेषित* बताते हैं, मगर हैं नहीं, तू उनकी जाँच-परख करता है और तू ने उन्हें झूठा पाया है। **3** तू धीरज भी धरता है और तू ने मेरे नाम की खातिर बहुत कुछ सहा है और तू दुःख उठाते-उठाते थका नहीं। **4** फिर भी, मुझे तेरे खिलाफ यह कहना है कि तुझमें अब वह प्यार नहीं रहा जो पहले था।

5 इसलिए याद कर कि तू पहले कहाँ था और अब कहाँ आ गिरा है और पश्चाताप कर और पहले जैसे काम कर। अगर तू ऐसा नहीं करेगा तो मैं तेरे पास आ रहा हूँ और तेरे दीपदान को उसकी जगह से हटा दूँगा। **6** फिर भी, तुझमें एक अच्छी बात यह है कि तू निकुलाउस के गुट की करतूतों से नफरत करता है, जिससे मैं भी नफरत करता हूँ। **7** कान लगाकर सुनो और समझने की कोशिश करो कि पवित्र शक्ति मंडलियों से क्या कहती है: जो जीत हासिल करता है उसे मैं जीवन देनेवाले पेड़ का फल खाने दूँगा, जो परमेश्वर के फिरदौस में है।'

8 और स्मुरना की मंडली के दूत को यह लिखः वह जो 'पहला और आखिरी है,' जो मर गया था और फिर से जीवित हुआ, वह यह कहता है, **9** 'मैं तेरी दुःख-तकलीफें और तेरी गरीबी जानता हूँ। (फिर भी तू धनवान है।) और जो खुद को यहूदी कहते हैं मगर हैं नहीं, इसके बजाय शैतान के दल* के हैं, वे तेरे खिलाफ जो निंदा की बातें कहते हैं, वह भी मैं जानता हूँ। **10** तू जो ज़ुल्म सहने पर है, उससे मत डर। देखो! शैतान* तुम में से कुछ लोगों को कैद में डलवाता रहेगा ताकि तुम पूरी हद तक परखे जाओ और तुम्हें दस दिन तक क्लेश हो। लेकिन चाहे मौत ही क्यों न आए, तुम खुद को विश्वासयोग्य साबित करो और मैं तुम्हें ज़िंदगी का ताज दूँगा। **11** कान लगाकर सुनो और समझने की कोशिश करो कि पवित्र शक्ति मंडलियों से क्या कहती है: जो जीत हासिल करता है उसे दूसरी मौत* से हरगिज़ नुकसान नहीं होगा।'

12 और पिरगमुन की मंडली के दूत को यह लिखः वह जिसके पास लंबी और दोनों तरफ तेज़ धारवाली तलवार है, वह कहता है, **13** 'मैं जानता हूँ कि तू जहाँ रहता है वहाँ शैतान की राजगद्दी है। फिर भी तू मेरा नाम मज़बूती से थामे हुए है* और तू ने उन दिनों में भी मुझ पर विश्वास करने से इनकार नहीं किया जिन दिनों मेरा विश्वासयोग्य गवाह, अन्तिपास तुम्हारे यहाँ मार डाला गया था, जहाँ शैतान का अड्डा है।

प्रका 2:2* या, "भेजे गए।" यूनानी में *"अपोस्टोलोस।"*

प्रका 2:9* शाब्दिक, "सभा-घर।" **10*** शाब्दिक, "इब्लीस।" यूनानी में *"दियाबोलोस,"* जिसका मतलब है "निंदा करनेवाला।" **11*** यानी, "हमेशा के लिए मौत।" **13*** या, "तू मेरा वफादार है।"

14 फिर भी, मुझे तेरे खिलाफ कुछ
बातें कहनी हैं। तुम्हारे बीच ऐसे कुछ
लोग हैं जो बिलाम की शिक्षा को थामे
हुए हैं, जिसने बालाक को सिखाया था
कि वह इसराएल के बेटों के आगे ऐसा
जाल बिछाए कि वे पाप में पड़ जाएँ,
यानी मूरतों को बलि की हुई चीज़ें खाएँ
और व्यभिचार करें। **15** तुम्हारे बीच
ऐसे लोग भी हैं जो निकुलाउस के गुट
की शिक्षा को मज़बूती से थामे हुए हैं।
16 इसलिए पश्चाताप करो। अगर तुम
ऐसा नहीं करोगे तो मैं बहुत जल्द तुम्हारे
पास आ रहा हूँ और मैं अपने मुँह से
निकलनेवाली लंबी तलवार से उनके साथ
युद्ध करूँगा।

17 कान लगाकर सुनो और समझने
की कोशिश करो कि पवित्र शक्ति मंड-
लियों से क्या कहती है: जो जीत हासिल
करता है उसे मैं छिपे मन्ना में से कुछ
दूँगा और एक सफेद चिकना पत्थर भी
दूँगा। उस पत्थर पर एक नया नाम लिखा
होगा, जिसे कोई नहीं जानता सिवा उसके
जो उसे पाता है।'

18 और थुआतीरा की मंडली के दूत
को यह लिख: वह जो परमेश्वर का बेटा
है, जिसकी आँखें आग की ज्वाला जैसी
हैं, और जिसके पांव चमचमाते ताँबे की
तरह हैं, वह कहता है, **19** 'मैं तेरे
काम, तेरे प्यार, विश्वास और सेवा और
धीरज के बारे में जानता हूँ, और यह भी
कि तू ने हाल में जो काम किए हैं, वे
तेरे पहले के कामों से कहीं बढ़कर हैं।

20 फिर भी, मुझे तेरे खिलाफ
यह कहना है कि तू उस स्त्री इज़े-
बेल को बरदाश्त करता है जो खुद को
भविष्यवक्तिन कहती है और मेरे दासों
को गुमराह करती है और उन्हें व्यभि-
चार करने और मूरतों को बलि की
गयी चीज़ें खाने की शिक्षा देती है।
21 मैंने उसे पश्चाताप करने का वक्त
दिया मगर वह अपने व्यभिचार* को
छोड़ पश्चाताप करने के लिए तैयार नहीं
है। **22** देख! मैं उसे ऐसा रोगी करने
पर हूँ कि वह खाट पकड़ लेगी और जो
उसके साथ व्यभिचार* करते हैं, अगर
वे उसके जैसे कामों को छोड़ पश्चाताप
नहीं करते तो मैं उन्हें बड़ी तकलीफ दूँगा।
23 मैं उसके बच्चों को जानलेवा महा-
मारी से मार डालूँगा, जिससे सारी मंड-
लियाँ जान लेंगी कि मैं वही हूँ जो गुरदों
और दिलों* को जाँचता है और मैं तुममें
से हरेक को तुम्हारे कामों के हिसाब से
बदला दूँगा।

24 लेकिन थुआतीरा के तुम बाकी
लोगों से, जो इज़ेबेल की शिक्षा को नहीं
मानते और जो उन बातों के बारे में बिल-
कुल नहीं जानते जिन्हें वे "शैतान की गूढ़
बातें" कहते हैं, उनसे मैं कहता हूँ: मैं
तुम पर कोई और बोझ नहीं डाल रहा।
25 बस इतना कि तुम्हारे पास जो है

प्रका 2:21* यानी, हर किस्म के नाजायज़ यौन-संबंध। अतिरिक्त लेख 4 देखें। **22*** यूनानी शब्द का मतलब है, "शादी के बाहर यौन-संबंध रखते हैं।" **23*** "गुरदा" यानी इंसान की गहरी से गहरी भावनाएँ और "दिल" यानी इंसान जैसा अंदर से है।

उसे मेरे आने तक मज़बूती से थामे रहो।
26 और जो जीत हासिल करता है
और आखिर तक मेरे जैसे काम करता
है, मैं उसे राष्ट्रों पर अधिकार दूँगा,
27 और वह उन लोगों को चरवाहे की
तरह लोहे की छड़ से हाँकेगा और उन्हें
मिट्टी के बर्तनों की तरह चकनाचूर कर
देगा। यह अधिकार मैंने अपने पिता
से पाया है। **28** और जीत हासिल
करनेवाले को मैं सुबह का तारा दूँगा।
29 कान लगाकर सुनो और समझने की
कोशिश करो कि पवित्र शक्ति मंडलियों
से क्या कहती है।'

3 और सरदीस की मंडली के दूत को
यह लिखः वह जिसके पास पर-
मेश्वर की सात पवित्र शक्तियाँ हैं और
सात तारे हैं, वह यह कहता है, 'मैं तेरे
काम जानता हूँ कि तू नाम के लिए तो
ज़िंदा है, मगर है मरा हुआ। **2** इस-
लिए चौकन्ना हो जा और जो कुछ मरने
पर था मगर बच गया है उसे मज़बूत कर,
क्योंकि मैंने अपने परमेश्वर के सामने तेरे
किसी भी काम को पूरा नहीं पाया है।
3 इसलिए, तू ने जो-जो पाया है और
सुना है उसे हमेशा याद रख और उस
पर चलता रह और पश्चाताप कर।
बेशक, अगर तू जागेगा नहीं, तो मैं चोर
की तरह आऊँगा और तुझे बिलकुल भी
खबर नहीं होगी कि मैं किस वक्त आ
खड़ा होऊँगा।

4 फिर भी, तुम्हारे बीच सरदीस में
कुछ ऐसे लोग हैं जिन्होंने अपने कपड़ों
पर कलंक नहीं लगने दिया है और वे
सफेद कपड़ों में मेरे साथ चलेंगे क्योंकि
वे इस सम्मान के योग्य हैं। **5** जो
जीत हासिल करता है उसे इसी तरह
सफेद पोशाक से सजाया जाएगा। और
मैं जीवन की किताब से उसका नाम कभी
नहीं मिटाऊँगा, मगर मैं अपने पिता और
उसके स्वर्गदूतों के सामने उसे* स्वीकार
करूँगा। **6** कान लगाकर सुनो और
समझने की कोशिश करो कि पवित्र
शक्ति मंडलियों से क्या कहती है।'

7 और फिलदिलफिया की मंडली के
दूत को यह लिखः वह जो पवित्र है,
सच्चा है, जिसके पास दाविद की चाबी
है। वह अपनी चाबी से दरवाज़े खोलता
है ताकि कोई उन्हें बंद न करे और बंद
करता है ताकि कोई उन्हें न खोले, वह
यह कहता है, **8** 'मैं तेरे काम जानता
हूँ, (देख! मैंने तेरे सामने एक दरवाज़ा
खोल रखा है, जिसे कोई बंद नहीं कर
सकता) कि तेरे पास थोड़ी शक्ति है और
तू ने मेरी आज्ञाएँ मानी हैं और मेरे नाम
से इनकार नहीं किया है। **9** देख! जो
शैतान के दल* के हैं और खुद को यहूदी
कहते हैं मगर हैं नहीं बल्कि झूठ बोलते
हैं, उन्हें मैं तेरे बस में कर दूँगा—देख!
मैं उन्हें तेरे पास ले आऊँगा और उन्हें
तेरे पैरों पर झुकाऊँगा और वे तुझे झुक-
कर प्रणाम करेंगे, जिससे वे जान लेंगे कि
मैं तुझसे प्यार करता हूँ। **10** तू ने मेरे
धीरज धरने की बात मानी है, इसलिए
मैं परीक्षा की उस घड़ी में तुझे संभाले

प्रका 3:5* शाब्दिक, "उसका नाम।" **9*** शाब्दिक, "सभा-घर।"

रहूँगा जो सारे जगत* पर आनेवाली है,
जिससे कि धरती पर रहनेवाले सभी की
परीक्षा हो। **11** मैं बहुत जल्द आ रहा
हूँ। जो तेरे पास है उसे मज़बूती से थामे
रह, ताकि कोई भी तुझसे तेरा ताज न
छीन ले।

12 जो जीत हासिल करता है, उसे
मैं अपने परमेश्वर के मंदिर में एक खंभा
बनाऊँगा और कोई भी चीज़ उसे वहाँ
से हिला न सकेगी। और मैं उस पर
अपने परमेश्वर का नाम और स्वर्ग से
परमेश्वर के पास से उतरनेवाली नगरी,
यानी अपने परमेश्वर की नयी यरूशलेम
का नाम और अपना नया नाम लिखूँगा।
13 कान लगाकर सुनो और समझने की
कोशिश करो कि पवित्र शक्ति मंडलियों
से क्या कहती है।'

14 और लौदीकिया की मंडली के
दूत को यह लिखः वह जो आमीन है,
वह विश्वासयोग्य और सच्चा गवाह, पर-
मेश्वर की बनायी सृष्टि की शुरूआत है,
वह यह कहता है, **15** 'मैं तेरे काम
जानता हूँ कि तू न तो ठंडा है न गर्म।
काश कि तू ठंडा होता या फिर गर्म होता।
16 क्योंकि तू गुनगुना है और न तो
गर्म है न ठंडा, इसलिए मैं तुझे अपने
मुँह से उगलने पर हूँ। **17** क्योंकि
तू कहता है: "मैं अमीर हूँ और मैंने बहुत
दौलत हासिल की है और मुझे किसी चीज़
की कोई ज़रूरत नहीं," मगर तू नहीं
जानता कि तू कितना लाचार, बेहाल,
गरीब, अंधा और नंगा है। **18** मैं तुझे
सलाह देता हूँ कि तू मुझसे वह सोना
खरीद ले जिसे आग में तपाकर खरा
बनाया गया है, ताकि तू अमीर बन सके
और ऐसी सफेद पोशाक भी खरीद ले
जिसे तू पहन सके ताकि लोग तेरा नंगा-
पन न देखें और तू शर्मिंदा न हो और
अपनी आँखों में लगाने के लिए सुरमा
भी खरीद ले ताकि तू देख सके।

19 जिनसे मैं गहरा लगाव रखता हूँ
उन सभी को मैं ताड़ना और अनुशासन
देता हूँ। इसलिए जोशीला बन और
पश्चाताप कर। **20** देख! मैं दरवाज़े
पर खड़ा खटखटा रहा हूँ। अगर कोई
मेरी आवाज़ सुनकर दरवाज़ा खोलता है,
तो मैं उसके घर में आऊँगा और उसके
साथ शाम का खाना खाऊँगा और वह मेरे
साथ खाएगा। **21** जो जीत हासिल
करता है उसे मैं अपने साथ अपनी
राजगद्दी पर बैठने की इजाज़त दूँगा,
ठीक जैसे मेरे जीत हासिल करने पर मैं
अपने पिता के साथ उसकी राजगद्दी
पर बैठा था। **22** कान लगाकर सुनो
और समझने की कोशिश करो कि पवित्र
शक्ति मंडलियों से क्या कहती है।' "

4 इन बातों के बाद देखो मैंने देखा
कि स्वर्ग में एक खुला दरवाज़ा
है और जो आवाज़ मैंने पहले सुनी
थी वह एक तुरही जैसी आवाज़ थी
और उस आवाज़ ने मुझसे कहा: "यहाँ
ऊपर आ जा, मैं तुझे वे बातें दिखाऊँगा
जिनका होना तय है।" **2** इसके बाद,
मैं फौरन पवित्र शक्ति के असर में आ

प्रका 3:10* या, "पूरी धरती पर जहाँ-जहाँ लोग बसे हुए हैं।"

गयाः और मैंने स्वर्ग में एक राजगद्दी
देखी और उस पर कोई बैठा हुआ था।
3 और जो बैठा था उसका रूप सूर्य-
कांत मणि और लाल रंग के कीमती
रत्न जैसा था और उसकी राजगद्दी के
चारों तरफ एक मेघ-धनुष था जो देखने
में पन्ना जैसा था।

4 उस राजगद्दी के चारों तरफ
चौबीस राजगद्दियाँ थीं और इन राज-
गद्दियों पर मैंने चौबीस प्राचीन बैठे देखे,
जो सफेद पोशाक पहने हुए थे और उनके
सिरों पर सोने के ताज थे। **5** उस
राजगद्दी से बिजलियाँ कौंध रही थीं
और गड़गड़ाहट और गर्जन की आवाज़
निकल रही थी। और राजगद्दी के सामने
आग के सात बड़े दीए थे जिनसे लपटें
उठ रही थीं। इनका मतलब परमेश्वर
की सात पवित्र शक्तियाँ हैं। **6** और
राजगद्दी के सामने काँच जैसा समुद्र था
जो बिल्लौर* जैसा पारदर्शी था।

राजगद्दी के बीच और उसके चारों
तरफ चार जीवित प्राणी थे जिनके आगे-
पीछे आँखें ही आँखें थीं। **7** पहला
जीवित प्राणी शेर जैसा था, दूसरा
जीवित प्राणी जवान बैल जैसा था,
तीसरे जीवित प्राणी का चेहरा इंसान के
चेहरे जैसा था और चौथा जीवित प्राणी
एक उड़ते उकाब जैसा था। **8** इन
चार जीवित प्राणियों में से हरेक के छः-छः
पंख थे। इनके चारों तरफ और अंदर
की तरफ आँखें ही आँखें थीं। और वे
बिना रुके रात-दिन यह कहते रहते हैं:
"यहोवा परमेश्वर पवित्र, पवित्र, पवित्र
है। सर्वशक्तिमान, जो था, जो है और
जो आ रहा है।"

9 और जब-जब ये जीवित प्राणी
राजगद्दी पर बैठनेवाले की, जो हमेशा-
हमेशा के लिए जीवित है, महिमा करते
और उसे आदर और धन्यवाद देते हैं,
10 तब-तब ये चौबीस प्राचीन राजगद्दी
पर बैठनेवाले के सामने गिरकर उसकी
उपासना करते हैं जो हमेशा-हमेशा तक
जीवित है और वे अपने ताज निकाल-
कर उसकी राजगद्दी के सामने रखते हैं
और कहते हैं: **11** "हे यहोवा, हमारे
परमेश्वर, तू अपनी महिमा, अपने आदर
और शक्ति के लिए तारीफ पाने के योग्य
है, क्योंकि तू ही ने सारी चीज़ें रची हैं
और तेरी ही मरज़ी से ये वजूद में आयीं
और रची गयीं।"

5 और मैंने देखा कि जो राजगद्दी पर
बैठा है, उसके दाएँ हाथ में लिपटा
हुआ एक परचा है जिस पर अंदर और
बाहर, दोनों तरफ लिखा हुआ है, और
इसे सात मुहरों से मुहरबंद किया गया
है। **2** और मैंने देखा कि एक बल-
वान स्वर्गदूत ज़ोरदार आवाज़ में यह
ऐलान कर रहा थाः "कौन इन मुहरों को
तोड़ने और इस लिपटे हुए परचे को
खोलने के योग्य है?" **3** लेकिन न तो
स्वर्ग में, न धरती पर, न ही धरती के
नीचे कोई ऐसा था जो उस परचे को
खोलकर देखने या उसे पढ़ने के लायक
हो। **4** और मैं फूट-फूटकर रोने लगा
क्योंकि ऐसा कोई भी न मिला जो उस

प्रका 4:6* या, "स्फटिक।"

परचे को खोलकर पढ़ने के योग्य हो।
5 मगर उन प्राचीनों में से एक ने मुझसे
कहा: "रोना बंद कर। देख! यह यहूदा
के गोत्र का वह शेर है, जो दाविद की
जड़ है। इसने जीत हासिल की है ताकि
इस परचे और इसकी सात मुहरों को
खोले।"

6 और मैंने उस राजगद्दी के पास
और उन चार जीवित प्राणियों के बीच
और उन प्राचीनों के बीच एक मेम्ना देखा
जिसका मानो वध किया गया था। उसके
सात सींग और सात आँखें थीं। इन
आँखों का मतलब परमेश्वर की सात
पवित्र शक्तियाँ हैं जिन्हें सारी धरती पर
भेजा गया है। **7** और वह मेम्ना आगे
बढ़ा और उसने राजगद्दी पर बैठनेवाले
के दाएँ हाथ से वह लिपटा हुआ मुहर-
बंद परचा फौरन ले लिया। **8** और
जब उसने वह परचा लिया तो उन चार
जीवित प्राणियों और चौबीस प्राचीनों ने
मेम्ने के सामने गिरकर प्रणाम किया।
और हर प्राचीन के पास एक सुरमंडल
और एक सोने का कटोरा था जिसमें धूप
भरा हुआ था और इस धूप का मतलब
है, पवित्र जनों की प्रार्थनाएँ। **9** और
वे एक नया गीत गाते हुए कहते हैं: "तू
ही इस लिपटे हुए परचे को लेने और
इसकी मुहरें खोलने के योग्य है, क्योंकि
तू वध किया गया और तू ने अपने लहू
से हर गोत्र, भाषा और जाति और राष्ट्र
से परमेश्वर के लिए लोगों को खरीद
लिया, **10** और तू ने उन्हें हमारे पर-
मेश्वर के लिए राजा और याजक बनाया
और वे राजाओं की हैसियत से धरती
पर राज करेंगे।"

11 और मैंने उस राजगद्दी और उन
जीवित प्राणियों और उन प्राचीनों के चारों
तरफ अनगिनत स्वर्गदूत देखे और उनकी
आवाज़ सुनी। उनकी गिनती लाखों-
करोड़ों में थी। **12** और वे ज़ोरदार
आवाज़ में कह रहे थे: "यह मेम्ना जो वध
किया गया था, यही शक्ति, धन, बुद्धि,
ताकत, आदर, महिमा और आशीष पाने
के योग्य है।"

13 और मैंने स्वर्ग में, धरती पर,
धरती के नीचे और समुद्र के ऊपर और
इनमें मौजूद हर जीव को और इनमें जो
कुछ था, उन सबको यह कहते सुना: "वह
जो राजगद्दी पर बैठा है उसका और मेम्ने
का गुणगान हो और आदर, महिमा और
शक्ति हमेशा-हमेशा के लिए उन्हीं की
रहे।" **14** और वे चार जीवित प्राणी
कहते रहे: "आमीन!" और उन प्राचीनों
ने गिरकर परमेश्वर की उपासना की।

6 फिर मैंने देखा कि उस मेम्ने ने सात
मुहरों में से एक मुहर खोली, और
मैंने चार जीवित प्राणियों में से एक को
गरजदार आवाज़ में कहते सुना: "आ!"
2 और देखो मैंने क्या देखा! एक सफेद
घोड़ा; और उसके सवार के पास एक
धनुष था। और उसे एक ताज दिया गया
और वह जीत हासिल करता हुआ अपनी
जीत पूरी करने निकला।

3 जब मेम्ने ने दूसरी मुहर खोली,
तो मैंने दूसरे जीवित प्राणी को यह कहते
सुना: "आ!" **4** फिर एक और घोड़ा

आया जो आग जैसे लाल रंग का था।
उसके सवार को यह अधिकार दिया गया
कि पृथ्वी पर से शांति उठा ले ताकि लोग
एक-दूसरे का बेरहमी से कत्ल करें और
उसे एक बड़ी तलवार दी गयी।

5 जब मेम्ने ने तीसरी मुहर खोली,
तो मैंने तीसरे जीवित प्राणी को यह कहते
सुनाः “आ!” और देखो मैंने क्या देखा!
एक काला घोड़ा; और उसके सवार के
हाथ में एक तराज़ू था। **6** और मैंने
चार जीवित प्राणियों के मानो बीच में से
यह आवाज़ सुनीः “एक दीनार* का एक
किलो गेहूं और एक दीनार का तीन किलो
जौ; और जैतून के तेल और दाख-मदिरा
को नुकसान मत पहुँचा।”

7 जब मेम्ने ने चौथी मुहर खोली, तो
मैंने चौथे जीवित प्राणी को यह कहते
सुनाः “आ!” **8** और देखो मैंने क्या
देखा! एक हल्के पीले रंग का मरि-
यल सा घोड़ा; और उसके सवार का नाम
था मौत। और कब्र* उसके बिलकुल
पीछे-पीछे चली आ रही थी। और उन्हें
पृथ्वी के चौथे हिस्से पर अधिकार दिया
गया कि वे लंबी तलवार से और अकाल
से और जानलेवा महामारी से और पृथ्वी
के जंगली जानवरों से लोगों की जान लें।

9 जब मेम्ने ने पाँचवी मुहर खोली,
तो मैंने वेदी के नीचे कत्ल किए हुओं का
खून देखा। इन्हें परमेश्वर के वचन पर
चलने की वजह से और गवाही का जो
काम वे करते थे उसकी वजह से कत्ल
किया गया था। **10** और उन्होंने बड़ी
ज़ोरदार आवाज़ में यह पुकार लगायीः
“हे सारे जहान के महाराजा और मालिक,
तू जो पवित्र और सच्चा है, तू कब तक
न्याय न करेगा और कब तक धरती पर
रहनेवालों से हमारे खून का बदला न
लेगा?” **11** और उनमें से हरेक को
एक सफेद चोगा दिया गया। और उन्हें
थोड़ी देर और इंतज़ार करने के लिए
कहा गया, जब तक कि उनके संगी दासों
और उनके भाइयों की गिनती पूरी न हो
जाए जो उन्हीं की तरह मार डाले जाने-
वाले थे।

12 और मैंने देखा कि जब मेम्ने ने
छठी मुहर खोली तो एक बड़ा भूकंप
हुआ; और सूरज ऐसा काला पड़
गया जैसे काले टाट का कपड़ा हो और
पूरा चाँद खून की तरह लाल हो गया।
13 और आकाश के तारे धरती पर ऐसे
गिर पड़े जैसे तेज़ हवाओं के थपेड़े खाकर
अंजीर के पेड़ से कच्चे अंजीर टूटकर
गिर पड़ते हैं। **14** और आकाश हट-
कर ऐसे निकल गया जैसे एक खर्रा लपेटे
जाने पर हट जाता है और हर पहाड़
और हर द्वीप को अपनी-अपनी जगह
से हटा दिया गया। **15** और पृथ्वी
के राजाओं, बड़े-बड़े अधिकारियों, सेना-
पतियों, दौलतमंदों और ताकतवर लोगों
ने और हर दास और आज़ाद इंसान ने
खुद को गुफाओं और पहाड़ी चट्टानों की
दरारों में छिपा लिया। **16** और वे उन
पहाड़ों और चट्टानों से कहते रहेः “हम
पर गिर पड़ो और हमें उससे जो राज-

प्रका 6:6* एक दीनार एक दिन की मज़दूरी थी। **8*** यूनानी में *“हेडिज़।”* अतिरिक्त लेख 8 देखें।

गद्दी पर बैठा है और उस मेम्ने के क्रोध
से छिपा लो, **17** क्योंकि उनके क्रोध
का भयानक दिन आ गया है और कौन
उनके सामने खड़ा होने के काबिल है?”

7 इसके बाद मैंने देखा कि पृथ्वी के
चार कोनों पर चार स्वर्गदूत खड़े हैं
और वे पृथ्वी की चारों हवाओं को मज़-
बूती से थामे हुए हैं ताकि पृथ्वी या समुद्र
या किसी भी पेड़ पर हवा न चले।
2 और मैंने एक और स्वर्गदूत को पूरब
से ऊपर आते देखा, जो जीवित परमेश्वर
की मुहर लिए हुए था। और उसने उन
चारों स्वर्गदूतों को जिन्हें पृथ्वी और समुद्र
को नुकसान पहुँचाने का अधिकार दिया
गया था, बड़ी ज़ोरदार आवाज़ में पुकार-
कर यह कहा: **3** “जब तक हम अपने
परमेश्वर के दासों के माथे पर मुहर न
लगा दें, तब तक पृथ्वी या समुद्र या पेड़ों
को नुकसान न पहुँचाना।”

4 और मैंने उनकी गिनती सुनी जिन
पर मुहर लगायी गयी। वे एक लाख
चवालीस हज़ार थे और उन्हें इसराएल
के बेटों के हर गोत्र में से लिया गया था:

5 यहूदा के गोत्र में से बारह हज़ार
पर मुहर दी गयी;

रूबेन के गोत्र में से बारह हज़ार पर;

गाद के गोत्र में से बारह हज़ार पर।

6 आशेर के गोत्र में से बारह
हज़ार पर;

नप्ताली के गोत्र में से बारह
हज़ार पर;

मनश्शे के गोत्र में से बारह हज़ार पर।

7 शमौन के गोत्र में से बारह
हज़ार पर;

लेवी के गोत्र में से बारह हज़ार पर;

इस्साकार के गोत्र में से बारह
हज़ार पर।

8 जबूलून के गोत्र में से बारह
हज़ार पर;

यूसुफ के गोत्र में से बारह हज़ार पर;

बिन्यामीन के गोत्र में से बारह हज़ार
पर मुहर दी गयी।

9 इन बातों के बाद देखो मैंने क्या
देखा! सब राष्ट्रों और गोत्रों और जातियों
और भाषाओं से निकली एक बड़ी भीड़,
जिसे कोई आदमी गिन नहीं सकता, राज-
गद्दी के सामने और उस मेम्ने के सामने
सफेद चोगे पहने और हाथों में खजूर की
डालियाँ लिए खड़ी है। **10** और यह
भीड़ ज़ोरदार आवाज़ में बार-बार पुकार-
कर कहती है: “हम अपने उद्धार के लिए
अपने परमेश्वर का जो राजगद्दी पर बैठा
है और मेम्ने का एहसान मानते हैं।”

11 और सारे स्वर्गदूत जो उस राज-
गद्दी और प्राचीनों और चार जीवित
प्राणियों के चारों तरफ खड़े थे, वे राज-
गद्दी के सामने मुँह के बल गिर-
कर परमेश्वर की उपासना करने लगे
12 और कहने लगे: “आमीन! हमारे
परमेश्वर का हमेशा-हमेशा के लिए गुण-
गान, महिमा, और आदर और धन्यवाद
होता रहे जिसके पास सारी बुद्धि और
शक्ति और बल है। आमीन।”

13 इस पर एक प्राचीन ने मुझसे
कहा: “ये जो सफेद चोगे पहने हुए हैं,

ये कौन हैं और कहाँ से आए हैं?”
14 तब मैंने फौरन उससे कहा: “मेरे
प्रभु, तू ही इसका जवाब जानता है।”
और उसने मुझसे कहा: “ये वे हैं जो उस
महा-संकट से निकलकर बाहर आए हैं
और उन्होंने अपने चोगे मेम्ने के लहू में
धोकर सफेद किए हैं। **15** इसी वजह
से वे परमेश्वर की राजगद्दी के सामने हैं;
और वे दिन-रात उसके मंदिर में उसकी
पवित्र सेवा करते हैं; और जो राजगद्दी
पर बैठा है वह उनके ऊपर अपना तंबू
तानेगा। **16** फिर वे कभी भूखे और
प्यासे न रहेंगे और न उन पर सूरज की
तपती धूप पड़ेगी, न झुलसाती गर्मी,
17 क्योंकि वह मेम्ना जो राजगद्दी के
पास है, उन्हें चरवाहे की तरह जीवन के
पानी के सोतों तक ले जाएगा। और पर-
मेश्वर उनकी आँखों से हर आंसू पोंछ
डालेगा।”

8 और जब मेम्ने ने सातवीं मुहर
खोली तो स्वर्ग में खामोशी छा
गयी जो करीब आधे घंटे तक रही।
2 और मैंने उन सात स्वर्गदूतों को देखा
जो परमेश्वर के सामने खड़े रहते हैं, और
उन्हें सात तुरहियाँ दी गयीं।

3 फिर एक और स्वर्गदूत आया
और वेदी के पास खड़ा हो गया। उसके
हाथ में सोने का एक धूपदान था। उसे
ढेर सारा धूप दिया गया ताकि इसे
सोने की उस वेदी पर जो राजगद्दी के
सामने थी, उस वक्त चढ़ाए जब सभी
पवित्र जनों की प्रार्थनाएँ सुनी जा रही
हों। **4** और पवित्र जनों की प्रार्थनाओं
के साथ स्वर्गदूत के हाथ से धूप का
धूआं उठकर परमेश्वर के सामने पहुँचा।
5 तब फौरन स्वर्गदूत ने वह धूपदान
लिया और उसमें वेदी की आग भरी और
उसे पृथ्वी पर फेंक दिया। तब आकाश
से गरजन और तेज़ आवाज़ें आयीं, बिज-
लियाँ कड़कीं और एक भूकंप हुआ।
6 और जिन सात स्वर्गदूतों के पास सात
तुरहियाँ थीं, वे इन्हें फूँकने के लिए तैयार
हो गए।

7 और पहले ने अपनी तुरही फूँकी।
तब खून मिले हुए ओले और आग पैदा
हुई, और इन्हें धरती पर डाल दिया गया।
और धरती का एक-तिहाई हिस्सा जल
गया और पेड़ों का एक-तिहाई हिस्सा जल
गया और सारी वनस्पति जल गयी।

8 फिर दूसरे स्वर्गदूत ने अपनी
तुरही फूँकी। और आग से जलता
हुआ एक बड़े पहाड़ जैसा कुछ समुद्र
में फेंक दिया गया। और समुद्र का
एक-तिहाई हिस्सा खून में बदल गया।
9 और समुद्र के एक-तिहाई जीव-जंतु
मर गए और एक-तिहाई जहाज़ तहस-
नहस हो गए।

10 फिर तीसरे स्वर्गदूत ने अपनी
तुरही फूँकी। तब मशाल की तरह जलता
हुआ एक बड़ा तारा, स्वर्ग से गिरा और
नदियों और पानी के सोतों के एक-तिहाई
हिस्से पर गिरा। **11** उस तारे का नाम
नागदौना है। और पानी का एक-तिहाई
हिस्सा नागदौना-सा कड़वा हो गया और
उस पानी के कड़वे हो जाने से बहुत-से
लोग मारे गए।

12 फिर चौथे स्वर्गदूत ने अपनी
तुरही फूँकी। और सूरज के एक-तिहाई,
और चाँद के एक-तिहाई और तारों के
एक-तिहाई हिस्से पर मार पड़ी ताकि
उनका एक-तिहाई हिस्सा अंधेरा हो जाए
और दिन के एक-तिहाई हिस्से में उजाला
न हो और यही हाल रात का भी हो।
13 और मैंने देखा कि आकाश के
बीच उड़ता एक उकाब ज़ोरदार आवाज़
में यह कह रहा था: "धरती पर रहनेवालों
पर हाय, हाय, हाय, क्योंकि तीन और
स्वर्गदूतों की तुरहियों का फूँकना अभी
बाकी है, और वे अपनी तुरहियाँ फूँकने
ही वाले हैं!"

9 और पाँचवें स्वर्गदूत ने अपनी तुरही
फूँकी। और मैंने एक तारा देखा जो
स्वर्ग से धरती पर गिरा था, और उसे
अथाह-कुंड के गड्ढे की चाबी दी गयी।
2 और उसने अथाह-कुंड का गड्ढा खोला
और उसमें से ऐसा धूआं निकला जैसे
किसी बड़े भट्ठे में से निकलता है, और
उस गड्ढे के धूएं से सूरज पर और हवा
में अंधकार छा गया। **3** और उस धूएं
में से टिड्डियाँ निकलकर धरती पर आयीं,
और उन्हें वैसी ही शक्ति दी गयी जैसी
शक्ति पृथ्वी के बिच्छुओं की होती है।
4 और उनसे कहा गया कि वे न तो
पृथ्वी की वनस्पति को न ही किसी पेड़-
पौधे को नुकसान पहुँचाएं, बल्कि सिर्फ
उन्हीं लोगों को जिनके माथे पर परमेश्वर
की मुहर नहीं है।
5 और टिड्डियों को यह अधिकार
दिया गया कि वे लोगों को पाँच महीने
तक घोर पीड़ा देती रहें मगर उन्हें जान से
न मारें। और लोगों को ऐसी पीड़ा हो रही
थी जैसी बिच्छू के डंक मारने से इंसान
को होती है। **6** और उन दिनों में लोग
मौत ढूँढ़ेंगे मगर हरगिज़ न पाएँगे, और
वे मरने की कामना करेंगे मगर मौत उनसे
दूर भागेगी।
7 और वे टिड्डियाँ, लड़ाई के लिए
तैयार किए गए घोड़ों जैसी दिख रही थीं।
उनके सिर पर सोने के ताज जैसा कुछ
था और उनके चेहरे तो आदमियों जैसे थे,
8 मगर उनके बाल स्त्रियों के बालों
जैसे लंबे थे। और उनके दाँत शेरों के
दाँतों जैसे थे, **9** उनके कवच लोहे के
कवच जैसे थे। और उनके पंखों की
आवाज़ ऐसी थी जैसे बहुत सारे रथ और
घोड़े लड़ाई के लिए दौड़े चले जा रहे हों।
10 और उनकी पूंछ और डंक बिच्छुओं
जैसे थे, और उनकी पूंछ में लोगों को
पाँच महीने तक पीड़ा देने की शक्ति थी।
11 अथाह-कुंड का स्वर्गदूत उनका राजा
था। इब्रानी में उसका नाम अबद्दोन* है
मगर यूनानी में उसका नाम अपुल्ल-
योन# है।
12 पहला कहर बीत चुका। देख!
इसके बाद दो और कहर टूटनेवाले हैं।
13 और छठे स्वर्गदूत ने अपनी
तुरही फूँकी। और जो सोने की वेदी पर-
मेश्वर के सामने थी, उसके चार कोनों*

प्रका 9:11* यानी, विनाश। **11#** यानी, नाश करनेवाला। **13*** ये कोने सींगों के आकार में उभरे हुए थे।

से मैंने एक आवाज़ सुनी, **14** जो
तुरहीवाले उस छठे स्वर्गदूत से कह रही
थीः "उन चार स्वर्गदूतों के बंधन खोल
दे, जो महानदी, फरात के पास बंधे हुए
हैं।" **15** और उन चार स्वर्गदूतों को,
जिन्हें इसी घड़ी, दिन, महीने और साल
के लिए तैयार किया गया है, खोल दिया
गया ताकि वे इंसानों में से एक-तिहाई
को मार डालें।

16 और सेना के घुड़सवारों की
गिनती बीस करोड़ थीः मैंने उनकी गिनती
सुनी। **17** और मुझे दर्शन में घोड़े
और उनके सवार इस रूप में दिखायी
दिएः उनके कवच धधकती आग जैसे
लाल, नीले और गंधक जैसे पीले थे।
घोड़ों के सिर शेरों के सिर जैसे थे, और
उनके मुँह से आग, धूआं और गंधक
निकल रहे थे। **18** ये तीनों कहर
यानी उनके मुँह से निकलनेवाली आग,
धूएं और गंधक से इंसानों में से एक-
तिहाई लोग मार डाले गए। **19** इस-
लिए कि घोड़ों की शक्ति उनके मुँह और
उनकी पूंछ में है। क्योंकि उनकी पूंछें साँपों
जैसी हैं जिनमें सिर हैं, जिनसे वे नुक-
सान पहुँचाते हैं।

20 मगर बाकी लोग जो इन तीन
कहरों से नहीं मारे गए थे, उन्होंने अपने
कामों से तौबा नहीं की और दुष्ट स्वर्ग-
दूतों और सोने, चाँदी, पीतल, पत्थर और
लकड़ी की मूरतों को पूजना नहीं छोड़ा
जो न तो देख सकती हैं, न सुन सकती
हैं और न चल सकती हैं; **21** और
उन्होंने जो कत्ल, और भूत-विद्या के काम
और व्यभिचार और चोरियाँ की थीं, उनसे
पश्चाताप नहीं किया।

10 फिर मैंने एक और बलवान
स्वर्गदूत को बादल ओढ़े हुए
स्वर्ग से उतरते देखा। उसके सिर पर मेघ-
धनुष था और उसका चेहरा सूरज जैसा
था और उसके पैर आग के खंभों जैसे थे।
2 उसके हाथ में एक खुला हुआ छोटा
कागज़ था। और उसने अपना दायाँ पैर
समुद्र पर, मगर अपना बायाँ पैर धरती
पर रखा **3** और उसने शेर की दहाड़
जैसी ज़ोरदार आवाज़ से पुकारा। और
जब वह चिल्लाया तो सात गर्जनों की
आवाज़ें सुनायी दीं।

4 जब सातों गर्जन बोल चुकीं, तो
मैं लिखने पर था। मगर मैंने स्वर्ग से एक
आवाज़ सुनी जो कह रही थीः "सात
गर्जनों ने जो कहा उन बातों को मुहरबंद
कर दे और उन्हें मत लिख।" **5** और
मैंने जिस स्वर्गदूत को समुद्र और धरती
पर खड़े देखा, उसने अपना दायाँ हाथ
स्वर्ग की तरफ उठाया **6** और उसकी
शपथ खायी जो हमेशा-हमेशा तक जीवित
रहता है, जिसने आकाश और उसमें की
सब चीज़ें और पृथ्वी और उसमें की सब
चीज़ें और समुद्र और उसमें की सब चीज़ें
रची हैं, और कहाः "अब और देर
नहीं होगी; **7** मगर सातवें स्वर्गदूत के
तुरही फूंकने के दिनों में, जब वह अपनी
तुरही फूंकने के लिए तैयार होगा, तब
परमेश्वर का पवित्र रहस्य वाकई अपने
अंजाम तक पहुँचाया जाएगा, हाँ वही
रहस्य जो उस खुशखबरी के मुताबिक

है जो परमेश्‍वर ने अपने दासों यानी
भविष्यवक्‍ताओं को सुनायी थी।”
8 और मैंने स्वर्ग से जो आवाज़ सुनी
वह फिर मुझे यह कहती हुई सुनायी दी:
“जा, और जो स्वर्गदूत समुद्र और धरती
पर खड़ा है, उसके हाथ से वह खुला हुआ
कागज़ ले ले।” 9 तब मैं उस स्वर्ग-
दूत के पास गया और उससे वह छोटा
कागज़ माँगा। और उसने मुझसे कहा:
“ले और इसे खा ले। यह तेरा पेट कड़वा
कर देगा, मगर मुँह में यह तुझे शहद की
तरह मीठा लगेगा।” 10 और मैंने
स्वर्गदूत के हाथ से वह छोटा कागज़
लिया और उसे खा लिया। मुझे मुँह में
तो यह शहद की तरह मीठा लगा। मगर
जब मैं इसे खा चुका, तो मेरा पेट
कड़वा हो गया। 11 और मुझसे कहा
गया: “तुझे जातियों, राष्ट्रों, अलग-अलग
भाषाओं के लोगों और बहुत-से राजाओं
के बारे में फिर से भविष्यवाणी करनी
होगी।”

11 और मुझे नापने की छड़ी जैसा
सरकंडा दिया गया और मुझसे
कहा गया: “उठ और परमेश्‍वर के मंदिर
के भवन और उसकी वेदी और मंदिर में
उपासना करनेवालों को नाप। 2 मगर
मंदिर के भवन के बाहर का जो आँगन
है उसे बिलकुल छोड़ दे और उसे मत
नाप, क्योंकि यह आँगन दूसरे राष्ट्रों को
दिया गया है और वे बयालीस महीने तक
पवित्र नगरी को अपने पैरों तले रौंदेंगे।
3 और मैं अपने दो गवाहों को भेजूंगा
कि वे टाट ओढ़े हुए एक हज़ार दो
सौ साठ दिन तक भविष्यवाणी करें।”
4 ये दो गवाह, जैतून के वे दो पेड़ और
दो दीपदान हैं जो सारी धरती के मालिक
के सामने खड़े हैं।
5 और अगर कोई इन गवाहों को
नुकसान पहुँचाना चाहता है, तो उनके मुँह
से आग निकलती है और उनके दुश्‍मनों
को भस्म कर देती है। जो कोई उन्हें नुक-
सान पहुँचाना चाहेगा वह इसी तरह
मार डाला जाएगा। 6 इनके पास यह
अधिकार है कि आकाश को बंद कर दें
ताकि उनके भविष्यवाणी करने के दिनों
में बारिश न हो और पानी को खून में
बदल दें और जब कभी चाहें तब धरती
को हर तरह के कहर से मारें।
7 और जब वे अपना गवाही का
काम पूरा करेंगे, तब वह जंगली जान-
वर जो अथाह-कुंड से बाहर निकलता है,
उनके साथ लड़ेगा और उन पर जीत
हासिल करेगा और उन्हें मार डालेगा।
8 और उनकी लाशें उस बड़े शहर के
चौराहे पर पड़ी रहेंगी, जो लाक्षणिक अर्थ
में सदोम और मिस्र कहलाता है, जहाँ
उनके प्रभु को भी सूली पर चढ़ाकर
मार डाला गया था। 9 और जातियों
और गोत्रों और भाषाओं और राष्ट्रों
के लोग साढ़े तीन दिन तक उनकी
लाशों को देखते रहेंगे और वे उन्हें कब्र
में नहीं रखने देंगे। 10 और धरती
के रहनेवाले उनकी मौत पर खुशियाँ
मनाएँगे और मौज करेंगे, और वे एक-
दूसरे को तोहफे भेजेंगे क्योंकि ये दोनों

भविष्यवक्ता धरती के रहनेवालों को
अपने संदेश से तड़पाया करते थे।

11 और साढ़े तीन दिन के बाद पर-
मेश्वर की तरफ से जीवन-शक्ति उनमें
दाखिल हुई, और वे अपने पैरों पर उठ
खड़े हुए और देखनेवालों पर बड़ा खौफ
छा गया। **12** और उन्हें आकाश से
एक ज़ोरदार आवाज़ सुनायी दी जो उनसे
कह रही थी: "यहाँ ऊपर आओ।" और
वे बादलों में ऊपर आकाश में गए और
उनके दुश्मनों ने उन्हें देखा। **13** उस
वक्त एक बड़ा भूकंप हुआ और उस
शहर का दसवाँ हिस्सा ढह गया। उस
भूकंप से सात हज़ार लोग मारे गए और
बाकी डर गए और उन्होंने स्वर्ग के पर-
मेश्वर को महिमा दी।

14 दूसरा कहर बीत चुका। देख!
तीसरा कहर बहुत जल्द टूटनेवाला है।

15 और सातवें स्वर्गदूत ने अपनी
तुरही फूंकी। और स्वर्ग में ज़बरदस्त
आवाज़ें सुनायी दीं, जो कह रही थीं:
"दुनिया का राज अब हमारे मालिक
और उसके मसीह* का हो गया है और
वह हमेशा-हमेशा तक राजा बनकर राज
करेगा।"

16 और चौबीस प्राचीन जो पर-
मेश्वर के सामने अपनी राजगद्दियों पर
बैठे थे, मुँह के बल गिर पड़े और उन्होंने
यह कहते हुए परमेश्वर की उपासना की:
17 "सर्वशक्तिमान परमेश्वर, यहोवा, तू
जो था, और जो है, हम तेरा शुक्रिया
अदा करते हैं, क्योंकि तू ने अपनी बड़ी
शक्ति का इस्तेमाल कर राजा के तौर पर
राज करना शुरू किया है। **18** मगर
राष्ट्रों का गुस्सा भड़क उठा और तेरा
क्रोध उन पर आ पड़ा और वह ठह-
राया हुआ वक्त आ पहुँचा जब मरे
हुओं का न्याय किया जाए, और तेरे दास
भविष्यवक्ताओं को और पवित्र जनों को
और तेरे नाम का डर माननेवाले छोटे-
बड़े सभी दासों को उनका इनाम दिया
जाए, और पृथ्वी को तबाह-बरबाद करने-
वालों को खत्म कर दिया जाए।"

19 और स्वर्ग में परमेश्वर के मंदिर
का जो भवन है उसे खोला गया और
उसके मंदिर के भवन में उसके करार
का संदूक देखा गया। और बिजलियाँ
कौंधीं, गड़गड़ाहट और गर्जन की आवाज़ें
आयीं और एक भूकंप हुआ और बड़े-
बड़े ओले पड़े।

12 और स्वर्ग में एक बड़ी निशानी
दिखायी दी। एक स्त्री सूरज
ओढ़े हुए थी और चाँद उसके पैरों तले
था और उसके सिर पर बारह तारों का
ताज था, **2** और वह गर्भवती थी।
वह दर्द से चिल्ला रही थी और बच्चा
जनने की पीड़ा से तड़प रही थी।

3 फिर स्वर्ग में एक और निशानी
दिखायी दी, और देखो! आग जैसे लाल
रंग का एक बड़ा भयानक अजगर,
जिसके सात सिर और दस सींग थे
और जिसके सिरों पर सात मुकुट थे।

प्रका 11:15* या, "अभिषिक्त जन, मसीहा।" मत्ती 1:1 फुटनोट देखें।

4 उसने अपनी पूंछ से आकाश के एक-
तिहाई तारों को घसीटकर उन्हें धरती पर
फेंक दिया। और यह अजगर उस स्त्री
के सामने खड़ा रहा जो बच्चा जनने ही
वाली थी, ताकि जब वह बच्चा जने तो
वह उसके बच्चे को निगल जाए।

5 उस स्त्री ने एक बेटे, यानी एक
लड़के को जन्म दिया, जो सब राष्ट्रों को
चरवाहे की तरह लोहे की छड़ से हाँकेगा।
और उस स्त्री के बच्चे को फौरन पर-
मेश्वर और उसकी राजगद्दी के पास ले
जाया गया। **6** वह स्त्री वीराने में भाग
गयी, जहाँ परमेश्वर ने उसके लिए एक
जगह तैयार की थी, ताकि वहाँ एक
हज़ार दो सौ साठ दिन तक उसका
पालन-पोषण किया जाए।

7 और स्वर्ग में युद्ध छिड़ गया:
मीकाएल और उसके स्वर्गदूतों ने अज-
गर से लड़ाई की, और अजगर और
उसके दुष्ट स्वर्गदूतों ने उनके साथ लड़ाई
की। **8** मगर अजगर सामना न कर
सका, और स्वर्ग में फिर उनके लिए जगह
न रही। **9** इसलिए वह बड़ा भया-
नक अजगर, वही पुराना साँप, जो इब्-
लीस और शैतान कहलाता है, और जो
सारे जगत* को गुमराह करता है, वह
नीचे धरती पर फेंक दिया गया और
उसके दुष्ट स्वर्गदूत भी उसके साथ फेंक
दिए गए।

10 और मैंने स्वर्ग से एक ज़ोर-
दार आवाज़ को यह कहते सुना:

प्रका 12:9* या, "पूरी धरती पर जहाँ-जहाँ लोग बसे हुए हैं।"

"हमारे परमेश्वर की तरफ से उद्धार
और उसकी शक्ति और उसका राज और
उसके मसीह का अधिकार अब ज़ाहिर
हुआ है क्योंकि हमारे भाइयों पर दोष
लगानेवाला नीचे फेंक दिया गया है, जो
दिन-रात हमारे परमेश्वर के सामने उन
पर दोष लगाया करता था! **11** और
उन्होंने मेम्ने के लहू की वजह से
और उस संदेश* की वजह से जिसकी
उन्होंने गवाही दी, शैतान पर जीत हासिल
की और मौत का सामना करते वक्त
भी अपनी जान की परवाह न की।
12 इस वजह से हे स्वर्गो और उनमें
रहनेवालो, खुशियाँ मनाओ! धरती और
समुद्र, तुम पर हाय क्योंकि शैतान तुम्हारे
पास नीचे आ गया है और बड़े क्रोध में
है, क्योंकि वह जानता है कि उसका बहुत
कम वक्त बाकी रह गया है।"

13 जब अजगर ने देखा कि उसे
धरती पर फेंक दिया गया है तो उसने
उस स्त्री पर ज़ुल्म ढाए जिसने लड़के को
जन्म दिया था। **14** मगर स्त्री को बड़े
उकाब के दो पंख दिए गए ताकि वह
उड़कर वीराने में उस जगह चली जाए
जो उसके लिए तैयार की गयी थी और
वहाँ साँप से दूर एक समय, दो समयों
और आधे समय के लिए उसका पालन-
पोषण किया जाए।

15 और साँप ने उस स्त्री के पीछे
अपने मुँह से नदी के जैसी पानी की धारा
छोड़ी ताकि वह स्त्री नदी में डूब जाए।
16 मगर पृथ्वी ने स्त्री की मदद की और

प्रका 12:11* शाब्दिक, "उनकी गवाही के वचन।"

पृथ्वी ने अपना मुँह खोला और अजगर
के मुँह से निकली नदी को निगल लिया।
17 और अजगर स्त्री पर बहुत क्रोधित
हुआ और उस स्त्री के वंश के बाकी बचे
हुओं से युद्ध करने निकल पड़ा, जो पर-
मेश्वर की आज्ञाओं का पालन करते हैं
और जिनके पास यीशु की गवाही देने
का काम है।

13 और वह अजगर समुद्र की रेत
पर जा खड़ा हुआ।

और मैंने एक जंगली जानवर को
समुद्र में से ऊपर आते देखा, जिसके दस
सींग और सात सिर थे, और उसके सींगों
पर दस मुकुट थे, मगर उसके सिरों पर
परमेश्वर की निंदा करनेवाले नाम लिखे
थे। **2** मैंने जिस जंगली जानवर को
देखा वह एक चीते जैसा था, मगर उसके
पैर भालू के पैरों जैसे थे और उसका मुँह
शेर के मुँह जैसा था। और इस जानवर
को इसकी शक्ति, इसकी राजगद्दी और
बड़ा अधिकार अजगर ने दिया।

3 और मैंने देखा कि उसका एक
सिर ऐसे काट दिया गया मानो उसका
कत्ल कर दिया गया हो। मगर यह जान-
लेवा घाव ठीक हो गया और सारी धरती
इस जंगली जानवर की तारीफ करती हुई
उसके पीछे हो ली। **4** और उन्होंने
अजगर की पूजा की क्योंकि उसने जंगली
जानवर को अधिकार दिया था। और
उन्होंने यह कहते हुए जंगली जानवर की
पूजा की: “इस जंगली जानवर जैसा कौन
है, और कौन इससे युद्ध कर सकता है?”
5 और इसे एक ऐसा मुँह दिया गया जो
बड़ी-बड़ी बातें करे और परमेश्वर की
निंदा करे और इसे बयालीस महीनों
तक अपना काम करने का अधिकार
दिया गया। **6** और उसने परमेश्वर
की निंदा करने के लिए अपना मुँह खोला,
ताकि वह उसके नाम और उसके निवास
की, यहाँ तक कि स्वर्ग में रहनेवालों की
निंदा करे। **7** और उसे इजाज़त दी
गयी कि वह पवित्र जनों के साथ युद्ध
करे और उन पर जीत हासिल करे और
उसे हर गोत्र और जाति और भाषा और
राष्ट्र के लोगों पर अधिकार दिया गया।
8 और धरती पर रहनेवाले सभी उसकी
पूजा करेंगे। और उनमें से एक का भी
नाम वध किए गए मेम्ने की जीवन की
किताब में नहीं लिखा गया जिसे दुनिया
की शुरूआत से तैयार किया गया है।

9 कान लगाकर सुनो और जो कहा
जा रहा है, उसे समझने की कोशिश
करो। **10** अगर किसी को कैद किया
जाना है, तो उसे कैद किया जाएगा।
जो कोई तलवार से मारेगा, वह तलवार
से मार डाला जाएगा। ऐसे में पवित्र लोगों
का धीरज धरना और विश्वास रखना
ज़रूरी है।

11 फिर मैंने एक और जंगली जान-
वर को धरती में से ऊपर आते हुए
देखा और उसके मेम्ने के सींगों जैसे दो
सींग थे मगर वह अजगर की तरह
बोलने लगा। **12** और यह जानवर,
पहले जंगली जानवर के सामने उसका
सारा अधिकार चलाता है। और यह
धरती और उसमें रहनेवालों से उस पहले

जंगली जानवर की पूजा करवाता है,
जिसका जानलेवा घाव ठीक हो गया था।
13 और यह जानवर बड़े-बड़े चमत्कार
दिखाता है, यहाँ तक कि वह लोगों
के सामने आकाश से धरती पर आग
बरसाता है।

14 और इसे उस जंगली जानवर के
सामने जो चमत्कार करने की इजाज़त दी
गयी थी, उन चमत्कारों से वह धरती पर
रहनेवालों को गुमराह करता है। साथ ही,
यह धरती पर रहनेवालों से कहता है
कि वे उस जंगली जानवर की मूरत
बनाएँ जिस पर तलवार से वार किया
गया था मगर फिर भी वह बच गया।
15 और इस जानवर को यह अधिकार
दिया गया कि जंगली जानवर की मूरत
में जान फूँक दे ताकि इसकी मूरत बोलने
लगे और उन सभी को मरवा डाले
जो किसी भी तरह जंगली जानवर की
मूरत की पूजा नहीं करते।

16 और यह जानवर छोटे-बड़े,
अमीर-गरीब, आज़ाद-गुलाम सभी लोगों
के साथ ज़बरदस्ती करता है कि उनके
दाएँ हाथ पर या माथे पर एक निशान
लगाया जाए, **17** और जिस किसी
पर यह निशान यानी जंगली जानवर का
नाम या उसके नाम की संख्या न हो, वह
न तो खरीदारी कर सके, न ही बेच सके।
18 यहीं पर बुद्धि ज़रूरी हैः जो अक्ल-
मंद है, वह उस जंगली जानवर की
संख्या का हिसाब लगाए, इसलिए कि यह
आदमी की संख्या है और इसकी संख्या
है, छः सौ छियासठ।

14 और मैंने देखा तो क्या देखा!
मेम्ना सिय्योन पहाड़ पर खड़ा
है और उसके साथ एक लाख चवालीस
हज़ार जन खड़े हैं जिनके माथे पर उसका
नाम और उसके पिता का नाम लिखा है।
2 और मैंने स्वर्ग से एक आवाज़ सुनी
जो बहुत-सी जलधाराओं की आवाज़ और
तेज़ गर्जन की आवाज़ जैसी थी। और
मैंने जो आवाज़ सुनी वह ऐसी थी जैसे
गानेवाले अपना-अपना सुर-मंडल साथ-
साथ बजा रहे हों। **3** और वे राज-
गद्दी के सामने और चार जीवित प्राणियों
और प्राचीनों के सामने मानो एक नया
गीत गा रहे हैं। और उन एक लाख चवा-
लीस हज़ार जनों के सिवा जिन्हें धरती
से खरीदा गया है, कोई और वह गीत
गाने में महारत नहीं पा सकता था।
4 ये वही हैं जिन्होंने स्त्रियों के साथ खुद
को दूषित नहीं किया है। दरअसल, ये
कुँआरे हैं। ये वही हैं जो मेम्ने के पीछे
जहाँ-जहाँ वह जाता है वहाँ-वहाँ चलते
रहते हैं। इन्हें इंसानों में से परमेश्वर के
लिए और मेम्ने के लिए पहले फलों के
नाते खरीद लिया गया है, **5** और
उन्होंने अपने मुँह से कभी झूठ नहीं कहा।
वे बेदाग हैं।

6 फिर मैंने एक और स्वर्गदूत
को देखा जो आकाश के बीचों-बीच उड़
रहा था, और उसके पास सदा तक
कायम रहनेवाली खुशखबरी थी, ताकि
वह धरती पर रहनेवालों को, यानी हर
राष्ट्र और गोत्र और भाषा और जाति के
लोगों को खुशी का यह संदेश सुनाए।

7 और वह बड़ी ज़ोरदार आवाज़ में कह
रहा था: "परमेश्वर से डरो और उसकी
महिमा करो, क्योंकि उसके न्याय करने
का वक्त आ गया है। इसलिए उसकी
उपासना करो जिसने यह आकाश और
यह धरती और समुद्र और पानी के सोते
बनाए।"

8 इसके बाद, एक और स्वर्गदूत,
दूसरा स्वर्गदूत यह कहता हुआ आया:
"गिर पड़ी! महानगरी बैबिलोन गिर पड़ी,
वही जिसने सभी राष्ट्रों को क्रोध की और
अपने व्यभिचार की मदिरा पिलायी है!"

9 इनके बाद, एक और स्वर्गदूत,
तीसरा स्वर्गदूत ज़ोरदार आवाज़ में यह
कहता हुआ आया: "अगर कोई उस
जंगली जानवर और उसकी मूरत की पूजा
करता है और अपने माथे या अपने हाथ
पर निशान लगवाता है, **10** तो वह
भी परमेश्वर के क्रोध के प्याले में उंडेली
गयी निरी मदिरा में से उसके गुस्से की
मदिरा पीएगा, और उसे पवित्र स्वर्गदूतों
और मेम्ने की नज़र के सामने आग और
गंधक से तड़पाया जाएगा। **11** और
उनके तड़पाए जाने का धूआं हमेशा-
हमेशा तक उठता रहेगा और उन्हें दिन-
रात कभी-भी चैन नहीं मिलेगा, यानी उन्हें
जो जंगली जानवर और उसकी मूरत की
पूजा करते हैं और उसके नाम की मुहर
लगवाते हैं। **12** ऐसे में पवित्र जनों
का धीरज धरना ज़रूरी है, जो परमेश्वर
की आज्ञाएँ मानते हैं और यीशु के
विश्वास पर चलते हैं।"

13 और मैंने स्वर्ग से यह आवाज़
सुनी: "लिख ले: सुखी हैं वे जो प्रभु के
साथ एकता में रहते हुए अब इस वक्त
से मरते हैं। हाँ, पवित्र शक्ति कहती है,
वे अब कड़ी मेहनत से आराम पाएँगे,
क्योंकि उन्होंने जो कुछ किया उसका लेखा
उनके साथ जाएगा।"

14 और देखो मैंने देखा कि एक
सफेद बादल था जिस पर इंसान के बेटे
जैसा कोई बैठा है। उसके सिर पर
सोने का ताज और उसके हाथ में तेज़
हँसिया है।

15 फिर एक और स्वर्गदूत मंदिर के
पवित्र भाग में से निकला और जो बादल
पर बैठा हुआ था, उससे ज़ोरदार आवाज़
में कहा: "अपना हँसिया चला और कटाई
कर, क्योंकि कटाई का वक्त आ गया है
और धरती की फसल पूरी तरह पक
चुकी है।" **16** और जो बादल पर
बैठा था उसने धरती पर अपना हँसिया
चलाया और धरती की फसल काटी
गयी।

17 फिर एक और स्वर्गदूत स्वर्ग में
मंदिर के भवन से निकला और उसके
पास भी एक तेज़ हँसिया था।

18 फिर एक और स्वर्गदूत वेदी में
से निकला और उसे आग पर अधिकार
था। और उसने ज़ोरदार आवाज़ में उस
स्वर्गदूत को पुकारा जिसके पास तेज़
हँसिया था और उससे कहा: "अपना
तेज़ हँसिया चला और पृथ्वी की अंगूर
की बेल के गुच्छे इकट्ठे कर, क्योंकि

इसके अंगूर पक चुके हैं।” **19** और
उस स्वर्गदूत ने पृथ्वी पर अपना हँसिया
चलाया और पृथ्वी की अंगूर की बेल
इकट्ठी की। उसने वह बेल अंगूर रौंदने
के उस बड़े हौद में फेंक दी, जिसका मत-
लब परमेश्वर के क्रोध का कहर है।
20 अंगूर के गुच्छे शहर के बाहर रौंदे
गए और अंगूर की हौद में से इतना खून
निकला कि यह घोड़ों की लगामों की
ऊँचाई तक पहुँच गया और करीब तीन
सौ किलोमीटर की दूरी तक फैल गया।

15 फिर मैंने स्वर्ग में एक और बड़ी
और हैरतअंगेज़ निशानी देखी,
मैंने सात कहर लिए हुए सात स्वर्गदूत
देखे। ये आखिरी कहर हैं, क्योंकि इनके
ज़रिए परमेश्वर का गुस्सा अपनी चरम-
सीमा तक पहुँचकर पूरा हो जाता है।

2 और मैंने जो देखा वह काँच जैसा
समुद्र लग रहा था, जिसमें आग मिली
हुई थी। और जिन्होंने जंगली जानवर
और उसकी मूरत और उसके नाम की
संख्या पर जीत हासिल की थी, उन्हें काँच
जैसे समुद्र के पास परमेश्वर के सुर-मंडल
लिए खड़ा देखा। **3** और वे परमेश्वर
के दास मूसा का और मेम्ने का यह गीत
गा रहे हैं:

“सर्वशक्तिमान परमेश्वर यहोवा, तेरे
काम कितने महान और कैसे लाजवाब
हैं। हे युग-युग के राजा, तेरी राहें कितनी
सही और भरोसेमंद हैं। **4** हे यहोवा,
एक अकेला तू ही वफादार है, इसलिए
कौन तुझसे वाकई न डरेगा और कौन
तेरे नाम की महिमा न करेगा? सभी
राष्ट्र आएँगे और तेरे सामने आकर
तेरी उपासना करेंगे, क्योंकि उन पर यह
ज़ाहिर हो गया है कि तेरे आदेश कितने
खरे हैं।”

5 इन बातों के बाद मैंने देखा, स्वर्ग
में गवाही के डेरे का भवन खोला गया,
6 और सात कहर लिए हुए सात स्वर्ग-
दूत उस भवन में से निकले। वे साफ,
उजले कपड़े पहने हुए थे और सीने पर
सोने के सीनेबंद बाँधे हुए थे। **7** और
चार जीवित प्राणियों में से एक ने उन
सात स्वर्गदूतों को सोने के सात कटोरे
दिए जो सदा-सदा तक जीनेवाले पर-
मेश्वर के क्रोध से भरे हुए थे। **8** और
परमेश्वर की महिमा और शक्ति की
वजह से वह भवन धूएं से भर गया और
जब तक सात स्वर्गदूतों के सात कहर
बीत न चुके तब तक भवन में कोई भी
दाखिल न हो सका।

16 फिर मैंने मंदिर में से एक ज़ोर-
दार आवाज़ सुनी जो सात स्वर्ग-
दूतों से कह रही थी: “जाओ और पर-
मेश्वर के क्रोध के सात कटोरे धरती पर
उंडेल दो।”

2 और पहला स्वर्गदूत गया और
उसने अपना कटोरा धरती पर उंडेला।
और जिन लोगों पर जंगली जानवर का
निशान था और जो उसकी मूरत की पूजा
कर रहे थे, उन पर एक दर्दनाक और
भयानक फोड़ा निकल आया।

3 और दूसरे स्वर्गदूत ने अपना
कटोरा समुद्र पर उंडेला। और समुद्र मरे

हुए इंसान के खून जैसा हो गया, और
समुद्र के सभी प्राणी, हाँ, उसके जीव-जंतु
मर गए।

4 और तीसरे स्वर्गदूत ने अपना
कटोरा नदियों और पानी के सोतों पर
उंडेला। और वे खून में बदल गए।
5 और पानी पर अधिकार रखनेवाले
स्वर्गदूत को मैंने यह कहते हुए सुनाः "हे
हमारे वफादार परमेश्वर, तू जो था और
जो है, तू सच्चा है क्योंकि तू ने ये
फैसले देकर न्याय किया है, **6** क्योंकि
उन्होंने पवित्र जनों और भविष्यवक्ताओं
का खून बहाया है और इसलिए तू ने
उन्हें पीने के लिए खून दिया है। वे इसी
लायक हैं।" **7** और मैंने वेदी को यह
कहते सुनाः "हाँ, सर्वशक्तिमान परमेश्वर
यहोवा, तू ने न्याय कर जो फैसले सुनाए
हैं, वे भरोसेमंद और सही हैं।"

8 फिर चौथे स्वर्गदूत ने अपना
कटोरा सूरज पर उंडेला। और सूरज
को यह अधिकार दिया गया कि वह
लोगों को आग से झुलसा दे। **9** और
लोग भयंकर गरमी से झुलस गए, मगर
उन्होंने परमेश्वर के नाम की निंदा की,
जिसे इन आफतों* पर अधिकार है और
उन्होंने पश्चाताप नहीं किया ताकि उसकी
महिमा करें।

10 फिर पाँचवें स्वर्गदूत ने अपना
कटोरा जंगली जानवर की राजगद्दी पर
उंडेला। और उसका राज अंधकार से भर
गया और लोग दर्द के मारे अपनी जीभ
काटने लगे, **11** मगर उन्होंने अपने
दर्द और फोड़ों की वजह से स्वर्ग के पर-
मेश्वर की निंदा की और अपने कामों से
पश्चाताप नहीं किया।

12 और छठे स्वर्गदूत ने अपना
कटोरा महानदी, फरात पर उंडेला और
उसका पानी सूख गया ताकि पूरब* से
आनेवाले राजाओं के लिए रास्ता तैयार
हो सके।

13 और मैंने अजगर के मुँह से
और जंगली जानवर के मुँह से और
झूठे भविष्यवक्ता के मुँह से मेंढकों जैसे
दिखनेवाले तीन अशुद्ध प्रेरित वचन
निकलते देखे। **14** दरअसल ये दुष्ट
स्वर्गदूतों की प्रेरणा से कहे गए वचन हैं
और ये चमत्कार दिखाते हैं और सारे
जगत के राजाओं के पास जाते हैं कि
उन्हें सर्वशक्तिमान परमेश्वर के महान
दिन के युद्ध के लिए इकट्ठा करें।

15 "देख! मैं एक चोर की तरह
अचानक आ रहा हूँ। सुखी है वह जो
जागता रहता है और अपने कपड़ों की
चौकसी करता है ताकि वह नंगा न
फिरे और लोग उसकी शर्मनाक हालत
न देखें।"

16 और उन्होंने राजाओं को उस
जगह इकट्ठा किया जो इब्रानी भाषा में
हर-मगिदोन कहलाती है।

17 और सातवें स्वर्गदूत ने हवा पर
अपना कटोरा उंडेला। इस पर मंदिर
में, राजगद्दी में से एक ज़ोरदार आवाज़

प्रका 16:9* या, "कहर।"

प्रका 16:12* शाब्दिक, "सूर्योदय की दिशा से।"

निकली जो कह रही थी: "पूरा हो गया!"
18 और बिजलियाँ कौंधीं और गड़-
गड़ाहट और गर्जन की आवाज़ें हुईं और
एक बड़ा भूकंप हुआ, जो इतना ज़बर-
दस्त, इतना भयानक था, जितना धरती
पर इंसान के वजूद में आने से लेकर अब
तक नहीं हुआ। **19** और उस महा-
नगरी के टूटकर तीन हिस्से हो गए और
राष्ट्रों के शहर तहस-नहस हो गए। और
महा-बैबिलोन को परमेश्वर ने याद किया
ताकि उसे अपने गुस्से और जलजलाहट
की मदिरा से भरा प्याला दे। **20** साथ
ही, हरेक द्वीप भाग गया और पहाड़
लापता हो गए। **21** और लोगों पर
आकाश से बड़े-बड़े ओले गिरे और हर
ओले का वज़न करीब बीस किलो* था।
और लोगों ने ओलों के कहर की वजह
से परमेश्वर की निंदा की क्योंकि इस
कहर ने बहुत ज़्यादा तबाही मचायी।

17 और जिन सात स्वर्गदूतों के पास
सात कटोरे थे, उनमें से एक ने
आकर मुझसे कहा: "आ, मैं तुझे उस
बड़ी वेश्या पर आनेवाला दंड दिखाऊंगा,
जो बहुत-से पानियों पर बैठी हुई है,
2 जिसके साथ पृथ्वी के राजाओं ने
व्यभिचार किया और जिसके व्यभिचार
की दाख-मदिरा पीकर धरती के रहने-
वाले मदहोश हो गए।"

3 और वह स्वर्गदूत मुझे पवित्र
शक्ति के असर में एक वीराने में ले गया।
वहाँ मेरी नज़र एक स्त्री पर पड़ी जो सुर्ख
लाल रंग के एक जंगली जानवर पर बैठी
हुई थी। वह जानवर परमेश्वर की निंदा
करनेवाले नामों से भरा हुआ था और
उसके सात सिर और दस सींग थे।
4 और वह स्त्री बैंजनी और सुर्ख लाल
रंग का लिबास पहने हुई थी और सोने
और हीरे-मोतियों से सजी हुई थी। उसके
हाथ में सोने का एक प्याला था जो
घिनौनी चीज़ों से और उसके व्यभिचार
की अशुद्ध चीज़ों से भरा हुआ था।
5 उस वेश्या के माथे पर एक रहस्य-
भरा नाम लिखा था: "महानगरी बैबिलोन,
वेश्याओं की माँ और पृथ्वी की घिनौनी
चीज़ों को जन्म देनेवाली।" **6** और
मैंने देखा कि वह स्त्री पवित्र जनों का
खून पीकर और यीशु के गवाहों का खून
पीकर मदहोश थी।

वाकई, जब मेरी नज़र उस पर पड़ी
तो मैं बड़ी हैरत में पड़ गया। **7** इस-
लिए उस स्वर्गदूत ने मुझसे कहा: "तुझे
इतनी हैरत क्यों हुई? मैं तुझे उस स्त्री
का और उस जंगली जानवर का, जिसके
सात सिर और दस सींग हैं और जिस
पर यह स्त्री सवार है, रहस्य बताता हूँ:
8 जिस जंगली जानवर को तू ने देखा,
वह था, मगर अब नहीं है फिर भी
वह अथाह-कुंड से जल्द निकलेगा, और
उसका नाश हो जाएगा। और धरती पर
रहनेवाले जब उस जंगली जानवर को
देखते हैं कि वह कैसे था, मगर अब नहीं
है और फिर मौजूद होगा, तो वे हैरान

प्रका 16:21* शाब्दिक, "एक *तालंतौन,*" मत्ती 18:24 फुटनोट देखें।

होकर उसकी तारीफ करेंगे। मगर इन लोगों के नाम दुनिया की शुरूआत से लिखी जा रही जीवन की किताब में नहीं लिखे गए।

9 यहीं पर दिमाग और बुद्धि ज़रूरी है: सात सिरों का मतलब है, सात पहाड़ जिनके ऊपर वह स्त्री बैठी है।
10 और इनका मतलब है, सात राजा: पाँच गिर चुके हैं, एक मौजूद है, और एक अभी आया नहीं, लेकिन जब वह आएगा तो कुछ देर तक उसका रहना ज़रूरी है। 11 और जो जंगली जान-
वर था मगर अभी नहीं है, वह खुद आठवाँ राजा भी है, मगर वह उन सातों में से निकलता है और वह नाश हो जाएगा।

12 जो दस सींग तू ने देखे उनका मतलब दस राजा हैं, जिन्हें अभी तक राज नहीं मिला मगर उन्हें जंगली जानवर के साथ घड़ी भर* के लिए राजाओं जैसा अधिकार मिलेगा। 13 इन सबकी
एक ही सोच है और वे अपनी शक्ति और अपना अधिकार उस जंगली जानवर को देंगे। 14 ये मेम्ने के साथ लड़ेंगे,
मगर मेम्ना उन पर जीत हासिल करेगा क्योंकि वह प्रभुओं का प्रभु और राजाओं का राजा है। और जो बुलाए गए और चुने हुए और विश्वासयोग्य जन उसके साथ हैं, वे भी जीत हासिल करेंगे।"

15 और उस स्वर्गदूत ने मुझसे कहा: "जो पानी तू ने देखे और जिन पर वह वेश्या बैठी है, उनका मतलब है लोग और भीड़ और राष्ट्र और भाषाएँ।
16 और जो दस सींग तू ने देखे और वह जंगली जानवर उस वेश्या से नफ़-रत करेंगे और उसे तबाह और नंगा कर देंगे और उसका मांस खा जाएँगे और उसे आग में पूरी तरह जला देंगे।
17 क्योंकि परमेश्वर उनके दिलों में यह बात डालेगा कि वे उसकी सोच पूरी करें, ताकि वे जिस बात पर एक राय रखते हैं, उसे पूरा करने के लिए तब तक जंगली जानवर को अपना राज दें जब तक कि परमेश्वर का कहा वचन पूरा न हो जाए। 18 और जिस स्त्री को तू
ने देखा, उसका मतलब वह महानगरी है जिसका राज पृथ्वी के राजाओं पर है।"

18 इसके बाद, मैंने एक और स्वर्ग-दूत को स्वर्ग से उतरते देखा जिसके पास बड़ा अधिकार था। उसकी महिमा के तेज से पृथ्वी रौशन हो गयी।
2 और उसने बड़ी बुलंद आवाज़ में चिल्लाकर कहा: "गिर पड़ी! महानगरी बैबिलोन गिर पड़ी, और वह दुष्ट स्वर्ग-दूतों का अड्डा और हर तरह के अशुद्ध और घिनौने पक्षी का बसेरा और ऐसी जगह बन गयी है जहाँ ज़हरीली हवा भरी हुई है! 3 उसने क्रोध की दाख-मदिरा
और अपने व्यभिचार की दाख-मदिरा सारे राष्ट्रों को पिलायी है जिससे वे उसके शिकार बने हैं, और पृथ्वी के राजाओं ने उसके साथ व्यभिचार किया और पृथ्वी के सौदागर उसकी शर्मनाक ऐयाशियों से मालामाल हो गए।"

प्रका 17:12* या, "घंटे भर।"

4 फिर मैंने स्वर्ग से एक और
आवाज़ सुनी जो कह रही थी: “मेरे लोगो,
उसमें से बाहर निकल आओ। अगर तुम
उसके पापों में हिस्सेदार नहीं होना चाहते
और अगर तुम उस पर आनेवाले कहर
में साझेदार नहीं होना चाहते, तो उसमें से
निकल आओ। 5 क्योंकि उसके पापों
का अंबार आसमान तक पहुँच गया है
और परमेश्‍वर ने उसके अन्याय के कामों
को याद किया है। 6 उसने जो दूसरों
को दिया है वही उसे भी दो और उससे
भी दुगुना दो, हाँ, जो-जो उसने किया है
उसका दुगुना उसे दो। उसने प्याले में
जो मिलाकर भरा है, उसका दुगुना उसे
मिलाकर दो। 7 उसने जिस हद तक
अपनी शानो-शौकत बढ़ायी और वह
जैसी शर्मनाक ऐयाशी में रही, उसी हद
तक उसे पीड़ा और मातम दो। क्योंकि
वह अपने दिल में कहती है, ‘मैं तो रानी
बन बैठी हूँ, मैं विधवा नहीं हूँ और मैं
कभी मातम नहीं देखूँगी।’ 8 इसलिए
एक ही दिन में उस पर कहर टूट पड़ेंगे,
यानी मौत और मातम और अकाल, और
उसे आग में पूरी तरह जला दिया जाएगा,
क्योंकि उसका न्याय करनेवाला परमेश्‍वर
यहोवा ताकतवर है।

9 और पृथ्वी के राजा जिन्होंने
उसके साथ व्यभिचार किया और शर्म-
नाक ऐयाशी की, वे जब उसके जलने
से उठनेवाला धूआं देखेंगे, तो उस पर
रोएँगे और शोक के मारे छाती पीटेंगे।
10 और उसकी पीड़ा के डर से वे दूर
ही खड़े रहकर कहेंगे, ‘हाय, हाय, महा-
नगरी बैबिलोन, तू जो मज़बूत नगरी थी,
एक ही घड़ी में तुझे दंड मिल गया है!’

11 और पृथ्वी के सौदागर भी उस
पर रोएँगे और मातम करेंगे, क्योंकि
उनका सारा माल खरीदनेवाला कोई
नहीं रहा, 12 वह माल जिसमें सोना,
चाँदी, कीमती रत्न और मोती, बढ़िया
मलमल, बैंजनी कपड़े, रेशम और
सुर्ख लाल कपड़े हैं। और हर तरह की
खुशबूदार लकड़ियाँ, हाथीदाँत की हर
किस्म की चीज़ें और बेशकीमती लकड़ी
और पीतल और लोहे और संगमरमर
से बनी चीज़ें हैं। 13 और दालचीनी,
मसाले, धूप, खुशबूदार तेल, लोबान,
दाख-मदिरा, जैतून का तेल, मैदा, गेहूं,
मवेशी, भेड़, घोड़े, और बग्घियाँ और
दास और आदमी भी हैं। 14 हाँ,
जिस बढ़िया फल की तुझे लालसा थी वह
अब तुझसे दूर हो गया है और वे सारी
उम्दा और तड़क-भड़कवाली चीज़ें तबाह
होकर तुझसे दूर हो गयी हैं और लोग
इन्हें फिर कभी नहीं पाएँगे।

15 इन चीज़ों के सौदागर, जो उसकी
बदौलत अमीर हो गए थे, वे उसकी
पीड़ा के डर से दूर ही खड़े रहेंगे और
रोएँगे और यह कहते हुए मातम मनाएँगे,
16 ‘हाय, हाय, महानगरी, तू जो बढ़िया
मलमल और बैंजनी और सुर्ख लाल कपड़े
पहने और सोने के गहनों और कीमती
रत्नों और मोतियों से बड़े शानदार ढंग
से सजी हुई थी। 17 हाय, क्योंकि
एक ही घड़ी में ऐसी बेशुमार दौलत
तबाह-बरबाद हो गयी है!’

और हर जहाज़ का कप्तान और
समुद्री जहाज़ का हर यात्री, नाविक
और वे सभी जो समुद्र से अपनी रोज़ी-
रोटी कमाते हैं, दूर खड़े रहे **18** और
उसके जलने से उठनेवाला धूआं देखकर
वे पुकार उठे, ‘कौन-सी नगरी है जो
इस महानगरी जैसी हो?’ **19** और
उन्होंने अपने सिर पर धूल डालते हुए
रोते-बिलखते और मातम करते हुए कहा:
‘हाय, हाय, महानगरी, तू जिसकी महँगी
चीज़ों की भरमार से वे सभी अमीर बने
जिनके समुद्री जहाज़ हैं, हाय, क्योंकि तू
एक ही घड़ी में तबाह हो गयी है!’

20 हे स्वर्ग, और हे पवित्र जनो,
प्रेषितों और भविष्यवक्ताओ, उसका
जो हाल हुआ है उस पर तुम सब
हर्ष मनाओ, क्योंकि परमेश्वर ने तुम्हारी
खातिर उसका न्याय कर उसे सज़ा दी है!”

21 और एक शक्तिशाली स्वर्गदूत ने
चक्की के पाट जैसा एक बड़ा पत्थर
उठाकर समुद्र में यह कहते हुए फेंक
दिया: “इसी तरह महानगरी बैबिलोन
तेज़ी से नीचे गिरा दी जाएगी और फिर
कभी उसका नामो-निशान न मिलेगा।
22 और तुझमें सुर-मंडल पर गीत गाने-
वालों, संगीतकारों, बाँसुरी बजानेवालों
और तुरही फूंकनेवालों की आवाज़ फिर
कभी सुनायी न देगी और किसी भी तरह
का कारीगर फिर कभी तुझमें न मिलेगा
और चक्की के चलने की आवाज़ तुझमें
फिर कभी सुनायी न देगी **23** और
किसी दीपक की रौशनी तुझमें फिर कभी
न चमकेगी और दूल्हे और दुल्हन की
आवाज़ तुझमें फिर कभी न सुनायी देगी।
यह सब इसलिए होगा क्योंकि तेरे सौदा-
गर पृथ्वी के बड़े-बड़े लोग थे और तेरे
भूत-विद्या के कामों से सभी राष्ट्र गुमराह
किए गए। **24** हाँ, इसी नगरी में
भविष्यवक्ताओं, पवित्र जनों और उन
सभी का खून पाया गया जिनका इस
धरती पर कत्ल किया गया।”

19 इन बातों के बाद मैंने स्वर्ग में
ऐसी आवाज़ सुनी जो एक बड़ी
भीड़ की ज़ोरदार आवाज़ जैसी थी। वे
कह रहे थे: “हे लोगो, याह का गुणगान
करो! हमारा परमेश्वर हमारा उद्धारकर्त्ता
है, वह महिमा से भरपूर और शक्तिशाली
है, **2** क्योंकि उसके फैसले भरोसेमंद
और सही हैं। क्योंकि उसने उस बड़ी
वेश्या को सज़ा दी है जिसने अपने व्यभि-
चार से धरती को भ्रष्ट कर दिया। पर-
मेश्वर ने अपने दासों के खून का बदला
उससे लिया है।” **3** इसके फौरन बाद
उन्होंने दूसरी बार कहा: “हे लोगो, याह
का गुणगान करो! और बैबिलोन नगरी
के जलने का धूआं हमेशा-हमेशा तक
उठता रहेगा।”

4 और उन चौबीस प्राचीनों और चार
जीवित प्राणियों ने नीचे गिरकर, राज-
गद्दी पर बैठे परमेश्वर की उपासना की
और कहा: “आमीन! हे लोगो, याह का
गुणगान करो!”

5 साथ ही, राजगद्दी में से एक
आवाज़ निकली जो कह रही थी: “हमारे

परमेश्‍वर के सब दासो, चाहे छोटे चाहे
बड़े, तुम सब जो उसका डर मानते हो,
उसका गुणगान करो!"

6 और मैंने ऐसी आवाज़ सुनी जैसे
मानो एक बड़ी भीड़ चिल्ला रही हो, जो
बहुत-सी जलधाराओं की और बादलों के
गरजने की ज़बरदस्त आवाज़ जैसी थी।
वे कह रहे थे: "हे लोगो, याह का
गुणगान करो, क्योंकि हमारे सर्वशक्ति-
मान परमेश्‍वर यहोवा ने राजा बनकर
राज करना शुरू किया है। **7** आओ
हम खुशियाँ मनाएँ और आनंद से
भर जाएँ और परमेश्‍वर की महिमा करें
क्योंकि मेम्ने की शादी का वक्‍त आ
पहुँचा है और उसकी दुल्हन ने खुद को
तैयार कर लिया है। **8** हाँ, उसे यह
अधिकार दिया गया है कि वह उजला,
साफ और बढ़िया मलमल पहनकर सजे,
क्योंकि बढ़िया मलमल पवित्र जनों के
नेक कामों की निशानी है।"

9 और उसने मुझसे कहा: "यह
लिख: सुखी हैं वे जिन्हें मेम्ने की शादी
की शाम की दावत पर आने का न्यौता
मिला है।" उसने मुझसे यह भी कहा:
"ये परमेश्‍वर के भरोसेमंद वचन हैं।"
10 इस पर मैं उसकी उपासना करने के
लिए उसके पैरों पर गिर पड़ा। मगर
उसने मुझसे कहा: "खबरदार! ऐसा मत
कर! मैं तो सिर्फ तेरे और तेरे भाइयों की
तरह दास हूँ जिन्हें यीशु के बारे में गवाही
देने का काम मिला है। परमेश्‍वर की
उपासना कर; क्योंकि भविष्यवाणियों का
मकसद यीशु की गवाही देना है।"

11 और मैंने स्वर्ग को खुला हुआ
देखा और देखो! एक सफेद घोड़ा। जो
उस पर सवार था, वह विश्‍वासयोग्य और
सच्चा कहलाता है, और वह परमेश्‍वर के
स्तरों के मुताबिक न्याय करना और युद्ध
लड़ना जारी रखता है। **12** उसकी
आँखें आग की ज्वाला हैं और उसके सिर
पर बहुत-से मुकुट हैं। उस पर एक नाम
लिखा है जिसका मतलब खुद उसके सिवा
कोई और नहीं जानता, **13** और वह
एक पोशाक पहने हुए है जिस पर खून
छिड़का हुआ है और वह इस नाम से
पुकारा जाता है, परमेश्‍वर का वचन।
14 और स्वर्ग की सेनाएँ सफेद घोड़ों पर
उसके पीछे-पीछे आ रही थीं और वे
सफेद, साफ और बढ़िया मलमल पहने
हुए थे। **15** और उस घुड़सवार के
मुँह से एक तेज़ धारवाली लंबी तलवार
निकलती है ताकि वह उस तलवार से
राष्ट्रों पर वार करे और वह चरवाहे की
तरह उन्हें लोहे की छड़ से हाँकेगा। वह
सर्वशक्तिमान परमेश्‍वर के क्रोध और
जलजलाहट के हौद में भी रौंदता है।
16 और उसकी पोशाक पर, हाँ उसकी
जाँघ पर एक नाम लिखा है, राजाओं का
राजा और प्रभुओं का प्रभु।

17 और मैंने एक और स्वर्गदूत देखा
जो सूरज के बीच खड़ा था और उसने
ज़ोरदार आवाज़ में पुकार लगायी और
बीच आकाश में उड़ते सभी पक्षियों से
कहा: "यहाँ आओ, परमेश्‍वर की शाम
की बड़ी दावत के लिए इकट्ठे हो जाओ,
18 ताकि तुम राजाओं का माँस, सेना-

पतियों का माँस, शक्तिशाली आदमियों
का माँस और घोड़ों और उनके सवारों
का माँस, चाहे आज़ाद हों, चाहे दास,
चाहे छोटे हों, चाहे बड़े, सभी का माँस
खाओ।”

19 और मैंने जंगली जानवर और
धरती के राजाओं और उनकी सेनाओं को
देखा जो उस घुड़सवार और उसकी सेना
से युद्ध लड़ने के लिए इकट्ठा हुए थे।
20 और उस जंगली जानवर को, साथ
ही उसके सामने चमत्कार दिखानेवाले
झूठे भविष्यवक्ता को पकड़ा गया जो
चमत्कार दिखाकर उन लोगों को गुमराह
करता था जिन पर जंगली जानवर का
निशान लगाया गया था और जो उसकी
मूरत की पूजा करते थे। इन दोनों को
जीते-जी आग की उस झील में फेंक दिया
गया जो गंधक से जलती रहती है।
21 और बाकी, घुड़सवार के मुँह से
निकलनेवाली लंबी तलवार से मार डाले
गए। और सभी पक्षियों ने भरपेट उनका
माँस खाया।

20 और मैंने एक स्वर्गदूत को स्वर्ग
से उतरते देखा जिसके पास
अथाह-कुंड की चाबी और हाथ में एक
बड़ी ज़ंजीर थी। **2** उसने उस अज-
गर, उस पुराने साँप को जो इब्लीस
और शैतान है, पकड़ लिया और एक
हज़ार साल के लिए उसे बाँध दिया।
3 और उसे अथाह-कुंड में फेंक दिया
और अथाह-कुंड को बंद कर उस पर
मुहर लगा दी, ताकि वह हज़ार साल के
खत्म होने तक राष्ट्रों को फिर गुमराह न
कर सके। इन बातों के बाद, उसे थोड़ी
देर के लिए आज़ाद किया जाना है।

4 और मैंने राजगद्दियाँ देखीं और
उन्हें भी देखा जो इन पर बैठे और उन्हें
न्याय करने का अधिकार दिया गया। हाँ,
मैंने उन्हें देखा जिन्हें यीशु की गवाही देने
और परमेश्वर के बारे में बताने की
वजह से कुल्हाड़े से मार डाला गया और
जिन्होंने न तो उस जंगली जानवर की,
न उसकी मूरत की पूजा की थी और न
अपने माथे पर और अपने हाथ पर
उसका निशान लगवाया था। वे ज़िंदा हो
गए और उन्होंने राजा बनकर मसीह के
साथ एक हज़ार साल तक राज किया।
5 (और बाकी मरे हुए, हज़ार साल के
खत्म होने तक ज़िंदा नहीं हुए।) यह
पहला पुनरुत्थान* है। **6** सुखी और
पवित्र है वह जो यह पहला पुनरुत्थान
पाता है। इन पर दूसरी मौत* का कोई
अधिकार नहीं, मगर वे परमेश्वर और
मसीह के याजक होंगे और राजा बनकर
उसके साथ हज़ार साल तक राज करेंगे।

7 जैसे ही हज़ार साल खत्म होंगे,
शैतान को उसकी कैद से आज़ाद किया
जाएगा, **8** और वह पृथ्वी की चारों
दिशाओं में राष्ट्रों को, गोग और मागोग
को गुमराह करने के लिए निकलेगा कि
उन्हें युद्ध के लिए इकट्ठा करे। इनकी
गिनती समुद्र किनारे की रेत के कणों
जितनी है। **9** वे सारी धरती पर फैल
गए और उन्होंने पवित्र जनों के डेरे और

प्रका 20:5* यानी, मरे हुओं का जी उठना।
6* यानी, “हमेशा के लिए मौत।”

उस प्यारी नगरी को घेर लिया। मगर
स्वर्ग से आग बरसी और उन्हें भस्म कर
दिया। **10** और उन्हें गुमराह करने-
वाले शैतान को, धधकती आग की झील
में फेंक दिया गया, जहाँ जंगली जानवर
और झूठा भविष्यवक्ता पहले ही डाल
दिए गए थे। और उन्हें रात-दिन, हमेशा-
हमेशा के लिए तड़पाया जाएगा।

11 और मैंने एक बड़ी सफेद राज-
गद्दी देखी और उस पर किसी को बैठा
हुआ देखा। उसके सामने से धरती और
आकाश भाग गए, और उन्हें कोई जगह
न मिली। **12** और मैंने मरे हुओं को
यानी छोटे-बड़े सभी को राजगद्दी के
सामने खड़े देखा और किताबें खोली
गयीं। मगर एक और किताब खोली
गयी। यह जीवन की किताब है। और
इन किताबों में लिखी बातों के मुताबिक,
मरे हुओं का उनके कामों के हिसाब
से न्याय किया गया। **13** और समुद्र
ने उन मरे हुओं को जो उसमें थे, दे
दिया और मौत और कब्र* ने उन मरे
हुओं को जो उनमें थे, दे दिया और इनमें
से हरेक का उसके कामों के हिसाब से
न्याय किया गया। **14** और मौत और
कब्र को आग की झील में फेंक दिया
गया। इस आग की झील का मतलब है,
दूसरी मौत। **15** और जिस किसी का
नाम जीवन की किताब में लिखा हुआ
नहीं पाया गया, उसे आग की इसी झील
में फेंक दिया गया।

21 फिर मैंने एक नया आकाश और
नयी पृथ्वी देखी। क्योंकि पुराना
आकाश और पुरानी पृथ्वी मिट चुके
थे और समुद्र न रहा। **2** मैंने पवित्र
नगरी, नयी यरूशलेम को भी देखा, जो
स्वर्ग से परमेश्वर के पास से नीचे उतर
रही थी। यह ऐसे सजी हुई थी जैसे एक
दुल्हन अपने दूल्हे के लिए सिंगार करती
है। **3** फिर मैंने राजगद्दी से एक ज़ोर-
दार आवाज़ सुनी जो कह रही थी: "देखो!
परमेश्वर का डेरा इंसानों के बीच है। वह
उनके साथ रहेगा और वे उसके लोग
होंगे। और परमेश्वर खुद उनके साथ
होगा। **4** और वह उनकी आँखों से
हर आँसू पोंछ देगा, और न मौत रहेगी,
न मातम, न रोना-बिलखना, न ही दर्द
रहेगा। पिछली बातें खत्म हो चुकी हैं।"

5 और राजगद्दी पर जो बैठा था
उसने कहा: "देख! मैं सबकुछ नया बना
रहा हूँ।" उसने यह भी कहा: "ये
बातें लिख ले, क्योंकि ये विश्वास के
योग्य और सच्ची हैं।" **6** फिर उसने
मुझसे कहा: "ये वचन पूरे हो चुके हैं!
मैं अल्फा और ओमेगा,* यानी शुरू-
आत और अंत हूँ। जो कोई प्यासा होगा
उसे मैं जीवन देनेवाले पानी के सोते से
मुफ्त पानी पिलाऊँगा। **7** जो कोई
जीत हासिल करेगा उसे ये सारी चीज़ें
विरासत में मिलेंगी और मैं उसका पर-
मेश्वर होऊँगा और वह मेरा बेटा होगा।
8 लेकिन जो कायर हैं और जो विश्वास

प्रका 20:13* यूनानी में *"हेडिज़।"* अतिरिक्त लेख 8 देखें।

प्रका 21:6* अल्फा और ओमेगा, यूनानी वर्णमाला के पहले और आखिरी अक्षर हैं।

नहीं करते और जो अशुद्ध और घिनौने
काम करते हैं, और हत्यारों, व्यभि-
चारियों और भूत-विद्या और मूर्तिपूजा
में लगे रहनेवालों और सब झूठों के
हिस्से में आग की धधकती झील[*] है।
इसका मतलब है, दूसरी मौत।"[#]

9 और जिन सात स्वर्गदूतों के पास
सात आखिरी कहर से भरे सात कटोरे
थे, उनमें से एक स्वर्गदूत ने आकर मुझसे
कहा: "इधर आ, मैं तुझे दुल्हन दिखाता
हूँ, मेम्ने की दुल्हन।" **10** तब वह
मुझे पवित्र शक्ति के असर में एक बड़े
और ऊँचे पहाड़ पर ले गया और मुझे
पवित्र नगरी यरूशलेम दिखायी जो स्वर्ग
से परमेश्वर के पास से नीचे उतर रही
थी **11** वह परमेश्वर की महिमा से
भरपूर थी। उसकी चमक सबसे अनमोल
रत्न, यानी बिल्लौर की तरह दमकते
यशब जैसी थी। **12** उसकी दीवार
बहुत ही बड़ी और ऊँची थी और उसमें
बारह फाटक थे। इन फाटकों पर बारह
स्वर्गदूत थे और फाटकों पर इसराएलियों
के बारह गोत्रों के नाम लिखे हुए थे।
13 पूरब में तीन फाटक थे, उत्तर में
तीन, दक्षिण में तीन और पश्चिम में तीन
फाटक थे। **14** इस नगरी की दीवार
बारह नींव के पत्थरों पर खड़ी थी और
इन पत्थरों पर मेम्ने के बारह प्रेषितों के
नाम लिखे थे।

15 जो स्वर्गदूत मुझसे बात कर रहा
था, वह इस नगरी और इसके फाटकों
और इसकी दीवार को नापने के लिए
सोने का एक सरकंडा लिए हुए था।
16 यह नगरी चौकोर बसी हुई थी और
इसकी लंबाई, इसकी चौड़ाई के बराबर
थी। और उसने उस सरकंडे से उस नगरी
को नापा, जो बारह हज़ार फरलांग[*]
थी; इसकी लंबाई, चौड़ाई और ऊँचाई
बराबर थी। **17** और उसने इसकी
दीवार भी नापी, जो इंसान की नाप के
मुताबिक साथ ही स्वर्गदूत की नाप के
मुताबिक एक सौ चवालीस हाथ[*] थी।
18 इसकी दीवारों की बनावट यशब की
थी और यह नगरी काँच जैसे साफ,
खरे सोने की थी। **19** इस नगरी
की दीवार की नींव हर तरह के कीमती
रत्नों से सजी हुई थी: नींव का पहला
रत्न था यशब, दूसरा नीलम, तीसरा
लालड़ी, चौथा पन्ना, **20** पाँचवां
गोमेद, छठा माणिक्य, सातवाँ कर्केटक,
आठवाँ वैदूर्य, नौवाँ पुखराज, दसवाँ लह-
सुनिया, ग्यारहवाँ धूम्रकांत, बारहवाँ चंद्र-
कांत। **21** और बारह फाटक बारह
मोतियों के थे। हर फाटक एक मोती से
बना था। और इस नगरी की चौड़ी सड़क,
आर-पार दिखनेवाले साफ काँच जैसे खरे
सोने की थी।

22 मैंने इस नगरी में कोई मंदिर
न देखा, क्योंकि सर्वशक्तिमान परमेश्वर
यहोवा इसका मंदिर है और मेम्ना भी है।
23 इस नगरी को सूरज और चाँद की

प्रका 21:8* शाब्दिक, "गंधक से जलनेवाली।" **8#** यानी, "हमेशा के लिए मौत।"

प्रका 21:16* करीब 2,200 किलोमीटर। **17*** या, करीब 64 मीटर (210 फुट)।

रौशनी की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि यह
परमेश्‍वर की महिमा से जगमगाती है और
मेम्ना इसका दीपक है। **24** और सब
राष्ट्र इसकी रौशनी में चलेंगे और पृथ्वी
के राजा अपना ऐश्‍वर्य इसमें ले आएँगे।
25 इस नगरी के फाटक दिन के वक्‍त
बंद नहीं किए जाएँगे, और वहाँ रात होगी
ही नहीं। **26** और वे राष्ट्रों का ऐश्‍वर्य
और उनकी इज़्ज़त इस नगरी को देंगे।
27 मगर ऐसी कोई भी चीज़ जो पवित्र
नहीं है और ऐसा कोई भी जो घिनौने
काम करता और झूठ बोलता रहता है,
वह इस नगरी में हरगिज़ दाखिल न
होगा। मगर सिर्फ वे ही दाखिल होंगे
जिनके नाम उस जीवन की किताब में
लिखे हैं जो मेम्ने की है।

22 और उसने मुझे जीवन देने-
वाले पानी की नदी दिखायी जो
बिल्लौर की तरह साफ थी और परमेश्‍वर
और मेम्ने की राजगद्दी से निकलकर बह
रही थी। **2** यह नदी उस नगरी की
चौड़ी सड़क के बीचों-बीच बह रही थी।
नदी के इस पार और उस पार जीवन
देनेवाले ऐसे पेड़ लगे थे जिनमें साल में
बारह बार यानी हर महीने फल लगते
थे। और इन पेड़ों की पत्तियाँ राष्ट्रों के
लोगों के रोग दूर करने के लिए थीं।

3 और फिर वहाँ किसी भी तरह का
शाप न होगा। मगर इस नगरी में पर-
मेश्‍वर और मेम्ने की राजगद्दी होगी और
परमेश्‍वर के दास उसकी पवित्र सेवा
करेंगे। **4** वे उसका मुख देखेंगे और
उसका नाम उनके माथों पर लिखा होगा।
5 फिर कभी रात न होगी और उन्हें
दीपक या सूरज की रौशनी की ज़रूरत
नहीं पड़ेगी, क्योंकि यहोवा परमेश्‍वर उन
पर रौशनी चमकाएगा और वे हमेशा-
हमेशा तक राजा बनकर राज करेंगे।

6 फिर स्वर्गदूत ने मुझसे कहा: "ये
वचन विश्‍वास के योग्य और सच्चे हैं।
हाँ, यहोवा परमेश्‍वर जो भविष्यवक्‍ताओं
को प्रेरित करता है कि उसके वचन बोलें,
उसने अपना स्वर्गदूत भेजा ताकि अपने
दासों को दिखाए कि बहुत जल्द क्या-
क्या होना है। **7** और देख! मैं बहुत
जल्द आ रहा हूँ। सुखी है वह जो इस
किताब की भविष्यवाणी के वचनों को
मानता है।"

8 मैं यूहन्‍ना, ये बातें देख और सुन
रहा था। और जब मैं देख और सुन चुका,
तो जो स्वर्गदूत मुझे ये सारी बातें दिखा
रहा था, मैं उसकी उपासना करने के लिए
उसके पैरों पर गिर पड़ा। **9** मगर
उसने मुझसे कहा: "खबरदार! ऐसा मत
कर! मैं तो तेरे और तेरे भाइयों की
तरह, जो भविष्यवक्‍ता हैं और जो इस
किताब में लिखे वचनों के मुताबिक चलते
हैं, सिर्फ एक दास हूँ। परमेश्‍वर की
उपासना कर।"

10 उसने मुझसे यह भी कहा: "इस
किताब के भविष्यवाणी के वचनों पर
मुहर मत लगा, क्योंकि तय किया हुआ
वक्‍त पास आ गया है। **11** जो बुरे
काम करता है वह बुराई में लगा रहे;

और जिसका चालचलन गंदा है वह गंदे कामों में लगा रहे। मगर जो नेक है वह और भी ज़्यादा नेकी के कामों में लगा रहे और जो पवित्र है वह और भी ज़्यादा पवित्र होता जाए।

12 ‘देख! मैं बहुत जल्द आ रहा हूँ
और हरेक को उसके काम के हिसाब से
जो इनाम मैं देता हूँ वह मेरे पास है।
13 मैं ही अल्फा और ओमेगा* हूँ, मैं
ही पहला और आखिरी, शुरूआत और
अंत हूँ। 14 सुखी हैं वे जिन्होंने अपने
चोगे धोए हैं, ताकि उन्हें जीवन देनेवाले
पेड़ों का फल खाने का अधिकार मिले,
ताकि वे इस नगरी में इसके फाटकों से
होकर दाखिल हो सकें। 15 मगर,
कुत्ते, भूत-विद्या के काम करनेवाले,
व्यभिचारी, हत्यारे, मूरतों को पूजनेवाले,
छल-कपट की बातें पसंद करनेवाले और
उनमें लगे रहनेवाले इस नगरी के बाहर
होंगे।’

16 ‘मुझ यीशु ने तुम्हें ये बातें बताने के लिए अपना स्वर्गदूत भेजा, जिससे मंडलियों का भला हो। मैं ही दाविद की जड़ और उसकी संतान हूँ और सुबह का चमकता तारा हूँ।’ ”

17 और पवित्र शक्ति और वह दुल्हन कहती रहती हैं: “आ!” और सुननेवाला हर कोई कहे: “आ!” और हर कोई जो प्यासा हो वह आए। जो कोई चाहे वह जीवन देनेवाला पानी मुफ्त में ले ले।

18 मैं इस किताब के भविष्यवाणी
के वचनों को सुननेवाले हर किसी को
यह गवाही देता हूँ: अगर कोई इन बातों
में कुछ जोड़ता है, तो परमेश्वर इस
किताब में लिखे कहर उस पर लाएगा।
19 और अगर कोई भविष्यवाणी की
इस किताब के वचनों में से कुछ बातें
निकालेगा, तो परमेश्वर जीवन देनेवाले
पेड़ों में से और उस पवित्र नगरी में से,
जिनके बारे में इस किताब में लिखा है,
उसका हिस्सा निकाल देगा।

20 वह जो इन बातों की गवाही देता है, वह कहता है, ‘हाँ; मैं बहुत जल्द आ रहा हूँ।’

“आमीन! प्रभु यीशु, आ।”

21 मेरी दुआ है कि प्रभु यीशु मसीह की महा-कृपा पवित्र जनों पर होती रहे।

प्रका 22:13* अल्फा और ओमेगा, यूनानी वर्णमाला के पहले और आखिरी अक्षर हैं।

बाइबल के यूनानी शास्त्र की किताबों की सूची ईसवी सन् के दौरान लिखी गयीं

(कुछ तारीखों [और लिखने की जगहों] के सही होने की बात पक्के तौर पर नहीं कही जा सकती। निशान पू. का मतलब है पूर्व या पहले, और क. का मतलब है "करीब" या "लगभग।")

किताब का नाम	लेखक	लिखने की जगह	लिखना पूरा हुआ (ई.स.)
मत्ती	मत्ती	पैलिस्टाइन	क. 41
मरकुस	मरकुस	रोम	क. 60-65
लूका	लूका	कैसरिया	क. 56-58
यूहन्ना	प्रेषित यूहन्ना	इफिसुस, या आस-पास	क. 98
प्रेषितों	लूका	रोम	क. 61
रोमियों	पौलुस	कुरिंथ	क. 56
1 कुरिंथियों	पौलुस	इफिसुस	क. 55
2 कुरिंथियों	पौलुस	मकिदुनिया	क. 55
गलातियों	पौलुस	कुरिंथ या सीरिया के अंताकिया	क. 50-52
इफिसियों	पौलुस	रोम	क. 60-61
फिलिप्पियों	पौलुस	रोम	क. 60-61
कुलुस्सियों	पौलुस	रोम	क. 60-61
1 थिस्सलुनीकियों	पौलुस	कुरिंथ	क. 50
2 थिस्सलुनीकियों	पौलुस	कुरिंथ	क. 51
1 तीमुथियुस	पौलुस	मकिदुनिया	क. 61-64
2 तीमुथियुस	पौलुस	रोम	क. 65
तीतुस	पौलुस	मकिदुनिया (?)	क. 61-64
फिलेमोन	पौलुस	रोम	क. 60-61
इब्रानियों	पौलुस	रोम	क. 61
याकूब	याकूब (यीशु का भाई)	यरूशलेम	62 से पू.
1 पतरस	पतरस	बैबिलोन	क. 62-64
2 पतरस	पतरस	बैबिलोन (?)	क. 64
1 यूहन्ना	प्रेषित यूहन्ना	इफिसुस या आस-पास	क. 98
2 यूहन्ना	प्रेषित यूहन्ना	इफिसुस या आस-पास	क. 98
3 यूहन्ना	प्रेषित यूहन्ना	इफिसुस या आस-पास	क. 98
यहूदा	यहूदा (यीशु का भाई)	पैलिस्टाइन (?)	क. 65
प्रकाशितवाक्य	प्रेषित यूहन्ना	पतमुस	क. 96

बाइबल के शब्दों की सूची

बाइबल की किताबों के संक्षिप्त नामों की सूची के लिए पेज 6 देखिए।

बाइबल की किताबों के संक्षिप्त नामों की सूची के लिए पेज 6 देखिए।

अ

अंग, इफि 3:6 शरीर के **अं.**
1कुरिं 6:15 तुम्हारे शरीर मसीह के **अं.** हैं?
1कुरिं 12:27 तुम मसीह का शरीर और **अं.** हो
1कुरिं 12:18.
अंगों, रोमि 6:13 अपने **अं.** को परमेश्वर के हवाले कर दो
रोमि 7:23 पाप का कानून जो मेरे **अं.** में है
कुलु 3:5; याकू 3:6; 4:1.
अंगरक्षक, फिलि 1:13 **अं.** दल में
अंगारों, रोमि 12:20 उसके सिर पर **अं.** का ढेर लगाएगा
अंगूर, मत्ती 7:16; प्रका 14:18.
अंगूर की बेल, प्रका 14:18 पृथ्वी की **अं.** इकट्ठे कर
मत्ती 26:29.
अंगूरों का बाग, मत्ती 20:1 **अं.**, मज़दूर लगाए
लूका 20:9 एक आदमी ने **अं.** लगाया और देकर
मत्ती 21:28.
अंजाम, रोमि 1:27 अपनी करतूतों का **अं.**
1यूह 5:16, 17 ऐसा पाप जिसका **अं.** मौत नहीं
अंजीर के पेड़, मत्ती 24:32 **अं.** की मिसाल
मत्ती 21:19, 20, 21; लूका 13:6, 7.
अंत, मत्ती 10:22 जो **अं.** तक धीरज धरेगा
मत्ती 24:14 इसके बाद **अं.** आ जाएगा
1पत 4:7 सब बातों का **अं.** पास आ गया है
अंतर, 1कुरिं 14:7 सुर-तान में **अं.**
अंदर, लूका 11:39 **अं.** से लूट-खसोट से भरे हो
रोमि 7:22 मेरे **अं.** का इंसान
2कुरिं 4:16 हमारा **अं.** का इंसान नया होता जा रहा
इफि 3:16 तुम्हारे **अं.** का इंसान शक्तिशाली
अंदरूनी समझ, रोमि 3:11 कोई नहीं जो **अं.** रखता हो
अंधकार, यूह 3:19 लोगों ने **अं.** से प्यार किया
रोमि 1:21 हृदय **अं.** से भर गया
1थिस्स 5:4 तुम **अं.** में नहीं कि वह दिन
1पत 2:9 तुम्हें **अं.** से निकालकर
1यूह 1:5 उसमें कुछ भी **अं.** नहीं
मत्ती 6:23; लूका 11:36; इफि 4:18.
अंधाधुंध, 1कुरिं 9:26 मैं **अं.** नहीं दौड़ता
अंधे, मत्ती 15:14 **अं.** हैं, दूसरों को राह दिखाते हैं
2कुरिं 4:4 इस ज़माने के ईश्वर ने **अं.**
यूह 12:40; 1यूह 2:11.
अंधेरा, रोमि 11:10 उनकी आँखों में **अं.** छा जाए
यूह 6:17; 2कुरिं 6:14; 2पत 1:19.
अंधों, मत्ती 23:24.
अकसर, लूका 5:33.
अकाल, मत्ती 24:7 कई जगहों पर **अ.**
मर 13:8; लूका 21:11; प्रका 6:8; 18:8.
अकेले, गला 2:2 सुनाता हूँ, **अ.** में
अक्विला, प्रेषि 18:2, 26; रोमि 16:3; 2तीमु 4:19.
अगबुस, प्रेषि 11:28; 21:10.
अगुवाई, इब्रा 13:7, 17 तुम्हारे बीच **अ.** करते हैं
1थिस्स 5:12 **अ.** करते हैं, उनकी कदर
रोमि 12:8; 1तीमु 5:17.
अचानक, 1थिस्स 5:3 **अ.** उन पर विनाश
अच्छा, मर 10:18 कोई **अ.** नहीं, सिवा परमेश्वर
लूका 6:45 **अ.** इंसान अच्छाई से
लूका 18:19 तू मुझे **अ.** क्यों कहता है?
रोमि 7:19 जो **अ.** काम मैं चाहता हूँ नहीं कर पाता
याकू 5:15 बीमार को **अ.** कर देगी
मत्ती 25:21; यूह 5:29; रोमि 13:3; 1यूह 3:22.
अच्छा लगता, 1कुरिं 15:38.
अच्छा लगा, 1कुरिं 12:18 हर अंग की, जैसा उसे **अ.**
इफि 1:5; कुलु 1:27.
अच्छा वक्त, गला 6:10 **अ.** चल रहा है, करें
अच्छा है, मत्ती 19:10 शादी न करना **अ.**
अच्छी, रोमि 10:15 **अ.** बातों की खुशखबरी
अच्छी भावना, फिलि 1:15 मसीह का प्रचार **अ.** से
अच्छे काम, 1पत 2:15; 4:19.
अजगर, प्रका 12:17 **अ.** स्त्री पर क्रोधित हुआ
प्रका 12:3, 7, 9; 13:2; 16:13; 20:2.
अजनबी, इब्रा 11:13 वे **अ.** हैं
मत्ती 25:35; यूह 10:5; इफि 2:12.
अज्ञानता, प्रेषि 17:30 **अ.** के वक्त को नज़रअंदाज़
अटल, 1कुरिं 15:58 **अ.** बनो, डटे रहो
2कुरिं 1:7 तुम्हारे बारे में आशा **अ.** है
इब्रा 6:17 कितनी **अ.** है
इब्रा 6:18 दो **अ.** बातों
अटल-कृपा, प्रेषि 13:34 **अ.** जिनका वादा दाविद से
अड्डा, मत्ती 21:13 इसे लुटेरों का **अ.** बना रहे हो
प्रका 18:2.
अथाह, रोमि 11:33 परमेश्वर की दौलत **अ.** है

अथाह-कुंड, प्रका 20:3 उसे **अ.** में फेंक दिया
लूका 8:31; रोमि 10:7; प्रका 9:1, 11; 11:7; 17:8.
अदना इंसान, प्रेषि 14:15 तुम्हारी तरह **अ.**
अदा, रोमि 13:6 इसी वजह से तुम कर भी **अ.** करते हो
अदालत, मत्ती 5:22 **अ.** के सामने जवाब देना पड़ेगा
1कुरिं 4:3 इंसानी **अ.** जाँच-पड़ताल करे
1कुरिं 6:1 **अ.** में दुष्ट लोगों के सामने जाने की जुर्रत
1कुरिं 6:6 एक भाई दूसरे भाई को **अ.** ले जाता है
मत्ती 5:40; प्रेषि 17:34.
अदालतों, याकू 2:6 अमीर तुम्हें घसीटकर **अ.** में ले जाते
मत्ती 10:17.
अदृश्य, कुलु 1:15 वह **अ.** परमेश्वर की छवि है
1तीमु 1:17 युग-युग के राजा, **अ.**
इब्रा 11:27 **अ.** परमेश्वर को मानो देखता हुआ
अधिकार, मत्ती 28:18 सारा **अ.** मुझे दिया गया है
यूह 5:27 न्याय करने का **अ.** इंसान के बेटे को दिया
यूह 10:18 मुझे इसे देने का **अ.** है
यूह 19:11 ऊपर से न दिया गया होता, तो **अ.** न होता
प्रेषि 1:7 पिता ने अपने **अ.** में रखा
रोमि 6:9 अब मौत का उस पर कोई **अ.** नहीं
रोमि 6:14 पाप का तुम पर **अ.** न हो
रोमि 13:2 जो **अ.** का विरोध करता है, वह
1कुरिं 7:4 पत्नी को अपने शरीर पर **अ.** नहीं
1कुरिं 15:24 सारे **अ.** को मिटा चुका होगा
इफि 1:21 हर सरकार और **अ.** से ऊपर
इफि 2:2 फितरत के **अ.** पर राज
कुलु 1:13 हमें अंधकार के **अ.** से छुड़ाया
1पत 3:22 **अ.** और ताकतें अधीन की गयी
मत्ती 7:29; 20:25; लूका 4:6; 12:5; यहू 8; प्रका 17:12.
अधिकार खत्म हो जाए, रोमि 6:6 पापी शरीर का **अ.**
अधिकार रखनेवालों, 2पत 2:10 **अ.** को नीची नज़रों से
अधिकारी, मत्ती 20:35 दुनिया के **अ.** हुक्म चलाते हैं
अधिकारियों, यूह 7:48 क्या धर्म **अ.** में से एक ने भी
यूह 12:42 धर्म **अ.** में से बहुतों ने विश्वास
रोमि 13:1 **अ.** के अधीन रहे
इफि 6:12 हमारी कुश्ती **अ.** से
प्रेषि 3:17; 4:26; 17:6; कुलु 2:15; तीतु 3:1.
अधीन, रोमि 8:20 सृष्टि व्यर्थता के **अ.** की गयी
रोमि 10:3 **अ.** न हुए
रोमि 13:1 अधिकारियों के **अ.** रहे
2कुरिं 9:13 खुशखबरी के **अ.**
इफि 5:22 पत्नियाँ पति के **अ.** रहें जैसे
इफि 5:24 मंडली मसीह के **अ.** है
कुलु 3:18 पत्नियो, अपने-अपने पति के **अ.** रहो
इब्रा 2:8 सबकुछ उसके **अ.** कर दिया
इब्रा 13:17 जो अगुवाई करते हैं उनके **अ.** रहो
तीतु 2:5 अपने-अपने पति के **अ.**
1पत 2:13 इंसान के बनाए हर अधिकार के **अ.**
1पत 3:1 पत्नियो, अपने-अपने पति के **अ.** रहो
1पत 3:22 स्वर्गदूत और ताकतें उसके **अ.** की गयी
1पत 5:5 नौजवान, प्राचीनों के **अ.** रहें
लूका 2:51; 10:20; 1कुरिं 14:34; 1तीमु 3:4; तीतु 3:1; इब्रा 12:9.
अधीन काम करनेवाले, 1कुरिं 4:1 हमें मसीह के **अ.**
अधूरा, 1कुरिं 13:10 जो **अ.** है वह मिट जाएगा
अधूरी, 1कुरिं 13:9 हम **अ.** भविष्यवाणी करते हैं
अनंत, रोमि 1:20 **अ.** शक्ति और सचमुच वही
अनंत परमेश्वर, 1पत 1:23 **अ.** का वचन
अनगिनत, इब्रा 11:12 समुद्र किनारे की रेत जैसी **अ.**
अनछूआ, रोमि 15:23 कोई **अ.** इलाका नहीं
अनजान, 2कुरिं 2:11 उसकी चालबाज़ियों से **अ.** नहीं
1थिस्स 4:13 उनके मामले में **अ.** नहीं जो
इब्रा 5:13 वचन से **अ.**
अनजाने, प्रेषि 17:23 **अ.** परमेश्वर के लिए
1तीमु 1:13 क्योंकि मैंने **अ.** में किया था
इब्रा 5:2 उन लोगों के साथ दया से पेश आने जो **अ.** में
इब्रा 9:7 लोगों के उन पापों के लिए जो **अ.** में किए गए
इब्रा 13:2 **अ.** में सत्कार किया
प्रेषि 3:17; इफि 4:18.
अनदेखी, 2कुरिं 4:18 नज़र, **अ.** चीज़ों पर
अनदेखे, रोमि 1:20 उसके **अ.** गुण
अनमोल, 1पत 1:7 विश्वास सोने से कहीं **अ.**
1पत 3:4 परमेश्वर की नज़रों में **अ.**
2तीमु 1:14 **अ.** अमानत की हिफाज़त
2पत 1:4.
अनश्वर, रोमि 1:23 **अ.** परमेश्वर की महिमा
1कुरिं 15:42 **अ.** दशा में जी उठाया जाता
1कुरिं 15:52 मरे हुए **अ.** दशा में जी उठाए जाएँगे
1तीमु 1:17 युग-युग के राजा, **अ.**
1पत 1:4 विरासत जो **अ.** है और कभी नहीं मिटेगी
1पत 1:23 नश्वर नहीं बल्कि **अ.** बीज के ज़रिए
अनश्वरता, रोमि 2:7 **अ.** की खोज करते
1कुरिं 15:50 न नश्वरता **अ.** की वारिस होती है
2तीमु 1:10 जीवन और **अ.** कैसे मिलेगी

अनसुनी, इब्रा 12:25.
अनाड़ी, 2कुरिं 11:6 मैं बोलने में **अ.**
अनाथों, याकू 1:27 **अ.** और विधवाओं की देखभाल
अनादर, 1कुरिं 15:43 **अ.** की दशा में बोया जाता
अनुग्रह, लूका 2:52 यीशु पर **अ.** बढ़ता गया
अनुवाद, 1कुरिं 14:13 प्रार्थना करे कि वह **अ.** कर सके
1कुरिं 14:27 कोई **अ.** कर
यूह 1:42.
अनुवाद करनेवाला, 1कुरिं 14:28 **अ.** न हो तो चुप रहें
अनुवाद करनेवाले, 1कुरिं 12:30 क्या सभी **अ.** हैं?
अनुशासन, 1कुरिं 11:32 यहोवा से **अ.** पाते हैं
2तीमु 3:16 परमेश्वर के स्तरों के मुताबिक **अ.** देने
इब्रा 12:5 **अ.** को हल्की बात न समझ
इब्रा 12:6 यहोवा जिससे प्यार करता है उसे **अ.**
इब्रा 12:11 किसी भी तरह का **अ.** सुखद नहीं लगता
इफि 6:4.
अन्तिपास, प्रका 2:13 विश्वासयोग्य गवाह **अ.**
अन्द्रियास, मत्ती 4:18; यूह 12:22; प्रेषि 1:13.
अन्याय, रोमि 9:14 क्या परमेश्वर **अ.** करता है?
प्रका 18:5.
अन्यायी, इब्रा 6:10 परमेश्वर **अ.** नहीं कि तुम्हारे काम
रोमि 3:5.
अपना, यूह 15:19 दुनिया जो उसका **अ.** है उसे
1कुरिं 10:24.
अपनाया, यूह 1:11 उसके अपने ही लोगों ने उसे न **अ.**
अपनी, 2कुरिं 10:12 **अ.** गिनती या तुलना
मत्ती 20:15; यूह 8:44.
अपनी आँखों से देखे, 1पत 2:12 उन्होंने **अ.**
अपनी जान, लूका 9:25 जहान हासिल कर ले मगर **अ.**
अपनी तरफ से, 2कुरिं 3:5 योग्यता **अ.** नहीं है
यूह 14:10; 18:34.
अपनी मरज़ी से, 1कुरिं 9:17 अगर **अ.**, तो मेरे लिए
अपने, फिलि 2:4 सिर्फ **अ.** भले की फिक्र में
अपने काम से काम रखो, 1थिस्स 4:11.
अपने साथ, यूह 17:5 मुझे **अ.** महिमा दे
अपमान, 1कुरिं 14:35 स्त्री के लिए **अ.** की बात है
1कुरिं 11:14.
अपराध, मत्ती 6:14 दूसरों के **अ.** माफ करोगे
प्रेषि 24:16.
अपहरण करनेवाले, 1तीमु 1:10 **अ.**, झूठे
अपार, रोमि 9:23 अपनी **अ.** महिमा ज़ाहिर कर सके
2कुरिं 4:17 **अ.** महिमा जो बेमिसाल है
अपार खुशी, मर 5:42; प्रेषि 3:10.
अपुल्लयोन, प्रका 9:11 यूनानी में नाम **अ.** है
अब की, 2पत 2:20 **अ.** हालत बदतर
अबद्दोन, प्रका 9:11 राजा, नाम **अ.** है
अबिय्याह, लूका 1:5.
अब्बा, रोमि 8:15 हम **अ.**, हे पिता! पुकारते हैं
गला 4:6 पवित्र शक्ति **अ.**, पिता! पुकारती है
अब्राहम, मत्ती 8:11 राज में **अ.** के साथ मेज़ से
गला 3:29 तुम वाकई **अ.** का वंश और वारिस हो
इब्रा 11:8 विश्वास ही से **अ.** ने, आज्ञा मानी और
याकू 2:21 क्या **अ.** को नेक नहीं ठहराया गया था
मत्ती 22:32; यूह 8:39; रोमि 4:3; इब्रा 6:13.
अभक्ति, रोमि 11:26 याकूब से **अ.** के काम दूर करेगा
अभिषेक, 2कुरिं 1:21 जिसने हमारा **अ.** किया
इब्रा 1:9 परमेश्वर ने हर्ष के तेल से तेरा **अ.** किया
1यूह 2:20 **अ.** पवित्र परमेश्वर ने किया
अमरता, 1कुरिं 15:53 मरनहार **अ.** को पहनना है
1तीमु 6:16 सिर्फ उसी के पास **अ.** है
अमल में लाया गया है, इफि 3:9 पवित्र रहस्य **अ.**
अमानत, 2तीमु 1:14 इस अनमोल **अ.** की हिफाज़त कर
अमीर, 2कुरिं 6:10 बहुतों को **अ.** बनाते हैं
2कुरिं 8:9 **अ.** होते हुए भी गरीब बना
1तीमु 6:9 हर हाल में **अ.** बनना चाहते हैं, फँस जाते हैं
प्रका 3:17 तू कहता है: **अ.** हूँ मगर तू गरीब है
अमोरा, मत्ती 10:15 **अ.** का हाल ज़्यादा सहने लायक
रोमि 9:29; यहू 7.
अयोग्य, 1कुरिं 9:27 ताकि मैं **अ.** न ठहरूँ
1कुरिं 11:27 **अ.** दशा में प्रभु के प्याले से
अय्यूब, याकू 5:11 तुमने **अ.** के धीरज के बारे में सुना है
अरतिमिस, प्रेषि 19:27, 34, 35.
अरब, गला 1:17; 4:25.
अरबी, प्रेषि 2:11.
अरिमतियाह, मत्ती 27:57; लूका 23:51;
यूह 19:38.
अरियुपगुस, प्रेषि 17:19, 22, 34.
अर्घ, 2तीमु 4:6 **अ.** की तरह
फिलि 2:17.
अर्पित, रोमि 12:1 बलिदान के तौर पर **अ.** करो
अलग, मत्ती 25:32 वह लोगों को **अ.** करेगा
प्रेषि 19:9 उसने चेलों को उनसे **अ.** कर लिया
रोमि 8:35 प्यार से **अ.** कर सकता है?
रोमि 8:39 परमेश्वर के प्यार से **अ.** जो मसीह में है
1कुरिं 7:10 पत्नी को पति से **अ.** नहीं होना चाहिए

2कुरिं 6:17 खुद को **अ.** करो और छूना बंद करो
मत्ती 19:6; मर 10:9; 1कुरिं 7:15.
अलग-अलग, 1कुरिं 12:27 उसके **अ.** अंग हो
इफि 4:16 **अ.** अंग काम पूरा करते हैं
अलविदा, लूका 9:61; प्रेषि 18:18; 2कुरिं 2:13.
अविनाशी, इब्रा 7:16 उस शक्‍ति जिससे **अ.** जीवन
अविवाहित, 1कुरिं 7:32 **अ.** आदमी प्रभु की सेवा की
1कुरिं 7:34 **अ.** और कुँवारी स्त्री
अविवाहितों, 1कुरिं 7:8 मैं **अ.** से कहता हूँ
अविश्‍वास, 1तीमु 1:13.
अविश्‍वासियों, 1कुरिं 6:6 **अ.** के सामने?
1कुरिं 14:22 दूसरी भाषाएँ **अ.** के लिए निशानी हैं
2कुरिं 4:4 **अ.** के मन अंधे कर दिए
2कुरिं 6:14 **अ.** के साथ बेमेल जूए में न जुतो
2कुरिं 6:15 विश्‍वासयोग्य इंसान का **अ.** के साथ क्या
अशुद्ध, रोमि 14:14 कोई भी चीज़ अपने आप में **अ.** नहीं
1कुरिं 7:14 बच्चे असल में **अ.** होते
2कुरिं 6:17 **अ.** चीज़ को छूना बंद करो
1थिस्स 4:7 हमें **अ.** कामों की छूट देने के लिए नहीं
प्रका 16:13 तीन **अ.** प्रेरित वचन
प्रेषि 10:14; प्रका 18:2.
अशुद्धता, रोमि 1:24 उन्हें **अ.** के हवाले छोड़ दिया
याकू 1:21 हर तरह की **अ.** उतार फेंको
रोमि 6:19; इफि 5:3.
अश्‍लील, रोमि 1:27; इफि 5:4; कुलु 3:8.
असमंजस, गला 4:20 मैं तुम्हारी वजह से **अ.** में हूँ
असर, मत्ती 4:1.
असल, इब्रा 9:24 परम-पवित्र जो **अ.** की नकल है
असलियतों, इब्रा 11:1 उन **अ.** का सबूत
असली, 1तीमु 6:19 **अ.** ज़िंदगी पर मज़बूत पकड़
रोमि 11:24.
असली रूप, इब्रा 10:1 कानून छाया है, **अ.** नहीं
असिद्धता, रोमि 8:3 **अ.** की वजह से
अस्वाभाविक, 1कुरिं 6:9 **अ.** संभोग के लिए रखे गए
यहू 7 **अ.** संभोग के लिए दूसरे शरीर के पीछे लग गए
अहंकार, फिलि 2:3 **अ.** की वजह से कुछ न करो
अहंकारी, गला 5:26 **अ.** न बनें
अहमियत, फिलि 1:10 ज़्यादा **अ.** रखनेवाली बातें

आ

आँख, प्रका 1:7 हर **आँ.** उसे देखेगी
आँखों, 1कुरिं 2:9 **आँ.** ने नहीं देखीं और
1यूह 2:16 **आँ.** की ख्वाहिशें और दिखावा
प्रका 21:4 उनकी **आँ.** से हर आँसू पोंछ देगा
मत्ती 13:16; मर 8:18.
आँख के बदले आँख, मत्ती 5:38.
आँखें, इफि 1:18 तुम्हारे मन की **आँ.** खोलकर
1पत 3:12 यहोवा की **आँ.** नेक लोगों पर
आँखों-देखी, 2कुरिं 5:7 **आँ.** चीज़ों से नहीं बल्कि
आँधी, प्रेषि 2:2 तेज़ **आँ.** जैसी आवाज़
आँसू, प्रका 21:4 उनकी आँखों से हर **आँ.** पोंछ देगा
लूका 7:38; इब्रा 5:7; प्रका 7:17.
आइने, 1कुरिं 13:12; याकू 1:23.
आए, मत्ती 6:10 तेरा राज **आ.**
आकार, 1कुरिं 13:12 हम धुंधला **आ.** देखते हैं
आकाश, 2पत 3:5 उस वक्‍त का **आ.** कायम हुआ और
2पत 3:10 **आ.** फुफकार के साथ मिट जाएगा
2पत 3:13 नए **आ.** और नयी पृथ्वी का
मत्ती 24:35; लूका 17:24.
आकाश की ज्योतियों, याकू 1:17 **आ.** के पिता
आखिरी, मत्ती 19:30 बहुत-से जो पहले हैं वे **आ.** होंगे
1कुरिं 15:26 **आ.** दुश्‍मन जो मिटा दिया जाएगा
1कुरिं 15:45 **आ.** आदम जीवन देनेवाला
प्रका 22:13 मैं ही पहला और **आ.**
मत्ती 20:8, 16; 1यूह 2:18; प्रका 1:17.
आखिरी दिन, यूह 6:54 **आ.** उसे जी उठाऊँगा
आखिरी दिनों, 2तीमु 3:1 **आ.** में संकटों से भरा वक्‍त
याकू 5:3 **आ.** के लिए आग जमा की
2पत 3:3 **आ.** में खिल्ली उड़ानेवाले आएँगे
यूह 11:24; 12:48.
आखिरी वक्‍त, मत्ती 24:3 दुनिया की व्यवस्था के **आ.**
मत्ती 28:20 मैं व्यवस्था के **आ.** तक तुम्हारे साथ हूँ
1कुरिं 10:11 दुनिया की व्यवस्थाओं का **आ.**
इब्रा 9:26 दुनिया की व्यवस्थाओं के **आ.**
आग, इब्रा 12:29 परमेश्‍वर **आ.** भी है जो
2पत 3:7 **आ.** से भस्म किए जाने के लिए रखा गया
प्रका 17:16 उसे **आ.** में पूरी तरह जला देंगे
मत्ती 3:11, 12; 1कुरिं 3:13.
आग की झील, प्रका 20:14, 15.
आग जैसा लाल, प्रका 6:4; 12:3.
आग-बबूला, कुलु 3:19 उन पर गुस्से से **आ.** मत हो
आगे, 1थिस्स 4:15 हम उनसे **आ.** न बढ़ेंगे जो सो गए हैं
आगे की जगहों, मत्ती 23:6; लूका 11:43; 20:46.
आज, मत्ती 6:11; लूका 4:21; 23:43.
आज़माइश, इब्रा 11:37 पत्थरवाह किया गया, **आ.** हुई
आज़माए, इब्रा 11:36 इस तरह **आ.** गए

आज़ाद, यूह 8:32 सच्चाई तुम्हें **आ.** करेगी
रोमि 6:18 तुम्हें पाप से **आ.** किया गया
रोमि 8:21 सृष्टि गुलामी से **आ.** होकर
1कुरिं 7:22 दास प्रभु में **आ.** है
1कुरिं 7:27 **आ.** होने की कोशिश बंद कर
गला 3:28 न गुलाम न **आ.**
गला 4:26 ऊपर की यरूशलेम **आ.** है और वह
गला 5:13 भाइयो, तुम्हें **आ.** होने के लिए बुलाया गया
इब्रा 2:15 सभी को **आ.** करे जो गुलामी में
इफि 6:8; कुलु 3:11.
आज़ादी, रोमि 8:21 परमेश्वर के बच्चे होने की **आ.**
1कुरिं 10:29 मेरी **आ.** दूसरे से क्यों परखी जाए
2कुरिं 3:17 यहोवा की पवित्र शक्ति है, वहाँ **आ.** है
गला 2:4 ताकि हमें जो **आ.** है
गला 5:1 ऐसी **आ.** के लिए मसीह ने हमें आज़ाद किया
याकू 1:25 **आ.** दिलानेवाले सिद्ध कानून
1पत 2:16 अपनी **आ.** को बुरे के लिए
2पत 2:19 वे उन्हें **आ.** दिलाने का वादा करते हैं
आज्ञा, मत्ती 15:3 **आ.** तोड़ते हो
मर 12:28 पहले कौन-सी **आ.** आती है?
यूह 12:50 उसकी **आ.** का मतलब
1यूह 2:7 मैं तुम्हें कोई नयी **आ.** नहीं लिख रहा
मर 12:31; यूह 10:18; प्रेषि 26:12; 1यूह 3:23; प्रका 12:17.
आज्ञाएँ, यूह 14:21 जिसके पास मेरी **आ.** हैं और जो
रोमि 13:9 **आ.**, तू खून न करना
1यूह 5:3 और उसकी **आ.** हम पर बोझ नहीं
आज्ञाओं, मत्ती 15:9 इंसानों की **आ.** को
मत्ती 22:40 इन्हीं दो **आ.** पर पूरा कानून आधारित
यूह 15:17.
आज्ञाओं के खिलाफ, इब्रा 3:18 जिन्होंने **आ.** काम किया
आज्ञा तोड़ने, इब्रा 2:2 **आ.** की सज़ा
आज्ञा न मानने, रोमि 5:19 एक आदमी के **आ.** से
आज्ञा न माननेवालों, इफि 2:2 **आ.** में काम करती हुई
2कुरिं 10:6; इफि 5:6.
आज्ञा नहीं मानते, रोमि 10:21 जो **आ.**
आज्ञा-पालन, रोमि 6:16 **आ.**, जिसका नतीजा
आज्ञा मानते, इब्रा 5:9 उनको उद्धार जो **आ.** हैं
प्रेषि 5:32.
आज्ञा मानना, प्रेषि 5:29 परमेश्वर की **आ.**
मत्ती 8:27; प्रेषि 7:39; रोमि 2:8; 6:17; 16:26; 2कुरिं 2:9; 7:15; 106; 1पत 1:2, 14, 22; 3:1, 6; 4:17.
आज्ञा माननी, इब्रा 5:8 दुःख सह-सहकर **आ.** सीखी
आज्ञा मानने, रोमि 5:19 एक आदमी के **आ.** से
रोमि 6:16 तुम किसी की **आ.** के लिए, तो उसी के
आज्ञा माननेवाला, 2कुरिं 10:5 विचार को मसीह की **आ.**
फिलि 2:8 इस हद तक **आ.** बना कि मौत सह ली
आज्ञा मानी, इब्रा 11:8 अब्राहम ने **आ.** और निकल पड़ा
आज्ञा मानें, तीतु 3:1 सरकारों की **आ.**
आज्ञा मानो, इफि 6:5 तुम्हारे मालिक हैं, उनकी **आ.**
इब्रा 13:17 जो अगुवाई करते हैं उनकी **आ.**
आटा, 1कुरिं 5:7 नया **आ.** बन सको
आटे, गला 5:9 ज़रा-सा खमीर पूरे गुँधे हुए **आ.** को
आठ, 1पत 3:20 **आ.** जन बच निकले
लूका 2:21.
आड़, 1पत 2:16 आज़ादी, बुरे काम करने के लिए **आ.**
आता, मर 13:26 महिमा के साथ बादलों में **आ.**
1कुरिं 11:26 जब तक नहीं **आ.** उसकी मौत
मत्ती 16:28.
आत्मा, यूह 4:24 परमेश्वर **आ.** है
आत्मिक, 1कुरिं 15:44 **आ.** शरीर जी उठाया जाता है
आदत पड़ जाती, 1तीमु 5:13 घूमने की **आ.** है
आदतें, 1कुरिं 15:33 बुरी सोहबत **आ.** बिगाड़ देती हैं
आदम, 1कुरिं 15:22 **आ.** में सभी मर रहे हैं
1कुरिं 15:45 पहला आदमी **आ.** जीवित प्राणी बना
लूका 3:38; रोमि 5:14; 1तीमु 2:14.
आदमी, रोमि 5:12 एक **आ.** से पाप दुनिया में आया
1कुरिं 15:47 पहला **आ.** धरती से था
इफि 4:13 पूरी तरह से विकसित **आ.** की तरह
आदर, लूका 18:20 पिता और माँ का **आ.** करना
रोमि 9:21 एक बर्तन **आ.** के काम के लिए
रोमि 12:10 एक-दूसरे का **आ.** करने में
रोमि 13:7 जिसे **आ.** देना चाहिए उसे **आ.** दो
इफि 5:33 पत्नी पति का **आ.** करे
इफि 6:2 अपने पिता और अपनी माँ का **आ.** कर
इब्रा 5:4 **आ.** का यह पद अपने आप नहीं ले लेता
इब्रा 12:9 पिता, हम उनका **आ.** करते थे
1पत 3:2 पवित्र चालचलन और गहरे **आ.**
1पत 3:15 कोमल स्वभाव और गहरे **आ.** के साथ
1तीमु 1:17; 6:16; इब्रा 2:9; 2पत 2:11; प्रका 4:11.
आदर्श, 1पत 2:21 मसीह तुम्हारे लिए एक **आ.**
आदी, 1कुरिं 8:7 मूर्तियों के **आ.** हैं
आदेश, रोमि 1:32 परमेश्वर के खरे **आ.** को
कुलु 2:14 दस्तावेज़ जिसमें **आ.** थे

कुलु 2:22 **आ.** इंसानों के?
1थिस्स 4:2 हमने तुम्हें क्या-क्या **आ.** पहुँचाए थे
1तीमु 1:5 इस **आ.** का मकसद है प्यार
1तीमु 1:18 तीमुथियुस, मैं तुझे यह **आ.** देता हूँ
तीतु 1:5 जैसे मैंने **आ.** दिया था, तू ठहरा सके
प्रेषि 16:4; कुलु 2:20.
आधार, रोमि 8:20 आशा के **आ.** पर
1कुरिं 11:25 नए करार का जो मेरे लहू के **आ.** पर
फिलि 3:9 परमेश्‍वर विश्‍वास के **आ.** पर देता है
आनंद, मत्ती 5:12 **आ.** मनाना और खुशी के मारे
प्रेषि 14:17 दिलों को **आ.** से भरता रहा
आनंदित, 1तीमु 1:11 **आ.** परमेश्‍वर की खुशखबरी
आने, लूका 12:45 मेरा मालिक **आ.** में देर कर रहा है
आनेवाली, रोमि 8:38 न आज की, न **आ.** चीज़ें
इब्रा 10:1; 13:14.
आनेवाले, प्रेषि 17:21 वहाँ **आ.** विदेशी
आ पड़े, 1थिस्स 5:4 दिन तुम पर इस तरह **आ.**
आपसी, 1कुरिं 7:5 सिर्फ **आ.** रज़ामंदी से
आम, 1कुरिं 14:24 अगर **आ.** इंसान अंदर आता है
2कुरिं 4:7 **आ.** इंसानों की ताकत से बढ़कर
आमीन, 1कुरिं 14:16 प्रार्थना के लिए **आ.**
प्रका 3:14 **आ.**, विश्‍वासयोग्य और सच्चा गवाह
2कुरिं 1:20.
आरे, इब्रा 11:37 **आ.** से चीरा गया
आलस, रोमि 12:11 काम में **आ.** न दिखाओ
आलसी, मत्ती 25:26 दुष्ट और **आ.** दास
तीतु 1:12 खतरनाक, **आ.** और पेटू
इब्रा 6:12.
आलोचना, 1तीमु 5:1 किसी बुज़ुर्ग की **आ.** न कर
आवाज़, यूह 5:28 सभी जो कब्रों में हैं उसकी **आ.** सुनेंगे
यूह 10:27 मेरी भेड़ें मेरी **आ.** सुनती हैं
आशा, मत्ती 12:21 राष्ट्र उसके नाम पर **आ.** रखेंगे
प्रेषि 26:7 इसी **आ.** के बारे में मुझ पर इलज़ाम
रोमि 5:5 **आ.** शर्मिंदा नहीं होने देती
रोमि 8:20 **आ.** के आधार पर इसे अधीन किया
रोमि 8:24 **आ.** दिखायी पड़ जाती है तो **आ.** नहीं
रोमि 15:4 धीरज के ज़रिए हम **आ.** रख सकें
इफि 2:12 कोई **आ.** न थी और तुम बिना परमेश्‍वर
1थिस्स 4:13 जिनके पास कोई **आ.** नहीं
इब्रा 6:19 यह **आ.** हमारी ज़िंदगी के लिए एक लंगर है
इब्रा 10:23 अपनी **आ.** का सब लोगों के सामने ऐलान
इब्रा 11:1 **आ.** की हुई चीज़ों का इंतज़ार
1पत 3:15 तुम्हारी **आ.** की वजह जानने की माँग
1कुरिं 9:10; इफि 4:4; कुलु 1:27.
आशीष, रोमि 12:14 **आ.** ही दो, शाप मत दो
इब्रा 7:7 छोटा, बड़े से **आ.** पाता है
लूका 6:28; 1पत 3:9.
आश्‍चर्य, 2थिस्स 1:10 उस वक्‍त **आ.** करेंगे
आश्‍चर्य के कामों, प्रेषि 2:22 उसके ज़रिए **आ.**
इब्रा 2:4 चमत्कारों, **आ.** के ज़रिए गवाही दी
आस, रोमि 8:19 सृष्टि बेताबी से **आ.**
आसान शब्दों में, रोमि 6:19 मैं **आ.** बात कर रहा हूँ
आहार, इब्रा 5:14 ठोस **आ.** बड़ों के लिए है
आहें, 2पत 2:7 लूत **आ.** भरता था
याकू 5:9; इब्रा 13:17.
आहों, रोमि 8:26 पवित्र शक्‍ति दबी हुई **आ.** के साथ

इ

इंतज़ाम, रोमि 13:2 परमेश्‍वर के **इं.** के खिलाफ
1कुरिं 14:40 कायदे से और अच्छे **इं.** के मुताबिक
इफि 1:10 वक्‍त पूरा होने पर **इं.**
इंतज़ार, 1कुरिं 1:7 ज़ाहिर होने का बेताबी से **इं.**
इब्रा 11:1 पूरे भरोसे के साथ **इं.** करना है
इब्रा 13:14 उस का **इं.** जो आनेवाला है
रोमि 8:25; गला 5:5; फिलि 3:20; 1थिस्स 1:10;
इब्रा 10:27.
इंसान, मत्ती 4:4 **इं.** सिर्फ रोटी से ज़िंदा नहीं रह सकता
यूह 1:14 वचन **इं.** बना
रोमि 7:22 मेरे अंदर का **इं.**
1कुरिं 9:8 **इं.** के स्तरों के मुताबिक कह रहा हूँ?
2कुरिं 4:16 अंदर का **इं.** नया होता जा रहा है
2कुरिं 5:16 किसी भी **इं.** को शरीर के मुताबिक नहीं
इफि 3:16 तुम्हारे अंदर का **इं.** शक्‍तिशाली
1पत 3:4 अंदर के **इं.**
2पत 3:11 तुम्हें कैसे **इं.** होना चाहिए
प्रेषि 2:17; 1कुरिं 1:29; फिलि 2:8.
इंसान का बेटा, मत्ती 10:23 **इं.** आ जाएगा
मत्ती 12:40 **इं.** धरती में तीन दिन रहेगा
मत्ती 8:20; 17:22; लूका 18:8; यूह 3:13.
इंसान के बेटे, मत्ती 24:30 **इं.** की निशानी आकाश में
लूका 17:26 वैसा ही **इं.** के दिनों में भी होगा
प्रका 14:14 **इं.** जैसा, सिर पर ताज
इंसानों, मत्ती 4:19 मैं तुम्हें **इं.** को इकट्ठा करनेवाले
मत्ती 15:9 **इं.** की आज्ञाओं को सिखाते हैं
लूका 16:15 जो **इं.** के बीच बहुत बड़ी बात है वह

प्रेषि 5:29 **इं.** के बजाय परमेश्वर की आज्ञा मानना
गला 1:10 क्या मैं **इं.** को खुश करने की कोशिश
गला 1:11 खुशखबरी **इं.** की तरफ से नहीं
1कुरिं 1:25.
इंसानों को खुश करनेवाले, इफि 6:6; कुलु 3:22.
इंसाफ, लूका 18:7 क्या वह **इं.** न करेगा
प्रेषि 28:4 **इं.** ने नहीं बख्शी
इकट्ठा, मत्ती 23:37 तेरे बच्चों को **इ.** करूँ
मत्ती 24:31 वे उसके चुने हुओं को **इ.** करेंगे
इब्रा 10:25 **इ.** होना न छोड़ें
प्रका 16:16 उस जगह **इ.** किया जो हर-मगिदोन
इकट्ठे, मत्ती 25:32 राष्ट्र सामने **इ.** किए जाएँगे
मत्ती 3:12; 22:10; यूह 11:52; 1कुरिं 5:4; 16:1, 2; प्रका 16:14.
इकट्ठा करनेवाले, मत्ती 4:19 इंसानों को **इ.** बनाऊँगा
इकलौते, यूह 1:14 **इ.** बेटे का
इब्रा 11:17 अब्राहम अपने **इ.** बेटे को बलि चढ़ाने
इकलौता, यूह 1:18 **इ.** बेटा जो ईश्वरीय है
यूह 3:16 परमेश्वर ने अपना **इ.** बेटा दे दिया, ताकि
1यूह 4:9 अपना **इ.** बेटा दुनिया में भेजा
यूह 3:18; इब्रा 11:17; 1यूह 4:9.
इकलौता बेटा जो ईश्वरीय है, यूह 1:18.
इच्छा, रोमि 12:2 परमेश्वर को भानेवाली और सिद्ध **इ.**
इच्छाएँ, 1तीमु 5:11 उनकी यौन-**इ.**
इच्छाओं, याकू 1:14 अपनी ही **इ.** से खिंचकर
लूका 4:41.
इजाज़त, इब्रा 6:3 अगर परमेश्वर **इ.** दे तो ज़रूर
इज़्ज़त, 1थिस्स 5:13 प्यार के साथ उनकी **इ.**
इज़्ज़तदार, 1कुरिं 4:10 तुम बड़े **इ.** हो
मर 15:43; प्रेषि 17:12.
इटली, इब्रा 13:24 **इ.** में रहनेवाले तुम्हें भेजते हैं
इतिहास, मत्ती 1:1.
इत्तफाक, लूका 10:31 **इ.** से एक याजक
इनकार, मर 8:34 वह खुद से **इ.** करे
लूका 12:9 जो मुझसे **इ.** करता है, मैं उसे जानने से **इ.**
मत्ती 10:33; 26:70; मर 14:30; लूका 9:23; यूह 13:38; 18:25; 2तीमु 2:12; तीतु 1:16.
इनाम, मत्ती 5:12 स्वर्ग में बड़ा **इ.** है
1कुरिं 9:24 **इ.** एक ही को मिलता है?
फिलि 3:14 **इ.** के लक्ष्य तक पहुँचने के लिए
कुलु 2:18 कोई तुम्हें **इ.** से दूर न कर दे
कुलु 3:24 यहोवा से तुम्हें उचित **इ.** मिलेगा
मत्ती 10:41; 1कुरिं 3:8; इब्रा 10:35.
इनाम देता है, इब्रा 11:6 वह **इ.**
इफिसुस, 1कुरिं 15:32; प्रका 2:1.
इब्रानी, प्रका 16:16 **इ.** में हर-मगिदोन
2कुरिं 11:22; फिलि 3:5.
इमारत, 1कुरिं 3:9 तुम परमेश्वर की **इ.** हो
1कुरिं 3:10 ध्यान देता रहे कि वह किस तरह **इ.** खड़ी
इफि 2:21 पूरी **इ.** तालमेल से
2कुरिं 5:1.
इम्माऊस, लूका 24:13 **इ.** नाम के गाँव
इम्मानुएल, मत्ती 1:23.
इरादा, 2कुरिं 1:17 जब मैंने ऐसा **इ.** किया
इरादे, लूका 1:51 घमंड-भरे **इ.**
फिलि 1:17 नेक **इ.** से नहीं
इब्रा 4:12 दिल के **इ.** को जाँच सकता है
इलज़ाम, मत्ती 27:37 **इ.** सिर के ऊपर सूली पर
रोमि 8:33 कौन **इ.** लगा सकता है
1तीमु 5:19 प्राचीन के खिलाफ **इ.** को तब तक
तीतु 1:7 निगरानी करनेवाले भाई पर कोई **इ.** नहीं
यूह 18:29.
इलाका, रोमि 15:23 अनछूआ **इ.** नहीं बचा
इलाके, मत्ती 13:57 एक भविष्यवक्ता का अपने **इ.**
2कुरिं 10:15 **इ.** के मामले में तुम्हारे बीच कामयाबी
इलाकों, इफि 4:9 निचले **इ.** पर उतरा
इलाज, लूका 4:23 वैद्य, खुद का **इ.** कर
इलीमास, प्रेषि 13:8 **इ.** जादूगर
इशारा, 1पत 1:11 उनमें पवित्र शक्ति **इ.** कर रही थी
इशारा किया, प्रेषि 12:17; 19:33; 21:40.
इसहाक, रोमि 9:7 तेरा वंश **इ.** से होगा
मत्ती 8:11; इब्रा 11:17, 20.
इसी तरह, 1पत 3:1 **इ.** पत्नियो, अधीन रहो
इस्करियोती, मत्ती 10:4; 26:14; यूह 6:71.
इस्तेमाल, 1कुरिं 7:31 दुनिया का **इ.** करनेवाले
इसराएल, रोमि 9:6 **इ.** के वंश से निकलनेवाले सभी
इफि 2:12 **इ.** राष्ट्र से अलग थे
इसराएली, यूह 1:47 एक सच्चा **इ.**
रोमि 11:1 मैं भी एक **इ.** हूँ
प्रेषि 13:23; इब्रा 8:10.
इस्साकार, प्रका 7:7.

ई

ईमानदारी, 2कुरिं 8:21 काम **ई.** से करने
ईर्ष्या, गला 5:26 एक-दूसरे से **ई.** न करें
फिलि 1:15 कुछ **ई.** से मसीह का प्रचार कर रहे

1तीमु 6:4 इन्हीं बातों से **ई.** की शुरूआत होती है
याकू 4:5 **ई.** करने की फितरत
1पत 2:1 सारी **ई.** निकाल फेंको
रोमि 1:29; तीतु 3:3.
ईश्वर, प्रेषि 25:19 **ई.** की उपासना
1कुरिं 8:5 बहुत-से हैं जिन्हें **ई.** कहा जाता हैं
2कुरिं 4:4 इस दुनिया की व्यवस्था के **ई.** ने
ईश्वरत्व, कुलु 2:9 मसीह में **ई.** का स्वभाव पूरी हद तक
ईश्वरीय, 2पत 1:4 **ई.** स्वभाव में साझेदार बन सको

उ

उँगली, मत्ती 23:4; यूह 20:25.
उंगली न उठा सके, 1तीमु 5:7 ताकि कोई उन पर **उं.**
उंडेल, प्रका 16:1; प्रेषि 2:33.
उंडेलूँगा, प्रेषि 2:17 मैं अपनी पवित्र शक्ति **उं.**
उकसाता, 1कुरिं 16:15; 2कुरिं 2:8; फिलि 4:2; 1थिस्स 4:1; 5:14; तीतु 1:9; इब्रा 13:19.
उकसाने, 2कुरिं 8:17 [तीतुस] हमारे **उ.** पर राज़ी हो
गला 5:13 आज़ादी को शरीर की ख्वाहिशें **उ.**
इब्रा 10:24 प्यार में **उ.** के लिए एक-दूसरे में
उकाब, मत्ती 24:28; प्रका 12:14.
उगलने, प्रका 3:16 तुझे अपने मुँह से **उ.** पर हूँ
उच्च, रोमि 13:1 **उ.** अधिकारियों के
उछलती, याकू 1:6 हवा से यहाँ-वहाँ **उ.**
उछलना, लूका 6:23 खुशियाँ मनाना और **उ.**
उजड़, मत्ती 12:25 **उ.** जाता है
उजाड़नेवाली, मत्ती 24:15 **उ.** घिनौनी चीज़
उज़िय्याह, मत्ती 1:8.
उठाएगा, गला 6:5 ज़िम्मेदारी का बोझ खुद **उ.**
उड़कर, प्रका 12:14 **उ.** वीराने में जाए
उड़ा दी, लूका 15:13 बेटे ने अपनी संपत्ति **उ.**
उतर, प्रका 21:2 नयी यरूशलेम, स्वर्ग से **उ.** रही
उतरा, इफि 4:9 निचले इलाकों पर **उ.**
उतरेगा, रोमि 10:7; 1थिस्स 4:16.
उत्तम, याकू 1:17.
उत्तर, लूका 13:29.
उत्सुकता, 2कुरिं 8:17.
उद्धार, मत्ती 10:22 अंत तक धीरज धरता है, **उ.** पाएगा
मत्ती 19:25 आखिर किसका **उ.** हो सकता है?
लूका 1:77 अपने पापों की माफी पाकर **उ.**
लूका 2:11 **उ.** करनेवाले का जन्म हुआ
लूका 2:30 **उ.** का तेरा ज़रिया देख लिया
लूका 3:6 हर इंसान **उ.** का ज़रिया देखेगा जो
लूका 19:10 ढूँढ़ने और **उ.** करने आया है
यूह 3:17 कि दुनिया उसके ज़रिए **उ.** पाए
यूह 4:22 **उ.** का ज्ञान यहूदियों के ज़रिए
प्रेषि 4:12 किसी और के ज़रिए **उ.** नहीं है
प्रेषि 4:12 हमें **उ.** दिलाने के लिए नाम
प्रेषि 5:31 खास नुमाइंदा और **उ.** करनेवाला
रोमि 10:9 विश्वास रखे कि तू **उ.** पाएगा
रोमि 10:10 **उ.** के लिए सब लोगों के सामने ऐलान
रोमि 10:13 वह **उ.** पाएगा
रोमि 13:11 आज हमारे **उ.** का वक्त और भी पास
1कुरिं 1:18 हम **उ.** पानेवालों के लिए परमेश्वर की
1कुरिं 10:33 ताकि वे **उ.** पा सकें
2कुरिं 2:15 **उ.** की राह पर चलनेवालों के लिए
2कुरिं 6:2 मैंने **उ.** के दिन तेरी मदद की
2कुरिं 7:10 जिसका नतीजा **उ.** है
इफि 2:8 तुम्हारा **उ.** विश्वास के ज़रिए किया गया
इफि 6:17 **उ.** का टोप ले लो
फिलि 2:12 डरते हुए अपने **उ.** के लिए काम
1तीमु 1:15 यीशु पापियों का **उ.** करने आया
1तीमु 2:4 सब किस्म के लोगों का **उ.** हो
1तीमु 4:10 परमेश्वर जो सब किस्म के लोगों का **उ.**
2तीमु 3:15 तुझे **उ.** के लिए बुद्धिमान बना सकते हैं
इब्रा 2:3 **उ.** के बारे में लापरवाही बरतकर कैसे बच
इब्रा 2:10 **उ.** के खास नुमाइंदे को सिद्ध
इब्रा 5:9 उन सबको हमेशा का **उ.** दिलाने जो आज्ञा
इब्रा 7:25 वह पूरी तरह **उ.** करने के काबिल है
याकू 2:14 ऐसा विश्वास उसे **उ.** दिला सकता है?
1पत 4:18 अगर नेक का बड़ी मुश्किल से **उ.** होगा
यहू 3 उस **उ.** के बारे में लिखूँ, सबको मिलनेवाला है
प्रका 7:10 हम **उ.** के लिए अपने परमेश्वर का एहसान
प्रका 12:10 **उ.** अब ज़ाहिर हुआ है
लूका 8:12; रोमि 1:16; तीतु 3:5; इब्रा 9:28.
उद्धारकर्त्ता, लूका 1:69 एक **उ.** पैदा किया
1यूह 4:14 बेटे को **उ.** बनाकर भेजा
प्रेषि 13:23; 2तीमु 1:10.
उदारता, 2कुरिं 8:20 **उ.** से दान
2कुरिं 9:11 मालामाल किया कि **उ.** से दे सको
याकू 1:5 परमेश्वर **उ.** से देता है
उदास, 2कुरिं 2:1 दोबारा आऊँ, तो **उ.** न करूँ
2कुरिं 7:10 परमेश्वर के मुताबिक **उ.** होने से पश्चाताप
उदास हुए, 2कुरिं 7:9.
उदासी, याकू 4:9 तुम्हारी खुशी **उ.** में बदल जाए

उधार, लूका 6:35 बिन ब्याज के **उ.** देते रहो
मत्ती 5:42.
उपदेशक, मत्ती 13:52 हर **उ.** जो लोगों को सिखाता है
उपदेशकों, मत्ती 23:34 मैं सिखानेवाले **उ.** को भेज
उपनिवेश बस्ती, प्रेषि 16:12 फिलिप्पी जो **उ.** है
उपवास, मत्ती 6:16 जब तुम **उ.** करते हो
मर 2:18 तेरे चेले **उ.** नहीं रखते?
लूका 5:33 यूहन्ना के चेले **उ.** रखते
लूका 5:34 दूल्हे के दोस्तों से **उ.** नहीं करवा सकते
उपासक, यूह 4:23 सच्चे **उ.** उपासना करेंगे
उपासना, लूका 4:8 तू अपने परमेश्वर की **उ.** करना
यूह 4:20 यरूशलेम वह जगह है जहाँ **उ.**
यूह 4:24 पवित्र शक्ति और सच्चाई से **उ.**
यूह 12:20 **उ.** के लिए आनेवालों में यूनानी
प्रेषि 8:27 वह यरूशलेम में **उ.** करने गया
प्रेषि 25:19 अपने ईश्वर की **उ.** को लेकर
कुलु 2:18 स्वर्गदूतों की **उ.**
याकू 1:26 उस इंसान का **उ.** करना बेकार है
याकू 1:27 शुद्ध और निष्कलंक **उ.**
प्रका 7:11 स्वर्गदूत मुँह के बल गिरकर **उ.** करने लगे
प्रका 11:16 चौबीस प्राचीन, परमेश्वर की **उ.** की
प्रका 19:4 परमेश्वर की **उ.** की और कहाः
मत्ती 4:10; प्रेषि 18:13, इब्रा 11:21.
उपासना करनेवाला, याकू 1:26 कोई आदमी **उ.**
उम्मीद, याकू 1:7 ऐसा इंसान **उ.** न करे कि वह
उलझन, 2कुरिं 4:8 **उ.** में, मगर यह नहीं कि रास्ते बंद
लूका 9:7; प्रेषि 2:12; 10:17.
उलझाकर फँसा, इब्रा 12:1 पाप जो हमें **उ.** सकता है
उल्टी, 2पत 2:22 कुत्ता अपनी **उ.** चाटने लौट जाता है
उस वक्त के, प्रेषि 5:17 **उ.** सदूकी गुट
उसाने, मत्ती 3:12.

ऊ

ऊँचा, मत्ती 23:12 खुद को **ऊँ.** करता है, नीचा किया
फिलि 2:9 परमेश्वर ने उसे **ऊँ.** पद देकर महान किया
1पत 5:6 ताकि वह सही वक्त पर तुम्हें **ऊँ.** करे
मत्ती 11:23; 23:12; प्रेषि 2:33.
ऊँचाई, रोमि 8:39 न **ऊँ.**, न गहराई
ऊँची, 2कुरि 10:5 हम हर **ऊँ.** बात को उलट देते हैं
1तीमु 2:2 जो **ऊँ.** पदवी रखते हैं
ऊँचे खानदान, 1कुरिं 1:26 न **ऊँ.** में पैदा होनेवालों
ऊँट, मत्ती 19:24; 23:24.
ऊँट के बालों, मर 1:6 **ऊँ.** से बनी पोशाक पहनता
ऊपर, यूह 6:62 इंसान के बेटे को **ऊ.** जाता
फिलि 3:14 **ऊ.** का बुलावा, उस इनाम
प्रका 13:11 जंगली जानवर को धरती में से **ऊ.** आते
ऊपर का कमरा, प्रेषि 1:13; 9:37; 20:8.

ए

एक, रोमि 6:5 समानता में उसके साथ **ए.** हुए
1कुरिं 8:4 **ए.** को छोड़ कोई परमेश्वर नहीं
एक करनेवाले, इफि 4:3 शांति के **ए.** बंधन
एक-के-बाद-एक, इब्रा 7:23.
एकटक, 2कुरिं 3:7 इसराएली, मूसा को **ए.** नहीं
2कुरिं 3:13 ताकि इसराएल **ए.** न देख सकें
एक तन, मर 10:8; 1कुरिं 6:16.
एकता, 1कुरिं 1:10 विचारों में पूरी **ए.**
2कुरिं 5:17 मसीह के साथ **ए.** में, एक नयी सृष्टि है
इफि 4:13 विश्वास में **ए.** हासिल
कुलु 3:14 प्यार, **ए.** में जोड़नेवाला मज़बूत जोड़ है
एकदम करीब, 2तीमु 4:6 मेरी रिहाई **ए.** है
एक-दूसरे, रोमि 12:5 **ए.** से जुड़े
एक पल, मत्ती 6:27 कौन **ए.** के लिए ज़िंदगी बढ़ा सके
एक बार फिर, इब्रा 6:6 बेटे को **ए.** सूली पर चढ़ाते हैं
एक मन, मत्ती 18:19; प्रेषि 2:46; रोमि 15:6.
एक लाख चवालीस हज़ार जन, प्रका 7:4; 14:1, 3.
एक ही बात, 1कुरिं 1:10 तुम सब **ए.** कहो
एकांत, मत्ती 14:13 यीशु **ए.** पाने के लिए निकल पड़ा
एका, प्रेषि 5:9.
एबेर, लूका 3:35.
एलिय्याह, मत्ती 17:11, 12.
एली, मत्ती 27:46.
एशिया, प्रेषि 19:10; 1कुरिं 16:19; प्रका 1:4.
एसाव, इब्रा 12:16.
एहसान, लूका 17:9 क्या दास का **ए.** मानेगा
1तीमु 1:12 मसीह का **ए.** मानता हूँ
एहसानमंद, 2तीमु 1:3 मैं परमेश्वर का **ए.** हूँ, जिसकी
एहसास, इब्रा 10:2 पापी होने का **ए.** नहीं

ऐ

ऐंठनेवाले, 1कुरिं 6:10 न धन **ऐं.** वारिस होंगे
ऐयाशी, 2पत 2:13 ऐसे लोगों को **ऐ.** में बिताना
ऐलान, मर 5:20 उन सारे कामों का **ऐ.** जो यीशु ने किए
1कुरिं 11:26 तुम प्रभु की मौत का **ऐ.** करते हो
1पत 2:9 सारी दुनिया में उसके महान गुणों का **ऐ.**
इब्रा 2:12.
ऐश, लूका 16:19 हर दिन **ऐ.** करता

ऐशो-आराम, लूका 8:14 चिंताएँ और **ऐ.**
लूका 7:25; याकू 5:5; प्रका 18:7.
ऐश्वर्य, प्रेषि 19:27 उसका **ऐ.** मिट्टी में
2पत 1:16 उसके **ऐ.** को अपनी आँखों से देखा
यहू 25 परमेश्वर की महिमा, **ऐ.**, शक्ति

ओ

ओढ़ना, मत्ती 5:40 उसे अपना **ओ.** भी दे
मत्ती 27:35 चिट्ठियाँ डालकर उसका **ओ.** बाँट लिया
ओढ़नी, 1कुरिं 11:15 **ओ.** के बजाय बाल
ओबेद, लूका 3:32.
ओमेगा, प्रका 1:8; 21:6; 22:13.
ओले, प्रका 8:7.
ओसारे, मर 14:68 वह बाहर **ओ.** में चला गया

औ

औगूस्तुस की टुकड़ी, प्रेषि 27:1 **औ.** के यूलियुस
और कुछ न कहा, प्रेषि 11:18 सुनीं तो आगे **औ.**
और भी ज़्यादा, रोमि 6:1 **औ.** महा-कृपा पाएँ?
1कुरिं 12:23.

क

कंटीली झाड़ियों, मत्ती 7:16 **कं.** से अंगूर पाते
कंटीली झाड़ी, प्रेषि 7:30, 35.
कचरा, 1कुरिं 4:13 दुनिया का **क.**
कचोटने, मत्ती 27:3 यहूदा का दिल **क.** लगा
कच्ची उम्र, 1कुरिं 7:36 जवानी की **क.** पार कर चुका
कटाई, मत्ती 9:37 **क.** के लिए फसल बहुत है
मत्ती 13:39 **क.**, दुनिया की व्यवस्था का आखिरी
यूह 4:35 खेतों, **क.** के लिए पक चुके
प्रका 14:15 अपना हँसिया चला और **क.** कर
मत्ती 6:26; लूका 12:24; यूह 4:38.
कटाई करनेवाला, यूह 4:36 **क.** मज़दूरी पा रहा है
कटाई करनेवाले, मत्ती 13:39 **क.** स्वर्गदूत हैं
कटोरे, प्रका 16:1; 17:1.
कठोर, रोमि 9:18 **क.** होने देता है
रोमि 11:7 दिल **क.** हो गए
रोमि 11:25 **क.** बना रहा
इब्रा 3:8, 15 अपने दिलों को **क.** न कर लेना
इब्रा 3:13 पाप की ताकत से **क.**
प्रेषि 19:9; इब्रा 4:7.
कठोरता, मर 3:5 **क.** देखकर दुःखी हुआ
इफि 4:18 उनके दिलों की **क.** की वजह से
कड़ा प्रयास, कुलु 4:12.
कड़ी मज़दूरी, मत्ती 11:28 **क.** से, मेरे पास आओ
कड़ी मेहनत, 1कुरिं 15:58 में तुम्हारी **क.** बेकार नहीं
1कुरिं 16:16 सहयोग देते और **क.** करते
2कुरिं 11:23 बहुत ज़्यादा **क.** करने में
गला 4:11 मैंने जो **क.** की, बेकार न
फिलि 2:16 बेकार ही **क.** नहीं की
1थिस्स 5:12 तुम्हारे बीच **क.** करते हैं
1तीमु 4:10 **क.** करते हुए संघर्ष
1तीमु 5:17 आदर के योग्य, जो बोलने में **क.** करते हैं
प्रका 14:13 **क.**, काम उनके साथ जाएगा
यूह 4:38; 1कुरिं 3:8; 1थिस्स 2:9; 3:5;
2थिस्स 3:8.
कत्ल, प्रका 6:9 परमेश्वर के वचन की वजह से **क.**
प्रका 18:24 जिनका धरती पर **क.** किया गया
कथा-कहानियों, तीतु 1:14 **क.** पर ध्यान न दें
कदर, 1कुरिं 16:18 इसलिए ऐसे आदमियों की **क.**
कपट, मत्ती 23:28 तुम **क.** से भरे हो
लूका 12:1 फरीसियों के खमीर यानी **क.**
यूह 1:47 जिसमें कोई **क.** नहीं
रोमि 12:9 तुम्हारे प्यार में **क.** न हो
2कुरिं 6:6 बिना **क.** प्यार करने से
1तीमु 1:5; 2तीमु 1:5.
कपटियों, मत्ती 15:7 **क.**, यशायाह ने तुम्हारे बारे में
मत्ती 24:51 उसका हिस्सा **क.** के साथ
1तीमु 4:2 **क.** की झूठी बातों में, दागा गया
कपटी, मत्ती 7:5 **क.**! पहले निकाल
मत्ती 23:13 **क.** शास्त्रियो और फरीसियो
याकू 3:17 बुद्धि न **क.** होती है
कपड़े, मत्ती 6:25 शरीर **क.** से बढ़कर?
मत्ती 9:16 पुराने **क.** पर पैवंद
प्रेषि 20:33 किसी के **क.** का लालच नहीं किया
याकू 2:15 किसी भाई या बहन के पास **क.** न हों
कपड़ों, मत्ती 23:5 अपने **क.** की झालरें लंबी करते हैं
1तीमु 2:9 सलीकेदार **क.** से सिंगार
प्रका 16:15 जागता रहता और अपने **क.** की चौकसी
मत्ती 6:28; यूह 11:44; 20:7; प्रेषि 19:12.
कफरनहूम, मत्ती 11:23 **क.** तू नीचे कब्र में
मत्ती 4:13; लूका 4:23; यूह 2:12; 6:59.
कबूतर, मत्ती 3:16 पवित्र शक्ति को **क.** के रूप में
मत्ती 10:16 साँपों की तरह सतर्क, **क.** की तरह
मत्ती 21:12.
कब्ज़ा, प्रेषि 7:45 यहोशू के साथ देश में जिस पर **क.**

कब्र, मत्ती 16:18 **क.** के दरवाज़े न
मत्ती 27:61 मरियम **क.** के सामने बैठी
लूका 10:15 तू नीचे **क.** में जाएगा!
प्रेषि 2:31 उसे न **क.** में छोड़ा जाएगा
प्रका 1:18 मौत और **क.** की चाबियाँ हैं
प्रका 20:14 मौत और **क.** को फेंक दिया गया
कब्रें, मत्ती 23:29 तुम भविष्यवक्ताओं की **क.** बनवाते हो
मत्ती 11:23; 27:52, 60; मर 6:29; यूह 11:17; लूका 16:23; प्रका 6:8; 20:13.
कभी खत्म नहीं होता, लूका 12:33 खज़ाना जो **क.**
कभी मिटता नहीं, इफि 6:24 ऐसा प्यार जो **क.**
कम उम्र, 1तीमु 4:12 तेरी **क.** की वजह से तुझे नीची
1तीमु 5:2, 11, 14.
कमज़ोर, मत्ती 26:41 दिल तैयार है, शरीर **क.** है
1कुरिं 12:22 अंग **क.** लगते हैं
1कुरिं 15:43 इसे **क.** दशा में बोया जाता है और
कमज़ोरी, रोमि 8:26 हमारी **क.** में मदद
1कुरिं 1:25 परमेश्वर की **क.** इंसानों से ताकतवर
1कुरिं 2:3 मैं बहुत **क.** और डर के साथ तुम्हारे पास
2कुरिं 12:9 मेरी ताकत, तेरी **क.** में पूरी तरह ज़ाहिर
कमज़ोरियाँ, रोमि 15:1 उनकी **क.** सहें जो
कमज़ोरियों, इब्रा 4:15 हमारी **क.** में हमदर्दी रख सके
कमज़ोरों, 1कुरिं 1:27 परमेश्वर ने **क.** को चुना
1थिस्स 5:14 **क.** को सहारा दो, सहनशीलता से पेश
कम पड़ जाएगा, इब्रा 11:32 बताऊँ तो समय **क.**
कम पढ़े-लिखे, प्रेषि 4:13 **क.** मामूली
कमर, इफि 6:14 सच्चाई से **क.** कसकर
लूका 12:35.
कमरबंध, मत्ती 3:4; प्रेषि 21:11.
कमाई, 1तीमु 6:6 परमेश्वर की भक्ति, बड़ी **क.**
प्रेषि 19:25.
कमाते, 1तीमु 3:13.
कमी, याकू 1:5 किसी को बुद्धि की **क.** हो
कमी न होती, इब्रा 8:7 करार में **क.**
कर, मत्ती 17:24 मंदिर का **क.** नहीं देता?
मत्ती 17:25 दुनिया के राजा **क.** किससे लेते हैं?
लूका 23:2 सम्राट को **क.** देने से मना करता है
रोमि 13:7 जो **क.** की माँग करता है उसका **क.**
करता, मत्ती 24:46 मालिक उसे ऐसा ही **क.** पाए
रोमि 2:1 तू खुद वही **क.** रहता
रोमि 7:19 जो बुरा काम मैं नहीं चाहता, वही **क.**
2कुरिं 5:10 उन कामों का बदला जो वह **क.** रहता
1यूह 3:6 वह पाप नहीं **क.** रहता
करते, मत्ती 23:3 वे कहते हैं **क.** नहीं
कर वसूलनेवाला, लूका 18:10 और दूसरा **क.**
कर वसूलनेवाले, मर 2:15 **क.** यीशु के साथ बैठे थे
लूका 3:12 **क.** भी बपतिस्मा लेने आए
लूका 18:11.
कर वसूलनेवालों, मत्ती 11:19 **क.** का दोस्त
मत्ती 21:32 **क.** और वेश्याओं ने यकीन किया
मर 2:16 यह **क.** और पापियों के साथ खाता है?
लूका 19:2 जक्कई। **क.** का प्रधान और अमीर
मत्ती 5:46; 18:17; 21:31; लूका 7:29; 15:1.
करार, मत्ती 26:28 **क.** के मेरे लहू
लूका 22:29 वैसे ही तुम्हारे साथ **क.** करता हूँ
1कुरिं 11:25 यह प्याला नए **क.** का प्रतीक है
2कुरिं 3:6 लिखित कानून के नहीं, नए **क.** के सेवक
2कुरिं 3:14 पुराने **क.** के पढ़े जाने
गला 4:24 इन दो स्त्रियों का मतलब दो **क.** हैं
इब्रा 8:6 पहले **क.** से श्रेष्ठ, कानूनी माँगों के मुताबिक
इब्रा 9:17 एक **क.** मौत पर ही कारगर होता है
इब्रा 12:24 नए **क.** के बिचवई यीशु
प्रेषि 7:8; रोमि 9:4; गला 3:15; इब्रा 7:22; 9:16.
करार देता है, रोमि 8:33 परमेश्वर उन्हें नेक **क.**
कराहती, रोमि 8:22 सारी सृष्टि **क.** रहती है
कराहते, 2कुरिं 5:2.
करीब, याकू 4:8 परमेश्वर के **क.** आओ, वह तुम्हारे **क.**
करुणा, रोमि 9:15 मैं **क.** करूँगा
रोमि 12:1 परमेश्वर की **क.** का वास्ता देकर गुज़ारिश
फिलि 2:1 जब कभी गहरा लगाव और **क.** हो
कुलु 3:12 **क.** से भरपूर गहरे लगाव, कृपा
करूब, इब्रा 9:5 ऊपर **क.** छाया किए
करे, 2थिस्स 1:11 जो-जो भलाई चाहता है वह **क.**
कर्ज़, मत्ती 18:27.
कर्ज़दार, रोमि 13:8 एक-दूसरे के **क.** न बनो
लूका 7:41; रोमि 1:14; 15:27.
कलम, 3 यूह 13 स्याही और **क.** से तुझे लिख दूँ
कलम लगाया, रोमि 11:17, 19, 23, 24 जैतून **क.**
कलियाँ, इब्रा 9:4 हारून की छड़ी जिसमें **क.** निकल
कवच, इफि 6:14 नेकी का **क.**
1थिस्स 5:8 विश्वास और प्यार का **क.** पहनें
कशमकश, लूका 12:29.
कसदियों, प्रेषि 7:4.
कसम, मत्ती 5:34 कभी **क.** न खाना
कसरत, 1तीमु 4:8 शरीर की **क.** कुछ हद तक

कहर, प्रका 15:1 सात **क.** लिए हुए सात स्वर्गदूत
प्रका 18:4 उस पर आनेवाले **क.** में साझेदार नहीं होना
प्रका 22:18 परमेश्वर **क.** उस पर लाएगा
प्रका 9:20; 11:6; 21:9.
कहलाएँगे, रोमि 9:26 जीवित परमेश्वर के बेटे **क.**
कहलाएगी, रोमि 7:3 तो व्यभिचारिणी **क.**
कहलाने, 1यूह 3:1 परमेश्वर ने अपने बच्चे **क.**
कहानियों, 1तीमु 1:4; 4:7 झूठी **क.** पर ध्यान
2तीमु 4:4 वे झूठी **क.** पर कान लगाएँगे
2पत 1:16 चतुराई से गढ़ी झूठी **क.**
कहीं ऊपर, फिलि 4:7 समझने की शक्ति से **क.** है
कहीं बढ़कर, 2कुरिं 4:7 आम इंसानों की ताकत से **क.**
इफि 3:20 उससे **क.**
कही, प्रेषि 13:27 भविष्यवक्ताओं की **क.** बातें
काँटा, 2कुरिं 12:7 मेरे शरीर में एक **काँ.** चुभाया गया
काँटों, मत्ती 13:22 जो **काँ.** के बीच बोया गया
काँप, इब्रा 12:26 उसकी आवाज़ से धरती **काँ.** उठी
काँपते, फिलि 2:12 **काँ.** हुए अपने उद्धार
काट-कूट, फिलि 3:2 जो शरीर की **का.** करते हैं
काट डालते, गला 5:12 अच्छा होता कि अपना अंग **का.**
काट डाला, रोमि 11:22 तू भी **का.** जाएगा
काटेगा, 2कुरिं 9:6 कंजूसी से बोता है वह थोड़ा **का.**
गला 6:7 इंसान जो बोएगा, वही **का.**
कान, यूह 18:10 पतरस ने दायाँ **का.** काट
1कुरिं 12:16 अगर **का.** कहेः मैं आँख नहीं
2तीमु 4:4 सच्चाई की तरफ अपने **का.** बंद कर लेंगे
याकू 5:4 यहोवा के **का.** तक जा पहुँची
मत्ती 13:16; प्रका 2:7.
काना, यूह 2:1; 4:46.
कानून, लूका 16:16 **का.** और भविष्यवक्ताओं के लेख
लूका 24:44 मूसा के **का.** में जो लिखा है
यूह 10:34 क्या तुम्हारे **का.** में नहीं लिखा है
रोमि 2:14 अपने आप **का.** के मुताबिक चलते हैं
रोमि 4:15 जहाँ **का.** नहीं वहाँ
रोमि 7:2 पति के **का.** से छूट जाती है
रोमि 7:12 जहाँ तक **का.** की बात है, वह अपने आप में
रोमि 7:22 परमेश्वर के **का.** में खुशी पाता है
रोमि 7:23 मेरे सोच-विचार पर राज करनेवाले **का.** से
रोमि 8:2 पाप और मौत के **का.** से आज़ाद
2कुरिं 3:7 अगर **का.** जो मौत देता है
गला 3:24 मूसा का **का.** हमें मसीह तक ले जानेवाला
गला 6:2 मसीह का **का.** पूरा करो
इब्रा 10:1 **का.** आनेवाली अच्छी बातों की छाया
मत्ती 5:17; मर 2:26; प्रेषि 22:25; रोमि 6:14; 10:4; 13:8; गला 3:19.
कानून की माँगें, इब्रा 9:10.
कानून के हिसाब से सही, लूका 14:3.
कानून को तोड़ता, 1यूह 3:4 **का.** रहता है, इसलिए पाप
कानून को तोड़ने, याकू 2:10 वह सारे **का.** का
कानून देनेवाला, याकू 4:12 **का.** और न्यायी एक
कानूनी तौर पर मान्यता, फिलि 1:7 खुशखबरी को **का.**
कानूनी माँगों के मुताबिक किया, इब्रा 8:6.
कानूनों, लूका 1:6 परमेश्वर की, **का.** को मानते थे
काफी, मत्ती 6:34 आज के लिए आज की **का.**
2कुरिं 12:9 मेरी महा-कृपा तेरे लिए **का.** है
1पत 4:3 अब तक जो वक्त बिता चुके **का.** है
2कुरिं 2:6.
काबिलीयत, 1कुरिं 1:5 वचन सुनाने की पूरी **का.** और
गला 6:1 तुम जो **का.** रखते हो
1यूह 5:20 दिमागी **का.** दी
मत्ती 25:15.
काबू, कुलु 3:15 तुम्हारे दिलों पर **का.** रखे
याकू 3:8 जीभ, कोई भी **का.** में नहीं कर सकता
काम, 1कुरिं 12:6 **का.** अलग-अलग किस्म के
यूह 5:17 पिता **का.** करता रहा है और
यूह 6:27 उस खाने के लिए **का.** न करो
यूह 9:4 जिसने भेजा उसके **का.** हमें कर लेने चाहिए
यूह 14:12 वह इनसे भी बड़े-बड़े **का.** करेगा
यूह 17:4 जो **का.** तू ने मुझे दिया उसे पूरा कर
प्रेषि 26:20 पश्चाताप के योग्य **का.** करते हुए
रोमि 12:11 अपने **का.** में आलस न दिखाओ
रोमि 4:4 जो आदमी **का.** करता है उसे मज़दूरी देना
रोमि 12:4 **का.** एक जैसा नहीं
रोमि 13:10 बुरे के लिए **का.** नहीं करता
1कुरिं 16:14 **का.** प्यार से किए जाएँ
गला 5:19 शरीर के **का.** ज़ाहिर हैं
इफि 4:16 अलग-अलग अंग अपना-अपना **का.**
फिलि 2:12 अपने उद्धार के लिए **का.** करते जाओ
1थिस्स 5:13 उनके **का.** की वजह से इज़्ज़त
2थिस्स 3:10 **का.** नहीं करना चाहता, खाने का भी
कामों, तीतु 2:14 लोग जो बढ़िया **का.** के लिए जोशीले
रोमि 8:13 शरीर के **का.** को मार देते हो
रोमि 8:28 परमेश्वर अपने सब **का.** के बीच सहयोग
इब्रा 10:24 प्यार और बढ़िया **का.** में उकसाने

याकू 2:26 **का.** के बिना विश्वास मुरदा
प्रका 20:12 उनके **का.** के हिसाब से
1कुरिं 3:13; 12:11; कुलु 2:12; 2तीमु 3:17; 2थिस्स 2:9.
काम-इच्छा, 1कुरिं 7:9 **का.** की आग में जलने से बेहतर
काम करता, 1यूह 4:18 क्योंकि डर रुकावट का **का.** है
काम करनेवाला, लूका 10:7 **का.** मज़दूरी पाने का
काम-धंधा, 1कुरिं 9:6 **का.** करना बंद कर सकें?
कामयाबी, मत्ती 12:20 **का.** के साथ न्याय कायम कर
1थिस्स 3:11 हमें **का.** दिलाए
काम लेता, 1कुरिं 9:25 संयम से **का.** है
काम-वासना, रोमि 1:26.
कायदे, 1कुरिं 14:40 सब बातें **का.** से हों
फिलि 3:16 इसी नियम पर **का.** से चलते रहें
1तीमु 3:2 निगरान, स्वस्थ मन रखनेवाला, **का.** से
कायम, यूह 6:27 उस खाने के लिए जो **का.** रहता और
इब्रा 10:34 **का.** रहनेवाली संपत्ति
1पत 1:25 यहोवा का वचन हमेशा **का.** रहता है
2पत 1:12 सच्चाई में मज़बूती से **का.** हो जो तुम्हें दी
1यूह 2:17 मरज़ी पूरी करता है वह **का.** रहेगा
कायर, प्रका 21:8 जो **का.** हैं उनके हिस्से में आग की
कायरता, 2तीमु 1:7 **का.** का रुझान नहीं
कायल, 1कुरिं 2:4 **का.** करनेवाले शब्दों के साथ नहीं
प्रेषि 18:13.
कायापलट, रोमि 12:2 तुम्हारी **का.** होती जाए
कारगर, इब्रा 9:17 मौत पर **का.** होता है
कारावास, 1पत 3:19 **का.** में पड़े दुष्ट स्वर्गदूतों को
कारीगर, प्रेषि 19:24, 38.
कारोबार, 2तीमु 2:4 सैनिक-सेवा में है, खुद को **का.** में
मत्ती 22:5; प्रेषि 19:25.
किताब, इब्रा 9:19 **कि.** पर छिड़का
प्रका 21:27 उस **कि.** में लिखे हैं जो मेम्ने की है
किताबें, प्रका 20:12 राजगद्दी के सामने, **कि.** खोली गयीं
मर 12:26; गला 3:10; प्रका 17:8.
किद्रोन, यूह 18:1.
किनारे, मत्ती 13:2; प्रेषि 21:5; 27:39.
किसान, याकू 5:7 **कि.** इंतज़ार करता रहता है
2तीमु 2:6.
किस्म, 1कुरिं 12:4 वरदान अलग-अलग **कि.** के
कीचड़, 2पत 2:22 सूअरनी **की.** में लोटने
कीड़े, मर 9:48 **की.** कभी नहीं मरते
कीमत, 1कुरिं 6:20 तुम्हें **की.** देकर खरीदा गया
1कुरिं 9:18 बिना **की.** के खुशखबरी
मत्ती 27:9; प्रेषि 5:3; 19:19; 1कुरिं 7:23.
कीश, प्रेषि 13:21.
कुँवारी, 2कुरिं 11:2 तुम्हें एक पवित्र **कुँ.** की तरह मसीह
कुंवारियों, मत्ती 25:1 दस **कुं.** जैसा होगा
कुँवारों, 1कुरिं 7:25 **कुँ.** के बारे में मुझे कोई आज्ञा नहीं
कुचल, रोमि 16:20 शैतान को तुम्हारे पैरों तले **कु.** देगा
कुचले हुओं, लूका 4:18.
कुछ, 1कुरिं 8:4 मूर्ति दुनिया में **कु.** नहीं
2कुरिं 4:18 जो चीज़ें दिखायी देती हैं **कु.** वक्त के
1तीमु 4:8 कसरत सिर्फ **कु.** हद तक फायदेमंद
कुड़कुड़ाए, फिलि 2:14 बिना **कु.**
1पत 4:9 बिना **कु.** मेहमान-नवाज़ी
कुड़कुड़ानेवाले, यहू 16 ये आदमी **कु.** हैं
1कुरिं 10:10.
कुत्ता, 2पत 2:22 **कु.** अपनी उल्टी चाटने लौट जाता
प्रका 22:15.
कुप्पियों, मत्ती 25:4 अपनी **कु.** में तेल
कुम्हार, मत्ती 27:7 दफनाने के लिए **कु.** की ज़मीन
रोमि 9:21 क्या **कु.** को अधिकार नहीं
कुरनेलियुस, प्रेषि 10:1, 3, 22, 24, 25, 30, 31.
कुरबान, मर 7:11 मेरे पास जो कुछ है वह **कु.** है
कुल्हाड़ा, लूका 3:9.
कूड़ा, फिलि 3:8 मैं इन्हें ढेर सारा **कू.** समझता हूँ
कूड़ा-करकट, 1कुरिं 4:13 हमें **कू.** समझा जाता है
कृपा, रोमि 11:22 परमेश्वर की **कृ.**
1कुरिं 13:4 प्यार **कृ.** करनेवाला है
2कुरिं 10:1 मसीह की **कृ.** का वास्ता देकर तुमसे
गला 5:22 पवित्र शक्ति का फल **कृ.**
प्रेषि 28:2; 2कुरिं 6:6; कुलु 3:12; तीतु 3:4.
कैद, 2कुरिं 10:5 हरेक विचार को **कै.** कर लेते
इफि 3:1 मैं पौलुस, मसीह की खातिर **कै.** में
प्रका 2:10 शैतान तुम में से कुछ को **कै.** में डलवाता
प्रका 20:7 शैतान को उसकी **कै.** से आज़ाद किया
प्रेषि 20:23; 26:31; कुलु 4:3; इब्रा 11:36.
कैदखाने, मत्ती 5:25; प्रेषि 16:26.
कैदी, 2तीमु 1:8 न प्रभु से, न मुझसे जो **कै.** हूँ
मत्ती 27:15; प्रेषि 16:25.
कैन, इब्रा 11:4; 1यूह 3:12.
कैफा, यूह 11:49; 18:13, 28; प्रेषि 4:6; 1कुरिं 9:5; 15:5; गला 2:14.
कैसरिया, मत्ती 16:13; प्रेषि 10:1; 23:23.
कोई आरोप न हो, 1तीमु 3:2 निगरान, पर **को.**

कोई पहुँच नहीं सकता, 1तीमु 6:16 जिस तक **को.**
कोड़ा, यूह 2:15 रस्सियों का **को.** बनाया
कोड़े, मत्ती 10:17 तुम्हें **को.** लगवाएँगे
मत्ती 23:34 उनमें से कुछ को **को.** लगाओगे
इब्रा 12:6 उसे **को.** लगाता है
कोढ़, मत्ती 11:5; 26:6; लूका 4:27; 5:12.
कोने का मुख्य पत्थर, प्रेषि 4:11 ठुकराया **को.** बन गया
1पत 2:7 जिसे ठुकराया, वही **को.**
कोने का पत्थर, इफि 2:20 नींव का **को.** खुद यीशु है
मत्ती 21:42 **को.** बन गया
मर 12:10; 1पत 2:6.
कोमलता, 2कुरिं 10:1 मसीह की **को.** और कृपा
गला 6:1 **को.** की भावना के साथ ऐसे इंसान का सुधार
2तीमु 2:25 जो नहीं उन्हें **को.** से हिदायतें दे
कोमल-स्वभाव, मत्ती 5:5 सुखी हैं वे जो **को.** के हैं
मत्ती 11:29 मैं **को.** का, और दिल से
मत्ती 21:5 तेरा राजा तेरे पास आ रहा है, **को.** का
1कुरिं 4:21 प्यार और **को.**
1पत 3:4 शांत और **को.**
1पत 3:15 पैरवी, **को.** के साथ करो
कोरह, यहू 11.
कोशिश, रोमि 9:30 परमेश्वर की मंज़ूरी पाने की **को.**
इफि 4:3 रहने की **को.**
गला 2:10; 1थिस्स 2:17.
कोसनेवाले, यहू 16 अपने हालात को **को.**
कौंधने, लूका 17:24 बिजली **कौं.** पर
क्रूस। यातना की सूली देखें।
क्रोध, मर 3:5 **क्रो.** से भरकर नज़र डाली और कहा
यूह 3:36 परमेश्वर का **क्रो.** बना रहता है
इफि 4:26 तुम्हें **क्रो.** आए, तो भी पाप मत करो
इब्रा 3:16 सुनकर भी ज़बरदस्त **क्रो.**
याकू 1:20 इंसान के **क्रो.** का नतीजा वह नहीं जिसकी
प्रका 11:18 गुस्सा भड़क उठा और तेरा **क्रो.** आ पड़ा
रोमि 9:22; 12:19; 13:4; 1थिस्स 5:9;
प्रका 19:15.
क्रोधित, प्रका 12:17 अजगर स्त्री पर **क्रो.** हुआ
क्लेश, मत्ती 24:9 तुम्हें **क्ले.** दिलाने के लिए पकड़वाएँगे
1थिस्स 1:6 बहुत **क्ले.** सहते हुए वचन स्वीकार किया
2थिस्स 1:6 जो **क्ले.** देते हैं, उन्हें बदले में **क्ले.** दे
इब्रा 10:33 मज़ाक उड़ाने और **क्ले.** देने के लिए
प्रका 2:10 परखे जाओ और दस दिन तक **क्ले.** हो
मर 4:17; रोमि 2:9.

ख

खंडहरों, प्रेषि 15:16 उसके **खं.** को फिर बनाऊँगा
गला 2:9.
खंभा, 1तीमु 3:15 के लिए **खं.** और सहारा
प्रका 3:12 अपने परमेश्वर के मंदिर में एक **खं.**
खज़ाना, कुलु 2:3 उसी में बुद्धि का सारा **ख.** है
2कुरिं 4:7 **ख.** मिट्टी के बरतनों में
खज़ाने, मत्ती 12:35 अपनी अच्छाई के **ख.** से अच्छी
मत्ती 13:44 राज ज़मीन में छिपे **ख.** की तरह
मत्ती 19:21; इब्रा 11:26.
खजूर, यूह 12:13 **ख.** की डालियाँ
प्रका 7:9 हाथों में **ख.** की डालियाँ
खटखटाना, मत्ती 7:7; प्रका 3:20.
खटखटाया, प्रेषि 12:13 **ख.**, तो रुदे आयी
खड़ा, मत्ती 21:33 हौद खोदा और बुर्ज **ख.** किया
रोमि 14:4 यहोवा उसे **ख.** कर सकता है
1कुरिं 10:12 जो सोचता है कि वह **ख.** है
इफि 2:20 प्रेषितों की नींव पर **ख.** किया गया है
इब्रा 7:15 मेल्कीसेदेक जैसा **ख.** होता है
खतना, रोमि 2:29 दिल का **ख.**
रोमि 3:30 **ख.** किए गए लोगों को विश्वास की वजह से
रोमि 4:11; 1कुरिं 7:19; फिलि 3:3; कुलु 2:11.
खतना न कराने, गला 5:6 न **ख.** की, बल्कि विश्वास
खतना न होना, रोमि 2:25, 26; 1कुरिं 7:19.
खतरनाक, 2थिस्स 3:2 ऐसे लोगों से बचाए जो **ख.** हैं
खतरों, 2कुरिं 11:26 डाकुओं के **ख.** में
प्रेषि 19:27, 40; रोमि 8:35.
खबरदार, मत्ती 7:15 झूठे भविष्यवक्ताओं से **ख.** रहो
खबरें, मत्ती 24:6 युद्धों और युद्धों की **ख.**
खमीर, मत्ती 16:6 फरीसियों के **ख.** से चौकन्ने रहो
लूका 13:21 **ख.**, जिसे लेकर एक स्त्री ने गूंध दिया
1कुरिं 5:7 **ख.** से आज़ाद
गला 5:9 ज़रा-सा **ख.** पूरे आटे को **ख.** कर देता है
खमीरा, मत्ती 13:33 सारा आटा **ख.** हो गया
मत्ती 13:33; 16:12; मर 8:15; लूका 12:1.
खयालों, 1कुरिं 4:5 दिलों के **ख.** को ज़ाहिर कर देगा
खरा, रोमि 16:10; 2कुरिं 13:7.
खरीद, मत्ती 13:44 और वह ज़मीन **ख.** ली
प्रका 3:18; 18:11.
खरीदकर, गला 3:13 मसीह ने हमें **ख.** छुड़ाया
खरीदकर छुड़ा, गला 4:5.
खरीदते, 1कुरिं 7:30 जो **ख.** हैं वे ऐसे हों मानो उनके

खरीद लिया, मत्ती 13:46 वह मोती **ख.**
1कुरिं 7:23 तुम्हें कीमत देकर **ख.** गया
प्रका 5:9 तू ने अपने लहू से लोगों को **ख.**
खरीदा, 2पत 2:1 जिस मालिक ने उन्हें **ख.** है उसका
लूका 14:18.
खरीदारी, प्रका 13:17 न तो **ख.** कर सके, न बेच सके
1तीमु 6:3 **ख.** से सहमत नहीं होता
खरी शिक्षा, 2तीमु 4:3 **ख.** को
तीतु 1:9 **ख.** से सीख देकर उकसा बल्कि उन्हें
तीतु 2:1 बताता रह जो **ख.** के मुताबिक हैं
खरी शिक्षाएँ, 2तीमु 1:13 **ख.** उनके नमूने को थामे रह
खर्च, लूका 14:28 पहले **ख.** का हिसाब लगाए
2कुरिं 12:15 तुम्हारी खातिर **ख.** हो जाऊँगा
प्रेषि 21:24; 1कुरिं 9:7.
खर्चीला बोझ, 1थिस्स 2:6, 9; 2थिस्स 3:8.
खर्रा, लूका 4:17 भविष्यवक्ता यशायाह का **ख.**
खर्रे, 2तीमु 4:13 चोगा और **ख.**, लेते आना
खलबली, प्रेषि 4:25 राष्ट्रों में **ख.**
खा, मत्ती 6:19 कीड़ा और ज़ंग **खा.** जाते
खाई, लूका 16:26 हमारे और तुम लोगों के बीच **खा.**
खाओ, 1कुरिं 10:21.
खाओ-पीओ, लूका 10:7 उसी घर में रहो, **खा.**
खाट/बिछौना, मर 2:4; 6:55; प्रेषि 5:15.
खाता-पीता, मत्ती 11:19 **खा.** आया
खाता है, रोमि 14:6 जो **खा.**, यहोवा के आदर के लिए
खातिर, मत्ती 10:39 मेरी **खा.** जान गँवाता है वह पाएगा
मत्ती 24:22 चुने हुओं की **खा.** दिन घटाए गए
2कुरिं 8:9 वह तुम्हारी **खा.** गरीब बना
खाते, 1कुरिं 10:17 एक रोटी में से **खा.** हैं
फिले 18 तो मेरे **खा.** में लिख लेना
खाद, लूका 13:8.
खाना, कपड़ा, 1तीमु 6:8 हमारे पास **खा.** है
खाना, मत्ती 24:45 सही वक्त पर **खा.** दे?
मत्ती 26:26 **खा.** जारी था, यीशु ने रोटी ली
यूह 4:34 मेरा **खा.** यह है कि भेजनेवाले की मरज़ी
यूह 6:55 मेरा शरीर असली **खा.** है और मेरा लहू
खाने, यूह 6:27 उस **खा.** के लिए काम मत करो जो मिट
रोमि 14:15 अगर तेरे **खा.** की वजह से तेरे भाई
2थिस्स 3:10 काम नहीं करना चाहता, उसे **खा.** का
इब्रा 12:16 एसाव ने एक वक्त के **खा.** के बदले
प्रका 2:7 जीवन देनेवाले पेड़ का फल **खा.** दूँगा
यूह 6:53.
खाना-पीना, रोमि 14:17 राज का मतलब **खा.** नहीं
खाने की पोटली, मत्ती 10:10; लूका 22:35, 36.
खाने-पीने, कुलु 2:16 **खा.** में तुम्हारा न्यायी न बने
खा-पी, मत्ती 24:38 जलप्रलय से पहले के दिनों में, **खा.**
खामी, 2कुरिं 6:3 सेवा में **खा.** न पायी जाए
खारा, याकू 3:11 और **खा.** पानी भी
खारिज, गला 3:17 बाद आया **खा.** नहीं कर देता
खाली, 1तीमु 5:13 **खा.** रहने, घूमने
खास, मत्ती 23:6; लूका 14:7, 8.
खास-खास आदमी, प्रेषि 13:50; 25:2.
खास-खास लोगों, यहू 16 अपने फायदे के लिए **खा.** की
खास तरीकों से बाल गूंथने, 1तीमु 2:9 **खा.** से नहीं
खास ध्यान, रोमि 11:2 लोगों, जिन पर उसने **खा.** दिया
खास नुमाइंदा, प्रेषि 5:31 परमेश्वर ने **खा.** ठहराकर
इब्रा 12:2 यीशु पर नज़र टिकाए रहें जो **खा.** है
खास नुमाइंदे, प्रेषि 3:15 तुमने **खा.** को मार डाला
इब्रा 2:10 उनके उद्धार के **खा.** को सिद्ध बनाए
प्रेषि 3:15; 5:31; इब्रा 2:10.
खास मायने नहीं, 1कुरिं 4:3 मेरे लिए यह बात **खा.**
खास लोगों की तारीफों के पुल बाँधते, यहू 16.
खिड़की, प्रेषि 20:9 **खि.** पर बैठा हुआ। गिर पड़ा
2कुरिं 11:33.
खिला, यूह 21:17 यीशु ने कहा: मेरी छोटी भेड़ों को **खि.**
खिलाफ, मत्ती 10:35 मैं **खि.** करने आया हूँ
मत्ती 12:30 मेरी तरफ नहीं है, वह मेरे **खि.** है
प्रेषि 4:14 **खि.** कहने के लिए कुछ न रहा
रोमि 8:31 कौन हमारे **खि.** कुछ कर सकेगा?
रोमि 10:21 आज्ञा नहीं मानते और **खि.** बोलते
रोमि 16:17 उस शिक्षा के **खि.**
1तीमु 4:7; 6:20 पवित्र बातों के **खि.** हैं
2तीमु 2:16 जो पवित्र बातों के **खि.** हैं
मत्ती 10:35; प्रेषि 18:13; रोमि 11:24.
खिलाया, मत्ती 25:37 हमने तुझे भूखा देखा और **खि.**
खिल्ली, प्रेषि 17:32 कुछ लोग **खि.** उड़ाने लगे
गला 6:7 परमेश्वर की **खि.** नहीं उड़ायी जा सकती
इब्रा 11:36 **खि.** उड़ायी गयी इस तरह आज़माए गए
खिल्ली उड़ानेवाले, 2पत 3:3 **खि.** खिल्ली उड़ाएँगे
खींच, यूह 6:44 जब तक कि पिता, उसे **खीं.** न लाए
खींचता, फिलि 3:13 **खीं.** हुआ आगे
खीझ, कुलु 3:21 पिताओ, **खी.** न दिलाओ
खुद, रोमि 15:1 न कि **खु.** को खुश करने
1कुरिं 4:3 मैं **खु.** अपनी जाँच-पड़ताल नहीं करता
1कुरिं 6:19 **खु.** पर अधिकार नहीं
2तीमु 3:2 **खु.** से प्यार करनेवाले
तीतु 3:11 उसने **खु.** को दोषी ठहराया
2कुरिं 4:5; 7:1; 1यूह 1:8.

खुला, मत्ती 7:13 **खु.** है वह रास्ता जो ले जाता है
मत्ती 18:18 स्वर्ग में **खु.** हुआ होगा
खुली, इब्रा 4:13 उसकी आँखों के सामने **खु.** और
खुश, यूह 8:29 मैं वही करता हूँ जिससे वह **खु.** होता है
यूह 8:56 तुम्हारा पिता अब्राहम **खु.** था
रोमि 8:8 शरीर के मुताबिक, परमेश्‍वर को **खु.** नहीं
रोमि 15:1 न कि खुद को **खु.** करने की सोचें
रोमि 15:3 मसीह ने भी खुद को **खु.** नहीं किया
1कुरिं 7:33 अपनी पत्नी को **खु.** करे
2कुरिं 2:2 मुझे कौन **खु.** करेगा, सिवा उसके
2कुरिं 12:10 मैं कमज़ोरियों में **खु.** होता हूँ
गला 1:10 इंसानों को **खु.** करने की कोशिश
फिलि 2:19 ताकि मेरा जी **खु.** हो
फिलि 4:4 प्रभु में हमेशा **खु.** रहो
कुलु 3:20 प्रभु **खु.** होता है
1थिस्स 2:4 इंसानों को नहीं परमेश्‍वर को **खु.** करने
इब्रा 10:38 मेरा मन उससे **खु.** नहीं होगा
1थिस्स 4:1; इब्रा 11:6.
खुशी, रोमि 12:15 **खु.** मनानेवालों के साथ **खु.** मनाओ
2कुरिं 9:7 परमेश्‍वर **खु.खु.** देनेवाले से प्यार करता है
कुलु 1:24 तुम्हारी खातिर दुःख झेलने में **खु.**
फिलि 2:16 मसीह के दिन मुझे **खु.** मनाने की वजह
इब्रा 12:2 उस **खु.** के लिए जो उसके सामने थी
याकू 1:9 अपने ऊँचे किए जाने पर **खु.** मनाए
प्रेषि 20:35; लूका 2:10; यूह 16:22; गला 4:15; 1कुरिं 10:33; 2कुरिं 6:10; 7:4; 1थिस्स 2:15; इब्रा 13:16; 1पत 1:8.
खुशी-खुशी, 1पत 5:2 झुंड की **खु.** देखभाल करो
खुशियाँ, गला 4:27 बाँझ, तू **खु.** मना
प्रका 12:12 स्वर्गो और उनमें रहनेवालो, **खु.** मनाओ!
लूका 13:17; यूह 16:20; फिलि 4:10; इब्रा 10:34.
खुशखबरी, मत्ती 9:35 **खु.** का प्रचार करता गया
मत्ती 24:14 राज की इस **खु.**
मर 13:10 सब राष्ट्रों में **खु.** का प्रचार
लूका 2:10 देखो! मैं तुम्हें **खु.** सुना रहा हूँ
रोमि 1:16 मुझे **खु.** सुनाने में शर्म महसूस नहीं होती
1कुरिं 9:16 मैं **खु.** सुनाता हूँ
1थिस्स 2:4 इस योग्य कि **खु.** सौंपी जाए
2तीमु 1:10 **खु.** के ज़रिए रौशनी डाली
लूका 1:19; प्रेषि 20:24; रोमि 10:15, 16; 2कुरिं 4:3, 4; 11:4; गला 1:8; फिलि 1:12, 16.
खुशबूदार, मत्ती 26:7; लूका 7:46; यूह 11:2.
खूँखार, मत्ती 8:28; 2तीमु 3:3.
खून, प्रका 18:24 इसी नगरी में पवित्र जनों का **खू.** पाया
मत्ती 23:35; 27:25; प्रका 7:14; 14:20.
खूबसूरत, मत्ती 23:27 बाहर से **खू.**
खेत, मत्ती 13:38 **खे.**, दुनिया है
1कुरिं 3:9 तुम परमेश्‍वर का **खे.** हो जिसमें खेती
मत्ती 24:18, 40.
खेतों, यूह 4:35 **खे.** पर नज़र डालो कि वे पक चुके हैं
खेती, 1कुरिं 3:9 परमेश्‍वर का खेत जिसमें **खे.**
खेल, 2तीमु 2:5 जो कोई **खे.**-प्रतियोगिता में हिस्सा
खोखली, रोमि 1:21 वे **खो.** बातें सोचने लगे
इफि 5:6; 1तीमु 6:20; 2तीमु 2:16.
खोखले विचारों, इफि 4:17 मन के **खो.**
खो, लूका 15:24 मेरा बेटा **खो.** गया था और अब मिल
लूका 19:10 जो **खो.** गए, उन्हें ढूँढ़ने और उनका
मत्ती 15:24; यूह 18:9.
खोज, मत्ती 6:33 पहले राज की **खो.**
प्रेषि 17:27 उसकी **खो.** करें और वाकई पा लें
1कुरिं 10:33 अपने फायदे की **खो.** नहीं
कुलु 3:1 स्वर्ग की बातों की **खो.** में लगे रहो
इब्रा 11:6 जो लगन से उसकी **खो.** करते
इब्रा 11:14 लगन से उस जगह की **खो.** जो उनकी
प्रेषि 15:17; रोमि 2:7.
खोजबीन, यूह 5:39 तुम पवित्रशास्त्र में **खो.** करते हो
1कुरिं 2:10 पवित्र शक्ति सब बातों की **खो.** करती है
1तीमु 1:4 **खो.** के लिए सवाल उठते हैं
1पत 1:10 लगन के साथ पूछताछ और ध्यान से **खो.**
खोजा, प्रेषि 8:27.
खोपड़ी, मत्ती 27:33; मर 15:22; लूका 23:33.
खोला है, इब्रा 10:20 हमारे लिए एक नया रास्ता **खो.**
ख्वाहिश, 2पत 3:3 अपनी ही **ख्वा.** के मुताबिक
ख्वाहिशें, 1यूह 2:16 शरीर की **ख्वा.**, आँखों की **ख्वा.**
1यूह 2:17 और इसकी **ख्वा.** भी
गला 5:24; 2पत 2:18.
ख्वाहिशों, यूह 8:44 अपने पिता की **ख्वा.** को पूरा करना
1तीमु 6:9 मूर्खता से भरी और खतरनाक **ख्वा.**
तीतु 2:12 दुनियावी **ख्वा.** को त्याग दें

ग

गंदगी, मत्ती 23:27 कब्रों, **गं.** से भरी
1पत 3:21 शरीर की **गं.** धोना नहीं
गंधक, प्रका 19:20.
गंधरस, मत्ती 2:11; यूह 19:39.

गंभीर, 1तीमु 3:8 सेवक को **गं.** होना चाहिए
फिलि 4:8; 1तीमु 3:11; तीतु 2:2.
गंभीरता, 1तीमु 3:4 बच्चे पूरी **गं.** के साथ
गँवाता, लूका 9:24 मेरी खातिर अपनी जान **गँ.** है
मत्ती 10:39.
गए-गुज़रों, 1कुरिं 1:28 परमेश्‍वर ने **ग.** को चुना
गड्ढे, मत्ती 15:14 अंधे, दोनों किसी **ग.** में गिरेंगे
गड़बड़ी, 1कुरिं 14:33 परमेश्‍वर **ग.** का नहीं
याकू 3:16.
गतसमनी, मत्ती 26:36; मर 14:32.
गधी का बच्चा, मत्ती 21:5; लूका 19:30.
गधे, मत्ती 21:5.
गन्‍नेसरत, मत्ती 14:34; लूका 5:1.
गप्पे लड़ाने, 1तीमु 5:13 **ग.** और दूसरों के मामलों में
गमलीएल, प्रेषि 5:34; 22:3.
गया गुज़रा, 2कुरिं 10:1.
गयी-गुज़री, गला 4:9 **ग.** बेकार बातों
गरजदार, प्रका 6:1 **ग.** आवाज़ में: आ
गरजते, 1पत 5:8 शैतान **ग.** शेर की तरह घूम रहा है
गरजने, लूका 21:25 समुद्र के **ग.**
गरीब, यूह 12:8 **ग.** हमेशा तुम्हारे साथ होंगे
2कुरिं 6:10 **ग.** जैसे फिर भी बहुतों को अमीर बनाते हैं
2कुरिं 8:9 तुम्हारी खातिर **ग.** बना
याकू 2:5 परमेश्‍वर ने ऐसों को चुना जो **ग.** हैं
गरीबों, लूका 4:18 **ग.** को खुशखबरी सुनाने के लिए
मत्ती 11:5; मर 12:43.
गरीबी, 2कुरिं 8:9 उसकी **ग.** से अमीर बन सको
प्रका 2:9 मैं तेरी दुःख-तकलीफें और **ग.** जानता हूँ
गर्जन, मर 3:17 जिसका मतलब है **ग.** के बेटे
गर्भ, यूह 3:4; गला 1:15.
गर्भधारण, इब्रा 11:11 सारा ने **ग.** करने की शक्‍ति पायी
गर्भवती, लूका 1:31 तू **ग.** होगी
रोमि 9:10 रिबका **ग.** हुई, जुड़वाँ बच्चे थे
याकू 1:15 इच्छा **ग.** होती है पाप को जन्म देती है
लूका 1:24.
गर्म, 2पत 3:10 तत्व **ग.** होकर
प्रका 3:15 तू न ठंडा है न **ग.**
गर्मियों, मत्ती 24:32 कि **ग.** का मौसम पास है
गर्व, रोमि 5:3 दुःख-तकलीफें झेलते हुए **ग.** करें
रोमि 15:17 मसीह का चेला होने पर **ग.**
गला 6:4 उसके पास **ग.** करने की वजह होगी
2थिस्स 1:4 हम तुम पर **ग.** करते हैं
गल, 2पत 3:12 बेहद गर्म होकर **ग.** जाएँगे
गलत, 1कुरिं 9:18 अपने हक का **ग.** इस्तेमाल न करूँ
याकू 5:20 पापी को **ग.** रास्ते से वापस ले आता
गलत कदम, रोमि 11:11, 12; गला 6:1.
गलती, मत्ती 18:15 जब तू और वह हो, उसकी **ग.**
गलील/गलीली, मत्ती 4:23; मर 14:70; लूका 13:1;
यूह 2:11; 4:45; 7:41, 52.
गले, लूका 15:20; 17:2; प्रेषि 20:37.
गवाह, प्रेषि 10:39 हम उन सभी कामों के **ग.** हैं जो
प्रेषि 13:31 जो अब लोगों के सामने उसके **ग.** हैं
प्रेषि 20:26 तुम **ग.** हो कि मैं निर्दोष हूँ
प्रेषि 22:15 सब इंसानों के सामने **ग.** होगा
1कुरिं 15:15 हम परमेश्‍वर के झूठे **ग.** भी ठहरे
प्रका 1:5 यीशु मसीह, विश्‍वासयोग्य **ग.**
गवाही, मत्ती 10:18 ताकि **ग.** हो
मत्ती 24:14 राज का प्रचार ताकि **ग.** हो
यूह 4:44 उसने **ग.** दी कि अपने देश में
यूह 8:17 दो लोगों की **ग.** सच्ची
यूह 18:37 कि सच्चाई की **ग.** दूँ
प्रेषि 1:8 तुम मेरे बारे में **ग.** दोगे
रोमि 8:16 अंदर के एहसास के साथ **ग.** देती
1तीमु 2:6 **ग.** तय वक्‍त पर
1तीमु 6:13 मसीह यीशु, जिसने **ग.** दी
2तीमु 1:8 न **ग.** देने से शर्मिंदा हो
इब्रा 7:8 के मामले में **ग.** दी कि वह ज़िंदा रहता है
1यूह 5:7 इसलिए कि **ग.** देनेवाले तीन हैं
प्रका 6:9 **ग.** का जो काम वे करते थे
प्रका 12:17 यीशु की **ग.** देने का काम
प्रका 20:4 **ग.** देने की वजह से कुल्हाड़े से मार डाला
1पत 1:11 पहले से **ग.** दे रही थी
प्रेषि 18:5; इब्रा 3:5; प्रका 19:10.
गवाहों, इब्रा 12:1 **ग.** का ऐसा घना बादल हमें
प्रका 11:3 मैं अपने दो **ग.** को भेजूंगा कि
प्रका 17:6 यीशु के **ग.** का खून
गहरा, रोमि 12:10 **ग.** लगाव रखो
1पत 1:22 एक-दूसरे को **ग.** प्यार करो
1पत 4:8 एक-दूसरे के लिए **ग.** प्यार रखो
गहराई, मत्ती 13:5; रोमि 8:39; इफि 3:18.
गहराई से सोचता/सोचती, लूका 2:19; 1तीमु 4:15.
गहरा लगाव, यूह 5:20 पिता को बेटे से **ग.** है
यूह 21:17 क्या तुझे मुझसे **ग.** है?
प्रका 3:19 जिनसे मैं **ग.** रखता हूँ उनको ताड़ना

गहरे लगाव, कुलु 3:12 **ग.** को पहन लो
यूह 11:3; 1कुरिं 16:22; तीतु 3:15.
गहरे, 1कुरिं 2:10 पवित्र शक्ति परमेश्वर के **ग.** रहस्यों
लूका 5:4.
गाँव/गाँवों, मत्ती 9:35; 10:11; मर 6:6.
गाऊँगा, 1कुरिं 14:15 मैं पवित्र शक्ति के वरदान से **गा.**
गाज़ा, प्रेषि 8:26.
गाने, मत्ती 26:30 **गा.** के बाद निकल पड़े
लूका 15:25 बेटे को **गा.** बजाने की आवाज़ सुनायी दी
गाते, इफि 5:19 गीत **गा.** रहो और
कुलु 3:16 गीत **गा.** हुए एक-दूसरे को
प्रका 14:3.
गारंटी, प्रेषि 17:31 सब इंसानों के लिए एक **गा.**
2कुरिं 1:21; इब्रा 6:16.
गाल, मत्ती 5:39 तेरे दाएँ **गा.** पर थप्पड़ मारे
लूका 6:29.
गाली-गलौज, 1कुरिं 5:11 जो **गा.** करता है
1कुरिं 6:10 न **गा.** करनेवाले, परमेश्वर के राज के
1कुरिं 4:12; इफि 4:31; 1पत 2:23; 1तीमु 6:4.
गिदोन, इब्रा 11:32 अगर मैं **गि.** के बारे में बताऊँ
गिन, प्रका 7:9 भीड़, जिसे कोई आदमी **गि.** नहीं सकता
गिनती, लूका 22:37 उसकी **गि.** दुराचारियों में हुई
रोमि 11:12 उनकी **गि.** के पूरा होने से
प्रका 7:4 उनकी **गि.** जिन पर मुहर लगायी गयी
रोमि 9:27; प्रका 5:11; 20:8.
गिना, रोमि 4:5 विश्वास नेकी **गि.** जाता
रोमि 4:24 हमारे लिए **गि.** जाएगा
याकू 2:23 यह उसके लिए नेकी **गि.** गया
गिर, रोमि 11:11 ठोकर खायी कि **गि.** पड़ें
रोमि 14:4 खड़ा रहेगा या **गि.** जाएगा, फैसला उसके
1कुरिं 10:12 खबरदार रहे कि **गि.** न पड़ें
गिरने, रोमि 14:13 या **गि.** की वजह
गिरफ्तार, मत्ती 4:12; लूका 22:54; प्रेषि 1:16.
गीत, इफि 5:19 उपासना के **गी.** गाते, संगीत के साथ
कुलु 3:16 परमेश्वर का गुणगान और उपासना के **गी.**
प्रका 15:3 वे मूसा का **गी.** गा रहे हैं
गुज़ारिश, 2कुरिं 5:20 मानो परमेश्वर **गु.** कर रहा है
रोमि 12:1; 2कुरिं 6:1.
गुट, प्रेषि 24:5 नासरियों के **गु.** का एक मुखिया
प्रेषि 24:14 जिस मार्ग को ये **गु.** कह रहे हैं
1कुरिं 11:19 तुम्हारे बीच **गु.** भी ज़रूर होंगे
गुटों, 2पत 2:1 ऐसे **गु.** की शुरूआत करेंगे जो विनाश
तीतु 3:10 कोई आदमी किसी **गु.** को बढ़ावा देता है
प्रेषि 5:17; 15:5; 28:22; गला 5:20.
गुण, रोमि 1:20 उसके अनदेखे **गु.** दिखायी देते
गुणगान, लूका 1:46 मैं यहोवा का **गु.** करती हूँ
इब्रा 2:12 मैं गीत गाकर तेरा **गु.** करूँगा प्रेषि 2:47.
इब्रा 13:15 परमेश्वर को **गु.** का बलिदान चढ़ाएँ
गुनगुना, प्रका 3:16 क्योंकि तू **गु.** है
गुनहगार, याकू 2:11.
गुनाह, रोमि 5:15 एक आदमी के **गु.** से बहुत मर गए
कुलु 2:13 हमारे सारे **गु.** माफ किए
गुनाहों, रोमि 4:25 हमारे **गु.** की खातिर सौंपा गया
2कुरिं 5:19; इफि 2:1.
गुमराह, मत्ती 24:4 कोई तुम्हें **गु.** न करे
मत्ती 24:24 ताकि **गु.** कर दें
लूका 21:8 खबरदार कि **गु.** न किए जाओ
रोमि 3:12 सभी इंसान **गु.** हो गए
इफि 4:22 **गु.** करनेवाली ख्वाहिशों के मुताबिक
1यूह 3:7 प्यारे बच्चो, कोई तुम्हें **गु.** न करे
प्रका 12:9 शैतान, जो सारे जगत को **गु.** करता है
प्रका 18:23 भूत-विद्या के कामों से राष्ट्र **गु.** किए गए
प्रका 20:3 राष्ट्रों को **गु.** न कर सके
2तीमु 3:13; प्रका 19:20.
गुरु, मत्ती 23:8 तुम्हारा **गु.** एक है
यूह 3:10 तू इसराएलियों का धर्म **गु.** है, फिर भी
यूह 13:13 तुम मुझे **गु.** और प्रभु पुकारते हो
गुलगुता, मत्ती 27:33; यूह 19:17.
गुलाम, यूह 8:34 जो पाप करता है वह पाप का **गु.** है
रोमि 6:16 तो उसी के **गु.** हो
रोमि 7:23 मुझे पाप के कानून का **गु.** बना लेता
रोमि 8:15 पवित्र शक्ति न हमें **गु.** बनाती है
1कुरिं 7:23 इंसानों के **गु.** बनना छोड़ दो
गला 2:4 ताकि हमें अपने **गु.** बना लें
गला 3:28 न **गु.** न आज़ाद
गला 4:3 दुनियादारी के उसूलों के **गु.**
2पत 2:19 जिसके बस में आ जाता उसका **गु.**
2तीमु 3:6.
गुलामी, रोमि 8:21 **गु.** से आज़ाद होकर
गला 5:1 फिर से **गु.** के जूए में न जुतने दो
इब्रा 2:15 पूरी ज़िंदगी **गु.** में पड़े
गला 4:24.
गुस्सा, कुलु 3:8; प्रका 14:10; 15:1.
गुस्सा बना न रहे, इफि 4:26 सूरज ढलने तक **गु.**
गूँगा, मत्ती 9:32; 12:22; 15:30; लूका 1:22.
गूँगी, 1कुरिं 12:2.

गूदे, इब्रा 4:12 हड्डियों और उनके **गू.** को अलग-अलग
गेहन्‍ना, मत्ती 10:28 जीवन और शरीर को **गे.** में
मत्ती 23:15 खुद से दुगुना **गे.** के लायक
मत्ती 23:33 **गे.** की सज़ा से भाग सकोगे?
मर 9:43 दोनों हाथों समेत **गे.** में डाला जाए
लूका 12:5 **गे.** में फेंकने का अधिकार
याकू 3:6 जीभ, **गे.** की आग की तरह भस्म कर देती
मत्ती 5:22, 29, 30; 18:9; मर 9:45, 47.
गेहूँ, मत्ती 3:12; 13:25; लूका 22:31; यूह 12:24.
गैर-मौजूदगी, फिलि 2:12 बल्कि **गै.** में
2कुरिं 10:11.
गैर-यूनानियों, रोमि 1:14 यूनानियों और **गै.**, दोनों का
गैर-हाज़िर, कुलु 2:5 मैं शरीर से **गै.** हूँ
1कुरिं 5:3; 2कुरिं 5:9.
गोग, प्रका 20:8.
गोत्र, प्रका 1:7 पृथ्वी के सारे **गो.** छाती पीटेंगे
गोत्रों, मत्ती 19:28 राजगद्दियों, बारह **गो.** का न्याय
याकू 1:1 बारह **गो.** को, जो तित्तर-बित्तर हैं
प्रका 7:9 राष्ट्रों, **गो.** और जातियों से
इब्रा 7:13; प्रका 21:12.
गोद, रोमि 8:15 कि हम **गो.** ले
रोमि 8:23; 9:4; गला 4:5; इफि 1:5.
गोदाम/गोदामों, मत्ती 3:12; 6:26.
गौर, इब्रा 13:7 उनके चालचलन पर **गौ.**
रोमि 4:19 अपने शरीर पर **गौ.** किया
1यूह 1:1 हमने ध्यान से **गौ.** किया और छूआ

घ

घटने, रोमि 11:12 उनके **घ.** से आशीषें पायीं
घटाए, मत्ती 24:22 अगर वे दिन **घ.** न गए होते
घटाया गया, 1कुरिं 7:29 जो वक्‍त रह गया है उसे **घ.**
घटायी गयी, 2कुरिं 3:10 महिमा **घ.**
घटी, 2कुरिं 8:14 उनकी **घ.** को पूरा करे
घड़ा, 1थिस्स 2:16 हमेशा, अपने पापों का **घ.** भरते हैं
घड़ी, यूह 17:1 वह **घ.** आ गयी है; अपने बेटे की
प्रका 3:10 परीक्षा की **घ.** में तुझे संभाले रहूँगा
प्रका 17:12 **घ.** भर के लिए राजाओं जैसा अधिकार
मत्ती 24:44, 50; प्रका 18:10.
घमंड, लूका 1:51 **घ.**-भरे, उन्हें तित्तर-बित्तर किया
1कुरिं 8:1 ज्ञान **घ.**, से भर देता है प्यार से उन्‍नति
1तीमु 3:6 कि वह **घ.** से फूल न जाए
याकू 4:16 ऐसा हर तरह का **घ.** दुष्टता है
मर 7:22.
घमंड करना, रोमि 11:20.
घमंड से फूलना, 1कुरिं 4:6; 5:2; 13:4.
घमंडियों, याकू 4:6 परमेश्‍वर **घ.** का सामना करता है
घर, मत्ती 21:13 मेरा **घ.** प्रार्थना का **घ.** कहलाएगा
मत्ती 23:38 तुम्हारा **घ.** तुम्हारे हवाले छोड़ा जाता है
मर 3:25 अगर किसी **घ.** में फूट पड़ जाए
लूका 17:28 बोआई, **घ.** बना रहे थे
प्रेषि 20:20 तुम्हें सरेआम और **घ.**-**घ.** जाकर
रोमि 16:5 उनके **घ.** में इकट्ठा होनेवाली मंडली
घर की छत, मत्ती 10:27 **घ.** पर चढ़कर प्रचार करो
मत्ती 24:17; लूका 12:3; 17:31; प्रेषि 10:9.
घराने, मत्ती 10:36 दुश्‍मन उसके ही **घ.** के
इफि 2:19.
घसीटकर, याकू 2:6 अमीर तुम्हें **घ.** अदालतों में ले जाते
घात, मत्ती 10:28 जो शरीर को **घा.** कर सकते हैं
घाव, प्रेषि 16:33 उनके **घा.** धोए
घावों, 1पत 2:24 उसके **घा.** से तुम चंगे किए गए
घास-फूस, 1कुरिं 3:12 नींव पर **घा.** से खड़ी करता है
घिन, रोमि 12:9 दुष्ट बातों से **घि.** करो
गला 4:14 न ही **घि.** से थूका
इब्रा 3:10 इस पीढ़ी से **घि.** होने लगी
इब्रा 3:17 जिनसे परमेश्‍वर को **घि.** होने लगी?
रोमि 2:22.
घिनौनापन, 2पत 2:7 नीच कामों का **घि.**
घिनौनी, लूका 16:15 परमेश्‍वर की नज़र में **घि.**
यूह 6:60 यह बात **घि.** है
1पत 4:3 **घि.** मूर्तिपूजा करने
यहू 15 **घि.** बातों जो भक्‍तिहीनों ने कही
घिनौनी चीज़, मत्ती 24:15 **घि.** नज़र आए
प्रका 17:4 सोने का प्याला जो **घि.** से भरा
प्रका 17:5.
घिनौने, तीतु 1:16.
घुटना, फिलि 2:10 हर कोई यीशु के नाम से **घु.** टेके
घुटने, रोमि 11:4 बाल के आगे **घु.** नहीं टेके
रोमि 14:11; इब्रा 12:12.
घुस आए, यहू 4 ऐसे आदमी **घु.** हैं जिनके
घूमते-फिरते, मत्ती 23:15 तुम जल और थल में **घू.**
घूमने, 1तीमु 5:13 घर-घर **घू.**
घेर, लूका 19:43 दुश्‍मन तुझे **घे.** लेंगे
घेराबंदी, लूका 19:43.
घोड़ा, प्रका 19:11 और देखो! एक सफेद **घो.**
घोर, 2पत 2:17 **घो.** अंधकार
यहू 13 हमेशा का **घो.** अंधकार ठहराया गया

च

चंगा, मत्ती 8:13 नौकर **चं.** हो गया
मत्ती 13:15 आएँ और मैं उन्हें **चं.** करूँ
लूका 13:14 सब्त के दिन **चं.**
मत्ती 8:7; 12:15; 19:2; 21:14; मर 3:2; लूका 6:7; 13:14.
चंगा करता, प्रेषि 10:38.
चंगे, 1पत 2:24 उसके घावों से तुम **चं.** किए गए
चक्कर, इब्रा 11:30 यरीहो के **च.** काटे
चक्की का पाट, लूका 17:2 **च.** लटकाया जाए
प्रका 18:21.
चखना, कुलु 2:21; इब्रा 2:9.
चट्टान, मत्ती 16:18 इस **च.** पर मैं खड़ी करूँगा
रोमि 9:33 ठोकर खिलानेवाला पत्थर और **च.**
1कुरिं 10:4 परमेश्वर की **च.** से पीया करते थे
1पत 2:8 ठोकर खिलानेवाला पत्थर और **च.**
चट्टानी, लूका 8:6 कुछ **च.** जगह पर गिरे
मत्ती 13:5, 20; मर 4:5, 16.
चढ़ता, 2पत 1:19 जब तक दिन का तारा नहीं **च.**
चढ़ा, इब्रा 10:12 एक ही बलिदान **च.** दिया
इब्रा 11:17 अब्राहम ने इसहाक को मानो बलि **च.** दिया
चढ़ाया, इब्रा 9:14 मसीह ने परमेश्वर के सामने **च.**
चढ़ावे, मत्ती 12:4; लूका 6:4.
चढ़ावे की रोटियाँ, मत्ती 12:4.
चतुराई से गढ़ी हुई, 2पत 1:16 **च.** कहानियों
चबूतरा, यूह 19:13.
चमक उठी, प्रेषि 9:3 रौशनी **च.**
चमकेंगे, मत्ती 13:43 नेक, **च.**
चमके, मत्ती 5:16 तुम्हारी रौशनी लोगों के सामने **च.**
चमकेगा, लूका 1:78 हम पर सुबह का उजाला **च.**
चमत्कार, यूह 7:31 इतने **च.** दिखाए
प्रेषि 2:19 नीचे धरती पर **च.**, खून और आग
प्रका 16:14 दुष्ट स्वर्गदूतों की प्रेरणा से और **च.**
लूका 23:8; यूह 11:47; 20:30; प्रेषि 4:16; 8:13; 1कुरिं 1:22; 2थिस्स 2:9.
चरनी, लूका 2:7, 12, 16.
चरवाहा, यूह 10:11 बेहतरीन **च.** मैं हूँ; जान दे देता है
यूह 10:16 एक झुंड, एक **च.** होगा
इब्रा 13:20 महान **च.** यीशु
1पत 5:4 प्रधान **च.** ज़ाहिर किया जाएगा
चरवाहे, मत्ती 26:31 मैं **च.** को मारूँगा
लूका 2:8 **च.** मैदानों में रह रहे थे
इफि 4:11 कुछ को **च.** और शिक्षक
प्रका 12:5 राष्ट्रों को **च.** की तरह लोहे की छड़ से
प्रका 7:17 मेम्ना उन्हें **च.** की तरह ले जाएगा
मत्ती 9:36; 25:32.
चरवाहों, प्रेषि 20:28 परमेश्वर की मंडली की **च.** की
चरागाह, यूह 10:9 और **च.** पाएगा
चरानेवाले, मत्ती 8:33; मर 5:14; लूका 8:34.
चरित्रहीन, मत्ती 5:22.
चर्चा, मर 9:10 आपस में **च.** करने लगे
रोमि 1:8 तुम्हारे विश्वास की **च.** हो रही
इब्रा 8:1 जिन बातों की **च.** की जा रही है
चर्मपत्र, 2तीमु 4:13 **च.** लेते आना
चलते, यूह 6:19 उन्होंने यीशु को **च.** देखा
रोमि 8:14 जितने पवित्र शक्ति के मार्गदर्शन में **च.** हैं
इफि 2:3 शरीर की ख्वाहिशों के मुताबिक **च.**
प्रेषि 3:8.
चलनेवाले, याकू 1:22 वचन पर **च.** बनो
रोमि 2:13; याकू 1:23, 25.
चल रहे, 1यूह 1:6 सच्चाई पर नहीं **च.**
चला गया, मत्ती 21:33; लूका 15:13; 20:9.
चलाने, 1तीमु 2:12 स्त्री को अधिकार **च.** की इजाज़त
चले जाने, 2पत 1:15 मेरे **च.** के बाद तुम याद दिला
चलो, 1पत 2:21 तुम उसके नक्शे-कदम पर **च.**
चाँद, लूका 21:25 सूरज, **चाँ.** और तारों में निशानियाँ
प्रेषि 2:20 सूरज अंधियारा और **चाँ.** खून जैसा लाल
प्रका 12:1 **चाँ.** उसके पैरों तले था
कुलु 2:16; प्रका 21:23.
चाँदी, मत्ती 26:15 उसे **चाँ.** के तीस सिक्के
याकू 5:3 तुम्हारे सोने और **चाँ.** में ज़ंग लग गया
प्रेषि 3:6.
चाँदी का सिक्का, लूका 15:8 स्त्री का एक **चाँ.** खो जाए
चाँदी के टुकड़े, लूका 19:16 तेरी **चाँ.** से दस **चाँ.** कमाए
लूका 19:13, 24, 25.
चापलूसी, 1थिस्स 2:5 कभी-भी **चा.** की बातें नहीं कीं
चाबी, लूका 11:52 वह **चा.** चुरा ली है, जो ज्ञान का
प्रका 20:1 जिसके पास अथाह-कुंड की **चा.**
चाबियाँ, मत्ती 16:19 राज की **चा.**
प्रका 1:18 मेरे पास मौत और कब्र की **चा.** हैं
प्रका 3:7; 9:1.
चारदीवारी, मत्ती 4:5; लूका 4:9.
चालचलन, मत्ती 16:27 **चा.** के मुताबिक
इफि 4:1 **चा.** बुलावे के योग्य हो

इफि 5:15 कड़ी नज़र रखो कि तुम्हारा **चा.** कैसा है
1तीमु 4:12 **चा.** में, प्यार में मिसाल बन
याकू 3:13 अपने बढ़िया **चा.** के कामों से दिखाए
1पत 2:12 दुनिया के लोगों के बीच बढ़िया **चा.**
1पत 3:16 अच्छे **चा.** की निंदा करते हैं
इफि 4:22; इब्रा 13:7; 1पत 1:15; 3:2.
चालबाज़ियों, 2कुरिं 2:11 उसकी **चा.** से अनजान नहीं
चालाकी, मत्ती 2:16 हेरोदेस के साथ **चा.** की
1कुरिं 3:19 बुद्धिमानों को उनकी **चा.** में
2तीमु 3:6 जो **चा.** से अपनी पैठ बना लेते हैं
लूका 20:23; 2कुरिं 4:2; 11:3.
चालीस, मर 1:13 **चा.** दिन वीराने में
मत्ती 4:2; प्रेषि 1:3.
चाहता, रोमि 7:21 अच्छा करना **चा.** हूँ
रोमि 9:18 जिस किसी पर **चा.** है दया दिखाता है
रोमि 10:1 मैं दिल से **चा.** हूँ
2थिस्स 1:11 ताकि परमेश्वर जो-जो **चा.** है वह कर
चाहने लायक, फिलि 4:8 जो बातें **चा.** हैं
चाहे, प्रका 22:17 जो कोई **चा.** जीवन देनेवाला पानी ले
चिंता, मत्ती 6:25 **चिं.** करना बंद करो
मत्ती 10:19 **चिं.** न करना कि क्या कहोगे और
लूका 10:41 मारथा, तू **चिं.** कर रही है और परेशान
लूका 12:29 कशमकश में **चिं.** करना बंद करो
1कुरिं 7:32 अविवाहित आदमी, की **चिं.** में रहता है
मत्ती 6:34; फिलि 4:6.
चिंताएँ, मर 4:19 इस ज़माने की ज़िंदगी की **चिं.**
चिंताओं, 1कुरिं 7:32 तुम **चिं.** से आज़ाद रहो
मत्ती 6:34; 13:22; लूका 8:14; 21:34;
1पत 5:7.
चिट्ठियाँ, यूह 19:24 मेरे कुरते पर **चि.** डालीं
2कुरिं 3:1 सिफारिशी **चि.**
प्रेषि 1:26; 23:25.
चिढ़, इफि 6:4 अपने बच्चों को **चि.** मत दिलाओ
चिल्लाता, प्रेषि 21:34.
चीख-चीखकर, लूका 23:21 **ची.** कहने लगे
चीज़ों, 1यूह 2:16 अपनी **ची.** का दिखावा
चीते, प्रका 13:2.
चीरा, इब्रा 11:37 उन्हें आरे से **ची.** गया
चुंगी, रोमि 13:7 जो **चुं.** की माँग करता है, उसे **चुं.**
चुंबन, रोमि 16:16 पवित्र **चुं.** के साथ एक-दूसरे को
चुकाओ, मत्ती 22:21 जो सम्राट का है वह **चु.**
चुगली लगाना, 2कुरिं 12:20 बदनाम करना, **चु.**
चुगली लगानेवाले, रोमि 1:29 वे **चु.**
चुन लिया, 2थिस्स 2:13 परमेश्वर ने तुम्हे **चु.**
चुना, रोमि 11:5 बचे हुए लोग जिन्हें **चु.** गया
1कुरिं 1:27 परमेश्वर ने मूर्खों को **चु.**
फिलि 3:12 मसीह यीशु ने मुझे **चु.**
1थिस्स 5:9 क्रोध झेलने के लिए नहीं **चु.**
1पत 2:4 मगर परमेश्वर का **चु.** हुआ
1पत 2:9 तुम **चु.** हुआ वंश हो
चुने, मत्ती 22:14 न्यौता पानेवाले बहुत हैं, **चु.** गए थोड़े
मत्ती 24:24 **चु.** हुओं को गुमराह
मत्ती 24:31 उसके स्वर्गदूत **चु.** हुओं को इकट्ठा करेंगे
मर 13:20 **चु.** हुओं की खातिर उसने दिन घटाए
मर 13:27 पृथ्वी के छोर से **चु.** हुओं को इकट्ठा
लूका 18:7 अपने **चु.** हुओं की खातिर इंसाफ करेगा
प्रका 17:14 जो बुलाए गए और **चु.** हुए
मत्ती 24:22; रोमि 8:33; 9:11; 11:28;
कुलु 3:12; 1थिस्स 1:4; 2तीमु 2:10.
चुप, 1कुरिं 14:34.
चुपचाप, गला 2:4 **चु.** घुस आए। हमारी जासूसी करने
चुराते, मत्ती 6:20 न चोर सेंध लगाकर **चु.** हैं
चूमकर, लूका 22:48 इंसान के बेटे को **चू.**
चूमना, लूका 7:38; 15:20; प्रेषि 20:37.
चेतावनी, 1कुरिं 10:11 हमारी **चे.** के लिए लिखी गयी
इब्रा 12:25 धरती पर परमेश्वर की **चे.** दे रहा
चेला, मत्ती 28:19 सब राष्ट्रों के लोगों को मेरा **चे.**
लूका 6:40 **चे.** अपने गुरु से बड़ा नहीं होता
चेले, यूह 8:31 मेरी शिक्षा में बने रहते हो, मेरे **चे.** हो
मत्ती 10:24, 42; 26:26, 56.
चेहरा, प्रेषि 6:15 उसका **चे.** ऐसा जैसे स्वर्गदूत का
चेहरे, 2कुरिं 4:6 मसीह के **चे.** से झलकता है
2कुरिं 3:7.
चैन, लूका 12:19 **चै.** से रह, खा-पी, मौज कर
चोगा, लूका 15:22 जल्दी करो! **चो.** लाओ
चोगे, लूका 20:46 शास्त्रियों, जिन्हें **चो.** पहनकर घूमना
प्रका 7:14 अपने **चो.** धोकर सफेद किए
मत्ती 24:18; मर 16:5; इब्रा 1:12;
प्रका 6:11; 7:9, 13.
चोर, मत्ती 6:20 जहाँ न तो **चो.** सेंध लगाकर
1कुरिं 6:10 न **चो.** परमेश्वर के राज के वारिस होंगे
1थिस्स 5:2 वैसे आ रहा जैसे रात को **चो.**
1पत 4:15 कोई **चो.** होने की वजह से दुःख न उठाए
प्रका 16:15 देख! मैं **चो.** की तरह आ रहा हूँ
चोरों, 1थिस्स 5:4 जिस तरह **चो.** पर
चोरी, इफि 4:28 जो **चो.** करता है वह अब से न करे

चौकन्ना, 2तीमु 4:5 सब बातों में **चौ.** रह, बुराई सह
चौकन्ने, 1पत 5:8 **चौ.** रहो। तुम्हारा दुश्मन
चौकस, 1पत 4:7 प्रार्थना के लिए **चौ.**
चौकसी, प्रका 16:15 अपने कपड़ों की **चौ.** करता है
चौकी, इब्रा 10:13.
चौड़ाई, इफि 3:18; प्रका 21:16.

छ

छड़, प्रका 12:5 सब राष्ट्रों को लोहे की **छ.** से हाँकेगा
छड़ी, इब्रा 9:4 जिसमें मन्ना और हारून की **छ.**
प्रका 2:27.
छत, मर 2:4; लूका 7:6.
छल, मत्ती 26:4 यीशु को **छ.** से पकड़ने
मर 14:1 **छ.** से मार डालें
2कुरिं 11:13 आदमी **छ.** से काम करनेवाले हैं
2कुरिं 12:16 मैंने तुम्हें **छ.** से फँसा लिया
2थिस्स 2:11 **छ.** को काम करने देता है
1पत 2:1 सारा **छ.** निकाल फेंको
1पत 2:22 न ही उसके मुँह से **छ.** की बातें निकलीं
छल-कपट, 2कुरिं 4:2 **छ.** के काम छोड़ दिए
छल-कपट की बातें, प्रका 22:15.
छलते, रोमि 3:13.
छलनी, 1तीमु 6:10 **छ.** कर लिया
छलनेवाली, कुलु 2:8 और **छ.** खोखली बातों
छल से भरी शिक्षाओं, 2पत 2:13 **छ.** में खुशी
छले, कुलु 2:4 कोई इंसान तुम्हें न **छ.**
छवि, 1कुरिं 15:49 उसकी **छ.** धारण करेंगे जो
इब्रा 1:3 हू-ब-हू परमेश्वर की **छ.** है
छाती, लूका 18:13 **छा.** पीटते हुए
लूका 23:48; यूह 13:25.
छाप, मत्ती 22:20 किसकी सूरत और **छा.**
छाया, कुलु 2:17 आनेवाली बातों की **छा.** हैं
इब्रा 8:5 स्वर्ग की चीज़ों की **छा.** है
इब्रा 9:5 करूब **छा.** किए हुए थे
इब्रा 10:1 कानून आनेवाली अच्छी बातों की **छा.**
याकू 1:17 न घट-बढ़, जैसे **छा.**
छावनी, इब्रा 13:11 **छा.** के बाहर जलाया जाता
छिड़कना, मर 7:4; इब्रा 9:13, 19, 21;
10:22; 12:24.
छिड़का, 1पत 1:2 यीशु का लहू **छि.** जाए
छिप, मत्ती 5:14 शहर, **छि.** नहीं सकता
छिपकर, यूह 18:20 मैंने कुछ भी **छि.** नहीं कहा
छिपाकर, कुलु 1:26 गुज़रे ज़मानों के दौरान **छि.**
छिपा, मत्ती 11:25 ये बातें बुद्धिमानों से **छि.** रखीं
लूका 8:17 **छि.** हुआ ज़ाहिर किया जाए
इफि 3:9 पवित्र रहस्य, परमेश्वर ने **छि.** रखा
कुलु 3:3 मसीह के साथ तुम्हारा जीवन **छि.** हुआ
छिपी, 1कुरिं 2:7 परमेश्वर की बुद्धि, **छि.** बुद्धि
प्रका 6:16.
छिपाया, लूका 9:45 उनसे **छि.** गया था कि वे
छिपे, प्रका 2:17 **छि.** मन्ना में से कुछ दूँगा
छीन, मत्ती 13:19 उसे दुष्ट **छी.** ले जाता
छीनेगा, यूह 10:28 कोई भी उन्हें मेरे हाथ से नहीं **छी.**
छुटकारा, लूका 24:21 इसराएल को **छु.** दिलाएगा
इब्रा 9:12 हमारे लिए सदा तक कायम रहनेवाला **छु.**
2पत 1:4 भ्रष्टता से **छु.**
छुटकारे, लूका 21:28 **छु.** का वक्त पास
छुड़ाए, फिलि 1:23 मैं यही चाहता हूँ कि **छु.** जाकर
छुड़ाएगा, रोमि 7:24 मुझे इस शरीर से कौन **छु.**?
छुड़ानेवाला, रोमि 11:26 **छु.** सिय्योन से आएगा
प्रेषि 7:35.
छुड़ाया, प्रका 1:5 अपने लहू के ज़रिए हमें पापों से **छु.**
छूआ, 1यूह 1:1 गौर किया और अपने हाथों से **छू.**
मत्ती 8:3; 14:36; मर 5:30.
छूट, रोमि 7:2 पति के कानून से **छू.** जाती है
1थिस्स 4:7 अशुद्ध कामों की **छू.** नहीं
छूना, 2कुरिं 6:17 अशुद्ध चीज़ को **छू.** बंद करो
कुलु 2:21 हाथ न लगाना, न चखना, न **छू.**
छोटा, इब्रा 7:7 **छो.** बड़े से आशीष पाता है
याकू 3:5.
छोटी-छोटी बातों, 1तीमु 6:5 **छो.** पर झगड़े
छोटी-से-छोटी, मत्ती 5:19.
छोटे, इब्रा 8:11 **छो.** से लेकर बड़े तक सब मुझे जानेंगे
छोटे झुंड, लूका 12:32 **छो.** मत डर
छोटे-से-छोटे, मत्ती 25:40 मेरे इन **छो.** भाइयों
छोड़, मत्ती 27:46 तू ने मुझे क्यों **छो.** दिया?
लूका 6:37 **छो.** दिया करो, तुम्हें भी
2थिस्स 3:14 उसके साथ मिलना-जुलना **छो.** दो
छोड़ें, इब्रा 10:25 इकट्ठा होना न **छो**
छोड़ता, रोमि 9:29 हमारे लिए एक वंश न **छो.**
छोड़ दी है, 2पत 2:15 सीधी राह **छो.**
छोड़ा, मत्ती 19:29 जिस किसी ने पिता को या **छो.** हो
छोड़ी हुई, गला 4:27 **छो.** स्त्री की संतान
छोड़ो, कुलु 1:23 आशा को न **छो.**
छः सौ छियासठ, प्रका 13:18.

ज

ज़ंग, याकू 5:3.
जंगली, रोमि 11:24 **जं.** जैतून
जंगली जानवर, प्रका 19:20 **जं.** का निशान
प्रका 13:17; 17:3.
जंगली पौधे के बीज, मत्ती 13:25 दुश्मन **जं.** बोकर
ज़ंजीरें, प्रेषि 12:7 हाथों की **ज़ं.** गिर पड़ीं
ज़ंजीरों, इफि 6:20 **ज़ं.** में जकड़ा हुआ राजदूत हूँ
फिलि 1:13 सभी जान गए हैं कि मैं **ज़ं.** में हूँ
जकर्याह 1., लूका 11:51 **ज.** के खून तक
जकर्याह 2., लूका 1:5, 12, 18, 40, 67.
जक्कई, लूका 19:2, 5, 8.
ज़ख्मी, प्रेषि 19:16.
जगत, प्रका 16:14 सारे **ज.** के राजाओं
जगमगाती, प्रका 21:23.
जगह, मत्ती 24:15 चीज़, पवित्र **ज.** में खड़ी
यूह 14:2 पिता के घर में रहने की बहुत-सी **ज.**
यूह 14:2 तुम्हारे लिए **ज.** तैयार करने जा रहा हूँ
प्रका 12:6, 8.
जगाने, यूह 11:11 उसे **ज.** जा रहा हूँ
जच्चा की पीड़ा, गला 4:19 फिर से **ज.** में हूँ
गला 4:27.
जड़, रोमि 11:16 अगर **ज.** पवित्र है, तो डालियाँ
इफि 3:17 **ज.** पकड़कर कायम
कुलु 2:7 उसमें **ज.** पकड़कर मज़बूत बने रहो और
1तीमु 6:10 पैसे का प्यार तरह-तरह की बुराई की **ज.**
इब्रा 12:15 कोई ज़हरीली **ज.** न पैदा हो
मत्ती 3:10; 13:21; रोमि 11:18.
जड़ से उखाड़, 2कुरिं 10:4 समायी बातों को **ज.** सकें
मत्ती 15:13; यहू 12.
जनने, प्रका 12:2 बच्चा **ज.** की पीड़ा से तड़प रही थी
जन-सेवक, रोमि 13:6 परमेश्वर के ठहराए **ज.**
रोमि 15:16 मसीह के **ज.** के नाते गैर-यहूदी राष्ट्रों में
इब्रा 8:2 पवित्र जगह का **ज.**
जन-सेवा, इब्रा 8:6 श्रेष्ठ **ज.**
जन्म, मत्ती 1:16 मरियम ने यीशु को **ज.** दिया
लूका 2:11 उद्धार करनेवाले का **ज.** हो चुका
याकू 1:15 इच्छा, पाप को **ज.** देती है
1पत 1:3 हमें एक नया **ज.** दिया कि जीवित आशा
मत्ती 2:1; 1कुरिं 15:8.
जन्मदिन, मत्ती 14:6; मर 6:21.
जन्म देनेवाली, यूह 16:21.
ज़बरदस्त, इब्रा 4:12 वचन **ज़.** असर करता है
ज़बरदस्त लालसाओं, याकू 4:1 सुख पाने की **ज़.**
ज़बरदस्ती वसूला, 2कुरिं 9:5 न ऐसा जो **ज़.** गया
जबरन, मत्ती 14:22.
ज़बान, 1कुरिं 14:9 **ज़.** से ऐसी बोली जो समझ आ सके
ज़बानी, लूका 1:4; प्रेषि 18:25; गला 6:6.
जबूलून, प्रका 7:8.
जब्दी के, मत्ती 4:21; लूका 5:10; यूह 21:2.
ज़मीन, प्रेषि 7:5 अब्राहम को इस देश में कोई **ज़.**
2पत 3:5 ठोस **ज़.** पानी से ऊपर उठी
मत्ती 19:29.
ज़मीर, रोमि 9:1 **ज़.** गवाही देता है
1कुरिं 10:29 दूसरे के **ज़.** से क्यों परखी जाए?
1तीमु 1:19 विश्वास और साफ **ज़.** बनाए रख
1तीमु 4:2 जिनका **ज़.** लोहे से दागा गया हो
इब्रा 9:14 हमारे **ज़.** को मुरदा कामों से शुद्ध कर
प्रेषि 23:1; 1कुरिं 8:12; 2कुरिं 1:12;
1पत 3:16, 21.
ज़रा-सा, 1कुरिं 5:6.
ज़रिया, इब्रा 2:14 मौत देने का **ज़.** है
ज़रूर आएगा, 2पत 2:3 उनका विनाश **ज.**
ज़रूरत, मत्ती 6:32 तुम्हें इन चीज़ों की **ज़.** है
1कुरिं 12:21 हाथ: मुझे तेरी कोई **ज़.** नहीं
1कुरिं 7:37; रोमि 16:2; इफि 4:28;
इब्रा 5:12; 7:27; 7:12.
ज़रूरत के हिसाब से, 2तीमु 2:2.
ज़रूरतें, तीतु 3:14 अपनी **ज़.** पूरी कर सकें
ज़रूरी, फिलि 1:24 दुनिया में जीते रहना ज़्यादा **ज़.** है
इब्रा 2:1 ध्यान देना **ज़.** है
2कुरिं 2:16; 3:5.
जल, 1कुरिं 3:15 अगर किसी का काम **ज.** जाता है
जलता, 2कुरिं 11:29.
जलन, रोमि 10:19 **ज.** पैदा करूँगा
1कुरिं 10:22 क्या हम यहोवा को **ज.** दिला रहे हैं?
1कुरिं 13:4 प्यार **ज.** नहीं रखता
2कुरिं 11:2 मुझे तुम्हारे लिए वैसी **ज.** है
1कुरिं 3:3.
जलन-कुढ़न, इफि 4:31 हर तरह की **ज.**
जलने, रोमि 1:27 काम-वासना से **ज.** लगे
1कुरिं 7:9 काम-इच्छा की आग में **ज.** से बेहतर है
जलप्रलय, मत्ती 24:38 **ज.** से पहले, खा रहे थे और
2पत 2:5 वह दुनिया पर **ज.** लाया

जला, प्रका 17:16 उसे आग में **ज.** देंगे
प्रका 18:8 उसे आग में पूरी तरह **ज.** दिया जाएगा
जल्दबाज़ी, 1तीमु 5:22 ठहराने में कभी **ज.** न कर
जवानी, 2तीमु 2:22 **ज.** में उठनेवाली इच्छाओं से दूर
जवाब, मत्ती 5:21, 22 अदालत के सामने **ज.** देना
कुलु 4:6.
ज़हर, याकू 3:8 जीभ **ज.** से भरी
ज़हरीले साँप, मत्ती 23:33 **ज़.** के संपोलो
जहाज़, 1पत 3:20; याकू 3:4; प्रका 18:19.
जहाज़ टूटना, 2कुरिं 11:25; 1तीमु 1:19.
जाँच, प्रेषि 17:11 हर दिन शास्त्र की **जाँ.**
1कुरिं 11:28 अपनी **जाँ.** करे और फिर
गला 6:4 हर कोई खुद अपने काम की **जाँ.** करे
1पत 2:12 जिस दिन वह **जाँ.** करने आएगा
जाँचता, 1थिस्स 2:4 परमेश्वर जो हमारे दिलों को **जाँ.** है
प्रका 2:23 जो गुरदों और दिलों को **जाँ.** है
जाँचते, 2कुरिं 13:5 **जाँ.** रहो कि तुम विश्वास में हो या
जाँचनेवाला, रोमि 8:27 दिलों को **जाँ.** जानता है
जाँच-पड़ताल, प्रेषि 7:31 **जाँ.** करने के लिए पास जाने
1कुरिं 4:3 मायने नहीं रखती कि तुम मेरी **जाँ.** करो
1कुरिं 4:3 यहाँ तक कि मैं खुद अपनी **जाँ.** नहीं करता
1कुरिं 4:4 जो मेरी **जाँ.** करता है वह यहोवा है
1पत 1:11 **जाँ.** करते रहे कि किस खास वक्त
लूका 23:14.
जाँच-परख, 1कुरिं 2:15.
जाँचा, लूका 19:44 जब तुझे **जाँ.** जा रहा था
जाँचा-परखा, 1कुरिं 2:14 पवित्र शक्ति की मदद से **जाँ.**
1कुरिं 2:15 वह किसी इंसान के ज़रिए **जाँ.** नहीं जाता
जाग, रोमि 13:11 **जा.** उठने की घड़ी
जागता, लूका 12:37 आने पर उन्हें **जा.** पाए!
प्रका 16:15 सुखी है वह जो **जा.** रहता है
जागते, मत्ती 26:41 **जा.** रहो और प्रार्थना
1थिस्स 5:6 **जा.** रहें और
1कुरिं 16:13; इफि 6:18; कुलु 4:2.
जाति, मत्ती 21:43 तुमसे लिया जाएगा और उस **जा.** को
लूका 23:2 यह आदमी हमारी **जा.** को बगावत के लिए
प्रेषि 10:35.
जातियाँ, मत्ती 24:30 धरती की सारी **जा.** छाती पीटेंगी
जातियों, प्रका 7:9 सब **जा.** से एक बड़ी भीड़
जादूगर, प्रेषि 13:6.
जान, मत्ती 16:26 जहान हासिल कर ले, मगर **जा.**
जानता, यूह 10:14 भेड़ों को **जा.** हूँ और भेड़ें मुझे
1कुरिं 13:12 मेरे बारे में पूरी तरह से **जा.** है
जानते, रोमि 8:28 **जा.** हैं कि परमेश्वर अपने सब कामों
1यूह 3:2.
जानना, 1कुरिं 14:35 **जा.** चाहती हैं तो पति
जानबूझकर, इब्रा 10:26 अगर हम **जा.** पाप करते रहते
2पत 3:5 **जा.** ध्यान नहीं देते
जानलेवा, 2कुरिं 4:10 **जा.** बदसलूकी बरदाश्त करते
याकू 3:8 जीभ, **जा.** ज़हर से भरी
जानवरों, 2पत 2:12 लोग, ऐसे **जा.** जैसे हैं जो पकड़े
यहू 10.
जाना, मत्ती 10:26 और राज़ **जा.** न जाएगा
प्रेषि 4:13 उन्होंने **जा.** कि ये कम पढ़े-लिखे
जाने नहीं दिया, प्रेषि 19:30.
जाने-माने, प्रेषि 25:23.
जानोगे, यूह 8:32 सच्चाई **जा.** और सच्चाई तुम्हें
जायज़, 1कुरिं 6:12 सब बातें **जा.** हैं, मगर सब बातें
1कुरिं 10:23.
जारी, इब्रा 9:18 करार भी **जा.** किया गया
1तीमु 1:9.
जाल, यूह 21:11 इतनी ज़्यादा होने के बावजूद **जा.**
रोमि 11:9; यूह 21:6, 8.
जा लग, लूका 17:6.
जालसाज़ी, प्रेषि 13:10 **जा.** और मक्कारी से भरा हुआ
जासूसी, गला 2:4 हमारी **जा.** ताकि हमें जो आज़ादी है
जासूसों, इब्रा 11:31 राहाब ने **जा.** का सत्कार किया
ज़ाहिर, लूका 8:17 जो **ज़ा.** न किया जाए
यूह 12:38 अपनी ताकत किस पर **ज़ा.** की
यूह 17:6 मैंने तेरा नाम **ज़ा.** किया है
यूह 21:1 यीशु ने खुद को **ज़ा.**
रोमि 5:8 परमेश्वर ने अपने प्यार की अच्छाई **ज़ा.** की
रोमि 7:5 कानून के ज़रिए वासनाएँ **ज़ा.** हुईं
रोमि 16:25 पवित्र रहस्य **ज़ा.** की गयी
1कुरिं 1:7 प्रभु यीशु मसीह के **ज़ा.** होने का
1कुरिं 3:13 हरेक का काम **ज़ा.** हो जाएगा
कुलु 1:26 पवित्र रहस्य पवित्र जनों पर **ज़ा.**
कुलु 3:4 जब मसीह महिमा **ज़ा.** करेगा, तब तुम भी
2थिस्स 2:8 अपनी मौजूदगी **ज़ा.** करेगा
1तीमु 5:12 पहले जो इच्छा **ज़ा.** की, उसके खिलाफ
1तीमु 5:24 दूसरों के पाप **ज़ा.** होते हैं बाद में
1तीमु 6:14 हमारे प्रभु यीशु मसीह के **ज़ा.** होने तक
2तीमु 4:1 उसके **ज़ा.** के ज़रिए आदेश देता हूँ
तीतु 2:11 महा-कृपा **ज़ा.** की गयी
इब्रा 9:26 एक ही बार हमेशा के लिए खुद को **ज़ा.**
इब्रा 11:14 वे **ज़ा.** करते हैं कि खोज में हैं

1यूह 1:2 ज़िंदगी हम पर **ज़ा.** की गयी और हमने
1यूह 3:2 **ज़ा.** नहीं हुआ कि हम भविष्य में कैसे होंगे
यूह 3:21; रोमि 1:19; 3:21; 9:19; 1कुरिं 2:4, 10; 3:13; 12:7; गला 5:19; इफि 2:7; फिलि 3:15; 1तीमु 3:16; 2तीमु 4:8; तीतु 2:13; 1पत 5:4; 1यूह 3:8; प्रका 15:4.
ज़िंदगी, यूह 3:16 नाश न किया जाए बल्कि **ज़िं.** पाए
यूह 17:3 हमेशा की **ज़िं.** पाने के लिए ज़रूरी
1यूह 1:2 हमेशा की **ज़िं.** ज़ाहिर की गयी और हमने
प्रका 2:10 मैं तुम्हें **ज़िं.** का ताज दूँगा
मत्ती 6:27; लूका 12:25; यूह 5:24; रोमि 6:23.
ज़िंदा, मत्ती 4:4 इंसान सिर्फ रोटी से **ज़िं.** नहीं रह
लूका 20:37 मरे हुओं को **ज़िं.** किया जाता है
यूह 6:51 इस रोटी से खाता है हमेशा तक **ज़िं.** रहेगा
प्रेषि 2:24 उसे **ज़िं.** कर आज़ाद किया
रोमि 1:17 नेक जन, अपने विश्वास से **ज़िं.** रहेगा
रोमि 4:17 परमेश्वर मरे हुओं को **ज़िं.** करता है
रोमि 6:11 मसीह के ज़रिए परमेश्वर के लिए **ज़िं.**
रोमि 7:9 एक वक्त मैं कानून के बिना **ज़िं.** था, मगर
1कुरिं 15:22 मसीह में सभी **ज़िं.** किए जाएँगे
इफि 6:3 तू धरती पर बहुत दिनों तक **ज़िं.** रहे
रोमि 8:13; 2कुरिं 13:4; 1थिस्स 4:17; इब्रा 7:25; 1पत 3:18.
ज़िक्र, फिलि 3:18 कई जिनका **ज़ि.** किया करता था
जिन्हें पैसे से प्यार था, लूका 16:14 फरीसी **जि.**
जिब्राईल, लूका 1:19, 26.
ज़िम्मेदारी, इब्रा 5:9 सबको उद्धार दिलाने की **ज़ि.**
1कुरिं 9:16.
ज़िलों, मर 5:17 उनके **ज़ि.** से दूर चला जाए
लूका 3:1.
जी, यूह 11:25 चाहे मर जाए, तो भी **जी.**
1थिस्स 4:15 हम जो **जी.** रहे होंगे
जी उठना, यूह 5:29 **जी.** जीवन के लिए, **जी.** सज़ा
यूह 11:25 मरे हुओं का **जी.** और जीवन मैं हूँ
1कुरिं 15:42 ऐसा ही मरे हुओं का **जी.** भी है
2तीमु 2:18 कहते हैं कि मरे हुओं का **जी.** हो चुका है
जी उठने, मत्ती 22:30 मरे हुओं के **जी.** पर न तो शादी
रोमि 6:5 उसके **जी.** की समानता में एक
1कुरिं 15:12, 13, 21; फिलि 3:10; इब्रा 6:2.
जी उठाऊँगा, यूह 6:39, 40, 44, 54.
जी उठाए, फिलि 3:11 जो पहले **जी.** जाएँगे
कुलु 3:1 अगर तुम मसीह के साथ **जी.** गए थे
जी उठाया, मत्ती 28:7 चेलों को बताओ उसे **जी.** गया है
1कुरिं 15:44 आत्मिक शरीर **जी.** जाता है
2कुरिं 4:14 जिसने यीशु को **जी.** हमें जी उठाएगा
1कुरिं 15:17, 42; इफि 1:20; 2:6; कुलु 2:12.
जी उठेंगे, प्रेषि 24:15 अच्छे और बुरे **जी.**
1थिस्स 4:16 मसीह में मरे हुए पहले **जी.**
जी-जान, 1तीमु 4:13 पढ़कर सुनाने में **जी.**
2तीमु 4:2 **जी.** से लगा रह
2पत 1:5.
जीत, यूह 16:33 मैंने दुनिया पर **जी.** हासिल की है
रोमि 8:37 सारी मुसीबतों में **जी.**
1कुरिं 15:55 मौत, तेरी **जी.** कहाँ है?
1कुरिं 15:57 हमारे प्रभु के ज़रिए हमें **जी.** दिलाता है
2कुरिं 2:14 हमें **जी.** के जुलूस में
कुलु 2:15 **जी.** के जुलूस में उन्हें पीछे-पीछे चलाया
याकू 2:13 दया **जी.** हासिल करती है
1पत 3:1, 2 पति, **जी.** लिया जाए
1यूह 5:4 जिस जीत से दुनिया पर **जी.** हासिल की
प्रका 2:7 जो **जी.** हासिल करता है उसे
प्रका 3:21 जो **जी.** हासिल करता है उसे राजगद्दी पर
प्रका 6:2 **जी.** हासिल करता हुआ अपनी **जी.** पूरी
प्रका 11:7 जंगली जानवर उन पर **जी.** हासिल करेगा
प्रका 15:2 जानवर और उसकी मूरत पर **जी.**
प्रका 17:14 मेम्ना उन पर **जी.** हासिल करेगा
प्रका 21:7 जो कोई **जी.** हासिल करेगा उसे ये चीज़ें
1यूह 2:13; 4:4; 5:4, 5; प्रका 2:11, 17, 26; 3:5, 12; 5:5; 12:11.
जीतते, रोमि 12:21 बुराई को **जी.** रहो
जीता, रोमि 6:10 परमेश्वर के लिए **जी.** है
रोमि 14:7 सिर्फ अपने लिए नहीं **जी.**
प्रका 1:18 देख! मैं हमेशा-हमेशा के लिए **जी.** हूँ
जीते, इफि 2:2 इस दुनिया के मुताबिक **जी.** थे
जीते-जी, प्रका 19:20.
जीनेवाले, प्रका 15:7 सदा-सदा **जी.** परमेश्वर
जीभ, प्रेषि 2:3 आग जो **जी.** जैसी थीं
फिलि 2:11 हर **जी.** खुलकर स्वीकार करे कि यीशु
याकू 3:6 **जी.** एक आग है
जीव-जंतु, प्रका 8:9.
जीवन, मत्ती 10:28 **जी.** और शरीर दोनों को मिटा
यूह 4:10 वह तुझे **जी.** देनेवाला पानी देता
यूह 5:26 पिता के पास **जी.** देने की शक्ति है
यूह 11:25 मरे हुओं का जी उठना और **जी.** मैं ही हूँ
यूह 14:6 मैं ही वह राह, सच्चाई और **जी.** हूँ
रोमि 10:5 कानून से नेक ठहर सकेगा और **जी.** पाएगा

प्रका 20:15 **जी.** की किताब में लिखा हुआ नहीं पाया
प्रका 22:14 **जी.** देनेवाले पेड़ों का फल खाने का
प्रका 22:17 जो चाहे **जी.** देनेवाला पानी ले
याकू 1:12; 1पत 3:10; प्रका 7:17.
जीवन देनेवाला, 1कुरिं 15:45 आखिरी आदम **जी.** बना
जीवन देनेवाले पेड़, प्रका 2:7 **जी.** का फल खाने दूँगा
जीवन देनेवाले पेड़ों, प्रका 22:19 परमेश्वर **जी.** में से
जीवित, 1तीमु 3:15 **जी.** परमेश्वर की मंडली
इब्रा 4:12 परमेश्वर का वचन **जी.** है और ज़बरदस्त
इब्रा 10:31 **जी.** परमेश्वर के हाथों में पड़ना
1पत 1:3 नया जन्म दिया कि **जी.** आशा पा सकें
1पत 2:5 **जी.** पत्थरों जैसे हो, तुम्हारा किया जा रहा है
जीवितों, मत्ती 22:32 वह **जी.** का परमेश्वर है
प्रेषि 10:42 **जी.** और मरे हुओं का न्यायी
जुड़वाँ, यूह 11:16; 20:24.
जुड़ी, इब्रा 2:17 परमेश्वर से **जु.** बातों
जुड़े रहो, फिलि 2:2 एक-दूसरे से **जु.**
जुतने, गला 5:1 गुलामी के जूए में न **जु.**
जुतो, 2कुरिं 6:14 अविश्वासियों के साथ जूए में न **जु.**
ज़ुबान, याकू 1:26 अगर कोई आदमी अपनी **ज़ु.** पर
जुर्म साबित नहीं हुआ, प्रेषि 22:25 जिसका **जु.**
जुर्रत, रोमि 15:18 कहने की **जु.** नहीं करूँगा
इब्रा 11:29 मिस्रियों ने **जु.** की
जुलूस, कुलु 2:15 जीत के **जु.** में
2 कुरि 2:14.
ज़ुल्म, मत्ती 5:11 तुम्हें बदनाम करें, तुम पर **ज़ु** ढाएँ
मत्ती 5:12 उन्होंने भविष्यवक्ताओं पर **ज़ु.** ढाए
मत्ती 5:44 जो तुम पर **ज़ु.** कर रहे हैं, उनके लिए
मत्ती 10:23 जब वे एक शहर में तुम पर **ज़ु.** ढाएँ
मत्ती 13:21 **ज़ु.** सहना पड़ता है
मत्ती 23:34 शहर-शहर **ज़ु.** ढाओगे
लूका 21:12 तुम पर **ज़ु.** ढाएँगे, जेलखानों के हवाले
यूह 15:20 मुझ पर **ज़ु.** किया, तुम पर भी **ज़ु.** करेंगे
रोमि 8:35 **ज़ु.** या भूख या उघाड़ापन
रोमि 12:14 जो **ज़ु.** करते हैं, उनके लिए आशीष
1कुरिं 4:12 वे **ज़ु.** करते हैं, हम सह लेते हैं
2कुरिं 4:9 हम पर **ज़ु.** ढाए जाते हैं, मगर हम
गला 1:13 मैं मंडली पर **ज़ु.** ढाता रहा
1तीमु 1:13 मैं **ज़ु.** ढानेवाला
इब्रा 11:25 **ज़ु.** सहने का चुनाव किया
मर 5:10; 10:30; प्रेषि 7:52; 13:50;
2थिस्स 1:4; 2तीमु 3:11, 12.
ज़ुल्मों, 2कुरिं 12:10 **ज़ु.** और मुश्किलों में
जूआ, मत्ती 11:30 मेरा **जू.** आरामदायक मेरा बोझ
मत्ती 11:29; गला 5:1.
जूतियों, यूह 1:27 मैं उसकी **जू.** के फीते खोलने के भी
जूते, इफि 6:15 तैयारी के **जू.** पहनकर
जूफा, यूह 19:29; इब्रा 9:19.
जेल, मत्ती 11:2; 25:36; प्रेषि 5:19, 21;
लूका 22:33.
जैतून, रोमि 11:17 जंगली **जै.** कलम लगाया गया
प्रका 11:4 **जै.** के दो पेड़ और दो
रोमि 11:24.
जैतून पहाड़, लूका 22:39; प्रेषि 1:12.
जैसी ज़िंदगी बितायी, प्रेषि 26:4 लड़कपन से **जै.**
जैसे का तैसा, इब्रा 1:12 मगर तू **जै.** बना रहता है
जोखिम, रोमि 16:4 उन्होंने अपनी जान **जो.** में डाल दी
1कुरिं 15:30 हम हर घड़ी **जो.** उठाते हैं?
जोड़, फिलि 4:17 तुम्हारे खाते में और अच्छाई **जो.** देगा
कुलु 3:14 एकता में जोड़नेवाला **जो.** है
इफि 4:16; कुलु 2:19.
जोड़ता, प्रका 22:18 अगर कोई कुछ **जो.** है
जोड़ा, गला 3:15 करारनामा, न उसमें **जो.** जा सकता
जोतने-बोनेवालों, इब्रा 6:7 **जो.** के लिए
जोश, रोमि 10:2 परमेश्वर के लिए **जो.** रखते हैं, मगर
यूह 2:17; 1पत 3:13.
जोश के साथ, 1कुरिं 12:31; 14:1; गला 4:17.
जोशीला, गला 1:14 मैं परंपराओं को मानने में **जो.** था
जोशीले, तीतु 2:14 बढ़िया कामों के लिए **जो.**
लूका 6:15; प्रेषि 1:13; प्रका 3:19.
ज़्यादती, 2कुरिं 11:1 थोड़ी-सी **ज़्या.**
ज़्यादा, 1कुरिं 15:10 मैंने उन सबसे **ज़्या** मेहनत की
2कुरिं 12:7 हद-से-**ज़्या.** रहस्य प्रकट किए गए
ज़्यादा अहमियत, मत्ती 23:23 **ज़्या.** रखनेवाली
ज़्यादातर लोगों, 2कुरिं 2:6 **ज़्या.** ने जो ताड़ना दी
ज़्यादा बुद्धिमान, 1कुरिं 1:25 परमेश्वर की मूर्खता **ज़्या.**
ज़्योतियों, याकू 1:17 आकाश की **ज्यो.** के पिता
ज्योतिषी, मत्ती 2:1 पूरब से **ज्यो.**
मत्ती 2:7, 16.
ज्वाला, इब्रा 1:7.

ज्ञ

ज्ञान, लूका 11:52 तुमने वह चाबी चुरा ली, जो **ज्ञा.** का
यूह 17:3 ज़िंदगी के लिए ज़रूरी, तेरा **ज्ञा.** लेते रहें
प्रेषि 26:24 बहुत **ज्ञा.** ने तुझे पागल कर दिया
1तीमु 6:20 जिसे झूठ ही **ज्ञा.** कहा जाता है
रोमि 11:33; 1कुरिं 1:19; 8:1; 2पत 3:18.

ज्ञान की रौशनी, इब्रा 6:4 एक बार **ज्ञा.** हासिल कर चुके
इब्रा 10:32 तुमने **ज्ञा.** पाने के बाद
ज्ञानियों, मत्ती 11:25 **ज्ञा.** से छिपा रखीं
1कुरिं 1:19 **ज्ञा.** के ज्ञान को रद्द

झ

झगड़ा करनेवाला, तीतु 1:7 नशे में **झ.** नहीं
1तीमु 3:3.
झगड़ा, मत्ती 12:19 वह न **झ.** करेगा
फिलि 2:14 सब काम बिना **झ.** किए
झगड़े, 1कुरिं 1:11 तुम्हारे बीच **झ.** हो रहे हैं
गला 5:20 गुस्से से उबलना, **झ.**
याकू 3:16 जहाँ ईर्ष्या और **झ.** होते हैं, वहाँ
याकू 4:1 तुम्हारे बीच **झ.** कहाँ से आए
फिलि 1:17 **झ.** की भावना से
1तीमु 6:5 छोटी-छोटी बातों पर **झ.** करते हैं
प्रेषि 15:2; 23:7; 25:19; 2तीमु 2:14, 23; तीतु 3:9.
झगड़ालू, रोमि 2:8 जो **झ.** हैं
1तीमु 3:3; तीतु 3:2.
झगड़ालूपन, फिलि 2:3 **झ.** से कुछ न करो
झनझन, 1कुरिं 13:1 पीतल या **झ.** बजती झांझ
झपट, यूह 10:12 भेड़िया भेड़ों पर **झ.** पड़ता और
झपटकर, यहू 23 उन्हें **झ.** आग से बाहर निकालो
झलकती, इब्रा 1:3 उसमें परमेश्‍वर की महिमा **झ.** है
झलकाते, 2कुरिं 3:18 चेहरों से आइने की तरह **झ.** हैं
झाँककर, 1पत 1:12 स्वर्गदूत **झाँ.** देखने की तमन्‍ना
झांझ, 1कुरिं 13:1 प्यार न हो, झनझन बजती **झां.**
झाड़, मत्ती 10:14 अपने पैरों की धूल **झा.** देना
प्रेषि 13:51 अपने पाँवों की धूल **झा.** दी
झालर/झालरें, मत्ती 9:20; 23:5; मर 6:56.
झील, प्रका 19:20 आग की **झी.** गंधक से जलती
प्रका 21:8 आग की धधकती **झी.**
झुंड, लूका 12:32 छोटे **झुं.**, मत डर
1पत 5:3 बल्कि **झुं.** के लिए मिसाल बन जाओ
मत्ती 8:30; 26:31; मर 5:11; 1पत 5:2.
झुकाव, फिलि 3:15 अगर तुम्हारे मन का **झु.**
झूठ, यूह 8:44 झूठा है और **झू.** का पिता है
रोमि 1:25 सच्चाई के बदले **झू.** पर यकीन किया
इफि 4:25 **झू.** को दूर किया
कुलु 3:9 एक-दूसरे से **झू.** मत बोलो
2थिस्स 2:11 कि वे **झू.** पर यकीन करें
1तीमु 6:20 जिसे **झू.** ही ज्ञान कहा जाता है
इब्रा 6:18 परमेश्‍वर का **झू.** बोलना नामुमकिन
इफि 4:14; 1यूह 4:6; प्रका 14:5.
झूठा, लूका 3:14 किसी पर **झू.** इलज़ाम न लगाओ
यूह 8:44 शैतान **झू.** और झूठ का पिता
रोमि 3:4 परमेश्‍वर सच्चा, चाहे हर इंसान **झू.**
1यूह 1:10; 4:20; 5:10.
झूठे, मत्ती 24:24 **झू.** मसीह और **झू.**
2कुरिं 11:13 ऐसे आदमी **झू.** प्रेषित हैं
2थिस्स 2:9 शैतान का, **झू.** चमत्कारों और
गला 2:4.
झूठी, 2पत 2:3 **झू.** बातें बनाकर तुम्हें लूटेंगे
मत्ती 26:59; 1थिस्स 2:3.
झूठी कहानियों, 1तीमु 1:4; 4:7; 2पत 1:16.
झूठी बातों में, 1तीमु 4:2; प्रका 21:27.
झूठे भविष्यवक्ता, 1यूह 4:1 बहुत-से **झू.** निकल पड़े हैं
मत्ती 24:11; 2पत 2:1; प्रका 16:13.
झूठे भविष्यवक्ताओं, मत्ती 7:15 **झू.**, भेड़ों के वेश में
झूठे मसीह, मत्ती 24:24; मर 13:22.
झोंके, इफि 4:14 शिक्षाओं के हर **झों.** से उड़ाए जाते
मत्ती 3:10; 7:19.

ट

टला, प्रेषि 21:14 अपनी बात से न **ट.**
टाँगें, यूह 19:33 उन्होंने उसकी **टाँ.** नहीं तोड़ीं
टाट, प्रका 11:3.
टालना, मर 6:26.
टिकाए, इब्रा 12:2 यीशु पर नज़र **टि.** रहें
टिकी, 1कुरिं 3:14 अगर किसी की इमारत **टि.** रहेगी
टिड्डियाँ, मत्ती 3:4; प्रका 9:3.
टीले, मत्ती 8:32; मर 5:13; लूका 8:33.
टुकड़े, मत्ती 15:27 पिल्ले **टु.** तो खा ही लेते हैं
मत्ती 14:20; 15:37; यूह 13:26, 27, 30.
टुकड़े-टुकड़े, मत्ती 21:44 इस पत्थर पर **टु.** हो जाएगा
टेक, मत्ती 8:11 अब्राहम के साथ मेज़ से **टे.**
मत्ती 26:20; लूका 22:27.
टेककर, इफि 3:14 मैं पिता के सामने घुटने **टे.**
टेके, फिलि 2:10 हर कोई यीशु के नाम से घुटना **टे.**
टेढ़ी, मत्ती 17:17 अविश्‍वासी और **टे.** पीढ़ी
प्रेषि 20:30 **टे.** मेढ़ी बातें कहेंगे
फिलि 2:15 एक **टे.** और भ्रष्ट
टेढ़ी बातों को सीध में, 2तीमु 3:16.
टेढ़े-मेढ़े, लूका 3:5 **टे.** रास्ते सीधे कर दिए जाएँ

टोकरे, 2कुरिं 11:33 **टो.** में बिठाकर उतार दिया गया
मत्ती 14:20; 15:37.
टोप, इफि 6:17 उद्धार का **टो.**
1थिस्स 5:8.

ठ

ठंडा, मत्ती 24:12 ज़्यादातर का प्यार **ठं.** हो जाएगा
इब्रा 11:34 धधकती आग को **ठं.** किया
प्रका 3:15 तू न तो **ठं.** है न गर्म
मत्ती 10:42; प्रका 3:16.
ठंडे पड़ने, 2पत 1:8 **ठं.** या निष्फल होने नहीं देंगे
ठगना, मर 10:19 किसी को न **ठ.**
ठगे, 1कुरिं 6:7 तुम **ठ.** जाना
ठहरा, तीतु 1:5 तू **ठ.** सके
ठहराएँ, प्रेषि 6:3.
ठहराएगा, मत्ती 24:51 सज़ा देगा और **ठ.**
ठहराए समय, गला 4:10 **ठ.** और साल मनाते हो
ठहराए हुए दिनों, प्रेषि 1:7 समयों या **ठ.**
1थिस्स 5:1 समयों और **ठ.** के बारे में
ठहराता, 1कुरिं 7:17 मैं मंडलियों के लिए आदेश **ठ.** हूँ
ठहराया, यूह 15:16 **ठ.** है कि तुम फल लाते रहो
प्रेषि 17:26 उसने वक्त **ठ.**
प्रेषि 17:31 एक आदमी के ज़रिए जिसे उसने **ठ.** है
रोमि 5:18 नतीजा, इंसानों के लिए नेक **ठ.** जाना हुआ
1कुरिं 9:14 प्रभु ने **ठ.** कि खुशखबरी से उनकी
1तीमु 1:12 मुझे सेवा के लिए **ठ.** है
1तीमु 2:7 मुझे एक प्रचारक और प्रेषित **ठ.** गया
इब्रा 1:2 बेटा, जिसे उसने सब चीज़ों का वारिस **ठ.**
प्रेषि 17:26; 2तीमु 1:11; इब्रा 5:1; 8:3.
ठहरायी, 2कुरिं 10:13 जो सीमा **ठ.** गयी, उससे बाहर
यहू 4 शास्त्र में पहले से सज़ा **ठ.** जा चुकी है
मत्ती 25:41.
ठहराए, प्रेषि 14:23 मंडली में बुज़ुर्ग **ठ.**
ठहरानेवाली, 2कुरिं 3:9 नेक **ठ.**
ठाना, 2कुरिं 9:7 उसने अपने दिल में **ठा.** है
ठिंगना, लूका 19:3 क्योंकि वह **ठिं.** था
ठीक, प्रेषि 5:16 सब-के-सब **ठी.** किए जाते
2पत 2:22 उन पर कहावत **ठी.** बैठती
प्रका 13:3 मगर यह जानलेवा घाव **ठी.** हो गया
लूका 9:11; प्रका 13:12.
ठुकरा, 1पत 2:4 जीवित पत्थर, जिसे इंसानों ने **ठु.** दिया
मर 8:31; इब्रा 12:17.
ठुकराकर, प्रेषि 1:25 **ठु.** यहूदा ने अपनी राह
ठुकरा देता है, यूह 12:48.
ठुकराने, 1तीमु 4:4 कोई चीज़ नहीं जो **ठु.** लायक हो
ठुकराया, मत्ती 21:42 राजमिस्त्रियों ने **ठु.**
ठेस पहुँचती, रोमि 14:15 तेरे भाई को **ठे.** है
ठोकर, रोमि 9:33 सिय्योन में **ठो.** खिलानेवाला पत्थर
ठोकर की वजह, रोमि 14:20.
ठोस, प्रेषि 1:3 **ठो.** सबूत देकर ज़ाहिर किया
इब्रा 5:12 जिन्हें **ठो.** आहार नहीं सिर्फ दूध चाहिए
इब्रा 5:14 **ठो.** आहार तो बड़ों के लिए है
2पत 3:5 **ठो.** ज़मीन ऊपर उठी

ड

डंक, 1कुरिं 15:55 मौत, तेरा **डं.** कहाँ?
डंडा, 1कुरिं 4:21 क्या मैं **डं.** लेकर तुम्हारे पास आऊँ
डगमगाए, इब्रा 10:23 बिना **ड.** ऐलान करते रहें
1थिस्स 3:3.
डटे, इफि 6:11 शैतान के खिलाफ **ड.** रह सको
इफि 6:13 **ड.** रह सको
डर, 2पत 2:10 उनका **ड.** नहीं मानते जिन पर परमेश्वर
1यूह 4:18 प्यार में **ड.** नहीं होता
इब्रा 13:6; प्रका 2:10.
डरते, फिलि 1:28 किसी भी तरह नहीं **ड.**
फिलि 2:12 **ड.** हुए अपने उद्धार के लिए काम
डरो, लूका 12:4 उनसे मत **ड.** जो जान ले सकते हैं
रोमि 13:7 जिससे डरना चाहिए, उससे **ड.**
1पत 3:14 उनके डर से न **ड.**
डाँटना, लूका 18:15; 2तीमु 4:2.
डाँवाडोल, याकू 1:8 वह इंसान दुचित्ता, बातों में **डाँ.**
डालियों, रोमि 11:21 जब परमेश्वर ने असली **डा.** को न
डालियाँ, मत्ती 21:8 भीड़ ने **डा.** काटकर
डाली, यूह 15:2 मेरी हर **डा.** जो फल नहीं लाती
मत्ती 24:32; लूका 13:19; यूह 15:4, 6;
रोमि 11:16.
डिब्बियाँ जिनमें शास्त्र की आयतें, मत्ती 23:5.
डींगें, 1कुरिं 13:4 प्यार **डीं.** नहीं मारता
याकू 3:5 जीभ बड़ी-बड़ी **डीं.** मारती है
डींगें मारनेवाले, 2तीमु 3:2 **डीं.**, मगरूर
डील-डौल, लूका 2:52 **डी.** और अनुग्रह
डूब जाए, प्रका 12:15 ताकि नदी में **डू.**
डेरा, प्रका 21:3 परमेश्वर का **डे.** इंसानों के बीच है
2कुरिं 5:1.

डेरे, 2कुरिं 5:2 हम इस **डे.** में कराहते हैं
2पत 1:13 मैं इस **डे.** में हूँ

ढ

ढंग, प्रेषि 1:11 इसी **ढं.** से जैसे तुमने देखा
ढका गया, मत्ती 10:26 ऐसा कुछ नहीं जो **ढ.** और
ढह, लूका 11:17 जिसमें फूट पड़ जाए, **ढ.** जाता है
ढाँचे, रोमि 2:20 ज्ञान के **ढाँ.**
ढाल, इफि 6:16 विश्वास की बड़ी **ढा.**
ढालना, रोमि 12:2 खुद को **ढा.** बंद करो
1पत 1:14 उन ख्वाहिशों के मुताबिक खुद को **ढा.** बंद
ढाली हुई, रोमि 9:20 **ढा.** चीज़ अपने ढालनेवाले से कह
ढाले, रोमि 8:29 पहले से तय किया कि **ढा.** जाएँ
ढीठ, 2तीमु 3:4 धोखेबाज़, **ढी.**
प्रेषि 5:3.
ढूँढ़ते, मत्ती 7:7 **ढूँ.** रहो और पाओगे
ढूँढ़ो, मत्ती 10:11 शहर में **ढूँ.** कि कौन
ढेर, याकू 5:20 और **ढे.** सारे पापों को ढक देता है
1पत 4:8 प्यार **ढे.** सारे पापों को ढक देता है
ढेरों, यूह 21:6 **ढे.** मछलियाँ

त

तंग, मत्ती 7:14 सँकरा फाटक और **तं.** रास्ता
तंगदिल, 2कुरिं 6:12 तुम **तं.** हो गए हो
तकरार, 1कुरिं 3:3 तुम्हारे बीच जलन और **त.**
तकलीफें, यूह 16:33 दुनिया में **त.**, मगर हिम्मत रखो!
1कुरिं 7:28 जो शादी करते हैं उन्हें शारीरिक दुःख-**त.**
2कुरिं 4:17 हालाँकि दुःख-**त.** पल-भर के लिए और
तकलीफों, 2कुरिं 1:4 हमारी सब दुःख-**त.** में हमें
तड़प, मत्ती 20:34 यीशु **त.** उठा
2कुरिं 2:4 दिल की **त.** के साथ तुम्हें लिखा
मर 6:34.
तड़पाए, प्रका 14:11 उनके **त.** जाने का धूआं
तड़पाने, मत्ती 8:29 क्या तू हमें **त.** आया
तड़पाया, प्रका 11:10; 20:10.
तत्परता, 2कुरिं 8:8 **त.** देखते हुए
तत्परता के साथ, 1पत 5:2 झुंड की देखभाल **त.** करो
तत्व, 2पत 3:10 **त.** पिघल जाएँगे
तद्दी, मत्ती 10:3; मर 3:18.
तन-मन, रोमि 15:30 प्रार्थना करने में मेरे साथ **त.** से
इफि 6:6 **त.** से परमेश्वर की मरज़ी
कुलु 3:23 जो भी करो, **त.** लगाकर
तबाह, प्रेषि 9:21 यरूशलेम में चेलों को **त.** करता था
गला 1:13 मैं उसे **त.** करता रहा
2तीमु 2:18 ये कुछ लोगों के विश्वास को **त.** कर रहे हैं
तीतु 1:11 पूरे-पूरे परिवारों का विश्वास **त.** कर देते
गला 1:23; प्रका 17:16; 18:19.
तमाशा, 1कुरिं 4:9 **त.** बन चुके
इब्रा 10:33 **त.** बन गया
तय, लूका 21:7 इन बातों का होना **त.** है?
प्रेषि 17:31 एक दिन **त.** किया जिसमें न्याय
प्रेषि 27:42 सैनिकों ने **त.** कर लिया
गला 3:23 विश्वास जिसका प्रकट होना **त.** था
1तीमु 2:6 **त.** वक्त पर
इब्रा 9:27 जैसा इंसानों के लिए एक बार मरना **त.** है
यूह 11:51; प्रेषि 13:34.
तय किया हुआ वक्त, लूका 21:24; इफि 5:16; कुलु 4:5; 1तीमु 6:15; 1पत 4:17.
तरक्की, फिलि 3:16 हमने जिस हद तक **त.** की
गला 1:14; फिलि 1:12, 25; 1तीमु 4:15.
तरफ से, यूह 16:13 अपनी **त.** नहीं बोलेगा
1यूह 2:16 ख्वाहिशें, दुनिया की **त.** है
1यूह 4:1 संदेश, परमेश्वर की **त.** है या नहीं
तरस, मत्ती 15:32 यीशु को भीड़ को देखकर **त.**
फिलि 1:8 मैं तुम सबसे मिलने के लिए **त.** रहा हूँ
रोमि 1:11; 2तीमु 1:4.
तरस खाने लायक, 1कुरिं 15:19 सबसे ज़्यादा **त.**
तरह, याकू 3:7 हर **त.** के जंगली जानवर
तराज़ू, प्रका 6:5.
तरो-ताज़ा, मत्ती 11:28 और मैं तुम्हें **त.** करूँगा
1कुरिं 16:18 उन्होंने मेरा जी **त.** किया है
तर्कसंगत, प्रेषि 9:22 **त.** तरीके से साबित करता
तलवार, मत्ती 26:52 **त.** उठाते हैं, **त.** से नाश होंगे
इफि 6:17 पवित्र शक्ति की **त.**, परमेश्वर का वचन
इब्रा 4:12 तेज़ धारवाली **त.** से ज़्यादा
प्रका 19:15 तेज़ धारवाली लंबी **त.** निकलती
मत्ती 10:34; लूका 21:24; 22:38.
तलाक, मत्ती 1:19 यूसुफ ने उसे **त.** देने का इरादा
मत्ती 5:31 पत्नी को **त.** देता है, उसे तलाकनामा दे
मत्ती 19:7 मूसा ने **त.** की आज्ञा क्यों दी?
मत्ती 19:9 किसी और वजह से **त.** देता है
मर 10:11; लूका 16:18.
तलाकनामा, मत्ती 19:7.
तलाश, 1कुरिं 1:22.
तसल्ली, 1थिस्स 2:11 **त.** देकर समझाते-बुझाते
तसवीर, गला 3:1.
तहलका, मत्ती 21:10.

ताकत, मर 12:30 अपनी पूरी **ता.** से
यूह 12:38 यहोवा ने अपनी **ता.**
प्रेषि 1:8 जब पवित्र शक्ति, तो तुम **ता.** पाओगे
रोमि 8:38 न आनेवाली चीज़ें, न **ता.**
2कुरिं 4:7 आम इंसानों की **ता.** से बढ़कर, परमेश्वर से
2कुरिं 12:9 मसीह की **ता.** मेरे ऊपर साया करे
फिलि 4:13 जो मुझे **ता.** देता है, उसी से
ताकतवर, 2कुरिं 12:10.
ताकतवरों, 1कुरिं 1:26 न **ता.** को, न
1कुरिं 1:27 **ता.** को शर्मिंदा कर
ताकतें, 1पत 3:22 अधिकार और **ता.** उसके अधीन
ताज, 1थिस्स 2:19 हमारी जीत का **ता.** कौन है
2तीमु 4:8 मेरे लिए **ता.** रखा हुआ है
प्रका 2:10 मैं तुम्हें ज़िंदगी का **ता.** दूँगा
मत्ती 27:29; याकू 1:12; 1पत 5:4.
ताज़गी, मत्ती 11:29 तुम **ता.** पाओगे
प्रेषि 3:19 **ता.** के दिन आएँ
फिले 7 भाई, तेरे ज़रिए पवित्र जनों को **ता.** मिली है
ताज्जुब, प्रेषि 2:7 **ता.** में थे और
लूका 4:22 उसकी बातों पर **ता.**
1पत 4:12 वे **ता.** करते हैं और
लूका 2:18.
ताड़ना, लूका 3:19 हेरोदेस को **ता.** दी
2कुरिं 2:6 ज़्यादातर लोगों ने जो **ता.** दी
1तीमु 5:20 सब देखनेवालों के सामने **ता.** दे
2तीमु 3:16 **ता.** देने के लिए फायदेमंद
2तीमु 4:2 पूरी सहनशीलता के साथ **ता.** दे
तीतु 1:13 उन्हें सख्ती से **ता.** देता रह
प्रका 3:19.
तामार, मत्ती 1:3.
तारतरस, 2पत 2:4 उन्हें **ता.** में डाल दिया
तारा, प्रका 2:28 मैं सुबह का **ता.** दूँगा
तारीफ, लूका 6:32, 34 इसमें तुम्हारी क्या **ता.**?
1कुरिं 4:5 हर कोई परमेश्वर से **ता.** पाएगा
1कुरिं 11:2 मैं तुम्हारी **ता.** करता हूँ क्योंकि
1पत 2:20 इसमें क्या **ता.** की बात है?
प्रका 13:3 जानवर की **ता.** करती हुई उसके पीछे
तारीफ के लायक, फिलि 4:8 जो बातें **ता.** हैं
तारे, 1कुरिं 15:41 एक **ता.** से दूसरे **ता.** के तेज में फर्क
तारों, प्रका 12:1 उसके सिर पर बारह **ता.** का ताज
तालमेल, इफि 2:21 **ता.** से जुड़े हुए
2कुरिं 6:15; इफि 4:16; कुलु 2:2, 19.
तित्तर-बित्तर, मत्ती 12:30 **ति.** कर देता है
प्रेषि 8:4 जो **ति.** हो गए थे वे सारे इलाके में होते हुए
याकू 1:1 बारह गोत्रों को, जो **ति.** होकर
यूह 10:12.
तिनका, मत्ती 7:3, 4, 5; लूका 6:41, 42.
तिरस्कार, लूका 10:16 तुम्हारा **ति.** करता है, मेरा भी
1थिस्स 4:8 इंसान का नहीं, परमेश्वर का **ति.** करता है
तीतुस, 2कुरिं 2:13; 12:18; गला 2:1; तीतु 1:4.
तीमुथियुस, प्रेषि 16:1; 1कुरिं 4:17; 1तीमु 1:2.
तीरों, इफि 6:16 दुष्ट के जलते हुए **ती.**
तीसरे, 2कुरिं 12:2 **ती.** स्वर्ग तक उठा लिया गया
तीसरे दिन, लूका 9:22 और **ती.** जी उठाया
प्रेषि 10:40 इसी को परमेश्वर ने **ती.** जी उठाया
लूका 13:32; 24:21; 1कुरिं 15:4.
तुच्छ, गला 4:14 **तु.** नहीं समझा, न थूका
फिलि 3:21 हमारे **तु.** शरीरों को बदल देगा
तीतु 2:15 कोई इंसान तुझे **तु.** न समझे
तुरही की आवाज़, मत्ती 24:31 **तु.** के साथ स्वर्गदूतों
तुरही, मत्ती 6:2 दान करे, तो **तु.** न बजवा
1कुरिं 14:8 **तु.** की पुकार साफ न हो, तो कौन
1कुरिं 15:52 पलक झपकते ही, आखिरी **तु.** के दौरान
1थिस्स 4:16 प्रभु, परमेश्वर की **तु.** की आवाज़ के साथ
इब्रा 12:19; प्रका 8:2.
तुलना, 2कुरिं 10:12 खुद की **तु.** उनसे
गला 6:4 किसी दूसरे की **तु.** में नहीं
तूफान, मत्ती 14:30.
तेज, प्रेषि 26:13 **ते.** से कहीं बढ़कर रौशनी
तेज से भरपूर, प्रेषि 18:25; रोमि 12:11.
तेज़ी, 2पत 2:1 **ते.** से अपना विनाश लाएँगे
तेरह, लूका 3:34.
तेल, मत्ती 25:4; लूका 7:46; इब्रा 1:9.
तैयार, मत्ती 25:34 राज तुम्हारे लिए **तै.** किया गया
लूका 1:17 लोगों को यहोवा के लिए **तै.** करे
यूह 14:2 मैं तुम्हारे लिए जगह **तै.** करने जा रहा हूँ
रोमि 9:23 उसने महिमा पाने के लिए पहले से **तै.**
1कुरिं 2:9 परमेश्वर ने उनके लिए **तै.** किया जो उससे
1कुरिं 14:8 लड़ाई के लिए कौन **तै.**?
2कुरिं 5:5 जिसने हमें **तै.** किया वह परमेश्वर है
1तीमु 6:18 दरियादिल और बाँटने के लिए **तै.** रहें
2तीमु 2:21 वह हर अच्छे काम के लिए **तै.** किया
2तीमु 3:17 हर अच्छे काम के लिए **तै.**
इब्रा 10:5 तू ने मेरे लिए एक शरीर **तै.** किया
इब्रा 11:16 उसने उनके लिए एक शहर **तै.** किया है

इब्रा 13:21 उसकी मरज़ी पूरी करने के लिए **तै.** करे
मत्ती 11:10; 20:23.
तैयारी, लूका 21:14 पहले से **तै.** न करोगे
मत्ती 27:62; यूह 19:14, 31, 42, 2कुरिं 8:11.
तैश, लूका 23:10 **तै.** में उस पर इलज़ाम लगाते रहे
तोड़ता, मत्ती 5:19 छोटी-से-छोटी में से एक को **तो.** है
तोड़ते, मत्ती 15:3 आज्ञा **तो.** हो
1कुरिं 10:16.
तोड़-मरोड़कर, 2पत 3:16 शास्त्र की बातों को **तो.**
तोड़ा, इब्रा 10:28 जिसने मूसा का कानून **तो.** है
तोड़ी, यूह 19:36 उसकी हड्डी नहीं **तो.** जाएगी
तोहफा, रोमि 6:23 परमेश्वर जो **तो.** देता है हमेशा की
1कुरिं 7:7 हर किसी को परमेश्वर से अपना **तो.**
याकू 1:17 हरेक अच्छा **तो.** ऊपर से है
मत्ती 19:11.
तोहफे, प्रका 11:10 वे एक-दूसरे को **तो.** भेजेंगे
तौर, गला 4:23 दासी से स्वाभाविक **तौ.** पर पैदा हुआ
तौर-तरीके, 1कुरिं 4:17 से जुड़े **तौ.**
तौहीन, 1तीमु 6:1 कभी **तौ.** न कर सके
इब्रा 10:29 महा-कृपा की **तौ.**
मत्ती 26:65; मर 14:64; यूह 10:33; 1तीमु 1:20.
तौहीन करनेवाला, 1तीमु 1:13.
त्याग, प्रेषि 26:11 मजबूर करता कि **त्या.** दें
फिलि 2:7 अपना सबकुछ **त्या.** दिया
2तीमु 2:19 बुराई को **त्या.** दे
त्योहार, लूका 22:1 बिन-खमीर का **त्यो.**
यूह 2:23; 5:1; 6:4; 7:8, 10, 37; 1कुरिं 5:8.

थ

थप्पड़, यूह 18:22 यीशु के मुँह पर **थ.** मारकर
मत्ती 5:39; यूह 19:3.
थम गयी, मर 4:39 आँधी **थ.** और बड़ा सन्नाटा
थर-थर काँपते, याकू 2:19 दुष्ट स्वर्गदूत मानते और **थ.**
थामे, 1तीमु 4:16 इन्हीं बातों को **था.** रह, इससे तू
थाल, मत्ती 14:8; मर 6:25.
थुआतीरा, प्रेषि 16:14; प्रका 1:11; 2:18, 24.
थूका, गला 4:14 न घिन से **थू.**
मत्ती 26:67; 27:30.
थोड़ा, इब्रा 2:9 यीशु जिसे स्वर्गदूतों से **थो.** कमतर
थोड़ी, 1तीमु 5:23.
थोड़े, लूका 16:10 जो इंसान **थो.** में भरोसे के लायक
रोमि 9:27 **थो.** हैं जिन्हें बचाया जाएगा
थोमा, मत्ती 10:3; यूह 20:24; प्रेषि 1:13.

द

दंग, मत्ती 7:28 भीड़ **दं.** रह गयी
लूका 2:47 से रह-रहकर **दं.**
प्रेषि 9:21 **दं.** रह गए
मत्ती 15:31.
दंड, इब्रा 10:29 सोचो और भी कितने भारी **दं.**
याकू 2:13 दया, **दं.** पर जीत हासिल करती है
2पत 2:3 पहले से जो कठोर **दं.** उसके आने में देर न
दखल, 2थिस्स 3:11 उन बातों में **द.** जिनसे उनका कोई
1तीमु 5:13 दूसरों के मामलों में **द.** देती
1पत 4:15 **द.** देनेवाला होने की वजह से दुःख न
दगाबाज़, लूका 6:16.
दफन, लूका 9:60 मुरदों को अपने मुरदे **द.** करने दे
रोमि 6:4 बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ **द.**
दफनाया, प्रेषि 2:29 दाविद मरा और उसे **द.** गया
1कुरिं 15:4.
दब, लूका 21:34 कहीं दिल **द.** न जाएँ
दबे, 2कुरिं 5:4 हम इस डेरे में बोझ से **द.** हुए
दबा, मत्ती 13:22; मर 4:7, 19; लूका 8:7, 14.
दबाए, 2कुरिं 4:8 हम हर तरह से **द.** जाते हैं
दबाव, 2कुरिं 9:7; फिलि 1:23; फिले 14.
दमक उठा, मत्ती 17:2 उसका चेहरा सूरज की तरह **द.**
दम तोड़ दिया, लूका 23:46 यह कह चुका, तो उसने **द.**
दमदार, प्रेषि 18:28 उसने **द.** तरीके से साबित किया
दमिश्क, प्रेषि 9:2.
दया, मत्ती 9:13 मैं बलिदान नहीं, **द.** चाहता हूँ
लूका 18:13 मुझ पापी पर **द.** कर
रोमि 9:15 जिस किसी पर चाहूँ **द.** दिखाऊँगा
2कुरिं 1:3 कोमल **द.** का पिता
1तीमु 1:13 मुझ पर **द.** की गयी
इब्रा 5:2 **द.** से पेश आने के काबिल
याकू 2:13 **द.**, दंड पर जीत हासिल करती है
याकू 3:17 **द.** और अच्छे कामों से भरपूर
1पत 2:10 मगर अब जिन पर **द.** दिखायी गयी है
दयालु, मत्ती 5:7 सुखी हैं वे जो **द.** हैं
लूका 6:36 जैसा तुम्हारा पिता **द.** है, दया करते रहो
इब्रा 2:17 एक **द.** और विश्वासयोग्य महायाजक
याकू 5:11 यहोवा गहरी करुणा दिखाता और **द.** है
इब्रा 8:12.
दरकिनार, मत्ती 23:23 बातों को **द.** कर दिया
दरवाज़े, मत्ती 16:18 कब्र के **द.** हावी न हो सकेंगे
प्रेषि 12:14 पतरस बाहर **द.** के सामने खड़ा

प्रका 3:20 मैं **द.** पर खड़ा खटखटा रहा हूँ
मत्ती 24:33; 25:10; 1कुरिं 16:9.
दरियादिली, रोमि 12:8 **द.** से बाँटे
2कुरिं 8:2 **द.** की दौलत
दर्ज़, लूका 2:1 अपना नाम **द.** कराएँ
दर्जा, 2कुरिं 11:12 हमारे बराबर **द.** रखने की शेखी
दर्द, प्रका 12:2 **द.** से चिल्ला रही थी और बच्चा
प्रका 21:4 न **द.** रहेगा
प्रका 16:10.
दर्शन, मत्ती 17:9 जब तक बेटे, **द.** किसी को न बताना
प्रेषि 26:16 मैंने तुझे **द.** दिया है
दल, (याजकों के समूह), लूका 1:5.
दलीलें, गला 5:8 इस तरह की **द.** तुम्हारे बुलानेवाले की
कुलु 2:4 कोई **द.** देकर तुम्हें न छले
दलीलों, 2कुरिं 10:5 **द.** को उलट देते हैं
द्वीप, प्रका 6:14; 16:20.
दस, प्रका 2:10 **द.** दिन तक क्लेश हो
मत्ती 25:1; प्रका 13:1.
दसवाँ, मत्ती 23:23 पुदीने का **द.** अंश
लूका 18:12 मैं सबका **द.** अंश देता हूँ
दसवाँ हिस्सा, इब्रा 7:5 आज्ञा मिली कि **द.** इकट्ठा करें
इब्रा 7:9 लेवी जो **द.** पाता है, **द.** हिस्सा दिया
दस्तावेज़, कुलु 2:14 **द.** को रद्द कर दिया
दस्तूर, फिलि 2:29 जैसा **द.** उसका स्वागत
इब्रा 10:25 **द.** है, बल्कि एक-दूसरे की हिम्मत
1कुरिं 11:16.
दहाड़ें, याकू 5:1 मुसीबतें, उनकी वजह से **द.**
दाँत, मत्ती 8:12.
दाँव-पेंचों, इफि 6:11 शैतान के **दाँ.**
दाख-मदिरा, यूह 2:9 जो **दा.** में बदल चुका था
1तीमु 5:23 अपने पेट के लिए थोड़ी **दा.** पिया कर
प्रका 18:3 क्रोध और व्यभिचार की **दा.**
मत्ती 9:17; इफि 5:18.
दाखिल, प्रेषि 14:22 परमेश्वर के राज में **दा.** होना है
इब्रा 4:6, 10; 9:12, 24; 2पत 1:11.
दागदार, यहू 23 खुद को **दा.** कर लिया
दाता, लूका 22:25 **दा.** कहलाते हैं
दान, रोमि 15:26; 2कुरिं 9:13.
दान-पात्रों, मर 12:41; लूका 21:1.
दाना, 1कुरिं 15:37 पौधा नहीं सिर्फ एक **दा.**
मर 4:28.
दानिय्येल, मत्ती 24:15.
दायरे से बाहर, 2यूह 9 **दा.** निकल जाता है
दायीं, मत्ती 20:23 मेरी **दा.** तरफ बैठने की
मत्ती 25:33 भेड़ों को अपनी **दा.** तरफ करेगा
प्रेषि 7:55 यीशु को परमेश्वर की **दा.** तरफ खड़े
इब्रा 10:12 परमेश्वर की **दा.** तरफ जा बैठा
इब्रा 1:3.
दार्शनिकों, प्रेषि 17:18 स्तोइकी **दा.**
दावत, लूका 5:29 लेवी ने स्वागत में **दा.** रखी
यहू 12 छिपी चट्टानें तुम्हारे भाईचारे की **दा.** में
दावतों, मत्ती 23:6 **दा.** में खास जगह
दावा, 1तीमु 1:7.
दाविद, मत्ती 21:9 कहते रहेः **दा.** के वंशज को बचा ले
लूका 20:41 कैसे मसीह, **दा.** का वंशज है?
प्रेषि 2:34 **दा.** स्वर्ग नहीं गया
प्रेषि 2:29.
दावे के साथ, तीतु 3:8 ज़ोर देते हुए **दा.** बोलता रह
दास, मत्ती 6:24 दो मालिकों का **दा.** बनकर सेवा नहीं
मत्ती 24:45 विश्वासयोग्य **दा.** कौन है
मत्ती 24:48 अगर दुष्ट **दा.** दिल में कहने लगे
मत्ती 25:30 निकम्मे **दा.** को बाहर फेंक दो
लूका 12:37 सुखी होंगे **दा.** जिनका मालिक उन्हें
लूका 17:10 कहो, हम निकम्मे **दा.** हैं
यूह 13:16 **दा.** अपने मालिक से बड़ा नहीं
रोमि 6:6 अब से पाप के **दा.** न बने रहें
रोमि 7:6 हम पवित्र शक्ति से **दा.** बनें
मत्ती 20:27; रोमि 6:18, 19; गला 1:10;
2तीमु 2:24.
दासों, प्रेषि 2:18 मैं अपने **दा.** और दासियों पर
प्रका 19:2 अपने **दा.** के खून का बदला
1पत 2:16.
दासी, गला 4:30 **दा.** को बाहर कर
गला 4:31 **दा.** के नहीं बल्कि आज़ाद स्त्री के
लूका 1:38.
दिकापुलिस, मत्ती 4:25; मर 5:20; 7:31.
दिखाए, प्रका 22:6.
दिखाता, यूह 11:26 विश्वास **दि.** वह कभी न मरेगा
इब्रा 12:27 एक बार फिर **दि.** है कि नाश हो जाएँगी
याकू 5:7 किसान सब्र **दि.** है
दिखाते, 2कुरिं 4:13 हम भी विश्वास **दि.** और बोलते हैं
दिखाया, इब्रा 4:3 हमने विश्वास **दि.** है
दिखायी, इब्रा 11:1 विश्वास असलियतों का, जो **दि.** नहीं
मत्ती 23:28; 24:30; 2कुरिं 13:7.

दिखावा, गला 2:13 यहूदी **दि.** करने लगे
2तीमु 3:5 भक्ति का **दि.**, मगर इसकी शक्ति का
1यूह 2:16 अपनी चीज़ों का **दि.**
दिखावे, लूका 20:47 **दि.** के लिए लंबी-लंबी प्रार्थनाएँ
इफि 6:6; कुलु 3:22.
दिन, मत्ती 24:22 वे **दि.** घटाए गए होते
मर 13:32 उस **दि.** या वक्त के बारे में कोई नहीं
प्रेषि 3:19 तुम्हारे लिए ताज़गी के **दि.** आएँ
प्रेषि 17:31 उसने एक **दि.** तय किया है जिसमें न्याय
रोमि 14:5 कोई एक **दि.** को दूसरे से बड़ा मानता है
2कुरिं 6:2 अभी उद्धार का **दि.** है
2पत 3:8 हज़ार साल, एक **दि.** के बराबर
रोमि 13:12.
दिन का तारा, 2पत 1:19 **दि.**, दिलों में
दिन की यात्रा, प्रेषि 1:12.
दिमाग, मत्ती 22:37 यहोवा से पूरे **दि.** से
दिमागी, 1यूह 5:20 उसने हमें **दि.** काबिलीयत दी है
दिमागी हालत, रोमि 1:28 भ्रष्ट **दि.**
दिया गया, लूका 12:48 जिस किसी को बहुत **दि.**
दिल, मत्ती 5:8 सुखी हैं वे जो **दि.** के साफ हैं
मत्ती 15:8 इनका **दि.** मुझसे कोसों दूर है
मत्ती 22:37 यहोवा से पूरे **दि.** से प्यार करना
मत्ती 26:41 **दि.** तैयार है, मगर शरीर
रोमि 10:10 इंसान **दि.** से विश्वास करता है
रोमि 11:7 **दि.** कठोर हो गए
इब्रा 3:8 **दि.** को कठोर न कर लेना
लूका 12:34; 2कुरिं 3:3; याकू 4:8; 5:8; 1पत 3:15; प्रका 17:17.
दिला रहे, 1कुरिं 10:22 यहोवा को जलन **दि.** हैं
दिलासा, लूका 2:25 इसराएल को **दि.**
यूह 11:19 यहूदी, मारथा को **दि.** देने
रोमि 15:4 शास्त्र से **दि.**
1कुरिं 14:3 मज़बूत करता, **दि.** देता है
2कुरिं 1:4 दुःख झेलनेवाले को **दि.** दे सकें
मत्ती 5:4; 2कुरिं 1:3, 4; फिलि 2:1; कुलु 2:2.
दिलों की कठोरता, मत्ती 19:8; मर 10:5.
दिहाड़ी, मत्ती 20:1 अपने बाग में **दि.** पर काम करनेवाले
दीए, प्रका 4:5.
दीन, मत्ती 11:29 कोमल-स्वभाव और दिल से **दी.**
रोमि 12:16 जिन बातों को **दी.**-हीन समझा जाता है
याकू 1:10 अमीर अपने **दी.** किए जाने पर
दीनता, फिलि 2:3 मन की **दी.** के साथ
प्रेषि 20:19; इफि 4:2; कुलु 3:12.
दीनार, मत्ती 20:2 दिन की मज़दूरी एक **दी.**
मत्ती 20:9 हरेक को एक **दी.** मिला
मर 12:15 एक **दी.** लाकर मुझे दिखाओ
मत्ती 20:10, 13; 22:19; लूका 20:24.
दीपक, मत्ती 5:15 **दी.** टोकरी से ढककर नहीं
मत्ती 6:22 आँख, शरीर का **दी.** है
मत्ती 25:1 दस कुंवारियों ने अपने-अपने **दी.** लिए
लूका 12:35 तुम्हारे **दी.** जलते रहें
प्रका 22:5 **दी.** की ज़रूरत नहीं, क्योंकि परमेश्वर
यूह 5:35.
दीपदान, इब्रा 9:2; प्रका 1:12, 13, 20; 2:1.
दीवारों, इब्रा 11:30 विश्वास **दी.**, ढह गयीं
दुःख, लूका 24:26 मसीह **दुः.** झेले
रोमि 8:17 साथ **दुः.** झेलें ताकि साथ महिमा पाएँ
रोमि 8:18 **दुः.** कुछ भी नहीं
2कुरिं 8:2 बड़ी परीक्षा के दौरान **दुः.**
फिलि 1:29 उसकी खातिर **दुः.** सहो
कुलु 1:24 मैं **दुः.** झेलने में खुशी मना रहा हूँ
2तीमु 2:3 **दुः.** उठाने से न कतरा
इब्रा 5:8 **दुः.** सह-सहकर आज्ञा माननी सीखी
इब्रा 10:32 तुमने **दुः.** तकलीफों के संघर्ष में धीरज धरा
याकू 5:13 क्या तुम्हारे बीच कोई **दुः.** झेल रहा है?
1पत 2:21 मसीह ने **दुः.** उठाया, तुम्हारे लिए आदर्श
1पत 3:17 भलाई करने की वजह से **दुः.** उठाओ
1पत 4:1 शारीरिक **दुः.** झेल चुका है पाप से बाज़
1पत 5:9 ऐसी ही **दुः.** तकलीफें
मत्ती 16:21; प्रेषि 26:23; फिलि 3:10; 2तीमु 1:8; 2:9; इब्रा 2:10, 18; 1पत 3:14; 4:13; 5:10.
दुःख-तकलीफें, 1पत 2:19 **दुः.** सहता है
दुःख-तकलीफों, 1तीमु 6:10 कई **दुः.** से खुद को छलनी
दुःखदायी, इब्रा 12:11 अनुशासन **दुः.** लगता है
दुःखी, इफि 4:30 परमेश्वर की पवित्र शक्ति को **दुः.**
दुःखों, 2कुरिं 1:7 तुम **दुः.** में हिस्सेदार हो
दुगुना, प्रका 18:6 उसे **दु.** दो
दुचित्ता, याकू 1:8; 4:8.
दुनिया, लूका 4:5 उसे **दु.** के तमाम राज्य दिखाए
यूह 3:16 परमेश्वर ने **दु.** से इतना ज़्यादा प्यार किया
यूह 14:19 फिर **दु.** मुझे नहीं देखेगी
यूह 14:30 **दु.** का राजा आ रहा है
यूह 15:19 **दु.** के होते, **दु.** पसंद करती
यूह 17:16 वे **दु.** के नहीं हैं, जैसे
यूह 18:36 मेरा राज इस **दु.** का नहीं
प्रेषि 17:6 जिन आदमियों ने **दु.** में उथल-पुथल मचा

रोमि 4:13 अब्राहम **दु.** का वारिस होगा
1कुरिं 4:9 **दु.** के लिए तमाशा
इब्रा 2:5 परमेश्वर ने आनेवाली **दु.** को अधीन नहीं
याकू 4:4 **दु.** के साथ दोस्ती परमेश्वर से दुश्मनी?
2पत 3:6 उस वक्त की **दु.** प्रलय से डूबकर
1यूह 5:19 **दु.** शैतान के कब्ज़े में पड़ी हुई
मत्ती 25:34; यूह 8:23; 17:5, 6; इफि 1:4; 2:2; याकू 1:27; 1यूह 2:15, 16; प्रका 17:8.
दुनिया की, मत्ती 24:21 **दु.** शुरूआत से
रोमि 1:20 उसके गुण **दु.** रचना के वक्त से दिखायी
दुनिया के, 1यूह 2:2 बलिदान, सारी **दु.** लिए
दुनिया की व्यवस्था, मत्ती 13:39 **दु.** और
मत्ती 24:3 **दु.** के आखिरी वक्त की निशानी
गला 1:4 हमें दुष्ट **दु.** से छुटकारा दिलाए
मत्ती 28:20; मर 10:30; लूका 18:30; 1तीमु 6:17.
दुनिया की व्यवस्थाएँ, इब्रा 1:2 उसने **दु.** बनायीं
दुनिया के लोगों, इफि 4:17 अब से **दु.** की तरह न बनो
1पत 2:12 **दु.** के बीच बढ़िया चालचलन बनाए रखो
दुनिया के शासकों, इफि 6:12 **दु.** से
दुनियादारी के उसूल, गला 4:3; कुलु 2:8.
दुनियावी, 2कुरिं 1:12 **दु.** बुद्धि नहीं बल्कि परमेश्वर की
याकू 3:15.
दुराचार, मत्ती 24:12 **दु.** के बढ़ जाने से प्यार ठंडा
2कुरिं 6:14 नेकी के साथ **दु.** का क्या मेल?
2थिस्स 2:7 **दु.** एक रहस्य है, काम शुरू कर चुका है
इब्रा 1:9 सच्चाई से प्यार किया, **दु.** से नफरत की
मत्ती 13:41.
दुराचारी, लूका 22:37 उसकी गिनती **दु.** में हुई
2थिस्स 2:8 **दु.** सामने आ जाएगा
मत्ती 7:23; 1तीमु 1:9; 2पत 2:7, 3:17; 2थिस्स 2:3.
दुराचारी पुरुष, 2थिस्स 2:3.
दुर्दशा, याकू 4:9 **दु.** पर मातम करो
दुलार, 1थिस्स 2:7.
दुल्हन, प्रका 21:2 जैसे **दु.** अपने दूल्हे के लिए सिंगार
प्रका 21:9 तुझे **दु.** दिखाता हूँ, मेम्ने की **दु.**
यूह 3:29; प्रका 18:23.
दुविधा, प्रेषि 5:24 वे **दु.** में पड़ गए
दुश्मन, मत्ती 10:36 एक आदमी के **दु.**
रोमि 12:20 अगर तेरा **दु.** भूखा हो तो उसे खिला
1कुरिं 15:26 आखिरी **दु.** मिटा दिया जाएगा, मौत है
याकू 4:4 दुनिया का दोस्त परमेश्वर का **दु.** है
1पत 5:8 तुम्हारा **दु.** शैतान
रोमि 11:28.
दुश्मनों, 1कुरिं 15:25 सारे **दु.** को उसके पाँव तले कर
मत्ती 22:44.
दुश्मनी, रोमि 8:7 शरीर की बातों पर मन लगाना, **दु.**
याकू 4:4 दुनिया के साथ दोस्ती परमेश्वर से **दु.**
दुष्ट, मत्ती 6:13 हमें **दु.** से बचा
मत्ती 24:48 **दु.** दास अपने दिल में कहने लगे
यूह 5:29 जो **दु.** कामों में लगे रहे
इफि 6:16 **दु.** के जलते तीरों को बुझा
मत्ती 12:35; रोमि 12:9.
दुष्टता, 1कुरिं 5:8 बुराई और **दु.** के
1थिस्स 5:22 हर तरह की **दु.** से दूर रहो
1यूह 5:17 **दु.** के सारे काम पाप हैं
मत्ती 22:18.
दुष्ट दूत, इफि 6:12.
दुष्ट स्वर्गदूत, याकू 2:19 **दु.** मानते और काँपते
दुष्ट स्वर्गदूतों, 1कुरिं 10:21 और **दु.** की मेज़ से
1तीमु 4:1 **दु.** की शिक्षाओं पर ध्यान देंगे
प्रका 16:14 **दु.** की प्रेरणा से कहे गए वचन
मत्ती 12:24; 1कुरिं 10:20; प्रका 18:2.
दुष्ट स्वर्गदूत समाए, मत्ती 15:22; मर 1:32; लूका 8:36; यूह 10:21.
दुष्टों, प्रेषि 2:23.
दूत, मत्ती 11:10 अपना **दू.** भेज रहा हूँ
2कुरिं 12:7 शैतान का एक **दू.**
फिलि 2:25 इपफ्रुदीतुस, तुम्हारा **दू.**
दूतों, इफि 6:12 कुश्ती, शक्तिशाली दुष्ट **दू.** से
दूध, 1कुरिं 3:2 मैंने तुम्हें **दू.** दिया, न कि कुछ
इब्रा 5:12 तुम उनकी तरह बन गए जिन्हें सिर्फ **दू.**
1पत 2:2 शुद्ध **दू.** के लिए ज़बरदस्त भूख
दूध पिलानेवाली, 1थिस्स 2:7.
दूध-पीते बच्चों, मत्ती 21:16.
दूर, मत्ती 16:23 मेरे सामने से **दू.** हो
रोमि 11:26 अभक्ति के काम **दू.** करेगा
कुलु 1:21 तुम एक वक्त पर परमेश्वर से **दू.** थे
1थिस्स 4:3 व्यभिचार से **दू.** रहो
2तीमु 2:16 खोखली बातों से **दू.** रह
2तीमु 2:21 मामूली इस्तेमाल के बर्तनों से खुद को **दू.**
तीतु 3:9 कानून के बारे में बखेड़ों से **दू.** रह
इब्रा 3:10 इनके दिल हमेशा **दू.** हो जाते हैं
इब्रा 3:12 **दू.** जाने की वजह से विश्वास न हो

1पत 2:11 शरीर की ख्वाहिशों से **दू.** रखा
इफि 4:18.
दूल्हे, मत्ती 25:1 **दू.** से मिलने निकलीं
प्रका 21:2 जैसे एक दुल्हन अपने **दू.** के लिए सिंगार
मत्ती 9:15; 25:5, 6, 10; यूह 3:29.
दूषित, मत्ती 15:18 इंसान को **दू.** करती हैं
तीतु 1:15 जो **दू.** हैं उनके लिए कुछ भी शुद्ध नहीं
इब्रा 13:4 शादी की सेज **दू.** न की जाए
दूसरी भेड़ें, यूह 10:16 मेरी **दू.** भी हैं
दूसरी मौत, प्रका 2:11 **दू.** से नुकसान
प्रका 20:6 इन पर **दू.** का कोई अधिकार नहीं
प्रका 20:14 इसका मतलब है, **दू.**
प्रका 21:8 इसका मतलब, **दू.**
दूसरों की खातिर बिनतियाँ, 1तीमु 2:1 प्रार्थनाएँ, **दू.**
दृश्य, 1कुरिं 7:31 दुनिया का **दृ.** बदल रहा है
देख, मत्ती 13:14 देखोगे मगर हरगिज़ न **दे.** पाओगे
रोमि 8:24 इंसान जिसे **दे.** लेता है क्या उसकी आशा
प्रका 3:18 आँखों में सुरमा ताकि तू **दे.** सके
देखकर, मत्ती 14:19 आकाश की तरफ **दे.** उसने
देखता, लूका 9:62 हाथ रखने के बाद पीछे **दे.**
प्रेषि 17:22 एथेन्स के लोगो, मैं **दे.** हूँ
याकू 1:23.
देखते, 2कुरिं 5:16 शरीर के मुताबिक नहीं **दे.**
देखने, यूह 8:56 अब्राहम मेरा दिन **दे.**
देखनेवाला कोई नहीं, 1तीमु 5:5 विधवा जिसका **दे.**
देखभाल, 1तीमु 5:8 अगर कोई अपनों की **दे.** नहीं
देखरेख, 1तीमु 3:5 घरबार की **दे.** करना नहीं जानता
देखा, यूह 1:18 इंसान ने परमेश्वर को कभी नहीं **दे.**
यूह 14:9 मुझे **दे.** उसने पिता को भी **दे.**
यूह 20:29 तू ने मुझे **दे.** यकीन करता है?
इब्रा 11:13 वादा, दूर से ही **दे.**
1यूह 4:20 भाई से जिसे उसने **दे.** प्यार नहीं करता
1तीमु 6:16; प्रका 11:19.
देखी, कुलु 1:16 चीज़ें, **दे.** हों या अनदेखी
देखेंगे, मत्ती 5:8 जो दिल के साफ हैं, परमेश्वर को **दे.**
प्रका 18:9.
देखे, मत्ती 27:53 बहुत-से लोगों ने **दे.**
देखो, मत्ती 6:26 पंछियों को ध्यान से **दे.**
देता है, 2कुरिं 9:10 बहुतायत में बीज **दे.**
गला 3:5 तुम्हें पवित्र शक्ति **दे.** और काम करता है
फिलि 3:9 नेकी जिसे परमेश्वर **दे.**
फिलि 4:13 जो मुझे ताकत **दे.**, उसी से
देते हुए, प्रेषि 8:18.
देने, प्रेषि 20:35 ज़्यादा खुशी **दे.** में
देर, इब्रा 10:37 आएगा और **दे.** न करेगा
देरी, 2पत 3:9 यहोवा **दे.** नहीं करता
देवताओं, प्रेषि 17:18 विदेशी **दे.** का प्रचारक
देवताओं के भक्त, प्रेषि 17:22 **दे.** हो
देवी, प्रेषि 19:27, 37.
देश, मत्ती 4:16.
देहात, मर 6:36, 56; लूका 9:12.
दो, मत्ती 10:8 मुफ्त पाया, मुफ्त **दो.**
रोमि 13:7 जिसका जो हक बनता है उसे **दो**
प्रका 18:6.
दोगली बातें बोलनेवाला, 1तीमु 3:8 सेवक **दो.** न हो
दोनों एक तन होंगे, इफि 5:31.
दोनों तरफ तेज़ धारवाली, इब्रा 4:12 **दो.** तलवार से
दोष, लूका 6:37 हरगिज़ **दो.** नहीं लगाया जाएगा
यूह 18:38 मैं उसमें कोई **दो.** नहीं पाता
दोष-पत्र, यूह 19:19 पीलातुस ने एक **दो.** लिखकर
दोष लगाना, लूका 6:37 **दो.** बंद करो, तुम पर दोष नहीं
दोष लगानेवाला, प्रका 12:10 हमारे भाइयों पर **दो.** नीचे
दोषी, लूका 23:4 मैं इस आदमी को **दो.** नहीं पाता
यूह 12:48 वचन उसे आखिरी दिन में **दो.** ठहराएगा
रोमि 2:1 तू **दो.** ठहराता है, खुद वही काम करता
रोमि 5:13 जहाँ कानून नहीं, वहाँ पाप का **दो.** नहीं
रोमि 14:4 तू दूसरे के नौकर को **दो.** ठहरानेवाला
1कुरिं 11:27 अयोग्य है, **दो.** ठहरेगा
याकू 5:6 तुमने **दो.** ठहराकर मार डाला
मत्ती 12:7, 37, 41, 42; रोमि 9:19; 1कुरिं 11:32; 2कुरिं 3:9; इब्रा 8:8; 1यूह 3:20.
दोस्त, लूका 16:9 अपने लिए **दो.** बना लो
याकू 4:4 दुनिया का **दो.** परमेश्वर का दुश्मन है
मत्ती 11:19; यूह 15:14; 19:12.
दोस्तों, यूह 15:13 अपने **दो.** की खातिर जान दे दे
दोस्ती, याकू 4:4 दुनिया के साथ **दो.**
दौड़, 1कुरिं 9:24 **दौ.** में दौड़नेवाले सभी दौड़ते हैं
2तीमु 4:7 मैंने अपनी **दौ.** पूरी कर ली है
इब्रा 12:1 उस **दौ.** में जिसमें हमें दौड़ना है दौड़ते रहें
प्रेषि 20:24.
दौड़ते, 1कुरिं 9:24 सभी **दौ.** हैं, एक ही को
इब्रा 12:1 आओ धीरज से **दौ.** रहें
दौर, रोमि 13:13 नशेबाज़ी के **दौ.**
दौरा, मत्ती 10:23.

दौलत, लूका 16:9 बेईमानी की **दौ.** से दोस्त बना लो
इब्रा 11:26 उसने समझा कि निंदा सहना **दौ.** है
लूका 16:11; इफि 3:8; प्रका 18:17.
दौलतमंद, लूका 18:25 **दौ.** आदमी के दाखिल होने से

ध

धकेल, 1तीमु 6:9 जो इंसान को बरबादी में **ध.** देती
धधकती, 2थिस्स 1:7 **ध.** आग में
धन, मत्ती 6:20 स्वर्ग में **ध.** जमा करो
मत्ती 6:21 जहाँ **ध.**, वहीं तेरा दिल होगा
धन-दौलत, मत्ती 6:24 **ध.** की गुलामी
याकू 5:2 तुम्हारी **ध.** सड़ गयी है
धनवानो, याकू 5:1 **ध.** सुनो, रोओ
धनी, 2कुरिं 8:7 तुम, विश्वास में **ध.** हो
1तीमु 6:18 भले कामों में **ध.** बनें
याकू 2:5 विश्वास में **ध.** और राज के वारिस
2कुरिं 8:7.
धनुष, प्रका 6:2.
धन्य, 1तीमु 6:15 **ध.** और एकमात्र शक्तिमान सम्राट
1पत 1:3.
धन्यवाद, मत्ती 26:27 प्याला लेकर **ध.** दिया
यूह 11:41 पिता, मैं तेरा **ध.** करता हूँ कि तू ने सुनी
प्रेषि 28:15 पौलुस ने परमेश्वर को **ध.** दिया
रोमि 14:6 क्योंकि वह **ध.** देकर
1कुरिं 1:4 मैं हमेशा परमेश्वर का **ध.** करता हूँ
1कुरिं 10:16 प्याला, जिसके लिए हम **ध.** देते हैं
1कुरिं 10:30 अगर मैं **ध.** देकर खाता हूँ, तो मुझे क्यों
1कुरिं 14:17 तू बढ़िया तरीके से **ध.** देता है, मगर
2कुरिं 9:15 वरदान के लिए उसका **ध.** हो
इफि 5:20 यीशु के नाम से **ध.** करते रहो
1तीमु 4:4 बशर्ते उसे **ध.** के साथ खाया जाए
2कुरिं 4:15; फिलि 4:6; प्रका 7:12.
धमकाना, इफि 6:9 **ध.** छोड़ो
धमकाने, प्रेषि 9:1 शाऊल अब भी **ध.** और मार डालने
धमकियाँ, 1पत 2:23 जब दुःख झेल रहा था, तो **ध.** नहीं
धमकियों, प्रेषि 4:29 उनकी **ध.** पर ध्यान दे
धरती, मत्ती 5:5 **ध.** के वारिस होंगे
लूका 2:14 **ध.** पर उन लोगों को शांति
प्रका 12:12 **ध.** और समुद्र पर हाय
यूह 3:12; रोमि 10:18; 2कुरिं 5:1; इब्रा 1:6.
धर दबोचा, प्रेषि 19:16 एक-एक कर **ध.**
धर्म, प्रेषि 26:5 अपने **ध.** के सबसे कट्टर पंथ
धर्म-परिवर्तन, प्रेषि 15:3 गैर-यहूदियों ने **ध.** किया

धावा बोल दिया, प्रेषि 17:5 यासोन के घर पर **धा.**
धिक्कार, 1कुरिं 9:16 **धि.** है मुझ पर अगर मैं न सुनाऊँ
धीरज, मत्ती 24:13 जो अंत तक **धी.** धरता है
लूका 21:19 तुम **धी.** धरने की वजह से
रोमि 2:7 **धी.** के साथ भले काम में
रोमि 5:3, 4 दुःख-तकलीफों से **धी.** पैदा होता है
रोमि 12:12 संकट में **धी.** धरो
रोमि 15:4 **धी.** के ज़रिए हम आशा रख सकें
इब्रा 12:1 दौड़ में **धी.** से दौड़ते रहें
याकू 5:11 अय्यूब के **धी.** के बारे में सुना है
1पत 2:20 तुम **धी.** धरते हो, परमेश्वर की नज़र में
लूका 8:15; 1थिस्स 1:3; 2पत 1:6; प्रका 13:10.
धीरे-धीरे दूर, इब्रा 2:1 कभी-भी बहकर **धी.** न चले जाएँ
धुंध, याकू 4:14 तुम **धुं.** की तरह हो जो दिखायी देती है
धुंधला, 1कुरिं 13:12 हम **धुं.** आकार देखते हैं
धुत्त, यूह 2:10 जब लोग **धु.** हो जाते हैं
इफि 5:18 पीकर **धु.** न हो
1थिस्स 5:7 जो **धु.** होते हैं वे रात के वक्त **धु.** होते हैं
धूआं, प्रका 14:11 उनके तड़पाए जाने का **धू.** उठता
धूप, प्रका 8:4 प्रार्थनाओं के साथ **धू.**
मत्ती 20:12; प्रका 7:16.
धूपदानी, इब्रा 9:4 सोने की **धू.** और संदूक था
धूर्त्त, 2कुरिं 12:16 तुम कहते हो मैं **धू.** था
धूल, मत्ती 10:14 अपने पैरों की **धू.** झाड़ देना
धोकर, प्रका 7:14 अपने चोगे **धो.** सफेद किए
1कुरिं 6:11.
धोखा, 1कुरिं 15:33 **धो.** न खाओ। बुरी सोहबत
1यूह 1:8 हम खुद को **धो.** दे रहे हैं
इफि 5:6.
धोखा देनेवाले, 2कुरिं 6:8; 2यूह 7.
धोखे, गला 6:7 **धो.** में न रहो: परमेश्वर की खिल्ली नहीं
1कुरिं 6:9.
धोखे से पकड़वाएगा, मत्ती 26:21 तुममें से एक मुझे **धो.**
धोना, मत्ती 15:2; यूह 9:11; 13:5.
धोबी, मर 9:3 इतने सफेद कि कोई भी **धो.**
ध्यान, प्रेषि 3:23 जो भविष्यवक्ता पर **ध्या.** नहीं देगा
फिलि 4:8 इन्हीं बातों पर **ध्या.** देते रहो
1तीमु 4:16 खुद पर **ध्या.** देता रह
इब्रा 2:1 हमने जो सुनी हैं, उन पर **ध्या.** देना
इब्रा 3:1 प्रेषित पर **ध्या.** दो
2पत 1:19 **ध्या.** लगाकर अच्छा कर रहे हो
2पत 3:5 वे इस बात पर **ध्या.** नहीं देते कि

1यूह 1:1 **ध्या.** से गौर किया
लूका 21:34; 1तीमु 1:4; 4:1.
ध्यान बँटा हुआ, लूका 10:40 मारथा का **ध्या.**
ध्यान भटकाए, 1कुरिं 7:35 बिना **ध्या.** सेवा
ध्यान से, मत्ती 6:26 पंछियों को **ध्या.** देखो

न

नंगा, कुलु 2:15 हुकूमतों को **नं.** कर
प्रका 3:17 तू गरीब, अंधा और **नं.** है
प्रका 16:15 ताकि वह **नं.** न फिरे
प्रका 17:16 उसे तबाह और **नं.** कर देंगे
नंगे, 2कुरिं 5:3 हम **नं.** नहीं पाए जाएँगे
मत्ती 25:36.
नकल, इब्रा 9:24 असल की **न.**
नक्शे-कदम, 1पत 2:21 उसके **न.** पर चलो
रोमि 4:12.
नगर-अधिकारी, प्रेषि 16:20, 22, 38.
नगर-प्रमुख, प्रेषि 19:35 **न.** ने भीड़ को शांत किया
नगरी, प्रका 21:2 पवित्र **न.**, नयी यरूशलेम
न छोड़, 1कुरिं 7:21 मौके को **न.**
नज़र, रोमि 16:17 उन पर **न.** रखो
गला 6:1 खुद पर **न.** टिकाए रखे
2थिस्स 3:14 ऐसे आदमी पर **न.** रखो
इब्रा 12:2 यीशु पर **न.** टिकाए रहें जो नुमाइंदा है
इब्रा 12:15 कड़ी **न.** रखो कि किसी से छीन न
2कुरिं 4:18; गला 6:1.
नतनएल, यूह 1:45, 46, 47, 48, 49; 21:2.
नतीजा, रोमि 5:18 **न.** सब किस्म के इंसानों के लिए
नदी, प्रका 16:12 अपना कटोरा महा **न.**, पर उंडेला
प्रका 22:1 मुझे जीवन देनेवाले पानी की **न.** दिखायी
नन्हे-मुन्नों, मत्ती 11:25 **न.** पर प्रकट की
1थिस्स 2:7.
नपुंसक, मत्ती 19:12 कुछ **न.** पैदा हुए हैं
नप्ताली, मत्ती 4:13.
नफरत, मत्ती 5:43 अपने दुश्मन से **न.**
मत्ती 6:24 एक से **न.** और दूसरे से प्यार
मत्ती 24:9 राष्ट्रों की **न.** का शिकार बनोगे
लूका 6:22 सुखी हो तुम जब लोग तुमसे **न.** करें
लूका 6:27 जो तुमसे **न.** करते हैं उनके साथ भलाई
लूका 14:26 अपने पिता और माँ और पत्नी से **न.**
यूह 3:20 बुरे कामों में लगा रहता है, रौशनी से **न.**
यूह 7:7 दुनिया मुझसे **न.** करती है, क्योंकि मैं गवाही
यूह 12:25 जो इस दुनिया में अपनी जान से **न.**
यूह 15:19 इसलिए दुनिया तुमसे **न.** करती है
रोमि 7:15 जिस काम से मुझे **न.** है, वही करता हूँ
1यूह 3:15 जो अपने भाई से **न.** करता है वह
1यूह 4:20 फिर भी अपने भाई से **न.** कर रहा है, वह
मत्ती 10:22; तीतु 3:3; यहू 23; प्रका 17:16.
नफरत की, यूह 17:14 दुनिया ने उनसे **न.**
इब्रा 1:9 सच्चाई से प्यार दुराचार से **न.**
यूह 15:18, 25.
नमक, मत्ती 5:13 तुम पृथ्वी के **न.** हो
मर 9:50.
नमस्कार, 1कुरिं 16:21 तुम्हें **न.**
2यूह 10 अपने घर में कभी आने मत देना, न **न.** करना
नमूना, 1तीमु 1:16 सहनशीलता, एक **न.**
इब्रा 9:9 निवास-स्थान तय वक्त के लिए एक **न.** है
याकू 5:10 भविष्यवक्ताओं, उसे **न.** मानकर
2पत 2:6 भक्तिहीन लोगों के लिए **न.** ठहराया
यूह 13:15; इब्रा 8:5.
नमूने, 2तीमु 1:13 **न.** को थामे रह
नम्र, फिलि 2:8 खुद को **न.** किया
याकू 4:6 **न.** लोगों को महा-कृपा देता है
याकू 4:10 यहोवा की नज़रों में खुद को **न.** करो
1पत 5:6 शक्तिशाली हाथ के नीचे खुद को **न.** करो
मत्ती 18:4.
नम्रता, कुलु 2:18, 23 **न.** का ढोंग और उपासना
नम्रता का ढोंग, कुलु 2:18 **न.** करना पसंद है
नया किया जाएगा, मत्ती 19:28 जब सबकुछ **न.**
नया, मत्ती 26:29 तुम्हारे साथ **न.** पीऊँ
रोमि 6:4 हम भी **न.** जीवन पाएँ
1पत 1:23 तुम्हें एक **न.** जीवन दिया गया
2पत 3:13 **न.** आकाश और नयी पृथ्वी
प्रका 14:3 मानो एक **न.** गीत गा रहे हैं
प्रका 21:5 देख! मैं सबकुछ **न.** बना रहा हूँ
नयी, यूह 13:34 मैं तुम्हें **न.** आज्ञा देता हूँ
2कुरिं 5:17 **न.** चीज़ें वजूद में आयी हैं
2कुरिं 5:17 मसीह के साथ, वह **न.** सृष्टि है
कुलु 3:10 **न.** शख्सियत पहन लो
लूका 22:20; गला 6:15; इब्रा 10:20; प्रका 3:12.
नया विश्वासी, 1तीमु 3:6 **न.** न हो
नया होता जा रहा, 2कुरिं 4:16.
नरक। गेहन्ना, कब्र, टारटरस देखें।
नर्मी, 1थिस्स 2:7 जैसे माँ वैसे **न.** से पेश आए
2तीमु 2:24 सब लोगों के साथ **न.** से पेश आए
नशे, प्रेषि 2:15.

नशेबाज़ी के दौर, गला 5:21 ईर्ष्या, **न.**
नश्वर, रोमि 6:12 मत होने दो कि **न.** शरीर में पाप राज
1कुरिं 15:53 यह जो **न.** है
रोमि 1:23; 8:11; 1कुरिं 15:54; 1पत 1:18, 23.
नश्वर दशा, 1कुरिं 15:42 **न.** में बोया जाता है
न सीखनेवाले, 2पत 3:16 चिट्ठियाँ, **न.** तोड़-मरोड़कर
नहलायी-धुलायी, 2पत 2:22 **न.** सूअरनी
नाइंसाफी, 1पत 2:19 **ना.** सहता है, अच्छी बात है
ना-उम्मीदी, 2कुरिं 4:8 **ना.** की हद तक नहीं
नाकाम, रोमि 3:23 शानदार गुण ज़ाहिर करने में **ना.**
2पत 1:10 तुम किसी भी तरह **ना.** न होगे
नागदौना, प्रका 8:11 तारे का नाम **ना.** है
नागरिक, प्रेषि 22:28 **ना.** होने के अधिकार
प्रेषि 21:39.
नागरिकता, फिलि 3:20 **ना.** स्वर्ग की है
नागरिक होने के अधिकार, प्रेषि 22:28.
नाचने, लूका 15:25.
नाजायज़, रोमि 13:13 न **ना.** संबंधों में
इब्रा 12:8.
नानी, 2तीमु 1:5 तेरी **ना.** लोइस
नाप, मत्ती 7:2 जिस **ना.** से तुम नापते हो
लूका 6:38 **ना.** भर-भरकर, दबा-दबाकर, ऊपर तक
ना-मंज़ूर, 2कुरिं 13:5, 6, 7.
नाम, मत्ती 6:9 तेरा **ना.** पवित्र किया जाए
मत्ती 12:21 राष्ट्र उसके **ना.** पर आशा रखेंगे
मत्ती 24:9 मेरे **ना.** की वजह से नफरत का शिकार
लूका 21:12 मेरे **ना.** की खातिर राजाओं के सामने पेश
यूह 14:14 मेरे **ना.** से माँगोगे, मैं वह करूँगा
यूह 17:26 मैंने तेरा **ना.** बताया है
प्रेषि 4:12 कोई और **ना.** नहीं चुना
प्रेषि 15:14 राष्ट्रों से लोग जो परमेश्वर के **ना.** से
रोमि 10:13 यहोवा का **ना.** पुकारता है, उद्धार पाएगा
इफि 3:15 हर परिवार का **ना.** वजूद में आया
फिलि 2:9 वह **ना.** जो दूसरे हर **ना.** से महान है
1यूह 2:12.
नाम की खातिर, प्रका 2:3 मेरे **ना.** बहुत कुछ सहा
नाम से, मत्ती 24:5; मर 9:39; प्रेषि 4:17; 5:28.
नामान, लूका 4:27.
नामी स्त्रियाँ, प्रेषि 17:4 **ना.** भी थीं
नामुमकिन, मत्ती 19:26 इंसानों के लिए यह **ना.** है
लूका 1:37 परमेश्वर के मुँह से निकली बात **ना.** नहीं
इब्रा 6:18 परमेश्वर का झूठ बोलना **ना.**
मत्ती 17:20; मर 10:27; प्रेषि 2:24; इब्रा 11:6.
नाराज़, मर 10:14 यीशु **ना.** हुआ
नाव/जहाज़ का पिछला हिस्सा, मर 4:38;
प्रेषि 27:29, 41.
नाविक, प्रेषि 27:27; प्रका 18:17.
नाश, मत्ती 18:14 इन छोटों में से एक भी **ना.** हो
मत्ती 25:46 हमेशा के लिए **ना.**
यूह 3:16 **ना.** न किया जाए बल्कि ज़िंदगी पाए
रोमि 9:22 क्रोध के बर्तन जो **ना.** होने के लायक हैं
1कुरिं 1:18 उन लोगों के लिए मूर्खता जो **ना.** हो रहे हैं
इब्रा 11:31 विश्वास से राहाब **ना.** नहीं हुई
याकू 4:12 जो बचा सकता और **ना.** कर सकता है
2पत 2:9 दुष्टों को **ना.** करने के लिए
2पत 3:9 नहीं चाहता कि कोई भी **ना.** हो
यहू 5 उन्हें **ना.** कर दिया जिन्होंने विश्वास नहीं
प्रका 17:8 जंगली जानवर का **ना.** हो जाएगा
लूका 17:27; प्रेषि 8:20; 2कुरिं 4:9; इब्रा 10:39;
2पत 3:7, 16.
नाश करनेवाला, इब्रा 11:28 **ना.** उनके पहलौठों को
नाश करनेवाले, 1कुरिं 10:10 **ना.** के हाथों मारे गए
नाश हो गए, यहू 11.
नाश हो जाएँगी, इब्रा 12:27 फिर दिखाता है कि **ना.**
नासमझ, लूका 24:25; तीतु 3:3.
नासरत, यूह 1:46 **ना.** से अच्छा निकल सकता है?
मत्ती 2:23; 4:13; 21:11.
नासरियों, प्रेषि 24:5 **ना.** के गुट
यूह 19:19; प्रेषि 2:22.
निंदा, मत्ती 12:31 पवित्र शक्ति के खिलाफ **निं.**
मर 3:29 पवित्र शक्ति के खिलाफ **निं.**
प्रेषि 13:45 झूठ बताकर परमेश्वर की **निं.** की
इब्रा 11:26 अभिषिक्त जन होने के नाते **निं.**
प्रका 16:21 कहर की वजह से परमेश्वर की **निं.**
रोमि 15:3; प्रेषि 6:11; 2तीमु 3:2; याकू 2:7;
प्रका 2:9; 13:6; 17:3.
निकम्मे, लूका 17:10 **नि.** दास हैं
तीतु 3:14 **नि.** न हों
मत्ती 25:30, इफि 5:11.
निकल आओ, 2कुरिं 6:17 **नि.** और खुद को अलग करो
प्रका 18:4 मेरे लोगो, उसमें से **नि.**
निकल जाने, प्रेषि 18:2.
निकलने, इब्रा 11:22 इसराएल के मिस्र से **नि.**
निकालकर, गला 4:15 अपनी आँखें **नि.**
निकाल बाहर करो, 1कुरिं 5:13 दुष्ट आदमी को **नि.**

निकालें, 2पत 2:9 यहोवा जानता है कि उन्हें कैसे **नि.**
मत्ती 10:1.
निगरान, 1तीमु 3:2 **नि.** पर कोई आरोप न हो
निगरानी, प्रेषि 1:20 उसका **नि.** का पद
प्रेषि 20:28 पवित्र शक्ति ने तुम्हें **नि.** करनेवाले
1तीमु 3:1 **नि.** के पद की कोशिश में आगे बढ़ता
1पत 2:25 तुम्हारे जीवन की **नि.** करनेवाले
तीतु 1:7.
निगल, 2कुरिं 5:4 उसे जीवन **नि.** सके
1पत 5:8 गरजता शेर, ताक में कि किसे **नि.** जाए
प्रका 12:4 बच्चा जने तो बच्चे को **नि.** जाए
निचली अदालतें, मत्ती 10:17; मर 13:9.
निजी, रोमि 14:1 **नि.** विचारों के बारे में
निडर, प्रेषि 9:27 उसने **नि.** होकर प्रचार किया
प्रेषि 4:29, 31; 14:3.
नियम, 1कुरिं 4:6 जिससे तुम यह **नि.** सीख सको
गला 6:16 इस **नि.** के मुताबिक कायदे से चलेंगे
इब्रा 9:1 करार में **नि.** हुआ करते थे
निराश, रोमि 9:33 जो विश्वास करेगा **नि.** न होगा
1पत 2:6 विश्वास दिखानेवाला **नि.** न होगा
निर्दोष, मत्ती 27:24 मैं इस आदमी के खून से **नि.** हूँ
प्रेषि 20:26 मैं सब लोगों के लहू से **नि.** हूँ
फिलि 2:15 **नि.** और मासूम
1थिस्स 2:10 नेक और **नि.**
1थिस्स 3:13 हमारे परमेश्वर के सामने पवित्र और **नि.**
1थिस्स 5:23 मौजूदगी के दौरान **नि.** हालत में सुरक्षित
1तीमु 3:10 सेवकों, क्योंकि ये **नि.** पाए गए हैं
1तीमु 6:14 बेदाग और **नि.** रहते हुए मानता रह
1कुरिं 1:8; कुलु 1:22.
निर्बुद्धि, रोमि 1:21 **नि.** हृदय अंधकार से
निर्भर, रोमि 9:11 कामों पर **नि.** न होकर
1पत 4:11 परमेश्वर की शक्ति पर **नि.**, सेवा करे
निर्माण करनेवाला, इब्रा 11:10 **नि.** परमेश्वर है
निवास, 1कुरिं 3:16 पवित्र शक्ति तुममें **नि.** करती है?
निवास-स्थान, इफि 2:22 परमेश्वर के लिए एक **नि.**
इब्रा 9:11 परिपूर्ण **नि.** जो बनाया नहीं
निवासी, लूका 15:15.
निशान, यूह 20:25 उसके हाथों में कीलों के **नि.**
प्रका 13:17 जिस किसी पर यह **नि.** न हो, वह न
प्रका 14:9 जंगली जानवर की पूजा करता है, वह **नि.**
प्रका 20:4 न अपने माथे पर **नि.** लगवाया
निशानी, मत्ती 12:39 **नि.** की ताक में, मगर कोई **नि.**
मत्ती 24:3 तेरी मौजूदगी की क्या **नि.** होगी
लूका 11:29 योना की **नि.** को छोड़ कोई **नि.** नहीं
1कुरिं 11:10 स्त्री अधीनता की **नि.** रखे
फिलि 1:28 यह **नि.** परमेश्वर की तरफ से
प्रका 12:1 स्वर्ग में एक बड़ी **नि.** दिखायी दी
प्रका 15:1 मैंने स्वर्ग में एक और **नि.** देखी
निशानियों, मत्ती 16:3 समय की **नि.** का मतलब नहीं
प्रेषि 7:43 **नि.** को जिन्हें तुमने इसलिए बनाया कि
गला 6:17 शरीर पर उन **नि.** को
निशानियाँ, लूका 21:25 सूरज, चाँद में **नि.** दिखायी देंगी
निष्कपट, 1पत 1:22 **नि.** प्यार
निष्कलंक, याकू 1:27 शुद्ध और **नि.** उपासना
1पत 1:4 विरासत जो **नि.** और कभी नहीं मिटेगी
यहू 24 तुम्हें **नि.** खड़ा कर सकता है
निष्फल, 2पत 1:8 ठंडे पड़ने या **नि.** होने नहीं देंगे
नींद, यूह 11:11 लाज़र, मैं उसे **नीं.** से जगाने
रोमि 13:11 **नीं.** से जाग उठने की घड़ी आ चुकी
नींव, 1कुरिं 3:11 उस **नीं.** के सिवा
इफि 2:20 प्रेषितों की **नीं.** पर खड़ा किया
लूका 6:48; रोमि 15:20.
नीकुदेमुस, यूह 3:1, 4, 9; 7:50; 19:39.
नीच, रोमि 1:26.
नीचा किया जाएगा, लूका 14:11.
नीचे रखता, मत्ती 23:12 जो खुद को **नी.** है
नीनवे, मत्ती 12:41 **नी.** के लोग उठेंगे और
नीनवे के लोगों, लूका 11:30 **नी.** के लिए एक निशानी
नुकसान, लूका 10:19 कोई भी चीज़ तुम्हें **नु.** नहीं
1कुरिं 3:15 **नु.** उठाएगा, लेकिन बचा लिया जाएगा
फिलि 3:7 मैंने मसीह की खातिर **नु.** समझा
इब्रा 13:17 ऐसे में तुम्हारा **नु.** होगा
1पत 3:13 तो कौन तुम्हें **नु.** पहुँचाएगा
प्रका 7:2; 9:4.
नुकसानदेह, मत्ती 12:36 हर **नु.** बात
1कुरिं 4:9 प्रेषितों को आखिर में **नु.** में
नुमाइश, कुलु 2:15 सब लोगों के सामने उनकी **नु.**
मत्ती 24:37.
नूह, लूका 17:26 जैसा **नू.** के दिनों में हुआ
इब्रा 11:7 विश्वास से **नू.** ने पाने के बाद
नेक, मत्ती 13:43 जो **ने.** हैं, वे चमकेंगे
प्रेषि 10:35 जो **ने.** काम करता है वह भाता है
रोमि 3:10 कोई **ने.** नहीं, एक भी नहीं
रोमि 3:26 **ने.** ज़ाहिर कर सके ताकि नेक ठहराते
रोमि 10:3 परमेश्वर की नज़र में **ने.** ठहरने के लिए

इब्रा 10:38 **ने.** जन विश्वास से ज़िंदा रहेगा
1पत 3:12 यहोवा की आँखें **ने.** लोगों पर लगी रहती हैं
नेकी, रोमि 1:17 परमेश्वर अपनी **ने.** ज़ाहिर करता है
1कुरिं 15:34 **ने.** करने और पाप में न लगे रहो
1पत 3:14 अगर तुम **ने.** की खातिर दुःख उठाते हो
मत्ती 5:45; रोमि 2:13; 2तीमु 4:8; इब्रा 12:23.
नेक करार, रोमि 3:24 महा-कृपा से **ने.** दिया गया
1तीमु 3:16 आत्मिक शरीर में **ने.**, स्वर्गदूतों के सामने
रोमि 8:30; गला 2:16.
नेक काम, रोमि 5:18 एक **ने.**
नेक ठहराए, रोमि 2:13 **ने.** जाएँगे
नेक ठहराया, रोमि 5:1 विश्वास की वजह से **ने.** गया
याकू 2:24 कामों से **ने.** जाता है
रोमि 3:20; 5:9; याकू 2:21, 25.
नेक ठहरेंगे, रोमि 5:19.
नेता, मत्ती 23:10 न **ने.** कहलाना, तुम्हारा एक ही **ने.** है
नौकर, रोमि 14:4 तू दूसरे के घर के **नौ.** को दोषी
नौजवान, मत्ती 19:22; प्रेषि 2:17; 1तीमु 5:1; 1यूह 2:14.
न्याय, मत्ती 12:20 कामयाबी के साथ **न्या.** कायम
मत्ती 12:41 **न्या.** के वक्त उठेंगे
मत्ती 19:28 बैठकर बारह गोत्रों का **न्या.** करेंगे
लूका 23:41 हम **न्या.** के हिसाब से लायक हैं
यूह 5:22 पिता किसी का भी **न्या.** नहीं करता
यूह 16:11 दुनिया के राजा का **न्या.** किया गया है
प्रेषि 17:31 एक दिन जिसमें वह **न्या.** करनेवाला है
1कुरिं 5:13 परमेश्वर बाहरवालों का **न्या.** है?
1कुरिं 6:2 नहीं जानते कि पवित्र जन दुनिया का **न्या.**
2थिस्स 1:5 परमेश्वर के सच्चे **न्या.** का सबूत
2थिस्स 1:6 यह **न्या.** है कि बदले में
इब्रा 2:2 **न्या.** के मुताबिक सज़ा
1पत 1:17 पिता बिना पक्षपात किए **न्या.** करता है
1पत 4:17 **न्या.** की शुरूआत परमेश्वर के घर से होगी
2पत 3:7 **न्या.** के दिन तक यानी भक्तिहीन लोगों के
1यूह 4:17 **न्या.** के दिन बेझिझक बोलने
प्रका 11:18 वक्त आ पहुँचा जब मरे हुओं का **न्या.**
इब्रा 9:27.
न्यायी, प्रेषि 10:42 जीवितों और मरे हुओं का **न्या.**
प्रेषि 13:20 उनके बीच न्याय **न्या.** ठहराए, शमूएल तक
कुलु 2:16 खाने के मामले में तुम्हारा **न्या.** न बने
2तीमु 4:1 यीशु, जीवितों का **न्या.** ठहराया गया
यूह 8:50; प्रेषि 24:25; 25:9; याकू 2:4.
न्याय-आसन, रोमि 14:10 परमेश्वर के **न्या.** के सामने
यूह 19:13; प्रेषि 8:12; 25:10; 2कुरिं 5:10.
न्यायदंड, इब्रा 10:27 **न्या.** का भयानक इंतज़ार
न्यौछावर, 1यूह 3:16 हमारे लिए अपनी जान **न्यौ.**
न्यौता, मत्ती 22:14 **न्यौ.** पानेवाले बहुत, मगर चुने गए
यूह 2:2; प्रका 19:9.

प

पंख, प्रका 12:14 बड़े उकाब के दो **पं.**
पंछियों, मत्ती 8:20 और **पं.** के बसेरे होते हैं
पंथ, प्रेषि 26:5 अपने धर्म के सबसे कट्टर **पं.** को
पकड़वानेवाले, मत्ती 27:3 उसे **प.** यहूदा ने देखा
यूह 18:2 उसे **प.** यहूदा को भी पता था
पकड़वाया, लूका 22:22 इंसान का बेटा **प.** जाएगा
पक्का, गला 3:15 करारनामा **प.** कर दिया जाता
गला 3:17 जिस करार को परमेश्वर ने पहले से **प.** कर
2पत 1:10 अपने बुलावे को **प.** करने
पक्की, 2तीमु 2:19 परमेश्वर ने जो **प.** नींव डाली है
पक्के तौर पर, इब्रा 6:17 वारिसों पर **प.** ज़ाहिर करना
पक्षपात की भावना, 1तीमु 5:21 बिना **प.** से
पक्षी, प्रका 18:2 घिनौने **प.** का बसेरा
प्रेषि 10:12.
पट्टियाँ, लूका 24:12; यूह 19:40; 20:5, 7.
पटियाँ, 2कुरिं 3:3 पत्थर की **प.** पर नहीं, दिलों पर
इब्रा 9:4.
पड़ना, इब्रा 10:31 परमेश्वर के हाथों में **प.** भयानक बात
पड़ोसी, लूका 10:27 अपने **प.** से वैसे प्यार करना जैसे
लूका 10:36; रोमि 13:10; इफि 4:25.
पढ़कर, 1तीमु 4:13 लोगों के सामने **प.** सुनाने
पढ़ता, प्रका 1:3 सुखी है वह जो ज़ोर से **प.** है
पढ़ते, 2कुरिं 3:2 जिसे सब लोग जानते और **प.** हैं
पढ़ने, लूका 4:16.
पढ़नेवाला, मत्ती 24:15 **प.** समझ इस्तेमाल करे
पढ़ा, प्रेषि 13:1 हेरोदेस के साथ **प.** था
पढ़ाई, यूह 7:15 इसने स्कूलों में **प.** नहीं की?
पतरस, मत्ती 16:16 **प.** ने कहाः तू मसीह है
यूह 21:15 यीशु ने शमौन **प.** से कहाः क्या तू मुझसे
प्रेषि 10:26 **प.** ने उसे उठाकर कहाः खड़ा हो
मत्ती 26:75; यूह 18:10; प्रेषि 8:20; 10:13.
पतवार, याकू 3:4 जहाज़, एक **प.** के ज़रिए
पति, रोमि 7:2 कानूनी तौर पर **प.** से बंधी होती है
1कुरिं 7:2 हर स्त्री का अपना **प.** हो

1कुरिं 7:14 अविश्वासी **प.** पवित्र माना जाता है
1पत 3:1 पत्नियो, अपने-अपने **प.** के अधीन रहो
पतियो, इफि 5:25 **प.**, अपनी-अपनी पत्नी से प्यार
कुलु 3:19 **प.**, अपनी-अपनी पत्नी से प्यार करते रहो
1कुरिं 7:34; 14:35; कुलु 3:18.
पत्तियाँ, प्रका 22:2 **प.** राष्ट्रों के लोगों के रोग दूर करने
पत्थर, मत्ती 21:42 जिस **प.** को राजमिस्त्रियों ने
लूका 19:40 अगर खामोश रहे तो **प.** बोल उठेंगे
रोमि 9:32 ठोकर खिलानेवाले **प.** पर ठोकर खायी
1पत 2:6 मैं सिय्योन में एक चुना हुआ **प.** रखता हूँ
प्रका 2:17 **प.** पर एक नया नाम
पत्थरों पर खोदकर, 2कुरिं 3:7 कानून **प.** लिखा गया
पत्नियाँ, इफि 5:22 **प.** अधीन रहें
पत्नी, 1कुरिं 7:2 हर आदमी की अपनी **प.** हो
1कुरिं 7:39 **प.** पति के जीते-जी उससे बंधी
इफि 5:23, 28; 1तीमु 3:2.
पद, प्रेषि 1:20 उसका **प.** दूसरा ले ले
1तीमु 3:1 निगरानी के **प.** की कोशिश
पदवी, 1तीमु 2:2 राजाओं और जो ऊँची **प.** रखते हैं
पदों, रोमि 13:1 परमेश्वर ने उनके मातहत **प.** पर
परंपरा, मत्ती 15:3 अपनी **प.** की वजह से
मर 7:13 अपनी **प.** की वजह से परमेश्वर के वचन
परंपराओं, गला 1:14 बापदादों की **प.** को मानने में
कुलु 2:8 खोखली बातों, इंसानों की **प.**
मर 7:3.
परख, 1पत 4:12 इसलिए हो रहा है कि तुम्हारी **प.** हो
परखकर, रोमि 12:2 तुम **प.** खुद के लिए मालूम
परख-शक्ति, 1कुरिं 10:15 जैसे उनसे जिनके पास **प.** है
परखे, याकू 1:3 तुम्हारे **प.** हुए विश्वास का
1पत 1:7 ताकि तुम्हारे **प.** हुए विश्वास का
प्रका 2:10 ताकि तुम पूरी हद तक **प.** जाओ
परखो, 1थिस्स 5:21 सब बातों को **प.**, जो बढ़िया है उसे
परचे, प्रका 5:5 जीत हासिल की ताकि **प.** को खोले
परदा, मत्ती 27:51 **प.** फटकर दो टुकड़े हो गया
2कुरिं 4:3 **प.** उनके लिए जो नाश हो रहे हैं
1थिस्स 2:5 न लालच पर **प.**
2कुरिं 3:13, 14, 15, 16.
परदे, इब्रा 10:20 नया रास्ता, जो **प.** से पार होकर
इब्रा 6:19; 9:3.
परदेसी, इफि 2:19 और **प.**, मगर
लूका 24:18.
परम-प्रधान, प्रेषि 7:48 **प.** नहीं रहता
लूका 1:32, 76; 6:35; प्रेषि 16:17.
परमेश्वर, लूका 20:25 मगर जो **प.** का है वह **प.** को
प्रेषि 17:29 **प.** सोने या
रोमि 2:11 **प.** भेदभाव नहीं करता
रोमि 13:6 वे **प.** के ठहराए जन-सेवक हैं
1कुरिं 14:33 **प.** गड़बड़ी का नहीं, बल्कि
2कुरिं 1:3 हमारे प्रभु यीशु का **प.** और पिता
इब्रा 12:29 **प.** आग भी है जो पूरी तरह भस्म कर
1यूह 4:8 **प.** प्यार है
कुलु 3:12; तीतु 1:7.
परमेश्वर का राज, मत्ती 21:43 **प.** ले लिया जाएगा
लूका 17:20 **प.** ऐसे नहीं आ रहा कि साफ-साफ देखा
परमेश्वर के राज, मर 4:11 **प.** के पवित्र रहस्य की
लूका 9:62 जो मुड़कर देखता, वह **प.** के लायक नहीं
प्रेषि 14:22 बहुत तकलीफें झेलकर **प.** में दाखिल
लूका 6:20; रोमि 14:17; 1कुरिं 4:20.
परमेश्वर का वचन, इब्रा 4:12 **प.** जीवित है और
इफि 6:17 पवित्र शक्ति की तलवार, **प.**
प्रका 19:13 इस नाम से पुकारा जाता है, **प.**
परमेश्वर के वचन, मर 7:13 **प.** को रद्द कर देते हो
लूका 8:11; प्रेषि 6:7; 1थिस्स 2:13; 2तीमु 2:9;
इब्रा 11:3; 2पत 3:5.
परमेश्वर का डर, इब्रा 5:7; 12:28.
परमेश्वर का सेवक, 2तीमु 3:17.
परमेश्वर की प्रेरणा, 2तीमु 3:16 पूरा शास्त्र **प.** से
परमेश्वर की बुद्धि के अनगिनत पहलू, इफि 3:10.
परमेश्वर की भक्ति, 1तीमु 4:8 **प.** फायदेमंद है
1तीमु 6:6 **प.**, बशर्ते जो हमारे पास है उसी में
2तीमु 3:12 जितने **प.** के साथ उन पर ज़ुल्म
प्रेषि 3:12; 1तीमु 2:2; 3:16; 4:7; 6:5; तीतु 1:1;
2पत 1:3; 3:11.
परमेश्वर की मरज़ी के मुताबिक, 2कुरिं 7:10.
परमेश्वर के बंदे, 1तीमु 6:11.
परमेश्वर के स्तरों पर नहीं चलते, 1कुरिं 6:9.
परवाह, मत्ती 22:5 **प.** न की और अपने-अपने रास्ते
प्रका 12:11 जान की **प.** न की
परिपूर्ण, इब्रा 7:19 कानून ने कुछ भी **प.** नहीं किया
इब्रा 11:40 हमसे अलग **प.** न बनाए जाएँ
इब्रा 7:28; 9:11.
परिपूर्ण करनेवाला, इब्रा 12:2 यीशु हमारे विश्वास का **प.**
परिपूर्णता, इब्रा 7:11.
परिवार, इफि 3:15 हर **प.** का नाम वजूद में आया है
प्रेषि 3:25.

परीक्षा, मत्ती 4:7 यहोवा की **प.** न लेना
मत्ती 6:13 **प.** आए तो हमें गिरने न दे
मत्ती 26:41 ताकि तुम **प.** में न पड़ो
लूका 4:13 शैतान **प.** कर चुका
लूका 8:13 **प.** के वक्त गिर जाते हैं
1कुरिं 10:9 न हम यहोवा की **प.** लें
1कुरिं 10:13 तुम ऐसी **प.** से नहीं गुज़रे
1तीमु 6:9 अमीर **प.** और फंदे में फँस जाते हैं
इब्रा 4:15 सब बातों में **प.** हुई
याकू 1:12 इंसान जो **प.** में धीरज धरे रहता है
याकू 1:13 जब किसी की **प.** हो रही हो
2पत 2:9 उन्हें **प.** से कैसे निकाले
प्रका 3:10 मैं **प.** की घड़ी में तुझे संभाले रहूँगा
लूका 22:28; प्रेषि 5:9; गला 4:14; इब्रा 2:18; याकू 1:2.
परे, रोमि 11:33 कितने **प.**
परेशान, 1पत 3:14 न **प.** हो जाओ
परेशानी, फिलि 3:1 लिखना **प.** की बात नहीं
पर्दाफाश, 2पत 3:10 कामों का **प.** हो जाएगा
पलंग, लूका 8:16.
पलक, 1कुरिं 15:52 **प.** झपकते ही
पल-भर, लूका 4:5 **प.** में उसे दिखाए
2कुरिं 4:17 दुःख-तकलीफें **प.** के लिए
पवित्र, लूका 11:2 तेरा नाम **प.** किया जाए
रोमि 7:12 कानून अपने आप में **प.** है और
1कुरिं 3:17 परमेश्वर का मंदिर **प.** है और तुम
2कुरिं 11:2 तुम्हें एक **प.** कुँवारी की तरह सौंप सकूँ
इफि 1:4 ताकि हम **प.** और
1थिस्स 3:13 परमेश्वर के सामने **प.** और निर्दोष
2तीमु 3:15 **प.** शास्त्र के लेख तेरे जाने हुए हैं
इब्रा 2:11 जो **प.** किए जा रहे हैं, सब एक ही से
इब्रा 10:10 मसीह के चढ़ाए शरीर के ज़रिए **प.** किया
याकू 3:17 जो बुद्धि स्वर्ग से है, वह सबसे पहले **प.** है
प्रका 4:8 यहोवा परमेश्वर **प.**, **प.**, **प.** है
मत्ती 24:15; 1कुरिं 1:2; फिलि 4:8; 1पत 3:2.
पवित्र कर, यूह 17:17 से उन्हें **प.**
इब्रा 13:12 वह अपने लहू से लोगों को **प.** सके
पवित्र करता, यूह 17:19 मैं खुद को **प.** हूँ
पवित्र कामों के लिए अलग, 1कुरिं 6:11 **प.** किया
पवित्र जन, 1कुरिं 6:2 **प.** दुनिया का न्याय करेंगे?
पवित्र जनों, प्रेषि 26:10 मैंने **प.** को बंद किया
रोमि 12:13 **प.** की मदद करो
इफि 3:8 मुझ को, जो **प.** में सबसे छोटे से भी छोटा
इफि 4:12 **प.** का सुधार हो और काम करें
प्रका 11:18 वक्त, जब **प.** को इनाम दिया जाए
प्रका 17:6 स्त्री **प.** का खून पीकर
मत्ती 27:52; प्रका 13:7; 18:24.
पवित्र ठहराए, 1कुरिं 1:30 हमारे **प.** जाने का ज़रिया
1पत 1:2 पवित्र शक्ति के ज़रिए **प.** गए ताकि
पवित्र ठहराया, 2तीमु 2:21.
पवित्र ठहरो, 1थिस्स 4:3 परमेश्वर की मरज़ी तुम **प.**
पवित्रता, रोमि 6:19 नेकी के, जिससे **प.** हासिल हो
2कुरिं 7:1 परमेश्वर का भय मानते हुए पूरी हद तक **प.**
2कुरिं 11:3 **प.** जिसे पाने का हकदार मसीह है
1थिस्स 4:4 **प.** के साथ अपने शरीर को वश में रखना
1तीमु 2:15 विश्वास, प्यार, **प.** बनाए रखे
इब्रा 12:14 शांति बनाए रखने और **प.**
इब्रा 12:10.
पवित्र बातों को ठुकराते हैं, 1तीमु 1:9.
पवित्र माना, 1कुरिं 7:14.
1पत 3:15 मसीह को अपने दिलों में **प.**
पवित्र रहस्य, रोमि 16:25 **प.** जो
1कुरिं 4:1 प्रबंधक जिन्हें परमेश्वर के **प.** सौंपे गए
1कुरिं 14:2 वह पवित्र शक्ति के ज़रिए **प.** बताता
1कुरिं 15:51 मैं तुम्हें एक **प.** बताता हूँ:
इफि 1:9 मरज़ी के बारे में **प.** हम पर ज़ाहिर किया
कुलु 1:26 **प.**, जिसे छिपाकर रखा गया
1तीमु 3:16 परमेश्वर के लिए भक्ति का यह **प.**
प्रका 10:7 परमेश्वर का **प.** अपने दासों को सुनायी थी
पवित्र रहस्यों, मत्ती 13:11; मर 4:11; रोमि 11:25; 1कुरिं 13:2; इफि 3:3, 4; कुलु 4:3; प्रका 1:20.
पवित्र शक्ति, मत्ती 1:18 **प.** से गर्भवती
मत्ती 3:16 **प.** को कबूतर के रूप में उतरते
मत्ती 12:32 जो कोई **प.** के खिलाफ बोलता है
लूका 3:22 **प.** कबूतर जैसे आकार में
यूह 14:26 मददगार यानी **प.** जिसे पिता भेजेगा
प्रेषि 2:4 वे सभी **प.** से भर गए
प्रेषि 2:17 हर तरह के इंसान पर अपनी **प.** उंडेलूँगा
प्रेषि 7:51 ढीठ लोगो, **प.** का विरोध करते हो
प्रेषि 11:16 तुम **प.** से बपतिस्मा पाओगे
रोमि 8:6 **प.** की बातों पर मन लगाने का मतलब जीवन
रोमि 8:9 अगर परमेश्वर की **प.** सचमुच तुममें
रोमि 8:11 यीशु को जी उठानेवाले की **प.**
रोमि 8:16 **प.** हमारे अंदर के एहसास के साथ
1कुरिं 2:10 **प.** सब बातों की खोजबीन करती है
1कुरिं 3:16 परमेश्वर की **प.** तुममें निवास करती है?

1कुरिं 6:19 शरीर **प.** का मंदिर है
2कुरिं 3:6 कानून मौत की, मगर **प.** जीवन देती है
2कुरिं 3:17 जहाँ **प.** है, वहाँ आज़ादी है
इफि 2:22 परमेश्‍वर के लिए एक निवास-स्थान जहाँ **प.**
इफि 4:30 परमेश्‍वर की **प.** को दुःखी न करो
इब्रा 6:4 जो **प.** के भागीदार बने
इफि 6:17 **प.** की तलवार, परमेश्‍वर का वचन
2पत 1:21 **प.** से उभारे जाकर
प्रका 22:17 **प.** और दुल्हन कहती रहती हैं: आ!
मत्ती 3:11; मर 13:11; यूह 16:13; प्रेषि 20:28; 1कुरिं 1:2; 2:11; गला 5:22.
पवित्र शक्ति की मदद से, 1कुरिं 2:14 **प.** परखा
पवित्र शक्ति से पैदा हुए, इब्रा 12:23 **प.** नेक जनों
पवित्र सेवा, मत्ती 4:10 सिर्फ परमेश्‍वर की **प.** कर
रोमि 9:4 इसराएली, उन्हीं को कानून दिया गया और **प.**
पवित्र होने, 1थिस्स 4:7 परमेश्‍वर ने हमें **प.** के लिए
पश्‍चाताप, मत्ती 3:2 **प.** करो, क्योंकि राज
मत्ती 3:8 **प.** दिखानेवाले फल
मत्ती 12:41 योना का प्रचार सुनकर **प.** किया
लूका 15:7 पापी के **प.** करने पर इतनी खुशियाँ
लूका 15:7 निनानवे जिन्हें **प.** की ज़रूरत नहीं
प्रेषि 3:19 **प.** करो और पलटकर लौट आओ ताकि
प्रेषि 26:20 **प.** के योग्य काम करते हुए
रोमि 2:4 तुझे **प.** की तरफ ले जाने की कोशिश
2तीमु 2:25 हो सकता है परमेश्‍वर उन्हें **प.** करने का
प्रका 16:9 उन्होंने **प.** नहीं किया ताकि महिमा करें
मत्ती 3:11; 11:21; लूका 13:3; 16:30; 24:47; प्रेषि 11:18; 2कुरिं 7:10; 12:21; 2पत 3:9; प्रका 2:5, 21; 3:19.
पश्‍चाताप दिखानेवाला, प्रेषि 19:4.
पसंद, यूह 15:19 दुनिया जो उसका अपना है उसे **प.**
पहचान, मत्ती 7:20 उनके फलों से **प.** लोगे
फिलि 1:10 **प.** सको कि ज़्यादा अहमियत रखनेवाली
पहन लो, कुलु 3:12 गहरे लगाव को **प.**
पहनाया, मर 15:17 उन्होंने उसे बैंजनी कपड़ा **प.**
पहने, प्रका 3:18; 4:4; 7:9.
पहल, यूह 5:19, 30; 8:28.
पहला, प्रेषि 26:23 जी उठाए जानेवालों में **प.**
कुलु 1:18 वह सब बातों में **प.**
पहले, मत्ती 6:33 **प.** राज की खोज
मत्ती 19:30 बहुत-से जो **प.** हैं, आखिरी होंगे
रोमि 1:2 वादा **प.** से किया
रोमि 11:2 लोगों, जिन पर सबसे **प.** दिया
रोमि 15:4 जो बातें **प.** लिखी गयी थीं, हमारी हिदायत
फिलि 3:11 जो **प.** जी उठाए जाएँगे
इब्रा 10:9.
पहला फल, 1कुरिं 15:20 उनमें से **प.** है
रोमि 8:23; 11:16; 1कुरिं 16:15; प्रका 14:4.
पहलू, इब्रा 7:11 याजकपद, एक **प.**
पहले ध्यान, रोमि 8:29 उसने **प.** दिया
पहले फल, याकू 1:18 हम उसकी सृष्टि में **प.** हों
पहले से, मत्ती 24:25 तुम्हें **प.** आगाह कर दिया
रोमि 8:29 **प.** तय किया कि वे ऐसे ढाले जाएँ कि
गला 5:21 **प.** खबरदार कर रहा हूँ, जैसे पहले भी
इफि 1:11 अपने मकसद के मुताबिक **प.** चुन लिया
इफि 2:10 परमेश्‍वर ने **प.** तय कर दिया
1तीमु 5:21 **प.** राय कायम किए बिना
1यूह 2:7 आज्ञा **प.** मिली हुई
मर 13:23; प्रेषि 1:16; रोमि 9:23.
पहले से ठहराया, प्रेषि 4:28 करें जो **प.** था
रोमि 8:30 जिन्हें **प.** ये वे हैं जिन्हें उसने बुलाया भी
1कुरिं 2:7 छिपी हुई बुद्धि, परमेश्‍वर ने इसे **प.**
इफि 1:5 **प.** कि हमें यीशु के ज़रिए गोद ले
पहलौठा, कुलु 1:15 सारी सृष्टि में **प.**
कुलु 1:18 जी उठनेवालों में **प.**, सब बातों में पहला
पहलौठे, इब्रा 1:6 अपने **प.** को धरती पर लाएगा
रोमि 8:29.
पहलौठों, इब्रा 12:23 **प.** की सभा
पहाड़, मत्ती 4:8 ऊँचे **प.** पर उसे दिखायी
मत्ती 17:20 इस **प.** से कहोगे, यहाँ से हटकर
लूका 3:5 हरेक **प.** और पहाड़ी सपाट कर
पहाड़ों, मर 13:14 यहूदिया में हों **प.** की तरफ भागना
प्रका 6:16 **प.** से कहते: हम पर गिर पड़ो
लूका 23:30.
पहुँच, रोमि 5:2; इफि 2:18; 3:12.
पहुँचा देना, रोमि 15:24 कुछ दूर तक आगे **प.**
पहुँचाया गया, प्रेषि 7:53 स्वर्गदूतों के ज़रिए **प.** कानून
गला 3:19 स्वर्गदूतों के ज़रिए बिचवई के हाथों **प.**
पाँव, 1कुरिं 15:25 सारे दुश्‍मनों को उसके **पाँ.** तले
रोमि 10:15; इब्रा 2:8.
पाँव की चौकी, याकू 2:3.
पाएँगे, 2थिस्स 1:9 विनाश की सज़ा **पा.**
पाए, लूका 12:37 मालिक आने पर जागता हुआ **पा.**
पाओगे, मत्ती 7:7 ढूँढ़ते रहो और **पा.**
पागल, यूह 10:20 इसमें दुष्ट स्वर्गदूत है, यह **पा.** है
प्रेषि 26:24 तुझे **पा.** कर दिया है!

1कुरिं 14:23 अविश्‍वासी कहेंगे कि तुम **पा.** हो?
लूका 6:11.

पागलपन, 2तीमु 3:9 इनका **पा.** सब पर ज़ाहिर
2पत 2:16 भविष्यवक्‍ता को **पा.** का काम करने से

पागलों, 2कुरिं 11:23 **पा.** की तरह कहता हूँ

पाता, मत्ती 7:8 हर कोई जो ढूँढ़ता है, **पा.** है
प्रका 20:6 पहला पुनरुत्थान **पा.** है

पाते, याकू 4:3 माँगते हो, फिर भी नहीं **पा.**

पात्र, प्रेषि 9:15 यह आदमी चुना हुआ **पा.** है

पानी का घड़ा, मर 14:13; लूका 22:10.

पानी, मत्ती 10:42 एक प्याला ठंडा **पा.**
यूह 4:14 वह **पा.** पीता, जो मैं दूँगा वह कभी-भी प्यासा
यूह 7:38 उससे जीवन देनेवाले **पा.** की धाराएँ
1कुरिं 3:7 न **पा.** देनेवाला, मगर परमेश्‍वर बढ़ाता है
प्रका 7:17 उन्हें जीवन के **पा.** तक ले जाएगा
प्रका 22:17 जो कोई जीवन देनेवाला **पा.** मुफ्त में ले
यूह 5:7; प्रका 17:1, 15; 22:1.

पानेवाले, मत्ती 7:14 उसे **पा.** थोड़े हैं

पाप किया, रोमि 3:23 सब ने **पा.**, गुण ज़ाहिर करने में
रोमि 5:12 मौत सब में फैल गयी क्योंकि सबने **पा.**

पाप, मत्ती 5:29 दायीं आँख तुझसे **पा.** करवा
मत्ती 12:31 पवित्र शक्‍ति के खिलाफ **पा.** माफ न
मर 3:29 पवित्र शक्‍ति के खिलाफ निंदा, ऐसा **पा.** जो
यूह 1:29 दुनिया का **पा.** दूर ले जाता है!
प्रेषि 3:19 पश्‍चाताप करो ताकि तुम्हारे **पा.** मिटाए जाएँ
रोमि 4:8 सुखी है वह इंसान जिसके **पा.** का यहोवा
रोमि 5:12 एक आदमी से **पा.** दुनिया में आया
रोमि 5:21 **पा.** ने मौत के साथ राजा बनकर राज
रोमि 6:23 **पा.** जो मज़दूरी देता है मौत है
रोमि 7:7 कानून न होता, तो मैं **पा.** के बारे में न जान
रोमि 8:2 **पा.** और मौत के कानून से आज़ाद
रोमि 14:23 हर चीज़ जो विश्‍वास से नहीं **पा.** है
1कुरिं 6:18 व्यभिचार, शरीर के खिलाफ **पा.**
2कुरिं 5:21 **पा.** नहीं किया, हमारे लिए **पा.** बलि
गला 3:19 कानून? **पा.** को ज़ाहिर करने के
इफि 4:26 क्रोध आए, तो भी **पा.** मत करो
इब्रा 10:26 पाने के बाद अगर हम जानबूझकर **पा.**
इब्रा 12:1 **पा.** जो आसानी से हमें उलझाकर फँसा
याकू 1:15 **पा.** को जन्म देती है; **पा.** मौत लाता है
याकू 5:15 **पा.** किए हों, माफ किए जाएँगे
1यूह 3:8 शैतान शुरूआत से **पा.** करता रहा है
याकू 4:17.

पापों, मत्ती 26:28 बहुतों के **पा.** की माफी के लिए
इब्रा 10:12 **पा.** के लिए एक बलिदान सदा के लिए
इब्रा 10:17 मैं उनके **पा.** को याद न करूँगा
प्रका 18:4 उसके **पा.** में हिस्सेदार नहीं होना चाहते
प्रेषि 10:43; 1तीमु 5:24; इब्रा 2:2; 9:15; 11:25; 1यूह 1:8, 9; 2:1; 5:16.

पापी, लूका 15:7 एक **पा.** के पश्‍चाताप पर स्वर्ग में
लूका 18:13 परमेश्‍वर, मुझ **पा.** पर दया कर
रोमि 5:8 जब हम **पा.** ही थे, मसीह मरा
रोमि 5:19 एक के आज्ञा न मानने से बहुत लोग **पा.**
रोमि 6:6 हमारे **पा.** शरीर का अधिकार खत्म हो जाए
1तीमु 1:9 कानून ऐसों के लिए जो **पा.** हैं
याकू 5:20 जो भटके **पा.** को वापस ले आता
1पत 4:18 उनका क्या होगा जो **पा.** हैं?

पापियों, मत्ती 11:19 कर वसूलनेवालों और **पा.** का
लूका 15:2 यह आदमी **पा.** को पास आने देता और
यूह 9:31 हम जानते हैं कि परमेश्‍वर **पा.** की नहीं
1तीमु 1:15 मसीह **पा.** का उद्धार करने आया
इब्रा 7:26 महायाजक **पा.** जैसा न हो
1पत 3:18 नेक था, **पा.** को

पाया, मत्ती 10:8 तुमने मुफ्त **पा.** मुफ्त दो

पायी, रोमि 16:17 शिक्षा जो तुमने **पा.**

पार, प्रेषि 16:9 इस **पा.** मकिदुनिया आकर
मर 4:35; 5:21; 6:45; 8:13.

पालतू बनाया, याकू 3:7 **पा.** जा सकता और **पा.** है

पालन, रोमि 9:31 इसराएल, वे कानून का **पा.** न कर पाए

पालन-पोषण, प्रका 12:14 एक समय के लिए उसका **पा.**
प्रका 12:6.

पास, प्रेषि 3:19 यहोवा के **पा.** से
इब्रा 7:25 उसके ज़रिए परमेश्‍वर के **पा.** आते

पा सको, 1कुरिं 9:24 इनाम? इस तरह दौड़ो कि **पा.**

पिघल, 2पत 3:10 तत्व बेहद गर्म होकर **पि.** जाएँगे

पिटवाया, प्रेषि 5:40 प्रेषितों को बुलवाकर **पि.** और

पिता, मत्ती 6:9 हमारे **पि.** तू जो स्वर्ग में है
मत्ती 23:9 धरती पर किसी को **पि.** न कहना
लूका 2:49 मैं अपने **पि.** के घर में होऊँगा
यूह 8:44 तुम अपने **पि.** शैतान से हो
यूह 14:28 **पि.** मुझसे बड़ा है
1कुरिं 4:15 खुशखबरी के ज़रिए तुम्हारा **पि.**
याकू 1:17 ज्योतियों के **पि.** से आती है
मत्ती 10:37; 26:29; यूह 10:30; 14:6, 24; इफि 4:6; प्रका 14:1.

पिताओ, इफि 6:4 **पि.**, अपने बच्चों को चिढ़ मत

पित्त, मत्ती 27:34; प्रेषि 8:23.
पिन्तेकुस्त, प्रेषि 2:1 **पि.** के दिन
प्रेषि 20:16; 1कुरिं 16:8.
पियक्कड़, मत्ती 24:49 बदनाम **पि.** के साथ
1कुरिं 6:10 न **पि.** परमेश्वर के राज के वारिस होंगे
1कुरिं 5:11.
पिल्लों, मत्ती 15:26.
पीऊँ, मत्ती 26:29 मैं तुम्हारे साथ नयी **पी.**
पीछा, फिलि 3:12 उसका **पी.** कर रहा हूँ ताकि उसे
पीछे, मत्ती 10:38 यातना की सूली उठाकर मेरे **पी.** चल
मत्ती 19:28 तुम जो मेरे **पी.** हो लिए हो
यूह 8:12 जो मेरे **पी.** चलता है, ज़िंदगी उसके पास
फिलि 3:13 बातें **पी.** रह गयी, उन्हें भूलकर
इब्रा 10:38 अगर वह **पी.** हट जाता है तो मेरा मन
प्रका 19:14 सेनाएँ उसके **पी.** आ रही थीं
मत्ती 4:20; 16:24; यूह 10:5, 27; 2पत 2:2.
पीट, 1कुरिं 9:26 हवा को **पी.** रहा हूँ
पीटना, प्रेषि 21:32 पौलुस को **पी.** बंद कर दिया
मत्ती 21:35; 2कुरिं 11:25.
पीटे जाओगे, मर 13:9 सभा-घरों में **पी.**
पीठ पीछे बदनाम करना, 2कुरिं 12:20 **पी.**, चुगली
पीठ पीछे बदनाम करनेवाले, रोमि 1:30.
पीड़ा, लूका 16:23 **पी.** में था, अब्राहम को देखा
प्रका 9:10 लोगों को पाँच महीने तक **पी.** देने
प्रका 12:2 बच्चा जनने की **पी.** से
पीढ़ी, मत्ती 24:34 यह **पी.** हरगिज़ न
लूका 11:51 खून का हिसाब इस **पी.** से लिया जाएगा
इफि 3:5 पिछली **पी.** पर यह रहस्य प्रकट नहीं किया
फिलि 2:15 टेढ़ी और भ्रष्ट **पी.** के बीच
मत्ती 12:39; 23:36; लूका 21:32.
पीढ़ियों, कुलु 1:26 पिछली **पी.** से छिपाकर
पीतल, 1कुरिं 13:1 टनटन बजता **पी.**
पीलातुस, मत्ती 27:2 उसे **पी.** के हवाले कर
मत्ती 27:22 **पी.** ने कहा: यीशु के साथ क्या करूँ
मर 15:15 **पी.** ने उनके लिए बरअब्बा को रिहा
लूका 23:12 हेरोदेस और **पी.** के बीच दोस्ती हो गयी
यूह 19:6 **पी.** ने कहा: मैं इसमें कोई दोष नहीं पाता
लूका 13:1; यूह 18:37; 19:12, 22; 1तीमु 6:13.
पीले, प्रका 6:8 एक **पी.** रंग का घोड़ा और सवार
पीसना, लूका 13:28 रोना और दाँत **पी.**
मत्ती 8:12; 13:42; 22:13; 24:51; 25:30.
पुकारता, रोमि 10:13.
पुकारेगा, प्रेषि 2:21 जो यहोवा का नाम **पु.**
पुख्ता किया, इब्रा 2:3 उद्धार की बात को हमारे लिए **पु.**
पुनरुत्थान, प्रका 20:6 जो पहला **पु.** पाता है
पुरानी, 2पत 2:5 **पु.** दुनिया पर सज़ा लाया
पुराने वक्त के लोगों, इब्रा 11:2.
पुरुष, 2कुरिं 11:2 मैं एक **पु.** से तुम्हारी सगाई करवा
2तीमु 2:2.
पुरुषों, रोमि 1:27 **पु.** ने स्वाभाविक छोड़ दिए और **पु.**
पुरुषों के साथ संभोग करनेवाले पुरुष, 1कुरिं 6:9.
पूछने, मत्ती 2:4.
पूछा, प्रेषि 23:34 **पू.** कि किस प्रांत का है
पूजना, प्रका 9:20 दुष्ट स्वर्गदूतों को **पू.** नहीं छोड़ा
पूजा, रोमि 1:25 के बजाय सृष्टि की **पू.** की
प्रका 13:4 उन्होंने अजगर की **पू.** की क्योंकि उसने
प्रका 14:9 अगर कोई उस जंगली जानवर की **पू.**
प्रका 20:4 जिन्होंने न जंगली जानवर की **पू.** की
कुलु 2:23; प्रका 13:15; 16:2.
पूरब, मत्ती 2:1 **पू.** से ज्योतिषी
मत्ती 8:11; 24:27; लूका 13:29.
पूरा, मत्ती 5:17 रद्द करने नहीं, बल्कि **पू.** करने
लूका 12:50 जब तक **पू.** नहीं हो जाता, तकलीफ में
लूका 13:32 तीसरे दिन तक काम **पू.** करूँगा
यूह 4:34 भेजनेवाले का काम **पू.** करूँ
यूह 17:4 जो काम तू ने मुझे दिया उसे **पू.** कर
रोमि 9:28 बड़ी तेज़ी से यह काम **पू.** करेगा
1कुरिं 13:12 जैसे परमेश्वर मेरे बारे में **पू.** जानता है
इफि 1:10 वक्त के **पू.** होने पर
फिलि 1:6 उसे **पू.** भी करेगा
2तीमु 4:5 अपनी सेवा को अच्छी तरह **पू.** कर
2तीमु 4:17 प्रचार **पू.** हो
1यूह 4:18 बल्कि जो प्यार **पू.** है वह डर को दूर कर
पूरी, मत्ती 22:37 अपनी **पू.** जान से प्यार
लूका 18:31 सब बातें **पू.** होंगी
यूह 17:23 ताकि वे **पू.** तरह से एक हों
प्रेषि 20:24 मैं अपनी दौड़ **पू.** कर सकूँ और सेवा
कुलु 1:5 आशा जो तुम्हारे लिए **पू.** होनेवाली है
2तीमु 4:7 अपनी दौड़ **पू.** कर ली
1पत 4:3 मरज़ी **पू.** करने के लिए
मत्ती 2:15; लूका 8:14; 21:22; 1कुरिं 13:10;
2कुरिं 12:9; गला 4:4; 6:2; इफि 1:23; 4:13;
याकू 1:4.
पूरी तरह से विकसित, इफि 4:13 जब तक कि हम **पू.**
पूरी हद तक, 2कुरिं 7:1 भय मानते हुए **पू.** पवित्रता
कुलु 2:10 तुम्हारे पास सबकुछ **पू.** है

पूरे, गला 3:3 क्या तुम शरीर के मुताबिक **पू.** होना
पृथ्वी, 2पत 3:13; प्रका 21:1.
पेचिश, प्रेषि 28:8 पुबलियुस का पिता **पे.** से
पेट, रोमि 16:18 इस तरह के आदमी अपने **पे.** के ही
फिलि 3:19 उनका **पे.** ही उनका ईश्वर है
1तीमु 5:23 अपने **पे.** के लिए
मत्ती 12:40; 1कुरिं 6:13.
पेटू, तीतु 1:12 आलसी और **पे.**
मत्ती 11:19.
पेड़, मत्ती 3:10 वह **पे.** जो बढ़िया फल नहीं लाता
मत्ती 7:18 अच्छा **पे.** खराब फल नहीं ला सकता
मत्ती 24:32 अंजीर के **पे.** की मिसाल से सीखो
प्रका 11:4 जैतून के दो **पे.**
लूका 6:43; प्रका 7:3; 22:2.
पेश, फिलि 1:27 ऐसे **पे.** आओ जैसे खुशखबरी के
2तीमु 2:15 खुद को परमेश्वर के सामने **पे.** कर सके
पेशा, प्रेषि 18:3.
पेशी, 2तीमु 4:16 मेरी पहली **पे.** के वक्त कोई नहीं
पैदा, यूह 3:3 जब तक कोई दोबारा **पै.** न हो, वह
रोमि 10:19 तुम्हारे अंदर जलन **पै.** करूँगा
कुलु 1:10 भले काम के फल **पै.** करते जाओ
पैदाइश, इफि 2:3 **पै.** से उन की तरह जिन पर क्रोध है
पैरवी, फिलि 1:7 **पै.** करने और कानूनी
फिलि 1:16 मैं खुशखबरी की **पै.** करने ठहराया
1पत 3:15 सामने **पै.** करने हमेशा तैयार
पैरों, रोमि 16:20 शैतान को तुम्हारे **पै.** तले कुचल देगा
इफि 6:15 **पै.** में तैयारी के जूते पहनकर
पैवंद, मत्ती 9:16; मर 2:21; लूका 5:36.
पैसा कमाएँगे, याकू 4:13 व्यापार करेंगे और **पै.**
पैसे, मत्ती 10:29 एक **पै.** में दो चिड़ियाँ
मर 6:8 न तांबे के **पै.**
1तीमु 6:10 **पै.** का प्यार बुराई की जड़
इब्रा 13:5 **पै.** का प्यार न हो
1तीमु 3:3.
पोंछ, प्रका 21:4 हर आँसू **पों.** देगा
लूका 10:11.
पोंछा, यूह 12:3 पैरों को अपने बालों से **पों.**
पोथियाँ, प्रेषि 19:19.
पोषण, 1तीमु 4:6 विश्वास के वचनों से **पो.**
पौधा, मत्ती 15:13 हर **पौ.** जिसे मेरे स्वर्गीय
पौलुस, प्रेषि 26:24 **पौ.**, तेरा दिमाग खराब हो गया है
गला 1:1 **पौ.**, न इंसानों की तरफ से प्रेषित
फिले 1 **पौ.**, मसीह की खातिर कैदी
फिले 9 **पौ.** एक बुज़ुर्ग, अब कैद में
प्रेषि 13:9; 1कुरिं 1:12; तीतु 1:1; 2पत 3:15.
प्यादों, प्रेषि 16:35 **प्या.** के हाथ यह संदेश भेजाः
प्यार, मत्ती 22:37 अपने परमेश्वर यहोवा से **प्या.**
मत्ती 24:12 ज़्यादातर लोगों का **प्या.** ठंडा हो जाएगा
यूह 15:13 इससे बढ़कर **प्या.** कोई क्या करेगा
रोमि 8:39 परमेश्वर के उस **प्या.** से अलग कर
रोमि 13:10 **प्या.** करना कानून को पूरा करना है
1कुरिं 13:4 **प्या.** जलन नहीं रखता, डींगें नहीं मारता
1कुरिं 13:13 मगर इन तीनों में सबसे बड़ा है **प्या.**
1कुरिं 16:14 सारे काम **प्या.** से किए जाएँ
2कुरिं 9:7 परमेश्वर खुशी-खुशी देनेवाले से **प्या.**
कुलु 3:14 **प्या.** पूरी तरह से एकता में जोड़नेवाला
कुलु 3:19 अपनी-अपनी पत्नी से **प्या.** करते रहो
तीतु 2:4 अपने-अपने पति से **प्या.** करें
1पत 4:8 **प्या.** ढेर सारे पापों को ढक देता है
1यूह 2:15 दुनिया की चीज़ों से **प्या.** करनेवाले मत
1यूह 4:8 परमेश्वर **प्या.** है
1यूह 4:18 **प्या.** में डर नहीं होता
1यूह 5:3 परमेश्वर से **प्या.** का मतलब उसकी आज्ञाओं
यूह 13:34; 1कुरिं 13:1, 2, 3, 4, 8; कुलु 2:2;
1तीमु 1:5; प्रका 2:4.
प्यार करनेवाले, 2तीमु 3:4 के बजाय मौज-मस्ती से **प्या.**
प्यार किया, रोमि 8:37 ज़रिए जीत जिसने हमसे **प्या.**
रोमि 9:13 याकूब से मैंने **प्या.**, मगर एसाव से कम
इब्रा 1:9 तू ने सच्चाई से **प्या.** और दुराचार से नफरत
यूह 3:16; 1यूह 4:10.
प्यार से समझा, 1तीमु 5:1 उसे पिता समझकर **प्या.**
प्यारी, प्रका 20:9 पवित्र जनों के डेरे **प्या.** नगरी
प्यारे, रोमि 11:28 वे **प्या.** हैं
प्यारो, 1कुरिं 10:14; 2कुरिं 7:1; 1पत 4:12.
प्याला, मत्ती 10:42 सिर्फ एक **प्या.** पानी
लूका 22:20 **प्या.** नए करार की निशानी है
लूका 22:42 पिता, तेरी मरज़ी हो, तो यह **प्या.** हटा दे
मत्ती 20:22; 1कुरिं 10:16.
प्यास, मत्ती 5:6 न्याय की भूख और **प्या.**
प्यासा, मत्ती 25:44 हमने कब तुझे **प्या.** देखा
यूह 7:37 अगर कोई **प्या.** हो तो मेरे पास आए
प्रका 21:6 जो **प्या.** होगा उसे मैं जीवन देनेवाले पानी
प्रका 22:17 हर कोई जो **प्या.** हो आए
प्यासे, प्रका 7:16 कभी भूखे और **प्या.** न रहेंगे

प्रकट, मत्ती 11:25 नन्हे-मुन्नों पर **प्र.**
लूका 17:30 जिस दिन इंसान के बेटे को **प्र.** होना है
इफि 3:5 भविष्यवक्ताओं पर **प्र.** किया गया
1पत 4:13 उसकी महिमा के **प्र.** होने के दौरान
रोमि 1:18; 9:22; इफि 1:17; 2थिस्स 1:7; 2तीमु 1:10; 1पत 1:7, 13; प्रका 1:1.
प्रकृति, रोमि 11:24.
प्रचलन, 1कुरिं 7:2 व्यभिचार के **प्र.**
प्रचार, मत्ती 4:17 यीशु ने **प्र.** करना शुरू किया
मत्ती 10:7 जहाँ जाओ वहाँ यह कहकर **प्र.** करना
मत्ती 10:27 घर की छतों पर चढ़कर **प्र.** करो
मत्ती 24:14 राज का **प्र.** किया जाएगा
लूका 4:19 यहोवा की मंज़ूरी पाने के वक्त का **प्र.**
लूका 8:1 गाँव-गाँव **प्र.** करता
प्रेषि 10:42 उसने आज्ञा दी कि हम लोगों को **प्र.** करें
रोमि 10:14 कैसे सुनेंगे जब **प्र.** करनेवाला न हो
रोमि 10:15 कैसे **प्र.** करेंगे जब तक उन्हें भेजा न
1कुरिं 1:21 जिस संदेश का **प्र.** मूर्खता लगता है
1कुरिं 1:23 सूली पर चढ़ाए मसीह का **प्र.** करते हैं
1कुरिं 2:4 मैंने जो **प्र.** किया वह
फिलि 1:18 मसीह का **प्र.** हो रहा है
2तीमु 4:2 वचन का **प्र.** करने में जी-जान से लगा रह
मत्ती 3:2; 4:23; 9:35; लूका 11:32; प्रेषि 15:36; 28:31; रोमि 15:19; 1कुरिं 9:27; 15:14; फिलि 1:16; कुलु 1:28; 1पत 3:19.
प्रचारक, प्रेषि 21:8 **प्र.** फिलिप्पुस
इफि 4:11 कुछ को **प्र.**, कुछ को चरवाहे
1तीमु 2:7 मुझे एक **प्र.** ठहराया गया
2तीमु 1:11 मुझे एक **प्र.**, प्रेषित ठहराया गया
2तीमु 4:5 **प्र.** का काम कर
2पत 2:5 नेकी के **प्र.** नूह
प्रणाम, लूका 24:52 उन्होंने उसे **प्र.** किया
इब्रा 1:6 परमेश्वर के सारे स्वर्गदूत उसके आगे **प्र.** करें
मत्ती 2:11; यूह 9:38; प्रेषि 10:25; प्रका 3:9.
प्रतिनिधि, यूह 7:29 मैं उसका भेजा हुआ **प्र.** हूँ
प्रतियोगिता, 1कुरिं 9:25 **प्र.** में संयम से काम लेता है
प्रधान, 1पत 5:4 **प्र.** चरवाहा ज़ाहिर
प्रधान स्वर्गदूत, 1थिस्स 4:16 **प्र.** की आवाज़ से
यहू 9 **प्र.** मीकाएल की बहस हुई
प्रधानों, मत्ती 2:6 यहूदा के **प्र.**
प्रबंधक, लूका 12:42 विश्वासयोग्य **प्र.** कौन है
1कुरिं 4:1 **प्र.** जिन्हें परमेश्वर के पवित्र रहस्य सौंपे गए
तीतु 1:7 परमेश्वर का ठहराया **प्र.**, उस पर कोई
लूका 16:2; इफि 3:2; कुलु 1:25.
प्रबंधकों, प्रेषि 19:31 खेलों के **प्र.**
प्रबल, प्रेषि 19:20 यहोवा का वचन **प्र.** होता गया
प्रभुता, इफि 1:21.
प्रभु, मत्ती 7:22 **प्र.**, हे **प्र.**, क्या हमने भविष्यवाणी
यूह 20:18 मरियमः मैंने **प्र.** को देखा है!
यूह 20:28 मेरे **प्र.**, मेरे परमेश्वर
1कुरिं 7:39 शादी करने के लिए आज़ाद है, सिर्फ **प्र.** में
1कुरिं 8:5 बहुत-से ईश्वर और **प्र.** हैं
इफि 4:5 एक **प्र.**, एक विश्वास, एक बपतिस्मा
याकू 2:1 हमारे **प्र.** यीशु मसीह पर विश्वास
1पत 3:6 सारा अब्राहम को **प्र.** पुकारती थी
प्रेषि 17:24; 2तीमु 2:24.
प्रभुओं, 1तीमु 6:15 **प्र.** का प्रभु
प्रलय, 2पत 3:6 दुनिया पानी के **प्र.** से
प्रवासी, 1पत 2:11.
प्रशिक्षण, 1तीमु 4:7 भक्ति के लिए खुद को **प्र.** देता रह
इब्रा 12:11 जो इससे **प्र.** पाते हैं, उनके लिए फल पैदा
1पत 5:10 परमेश्वर तुम्हारा **प्र.** खत्म करेगा
प्रशिक्षित, इब्रा 5:14 सही-गलत में फर्क करने के लिए **प्र.**
प्रसव-पीड़ा, 1थिस्स 5:3 जैसे गर्भवती स्त्री को **प्र.**
मत्ती 24:8.
प्राचीन, 1तीमु 5:17 **प्रा.** दुगुने आदर के योग्य
1पत 5:1 **प्रा.**, उन्हें यह सीख देकर उकसाता हूँ
प्रका 4:4; 7:11; 14:3; 19:4.
प्राणी, प्रका 4:6; 5:6.
प्रायश्चित्त, रोमि 3:25 बलिदान ताकि **प्रा.** हो
1यूह 2:2 वह **प्रा.** का बलिदान है
इब्रा 2:17; 1यूह 4:10.
प्रायश्चित दिन, प्रेषि 27:9.
प्रायश्चित्त के ढक्कन, इब्रा 9:5.
प्रार्थना, मत्ती 6:9 इसलिए, तुम इस तरह **प्रा.** करनाः
मत्ती 21:13 **प्रा.** का घर कहलाएगा
मत्ती 24:20 **प्रा.** करते रहो कि तुम्हारा भागना
मत्ती 26:41 **प्रा.** करते रहो, ताकि तुम परीक्षा में न पड़ो
मर 11:24 जो **प्रा.** में माँगते हो, तुम्हें मिलेगा
रोमि 12:12 **प्रा.** में लगे रहो
फिलि 4:6 **प्रा.** और धन्यवाद के साथ अपनी
कुलु 4:2 **प्रा.** में लगे रहो, जागरूक रहो
1थिस्स 5:17 लगातार **प्रा.** करते रहो
याकू 5:16 एक-दूसरे के लिए **प्रा.** करो

1पत 4:7 **प्रा.** करने के लिए चौकस रहो
मत्ती 5:44; 6:5; प्रेषि 10:9; रोमि 8:26; 1कुरिं 14:15; इफि 6:18; 1तीमु 2:1; 1पत 3:7; प्रका 8:4.
प्रार्थनाएँ, मत्ती 12:40 लंबी-लंबी **प्रा.**
प्रेषि 10:4 तेरी **प्रा.** परमेश्वर ने याद की हैं
प्रिस्किल्ला, प्रेषि 18:2, 18, 26.
प्रेरित, इफि 4:23 मन को **प्रे.** करनेवाली शक्ति
प्रका 16:13 तीन अशुद्ध **प्रे.** वचन
1कुरिं 12:10.
प्रेषित-पद, 2कुरिं 12:12 **प्रे.** के सबूत
प्रेषि 1:25; 1कुरिं 9:2.
प्रेषित, 2कुरिं 11:13 ऐसे आदमी झूठे **प्रे.**, छल से
गला 1:1 पौलुस, न तो इंसानों की तरफ से **प्रे.**
इब्रा 3:1 **प्रे.** और महायाजक यीशु
प्रेषितों, मत्ती 10:2 बारह **प्रे.** के नाम
1कुरिं 4:9 **प्रे.** को, जो तमाशा बन चुके हैं
मर 3:14; 1कुरिं 12:28; 15:9; गला 2:8; प्रका 21:14.
प्रौढ़, कुलु 1:28 हर किसी को **प्रौ.** पेश कर
प्रौढ़ता, इब्रा 6:1 ज़ोर लगाकर **प्रौ.** तक बढ़ते जाएँ

फ

फंदा, रोमि 11:9 उनकी मेज़ उनके लिए **फं.** बन जाए
फंदे, लूका 21:35 **फं.** की तरह आ पड़े
1तीमु 6:9 अमीर परीक्षा और **फं.** में फँस जाते हैं
2तीमु 2:26.
फँसता, याकू 1:14 अपनी इच्छाओं से **फँ.** है
फँसा, 1कुरिं 3:19 बुद्धिमानों को उनकी चालाकी में **फँ.**
2पत 2:14 डाँवाडोल लोगों को **फँ.** लेते हैं
फटकर, लूका 5:36 नया पैवंद **फ.** अलग
फट जाती, मत्ती 9:17; लूका 5:37.
फरमान, लूका 2:1.
फरात, प्रका 9:14.
फरियाद, लूका 18:7.
फरीसी, मत्ती 23:26 अंधे **फ.**, पहले अंदर से साफ कर
लूका 18:11 **फ.** खड़ा होकर प्रार्थना में कहने लगा
प्रेषि 5:34 गमलीएल नाम का **फ.**, कानून का शिक्षक
फरीसियों, मत्ती 5:20 शास्त्रियों और **फ.**
यूह 12:42 **फ.** के डर से खुलकर स्वीकार नहीं करते
मत्ती 12:14; 23:15, 23, 27, 29; लूका 5:21.
फरेब/फरेबी, मत्ती 27:64 यह आखिरी **फ.**, बदतर होगा
मत्ती 27:63; 2तीमु 3:13.
फर्क, रोमि 10:12 यूनानी के बीच कोई **फ.** नहीं
इब्रा 5:14 **फ.** करने के लिए प्रशिक्षित
प्रेषि 15:9.
फर्ज़, 2थिस्स 1:3 **फ.** बनता है कि परमेश्वर का
फल, मत्ती 7:19 पेड़ जो बढ़िया **फ.** नहीं लाता
मत्ती 13:23 वाकई **फ.** लाता है
मत्ती 21:43 जो जाति **फ.** पैदा करती है, दिया जाएगा
लूका 13:9 अगर यह भविष्य में **फ.** पैदा करे
यूह 15:2 डाली जो **फ.** नहीं लाती, उसे काट देता है
गला 6:9 हिम्मत न हारें, तो **फ.** पाएँगे
रोमि 7:4 हम परमेश्वर की महिमा के लिए **फ.**
गला 5:22 पवित्र शक्ति का **फ.** है, प्यार, खुशी
कुलु 1:10 हर भले काम के **फ.** पैदा करते जाओ
इब्रा 13:15 होठों का **फ.** जो ऐलान करते हैं
फलों, मत्ती 7:20 तुम उनके **फ.** से पहचान लोगे
फिलि 1:11 नेकी के **फ.** से लद जाओ
लूका 3:8; यूह 4:36; 15:8, 16.
फलसफों, कुलु 2:8 तुम्हें **फ.** से शिकार बनाकर
फसल, प्रका 14:15 धरती की **फ.** पक चुकी है
फसह, यूह 2:13 यहूदियों का **फ.** पास था
यूह 13:1 **फ.** का त्योहार, घड़ी आ पहुँची है
1कुरिं 5:7 हमारे **फ.** का बलिदान, मसीह
मर 14:1; लूका 2:41; इब्रा 11:28.
फाँसी, मत्ती 27:5.
फाटक, मत्ती 7:14 सँकरा है वह **फा.** जो जीवन
लूका 16:20; इब्रा 13:12.
फाड़ने, गला 5:15 एक-दूसरे को **फा.**
फायदा, 2कुरिं 7:2 न किसी का **फा.** उठाया
तीतु 3:9 मूर्खता से भरे वाद-विवादों से **फा.** नहीं
याकू 2:16 तो इसका क्या **फा.**?
फायदे, प्रेषि 20:20 जो तुम्हारे **फा.** की थी
1कुरिं 13:5 अपने **फा.** की नहीं सोचता
इब्रा 12:10 हमारे **फा.** के लिए हमें अनुशासन देता है
मत्ती 16:26; 1कुरिं 7:35; 10:33; 12:7; 2कुरिं 12:17, 18.
फायदेमंद, 1कुरिं 6:12 सब बातें **फा.** नहीं
1तीमु 4:8 परमेश्वर की भक्ति **फा.** है
2तीमु 3:16 सिखाने के लिए **फा.**
फिक्र, 1कुरिं 12:25 एक-दूसरे के लिए **फि.** हो
फिज़ूल, 1तीमु 1:6 **फि.** की बातों में लग गए
फितरत, याकू 4:5 ईर्ष्या करने की **फि.**

फिरदौस, लूका 23:43 तू मेरे साथ **फि.** में होगा
2कुरिं 12:4 उसे **फि.** ले जाया गया
प्रका 2:7.
फिरौती, मत्ती 20:28 **फि.** के लिए अपनी जान दे
1तीमु 2:6 सबकी खातिर **फि.** के लिए खुद को दे
फिरौती का बराबर दाम, 1तीमु 2:6.
फिरौती के ज़रिए छुड़ाए, इफि 4:30.
फिरौती के ज़रिए रिहाई, रोमि 3:24.
फिरौन, रोमि 9:17 **फि.**: मैंने तुझे इस वजह से छोड़ा
प्रेषि 7:10.
फिलदिलफिया, प्रका 1:11; 3:7.
फिलिप्पुस 1., मत्ती 10:3; यूह 1:43; 6:5; 12:21.
फिलिप्पुस 2., प्रेषि 6:5; 8:5, 26; 21:8.
फिलेतुस, 2तीमु 2:17 हुमिनयुस और **फि.**
फुफकार, 2पत 3:10 **फु.** के साथ मिट जाएगा
फुर्ती, रोमि 3:15 कदम खून बहाने के लिए **फु.** करते
याकू 1:19 सुनने में **फु.**
फुसलाता, 1कुरिं 7:5 ताकि शैतान **फु.** न रहे
फुसलानेवाला, मत्ती 4:3 **फु.** आया और कहा
फुसलावे, गला 6:1 कहीं तुम भी **फु.** में न आ जाओ
फूँका, यूह 20:22 उसने उन पर **फूँ.** और कहा
फूँकी, 1कुरिं 15:52 तुरही **फूँ.** जाएगी और मरे हुए
फूट, मर 3:24 किसी राज्य में **फू.** पड़ जाए
लूका 12:51 शांति नहीं **फू.** डालने आया हूँ
रोमि 16:17 जो **फू.** डालते हैं, उन पर नज़र रखो
1कुरिं 1:10 तुम्हारे बीच **फू.** न हो
यूह 9:16; 1कुरिं 11:18; गला 5:20.
फूट-फूटकर, मत्ती 26:75 बाहर जाकर **फू.** रोने लगा
फेंक दो, 1कुरिं 5:7 पुराने खमीरे आटे को **फें.**
फेलिक्स, प्रेषि 23:24; 24:2, 25, 27.
फेस्तुस, प्रेषि 24:27; 26:24.
फैलता, प्रेषि 6:7 परमेश्वर का वचन **फै.** गया
फैलाता, 2कुरिं 2:14 सुगंध हर जगह **फै.** है!
फैसला, लूका 23:24 पीलातुस ने **फै.** सुनाया कि उनकी
प्रेषि 16:4; तीतु 3:12.
फैसले, रोमि 11:33 उसके **फै.** हमारी सोच से परे
रोमि 14:1 निजी विचारों के बारे में **फै.** नहीं
1कुरिं 7:37 कुँवारा रहने के **फै.**
प्रका 19:2 उसके **फै.** भरोसेमंद और सही
प्रेषि 15:19; याकू 2:4; प्रका 16:7.
फोड़े, लूका 16:21; प्रका 16:2, 11.
फौजी सेवा, लूका 3:14.
फौजों, लूका 21:20 **फौ.** से घिरा हुआ
इब्रा 11:34.

ब

बंद, मत्ती 23:13 फरीसियो, राज **बं.** कर देते हो
मत्ती 25:10 दरवाज़ा **बं.** कर दिया गया
लूका 13:25 घर का मालिक दरवाज़े को **बं.** कर चुका
1कुरिं 5:9 मेल-जोल रखना **बं.** करो
प्रका 3:8 जिसे कोई **बं.** नहीं कर सकता
प्रका 21:25 फाटक दिन के वक्त **बं.** नहीं
लूका 11:7; यूह 20:19, 26; प्रेषि 5:23; प्रका 11:6; 20:3.
बंदिश, 1कुरिं 7:35 न कि तुम पर **बं.** लगाने के लिए
1कुरिं 7:15.
बंदी, लूका 21:24 **बं.** बनाकर सारे राष्ट्रों में
इफि 4:8.
बंधन, मत्ती 19:6 जिसे परमेश्वर ने एक **बं.** में बाँधा
मर 7:35 उसकी जीभ के **बं.**
इफि 4:3 शांति के एक करनेवाले **बं.** में
बंधनों, प्रेषि 2:24 मौत के **बं.** से आज़ाद किया
बँधा, मत्ती 16:19 स्वर्ग में **बँ.** हुआ
बँधी, 1कुरिं 7:39 पत्नी पति से **बँ.** होती
रोमि 7:2.
बकरियों, मत्ती 25:32 भेड़ों को **ब.** से
बकरों, इब्रा 9:12 **ब.** और बैलों का लहू लेकर नहीं
इब्रा 10:4.
बकवास, लूका 24:11 बातें उन्हें **ब.** लगीं
बख्शा, रोमि 11:21.
बगावत, लूका 23:19 **ब.** के लिए जेल में
प्रेषि 17:7 आदेशों के खिलाफ **ब.**
प्रेषि 21:21 शिक्षाओं के खिलाफ **ब.** जो मूसा के ज़रिए
प्रेषि 21:38 मिस्री नहीं जिसने **ब.** भड़कायी
प्रेषि 24:5 फसाद की जड़ और **ब.** भड़काता
2थिस्स 2:3 पहले परमेश्वर के खिलाफ **ब.** न हो
बच, 1थिस्स 5:3 वे किसी भी हाल में **ब.** नहीं पाएँगे
2पत 2:20 अशुद्धता से **ब.** निकलने के बाद
रोमि 2:3; इब्रा 2:3; 11:34.
बचने, लूका 21:36 **ब.** में तुम कामयाब हो सको
बचा, लूका 21:19 अपनी जान **ब.** पाओगे
बचाएगा, लूका 17:33 अपनी जान खोता है वह इसे **ब.**
1थिस्स 1:10 आनेवाले क्रोध से **ब.**
बचाए रखो, 1यूह 5:21 बच्चो, खुद को मूरतों से **ब.**
बचाता, मत्ती 10:39 जो अपनी जान **ब.** है वह खोएगा
2कुरिं 1:10 वह हमें आगे भी **ब.** रहेगा
बचाना, मत्ती 16:25 अपनी जान **ब.** चाहता है

बचाया, प्रेषि 12:11.
बचा लिया, प्रेषि 23:27 मैंने अचानक पहुँचकर इसे **ब.**
बचाव, प्रेषि 25:16 अपने **ब.** में बोलने का मौका
बचे, रोमि 11:5 **ब.** हुए जिन्हें चुना गया है
1थिस्स 4:17 जो **ब.** रहेंगे, उठा लिए जाएँगे
प्रका 12:17 **ब.** हुओं से युद्ध
बच्चा, 1कुरिं 13:11 जब मैं **ब.** था, तो बच्चों की
बच्चे, मत्ती 18:3 वैसे बनो जैसे छोटे **ब.**
लूका 9:47 छोटे **ब.** को खड़ा किया
1कुरिं 7:14 तुम्हारे **ब.** असल में अशुद्ध होते
1कुरिं 14:20 बुराई में **ब.** रहो, मगर सयाने
प्रका 12:5 उस स्त्री के **ब.** को ले जाया गया
मत्ती 21:16; रोमि 8:16; 1कुरिं 3:1; 2कुरिं 12:14.
बच्चों, मत्ती 19:14 **ब.** को आने दो, मत रोको
इफि 6:1 **ब.**, माता-पिता का कहना माननेवाले बनो
इफि 6:4 पिताओ, अपने **ब.** को चिढ़ मत दिलाओ
1तीमु 2:15 **ब.** को जन्म देने से सुरक्षित
1यूह 5:21 **ब.**, खुद को मूरतों से बचाए रखो
बटुआ/बटुए, लूका 10:4; 12:33; 22:35, 36.
बटोर, यूह 4:36 ज़िंदगी के लिए फल **ब.** रहा
बटोरकर, मत्ती 13:41 स्वर्गदूत **ब.** निकालेंगे
प्रेषि 28:3.
बटोरता, मत्ती 12:30 मेरे साथ नहीं **ब.**
बड़बड़ा, प्रेषि 4:25 खोखली बातें **ब.** रहे हैं?
प्रेषि 23:22 किसी के सामने **ब.** मत देना
बड़ाई, प्रेषि 10:46 भाषाएँ बोलते और परमेश्वर की **ब.**
रोमि 1:21 उन्होंने उसकी वैसी **ब.** न की जैसी
1कुरिं 6:20 शरीरों से परमेश्वर की **ब.** करो
फिलि 1:20 मेरे शरीर के ज़रिए **ब.** होगी
प्रेषि 3:8; रोमि 2:29.
बड़ा, 1पत 2:13 राजा के अधीन क्योंकि वह **ब.** है
यूह 14:28 पिता मुझसे **ब.** है
बड़े, इब्रा 7:7 छोटा, **ब.** से आशीष पाता है
बड़ी, लूका 16:15 जो इंसानों के बीच **ब.** बात समझी
प्रेषि 5:41 महासभा के सामने से **ब.** मनाते हुए
रोमि 12:16 **ब.-ब.** बातों पर मन न लगाओ, बल्कि
लूका 2:13.
बड़ी-बड़ी बातें, 2पत 2:18 **ब.** करते हैं
बड़ी बेरहमी, प्रेषि 8:3 शाऊल, **ब.** से ज़ुल्म करने
बड़ी भीड़, मर 12:37 **ब.** सुन रही थी
प्रका 7:9 **ब.** जिसे कोई आदमी गिन नहीं सकता
प्रका 19:6 ऐसी आवाज़ मानो **ब.**, जो बहुत-सी
बड़ी मुसीबत, लूका 21:25 राष्ट्र **ब.** में
बड़ी सड़कों, मत्ती 12:19; प्रेषि 5:15.
बड़े आनंद, लूका 10:21 **ब.** से भर गया और बोलाः
बड़े जाल, मत्ती 13:47 **ब.** की तरह है
बड़े ध्यान से, गला 4:10 **ब.** खास दिन मनाते हो
बड़े-बड़े काम, प्रेषि 19:11 पौलुस **ब.**
बड़ों, इब्रा 5:14 ठोस आहार **ब.** के लिए है
बढ़, 1कुरिं 8:8 हम खाएँ तो हमारा कुछ **ब.** नहीं जाता
बढ़ई, मर 6:3 **ब.** जो मरियम का बेटा है
बढ़कर, रोमि 3:1 तो फिर किस मायने में **ब.** हैं
1कुरिं 12:24 और भी **ब.** आदर मिले
2कुरिं 3:10 इससे **ब.** महिमा
बढ़-चढ़कर, 1तीमु 1:14 **ब.**, विश्वास
बढ़ जाने, मत्ती 24:12 दुराचार के **ब.**
बढ़ता, कुलु 2:19 शरीर **ब.** जाता है
2थिस्स 3:1 यहोवा का वचन **ब.** जाए
बढ़ता जाए, फिलि 1:9; 1थिस्स 3:12.
बढ़ती, प्रेषि 6:7 चेलों की गिनती **ब.** चली गयी
कुलु 1:6 दुनिया में फल ला रही और **ब.** जा रही
रोमि 15:13.
बढ़ते, यूह 3:30 मसीह को **ब.** जाना है, मगर मुझे
कुलु 1:10 परमेश्वर के सही ज्ञान में **ब.** जाओ
बढ़ाएगा, 2कुरिं 9:10.
बढ़ाता, 1कुरिं 3:7 परमेश्वर जो इसे **ब.** है
बढ़ावा, प्रेषि 14:22 बने रहने का **ब.** देते
रोमि 7:8 **ब.** पाकर पाप ने
बढ़ावा दे रहा, गला 2:17.
बढ़ा सके, लूका 12:25 अपनी ज़िंदगी **ब.**
मत्ती 6:27.
बढ़िया, 1थिस्स 5:21 जो **ब.** है उसे थामे रहो
इब्रा 10:24; याकू 3:13.
बढ़े, मर 4:8 **ब.** और उनमें फल आना शुरू हुआ
बढ़ोतरी, 1कुरिं 8:1 प्यार से **ब.** होती है
बताए देता, गला 1:11 भाइयो, मैं तुम्हें **ब.** हूँ कि
बताते, लूका 16:15 सामने खुद को नेक **ब.** हो
बताया, प्रेषि 15:14 पतरस ने **ब.** है कि परमेश्वर ने कैसे
गला 2:6 उन भाइयों ने कुछ नया नहीं **ब.**
बदचलनी, 1पत 4:3 जब तुम **ब.** में लगे हुए थे
गला 5:19; इफि 5:18; तीतु 1:6; 1पत 4:4.
बदचलनी करनेवालियो, याकू 4:4 **ब.** दुनिया के साथ
बदचलनी की कीचड़, 1पत 4:4 उनके साथ **ब.** में
बदतमीज़, रोमि 1:30.
बदतमीज़ी, 1कुरिं 13:5 **ब.** से पेश नहीं आता

बदनाम, मत्ती 5:11 जब लोग तुम्हें **ब.** करें
1कुरिं 4:13 **ब.** किए जाने पर गुज़ारिश
1पत 4:14 मसीह की खातिर **ब.**
लूका 6:22.
बदनाम करनेवाली, 1तीमु 3:11 स्त्रियाँ, **ब.** न हों
तीतु 2:3 **ब.**, दाख-मदिरा की आदी न हों
बदनामी, तीतु 2:5 **ब.** न की जा सके
बदल, 1कुरिं 7:31 दुनिया का दृश्य **ब.** रहा है
फिलि 3:21 हमारे तुच्छ शरीरों को **ब.** देगा
बदलते, 2कुरिं 3:18 छवि में **ब.** जाते और महिमा
बदलना, प्रेषि 6:14; इब्रा 7:12.
बदला, मत्ती 16:27 हर एक को **ब.**
रोमि 12:17 किसी को भी बुराई का **ब.** बुराई से न दो
रोमि 12:19 अपना **ब.** मत लेना
इब्रा 10:30 **ब.** देना मेरा काम है, मैं **ब.** चुकाऊँगा
2थिस्स 1:8 यीशु उन लोगों से **ब.** लेगा
2तीमु 4:14 यहोवा उसकी करतूतों का **ब.** देगा
प्रका 19:2 दासों के खून का **ब.**
बदले, 2कुरिं 5:20 **ब.** में राजदूत
2कुरिं 6:13 **ब.** में अपने दिलों को बड़ा करो
2थिस्स 1:6 परमेश्वर **ब.** में क्लेश दे
प्रका 6:10; रोमि 12:19.
बदलाव, याकू 1:17 कोई **ब.** नहीं होता
बदसलूकी, 2कुरिं 4:10 जानलेवा **ब.**
इब्रा 11:37 **ब.** सहते रहे
बदौलत, इफि 3:15 **ब.** हर परिवार का नाम वजूद में
बनाए रखो, यहू 21.
बनाता, याकू 4:4 खुद को दुश्मन **ब.** है
बनाने, यूह 2:20 मंदिर **ब.** में छियालिस साल लगे
बनानेवाले, इब्रा 3:3 ज़्यादा उसके **ब.** को आदर
बनाया, मत्ती 7:24 घर चट्टान पर **ब.**
इब्रा 3:4 जिसने सबकुछ **ब.**
याकू 3:9 इंसानों को परमेश्वर की छवि में **ब.** गया
बना रहता, यूह 3:36 परमेश्वर का क्रोध उस पर **ब.** है
बने रहते, यूह 8:31 अगर तुम मेरी शिक्षा में **ब.** हो
बपतिस्मा, लूका 12:50 एक **ब.** मुझे लेना है
रोमि 6:3 उसकी मौत में **ब.** पाया है?
रोमि 6:4 उसकी मौत में **ब.** पाने से हम
इफि 4:5 एक प्रभु, एक विश्वास, एक **ब.**
मत्ती 3:7; मर 10:38; लूका 3:3; प्रेषि 19:4;
कुलु 2:12; 1पत 3:21.
बपतिस्मा देगा, मत्ती 3:11 पवित्र शक्ति से **ब.**
मर 1:8; लूका 3:16; यूह 1:26, 33.
बपतिस्मा देना, मत्ती 28:19; 1कुरिं 1:17.
बपतिस्मा देनेवाला, मत्ती 3:1; 11:11; 14:2;
लूका 7:33.
बपतिस्मा लिया, 1कुरिं 12:13 एक ही शरीर में **ब.**
मत्ती 3:13; प्रेषि 2:41; 10:47;
1कुरिं 10:2; 15:29.
बयाना, 2कुरिं 1:22 **ब.** यानी पवित्र शक्ति जो
बयाने, 2कुरिं 5:5 जो आनेवाला है उसके **ब.**
इफि 1:14 विरासत से पहले **ब.**
बरअब्बा, यूह 18:40 **ब.** डाकू था
बरतुलमै, मत्ती 10:3; प्रेषि 1:13.
बरदाश्त, रोमि 2:4 क्या तू उसकी **ब.** का तिरस्कार
रोमि 9:22 परमेश्वर ने क्रोध के बर्तनों को **ब.** किया
1कुरिं 10:13 जो तुम्हारी **ब.** के बाहर हो
बरनबास, प्रेषि 15:2; 1कुरिं 9:6; गला 2:1.
बरबाद, रोमि 14:20 काम को **ब.** मत करो
बर-सबा, प्रेषि 1:23; 15:22.
बराबर, लूका 14:12 बात **ब.** हो जाए
यूह 5:18 खुद को परमेश्वर के **ब.** ठहरा
मत्ती 20:12; प्रका 21:16.
बराबरी, 2कुरिं 8:14 जिससे **ब.** हो जाए
फिलि 2:6 परमेश्वर की **ब.** करने की बात कभी न
बरामदे, यूह 10:23; प्रेषि 3:11; 5:12.
बरी, रोमि 6:7 पाप से **ब.** हो चुका है
बर्तन, रोमि 9:21 एक **ब.** आदर के काम के लिए, दूसरा
बर्तनों, रोमि 9:22 क्रोध के **ब.** को नाश होने के लायक
2कुरिं 4:7 हमारे पास यह खज़ाना मिट्टी के **ब.** में है
प्रका 2:27 मिट्टी के **ब.** की तरह चकनाचूर
बर्ताव, गला 1:13 पहले यहूदी धर्म में मेरा **ब.**
बर्फ, प्रका 1:14.
बलि, 1कुरिं 10:20 राष्ट्र जो **ब.** चढ़ाते हैं
बलिदान, मत्ती 9:13 **ब.** नहीं, दया चाहता हूँ
रोमि 12:1 अपने शरीर को जीवित **ब.** के तौर पर
इब्रा 10:1 साल-दर-साल एक ही **ब.**
इब्रा 10:12 पापों के लिए एक ही **ब.** सदा के लिए चढ़ा
इब्रा 10:14 एक **ब.** चढ़ाकर परिपूर्ण कर दिया है
इब्रा 10:26 जानबूझकर पाप करते हैं, कोई **ब.** नहीं
इब्रा 13:15 परमेश्वर को गुणगान का **ब.** चढ़ाएँ
1पत 2:5 परमेश्वर को ऐसे **ब.** जो मंज़ूर हों
इफि 5:2.
बस में आ जाते, 2पत 2:20.
बसा हुआ, रोमि 7:20 बल्कि पाप मेरे अंदर **ब.** है

बहका, रोमि 16:18 सीधे-सादे लोगों को **ब.** देते
2कुरिं 11:3 जैसे साँप ने हव्वा को **ब.** लिया
2थिस्स 2:3.
बहकाए, 1कुरिं 3:18 कोई खुद को न **ब.**
बहकाया, रोमि 7:11 पाप ने मुझे **ब.**, मार डाला
बहनें, 1तीमु 5:2 कम उम्र की स्त्रियों को **ब.** समझकर
बहरे, मत्ती 11:5; मर 7:37.
बहस, मर 8:16 एक-दूसरे से **ब.** करने
प्रेषि 17:18 **ब.** करने लगे
1कुरिं 1:20 कहाँ रहा **ब.** करनेवाला
1कुरिं 11:16 अगर कोई आदमी **ब.** करे
यहू 9 मूसा की लाश के मामले में **ब.**
बहसबाज़ी, 1तीमु 2:8; 6:4.
बहाना, यहू 4 बदचलनी करने का **ब.**
रोमि 1:20 इसलिए उनके पास **ब.** बाकी नहीं
यूह 15:22.
बहाने, लूका 14:18.
बहाल, मत्ती 17:11 एलिय्याह सबकुछ **ब.** करेगा
प्रेषि 1:6 क्या तू राज को **ब.** करने जा रहा है
प्रेषि 3:21 सब बातों को **ब.** करने का वक्त
बहुत, मत्ती 22:14 न्यौता पानेवाले **ब.**, चुने गए थोड़े
लूका 12:15 चाहे **ब.** कुछ हो, तो भी उसकी ज़िंदगी
1कुरिं 15:58 प्रभु की सेवा में **ब.** काम
2कुरिं 1:5 मसीह की खातिर हम **ब.** दुःख झेलते हैं
प्रका 12:12 उसका **ब.** कम वक्त बाकी रह गया है
बहुतायत, यूह 10:10 जीवन पाएँ और **ब.** में पाएँ
2कुरिं 4:15 महा-कृपा **ब.** में हुई
2कुरिं 9:8 जो कुछ ज़रूरी है वह **ब.** हो
2कुरिं 9:10 जो **ब.** में देता है
लूका 21:4; 2कुरिं 8:14.
बाँग, मत्ती 26:34; मर 14:30.
बाँझ, लूका 23:29 सुखी हैं वे स्त्रियाँ जो **बाँ.** हैं
गला 4:27.
बाँट, 1कुरिं 9:23 खुशखबरी मैं **बाँ.** सकूँ
प्रेषि 4:35; 6:1; 1कुरिं 1:13; 12:11.
बाँटा, रोमि 12:3 परमेश्वर ने जो विश्वास **बाँ.**
रोमि 12:6 विश्वास जो हमें **बाँ.** गया है
रोमि 12:8 दरियादिली से **बाँ.**
बाँध, मत्ती 13:30 पौधे उखाड़ लो और **बाँ.** दो
प्रका 20:2 हज़ार साल के लिए उसे **बाँ.** दिया
बाँसुरी, 1कुरिं 14:7 **बाँ.** या सुर-मंडल पर
मत्ती 11:17; लूका 7:32.
बाकियों से छोटा, मत्ती 11:11 राज में **बा.**
लूका 9:48 अपने आपको **बा.** समझकर चलता है
बागबान, यूह 15:1 पिता **बा.** है
मत्ती 21:33.
बागियों, मर 15:7 **बा.** के साथ कैद में
बागी, 1तीमु 1:9.
बाज़, 1पत 4:1 पाप करने से **बा.** आता है
बाज़ार, यूह 2:16 घर को बाज़ार
प्रेषि 17:17 **बा.** में जो कोई मिलता
1कुरिं 10:25 गोश्त **बा.** में बिकता
मत्ती 11:16; प्रेषि 16:19.
बाड़े, इफि 2:14 दीवार को ढा दिया जो **बा.** की तरह थी
बात, प्रेषि 18:24 अपुल्लोस, **बा.** करने में माहिर
1तीमु 4:9 यह **बा.** पूरी तरह मानने लायक
बातचीत, तीतु 2:8 **बा.** उसमें कोई दोष न निकाल सके
बातें, यूह 6:63 जो **बा.** मैंने कहीं, वे पवित्र शक्ति से
यूह 12:47 अगर कोई मेरी **बा.** सुनता है मगर
बातों, मत्ती 12:37 तुझे अपनी **बा.** की वजह से
मत्ती 23:23 अहमियत रखनेवाली **बा.** को
रोमि 16:18 वे चिकनी-चुपड़ी **बा.** से बहका देते हैं
1तीमु 1:6.
बातों के सुधार, इब्रा 9:10 **बा.** का वक्त
बादल, लूका 21:27 **बा.** में शक्ति के साथ आता
प्रेषि 1:9 **बा.** ने उसे उनकी नज़रों से छिपा लिया
इब्रा 12:1 गवाहों का ऐसा घना **बा.**
बादलों, 1थिस्स 4:17 **बा.** में उठा लिए जाएँगे ताकि प्रभु
प्रका 1:7 **बा.** के साथ आ रहा, हर आँख उसे देखेगी
मत्ती 24:30; 1कुरिं 10:2.
बापदादों, प्रेषि 22:3 **बा.** का कानून सिखाया गया
1पत 1:18 अपने **बा.** से
2तीमु 1:3.
बारह, मत्ती 10:2 **बा.** प्रेषितों के नाम
याकू 1:1 **बा.** गोत्रों को, जो तित्तर-बित्तर हैं
बाराक, इब्रा 11:32.
बारिश, मत्ती 5:45 नेक पर **बा.** बरसाता है
याकू 5:7 किसान शुरू की **बा.** और बाद की **बा.**
याकू 5:17; प्रका 11:6.
बारी, 1कुरिं 15:23 हर कोई अपनी **बा.** सेः मसीह
बाल, लूका 21:18 तुम्हारे सिर का एक **बा.** तक
रोमि 11:4 **बा.** देवता के आगे घुटने नहीं टेके
1कुरिं 11:14 पुरुष के **बा.** लंबे हों, तो अपमान
1पत 3:3; प्रका 9:8.
बाल गूंथना, 1पत 3:3.
बालज़बूल, मत्ती 10:25; 12:24; मर 3:22.
बालाक, प्रका 2:14.

बाहर, मत्ती 25:30 **बा.** अंधेरे में
यूह 12:31 दुनिया का राजा **बा.** कर दिया जाएगा
2कुरिं 4:16 **बा.** का इंसान मिटता जा रहा
1तीमु 3:7 **बा.** के लोग अच्छा कहते हों
इब्रा 13:11.
बाहरी रूप, 2कुरिं 10:7 **बा.** देखकर
बिगड़े, तीतु 1:5 **बि.** हालात को सुधार
बिगाड़, 1कुरिं 15:33 बुरी सोहबत अच्छी आदतें **बि.**
बिगाड़ना, प्रेषि 13:10 सीधी राहों को **बि.** नहीं छोड़ेगा
बिचवई, 1तीमु 2:5 परमेश्वर और इंसानों के बीच एक **बि.**
इब्रा 12:24 नए करार के **बि.** यीशु
गला 3:19, 20; इब्रा 8:6; 9:15.
बिच्छुओं, लूका 11:12; प्रका 9:10.
बिछड़ना, 1थिस्स 2:17.
बिजली, मत्ती 24:27 **बि.** निकलकर
लूका 10:18 शैतान **बि.** की तरह आकाश से गिर चुका
बिजलियाँ, प्रका 11:19 **बि.** कौंधीं, आवाज़ें और ओले
प्रका 4:5; 8:5.
बिठाया, इफि 2:6 स्वर्गीय स्थानों में **बि.**
बिता चुके, 1पत 4:3 जो वक्त **बि.** काफी है
बिन खतने, 1कुरिं 7:18.
बिन-खमीर, मत्ती 26:17 **बि.** की रोटियों के दिन
1कुरिं 5:8 सीधाई की **बि.** की रोटियों के साथ
बिनती, मर 7:32 **बि.** की कि अपना हाथ रखे
यूह 17:9 मैं उनके लिए **बि.** करता हूँ
यूह 17:20 मैं सिर्फ इन्हीं के लिए **बि.** नहीं करता
रोमि 8:27 पवित्र शक्ति, के मुताबिक **बि.** करती है
रोमि 8:34 मसीह यीशु हमारी खातिर **बि.** करता है
रोमि 11:2 इसराएल के खिलाफ **बि.** की
इब्रा 7:25 उनकी खातिर परमेश्वर से **बि.** करने के लिए
इब्रा 12:19 लोगों ने **बि.** की कि और वचन
प्रेषि 21:39; रोमि 1:10; 2कुरिं 5:20; 10:2;
गला 4:12.
बिनतियाँ, फिलि 4:6 **बि.** परमेश्वर को बताते रहो
इब्रा 5:7 उससे **बि.** कीं जो बचा सकता था
बिना, रोमि 7:9 एक वक्त मैं कानून **बि.** ज़िंदा था, मगर
1पत 1:17 पिता **बि.** पक्षपात किए न्याय करता है
बिन्यामीन, प्रका 7:8.
बिरादरी, 1पत 2:17 भाइयों की सारी **बि.** से प्यार
1पत 5:9 दुनिया में भाइयों की पूरी **बि.**
बिलाम, यहू 11 **बि.** की गलत राह
प्रका 2:14.
बीज, मत्ती 13:38 बढ़िया **बी.** बेटे हैं
लूका 8:11 **बी.** परमेश्वर का वचन है
1पत 1:23; 1यूह 3:9.
बीत, इब्रा 11:11.
बीमार, यूह 5:5 एक आदमी अड़तीस साल से **बी.** था
1कुरिं 11:30 बहुत-से कमज़ोर और **बी.** हैं
याकू 5:14 क्या कोई तुम्हारे बीच **बी.** है?
याकू 5:15 प्रार्थना **बी.** को अच्छा कर देगी
मत्ती 25:39; यूह 11:2.
बीमारी, गला 4:13 मेरे शरीर की **बी.** की वजह से
1तीमु 5:23 **बी.** की वजह से थोड़ी दाख-मदिरा
बीमारियाँ, मत्ती 8:17 हमारी **बी.** खुद ले लीं
बुखार, मत्ती 8:15; यूह 4:52; प्रेषि 28:8.
बुज़ुर्ग, प्रेषि 4:5 धर्म-अधिकारी, **बु.** जमा हुए
मत्ती 15:2; 16:21; 21:23; तीतु 2:3; फिले 9.
बुझती, मर 9:48 आग कभी नहीं **बु.**
बुझा, इफि 6:16 दुष्ट के जलते तीरों को **बु.**
बुझाएगा, मत्ती 12:20 बाती को न **बु.**
बुद्धि, मत्ती 11:19 **बु.** सही साबित होती है
1कुरिं 2:5 विश्वास इंसानों की **बु.** पर नहीं, परमेश्वर की
1कुरिं 3:19 इस दुनिया की **बु.** मूर्खता है
याकू 1:5 अगर किसी को **बु.** की कमी हो तो वह
याकू 3:17 जो **बु.** स्वर्ग से है, वह शांति कायम
रोमि 11:33.
बुद्धिमान, 2तीमु 3:15 पवित्र शास्त्र के लेख तुझे **बु.** बना
बुद्धिमानों, मत्ती 11:25 ये बातें **बु.** से छिपा रखीं
रोमि 1:22; इफि 5:15.
बुनियाद, इब्रा 11:10 शहर, जो सच्ची **बु.** पर खड़ा है
बुनियादी, इब्रा 5:12 पवित्र वचनों की **बु.** बातें
इब्रा 6:1 मसीह के बारे में **बु.** शिक्षाओं
बुराइयों, 1तीमु 6:10 तरह-तरह की **बु.** की जड़
बुराई, प्रेषि 8:22 अपनी यह **बु.** छोड़ और पश्चाताप कर
रोमि 7:13 ताकि पाप की **बु.** और भी उभरकर
रोमि 12:17 किसी को भी **बु.** का बदला **बु.** से न दो
1कुरिं 14:20 **बु.** के मामले में बच्चे रहो
याकू 5:10 जिस तरह **बु.** सही उसे नमूना
1पत 3:9 **बु.** का बदला **बु.** से न दो
प्रका 22:11 जो बुरे काम करता है वह **बु.** में लगा रहे
बुरा, रोमि 7:19 जो **बु.** काम नहीं करना चाहता, वही
तीतु 2:8 हमारे बारे में कुछ भी **बु.** कहने का मौका न
इब्रा 13:3 जिनके साथ **बु.** सलूक किया जाता है उन्हें
मत्ती 20:13; यूह 3:20; प्रेषि 25:10; रोमि 9:11;
2कुरिं 5:10.
बुरा-भला कहते हैं, 1पत 4:4 तुम्हारे बारे में **बु.**

बुरी, रोमि 16:19 **बु.** बातों के मामले में मासूम
1कुरिं 10:6 **बु.** बातों की चाह
1कुरिं 15:33 **बु.** सोहबत अच्छी आदतें बिगाड़ देती है
कुलु 3:5 **बु.** इच्छाएँ और लालच
याकू 1:13 न **बु.** बातों से परमेश्वर को परीक्षा में
बुरी-बुरी बातें, इब्रा 12:3 ऐसी **बु.** सहीं
2पत 2:10; प्रेषि 18:6.
बुरी भावना, फिलि 1:18 चाहे **बु.** से हो या
बुरे, रोमि 13:10 प्यार **बु.** के लिए काम नहीं करता
इफि 5:16 क्योंकि दिन **बु.** हैं
बुरे काम, 1पत 2:12 तुम्हें **बु.** करनेवाले कहकर
1पत 4:15 कोई **बु.** करनेवाला होने की वजह से दुःख
रोमि 4:7; इब्रा 10:17.
बुर्ज, लूका 13:4.
बुलंद, रोमि 3:31 हम कानून को **बु.** करते हैं
बुलाया, रोमि 8:30 ये वे हैं जिन्हें उसने **बु.**
1कुरिं 1:9 मसीह के साथ साझेदार होने के लिए **बु.**
1कुरिं 1:26 ऐसे बहुतों को नहीं **बु.** जो बुद्धिमान हैं
गला 5:13 आज़ाद होने के लिए **बु.**
इफि 4:4 आशा एक है जिसके लिए **बु.** गए
2तीमु 1:9 हमें पवित्र बुलावे के साथ **बु.**
1पत 2:9 अंधकार से शानदार रौशनी में **बु.** है
प्रका 17:14 जो **बु.** और चुने हुए और विश्वासयोग्य
1थिस्स 4:7; 1पत 2:21.
बुलावा, फिलि 3:14 ऊपर का जो **बु.** रखा है, उस इनाम
बुलावे, रोमि 11:29 और **बु.** के मामले में
इफि 4:1 तुम्हारा चालचलन उस **बु.** के योग्य हो
2तीमु 1:9 हमें बचाया और पवित्र **बु.** के साथ बुलाया
इब्रा 3:1 स्वर्ग के **बु.** में हिस्सेदार हो
2पत 1:10 अपने **बु.** को पक्का करने के लिए
1कुरिं 1:26; 2थिस्स 1:11.
बुहारे, लूका 15:8 अपने घर को **बु.** और ढूँढ़ती रहे
बेअसर, इब्रा 7:18 क्योंकि यह **बे.** है
बेइज़्ज़त, प्रेषि 5:41 के नाम से **बे.** होने
1थिस्स 2:2 हमने **बे.** होने के बाद
प्रेषि 14:5.
बेइज़्ज़ती, लूका 23:11 सैनिकों ने उसकी **बे.** की
2कुरिं 6:8.
बेईमानी, 1पत 5:2 **बे.** से कुछ हासिल करने के लालच
बेईमानी की कमाई, तीतु 1:11 **बे.** के लिए
1तीमु 3:8; तीतु 1:7.
बेकार, मत्ती 15:9 ये **बे.** मेरी उपासना करते रहते हैं
मत्ती 20:3 कुछ और को **बे.** खड़े
रोमि 3:12 सभी इंसान **बे.** हो गए
1कुरिं 1:28 जो हैं उन्हें **बे.** साबित कर सके
1कुरिं 15:58 प्रभु में कड़ी मेहनत **बे.** नहीं है
गला 2:2 ऐसा न हो कि मैंने जो दौड़-धूप की वह **बे.** हो
फिलि 2:16 मैं **बे.** नहीं दौड़ा या **बे.** मेहनत नहीं की
1कुरिं 3:20; तीतु 3:9.
बेखबर, 2पत 2:12 ये लोग **बे.** हैं और बुरी-बुरी बातें
बेघर, 1कुरिं 4:11 मार खाते फिरते और **बे.**
बेचकर, मत्ती 19:21 जा अपना सबकुछ **बे.** दे दे
लूका 12:33.
बेजान, याकू 2:20 कामों के बिना विश्वास **बे.** है?
1कुरिं 14:7.
बेजान हालत, रोमि 4:19 शरीर की **बे.**
बेजोड़, इफि 1:19 उसकी ताकत कितनी **बे.**
बेझिझक, प्रेषि 2:29 **बे.** तुमसे कह सकता हूँ
बेझिझक बोलने, इब्रा 3:6 **बे.** की हिम्मत को थामे
फिलि 1:20; 1तीमु 3:13.
बेटा, मत्ती 3:17 यह मेरा प्यारा **बे.** है, मैंने इसे
यूह 3:16 परमेश्वर ने अपना इकलौता **बे.** दे दिया
बेटे, मत्ती 1:21 एक **बे.** को जन्म देगी, यीशु
यूह 17:1 अपने **बे.** की महिमा कर, ताकि तेरा **बे.**
रोमि 8:14 परमेश्वर के **बे.** हैं
2कुरिं 6:18 तुम मेरे **बे.**-बेटियाँ होगे
1थिस्स 5:5 तुम रौशनी के **बे.** और दिन के **बे.** हो
इब्रा 12:7 परमेश्वर तुम्हें **बे.** मानकर तुम्हारे साथ
यूह 17:12; इब्रा 11:24.
बेटी/बेटियों, लूका 23:28 यरूशलेम की **बे.**
मत्ती 21:5; प्रेषि 2:17; 2कुरिं 6:18.
बेतलेहेम, मत्ती 2:1 यीशु का जन्म **बे.** में
मत्ती 2:5; लूका 2:4.
बेताब, रोमि 1:15 खुशखबरी सुनाने के लिए **बे.**
बेदखल, यूह 9:22 सभा-घर से **बे.** कर दिया
यूह 16:2 लोग तुम्हें सभा-घर से **बे.** कर देंगे
बेदाग, इफि 5:27 मंडली पवित्र और **बे.** हो
फिलि 2:15 टेढ़ी पीढ़ी के बीच **बे.**
इब्रा 7:26 ऐसा महायाजक जो **बे.** हो
याकू 1:27 दुनिया से **बे.**
इफि 1:4; 1तीमु 6:14; 1पत 1:19; 2पत 3:14;
प्रका 14:5.
बेधड़क, मर 8:32 वह **बे.** होकर
प्रेषि 4:13 देखा कि पतरस और यूहन्ना कैसे **बे.**
बेधा, यूह 19:37 जिसे उन्होंने **बे.**
प्रका 1:7 उसे देखेगी और जिन्होंने उसे **बे.**

बेलगाम ऐयाशी, मत्ती 23:25 लूट के माल और **बे.**
बेलचा, मत्ती 3:12; लूका 3:17.
बेशकीमती, मत्ती 13:46 एक **बे.** मोती मिला
1पत 1:19 **बे.** लहू से
1पत 2:4 परमेश्‍वर के लिए **बे.**
1पत 2:6.
बेशुमार, इफि 3:8 मसीह के बारे में **बे.** दौलत
बेहतर, फिलि 2:3 दूसरों को खुद से **बे.** समझो
बेहतर पुनरुत्थान, इब्रा 11:35.
बेहतरीन, 1कुरिं 12:31 मैं तुम्हें सबसे **बे.** राह दिखाता हूँ
बेहद, 1थिस्स 3:10.
बेहाल, लूका 2:48 पिता **बे.**
बेहिसाब, रोमि 5:15 महाकृपा से **बे.**
बैंजनी, प्रेषि 16:14.
बैठकर, मत्ती 19:28 तुम बारह राजगद्दियों पर **बै.**
बैठने, प्रका 3:21 मैं अपनी राजगद्दी पर **बै.** की इजाज़त
बैठा, 1कुरिं 8:10 देखे कि तू खाने के लिए **बै.** हुआ है
प्रका 7:10 परमेश्‍वर का जो राजगद्दी पर **बै.** है
प्रका 5:13; 17:15.
बैतनिय्याह, मत्ती 21:17; 26:6; यूह 1:28; 11:1.
बैतफगे, मत्ती 21:1 **बै.** पहुँचे, तब यीशु ने दो चेलों को
बैतसैदा, मत्ती 11:21; लूका 9:10; यूह 1:44.
बैबिलोन, प्रका 17:5 महानगरी **बै.**, वेश्‍याओं की माँ
प्रका 18:2.
बैल, 1कुरिं 9:9 **बै.** का मुँह न बाँधना
बैलों, इब्रा 9:12 बकरों और **बै.** का लहू
इब्रा 10:4.
बोअज़, मत्ती 1:5.
बोअनरगिस, मर 3:17 **बो.** नाम दिया
बोएगा, गला 6:7 इंसान जो **बो.**, वही
बोए जाने, याकू 1:21 वचन के **बो.**
बोझ, मत्ती 11:30 और **बो.** हल्का
मत्ती 23:4 वे भारी **बो.** लोगों पर लाद देते हैं
गला 6:5 हर कोई **बो.** खुद उठाएगा
इब्रा 12:1 आओ हम हरेक **बो.** को उतार फेंकें
1यूह 5:3 **बो.** नहीं हैं
बोने, लूका 8:5 एक बीज बोनेवाला बीज **बो.** निकला
बोता, 2कुरिं 9:6 जो कंजूसी से **बो.** है वह थोड़ा काटेगा
बोनेवाला, यूह 4:36 **बो.** खुशी
मत्ती 13:37.
बोया, मत्ती 13:20 चट्टानी जगहों पर **बो.** गया था
1कुरिं 15:44 हाड़-माँस का शरीर **बो.** जाता है
बोल, लूका 19:40 पत्थर **बो.** उठेंगे
यूह 8:43 मैं जो **बो.** रहा हूँ तुम नहीं जानते?
कुलु 4:6 तुम्हारे **बो.** सलोने हों
बोलते, 2कुरिं 3:12 हम बेझिझक **बो.** हैं
बोलियाँ, 1कुरिं 14:10 किस्म की **बो.**
बोली, मत्ती 26:73 तेरी **बो.** तेरा राज़ खोल रही है
1कुरिं 14:9 ऐसी **बो.** बोलो जो आसानी से समझ में
ब्याज़, मत्ती 25:27 साथ-साथ **ब्या.** भी पाता
ब्याही, मत्ती 24:38 स्त्रियाँ **ब्या.** जा रही थीं

भ

भक्त, प्रेषि 10:2 **भ.** और परमेश्‍वर का भय मानता था
प्रेषि 10:7 एक **भ.** सैनिक को बुलाया
लूका 2:25; प्रेषि 2:5; 8:2; 22:12.
भक्ति, प्रेषि 17:23 अनजाने में **भ.** कर रहे हो
2तीमु 3:5 **भ.** का दिखावा मगर
2पत 2:9 जो **भ.** करते हैं उन्हें परीक्षा से निकाले
भक्तिहीन, रोमि 5:6 मसीह, **भ.** इंसानों के लिए मरा
1तीमु 1:9 कानून ऐसों के लिए जो **भ.** और पापी हैं
2पत 2:6; 3:7; यहू 15.
भक्तिहीनता, रोमि 1:18 सारी **भ.** पर क्रोध
2तीमु 2:16 वे **भ.** में बढ़ते जाएँगे
भजन, प्रेषि 16:25 **भ.** गाकर परमेश्‍वर का गुणगान
लूका 20:42; इफि 5:19; याकू 5:13.
भटक, मत्ती 18:12 भेड़ें, और एक **भ.** जाए
1तीमु 6:21 कुछ लोग विश्‍वास से **भ.** गए हैं
1पत 2:25 उन भेड़ों की तरह जो **भ.** गयी थीं
भटककर, 1तीमु 1:6 इनसे **भ.**
भटकता फिरता, मर 5:3 कब्रों के बीच **भ.** था
भट्ठी, मत्ती 13:42.
भड़क, 1कुरिं 13:5 **भ.** नहीं उठता
भड़काता, लूका 23:2 हमारी जाति को **भ.** है
भड़का दिया, प्रेषि 17:8.
भय, प्रेषि 10:35 हर इंसान जो उसका **भ.** मानता है
भयानक, इब्रा 10:27 **भ.** इंतज़ार
इब्रा 10:31 परमेश्‍वर के हाथों में पड़ना **भ.** बात
भर दी, 2तीमु 4:17 प्रभु ने मुझमें शक्‍ति **भ.**
भर दो, मत्ती 23:32.
भरपूर, इफि 5:18 पवित्र शक्‍ति से **भ.** होते जाओ
भर-भरकर, 2कुरिं 9:6 जो **भ.** बोता है
भरमाने, इब्रा 3:13 पाप की **भ.** की ताकत से कठोर
भरसक, 2तीमु 2:15 अपना **भ.** कर ताकि
2पत 3:14 अपना **भ.** करो कि निष्कलंक पाए जाओ
इब्रा 4:11; 2पत 1:10.

भरो, याकू 5:9 एक-दूसरे के खिलाफ आहें मत **भ.**
भरोसा, 2कुरिं 1:8 ज़िंदा बच पाने का **भ.** नहीं
2कुरिं 1:9 **भ.** खुद पर न हो बल्कि परमेश्वर पर
2कुरिं 1:18 परमेश्वर पर **भ.** किया जा सकता है
फिलि 3:3 शरीर पर **भ.** नहीं करते
2थिस्स 3:4 हमें प्रभु में तुम्हारे बारे में **भ.** है
इब्रा 6:11 आशा के पूरा होने का पक्का **भ.**
2कुरिं 9:4.
भरोसे, लूका 16:10 जो थोड़े में **भ.** के लायक है, वह
इफि 3:12 **भ.** के साथ पहुँच
इब्रा 3:14 जब हम **भ.** को मज़बूती से थामे रहते
इब्रा 11:1 विश्वास, पूरे **भ.** के साथ
2कुरिं 1:15.
भला, प्रेषि 15:29 तुम्हारा **भ.** होगा
रोमि 8:28 सहयोग कराता है जिससे **भ.** हो
भलाई, रोमि 12:21 **भ.** से बुराई को जीतते रहो
गला 5:22 पवित्र शक्ति का फल है, **भ.**
गला 6:10 सबके साथ **भ.** करें
2तीमु 3:3 खूँखार, **भ.** से प्यार न रखनेवाले
1पत 3:17 **भ.** करने की वजह से दुःख उठाओ
फिलि 2:4 दूसरे के **भ.** की भी फिक्र करे
फिलि 2:21 अपने **भ.** की फिक्र में, न कि मसीह की
प्रेषि 10:38; 1थिस्स 2:15; 2थिस्स 1:11.
भले और खुले मन के, प्रेषि 17:11 से ज़्यादा **भ.**
भवन, प्रेषि 7:48 परम-प्रधान **भ.** में नहीं रहता
1पत 2:5 एक **भ.** के रूप में निर्माण
भविष्य के ज्ञान, प्रेषि 2:23 मरज़ी और **भ.**
1पत 1:20 **भ.** के ज़रिए उसे पहले
भविष्य बतानेवाला, प्रेषि 16:16.
भविष्यवक्ता, मत्ती 5:12 उन्होंने **भ.** पर ज़ुल्म ढाए
मत्ती 7:15 झूठे **भ.** भेड़ों के वेश में
मत्ती 13:57 **भ.** का कहीं और अनादर नहीं होता
मर 13:22 और झूठे **भ.** उठ खड़े होंगे
प्रेषि 3:21 परमेश्वर ने अपने पवित्र **भ.** के मुँह से
प्रेषि 3:22 परमेश्वर मेरे जैसा **भ.** खड़ा करेगा
याकू 5:10 **भ.** ने जिस तरह, उसे नमूना मानकर
प्रका 11:18 **भ.** को उनका इनाम
प्रका 16:13 झूठे **भ.** के मुँह से
मत्ती 11:9; यूह 7:40; प्रका 18:24; 19:20.
भविष्यवक्तिन, लूका 2:36, 37 हन्ना नाम की **भ.**
प्रका 2:20.
भविष्यवाणी, मत्ती 13:14 यशायाह की **भ.** पूरी
प्रेषि 2:17 और बेटियाँ **भ.** करेंगी
1कुरिं 13:9 और हम अधूरी **भ.** करते हैं
1कुरिं 14:3 जो **भ.** करता है वह मज़बूत करता है
1कुरिं 14:39 **भ.** के वरदान की खोज करते रहो
2पत 1:20 शास्त्र की कोई **भ.**
2पत 1:21 **भ.** इंसान की मरज़ी से कभी नहीं हुई
भविष्यवाणियों, 1कुरिं 14:1 बेहतर होगा कि **भ.** का
प्रका 19:10 **भ.** का मकसद यीशु की गवाही देना
रोमि 12:6; 1कुरिं 13:2; 1तीमु 1:18; 4:14; प्रका 1:3; 10:11; 11:3.
भस्म, प्रका 20:9 स्वर्ग से और **भ.** कर दिया
इब्रा 10:27; 12:29.
भाइयों जैसा प्यार, रोमि 12:10; इब्रा 13:1.
भाई, मत्ती 23:8 जबकि तुम सब **भा.** हो
मर 13:12 **भा.**, **भा.** को मरवाने के लिए सौंप देगा
कुलु 4:10 मरकुस जो बरनबास का **भा.** लगता है
भाइयों, 1पत 5:9 तुम्हारे **भा.** की पूरी बिरादरी
प्रका 12:10 **भा.** पर दोष लगानेवाला नीचे
मत्ती 5:22; 12:49, 50; 18:15; 25:40; प्रेषि 15:36; इब्रा 2:11.
भाग, मत्ती 23:33 तुम सज़ा से बचकर **भा.** सकोगे?
इब्रा 9:6 पहले **भा.** में दाखिल
याकू 4:7 शैतान का सामना करो और वह **भा.** जाएगा
1कुरिं 10:14.
भागना, मत्ती 24:16 जो यहूदिया में हों, **भा.** शुरू कर दें
मत्ती 24:20 **भा.** सर्दियों के मौसम में न हो
भागीदार, इब्रा 10:33 तुम ये सब सहनेवालों के साथ **भा.**
भाता, इफि 5:10 प्रभु को क्या **भा.** है
इब्रा 13:21 वह काम करे जो परमेश्वर को **भा.** है
भानेवाले, रोमि 12:1.
भार, गला 6:2 **भा.** उठाते रहो
भारी, 2कुरिं 1:8 हम पर **भा.** मुसीबत आ पड़ी
भारी तादाद, लूका 5:6 **भा.** में मछलियाँ फँसीं
लूका 5:6.
भावना, इफि 6:7 अच्छी **भा.** के साथ काम करनेवाले
भाषण, प्रेषि 15:32 कई **भा.** देकर
भाषा, प्रेषि 2:6 अपनी ही **भा.** सुनायी दे रही थी
भाषाएँ, 1कुरिं 13:1 अगर मैं स्वर्गदूतों की **भा.** बोलूँ
1कुरिं 13:8 दूसरी **भा.** बोलने का वरदान
1कुरिं 14:5 दूसरी **भा.** बोलनेवाले से बढ़कर
1कुरिं 14:22 दूसरी **भा.** अविश्वासियों के लिए
1कुरिं 12:10; 14:6, 13, 19; प्रका 7:9.
भिखारी, लूका 16:20 लाज़र नाम का **भि.**

भीड़, मत्ती 21:9 **भी.**, पुकारकर कहते रहे: बचा ले
लूका 11:29 **भी.** बढ़ने लगी
प्रका 7:9 देखा! सब राष्ट्रों से निकली बड़ी **भी.**
मत्ती 13:34; मर 3:9; यूह 6:5;
प्रेषि 17:5; 19:40; 24:12.

भूकंप, मत्ती 24:7 कई जगहों पर **भू.**
मत्ती 27:54; लूका 21:11; प्रका 6:12.

भूख, मत्ती 5:3 मार्गदर्शन पाने की **भू.** है
मत्ती 5:6 सुखी हैं वे जो **भू.** से
रोमि 8:35 कौन हमें अलग कर सकता है? **भू.** या

भूखे, 2कुरिं 11:27 कई बार **भू.** पेट रहने में
प्रका 7:16 वे कभी **भू.** और प्यासे न रहेंगे
2कुरिं 11:27; 1पत 2:2.

भूखा, यूह 6:35 कभी **भू.** नहीं होगा

भूत-विद्या, प्रका 22:15 कुत्ते, **भू.** के काम करनेवाले
गला 5:20.

भूलकर, फिलि 3:13 जो पीछे रह गयी, उन्हें **भू.**

भूल, इब्रा 6:10 परमेश्‍वर अन्यायी नहीं कि **भू.** जाए
2पत 1:9 **भू.** गया कि उसे शुद्ध किया गया है
इब्रा 13:16.

भूसी, मत्ती 3:12.

भेंट, इब्रा 11:4 परमेश्‍वर ने उसकी **भें.** के बारे में

भेज, मत्ती 10:16 मैं तुम्हें भेड़ों की तरह **भे.** रहा हूँ
मत्ती 11:10 अपना दूत तेरे आगे **भे.** रहा हूँ

भेजता, यूह 20:21 मैं भी तुम्हें **भे.** हूँ

भेजा, रोमि 10:15 कैसे प्रचार करेंगे जब तक **भे.** न
गल 4:4 वक्‍त पूरा हुआ तो परमेश्‍वर ने अपना बेटा **भे.**
मत्ती 10:5; 21:34; लूका 10:1; प्रेषि 8:14;
1कुरिं 1:17; 1यूह 4:9.

भेजे, मत्ती 13:41; यूह 14:26; प्रेषि 3:20.

भेड़, प्रेषि 8:32 **भे.** की तरह बलि होने के लिए

भेड़ें, मत्ती 18:12 सौ **भे.** और एक भटक जाए
यूह 10:16 दूसरी **भे.** जो इस भेड़शाला की नहीं

भेड़ों, मत्ती 9:36 उन **भे.** की तरह जिन्हें बिन चरवाहे के
मत्ती 10:6 इसराएल के घराने की खोयी हुई **भे.**
मत्ती 10:16 तुम्हें **भे.** की तरह भेड़ियों के बीच
मत्ती 25:32 चरवाहा **भे.** को बकरियों से अलग
यूह 21:16 मेरी छोटी **भे.** की देखभाल कर
मत्ती 26:31; रोमि 8:36; 1पत 2:25.

भेड़शाला, यूह 10:16 दूसरी भेड़ें, इस **भे.** की नहीं

भेड़िए, यूह 10:12 **भे.** को आता देखता है
प्रेषि 20:29 अत्याचारी **भे.** घुस आएँगे

भेदभाव, प्रेषि 10:34 परमेश्‍वर **भे.** नहीं करता
रोमि 2:11 परमेश्‍वर **भे.** नहीं करता
याकू 2:1 **भे.** कर रहे हो?
याकू 2:4 तुम्हारे बीच ऊँच-नीच का **भे.**
याकू 2:9 **भे.** जारी रखते हो, तो पाप कर रहे हो
याकू 3:17 **भे.** नहीं करती
रोमि 3:22, याकू 3:17.

भोंका, यूह 19:34 भाला उसकी पसलियों के बीच **भों.**

भोग-विलास, 1तीमु 5:6 **भो.** में

भ्रम में डालनेवाली, मत्ती 13:22 **भ्र.** पैसे की ताकत

भ्रष्ट, रोमि 1:28 **भ्र.** दिमागी हालत पर
गला 1:7 खुशखबरी को **भ्र.**
2तीमु 3:8 दिमाग पूरी तरह से **भ्र.**
2कुरिं 11:3; 1तीमु 6:5; प्रका 19:2.

भ्रष्टता, रोमि 8:21 **भ्र.** की गुलामी
2पत 2:19 वे **भ्र.** के गुलाम हैं
तीतु 2:7 शिक्षाएँ जिनमें **भ्र.** न हो

म

मंज़ूर, मत्ती 3:17 मेरा बेटा, मैंने इसे **मं.** किया है
लूका 12:32 तुम्हें राज देना **मं.** किया
1पत 2:5 बलिदान जो परमेश्‍वर को **मं.** हों
1तीमु 2:3.

मंज़ूरी, लूका 11:48 तुम उनके कामों को **मं.** देते हो
रोमि 5:4 से **मं.** की दशा
2कुरिं 6:2 **मं.** पाने के वक्‍त में
2तीमु 2:15 परमेश्‍वर के सेवक की तरह जो उसकी **मं.**
लूका 4:19; 2कुरिं 10:18.

मँझधार, 2कुरिं 4:9 मगर **मँ.** में नहीं छोड़े जाते

मंडलियों, 1कुरिं 14:34 **मं.** में स्त्रियाँ चुप रहें

मंडली, प्रेषि 20:28 परमेश्‍वर की **मं.** की
इफि 5:24 जैसे **मं.** मसीह के अधीन है
कुलु 1:18 वही शरीर का यानी **मं.** का सिर है

मंडलियाँ, प्रेषि 16:5 **मं.**, बढ़ती गयी
1कुरिं 14:19; गला 1:13; इफि 1:22.

मंद, मर 6:52; 8:17 मन समझने में **मं.**
2कुरिं 3:14; इब्रा 5:11 सोचने-समझने की शक्‍ति **मं.**

मंदिर, मत्ती 27:51 **मं.** का परदा फटकर
यूह 2:15 उन सभी को **मं.** से बाहर
यूह 2:19 इस **मं.** को गिरा दो, मैं तीन दिन के अंदर
1कुरिं 3:16 तुम लोग परमेश्‍वर का **मं.** हो
2कुरिं 6:16 परमेश्‍वर के **मं.** का मूर्तियों के साथ क्या
इफि 2:21 यहोवा के लिए पवित्र **मं.** बने
2थिस्स 2:4 वह परमेश्‍वर के **मं.** में बैठ जाता है
प्रका 3:12 अपने परमेश्‍वर के **मं.** में एक खंभा बनाऊँगा

प्रका 7:15 दिन-रात उसके **मं.** में पवित्र सेवा
प्रका 11:19 स्वर्ग में परमेश्‍वर के **मं.** का भवन
प्रका 16:17.
मंदिरों, प्रेषि 17:24 परमेश्‍वर हाथ के बनाए **मं.** में नहीं
मकसद, रोमि 8:28 उसके **म.** के मुताबिक बुलाए गए
इफि 3:11 युग-युग से चले आ रहे **म.** के मुताबिक
1तीमु 1:5 इस आदेश का **म.**
प्रका 19:10 **म.** यीशु की गवाही देना है
रोमि 9:11; इफि 1:11; 2तीमु 1:9.
मकिदुनिया, प्रेषि 16:9 इस पार **म.** आकर
प्रेषि 20:1; 1कुरिं 16:5; 2कुरिं 8:1;
1थिस्स 1:7; 4:10.
मक्कारी, प्रेषि 13:10 हर तरह की **म.**
मगरूर, 2तीमु 3:2.
मग्न, रोमि 15:10.
मच्छर, मत्ती 23:24 **म.** छानकर निकाल देते
मछली, मत्ती 12:40 बड़ी **म.** के पेट में
मत्ती 14:19 पाँच रोटियाँ और दो **म.** लीं
मज़दूर, मत्ती 9:37 बहुत है, मगर **म.** थोड़े
मत्ती 20:1 अपने बाग में **म.** लगाए
लूका 15:19 अपने यहाँ **म.** की तरह
याकू 5:4 **म.** की मज़दूरी चिल्ला रही है
मज़दूरी, लूका 10:7 अपनी **म.** पाने का हकदार है
रोमि 6:23 पाप जो **म.** देता है वह मौत है
मज़बूत/मज़बूती, रोमि 15:2 जिनसे **म.** मिलती है
1कुरिं 14:3 लोगों को **म.** करता है
1कुरिं 14:4 मंडली को **म.** करता है
कुलु 1:23 नींव पर कायम और **म.** रहो
कुलु 2:5 तुम्हारा विश्‍वास **म.** है
कुलु 2:7 विश्‍वास में **म.**
कुलु 2:7 उसमें जड़ पकड़कर **म.** बने रहो
1थिस्स 3:13 तुम्हारे दिलों को **म.** करे
इब्रा 3:6 आशा को आखिर तक **म.** से
इब्रा 6:19 यह आशा, पक्की और **म.** है
रोमि 14:19; 15:1; 1कुरिं 14:12; 2कुरिं 12:19.
मज़बूत खड़े रहो, 1कुरिं 16:13 विश्‍वास में **म.**
गला 5:1 **म.** और गुलामी में न
फिलि 1:27 एक ही सोच रखते हुए **म.**
फिलि 4:1 प्यारे भाइयो, प्रभु में इसी तरह **म.**
2थिस्स 2:15 **म.** और थामे रहो
मजबूर, गला 2:14 गैर-यहूदियों को कैसे **म.**
प्रेषि 28:19; रोमि 8:12; गला 2:3.
मजबूरी, 1पत 5:2 **म.** में नहीं
मज़ाक, लूका 14:29 देखनेवाले उसका **म.** उड़ाने लगेंगे
इफि 5:4 अश्‍लील **म.** शोभा नहीं देते
इब्रा 10:33 **म.** उड़ाने के लिए तमाशा बनाया
मत्ती 27:29; लूका 22:63.
मज़ाक उड़ाने लगे, मत्ती 27:29.
मज़ाक उड़ाया जाएगा, लूका 18:32.
मतलब, प्रेषि 2:12 इसका क्या **म.** है?
मत्ती, मत्ती 9:9; 10:3; लूका 6:15; प्रेषि 1:13.
मथूशेलह, लूका 3:37.
मदद, यूह 16:13 समझ पाने में तुम्हारी **म.** करेगा
रोमि 8:26 पवित्र शक्‍ति खुद **म.** करती है
फिलि 4:3 इन स्त्रियों की **म.** करता रह
इब्रा 2:16 स्वर्गदूतों की नहीं अब्राहम के वंश की **म.**
इब्रा 2:18 उनकी **म.** करने के काबिल है जिनकी
प्रेषि 16:9; इब्रा 4:16.
मददगार, यूह 14:16 वह तुम्हें एक और **म.** देगा
यूह 14:26 **म.**, यानी पवित्र शक्‍ति सिखाएगा
यूह 15:26 **म.**, मेरे बारे में गवाही देगा
यूह 16:7 अगर मैं न जाऊँ, तो **म.**
इब्रा 13:6.
मदहोश, प्रका 17:6 खून पीकर **म.** थी
मन, प्रेषि 17:11 **म.** की बड़ी उत्सुकता से वचन स्वीकार
रोमि 8:5 शरीर की बातों पर **म.** लगाते
रोमि 11:34 कौन यहोवा के **म.** को जान सका है
रोमि 12:2 अपने **म.** को नयी दिशा देने की वजह से
1कुरिं 2:16 यहोवा का **म.** जान सका है
2कुरिं 4:4 **म.** इस दुनिया की व्यवस्था के ईश्‍वर ने अंधे
इफि 1:18 **म.** की आँखें खोलकर तुम्हें समझ की
फिलि 3:19 अपना **म.** धरती की बातों पर
फिलि 4:2 प्रभु में एक ही **म.** रखें
कुलु 3:2 अपना **म.** स्वर्ग की बातों पर ही लगाए रखो
इब्रा 8:10 मैं अपने कानून उनके **म.** में डालूँगा
1पत 1:13 **म.** की सारी शक्‍ति बटोर लो
प्रेषि 20:19; रोमि 14:5.
मन का रुझान, 1पत 4:1 जैसा उसका **म.**
मन का स्वभाव, रोमि 15:5 **म.** जैसा मसीह का
फिलि 2:5 तुम वैसा **म.** पैदा करो
फिलि 3:15 हमारे **म.** ऐसा ही हो
मनभावने, कुलु 3:16 **म.** गीत
मनमानी, 1थिस्स 5:14; 2थिस्स 3:7, 11.
मनमानी करनेवाला, तीतु 1:7; 2पत 2:10.
मनमाने, कुलु 2:23 **म.** ढंग से पूजा-प्रार्थना
मन लगाने, रोमि 8:6 शरीर पर **म.** का मतलब मौत है

मनसूबे, रोमि 13:14 **म.** न बाँधो
मना करेंगे, 1तीमु 4:3 कुछ चीज़ें खाने से **म.**
मनाते, गला 4:10 बड़े ध्यान से खास दिन **म.** हो
मनाया, इब्रा 11:28 फसह का त्योहार **म.**
मन्ना, यूह 6:49 बापदादों ने **म.** खाया
इब्रा 9:4 जिसमें **म.** और हारून की छड़ी थी
प्रका 2:17 मैं छिपे **म.** में से कुछ दूँगा
मर गए, इब्रा 11:13 ये सभी विश्वास रखते हुए **म.**
लूका 16:22; रोमि 7:9; 14:9; 2कुरिं 5:15.
मरज़ी, मत्ती 6:10 तेरी **म.** पूरी हो
लूका 22:42 मेरी **म.** नहीं बल्कि वही हो जो तेरी **म.** है
यूह 5:30 अपनी नहीं बल्कि उसकी **म.**
प्रेषि 13:36 दाविद ने परमेश्वर की **म.** पूरी की
प्रेषि 20:27 परमेश्वर की सारी **म.**
रोमि 8:20 अपनी **म.** से नहीं बल्कि इसे
रोमि 9:19 कौन उसकी ज़ाहिर की गयी **म.** के
1कुरिं 4:19 अगर यहोवा की **म.** हुई, तो आऊँगा
इफि 5:17 यहोवा की **म.** क्या है
फिलि 2:13 अपनी **म.** के मुताबिक काम कर रहा है
कुलु 1:9 उसकी **म.** के बारे में सही-सही ज्ञान
इब्रा 10:10 जिस **म.** के बारे में उसने कहा, उसी से
याकू 1:18 उसकी **म.** थी, हमें पैदा किया
याकू 4:15 अगर यहोवा की **म.** हो, तो हम कल का
2पत 1:21 भविष्यवाणी इंसान की **म.** से कभी नहीं
1यूह 2:17 जो परमेश्वर की **म.** पूरी करता है वह
प्रका 4:11 तेरी **म.** से वजूद में आयीं
मत्ती 7:21; यूह 6:39; इब्रा 6:17.
मरज़ी से, 1कुरिं 9:17 अगर अपनी **म.** करता हूँ, तो
मरनहार, 1कुरिं 15:53 जो **म.** है इसे अमरता पहनना है
2कुरिं 4:11.
मरना, लूका 20:36; इब्रा 9:27.
मरनेवाला, रोमि 6:9 मसीह दोबारा **म.** नहीं
मरा/मरे, यूह 5:25 **म.** हुए बेटे की आवाज़ सुनेंगे
रोमि 5:8 पापी ही थे, मसीह हमारे लिए **म.**
रोमि 6:11 पाप के लिए **म.** हुआ
इफि 2:1 तुम **म.** हुओं जैसे थे
1थिस्स 4:16 मसीह में **म.** हुए पहले जी उठेंगे
मत्ती 22:32; प्रका 14:13; 20:13.
मरियम 1., मत्ती 1:16 **म.** ने यीशु को जन्म दिया
मत्ती 13:55; मर 6:3; लूका 1:27; 2:19, 34.
मरियम 2., मत्ती 27:56 उनमें **म.** मगदलीनी
मर 16:1; लूका 8:2; 24:10; यूह 20:1.
मरियम 3., मत्ती 27:56 याकूब की माँ **म.**
मर 15:47; 16:1; लूका 24:10; यूह 19:25.
मरियम 4., लूका 10:42 **म.** ने अच्छा भाग चुना
लूका 10:39; यूह 11:1; 12:3.
मरियम 5., प्रेषि 12:12 **म.** यूहन्ना की माँ
मरियम 6., रोमि 16:6 **म.** ने बहुत मेहनत की
मरेगा, यूह 11:26 मुझ पर विश्वास दिखाता है कभी न **म.**
मरोड़ने, मर 9:26 बहुत **म.** के बाद
मर्तबान, इब्रा 9:4 सोने का **म.** जिसमें मन्ना था
मर्यादा, 1तीमु 2:9 स्त्रियाँ, **म.** के साथ सिंगार करें
मलमल, प्रका 19:8 **म.** नेक कामों की निशानी
प्रका 19:14.
मशहूर, 2कुरिं 6:9 अनजानों जैसे फिर भी **म.**
मश्कें, मत्ती 9:17; मर 2:22; लूका 5:37.
मसाले, लूका 23:56; 24:1.
मसीह, मत्ती 16:16 तू **म.** है
रोमि 8:17 **म.** के संगी वारिस
1कुरिं 12:12 एक ही शरीर, वैसे ही **म.**
1कुरिं 15:23 बारी से: पहले फलों के तौर पर **म.**
फिलि 2:11 स्वीकार करे कि यीशु **म.** प्रभु है
कुलु 1:24 **म.** की दुःख-तकलीफें अपने शरीर में
1पत 4:13 **म.** की दुःख-तकलीफों में साझेदार
प्रका 20:4 **म.** के साथ हज़ार साल तक राज किया
यूह 17:3; 1कुरिं 1:13; 3:23; 7:22; 2कुरिं 12:10; गला 3:29; इफि 5:23; कुलु 1:27; 1पत 2:21.
मसीह का शरीर, इफि 4:12 **म.** तरक्की करता
मसीह के विरोधी, 1यूह 2:18 अभी-भी बहुत-से **म.**
1यूह 2:22; 4:3; 2यूह 7.
मसीहा, यूह 1:41 हमें **म.** मिल गया है
यूह 4:25 मैं जानती हूँ कि **म.** आनेवाला है
मसीही, प्रेषि 11:26 पहली बार **म.** कहलाए
प्रेषि 26:28 मुझे **म.** बनने के लिए कायल कर देगा
1पत 4:16 **म.** होने की वजह से दुःख उठाता है
महँगे-महँगे, 1तीमु 2:9 सिंगार, **म.** कपड़ों से नहीं
महसूस, रोमि 12:16 उसी तरह **म.** करो
महा-कृपा, रोमि 5:21 **म.** भी राज करे
रोमि 11:6 **म.** की वजह से, कामों के आधार पर नहीं
2कुरिं 12:9 मेरी **म.** तेरे लिए काफी है
इफि 2:8 तुम्हारा उद्धार **म.** से किया गया
इब्रा 2:9 परमेश्वर की **म.** से मौत का स्वाद चख सके
इब्रा 4:16 आओ हम **म.** की राजगद्दी के सामने जाएँ
याकू 4:6 नम्र लोगों को **म.** देता है

यूह 1:17; रोमि 5:15; 2कुरिं 6:1; इब्रा 10:29; 12:28.
महान किया, फिलि 2:9 उसे ऊँचा पद देकर **म.**
महान गुणों, 1पत 2:9 सारी दुनिया में **म.** का ऐलान
महाप्रतापी, प्रेषि 24:2 **म.** फेलिक्स
महा-प्रेषितों, 2कुरिं 11:5 तुम्हारे **म.**
महामहिम, प्रेषि 25:21 फैसला **म.** के हाथों
इब्रा 1:3 **म.** की दायीं तरफ
इब्रा 8:1 स्वर्ग में **म.** की राजगद्दी
महामारियाँ, लूका 21:11 एक-के-बाद-एक **म.**
महायाजक, इब्रा 3:1 प्रेषित और **म.** यीशु
इब्रा 6:20 यीशु, जो **म.** बन गया है
प्रका 14:3.
महाराजा और मालिक, लूका 2:29 **म.** तू विदा करता है
प्रेषि 4:24 **म.**, तू ने आकाश और पृथ्वी को बनाया
प्रका 6:10 **म.**, जो पवित्र और सच्चा है, कब तक
महा-शक्ति, इफि 6:10 उसकी **म.** में ताकत
महासभा, मत्ती 26:59; लूका 22:66; प्रेषि 5:21.
महिमा, मत्ती 5:16 भले काम देखकर पिता की **म.** करें
मत्ती 25:31 इंसान का बेटा अपनी **म.** के साथ आएगा
लूका 2:14 स्वर्ग में परमेश्वर की **म.** हो
यूह 15:8 पिता की **म.** इस बात से होती है
यूह 17:1 अपने बेटे की **म.** कर
यूह 17:5 पिता, मुझे अपने साथ वह **म.** दे
प्रेषि 5:31 परमेश्वर ने उसकी **म.** की
रोमि 8:17 साथ दुःख झेलें, साथ **म.** पाएँ
रोमि 9:23 अपनी अपार **म.** बर्तनों पर
2कुरिं 3:8 पवित्र शक्ति का दिया जाना **म.** के साथ
इब्रा 5:5 मसीह ने अपनी **म.** नहीं की
प्रका 21:23 परमेश्वर की **म.** से जगमगाती है
लूका 2:13; यूह 7:39; 12:28; 17:4; प्रेषि 19:17; रोमि 1:23; 15:6; 1पत 5:4; 2:12.
महिमा से भरे, प्रेषि 2:20 यहोवा के **म.** दिन
महीने, गला 4:10 खास दिन, **म.** मनाते हो
प्रका 22:2 हर **म.** फल लगते थे
माँ, लूका 8:21 मेरी **माँ** और मेरे भाई
गला 4:26 ऊपर की यरूशलेम हमारी **माँ** है
लूका 12:53; 14:26.
माँगते, मत्ती 7:7 **माँ.** रहो और तुम्हें दे दिया जाएगा
याकू 1:6 विश्वास के साथ **माँ.** रहे, शक न करे
याकू 4:3 **माँ.** हो, फिर भी नहीं पाते
माँग/माँगें, रोमि 8:4 कानून की धर्मी **माँ.**
इफि 3:20 जितना हम **माँ.** सकते हैं, उससे
1यूह 5:14 उसकी मरज़ी के मुताबिक जो भी **माँ.**
1कुरिं 1:22.
माँ-बाप, मत्ती 10:21 बच्चे **माँ.** के खिलाफ
लूका 18:29 की खातिर **माँ.** या बच्चों को छोड़ा हो
2कुरिं 12:14 बच्चों का फर्ज़ नहीं कि **माँ.** के लिए धन
माँस, 1कुरिं 15:50 **माँ.** और लहू राज के वारिस नहीं
माँस-पेशियों, कुलु 2:19 जोड़ों और **माँ.** के ज़रिए
मागोग, प्रका 20:8 गोग और **मा.** उन्हें इकट्ठा करे
मातम, मत्ती 5:4 सुखी हैं वे जो **मा.** मनाते हैं
1थिस्स 4:13 दूसरों की तरह **मा.** न मनाओ
प्रका 18:11 उस पर **मा.** करेंगे
प्रका 21:4 न **मा.**, न रोना-बिलखना, न दर्द
लूका 6:25; याकू 4:9.
माता-पिता, लूका 21:16 तुम्हारे **मा.** तुम्हें पकड़वाएँगे
इफि 6:1 अपने **मा.** का कहना माननेवाले बनो
2तीमु 3:2 लोग **मा.** की न माननेवाले
लूका 2:27; रोमि 1:30; कुलु 3:20.
मात्रा, लूका 12:42 सही वक्त पर सही **मा.** में खाना
माथे, प्रका 14:1 जिनके **मा.** पर
प्रका 14:9 **मा.** या हाथ पर निशान लगवाता
प्रका 7:3; 9:4; 17:5; 20:4; 22:4.
मान लेगा, रोमि 14:11 **मा.** कि मैं परमेश्वर हूँ
मान, याकू 5:16 एक-दूसरे के सामने पाप **मा.** लो
1यूह 1:9.
मानता, यूह 14:21 जो उन्हें **मा.** है, मुझसे प्यार करता है
रोमि 14:5 कोई एक दिन को दूसरे से बड़ा **मा.** है
रोमि 14:6 किसी दिन को खास **मा.** है वह
मानते, 2थिस्स 1:8 उन लोगों से बदला जो नहीं **मा.**
याकू 2:19 दुष्ट स्वर्गदूत भी **मा.** और थर-थर काँपते हैं
मानना, मत्ती 28:20 उन्हें वे सारी बातें **मा.** सिखाओ
मानसिक रोग, 1तीमु 6:4.
मानेगा, फिले 21 भरोसा कि मेरी बात **मा.**
माने जाते, रोमि 9:8 वादे के मुताबिक बच्चे, वंश **मा.** हैं
मानो, मत्ती 23:3 **मा.**, मगर उनके जैसे काम मत करो
मानोगे, यूह 14:15 तुम मेरी आज्ञाओं को **मा.**
माफ, मत्ती 6:12 तू भी हमारे पापों को **मा.** कर
मत्ती 12:31 पवित्र शक्ति के खिलाफ निंदा **मा.** न की
यूह 20:23 अगर तुम किसी के पाप **मा.** करोगे
याकू 5:15 उसने पाप किए हों, तो **मा.**
1यूह 1:9 सच्चा है इसलिए **मा.** करेगा
मत्ती 9:6; मर 2:7; 11:25; 2कुरिं 2:10.
माफ कर, लूका 14:18, 19.

माफी, मत्ती 26:28 बहुतों के पापों की **मा.** के लिए
मर 1:4 बपतिस्मा, पापों की **मा.** चाहते हैं
प्रेषि 2:38 **मा.** के लिए यीशु के नाम से बपतिस्मा ले
कुलु 1:14 फिरौती देकर छुटकारा दिलाया, यानी **मा.**
इब्रा 9:22 जब तक लहू नहीं बहाया जाता, **मा.** नहीं
लूका 1:77; 24:47; प्रेषि 10:43; इब्रा 10:18.
मामला, 1कुरिं 6:1 दूसरे के खिलाफ कोई **मा.** है
मामले, प्रेषि 15:6.
मामलों, 1कुरिं 6:2 लायक नहीं कि छोटे **मा.** का फैसला
प्रेषि 25:20.
मामूली, प्रेषि 4:13 पतरस और यूहन्ना, **मा.** हैं
रोमि 9:21 **मा.** काम के लिए बर्तन बनाए?
इब्रा 10:29 **मा.** समझता है
मायने, रोमि 7:6 पवित्र शक्ति से नए **मा.** में दास
मर 7:14; लूका 8:10.
मार, मत्ती 16:21 **मा.** डाला, फिर तीसरे दिन
मत्ती 24:9 तुम्हें **मा.** डालेंगे
लूका 12:5 उससे डरो जिसके पास **मा.** डालने का,
लूका 12:47 बहुत **मा.** खाएगा
यूह 16:2 हर कोई जो तुम्हें **मा.**, यह सोचेगा
प्रेषि 10:13 पतरस उठ, **मा.** और खा!
लूका 12:48; प्रेषि 3:15; 7:52; 2कुरिं 6:5; प्रका 2:13; 9:18; 13:15.
मार डाला, याकू 5:6 तुमने उस नेक जन को **मा.**
रोमि 11:3 यहोवा, उन्होंने तेरे भविष्यवक्ताओं को **मा.**
मार डाला गया, प्रका 20:4 जिन्हें कुल्हाड़े से **मा.**
मार डाले जाने, 2पत 2:12.
मार डालो, कुलु 3:5 शरीर के अंगों को **मा.**
मारथा, लूका 10:41; यूह 11:39; 12:2.
मारूँगा, मत्ती 26:31.
मार्ग, प्रेषि 9:2 प्रभु के **मा.** पर चलनेवाला जो भी मिले
प्रेषि 19:9 **मा.** को बदनाम करने लगे
प्रेषि 22:4 मैंने इस **मा.** को माननेवाले पर ज़ुल्म ढाए
प्रेषि 24:14 जिस **मा.** को ये गुट कह रहे हैं
रोमि 11:33 उसके **मा.** अगम हैं!
मार्गदर्शन, गला 5:18.
माल, मत्ती 25:14 अपना **मा.** सौंपा
मालिक/मालिकों, मत्ती 6:24 दो **मा.** का दास बनकर
मत्ती 10:25 **मा.** को ही बालज़बूल कहा
मत्ती 21:40 बाग का **मा.**
मत्ती 25:21 अपने **मा.** की खुशी में शामिल हो जा
रोमि 14:4 वह खड़ा रहेगा या गिर जाएगा, उसके **मा.**
कुलु 4:1 स्वर्ग में तुम्हारा भी एक **मा.** है
2पत 2:1 **मा.** को भी इनकार करेंगे जिसने उन्हें
यहू 4 अपने एकमात्र **मा.** के साथ विश्वासघात
मत्ती 9:38; 11:25; 13:27; 20:1; 21:33; 24:43; लूका 12:45; इफि 6:9; कुलु 3:22; 1तीमु 6:1; तीतु 2:9.
मालूम, इफि 5:17 **मा.** करते रहो कि मरज़ी क्या है
मासूम, रोमि 16:19 बुरी बातों के मामले में **मा.** रहो
फिलि 2:15 निर्दोष और **मा.** और परमेश्वर के बच्चे
माहिर, 2पत 2:14 लालच करने में दिलों को **मा.** कर
मिट, इब्रा 8:13 पहला करार **मि.** जाने पर है
मिट जाएगा, 2कुरिं 5:1 यह डेरा **मि.**
याकू 1:11 अमीर आदमी **मि.**
मिट्टी, लूका 8:15 जो बढ़िया **मि.** पर गिरे
1कुरिं 15:47 पहला आदमी **मि.** से बनाया गया
यूह 9:6; रोमि 9:21.
मिट्टी के बरतनों, 2कुरिं 4:7 खज़ाना **मि.** में
मिटता, 1कुरिं 13:8 प्यार कभी नहीं **मि.** मगर वरदान
2कुरिं 4:16 बाहर का इंसान **मि.** जा रहा है
मिटनेवाले, 1कुरिं 2:6.
मिटा, मत्ती 10:28 जीवन और शरीर दोनों को **मि.**
मिटाऊँगा, प्रका 3:5 उसका नाम कभी नहीं **मि.**
मिटाए, प्रेषि 3:19.
मित्र, याकू 2:23 अब्राहम यहोवा का **मि.** कहलाया
मिद्यान, प्रेषि 7:29.
मिन्नतें, 2कुरिं 1:11 तुम **मि.** करते हुए मदद
इफि 6:18 पवित्र जनों की खातिर **मि.**
इब्रा 5:7 मसीह ने गिड़गिड़ाकर **मि.** और बिनतियाँ
याकू 5:16 नेक इंसान **मि.** करता है, उनका असर
मिन्नतों, 1पत 3:12 उसके कान उनकी **मि.** की तरफ
मिरगी, मत्ती 4:24; 17:15.
मिल जाता, 1कुरिं 6:16 वेश्या से **मि.** है, उसके साथ
1कुरिं 6:17 जो प्रभु से **मि.** है, वह उसके साथ
मिलना-जुलना, 2थिस्स 3:14 उसके साथ **मि.** छोड़ दो
मिलावट, 2कुरिं 4:2 न परमेश्वर के वचन में **मि.** करते
मिसाल पर चलना, 2थिस्स 3:7 तुम्हें हमारी **मि.** चाहिए
मिसाल पर चलो, 1कुरिं 11:1 मेरी **मि.**
इफि 5:1 परमेश्वर के बच्चों की तरह उसकी **मि.**
इब्रा 6:12 आलसी न हो जाओ, मगर **मि.**
इब्रा 13:7 उनके विश्वास की **मि.**
1कुरिं 4:16; फिलि 3:17.
मिसाल/मिसालों, मत्ती 13:10 **मि.** में बात
मत्ती 13:34 बगैर **मि.** के उनसे बात नहीं करता
मत्ती 13:35 मैं **मि.** के साथ अपना मुँह खोलूँगा
मत्ती 24:32 अंजीर के पेड़ की **मि.** से सीखो

लूका 8:10 बाकियों के लिए ये **मि.** ही हैं
यूह 16:25 **मि.** में बात नहीं करूँगा
1कुरिं 10:11 **मि.**, चेतावनी के लिए
गला 3:15 मैं ज़िंदगी की एक **मि.** से समझाता हूँ:
फिलि 3:17 उस **मि.** के मुताबिक जो हमने
1थिस्स 1:7 तुम सभी के लिए **मि.** बन गए
1तीमु 4:12 विश्वासयोग्य लोगों के लिए एक **मि.** बन
तीतु 2:7 बढ़िया काम करने की **मि.** रख
इब्रा 11:19 एक **मि.** बना
1पत 5:3 झुंड के लिए **मि.** बन जाओ
मत्ती 15:15; मर 4:10, 11; 12:1, 12; 13:28; 2थिस्स 3:9.
मिस्र, प्रका 11:8 **मि.**, जहाँ उनके प्रभु को
मत्ती 2:15.
मीकाएल, प्रका 12:7 **मी.** और उसके स्वर्गदूतों ने
यहू 9.
मीठा, याकू 3:11 ऐसा नहीं कि सोते से **मी.** और
मुंडाया, 1कुरिं 11:5 स्त्री जिसका सिर **मुं.** गया
मुँह, मत्ती 26:39 अपने **मुँ.** के बल गिरा और प्रार्थना
लूका 6:45 भरा है, वही **मुँ.** पर आता है
लूका 19:22 तेरे **मुँ.** की बात से तेरा फैसला करता हूँ
रोमि 3:19 उसका **मुँ.** बंद कर देगा
रोमि 10:10 सब लोगों के सामने **मुँ.** से ऐलान
गला 2:11 मैंने **मुँ.** पर उसका सामना किया
1पत 2:22 न उसके **मुँ.** से छल की बातें निकलीं
प्रका 14:5 अपने **मुँ.** से कभी झूठ नहीं कहा
प्रका 3:16.
मुँह बंद करो, 1पत 2:15 **मुँ.** जो बिना सोचे-समझे बातें
मुँह बाँधना, 1कुरिं 9:9; 1तीमु 5:18.
मुकद्दमे, 1कुरिं 6:7 एक-दूसरे के खिलाफ **मु.**
मुकर गया है, 1तीमु 5:8 वह विश्वास से **मु.**
मुकाबला, लूका 21:15 विरोधी **मु.** नहीं कर पाएँगे
मत्ती 5:39.
मुकुट, प्रका 19:12 सिर पर **मु.**
प्रका 12:3.
मुक्के, 1कुरिं 9:26 इस तरह **मु.** नहीं चलाता
मुड़, गला 4:9 गयी-गुज़री बातों की तरफ फिर से **मु.**
मुताबिक, रोमि 8:9 तुम पवित्र शक्ति के **मु.** चलते हो
मुद्दई, प्रेषि 25:16 उसके **मु.** के सामने लाकर
प्रेषि 23:30, 35; 25:18.
मुफ्त, मत्ती 10:8 **मु.** पाया, मुफ्त दो
प्रका 22:17 जो चाहे जीवन देनेवाला पानी **मु.** ले
रोमि 3:24; प्रका 21:6.
मुफ्त वरदान, रोमि 5:17 नेक ठहराए जाने का **मु.**
मुबारक, मत्ती 27:29; यूह 19:3.
मुमकिन, मत्ती 19:26 परमेश्वर के लिए सबकुछ **मु.** है
इब्रा 10:4 **मु.** नहीं कि बैलों का लहू
1कुरिं 11:20.
मुरझा, याकू 1:11 सूरज से घास-पत्ते **मु.** जाते हैं
मुरदे, मत्ती 8:22 मुरदों को अपने **मु.** दफन करने दे
मुर्गे, मत्ती 26:34, 74, 75; मर 14:30.
मुश्किल, 1पत 4:18 **मु.** से उद्धार
2पत 3:16 कुछ बातें समझने में **मु.** हैं
प्रेषि 26:14.
मुश्किल हालात, 1कुरिं 7:26 **मु.** को देखते हुए
मुसाफिर, इब्रा 11:13 देश में अजनबी और **मु.** हैं
मुसीबत, 2कुरिं 1:8.
मुसीबतें, रोमि 3:16 उनकी राहों में बरबादी और **मु.**
इब्रा 11:37 तंगी, **मु.** और बदसलूकी सहते हुए
याकू 5:1 धनवानो, तुम पर जो **मु.** आनेवाली हैं
मुसीबतों, याकू 1:27 विधवाओं की **मु.** में देखभाल
मुहर, यूह 3:33 अपनी **मु.** लगायी है कि परमेश्वर
यूह 6:27 परमेश्वर ने अपनी मंज़ूरी की **मु.** लगायी
2कुरिं 1:22 हम पर अपनी **मु.** लगायी और बयाना
2तीमु 2:19 ये **मु.**: यहोवा उन्हें जानता है
प्रका 22:10 इस किताब के वचनों पर **मु.** मत लगा
रोमि 4:11; प्रका 5:1; 7:2.
मुहर लगायी गयी, इफि 4:30 उस दिन के लिए **मु.** जब
प्रका 7:4 **मु.**, एक लाख चवालीस हज़ार
इफि 1:13.
मूरत, प्रका 14:9 जंगली जानवर और उसकी **मू.** की
प्रका 20:4 न जंगली जानवर न उसकी **मू.** की
प्रेषि 7:41.
मूरतों, 1यूह 5:21 बच्चो, खुद को **मू.** से बचाए रखो
मूर्ख, मत्ती 5:22 कहता है, अरे चरित्रहीन **मू.**!
मत्ती 25:2 उनमें से पाँच **मू.** थीं
लूका 12:20 **मू.**, आज ही रात
1कुरिं 3:18 **मू.** बन जाए ताकि वह बुद्धिमान बन सके
1कुरिं 4:10 हमें मसीह की खातिर **मू.** समझा जाता है
मूर्खता, 1कुरिं 1:18 यातना की सूली **मू.** है
1कुरिं 1:20 दुनिया की बुद्धि **मू.** है?
1कुरिं 1:23 सूली पर मसीह, गैर-यहूदियों के लिए **मू.**
1कुरिं 1:25 जिसे परमेश्वर की **मू.** समझते हैं वह
2तीमु 2:23 **मू.** से भरे वाद-विवादों में न पड़
1कुरिं 2:14; 3:19.
मूर्ति, 1कुरिं 8:4 **मू.** कुछ नहीं है

मूर्तिपूजा, प्रेषि 15:20 **मू.** के ज़रिए अपवित्र चीज़ों से
1कुरिं 5:11 जो **मू.** करता है उसके साथ मेल-जोल
1कुरिं 10:14 **मू.** से दूर भागो
कुलु 3:5 लालच जो **मू.** के बराबर है
1कुरिं 5:10; 6:9; 10:7; इफि 5:5.
मूर्तियों, 2कुरिं 6:16 परमेश्‍वर के मंदिर का **मू.** के साथ
मूसा, मत्ती 17:3 उन्हें **मू.** दिखायी दिया
1कुरिं 10:2 सभी ने **मू.** में बपतिस्मा लिया
इब्रा 11:24 विश्‍वास से **मू.** ने बड़ा होने पर
प्रका 15:3 **मू.** का गीत गा रहे
प्रेषि 3:22; 7:22; इब्रा 3:2.
मेंढकों, प्रका 16:13 **में.** जैसे दिखनेवाले प्रेरित वचन
मेघ-धनुष, प्रका 4:3; 10:1.
मेज़, लूका 22:30 मेरे राज में मेरी **मे.** पर
1कुरिं 10:21 यहोवा की **मे.** से खाओ
मेज़बान, रोमि 16:23 गयुस, मेरा **मे.** तुम्हें
मेम्ना, यूह 1:29 देखो, परमेश्‍वर का **मे.** जो
प्रका 5:6; 7:10.
मेम्नों, यूह 21:15 यीशु ने पतरस से कहा: मेरे **मे.** को
मेम्ने, लूका 10:3 जैसे भेड़ियों के बीच **मे.**, तुम
मेल, मर 14:56 बयान **मे.** नहीं खाते थे
मेल-जोल, 1कुरिं 5:11 **मे.** रखना बंद कर दो
मेल्कीसेदेक, इब्रा 5:6 **मे.** की तरह
इब्रा 6:20; 7:1, 15.
मेसोपोटामिया, प्रेषि 2:9.
मेहनत, इब्रा 6:11 इसी तरह **मे.** करता रहे
यूह 4:38; 1कुरिं 15:10.
मेहमान, लूका 19:6 खुशी के साथ उसे **मे.** बनाया
मेहमान-नवाज़ी, मत्ती 25:35 तुमने मेरी **मे.** की
रोमि 12:13 **मे.** दिखाने की आदत
1तीमु 5:10 उसने **मे.** दिखायी
1पत 4:9 एक-दूसरे को **मे.** दिखाते रहो
मैले-कुचैले, याकू 2:2.
मोटे हो गए, याकू 5:5 तुम्हारे दिल **मो.**
मोती, मत्ती 7:6 न अपने **मो.** सुअरों के आगे फेंको
मत्ती 13:45, 46; प्रका 17:4; 18:12; 21:21.
मोर्चा बाँधा, प्रेषि 4:26 अधिकारियों ने **मो.**
मोल लिया, प्रेषि 20:28 लहू से **मो.**
मोह-ममता, 2तीमु 3:3 **मो.** न रखनेवाले
मोहलत, मत्ती 18:26, 29.
मौका, 1कुरिं 7:21 आज़ाद होने का **मौ.** न छोड़
फिलि 4:10 मगर तुम्हें **मौ.** नहीं मिला
1तीमु 5:14 विरोधियों को **मौ.** न दें
इब्रा 11:15 उनके पास लौट जाने का **मौ.** था
मौके, 2कुरिं 11:12 किसी **मौ.** की तलाश में
इब्रा 3:15 **मौ.** पर जब ज़बरदस्त क्रोध
मौज, लूका 12:19; प्रेषि 7:41; प्रका 11:10.
मौज-मस्ती, 2तीमु 3:4 परमेश्‍वर के बजाय **मौ.** से प्यार
मौजूद, 2कुरिं 10:10 जब खुद **मौ.** होता है तो
2पत 3:4 वादा किया था कि वह **मौ.** होगा, मगर
मौजूदगी, मत्ती 24:3 तेरी **मौ.** की निशानी
मत्ती 24:37 इंसान के बेटे की **मौ.**
1कुरिं 15:23 जो मसीह के हैं, उसकी **मौ.** के दौरान
फिलि 2:12 आज्ञा मानते हो, न सिर्फ मेरी **मौ.** में
2पत 1:16 प्रभु यीशु की शक्‍ति और **मौ.**
1यूह 2:28 उसकी **मौ.** के दौरान हमें शर्मिंदा नहीं
मत्ती 24:27; 1कुरिं 5:3; 1थिस्स 4:15;
याकू 5:7, 8; 2पत 3:12.
मौजूदा, रोमि 13:1 **मौ.** अधिकारियों को रहने दिया
गला 1:4 **मौ.** दुष्ट दुनिया की व्यवस्था से छुटकारा
मौत, रोमि 5:12 इस तरह **मौ.** सब इंसानों में फैल गयी
रोमि 5:17 **मौ.** ने उस एक के ज़रिए राजा बनकर राज
रोमि 6:10 जो **मौ.** मरा वह एक ही बार मरा
रोमि 6:23 पाप जो मज़दूरी देता है वह **मौ.** है
1कुरिं 15:21 एक इंसान के ज़रिए **मौ.** आयी
1कुरिं 15:26 आखिरी दुश्‍मन, **मौ.** है
इब्रा 2:9 यीशु हर इंसान के लिए **मौ.** का स्वाद
इब्रा 2:14 शैतान, जिसके पास **मौ.** देने का ज़रिया
प्रका 2:10 चाहे **मौ.** क्यों न आए, विश्‍वासयोग्य
प्रका 20:14 **मौ.** और कब्र को आग में फेंक दिया गया
प्रका 21:4 न **मौ.** रहेगी
लूका 21:16; यूह 8:51.
मौत की सज़ा सुनाता, 2कुरिं 3:6 कानून **मौ.** है, मगर

य

यकीन, लूका 16:31 **य.** नहीं दिलाया जा सकता
यूह 5:24 मेरे भेजनेवाले का **य.** करता है
प्रेषि 26:26 मुझे **य.** है कि एक भी बात उससे
रोमि 8:38 मुझे **य.** है कि न तो
रोमि 14:14 प्रभु यीशु में मुझे **य.** है
2कुरिं 5:11 हम इंसानों को **य.** दिलाते हैं
कुलु 2:2 उन्हें पूरा-पूरा **य.**
1थिस्स 1:5 पक्के **य.** के साथ
इब्रा 6:9 हमें **य.** है कि तुम ज़्यादा अच्छी हालत में
इब्रा 11:6 **य.** करना कि परमेश्‍वर है और इनाम

1पत 2:7 वह बेशकीमती है क्योंकि तुम **य.** करते हो
1यूह 3:19 हम अपने दिलों को **य.** दिलाएँगे
मत्ती 21:32; इब्रा 10:22; 2थिस्स 2:12;
1तीमु 3:16; 1यूह 4:1.
यरदन, मर 1:9.
यरीहो, इब्रा 11:30 **य.** शहर की दीवारें ढह गयीं
यरूशलेम, मत्ती 23:37 **य.**, **य.**, हत्यारी
लूका 21:24 **य.** राष्ट्रों के पैरों तले रौंदा जाएगा
गला 4:26 ऊपर की **य.** आज़ाद है, हमारी माँ है
इब्रा 12:22 नगरी, स्वर्गीय **य.** के पास
प्रका 21:2 नयी **य.**, स्वर्ग से उतर रही थी
प्रका 3:12.
यशायाह, मत्ती 15:7; रोमि 15:12.
यहूदा, यहू 1 **य.**, यीशु मसीह का दास
मत्ती 2:6; 26:25; लूका 6:16; 22:48; इब्रा 8:8.
यहूदिया, मत्ती 24:16; लूका 21:21.
यहूदी धर्म, गला 1:13 पहले **य.** मानता था तो मेरा बर्ताव
यहूदी, रोमि 2:29 **य.** वह है जो
1कुरिं 9:20 **य.** के लिए **य.** जैसा बना
गला 3:28 न **य.** रहा न यूनानी
प्रका 3:9 खुद को **य.** कहते हैं मगर हैं नहीं
मत्ती 2:2; 27:11; कुलु 3:11.
यहूदियों, रोमि 3:29 क्या वह सिर्फ **य.** का परमेश्वर है?
1कुरिं 1:23 मसीह, **य.** के लिए ठोकर की वजह
यहोवा, मत्ती 4:10 अपने परमेश्वर **य.** की
मर 12:29 हमारा परमेश्वर **य.** एक ही है
लूका 1:46 मरियम ने कहा: मैं **य.** का गुणगान
लूका 2:26 जब तक वह **य.** के मसीह को न देख ले
प्रेषि 2:34 **य.** ने मेरे प्रभु से कहा: मेरी दायीं तरफ बैठ
प्रेषि 9:31 **य.** का भय मानते हुए और
प्रेषि 21:14 **य.** की मरज़ी पूरी हो
रोमि 14:8 हम **य.** के लिए जीते और **य.** के लिए
रोमि 15:11 सभी राष्ट्रो, **य.** का गुणगान करो
1कुरिं 10:21 **य.** की मेज़ और दुष्ट स्वर्गदूतों की मेज़
1कुरिं 10:26 धरती और सारी चीज़ें **य.** की
2कुरिं 3:17 **य.** आत्मा है और
इफि 2:21 **य.** के लिए एक पवित्र मंदिर बने
कुलु 3:23 तन-मन लगाकर ऐसे करो मानो **य.** के लिए
2थिस्स 2:2 **य.** का दिन आ पहुँचा है
2तीमु 2:19 **य.** उन्हें जानता है जो उसके अपने हैं
इब्रा 12:6 **य.** जिससे प्यार करता है उसे अनुशासन
इब्रा 13:6 **य.** मेरा मददगार है; मैं न डरूँगा
याकू 4:15 **य.** की मरज़ी हो, तो हम यह या वह काम
याकू 5:15 **य.** उसे उठाकर खड़ा कर देगा
1पत 1:25 **य.** का वचन हमेशा-हमेशा तक कायम
2पत 3:9 **य.** अपना वादा पूरा करने में देरी नहीं करता
यहू 9 मीकाएल ने कहा: **य.** तुझे डाँटे
प्रका 4:8 **य.** परमेश्वर पवित्र, पवित्र, पवित्र है
प्रका 19:6 हमारे सर्वशक्तिमान परमेश्वर **य.**
यूह 1:23; 1कुरिं 1:31; गला 3:6; कुलु 3:13;
इब्रा 8:11; याकू 5:11; 1पत 3:12.
यहोवा का दिन, 1थिस्स 5:2 **य.** ठीक वैसे आ रहा है
2पत 3:10 **य.** का दिन ऐसे आएगा जैसे चोर
2थिस्स 2:2.
यहोवा की, लूका 1:38 मरियम ने कहा: देख! **य.** दासी
लूका 2:9 **य.** की महिमा का तेज चारों तरफ
यहोशू, इब्रा 4:8.
याइर, मर 5:22; लूका 8:41.
याकूब 1., मत्ती 4:21; मर 10:35; लूका 6:14.
याकूब 2., मत्ती 10:3; मर 15:40; लूका 24:10.
याकूब 3., मत्ती 13:55; 1कुरिं 15:7; याकू 1:1.
याकूब, रोमि 9:13 **या.** से मैंने बहुत प्यार किया
इब्रा 11:9 इसहाक और **या.** उसके साथ वारिस थे
मत्ती 22:32.
याजक, प्रका 20:6 परमेश्वर के **या.** हज़ार साल तक
यूह 19:15; इब्रा 5:5; 9:25.
याजकपद, इब्रा 7:24 उसका **या.** हमेशा बना रहता
इब्रा 7:11.
याजकों का दल, 1पत 2:5 पवित्र **या.** बनो
1पत 2:9 शाही **या.**, एक पवित्र राष्ट्र
यातना, कुलु 2:23 शरीर को **या.** देते हैं
यातनाएँ, इब्रा 11:35 जिन्हें **या.** दे-देकर क्योंकि
यातना की सूली, मत्ती 27:40 **या.** से नीचे उतर
मर 15:32 मसीह **या.** से नीचे उतरकर आए
लूका 9:23 अपनी **या.** उठाए और दिन-ब-दिन
लूका 23:26 **या.** उस पर रख दी कि उसे उठाकर
इफि 2:16 **या.** के ज़रिए इनकी सुलह
फिलि 2:8 मौत भी, हाँ, **या.** पर मौत
फिलि 3:18 मसीह की **या.** के दुश्मन
कुलु 2:14 **या.** पर ठोंककर, हटा दिया
इब्रा 12:2 यीशु ने **या.** पर मौत सह ली
मत्ती 10:38; यूह 19:31; 1कुरिं 1:17; गला 6:14.
यात्री, प्रका 18:17.
याद, लूका 17:32 लूत की पत्नी को **या.** रखो
लूका 22:19 **या.** में ऐसा ही किया करना
प्रेषि 10:4 तेरी प्रार्थनाएँ और दान **या.** किए हैं

2तीमु 1:5 मैं तेरे विश्‍वास को **या.** करता हूँ
इब्रा 10:32 बीते दिनों को **या.** करते रहो
इब्रा 13:7 जो अगुवाई करते हैं उन्हें **या.** रखो
2पत 1:13 तुम्हें इन बातों की **या.** दिलाकर
2पत 3:1 तुम्हें कुछ बातें **या.** दिलाकर
लूका 23:42; 1कुरिं 11:25; 2पत 3:2.
याफा, प्रेषि 9:42.
याह, प्रका 19:1.
याह का गुणगान करो, प्रका 19:1 हे लोगो, **या.**!
प्रका 19:3, 4, 6.
यिप्तह, इब्रा 11:32.
यिशै, रोमि 15:12.
यीशु, मत्ती 1:21 उसका नाम **यी.** रखना
मत्ती 27:37 यह यहूदियों का राजा **यी.** है
प्रेषि 4:13 जान गए कि ये **यी.** के साथ रहा करते थे
प्रेषि 9:5 मैं **यी.** हूँ, जिस पर तू ज़ुल्म कर रहा है
फिलि 2:10 हर कोई **यी.** के नाम से घुटना टेके
प्रका 20:4 **यी.** की गवाही देने की वजह से
मत्ती 3:16; 27:17; लूका 2:43; यूह 1:45; 17:3; प्रेषि 2:36; रोमि 6:23; इब्रा 2:9; 3:1; प्रका 1:5.
युग-युग, 1तीमु 1:17 **यु.** के राजा
प्रका 15:3 **यु.** के राजा, तेरी राहें सही
इफि 3:11.
युगों, यहू 25 शक्‍ति और अधिकार बीते **यु.**
युद्ध, 2कुरिं 10:3 शरीर के हिसाब से **यु.** नहीं लड़ते
2कुरिं 10:4 हमारे **यु.** के हथियार शारीरिक नहीं
1पत 2:11 खिलाफ **यु.** करती रहती हैं
प्रका 12:7 स्वर्ग में **यु.** छिड़ गयाः मीकाएल
प्रका 12:17 अजगर **यु.** करने निकल पड़ा
प्रका 16:14 परमेश्‍वर के महान दिन के **यु.**
लूका 21:9; याकू 4:1; प्रका 19:11, 19.
युद्धों, मत्ती 24:6 **यु.** का शोरगुल और **यु.** की खबरें
यूनानी, 1कुरिं 1:22 **यू.** बुद्धि की तलाश में रहते हैं
गला 3:28 न यहूदी रहा न **यू.**
यूह 19:20; रोमि 1:16; 1कुरिं 10:32; 12:13.
यूनीके, 2तीमु 1:5 तेरी माँ **यू.**
यूसुफ 1., प्रेषि 7:9; इब्रा 11:22.
यूसुफ 2., मत्ती 1:19; लूका 3:23; यूह 6:42.
मत्ती 11:11 **यू.** बपतिस्मा देनेवाले से कोई बड़ा नहीं
यूहन्‍ना 1., मत्ती 3:1 **यू.** बपतिस्मा देनेवाला आया
मत्ती 14:10; 21:25; मर 1:9; लूका 1:13.
यूहन्‍ना 2., प्रका 22:8 मैं **यू.** सुन रहा था
मत्ती 4:21; प्रेषि 3:1; गला 2:9; प्रका 1:4.
योग्य, प्रेषि 6:3 सात **यो.** पुरुष
इफि 4:1 चालचलन बुलावे के **यो.** हो
फिलि 1:27 ऐसे पेश आओ जैसे **यो.** है
कुलु 1:12 पिता ने तुम्हें **यो.** किया
2थिस्स 1:5 राज के **यो.** ठहराए जाओगे
1तीमु 3:10 परखे जाएँ कि **यो.** हैं या नहीं
प्रका 4:11 यहोवा, तू **यो.** है क्योंकि
2तीमु 3:17.
योग्यता, 2कुरिं 2:16 कौन ज़रूरी **यो.** रखता है?
2कुरिं 3:5 ज़रूरत के हिसाब से **यो.**
योजना, प्रेषि 5:38 अगर यह **यो.** इंसानों की तरफ से
योना, मत्ती 12:39 **यो.** भविष्यवक्‍ता की निशानी
लूका 11:30.
यौन-इच्छाएँ, 1तीमु 5:11 विधवाओं, उनकी **यौ.**

र

रंगरलियाँ, 1पत 4:3 **रं.** मनाने में
रोमि 13:13; गला 5:21.
रंगशाला, प्रेषि 19:29.
रकम, प्रेषि 2:45 **र.** सबमें बाँट देते थे
रचना, रोमि 1:20 दुनिया की **र.** के वक्‍त से
कुलु 3:10 जिसकी **र.** परमेश्‍वर करता है
रची, प्रका 4:11 तू ने सारी चीज़ें **र.** और तेरी मरज़ी से
रज़ामंदी, 1कुरिं 7:5 आपसी **र.** से सिर्फ
रद्द, यूह 10:35 शास्त्र को **र.** नहीं किया जा सकता
गला 3:17 कि उस वादे को **र.** कर दे
इब्रा 8:13 पहले को **र.** कर दिया
रद्द कर दिया, इफि 2:15 दुश्‍मनी की वजह को **र.**
2तीमु 1:10 मसीह यीशु ने मौत को **र.**
रब्बी, मत्ती 23:8 **र.** न कहलाना
यूह 1:38; 3:2.
रस्सियों, यूह 2:15 **र.** का कोड़ा, खदेड़ दिया
रहस्य, 2थिस्स 2:7 दुराचार जो एक **र.** है
प्रका 17:7 मैं तुझे उस स्त्री का **र.** बताता हूँ
रहस्य-भरा, प्रका 17:5 **र.** नामः महानगरी बैबिलोन
राई के दाने, मत्ती 17:20; लूका 13:19.
राज, मत्ती 6:10 तेरा **रा.** आए
मत्ती 6:33 पहले उसके **रा.** की खोज में लगे रहो
मत्ती 24:14 **रा.** की इस खुशखबरी का
मत्ती 25:34 आओ, उस **रा.** के वारिस बन जाओ
लूका 12:32 तुम्हें **रा.** देना मंज़ूर किया
लूका 22:29 तुम्हारे साथ एक **रा.** के लिए करार
यूह 18:36 मेरा **रा.** इस दुनिया का नहीं

1कुरिं 15:24 अपने परमेश्वर के हाथ में **रा.** सौंप देगा
कुलु 1:13 हमें बेटे के **रा.** में ले आया
प्रका 11:15 दुनिया का **रा.** मसीह का हो गया
रोमि 6:12; 2तीमु 4:1; याकू 2:5; प्रका 5:10.
राज़, 1कुरिं 14:25 उसके दिल के **रा.** ज़ाहिर
राज करना, प्रका 11:17 तू ने राजा के तौर पर **रा.**
1कुरिं 4:8.
राज किया, प्रका 20:4 राजा बनकर **रा.**
रोमि 5:14.
राजगद्दी, इब्रा 4:16 महा-कृपा की **रा.** के सामने जाएँ
इब्रा 12:2 परमेश्वर की **रा.** की दायीं तरफ
प्रका 3:21 अपने साथ अपनी **रा.** पर बैठने की इजाज़त
प्रका 7:9 बड़ी भीड़, **रा.** के सामने खड़ी
मत्ती 25:31; कुलु 1:16.
राजगद्दियाँ, प्रका 20:4 **रा.** देखीं और जो इन पर बैठे
राजगद्दियों, लूका 22:30 **रा.** पर बैठकर इसराएल का
राजदंड, इब्रा 1:8 राज का **रा.** सीधाई का **रा.** है
राजदूत, 2कुरिं 5:20 बदले में **रा.**
इफि 6:20 मैं ज़ंजीरों में जकड़ा **रा.** हूँ
राजमिस्त्री, 1कुरिं 3:10 बुद्धिमान **रा.**
राजमिस्त्रियों, 1पत 2:7 पत्थर जिसे **रा.** ने ठुकराया
मत्ती 21:42; प्रेषि 4:11.
राजा, मत्ती 9:34 दुष्ट स्वर्गदूतों के **रा.** की मदद से
मत्ती 21:5 तेरा **रा.** तेरे पास आ रहा है
मत्ती 27:37 यहूदियों का **रा.** यीशु
यूह 1:49 गुरु, तू इसराएल का **रा.** है
यूह 18:37 तू कह रहा है मैं **रा.** हूँ
यूह 19:15 सम्राट को छोड़ हमारा कोई **रा.** नहीं
इफि 2:2 **रा.** जो अधिकार पर राज करता है
1तीमु 1:17 युग-युग के **रा.**, अनश्वर
प्रका 1:6 हमें अपने परमेश्वर के लिए **रा.** और याजक
प्रका 16:14 सारे जगत के **रा.** के पास जाते
प्रका 19:16 राजाओं का **रा.** और प्रभुओं का प्रभु
प्रेषि 17:7; 1तीमु 6:15.
राजाओं, लूका 21:12 **रा.** और राज्यपालों के सामने
राजाओं की हैसियत से राज, 1कुरिं 4:8.
राजा बनकर राज, 1कुरिं 15:25 तब तक **रा.** करना
2तीमु 2:12 अगर हम धीरज धरते रहें तो **रा.** भी करेंगे
प्रका 11:15 वह हमेशा-हमेशा तक **रा.** करेगा
रोमि 6:12; प्रका 19:6.
राज़ी, 1कुरिं 7:12, 13 साथ रहने के लिए **रा.** हो
मत्ती 20:13.
राज्य, मत्ती 4:8.
राज्यपाल, प्रेषि 13:7; 18:12; 19:38.
राज्यपाल के महल, मत्ती 27:27; यूह 18:28.
राज्यपालों, मत्ती 10:18; 1पत 2:14.
रात, यूह 9:4 **रा.** आ रही है जब कोई आदमी
रोमि 13:12 **रा.** बहुत बीत चुकी
1थिस्स 5:2 ठीक वैसे आ रहा जैसे **रा.** को चोर
प्रका 22:5 फिर **रा.** न होगी और
लूका 18:7; 1थिस्स 5:5; प्रका 7:15; 12:10.
रानी, मत्ती 12:42 दक्षिण की **रा.** को उठाया जाएगा
प्रका 18:7 मैं **रा.** बन बैठी हूँ, मैं विधवा नहीं
रामा, मत्ती 2:18.
राय, 1कुरिं 7:25, 40.
राष्ट्र, मत्ती 12:21 **रा.** उसके नाम पर आशा रखेंगे
मत्ती 24:7 एक **रा.** दूसरे **रा.** पर हमला करेगा
मत्ती 25:32 सब **रा.** के लोग उसके सामने इकट्ठे
लूका 21:25 धरती पर **रा.** बड़ी मुसीबत में
रोमि 3:29; प्रका 7:9.
राष्ट्रों, मत्ती 24:14 ताकि सब **रा.** पर गवाही हो
लूका 21:24 **रा.** का तय किया हुआ वक्त पूरा हो
प्रेषि 15:14 परमेश्वर ने **रा.** की तरफ ध्यान दिया
प्रका 11:18 मगर **रा.** का गुस्सा भड़क उठा
रास्ता, मत्ती 7:14 तंग है वह **रा.** जो जीवन की तरफ
प्रेषि 14:27 गैर-यहूदियों के लिए विश्वास का **रा.**
1कुरिं 10:13 वह **रा.** भी निकालेगा
इब्रा 12:13 अपने कदमों के लिए सीधा **रा.**
मत्ती 13:4; मर 11:8; प्रेषि 8:26.
राह, यूह 14:6 मैं ही **रा.**, सच्चाई हूँ
2पत 2:2.
राहत, 2थिस्स 1:7 हमारे साथ उस वक्त **रा.**
राह दिखाते, मत्ती 15:14 अंधे हैं, मगर **रा.** हैं
मत्ती 23:16 अंधो, जो **रा.** हो, धिक्कार है तुम पर
राहाब, इब्रा 11:31 विश्वास की वजह से **रा.**
याकू 2:25 क्या **रा.** नेक नहीं ठहरायी गयी
राहें, प्रका 15:3 तेरी **रा.** सही और भरोसेमंद हैं
राहेल, मत्ती 2:18 **रा.** अपने बच्चों के लिए रो रही है
रिआयत, मत्ती 19:8 मूसा ने तुम्हें **रि.** दी
प्रेषि 24:23 पहरे में कुछ **रि.**
1कुरिं 7:6 मैं यह बात **रि.** के तौर पर कह रहा हूँ,
रिवाज़ों, प्रेषि 16:21 ये ऐसे **रि.** का प्रचार कर रहे हैं
प्रेषि 15:1; 26:3.
रिश्ता, कुलु 2:12; फिले 16.
रिश्तेदार, लूका 14:12; प्रेषि 10:24.

रिहाई, लूका 4:18 कैदियों को **रि.** का संदेश सुनाने
2तीमु 4:6 मेरी **रि.** का वक्त एकदम करीब है
रुकावट, 1पत 3:7 तुम्हारी प्रार्थनाओं में **रु.** न आए
1यूह 4:18 क्योंकि डर **रु.** का काम करता है
रुझान, 2तीमु 1:7 परमेश्वर ने जो **रु.** दिया वह
रूत, मत्ती 1:5.
रूप, यूह 5:37 न उसका **रू.** देखा
मत्ती 28:3.
रूप धारण, 2कुरिं 11:14 शैतान **रू.** करता है
रूप बदल गया, मत्ती 17:2 उनके सामने उसका **रू.**
रूबेन, प्रका 7:5.
रेंगनेवाले जीव-जंतु, प्रेषि 10:12 हर किस्म के **रें.**
रेगिस्तानों, इब्रा 11:38 **रे.** में भटकते रहे
रेत, मत्ती 7:26 जिसने अपना घर **रे.** पर बनाया
रोमि 9:27 इसराएल की गिनती समुद्र की **रे.** के कणों
प्रका 20:8.
रोएँगे, प्रका 18:9 पृथ्वी के राजा **रो.**
रोओ, रोमि 12:15 रोनेवालों के साथ **रो.**
याकू 5:1 मुसीबतें, उनकी वजह से **रो.**
रोक, 2पत 2:14 पाप करने से खुद को **रो.** नहीं पाते
रोका, गला 5:7 किसने तुम्हें मानते रहने से **रो.**
रोके, 1पत 3:10 अपनी जीभ को **रो.**
रोकते, 1थिस्स 2:16 संदेश सुनाने से **रो.**
रोकने, मर 9:38 हमने उसे **रो.** की कोशिश की
रोकने का काम, 2थिस्स 2:7 जो **रो.** कर रहा है
रोकनेवाला, प्रेषि 11:17 परमेश्वर को **रो.** मैं कौन
रोग दूर करने, प्रका 22:2 पत्तियाँ राष्ट्रों के लोगों के **रो.**
रोटी, मत्ती 4:4 इंसान सिर्फ **रो.** से ज़िंदा नहीं रह सकता
मत्ती 16:12 **रो.** के खमीर नहीं, बल्कि
मत्ती 26:26 एक **रो.** ली और उसे तोड़ा
यूह 6:35 मैं जीवन देनेवाली **रो.** हूँ
1कुरिं 10:17 सब उस एक **रो.** से खाते हैं
1कुरिं 11:26 हर बार जब यह **रो.** खाते हो
मत्ती 6:11.
रोटियों, लूका 9:13 पाँच **रो.** से ज़्यादा कुछ नहीं
रोना, मत्ती 8:12; 13:50; लूका 6:21; 23:28;
प्रका 18:15.
रोमी, प्रेषि 16:37 जो **रो.** हैं
यूह 11:48; प्रेषि 23:27; 25:16; 28:17.
रौंदता, इब्रा 10:29 जो परमेश्वर के बेटे को **रौं.** है
रौंदा, लूका 21:24 यरूशलेम **रौं.** जाएगा
रौंदेंगे, प्रका 11:2 राष्ट्र पवित्र नगरी को **रौं.**
रौंदे गए, प्रका 14:20.
रौशन, 2कुरिं 4:6 दिलों पर ताकि इन्हें **रौ.** करे
प्रका 18:1 उसकी महिमा के तेज से पृथ्वी **रौ.** हो गयी
रौशनी, मत्ती 5:16 तुम्हारी **रौ.** लोगों के सामने चमके
यूह 3:19 **रौ.** के बजाय अंधकार से प्यार किया
यूह 8:12 मैं दुनिया की **रौ.** हूँ
2कुरिं 11:14 **रौ.** देनेवाले स्वर्गदूत जैसा रूप धारण
इफि 5:14 तू मसीह से **रौ.** पाएगा
फिलि 2:15 **रौ.** की तरह चमक रहे हो
1तीमु 6:16 उस **रौ.** में है जिस तक कोई पहुँच नहीं
1पत 2:9 अंधकार से निकालकर अपनी शानदार **रौ.** में
लूका 7:22; प्रेषि 9:12; 2कुरिं 4:4; 1यूह 1:5, 7;
प्रका 21:23; 22:5.

ल

लंगर, इब्रा 6:19 यह आशा ज़िंदगी के लिए **लं.**
लंबी करते, मत्ती 23:5 कपड़ों की झालरें **लं.**
लकवे के मारे, मत्ती 4:24; 9:2; लूका 5:24.
लक्ष्य, 2कुरिं 5:9 हमने **ल.** रखा है कि उसे मंज़ूर हों
फिलि 3:14 इनाम के **ल.** तक पहुँचने के लिए उसका
1तीमु 4:7 परमेश्वर की भक्ति के **ल.** तक
मत्ती 11:12.
लग जाते, 2पत 2:20 फिर से इन्हीं कामों में **ल.** हैं
लगता, लूका 12:51 तुम्हें **ल.** है कि मैं शांति देने
फिलि 1:17 **ल.** है कि इस तरह मेरे दुःख को बढ़ा
लगन, इफि 6:18 पूरी **ल.** के साथ जागते रहो
2तीमु 1:17 बड़ी **ल.** से मेरी तलाश की
लगाए रखो, कुलु 3:2 अपना मन स्वर्ग की बातों पर **ल.**
लगाम, याकू 1:26 अपनी ज़ुबान पर **ल.** नहीं लगाता
याकू 3:3 घोड़े के मुँह में **ल.** लगाते
लगाया, 1कुरिं 3:6 मैंने **ल.** अप्पुलोस ने सींचा
मत्ती 21:33.
लगा रह, 1तीमु 4:15 इन्हीं में **ल.**
लगा रहे, 1पत 3:11 वह शांति की खोज में **ल.**
लगाव, मत्ती 10:37 ज़्यादा **ल.** रखता है
यूह 12:25 जिसे अपनी जान से **ल.** है
लगी रहती, 1तीमु 5:5 रात-दिन प्रार्थनाओं में **ल.** है
लगे रहते, रोमि 1:32; 2:2; 1तीमु 5:20.
लगे रहें, रोमि 14:19 हम उन बातों में **ल.**
लगे रहेंगे, प्रेषि 6:4 प्रार्थना करने में **ल.**
लगे रहो, मत्ती 6:33 राज की खोज में **ल.**
कुलु 4:2 प्रार्थना में **ल.**
रोमि 12:12.
लच्छेदार, 1कुरिं 2:1 **ल.** भाषा नहीं

लटकाकर, प्रेषि 5:30 जिसे सूली पर **ल.**
प्रेषि 10:39 उसे सूली पर **ल.** मार डाला
लटकाया, लूका 23:39.
लट्ठा, लूका 6:42 अपनी आँख से **ल.** निकाल
लड़, 1तीमु 6:12 विश्वास की अच्छी लड़ाई **ल.**
लड़कपन, मर 10:20; प्रेषि 26:4.
लड़का, मत्ती 2:16; 17:18; 21:15; यूह 4:51.
लड़के, प्रका 12:13 **ल.** को जन्म दिया
लड़ते, यूह 18:36 मेरे सेवक **ल.**
लड़ने, कुलु 2:23 शरीर से **ल.**
2तीमु 2:24 प्रभु के दास को **ल.** की ज़रूरत नहीं
लड़नेवाले, प्रेषि 5:39 परमेश्वर से **ल.** ठहरो
लड़ाइयाँ, याकू 4:2 तुम **ल.** और युद्ध करते रहते हो
लड़ाई, 1कुरिं 14:8 **ल.** के लिए कौन तैयार होगा?
1तीमु 1:18 अच्छी **ल.** लड़ता रह
2तीमु 4:7 मैंने अच्छी **ल.** लड़ी है
लड़ो, यहू 3 विश्वास की खातिर जी-जान से **ल.**
लपेटकर, इब्रा 1:12 तू उन्हें **ल.** रख देगा जैसे
लपेटे, प्रका 6:14 जैसे एक खर्रा **ल.** जाने पर
ललकार, 1थिस्स 4:16 **ल.** के साथ
लहरें, यहू 13.
लहू, मत्ती 26:28 करार के मेरे **ल.** का प्रतीक
यूह 6:54 जो मेरा **ल.** पीता है, हमेशा की ज़िंदगी
प्रेषि 15:29 **ल.** से हमेशा दूर रहो
1कुरिं 15:50 माँस और **ल.** राज के वारिस नहीं
इब्रा 9:22 जब तक **ल.** नहीं बहाया जाता
1यूह 1:7 यीशु का **ल.** पापों को धोकर हमें शुद्ध
प्रेषि 20:28; इब्रा 9:20.
लाक्षणिक, प्रका 11:8 शहर जो **ला.** अर्थ में सदोम
लाखों-करोड़ों, यहू 14; प्रका 5:11.
लाखों पवित्र स्वर्गदूतों, यहू 14 अपने **ला.** के साथ आया
लागू, इब्रा 9:10 कानून की माँगें तब तक **ला.**
इब्रा 9:17.
लाचार, प्रेषि 14:8 आदमी पाँवों से **ला.** था
रोमि 7:24 कैसा **ला.** इंसान हूँ!
लाज़र, लूका 16:20; यूह 11:1, 2; 12:1.
लात, यूह 13:18.
लापरवाह, 1तीमु 4:14 वरदान की तरफ **ला.** न हो
लापरवाही, इब्रा 2:3 उद्धार के बारे में **ला.** बरतकर
लायक, मत्ती 5:22 *गेहन्ना* के **ला.** ठहरेगा
मत्ती 26:66 मौत की सज़ा के **ला.** है
लूका 20:35 उठने के **ला.** समझे जाएँगे
प्रेषि 5:41 बेइज़्ज़त होने के **ला.** समझा गया
प्रेषि 13:46 हमेशा की ज़िंदगी के **ला.** नहीं
रोमि 3:19 परमेश्वर के सामने सज़ा के **ला.** ठहरेगी
इब्रा 11:38 दुनिया उनके **ला.** न थी
लूका 23:15; प्रेषि 23:29; रोमि 1:32; 1तीमु 1:15.
लालच, मर 7:22 दिल से ही **ला.** निकलता है
लूका 12:15 **ला.** से खुद को बचाए रखो
रोमि 7:7 कानून न होता, **ला.** नहीं जान पाता
इफि 5:3 **ला.** का ज़िक्र तक न हो
1थिस्स 2:5 न ढोंग रचा, मानो **ला.** पर परदा
1तीमु 3:8 बेईमानी की कमाई का **ला.** न हो
याकू 4:2 खून करते और **ला.** करते हो
रोमि 1:29; कुलु 3:5; 2पत 2:3, 14.
लालची, 1कुरिं 5:11 **ला.** के साथ मेल-जोल बंद कर दो
लाल सागर, इब्रा 11:29 **ला.** के बीच से गुज़रे
प्रेषि 7:36.
लाश, मत्ती 24:28 जहाँ **ला.** है, वहीं उकाब
मत्ती 14:12.
लिख, यूह 19:21 यह मत **लि.**: यहूदियों का राजा
प्रका 1:11; 21:5.
लिखने, यूह 8:6 यीशु **लि.** लगा
लिखा, यूह 5:46 उसने मेरे बारे में **लि.** था
प्रेषि 1:1 किताब में **लि.**
प्रका 14:1 जिनके माथे पर उसका नाम **लि.** है
लिखी, लूका 21:22 जितनी बातें **लि.** हैं वे
रोमि 15:4 जो पहले से **लि.** गयी थीं, हमारी हिदायत
1कुरिं 10:11 हमारी चेतावनी के लिए **लि.** गयी
2कुरिं 3:2 चिट्ठी, हमारे दिलों पर **लि.** है
मत्ती 4:4; यूह 19:19; 21:24; प्रका 1:3; 17:5.
लिखित कानून, 2कुरिं 3:6 **लि.** सज़ा सुनाता है
रोमि 7:6.
लिखे, प्रका 21:27 नाम उस किताब में **लि.** हैं जो
लिखे गए, इब्रा 12:23 नाम स्वर्ग में **लि.**
लिपटी, यूह 20:17 मुझसे **लि.** मत रह
लिबिया, प्रेषि 2:10 मिस्र और **लि.** के हिस्सों से
लिहाज़ करनेवाले, फिलि 4:5.
लिहाज़ दिखानेवाला, 1तीमु 3:3 मगर **लि.** हो
लिहाज़ दिखानेवाले, तीतु 3:2 **लि.** हों, पूरी कोमलता से
लिहाज़ दिखानेवाली, याकू 3:17 **लि.**, आज्ञा मानने के
लुटेरे, यूह 10:8 सब चोर और **लु.** हैं
लुटेरों, मत्ती 21:13 इसे **लु.** का अड्डा बना रहे
मर 15:27 उन्होंने दो **लु.** को उसके साथ सूली पर
लूका 10:30; प्रेषि 19:37.
लुभानेवाले, 1थिस्स 3:5 **लु.** ने तुम्हें किसी तरह लुभा

लू, लूका 12:55 कहते हो **लू** चलेगी
लूका, कुलु 4:14; 2तीमु 4:11.
लूटता, रोमि 2:22.
लूटा, 2कुरिं 11:8 मैंने दूसरी मंडलियों को **लू.** ताकि
लूटेंगे, 2पत 2:3 वे तुम्हें **लू.**
लूत, लूका 17:28 जैसा **लू.** के दिनों मेंः लोग
2पत 2:7 उसने नेक **लू.** को बचाया
लेख, 2तीमु 3:15 पवित्र शास्त्र के **ले.** जाने हुए
यूह 5:47.
लेखा, रोमि 4:8 हरगिज़ **ले.** नहीं लेगा
लेमेक, लूका 3:36.
लैस, 1पत 4:1 उसी रुझान से खुद को **लै.**
लोंदे, रोमि 9:21 एक ही **लों.** से बनाए
लोइस, 2तीमु 1:5 तेरी नानी **लो.** और
लोग, प्रेषि 4:25 **लो.** खोखली बातें बड़बड़ा रहे हैं
प्रेषि 15:14 **लो.** चुन ले जो परमेश्वर के नाम से
रोमि 9:25 जो मेरे **लो.** नहीं हैं, उन्हें मैं अपने **लो.**
तीतु 2:14 ऐसे **लो.** जो खास उसके अपने, जोशीले
इब्रा 8:10 वे मेरे **लो.** बनेंगे
1पत 2:9 खास संपत्ति बनने के लिए **लो.**
प्रका 17:15 पानी का मतलब, **लो.** और भीड़ और
लोगों, 1कुरिं 9:19 सब **लो.** से आज़ाद हूँ
इब्रा 9:19 किताब और सब **लो.** पर छिड़का
इब्रा 11:25 परमेश्वर के **लो.** के साथ ज़ुल्म सहने
प्रका 18:4 मेरे **लो.**, उसमें से निकल आओ, अगर तुम
प्रेषि 3:23; रोमि 15:11; 2कुरिं 6:16; 2तीमु 3:2;
इब्रा 2:17; 10:30.
लोगों की खातिर सेवा, इब्रा 10:11 याजक **लो.** करने
लोगों के सामने, इब्रा 6:6 **लो.** उसे शर्मिंदा करते हैं
लोटना, 1पत 4:4 उनके साथ **लो.** छोड़ दिया है
लोटने, 2पत 2:22 कीचड़ में **लो.** के लिए लौट जाती है
लोहे, 1तीमु 4:2 जैसे गर्म **लो.** से दागा गया हो
प्रका 2:27; 12:5.
लौटाया, रोमि 11:35 उसे **लौ.** जाए?
लौटा लाना, इब्रा 6:6 उन्हें पश्चाताप के लिए **लौ.**
लौटे, मर 13:16 जो खेत में हो वह न **लौ.**
लौदीकिया, कुलु 2:1; 4:16; प्रका 1:11; 3:14.

व

वंचित, 1कुरिं 7:5 एक-दूसरे को **वं.** न रखो
वंश, रोमि 9:29 अगर यहोवा हमारे लिए **वं.** न छोड़ता
गला 3:29 तुम वाकई अब्राहम का **वं.** और वारिस हो
1पत 2:9 तुम एक चुना हुआ **वं.**, शाही
प्रका 12:17 स्त्री के **वं.** के बचे हुओं से युद्ध
रोमि 9:7; गला 3:19.
वंशजों, गला 3:16 यह नहींः **वं.** से बल्कि एकः मसीह
वंशावली, इब्रा 7:3 न पिता, न माँ, न **वं.**
वंशावलियों, 1तीमु 1:4 **वं.** पर जिनसे कोई फायदा नहीं
वक्त, मत्ती 24:36 दिन और **व.** कोई नहीं जानता
मत्ती 24:45 सही **व.** पर उनका खाना दे?
लूका 21:24 राष्ट्रों के लिए तय किया हुआ **व.**
लूका 22:53 यह **व.** तुम्हारा है और अधिकार
प्रेषि 3:21 सब बातों को बहाल करने का **व.**
प्रेषि 17:30 परमेश्वर ने अज्ञानता के **व.** को
1कुरिं 7:29 जो **व.** रह गया उसे घटाया गया
गला 6:9 अगर हिम्मत न हारें, तो **व.** आने पर फल
इफि 5:16 तय **व.** का पूरा-पूरा इस्तेमाल करो
2थिस्स 2:6 अपने **व.** पर ज़ाहिर किया जाए
1तीमु 2:6 गवाही तय **व.** पर
1तीमु 4:1 आगे ऐसा **व.** आएगा जब कुछ लोग
2तीमु 3:1 आखिरी दिनों में संकटों से भरा **व.** आएगा
2तीमु 4:2 वचन का प्रचार, चाहे अच्छा **व.** हो
1पत 1:11 जाँच-पड़ताल करते रहे कि किस खास **व.**
1यूह 2:18 प्यारे बच्चो, यह आखिरी **व.** है
प्रका 12:12 जानता है कि उसका कम **व.** बाकी
1कुरिं 4:5; गला 4:4; 1पत 4:17; प्रका 11:18.
वक्त पूरा होने से पहले, 1कुरिं 15:8.
वचन, मत्ती 4:4 सिर्फ रोटी नहीं, बल्कि हर **व.** से
यूह 1:1 बहुत पहले, **व.** था और **व.**
यूह 1:14 **व.** इंसान बना और रहा
यूह 17:17 तेरा **व.** सच्चा है
फिलि 2:16 जीवन के **व.** पर मज़बूत पकड़
2तीमु 2:15 सच्चाई के **व.** को सही तरह से इस्तेमाल
2तीमु 4:2 **व.** का प्रचार करने में जी-जान से लग
याकू 1:22 **व.** पर चलनेवाले बनो, न कि
2पत 1:19 भविष्यवाणी के **व.** और भी पक्के किए गए
प्रेषि 7:38; रोमि 3:2.
वजह, मत्ती 5:10 सही काम करने की **व.** से
मत्ती 24:9 मेरे नाम की **व.** से नफरत
2तीमु 1:12 इसी **व.** से मैं दुःख उठा रहा हूँ
1पत 3:15 आशा की **व.** जानने की माँग करता है
वजूद, प्रेषि 17:28 उसी से हम **व.** में हैं
2कुरिं 5:17 चीज़ें **व.** में आयी हैं
कुलु 1:17 उसी के ज़रिए बाकी सब चीज़ें **व.** में
प्रका 4:11 तेरी मरज़ी से ये **व.** में आयीं
यूह 1:3.

वध, प्रका 5:12 मेम्ना जो **व.** किया गया
वनस्पति, प्रका 9:4 न पृथ्वी की **व.** को नुकसान
वफादार, प्रेषि 2:27; 13:35; 1थिस्स 2:10; इब्रा 7:26; प्रका 15:4.
वफादारी, लूका 1:75 **व.** से उसके स्तरों पर चलते हुए
इफि 4:24 परमेश्वर की मरज़ी और **व.**
तीतु 2:10 पूरी **व.** दिखाएँ
वरदान, प्रेषि 8:20 परमेश्वर के मुफ्त **व.** को खरीद
रोमि 5:16 **व.** से नेक करार दिया जाना मुमकिन हुआ
1कुरिं 12:4 **व.** अलग-अलग, मगर पवित्र शक्ति एक
1कुरिं 14:12 पवित्र शक्ति के **व.** पाने की ख्वाहिश
1तीमु 4:14 उस **व.** की तरफ लापरवाह न हो जो तुझे
इब्रा 6:4 जिन्होंने स्वर्ग से मिलनेवाले मुफ्त **व.** का स्वाद
वश, 1थिस्स 4:4 हरेक जन अपने शरीर को **व.** में रखना
वहम, मत्ती 14:26; मर 6:49.
वाकई, 1तीमु 3:16 **वा.** यह रहस्य बहुत महान है
वाद-विवाद, 1तीमु 6:4 **वा.** और बहसबाज़ी का रोग
वाद-विवादों, 2तीमु 2:23 बेकार के **वा.** में न पड़
तीतु 3:9 मूर्खता से भरे **वा.** से दूर रह
वादा/वादे, रोमि 4:13 वारिस होगा, यह **वा.**
रोमि 9:4 पवित्र सेवा और **वा.**
2कुरिं 7:1 जबकि हमसे ये **वा.** किए गए हैं, तो आओ
गला 3:29 **वा.** के मुताबिक वारिस
तीतु 1:2 **वा.** मुद्दतों पहले परमेश्वर ने किया
इब्रा 6:12 विश्वास की वजह से **वा.** के वारिस
इब्रा 10:23 क्योंकि जिसने **वा.** किया वह
इब्रा 11:39 **वा.** पूरा होते हुए नहीं देखा
याकू 1:12 जीवन का ताज जिसका **वा.** यहोवा ने
याकू 2:5 जिसका **वा.** उनसे किया जो प्यार करते हैं
2पत 3:13 **वा.** के मुताबिक इंतज़ार कर रहे हैं
प्रेषि 2:33, 39; 7:5; रोमि 1:2; 4:14, 21; गला 3:16; इब्रा 11:13.
वादे से मुकरनेवाले, रोमि 1:31 **वा.,** प्यार
वादों, इब्रा 8:6 करार, जो बेहतर **वा.** के आधार पर
वापस, याकू 5:20 जो पापी को **वा.** ले आता है
वारिस/वारिसों, मत्ती 19:29 हमेशा की ज़िंदगी का **वा.**
मत्ती 21:38 यह **वा.** है; इसे मार डालें
मत्ती 25:34 राज के **वा.** जो तुम्हारे लिए तैयार
1कुरिं 15:50 लहू परमेश्वर के राज के **वा.** नहीं
रोमि 8:17 परमेश्वर के **वा.** और मसीह के संगी **वा.**
गला 3:29 वादे के मुताबिक अब्राहम का वंश और **वा.**
इफि 1:11 हम **वा.** भी ठहराए गए हैं
इब्रा 1:2 बेटे, जिसे सब चीज़ों का **वा.** ठहराया
इब्रा 6:12 सब्र रखने से वादों के **वा.** बनते हैं
मत्ती 5:5; रोमि 4:13; गला 4:7; इब्रा 6:17; 11:9.
वासना, मत्ती 5:28 स्त्री के लिए **वा.** पैदा हो
2पत 1:4 भ्रष्टता, जो **वा.** की वजह से
वासनाएँ, रोमि 7:5 कानून के ज़रिए पाप-भरी **वा.**
वासनाओं, गला 5:24 शरीर को **वा.** समेत सूली पर
विचार, 2कुरिं 10:5 हरेक **वि.** को जीतकर कैद कर लेते
विचारों, रोमि 14:1 निजी **वि.** के बारे में
इब्रा 4:12 परमेश्वर का वचन **वि.** को जाँच सकता है
2पत 1:20 भविष्यवाणी अपने **वि.** के मुताबिक नहीं
विदाई, लूका 9:31 उसकी **वि.** के बारे में बात
विदेशी, 1कुरिं 14:11 मैं **वि.** जैसा हूँ
विधवाएँ, 1तीमु 5:3 जो **वि.** वाकई ज़रूरतमंद हैं, उनका
विधवा, लूका 21:2 एक ज़रूरतमंद **वि.** को दो पैसे
प्रका 18:7 मैं तो रानी बन बैठी हूँ, मैं **वि.** नहीं
मर 12:43; लूका 18:3; 1कुरिं 7:8.
विधवाओं, लूका 20:47 **वि.** के घर हड़प जाते हैं
याकू 1:27 अनाथों और **वि.** की देखभाल
विनाश, मत्ती 7:13 रास्ता **वि.** की तरफ
यूह 17:12 **वि.** के बेटे को छोड़
गला 6:8 वह शरीर से **वि.** की फसल काटेगा
1थिस्स 5:3 शांति और सुरक्षा तब अचानक **वि.**
2थिस्स 1:9 हमेशा के **वि.** की सज़ा
2थिस्स 2:3 **वि.** का बेटा प्रकट किया जाए
2थिस्स 2:10 छल, उन लोगों के लिए जो **वि.** पाएँगे
1तीमु 6:9 इंसान को **वि.** की खाई में धकेल देती
2पत 2:1 अपने हाथों तेज़ी से अपना **वि.** लाएँगे
2पत 2:3 उनका **वि.** ज़रूर आएगा
विनाश की सज़ा, 2थिस्स 1:9 **वि.** पाएँगे
विरासत, इफि 1:14 अपनी **वि.** मिलने से पहले
कुलु 1:12 पवित्र जनों के साथ **वि.** जिन्हें रौशनी मिली
1पत 1:4 **वि.** जो निष्कलंक है और कभी नहीं मिटेगी
इफि 5:5; इब्रा 9:15; 1पत 3:9; प्रका 21:7.
विरोध, 2तीमु 3:8 और यम्ब्रेस ने मूसा का **वि.** किया
तीतु 1:9 जो **वि.** करते हैं उन्हें ताड़ना दे
इब्रा 10:27 ज्वाला **वि.** करनेवालों को भस्म कर देगी
याकू 5:6 नेक जन। क्या वह तुम्हारा **वि.** नहीं कर
2थिस्स 2:4.
विरोध करते, प्रेषि 7:51 पवित्र शक्ति का **वि.**
विरोधी/विरोधियों, लूका 21:15 तुम्हारे सारे **वि.**
फिलि 1:28 **वि.** से नहीं डरते
1तीमु 5:14 **वि.** को बुरा-भला कहने का मौका
तीतु 2:8 जो **वि.** हैं

विलाप, मत्ती 2:18 रोने और बड़े **वि.**
यूह 16:20 तुम रोओगे और **वि.** करोगे, मगर
विश्राम, इब्रा 4:3 **वि.** में दाखिल होते हैं
इब्रा 3:11.
विश्वास, लूका 18:8 क्या वह धरती पर वाकई **वि.**
यूह 3:16 जो कोई उस पर **वि.** दिखाता है
यूह 9:35 बेटे पर **वि.** करता है
यूह 11:48 सभी लोग उस पर **वि.** करने लगेंगे
यूह 12:42 धर्म-अधिकारियों में से बहुतों ने उस पर **वि.**
यूह 12:44 मुझ पर **वि.** करता है वह मुझ पर ही नहीं
प्रेषि 5:14 **वि.** करनेवाले शामिल होते रहे
प्रेषि 10:43 उस पर **वि.** है उसे माफी मिलती है
रोमि 4:13 नेकी के ज़रिए **वि.** दिखाकर
रोमि 10:9 अपने दिल में **वि.** रखे कि परमेश्वर
रोमि 10:14 जिस पर उन्होंने **वि.** नहीं किया?
रोमि 14:23 हर चीज़ जो **वि.** से नहीं, पाप है
गला 3:8 **वि.** के आधार पर लोगों को नेक ठहराएगा
गला 3:11 जो नेक है, **वि.** से ज़िंदा रहेगा
गला 6:10 जो **वि.** में हमारे भाई-बहन हैं
इफि 4:5 एक प्रभु, एक **वि.**, एक बपतिस्मा
फिलि 1:29 न सिर्फ **वि.** करो बल्कि दुःख सहो
2थिस्स 3:2 **वि.** हर किसी में नहीं होता
1तीमु 6:12 **वि.** की अच्छी लड़ाई लड़
2तीमु 4:7 पूरी कर ली, मैंने **वि.** को थामे रखा है
इब्रा 11:1 **वि.**, पूरे भरोसे के साथ इंतज़ार करना है
इब्रा 11:6 **वि.** के बिना परमेश्वर को खुश करना
इब्रा 12:2 यीशु, हमारे **वि.** का परिपूर्ण करनेवाला
याकू 2:26 कामों के बिना **वि.** मरा हुआ
1पत 1:7 तुम्हारे परखे हुए **वि.** का खरापन
1पत 5:9 **वि.** में मज़बूत रहकर उसका मुकाबला करो
1यूह 5:1 **वि.** करता है कि यीशु ही मसीह है
1यूह 5:4 दुनिया पर जीत हासिल की, वह है हमारा **वि.**
यूह 2:11; 4:39; 7:48; 9:36, 38; प्रेषि 4:32; 15:7; 16:31; रोमि 4:3; 2कुरिं 5:7; इफि 6:16; 1तीमु 4:1.
विश्वास की कमी, मर 6:6 उनके **वि.** देखकर
रोमि 4:20 वह **वि.** से नहीं डगमगाया
रोमि 11:20 उनके **वि.** की वजह से उन्हें तोड़ा गया
मत्ती 13:58; मर 6:6; रोमि 3:3; 11:20.
विश्वासघाती, 2तीमु 3:2 लोग **वि.** होंगे
विश्वासघातियों, लूका 12:46 हिस्सा **वि.** के साथ
विश्वास डगमगा, मत्ती 26:31 तुम सबका **वि.** जाएगा
विश्वास दिखानेवालों, गला 3:22 वादा, **वि.** को
विश्वास नहीं था, इब्रा 3:19 दाखिल न हो सके, उनमें **वि.**
विश्वासयोग्य, मत्ती 24:45 **वि.** और सूझ-बूझ से काम
1थिस्स 3:7 तुम्हारे **वि.** होने
2तीमु 2:2 वे बातें **वि.** पुरुषों को सौंप दे
1पत 4:19 खुद को **वि.** सिरजनहार के हवाले सौंपते
प्रका 2:10 चाहे मौत आए, **वि.** साबित करो
प्रका 3:14 **वि.** और सच्चा गवाह, शुरूआत
प्रका 17:14 बुलाए गए और चुने हुए और **वि.**
1कुरिं 4:2; रोमि 3:3; प्रका 19:11.
विश्वास रखे, रोमि 10:4 हर कोई जो **वि.**
विश्वासी, 1तीमु 6:2 जो फायदा पा रहे हैं वे **वि.** हैं
वीरता, इब्रा 11:34 युद्ध में **वी.**, फौजों को खदेड़ा
वीरान इलाकों, लूका 1:80.
वीराने, मत्ती 3:3 **वी.** में पुकार लगा रहा
प्रका 12:6 स्त्री **वी.** में भाग गयी
वेदी, प्रेषि 17:23 एक **वे.** अनजाने परमेश्वर के लिए
इब्रा 13:10 हमारी एक **वे.**, जिससे
प्रका 6:9 **वे.** के नीचे कत्ल किए हुओं का खून देखा
मत्ती 23:18; इब्रा 7:13.
वेश्याओं, प्रका 17:5 बैबिलोन, **वे.** की माँ
वेश्या, 1कुरिं 6:15 अंगों को **वे.** के अंग बनाऊँ?
याकू 2:25 राहाब नाम की **वे.** नेक ठहरायी गयी
प्रका 17:16 **वे.** से नफरत करेंगे और उसे
लूका 15:30; इब्रा 11:31; प्रका 17:1, 15; 19:2.
वेश्याएँ, मत्ती 21:31 **वे.**, तुमसे आगे
वैद्य, लूका 4:23 **वै.** खुद का इलाज कर
लूका 5:31 सेहतमंद हैं, उन्हें **वै.** की ज़रूरत नहीं
कुलु 4:14 प्यारा भाई, **वै.** लूका
वैभव, इफि 5:27 इसके पूरे **वै.** के साथ अपने सामने
व्यभिचार, 1कुरिं 5:1 **व्य.** की खबर मिली
1कुरिं 6:13 शरीर **व्य.** के लिए नहीं
1कुरिं 6:18 **व्य.** से दूर भागो। दूसरा हर पाप
1कुरिं 10:8 न हम **व्य.** में लगे रहें, जैसे कुछ ने
गला 5:19 शरीर के काम हैं, **व्य.**
इफि 5:3 **व्य.** का ज़िक्र तक न हो
कुलु 3:5 शरीर के उन अंगों को मार डालो, जिनसे **व्य.**
1थिस्स 4:3 परमेश्वर की मरज़ी है कि तुम **व्य.** से
प्रका 2:22 जो **व्य.** करते हैं
प्रका 17:2 पृथ्वी के राजाओं ने **व्य.** किया
मत्ती 5:28.
व्यभिचारिणी, रोमि 7:3 वह **व्य.** नहीं है

व्यभिचारी/व्यभिचारियों, 1कुरिं 5:9 **व्य.** के साथ
इफि 5:5 कोई भी **व्य.** राज में विरासत नहीं पाएगा
1तीमु 1:10; इब्रा 12:16; 13:4.
व्यर्थता, रोमि 8:20 सृष्टि **व्य.** के अधीन की गयी
व्यवस्था, कुलु 2:5 तुम्हारे बीच अच्छी **व्य.** है
व्यवहार, लूका 16:8 लोग **व्य.** करने में ज़्यादा होशियार
व्यापार, याकू 4:13 **व्या.** करेंगे और खूब पैसा कमाएँगे
व्यापारी, मत्ती 13:45.
व्यावहारिक बुद्धि, लूका 1:17 दिलों को पलटकर **व्या.** दे

श

शंका, रोमि 14:23 अगर उसके मन में **शं.** है
यहू 22.
शक, 1तीमु 6:4 बैर-भाव से **श.** करने
याकू 1:6 विश्वास के साथ माँगे, **श.** न करे
मत्ती 21:21; मर 11:23.
शक्ति, रोमि 9:22 अपनी **श.** दिखाने की इच्छा
1कुरिं 4:20 राज का आधार बातें नहीं, बल्कि **श.**
कुलु 1:29 **श.** मेरे अंदर काम कर रही
2तीमु 1:7 कायरता का नहीं, **श.** का रुझान
2तीमु 3:5 भक्ति का दिखावा, मगर इसकी **श.** का
इब्रा 5:14 अपनी सोचने-समझने की **श.** प्रशिक्षित
प्रका 1:6 उसी की **श.** सदा रहे। आमीन
प्रका 11:17 बड़ी **श.** का इस्तेमाल कर राज करना
रोमि 1:16, 20; 2तीमु 2:1; इब्रा 6:5; 1पत 1:5;
प्रका 12:10.
शक्ति दी, 1तीमु 1:12 मसीह जिसने मुझे **श.**
शक्तिमान सम्राट, 1तीमु 6:15 धन्य और एकमात्र **श.**
शक्तियाँ, मत्ती 24:29 आकाश की **श.**
शक्तिशाली, 1कुरिं 15:43 **श.** दशा में उठाया जाता
1कुरिं 16:13 दिलेर बने रहो, **श.** बनते जाओ
2कुरिं 10:4 **श.** हथियार जो परमेश्वर ने दिए हैं
1पत 5:10 वह तुम्हें **श.** बनाएगा
2थिस्स 1:7 यीशु **श.** दूतों के साथ स्वर्ग से
मर 9:39; रोमि 4:20; इब्रा 11:34.
शक्तिशाली काम, 1कुरिं 12:10, 29; गला 3:5.
शक्ल, गला 2:6 परमेश्वर इंसान की **श.** देखकर मंज़ूर
शक्ल-सूरत, फिलि 2:8 इंसान की **श.** में पाया
शख्सियत, रोमि 6:6 पुरानी **श.** सूली पर चढ़ा दी गयी
इफि 4:22 पुरानी **श.** उतार देना चाहिए
इफि 4:24 नयी **श.** पहन लेना चाहिए
कुलु 3:9 पुरानी **श.** को उसकी आदतों समेत
शपथ, प्रेषि 2:30 परमेश्वर ने **श.** खाकर उससे
इब्रा 6:13 बड़ा कोई नहीं जिसकी वह **श.** खाता
इब्रा 6:17 परमेश्वर ने **श.** खाते हुए
प्रेषि 2:30; इब्रा 7:20, 28.
शब्द, मत्ती 24:35 मेरे **श.** किसी भी हाल में न मिटेंगे
शमूएल, इब्रा 11:32.
शमौन, मत्ती 4:18; 10:2; मर 3:16.
शराब, 1तीमु 3:8 ज़्यादा **श.** पीनेवाला न हो
शरीर, मत्ती 10:28 **श.** को घात कर सकते, मगर
रोमि 8:7 **श.** की बातों पर मन लगाना, दुश्मनी
रोमि 12:1 **श.** को जीवित बलिदान के तौर पर अर्पित
1कुरिं 6:15 तुम्हारे **श.** मसीह के अंग हैं?
1कुरिं 12:18 परमेश्वर ने **श.** के हर अंग को
1कुरिं 15:39 सब **श.** एक जैसे नहीं
1कुरिं 15:44 हाड़-माँस का **श.** बोया जाता है
2कुरिं 10:3 हम **श.** के हिसाब से युद्ध नहीं लड़ते
कुलु 1:18 **श.** का सिर, सब बातों में पहला
इब्रा 10:5 तू ने मेरे लिए एक **श.** तैयार किया
याकू 5:5 **श.** के सुख भोगने में लगे रहे
मत्ती 26:12; लूका 11:34; यूह 2:21; रोमि 8:11;
याकू 4:1.
शरीरों, 1कुरिं 6:20 अपने **श.** से परमेश्वर की
1कुरिं 15:40.
शरीर की ख्वाहिशों, गला 5:16 **श.** को हरगिज़
1पत 2:11 **श.** से अपने आप को दूर रखो
शर्मनाक, इफि 5:4 **श.** बर्ताव, न बेवकूफी
1कुरिं 11:6.
शर्मनाक हालत, प्रका 16:15 उसकी **श.** न देखें
शर्म, रोमि 1:16 खुशखबरी सुनाने में **श.** महसूस नहीं
शर्मिंदा, मर 8:38 मेरा चेला होने से **श.** महसूस
रोमि 5:5 आशा, **श.** नहीं होने देती
रोमि 10:11 विश्वास करता है, **श.** नहीं होगा
1कुरिं 1:27 बुद्धिमानों को **श.** कर सके
फिलि 3:19 जिन पर **श.** होना चाहिए, उन पर घमंड
इब्रा 11:16 उनका परमेश्वर कहलाए जाने से **श.** नहीं
1पत 4:16 कोई मसीही, **श.** महसूस न करे
लूका 9:26; 1कुरिं 4:14; 2थिस्स 3:14;
2तीमु 1:8; 2:15; इब्रा 6:6.
शर्मिंदगी, इब्रा 12:2 **श.** की परवाह न की
शहद, प्रका 10:10.
शहर, मत्ती 5:14 **श.** छिप नहीं सकता
इब्रा 11:10 **श.** जो सच्ची बुनियाद पर खड़ा है
इब्रा 11:16 उसने उनके लिए **श.** तैयार किया
लूका 4:43; 19:17; प्रका 16:19.

शांत, 1तीमु 2:2 चैन के साथ **शां.** जीवन
1तीमु 2:11 स्त्री **शां.** रहकर सीखे
1पत 3:4 **शां.** और कोमल स्वभाव, जो अनमोल है
शांति, मत्ती 5:9 सुखी हैं जो **शां.** कायम करते
मत्ती 10:34 **शां** लाने नहीं, तलवार चलवाने
लूका 2:14 उन लोगों को **शां.** जिनसे परमेश्वर
यूह 14:27 मैं तुम्हें अपनी **शां.** देता हूँ
रोमि 12:18 सबके साथ **शां.** बनाए रखने
रोमि 14:19 उन बातों में लगे रहें जिनसे **शां.** कायम
रोमि 16:20 **शां.** देनेवाला परमेश्वर शैतान को कुचल
इफि 6:15 **शां.** की खुशखबरी के जूते पहनकर
फिलि 4:7 परमेश्वर की **शां.** जो समझने की शक्ति से
कुलु 1:20 **शां.** उस लहू के आधार पर कायम की
1थिस्स 5:3 **शां.** और सुरक्षा!” अचानक विनाश
इब्रा 12:11 **शां.** का फल यानी परमेश्वर के स्तरों
याकू 3:17 वह पवित्र, फिर **शां.** कायम करनेवाली
1पत 3:11 वह **शां.** कायम करने की खोज करे और
प्रका 6:4 अधिकार दिया गया कि पृथ्वी पर से **शां.**
यूह 16:33; याकू 3:18.
शांति से, 2कुरिं 13:11 **शां.** रहो
1थिस्स 4:11 लक्ष्य बना लो कि **शां.** जीवन
2थिस्स 3:12.
शाऊल, (तरसुस का) प्रेषि 7:58 **शा.** के पाँवों के पास
प्रेषि 8:1 **शा.** हत्या का समर्थन कर रहा था
प्रेषि 9:4 **शा.**, तू क्यों मुझ पर ज़ुल्म कर रहा है?
प्रेषि 13:9 **शा.**, जिसका नाम पौलुस भी है
प्रेषि 9:1; 11:25; 12:25; 13:1, 21; 22:7; 26:14.
शादी, मत्ती 22:2 **शा.** की दावत दी
मत्ती 22:10 **शा.** की रस्में
मत्ती 22:30 मरे हुए जी उठने पर न **शा.** करेंगे
लूका 14:20 मेरी अभी-अभी **शा.** हुई है
लूका 20:35 **शा.** नहीं करेंगे और पति या पत्नी नहीं
यूह 2:1 काना में **शा.** की दावत थी
रोमि 7:2 **शा.**-शुदा स्त्री पति के जीते-जी उससे बंधी
1कुरिं 7:33 **शा.**-शुदा आदमी दुनियादारी की बातों की
1कुरिं 7:39 **शा.** करने के लिए आज़ाद, सिर्फ प्रभु में
2कुरिं 11:2 तुम्हारी **शा.** करवाने के लिए एक पुरुष से
1तीमु 4:3 **शा.** न करने की शिक्षा देंगे, हुक्म देंगे
इब्रा 13:4 **शा.** सब लोगों के बीच आदर की बात हो
प्रका 19:9 मेम्ने की **शा.** की शाम की दावत
लूका 17:27; 1कुरिं 7:9, 28, 36, 38; 1तीमु 5:14.
शादी के बाहर यौन-संबंध, 1कुरिं 6:9 न **शा.** रखनेवाले
मत्ती 15:19; मर 7:22; इब्रा 13:4; याकू 2:11.
शानदार, 2कुरिं 4:4 बारे में **शा.** खुशखबरी
1पत 2:9 अपनी **शा.** रौशनी में
शानदार कामों, प्रेषि 2:11 परमेश्वर के **शा.**
शानो-शौकत, प्रका 18:7 उसने जिस हद तक अपनी **शा.**
शाप, रोमि 12:14 आशीष दो, **शा.** मत दो
गला 3:13 हमें **शा.** से छुड़ाया
प्रका 22:3.
शापित, यूह 7:49; 1कुरिं 12:3; 16:22; गला 1:8,13.
शाम का खाना, लूका 14:12 **शा.** करे, तो दोस्तों को न
लूका 14:16; 22:20.
शाम की दावत, मर 6:21 हेरोदेस ने **शा.** रखी
प्रका 19:9 सुखी हैं वे जिन्हें **शा.** का न्यौता मिला है
प्रका 19:17 **शा.** के लिए इकट्ठे
शामिल, मत्ती 25:21 अपने मालिक की खुशी में **शा.**
शारीरिक, रोमि 8:5 जो **शा.** हैं
यहू 19 ये आदमी **शा.** हैं
याकू 3:15.
शालतिएल, मत्ती 1:12.
शालेम, इब्रा 7:2 **शा.** यानी शांति का राजा
शास्त्र, मत्ती 21:42 **शा.** में पढ़ा
मत्ती 22:29 तुम न **शा.** को जानते हो न परमेश्वर
लूका 4:21 यह **शा.** वचन आज पूरा हुआ
लूका 24:27 उसने सारे **शा.** का मतलब उन्हें समझाया
लूका 24:32 **शा.** का मतलब हमें खोल-खोलकर
लूका 24:45 **शा.** का मतलब समझने
यूह 5:39 पवित्र **शा.** में खोजबीन करते हो, क्योंकि
यूह 10:35 फिर भी **शा.** को रद्द नहीं किया जा सकता
यूह 13:18 **शा.** की इस बात का पूरा होना
प्रेषि 17:2 उसने **शा.** से तर्क-वितर्क किया
प्रेषि 17:11 हर दिन बड़े ध्यान से **शा.** की जाँच करते
प्रेषि 18:24 अपुल्लोस **शा.** का बहुत अच्छा ज्ञान
रोमि 15:4 **शा.** से दिलासा पाएँ और आशा रखें
2तीमु 3:16 पूरा **शा.** परमेश्वर की प्रेरणा से लिखा गया
यूह 20:9; प्रेषि 8:32; 1कुरिं 15:3, 4; याकू 4:5; 2पत 1:20; 3:16.
शास्त्री/शास्त्रियों, मत्ती 5:20 **शा.** के नेक कामों
मत्ती 7:29 उनके **शा.** की तरह नहीं सिखाता
मत्ती 9:3; 17:10; लूका 5:21, 30.
शाही, लूका 19:12 आदमी जो **शा.** खानदान से था
शिकायत, कुलु 3:13 खिलाफ **शि.** की वजह

शिकार, कुलु 2:8 अपना **शि.** बनाकर ले जाए
शिक्षक, 1तीमु 2:7 गैर-यहूदियों का **शि.**
2तीमु 4:3 अपने लिए **शि.** इकट्ठे करेंगे
इफि 4:11; याकू 3:1 2पत 2:1.
शिक्षा देनेवाले, गला 6:6 ज़बानी **शि.** को साझेदार बनाए
शिक्षा/शिक्षाएँ, मत्ती 15:9 परमेश्वर की **शि.** बताकर
रोमि 6:17 उस **शि.** के आज्ञाकारी
कुलु 2:22 आदेश और **शि.** इंसानों की
1तीमु 1:3 जो अलग **शि.** दे रहे हैं, आज्ञा दे
1तीमु 4:16 खुद पर और अपनी **शि.** पर ध्यान देता रह
1तीमु 6:3 अगर कोई इससे अलग **शि.** देता है
2तीमु 1:13 खरी **शि.**, थामे रह
2तीमु 4:3 खरी **शि.** बरदाश्त न कर सकेंगे
तीतु 1:11 ऐसी **शि.** देते हैं जो सही नहीं
इब्रा 6:1 मसीह के बारे में बुनियादी **शि.**
तीतु 1:9.
शिक्षाओं, मत्ती 16:12 फरीसियों की **शि.** से चौकन्ने रहने
इफि 4:14 **शि.** के हर झोंके से उड़ाए जाते
1तीमु 4:1 दुष्ट स्वर्गदूतों की **शि.** पर ध्यान देंगे
इब्रा 13:9 परायी **शि.** से गुमराह न होना
शिमशोन, इब्रा 11:32 अगर मैं बाराक, **शि.** के बारे में
शिशु/शिशुओं, 2तीमु 3:15 जब तू **शि.** था तभी से तेरे
प्रेषि 7:19; 1पत 2:2.
शुक्रिया, प्रका 11:17 यहोवा, हम तेरा **शु.** अदा करते हैं
शुद्ध, यूह 15:3 उसकी वजह से पहले ही **शु.**
प्रेषि 10:15 चीज़ों को जिन्हें परमेश्वर ने **शु.** किया है
2कुरिं 7:1 गंदगी को दूर कर खुद को **शु.** करें
तीतु 1:15 **शु.** लोगों के लिए सबकुछ **शु.** है
तीतु 2:14 **शु.** कर ऐसे लोग बना ले जो खास
इब्रा 9:22 सारी चीज़ें लहू से **शु.** की जाती हैं
याकू 4:8 दुचित्ते लोगो, अपने दिलों को **शु.** करो
1पत 1:22 तुमने खुद को **शु.** किया
1पत 2:2 **शु.** दूध जो वचन में
1यूह 1:7 यीशु का लहू हमें **शु.** करता है
1यूह 1:9 हमें सभी दुष्ट कामों से **शु.** करेगा
लूका 4:27; प्रेषि 11:9; रोमि 14:20;
इब्रा 9:14; 10:2; याकू 1:27; 4:8.
शुद्ध करने, 2थिस्स 2:13 तुम्हें पवित्र शक्ति से **शु.**
शुद्ध चरित्र, 1तीमु 4:12 **शु.** में मिसाल
शुद्धता, 2कुरिं 6:6 **शु.** से, ज्ञान से
शुद्धिकरण, यूह 2:6; 3:25.
शुरू, प्रेषि 15:7 **शु.** के दिनों से परमेश्वर ने
2कुरिं 8:10 एक साल बीत चुका, यह काम **शु.** किया
शुरूआत, मत्ती 13:35 **शु.** से छिपी रही
मर 6:7 उन्हें भेजने की **शु.** की
2कुरिं 8:6 तीतुस ने **शु.** की थी
फिलि 1:6 जिसने भले काम की **शु.** की
कुलु 1:18 **शु.** है, पहिलौठा है
1पत 1:20 दुनिया की **शु.** के पहले से चुन लिया
1यूह 1:1 जो **शु.** से था
प्रका 13:8 वध किए गए, दुनिया की **शु.** से
मत्ती 24:8; 25:34; मर 10:6; यूह 17:24; इफि
1:4; इब्रा 4:3; प्रका 1:8; 3:14; 21:6; 22:13.
शेखी, 1कुरिं 1:29 ताकि कोई इंसान **शे.** न मार सके
1कुरिं 1:31 जो **शे.** मारता है, वह यहोवा की वजह से
2कुरिं 9:3; इफि 2:9.
शेत, लूका 3:38.
शेम, लूका 3:36.
शेर/शेरों, इब्रा 11:33 **शे.** का मुँह बंद किया
1पत 5:8 शैतान गरजते हुए **शे.** की तरह घूम रहा
प्रका 5:5 यहूदा के गोत्र का **शे.**
शैतान, मत्ती 12:26 अगर **शै.** ही **शै.** को निकाले, तो
मत्ती 16:23 **शै.** मेरे सामने से दूर हो जा!
मर 1:13 चालीस दिन तक **शै.** उसकी परीक्षा लेने
लूका 10:18 मैं देखता हूँ कि **शै.** आकाश से गिर चुका
लूका 22:3 **शै.** यहूदा में समा गया जो इस्करियोती
यूह 8:44 अपने पिता **शै.** से हो
रोमि 16:20 परमेश्वर **शै.** को तुम्हारे पैरों तले
1कुरिं 5:5 उस आदमी को **शै.** के हवाले कर दो
2कुरिं 2:11 **शै.** हम पर हावी न हो
2कुरिं 6:15 मसीह और **शै.** के बीच?
2कुरिं 11:14 **शै.** रूप धारण करता है
2कुरिं 12:7 शरीर में काँटा, **शै.** का दूत
इफि 4:27 न **शै.** को मौका दो
इफि 6:11 **शै.** के खिलाफ डटे रह सको
1थिस्स 2:18 मगर **शै.** ने हमारा रास्ता रोका
इब्रा 2:14 **शै.** को मिटा दे
याकू 4:7 मगर **शै.** का सामना करो, भाग जाएगा
1पत 5:8 तुम्हारा दुश्मन **शै.**, घूम रहा है
1यूह 3:8 **शै.** शुरूआत से पाप करता रहा है
1यूह 3:8 कि **शै.** के कामों को नष्ट कर दे
प्रका 2:9 जो **शै.** के दल के हैं
प्रका 12:9 साँप जो इब्लीस और **शै.** कहलाता है
प्रका 12:12 हाय, क्योंकि **शै.** नीचे आ गया है
प्रका 20:2 जो इब्लीस और **शै.** है, पकड़ लिया
प्रका 20:2 **शै.**, हज़ार साल के लिए उसे बाँध दिया

प्रका 20:7 **शै.** को उसकी कैद से आज़ाद किया
मत्ती 4:1, 8, 10; 25:41; मर 4:15; यूह 13:2; प्रेषि 26:18; 2थिस्स 2:9; यहू 9.
शैतानी, याकू 3:15 दुनियावी, शारीरिक, **शै.**
शोक, यूह 16:20 तुम्हारा **शो.** खुशी में बदल जाएगा
शोभा, 1कुरिं 12:23 जो हिस्से कुरूप हैं उनकी **शो.**
शोभा बढ़ा सकें, तीतु 2:10 परमेश्वर की शिक्षा की **शो.**
श्रद्धा, इब्रा 12:28 परमेश्वर के लिए भय और **श्र.**
2थिस्स 2:4.
श्रेय, 2कुरिं 12:6 बढ़कर **श्रे.** मेरे खाते में न जोड़े
श्रेष्ठ, इब्रा 1:4; 8:6.

स

संकट, मत्ती 24:21 ऐसा महा-**सं.** जैसा न अब तक हुआ
रोमि 12:12 **सं.** में धीरज धरो
प्रका 7:14 जो महा-**सं.** से निकलकर बाहर आए हैं
संकटों से भरा वक्त, 2तीमु 3:1 **सं.** आएगा
सँकरा, मत्ती 7:14 **सँ.** है वह फाटक
संख्या, प्रका 13:18 जानवर की **सं.** का हिसाब लगाए
प्रका 13:17.
संगति, प्रेषि 17:4 विश्वासी बन गए और **सं.**
संगी नागरिक, इफि 2:19 तुम **सं.** हो
संगी वारिस, रोमि 8:17 मसीह के **सं.**
इफि 3:6 दूसरी जातियों के लोग **सं.** हों
संघर्ष, लूका 13:24 जी-तोड़ **सं.** करो
फिलि 1:30 तुम्हारा वैसा **सं.** है
कुलु 2:1 जान लो कि कितना कड़ा **सं.** कर रहा हूँ
1थिस्स 2:2 **सं.** करते हुए तुम्हें सुना सकें
इब्रा 12:4.
संतान, प्रेषि 17:28.
संतोष, फिलि 4:11 **सं.** करना सीख लिया
1तीमु 6:6 परमेश्वर की भक्ति, जो है उसी में **सं.** करें
1तीमु 6:8 उसी में **सं.** करना चाहिए
संदूक, प्रका 11:19.
संदेश, रोमि 10:8 **सं.**, विश्वास से स्वीकार किया जाता
1यूह 1:5; 3:11.
संध्या भोज, 1कुरिं 11:20 प्रभु के **सं.** पर खाना
संपत्ति, लूका 15:13 बेटे ने **सं.** उड़ा दी
1पत 2:9 खास **सं.** बनने के लिए चुने गए लोग
1पत 5:3 जो परमेश्वर की **सं.** हैं
लूका 14:33, 15:12.
संभालता, इब्रा 1:3 सब चीज़ों को **सं** है
संभाले, रोमि 11:18 बल्कि जड़ तुझे **सं.** हुए है
संयम, प्रेषि 24:25 नेकी और **सं.**
1कुरिं 7:5 तुम्हारे **सं.** की कमी
1कुरिं 9:25 प्रतियोगिता में हिस्सा लेनेवाला **सं.** से काम
1कुरिं 7:9; गला 5:23; 2पत 1:6.
संयम बरतनेवाला, तीतु 1:8.
संरक्षक, गला 3:24 कानून मसीह तक ले जानेवाला **सं.**
सँवारती, 1पत 3:5 पवित्र स्त्रियाँ खुद को **सँ.**
सख्ती, रोमि 11:22 जो गिर गए उनके साथ **स.** बरती
2कुरिं 10:2 **स.** न बरतनी पड़े
तीतु 1:13 उन्हें **स.** से ताड़ना देता रह
सचमुच, यूह 7:28 जिसने मुझे भेजा वह **स.** है
सच्चाई, यूह 4:24 पवित्र शक्ति और **स.** से उपासना
यूह 8:32 **स.** को जानोगे और **स.** तुम्हें आज़ाद करेगी
यूह 14:6 मैं ही राह, **स.** और जीवन हूँ
यूह 17:17 **स.** से पवित्र कर। तेरा वचन सच्चा है
यूह 18:37 **स.** की गवाही दूँ
प्रेषि 17:31 **स.** से जगत का न्याय करनेवाला है
1कुरिं 5:8 सीधाई और **स.** की रोटियों
2कुरिं 13:8 हम **स.** के खिलाफ कुछ नहीं कर सकते
इफि 6:14 **स.** से अपनी कमर कसकर
2थिस्स 2:10 **स.** से प्यार नहीं किया
1तीमु 2:7 विश्वास और **स.** में, गैर-यहूदियों का शिक्षक
1तीमु 3:15 **स.** के लिए खंभा और सहारा
2तीमु 2:15 **स.** के वचन को सही तरह से इस्तेमाल
इब्रा 10:26 **स.** का सही ज्ञान
2पत 1:12 उस **स.** में मज़बूती से कायम हो
यूह 8:44; रोमि 1:25; 2तीमु 3:7.
सच्चा/सच्चे, यूह 3:33 मुहर लगायी कि परमेश्वर **स.** है
यूह 4:23 **स.** उपासक पवित्र शक्ति और सच्चाई से
रोमि 3:4 परमेश्वर **स.** साबित होता है, चाहे इंसान
2कुरिं 6:8 धोखा देनेवाले, मगर **स.**
1तीमु 1:2 विश्वास में **स.** बेटा
1पत 2:23 जो **स.** न्याय करता है
प्रका 3:14 विश्वासयोग्य और **स.** गवाह
यूह 17:3; 1यूह 5:20; प्रका 19:11.
सच्चे दिल, फिलि 2:20 **स.** से परवाह करेगा
सज-धज, मत्ती 6:29; प्रका 17:4; 19:8.
सजना-सँवरना, 1पत 3:3 तुम्हारा **स.** ऊपरी न हो
सज़ा, मत्ती 23:33 गेहन्ना की **स.** से कैसे भाग सकोगे?
यूह 3:18 उस पर **स.** हो चुकी
यूह 5:29 दुष्ट कामों में लगे, जी उठना **स.** पाने
प्रेषि 4:21 उन्हें **स.** देने की वजह न मिली
प्रेषि 22:5 **स.** दिलाने के लिए यरूशलेम

प्रेषि 26:11 उन्हें बार-बार **स.** दिलाकर
रोमि 5:18 अंजाम यह हुआ कि **स.** के लायक
रोमि 8:3 शरीर में पाप को **स.** का हुक्म सुनाया
1कुरिं 11:29 और पीता है तो खुद पर **स.** लाता है
2कुरिं 10:6 हर इंसान को **स.** देने
1थिस्स 4:6 यहोवा है जो **स.** देता है
इब्रा 2:2 न्याय के मुताबिक **स.** मिली
इब्रा 13:4 शादी के बाहर यौन-संबंध रखनेवालों को **स.**
यहू 7 हमेशा जलनेवाली आग से नाश होकर **स.** पायी
रोमि 8:1, 34; इब्रा 11:7; यूह 3:17; यहू 6.
सज़ा का कारण, रोमि 11:9 और **स.**
सजाया, लूका 21:5 मंदिर, पत्थरों से **स.** गया है
सड़कें, मत्ती 3:3 उसकी **स.** सीधी करो
सड़कों, मत्ती 22:9 शहर से बाहर निकलनेवाली **स.** पर
सड़/सड़ा, मत्ती 7:18 न **स.** हुआ पेड़, बढ़िया फल
मत्ती 12:33 **स.** हुआ पेड़, फल भी **स.** हुआ
याकू 5:2 तुम्हारी धन-दौलत **स.** गयी और
सड़ा घाव, 2तीमु 2:17 जैसे **स.**, वैसे फैलती जाएँगी
सतर्क, मत्ती 10:16 साँपों की तरह **स.**
सताए जानेवाले, प्रेषि 7:24 **स.** का बदला
सताए हुओं, प्रेषि 10:38.
सत्कार, याकू 2:25 राहाब ने दूतों का **स.** किया
सत्तर, लूका 10:1 **स.** और चेले, उन्हें भेजा
सदा के लिए, इब्रा 7:3 **स.** एक याजक बना रहता
इब्रा 10:12, 14.
सदूकी, मत्ती 3:7; 22:23; प्रेषि 23:6-8.
सदोम, मत्ती 10:15 **स.** का हाल सहने लायक
प्रका 11:8 लाक्षणिक अर्थ में **स.** कहलाता है
2पत 2:6; यहू 7.
सद्‌गुण, फिलि 4:8 जो **स.** पर ध्यान देते रहो
2पत 1:3 हमें महिमा और **स.** से बुलाया
2पत 1:5 अपने विश्वास में **स.** और **स.** में
सन्नाटा, मत्ती 8:26.
सपने, प्रेषि 2:17.
सपाट, लूका 3:5 हर एक पहाड़ी **स.** कर दी जाए
सफाई, लूका 12:11 अपनी **स.** पेश करने के लिए
प्रेषि 19:33; 2कुरिं 12:19.
सफीरा, प्रेषि 5:1 हनन्याह और उसकी पत्नी **स.**
सफेद, प्रका 7:14 चोगे **स.** किए
मत्ती 5:36; प्रका 2:17; 7:9; 20:11.
सफेदी पुती, मत्ती 23:27; प्रेषि 23:3.
सबके ऊपर, रोमि 9:5 परमेश्वर **स.** है, धन्य हो
सबके सामने पढ़ाई, प्रेषि 13:15; 1तीमु 4:13.
सब लोगों के सामने, रोमि 10:10 **स.** विश्वास का ऐलान
कुलु 2:15 **स.** उनकी नुमाइश
सबसे छोटा, मत्ती 2:6 **स.** नहीं
मर 9:35; 1कुरिं 15:9.
सबसे बड़ा, 1तीमु 1:15 पापियों में **स.** मैं
सबूत, प्रेषि 25:7 **स.** नहीं दे सकते
2कुरिं 2:9 लिख रहा हूँ कि **स.** पा सकूँ
2थिस्स 1:5 सच्चे न्याय का **स.**
इब्रा 11:1 विश्वास, साफ **स.** है
प्रेषि 1:3; फिलि 2:22.
सब्त, मत्ती 12:8 **स.** का प्रभु
मत्ती 24:20 भागना **स.** के दिन न हो
मर 2:27 **स.** इंसान के लिए बना है, न कि
कुलु 2:16 कोई भी **स.** के मामले में तुम्हारा न्यायी न
इब्रा 4:9 लोगों के लिए **स.** का विश्राम बाकी है
लूका 14:5.
सब्त के दिन की यात्रा, प्रेषि 1:12.
सब्र, इब्रा 6:12 विश्वास और **स.** से वारिस
याकू 5:7 भाइयो, **स.** दिखाओ
2पत 3:15 हमारे प्रभु का **स.** उद्धार
इब्रा 6:15; याकू 5:10; 1पत 3:20; 2पत 3:9.
सभा, प्रेषि 19:39.
सभा-घर के अधिकारी, मर 5:22;
लूका 8:49; 13:14; प्रेषि 13:15; 18:8.
सभा-घर, यूह 18:20 मैं **स.** में सिखाया करता था
मत्ती 23:6; प्रेषि 17:17; 18:26.
सभा-भवन, प्रेषि 19:9 तरन्नुस के स्कूल के **स.**
समझ, मर 13:14 हरगिज़ इसके मायने न **स.** पाओगे
1कुरिं 14:9 बोली जो आसानी से **स.** आ सके
इफि 1:8 हमें **स.** के रूप में बहुतायत में दी
इफि 3:4 मैं कैसी **स.** रखता हूँ
इफि 3:18 **स.** सको
2तीमु 2:7 प्रभु तुझे सब बातों की गहरी **स.** देगा
समझ की रौशनी, इफि 1:18 तुम्हें **स.** दी
समझता, गला 6:3.
समझदार, मत्ती 7:24 **स.** आदमी ने घर चट्टान पर
मत्ती 25:2 पाँच मूर्ख थीं, पाँच **स.**
रोमि 12:16 अपनी नज़र में खुद को **स.** न समझो
रोमि 11:25; याकू 3:13.
समझने, 1कुरिं 14:20 सोचने-**स.** की काबिलीयत में
समझा, यूह 11:13 चेलों ने **स.** कि वह
फिलि 3:7 मसीह की खातिर नुकसान **स.**
इब्रा 11:26 **स.** कि अभिषिक्त के नाते निंदा

समझाए, प्रेषि 8:31 जब तक कोई मुझे न **स.**
समझाता, 1कुरिं 14:26 **स.** है, यह सब कुछ किया जाए
समझाते, 2थिस्स 3:15 भाई के नाते उसे **स.** रहो
कुलु 3:16; 1थिस्स 5:12.
समझाना, मत्ती 16:3 तुम मतलब **स.** जानते हो
समझाने, 1कुरिं 12:10 भाषाओं का अनुवाद कर **स.** का
समझा-बुझा, तीतु 3:10 चेतावनी देकर **स.**
समझें, 1कुरिं 4:1 लोग हमें ऐसे **स.**
समझते, 2कुरिं 10:2 जो **स.** हैं कि हम शरीर की
समझे, यूह 20:9 शास्त्र की बात नहीं **स.**
1कुरिं 11:29 अगर वह शरीर को **स.** बिना
1तीमु 5:17 प्राचीन दुगुने आदर के योग्य **स.** जाएँ
रोमि 1:20; 12:3.
समझो, रोमि 6:11 खुद को मरा हुआ **स.**
फिलि 2:3 दूसरों को खुद से बेहतर **स.**
समझौता, 2कुरिं 6:16 मूर्तियों के साथ क्या **स.**?
समय/समयों, मत्ती 16:3 **स.** की निशानियों को नहीं
प्रेषि 1:7 **स.** की जानकारी पाने की तुम्हें ज़रूरत नहीं
1थिस्स 5:1 **स.** के बारे में तुम्हें ज़रूरत नहीं
प्रका 12:14 एक **स.**, दो **स.** और आधे **स.**
समर्थन, लूका 23:51 **स.** नहीं दिया था
प्रेषि 8:1 शाऊल, हत्या का **स.**
प्रेषि 26:10 मैं उनके खिलाफ अपना **स.** देता था
समर्पण, यूह 10:22.
समर्पित, मर 7:11 परमेश्वर को **स.** भेंट
लूका 21:5 **स.** चीज़ों से सजाया
समान, गला 4:25 हाजिरा के **स.** है
समानता, रोमि 6:5 उसकी मौत की **स.** में एक हुए
समायी, 2कुरिं 10:4 गहराई तक **स.** हुई बातों को
समुद्र, लूका 21:25 **स.** के गरजने और उसकी
1कुरिं 10:2 **स.** के बीच बपतिस्मा लिया
यहू 13 **स.** की भयानक लहरें, झाग उछालते हैं
प्रका 20:13 **स.** ने मरे हुओं को जो उसमें थे, दे दिया
प्रका 21:1 मिट चुके और **स.** न रहा
सम्मान, फिलि 1:29 तुम्हें यह **स.** दिया गया
2पत 1:1 विश्वास, हमारे जैसा **स.**
सम्राट, मर 12:17 जो **स.** का है वह **स.** को चुकाओ
लूका 23:2 **स.** को कर देने से मना करता है
यूह 19:15 **स.** को छोड़ हमारा कोई राजा नहीं
मत्ती 22:17; लूका 2:1; 20:25; यूह 19:12.
सम्राट से फरियाद, प्रेषि 25:11; 28:19.
सयाने, 1कुरिं 14:20 काबिलीयत में **स.**
सयाने और समझदार, 1कुरिं 2:6 जो **स.** हैं,
फिलि 3:15 सभी जो **स.** हैं
सरकंडा, मत्ती 11:7; 27:29.
सरकार, इफि 1:21 हर **स.** और अधिकार से कहीं ऊपर
सरकारों, इफि 6:12 कुश्ती **स.** से जो स्वर्गीय स्थानों
तीतु 3:1 **स.** और अधिकारियों की आज्ञा मानें
इफि 3:10; कुलु 1:16.
सरकारें, रोमि 8:38 न स्वर्गदूत, न **स.**
सरदार, लूका 22:4; प्रेषि 4:1; 5:24, 26.
सरेआम, यूह 7:13; 18:20; प्रेषि 20:20.
सरेआम ऐलान, इब्रा 13:15 होठों का फल जो **स.**
सर्दियों के मौसम, मत्ती 24:20 तुम्हारा भागना न **स.** में
सर्वनाश, मत्ती 7:27; गला 5:15.
सर्वशक्तिमान, प्रका 16:14 **स.** परमेश्वर के महान दिन
प्रका 1:8; 11:17.
सलामत, प्रेषि 15:29 **स.** रहो!
सलाह देनेवाला, रोमि 11:34 कौन उसे **स.** हुआ?
सलाह-मशविरा, मत्ती 27:1 मरवा डालने के लिए **स.**
गला 1:16 इंसान के पास **स.** करने नहीं
सलीकेदार, 1तीमु 2:9 **स.** कपड़ों से सिंगार
सलोमी, मर 15:40; 16:1.
सवाल, 1तीमु 1:4 झूठी कहानियों से **स.** उठते हैं
मत्ती 22:46; प्रेषि 23:29.
सह, इब्रा 12:7 अनुशासन पाने के लिए **स.** रहे हो
सहकर्मी, 1कुरिं 3:9 हम परमेश्वर के **स.** हैं
फिलि 4:3 सच्चे **स.**, करता रह
कुलु 4:11 परमेश्वर के राज के लिए मेरे **स.**
सहते रहो, इफि 4:2 एक-दूसरे की **स.**
सहनशील, 1कुरिं 13:4 प्यार **स.** और कृपा करनेवाला
रोमि 2:4; गला 5:22; इफि 4:2; कुलु 3:12.
सहनशीलता, रोमि 9:22 परमेश्वर ने **स.** के साथ
1थिस्स 5:14 सबके साथ **स.** से पेश आओ
2तीमु 4:2 **स.** और सिखाने की कला के साथ
सहयोग, 1कुरिं 16:16 जो **स.** देते हैं
रोमि 8:28; इफि 4:16.
सह लेते, 1कुरिं 4:12 वे ज़ुल्म करते हैं, हम **स.** हैं
सहायक सेवक, फिलि 1:1; 1तीमु 3:8.
सही, मर 12:14 कर देना **स.** है या नहीं
लूका 20:22 सम्राट को कर देना **स.**?
याकू 3:10 ऐसा होते रहना **स.** नहीं
याकू 4:17 **स.** काम करना जानता है फिर भी
मत्ती 3:15; 1कुरिं 11:13; इब्रा 2:10; 7:26.
सही काम की वजह से, मत्ती 5:10.

सही ज्ञान, रोमि 10:2 जोश, **स.** के मुताबिक नहीं
इफि 4:13 विश्वास और **स.** में एकता हासिल
फिलि 1:9 **स.** पूरी परख-शक्ति के साथ बढ़ता जाए
कुलु 1:9 उसकी मरज़ी के बारे में **स.** से भरपूर
1तीमु 2:4 उद्धार हो और सच्चाई का **स.** हासिल करें
2तीमु 3:7 सच्चाई का **स.** कभी हासिल नहीं
इब्रा 10:26 **स.** पाने के बाद अगर हम जानबूझकर
रोमि 1:28; 3:20; कुलु 3:10; 2तीमु 2:25; 2पत 2:20.
सही तरह, 2तीमु 2:15 सच्चाई को **स.** से इस्तेमाल
सही राह दिखानेवाले, 1कुरिं 12:28.
सही वक्त पर, 1पत 5:6 परमेश्वर, **स.** तुम्हें ऊँचा करे
सहें, रोमि 15:1 मज़बूत हैं चाहिए कि हम कमज़ोरियाँ **स.**
साँप/साँपों, मत्ती 10:16 **साँ.** की तरह सतर्क
मत्ती 23:33 **साँ.** और ज़हरीले **साँ.** के संपोलो
यूह 3:14 मूसा ने **साँ.** को ऊँचे पर चढ़ाया, उसी तरह
प्रका 12:9 अजगर, पुराना **साँ.**, फेंक दिया गया
प्रका 20:2 अजगर, पुराने **साँ.** को पकड़ लिया
मत्ती 3:7; 12:34; 2कुरिं 11:3.
साँसें, प्रेषि 17:25.
साग-सब्ज़ी, रोमि 14:2 जो कमज़ोर है **सा.** खाता है
इब्रा 6:7 ज़मीन **सा.** उपजाती है
साज़िश, लूका 23:51 **सा.** में समर्थन नहीं दिया
प्रेषि 23:13.
साझा, प्रेषि 4:32 सब चीज़ों में **सा.** था
प्रेषि 2:44; तीतु 1:4.
साझेदार, 1कुरिं 1:9 मसीह के साथ **सा.** होने के लिए
गला 6:6 जो शिक्षा पा रहा है, वह **सा.** बनाए
1पत 4:13 तुम मसीह की दुःख-तकलीफों में **सा.** हो
1पत 5:1 उस महिमा का **सा.** जो प्रकट होनेवाली है
2पत 1:4 ईश्वरीय स्वभाव में **सा.** बन सको
मत्ती 23:30; फिलि 1:7; 1यूह 1:3, 6, 7.
साझेदारी, 2कुरिं 6:14.
सात, प्रका 1:4 **सा.** पवित्र शक्तियों, राजगद्दी के सामने
प्रका 1:20 **सा.** तारे और सोने के **सा.** दीपदान
प्रका 13:1 दस सींग और **सा.** सिर थे
प्रका 15:6 **सा.** कहर लिए **सा.** स्वर्गदूत
प्रका 17:10 **सा.** राजाः पाँच गिर चुके
प्रेषि 6:3; प्रका 17:1.
सात बार, मत्ती 18:22 **सा.** तक नहीं, बल्कि
साथ, 1कुरिं 7:24 परमेश्वर के **सा.** बना रहे
साथ ले जाएँ, 1कुरिं 9:5.
साथियों, लूका 5:7; इब्रा 1:9.
साफ, मत्ती 5:8 सुखी हैं वे जो दिल के **सा.** हैं,
मत्ती 23:25; 1तीमु 1:5; 2तीमु 2:22.
साफ न हो, 1कुरिं 14:8 तुरही की पुकार **सा.**
साफ-साफ, मर 7:35 **सा.** बोलने लगा
साफ-साफ देखा जा सके, लूका 17:20 नहीं कि **सा.**
साबित, 1कुरिं 3:13 आग **सा.** करेगी कि काम कैसा है
मत्ती 18:16.
सामना, याकू 4:6 परमेश्वर घमंडियों का **सा.** करता है
याकू 4:7 शैतान का **सा.** करो और वह भाग जाएगा
प्रका 12:8 **सा.** न कर सका, जगह न रही
सामने, इब्रा 9:24 मसीह, परमेश्वर के **सा.**
सामरी/सामरियों, लूका 10:33 मगर एक **सा.**
यूह 4:9 यहूदी, **सा.** से कोई नाता नहीं रखते
लूका 17:16; प्रेषि 8:25.
सामर्थ, लूका 1:35.
सामान, मत्ती 12:29 उसके **सा.** पर कब्ज़ा
साम्राज्य, कुलु 1:16;
सारा, इब्रा 11:11 विश्वास से **सा.** ने शक्ति पायी
1पत 3:6 **सा.** अब्राहम की आज्ञा मानती
रोमि 9:9.
सारी ज़िंदगी, लूका 16:25 **सा.** बढ़िया-बढ़िया चीज़ें
साल, गला 3:17 चार सौ तीस **सा.** बाद
2पत 3:8 एक हज़ार **सा.** एक दिन के
प्रका 20:4, 6 राजा बनकर हज़ार **सा.** तक राज
सावधान, मत्ती 10:17 लोगों से **सा.** रहो
सास, मत्ती 8:14; 10:35; मर 1:30.
साहस, इब्रा 10:19.
साहूकारों, मत्ती 25:27 **सा.** के पास जमा
सिंगार, 1तीमु 2:9 स्त्रियाँ मर्यादा के साथ **सिं.** करें
प्रका 21:2 दुल्हन अपने दूल्हे के लिए **सिं.** करती है
सिकंदर, प्रेषि 19:33; 1तीमु 1:20; 2तीमु 4:14.
सिक्के, मत्ती 26:15 उसे चाँदी के तीस **सि.**
मत्ती 25:18; मर 14:11.
सिखा, मत्ती 7:29 ऐसे इंसान की तरह **सि.** रहा था
प्रेषि 4:2 चिढ़ गए कि लोगों को **सि.** रहे हैं
1कुरिं 4:17 जिन तरीकों से मैं जगह-जगह **सि.** रहा हूँ
सिखाएगा, यूह 14:26 पवित्र शक्ति, तुम्हें सारी बातें **सि.**
सिखाओ, मत्ती 28:20 उन्हें वे सारी बातें मानना **सि.**
सिखाता/सिखाते, मत्ती 15:9 शिक्षाएँ बताकर **सि.** हैं
प्रेषि 18:25 सही-सही बोलता और **सि.**
यूह 7:16 जो मैं **सि.** हूँ, मेरी तरफ से नहीं
प्रेषि 5:42 बिना नागा घर-घर **सि.**
सिखाते और समझाते, कुलु 1:28.

सिखाने, मर 6:6 गाँव-गाँव घूमकर **सि.** लगा
प्रेषि 20:20 तुम्हें सरेआम और घर-घर जाकर **सि.**
रोमि 12:7 जिसे **सि.** का वरदान मिला है, वह
2तीमु 2:2 **सि.** के लिए ज़रूरत के हिसाब से योग्य
2तीमु 3:16 पूरा शास्त्र **सि.** के लिए फायदेमंद
इब्रा 5:12 वक्त के हिसाब से तुम्हें **सि.** के काबिल
मत्ती 11:1; 1तीमु 2:12.
सिखाने का तरीका, मत्ती 7:28; लूका 4:32.
सिखाने की कला, 2तीमु 4:2; तीतु 1:9.
सिखाने की काबिलीयत, 2तीमु 2:24 **सि.** रखता हो
1तीमु 3:2.
सिखानेवाले, 1कुरिं 4:15 मसीह में **सि.** दस हज़ार हों
सिखाया, यूह 8:28 जैसा पिता ने मुझे **सि.** मैं बताता हूँ
सिद्ध, मत्ती 5:48 **सि.** बनो, जैसे तुम्हारा पिता **सि.** है
रोमि 12:2 मालूम करते रहो परमेश्वर की **सि.** इच्छा
इब्रा 2:10 दुःख सहने के ज़रिए **सि.** बनाए
फिलि 3:12.
सियासी चाल, प्रेषि 7:19 हमारी जाति के खिलाफ **सि.**
सिय्योन, मत्ती 21:5 **सि.**, 'देख! तेरा राजा आ रहा है
रोमि 11:26 छुड़ानेवाला **सि.** से आएगा
रोमि 9:33; 1पत 2:6.
सिय्योन पहाड़, इब्रा 12:22 **सि.** और नगरी
प्रका 14:1 मेम्ना **सि.** पर खड़ा
सिर, मत्ती 8:20 कहीं **सि.** टिकाने की जगह नहीं
लूका 21:28 **सि.** उठाकर, छुटकारे का वक्त पास
प्रेषि 18:6 तुम्हारा खून तुम्हारे **सि.** पर पड़े
रोमि 12:20 उसके **सि.** पर अंगारों का ढेर लगाएगा
1कुरिं 11:10 अपने **सि.** पर अधीनता की निशानी
कुलु 1:18 वही शरीर का **सि.** है
कुलु 2:19 **सि.** के साथ मज़बूती से जुड़ा नहीं रहता
1कुरिं 11:3; प्रका 12:1; 13:3.
सिर कटवा दिया, मत्ती 14:10; मर 6:16; लूका 9:9.
सिरजनहार, 1पत 4:19.
सिरजी गयीं, कुलु 1:16 सब चीज़ें **सि.**
इफि 2:10.
सिलसिलेवार, लूका 1:3 **सि.** ढंग से लिख
सिलोम, लूका 13:4; यूह 9:7, 11.
सींग, प्रका 17:12 दस **सीं.** उनका मतलब दस राजा हैं
सीख, रोमि 15:14.
सीख देकर उकसा, 2तीमु 4:2 सहनशीलता के साथ **सी.**
सीख देकर उकसाऊँ, यहू 3 **सी.** कि तुम जी-जान से
सीख देकर उकसाता, 1थिस्स 2:11 हरेक को **सी.** रहे
1तीमु 6:2 **सी.** रह
तीतु 2:15 **सी.** रह और ताड़ना देता रह
इब्रा 3:13 हर दिन एक-दूसरे को **सी.** रहो
सीख देकर सुधार, तीतु 2:4 स्त्रियों को **सी.** सकें
सीख/सीखे, 1कुरिं 14:31; 1तीमु 2:11.
सीखीं, फिलि 4:9 बातें तुमने **सी.**, उनका पालन
सीखी, इब्रा 5:8 दुःख सह-सहकर आज्ञा माननी **सी.**
सीदोन, मत्ती 11:21; मर 3:8; प्रेषि 12:20; 27:3.
सीधाई, प्रेषि 2:46 आनंद और मन की **सी.**
1कुरिं 5:8 **सी.** और सच्चाई की बिन-खमीर की रोटियों
2कुरिं 1:12 ऐसी **सी.** से रहे जो परमेश्वर सिखाता है
2कुरिं 2:17 **सी.** से, हाँ, परमेश्वर से भेजे हुओं के नाते
इफि 6:5 दिल की **सी.** के साथ आज्ञा मानो
कुलु 3:22.
सीधा, यूह 1:23 यहोवा का मार्ग **सी.** करो
इब्रा 12:13 अपने कदमों के लिए **सी.** रास्ता बनाते
सीधे, मत्ती 10:16 कबूतरों की तरह **सी.**
लूका 3:5 टेढ़े-मेढ़े रास्ते **सी.**
सीधी चाल, गला 5:25 आओ हम **सी.** चलते रहें
सीधे-सादे, रोमि 16:18.
सीने, यूह 13:23.
सीनै, प्रेषि 7:30, 38.
सीनै पहाड़, प्रेषि 7:30.
सीलास, प्रेषि 15:22; 16:19; 17:4; 18:5.
सुंदर, रोमि 10:15 उनके पाँव कितने **सुं.** हैं
इब्रा 13:23 उन्होंने देखा कि बच्चा **सुं.** है
सुअर/सुअरों, मत्ती 7:6 न मोती **सु.** के आगे फेंको
लूका 15:15 निवासी ने उसे **सु.** चराने भेजा
मत्ती 8:30; मर 5:11; लूका 8:33.
सुई के छेद, मत्ती 19:24; मर 10:25.
सुख, इब्रा 11:25 पाप का चंद दिनों का **सु.**
याकू 5:5 तुम शरीर के **सु.** भोगने में लगे रहे
तीतु 3:3.
सुखद, इब्रा 12:11 अनुशासन **सु.** नहीं लगता
सुखी, मत्ती 5:3 **सु.** हैं वे जिनमें भूख है
मत्ती 24:46 **सु.** होगा वह दास अगर उसका मालिक
यूह 13:17 अगर तुम ऐसा करते हो तो **सु.** हो तुम
1पत 3:14 नेकी की खातिर दुःख उठाते हो तो **सु.** हो
1पत 4:14 तुम **सु.** हो, क्योंकि पवित्र शक्ति
लूका 12:37; याकू 1:12.
सुगंध, 2कुरिं 2:15 परमेश्वर के सामने हम **सु.** हैं
इफि 5:2 परमेश्वर के सामने **सु.** देनेवाली भेंट
सुधार, प्रेषि 24:2 इस जाति में **सु.** हो रहे हैं
सुधारनेवाला, रोमि 2:20 ज़िद्दी लोगों को **सु.**

सुधारूँगा, 1कुरिं 11:34 बातें मैं **सु.**
सुधारे, इब्रा 12:5 जब **सु.**, तो हिम्मत न हार
सुन, मत्ती 13:13 सुनते हुए भी नहीं **सु.** रहे
सुनता/सुनते, मत्ती 7:24 इन बातों को **सु.** है
मत्ती 13:13 **सु.** हुए भी नहीं सुन रहे
लूका 10:16 जो तुम्हारी **सु.** है, मेरी भी **सु.** है
यूह 9:31 परमेश्‍वर पापियों की नहीं **सु.**
यूह 18:37 सच्चाई के पक्ष में है मेरी आवाज़ **सु.** है
मत्ती 13:23; लूका 8:10; यूह 8:47; प्रेषि 9:7; यूह 5:24; 1यूह 5:14; प्रका 3:20.
सुनने लायक नहीं, 2कुरिं 10:10 उसकी बातें **सु.**
सुननेवाला, प्रका 22:17 **सु.** हर कोई कहे: "आ!" और
सुनाऊँ, 1कुरिं 9:16 अगर मैं खुशखबरी न **सु.**
सुनाता, लूका 8:39 पूरे शहर में **सु.**
सुनाते, प्रेषि 8:4 सारे इलाके में खुशखबरी **सु.**
सुनाने, लूका 4:18 खुशखबरी **सु.** के लिए भेजा
सुनानेवालों, 1कुरिं 9:14 खुशखबरी **सु.** की गुज़र-बसर
सुनेंगे, यूह 5:28 सभी जो कब्रों में हैं उसकी आवाज़ **सु.**
रोमि 10:14 उसके बारे में कैसे **सु.** जब तक कोई
सुनो, मत्ती 17:5 मेरा प्यारा, इसकी **सु.**
सुबह, मर 1:35; प्रेषि 28:23.
सुबह का तारा, प्रका 2:28 मैं **सु.** दूँगा
प्रका 22:16 दाविद की जड़, **सु.**
सुरक्षा, 1थिस्स 5:3 कहते होंगे: शांति और **सु.**!
सुरक्षित, 1पत 1:4 तुम्हारे लिए स्वर्ग में **सु.** रखी हुई है
सुर-तान, 1कुरिं 14:7 **सु.** में अंतर
सुर-मंडल, प्रका 15:2.
सुर्ख लाल, मत्ती 27:28.
सुर्ख लाल रंग, प्रका 17:3 **सु.** के जंगली जानवर
सुलह, मत्ती 5:24 अपने भाई के साथ **सु.**
मत्ती 5:25 जल्द-से-जल्द **सु.** कर ले
रोमि 5:10 परमेश्‍वर के साथ हमारी **सु.** हुई
रोमि 5:11 हमारी **सु.** हो चुकी
इफि 2:16 दोनों किस्म के लोगों की **सु.**
कुलु 1:20 उसी के ज़रिए सब चीज़ों की **सु.**
रोमि 11:15; 2कुरिं 5:18, 19.
सुलैमान, मत्ती 6:29 **सु.** अपने पूरे वैभव में
मत्ती 12:42 यहाँ वह है जो **सु.** से भी बड़ा है
प्रेषि 7:47.
सूअरनी, 2पत 2:22 नहलायी-धुलायी **सू.** कीचड़ में
सूख, मत्ती 13:6; 21:19; मर 3:3; 1पत 1:24.
सूची, 1तीमु 5:9 विधवा का नाम **सू.** में लिखा जाए
सूज, प्रेषि 28:6 शरीर **सू.** जाएगा
सूझ-बूझवाले, 1कुरिं 4:10.
सूझ-बूझ से काम लेनेवाला, मत्ती 24:45 **सू.** दास
सूरज, मत्ती 13:43 **सू.** की तरह चमकेंगे
प्रेषि 2:20 **सू.** अंधियारा हो जाएगा
लूका 21:25; प्रका 7:16.
सूरत, मत्ती 22:20 किसकी **सू.** और छाप
यूह 7:24 **सू.** देखकर न्याय करना बंद करो
सूली, मत्ती 20:19 लोग उसे **सू.** पर चढ़ाएँ
मर 15:25 तीसरा घंटा, उन्होंने उसे **सू.** पर चढ़ाया
लूका 23:21 कहने लगे: इसे **सू.** पर चढ़ा दे!
लूका 24:7 पापियों के हाथों **सू.** पर चढ़ाया जाए
यूह 19:6 तुम खुद इसे ले जाकर **सू.** पर चढ़ाओ
प्रेषि 5:30 यीशु, जिसे **सू.** पर लटकाकर
गला 3:13 हर इंसान जो **सू.** पर, शापित है
1पत 2:24 हमारे पाप अपने शरीर पर लिए **सू.** पर
प्रका 11:8 जहाँ उनके प्रभु को भी **सू.** पर चढ़ाकर
मत्ती 23:34; 26:2; मर 15:14; यूह 19:10, 15; रोमि 6:6; 1कुरिं 1:13; गला 2:20; 6:14; इब्रा 6:6.
सृष्टि, रोमि 1:25 सृष्टिकर्ता के बजाय **सृ.** की भक्ति
रोमि 8:20 **सृ.** व्यर्थता के अधीन की गयी
रोमि 8:22 सारी **सृ.** एक-साथ कराहती रहती
2कुरिं 5:17 मसीह के साथ एकता में, वह नयी **सृ.** है
गला 6:15 नयी **सृ.** मायने रखती है
याकू 1:18 उसकी **सृ.** में से पहले फल
प्रका 3:14 परमेश्‍वर की **सृ.** की शुरूआत
कुलु 1:15; 1तीमु 4:4; इब्रा 4:13.
सेंध लगाकर, मत्ती 6:19 चोर **सें.** चुरा लेते हैं
सेज, इब्रा 13:4 शादी की **से.** दूषित न की जाए
सेनाओं, रोमि 9:29 **से.** का यहोवा एक वंश छोड़ता
याकू 5:4 **से.** के यहोवा के कानों तक
सेनाएँ, प्रका 19:14 स्वर्ग की **से.** उसके पीछे-पीछे
मत्ती 22:7; प्रका 9:16.
सेनापति, प्रेषि 21:32.
सेवक, मत्ती 12:18 मेरा **से.** जिसे मैंने चुना, मेरा प्यारा
मर 10:43 जो बड़ा बनना चाहता है, उसे तुम्हारा **से.**
लूका 16:13 कोई भी **से.** दो मालिकों का दास नहीं
यूह 18:36 मेरे **से.**
प्रेषि 4:30 तेरे **से.** यीशु के नाम के ज़रिए
रोमि 13:4 तेरे अच्छे के लिए परमेश्‍वर का **से.** है
रोमि 15:8 मसीह असल में **से.** बना
2कुरिं 3:6 योग्य कि एक नए करार के **से.** बनें

2कुरिं 11:15 उसके **से.** ढोंग करते हैं
1तीमु 4:6 तू मसीह का बढ़िया **से.** ठहरेगा
2तीमु 2:15 ऐसे **से.** की तरह जिसे शर्मिंदा न होना पड़े
1पत 1:12 बल्कि वे तुम्हारे **से.** थे
कुलु 1:23.

सेवकों, 1तीमु 3:10 इन्हें **से.** का काम दिया जाए

सेवा, मत्ती 4:10 सिर्फ उसी की पवित्र **से.** कर
मत्ती 20:28 इंसान का बेटा **से.** करने आया
यूह 16:2 मार डालेगा, सोचेगा कि परमेश्‍वर की **से.** की
प्रेषि 17:25 न ही अपनी **से.** करवाता है
प्रेषि 20:24 **से.** पूरी कर सकूँ
प्रेषि 27:23 जिस परमेश्‍वर की मैं पवित्र **से.** करता हूँ
रोमि 11:13 अपनी **से.** की बड़ाई करता हूँ
रोमि 16:1 हमारी बहन फीबे जो **से.** करती है
1कुरिं 7:35 प्रभु की **से.**
1कुरिं 12:5 **से.** अलग-अलग, प्रभु एक
1कुरिं 12:28 मदद के लिए **से.**
2कुरिं 4:1 दया कि यह **से.** सौंपी गयी
2कुरिं 5:18 हमें सुलह करवाने की **से.** दी
2कुरिं 6:3 **से.** में कोई खामी न पायी जाए
गला 5:13 मगर प्यार से एक-दूसरे की **से.** करो
इब्रा 7:13 वेदी पर **से.**
इब्रा 12:28 भय और श्रद्धा के साथ परमेश्‍वर की **से.**
1तीमु 1:12 मुझे एक **से.** के लिए ठहराया
1तीमु 3:13 जो अच्छी तरह **से.** करते हैं
2तीमु 4:5 अपनी **से.** को अच्छी तरह पूरा कर
इब्रा 1:14 स्वर्गदूत जिन्हें **से.** के लिए भेजा जाता है
प्रका 7:15 दिन-रात उसकी पवित्र **से.**
मत्ती 4:11; 25:44; रोमि 9:4.

सेवा कर रहे, इब्रा 6:10 अब भी **से.** हैं

सेवा का काम, इफि 4:12 सुधार हो और **से.** करें

सेवा की, इब्रा 6:10 तुमने पवित्र जनों की **से.** है

सेवा में, रोमि 13:6 इसी **से.**
2तीमु 2:4 कोई भी आदमी जो सैनिक **से.** है

सैनिक, 2तीमु 2:3 मसीह के एक बढ़िया **सै.** की तरह
यूह 19:23; प्रेषि 10:7; 1कुरिं 9:7.

सोंटे, मत्ती 26:47, 55; लूका 22:52.

सो, मत्ती 13:25 जब लोग **सो.** रहे थे
मत्ती 25:5 ऊँघने लगीं और **सो.** गयीं
1थिस्स 4:13 जो मौत की नींद **सो.** जाते हैं

सोएँ, 1थिस्स 5:6 हम बाकियों की तरह न **सो.**

सोएँगे, 1कुरिं 15:51 सभी मौत की नींद नहीं **सो.**

सो गए, 1कुरिं 15:20 जो मौत की नींद **सो.** हैं उनमें
मत्ती 27:52; प्रेषि 7:60; 13:36; 1कुरिं 15:6, 18;
1थिस्स 4:14; 2पत 3:4.

सोच, मत्ती 16:23 तेरी **सो.** परमेश्‍वर जैसी नहीं, बल्कि
लूका 11:17 जानते हुए कि वे क्या **सो.** रहे हैं
यूह 13:29 कुछ **सो.** रहे थे
इफि 3:20 जितना **सो.** सकते हैं, उससे बढ़कर
कुलु 2:18 अपने मन की शारीरिक **सो.**
प्रका 17:17.

सोचता, 1कुरिं 8:2 **सो.** है कि उसे ज्ञान हासिल
1कुरिं 10:12 जो **सो.** है कि वह खड़ा है, खबरदार रहे

सोचने, फिलि 4:10 फिर से तुम मेरे बारे में **सो.**

सोचने की काबिलीयत, 2पत 3:1 साफ-साफ **सो.**

सोचने के तरीके, 1कुरिं 1:10 **सो.** में एकता

सोचने-समझने की ताकत, फिलि 4:7 **सो.** की हिफाज़त

सोचने-समझने की शक्ति, 2कुरिं 3:14 उनकी **सो.** मंद
2पत 2:12 ऐसे जानवर जिनमें **सो.** नहीं होती

सोच-विचार, रोमि 7:25.

सोचा, मत्ती 24:44 जिस घड़ी तुमने **सो.** भी न होगा

सोची, फिलि 2:6 हथियाने की बात कभी न **सो.**

सोचे, इब्रा 2:6 इंसान क्या है कि तू उसके बारे में **सो.**

सोचो, मत्ती 5:17 मत **सो.** कि मैं रद्द करने आया हूँ

सोता, यूह 4:14 उसके अंदर पानी का **सो.**

सोते, 2पत 2:17 ये ऐसे **सो.** हैं जिनमें पानी नहीं

सोतों, प्रका 7:17 जीवन के पानी के **सो.** तक ले जाएगा
याकू 3:11; प्रका 16:4.

सोने, याकू 5:3 तुम्हारे **सो.** और चाँदी में ज़ंग लग गया
प्रका 21:18, 21.

सोहबत, 1कुरिं 15:33 बुरी **सो.** बिगाड़ देती

सौंप, रोमि 6:13 खुद को परमेश्‍वर को **सौं.** दो
2कुरिं 11:2 तुम्हें एक पवित्र कुँवारी की तरह **सौं.** सकूँ
2तीमु 2:2 वे बातें पुरुषों को **सौं.** दे

सौंपते, 1पत 4:19 वे खुद को **सौं.** रहें

सौंपा, 2कुरिं 5:19 उसने हमें संदेश **सौं.**

सौंपा गया, रोमि 4:25 के लिए **सौं.**

सौंपी जाए, 1थिस्स 2:4 खुशखबरी **सौं.**

सौंपेगा, लूका 16:11 कौन तुम्हें **सौं.**

सौ, मत्ती 18:12 किसी की **सौ** भेड़ें हों

सौ गुना, मत्ती 13:8 किसी में **सौ.**
मर 10:30 जो आज **सौ.** न पाए

सौदा करनेवाले, 2कुरिं 2:17 हम वचन का **सौ.** नहीं

सौदागर, प्रका 18:3 **सौ.** मालामाल हो गए
प्रका 18:11.

सौदागरों, यूह 2:15 **सौ.** को बाहर खदेड़ दिया
स्कूल, प्रेषि 19:9 **स्कू.** के सभा-भवन में भाषण
स्कूलों, यूह 7:15 **स्कू.** में पढ़ाई नहीं की?
स्तरों, 1कुरिं 9:8 इंसान के **स्त.** के मुताबिक
स्तिफनुस, प्रेषि 6:5; 7:59; 8:2; 22:20.
स्तुति, मत्ती 21:16 दूध-पीते बच्चों के मुँह से **स्तु.**
स्त्रियाँ, रोमि 1:26 **स्त्रि.** स्वाभाविक यौन-संबंध छोड़कर
1कुरिं 14:34 **स्त्रि.** चुप रहें
स्त्रियों, तीतु 2:4 **स्त्रि.** को सीख देकर
प्रका 14:4 **स्त्रि.** के साथ खुद को दूषित नहीं किया
मत्ती 11:11; 24:41.
स्त्री, यूह 2:4 हे **स्त्री**, मुझे तुझसे क्या काम?
यूह 19:26 यीशु ने अपनी माँ से कहा: **स्त्री** देख!
1कुरिं 11:3 **स्त्री** का सिर पुरुष है
1कुरिं 11:10 **स्त्री** अधीनता की निशानी रखे
1कुरिं 11:12 जैसे **स्त्री** पुरुष से निकली है
1तीमु 2:11 **स्त्री** शांत रहकर सीखे
1तीमु 2:12 **स्त्री** को सिखाने की इजाज़त नहीं
1पत 3:7 **स्त्री** ज़्यादा नाज़ुक पात्र
प्रका 12:1 एक **स्त्री** सूरज ओढ़े हुए
प्रका 12:17 अजगर **स्त्री** पर क्रोधित हुआ
प्रका 17:3 **स्त्री** जंगली जानवर पर बैठी हुई
स्थिरता, 2पत 3:17 **स्थि.** से गिर न जाओ
स्पंज, मत्ती 27:48; मर 15:36; यूह 19:29.
स्पेन, रोमि 15:24 मैं **स्पे.** के सफर पर
स्मारक कब्र, यूह 5:28 सभी जो **स्मा.** में हैं सुनेंगे
स्मारक कब्रों, मत्ती 23:29 **स्मा.** को सजाते
स्याही, 2कुरिं 3:3 **स्या.** से नहीं बल्कि पवित्र शक्ति से
2यूह 12; 3यूह 13.
स्वच्छ, इफि 5:26 उसे स्नान से **स्व.** कर
स्वभाव, फिलि 2:20 जैसा **स्व.** रखनेवाला दूसरा कोई
कुलु 2:9 में ही ईश्वरत्व का **स्व.** पूरी हद तक है
2पत 1:4 ईश्वरीय **स्व.** में साझेदार
स्वरूप, फिलि 2:6 उसने परमेश्वर के **स्व.** में होते हुए
स्वर्ग, यूह 3:13 **स्व.** नहीं चढ़ा
प्रेषि 2:34 दाविद **स्व.** नहीं गया
इब्रा 3:1 **स्व.** के बुलावे में हिस्सेदार
इब्रा 8:5 **स्व.** की चीज़ों का नमूना
प्रका 12:7 **स्व.** में युद्ध छिड़ गया: मीकाएल
प्रका 19:11 मैंने **स्व.** खुला हुआ देखा और एक
मत्ती 11:11.
स्वर्ग का राज, मत्ती 10:7 **स्व.** पास आ गया है
मत्ती 23:13 तुम लोगों के सामने **स्व.** का दरवाज़ा बंद
स्वर्गदूत, 2कुरिं 11:14 शैतान रौशनी के **स्व.** जैसा रूप
1पत 1:12 **स्व.** झाँककर करीब से देखने की तमन्ना
प्रका 22:6 अपना **स्व.** भेजा ताकि अपने दासों को
स्वर्गदूतों, लूका 24:39 **स्व.** का हाड़-माँस नहीं होता
1कुरिं 4:9 **स्व.** के लिए तमाशा
1कुरिं 6:3 क्या तुम जानते कि हम **स्व.** का न्याय
1पत 3:19 कारावास में पड़े दुष्ट **स्व.** को प्रचार किया
मत्ती 22:30; प्रेषि 5:19; गला 1:8; इब्रा 13:2;
2पत 2:4, 11.
स्वर्गीय, 1कुरिं 15:49 उसकी छवि जो **स्व.** है
इफि 2:6 हमें उसके साथ **स्व.** स्थानों में बिठाया
इब्रा 12:22 सिय्योन पहाड़, **स्व.** यरूशलेम
यूह 3:12; इफि 1:20; 2तीमु 4:18; इब्रा 9:23.
स्वस्थ, इब्रा 12:13 जो कमज़ोर है **स्व.** हो जाए
स्वस्थ मन, 1पत 4:7 **स्व.** और चौकस
स्वागत, लूका 5:29 लेवी ने **स्वा.** में दावत रखी
रोमि 16:2; फिलि 2:29.
स्वाद लिया, इब्रा 6:4 मुफ्त वरदान का **स्वा.**
स्वाभाविक, रोमि 1:27 पुरुषों ने **स्वा.** यौन-संबंध
1कुरिं 11:14; रोमि 1:26.
स्वीकार, मत्ती 9:37 जो **स्वी.** करता है
प्रेषि 24:14 तेरे सामने **स्वी.** करता हूँ
रोमि 14:3 खाता है, परमेश्वर उसे **स्वी.** करता है
2कुरिं 6:1 महाकृपा को **स्वी.** करने के बाद
फिलि 4:9 सीखीं और **स्वी.** कीं
मर 10:15; 1थिस्स 2:13; याकू 1:21.

ह

हंगामा, लूका 21:9; 2कुरिं 6:5; 12:20.
हंगामे, प्रेषि 21:34 इस **हं.** की वजह से
हँस रहे, लूका 6:25 हाय तुम पर जो अभी **हँ.** हो
हँसी, याकू 4:9 **हँ.** मातम में बदल जाए
हक, रोमि 4:4 मज़दूरी उसका **ह.**
रोमि 13:7 जिसका जो **ह.** बनता है, उसे दो
1कुरिं 7:3 पति अपनी पत्नी का **ह.** अदा करे
1कुरिं 9:5 **ह.** कि मसीही बहन से शादी करें
1थिस्स 4:6 कोई **ह.** न मारे
1तीमु 5:4 माता-पिता का **ह.** अदा
हकदार, मत्ती 10:10 काम करनेवाला भोजन का **ह.**
1तीमु 5:18 काम करनेवाला मज़दूरी पाने का **ह.** है
हकलदमा, प्रेषि 1:19 **ह.**, खून की ज़मीन
हकीकत, कुलु 2:17 **ह.** मसीह की है
हक्के-बक्के, मर 9:15.

हज़ार, प्रका 14:1 एक लाख चवालीस **ह.**
हज़ार साल, 2पत 3:8 यहोवा के लिए **ह.**
प्रका 20:2 शैतान को **ह.** के लिए बाँध दिया
प्रका 20:4 मसीह के साथ **ह.** तक राज किया
हज़ारों-हज़ार, इब्रा 12:22.
हटकर, मत्ती 17:20 यहाँ से **ह.** वहाँ जा
हट गए, 2तीमु 2:18 ये आदमी सच्चाई से **ह.**
हटा, 1कुरिं 13:2 पहाड़ों को **ह.**
इब्रा 11:5 विश्वास ही से हनोक को **ह.** दिया गया
हड्डी, यूह 19:36 उसकी एक भी **ह.** नहीं तोड़ी जाएगी
हड्डियों, मत्ती 23:27 मुरदों की **ह.** से भरी
हताश/मायूस, फिलि 2:26; 1थिस्स 5:14.
हत्या, मत्ती 5:21; 5:19; प्रेषि 8:1; याकू 2:11.
हत्यारा, यूह 8:44 शुरूआत से ही **ह.**
1यूह 3:15 अपने भाई से नफरत करता है वह **ह.** है
हत्यारे, प्रेषि 3:14; 7:52.
हथियाने, फिलि 2:6 **ह.** की न सोची
हथियार, रोमि 6:13 नेकी के **ह.**
रोमि 13:12 आओ हम रौशनी के **ह.** धारण कर लें
2कुरिं 6:7 दाएँ हाथ में नेकी के **ह.**
2कुरिं 10:4 हमारे युद्ध के **ह.** शारीरिक नहीं
इफि 6:11 **ह.** बाँध लो
हद-से-ज़्यादा यकीन, 2कुरिं 11:17 **ह.** के साथ
हद-से-ज़्यादा शराब पीने, 1पत 4:3 वासनाओं में, **ह.** में
हद-से-बढ़कर, 2तीमु 4:15.
हनन्याह, प्रेषि 5:1, 5; 9:10; 22:12; 23:2.
हनोक, लूका 3:37; इब्रा 11:5; यहू 14.
हन्ना, लूका 2:36 **ह.** भविष्यवक्तिन
लूका 3:2; यूह 18:13, 24; प्रेषि 4:6.
हमदर्दी, इब्रा 4:15 महायाजक **ह.** रख सके
हमेशा, यूह 17:3 **ह.** की ज़िंदगी के लिए ज़रूरी है
रोमि 5:21 यीशु के ज़रिए **ह.** की ज़िंदगी
2कुरिं 4:18 **ह.** कायम रहती हैं
1पत 5:10 **ह.** कायम रहनेवाली अपनी महिमा
यहू 6 उसने **ह.** के बंधनों में जकड़कर रखा है
मत्ती 25:46; लूका 16:9; रोमि 6:23; 1यूह 5:11.
हर दिन, लूका 19:47 **ह.** मंदिर में सिखाता
प्रेषि 17:11 **ह.** शास्त्र की जाँच
1कुरिं 15:31; इब्रा 7:27.
हर बात में, 1तीमु 3:2 निगरान **ह.** में संयम बरतता हो
1तीमु 3:11 स्त्रियाँ **ह.** में संयम बरतनेवाली हों
तीतु 2:2 बुज़ुर्ग भाई **ह.** में संयम बरतनेवाले हों
हर-मगिदोन, प्रका 16:16 जगह **ह.** कहलाती है
हर वक्त, 1थिस्स 1:3 हम **ह.** याद करते हैं
हर हाल में, 1तीमु 6:9 जो **ह.** अमीर बनना चाहते हैं
हर्ष, प्रका 18:20 हे स्वर्ग, उस पर **ह.** मनाओ
हल, लूका 9:62 **ह.** पर हाथ रखने के बाद
1कुरिं 9:10 जो आदमी **ह.** चलाता है, आशा से **ह.**
हलफई, मत्ती 10:3; मर 3:18; प्रेषि 1:13.
हलेलूय्याह। याह का गुणगान करो देखें।
हवा, इफि 2:2 अधिकार पर राज करता जो **ह.** की तरह
1थिस्स 4:17 उठा लिए जाएँगे ताकि **ह.** में प्रभु से मिलें
हवाओं, प्रका 7:1 पृथ्वी की चारों **ह.** को मज़बूती से थामे
यूह 3:8; 1कुरिं 9:26; 14:9; प्रका 9:2; 18:2.
हवाले, मत्ती 10:17; 11:27; लूका 4:6.
हव्वा, 2कुरिं 11:3; 1तीमु 2:13.
हश्र, 1पत 4:18 उनका क्या **ह.** होगा जो पापी हैं?
हाँ, मत्ती 5:37 तुम्हारी **हाँ** का मतलब **हाँ** हो
2कुरिं 1:20 उसी के ज़रिए **हाँ** हुए हैं
हाजिरा, गला 4:24.
हाड़-माँस, 1कुरिं 15:44 **हा.** का शरीर बोया जाता है
इफि 6:12 कुश्ती **हा.** के इंसानों से नहीं
हाथ या पैर के बिना, मत्ती 18:8.
हाथ से लिखे, कुलु 2:14 **हा.** दस्तावेज़ को
हाथ/हाथों, लूका 9:62 हल पर **हा.** रखने के बाद
1तीमु 4:14 प्राचीनों ने तुझ पर अपने **हा.** रखे
इब्रा 10:31 परमेश्वर के **हा.** में पड़ना
1पत 5:6 परमेश्वर के शक्तिशाली **हा.** के नीचे नम्र
2कुरिं 5:1; इब्रा 9:11; प्रका 21:17.
हाबिल, मत्ती 23:35 नेक **हा.** से लेकर, उन सबका खून
इब्रा 11:4 विश्वास ही से **हा.** ने बलिदान चढ़ाया
लूका 11:51; इब्रा 12:24.
हाय, प्रका 12:12 धरती और समुद्र, पर **हा.**
हार, गला 6:9 बढ़िया काम करने में **हा.** न मानें
हारान, प्रेषि 7:2.
हारून, इब्रा 5:4 परमेश्वर से ठहराया गया, जैसे **हा.**
हारे हुओं, कुलु 2:15 **हा.** की तरह उनकी नुमाइश की
हालत, 1कुरिं 7:24 हरेक को जिस किसी **हा.** में
हावी, मत्ती 16:18 कब्र उस पर **हा.** न हो
यूह 12:35 अंधकार तुम पर **हा.** न हो
2तीमु 3:6 स्त्रियों को, जिन पर पाप **हा.** रहता है
हासिल, मत्ती 16:26 सारा जहान **हा.** कर ले
इफि 4:13 विश्वास में एकता **हा.**
1थिस्स 5:9; 2थिस्स 2:14.

हिदायत, रोमि 15:4 हमारी **हि.** के लिए लिखी गयी
1कुरिं 2:16 कि वह **हि.** दे
1कुरिं 14:19 ताकि मैं दूसरों को **हि.** दे सकूँ
2तीमु 2:14.
हिफाज़त, गला 3:23 कानून की **हि.** में
फिलि 3:1 मगर इनसे तुम्हारी ही **हि.** होगी
फिलि 4:7 तुम्हारे दिल के साथ दिमाग की **हि.** करेगी
1तीमु 6:20; 2तीमु 1:12.
हिम्मत, रोमि 5:7 कोई अपनी जान देने की **हि.** करे
2कुरिं 5:6 हम **हि.** रखते हैं
फिलि 1:14 **हि.** के साथ परमेश्वर का वचन सुना रहे
1थिस्स 2:2 हमारे परमेश्वर के ज़रिए **हि.** जुटायी
मत्ती 8:28; प्रेषि 28:15; इब्रा 13:6.
हिम्मत बँधा, फिलि 2:1 एक-दूसरे की **हि.** सको
हिम्मत बंधाएँ, इब्रा 10:25 एक-दूसरे की **हि.**
हिम्मत बँधाता, 1कुरिं 14:3 मज़बूत करता, **हि.**
हिम्मत बँधाने, इफि 4:29 ऐसी बात जो **हि.** के लिए
हिम्मत बँधे, 1कुरिं 14:31 सीख सकें और **हि.**
हिम्मत हार बैठें, कुलु 3:21 न हो कि वे **हि.**
हिरासत, गला 3:22 पाप की **हि.** में सौंप दिया
हिलायी, मत्ती 24:29 आकाश की शक्तियाँ **हि.** जाएँगी
हिलाया, इब्रा 12:28 ऐसा राज जिसे **हि.** नहीं जा सकता
हिसाब, लूका 12:48 बहुत का **हि.** लिया जाएगा
रोमि 9:28 यहोवा **हि.** लेगा
रोमि 14:12 हम में से हरेक **हि.** देगा
1कुरिं 13:5 यह चोट का **हि.** नहीं रखता
2कुरिं 5:19 उनके गुनाहों का **हि.** नहीं लिया
इब्रा 4:13 हमें जिसे **हि.** देना है, उसके सामने
प्रका 13:18 जानवर की संख्या का **हि.** लगाए
लूका 14:28; प्रेषि 19:19.
हिस्सा, मत्ती 24:51 उसका **हि.** कपटियों के साथ
लूका 15:12 जायदाद में से मेरा **हि.** मुझे दे दे
प्रेषि 13:19 देश में अपना-अपना **हि.** दिया
1कुरिं 7:17 हरेक को **हि.** दिया है
2कुरिं 6:15 विश्वासयोग्य इंसान का क्या **हि.**
कुलु 1:12 विरासत में **हि.** पाने
रोमि 11:25; 1कुरिं 12:23.
हिस्सेदार, 2कुरिं 1:7 तुम दुःखों में **हि.** हो
फिलि 3:10 दुःख-तकलीफें सहने में **हि.**
प्रका 18:4 अगर तुम **हि.** नहीं होना चाहते
हिस्सेदारी, 1कुरिं 10:16 प्याला, मसीह के लहू में **हि.**
हुकूमत, 1कुरिं 15:24 जब **हु.** को मिटा चुका
हुकूमतों, कुलु 2:15 **हु.** और अधिकारियों को नंगा कर
इब्रा 11:33 विश्वास से **हु.** को हराया
हुक्म, मत्ती 4:6 परमेश्वर स्वर्गदूतों को **हु.** देगा
2कुरिं 1:9 लगा कि हम पर सज़ा-ए-मौत का **हु.**
हुमिनयुस, 1तीमु 1:20 **हु.** को मैंने शैतान के हवाले
2तीमु 2:17 **हु.** और फिलेतुस ऐसे ही लोगों में से हैं
हुल्लड़, प्रेषि 19:29.
हुल्लड़ मचानेवाली, प्रेषि 19:40 **हु.** ऐसी भीड़
हू-ब-हू, इब्रा 1:3 **हू.** परमेश्वर की छवि
हेरोदेस, मत्ती 2:1 उन दिनों, **हे.** राजा था
लूका 23:12; प्रेषि 4:27; 12:1.
हैरत, मर 16:8 ज़बरदस्त **है.** ने आ घेरा
प्रका 17:6 बड़ी **है.** में पड़ गया
हैरान, प्रेषि 2:6 भीड़ **है.**
1पत 4:12 आग जल रही है उस पर **है.** मत हो
होंठों, मत्ती 15:8 लोग **हों.** से मेरा आदर करते
इब्रा 13:15 गुणगान का बलिदान, **हों.** का फल
1पत 3:10 **हों.** को छल की बातें बोलने से
हो चुका, मत्ती 13:15 दिल पत्थर **हो.**
होड़, गला 5:26 **हो.** लगाने के लिए न उकसाएँ
फिलि 1:15 **हो.** की भावना से मसीह का प्रचार
हो रहा है, 1पत 4:12 **हो.** कि तुम्हारी परख हो
होश, 1कुरिं 15:34 **हो.** में आ जाओ
होश-हवास, 1पत 5:8 अपने **हो.** बनाए रखो, चौकन्ने रहो
1थिस्स 5:6 जागते रहें और **हो.**
1थिस्स 5:8 **हो.** बनाए रखें और कवच पहने रहें
1पत 1:13 पूरे **हो.** में रहो; अपनी आशा
होशियारी, लूका 16:8 उसने **हो.** से काम लिया
हो सके तो, मत्ती 24:24 **हो.** चुने हुओं को भी
मत्ती 26:39 **हो.** यह प्याला हटा दे
हौद, प्रका 19:15 परमेश्वर के क्रोध के **हौ.**
हौसला, रोमि 1:12 एक-दूसरे का **हौ.** बढ़ा
1कुरिं 10:23 सब बातें **हौ.** नहीं बढ़ातीं
1कुरिं 14:26 सब कुछ **हौ.** बढ़ाने के लिए किया जाए
इब्रा 6:18 ज़बरदस्त **हौ.** मिले कि उस आशा पर
प्रेषि 11:23; इब्रा 13:22.

अतिरिक्त लेख

1 परमेश्वर का नाम, यूनानी शास्त्र में भी क्यों होना चाहिए 595

2 मसीही यूनानी शास्त्र में परमेश्वर के नाम को
फिर से उसकी सही जगह पर लाना 600

3 यीशु—वह जो परमेश्वर जैसा है; ईश्वरीय 602

4 "व्यभिचार"—हर किस्म के नाजायज़ यौन-संबंध 602

5 मसीह की मौजूदगी (पारूसीआ) 603

6 "यातना की सूली" 604

7 बाइबल में शब्द *"नफ्मा"* का इस्तेमाल 607

8 "हेडिज़," "शीओल"—कब्र,
मरने के बाद जहाँ सभी जाते हैं 608

9 "गेहन्ना"—पूरी तरह विनाश की निशानी 609

10 "पुराना नियम" और "नया नियम" 610

11 पैसा, बाट-पत्थर, नाप 611

12 पृथ्वी पर यीशु की ज़िंदगी की खास घटनाएँ 612

13 नक्शा—शाऊल, दाविद, सुलैमान के राज में
जब इसराएल का बँटवारा नहीं हुआ था 620

14 नक्शा—यीशु की प्रचार-सेवा के वक्त का पैलिस्टाइन 621

1

परमेश्वर का नाम (יהוה), यूनानी शास्त्र में भी क्यों होना चाहिए (इस बात का समर्थन करनेवाली हस्तलिपियों के बारह हिस्से)

यह वाकई हैरत की बात है कि बाइबल का जो भाग यूनानी भाषा में लिखा गया था, उसकी मौजूदा हस्तलिपियों में परमेश्वर का नाम नहीं पाया जाता। इसके अलावा, आज के नए-पुराने अनुवादों में भी परमेश्वर का नाम नहीं पाया जाता। प्राचीन इब्रानी शास्त्र में (उत्पत्ति से मलाकी तक) परमेश्वर का नाम करीब 7,000 बार आता है। इब्रानी भाषा में यह नाम इन चार अक्षरों से लिखा जाता है, יהוה और आम तौर पर इसे अँग्रेज़ी में टेट्राग्रामटन कहा जाता है। हिंदी में इसे इन चार अक्षरों से लिखा जाता है, *य-ह-व-ह* (या, *ज-ह-व-ह*)। इस नाम का सही-सही उच्चारण आज कोई नहीं जानता, मगर इसका सबसे जाना-माना अनुवाद है "यहोवा।" इस नाम का छोटा रूप है "याह" और बाइबल के यूनानी शास्त्र में ऐसे कई नाम हैं जिनमें "याह" शब्द जुड़ा है। इसके अलावा, परमेश्वर की स्तुति में बार-बार दोहराए जानेवाले शब्द "हल्लिलूयाह" में भी "याह" शब्द पाया जाता है। "हल्लिलूयाह" का मतलब है "हे लोगो, याह का गुणगान करो!" —प्रकाशितवाक्य 19:1, 3, 4, 6.

परमेश्वर की प्रेरणा से लिखा गया यूनानी शास्त्र, इब्रानी शास्त्र का पूरक है और इन दोनों को मिलाकर पूरी बाइबल बनती है। इसलिए जब इब्रानी शास्त्र में परमेश्वर का नाम हज़ारों बार आता है, तो यूनानी शास्त्र से इस नाम का अचानक गायब हो जाना, बिलकुल सही नहीं लगता। खास तौर पर इसलिए भी, क्योंकि पहली सदी में चेले याकूब ने यीशु के प्रेषितों और दूसरे चेलों से कहा था: "पतरस ने पूरा ब्यौरा देकर बताया है कि परमेश्वर ने कैसे पहली बार गैर-यहूदी राष्ट्रों की तरफ ध्यान दिया कि उनके बीच से वे लोग चुन ले जो परमेश्वर के नाम से पहचाने जाएँ।" (प्रेषितों 15:14) फिर अपनी इस बात को और पुख्ता करने के लिए, याकूब ने आमोस 9:11, 12 से हवाला दिया जिसमें परमेश्वर का नाम दिया गया है। अगर मसीहियों की पहचान परमेश्वर के नाम से होनी है, तो इब्रानी भाषा के जिन चार अक्षरों से उसका नाम लिखा जाता है, उन्हें बाइबल के यूनानी भाग से क्यों निकाला गया? आम तौर पर इसके लिए जो सफाई दी जाती थी, वह आज मायने नहीं रखती। एक अरसे से माना जाता था कि *सेप्टुआजेंट* अनुवाद में परमेश्वर का नाम मौजूद नहीं है, इसलिए आज की मौजूदा हस्तलिपियों में भी यह नाम नहीं पाया जाता। बाइबल के इब्रानी शास्त्र का पहली बार यूनानी में जो अनुवाद हुआ था, उसे ही *सेप्टुआजेंट* अनुवाद कहा जाता है। इस अनुवाद का काम ई.स.पू. तीसरी सदी में शुरू किया गया था। कहा जाता था कि इस अनुवाद में परमेश्वर का नाम नहीं था और इसीलिए मौजूदा हस्तलिपियों में भी यह नाम नहीं लिखा गया। यह बात इसलिए मानी जाती थी, क्योंकि *सेप्टुआजेंट* अनुवाद की चौथी और पाँचवी सदी की अहम हस्तलिपियों की नकलों में यह नाम नहीं है। ये लिपियाँ हैं: वैटिकन हस्तलिपि 1209, कोडेक्स साइनाइटिकस और कोडेक्स एलेक्ज़ैंड्रिनस। इन लिपियों में परमेश्वर के बेजोड़ नाम के बदले यूनानी शब्द *किरियॉस* (प्रभु) और *थियॉस* (परमेश्वर) लिखा गया है। उस वक्त के विद्वानों का मानना था कि परमेश्वर को इस तरह बेनाम रखने से यह शिक्षा देना आसान होगा कि सारे जहान का बनानेवाला परमेश्वर एक है।

मगर यह धारणा पूरी तरह गलत साबित हो चुकी है कि *सेप्टुआजेंट* अनुवाद में परमेश्वर का नाम नहीं था। खोजकर्ताओं को *सेप्टुआजेंट* अनुवाद की एक ऐसी पांडुलिपि मिली है जिसमें व्यवस्थाविवरण किताब का पिछला आधा हिस्सा है। इस पांडुलिपि के हिस्सों में से एक भी ऐसा नहीं है जिसमें परमेश्वर के नाम की जगह पर *किरियॉस* (प्रभु) और *थियॉस* (परमेश्वर) लिखा गया हो। इसके बजाय, जहाँ-जहाँ परमेश्वर का नाम आता है

वहाँ-वहाँ इब्रानी भाषा में उसके नाम के चार अक्षर लिखे गए हैं।

सन् 1944 में इस पांडुलिपि का एक हिस्सा लोगों के सामने लाया गया। डब्ल्यू. जी. वाड्डल ने *धार्मिक अध्ययनों की पत्रिका* (अँग्रेज़ी, भाग 45, पेज 158-161) में इसे छापा। फिर, सन् 1948 में वॉच टावर बाइबल एंड ट्रैक्ट सोसाइटी के गिलियड स्कूल से ट्रेनिंग पाए दो मिशनरियों ने इस पांडुलिपि के 18 हिस्सों की तसवीरें हासिल कीं और साथ ही इन्हें छापने की इजाज़त भी ले ली। फिर, इनमें से 12 हिस्सों की तसवीरें, 1950 में निकाली गयी *न्यू वर्ल्ड ट्रांस्लेशन ऑफ द क्रिस्चियन ग्रीक स्क्रिप्चर्स्* के पेज 13, 14 पर छापी गयीं।

इस पांडुलिपि पर जर्मनी के एक विद्वान पौल काल्हे ने 1959 में *स्तुदिया इवैन्जलिका* नाम की किताब में अपनी राय दी और इस किताब का संपादन कर्ट आलान्ड, एफ.एल. क्रॉस, ज्हाँ दानिएलू, हाराल्ड रीसनफेल्ड और डब्ल्यू.सी. वॉन यूनिक ने किया। बर्लिन में छपी इस किताब के पेज 614 पर काल्हे ने लिखाः "इसी पांडुलिपि की एक तसवीर से इसके और भी हिस्सों की नकल तैयार की गयी। यह तसवीर, *वॉच टावर बाइबल एंड ट्रैक्ट सोसाइटी* के नए नियम के अँग्रेज़ी अनुवाद के परिचय में छापी गयी थी। सन् 1950 में न्यू यॉर्क शहर के ब्रुकलिन इलाके में यह अनुवाद निकाला गया था। इस पांडुलिपि की एक खासियत यह है कि इसमें परमेश्वर का नाम इब्रानी भाषा के चार चौकोर अक्षरों से लिखा गया है। इस पांडुलिपि के जो हिस्से प्रकाशित किए गए, मेरी गुज़ारिश पर पातेर वाक्कारी ने उनकी जाँच की और वे इस नतीजे पर पहुँचे कि यह पांडुलिपि, ज़रूर कोडेक्स बी से करीब 400 साल पहले लिखी गयी थी और इसमें व्यवस्थाविवरण किताब का जो *सेप्टुआजेंट* पाठ है, वह शायद अब तक हमें मिली सभी हस्तलिपियों से उम्दा है।"

सेप्टुआजेंट की इस पांडुलिपि (P. Fouad Inv. 266) के 117 हिस्से *एत्युदिस दे पपिरॉलॉजी,* भाग 9, काइरो, 1971, पेज 81-150, 227, 228 पर छापे गए थे। इस पांडुलिपि के सभी हिस्सों की तसवीरें ज़ाकी अली और लुदविग कोनन ने प्रकाशित कीं। ये तसवीरें सन् 1980 में जर्मनी के बॉन शहर से* निकाली जा रही पत्रिका, "पैपिरॉलॉजिस्क टैक्स्ट उंड अबहांडलुंगन" भाग 27 में इस शीर्षक के नीचे छापी गयीं, *शुरू के सेप्टुआजेंट के तीन खर्रेः उत्पत्ति और व्यवस्थाविवरण।*

इस पांडुलिपि के 12 हिस्सों की इन तसवीरों से हमारे पाठक इस बात की जाँच कर सकते हैं कि *सेप्टुआजेंट* की इस बहुत ही प्राचीन नकल में परमेश्वर के नाम के चार इब्रानी अक्षर कहाँ-कहाँ आते हैं। यह पांडुलिपि कितनी पुरानी है? विद्वानों के मुताबिक यह पांडुलिपि ई.पू. पहली सदी में तैयार की गयी थी, यानी *सेप्टुआजेंट* अनुवाद के शुरू होने के करीब दो सौ साल बाद। इससे साबित होता है कि बाइबल के मूल इब्रानी शास्त्र में जहाँ-जहाँ परमेश्वर का नाम था, वहाँ-वहाँ *सेप्टुआजेंट* अनुवाद में भी यह नाम था। इसके अलावा यूनानी भाषा की नौ और हस्तलिपियों में भी परमेश्वर का नाम दिया गया है।—*NW, रेफ्रेंस बाइबल,* पेज 1562-1564 देखें।

क्या यीशु मसीह के पास और उसके जिन चेलों ने बाइबल का यूनानी शास्त्र लिखा, उनके पास यूनानी *सेप्टुआजेंट* की वे नकलें थीं जिनमें परमेश्वर का नाम इब्रानी भाषा के चार अक्षरों से

---

* *सेप्टुआजेंट* की व्यवस्थाविवरण की इस पांडुलिपि (P. Fouad Inv. No. 266) के हिस्सों की तसवीरों के लिए पेज 598-99 देखें। हमने इन 12 हिस्सों को अलग-अलग नंबर दिए हैं। इनमें से कुछ हिस्सों में इब्रानी भाषा में परमेश्वर के नाम के चार अक्षर एक से ज़्यादा बार आते हैं और इन पर घेरा बनाकर निशान लगाया गया है। नं. 1, व्यवस्थाविवरण 31:28 से 32:7, इसमें लाइन नं. 7 और 15 पर इब्रानी भाषा में परमेश्वर के नाम के चार अक्षर आते हैं; नं. 2 (व्यव 31:29, 30) लाइन नं. 6 पर यह नाम है; नं. 3 (व्यव 20:12-14, 17-19) लाइन 3 और 7 पर; नं. 4 (व्यव 31:26) लाइन 1 पर; नं. 5 (व्यव 31:27, 28) लाइन 5 पर; नं. 6 (व्यव 27:1-3) लाइन 5 पर; नं. 7 (व्यव 25:15-17) लाइन 3 पर; नं. 8 (व्यव 24:4) लाइन 5 पर; नं. 9 (व्यव 24:8-10) लाइन 3 पर; नं. 10 (व्यव 26:2, 3) लाइन 1 पर; नं. 11 दो हिस्सों में (व्यव 18:4-6) लाइन 5 और 6 पर; और नं. 12 (व्यव 18:15, 16) लाइन 3 पर।

लिखा गया था? हाँ थीं! *सेप्टुआजेंट* की नकलों में परमेश्वर के नाम के चार इब्रानी अक्षर, मसीह और उसके प्रेषितों के ज़माने के बाद भी सदियों तक कायम रहे। दूसरी सदी के पहले पचास सालों में जब अक्विला नाम के अनुवादक ने यूनानी भाषा में एक और अनुवाद तैयार किया, तो इसमें भी प्राचीन इब्रानी भाषा के अक्षरों से परमेश्वर का नाम लिखा गया था।

चौथी और पाँचवी सदी के अनुवादक, जेरोम ने बाइबल की शमूएल और राजाओं की किताबों का जो अनुवाद किया, उसके परिचय में उसने लिखा: "हम आज के दिन तक, कुछ यूनानी हस्त-लिपियों में परमेश्वर के नाम को चार प्राचीन इब्रानी अक्षरों में लिखा हुआ [יהוה] देख सकते हैं।" लैटिन भाषा में *वल्गेट* नाम का अनुवाद तैयार करने में जेरोम का बड़ा हाथ रहा था। जेरोम के इन शब्दों से हम कह सकते हैं कि उसके ज़माने में भी बाइबल के इब्रानी शास्त्र के यूनानी अनुवादों की वे हस्तलिपियाँ मौजूद थीं जिनमें चार इब्रानी अक्षरों से परमेश्वर का नाम लिखा गया था।

अगर यीशु और उसके चेले बाइबल का इब्रानी शास्त्र, मूल इब्रानी पाठ से पढ़ते या फिर इसके यूनानी अनुवाद *सेप्टुआजेंट* से पढ़ते, तो अपनी पढ़ाई के दौरान वे कई बार परमेश्वर का नाम चार इब्रानी अक्षरों में लिखा हुआ देखते। क्या यीशु ने परमेश्वर के नाम की जगह *अधोनाइ* (प्रभु) पढ़ने के यहूदियों के रिवाज़ को माना? उस ज़माने के यहूदी इस बात से डरते थे कि अगर वे पर-मेश्वर का नाम लेंगे तो वे इसे अपवित्र कर रहे होंगे और इस तरह दस आज्ञाओं में से तीसरी आज्ञा तोड़ने के कसूरवार होंगे। (निर्गमन 20:7) नासरत के सभा-घर में, जब यीशु ने उठकर यशा-याह की किताब ली और यशायाह (61:1, 2) की उन आयतों को पढ़ा जहाँ परमेश्वर के नाम के चार इब्रानी अक्षर आते हैं, तब क्या उसने परमेश्वर के नाम का उच्चार नहीं किया? यह मुमकिन नहीं कि यीशु ने उस नाम का उच्चार न किया हो। यीशु ऐसी परंपराएँ नहीं मानता था जो यहूदी धर्मगुरुओं ने बनायी थीं और जो परमेश्वर के वचन के हिसाब से सही नहीं थीं। मत्ती 7:29 कहता है: "यीशु उन्हें उनके शास्त्रियों की तरह नहीं, बल्कि ऐसे इंसान की तरह सिखा रहा था जिसके पास बड़ा अधिकार हो।" और अपने वफादार प्रेषितों के सामने यीशु ने यहोवा परमेश्वर से यह कहते हुए प्रार्थना की: "मैंने तेरा नाम उन लोगों पर ज़ाहिर किया है जिन्हें तू ने दुनिया में से मुझे दिया है। . . . मैंने तेरा नाम उन्हें बताया है और आगे भी बताऊँगा।"—यूहन्ना 17:6, 26.

अब हमारे सामने सवाल यह है: यीशु के चेलों ने जब परमेश्वर की प्रेरणा से बाइबल की किताबें लिखीं, तब क्या उन्होंने इनमें परमेश्वर का नाम लिखा था? यानी, जब बाइबल का यूनानी शास्त्र लिखा गया तब क्या परमेश्वर का नाम उसमें था? हाँ था। ऐसा कहने का हमारे पास आधार है। वह है, मत्ती की खुशखबरी की किताब। चौथी और पाँचवी सदी का इतिहासकार जेरोम यह जानकारी देता है कि मत्ती की किताब पहले यूनानी भाषा में नहीं, बल्कि इब्रानी भाषा में लिखी गयी थी। उसका यह कहना था:

"मत्ती, जो लेवी भी कहलाता है, और जो कर-वसूली का काम करता था, वह एक प्रेषित बन गया। उसने यहूदिया में सबसे पहले इब्रानी भाषा और अक्षरों में मसीह की खुशखबरी लिखी, ताकि इससे उन यहूदियों को फायदा हो जिन्होंने मसीह पर विश्वास किया था। बाद में इस किताब का अनुवाद यूनानी भाषा में किसने किया, यह पक्के तौर पर नहीं कहा जा सकता। और इब्रानी भाषा में लिखी खुशखबरी की किताब आज के दिन तक कैसरिया की लाइब्रेरी में सुरक्षित है, जिसे शहीद पैम्फिलस ने बड़ी मेहनत से इकट्ठा किया था। नासरत के लोगों ने मुझे सीरिया के बीरिया शहर में इस किताब की नकल उतारने की और इसका इस्तेमाल करने की इजाज़त दी थी।" —*दी विरिस इनलसट्रिबुस* (*बेजोड़ आदमियों के बारे में*) अध्याय तीन। (लैटिन पाठ का अनु-वाद, ई.सी. रिचर्डसन द्वारा संपादित और जर्मन भाषा में श्रृंखला लेख में प्रकाशित, "Texte und Untersuchungen zur Geschichte der altchristlichen Literatur," Vol. 14, Leipzig, 1896, pp. 8, 9.)

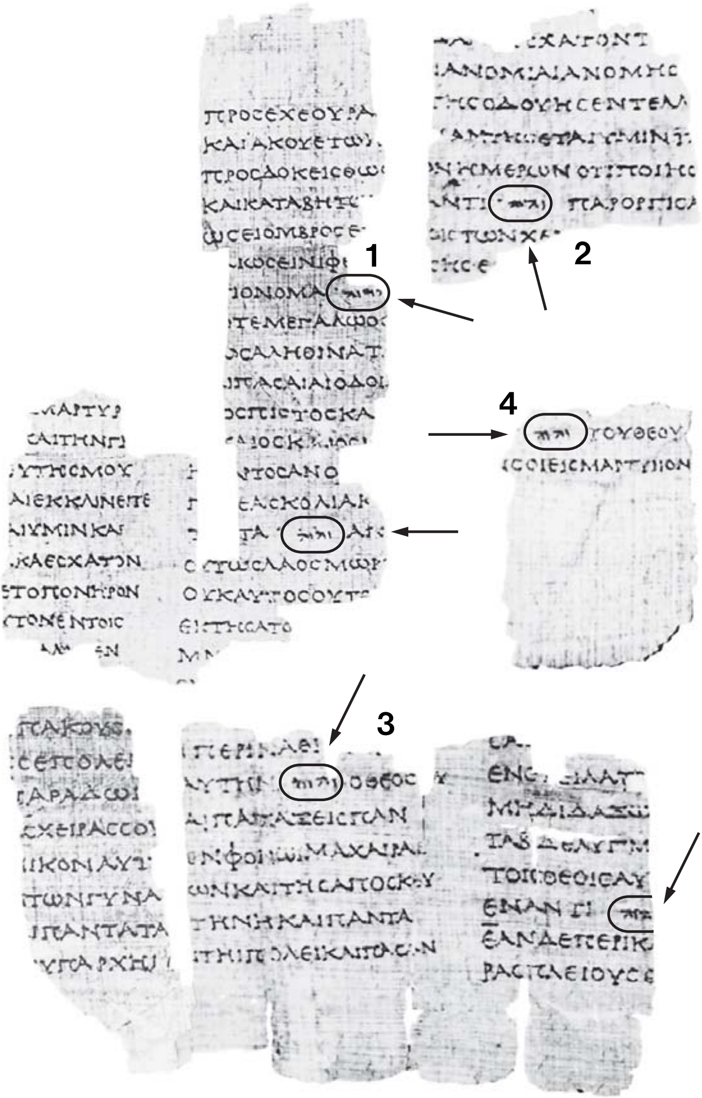
1
2
3
4

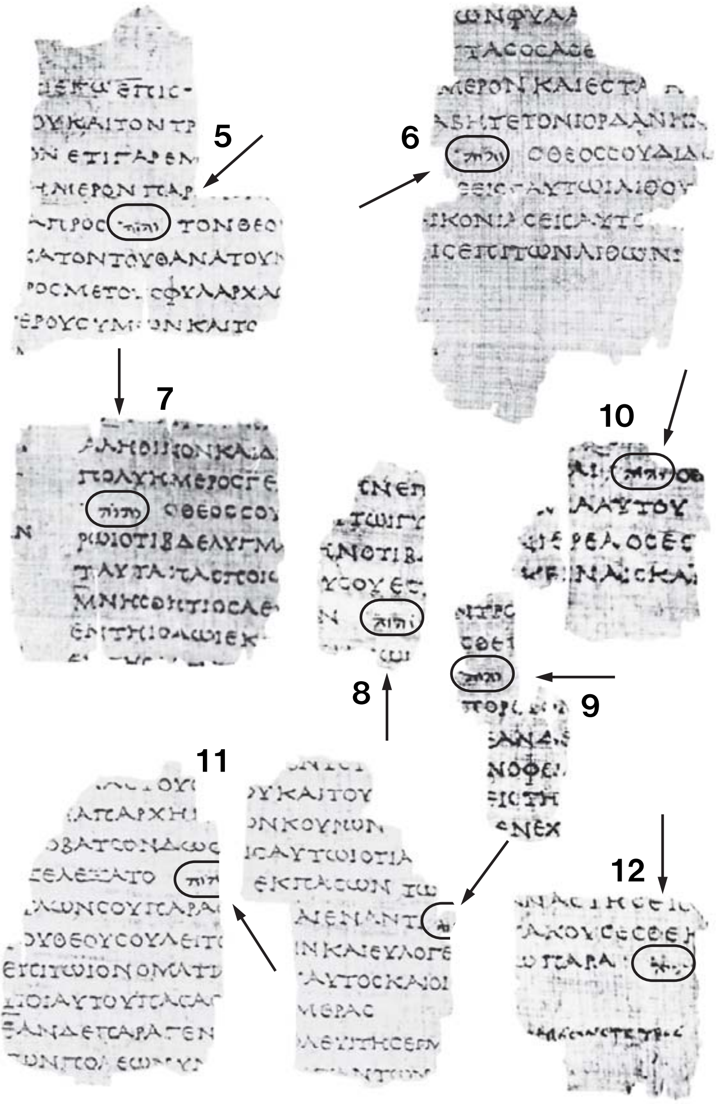
5
6
7
8
9
10
11
12

मत्ती ने अपनी किताब में, इब्रानी शास्त्र में से सौ से भी ज़्यादा हवाले दिए हैं। इनमें जहाँ-जहाँ यहोवा का नाम आता है, मत्ती ने भी वहाँ इसे पूरी वफादारी के साथ चार इब्रानी अक्षरों में अपनी किताब में लिखा होगा। उन्नीसवीं सदी में एफ. डीलिश ने मत्ती की किताब का इब्रानी भाषा में अनुवाद तैयार किया, जिसमें यहोवा का नाम 18 बार आता है। इससे ज़ाहिर है कि मत्ती की किताब इस अनुवाद से मिलती-जुलती होगी। मत्ती ने *सेप्टुआजेंट* से हवाले देने के बजाय सीधे इब्रानी शास्त्र से हवाले देने का चुनाव किया। हो सकता है कि वह *सेप्टुआजेंट* के अनुवादकों के दस्तूर पर चला हो और यूनानी पाठ में जहाँ-जहाँ परमेश्वर का नाम आना चाहिए वहाँ इसे चार इब्रानी अक्षरों में लिखा हो। बाइबल के यूनानी शास्त्र के बाकी सभी लेखकों ने भी इब्रानी शास्त्र से या *सेप्टुआजेंट* से उन आयतों का हवाला दिया जहाँ परमेश्वर का नाम आता है।

बाइबल के यूनानी शास्त्र में परमेश्वर के नाम के चार इब्रानी अक्षर किस हद तक इस्तेमाल हुए हैं, इस बारे में जॉर्जिया यूनिवर्सिटी के जॉर्ज हॉवर्ड ने *बाइबल साहित्य की पत्रिका* (अँग्रेज़ी, भाग 96, 1977, पेज 63) में लिखा: "हाल के सालों में मिस्र और जूडिया के वीरान इलाकों में जो हस्तलिपियाँ मिलीं उनसे हम देख सकते हैं कि मसीह से पहले के ज़माने में परमेश्वर का नाम किस हद तक इस्तेमाल किया जाता था। ये खोजें वाकई बहुत अहमियत रखती हैं क्योंकि इनसे हमें नए नियम का और अच्छी तरह अध्ययन करने में मदद मिलेगी। खोज की गयी ये हस्तलिपियाँ, मसीही लेखकों की सबसे पुरानी लिपियों से काफी मेल खाती हैं और इसलिए ये हमें समझा सकती हैं कि नया नियम (बाइबल का यूनानी शास्त्र) लिखनेवालों ने अपनी किताबों में परमेश्वर के नाम का किस हद तक इस्तेमाल किया। आगे के पन्नों पर हम यह धारणा पेश करेंगे कि पुराने नियम से सीधे हवाले देते वक्त या उनका ज़िक्र करते वक्त कैसे नए नियम में परमेश्वर का नाम, יהוה (और शायद इसका छोटा रूप), शुरू में लिखा गया था और कैसे कुछ वक्त के बाद परमेश्वर के नाम के बजाय ज़्यादातर जगहों पर ϗϛ [यूनानी शब्द *किरियॉस* यानी 'प्रभु' का छोटा रूप] डाल दिया गया। हमारे हिसाब से परमेश्वर के नाम के इन चार इब्रानी अक्षरों को निकालने से शुरू के गैर-यहूदी मसीहियों के मन में यह उलझन पैदा हो गयी कि 'प्रभु परमेश्वर' और 'प्रभु मसीह' के बीच क्या नाता है। यही बात नए नियम की हस्तलिपियों में भी देखी जा सकती है जिनमें बदस्तूर परमेश्वर का नाम नहीं लिखा गया है।"

ऊपर जो कहा गया है हम उससे सहमत हैं, सिवा एक बात के। वह यह कि हम इसे महज़ एक "धारणा" नहीं मानते, मगर ऊपर जो बताया गया है वह इतिहास के सच्चे सबूत हैं कि बाइबल की हस्तलिपियाँ हम तक किन हालात में पहुँचीं, और उस गुज़रे हुए वक्त में क्या-क्या हुआ।

2 मसीही यूनानी शास्त्र में परमेश्वर के नाम को फिर से उसकी सही जगह पर लाना "यहोवा।" इब्रा., יהוה (*यहवह* या *जहवह*)

नीचे उन आयतों की सूची दी गयी है जहाँ *नयी दुनिया अनुवाद—मसीही यूनानी शास्त्र* में उन 237 जगहों पर "यहोवा" नाम वापस अपनी जगह पर डाला गया है, जहाँ इसे होना चाहिए। इसका सबूत पाने के लिए *रेफ्रेंस बाइबल,* पेज 1565, 1566 देखिए।

मत्ती 1:20, 22, 24; 2:13, 15, 19; 3:3; 4:4, 7, 10; 5:33; 21:9, 42; 22:37, 44; 23:39; 27:10; 28:2; मरकुस 1:3; 5:19; 11:9; 12:11, 29, 29, 30, 36; 13:20; लूका 1:6, 9, 11, 15, 16, 17, 25, 28, 32, 38, 45, 46, 58, 66, 68, 76; 2:9, 9, 15, 22, 23, 23, 24, 26, 39;

3:4; 4:8, 12, 18, 19; 5:17; 10:27; 13:35; 19:38; 20:37, 42; यूहन्ना 1:23; 6:45; 12:13, 38, 38; प्रेषितों 1:24; 2:20, 21, 25, 34, 39, 47; 3:19, 22; 4:26, 29; 5:9,19; 7:31, 33, 49, 60; 8:22, 24, 25, 26, 39; 9:31; 10:33; 11:21; 12:7, 11, 17, 23, 24; 13:2, 10, 11, 12, 44, 47,48, 49; 14:3, 23; 15:17,17, 35, 36, 40; 16:14,15, 32; 18:21, 25; 19:20; 21:14; रोमियों 4:3, 8; 9:28, 29; 10:13, 16; 11:3, 34; 12:11, 19; 14:4, 6, 6, 6, 8, 8, 8, 11; 15:11; 1कुरिंथियों 1:31; 2:16; 3:20; 4:4, 19; 7:17; 10:9, 21, 21, 22, 26; 11:32; 14:21; 16:7, 10; 2कुरिंथियों 3:16, 17, 17, 18, 18; 6:17, 18; 8:21; 10:17, 18; गलातियों 3:6; इफिसियों 2:21; 5:17, 19; 6:4, 7, 8; कुलुस्सियों 1:10; 3:13, 16, 22, 23, 24; 1थिस्सलुनीकियों 1:8; 4:6, 15; 5:2; 2थिस्सलुनीकियों 2:2, 13; 3:1; 2तीमुथियुस 1:18; 2:19, 19; 4:14; इब्रानियों 2:13; 7:21; 8:2, 8, 9, 10, 11; 10:16, 30; 12:5, 6; 13:6; याकूब 1:7, 12; 2:23, 23; 3:9; 4:10, 15; 5:4, 10, 11, 11, 14, 15; 1पतरस 1:25; 3:12, 12; 2पतरस 2:9, 11; 3:8, 9, 10, 12; यहूदा 5, 9, 14; प्रकाशितवाक्य 1:8; 4:8, 11; 11:17; 15:3, 4; 16:7; 18:8; 19:6; 21:22; 22:5, 6.

परमेश्वर के नाम का छोटा रूप "याह" है। यह यूनानी भाषा के शब्द *हलेलूइया* में आता है। यूनानी का *हलेलूइया,* इब्रानी भाषा के *हालेलू-याह* का लिप्यंतरण है। इसका मतलब है, "लोगो, याह का गुणगान करो!"—प्रकाशितवाक्य 19:1, 3, 4, 6; भजन 104:35, फुटनोट, *NW, रेफ्रेंस बाइबल* से तुलना करें।

हमने इस बात में बहुत सावधानी बरती है कि हम एक अनुवादक के लिए तय की गयी सीमाएँ न लाँघें और अपनी समझ के हिसाब से अनुवाद न करें। इसलिए हमने इस मसीही यूनानी शास्त्र में परमेश्वर का नाम डालते वक्त आधार के तौर पर हमेशा इब्रानी शास्त्र की ध्यान से जाँच की है। यह देखने के लिए कि इस बात से यूनानी पाठ के दूसरे इब्रानी अनुवाद भी सहमत हैं, हमने उन अनुवादों की भी जाँच की है ताकि इस बात को और भी पक्का कर सकें। इस मसीही यूनानी शास्त्र में हमने कुल 237 बार यहोवा का नाम इस अनुवाद के मुख्य भाग में वापस डाला है। जहाँ-जहाँ यह नाम आता है, उन सभी जगहों पर इब्रानी भाषा के एक या उससे ज़्यादा अनुवादों में परमेश्वर का नाम पाया जाता है।

ऐसा नहीं हो सकता कि जब शुरू के मसीही *सेप्टुआजेंट* बाइबल से हवाले देते थे, तो जिन आयतों में परमेश्वर का नाम आता है उन्हें पढ़ते वक्त वे इस नाम को न लेते हों। प्रोफेसर जॉर्ज हॉवर्ड ने इस बात को सच साबित करनेवाली ज़बरदस्त दलीलें दी हैं। मिसाल के लिए, उन्होंने "यहूदी धर्मगुरुओं के लिखे एक मशहूर भाग (तलमुद शब्बत 13.5)" के बारे में बताया जिसमें "यहूदी धर्म की मान्यताओं के खिलाफ लिखी किताबों का खात्मा करने की समस्या पर चर्चा की गयी है (इन किताबों में शायद पहले यहूदी धर्म माननेवाले मसीहियों की किताबें भी शामिल थीं)।" मगर समस्या क्या थी? "यहूदी धर्म की मान्यताओं के खिलाफ लिखी किताबों में परमेश्वर का नाम इस्तेमाल हुआ था और इनकी ढेरों लिपियों का खात्मा करने से परमेश्वर के नाम का भी खात्मा हो जाता।"

प्रोफेसर हॉवर्ड ने यह भी कहा: "पहली सदी में जिस दौरान नए नियम की किताबें लिखी गयी थीं, उस वक्त जो धार्मिक माहौल था, वह बाद में बहुत बदल गया जब उन किताबों से परमेश्वर का नाम हटा दिया गया। इब्रानी भाषा में यह नाम चार अक्षरों से दर्शाया जाता था। इस नाम के चार अक्षरों के इस्तेमाल से यहूदियों के परमेश्वर की हमेशा से एक अलग पहचान बनी हुई थी, जो उसे दूसरे सभी ईश्वरों से अलग दिखाती थी। मगर अब इस नाम के हटाए जाने से उस परमेश्वर की अनोखी पहचान कुछ हद तक मिटने लगी।"

3

यीशु—वह जो परमेश्वर जैसा है; ईश्वरीय यूहन्ना 1:1—"और वचन ईश्वरीय था (ईश्वर जैसा)" यूनानी, καὶ θεὸς ἦν ὁ λόγος (*खे थियॉस ईन हो लोगोस*)

अँग्रेज़ी, फ्रेंच और जर्मन भाषाओं के कई अनुवादों में, यूहन्ना 1:1 के इन शब्दों का अनुवाद "ईश्वरीय" या "ईश्वर जैसा" किया गया है। यह इसलिए है क्योंकि यहाँ परमेश्वर के लिए इस्तेमाल होनेवाले यूनानी शब्द *थियॉस* से पहले शब्द *'हो'* नहीं आता। वहीं दूसरी तरफ, यूहन्ना 1:1 के दूसरे हिस्से, यानी "वचन परमेश्वर के साथ था" में शब्द "परमेश्वर" के लिए *'हो' थियॉस* (ὁ θεός,) इस्तेमाल हुआ है। और इसी परमेश्वर के साथ वचन (या *लोगोस*) था। मूल यूनानी भाषा में जब *'हो' थियॉस* इस्तेमाल होता है, तो यह किसी व्यक्ति या हस्ती की तरफ इशारा करता है। लेकिन अगर शब्द *थियॉस* से पहले *'हो'* का इस्तेमाल न किया जाए तो यह किसी व्यक्ति को नहीं बल्कि उसके गुण को दर्शाता है।

इसलिए, जब यूहन्ना ने कहा कि वचन (या *लोगोस*) "ईश्वरीय" या "ईश्वर जैसा" था, तो उसका यह मतलब नहीं था कि वचन ही वह परमेश्वर था जिसके साथ यह वचन था। यूहन्ना के शब्द, वचन (या, *लोगोस*) के एक गुण के बारे में बताते हैं, मगर इनसे यह साबित नहीं होता कि वचन ही परमेश्वर है। इसी वजह से *नयी दुनिया अनुवाद—मसीही यूनानी शास्त्र* में यूहन्ना 1:1 में इन शब्दों का अनुवाद यूँ किया गया है, "और वचन ईश्वरीय था।"

4

"व्यभिचार"—हर किस्म के नाजायज़ यौन-संबंध मत्ती 5:32—यूनानी, πορνεία (*पोर्निया*); लैटिन, *फॉर्निकातियो*

यूनानी शब्द *पोर्निया* का दायरा बहुत बड़ा है। एक यूनानी-अँग्रेज़ी शब्दकोश कहता है कि *पोर्निया* का मतलब है, *"वेश्यावृत्ति, अपवित्रता, व्यभिचार,* हर किस्म के नाजायज़ यौन-संबंध।"—*नए नियम और शुरू के दूसरे मसीही साहित्य का यूनानी-अँग्रेज़ी शब्दकोश,* डब्ल्यू. बाउर द्वारा, दूसरा संस्करण एफ. डब्ल्यू. गिंगरिच और एफ. डब्ल्यू. डैंकर द्वारा, शिकागो और लंदन (1979), पेज 693.

मत्ती 5:32 और 19:9 में यीशु के शब्दों पर टिप्पणी के बारे में, *नए नियम का धार्मिक शब्दकोश* (अँग्रेज़ी), भाग 6, पेज 592 कहता है कि "[*पोर्निया*] का मतलब है अपने जीवन-साथी को छोड़ किसी और के साथ यौन-संबंध रखना।" यह दिखाता है कि बाइबल में *पोर्निया* शब्द शादी-शुदा लोगों के मामले में इस्तेमाल हुआ है। इसी शब्दकोश में, पेज 594 पर इफिसियों 5:3, 5 के बारे में कहा गया है कि पौलुस "जानता है कि हर किसी को खुद पर संयम रखने का यह वरदान नहीं मिला है, 1कुरिं 7:7. जो कुँवारा खुद पर संयम नहीं रख सकता, उसे व्यभिचार के पाप से बचने के लिए, कानूनी तौर पर शादी करने की परमेश्वर की सलाह माननी चाहिए, 1कुरिं 7:2." यह दिखाता है कि शास्त्र में *पोर्निया* शब्द उन लोगों के लिए भी इस्तेमाल हुआ है जो शादी-शुदा न होते हुए नाजायज़ यौन-संबंध रखते हैं और ऐसे नाजायज़ लैंगिक काम करते हैं।—1 कुरिंथियों 6:9 देखें।

वेस्टकॉट और हॉर्ट के यूनानी पाठ के सह-संपादक, बी. एफ. वेस्टकॉट ने अपनी किताब (*इफिसियों के नाम संत पौलुस की चिट्ठी* [अँग्रेज़ी], लंदन और न्यू यॉर्क, 1906, पेज 76) में बताया कि शास्त्र में *पोर्निया* शब्द के क्या-क्या मतलब हैं। उसने यह टिप्पणी इफिसियों 5:3 पर की थी, जो कहती है: "यह सभी नाजायज़ यौन-संबंधों के लिए

एक आम शब्द है: (1) शादी से बाहर यौन-संबंध: होशे 2:2, 4 (*सेप्टुआजेंट*); मत्ती 5:32; 19:9; (2) नाजायज़ शादी, 1 कुरिं. 5:1; (3) आम तौर पर समझे जानेवाले अर्थ में, यानी व्यभिचार [इफिसियों 5:3]।" ज़ाहिर है, 'आम तौर' का मतलब है आज के ज़माने का सीमित अर्थ, यानी सिर्फ कुँवारे लोगों के बीच यौन-संबंध।

इस शाब्दिक मतलब के अलावा, मसीही यूनानी शास्त्र की कुछ आयतों में *पोर्निया* शब्द का एक लाक्षणिक मतलब भी है। इस अर्थ के बारे में एक शब्दकोश (*लेक्सिकॉन ग्रेकम नोवी टेस्टामेन्टी,* एफ. ज़ोरेल द्वारा, तीसरा संस्करण, सन् 1961, 1106 भाग) *पोर्निया* शब्द के नीचे यह कहता है: *"सच्चे धर्म से चाहे पूरी तरह या कुछ हद तक बगावत करना, एक ही सच्चे परमेश्वर जाहवे को त्यागकर पराए देवताओं के पास जाना* [4राजा 9:22; यिर्म 3:2, 9; होशे 6:10 वगैरह; क्योंकि परमेश्वर का अपने लोगों के साथ रिश्ता, एक किस्म का शादी का आध्यात्मिक बंधन माना जाता था]: प्रका 14:8; 17:2, 4; 18:3; 19:2." (ब्रैकेट और तिरछे अक्षर लेखक के हैं; सेप्टुआजेंट अनुवाद में बाइबल की उस किताब को 4राजा कहा गया है जिसे मसोरा पाठ में 2राजा कहा गया है।)

यूनानी पाठ में शब्द *पोर्निया* इन 25 जगहों पर आता है: मत्ती 5:32; 15:19; 19:9; मरकुस 7:21; यूहन्ना 8:41; प्रेषितों 15:20, 29; 21:25; 1 कुरिंथियों 5:1, 1; 6:13, 18; 7:2; 2 कुरिंथियों 12:21; गलातियों 5:19; इफिसियों 5:3; कुलुस्सियों 3:5; 1 थिस्सलुनीकियों 4:3; प्रकाशितवाक्य 2:21; 9:21; 14:8; 17:2, 4; 18:3; 19:2.

इस शब्द के क्रिया रूप, *पोर्नेवो,* का *नयी दुनिया अनुवाद* में "व्यभिचार में लगे रहना," "व्यभिचार करना" अनुवाद किया गया है। यह शब्द इन आठ जगहों पर आता है: 1 कुरिंथियों 6:18; 10:8, 8; प्रकाशितवाक्य 2:14, 20; 17:2; 18:3, 9.

इस शब्द के क्रिया रूप, *एकपोर्नेवो,* का *नयी दुनिया अनुवाद* में "हद-से-ज़्यादा व्यभिचार" अनुवाद किया गया है। यह शब्द सिर्फ एक बार, यहूदा 7 में आता है।

इस शब्द का संज्ञा रूप, *पोर्नि* का *नयी दुनिया अनुवाद* में "वेश्या" अनुवाद किया गया है। यह शब्द इन 12 जगहों पर आता है: मत्ती 21:31, 32; लूका 15:30; 1 कुरिंथियों 6:15, 16; इब्रानियों 11:31; याकूब 2:25; प्रकाशितवाक्य 17:1, 5, 15, 16; 19:2.

इस शब्द का एक और संज्ञा रूप, *पोर्नोस* शब्द का *नयी दुनिया अनुवाद* में 'व्यभिचारी' अनुवाद किया गया है। यह शब्द इन दस जगहों पर आता है: 1 कुरिंथियों 5:9, 10, 11; 1 कुरिंथियों 6:9; इफिसियों 5:5; 1 तीमुथियुस 1:10; इब्रानियों 12:16; 13:4; प्रकाशितवाक्य 21:8; 22:15. एक शब्दकोश (*ए ग्रीक-इंग्लिश लेक्सिकॉन,* एच. लिड्डल और आर. स्कॉट द्वारा, 1968, पेज 1450) इस शब्द की परिभाषा देते हुए बताता है कि इस शब्द का मतलब है "लौंडा, लौंडेबाज़, व्यभिचारी, मूरतों को पूजनेवाला।"

5

मसीह की मौजूदगी (पारूसीआ)
मत्ती 24:3—यूनानी, τὸ σημεῖον τῆς σῆς παρουσίας
(*तो सीमीओन तीस सीस पारूसीआस*)

यूनानी संज्ञा *पारूसीआ* का शाब्दिक मतलब है "साथ-साथ रहना।" यह शब्द, दो शब्दों से बना है, *पारा* (साथ-साथ) और *ऊसीआ* ("होना")। मसीही यूनानी शास्त्र में *पारूसीआ* शब्द 24 बार इन-इन जगहों पर आता है: मत्ती 24:3, 27, 37, 39; 1 कुरिंथियों 15:23; 16:17; 2 कुरिंथियों 7:6, 7; 10:10; फिलिप्पियों 1:26; 2:12; 1 थिस्सलुनीकियों 2:19; 3:13; 4:15; 5:23; 2 थिस्सलुनीकियों 2:1, 8, 9; याकूब 5:7, 8;

2 पतरस 1:16; 3:4, 12; 1 यूहन्ना 2:28. इन 24 जगहों पर *नयी दुनिया अनुवाद* में *पारूसीआ* का अनुवाद "मौजूदगी" या "मौजूद" किया गया है।

इसी शब्द से जुड़ा इसका क्रिया रूप है, *पारीमी,* जिसका शाब्दिक मतलब है "साथ-साथ रहना।" इस शब्द का मसीही यूनानी शास्त्र में किस तरह इस्तेमाल हुआ है, इसकी मिसालें आगे दी गयी आयतों में देखी जा सकती हैं: लूका 13:1; प्रेषि 10:33; 12:20; 24:19; 1कुरिं 5:3, 3; 2कुरिं 10:2, 11; 11:9; 13:2, 10; गला 4:20; 2पत 1:9, 12; प्रका 17:8. इन जगहों पर *नयी दुनिया अनुवाद* में *पारीमी* शब्द का अनुवाद "मौजूद होना" या "खुद हाज़िर होना" किया गया है।

शब्द *पारूसीआ,* यानी "मौजूदगी" एक और यूनानी शब्द *ईलिफसीस,* यानी "आना" से अलग है। *ईलिफसीस* शब्द, यूनानी पाठ में एक बार, यानी प्रेषितों 7:52 में *इलिफसेओस* (लैटिन भाषा में, *एडवन्टु*) के रूप में आता है। यूनानी भाषा में *पारूसीआ* और *ईलिफसीस* को एक अर्थ रखनेवाले शब्दों की तरह अदल-बदलकर इस्तेमाल नहीं किया जाता। *नए नियम के धार्मिक कोश* (अँग्रेज़ी) भाग 5, पेज 865 में लिखा है कि "ये शब्द [*पारीमी* और *पारूसीआ*] कभी-भी मसीह के इंसान बनकर इस धरती पर आने के बारे में इस्तेमाल नहीं होते। साथ ही, *पारूसीआ* शब्द का मतलब 'वापस आना' हरगिज़ नहीं है। यह धारणा कि मसीह की *पारूसीआ* (या, मौजूदगी) एक से ज़्यादा बार होगी, ईसाई धर्म में बहुत बाद में आयी [ई.स. दूसरी सदी के जस्टिन के ज़माने के बाद] ... शुरू में मसीही धर्म क्या मानता था, यह समझने के लिए सबसे ज़रूरी यह है कि हम खुद को इस विचार से आज़ाद करें [कि एक से ज़्यादा *पारूसीआ* है]।"

पारूसीआ शब्द के मतलब के बारे में इज़राइल पी. वॉरन, डी.डी., ने अपनी किताब *द पारूसीआ,* पोर्टलैंड, मेन (1879), पेज 12-15 में लिखा: *"हम* अकसर मसीह के 'दूसरे आगमन' या उसके 'दूसरी बार आने' की बात करते हैं, मगर शास्त्र में 'दूसरी *पारूसीआ'* या मौजूदगी के बारे में कभी नहीं बताया गया। जब कभी *पारूसीआ* (या, मौजूदगी) होती, यह एक अनोखी घटना होती, ऐसी घटना जो न पहले कभी हुई और न फिर कभी होगी। उसने [मसीह ने] खुद को इंसानों पर कई बार ज़ाहिर किया है, मगर उसकी यह मौजूदगी बिलकुल अलग और सबसे शानदार तरीके से होगी।"

साथ ही, डब्ल्यू. बाउर के *नए नियम और शुरू के दूसरे मसीही साहित्य पर यूनानी-अँग्रेज़ी शब्दकोश,* [अँग्रेज़ी, दूसरा संस्करण एफ. डब्ल्यू. गिंगरिच और एफ. डब्ल्यू डैंकर द्वारा, शिकागो और लंदन (1979), पेज 630] में लिखा है कि "जब ऊँचा ओहदा रखनेवाला कोई बड़ा अधिकारी, खासकर राजा और सम्राट किसी प्रदेश का दौरा करते थे, तो यह [*पारूसीआ*] उनके दौरे के लिए इस्तेमाल होनेवाला सरकारी शब्द बन गया।" मत्ती 24:3 में, साथ ही 1 थिस्सलुनीकियों 3:13 और 2 थिस्सलुनीकियों 2:1 जैसी आयतों में, शब्द *पारूसीआ* यीशु मसीह की मौजूदगी की तरफ इशारा करता है जब वह राजा की हैसियत से मौजूद होता। उसकी यह मौजूदगी तब से शुरू हुई जब वह इस दुनिया की व्यवस्था के आखिरी दिनों में राजा बनकर राजगद्दी पर बैठा था।

6 "यातना की सूली" यूनानी में, σταυρός (*स्टवरोस*); लैटिन, *क्रक्स*

यीशु को कैलवरी यानी खोपड़ी स्थान नाम की जगह पर मौत की सज़ा दी गयी थी, और इसी घटना के सिलसिले में मत्ती 27:40 में "यातना की सूली" का ज़िक्र आता है। "यातना की सूली" यूनानी शब्द *स्टवरोस* का अनुवाद है। और इस बात का कोई सबूत नहीं है कि इस यूनानी शब्द का

मतलब क्रूस या क्रॉस था। मसीह के आने से पहले, सदियों से गैर-ईसाई लोग क्रूस को एक धार्मिक निशानी के तौर पर इस्तेमाल करते थे।

प्राचीन यूनानी भाषा के शब्द *स्टवरोस* का मतलब सिर्फ एक लकड़ी का सीधा खंभा, लट्ठ या बल्ली था, जो नींव डालने के काम आता था। क्रिया *स्टवरोओ* का मतलब था लट्ठों का बाड़ा बनाना, या लकड़ियों से घेराबंदी करना। मसीही यूनानी शास्त्र के लेखकों ने परमेश्‍वर की प्रेरणा से जब शास्त्र की किताबें लिखीं तो इसे आम (*खिनी*) यूनानी भाषा में लिखा। उन्होंने भी *स्टवरोस* शब्द का इस्तेमाल उसी मायने में किया जो प्राचीन यूनानी भाषा में था, यानी लकड़ी का सीधा खंभा या लट्ठ जिसमें आड़ी लकड़ी नहीं लगी होती। इस बात का कोई सबूत नहीं है कि इस शब्द का मतलब सीधी लकड़ी के अलावा कुछ और भी था। प्रेषित पतरस और पौलुस ने भी जब उस चीज़ का ज़िक्र किया जिस पर यीशु को यातना दी गयी और कीलों से ठोंका गया था, तो उन्होंने शब्द *क्ज़ीलॉन* का इस्तेमाल किया। इस खास संदर्भ में *क्ज़ीलॉन* शब्द का यही मतलब है, यानी लकड़ी का एक सीधा खंभा, जिसमें आड़ी लकड़ी न लगी हो। (प्रेषितों 5:30; 10:39; 13:29; गलातियों 3:13; 1 पतरस 2:24) *सेप्टुआजेंट* बाइबल में हमें *क्ज़ीलॉन* शब्द एज्रा 6:11 (2 एसद्रास 6:11) में मिलता है। उस आयत में *क्ज़ीलॉन* को एक सीधी लकड़ी बताया गया है जिस पर कानून तोड़नेवाले अपराधियों को लटकाया जाता था। इसी बात का ज़िक्र प्रेषितों 5:30; 10:39 में भी है।

अपनी एक किताब (*एन एक्सपॉज़िट्री डिक्शनरी ऑफ न्यू टेस्टामेंट वर्डस्,* 1966, पुनः-मुद्रण, खंड 1, पेज 256) में डब्ल्यू. ई. वाइन ने *स्टवरोस* का मतलब समझाते हुए कहा: "स्टवरोस (σταυρός) का पहला मतलब है, एक सीधा लट्ठ या खंभा। इस पर मुजरिमों को कीलों से ठोंककर मार डाला जाता था। *स्टवरोओ* शब्द के संज्ञा और क्रिया रूप, दोनों का मतलब है, लकड़ी के खंभे या लट्ठ से बाँधना। ये दोनों चर्च के क्रूस या क्रॉस से बिलकुल अलग हैं, जिसमें दो लकड़ियाँ होती हैं। क्रूस के आकार की शुरूआत प्राचीन कसदिया में हुई थी और इसे वहाँ और आस-पास के दूसरे देशों में, यहाँ तक कि मिस्र में भी तम्मूज़ देवता की निशानी के तौर पर इस्तेमाल किया जाता था। यह क्रॉस इस देवता के नाम के पहले अक्षर T (अँग्रेज़ी में Tau) के आकार में हुआ करता था। तीसरी सदी के बीच तक आते-आते, चर्च ने मसीही विश्‍वास की कुछ शिक्षाएँ या तो छोड़ दी थीं या वह लोगों को ये शिक्षाएँ तोड़-मरोड़कर अपने हिसाब से सिखाने लगा था। इस तरह चर्च ने सच्चे मसीही विश्‍वास के खिलाफ बगावत कर एक अलग धार्मिक व्यवस्था खड़ी कर दी और इसकी साख बढ़ाने के लिए, चर्च ने उन गैर-ईसाइयों का भी अपने धर्म में स्वागत किया जो मसीह को मानते तक नहीं थे। ज़्यादातर मामलों में, इन गैर-ईसाइयों को यह छूट दी गयी कि वे अपने धर्म की निशानियाँ और चिन्ह अपने पास रख सकते हैं। इसलिए, Tau या T की ऊपरी डंडी को नीचे कर, इस मशहूर चिन्ह को मसीह के क्रॉस की निशानी के रूप में अपना लिया गया।

लेविस और शॉर्ट का लिखा शब्दकोश बताता है कि लैटिन शब्द *क्रक्स* का असल में मतलब है, *"एक पेड़, चौखटा, या लकड़ी के दूसरे औज़ार जिन पर मौत की सज़ा दी जाती थी।* इन पर मुजरिमों को चढ़ाकर कीलें ठोंक दी जाती थीं या उन्हें लटकाया जाता था।" बाद में जाकर कहीं *क्रक्स* शब्द का मतलब "क्रॉस" या क्रूस भी बताया जाने लगा। लैटिन भाषा में सूली को, जो एक ही लकड़ी थी, *क्रक्स सिम्पलैक्स* कहा जाता था जिस पर किसी मुजरिम को मार डाला जाता था। यातना देने के ऐसे ही एक औज़ार की तसवीर, जस्टस लिपसियस (1547-1606) ने अपनी किताब (*डी क्रूस लिब्री त्रेस,* एंटवर्प, 1629, पेज 19) में दी है, जो अगले पन्ने पर दिखायी गयी है।

हरमैन फुल्डा की लिखी किताब [*दास क्रूज़ अंड डू क्रूयिज़ियूंग* (क्रूस और क्रूस पर चढ़ाना), 1878, पेज 109] कहती है: "सरेआम मौत की सज़ा देने के लिए जो जगहें चुनी गयी थीं, उनमें से कुछ जगहों पर पेड़ नहीं थे। इसलिए लकड़ी का एक सीधा खंभा ज़मीन में गाड़ दिया जाता था।

इस पर मुजरिम को लटकाकर उसके हाथों को ऊपर कर उन्हें बाँध दिया जाता या उन पर कील ठोंक दिए जाते थे। कुछ मुजरिमों के तो पैर भी बाँधकर उन पर कील ठोंक दिए जाते थे।" इस जानकारी को पुख्ता करने के लिए फुल्डा ने ढेरों सबूत देने के बाद पेज 219 और 220 पर यह नतीजा पेश किया: "यीशु की मौत लकड़ी के एक सीधे खंभे पर हुई थी, यह कहने के लिए पेश है ये तीन सबूत (क) यीशु के ज़माने में मध्य-पूर्वी देशों में जिस लकड़ी पर मौत की सज़ा दी जाती थी उसके लिए पीढ़ी-दर-पीढ़ी इस्तेमाल किया जानेवाला शब्द (ख) यीशु की दुःख-तकलीफों का इतिहास भी सुराग देता है और (ग) यीशु की मौत के बारे में बताने के लिए शुरू के चर्च के फादरों ने जो शब्द इस्तेमाल किए।"

क्रक्स सिम्पलैक्स की तसवीर

पॉल विलियम स्किमिड्ट, जो बासेल विश्वविद्यालय के प्रोफेसर थे, उन्होंने अपनी किताब *दी गेसचिचटे जेसु* (यीशु का इतिहास), भाग 2, ट्यूबिनगेन और लीपज़िग, सन् 1904, पेज 386-394 में यूनानी शब्द *स्टवरोस* पर ब्यौरेदार जानकारी पेश की। पेज 386 पर उन्होंने कहा: "σταυρός [*स्टवरोस*] का मतलब है पेड़ का सीधा तना।" और यीशु को दी गयी मौत की सज़ा के बारे में उन्होंने पेज 387-389 पर लिखा: "खुशखबरी के लेखों के मुताबिक यीशु को कोड़े लगाने के अलावा, सिर्फ एक ही तरह की सज़ा दी गयी थी और वह थी, सूली पर चढ़ाने का रोमी लोगों का सबसे आसान तरीका। यीशु के बाहरी कपड़े उतार दिए गए और उसे एक सूली पर लटकाकर मार डाला गया था। और जिस जगह उसे सज़ा दी गयी थी, वहाँ तक खुद यीशु को ही यह सूली ढोकर या घसीटकर ले जानी पड़ी ताकि उसकी यह सज़ा और भी शर्मनाक साबित हो। . . . बड़े पैमाने पर मुजरिमों को सूली पर लटकाकर मार डालना इतना आम था कि इस बात

की कोई गुंजाइश नहीं कि उस ज़माने में मौत की सज़ा देने का कोई और तरीका भी रहा हो: एक साथ 2,000 लोगों को वारुस ने (Jos. Ant. XVII 10. 10), क्वाद्रातुस ने (Jewish Wars II 12. 6), गवर्नर फेलिक्स ने (Jewish Wars II 15. 2 [13.2]), टाइटस ने (Jewish Wars VII.1[V11.1]) मौत की सज़ा दी थी।"

तो इस बात का कोई सबूत नहीं कि यीशु मसीह को क्रूस पर लटकाकर मार डाला गया था, जिसमें दो लकड़ियों को आपस में समकोण पर लगाया गया हो। क्रूस की धारणा गैर-ईसाई धर्मों से निकली है, इसलिए हम परमेश्वर के लिखित वचन में इस धारणा को जोड़कर कोई मिलावट नहीं करना चाहते। यूनानी शब्द *स्टवरोस* और *क्ज़ीलॉन* का जो सीधा मतलब है, हमने वही अनुवाद किया है। और क्योंकि यीशु ने *स्टवरोस* शब्द का इस्तेमाल उसके चेलों पर आनेवाली दुःख-तकलीफों, शर्म या यातना को दर्शाने के लिए किया था, इसलिए हमने *स्टवरोस* का अनुवाद "यातना की सूली" किया है, जबकि *क्ज़ीलोन* का अनुवाद "सूली" किया है ताकि *क्ज़ीलॉन* और *स्टवरोस* में फर्क पता लगे।

7 बाइबल में शब्द *"नफ्मा"* का इस्तेमाल

मसीही यूनानी शास्त्र में यूनानी शब्द *नफ्मा* 334 बार आता है। हिंदी बाइबलों में इस यूनानी शब्द का अनुवाद आम तौर पर "आत्मा" किया गया है। मगर हिंदी के इस *नयी दुनिया अनुवाद* में *नफ्मा* का अनुवाद संदर्भ के मुताबिक इसके सही मतलब को ध्यान में रखते हुए किया गया है। आम हिंदी बाइबलों में जहाँ परमेश्वर की सक्रिय शक्ति का अनुवाद "पवित्र आत्मा" किया गया है, इस *नयी दुनिया* हिंदी अनुवाद में इसे "परमेश्वर की पवित्र शक्ति" या "पवित्र शक्ति" अनुवाद किया गया है।

यूनानी शब्द *नफ्मा* पहली बार मत्ती 1:18 में आता है। इस आयत में यह शब्द, "परमेश्वर की पवित्र शक्ति" के लिए इस्तेमाल हुआ है। *नफ्मा* का बुनियादी मतलब है "साँस," मगर इस बुनियादी मतलब के अलावा इस शब्द के और भी कई मतलब हैं। इसके जितने भी मतलब हैं, उनमें एक बात आम है: ये सभी किसी अदृश्य बल की तरफ इशारा करते हैं, जिसे इंसान की आँखें नहीं देख सकतीं, मगर उस बल के काम करने का असर साफ नज़र आता है। यहाँ कई शीर्षकों के नीचे ऐसी आयतें दी गयी हैं जहाँ *नफ्मा* के अलग-अलग मतलब बताए गए हैं।

_नफ्मा_ जहाँ यह हवा के लिए इस्तेमाल हुआ है

यूहन्ना 3:8

_नफ्मा_ जहाँ यह परमेश्वर की सक्रिय शक्ति के लिए इस्तेमाल हुआ है

मत्ती 1:18; 28:19; मर 1:8;
लूका 1:67; 2:27; यूह 14:26;
प्रेषि 1:8; 2:33; रोमि 5:5; 8:15, 16;
2कुरिं 13:14; इफि 3:16; 4:4;
1थिस्स 5:19; तीतु 3:5; यहू 20

_नफ्मा_ जहाँ यह इंसान की जान के लिए इस्तेमाल हुआ है

लूका 8:55; 23:46; प्रेषि 7:59

_नफ्मा_ जहाँ यह दिखाने के लिए इस्तेमाल हुआ है कि परमेश्वर एक आत्मिक व्यक्ति है

यूह 4:24; 2कुरिं 3:17, 18

_नफ्मा_ जहाँ स्वर्ग में रहनेवालों के शरीर के लिए इस्तेमाल हुआ है

1कुरिं 15:44, 46

_नफ्मा_ जहाँ यह आत्मिक प्राणियों के लिए इस्तेमाल हुआ है

मत्ती 8:16; 10:1;
मर 3:11; 3:30;
1कुरिं 15:45;
इब्रा 1:7; 1पत 3:18

***नफ्मा* जहाँ यह किसी के जोश, स्वभाव या भावनाओं के लिए इस्तेमाल हुआ है**

लूका 1:17;
यूह 11:33; 13:21;
प्रेषि 17:16;
1कुरिं 16:18;
2कुरिं 2:13; 7:13;
1थिस्स 5:23

***नफ्मा* जहाँ यह ऐसे संदेशों के लिए इस्तेमाल हुआ है जिनके आत्मिक व्यक्तियों की तरफ से होने का दावा किया जाता है**

2थिस्स 2:2; 1तीमु 4:1; 1यूह 4:1

8

"हेडिज़," "शीओल"
—कब्र, मरने के बाद जहाँ सभी जाते हैं
यूनानी, ᾅδης (*आदीस*)
लैटिन, *इनफर्नस;* इब्रानी, שְׁאוֹל (*शीओल*); सीरियाई, *शिउल*
"नरक" नहीं, यह गलत अनुवाद है

हेडिज़ शब्द इन दस जगहों पर आता है

शब्द "हेडिज़" का शायद मतलब है, "अन-देखी जगह।" यह शब्द मसीही यूनानी शास्त्र के अँग्रेज़ी *नयी दुनिया अनुवाद* में 10 बार आता है। ये 10 आयतें हैं: मत्ती 11:23; 16:18; लूका 10:15; 16:23; प्रेषितों 2:27, 31; प्रकाशित-वाक्य 1:18; 6:8; 20:13, 14. हिंदी के *नयी दुनिया अनुवाद* में इन सारी आयतों में इस शब्द का अनुवाद "कब्र" किया गया है।

यूनानी शब्द *हेडिज़* इब्रानी शब्द *शीओल* का अनुवाद है। जब प्रेषितों 2:27 में, पतरस ने भजन 16:10 का हवाला दिया, जहाँ इब्रानी शब्द *शीओल* इस्तेमाल हुआ है, तो उसने *हेडिज़* शब्द का इस्तेमाल किया। इससे पता चलता है कि *हेडिज़* और *शीओल* दोनों का एक ही मतलब है, यानी कब्र, जहाँ सभी इंसान मरने के बाद जाते हैं। (जबकि यूनानी शब्द *टाफोस* किसी एक कब्र के लिए इस्तेमाल होता है)। लैटिन भाषा के शब्द *इन-फर्नस* (कभी-कभी *इनफरस*) और हेडिज़ शब्द का मतलब एक ही है। इसका मतलब है "वह जो नीचे है; नीचे का इलाका," और यह बात कब्र के बारे में बिलकुल सही है। इसलिए, यह कहा जा सकता है कि यूनानी और इब्रानी भाषा के शब्दों से लैटिन भाषा का यह शब्द काफी मिलता-जुलता मतलब देता है।

परमेश्वर की प्रेरणा से लिखे गए शास्त्र में, यूनानी शब्द "हेडिज़" और इब्रानी शब्द "शीओल" मौत और मरे हुओं के सिलसिले में इस्तेमाल हुए हैं। जीवन से और ज़िंदा लोगों से इनका कोई ताल्लुक नहीं है। (प्रकाशितवाक्य 20:13) अपने आप में इन शब्दों से न तो सुख का, न ही दर्द का एहसास मिलता है।

शीओल इन छियासठ जगहों पर आता है

अँग्रेज़ी *नयी दुनिया अनुवाद* के इब्रानी शास्त्र में, यानी उत्पत्ति से मलाकी तक, इन 66 जगहों पर शब्द "शीओल" आता है: उत्पत्ति 37:35; 42:38; 44:29, 31; गिनती 16:30, 33; व्यवस्थाविवरण 32:22; 1 शमूएल 2:6; 2 शमूएल 22:6; 1 राजा 2:6, 9; अय्यूब 7:9; 11:8; 14:13; 17:13, 16; 21:13; 24:19; 26:6; भजन 6:5; 9:17; 16:10; 18:5; 30:3; 31:17; 49:14, 14, 15; 55:15; 86:13; 88:3; 89:48; 116:3; 139:8; 141:7; नीतिवचन 1:12; 5:5; 7:27; 9:18; 15:11, 24; 23:14; 27:20; 30:16; सभोपदेशक 9:10; श्रेष्ठगीत 8:6; यशायाह 5:14; [7:11]; 14:9,

11, 15; 28:15, 18; 38:10, 18; 57:9; यहेजकेल 31:15, 16, 17; 32:21, 27; होशे 13:14, 14; आमोस 9:2; योना 2:2; हबक्कूक 2:5.

सन् 1977 की *बिबलिया हेब्राइका स्टटगार्टन-सिया* में 65 जगहों पर "शीओल" शब्द आता है और यशायाह 7:11 एक ऐसी आयत है जहाँ हम समझते हैं कि स्वर के हल्के बदलाव से शब्द "शीओल" आता है। इन सभी जगहों पर अँग्रेज़ी के *नयी दुनिया अनुवाद* के इब्रानी शास्त्र में इब्रानी शब्द "*शीओल*" का अनुवाद, "*शीओल*" ही किया गया है। यूनानी भाषा के *सेप्टुआजेंट* बाइबल में ज़्यादातर जगहों में *शीओल* का अनुवाद *हेडिज़* किया गया है।

इब्रानी भाषा का शब्द *शीओल* किस शब्द से निकला है, इस बारे में अलग-अलग राय पेश की गयी है। मगर ज़ाहिर तौर पर यह शब्द इब्रानी क्रिया שׁאל (*शाआल*) से निकला है। इस क्रिया का मतलब है, "माँगना" या "गुज़ारिश करना।" इससे पता चलता है कि शीओल एक जगह है (न कि कोई हालत) जो बिना भेदभाव के हर किसी को माँग लेती है, क्योंकि यह मरनेवाले हर इंसान को अपने अंदर समा लेती है। (अँग्रेज़ी *NW रेफ्रेंस बाइबल* में उत्पति 37:35 और यशायाह 7:11 के फुटनोट देखें।) यह ज़मीन के अंदर है और इसका ज़िक्र हमेशा मरे हुओं के सिलसिले में होता है। और साफ ज़ाहिर है कि इसका मतलब कब्र है जहाँ मरने पर सब इंसान जाते हैं। यह मरे हुओं की जगह है जो ज़मीन के अंदर (समंदर में नहीं) है। जबकि, इब्रानी शब्द *केवेर* का मतलब है किसी एक इंसान की कब्र या वह जगह जहाँ उसे दफनाया गया हो।—उत्पत्ति 23:4, 6, 9, 20.

9 "गेहन्ना"—पूरी तरह विनाश की निशानी
यूनानी, γέεννα (*गेएन्ना*); लैटिन, *गेहन्ना*
इब्रानी, גי הנם (*गेहिन्नोम,* "हिन्नोम घाटी")

"गेहन्ना" का मतलब है "हिन्नोम की घाटी।" यह इब्रानी शब्द *गेहिन्नोम* से निकला यूनानी शब्द है। यहोशू 18:16 में, जहाँ "हिन्नोम की घाटी" लिखा है, वहाँ *सेप्टुआजेंट* बाइबल में "गेहन्ना" शब्द आता है। शब्द "गेहन्ना" मसीही यूनानी शास्त्र में 12 बार आता है, और इनमें से पहली आयत है, मत्ती 5:22. *नयी दुनिया अनुवाद* में इन सब जगहों पर इसका अनुवाद "गेहन्ना" किया गया है। ये आयतें हैं, मत्ती 5:22, 29, 30; 10:28; 18:9; 23:15, 33; मरकुस 9:43, 45, 47; लूका 12:5; याकूब 3:6.

हिन्नोम की घाटी प्राचीन यरूशलेम शहर के पश्चिम और दक्षिण की तरफ थी। (यहोशू 15:8; 18:16; यिर्मयाह 19:2, 6) यहूदा के बाद के राजाओं के वक्त में इस घाटी में मोलेक देवता की मूरत पूजी जाती थी, जो दूसरी जातियों का देवता था। इस मूरत के आगे, इंसानों को आग में जलाकर बलि चढ़ाया जाता था। (2 इतिहास 28:3; 33:6, यिर्मयाह 7:31, 32; 32:35) मगर राजा योशिय्याह ने, जो पर-मेश्वर का वफादार सेवक था, इन धार्मिक कामों पर रोक लगाने के लिए इस घाटी को अपवित्र कर दिया, खासकर घाटी के उस हिस्से को जिसे तोपेत कहा जाता था।—2 राजा 23:10.

यहूदी टीकाकार डेविड किमहाइ (1160?-1235?) ने भजन 27:13 के बारे में टिप्पणी देते वक्त "गेहिन्नोम" के इतिहास के बारे में यह जानकारी दी: "यह यरूशलेम से सटी हुई एक जगह है, और बेहद घिनौनी जगह है। यहाँ लोग गंदी चीज़ें और लाशें फेंकते हैं। इतना ही नहीं, यहाँ लगातार आग जलती रहती है ताकि गंदी चीज़ें और लाशों की हड्डियाँ भस्म हो जाएँ।

इसलिए दुष्टों को मिलनेवाली सज़ा को लाक्षणिक मायने में गेहिन्नोम की सज़ा कहा गया है।"

बाद में, हिन्नोम की घाटी यरूशलेम शहर का कूड़ा-करकट फेंकने और जलाने की जगह बन गयी। जानवरों की लाशें इस घाटी में फेंक दी जाती थीं, जहाँ गंधक डाला जाता था ताकि आग जलती रहे। इसके अलावा, जिन अपराधियों को मौत के घाट उतारा जाता था और जिन्हें इज़्ज़त से दफनाने के लायक नहीं समझा जाता था, उनकी लाशें भी इस घाटी में फेंक दी जाती थीं। अगर ये लाशें आग में जा पड़ती थीं, तो भस्म हो जाती थीं, लेकिन अगर इस गहरी घाटी की ढलान पर किसी चट्टान पर जा गिरती थीं तो उनके सड़ते हुए माँस में कीड़े पड़ जाते थे। ये कीड़े तब तक नहीं मरते थे जब तक कि वे सारा माँस न खा लें। इसके बाद सिर्फ कंकाल बच जाता था। इसलिए, किसी की लाश को गेहन्ना में फेंकना, सबसे बुरी सज़ा समझा जाता था। गेहन्ना जो सचमुच की एक जगह थी और इसके जो मायने थे, उसी के आधार पर बाइबल में लाक्षणिक मायने में 'आग की झील' का भी ज़िक्र किया गया है 'जो गंधक से जलती रहती है।'—प्रकाशितवाक्य 19:20, 20:10, 14, 15; 21:8.

गेहन्ना में कभी-भी ज़िंदा जानवर या इंसान नहीं फेंके जाते थे, ताकि वे ज़िंदा जलाए जाएँ या उन्हें यातना दी जाए। इसलिए, बाइबल में गेहन्ना का मतलब ऐसी अनदेखी जगह नहीं हो सकता जहाँ इंसानों को मरने के बाद हमेशा-हमेशा तक सचमुच की आग में तड़पाया जाता हो या जहाँ ऐसे कीड़े उन पर हमला करते रहते हों, जो कभी नहीं मरते। किसी मुरदे का स्मारक कब्र में रखा जाना, इस बात की निशानी होता था कि जो मर चुका है उसके फिर से जी उठने की उम्मीद है। मगर जिनके बारे में माना जाता था कि उनके दोबारा जी उठने की उम्मीद नहीं है, उन्हें इज़्ज़त के साथ दफनाया नहीं जाता था बल्कि गेहन्ना में फेंक दिया जाता था। इसलिए जब यीशु और उसके चेलों ने गेहन्ना शब्द का इस्तेमाल किया, तो उनका मतलब था, *हमेशा का विनाश* यानी *परमेश्वर के बनाए विश्व से मिटा दिया जाना, या "दूसरी मौत"* यानी *पूरी तरह वजूद मिट जाना।*

गेहन्ना के बारे में ये सारी सच्चाइयाँ इस बात से मेल खाती हैं कि यहोवा प्यार करने-वाला और न्याय का परमेश्वर है।—निर्गमन 34:6, 7; 1 यूहन्ना 4:8 से तुलना करें।

10 "पुराना नियम" और "नया नियम"
2 कुरिंथियों 3:14
—यूनानी, *एपी ती अनाग्नोसीतिस पालेयास दायतेकेस*

बाइबल की जो किताबें इब्रानी और अरामी भाषा में लिखी गयी थीं, उन्हें आज आम तौर पर "पुराना नियम" कहा जाता है। और ऐसा कहने के लिए 2 कुरिंथियों 3:14 का हवाला दिया जाता है, जहाँ लिखा है: "मगर उनकी सोचने-समझने की शक्ति मंद पड़ गयी थी। इसलिए कि आज के दिन तक पुराने करार ["पुराने नियम," *ओ.वी.*] के पढ़े जाने के वक्त उनके मनों पर वही परदा पड़ा रहता है, क्योंकि वह परदा सिर्फ मसीह के ज़रिए दूर किया जाता है।"

लेकिन सच तो यह है कि इस आयत में प्रेषित पौलुस इब्रानी शास्त्र की उन सारी किताबों की बात नहीं कर रहा था, जो इब्रानी और अरामी भाषा में लिखी गयी थीं। न ही पौलुस यह कह रहा था कि मसीह के आने के बाद, बाइबल की जो किताबें ईश्वर-प्रेरणा से लिखी गयीं, वे एक "नया नियम" हैं। दरअसल पौलुस उस पुराने कानून के करार की बात कर रहा था, जिसे मूसा ने बाइबल की शुरू की पाँच किताबों में लिखा है। इन पाँच किताबों को *पेन्टट्यूक* कहा जाता है।

और ये किताबें मसीह से पहले लिखी गयी बाइबल की किताबों का बस एक छोटा-सा हिस्सा हैं। यही वजह है कि पौलुस ने नए करार की बात कहने के बाद अगली आयत में यह कहा: "जब कभी मूसा के लेख पढ़कर सुनाए जाते हैं।"

इसलिए इब्रानी और अरामी भाषा में लिखी बाइबल की सारी किताबों को मिलाकर "पुराना नियम" कहना और मसीही यूनानी शास्त्र की किताबों को "नया नियम" कहना सही नहीं है, क्योंकि ऐसा कहने के लिए कोई पक्का सबूत नहीं है। खुद यीशु मसीह ने सभी पवित्र लेखों को "शास्त्र" कहा था। (मत्ती 21:42, मरकुस 14:49; यूहन्ना 5:39) और प्रेषित पौलुस ने इन लेखों को "पवित्र शास्त्र" और "शास्त्र" कहा था। (रोमियों 1:2; 15:4; 2 तीमुथियुस 3:15) इसलिए इन ठोस सबूतों को ध्यान में रखते हुए बाइबल की उत्पत्ति से लेकर मलाकी तक की किताबों को "इब्रानी शास्त्र" और मत्ती से लेकर प्रकाशितवाक्य तक की किताबों को "मसीही यूनानी शास्त्र" कहना ज़्यादा सही है।

11 पैसा, बाट-पत्थर, नाप

नीचे बताए गए मापदंड, बाइबल से मिलनेवाले सबूतों और पुरातत्त्व की खोजों के आधार पर ठहराए गए औसत आँकड़े हैं। यहाँ दिए गए आधुनिक भार, नाप के आँकड़े, पूरी तरह नहीं, मगर करीब-करीब पुराने ज़माने के भार, नाप जितने ही हैं।

यूनानी शास्त्र में भार के हिसाब से यूनानी और रोमी पैसे की तालिका

		आज का वज़न/तौल
1 लेप्टान (पीतल या ताँबे का यहूदी सिक्का)	= 1/2 क्वाड्रांस	
1 क्वाड्रांस (पीतल या ताँबे का रोमी सिक्का)	= 2 लेप्टा	
1 अस या असारियन (पीतल या ताँबे का रोमी और प्रांतीय सिक्का)	= 4 क्वाड्रानतस	
1 दीनार (चाँदी का रोमी सिक्का)	= 16 अस	= 3.85 ग्राम
1 द्राख्मा (चाँदी का यूनानी सिक्का)		= 3.40 ग्राम
1 दोद्राख्मा (चाँदी का यूनानी सिक्का)	= 2 द्राख्मा	= 6.80 ग्राम
1 चतुर्-द्राख्मा (स्ताटेर चाँदी का सिक्का)	= 4 द्राख्मा	= 13.6 ग्राम
1 मीना	= 100 द्राख्मा	= 340 ग्राम
1 तालंतौन (सोना या चाँदी)	= 60 मीना	= 20.4 किलोग्राम

द्रव माप

1 बत		= 22 लीटर
1 कोर	= 10 बत	= 220 लीटर

लंबाई और दूरी

1 हाथ		= 44.5 सें.मी.	= 17.5 इंच
1 लंबा हाथ		= 51.8 सें.मी.	= 20.4 इंच
1 सरकंडा	= 6 हाथ	= 2.67 मीटर	= 8.75 फुट
1 लंबा सरकंडा	= 6 लंबे हाथ	= 3.11 मीटर	= 10.2 फुट
1 पुरसा		= 1.8 मीटर	= 6 फुट

12 पृथ्वी पर यीशु की ज़िंदगी की खास घटनाएँ

खुशखबरी की चार किताबों में दर्ज़ घटनाएँ जिस क्रम में घटीं

वक्त	जगह	घटना	मत्ती	मरकुस	लूका	यूहन्ना
		यीशु की सेवा से पहले तक की घटनाएँ				
ई.पू. 3	यरूशलेम का मंदिर	यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के जन्म की भविष्यवाणी जकर्याह को सुनायी गयी			1:5-25	
करीब ई.पू. 2	नासरत; यहूदिया	मरियम को यीशु के जन्म की भविष्यवाणी सुनायी गयी; वह इलीशिबा से मिलने जाती है			1:26-56	
ई.पू. 2	यहूदिया का पहाड़ी इलाका	यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले का जन्म; बाद में, वीराने में उसकी ज़िंदगी			1:57-80	
ई.पू. 2, करीब अक्टू. 1	बेतलेहेम	यीशु का जन्म (वह वचन, जिसके ज़रिए दूसरी सभी चीज़ें वजूद में आयीं) जो अब्राहम और दाविद का वंशज था	1:1-25		2:1-7	1:1-5, 9-14
	बेतलेहेम के पास	स्वर्गदूत खुशखबरी सुनाता है; चरवाहे शिशु को देखने आते हैं			2:8-20	
	बेतलेहेम; यरूशलेम	यीशु का खतना किया गया (8वें दिन), मंदिर में पेश किया गया (40वें दिन)			2:21-38	
ई.पू. 1 या ई.स. 1	यरूशलेम; बेतलेहेम; नासरत	ज्योतिषी; मिस्र भागना; शिशुओं का कत्ल; यीशु की वापसी	2:1-23		2:39, 40	
ई.स. 12	यरूशलेम	बारह साल का यीशु, फसह के त्योहार पर; घर जाता है			2:41-52	
29, वसंत	वीराना, यरदन	यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले की सेवा	3:1-12	1:1-8	3:1-18	1:6-8, 15-28
		यीशु की सेवा की शुरूआत				
29, पतझड़	यरदन नदी	यीशु का बपतिस्मा और अभिषेक। एक इंसान के रूप में दाविद के वंश में पैदा हुआ मगर जिसके बारे में यह घोषणा हुई कि वह परमेश्वर का बेटा है	3:13-17	1:9-11	3:21-38	1:32-34

	यहूदिया का वीराना	यीशु का निराहार रहना और उसकी परीक्षा	4:1-11	1:12, 13	4:1-13	
	यरदन पार का बैतनिय्याह	यीशु के बारे में यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले की गवाही				1:15, 29-34
	ऊपरी यरदन घाटी	यीशु के पहले चेले				1:35-51
	गलील का कसबा काना; कफरनहूम	यीशु का पहला चमत्कार; वह कफरनहूम जाता है				2:1-12
30, फसह	यरूशलेम	फसह का त्योहार मनाना; लेन-देन करनेवालों को मंदिर से बाहर खदेड़ना				2:13-25
	यरूशलेम	नीकुदेमुस के साथ यीशु की बातचीत				3:1-21
	यहूदिया; एनोन	यीशु के चेले बपतिस्मा देते हैं; यूहन्ना को घटना है				3:22-36
	तिबिरियास	यूहन्ना कैद में; यीशु, गलील के लिए रवाना होता है	4:12; 14:3-5	1:14; 6:17-20	3:19, 20; 4:14	4:1-3
	सामरिया का सूखार	गलील जाते वक्त, रास्ते में यीशु सामरियों को सिखाता है				4:4-43
		गलील में बड़े पैमाने पर यीशु की सेवा				
	गलील	पहले यह ऐलान करता है, "स्वर्ग का राज पास आ गया है"	4:17	1:14, 15	4:14, 15	4:44, 45
	नासरत; काना; कफरनहूम	लड़के को चंगा करता है; जिस काम के लिए भेजा गया वह पढ़कर बताता है; ठुकराया जाता है; कफरनहूम चला जाता है	4:13-16		4:16-31	4:46-54
	गलील की झील कफरनहूम के पास	शमौन और अन्द्रियास, याकूब और यूहन्ना को बुलावा	4:18-22	1:16-20	5:1-11	
	कफरनहूम	दुष्ट स्वर्गदूत के वश में पड़े हुए को, साथ ही पतरस की सास और दूसरे बहुतों को चंगा करता है	8:14-17	1:21-34	4:31-41	
	गलील	गलील का पहला दौरा, उन चार चेलों के साथ जिन्हें बुलावा मिल चुका है	4:23-25	1:35-39	4:42, 43	
	गलील	कोढ़ी चंगा किया गया; भारी तादाद में लोग यीशु के पास आते हैं	8:1-4	1:40-45	5:12-16	
	कफरनहूम	लकवे के मारे को चंगा करता है	9:1-8	2:1-12	5:17-26	
	कफरनहूम	मत्ती को बुलावा; कर-वसूलनेवालों के साथ दावत	9:9-17	2:13-22	5:27-39	
	यहूदिया	यहूदिया के सभा-घरों में प्रचार करता है			4:44	

वक्त	जगह	घटना	मत्ती	मरकुस	लूका	यूहन्ना
31, फसह	यरूशलेम	दावत में हाज़िर; आदमी को चंगा करता है; फरीसियों को फटकारता है				5:1-47
	यरूशलेम से लौटता है (?)	चेले, सब्त के दिन अनाज की बालें तोड़ते हैं	12:1-8	2:23-28	6:1-5	
	गलील; गलील की झील	सब्त के दिन हाथ चंगा करता है; झील के किनारे चला जाता है; चंगाई करता है	12:9-21	3:1-12	6:6-11	
	कफरनहूम के पास पहाड़ पर	12 चेले, प्रेषित होने के लिए चुने जाते हैं		3:13-19	6:12-16	
	कफरनहूम के पास	पहाड़ी उपदेश	5:1—7:29		6:17-49	
	कफरनहूम	सेना-अफसर के नौकर को चंगा करता है	8:5-13		7:1-10	
	नाईन	विधवा के बेटे को ज़िंदा करता है			7:11-17	
	गलील	कैद में पड़ा यूहन्ना, यीशु के पास अपने चेले भेजता है	11:2-19		7:18-35	
	गलील	शहरों को धिक्कारता है; नन्हे-मुन्नों पर प्रकट; जूआ आरामदायक	11:20-30			
	गलील	एक पापिन उसके पैरों पर तेल मलती है; कर्ज़दारों की मिसाल			7:36-50	
	गलील	गलील में प्रचार का दूसरा दौरा, 12 प्रेषितों के साथ			8:1-3	
	गलील	दुष्ट स्वर्गदूत के वश में पड़े आदमी को चंगा किया; बालज़बूल के साथ साँठ-गाँठ का इलज़ाम	12:22-37	3:19-30		
	गलील	शास्त्री और फरीसी निशानी देखना चाहते हैं	12:38-45			
	गलील	मसीह के नज़दीकी रिश्तेदार उसके चेले	12:46-50	3:31-35	8:19-21	
	गलील की झील	बीज बोनेवाले की, जंगली पौधे की और दूसरी मिसालें; और उन्हें समझाना	13:1-53	4:1-34	8:4-18	
	गलील की झील	झील पार करते वक्त आँधी को शांत करना	8:18,23-27	4:35-41	8:22-25	
	गदारा, गलील की झील के दक्षिण-पूर्व में	दो आदमी जिनमें दुष्ट स्वर्गदूत समाए थे, चंगे किए गए; दुष्ट दूत सूअरों में समा गए	8:28-34	5:1-20	8:26-39	
	शायद कफरनहूम	याईर की बेटी ज़िंदा की गयी; स्त्री चंगी की गयी	9:18-26	5:21-43	8:40-56	
	कफरनहूम (?)	दो अंधों को और दुष्ट स्वर्गदूत के वश में पड़े गूंगे को ठीक करता है	9:27-34			
	नासरत	जिस शहर में पला-बढ़ा वहाँ फिर से जाता है और उसे फिर से ठुकराया जाता है	13:54-58	6:1-6		

	गलील	गलील का तीसरा और भी बड़ा दौरा, क्योंकि प्रेषित भेजे गए	9:35–11:1	6:6-13	9:1-6	
	तिबिरियास	यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले का सिर काट दिया गया; दोषी महसूस करने की वजह से हेरोदेस का डर	14:1-12	6:14-29	9:7-9	
32, फसह के त्योहार के आस-पास (यूह 6:4)	कफरनहूम (?); गलील की झील के उत्तर-पूर्व में	प्रचार के दौरे से प्रेषित लौटते हैं; 5,000 को खाना खिलाया	14:13-21	6:30-44	9:10-17	6:1-13
	गलील की झील के उत्तर-पूर्व में; गन्नेसरत	यीशु को राजा बनाने की कोशिश; वह झील पर चलता है; चंगा करता है	14:22-36	6:45-56		6:14-21
	कफरनहूम	"ज़िंदगी देनेवाली रोटी" कौन है बताता है; बहुत-से चेले उसे छोड़ जाते हैं				6:22-71
32, फसह के बाद	शायद कफरनहूम	परंपराएँ जिनकी वजह से परमेश्वर का वचन रद्द किया जाता है	15:1-20	7:1-23		7:1
	फीनीके; दिकापुलिस	सोर और सीदोन के पास; फिर दिकापुलिस जाना; 4,000 को खाना खिलाया	15:21-38	7:24–8:9		
	मगदन	सदूकी और फरीसी फिर एक निशानी देखना चाहते हैं	15:39–16:4	8:10-12		
	गलील की झील के उत्तर-पूर्व में; बैतसैदा	फरीसियों के खमीर के खिलाफ चेतावनी देता है; अंधे को चंगा करता है	16:5-12	8:13-26		
	कैसरिया फिलिप्पी	यीशु जो मसीहा है; अपनी मौत के बारे में और फिर से जी उठने के बारे में भविष्यवाणी करता है	16:13-28	8:27–9:1	9:18-27	
	शायद हर्मोन पहाड़	पतरस, याकूब और यूहन्ना के सामने उसका रूप बदलता है	17:1-13	9:2-13	9:28-36	
	कैसरिया फिलिप्पी	दुष्ट स्वर्गदूत के वश में पड़े लड़के को चंगा करता है जो चेले नहीं कर पाते	17:14-20	9:14-29	9:37-43	
	गलील	अपनी मौत और फिर से जी उठने के बारे में दोबारा भविष्यवाणी करता है	17:22, 23	9:30-32	9:43-45	
	कफरनहूम	कर का पैसा चमत्कार से दिया गया	17:24-27			
	कफरनहूम	राज में सबसे बड़ा कौन; मामलों को निपटाना; दया	18:1-35	9:33-50	9:46-50	
	गलील; सामरिया	झोंपड़ियों के त्योहार के लिए गलील से रवाना होता है; सेवा का काम करने के लिए सबकुछ दरकिनार करना	8:19-22		9:51-62	7:2-10

वक्त	जगह	घटना	मत्ती	मरकुस	लूका	यूहन्ना
		यहूदिया में यीशु की बाद की सेवा				
32, झोंपड़ियों का त्योहार	यरूशलेम	झोंपड़ियों के त्योहार पर यीशु सरेआम लोगों को सिखाता है				7:11-52
	यरूशलेम	त्योहार के बाद सिखाता है; अंधे को ठीक करता है				8:12–9:41
	शायद यहूदिया	70 चेलों को प्रचार करने भेजता है; वे लौटकर अपने प्रचार की रिपोर्ट देते हैं			10:1-24	
	यहूदिया; बैतनिय्याह	मददगार पड़ोसी साबित होनेवाले सामरी के बारे में बताता है; मारथा और मरियम के घर पर			10:25-42	
	शायद यहूदिया	प्रार्थना का नमूना फिर से सिखाता है; माँगते रहना			11:1-13	
	शायद यहूदिया	झूठे इलज़ाम को गलत साबित करता है; दिखाता है कि यह पीढ़ी सज़ा के लायक है			11:14-36	
	शायद यहूदिया	फरीसी के यहाँ दावत पर यीशु कपटियों को धिक्कारता है			11:37-54	
	शायद यहूदिया	परमेश्वर कितनी परवाह करता है, इस पर भाषण; विश्वासयोग्य प्रबंधक			12:1-59	
	शायद यहूदिया	सब्त के दिन एक अपाहिज स्त्री को चंगा करता है; तीन मिसालें			13:1-21	
32, समर्पण का त्योहार	यरूशलेम	समर्पण के त्योहार पर यीशु; अच्छा चरवाहा				10:1-39
		यरदन नदी के पूरब में यीशु की बाद की सेवा				
	यरदन पार	बहुतेरे यीशु पर विश्वास करते हैं				10:40-42
	पेरिया (यरदन पार)	यरूशलेम जाते हुए शहरों और गाँवों में सिखाता है			13:22	
	पेरिया	राज में दाखिल होना; हेरोदेस की धमकी; घर छोड़ा जाता है			13:23-35	
	शायद पेरिया	नम्रता; शाम के खाने की आलीशान दावत की मिसाल			14:1-24	

	शायद पेरिया	चेला होने की कीमत आँकना			14:25-35	
	शायद पेरिया	मिसालें: खोयी हुई भेड़, खोया सिक्का, उड़ाऊ बेटा			15:1-32	
	शायद पेरिया	मिसालें: बेईमान प्रबंधक, अमीर आदमी और लाज़र			16:1-31	
	शायद पेरिया	माफी और विश्वास; निकम्मे दास			17:1-10	
	बैतनिय्याह	यीशु, मरे हुए लाज़र को ज़िंदा करता है				11:1-46
	यरूशलेम; इफ्राइम	यीशु के खिलाफ कैफा की सलाह; यीशु वीराने में चला जाता है				11:47-54
	सामरिया; गलील	सामरिया और गलील से होते हुए रास्ते में चंगाई और सिखाने का काम करता है			17:11-37	
	सामरिया या गलील	मिसालें: बार-बार दुहाई देनेवाली विधवा, फरीसी और कर-वसूलनेवाला			18:1-14	
	पेरिया	पेरिया से होता हुआ निचले भाग में आता है; तलाक पर शिक्षा देता है	19:1-12	10:1-12		
	पेरिया	बच्चों से मिलकर उन्हें आशीष देता है	19:13-15	10:13-16	18:15-17	
	पेरिया	अमीर नौजवान; अंगूर के बाग के मज़दूरों की मिसाल	19:16–20:16	10:17-31	18:18-30	
	शायद पेरिया	यीशु अपनी मौत और फिर से जी उठने के बारे में तीसरी बार भविष्यवाणी करता है	20:17-19	10:32-34	18:31-34	
	शायद पेरिया	राज में बैठने के बारे में याकूब और यूहन्ना की गुज़ारिश	20:20-28	10:35-45		
	यरीहो	यरीहो से गुज़रते हुए, वह दो अंधों को चंगा करता है; जक्कई से मिलता है; चाँदी के दस टुकड़ों की मिसाल	20:29-34	10:46-52	18:35–19:28	

यरूशलेम में यीशु की सेवा का अंतिम चरण

निसान 8, 33	बैतनिय्याह	फसह के त्योहार से छः दिन पहले बैतनिय्याह पहुँचता है				11:55–12:1
निसान 9	बैतनिय्याह	शमौन कोढ़ी के घर दावत; मरियम यीशु के सिर पर तेल डालकर अभिषेक करती है; यहूदी, यीशु और लाज़र को देखने आते हैं	26:6-13	14:3-9		12:2-11

वक्त	जगह	घटना	मत्ती	मरकुस	लूका	यूहन्ना
निसान 9 (*जारी*)	बैतनिय्याह-यरूशलेम	मसीह का यरूशलेम में विजयी प्रवेश	21:1-11, 14-17	11:1-11	19:29-44	12:12-19
निसान 10	बैतनिय्याह-यरूशलेम	बिना फल का अंजीर का पेड़; दूसरी बार मंदिर की सफाई	21:18, 19, 12, 13	11:12-17	19:45, 46	
	यरूशलेम	प्रधान याजक और शास्त्री यीशु को मार डालने की साज़िश रचते हैं		11:18, 19	19:47, 48	
	यरूशलेम	यूनानियों के साथ चर्चा; यहूदियों का अविश्वास				12:20-50
निसान 11	बैतनिय्याह-यरूशलेम	बिना फल का अंजीर का पेड़ सूखा हुआ पाया गया	21:19-22	11:20-25		
	यरूशलेम, मंदिर	मसीह के अधिकार पर सवाल उठाया गया; दो बेटों की मिसाल	21:23-32	11:27-33	20:1-8	
	यरूशलेम, मंदिर	दुष्ट बागबानों, शादी की दावत की मिसालें	21:33–22:14	12:1-12	20:9-19	
	यरूशलेम, मंदिर	यीशु को फँसाने के इरादे से, कर, पुनरुत्थान, आज्ञा के बारे में पूछे गए सवाल	22:15-40	12:13-34	20:20-40	
	यरूशलेम, मंदिर	मसीहा के वंश के बारे में सवाल पूछकर यीशु दुश्मनों का मुँह बंद करता है	22:41-46	12:35-37	20:41-44	
	यरूशलेम, मंदिर	शास्त्रियों और फरीसियों की तीखे शब्दों में निंदा	23:1-39	12:38-40	20:45-47	
	यरूशलेम, मंदिर	विधवा के दो छोटे सिक्के		12:41-44	21:1-4	
	जैतून पहाड़	यरूशलेम के नाश; यीशु की मौजूदगी और व्यवस्था के अंत की भविष्यवाणी	24:1-51	13:1-37	21:5-38	
	जैतून पहाड़	दस कुंवारियों, तोड़ों, भेड़ों और बकरियों की मिसालें	25:1-46			
निसान 12	यरूशलेम	धर्मगुरु यीशु की मौत की साज़िश रचते हैं	26:1-5	14:1, 2	22:1, 2	
	यरूशलेम	यीशु को धोखे से पकड़वाने के लिए यहूदा, याजकों के साथ सौदा करता है	26:14-16	14:10, 11	22:3-6	

निसान 13 (गुरुवार दोपहर)	यरूशलेम में और उसके आस-पास	फसह की तैयारियाँ	26:17-19	14:12-16	22:7-13	
निसान 14	यरूशलेम	बारहों के साथ फसह की दावत खायी	26:20, 21	14:17, 18	22:14-18	
	यरूशलेम	यीशु अपने प्रेषितों के पैर धोता है				13:1-20
	यरूशलेम	एक गद्दार के रूप में यहूदा की पहचान और उसे बाहर निकालना	26:21-25	14:18-21	22:21-23	13:21-30
	यरूशलेम	ग्यारह चेलों के साथ स्मारक के भोज की शुरूआत की गयी	26:26-29	14:22-25	22:19, 20, 24-30	[1कुरि 11: 23-25]
	यरूशलेम	पतरस के इनकार करने और प्रेषितों के बिखरने की भविष्यवाणी की गयी	26:31-35	14:27-31	22:31-38	13:31-38
	यरूशलेम	मददगार; आपसी प्यार; दुःख-तकलीफें; यीशु की प्रार्थना				14:1–17:26
	गतसमनी	बाग में दुःख से तड़पना; यीशु का धोखे से पकड़वाया जाना और गिरफ्तारी	26:30, 36-56	14:26, 32-52	22:39-53	18:1-12
	यरूशलेम	हन्ना, कैफा, महासभा की पूछताछ; पतरस इनकार करता है	26:57–27:1	14:53–15:1	22:54-71	18:13-27
	यरूशलेम	विश्वासघाती यहूदा खुद को फाँसी देता है	27:3-10		[प्रेषि 1:18,19]	
	यरूशलेम	पहले पीलातुस के, फिर हेरोदेस के और फिर दोबारा पीलातुस के सामने लाया गया	27:2, 11-14	15:1-5	23:1-12	18:28-38
	यरूशलेम	पीलातुस उसे रिहा करने की कोशिश करता है, फिर उसे मार डालने के लिए सौंप देता है	27:15-30	15:6-19	23:13-25	18:39–19:16
(क. दोपहर 3 बजे, शुक्रवार)	गुलगुता, यरूशलेम	यातना की सूली पर यीशु की मौत और उनके साथ-साथ की घटनाएँ	27:31-56	15:20-41	23:26-49	19:16-30
	यरूशलेम	यीशु का शव यातना की सूली से उतारकर दफन किया जाता है	27:57-61	15:42-47	23:50-56	19:31-42
निसान 15	यरूशलेम	याजक और फरीसी उसकी कब्र पर पहरा बिठाने का इंतज़ाम करवाते हैं	27:62-66			
निसान 16	यरूशलेम और उसके आस-पास	यीशु जी उठता है और उस दिन की घटनाएँ	28:1-15	16:1-8	24:1-49	20:1-25
	यरूशलेम; गलील	यीशु मसीह अलग-अलग मौकों पर लोगों को दिखायी देता है	28:16-20	[1कुरि 15: 5-7]	[प्रेषि 1:3-8]	20:26–21:25
इय्यार 25	जैतून पहाड़, बैतनिय्याह के पास	जी उठने के बाद 40वें दिन यीशु का स्वर्ग जाना	[प्रेषि 1:9-12]		24:50-53	

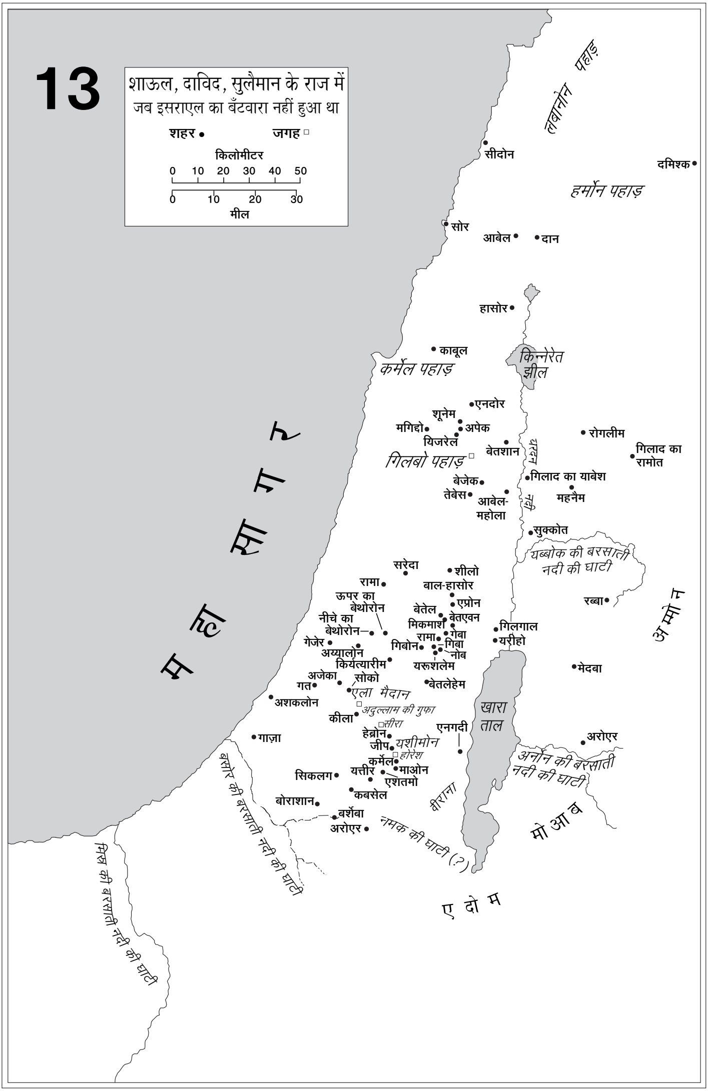
13
शाऊल, दाविद, सुलैमान के राज में
जब इसराएल का बँटवारा नहीं हुआ था
शहर
जगह
किलोमीटर
0 10 20 30 40 50
0 10 20 30
मील
लबानोन पहाड़
सीदोन
दमिश्क
हर्मोन पहाड़
सोर
आबेल
दान
हासोर
काबूल
किन्नेरेत झील
कर्मेल पहाड़
एनदोर
शूनेम
मगिद्दो
अपेक
यिजरेल
रोगलीम
बेतशान
गिलाद का रामोत
गिलबो पहाड़
गिलाद का याबेश
बेजेक
तेबेस
आबेल-महोला
महनैम
सुक्कोत
यब्बोक की बरसाती नदी की घाटी
महासागर
सरेदा
शीलो
रामा
बाल-हासोर
ऊपर का बेथोरोन
एप्रोन
बेतेल
बेतएवन
रब्बा
नीचे का बेथोरोन
मिकमाश
गेबा
गिलगाल
अम्मोन
गेजेर
रामा
गिबा
यरीहो
अय्यालोन
गिबोन
नोब
किर्यत्यारीम
यरूशलेम
मेदबा
अजेका
सोको
गत
बेतलेहेम
एला मैदान
अशकलोन
अदुल्लाम की गुफा
खारा ताल
कीला
सीरा
एनगदी
गाज़ा
हेब्रोन
अरोएर
जीप
यशीमोन
होरेश
अर्नोन की बरसाती नदी की घाटी
कर्मेल
माओन
सिकलग
यत्तीर
एशतमो
वीराना
कबसेल
बोराशान
बसोर की बरसाती नदी की घाटी
बर्शेबा
मोआब
अरोएर
नमक की घाटी (?)
मिस्र की बरसाती नदी की घाटी
एदोम

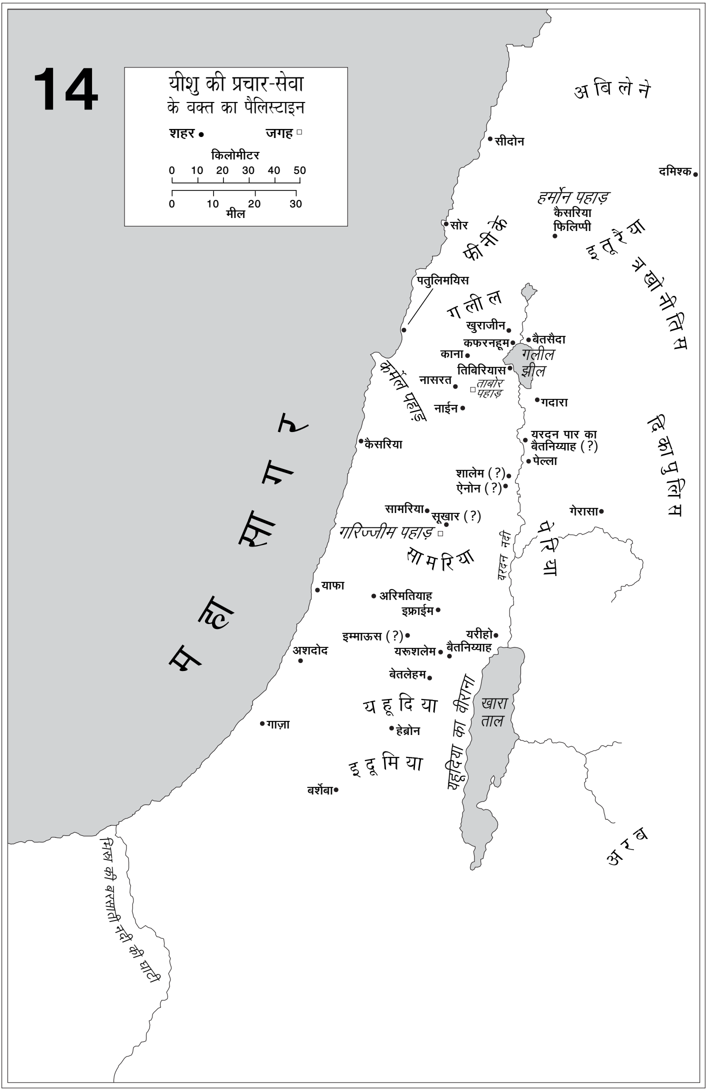
14
यीशु की प्रचार-सेवा के वक्त का पैलिस्टाइन
शहर
जगह
किलोमीटर
0 10 20 30 40 50
0 10 20 30
मील
अबिलेने
सीदोन
दमिश्क
हर्मोन पहाड़
कैसरिया फिलिप्पी
सोर
फीनीके
इतूरैया
त्रखोनीतिस
पतुलिमयिस
गलील
खुराजीन
कफरनहूम
बैतसैदा
काना
गलील झील
तिबिरियास
नासरत
ताबोर पहाड़
कर्मेल पहाड़
नाईन
गदारा
कैसरिया
यरदन पार का बैतनिय्याह (?)
पेल्ला
दिकापुलिस
शालेम (?)
ऐनोन (?)
सामरिया
सूखार (?)
गेरासा
गरिज्जीम पहाड़
यरदन नदी
पेरिया
सामरिया
महासागर
याफा
अरिमतियाह
इफ्राईम
यरीहो
इम्माऊस (?)
बैतनिय्याह
यरूशलेम
अशदोद
बेतलेहम
यहूदिया
यहूदिया का वीराना
खारा ताल
गाज़ा
हेब्रोन
इदूमिया
बर्शेबा
अरब
मिस्र की बरसाती नदी की घाटी

चर्चा के लिए बाइबल के विषय

(इब्रानी शास्त्र की आयतें *द होली बाइबल हिन्दी—ओ.वी.* से ली गयी हैं। जिन आयतों के बाद *NHT* लिखा हो, वे *ए न्यू हिंदी ट्रान्सलेशन* से ली गयी हैं। इब्रानी शास्त्र की किताबों के संक्षिप्त नामों को समझने के लिए पेज 639 देखें।)

1. आखिरी दिन

क. "दुनिया के अंत" का क्या मतलब है?

इस दुनिया की व्यवस्था का अंत। .... मत्ती 24:3; 2 पत 3:5-7; मर 13:4
पृथ्वी का नहीं, दुष्ट व्यवस्था का अंत। .... 1 यूह 2:17
विनाश से पहले आखिर का वक्त होगा। .... मत्ती 24:14
नेक इंसानों का छुटकारा; फिर नयी दुनिया आएगी। .... 2 पत 2:9; प्रका 7:14-17

ख. आखिरी दिनों की निशानियाँ पहचानने के लिए जागते रहना ज़रूरी

परमेश्वर ने अंत का समय पहचानने के लिए हमें निशानियाँ दी हैं। .... 2 तीमु 3:1-5; 1 थिस्स 5:1-4
दुनिया समझती नहीं कि यह नाज़ुक घड़ी है। .... 2 पत 3:3, 4, 7; मत्ती 24:39
परमेश्वर देर नहीं कर रहा, बल्कि चेतावनी दे रहा है। .... 2 पत 3:9
जागते रहने और ध्यान देने से मिलनेवाला इनाम। .... लूका 21:34-36

2. उद्धार

क. उद्धार परमेश्वर की तरफ से और यीशु के फिरौती बलिदान के ज़रिए मिलेगा

जीवन एक तोहफा है जो परमेश्वर अपने बेटे के ज़रिए देता है। .... 1 यूह 4:9, 14; रोमि 6:23
उद्धार सिर्फ यीशु के बलिदान के ज़रिए मिल सकता है। .... प्रेषि 4:12
मरते वक्त पश्चाताप मायने नहीं रखता, इसे कामों से दिखाना ज़रूरी है। .... याकू 2:14, 26
उद्धार के लिए जी-तोड़ मेहनत करनी होगी। .... लूका 13:23, 24; 1 तीमु 4:10

ख. यह शिक्षा बाइबल से नहीं कि "एक बार उद्धार पाने से हमेशा के लिए उद्धार हो जाता है"

जो पवित्र शक्ति के भागीदार हैं, वे भी गिर सकते हैं। .... इब्रा 6:4, 6; 1 कुरिं 9:27
बहुत-से इस्राएली, मिस्र से छुटकारा पाने के बाद भी नाश किए गए। .... यहू 5
उद्धार कुछ पलों की कोशिश से नहीं मिलेगा। .... फिलि 2:12; 3:12-14; मत्ती 10:22
जो परमेश्वर की राह पर चलना छोड़ देते हैं, उनकी हालत पहले से बदतर हो जाती है। .... 2 पत 2:20, 21

ग. यह शिक्षा बाइबल से नहीं कि "पूरी दुनिया का उद्धार होगा"

कुछ लोगों का पश्चाताप करना नामुमकिन है। .... इब्रा 6:4-6
परमेश्वर दुष्टों की मौत से खुश नहीं होता। .... यहे 33:11; 18:32
लेकिन प्यार, बुरे कामों को अनदेखा नहीं कर सकता। .... इब्रा 1:9
दुष्ट नाश किए जाएँगे। .... इब्रा 10:26-29; प्रका 20:7-15

3. क्रूस

क. यीशु को सूली पर लटकाना उसकी निंदा करना था

यीशु को एक खंभे या पेड़ पर लटकाकर मार डाला गया। .... प्रेषि 5:30; 10:39; गला 3:13
मसीहियों को यातना की सूली उठाकर निंदा सहनी होगी। .... मत्ती 10:38; लूका 9:23

ख. क्रूस की उपासना करना गलत है

यीशु की सूली की नुमाइश, यीशु की निंदा करना है। .... इब्रा 6:6; मत्ती 27:41, 42
उपासना में क्रूस का इस्तेमाल करना, मूर्तिपूजा है। .... निर्ग 20:4, 5; यिर्म 10:3-5
यीशु अब भी सूली पर नहीं है, उसका आत्मिक शरीर है। .... 1 तीमु 3:16; 1 पत 3:18

4. खून

क. खून चढ़ाना, खून की पवित्रता के नियम के खिलाफ

नूह को बताया गया कि खून पवित्र है, उसमें जीवन है। .... उत्प 9:4, 16
मूसा के कानून में खून खाना मना था। .... लैव्य 17:14; 7:26, 27
मसीहियों को भी खून खाने से मना किया गया। .... प्रेषि 15:28, 29; 21:25

ख. ज़िंदगी बचाने के लिए परमेश्वर का नियम तोड़ना जायज़ नहीं

आज्ञा मानना, बलिदान से बेहतर है। .... 1 शमू 15:22; मर 12:33
परमेश्वर का नियम तोड़कर अपनी ज़िंदगी बचाना, ज़िंदगी को खतरे में डालना है। .... मर 8:35, 36

5. गवाही देना

क. गवाही का काम सभी मसीहियों को करना चाहिए, खुशखबरी सुनानी चाहिए

इंसानों के सामने यीशु को कबूल करने पर ही उसकी मंज़ूरी मिलेगी। .... मत्ती 10:32
वचन पर चलकर अपने विश्वास को कामों से ज़ाहिर करना चाहिए। .... याकू 1:22-24; 2:24
नए मसीहियों को भी सिखानेवाले बनना चाहिए। .... मत्ती 28:19, 20
सरेआम ऐलान करने से उद्धार मिलेगा। .... रोमि 10:10

ख. लोगों से बार-बार मिलने, लगातार गवाही देने की ज़रूरत है

अंत के बारे में चेतावनी देना निहायत ज़रूरी। .... मत्ती 24:14
यिर्मयाह ने यरूशलेम के अंत का ऐलान बरसों तक किया। .... यिर्म 25:3
शुरू के मसीहियों की तरह आज के मसीही,
गवाही देने से नहीं रुक सकते। .... प्रेषि 4:18-20; 5:28, 29

ग. खून के इलज़ाम से बचने के लिए गवाही देना ज़रूरी

आनेवाले अंत की चेतावनी देना ज़रूरी। .... यहे 33:7; मत्ती 24:14
जो गवाही नहीं देता, वह खून का दोषी है। .... यहे 33:8, 9; 3:18, 19
पौलुस, खून के इलज़ाम से बच गया; सच्चाई की अच्छी गवाही दी। ..... प्रेषि 20:26, 27; 1 कुरिं 9:16
गवाही देनेवाले और सुननेवाले, दोनों का उद्धार होता है। .... 1 तीमु 4:16; 1 कुरिं 9:22

6. घटनाओं का क्रम

क. 1914 (ई.स.) में दूसरे राष्ट्रों का वक्त खत्म हुआ

राजाओं का वंश कुछ वक्त के लिए बीच में, यानी 607 ई.स.पू. में रुक गया। .... यहे 21:25-27
फिर से हुकूमत कायम करने तक "सात काल" बीतने थे। .... दानि 4:32, 16, 17
सात = 2 × 3 1/2 काल, या 2 × 1,260 दिन। .... प्रका 12:6, 14; 11:2, 3
एक दिन, एक साल के बराबर। [2,520 साल होते हैं] .... यहे 4:6; गिन 14:34
इन सालों के खत्म होने पर राज कायम होता। .... लूका 21:24; दानि 7:13, 14

7. चंगाई, अलग-अलग भाषाएँ

क. आध्यात्मिक चंगाई से हमेशा के फायदे होते हैं

अंदर के इंसान की आध्यात्मिक बीमारी जानलेवा है। .... यशा 1:4-6; 6:10; होशे 4:6
आध्यात्मिक चंगाई पहली ज़िम्मेदारी। .... यूह 6:63; लूका 4:18
पाप मिटाती; खुशी और ज़िंदगी देती है। .... याकू 5:19, 20; प्रका 7:14-17

ख. परमेश्वर का राज शरीर की बीमारियों को हमेशा के लिए मिटा देगा

यीशु ने बीमारों को चंगा किया, राज की आशीषों का प्रचार किया। .... मत्ती 4:23
वादा किया गया कि राज के ज़रिए बीमारियाँ हमेशा के लिए मिटा दी जाएँगी। ...... मत्ती 6:10; यशा 9:7
मौत का भी नामो-निशान मिटा दिया जाएगा। .... 1 कुरिं 15:25, 26; प्रका 21:4; 20:14

ग. आज के चंगाई के कामों पर परमेश्वर की मंज़ूरी होने का सबूत नहीं

चेलों ने अपनी बीमारियाँ चमत्कार से दूर नहीं कीं। .... 2 कुरिं 12:7-9; 1 तीमु 5:23
प्रेषितों के ज़माने के बाद चमत्कार करने के वरदान नहीं रहे। .... 1 कुरिं 13:8-11
चंगाई करना, परमेश्वर की मंज़ूरी का पक्का सबूत नहीं। .... मत्ती 7:22, 23; 2 थिस्स 2:9-11

घ. अलग-अलग भाषाएँ बोलने का इंतज़ाम थोड़े समय के लिए था

मसीही मंडली की पहचान; और भी बड़े वरदान पाने की कोशिश। .... 1 कुरिं 14:22; 12:30, 31
भविष्यवाणी थी कि पवित्र शक्ति के चमत्कारी वरदान मिट जाएँगे। .... 1 कुरिं 13:8-10
चमत्कारी काम परमेश्वर की मंज़ूरी का पक्का सबूत नहीं। .... मत्ती 7:22, 23; 24:24

8. चर्च

क. चर्च कोई भवन नहीं बल्कि इसका लाक्षणिक अर्थ है, चर्च मसीह पर बनाया गया

परमेश्वर इंसान के बनाए मंदिरों में नहीं रहता। .... प्रेषि 17:24, 25; 7:48
असली चर्च जीवित पत्थरों से बना आध्यात्मिक मंदिर है। .... 1 पत 2:5, 6
मसीह, कोने के सिरे का पत्थर है; बाकी बुनियाद प्रेषितों से बनती है। .... इफि 2:20
परमेश्वर की उपासना पवित्र शक्ति और सच्चाई से की जानी चाहिए। .... यूह 4:24

ख. चर्च की नींव पतरस नहीं था

यीशु ने यह नहीं कहा कि पतरस, चर्च की नींव होगा। .... मत्ती 16:18
यीशु को 'चट्टान' कहा गया। .... 1 कुरिं 10:4
पतरस ने यीशु को नींव बताया। .... 1 पत 2:4, 6-8; प्रेषि 4:8-12

9. जीवन

क. आज्ञा माननेवाले इंसानों से हमेशा की ज़िंदगी का पक्का वादा किया गया

परमेश्वर ने, जो कभी झूठ नहीं बोल सकता, ज़िंदगी देने का वादा किया है। .... तीतु 1:2; यूह 10:27, 28

विश्वास दिखानेवालों को हमेशा की ज़िंदगी देने का पक्का वादा किया गया है। .... यूह 11:25, 26

मौत को मिटा दिया जाएगा। .... 1 कुरिं 15:26; प्रका 21:4; 20:14; यशा 25:8

ख. स्वर्ग में जीवन सिर्फ उन्हें मिलेगा जो मसीह के शरीर का हिस्सा हैं

परमेश्वर को जैसा अच्छा लगता है, वह इन सदस्यों को चुनता है। .... मत्ती 20:23; 1 कुरिं 12:18

सिर्फ 1,44,000 जन धरती से लिए जाएँगे। .... प्रका 14:1, 4; 7:2-4; 5:9, 10

बपतिस्मा देनेवाला यूहन्ना भी स्वर्ग के राज का हिस्सा नहीं था। .... मत्ती 11:11

ग. अनगिनत लोगों यानी 'दूसरी भेड़ों' को धरती पर जीवन देने का वादा किया गया

यीशु के साथ स्वर्ग में रहनेवालों की गिनती सीमित। .... प्रका 14:1, 4; 7:2-4

"दूसरी भेड़ें" मसीह के भाई नहीं। .... यूह 10:16; मत्ती 25:32, 40

आज बहुत-से लोग इकट्ठे किए जा रहे हैं ताकि वे उद्धार पाकर, धरती पर जीएँ। .... प्रका 7:9, 15-17

बाकियों को धरती पर जीवन पाने के लिए दोबारा ज़िंदा किया जाएगा। .... प्रका 20:12; 21:4

10. झूठे भविष्यवक्ता

क. झूठे भविष्यवक्ताओं के आने की भविष्यवाणी की गयी; प्रेषितों के दिनों में भी थे

झूठे भविष्यवक्ताओं की पहचान। .... व्यव 18:20-22; लूका 6:26

भविष्यवाणी की गयी; उनके फलों से उनकी पहचान होगी। .... मत्ती 24:23-26; 7:15-23

11. त्योहार, जन्मदिन

क. शुरू के मसीही, जन्मदिन और क्रिसमस नहीं मनाते थे

झूठे उपासक मनाते थे। .... उत्प 40:20; मत्ती 14:6

यीशु की मौत का दिन याद किया जाना चाहिए। .... लूका 22:19, 20; 1 कुरिं 11:25, 26

ऐसे मौकों पर रंगरलियाँ मनायी जाती हैं, यह सही नहीं। .... रोमि 13:13; गला 5:21; 1 पत 4:3

12. त्रिएक

क. परमेश्वर, पिता एक शख्स है, विश्व में सबसे महान है

तीन अलग-अलग शख्स मिलकर एक परमेश्वर नहीं। .... व्यव 6:4; मला 2:10; मर 10:18; रोमि 3:29, 30

बेटे की सृष्टि की गयी; इससे पहले परमेश्वर अकेला था। .... प्रका 3:14; कुलु 1:15; यशा 44:6

परमेश्वर हमेशा से पूरे विश्व का महाराजा है, आगे भी रहेगा। .... फिलि 2:5, 6; दानि 4:35

सबसे बढ़कर परमेश्वर की महिमा की जानी चाहिए। .... फिलि 2:10, 11

ख. धरती पर आने से पहले और बाद में भी बेटा, पिता से कमतर ही रहा

बेटे ने स्वर्ग में पिता की आज्ञा मानी, पिता ने उसे *भेजा।* .... यूह 8:42; 12:49
बेटे ने धरती पर भी पिता की आज्ञा मानी; पिता बड़ा है। .... यूह 14:28; 5:19; इब्रा 5:8
स्वर्ग में महान किया गया, फिर भी पिता के अधीन है। .... फिलि 2:9; 1 कुरिं 15:28; मत्ती 20:23
यहोवा, मसीह का मुखिया और परमेश्वर है। .... 1 कुरिं 11:3; यूह 20:17; प्रका 1:6

ग. परमेश्वर और मसीह के बीच एकता

वे हमेशा एकता में रहते हैं। .... यूह 8:28, 29; 14:10
वे एकता में हैं जैसे पति-पत्नी होते हैं। .... यूह 10:30; मत्ती 19:4-6
सभी विश्वासियों में ऐसी ही एकता होनी चाहिए। .... यूह 17:20-22; 1 कुरिं 1:10
मसीह के ज़रिए सिर्फ यहोवा की उपासना, सदा तक की जाएगी। .... यूह 4:23, 24

घ. परमेश्वर की पवित्र शक्ति उसकी सक्रिय शक्ति है

यह शक्ति है, कोई शख्स नहीं। .... मत्ती 3:16; यूह 20:22; प्रेषि 2:4, 17, 33
परमेश्वर और मसीह के साथ स्वर्ग में रहनेवाला शख्स नहीं। .... प्रेषि 7:55, 56; प्रका 7:10
परमेश्वर अपना मकसद पूरा करने के लिए इसका
इस्तेमाल करता है। .... भज 104:30; 1 कुरिं 12:4-11
यह परमेश्वर के सेवकों को मिलती है, उनका मार्गदर्शन करती है। .... 1 कुरिं 2:12, 13; गला 5:16

13. दुष्टता, दुनिया की मुसीबतें

क. दुनिया की मुसीबतों के लिए कौन ज़िम्मेदार

आज के बुरे हालात की वजह, दुष्टों की हुकूमत। .... नीति 29:2; 28:28
दुनिया का राजा, परमेश्वर का दुश्मन। .... 2 कुरिं 4:4; 1 यूह 5:19; यूह 12:31
मुसीबतों की जड़ शैतान है, उसका थोड़ा वक्त बचा है। .... प्रका 12:9, 12
शैतान को बंदी बना दिया जाएगा, फिर शांति बहुतायत में होगी। .... प्रका 20:1-3; 21:3, 4

ख. दुष्टता की इजाज़त क्यों दी गयी

परमेश्वर के बनाए प्राणियों की वफादारी पर शैतान ने सवाल उठाया। .... अय्यू 1:11, 12
वफादार लोगों को अपनी वफादारी साबित करने का मौका दिया जा रहा है। ... रोमि 9:17; नीति 27:11
शैतान झूठा ठहरा, मसले का हल होनेवाला है। .... यूह 12:31
वफादार लोगों को बतौर इनाम हमेशा की ज़िंदगी मिलेगी। .... रोमि 2:6, 7; प्रका 21:3-5

ग. अंत से पहले लंबे समय की इजाज़त देकर परमेश्वर ने दया दिखायी

नूह के ज़माने की तरह, चेतावनी देने में समय लगता है। .... मत्ती 24:14, 37-39
परमेश्वर देर नहीं कर रहा, बल्कि दया दिखा रहा है। .... 2 पत 3:9; यशा 30:18
बाइबल हमें खबरदार करती है ताकि हम नाश न हो जाएँ। .... लूका 21:36; 1 थिस्स 5:4
बचाव के लिए, परमेश्वर के इंतज़ामों से अभी फायदा उठाइए। .... यशा 2:2-4; सप 2:3

घ. दुनिया की समस्याओं का हल इंसान के हाथ में नहीं

इंसानों पर डर का साया मँडरा रहा है, वे उलझन में हैं। .... लूका 21:10, 11; 2 तीमु 3:1-5
परमेश्वर का राज सफल होगा, न कि इंसान का राज। .... दानि 2:44; मत्ती 6:10
ज़िंदगी के लिए, राज के राजा से अभी शांति की याचना करें। .... भज 2:9, 11, 12

14. धर्म

क. सच्चा धर्म सिर्फ एक

एक आशा, एक विश्वास, एक बपतिस्मा। .... इफि 4:5, 13
चेले बनाने का काम सौंपा गया। .... मत्ती 28:19; प्रेषि 8:12; 14:21
फलों से पहचाना जाता है। .... मत्ती 7:19, 20; लूका 6:43, 44; यूह 15:8
उसके सदस्यों में प्यार, एकता है। .... यूह 13:35; 1 कुरिं 1:10; 1 यूह 4:20

ख. सच्चा धर्म झूठी शिक्षाओं का खंडन करता है और ऐसा करना सही है

यीशु ने झूठी शिक्षाओं का खंडन किया। .... मत्ती 23:15, 23, 24; 15:4-9
सच्चाई से अनजान लोगों को बचाने के लिए ऐसा किया। .... मत्ती 15:14
सच्चाई ने उन्हें आज़ाद किया ताकि वे यीशु के चेले बन सकें। .... यूह 8:31, 32

ग. अपने धर्म के गलत साबित होने पर एक इंसान को वह धर्म बदलना चाहिए

सच्चाई आज़ाद करती है; साबित करती है कि ज़्यादातर
लोग गलत धर्म को मानते हैं। .... यूह 8:31, 32
इस्राएलियों और दूसरों ने झूठी उपासना छोड़ दी। .... यहो 24:15; 2 राजा 5:17
शुरू के मसीहियों ने भी अपने विचार बदले। .... गला 1:13, 14; प्रेषि 3:17, 19
पौलुस ने अपना धर्म बदला। .... प्रेषि 26:4-6
पूरी दुनिया धोखे में है; मन बदलने की ज़रूरत है। .... प्रका 12:9; रोमि 12:2

घ. सभी धर्मों में जो अच्छाई नज़र आती है, वह साबित नहीं करती कि परमेश्वर को वे धर्म मंज़ूर हैं

उपासना के स्तर परमेश्वर कायम करता है। .... यूह 4:23, 24; याकू 1:27
जो धर्म परमेश्वर की मरज़ी के मुताबिक नहीं, वह अच्छा नहीं। .... रोमि 10:2, 3
"नेक काम" ठुकराए जा सकते हैं। .... मत्ती 7:21-23
धर्म की पहचान उसके फल हैं। .... मत्ती 7:20

15. नरक (हेडिज़, शीओल)

क. सचमुच की जगह नहीं जहाँ आग में तड़पाया जाता है

दुःख से तड़पते अय्यूब ने वहाँ जाने की बिनती की। .... अय्यू 14:13
वहाँ कोई काम नहीं होता। .... भज 6:5; सभो 9:10; यशा 38:18, 19
यीशु को कब्र या नरक से ज़िंदा किया गया। .... प्रेषि 2:27, 31, 32; भज 16:10
कब्र, अपने अंदर समाए लोगों को दे देगा, इसका नाश किया जाएगा। .... प्रका 20:13, 14

ख. आग, विनाश की निशानी है

आग, मौत की सज़ा की निशानी है। .... मत्ती 25:41, 46; 13:30

दुष्ट जो पश्चाताप नहीं करते, हमेशा के लिए नाश होंगे,
मानो आग में डाले गए। .... इब्रा 10:26, 27

शैतान को आग में 'तड़पाने' का मतलब है,
उसका हमेशा के लिए नाश किया जाएगा। .... प्रका 20:10, 14, 15

घ. अमीर आदमी और लाज़र की कहानी, सबूत नहीं कि मौत के बाद सदा तक यातना झेलनी पड़ती है

आग सचमुच की आग नहीं, जैसे अब्राहम का सीना सचमुच का सीना नहीं। .... लूका 16:22-24

जिन पर अब्राहम की मंज़ूरी नहीं, उनकी हालत को अंधकार
भी बताया गया है। .... मत्ती 8:11, 12

बैबिलोन के नाश की तुलना आग में यातना से की गयी। .... प्रका 18:8-10, 21

16. पवित्र शक्ति, प्रेतात्मवाद

क. पवित्र शक्ति क्या है

परमेश्वर की सक्रिय शक्ति, कोई शख्स नहीं। .... प्रेषि 2:2, 3, 33; यूह 14:17

सृष्टि करने, बाइबल लिखने की प्रेरणा देने और दूसरे कामों में इस्तेमाल की गयी। ... उत्प 1:2; यहे 11:5

पवित्र शक्ति से जन्म और अभिषेक पानेवाले, मसीह का शरीर हैं। .... यूह 3:5-8; 2 कुरिं 1:21, 22

आज यह परमेश्वर के लोगों को मज़बूत करती, उनकी अगुवाई करती है। .... गला 5:16, 18

ख. प्रेतात्मवाद से दूर रहना चाहिए क्योंकि यह दुष्ट स्वर्गदूतों का काम है

परमेश्वर का वचन ऐसे कामों के लिए मना करता है। .... यशा 8:19, 20; लैव्य 19:31; 20:6, 27

भविष्य बताने का काम, दुष्ट स्वर्गदूतों से जुड़ा है; इसे गलत बताया गया है। .... प्रेषि 16:16-18

विनाश की ओर ले जाता है। .... गला 5:19-21; प्रका 21:8; 22:15

ज्योतिष-विद्या की मनाही की गयी है। .... व्यव 18:10-12; यिर्म 10:2

17. पाप

क. पाप क्या है

परमेश्वर के नियमों और सिद्ध स्तरों का उल्लंघन।... 1 यूह 3:4; 5:17

परमेश्वर की सृष्टि होने के नाते इंसान उसके सामने जवाबदेह है। .... रोमि 14:12; 2:12-15

मूसा के कानून में पाप का मतलब बताया गया, एहसास कि इंसान पापी हैं। .... गला 3:19; रोमि 3:20

सभी पाप में पड़े हुए हैं, परमेश्वर के सिद्ध स्तरों पर चलने में नाकाम हैं। .... रोमि 3:23; भज 51:5

ख. आदम के पाप से सब पर मुसीबतें क्यों आयीं

आदम से असिद्धता और मौत सभी को मिली। .... रोमि 5:12, 18

परमेश्वर ने इंसानों के साथ सहनशील होकर दया दिखायी। .... भज 103:8, 10, 14, 17

यीशु के बलिदान से पापों का प्रायश्चित्त होता है। .... 1 यूह 2:2

पाप को और शैतान के दूसरे सभी कामों को मिटा दिया जाएगा। .... 1 यूह 3:8

ग. मना किया गया फल खाना पाप था, यौन-संबंध नहीं

हव्वा की सृष्टि से पहले ही फल खाने से मना किया गया। .... उत्प 2:17, 18
आदम और हव्वा से संतान पैदा करने को कहा गया। .... उत्प 1:28
बच्चे, पाप का नतीजा नहीं, परमेश्‍वर की आशीष हैं। .... भज 127:3-5
हव्वा ने पति की गैर-हाज़िरी में पाप किया; गुस्ताखी की। .... उत्प 3:6; 1 तीमु 2:11-14
आदम मुखिया था, परमेश्‍वर का नियम तोड़ दिया। .... रोमि 5:12, 19

घ. पवित्र शक्‍ति के खिलाफ पाप क्या है (मत्ती 12:32; मर 3:28, 29)

यह विरासत में मिला पाप नहीं। .... रोमि 5:8, 12, 18; 1 यूह 5:17
इंसान शायद पवित्र शक्‍ति को दुःखी करे, मगर गलती सुधार सकता है। .... इफि 4:30; याकू 5:19, 20
जानबूझकर *लगातार* पाप करने का अंजाम मौत है। .... 1 यूह 3:6-9
परमेश्‍वर ऐसों का न्याय करता है, उन्हें अपनी पवित्र शक्‍ति नहीं देता। .... इब्रा 6:4-8
पश्‍चाताप न करनेवाले ऐसे लोगों के लिए हमें प्रार्थना नहीं करनी चाहिए। .... 1 यूह 5:16, 17

18. पूर्वजों की उपासना

क. पूर्वजों की उपासना करना बेकार है

पूर्वज मर चुके हैं, उनमें चेतना नहीं है। .... सभो 9:5, 10
हमारे पहले पूर्वज, उपासना पाने के लायक नहीं। .... रोमि 5:12, 14; 1 तीमु 2:14
परमेश्‍वर ऐसी उपासना करने से मना करता है। .... निर्ग 34:14; मत्ती 4:10

ख. इंसानों का आदर किया जा सकता है, मगर उपासना सिर्फ परमेश्‍वर की करनी चाहिए

जवानों को बुज़ुर्गों का आदर करना चाहिए। .... 1 तीमु 5:1, 2, 17; इफि 6:1-3
मगर उपासना सिर्फ परमेश्‍वर की करनी चाहिए। .... प्रेषि 10:25, 26; प्रका 22:8, 9

19. पृथ्वी

क. पृथ्वी के लिए परमेश्‍वर का मकसद

सिद्ध इंसानों के लिए धरती पर फिरदौस बनाया गया। .... उत्प 1:28; 2:8-15
परमेश्‍वर का मकसद पूरा होना तय है। .... यशा 55:11; 46:10, 11
धरती सिद्ध, अमन-पसंद लोगों से भर जाएगी। .... भज 72:7; यशा 45:18; 9:6, 7
राज के ज़रिए धरती को दोबारा फिरदौस बनाया जाएगा। .... मत्ती 6:9, 10; प्रका 21:3-5

ख. कभी नाश नहीं की जाएगी, न वीरान होगी

पृथ्वी हमेशा तक कायम रहेगी। .... सभो 1:4; भज 104:5
नूह के ज़माने में लोग नाश किए गए, पृथ्वी नहीं। .... 2 पत 3:5-7; उत्प 7:23
इस घटना से आशा मिलती है कि हमारे समय में भी लोग ज़िंदा बचेंगे। .... मत्ती 24:37-39
दुष्ट नाश किए जाएँगे; “बड़ी भीड़” ज़िंदा बचेगी। .... 2 थिस्स 1:6-9; प्रका 7:9, 14

20. प्रार्थना

क. ऐसी प्रार्थनाएँ जिन्हें परमेश्वर सुनता है

परमेश्वर, इंसानों की प्रार्थनाएँ ज़रूर सुनता है। .... भज 145:18; 1 पत 3:12

बुरे लोगों की प्रार्थना नहीं सुनी जाती, जब तक कि वे गलत राह से न फिरें। .... यशा 1:15-17

प्रार्थना, यीशु के नाम से की जानी चाहिए। .... यूह 14:13, 14; 2 कुरिं 1:20

परमेश्वर की मरज़ी के मुताबिक प्रार्थना करनी चाहिए। .... 1 यूह 5:14, 15

विश्वास के साथ प्रार्थना करना ज़रूरी है। .... याकू 1:6-8

ख. प्रार्थनाओं को बेकार में दोहराना, मरियम या "संतों" से प्रार्थना करना सही नहीं

यीशु के नाम से परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए। .... यूह 14:6, 14; 16:23, 24

रटी-रटायी बातें बोलने से प्रार्थना नहीं सुनी जाएगी। .... मत्ती 6:7

21. फिरौती

क. यीशु का इंसानी जीवन "सबके लिए फिरौती" के दाम के तौर पर दिया गया

यीशु ने अपना जीवन, फिरौती के तौर पर दिया। .... मत्ती 20:28

उसके बहाए लहू की कीमत से पापों की माफी मिलती है। .... इब्रा 9:14, 22

एक बलिदान, हमेशा के लिए काफी था। .... रोमि 6:10; इब्रा 9:26

फिरौती के फायदे यूँ ही नहीं मिल जाते; फिरौती पर विश्वास करना होगा। .... यूह 3:16

ख. बराबरी की कीमत थी

आदम को सिद्ध बनाया गया। .... व्यव 32:4; सभो 7:29; उत्प 1:31

पाप करने की वजह से अपने और अपने बच्चों का सिद्ध जीवन गँवा दिया। .... रोमि 5:12, 18

बच्चे बेसहारा थे; किसी ऐसे इंसान की ज़रूरत थी जो
आदम के बराबर होता। .... भज 49:7; व्यव 19:21

यीशु का सिद्ध जीवन फिरौती की कीमत था। .... 1 तीमु 2:5, 6; 1 पत 1:18, 19

22. बपतिस्मा

क. मसीही बनने के लिए ज़रूरी

यीशु ने मिसाल रखी। .... मत्ती 3:13-15; इब्रा 10:7

खुद से इनकार करने की या समर्पण की निशानी। .... मत्ती 16:24; 1 पत 3:21

बपतिस्मा सिर्फ उस उम्र के लोगों के लिए है जिन्हें
सिखाया जा सकता है। .... मत्ती 28:19, 20; प्रेषि 2:41

पानी में पूरी तरह डुबकी दिलाना सही तरीका है। .... प्रेषि 8:38, 39; यूह 3:23

ख. इससे पाप नहीं धुलते

यीशु का बपतिस्मा पाप धोने के लिए नहीं था। .... 1 पत 2:22; 3:18

यीशु का लहू पापों को धो डालता है। .... 1 यूह 1:7

23. बाइबल

क. परमेश्वर का वचन उसकी प्रेरणा से लिखा गया

परमेश्वर की पवित्र शक्ति ने कुछ आदमियों को लिखने के लिए उभारा। .... 2 पत 1:20, 21

इसमें भविष्यवाणियाँ हैं: .... दानि 8:5, 6, 20-22; लूका 21:5, 6, 20-22; यशा 45:1-4

पूरी बाइबल परमेश्वर की प्रेरणा से लिखी गयी और फायदेमंद है। .... 2 तीमु 3:16, 17; रोमि 15:4

ख. हमारे वक्त के लिए कारगर सलाह देनेवाली किताब

बाइबल के सिद्धांतों को नज़रअंदाज़ करना जीवन को खतरे में डालना है। .... रोमि 1:28-32

इसकी जगह इंसान की बुद्धि नहीं ले सकती। .... 1 कुरिं 1:21, 25; 1 तीमु 6:20

सबसे ताकतवर दुश्मन से हमारी रक्षा करती है। .... इफि 6:11, 12, 17

इंसान को सही राह दिखाती है। .... भज 119:105; 2 पत 1:19; नीति 3:5, 6

ग. सभी देशों और जातियों के लोगों के लिए लिखी गयी

बाइबल की लिखाई पूरब में शुरू हुई। .... निर्ग 17:14; 24:12, 16; 34:27

परमेश्वर का यह इंतज़ाम सिर्फ यूरोप के लोगों के लिए नहीं है। .... रोमि 10:11-13; गला 3:28

परमेश्वर सब किस्म के लोगों को स्वीकार करता है। ..... प्रेषि 10:34, 35; रोमि 5:18; प्रका 7:9, 10

24. भाग्य

क. इंसान का भाग्य पहले से तय नहीं किया गया

परमेश्वर का मकसद हर हाल में पूरा होगा। .... यशा 55:11; उत्प 1:28

परमेश्वर की सेवा करने का चुनाव हर इंसान को दिया गया। .... यूह 3:16; फिलि 2:12

25. मरियम की उपासना

क. मरियम यीशु की माँ थी, "परमेश्वर की माँ" नहीं

परमेश्वर की कोई शुरूआत नहीं। .... भज 90:2; 1 तीमु 1:17

मरियम उस वक्त परमेश्वर के *बेटे* की माँ थी, जब यह बेटा धरती पर था। .... लूका 1:35

ख. मरियम, हमेशा कुँवारी नहीं रही

उसने यूसुफ से शादी की। .... मत्ती 1:19, 20, 24, 25

यीशु के अलावा, उसके और भी बच्चे थे। .... मत्ती 13:55, 56; लूका 8:19-21

वे उस वक्त यीशु के "आध्यात्मिक भाई" नहीं थे। .... यूह 7:3, 5

26. मरे हुओं का जी उठना

क. मरे हुओं के लिए आशा

जितने कब्रों में हैं, वे ज़िंदा किए जाएँगे। .... यूह 5:28, 29

यीशु का मरे हुओं में से जी उठना इस बात की गारंटी है। .... 1 कुरिं 15:20-22; प्रेषि 17:31

जिन्होंने पवित्र शक्ति के खिलाफ पाप किया, वे ज़िंदा नहीं किए जाएँगे। .... मत्ती 12:31, 32

विश्वास दिखानेवालों को यकीन दिलाया गया है कि वे मरे हुओं में से जी उठेंगे। .... यूह 11:25

ख. मरे हुए या तो स्वर्ग में या फिर धरती पर जीने के लिए उठेंगे

सभी आदम में मरते हैं; यीशु में जीवन पाते हैं। .... 1 कुरिं 15:20-22; रोमि 5:19
जी उठनेवालों का शरीर अलग-अलग किस्म का होगा। .... 1 कुरिं 15:40, 42, 44
यीशु के साथ रहनेवाले उसके जैसे होंगे। .... 1 कुरिं 15:49; फिलि 3:20, 21
हुकूमत न करनेवाले, धरती पर रहेंगे। .... प्रका 20:4ख, 5, 13; 21:3, 4

27. मसीह की वापसी

क. उसकी वापसी इंसान नहीं देख सकते

मसीह ने चेलों को बताया कि दुनिया उसे इसके बाद देख नहीं पाएगी। .... यूह 14:19
सिर्फ चेलों ने उसे स्वर्ग जाते देखा; वापसी भी उसी तरह होनी थी। .... प्रेषि 1:6, 10, 11
मसीह, स्वर्ग में है और उसका आत्मिक शरीर है। .... 1 तीमु 6:14-16; इब्रा 1:3
स्वर्ग में राज करने का अधिकार पाकर वापस आया। .... दानि 7:13, 14

ख. वापसी, दुनिया में होनेवाली घटनाएँ देखकर समझी जा सकती है

चेलों ने उसकी मौजूदगी की निशानी पूछी। .... मत्ती 24:3
मसीही, उसकी मौजूदगी को समझ पाते हैं,इसी मायने में वे उसकी मौजूदगी 'देखते' हैं। .... इफि 1:18
बहुत-सी घटनाएँ मिलकर उसकी मौजूदगी का सबूत देती हैं। .... लूका 21:10, 11
दुश्मन उस वक्त 'देखेंगे' जब उन पर विनाश टूट पड़ेगा। .... प्रका 1:7

28. मूर्तियाँ

क. उपासना में मूर्तियों और प्रतिमाओं के इस्तेमाल से परमेश्वर का अपमान होता है

परमेश्वर की मूर्ति बनाना मुमकिन नहीं। .... 1 यूह 4:12; यशा 40:18; 46:5; प्रेषि 17:29
मसीहियों को मूर्तियों के इस्तेमाल से दूर रहने की चेतावनी दी गयी है। ...... 1 कुरिं 10:14; 1 यूह 5:21
परमेश्वर की उपासना, उसकी पवित्र शक्ति की मदद से और सच्चाई से की जानी चाहिए। ...... यूह 4:24

ख. मूर्तिपूजा, इस्राएल राष्ट्र की बरबादी की वजह बनी

यहूदियों को मूर्तिपूजा करने से मना किया गया था। .... निर्ग 20:4, 5
मूर्तियाँ न सुन सकती, न बोल सकती हैं; उनके बनानेवाले उनके जैसे हो जाएँगे। .... भज 115:4-8
इस्राएलियों के लिए फंदा और नाश की वजह बनी। .... भज 106:36, 40-42; यिर्म 22:8, 9

ग. परमेश्वर को यह मंज़ूर नहीं कि हम उसके साथ-साथ किसी और की भी उपासना करें

परमेश्वर ने उसके साथ-साथ किसी और की उपासना करने की इजाज़त नहीं दी। .... यशा 42:8
सिर्फ परमेश्वर ही 'प्रार्थना का सुननेवाला' है। .... भज 65:1, 2

29. मौत

क. मौत की वजह

इंसान शुरू में सिद्ध था, उसके सामने हमेशा की ज़िंदगी की आशा थी। .... उत्प 1:28, 31
आज्ञा तोड़ने पर मौत की सज़ा मिली। .... उत्प 2:16, 17; 3:17, 19
पाप और मौत, आदम की सभी संतानों में फैल गयी। .... रोमि 5:12

ख. मरे हुओं की हालत

मरे हुए अचेत हैं, बेखबर हैं। .... सभो 9:5, 10; भज 146:3, 4
मौत की गहरी नींद में हैं, दोबारा ज़िंदा किए जाने के
इंतज़ार में। .... यूह 11:11-14, 23-26; प्रेषि 7:60

ग. मरे हुओं से बात करना नामुमकिन

मरे हुए, आत्माओं के रूप में परमेश्वर के पास ज़िंदा नहीं हैं। .... भज 115:17; यशा 38:18
चेतावनी दी गयी थी कि मरे हुओं से बात करने की कोशिश न करें। .... यशा 8:19; लैव्य 19:31
ज्योतिषियों और ओझाओं की निंदा की गयी है। .... व्यव 18:10-12; गला 5:19-21

30. यहोवा के साक्षी

क. यहोवा के साक्षियों की शुरूआत

यहोवा खुद अपने साक्षियों की पहचान कराता है। .... यशा 43:10-12; यिर्म 15:16, *NHT*
वफादार गवाहों की शुरूआत हाबिल से हुई। .... इब्रा 11:4, 39; 12:1
यीशु वफादार और सच्चा गवाह था। .... यूह 18:37; प्रका 1:5; 3:14

31. यहोवा, *परमेश्वर*

क. परमेश्वर का नाम

शब्द "परमेश्वर" कइयों के लिए इस्तेमाल होता है; हमारे मालिक का अपना एक नाम है। .... 1 कुरिं 8:5, 6
हम प्रार्थना करते हैं कि परमेश्वर का नाम पवित्र माना जाए। .... मत्ती 6:9, 10
परमेश्वर का नाम है, यहोवा। .... भज 83:18; निर्ग 6:2, 3; 3:15; यशा 42:8
बुल्के बाइबल में यह नाम निर्ग 3:14 के फुटनोट में है। .... भज 83:18; यशा 12:2; 26:4
यीशु ने यह नाम सब पर ज़ाहिर किया। .... यूह 17:6, 26; 5:43; 12:12, 13, 28

ख. परमेश्वर का वजूद

परमेश्वर को देखने के बाद ज़िंदा रहना मुमकिन नहीं। .... निर्ग 33:20; यूह 1:18; 1 यूह 4:12
परमेश्वर पर विश्वास करने के लिए उसे
देखना ज़रूरी नहीं। .... इब्रा 11:1; रोमि 8:24, 25; 10:17
परमेश्वर की दिखायी देनेवाली रचनाओं से हम उसे जान पाते हैं। .... रोमि 1:20; भज 19:1, 2
भविष्यवाणियों का पूरा होना, परमेश्वर के वजूद का सबूत। .... यशा 46:8-11

ग. परमेश्वर के खास गुण

परमेश्वर प्यार है। .... 1 यूह 4:8, 16; निर्ग 34:6; 2 कुरिं 13:11; मीका 7:18
उसकी बुद्धि बेजोड़ है। .... अय्यू 12:13; रोमि 11:33; 1 कुरिं 2:7
न्याय से काम करता है। .... व्यव 32:4; भज 37:28
सर्वशक्तिमान है, सबसे ताकतवर है। .... अय्यू 37:23; प्रका 7:12; 4:11

घ. सभी इंसान एक परमेश्‍वर की सेवा नहीं कर रहे

सही दिखनेवाला रास्ता हमेशा सही नहीं होता। .... नीति 16:25; मत्ती 7:21

रास्ते दो हैं, सिर्फ एक जीवन की तरफ ले जाता है। .... मत्ती 7:13, 14; व्यव 30:19

ईश्‍वर कई हैं, मगर सच्चा परमेश्‍वर सिर्फ एक है। .... 1 कुरिं 8:5, 6; भज 82:1

जीवन पाने के लिए सच्चे परमेश्‍वर को जानना बेहद ज़रूरी। .... यूह 17:3; 1 यूह 5:20

32. यीशु

क. यीशु, परमेश्‍वर का बेटा और उसका ठहराया राजा है

परमेश्‍वर का पहिलौठा है, उसके ज़रिए सब चीज़ें सिरजी गयीं। .... प्रका 3:14; कुलु 1:15-17

एक स्त्री के गर्भ से इंसान के रूप में पैदा हुआ, स्वर्गदूतों से कमतर बनाया गया। ...... गला 4:4; इब्रा 2:9

परमेश्‍वर की पवित्र शक्‍ति से पैदा हुआ, स्वर्ग जाने की आशा पायी। .... मत्ती 3:16, 17

इंसान बनने से पहले जो ओहदा था, उससे भी ऊँचा ओहदा दिया गया। .... फिलि 2:9, 10

ख. उद्धार के लिए यीशु मसीह में विश्‍वास करना ज़रूरी

मसीह, वादा किया गया अब्राहम का वंश है। .... उत्प 22:18; गला 3:16

सिर्फ यीशु महायाजक है, फिरौती है। .... 1 यूह 2:1, 2; इब्रा 7:25, 26; मत्ती 20:28

जीवन, परमेश्‍वर और मसीह को जानने, आज्ञा मानने से मिलेगा। .... यूह 17:3; प्रेषि 4:12

ग. यीशु में विश्‍वास करना काफी नहीं

विश्‍वास ज़ाहिर करनेवाले काम भी करने चाहिए। .... याकू 2:17-26; 1:22-25

यीशु की आज्ञाओं को मानना, उसने जो काम किया उसे
करना ज़रूरी है। .... यूह 14:12, 15; 1 यूह 2:3

प्रभु का नाम लेनेवाला हर कोई राज में दाखिल नहीं होगा....................................... मत्ती 7:21-23

33. राज

क. परमेश्‍वर का राज इंसानों के लिए क्या करेगा

परमेश्‍वर की मरज़ी पूरी करेगा। .... मत्ती 6:9, 10; भज 45:6; प्रका 4:11

यह एक सरकार है जिसमें एक राजा और कायदे-कानून हैं। .... यशा 9:6, 7; 2:3; भज 72:1, 8

दुष्टता को मिटाकर सारी पृथ्वी पर हुकूमत करेगा। .... दानि 2:44; भज 72:8

हज़ार साल की हुकूमत में, सभी इंसानों को सिद्ध करेगा;
दोबारा फिरदौस लाएगा। .... प्रका 21:2-4; 20:6

ख. इसकी हुकूमत तभी शुरू हुई जब मसीह के दुश्‍मन अपने कामों में लगे हुए थे

मसीह ने मरे हुओं में से जी उठने के बाद,
लंबे समय तक इंतज़ार किया। .... भज 110:1; इब्रा 10:12, 13

उसने अधिकार पाया, शैतान से युद्ध लड़ा। .... भज 110:2; प्रका 12:7-9; लूका 10:18

तभी राज स्थापित किया गया, धरती पर मुसीबतों का दौर शुरू हुआ। .... प्रका 12:10, 12

आज की दुःख-तकलीफें दिखाती हैं कि राज के पक्ष में फैसला करने का यही वक्‍त है। ... प्रका 11:15-18

ग. राज लोगों के 'दिल' में नहीं, न ही इंसान की कोशिशों से बना है

राज स्वर्ग में है, धरती पर नहीं। .... 2 तीमु 4:18; 1 कुरिं 15:50; भज 11:4
यह इंसानों के 'दिल' में नहीं; यीशु फरीसियों से बात कर रहा था। .... लूका 17:20, 21
इस दुनिया का हिस्सा नहीं। .... यूह 18:36; लूका 4:5-8; दानि 2:44
दुनिया की सरकारों और स्तरों की जगह लेगा। .... दानि 2:44

34. विरोध, ज़ुल्म

क. मसीहियों का विरोध किए जाने की वजह

यीशु ने नफरत झेली, भविष्यवाणी की कि मसीही विरोध झेलेंगे। .... यूह 15:18-20; मत्ती 10:22
मसीहियों का सही उसूलों पर चलना दुनिया को रास नहीं आता। .... 1 पत 4:1, 4, 12, 13
इस दुनिया का ईश्वर शैतान, राज का विरोध करता है। .... 2 कुरिं 4:4; 1 पत 5:8
मसीही डरते नहीं, परमेश्वर उन्हें हिम्मत देता है। .... रोमि 8:38, 39; याकू 4:8

ख. पत्नी को पति के दबाव में आकर परमेश्वर से अलग नहीं होना चाहिए

आगाह किया गया; लोग शायद पति को गलत जानकारी दें। .... मत्ती 10:34-38; प्रेषि 28:22
पत्नी को परमेश्वर और मसीह पर निर्भर रहना चाहिए। .... यूह 6:68; 17:3
अपनी वफादारी से वह पति का भी उद्धार करा सकती है। .... 1 कुरिं 7:16; 1 पत 3:1-6
पति मुखिया है, मगर उपासना के मामले में
पत्नी पर हुक्म नहीं चलाना चाहिए। .... 1 कुरिं 11:3; प्रेषि 5:29

ग. पति को पत्नी के दबाव में आकर परमेश्वर की सेवा करने से पीछे नहीं हटना चाहिए

पत्नी और परिवार से प्यार करना चाहिए, उनकी ज़िंदगी की
कामना करनी चाहिए। .... 1 कुरिं 7:16
परिवार के लिए फैसले करना, उसकी देखभाल करना
पति की ज़िम्मेदारी है। .... 1 कुरिं 11:3; 1 तीमु 5:8
परमेश्वर, उस पुरुष से प्यार करता है जो सच्चाई के पक्ष में
मज़बूत खड़ा रहता है। .... याकू 1:12; 5:10, 11
परिवार में शांति रखने के लिए समझौता करना, परमेश्वर को नाखुश करता है। .... इब्रा 10:38
अपने परिवार की अच्छी अगुवाई करें ताकि
वह नयी दुनिया में खुशहाल ज़िंदगी पा सके। .... प्रका 21:3, 4

35. शादी

क. शादी के बंधन का आदर करना चाहिए

इसकी तुलना मसीह और उसकी दुल्हन के आपसी रिश्ते से की गयी। .... इफि 5:22, 23
शादी की सेज दूषित नहीं होनी चाहिए। .... इब्रा 13:4
जोड़ों को सलाह दी गयी है कि वे अलग न हों। .... 1 कुरिं 7:10-16
बाइबल के मुताबिक, सिर्फ *पोर्निया* या व्यभिचार ही तलाक लेने की सही वजह है। .... मत्ती 19:9

ख. मसीहियों को मुखियापन का सिद्धांत ज़रूर मानना चाहिए

पति मुखिया होने के नाते परिवार से प्यार करे, उसकी देखभाल करे। .... इफि 5:23-31
पत्नी, पति के अधीन रहती, उससे प्यार करती
और कहना मानती है। .... 1 पत 3:1-7; इफि 5:22
बच्चों को माता-पिता का कहना मानना चाहिए। .... इफि 6:1-3; कुलु 3:20

ग. बच्चों की तरफ मसीही माता-पिता की ज़िम्मेदारी

ज़रूरी है कि बच्चों से प्यार करें, उनके साथ वक्त बिताएँ, उनका खयाल रखें। .... तीतु 2:4
उन्हें खीज न दिलाएँ। .... कुलु 3:21
उनकी ज़रूरतें पूरी करें, आध्यात्मिक ज़रूरतें भी। .... 2 कुरिं 12:14; 1 तीमु 5:8
ऐसी तालीम दें जो उन्हें सारी ज़िंदगी काम आए। .... इफि 6:4; नीति 22:6, 15; 23:13, 14

घ. मसीहियों को सिर्फ मसीहियों से शादी करनी चाहिए

शादी केवल “प्रभु में” करें। .... 1 कुरिं 7:39; व्यव 7:3, 4; नहे 13:26

च. एक-से-ज़्यादा शादियाँ करना बाइबल के खिलाफ

शुरू से यह नियम था कि एक पुरुष की सिर्फ एक पत्नी हो। .... उत्प 2:18, 22-25
यीशु ने वही स्तर मसीहियों के लिए भी कायम किया। .... मत्ती 19:3-9
शुरू के मसीही एक-से-ज़्यादा पति/पत्नी नहीं रखते थे। .... 1 कुरिं 7:2, 12-16; इफि 5:28-31

36. शैतान, दुष्ट स्वर्गदूत

क. शैतान एक आत्मिक प्राणी है

शैतान, इंसान के अंदर की बुराई नहीं, बल्कि एक स्वर्गदूत है। .... 2 तीमु 2:26
स्वर्गदूतों की तरह शैतान भी एक अलग शख्स है। .... मत्ती 4:1, 11; अय्यू 1:6
अपनी बुरी ख्वाहिश की वजह से खुद शैतान बना। .... याकू 1:13-15

ख. शैतान इस दुनिया का राजा है, मगर वह दिखायी नहीं देता

इस दुनिया का ईश्वर है और इसे अपने कब्ज़े में किए हुए है। .... 2 कुरिं 4:4; 1 यूह 5:19; प्रका 12:9
जब तक मसले का हल न हो, तब तक उसे राज करने की छूट है। .... निर्ग 9:16; यूह 12:31
अथाह-कुंड में डाला जाएगा, फिर नाश किया जाएगा। .... प्रका 20:2, 3, 10

ग. दुष्ट स्वर्गदूत बागी हैं

जलप्रलय से पहले शैतान के साथ जा मिले। .... उत्प 6:1, 2; 1 पत 3:19, 20
गिरी हुई दशा में हैं, परमेश्वर के ज्ञान की ज़रा भी रौशनी उन्हें नहीं मिलती। .... 2 पत 2:4; यहू 6
परमेश्वर के खिलाफ लड़ते हैं, इंसानों पर अत्याचार करते हैं। .... लूका 8:27-29; प्रका 16:13, 14
शैतान के साथ नाश होंगे। .... मत्ती 25:41; लूका 8:31; प्रका 20:2, 3, 10

37. सब्त

क. सब्त का दिन मनाना मसीहियों के लिए ज़रूरी नहीं

मसीह की मौत की बिना पर मूसा का कानून रद्द किया गया। .... इफि 2:15
मसीहियों के लिए सब्त मनाना ज़रूरी नहीं। .... कुलु 2:16, 17; रोमि 14:5, 10
सब्त और ऐसे दूसरे रिवाज़ माननेवालों को ताड़ना दी गयी। .... गला 4:9-11; रोमि 10:2-4
विश्वास और आज्ञा मानने के ज़रिए परमेश्वर के विश्राम में दाखिल हों। .... इब्रा 4:9-11

ख. सब्त का नियम सिर्फ प्राचीन इस्राएलियों को दिया गया

सबसे पहला सब्त, मिस्र से निकलने के बाद मनाया गया। .... निर्ग 16:26, 27, 29, 30
पैदाइशी इस्राएल की पहचान के लिए सिर्फ उन्हीं को
यह नियम दिया गया। .... निर्ग 31:16, 17; भज 147:19, 20
कानून में, सब्त के साल मानने की भी माँग थी। .... निर्ग 23:10, 11; लैव्य 25:3, 4
सब्त मनाना, मसीहियों के लिए ज़रूरी नहीं। .... रोमि 14:5, 10; गला 4:9-11

ग. परमेश्वर का सब्त या विश्राम दिन (सृष्टि के "हफ्ते" का 7वाँ दिन)

यह तब शुरू हुआ जब पृथ्वी पर सृष्टि का काम पूरा हुआ। .... उत्प 2:2, 3; इब्रा 4:3-5
धरती से यीशु के जाने के बाद भी ज़ारी रहा। .... इब्रा 4:6-8; भज 95:7-9, 11
मसीही, स्वार्थ के कामों से विश्राम करते हैं। .... इब्रा 4:9, 10
विश्राम उस वक्त खत्म होगा जब धरती से जुड़ा राज का काम पूरा होगा। .... 1 कुरिं 15:24, 28

38. सभी धर्मों में विश्वास

क. दूसरे धर्मों के साथ मिल जाना, परमेश्वर को मंज़ूर नहीं

सही मार्ग सिर्फ एक है, सँकरा है। उसे पानेवाले थोड़े हैं। .... इफि 4:4-6; मत्ती 7:13, 14
चेतावनी दी गयी कि झूठी शिक्षाएँ भ्रष्ट करती हैं। .... मत्ती 16:6, 12; गला 5:9
अलग रहने की आज्ञा दी गयी। .... 2 तीमु 3:5; 2 कुरिं 6:14-17; प्रका 18:4

ख. यह धारणा गलत है कि "सभी धर्मों में अच्छाई है"

कुछ लोगों में जोश तो है, मगर परमेश्वर की मरज़ी के मुताबिक नहीं। .... रोमि 10:2, 3
इन धर्मों में अगर अच्छाई हो भी, तो इनकी बुराई उसे बेमाने कर देती है। ... 1 कुरिं 5:6; मत्ती 7:15-17
झूठे शिक्षक विनाश की खाई में ले जाते हैं। .... 2 पत 2:1; मत्ती 12:30; 15:14
शुद्ध उपासना के लिए सिर्फ यहोवा की भक्ति करनी चाहिए। .... व्यव 6:5, 14, 15

39. सेवक

क. सभी मसीहियों को सेवक होना चाहिए

यीशु, परमेश्वर का सेवक था। .... रोमि 15:8, 9; मत्ती 20:28
मसीही, उसके नक्शे-कदम पर चलते हैं। .... 1 पत 2:21; 1 कुरिं 11:1
अपनी सेवा पूरी करने के लिए प्रचार करना ज़रूरी। .... 2 तीमु 4:2, 5; 1 कुरिं 9:16

ख. सेवा में हिस्सा लेने के लिए ज़रूरी योग्यताएँ

परमेश्वर की पवित्र शक्ति पाना और
उसके वचन का ज्ञान होना ज़रूरी। .... 2 तीमु 2:15; यशा 61:1-3
प्रचार में मसीह के आदर्श पर चलना। .... 1 पत 2:21; 2 तीमु 4:2, 5
परमेश्वर अपनी पवित्र शक्ति और संगठन के
ज़रिए तालीम देता है। .... यूह 14:26; 2 कुरिं 3:1-3

40. सृष्टि

क. विज्ञान ने जो साबित किया है उससे सृष्टि मेल खाती है; विकासवाद का सिद्धांत गलत साबित

जिस क्रम से सृष्टि की गयी, उसे विज्ञान सही मानता है। .... उत्प 1:11, 12, 21, 24, 25
अपनी "जाति" के मुताबिक पैदा करने का
परमेश्वर का नियम आज भी सच। .... उत्प 1:11, 12; याकू 3:12

ख. सृष्टि के दिन 24 घंटे के दिन नहीं

लंबी समय-अवधि को भी "दिन" कहा जा सकता है। .... उत्प 2:4
परमेश्वर का एक दिन, काफी लंबा समय हो सकता है। .... भज 90:4; 2 पत 3:8

41. स्मारक, मिस्सा

क. प्रभु के संध्या भोज की यादगार मनाना

साल में एक बार, फसह के त्योहार की तारीख पर
मनाया जाता है। .... लूका 22:1, 17-20; निर्ग 12:14
यह मसीह की मौत का स्मारक है, जो हमारे लिए बलिदान हुआ। .... 1 कुरिं 11:26; मत्ती 26:28
स्वर्ग जाने की आशा रखनेवाले इसमें हिस्सा लेते हैं। .... लूका 22:29, 30; 12:32, 37
एक इंसान कैसे जान सकता है कि उसे यह आशा है। .... रोमि 8:15-17

ख. मिस्सा, बाइबल के खिलाफ

पापों की माफी के लिए लहू बहाना ज़रूरी। .... इब्रा 9:22
सिर्फ मसीह, नए करार का बिचवई है। .... 1 तीमु 2:5, 6; यूह 14:6
मसीह स्वर्ग में है; पादरी उसे धरती पर नहीं ला सकता। .... प्रेषि 3:20, 21
मसीह को दोबारा बलिदान देने की ज़रूरत नहीं। .... इब्रा 9:24-26; 10:11-14

42. स्वर्ग

क. सिर्फ 1,44,000 जन स्वर्ग जाते हैं

एक सीमित संख्या; मसीह के साथी-राजा होंगे। .... प्रका 5:9, 10; 20:4
स्वर्ग जानेवालों में यीशु पहला था; उसके बाद दूसरों को चुना गया। .... कुलु 1:18; 1 पत 2:21
दूसरे बहुत-से लोग धरती पर जीएँगे। .... भज 72:8; प्रका 21:3, 4
1,44,000 जनों को खास पद दिया गया है जो किसी और को नहीं मिला। ...... प्रका 14:1, 3; 7:4, 9

43. हर-मगिदोन

क. यह परमेश्‍वर का युद्ध है, जो दुष्टता मिटाएगा

राष्ट्रों को हर-मगिदोन के लिए इकट्ठा किया जा रहा है। .... प्रका 16:14, 16
परमेश्‍वर अपने बेटे और स्वर्गदूतों के ज़रिए युद्ध करेगा। .... 2 थिस्स 1:6-9; प्रका 19:11-16
हम कैसे बच सकते हैं। .... सप 2:2, 3; प्रका 7:14

ख. यह युद्ध परमेश्‍वर के प्यार के खिलाफ नहीं

दुनिया की बुराई हद पार कर गयी है। .... 2 तीमु 3:1-5
परमेश्‍वर सब्र दिखा रहा है, न्याय का तकाज़ा,
कार्रवाई की माँग करता है। .... 2 पत 3:9, 15; लूका 18:7, 8
दुष्टों का नाश ज़रूरी है ताकि नेक इंसान खुशहाल ज़िंदगी जी सकें। .... नीति 21:18; प्रका 11:18

बाइबल की इब्रानी भाषा में लिखी किताबों के पूरे नाम और संक्षिप्त नाम

उत्पत्ति .... उत्प
निर्गमन .... निर्ग
लैव्यव्यवस्था .... लैव्य
गिनती .... गिन
व्यवस्थाविवरण .... व्यव
यहोशू .... यहो
न्यायियों .... न्यायि
रूत .... रूत
1 शमूएल .... 1शमू
2 शमूएल .... 2शमू
1 राजा .... 1राजा
2 राजा .... 2राजा
1 इतिहास .... 1इति
2 इतिहास .... 2इति
एज्रा .... एज्रा
नहेमायाह .... नहे
एस्तेर .... एस्ते
अय्यूब .... अय्यू
भजन .... भज
नीतिवचन .... नीति
सभोपदेशक .... सभो
श्रेष्ठगीत .... श्रेष्ठ
यशायाह .... यशा
यिर्मयाह .... यिर्म
विलापगीत .... विला
यहेजकेल .... यहे
दानिय्येल .... दानि
होशे .... होशे
योएल .... योए
आमोस .... आमो
ओबद्याह .... ओब
योना .... योना
मीका .... मीका
नहूम .... नहू
हबक्कूक .... हब
सपन्याह .... सप
हाग्गै .... हाग
जकर्याह .... जक
मलाकी .... मला

क्या आप ज़्यादा जानकारी पाना चाहते हैं?

आप **www.jw.org** पर यहोवा के साक्षियों से संपर्क कर सकते हैं।

रोम
इटली
पुतियुली
रेगियुम
सिसिली
सुरकूसा
माल्टा
मकिदुनिया
नियापुलिस
फिलिप्पी
अम्फिपुलिस
थिस्सलुनीके
बिरीया
यूनान
एथेन्स
कुरिंथ
अखया
क्रेते
कौदा
भूमध्य
पौलुस के दौरे
पहला मिशनरी दौरा (प्रेषि 13:1–14:28)
दूसरा मिशनरी दौरा (प्रेषि 15:36–18:22)
तीसरा मिशनरी दौरा (प्रेषि 18:22–21:19)
रोम तक सफर (प्रेषि 23:11–28:31)
खास रास्ते
उ
0 मी
150
0 कि.मी.
150

काला सागर
बितूनिया
पुन्तुस
समोथ्राके
त्रोआस
मूसिया
अस्सुस
पिरगमुन
मितुलेने
थुआतीरा
लिदिया
खियुस
सरदीस
स्मुरना
फिलदिलफिया
इफिसुस
लौदीकिया
सामुस
कुलुस्से
मीलेतुस
पतमुस
कोस
कनिदुस
रुदुस
पतरा
मूरा
लूसिया
फ्रूगिया
गलातिया
कप्पदूकिया
अंताकिया (पिसिदिया का)
इकुनियुम
लुस्त्रा
लुकाउनिया
पिसिदिया
दिरबे
किलिकिया
अत्तलिया
पिरगा
पमफूलिया
तरसुस
सिलूकिया
अंताकिया (सीरिया का)
सीरिया
सलमीस
कुप्रुस
पाफुस
सीदोन
सोर
दमिश्क
पतुलिमयिस
कैसरिया
पेल्ला
याफा
लुद्दा
यरूशलेम
गाज़ा
सिकंदरिया
मिस्र
सागर
bi7-HI